মহাভারত।

উদ্যোগপর।

-10141-

ঞীল জীবুজ বৰ্ষনান্ধিপতি সহারাজাধিরাস সহতাব্চক বাহাছুর

कर्वक

अयुक मात्रमाथमार कार्निथि-दात्रा अवूदारिख

ও পর্যালোচিত হইরা

বৰ্দ্দশান

वडाअरुनि बाज प्रजिङ वर्षेण्।

मक्ति। १९७३।

ঞীযুক্ত পুরুবোডসদেব চট্টরাজ-ছারা সুক্রিতা

মহাভারতীয় উদেবাগপর্বের সূচীপত

| প্রকরণ | 910 | र उ | পত্তি | ं क्रियुंश ••• ••• ••• ••• | | | |
|---|--------------|------------|-------|--|-------------------|------------|---------------------------------------|
| অভিমন্তার বিবাহোপলকে সমাগত বি- | • | - • | | পাঞ্চাল-পুরোহিতের বাক্যে ভীছের জ- | | | |
| ब्राउ-जভाष बाक्र गरात मगील यूधिकि- | | | | श्रूरमामन धारान करनेत्र जित्रकात ७ श्रीत | | | |
| রের রাজ্য প্রাপ্তি-বিষয়ে বাস্তদেবের প্র- | | | | शर्का श्रकांग | . 453 | 5 . | 6.00 |
| खावना | ٤, | ર | ১৩ | ধৃতরাষ্ট্র-কর্ত্তৃক ভীত্মের প্রসাদন ও কর্ণের | | | • 1 |
| কৃষ্ণের প্রস্তাব প্রবণে বলদেবের বস্কৃতা | ٠, ۶ | . ર | | ভিরস্কার 😶 \cdots \cdots | Ď | ų. | ે |
| হলধরের বাক্যে নিশাবাদ-পূর্বাক সাত্য- | ` | • | _ | ধৃতরাষ্ট্রের শাস্তি স্থাপন মানসে নানা | • | `. | |
| কির বক্তৃতা · · · · · · · · · · | ৩ | ২ | 51- | সন্দেশ-বাক্যের সহিত সঞ্জয়কে পাগুবগণ- | | | 11 |
| পাঞ্চালরাজের সাত্যকি-বাক্যে অমুমো- | | • | | সমীপে প্রেরণ করিবার প্রসঙ্গ · · · | ७२ | 5 | >8 |
| मन এবং माहास्मादर्थ नानामिन्नादम्मीय | | | | धृष्ठताक्षात्मा मझस्त्रत छेनक्षता नगस्त | -, | • | - 0 |
| রাজগণের ও অভিমত জানিবার নিমিত্তে | | | | গ্ৰন | ૭ ૪ | > | ૭૭ |
| কৌরবদিগের সমীপে দূত প্রেরণের প্র- | | | | পাগুবদিগের নিকটে সঞ্চয়ের পৃতরাষ্ট্র- | | ` | • |
| खाव | Q | > | 2 9 | ্সন্দিষ্ট বাক্যাদি বিজ্ঞাপন · · · | ৩৫ | | ૭ |
| পাঞ্চালরাজের প্রস্তাবে কৃষ্ণের প্রশংসা | œ | ` > | 2.7 | गञ्जूब-वाह्का शिक्षितक छिख्त वावर श्रीय | | • | |
| কৃষ্ণের দ্রুপদরাজ-বাক্যে সম্মতি প্রকাশ- | • | ` | • | ধন্মীধর্ম ব্যবহারের বিচার বিষয়ে বাস্ত- | | | |
| পূর্বক স্বজন সহিত ছারকায় গমন | ৬ | , | ১৬ | দ্বেবের প্রতি ভারার্পণ · · · · · | 9.5 | | 4 .84 |
| বিরাটের সহযোগে যুধিষ্ঠিরের সমরোপ- | \ . | • | .0 | সঞ্জয়ের প্রতি বাস্থদেবের উক্তি … | 8 २ .8७ | ٠ | 36 |
| र्याणी नामजी नमूनार्यंत्र व्यासास्त्रि | C | * | 1 05 | यूधिक्रिर्तामित निर्देश नेक्षांबनात्स मक्षात्रत | . 80 | • | २२ |
| মৎস্যরাজ-প্রভৃতির আপন আপন স্থহদ্- | . * | A « | ر . ن | विमांग्र श्रार्थना | • • | | |
| বর্গের নিকট দূত-প্রেরণ · · · | ঐ | ર | | मक्षय-चात्रा यूधिक्टित्तत्त क्रूक्रभग-मभीला | 89 | 3 | 5 |
| দ্ধাপদ-রাজের বাক্যে তৎ-পুরোহিতের | • ~ | ` | • | जिल्ला ८ अर्थ । । । । । । । । । । । । । । । । । । । | B | | |
| কোরব সভায় দূত-স্বরূপে প্রস্থান … | ٩ | ٠ | ,16 | मश्रदम्हरू निम्न विकित्तान | ¢5 | 3 | , |
| कृष्ठ-मभीरभ माहाया প্রার্থনায় हर्गायन | -' | • ` | J | मक्षय-कर्कुक यूधिकितीमित्र श्रमश्मा ७ धृष- | 4.5 | , | Ŋ |
| ७ धनक्षरम् । अर्ग किराम है बारका भगन | ঐ | 5 | २৮ | রাষ্ট্রের প্রতি ভংষনা · · · · | Ď | ٠ | 4 .94 |
| कृष्ण ও कृष्ठवर्षात निकटि मान श्रासान- | | ` | ~ | ধৃতরাষ্ট্রের প্রজাগরাবস্থায় বিছর-কর্ত্তক | ٠, | • | 20 |
| ন্তর চুর্ব্যোধনের প্রতিপ্রস্থান · · · · | . b - | ş | >• | नाना श्रकात नीजि ७ धर्म-मूजक कथात | | | |
| কৃষ্ণকে সার্থ্যকর্মে স্বীকৃত করাইয়া অ- | • | ` | • | প্রসঞ্জ ••• ••• ••• ••• ••• | 60 | | • • |
| क्ट्रानं यूधिकित निकटि श्रन्ता | ۵ | 2 | ২৯ | ধৃতরাষ্ট্রের সংশয়-নিরসনার্থে সনৎস্কৃতি | | < | २ १ |
| মন্তর্জ শল্যের পাণ্ডবগণোদ্দেশে স- | ••• | ` | 7.0 | খবিকর্ত্তৃক সবিস্তারে তত্ত্তানের প্রসঙ্গ | ৮ 8 | | |
| टेमरा वांचा | ď) | ર | ૭ | যানসন্ধি প্রকরণারম্ভে পাগুবগণ হইতে | V 0 | ۲ | >• |
| ছুর্ব্যোধনের সমাদরাদিতে বশীভূত হই- | ., | ` | | প্রত্যাগত সঞ্জয়ের কুরু-সভায় প্রবেশ | ५० २ | | 4.4 |
| য়া শল্যের তৎ পক্ষাবলম্বী হইতে স্বী- | | | | ধৃতরাক্টের জিজাসায় সঞ্জয়-কর্ত্তক অর্জ্ঞ- | 204 | J | 3.0 |
| কার | ٥, | 5 | ૨ જ | नक्षिण राका-अमृहद्द अञ्चकीर्द्धन | ď | ર | |
| শল্যের উপপ্লব্য নগরে সাক্ষাৎ করণার্থে | Ĭ | • | `` | হুর্য্যোধনের প্রতি উপদেশ প্রদান মান- | 4 | • | ¢ |
| পাগুৰগণ-নিকটে প্ৰস্থান · · · | D | 3 | 58 | त्र जीय-कर्ज्क कृषः कृत्वत शूर्य वृज्ञास | | • | |
| नातात यूधिछित-मगील कथा अमान | - | ` | - 5 | वर्गन | ۵۰۵ | | • |
| শক্রবিজয়-নামক ইতিহাস বর্ণন ৣ | 53 | | , , | ধৃতরাষ্ট্র জিজাসায় সঞ্চয়-কর্ত্তৃক পাণ্ডব- | 2.4 | > | 8 |
| যুধিষ্ঠিরের প্রার্থনায় শল্যের, "অর্জুন ও | • • • | • | • • | দিগের সাহায্যকারী রাজনাগণের পৃথক্ | | | |
| কর্ণের ছৈরথ যুদ্ধ কালে কর্ণের ভেজো- | | | | क्ररण नामामि कीर्जन | >>> | | |
| হানি করিব" এই মত অঙ্গীকার করণা- | | | | পাগুৰগদের बीर्या ও পরাক্রম কীর্ত্তন | 333 | > | >> |
| नखत्र विमात्र-श्रह्ण | २৮ | ₹ | | করত ধৃতরাষ্ট্রের বিলাপ · · · · | | | |
| সাহার্য প্রদানার্থে কুরু ও পাণ্ডবগণের | 10 | < | w l | কুরু-সভান্থ সমস্ত রাজনাগণ-সমীপে ধৃত- | \$50 | 2 | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| निकरि नाना फ्रियम्मीय ब्रांक्शरंगं म- | | | | রাষ্ট্রের পাগুর্বদিগের সহিত সন্ধি করণের | | • | |
| देनदा नग्तिम | ه. | | | and the second second | | | |
| | ď | ₹ | . 33 | | 555 | ₹ | >¢ |
| পাঞ্চালরাজ-প্রেরিড পুরোহিডের কৌ- | • | | | ধৃতরাকৌর প্রতি সঞ্চারের ভর্ৎ ননা এবং | | | |
| রব-সভায় সন্ধি-বিষয়ক বস্তৃতা · · · | 9 • | > | ١ | मन् नद्र श्रमश्रावाम-पूर्वक् शास्त्रवित्र- | | | |
| | | | , | and the second s | | | |

সূচীপত্ত।

| ০০ পৃষ্ঠ স্তম্ভ পঞ্জি | প্রকরণ · · · · · · · · শৃষ্ঠ স্তম্ভ পঙ্জি |
|--|--|
| -नं डा वन ा-श्रमण न् ··· ·· ১১৭ 🕉 ७১ | সমীপে বিছুরের শাকুনিক ও পক্ষিত্বয়ের |
| তীন্ম জোণাদি বোধগণের | এবং অদূরদর্শী কির্তিগণের উপাখান |
| র্ন-ছারা স্থপক্ষের বিজয়- | কথন-পূর্ব্বক যুধিষ্ঠির-সহ সন্ধি করিবার |
| র্ণন-পূর্বাক ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি | खेशरहरू ··· ··· ··· ১৬১ २ ১৬ |
| ध्यात्व मास्त्रमा १५४ ५ थी | ছর্ব্যোধনের প্রতি ধৃতরাষ্ট্রের পাশুবগণ- |
| ১ ্ধনের জিজাসার সঞ্চয়-কর্তৃক যুখিন | मङ् मिक्क कित्रविद्र छे अटमम ১७२ २ २ ४ छ |
| बि द्रामित्र अखिश्राग्न विकास-मञ्जादिना ७ | ধৃতরাষ্ট্র-জিজ্ঞাসায় সঞ্চর-কর্তৃক অর্জ্জুনের |
| व्रथ-ममूपारवव वर्गन >२५ ५ २० | े जत्निम-वाका कथन · · · · · · · · · · ১৩৩ २ ১ |
| পৃতরাট্টের <i>বিজ্ঞানায় সঞ্চয়-কর্ম্কু</i> ক যুধি- | ধৃতরাইটু সঞ্জয়কে স্থ পর পক্ষের সারা- |
| छित्तत्र रिमना-ममनाम्न कथन धरे योध- | সারত্ব জিজ্ঞাসা করিলে ভাঁহার ব্যাস ও |
| भटन त जाभ-निक्रमन दर्गन ··· · >२२ > २२ | গান্ধারী-সমীপে ঐ বিষয় ব্যক্ত করিবার |
| যুধিষ্ঠিরের নৈনা-সম্বায় ও বোধ-ভাগ | অভিপ্রায় হওয়ায় বিষ্টুর দ্বারা তাঁহাদের |
| কল্পনা শ্রেবণে ধৃতরাষ্ট্রের পরাক্ষয় শব্দায় | मछोत्र व्यक्तिस्य ১७৪ ১ २১ |
| পুনরায় বিলাপ এবং তৎপ্রতি ছুর্যো- | ধৃতরাইনাদি-সমীপে সঞ্চয়ের কৃষ্ণ মাহাত্মা |
| शत्त्व श्रृक्तवर नाजुना ··· ··· >२७ ১ २० | कीर्डन थे २ २० |
| ধৃতরাষ্ট্র-ক্রিজানায় সঞ্জয়-কর্ত্তক যুধিত্তি- | ধৃতরাই -জিজ্ঞানায় সঞ্জয়-কর্ত্তৃক ঈশ্বর- |
| রের প্রতি ধৃউছান্নের প্রৌৎসাহন ও | ङ्गार्नेत छेनात्र कथन ১७৫ २ ১ |
| যুপিষ্টিরের ধৃউল্লান্ন প্রশংসা-প্রভৃতির | ছর্ব্যোধন প্রতি ধৃতরাফ্ট্রের কেশব-শর- |
| वर्ग ५२८ ५ С | गोलन हरेवांत्र छेलामम ७ ७ विवस्य छ- |
| ছর্ব্যোধনের প্রতি ধ্তরাষ্ট্রের যুধ্দে নি- | र्जातास्त्र प्रामीकात्र |
| वृत्त हरेवात्र छेशायम अवर छिष्वरात्र छू- | ধৃতরাফৌর আক্ষেপ শ্রেবনে ছর্বোধন |
| র্যোধন অসমত হইলে অন্যান্য ভূপাল- | প্রতি গাঁন্ধারীর তিরস্কার, ধৃতরাষ্ট্র প্রতি |
| গণের প্রতি উক্ত রূপ উপদেশ · · ঐ ২ ১৯ | ব্যাসের জ্ঞানযোগ-বিষয়ক উপদেশ এবং |
| ধৃতরাষ্ট্র-জিজাসায় সঞ্চয়-কর্জুক কৃষ্ণার্জ্ঞ্ব- | ধৃতরাইটু-জিজ্ঞাসায় পুনর্ব্বার সঞ্জয়-কর্ত্ত্বক |
| নের নীহান্তা বর্ণন-পূর্বাক কৃষ্ণোক্ত স | ঈশ্ব-তত্ত্তানের উপায় কীর্ত্তন · ১৩৬ ১ ৪ |
| ्मिंग वाका कथन ১२७ ১ व | ধৃতরাইটু-জিজ্ঞানায় সঞ্জয়-কর্ত্ত্বক কৃষ্ণ- |
| সঞ্জ-মুখে কৃষ্ণোক্ত সন্দেশবাক্য প্রবণে | े নামবিলির বু≀ৎপত্তি-কথন ৈ ∙ ∙ ∙ ∙ । । । । । । । । । । । । । । । |
| স্থ পর পক্ষের বলাবলাদি অবধারণ-পূ- | स्रमी(প कृरक्षत्रे जानमन क्षमत्र जमीत |
| ৰ্বাক ছুর্যোধনের প্রতি ধৃতরাষ্ট্রের সন্ধি | প্রশংসা-পূর্ব্বক ধৃতরাষ্ট্রের বাক্য-দ্বারা |
| कदिबाद छेशाम \cdots 🔐 🔐 ১२१ ১ २१ | উদ্দেশে कृष्ध-गत्रगाश्रम इत्रमा ১৩৭ २ २১ |
| ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি ছর্নোধনের সরোধে | ভূগবদ্যান প্রকরণারন্তে কৃষ্ণ সমীপে যুধি- |
| নিজ মহিত্যা বর্ণন-পূর্বাক আশ্বাস প্র- | ষ্টিরের দারিক্র্য-নিন্দা অর্থ-প্রশংসা ও |
| मान ··· ·· ·· ·· ·· ১२৮ ১ २১ | বিবিধ নীতি বিষয়ক বাক্যের উল্লেখ- |
| ছুর্যোধনের আশ্বাসনার্থে কর্ণের প্লাঘা- | পূর্ব্বক রাজ্যলাভের পরামর্শ-জিজ্ঞাসা |
| পূর্বাক পাশুবগণ-সংহারের প্রতিজ্ঞা এবং | এবং কৃষ্ণের স্বয়ং কুরু-সভা গমনের প্র- |
| ডব্বিবন্নে ভীন্মের প্রতিবাদ জ্রাবণে তদীয় | স্তাবে প্রথমত অস্বীকার পরে তদীয় স্থিয় |
| जीवन-म रद् यूर्फ निवृख थाकियांत मक्क | নিশ্চয় দর্শনে সম্মতি-প্রদান ও কর্ত্তব্য- |
| ও অন্ত্র পরিত্যাগ \cdots \cdots \cdots ১২৯ ২ 🗷 ৫ | निर्द्धमा · · · · · · · · · ১७৮ ১ ১७ |
| य शक्तत्र अव्रावधात्रभ-भूर्तक जीत्यात | ধৃতরাই ু-সমীপে বিবিধ যুক্তি প্রদর্শন- |
| প্রতি ছর্যোখনের অভ্যোগ · · · ১৩ । ২ ১২ | |
| যুধিন্তিরের প্রশংসার্থে ধৃতরাষ্ট্র-সমীপে | দেশ, কুরুসভায় বাহা বাহা করিবেন ডা- |
| विष्ट्रदत ममखन ও मास श्रुक्त रवद लकन | হার নির্দ্ধারণ, যুদ্ধ ষ্টনা-স্কুচক স্থনিমিত্ত- |
| कोर्डन २० ५७३ ३ ३ | প্রদর্শন ও যুক্ষোদেযাগ করিবার পরামর্শ- |
| জাতি বিরোধের অকর্ত্তবাতা-সমর্থন এবং | कथन >8२ २ २৯ |
| इर्त्याभरनत पूर्णा-अन्मनार्थ भृष्ठतांचु- | কৃষ্ণ প্রতি তাঁমের কুরুসভায় সন্ধিপ্রস্তাব |

স্কুচীপত্র।

| প্রকর্ম • · · · · · · · · · · · · · · · · · · | পৃষ্ঠ | তম | পঙ্জি | श्रकदूव | শৃষ্ঠ | | |
|--|----------------|----|------------|---|----------------------|-------------|------|
| করিবার আদেশ · · · · · · | >88 | 3 | २२ | ধৃতরাট্টের নিষেধ এবং ছর্ফোধন প্রতি | . D | ÷. | |
| मिन्न रेका अलगत्रन ও यूटकारमार | | | | जर्जना-शूर्तक जीएमत् वर्ष हरेए | | | |
| বৰ্দ্ধনাৰ্থে ভীষের প্রতি কৌশল-ক্রমে | | | | প্রস্থান ••• ••• ••• ••• | ১৬২ | 3 | |
| কৃষ্ণের অভূবোগ ··· ··· ··· | >8¢ | ર | ত হ | কৃষ্ণের কৌরব-সভার প্রবেশ ও বিহুর্ক | | | |
| কৃষ্ণের অস্থবোগে ভীমের রোষ ও উৎ- | • | | | ভবনে আভিষ্য গ্রহণ · · · · | ১৯৩ | > | ১২ |
| সাহ সহকারে স্বীয় বিক্রমের পরিচয় | | | | কৃষ্ণের কুন্তী-সহ সাক্ষাৎ, কুন্তীর বছতর | | • | |
| कथन | >89 | > | >0 | ছংখ বর্ণন-পূর্বাক কৃষ্ণ প্রতি বুখিটিরাদির | | | |
| কৃষ্ণের ভীম-প্রশংসা ও বছতুর শাস্ত্র- | | | | কুশল জিজাসা, কুন্তী প্রতি ক্ষের সাস্ত্র- | | | |
| े त्रिकांख कथन \cdots 😶 🤲 \cdots | >8 > | > | 59 | ना अवर कृष्ठ मगील कुछीत यूधि हितानि | | | |
| অর্জুনের নানা যুক্তি সহকারে কৃষ্ণ প্রতি | | | | প্রতি উপদেশ ও কৃষ্ণ-প্রশংসা | > 98 | > | २७ |
| সন্ধি-চেষ্টা করিবার উপদেশ · · · | >89 | > | >8 | कृरकत प्रद्याधन-जमत्न अयन, प्रद्याधन- | | | • |
| অৰ্জুন-বাক্যে কৃষ্ণের অন্থ্যোদন ও বিঞ | | | | কর্ত্ত্ব অলপানাদি গ্রহণে অফুরুদ্ধ হই- | | | |
| বিধ হৈতুবাদ সহকারে যুদ্ধ ঘটনার সম্ভা- | | | | য়া বছতর হেতুবাদ ও অহুযোগ-প্রদর্শন- | | | |
| वना कथन | >00 | 5 | ን ፦ | পূর্ব্বক ভদ্গ্রহণে অস্বীকার এবং বিছুর- | | | |
| কৃষ্ণ প্রতি নকুলের কার্যাগতিক্রমে সন্ধি | | | | ভবনে প্রতিগমনানন্তর আহার গ্রহণ ··· | ১৬৯ | > | ২৯ |
| বা বিগ্রহের প্রস্তাব করণে উপদেশ | >¢5 | > | २५ | কৃষ্ণের সন্ধি-স্থাপন-প্রয়াস নির্থক এবং | | | • |
| কৃষ্ণ প্রতি সহদেবের যুদ্ধ-ঘটনোপবোগী | | | | কৌরব-সভায় তাঁহার প্রবেশ করা অন্থ- | | | • |
| প্রস্তাব করণে উপদেশ ও তাহাতে সাত্য- | | | | চিড, এই ভাবে কৃষ্ণ প্রতি বিছুরের | | | |
| কি-প্রভৃতি সমুদয় বোধগণের অহুমো- | | | | উক্তি | >9> | 5 | ২৩ |
| मन ··· ··· ··· ··· ··· | ક હેર | > | • | বিছর-সমীপে কৃষ্ণের শাস্তি-স্থাপন-প্রয়া- | | | - |
| কৃষ্ণ সমীপে দ্রৌপদীর বিবিধ কাডরোক্তি | | | | সের উপযোগিতা-প্রদর্শন | > १२ | ş | ৬০ |
| কথন, ছঃশাসন-ধৃত কেশপাশ-প্রদর্শন | | | | কৃষ্ণকে সভায় লইয়া যাইবার মানদে | · | - | |
| ও রোদন-পূর্ব্বক যুদ্ধ-ঘটনোপযোগী প্র- | | | | ছর্ব্যোধন ও শকুনির বিছর-ভবনে আগ- | | | |
| স্তাব করণের উপদেশ ··· ··· | <u>چ</u> . | ₹ | Œ. | মন, কৃষ্ণের মহাসমারে।ছে কৌরবসভায় | | | |
| কৃষ্ণের হস্তিনায় প্রস্থান, অর্জ্জুন ও যুধি- | | | | গমন এবং তথায় দেবর্ষি-প্রভৃতির আবি- | | | |
| क्वित्तत्र मत्मम् वाका कथन धैवः श्रीध- | | | | र्ভीव | 598 | 5 | 9 |
| মধ্যে কৃষ্ণের সহিত দেবর্ষি-প্রভৃতির সা- | | | | ধৃতরাষ্ট্র-সমীপে কৃষ্ণের বিবিধ যুক্তিসহ- | • | • | • |
| 本(| 5 @8 | ₹ | . २७ | কারে শান্তিস্থাপনের প্রস্তাব এবং যুধি- | 1 | , / | |
| কৃষ্ণের প্রস্থান-কালীন শুভাশুভ নিমিত্ত | | | | ন্তিরোক্ত সন্দেশ বাক্য কথন ··· | ১৭৬ | > | 5 እ |
| সমুদায়ের কথন এবং শালিভবন ও বৃক- | | | | কৌরব-সভায় পরগুরামের দল্ভোদ্ধব নর- | | | • |
| স্থল প্রদেশে ক্ষের আডিথ্যগ্রহণ · · · | > @9 | ₹ | ওহ | পতি ও নরনারায়ণ ঋষির উপাধ্যাম | | | |
| ধৃতরাষ্ট্রের প্রস্তাবে ছর্যোধন-কর্ত্তৃক বৃক- | | | | বর্ণন-পূর্বাক শাস্তি সংস্থাপনের উপ- | • | • | |
| স্থলাদি প্রদেশে কৃষ্ণের নিমিত্ত সভা | | | | टमन | 592 | ą | 2 |
| নির্মাণ ও আভিথ্যের আয়োজন পরস্ত | | | | ছর্ব্যোধন সমীপে কণু ঋষির নরনারায়ণ- | • | | _ |
| তৎসমুদায়ের প্রতি অনাদর করিয়া কৃষ্ণের | | | | মাহাত্ম্য ও মাতলীয় উপাখ্যান কীৰ্ত্তন- | | | ., |
| হস্তিনার গমন · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ራንረ | > | २ 🛭 | পূর্বাক সন্ধি স্থাপনের উপদেশ ··· | 562 | ۵ | • |
| বিছর-সমীপে ধৃতরাষ্ট্রের কৃষ্ণ-সংকার | | | | মাতলীয় উপাধ্যানে নারদ ও মাতলির | | | |
| বিষয়ক স্বাভিপ্ৰায় কথন \cdots \cdots | 500 | \$ | 30 | পাতালপুরে প্রবেশ এবং মাতলি সমীপে | | | |
| 'ধৃতরাষ্ট্র প্রতি বিছরের হিতোপদেশ | | | | नाइएम्ब रङ्ग्नानग्न वर्णन | <u>چ</u> | . > | . 63 |
| वर कृष्ण ममील मनिव्रज्ञानि छेनहात्र | | | | পাতালপুরী বর্ণন | > }- 8 ⋅- | Š | ৯ |
| मि र्छ मिरबंध ··· ··· ··· ··· | 202 | 5 | ৯ | हित्रगाभूत वर्गन · · · · · · · · · · | >+@ | > | |
| কৃষ্ণ-সৎকার-বিষয়ে ছর্য্যোধনের প্রতি- | | | | शक्रफ्दर्भ वर्गन | à | ર | |
| राम, धृष्रताम् প্রতি ভীম্মের সঞ্জি করি- | | • | | রসাতলপুর ও গোমাতা কুরভির বর্ণন | 56-6 | ر الحجود ال | |
| वात जेनदमन, उद्देशशीरका द्वर्रगाध्यत्त | | | | ভোগবতীপুরী ও নাগবংশ বর্ণন এবং | | | |
| ক্ষাকে বন্ধ রাধিবার প্রস্তাব, ভাহাতে | | | | माञ्जित स्रमूथ नागरक कना। बर्लानिक | | | |
| | | | Į. | | | | |
| • | | | • | | | | |
| | | | | • | | | |

সূচীপত্ৰ-

| # ### ### ############################ | ગુ છે | ख्यः ₹ | is a | ্প্রকরণ · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | . পঠ | .ন্তন্ত্র প | ছক্তি |
|---|-------------------|--------|------|--|------|-------------|--------------|
| , অভিপ্ৰায় প্ৰকাশ 🔐 | | | | উক্ত তাপসীর প্রভাবে পক্ষ-হীন হইয়া | | | |
| ্মুথের পিতাম হ আঞ্চল নাগ- | inger sen Name | | * - | তদীয় প্রসাদে পুনরায় স্বরূপ প্রাপ্ত হই- | | | |
| নালে নাতলির পরিচয় ও প্রার্থনা কবি- | | | | বার পর তথা হইতে প্রস্থান সময়ে বিশ্বা- | | | |
| লে অমুখের দৃত্যু নিৰ্কটবৰ্তী ভাবিয়া ওৎ- | | | | যিত্তের সহিত সাক্ষাৎ হইলে তৎকর্ত্তক | | | |
| পরিণয় বিষয়ে আর্যাকের অসম্মতি, স্থ- | | | | গালব-সমীপে পূর্ব্বপ্রার্থিত অশ্ব সকলের | | | |
| মুখকে স্বর্গে লইয়া গেলে বিষ্ণুক্কু আদে- | • | | | প্রার্থনা · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | ₹ | 59 |
| শে তৎপ্রতি ইন্দের আয়ুঃ প্রস্থীন এবং | | | | शालव-मभीरम धरनद्र छन कीर्इन-पूर्वक | | | |
| স্থমুখের বিবাহান্তে সকলের স্থ'স্থ ছানে | | | | ভাঁহাকে লইয়া গরুড়ের রাজ ব্রিষবাতির | | | |
| श्रेष्ट्रान | 766 | > | > | নিকট গমন এবং গালবের মানস পুর- | | | |
| স্থাৰ নাগকে আয়ুঃ প্ৰদান করাতে ই- | | | | ণার্থে তৎপ্রতি অন্থরোধ ··· ·· | ンタタ | ર | ৩৩ |
| ন্দ্রের প্রতি গর্কড়ের সরেবি ভংসনা ও | | | | যযাতিরাজ গালবের প্রার্থনা পুরণে অ- | | | |
| গর্ব্ব প্রকাশ, বিষ্ণু দর্পচূর্ণ করিলে তৎ- | | | | সমর্থইয়া সীয় কন্যা মাধ্বীর রূপ- | | | |
| প্রতি গরুড়ের স্তব এবং কণু ঋষি উপা- | | | | গুণাদি বর্ণন করত "ইহাঁর দ্বারা ভোমার | | | |
| খ্যানাত্তে উপদেশ-প্রস্তাব সমাপ্ত করিলে | | | | প্রয়োজন-সিদ্ধি হইবে ^স এই বলিয়া গা- | | | |
| ভংপ্রতি হুর্যোধনের উপহাস ··· | ントツ | \$ | ૭૭ | লব-হন্তে কম্যা স্মর্পণ করিলে গরুড় ও | | | |
| নির্ব্বনাতিশয়ের দোষ প্রমাণার্থে ছর্ব্যো- | | | | গালবের কন্যা লইয়া প্রস্থান এবং পথি- | | | |
| ধন-সমীপে নারদের গালব চরিত কথ- | | | | मस्या भक्रफ विमाय लहेरल भालत्वत्र मा- | | | |
| নারন্ত, বশিশুরূপে ধর্মের বিশ্বামিত সমী- | | | | ধবী সমভিব্যাহারে ইক্ষাকুবংশীয় হ্র্যাশ্ব | | | |
| পে আগমন-পূর্বাক অন্ন প্রার্থনা ও তদীয় | | | | নরপতির নিকট গমন · · · · | २०५ | ₹ | 22 |
| ভক্তি পরীকান্তে তৎ প্রতি ব্রাহ্মণত্ব প্র- | | | | হ্র্যাশ্রাজের শীলব-প্রার্থনীয় অই শত | | | |
| मान, निया शामरवर् स्थानाम श्रीष हरे- | | | | অশ্বের মধ্যে ছুই শত মাত্র থাকায় ভদ্ধি- | | | |
| য়া বিশামিত্রের বিনা দক্ষিণায় তৎপ্রতি | | | | নিময়ে মাধবীর গর্ম্ভে একটি মাত্র পুত্র উৎপন্ন করিবার প্রতিজ্ঞায় তদীয় পাণি- | | | |
| शृह-गमनारमण धदः छमीय निर्दास मर्ग- | | | | अर्ग क्र कार्य छाउड्डा उमार मान- अर्ग क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र क्र माध्यी- | | | |
| নে ক্লম্ট হইয়া এক দিকে শ্যামকৰ্ণ-যুক্ত | | | | क नहेश भानत्त्र अञ्चान | 3.3 | _ | |
| অফ শত ঘোটকের প্রার্থনা ··· ··· শুরুর অভিলয়িত দক্ষিণা দানে আপ- | 292 | > | २७ | भाधवीरक लहेशा शांलरवं मिरवांमांम छु- | 404 | ર | y |
| নাকে অক্ষম বোধ করিয়া গালব খযির | | | | পতি-সমীপে গমন এবং তাঁহার অশ্ব- | | | |
| वांतरवांत आध्यान अपूर्व हेन्द्र हेन्द्र व | | | | শালায় অভীষ্ট অশ্বের ছুই শত মাত্র থা- | | | |
| কৃষ্ণের শরণাপন হইতে ইচ্ছা হওয়ায় | | | | কায় তদ্বিনিময়ে সাধবী-গত্ত্বে এক পুত্ৰ | | | |
| সহসা ভাঁহার সমীপো গরুড়ের আগমন | | | | উৎপন্ন করিবার নিয়ম নিরূপণ করিয়া | | | |
| ও আশ্বাস প্রদান • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | 225 | 2 | 5. | তাঁহার হত্তে মাধবী সমর্পণ \cdots \cdots | २०७ | 5 | \$ |
| স্বামি ভৌমার প্রিয়-কার্য্য সাধনার্থে বে | | ` | | মাধবী সহিত গালবের উলীনর নরপতির | ` | | • |
| मित्क यांदेख हेन्हां कर महेशा यांदेव, | | | | নিকট গমন এবং পুর্ব্বোক্ত নরপতিদি- | | | |
| এই दलिया शांसर मभीरम शक्र एक शूर्य | | | | গের ন্যায় নিয়মান্ত্রসারে তাঁহার নিকটে | | | |
| पिटक्द्र दर्शन ··· ··· ··· ·· | ১৯৩ | ર | >> | মাধবী সমর্পণ এবং নিয়মান্তে কন্যা লই- | | | |
| ञ्रू भर्ग-कर्जुक मक्तिग मिरकद्र दर्गन ··· | >>8 | 5 | ૭૨ | য়া প্ৰস্থান \cdots 👱 \cdots \cdots \cdots | ঐ | ર | २ |
| স্থপর্ণের পশ্চিম ও উত্তর দিখিষয়ক বর্ণন | | > | à | গরুড়ের পরামর্শক্রমে গালবের বিশ্বামিক | | | |
| গালৰ পূৰ্ব্য দিকে যাইতে ইচ্ছা করিলে | | | | সমীপে ছয় শত অশ্ব প্রদান এবং অবশিষ্ট | | | |
| তাঁহাকে স্বীয় পৃষ্ঠে লইকা গৰুড়ের আ- | | | | ভূই শত অশ্বের পরিবর্ত্তে যাধবীর গত্ত্তে | | | |
| কাশ-পথে উৎপতন এবং গালবের অ- | | | | এক পুত্র উৎপাদন করিবার নিয়মে মাধবী | | | |
| তান্ত ভীক্ষতা ও কাডৰতা দৰ্শনে শ্বত | | | | সমর্পণ-পূর্বাক ভাঁহার নিকট অঞ্চণী হই- | | | |
| লৈলে বিশ্রাম করিবার পরামর্শ ··· | >29 | ર | २२ | য়া তপন্যায় প্রস্থান \cdots \cdots | २०४ | र | ₹• |
| গালৰ সদভিব্যাহারে গদ্ধুড়ের ঋষভপর্ব- | | | | ষষাভিপুত্র পুরু ও ষত্ব পিতার আদেশে | | | |
| তে অৰ্কাহণ ও গাভিনী নালী তপস্- | • | C | | ষাধৰীর পুনঃ কয়ম্বরার্প তাঁহারে প্রয়া- | | | :. |
| শীর নিকট সিম্বারাসি ভোজন-পূর্বাক | | | | গাঁশ্রম পদে লইয়া গিয়া বরাচ্ছেবণে | | | |

कृष्ठी शब्

| | | - | | | | |
|--|----------|--------------|---|-------------|----|----------|
| शकद्रव · · · · · गुरु | ख | ুপু ছব্দি | धकरण क्रिक्ट मुक् | 41 | | |
| প্রবৃত্ত হইলে মাধবীর অন্য বর বরণে | | 7. | वसक छेक्तिः विष्कृतवाद्या गुल्ला प्रदर्शा- | * 17 | | |
| অনিছা-হেতুক অরণ্যবরা হইরা তপস্যার | • | | ধনকে সভায় আনাইছ ভাষাৰ প্ত- | • | | |
| মনোভিনিবেশ এবং ব্যাতিরাক্তের স্বর্গ- | | | রাট্রের ভংগনাঃ বিইনের পুন্ধনাহার | ķ. | | |
| গমন, দিব্য-স্থ-সদ্তোগ ও পরিশেষে গ- | | | कोर्जन-श्रुक्तक प्रार्थाधनश्रुष्ठि प्रश्राम | े २२ ऽ | 3 | 56 |
| ক্ষাভিভূত-চিত্ত হইরা স্বর্গবাসিদিগকে | | | অউহাস-সহকারে ভূতগবান্ বাস্ত্রেরের | | | |
| | २०৫ | २ २४ | 🏻 কীরব-সভায় বিশ্বরূপ প্রদর্শন ও কবি- | | | |
| ক্ষীণ-পুণ্য ব্যাতিরাক্ষের স্বর্গ হইতে নৈ- | | | গণের অভুজাক্রমে কৌরব-সভা হইডে | | | |
| মিষারণ্যে প্রতর্জনাদি যাগশীলু নৃপ-চতু- | | | প্রস্থান | २२8 | ۶, | ٥ د |
| ঊয়-মধ্যে নিপতন এবং স্বীয় কন্যা মা- | | | সাক্ষাৎকারার্থে কৃষ্ণের কুন্তী-সমীপে গ- | | | |
| थवी ও দৌহিত্র-ভূত উক্ত নৃপ-চতুষ্টয়ের | | | मन এবং कृष्ठ-मभीत्म कुछीत यूरि छिन्नत्क | | | |
| | २•७ | २ २ २ | | | ર | b |
| য বাতি-জিজা সায় তৎপ্রতি ব্রহ্মার অভি | | | কুন্ডীর বিছলা-সঞ্জয়-সংবাদ-কথনারম্ভ · · · | २२१ | 5 | ও - |
| মান-দোষ বর্ণন-পূর্ব্বক ছিভোপদেশ এবং | | | কুন্তীর কৃষ্ণের দ্বারা পুত্রগণের প্রতি দ- | | | |
| গালব-চরিত বর্ণনাস্তে দেবর্ষি নারদের | | | ्रात्मा-८श्रव | २७६ | ર | २ऽ |
| নির্বন্ধাতিশয় ও কোধাভিমানের দোষ | | | কৃষ্ণ প্রতি কুন্তীদেবীর কথিত বাক্য-সকল | | • | |
| প্রদর্শন-পূর্বাক ছর্ব্যোধনের প্রতি তত্তদ্বি- | | | प्टर्यगाधन-मभील विकाशन-पूर्वक ७९- | | | |
| | २•৯ | 5 c | | | | |
| ধৃতরাষ্ট্রের অন্থরোধে কৃষ্ণের সন্ধি-স্থাপ- | , | | বার অন্তরোধ এবং রাজপুর-সংঘটিত | | | |
| নার্থ ছর্ব্যোধনের প্রতি উপদেশ | .२५० | > >> | 5/2 | | | |
| কৃষ্ণ-বাক্যে অন্থমোদন-পূর্ত্মক ছুর্য্যো- | • | | পক্ষের পরাজয়-সম্ভাবনা-কথন · · · | २७१ | > | 59 |
| ধনের প্রতি ভীষ্মাদির উপদেশ · · · | २ऽ७ | ১ ২৯ | 1 | | | |
| ভীষ্ম ও ক্রোণের পাগুবদিগের পরাক্রম | | | বাদ-কথনারম্ভ; কর্ণের প্রতি কৃষ্ণের পা- | | | |
| উল্লেখ-পূর্ব্বক ছর্ব্যোধনের প্রতি সন্ধি- | | | छर-अकारमध्य अञ्चाराधे | २७৯ | 2 | ٠, ٥٠ |
| <u> </u> | २ > 8 | २ ১৮ | | | | |
| ছুর্য্যোধনের স্থীয় নিরপরাধত্ব সপ্রমাণ- | | | অস্বীকার এবং ছর্ম্যোধন-পক্ষে থাকিয়া | | | |
| পূর্ব্বক কৃষ্ণের প্রতি উত্তর-দান ও পাণ্ডব- | | | যুদ্ধে দেহপাতান্তর স্বর্গগমনের অভিপ্রায় | | | |
| দিগকে রাজ্যাংশ না দিবার অভিপ্রায়- | | | প্রকাশ | ₹8• | ર | २२ |
| প্রকাশ | २५७ | २. १ | কর্ণের প্রতি অমুযোগ-পূর্ব্বক কৃষ্ণের | | | |
| কৃষ্ণ সরোধে তিরস্থার করিলে ছুর্য্যোধ- | | | युष्क्षत्र मिन निर्कातन | २8७ | 5 | ₹ 8 |
| নের স্থামাত্য-বর্গ-সমেত সভা হইতে নি- | | | क्छ-मगील कर्नत्र ष्ट्र्र्याधन-त्राक्रधानी- | | | |
| র্গান এবং কৃষ্ণের ছুর্ব্যোধনকে সংযত | | | মধ্যে স্থপক্ষের পর্ক্য-স্চক ছর্নিমিত্ত | | | |
| করিবার নিমিত্ত কৌরবগণের প্রতি উপ- | | | मकन वर्गन | ₹88 | > | २ऽ |
| C可叫 ··· ·· ··· ··· | २ऽ७ | २ २७ | বিছুর নিকটে কুরুপাগুবদিগের সঞ্জি না | | | |
| ধৃতরাষ্ট্রের আদেশে গান্ধারীর সভার আ- | | · | হওয়া প্রবণে কুন্তীর চিন্তা এবং কর্ণকে | | | |
| र्गमन विदः भाखि-शांभन-मानतम हर्स्गा- | | | পাণ্ডব-পক্ষাবলম্বন করাইবার মানসে ত- | | | |
| ধনকে সভায় আনয়ন-পূর্বাক ভাঁহার প্রক্রি | | | দীয় জন্মবৃত্তান্ত বিজ্ঞাপন করিয়া ভাড়- | | | |
| डेशराम | २১৯ | > >> | গণের সহিত সিলিত হইবার অম্বরোধ | २ ८७ | 5 | २৯ |
| গান্ধারী-বাক্যে অনাদর-পূর্ত্মক হুর্ব্যো- | · | | কুন্তী-বচনে কর্ণের অস্বীকার এবং " অ- | | | |
| धानत मछ। इटेडि निर्श्यन धवः कृष्टक | | | 🕳 ন-ভিন্ন আপনকার অন্য পুত্রচতু ইয়কে | | | • |
| वक्त ब्राथिवात छत्मत्म कर्न-मकूनगोमित | | | বিন্ট করিব না " এইরূপ প্রতিজ্ঞা | ₹8৮ | २ | ર્∙ |
| সাঁহিত মন্ত্রণা ; উক্ত ছর্মান্ত্রণার বিষয় বি- | | | সৈনানির্যাণ-প্রকরণারস্কে, বুং ভিরেরজি- | | | - |
| দিত হইয়া সাত্যকির কৃতবর্মার প্রতি | | | জ্ঞানায় কৃষ্ণের, কৌরব-সভায় ভীষ্মদো- | | | |
| বাহিনী-বোজনা করিবার আদেশ ও স- | | • | नामि-कर्कुक छूर्यगाधन माखियानन-निव- | | | |
| ठाइटन भगन-शूर्वक कृत्यत्र निकट वि- | | | ন্নে বেরূপ উপদিউ হইয়াছিলেন, তৎস- | | | |
| জাপন; ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি কৃষ্ণের তদ্বি- | | | मूणारमन निकान वर्ग श्रदर्गा- | | | |
| | | | 1 m | | , | _ |

स्ठी भवे।

Y.

| | E S | 19 | খুজি | शक्त्रण गृष्ठे | र इ | 9 | হৈছি |
|--|---------------------|-------------|------|--|--------------|----------|------------|
| যুদ্ধ ছয়ভিপ্ৰায়-নিবৰ্ম যুক্তমান | | | | ও অতিরধের সম্ব্যা-কথন ··· ·· | ₹ | २ | ₹• |
| भ :बरमा डारिष्-क्थ म | ₹6. | | 21 | कर्गरक अर्फात्रथी विलय्ना निर्द्धम क्यांग | | | • |
| श्य-राका धावरण क्रिकित्वत कीगापि | • | | ,, | ভীদ্মের সহিত কর্ণের বিবাদ · · · · | 345 | > | २७ |
| প্রতি দেনা বিভাগ ক্রিবার আবেশ এবং | | · | | ভীত্মের পাণ্ডব-পক্ষীর রধাতিরধ-সম্বাা- | | | • |
| সেনাপতি নির্দ্ধারণ-পূর্বক পাওবদিগের | i | | | বর্ণন ও শিখাগু-হননে অসন্মতি-প্রকাশ | 4 59 | > | ٦ |
| সলৈনো কুরুক্তেতে বাতা ু 😶 🕬 | *2 ¢9 | > | ₹8 | অছোপাখ্যান প্রকরণারত্তে ছুর্য্যোধন- | | | • |
| ছুর্যোধনের আদেশে যুদ্ধানীকভিত | • | | | কর্ত্তক কিজাসিত হইয়া ভীত্মের শিখ- | | | |
| কৌরবপক্ষীয় রাজগণের শেক্ষা প্রকাশ | २७• | > | ¢ | তীর স্ত্রীপূর্বাস্থ-বৃত্তান্ত-বর্ণন-প্রসম্ভ্রু কাশি- | | | |
| সংশয়-নিরসন-মানসে স্থাকিক প্রতি যুধি- | • | • | | ब्राज-इहिंछा अश्रोपित विवाह धवर मयल | | | |
| बितात प्र-विवास कर्जुं कुरा किया- | | | | রাজগণের পরাভব-ছারা স্বীয় পরাক্রম- | | | |
| সায় বাস্থদেবের যুক্তিপুর্ক সম্মতি প্র- | | | | প্রকাশের বিবরণ বর্ণন • • • • • • | २ २ ० | ર | > |
| কাশ এবং তবিবয়ে বিশ্বুনের অহুমো- | | | | অয়ার শালুরাকের প্রতি পূর্ববাহরাগ | - | | |
| मन | २७১ | ર | ٥. | প্রকাশ করাতে তাঁহার প্রতি ভীম্মের | | | |
| ছুর্যোধনের স্বপক্ষীয় সৈন্য-বিভাগ ··· | २७२ | ₹* | २• | भान मगीरश शमनारमभ : मानू-कर्द्धक | | | |
| ছুর্য্যোধনের প্রার্থনায় ভীন্মের তদীয় সৈ- | | | | প্রত্যাখ্যাত হইয়া অন্বার তপোবনৈ | | | |
| নাপত্যভারগ্রহণেস্বীকার এবং কৌরব- | | | | গমন এবং ঋষিগণ-সমীপে ভাপসী হই- | | | |
| বৈদ্যগণের কুরুক্তেতে বাত্রা · · · · · | २ ७8 | ۶ | >> | বার ইচ্ছা প্রকাশ \cdots \cdots | २৯১ | > | 62 |
| বৃধিষ্টিরের অভ্জাক্রমে ক্রপদ ও বিরাট- | | | | অম্বার কর্দ্তব্যতা-বিষয়ে তাপসগণের ম- | | | |
| ্ প্রভৃতির সৈনাপত্য-পদে অভিবেক এবং | | | | ন্ত্রণা এবং তাপস্গণ-সমীপে রাজর্ষি হো- | | | |
| বলরামের পাওবগণ-সমীপে আগমন ও | | | | ত্রবাছনের আগমন, স্থীয় দৌছিত্রী অ- | | | |
| যুদ্ধে উদাসীন থাকিবার অভিপ্রায়ে সর- | | | | ষার পরিচয় পাইয়া ভাষার প্রতি ছংখ- | | | |
| স্তী-তীর্ষে প্রস্থান · · · · · · | २७७ | ર | >• | প্রতিকারের উপদেশ ও তৎকাল-সমাগত | | | |
| মুজে সাহায্য-ক্রণ-মান্সে ক্রিবাজের | | | | ভাগ্ব-সহচর অকৃতত্রণ-সমীপে দৌহি- | | | |
| দলৈন্যে পাগুৰদিগের নিকট আগমন, | | | | তীর বিবরণ-বিজ্ঞাপন · · · · · | २৯७ | ₹ | २६ |
| ত্ৰা হইতে প্ৰত্যাখ্যাত হইয়া ছুৰ্যোধন- | | | | অমার প্রতি অকৃত্তণের পরশুরাম-ছারা | | | |
| নিকটে গমন এবং ভাঁহার নিকটেও প্র- | | | | বৈর-নির্যাতন করাইবার উপদেশ প্রদান: | | | |
| ত্যাখ্যান পাইয়া যথা-স্থানে প্রস্থান | 586 | ₹ | 60 | তাপসগণ-সমীপে জামদপ্ল্যের গমন এবং | | | |
| ধৃতরাষ্ট্-জিজাসায় সঞ্চয়-কর্ত্ত কুরু- | | | | অমার ছংধ-বৃত্তান্ত প্রেবণে ভীম্ম-শাসন- | | | |
| भाखवन्नदा स्मा-निर्वेश-केथन ··· | २७৮ | >. | 62 | বিষয়ে অঙ্গীকার-পূর্ব্বক কুরুক্কেত্রে প্র- | | | |
| मञ्जा-श्राम इर्याधन-कर्क्क मिछा- | | | | হান | २५७ | > | 30 |
| कार्या विश्लीकर्ण ও वक्तवा विवस्त्र छन- | | | • | ভীম প্রতি পরগুরানের আহ্বান ও অম্বা- | | | |
| দেশ প্রদানানম্ভর উল্কের পাওবলণ- | | | | গ্ৰহণে অন্তরোধ এবং ভদ্বিবন্নে ভীছের | | | |
| नमीरन रश्चन \cdots | <i>र</i> ७ ৯ | ۶. | >> | অস্বীকারে উভরের করোবিংশ দিবস- | | | |
| উল্দের পাওব-সভায় গমন ও ছুর্য্যো- | | | | रागि यूटकद आदेख · · · · | २৯৯ | > | > |
| थरनोक वाका-मकरमद्र अञ्ची ईन-श्रुक्तक | | | | ভীমের স্বপ্নবোগে বস্থগণোপদিউ প্র- | | | |
| शास्त्रवाहात केनामा । | २ १ 8 | ર | > | স্থাপনাস্ত্র-প্রয়োগাছি পরিজ্ঞান ··· | 9.9 | > | 2.0 |
| পণ্ডিবগণের উল্কোক্ত প্রত্যেক বাক্যের | | | | পর দিন যুদ্ধ সময়ে প্রস্থাপন অন্তের স্- | | | |
| উত্তর প্রদান এবং পাণ্ডব-সভা হইতে উলুকের প্রত্যাগমন ও ছুর্যোধনের নি- | | | | स्नात्नाशकत्य एमत ७ स्वतिभग-कर्जुक छी- | | | |
| and an explanation was | | | | ন্মের নিবারণ ; অন্তের প্রতিসংহার দে- | | | |
| পাগুৰগণের युक्त-वांका এবং ধৃউত্নাম- | २१७ | > | 9. | विशा कामन्द्रशांत चमूर्य शतांकत्र श्री- | | | |
| कर्कुक रवाधभारतम् अिष्किन्नि-निर्कातन- | | | | कांत्र अवर रमव ও शिज्नेश-कर्जुक निवा- | | | |
| शूर्वक रेमिक-विভाগ | 31. • | | | রিত হইরা উভরের বৃদ্ধ হইতে নিবৃত্তি | 6.0 | ર | २ % |
| तथांजित्रथनस्थान अक्तर्रं इर्द्याधन-कि- | २৮১ | • | २२ | রামের ছারা ভীছোর প্রতি বৈর-নির্যাভন | | | |
| लागात जीवा-कर्जुकः कोत्रद-भक्तीत द्रश | | | | করিতে না পারিয়া অহার পুনরার তপো- | | | |
| Determine the second of the second se | | | | बरन भवन-शूर्वक छेश छलना । । भना- | | | |
| | | | | | | | |

स्हीभव।

| ख षु | 2 | ভূকি | ्रथ्यत्रव ेन्यः स्ट स्ट्रियुर | |
|-------------|-------------------|------------------|---|--|
| ৩১• | > | ें २० | | |
| , | | | বরণ প্রবণে কোপারিট হবুর প্রতি | |
| 955 | ₹ | ৩২ | निथंधीत जीवन काल अवस्य क्रीडाटक | |
| | | | चरदान-क्रथ गाथ श्रीम-पूर्वक व्याद्ध | |
| | | | श्रदान ग्रहें १००० २ | ৬৬ |
| ७५२ | 2 | २० | শিখণ্ডীর পূর্ব্ব প্রতিক্রান্থলারে পুর্বত্ত- | • |
| | | | প্রতিপ্রদানার্ধে হুণ বক্ষের নিক্ট গমন | |
| | | | | |
| | | | য়া তথা হইতে হুইচিত্তে স্থনগরে প্রভাা- | |
| | | | গমন · · · · · · · · · ৩১৮ ২ | > 6 |
| | | | শিখন্তীর স্ত্রীপূর্বাদ্ধ বর্ণনাম্ভে ডদীয় বি- | |
| | | | নাশ-বিষয়ে ভীত্মের অস্বীকার `** ৩১৯ ১ | >8 |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | ٠. |
| ৩১৩ | ર | 9 | যুধিষ্টির-জিজাসায় অর্ক্তনের কোরব- | |
| • | • | | | |
| | | | | 58 |
| | | | | |
| • | | | | b |
| | | | | |
| ७১१ | 5 | 52 | | 3b - |
| - • | - | - • | | |
| | 93° 933 933 | 93.9 2 93.9 2 | 950 2 q | প্রথা প্রবাদ বিন্দ্র বিন্দ্র প্রথা প্রথা প্রথা প্রথা প্রথা প্রথা বিন্দ্র বিন্দ্র প্রথা প্রথা করিব করিব করিব করিব করিব করিব প্রথার করিব করিব প্রথার করিব করিব বিরিদ্ধার করিব করিব করিব করিব করিব করিব করিব করি |

উদ্যোগপর্ফের স্থচীপত্র সমাঞ্জ।

মহাভারত।

উদ্যোগপর্ব ।

रेनदनगटक्यांत्र धक्त्रव ।

নারারণ, নর, মরোজম, দেবী সরস্বতী ও বেদব্যাস-কে নমকার করির। পুরাণাদি কীর্ত্তন করিবেক।

বৈশস্পায়ন কহিলেন, যুধিষ্টিয়-প্রভৃতি কুরুপ্রবীর-গণ বনুৰাশ্বৰণ-সমজিব্যাহালে মহানদ্দে অভি-সম্ভার বিবাহ-কার্যা সমাধান করিবার পর রজনীতে বিজ্ঞান করিয়া পর দিন প্রভূবে প্রীতি-প্রকৃলমানসে বিরাটের সভাভিষুখে গমন করিলেন। রাজর্জ্বগণ नकरलरे मरनाপिखत तारे स्नाम्बिमानिनी, উख्य-মণি-রত্মচর-চিত্রিতা, বর্ণাযোগ্য স্থানে বিন্যস্তাসনা, পুষ্পমান্য-নিচরে উপশোভিতা, ক্লচির-সৌরভবতী মনোহারিণী সভার সমাগত হইলে, অগ্রে নরেন্দ্র বিরাট ও দ্রুপদ আসন পরিগ্রন্থ করিলেন, পশ্চাৎ সহিত রাম ও জনার্জন আপন আপন উপযুক্ত আ-সনে উপবিষ্ট হইলেন। শিনিপ্রবীর সাত্যকি ও (बाहियी-सम्बन बनाएर), हेरीत्। পाक्षानताच क्रशास्त्र नमीटम अबर क्रूक ७ यूथिछित मध्नापिटमत मिर्मात व्यवद्यान क्षित्रक्ता। किंद्रिय क्षेत्र क्षित्र क्षित्रहान श्रृक्षत्रंभ, कीम, चर्क्यून, नकुन ७ नश्रात्र, चान्न चना দিকে শাহ, প্রান্ত্যার, বিরাটরাজের পুরাগণ, অভিমন্ত্রা এবং পিডুডুল্য শৌর্যা বীর্ষ্য ও স্বপসম্পদ্ম ভৌপদীর পঞ্চ মঞ্জন কুমুৰ্ণচিক্তিত উৎফুক্ট আসনে উপবেশন क्रीप्रकार । केम्ब्रुवारमकोक्सक्रक्रकृतिक औ नमक महा-त्रपंत्रन क्रवांत्र केलविके रहेक्त, अवरे/महक्षिनकी प्राप-

নভা নির্মাল-গ্রহ্মানি-বিরাজিত নভোষগুলের নাার পোভিতা হইল। অনন্তর দশ ক্ল একল সমবেত হইলে বেরপ সন্তাবণ হইরা থাকে, নভাছ পুরুষ-প্রবীরপণ পরস্পর ভাছৃশ বছ প্রকার সমালাপ করিরা পরিলেবে ক্লম্পের প্রভাব প্রতীক্ষা করত মুহুর্তকাল চিন্তা করিছে থাকিলেন। তথন বাস্তুদেব
ভাহাদিগের বাক্যাবসাস-রপ অবসর প্রাপ্ত হটরা
পাওবগণের কার্যাসাধনার্থে সেই সমবেত রাজসিংইদিগকে সবিশেব নির্মাল-সহকারে অন্তুরোধ করত
মহার্থসুক্ত ও মহাকলোপধারক বহনারলি বিন্যাস
করিতে আরম্ভ করিলেন এবং তাঁহারাও একাগ্রচিত্তে প্রবণ করিতে লাগিলেন।

কৃষ্ণ কহিলেন, হে নরেপ্রগণ! প্রবলনাজ-পুঞ্জ
শক্নি দ্যতক্রীড়ার যে প্রকারে এই যুধিন্তিরকে পরাজিত করে, যে রপ কাপটা-ঘারা ইহার রাজ্য হরিরা
লর এবং ইহাঁকে প্রবাসিত করিবার অভিপ্রারে পুনর্কার বে রপ পণ নির্দারণ করে, সে সকলই আপনাদিসের বিদিত আছে। এই সহামুজার পাতু পুজগণ বদিও নিজপরাজ্যম-সহকারে পৃথিবী জর করিতে সমর্থ, ভ্যাপি সভ্যা-নিউভা-বেডুক সেই প্রতিজ্ঞাত উপ্রভ্রত প্রতিপালন করিছে বাধ্য হইরা ল্ল্ড্ররবে আরোহণ-পূর্বক কোন প্রকারে এই ক্লান্তান্দা
বর্ষ কালাক্রিণ হইরা আনিক্রান্ত্র ক্লিরা বহুবহুরের ইহারা সকলের প্রথাক্ত কাক্রিয়া বহু-

हर्ष काशुनामित्रात्र निक-िटे व्यक्तिकश्**रदेशस्त्रकः** काराकः वालनातिरशत व्यविष्ण नारे । बीहा । त्रेष्ट्रम राष्ट्रियन-मण्यत्र बरी-রাদ্ ব্যক্তিদিগকেও পরের আজাবহ ভূতা হইরা কত কভেই ঐ কাল-স্বৰূপ এক বৰ্ষ কাল অভিবাহিত করিতে হইয়াছে! এৰপ অবস্থান্তে ধর্মতনয় যুধি-ক্টিরের ও ছুর্বেনাধনের বাহা হিতকর এবং কুরু পা-ওৰ উত্তর পক্ষেরই ধর্মাবহ, ন্যায়া ও বশক্র হয়, ভাহা আপনারা চিত্তা করুন। এই ধর্মরাজ অধর্ম সাচরণ-যারা যদি দেবভাদিসের রাজ্যও প্রাপ্ত হই-(क शास्त्रन, खशांक छाराटिक खिलाव करहन ना ; পরস্ক কোন এক সামানা আমের উপরেও ধর্মার্থ-যুক্ত জাবিপতা লাভ করিতে ইক্ছারাখেন। গৃত-রাষ্ট্রের পুজেরা যে ৰূপে ইহাঁর পৈতৃক রাজ্য অপ-হরণ করিয়াছে এবং তাহাদিগের মিথ্যা প্রবঞ্চনার ইহাঁকে যাদৃশ অবিষয় কট পাইতে হইয়াছে তাহা শমত নরাধিপেরাই জানেন। যুধিষ্ঠিরের কভ দূর মৌজন্য বেখুন, ছুর্যোধন ও তাহার ভ্রাতৃগণ স্বকীয় তেক প্রকাশ-পূর্বক সন্মুধ-সংগ্রামে ইহাঁকে পরা-লিত করিয়াছে, এমন নছে, কেবল কপটতা-দারাই बाब शब बारे क्रिन रिवाटर, उथाशि रेनि स्क्लाएनव महिक छाशक्तिरभन्न कमार्गिर रेक्टा कन्निरक्टन। পूक्तन-अनीत शालू-जनरतता निजयां हरण-महकारत মদেৰ ভূপানর্ন্দকে পরাভূত করত বে রাজ্য খ্রং দঞ্চিত্র করিরাছিলেন, এক্ষণে কেবল তাহাই প্রার্থনা করেন ; পরত ইইানিলের সেই উএস্বভাব অসম্বৃত্ত প্ৰক্ৰাণ কেবল বাজাহরণেই অভিলাখী নহে, ঐ অস-প্ৰাৰ্থাৰ বিশ্ব করিবার নিবিত ইহাঁদিপের বাল্য-কালাৰ্থি ৰছন্ত্ৰিৰ উপাত্ত ভাৱা জীবন হরণ করিতেও त्य आरोकिक क्षेत्राम् ७ वर्षे छात्र छात्। सम्पूर्न-कार यानवानिक्या विकास माहर माठवर छाहा-जिल्ले त्यरे अहर जान मुख्यिता प्रशासका कर উত্তৰ কৰেন কৰিছে স্থাতনালৰ কৰিছে। সাধায়ায়।

वृत्तीनर ७ गृंबक् शुक्क बाह्या वसन्। सक्क बाह्य नित्र । शांधु-नन्दमभग वथा नित्रहम व्यक्तिका-भागम করিয়াও ধনি শভাপর নেই হতরাই-পুতার্থন অবঞ্নাজালে আবন্ধ হুইবার উপক্রম সেবেন, তবে ভাহাদিগের সকলকেই সমর-প্রার পরার করি-বেন। তাহাদিদের পরাভববার্তা অবংগ বদি লা-ত্মীয় স্থল্বৰ্গ সাহায্যাৰ্থে সন্মাগত হইয়া ভাহাদিয়ের সহিত মিলিত হয় এবং যুক্ক-ছারা ইইাদিগকে বাধা দিতে চেন্টা করে, তাহা হইলে ইহারা অথ্যে ভাহা-দিগের কর্তৃক বধ্যমান হইয়া পশ্চাৎ তাহাছিয়কেও নিহত করিবেন। অপিচ আপনারা বদি একপ জা-শহা করেন যে, তাহারা বছল বলে পরিবৃত হইলে हेराँद्रा जल्ल हरेबा किथाकाटक छारासिगटक जन করিতে পারিবেন? ভবে ইহাঁরাও স্বকীয় স্কুলাণের সহিত মিলিও হইরা ভাহাদিগের বিনাশার্থে বতু করিবেন। পরন্ত মূর্য্যোধনের মত কি, কিৰপ অমু-ঠান করিতে তাহার ষত্ন হইবে, তাহা নিশ্চিতৰূপে জানা যাইতেছে না; প্রতিপক্ষের মত না জা-নিতে পারিলে, আপনারা কোন্ কর্ম আরম্ভ করা উচিত বোধ করিবেন? অতএৰ আমার বিবেচনার অত্যে এখান হইডে কোন এক জন ধৰ্মশীল, শুচি, সংক্লজাত দাবধানী ও কাৰ্যক্ষম পুৰুষ দৃত-স্বৰূপে তাহাদিগের সহিত সন্ধিবন্ধন-দারা যুধিন্ঠিরকে রা-জ্যার্ক্ক প্রদান করাইবার উদ্দেশ্ধে শ্বমন কর্মন। 💛

হে রাজন্! জনার্দনের এইবণ পক্ষণাত-খুনা, ধর্মার্থযুক্ত ও মধুর বাকা আবণ করিয়া ভালীয় অঞ্জ জাত বলদেব উহার অভান্ত প্রশংসা করত জাপন মত ব্যক্ত করিতে প্রয়ুছ হইবেন

क्ष-श्वादन श्रवम व्यवास नमास्य ११

En Maria Harris Company of the Compa

वनारण्य कविरणनः रक् यदीशामानः। साशनाताः अशोधाण झरकत पर्वार्षसूक वाकः व्यवत कविरणनः ; हेरा सुनिर्दितः ७ अर्ज्यापनः क्षेत्रसम्बद्धः स्थितः। वीर्यानानी कृष्टिन्युरकातः संस्थाः नामभावः अर्थनाः।

इंग्लेक्सरक प्रानंक पहिला प्रशास बाल स्टेबार विक्रिक कर कहिल्लाक्य, कक्टा प्रकार कृमात टारे वर्षकार हेरी क्रिकेटक असान क्षित्र व वाहारि छक्-ক্ষান্তের স্থানি ক্ষান্ত লাভি করি-त्र माञ्जम, अवर भूक्त्ववादीत भाषद्वता । ताना লাভ করিয়া (প্রতিপক্ষণ সমাক্ষণে সন্ধিয় নির্ম প্রাত্তিপালন করিলে) প্রালান্ত-ভাবে অবলাই স্থামু-ভৰ করেন। এৰপ হইকো কেবল কুৰু পাওবদিপের বিরোধ শান্তি হয় এমন নহে, তদ্বারা প্রজাপুঞ্জেরও भन्नम छेभकांत मदर्ज। चन्छवन देशामिटभन भन्नमान विवाद भावित निविद्ध पूर्वाधितत्र अधिकात छा-নিতে ও তাঁহার নিকটে যুখিটিরের বজবা বাক্য কহিতে কোন ব্যক্তি তথার পমন করিলে আমার প্রীতি করে। সেই ব্যক্তি কুরুসভার উপস্থিত হইয়া বংকালে কুরুপ্রবীর ভীয়, মহামুভব শৃতরাষ্ট্র, জোণ, व्यथामा, विष्टुन, ऋश, अकृति, कर्ग ७ व्यथ्टमं व्यव-হিত বলপ্রধান নীতিপ্রধান বছদর্শী লোক-প্রবীর ধৃতরাষ্ট্র-পুদ্রগণ এবং যাবতীয় পৌরজন ও প্রাচীন-বৰ্গ ভথায় সমৰেত হইবেন, সেই সময়ে সকলকেই সৰোধন-পূৰ্ব্বক যাহাতে যুধিষ্ঠিরের প্রয়োজনসিদ্ধি হর, এৰপ নত্ৰতা-স্কৃতক বাক্য বিন্যাস করুন। সম্প্র-ভিকোন অবস্থাতেই তাঁহাদিগের কোপোৎপাদন করা হইবে লা; কেননা তাঁহারা বলাশ্রর করিয়াই যুখিন্ঠিরের অর্থকান্ত হত্তগত করিয়াছেন। যুখিন্টির প্রেমাম্পদ দ্যুতক্রীড়ায় প্রমন্ত হইয়া আপনিই আ-পনার রাজ্য হারিরাছেন। দ্যুত বিষয়ে বিশেষ পার-দৰ্শী না হওয়াতে সমস্ত হহালাণ-কর্তৃক নিবারিত क्रेरल इति शानकुमन मक्रिक कीज़ार्य चा-ক্ষান করিন্নীছিলেন ৷ যুধিছির বাঁহাদিগতে পরা-क्रिक क्रिक्ट भारतम्, अवन महा महा हरतानत-द्वती खराह विद्यानाम हिरणम, क्लि जैहानिनदक शतिकाच अदिश देनि प्रतन-शुक्रावरे पृष्टकीयात्र THE PERSONAL WASTERS THE PINT The organization of comments of the large-

ক্ষাতিই ক্লি ক্ষাতিক ক্ষাতিত হুইছে লাগিল, তথন ক্রোধের বাণীভূত হুইছা বুলি আপনা হুইছেই তাঁহার নিক্টে পরাজর প্রাঞ্জ ক্ষাত্র ক্ষাত্র আপনা হুইছেই তাঁহার নিক্টে পরাজর প্রাঞ্জ ক্ষাত্র ক্ষাত্র নিক্টে পরাজর প্রাঞ্জ ক্ষাত্র হুইছে পারে না। অতথব বে ব্যক্তি দূভ হুইয়া ভবার গমন ক্রিবেন, তাঁহাকে অবপাই প্রণত হুইয়া গুতরাই-সমিধানে বহুতর সাজ্বাদ প্রয়োগ ক্রিভে হুইবে। একপ ক্রিলে তিনি স্বার্থসাধন বিষয়ে স্বোধনের স্ক্ষতিলাভ ক্রিলেও ক্রিভে পারেন।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, মধুপ্রবীর বলদের এইকপ সম্ভাবণ করিতেছেন এমন সময়ে শিনি-প্রবীর সা-ভাকি ভাঁহার বাক্য শেব না হুইভেই অমনি সহসা গাত্রোত্থান করিলেন এবং ক্রোধ প্রকাশ-পূর্বক ভাঁ-হার সেই বাক্যের নিন্দা করত এই কথা বলিতে লাগিলেন।

वलदन्द-वादका विजीत व्यथात्र ममाश्च ॥ २ ॥

गोजिक कहिएलम, एर रमधन । य शुक्रावन राजन মন তিনি তাদৃশ বাকাই বাবহার করিয়া থাকেন; স্তরাং তুমিও আপন অন্তঃকরণের অমুদ্রপ সন্তা-যণ করিতেছ। সংসাক্তে কাপুরুষ ও শুর, উভয় थकात लाकरे विनामान **जाद्य** ; **उचार्या** य वाङि निष्क राज्ञभ रहा त्म राज्ञ भक्त प्रवाहन करता। ষেমন এক বৃক্ষে কোন শাখা ফলবর্তী ও কোন শাখা অকলা হইয়া থাকে, সেইৰূপ এক কুলে ক্লীৰ ও মহাবল উভয় প্রকার পুরুষই কমিতে পারে। হে মাধৰ ৷ তুমি বে ৰাকা বাকা করিলৈ ভাহার প্রতি আমি অস্থরা করিতেছি না, কিন্তু বাঁহারা তোমার क्षा अवन क्रिटनन काशामित्तव अधिरे जात्रक অহুরা হইতেহে কেননা সভাগণের সমুদ্রাক্রন वाजित्सद्य दक्षान् वाकि नवागरमा चक्रकाके प्रदेश THE TOWNS CHANGE BOOK MINES MICE ? WHIPPER THE MUNICIPAL STREET

जुनात्रमार्थि च चांचानुकि विश्वाचा यूचित्रदेश चा-বান-পূর্বাক পরামার মার্মিয়ারী তথন লার তাহা-निरंगत्र मामक कुंता देशाचीते ? चेनि करे कुठी-जनत নির্মান্দরে জড়িগণের সহিত জীড়া করিতেন, चौत्र সেই সমরে ভাহার। ভখার উপস্থিত হইর। ইইাকে জন্ন করিডে পারিড, তবেই ভাহাদিগের ধর্মত জন্ন করা হইড; কিন্তু তাহা না করিয়া ভাহার। বৰ্ণ ক্ষত্ৰবৰ্ত্তে মিডা নিরত বলাতশক্ত যুবিভিরকে निक्टि चान्तान-शूर्यक वक्ता-बाता चत्र कतिताटह, তখন আর ভাহানিগের পরৰ গুড়াম্পন কি আছে? অপিচ এই বুষিভিন্ন পূতক্রীড়ার মহাপণ নিৰূপণ कतिया अकरन बनवान स्टेट्ड विमुख स्टेतारहन, श्रूड-রাং পুনরার পিতামহের রাজ্যে অধিকার আগু হইর। कि करना डाशिंग्स निकटणे खिनिनाड चीकात कंद्रिटबन ? यपि शत्रथन कामना कंद्रिएकरे रेरीत প্রান্ত হয়, তথাপি তাদৃশ অত্যন্ত শত্রুর নিকটে কোন ক্রমেই যাত্রা করা উচিত নহে। এই কুন্তী-नकरनद्रा यथानिवरम ज्याउ वात्र रहेट उडीर्व रहे-र्लं ३ विश्वा रेहैं। बिर्लंड विकिछ हरेवांत वार्खा अठांत ক্রিভেছে, ভাহাদিগকে আর কি প্রকারে ধার্মিক ও রাজাহরণে অনিচ্ছু বলিরা দ্বীকার করা যার? মহাত্মা ভীত্ব ও জোগ-কর্তৃক অমুনীত হইরাও তাহা-রা বখন পাওবদিনোর স্বকীয় পৈতৃক রাজ্য প্রদান করিতে সমাত হইতেছে না, তখন আমিই সংগ্রা-त्य बाइबन-विकात-पूर्वक छारामिगरक मानिछ-नत-সমূহ-সহফারে অনুনীত করিয়া মহাত্মা কুট্রী-তনরের ছরণভলে নিপাতিভ করিব। তাহাতেও বদি তা-ছারা ধীসম্পন্ন বুৰিভিন্নের নিকটে প্রণিখাত করিতে बाह्य ना रत्र, उद्ध चनाडामरनद्र गरिक निकतरे भवन बेस्टम अवन कतिहर ; दक्तना वर्षाच नरुण CTAN HEAR PARTY PRICE PILE II, CARAN SI-कांका जनाम निवास कुर्यादमन सिन करोड़ तक कार्राक अभवे रहेर्स की। कार्यविद्यत बट्स कार्य कार् सार्क् का विश्वतान पटके छ पुरुष्क स

GIVER VINCER, CAPTER STATE STATE OF रनाम के बामान अने किये अब केन्द्रिक सार्व ? बीरिकारांकी रसाम् रीत नूसर पूर्वन क्रकार्कार नकुण जराबादत कि कलक-कुमान वृक्कारमन जीन-रिष्ठ रहेट्ड गरिन करते? कान् राजिर ना ट्रिनेनीत कीर्डिवर्षन, नवनविधान, भारिकन-मनुन व्यक्तीय-ৰীৰ্যাশালী, মনোহকট পঞ্চি লাভন ভনজের, নৰতের चगत-निकरत्रत्र हानर वर्षसूर्वत इच्छा-नम्बन অভিমন্ত্রার এবং সাক্ষাৎ বসু ও কলানল-সদৃশ প্রচণ্ড-প্রতাশাহিত গদ প্রস্থার শার-প্রভৃতি মহাবহা বীর সকলের সমূধীন হইতে সমর্থ হয়? আমরা সকলেই সমবেত হইয়া শকুনি ও কর্ণের সহিত হত-ताड्र-शूक्रदक विनके कत्रक शास्त्र मन्न युविकित्रदक রাজাপনে অভিযিক্ত করিব। এবপ করিলে আনা-দিগের কোন অধর্মই হইবে দা, কেননা আভভারি-শক্রনিপাতে কিছুমাত্র অধর্মের সম্ভাবনা নাই ; বরং णक-ममीरभ वाद्धा कदारे कवित्रभरनेत्र व्यथकादर उ অবশব্ধর হয়। অতএৰ যুধিন্তিরের বাহা হানত অতীউ, ভোমরা আলদ্য পরিহার-পূর্বাক ভাহাই পূর্ণ করিতে সচেষ্ট হও ; যাহাতে ইনি হৃতরাট্রের পরিতাক্ত নিব রাজা প্রাপ্ত ইইতে পারেন, ভারিব-রেই বত্ন কর। কলত হর যুধিছির একণে রাজ্যলাভ क्दनन, ना रुत्र विशव्यक्ता भनीत भक्तशात्रात्र शत्राजाशी र्व, এই ছুই कटण्यत এक कण्य निःमदस्य निक रहेद्द ।

নাভাকি-বাকো ভৃতীয় অধ্যার সমাপ্ত। ৩।

स्वत्य करिताम, र महाबारहा। कृति स्वत्य पण्डियात काल कतित्य, त्यरेन्यु होत्त महस्र्य रारे; त्याना मानुसान-साम प्रदर्शायन कवनरे प्राया स्वत्य कतित्व मा। स्वत्यित श्रम्यक्षेत्र काला क्यान्य स्वत्य करित्य : कीत्र क त्यापासका व्यक्तिक कीत-स्वत्य काला स्वत्य प्रदर्शन क्यान्य क्यान्य क्र

कब्रिटन। शत्रक चामात वृक्तिएक वनदरदित वाका যুক্তিযুক্ত হইভেছে; কেননা স্থনীতি ইচ্ছুক পুরুষের चादश क्षेत्रभ वावशांत्र कत्राष्ट्रे कर्खवा । किन्तु भूट्या-धरनत निकटि कान करमरे मृष्ट्रवाका व्यवतां कता উচিত হয় না, যেহেতু আমার বিবেচনায় ঐ পাপ-বুৰি কখন মৃত্যুতা-ছারা বশীক্ষত হইবার যোগ্য নহে; গর্দ্দভের প্রতি মৃত্বতা এবং গো-সকলের প্রতি তীক্ষ্ণ-তা আচরণ করাই বিধেয়। যে ব্যক্তি পাপচিত্ত ছুর্যোধন-সমীপে মৃছু-বাক্য ব্যবৃহার করে, পাপাত্ম। ছুর্যোধন সেই মৃছু-সম্ভাষণকারী ব্যক্তিকে নিত্তেজ ও অসমর্থ বলিয়াই নিশ্চয় করে। ফলত নির্বোধ-লো-কের প্রতি মৃত্তাচরণ করিলে, সে আপনাকে জি-তার্থ বলিয়াই বোধ করিয়া থাকে। যাহা হউক, আমরা অতো মৃতুতাচরণই করিব, এবং সংপ্রতি আমি যাহা বলিতেছি, ইহাতেও সকলে যত্ন কর। আমর। মিত্রগণের নিকটে দৃত প্রেরণ করি ; তাঁহার। आगामिरशत माहायार्थ रेमना-ममुराह्यांश करून। ए বিভো! শীঘ্রগামী দূত-সকল শল্য, ধৃউকেতু, জয়ং-সেন ও কৈকেয়-প্রভৃতি অন্যান্য রাজগণ-সন্নিধানে সত্ত্র গমন করুক; কারণ ছুর্যোধনও নিঃসন্দেহ সর্ব্বত্র দুত প্রেষণ করিবে, এবং সক্ষনগণেরও স্বভাব এই যে, অত্যে যে পক্ষ তাঁহাদিগের সাহায্য প্রার্থনা করে, তাঁহারা সেই পক্ষই অবলম্বন করিয়া থাকেন। অতএৰ পূৰ্ব্বেই নীরেন্দ্রগণ-সমীপে প্রার্থনা প্রেরণ করিতে সত্তর হও; কেননা আমার নিশ্চয় প্রতীতি रुटेट्ड्, जामापिशटक स्मर् कार्याजात वर्न করিতে হইবে। হে রাজন্! খ্রল্য ও তাঁহার অমু-গভ ভূপতিগণের নিকটে অবিলয়ে দৃত প্রেরণ কর, এবং পূর্বসাগরবাসী রাজা ভগদন্ত, অমিতৌজা, উত্তা, স্থার্কিকা, আছক, দীর্যপ্রজ্ঞ, মল্ল ও রোচমান, ইহাঁদিগের নিকটেও দুত-প্রস্থাপনে ত্রান্থিত হও। এভডিন র্হস্ক, সেনাবিন্দু, পাপজিৎ, প্রতিবিন্ধ্য, চিত্ৰবৰ্মা, স্থবাস্তক, বাহ্মিক, মুঞ্চকেশ, চৈদ্যাধিপতি যুৰরাজ, অপাশ্ব, জবাত, মহারথ পৌরব, শক, পঞ্চব

ও দরদরাজ্যের অধীশরগণ, কাছোল ঋষিক ও পশ্চিমত অমূপদেশীর ভূপালবর্গ, জরংকেন, কাশ্য, ছুর্দর্য ক্রাথপুত্র, পঞ্চনদ রাজ্য ও পর্বতবাসী ভূপতি-সকল, জানকি, স্থার্মা, মরিমান্ পৌতিমৎসাক, পাংশুরাষ্ট্রের অধিপতি, বীর্যাবান্ ধৃটকেতু, ৬ডু, म्ख्यात्र, वीर्यामानी त्र्रामन, व्यवताक्रिक, नियान, শ্রেণিমান, বস্থমান্, রুহত্তল, মহৌজা, পরপুর-বিজয়া বাহু, সপুত্র বীর্যাসম্পন্ন রাজা সমুদ্রসেন, নরপতি स्ताति, निर्मेष, कर्गटवर्षे, ममर्थ, स्वीत, मार्कात, कनाक, महावीत स्रुष्ठक, निष्ठक, जुगून, कथ, नीन, বীরধন্বা, বীর্য্যবান্ ভূমিপাল, ছুর্জ্বর, দস্তবক্র, রুক্মী, জনমেজয়, আষাঢ়, বায়ুবেগ, পূর্ব্বপালী, ভূরিভেজা, (प्रवक, श्रृञ्जशन-मह जकलवा, क्यूब-(प्रभीय कुशालशन, বীর্যাবান্ ক্ষেমধূর্ত্তি, উদ্ভব, ক্ষেমক, বাটধান খ্রুতায়ু, দৃঢ়ায়ু, বীর্যাশালী শাল্ব-পুত্র ও যুদ্ধ-ছুর্মাদ কলিঙ্গাধি-পতি কুমার, এই সমস্ত ভূপালর্ন্দকেও দৃত প্রেরণ দ্বারা অগৌণে আনয়ন কর; এইৰূপ অনুষ্ঠান করাই আমার অভিমত হইতেছে। হে রাজন্! আ-মার পুরোহিত এই ত্রাহ্মণকেও শীঘ্র ধৃতরাষ্ট্র-সন্মি-ধানে প্রেরণ কর এবং চুর্যোধনকে, ভীন্নকে, ধৃত-<u>রাষ্ট্রকে ও রথিত্রেষ্ঠ দ্রোণাচার্যাকে যে যে কথা বলি-</u> তে হইবে, তাহাও ইহাঁকে বলিয়া দাও।

দ্রুপদ-বাক্যে চতুর্থ অধ্যায় সমাগু॥ ৪॥

রুফ কহিলেন, যিনি সোমবংশের ধুরস্বার, এরপ বাক্য প্রয়োগ করা তাঁহার উপযুক্তই বটে; ইহা অমিততেজস্বী পাণ্ডবরাজের অর্থ-সিদ্ধি করিবার সম্পূর্ণ উপযোগী। স্থনীতি-পূর্বক কার্যা করিতে ইচ্ছা করিলে, আমাদিগের অগ্রে এইরূপ অমুষ্ঠান করাই কর্ত্তবা; যে ব্যক্তি ইহার অন্যথা আচরণ করিতে উদ্যুক্ত হয়, সে নিতান্ত নির্বোধ বলিয়া পরিগণিত হইতে পারে। কিন্তু কুরু ও পাণ্ডব, উভয় পক্ষেই আমাদিগের সমনি সম্বন্ধ; ইহারা পরস্পার ইচ্ছামুসারে ব্যবহার কর্মন, তদ্ধারা আমাদিগের

महत्त्वत अनावा रहेरछ आदि ना ; अठवर निक् विश्रहामित भटक अक्टर कामामिटगत कान क्याह वक्रवा नद्भा जाशनि दियम विवादश्त छेशनदक এহানে আহুত হইয়াছেন, আমরাও সেইৰপ আ-নীত হইরাছি। সম্রাভ বিবাহ কার্য্য নিম্পন্ন হই-রাছে, স্তরাং আমরা হুউমনে স্বভবনে প্রস্থান করিব। আপনি সমস্ত মহীপালগণ-মধ্যে কি বরঃ-ক্রমে কি শাস্ত্রজানে উভয়ধাই র্দ্ধতম। আমরা नकलाहे य व्यापनकात निवाजूना हहेता थाकिव, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। কুরুপতি ধৃতরাইও আপনাকে সর্বদা বছতর সম্মান করিয়া থাকেন; विरमवङ जानि कांगागर्या ও क्रुनागर्या উভয়েরই नथा। जाउधव स्व वांका পांखवितरात वार्थकत रत्न, ভাহা বাক্ত করিবার নিমিত্ত আপনিই এক্ষণে দুত প্রেরণ করুন। আপনি যে কথা বলিয়া পাঠাইবেন, তাহাই আমরা নিশ্চিত বলিয়া জ্ঞান করিব। কুরু-शूक्रव इर्र्याधन यपि नाम्रिष जवनवन-शूर्वक मास्ति সংস্থাপন করে, ভাহ। হইলে কুরু-পাগুবগণের ভাতৃ-স্ডাব সঞ্চিত হওয়ায় সহাসারীর স্থি হয় না। কিন্তু তাহার বৈপরীত্যে ধৃতরাষ্ট্র-তনয় যদি মদ-গৰ্বে বিমোহিত হইয়া একান্তই বিগ্ৰহাৰ্থে আগ্ৰহা-ষিত হর, তবে আপনি অগ্রে অন্য সকল ফুহ্নাণের নিকটে দৃত পাঠাইয়া পশ্চাৎ আমাদিগকে আহ্বান করিবেন। তাহার পর গাণ্ডীবধম্বা ধনঞ্জর যখন ক্রোধের সাহায্য লইবেন, তথন মন্দমতি ছুর্যোধন অমাত্য ও বাল্ধবগণের শহিত অবশ্যই ক্নতান্ত-কবলে নিপতিত হইবে।

বৈশক্ষারন কহিলেন, অনন্তর মহীপতি বিরাট বৃত্তিক্লাবতংস ক্লেকে বথাবোগ্য সংকার করিয়া ব্লন-বাল্লব্যানের মহিত গৃহে প্রস্থাপন করিলেন। ক্লের ভারকা গমনের পর বৃথিতির প্রভৃতি পাশুব-গ্য বিরাটরাজের সহযোগে সংগ্রামোপবোগী সমুদর আর্থেল করিতে লাগিলেন। সংস্যাপতি, পাঞ্চা-লেখর ও ভাঁহানিকের বাল্লব্যাণ আপ্রমাপন বিল- ভূপতিবর্গের নিকটে দুত প্রেরণ করিবেন। কুরু-নিংহ পাওবগণের, বিরাটের ও ফ্রপনরাজের ব্যনা-মুসারে সেই সমাছত মহাবল-সম্পদ্ধ মহীপালেরাও সাজিশর হাউচিতে সমাগত হইতে থাকিলেন।

পাথুপুত্রদিগের নেই স্থাছৎ বল স্থাগত হইতেছে অবণ করিয়া গৃতরাই-ভনরেরাও ক্লীর মিত্রভূপতিগণকে স্থানীত ক্রিলেন। মহারাজ! তৎকালে কুরু-পাগুরদিগের সাহাব্যার্থ নেই অসংখ্য
মহীপাল সকলের সুমাগ্রমোদেখাগে স্থপ্র হহীমগুল
স্থাকুল হইয়া উঠিল। অবিরল বলসহাথে স্কুলা
হওয়ায় ধরিত্রীকে যেন চতুরক্র-সেনাময়ী বোধ হইতে
লাগিল। সেই বীর-নিকরের সৈনাগণ যেন গিরিকানন-সম্বলিতা বস্থা-দেবীকে পরিচালন করতই
সর্ব্ব দিক্ হইতে স্থাগত হইতে থাকিল।

এদিকে পাঞ্চালরাজ ক্রপদ যুখিন্টিরের মডামু-বর্জী হইয়া জ্ঞান ও বয়োর্জ আপন পুরোহিতকে কুরুগণ-সমীপে প্রেরণ করিলেন।

পুরোহিত-যানে পঞ্চম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫॥

পুরোহিতের প্রস্থান-সময়ে দ্রুপদরাজ তাঁহাকে
সরোধিয়া কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! অখিল ভুতকদমের
মধ্যে প্রাণিগণই শ্রেষ্ঠ; আবার প্রাণিগণের মধ্যে
বুদ্ধিজীবী, বুদ্ধিজীবীদিগের মধ্যে মানব, মানবগণের
মধ্যে দিলান্তি, দ্বিজাতিবর্গের মধ্যে বেদক্তে, বেদক্ষগণের মধ্যে সিদ্ধান্তক্ত, সিদ্ধান্তক্রদিথের মধ্যে কর্মকর্তা এবং কর্মকর্ত্দিগের মধ্যে ব্রহ্মক্তরাই শ্রেষ্ঠ
হরেন। আমার বিবেচনায় আপনি সমুদর ক্রতবৃদ্ধি
ব্যক্তিগণের প্রধান। আপনি কুল, বয়্যক্রম ও বিদ্যা,
সর্কাংশের প্রধান। আপনি কুল, বয়্যক্রম ও বিদ্যা,
সর্কাংশেই বিশিক্ত এবং বৃদ্ধিমন্তা বিষয়েও শুক্র ও
বৃহস্পতির সদৃশ। ধৃতরাই-তনর মুর্যোধনের এবং
পাঞ্-বন্দন মুর্থিতিরের বে কর্প স্থাব ও চয়িজ,
সকলই আপনকার বিদিত আছে। ধৃতরাক্তের আতসারেই পাওবের। শক্রগণ-কর্ম্ক ব্যক্তিত ব্র্যাহিক্রেন, স্বতরাং এক্ষণে বিষ্কর তাহাকে বারংবার

অনুসয় করিলেও ডিনি কেবল পুজেরই মডামুবর্ডী र्रेडिह्न श्रुकृति युद्धः जक्रकुणण र्रेद्ध जक्र-ক্রীড়ার অনিপুণ অথচ কল্রিরখর্মে অবস্থিত শুদ্ধ-চিত্ত কৃতীতনয়কে বৃদ্ধিপুৰ্বকৰ কীড়াৰ্থে আহ্বান করিরাছিল ৷ বধন তাদৃশ প্রবঞ্না-বারা তাহারা ধর্মরাজের রাজ্য হরণ করিয়াছে, তখন কোন অব-স্থাতেই ভাহা আপনা হইতে ইহাঁকে প্রত্যর্পণ করি-বে না। অতএব আপনি ধৃতরাই-সমীপে ধর্মানু-গত বাক্যের প্রদঙ্গ করত তৎুপক্ষীয় যোধগণের हिन्दावर्जन क्रिटिंड निक्तरहे नमर्थ स्टेरिन। विध्नाड আপনকার সেই বাক্যের সিদ্ধি বিষয়ে সবিশেষ যত্ন করিবেন। যাহাতে ভীম দ্রোণ রূপ প্রভৃতির মধ্যে ভেদ উপস্থিত হয়, তিনি তৰিষয়েই সচেফ হইবেন। অমাত্য-সকল পরস্পার বিভিন্ন এবং যোধগণ বিমুখ हरेटन, ভाशांतिभटक श्रूनतांत्र धक्ट्यांभ कतारे वि-পক্ষদিগের কর্ম হইয়া উঠিবে। ইত্যবসরে পাও-বেরা একাগ্রচিত্ত হইয়া অনায়াসে সৈন্যসমাবেশ ও সামরিক দ্রবাসামগ্রী সঞ্চয় করিতে পারিবেন। বি-পক্ষদিগের আত্মীয়গণ ভেদ প্রাপ্ত হইলে এবং আপ-নি তথায় কিছুকাল বিলয় করিয়া থাকিলে তাহারা এৰপ সেনা-কৰ্ম-সম্পাদনে কোন ক্ৰমেই সমৰ্থ হই-বে না। অপিচ আপনি তথায় গমন করিলে এই একটি মুখ্য প্রব্য়েজন সিদ্ধ হইবার সম্ভাবনা যে, সঙ্গতিক্রমে অন্ধরীজ ভবছুক্ত ধর্মান্থিত বাক্য প্রতি-পালন করিলেও করিতে পারেন। অতএব আপনি খভাৰত বেৰূপ ধৰ্মনিষ্ঠ, তাহাদিগের নিকটে সেই-ৰূপ ধৰ্মান্ত্ৰগত ব্যবহার করতই ক্লপালুগণ-সন্নিধানে পাওবদিশের অবেষ ক্লেশ-সমূহের পরিকীর্তন এবং বৃদ্ধগণ-সমীপে পূর্ব্বপুরুষ-পরম্পরা-প্রচলিত কুল-धरमात वर्गम कतिया छै। हो मिरभन य किछट छम कतिएछ সমৰ্থ হইবেন, ইহাতে আমার কিছুমাত্র সংশব নাই। আপনি বেদক ভাৰণ ভাষাতে আবার দূতকর্মে नियुक्त ७ इक, च्छत्रार छारातिरगत्र निकटे माशन-कांत्र कान छत्र कतिवात्र विवत्र नारे। अञ्जव

শার বিলয় না করির। যুগিনিয়ের কার্যনিতি নি-নিতে এই পুরানক্ষত্তত কর নামক গুল-মুহুর্তে কুমুগণ-সমীপে যাতা করুন।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, সহাত্মা জ্রপদরাজের এই-রূপ আদেশে সেই সদাচার-সম্পন্ন পুরোহিত হতিনা নগরে প্রস্থান করিলেন।

পুরোহিতের প্রতি ক্রপন-বাক্যে বন্ঠ অধ্যার সমাপ্ত॥ ৬॥

-

বৈশম্পায়ন কহিলেন, পাশুবেরা ক্রপদরাজের পুরোহিতকে হক্তিনা নগরে থেরণ করিয়া মিত্র-ৰূপতিগণ-সমীপে স্থানে স্থানে দুভ পাঠাইলেন। কুৰুবংশাৰতংস পুৰুষজ্ঞেষ্ঠ কুন্তীতনয় ধনঞ্জয় জন্য সকল স্থানে দূত পাঠাইয়া স্বরং ছারকা নগরে গমন করিলেন। এদিকে র্ফি, অত্মক ও শত শত ভোজ-গণের সহিত মধুকুলোদ্ভৰ কৃষ্ণ ও বলদেবের দার-কার গমন করিবার পর ধৃতরাষ্ট্র-তনয় রাজা ছুর্য্যো-ধন আপন প্রেরিড গুপ্তচর-ছাব্লা পাণ্ডবদিগের বি-চেটিত সমস্ত কার্যাজাত অবগত হইলেন। তিনি মৎস্যরাজধানী হইতে ক্লেরে প্রত্যাপমন বার্ডা প্রবণ করিবামাত্র সমীরণ-ভুল্য-বেগশালী সদশ্বচয়-যোক্তিত রথোপরি আরোহণ-পূর্বক অনতিবছল বলে পরি-রত হইরা দারকাভিমুখে যাতা করিলেন। যে দিবস कूर्याधन त्रम्भीत्र जानर् नगरत अत्या कतिरामन, পাওনন্দন ধনঞ্জাও সেই দিনে শীঘ্র তথার উপনীত र्रेटनन । शुक्रववाध উक कुक्रनन्त- वश्र वात्रकाश গমন করিরা ৰাস্থদেব-মন্দিরে প্রবেশ-পূর্বক দেখি-লেন, তিনি নিজাবস্থায় রহিয়াছেন। তখন উভয়েই তাঁহার নিদ্রাভঙ্গ প্রতীকা করত তদীয় শরন-মূদ্রি-धारन शमन क्रिट्यन । प्रद्याधन वर्ध नम्माधारत थारविमा कृत्यत मछत्वत उपधान नहीं । धन-थानि खेंचम चात्रान विद्यान, शन्ता अवामना वि-রীটা তথার উপহিত হুইছা অঞ্চলি বন্ধন পূর্বক কে-

শবের চরণ-প্রাত্তে বিনীজভাবে উপবিফ রহিলেন। वृक्षिकुल-नन्त मधुक्रम्म क्रक निकादमादन नयन-षत्र उन्नीवन-शृक्षक जात्य जर्ज्ज्ञ्नात्क शन्तां छूर्रशा-ধনকে দেখিতে পাইয়া উভয়কেই স্বাগত-প্রশ্ন করি-দেন এবং তাঁহারা পূজা করিলে উভয়কেই যথাবং প্রতিপুজা করত আগমনের হেতু জিজ্ঞাসা করিলেন। অনম্বর ছুর্যোধন কিঞ্চিৎ হাস্য করত কহিলেন, হে মধু-প্রবর মধুস্থদন! আমাদিগের এই উপস্থিত সং-গ্রামে আপনি আমারে সাহায্য প্রদান করুন। যদিচ অর্জুন ও আমি, উভয়েরই সহিত আপনকার সধ্য ও সম্বন্ধ সমান, তথাপি আমিই অত্যে আসি-য়াছি বলিয়া আমার সহায়তা করাই আপনকার উচিত হইতেছে; কেননা পূর্ব্বাচারামুযায়ী সজ্জন-গণ প্রথমাগত ব্যক্তির পক্ষই অবলম্বন করিয়া থা-কেন। হে জনাৰ্দন! লোক মধ্যে এক্ষণে আপনিই সক্ষমগণের শ্রেষ্ঠতম ও সতত সন্মত ; অতএব সক্ষ-নের চরিত্র পালন কর। আপনকার অবশ্য কর্ভব্য।

कृष कहित्नन, त्राजन् स्रुर्याथन! जानि य भूर्य আগিমন করিয়াছেন, তদ্বিষয়ে আমার সন্দেহ নাই; কিন্তু কুন্তীতনয় ধনঞ্জয়কে আমি অগ্রে দর্শন করি-রাছি; অতএব আপনার অত্যে আগমন এবং আ-মারু অত্যে অর্জুন-দর্শন, এই উভয় কারণ বশত আমি উভরেরই সাহায্য করিব। পরস্ত লোক-প্রসিদ্ধ এই अकृष्टि अवार आद्य, त्य, वालदकत आर्थनीय वस्र অত্যে প্রদান করিতে হয়; অতএব আপনকার অপেক। ম্যুনবয়ক পার্থের প্রার্থনাই অত্যে পূর্ণ কর। উচিত হইতেছে।—অহে পার্থ! মদীয়-আকার-সদৃশ গোপজাতীয় নারায়ণ নামে বিখ্যাত আমার যে व्यक्त-त्रःश्वक महर रेमना व्याह्न, जाहाता मकरलहे श्रीमक नःश्राम-रगाभी ; नमदत छुताधर्य मिरु नमस रेमनिक्शन र्डामामिटभेत এक পटक शोकिरन, जात व्याभि नित्र प्र ७ यूटक निर्तिश्व थाकिश व्यना शक অবলয়ন করিব ইহাই আমার অভিপ্রেত হইতেছে; অভএব এই উভয়ের মধ্যে শ্বাহা ভোমার অধিক

মনোনীত হর তুমি তাহাই প্রার্থনা কর; কারণ ধর্মত তোমার কামনাই অঞ্জে পূর্ণ করা বিধের।

বৈশশারন কহিলেন, কুন্তীতনর ধনপ্লয় ক্লম্কর্ক এইরপ কথিত হইয়া সংগ্রামে যুদ্ধ করিতে অস্বীকৃত, জন্মাদি-বিবজ্ঞিত, ইচ্ছামুসারে মানবকুলে উৎপন্ন, সমস্ত ক্ষপ্রিয়-মন্ডল ও অথিল দেব দানব-গণেরও শ্রেষ্ঠতম, অমিত্রন্দশন নারায়ণ কেশবকেই প্রার্থনা করিলেন। পরস্ত মুর্য্যোধন তথন সেই সমস্ত নারায়ণী সেনা কামুনা করিলেন। হে ভারত! তিনি অর্ব্রুদ্-সংখ্যক সৈন্য প্রাপ্ত হইয়া এবং তদ্ধারা ক্লম্কন করিয়া পরম আনন্দ লাভ করিলেন। ভীষণ-বলান্বিত মহীপাল মুর্য্যোধন সেই সৈন্য-সমূহ সংগ্রহ-পূর্ব্বক রোহিণী-নন্দন মহাবল বলদেব-সন্নিধানে উপনীত হইলেন, এবং তাঁহার নিকটে আপন্ধ আগমনের সমস্ত র্ত্তান্ত নিবেদন করিলেন।

ञ्रन स्त्रन स्त वलादित ध्वताद्व- जनसद्व अहे কথা বলিয়া প্রভ্যুত্তর করিলেন যে, হে নরভ্রেষ্ঠ! আমি ইতি পূর্বের বিরাট-নন্দিনীর বিবাহ-সমাজে यে य कथा विनयाहिलांम, वांध रूग, जन्मपूर्य তোমার বিদিত হইয়া থাকিবে। হে কুরু-নন্দন! আমি তোমার নিমিত্তে কেশবকে নির্বান্ধ-সহকারে "কুরু ও পাণ্ডবদিগের সহিত আমাদিগের সমান সম্বন্ধ ⁷ এ কথা বারংবার বলিয়া**ছিলাম, কিন্তু মতুক্ত** সেই বাকাটি তিনি সমাক্ ৰূপে প্রতিপালন করিলেন না। কি করি, আমি ক্লফ ব্যতিরেকে ক্ষণমাত্রও থা-কিতে পারি না ; স্কুতরাং তদীয় মুখাবেক্ষায়, না পার্থ না ছুর্যোধন কাহারও স্থীয়তা করিব না, ইহাই স্থির করিয়াছি। হে ভরতভ্রেষ্ঠ ! তুমি সকল-নৃপ-পূজিত ভারতবংশে জন্ম এইণ করিয়াছ, তো-মার সহায়ের আর অসন্তাব কি! অতএব যাও, ক্ষজিয়ধর্মান্ত্রসারে যুদ্ধ কর।

বৈশস্পায়ন কহিলেন, হলধরের এই বাক্য আবণে ধৃতক্ষাই-তনয় রাজা ছুর্যোধন তাঁহাকে আলিঙ্গন

नवन केन्द्रा-स्वृतस्त्र शतिहार स्वेशः स्वतात्र श्रामणः स्वर्णिनाम्स्ट्राः स्वर्णन्यानः निकार्कः स्वाताः स्वि तातः। व्याताः नेद्रमास् स्वताः अस् परिक्रितः हतः अस्ति स्वाटन व्यातः सर्वेश्वनास्त्रः स्वितः स्वतंत्रः

नरेश निवित-विद्याण वरेट्य नानिक। इर तायकः त्यरं नवर्षण चटकोस्तीशणि ४ मर्चिकं शताकम-भागी हिटनन। ठाँशाव देनगाश्रदकताथ नकटनरे

প্রধান প্রধান ক্ষত্রির ও ক্ষরীম প্রের্থা-রীর্থ-রাপর ছিলেন। তাঁহাদিধের গাত্রারম্বন, বসন, আক্রন,

মাল্য, রথ, বাহন, ধন্ধ, কার্মুক-এছতি ক্রকট্ বি-চিত্র। স্ব<u>দেশীয় বেশ-ছ্বায় বিজুবিত্র কেই রহ</u>ত্ত সহত্র সেনানীগণ স্থান স্থাপন আপন বৈনিক-মুকল

भित्र क्षा करिए भाकिता, जनम स्वाध करेड

লাগিল বেন যারজীর ভুকরর্প প্রশীতিত এবং রক্তমতী কম্পিতা হইতে লাগিলেন। এইবংপ সঞাধিরাক

मन्य मन्त्र नक्षाद्व स्थापन स्थापन विश्वपन

করাইতে করাইতে পাওবহিনের বাৰখানাভিমুখে প্রস্থিত হইলেন।

হে ভারত। খনস্তর চুর্যোধন, মহজী-রেনাম্ম महात्रथ भनातारकत भागमन-बार्का खत्रश सक्ति। স্বরং তাঁহাকে সন্মানিত করিবার উদ্বেশ্যে ক্রভবেনে शमन कत्रिरलन, अवर त्रमतीत अरलल-अमूर्ट् त्रञ्ज-নিচরে বিচিত্রিত স্থাক্তিত স্ভা-রম্ভ নির্দাণ করাইলেন। বছতর শিম্পানক কিছব্রগণ ঠাহার जारमकरम ज्याम व्यत्नकृत्य क्रीह्नकृत्य ज्या-कारु, माश्नामि छेश्क्के कका श्रिक, सुमृद्धित श्राम-माना धनः विख्यकृत्रकत्र विविधाकात्र कुन, वानी ख কলগৃহ-সমন্ত প্রস্তুত করির। রাখিল। মন্ত্রপতি স্থানে স্থানে বিনির্শ্বিত সেই সকল সভাসন্ধিরে উপনীত হইতে থাকিলে, ছুর্যোধ্যুনর সন্ধিরেরা ভাঁহাকে দের-त्र भूका कतिएक वाजिन। वश्कारन मना, नामा चर्भभूतीत नात अक्षे जिल्लाम्यीत नकात्र क् अरदन अविद्यान, जथन कुन्य न्यूक्त क्रिकी किन स्थानं भनार्थभूदक स्थापिक स्थापिक स्थापिक

विकास क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क्

মার্ক্র কহিলেন, হে পুরুবোত্তম । আপনি তাহাদিগের সকলকেই বে নিহত করিতে পারেন, তাহাতে আমার কিছুমাত্র সংশর নাই; আপনি কেন?
আমিই একাকী তাহাদিদের সংহার করণে সমর্থ;
পরস্ত লোক মধ্যে আপনি কীর্তিমান হইয়াছেন,
স্তরাং আপনকার সেই বুশোরাশি অবশাই আপনকার অমুগানী হইবে। আমিও বুশোলাভের অভিলাবী, এই নিমিন্তই আপনাকে বরণ করিলাম।
চিরকাল অবধি আমার এই একটি অভিলাব আছে
যে, আপনি আমার নারধা কর্ম করিবেন; একণে
অমুগ্রহ করিয়া আমার সেই মানসটি পূর্ণ করন।

বাস্থাৰে কহিলেন, পাৰ্থ! তুমি যে আমার সহিত এইৰপ স্পৰ্কা করিতেছ, ইহা ভোমার উপযুক্তই বটে; তোমার হেই অতীক সম্পন্ন হউক আমি অবশ্যুহ তোমার সার্থি হইব।

বৈশাপারৰ কহিলেন, অর্জুন ক্লের এই বাক্য আরপে অভিমান আকাদিত হুইরা তাঁহার ও দা-শার্হ-বংশীর অন্যান্য অধান ব্যক্তিগণের সহিত পুন-রার মুধিনির-সমীপে আগমন করিলেন।

क्रुक्नान्नथा-मीकाटन नक्षत्र व्यथान नमाश्र । १ ।

देवजन्मात्रम कदित्यम्, अरात्रोकः। अम्टिक मज-दक्षणितिनकि समाद्राकः, पूर्वमत्तिः क्रूटमं मध्यापन्धात्वः শ্বন্তা করিতে কালিলের। অনন্তর নেই কালির-ভাষর সাজিবর ছাউচিতে ভূতাবর্গকে বিজ্ঞাসিলেন, যুর্বিনিরে নিরোজিত কোন্ কোন্ ব্যক্তি এই সমন্ত সভাগৃহ নির্মাণ করিয়াছে? সেই সকল সভাকার-দিগকে অবিলয়ে আমার নিকটে আনয়ন কর; আমার বিবেচনার তাহারা পুরস্কার পাইবার যোগ্য হুইভেছে; অতএব কুতীপুজের প্রতিত্তি আমি ভাহাদিগকে প্রসাদ দান করিব।

কিন্ধরপণ তাঁহার এই কথার বিন্মিত হইরা ছুর্যোধন-সনীপে তৎসমুদার নিবেদন করিল। ছুর্যোধন
দে স্থানে গোপনে অবস্থিত ছিলেন, এক্ষণে মাতৃল
শলারাজনে সমাক্ হ্রান্থিত ও জীবিতপ্রদানেও
সমুহর্ক দেখিরা আন্ধ-প্রকাল-পূর্বক তাঁহার সহিত
মাকাৎ করিলেন। মজাধিরাজ তাঁহাকে দৃতি করিয়া
এবং ঐ সমন্ত সভানির্মাণ-বিবদ্ধে তাঁহারই প্রযন্ত
ভানিরা প্রীভচিত্তে তাঁহাকে আলিঙ্গন-পূর্বক কহিলেন, বংস! আমার নিকটে তোমার বে কিছু
ক্রতীক থাকে, প্রাথনা করিয়া লও।

ভূর্ব্যোধন কহিলেন, হে কল্যাণপ্রদ! আপনকার এই বাক্য যেন সভা হয়; আমাকে এই বর প্রদান কল্পন যে, আপনি আমার সমুদায় সৈন্যের অধি-নায়ক হইবেন।

বৈশন্দারন কহিলেন, ছুর্যোধনের এইৰপ প্রার্থনার শলা উত্তর করিলেন, "তোমার অভীত বর প্রদান করিলাম; অপর কি করিতে হইবে ?" ইহা-তে গাল্লারী-তনর পুনঃপুন প্রভাবর করিলেন, "আ-শার মন্ত্রাম পূর্ণ করা হইল।"

খলা কহিলেন, হে নরেক্স চুর্যোখন। সম্রতি তুমি নিমপুরে গমন কর, আমি অরিন্দন বুখিন্তিরের সহিত সাংগ্রাথ করিতে হাইন; তাহাতে রেখিরা শীক্ষাই ভোষার নিকটে প্রত্যাগত ক্ষন। হে দ্বাজন্। পুরুষ্টেরের্ড পাঞ্চলভারের নীহিত অবলার একবার ধ্যো করিছে ক্ষতে । কুৰোগদ কহিলেন, হে রাজ্যন কালাৰ প্রতিব্যা কহিল কালাৰ কালাৰ

ं नवा करितन, " र नवाधियाः सामि আসিব; ভোমার কল্যাণ কউক, ভূমি একণে শ্রীর **खबरन शबन कर्न "। जनसङ्ग मना ७ इर्स्कायन** পরস্পর আলিঙ্গন-পুরংসর উভরেই উভরের নিকটে বিদার গ্রহণ করিলেন। ছুর্ফোখন শল্যের অকুমতি লইরা নিজালয়ে প্রেডাাগমন করিলেন এবং পলাও ছুর্য্যোধনের অমুষ্ঠিত পূর্ব্বোক্ত কর্মটি কুন্তীনন্দন-গণকে বিজ্ঞাপিত করিবার নিমিন্ত তাঁহাদিণের निकटि अन्ति इहेटनन। महे नेक्क्नमर्फनकांत्री মহাবাছ মদ্ৰব্য়ন্ত শল্য উপপ্লব্য নগত্নে উপনীত হই-রা সেনা-সন্নিবেশস্থানে প্রবেশ-পূর্বক সমুদর পা-গুৰদিগকে দেখিতে পাইলেন এবং তৎক্ষণমাত্ৰ তাঁ-शास्त्र महिल मिलिल श्रेता लाशिस्त्र अमल পাদ্য, অর্ঘ্য ও গো যথাবিধি প্রতিগ্রহ করিলেন। অনন্তর তিনি কুশলপ্রশ্ন-পুরংসর পরম প্রীতিযুক্ত हरेता ह्यां विके यूथिकित, जीम, पार्क्न ও निक जा-शिर्तिय नकुल महरमदरक जालिक्म कत्रिया जामरन উপবিফ হইবার পর যুখিতিরকে জিজ্ঞানিলেন, হে কুরুনন্দন রাজশার্দূল! তোমার সমস্ত সকল ছ? হে বিজয়িজ্ঞেষ্ঠ ! ভাগাক্রমে তুমি অরণা-বান হইতে বিমুক্তি পাইরাছ! হে রাজেন্তা! আতৃগণ ও রুক্ষার महिल बारन वर्ष कान विकान-कानदन अवर अक वर-সর অপরিজ্ঞাত-দেশে বাস করত জোলাকে কি খোরতর স্তুদ্ধর কর্মাই করিতে হইরাছে। কলত রাজাবিচ্যত ব্যক্তির আর তথ্য কোধার? তাহার नकारे इःथ। रर शतका जातक। अकर्प प्रदर्शावन-क्रुष्ठ मिरे स्पूर्णिक महाक्रुर्धित व्यवनादन कृति नाम-कूण विनान कतिया जनगारे स्टब्स सरिए सामार করিবে। হে নরাবিপ সহারাক। লোকজর কোনার ক্ষাৰ ক্ষা

বৈশপায়ন কহিলেন, হে রাজন্ ভরতর্বত! অন-ন্তর মদ্রপতি, পৃথিমধ্যে ছুর্যোধনের সহিত তাঁহার যেক্সপে সমাগম হয়, ছুর্য্যোধন তাঁহার যে প্রকার শুঞাৰা করেন এবং তল্লিমিত্ত তিনি তাঁহাকে বেৰূপ বর দেন, সকলই যুধিন্ঠির-সন্নিধানে বর্ণন করিলেন। তাহাতে যুখিষ্টির কহিলেন, রাজন্! আপনি যে ছুর্ব্যোধনের প্রতি তুঐ হইয়া হুইটিত্তে তাহার নিকটে বাক্যবারা প্রতিশ্রুত হইয়াছেন, তাহা আ-शनकात्र नश्कर्म क्यारे रहेशात्र ; क्छ रह वीर्याः সম্পন্ন মহীপতে! আপনকার মঞ্চল হউক, আপনি আমারও একটি উপকার করেন, ইহাই আমার ইছ। হে মাতুল। আপনকার অকর্তব্য হইলেও আমার মুখাবেকার ইহা অবলাই আপনাকে সন্পর করিতে হইবে। সে উপকার কি, বিজ্ঞাপন করি-एक व्यवस्था क्यान । ए महात्राच । नश्नात-मध्या जाशनि नमन-विवास नाकां वास्त्रावत जूना; क्षकार वरकारन कर्न ७ कार्क्न छक्ता देवन्रवयूर्क श्रम् इकेरबन, छवन आधनिक करर्गत मात्रशाकर्प कृतिहरून जरमार नारे। जन्मन (र प्राजनका। यहि

আনার প্রির্কার্থ্য সন্পাদনের ইন্থা করের, তবে সেই সমরে আপনি অর্জুনকে রক্ষা করিয়া চলিবেন এবং বাকা-কৌশল-সহকারে স্তপুত্রের বর্ত্তালর হানি করিয়া, বাহাতে আনানিখের জয় হইছে পারে, তবিধরে সর্বাভোতাবে বন্ধান্ হইবেন। তেই মাতৃল। এ কর্মটি অকর্ত্তবা হইলেও আপনাকে করিতে হইবে।

শলা কহিলেন, হে পাণ্ডুনন্দন! সংগ্রাহে ছুরাছা স্তপুলের তেক্সকর নিমিস্ত ভূমি সামাকে যে অমুরোধ করিতেছ, তাহার প্রত্যুক্তর অবণ কর যুদ্দকালে আমি নিশ্চয়ই তাহার বার্থি হইব, যে-হেতু সে চিরকাল আমাকে বাস্থদেবের ভুল্য জ্ঞান করিয়া থাকে। অতএব হে কুরুণার্ক্তুল। বংকালে তাহার যুদ্ধ করিবার ইচ্ছা হইবে, তথন যে প্রকারে নে হতদর্প ও নউতেজা হইরা সমরে জনামানে অর্জুনের বধ্য হইতে পারে, আমি সেইৰূপ প্রতি-কুল ও অহিত-বাক্যাবলি অবশ্যই বিন্যাস করিতে থাকিব। হে বৎস। আমি তোমাকে সত্য ক্রিয়া বলিতেছি, আমাকে যে কর্ম করিতে ভূমি অমুরোধ করিলে ইহা নিশ্চরই সম্পন্ন করিব। এভডিন ভো-मात्र ज्यात्र कान वित्रकर्त्र-गाथत्न ,यहि वसर्थ हरे, তবে তাহার অমুষ্ঠানেও ক্রটি করিব ন।। হে মহা-ছাতে! তুমি দৃতেক্রীড়ার দ্রৌপনীর সহিত যে ছঃখ অনুভব করিয়াছ, স্থতপুত্র কর্ণের কর্কশ-বাক্য প্লাবণে যে মনঃপীড়া পাইরাছ, এবং দমরতীর নাায় পাঞ্চা-লীর জটামূর ও কীচক হইতে যে সমস্ত ছুর্নিবহ क्रम ७ चन्छ-श्रीख रहेन्नाह, त नकनरे सूर्या-मर्क, जर्थाए উखन्नकान-स्थानह हरेदा। जाक्कव हर বীর! সে নিমিত ভোষার সমুলোক করা কর্তবা नरर, त्यरस्त्र विभाजात निर्माणरे नर्द्वाभित वन-ৰান্। হে জগভীপতে। বিধিৰণত মহাদ্ব। ক্লোক-नितरक अरमविथ कृष्य भारेर स्कार निवरपात क्षा मृत्त बाकुक, त्रवणातां कृष्यकारी क्षेत्राहकन। হে ভারত। শুনিয়াছি, মহামা আবিলাক পুরুদর

জার্নীর নহিত ত্বহুৎ ছুগ্র আগু হুইরাছিলেন।

শব্য-বাকো ক্ষম ক্ষার সমাপ্ত । ৮ ।

যুখিবির কহিলেন, হে রাজেল: সহারা ইল ভার্কার দহিত কিবলে পরম খোর ছংখ প্রাপ্ত হই-রাহিলেন, তব্যান্ত অবগত হইতে আমার একান্ড অভিলাব হইভেছে।

भंगा कहित्नन, रह छात्रछ ! स्वताब हेस छार्यात সহিত্ত বেরণে ছাব পাইরাছিলেন, সেই পুরাতন ইভিহানটি ধাৰণ কর। প্রকাপতি স্বৃটা মহাতপস্থী ও দেবভোষ্ঠ ছিলেন। ভিনি ইন্দ্রের বিদ্রোহার্থে জিমতক্ষারী একটি অনুত পুজের উৎপত্তি করিয়া-ছিলেন। বিশ্বশ্বপ-লামা ঐ মহাতেজা ত্রিশিরা ইচ্রত্ব-भवनादकत्र जिल्लाची हरेत्रा, एख वर्षा ७ जनन-সদৃশ সেই ভর্কর বংন-জন্ন মধ্যে একটির দারা বেরাধ্যমন, আর একটির ছারা সূরাপান ও অন্যটির খার। যেন সমত দিজ্ঞত প্রাস করিবার নিমিত্তই শৰ্মত অবলোকন করিতে করিতে তপম্যায় প্রবৃত্ত ररेलन। रह चांत्रसमा किनि चन्न रयमन मृह अ দান্ধ এবং ভপোধৰ্মের অমুষ্ঠানে অভিশন্ন আগ্ৰহা-ৰিত ছিলেন, তাঁহার তপন্যাও সেইৰূপ কঠোর ও স্থায়ুল্ডর হইরাছিল। দেবরাজ শতক্রতু অমিত-তেজন্বী বিশ্বৰূপের ঐ তপোবীর্য্য ও সত্যাভিসন্ধি সক্ষৰ্পনে, 'পাছে ইনি ইক্স হন ই এই আশকায় বি-ৰাদযুক্ত হইলেন। " ত্ৰিশিরা তপসাায় বিবৰ্জমান ছ্টলে সম্বন্ধ জুবন রাজ্য আত্মসাৎ করিলেও করিতে পারেন; অভএৰ কি প্রকারে তিনি ভোগ-স্থা चानक राज्ञन, এবং ভাদৃশী यर्की जनमात चुनू-ঠান আর না করেন " ইত্যাকার বছপ্রকার চিস্তা করিরা পরিশেবে তাঁহার প্রজোডন নিমিত্ত অপ্যরা-अनंदक पांच्या धानांन क्यूड कहिएलन, रह व्याक्नां-নণ। ভোমরা সকলেই অনীম সৌন্দর্যা-শোভিভা, नुकान-द्या, क्ष्यांनी, महमोहत राजनिक्दत विकू-विका ७ व्यक्तिय देविकार-मण्डमाः चळवर पर्के-

পুত্র তপোনির্ক লিশিরা বাহাতে বিষয়ভোগে অভিন্দার আসক্ত হন, নকলে নিলিতা হবঁরা ভাইনার তেতী কর; অবিলয়ে গমন করিরা বহুতর অক্তর্জনী ও নৃত্যাদি-বারা শীত্রই তাহাকে প্রলোভিত করিতে বন্ধবতী হও। তোমাদিদের মঞ্চল হউক, ভোগরা আমার শহাপনোনন কর। হে অবলাগণ! আমি আপনিই আপনাকে অক্তর জান করিভেছি; অভ-এব ভোমরা অবিলয়ে আমার এই মহাবোর্জর ভরের শান্তিবিধান কর।

ইন্দ্রের এইৰপ আদেশে অমর-বারাজ্যাপণ উত্তর করিল, হে বলনিস্থদন শচীপতে ! বাহাতে বিশ্বৰূপ হইতে আপনকার ভর না হর, তাঁহাকে সেইৰূপ প্রলোভিত করিতে আমরা অবশ্যই যত্নবড়ী হইব। হে দেব! যদিও সেই তপোনিধি লোচনদ্ম-সহকারে অখিল দিজ্বওুল দক্ষপ্রায় করত তপন্যার আননে উপবিক রহিয়াছেন, তথাপি আমরা এই সকলে মি-লিভা হইয়া ভাঁহার প্রলোভন নিমিত চলিলাম, এবং তাঁহাকে বশীভূত করিতে ও তন্ধারা আপন-কার ভন্ন ভঞ্চন করিতেও সাধ্যপক্ষে ত্রুটি করিব না। শল্য কহিলেন, সেই বরাঙ্গনাগণ ইন্দ্রের অফুজ্ঞা প্রাপ্ত হইয়া ত্রিশিরার নিকটে গমন করিল। তথায় উপনীতা হইয়া ভাঁহাকে প্রলোভিড করিবার নিমিত্ত তাহার। মনোহর নৃত্য ও হাবদ্ধাবাদি বছবিধ जन-নৌঠব প্রদর্শন করাইতে লাগিল; পরত্ত মহাতপা जिनित। रेक्तित्रव्य-नश्यम-शूर्वक मन्तूर्ग नागदतत्र नाात অকুষ্চিত্তে অবস্থিত ছিলেন, স্তরাং তাহাদিসের এৰপ প্ৰলোভন দৰ্শন করত কিছুমাত্ৰ প্ৰস্থুই বা বি-চলিত হইলেন না । অঞ্জাগণ স্কৃতনন্ধকে প্রলো-ভিত করিবার নিমিভ পরম বত্ন করিলা সকলেই भक-मनीर्म अकाशमम क्रिन धर् क्रूडाइनिशृत्हे काँशास्क निद्दमन कत्रिन, धारका ! जायद्वा तारे सुद्ध-ৰ্ম্মৰ বিশ্বৰূপকে কোন প্ৰকারেই ধৈৰ্য্য-বিচ্যুত করিতে পারিলাম না, অভএৰ হে মহাভাব! সক্ষণর বাহা कर्चवा एस क्सूम्म ।

মহামতি বাসৰ, অপ্রাহিদকে ব্যাবোগ্য সমান-नरकादत विशाद अविता, त्मके महाचा, विश्वकानत बर्पाशाहर हिना कहिएक मानिस्त्रम । दीर्यामानी প্রভাগরার ধীমান দেবরাল দৌনভাবে চিন্তা করত ' लिभिन्नादक विनये क्वा क्वा ' रेश विन्नानक्त ক্রিলেন, এবং ভাবিলেন 'ভাহার উপরে খদ্য বস্তু পাত করি, ভাহা হইলে,নে শীঘ্রই বিনক্ট হইবে; তুৰ্ব্ল শত্ৰুও প্ৰহন্ধ হইলে বলিষ্ঠ ব্যক্তির তাহাকে উপেক্ষা করা কর্তব্য নহে! এইৰপ শান্ত-নিক্ষয় পর্যালোচন-পূর্বক বিশ্বরপের বিনাশ বিষয়ে দৃঢ় প্রক্রিকা করিয়া অমররাজ মহাক্রোধভরে তাঁহার মন্তকোপরি সাকাৎ বৈখানর-সদৃশ অতি ভয়ন্বর ঘোরৰূপ বন্ধু নিক্ষেপ করিলেন। অনন্তর ত্রিশিরা, ইশ্র-নিকিপ্ত বঙ্গু-দারা দৃঢ়তর আহত হইরা, বিচ্ছিন্ন শৈল-শিখরের ন্যায় ধরণীতলে নিপত্তিত হইলেন। পুরন্দর, বজাহত ত্রিশিরাকে যদিও ভূতলশারী ভূ-ধরের ন্যায় দৃটি করিলেন, তথাপি তাঁহার তেজঃ-পুঞ্জ-দারা উদ্ভাসিত হওয়ায় কোন ক্রমেই স্পার স্বস্তি লাভ করিতে পারিলেন না; কেননা সেই প্ৰদীপ্ততেজ্ঞা বিশ্বৰূপ নিহত হইয়াও যেন জীৰিতের ন্যায় প্রকাশ পাইতে লাগিলেন; তাঁহার অমূত মন্তকত্রর পূর্ব্ববৎ করালদর্শন ও অপরিলানই রহিল। মহারাজ! তাঁহার তাদৃশ বিচিত্র-ৰূপ সন্দর্শনে অতীব ভীত হইয়া স্থরপজিনানা প্রকার চিন্তা করত দণ্ডায়-মান রহিয়াছেন, এমন সময়ে একজন স্ত্রধার কুঠার ক্ষলে লইয়া, যে স্থানে ত্রিশিরার দেহ নিপ-ভিত ছিল, নেই অরণ্য মধ্যে আস্ক্রিয়া উপস্থিত হইল। শঙ্কাকুল শচীপতি ঐ তক্ষাকে তথার আগত দেখিয়া সম্বর-বচনে কহিলেন, অহে সূত্রধার! আমার একটি क्या बका क्य ; धरे दि मशकात वास्ति प्रति নিপতিত রহিয়াছে, তুমি অবিলয়ে ইহার মতক मक्न (इसन क्रिज़ा (क्ना।

কুর্থার কবিল, এ ব্যক্তির ক্রমেশ অতিশব দৃঢ় ও স্থুল, স্বভরাং উহা ছেদন করিতে হইলে আমার কুঠারখানি কয় হইয়া বাইবে; বিশেবত নাগুজন বিশ্বহিত একা নিছুন কর্ম করিতেও আমার প্রহৃতি হয় বা।

ইন্দ্র কহিলেন, ভোষার বে ভর করিবার প্রয়োজন নাই, তুমি শীত্রই আমার এই বাকা প্রতিপালন কর; আমার প্রসাদে ভোষার ঐ অন্ত বস্তুলা হইবে।

ভক্ষা কহিল, কে আপনি এই ছোরতর কর্মে প্রবৃত্ত হইরাছেন, জানিতে ইছা করি; অতএব যথার্থ করিয়া অগ্রে তাহা আমারে বলুন।

ইন্দ্র কহিলেন, আমি দেবরাত্ত ইন্দ্র। আহে ওক্ষন্। আমার পরিচয় পাইলে ড? এখন আর বিচার না করিয়া সম্বর আমার বাক্য প্রতিপালন কর।

স্ত্রধার কহিল, হে শক্ত ! এবপ কুরকর্ম করিতে আপনকার কি লক্ষা বোধ হয় না ? এই ঋষিতনয়-কে বধ করিলে বে, ব্রক্ষহত্যার পাপ হইবে, তাহাতে কি আপনকার ভয় নাই ?

শক্র কহিলেন, আমি অগ্রে ইহাকে বিন্ট করির।
পাপশুদ্ধি-নিমিত্তে পক্ষাং স্কুশ্রে ধর্মামুঠান করিব।
এই মহাবীর্যা ত্রিশিরা আমার পরস্থাক; একারণ
আমি ইহাকে বজাঘাত-ঘারা নিহন্ত করিরাছি;
তথাপি এ পর্যান্ত আমার উদ্বেগের শান্তি হর নাই;
স্থতরাং কি প্রকারে আর ব্রহ্নহার, ভর করি?
অহে স্ত্রধার! তুমি শীঘ্র ইহার মন্তক সমন্ত ছিল্ল
কর, আমি তোমার প্রতি যথেক অমুগ্রহ করিব।
মানবগণ বক্ষকালে বে পশুবধ করিবে, তাহার উদ্ধান্দর তোমাকেই ভাগ-স্বরূপে অর্পণ করিবে। হে
তক্ষন্! আমি ভোমার প্রতি এই অমুগ্রহ করিলাম,
এক্ষণে তুমি সম্বর আমার ঐ প্রির্কর্শন্তি সম্পদ্ধ

শল্য কহিলেন, মহেন্দ্রের এই বাক্য প্রবণ করিয়া, প্রবার তথন কুঠার-হারা তিশিরার মককজুর ছেদন করিল। তংকালে নেই ছিল্লান্তক সমুক্ত হৈছে চা-তক, তিভিন্ন ও চটকাদি বিশ্বস্থানক বুবে যুগে বি- নিত্ত হৈতে আগিল। কে বাজন পাশুব হুক্নন্দ যে মুখে বেলাধারন জ নোমপান করিতেছিলেন, তাহা হইতে হাতক, যে মুখে অথিল দিয়াওল পান করার আগি নর্বত করাল কটাক্লপাত করিতে-হিলেম, ভাহা হইতে তিজির এবং যে মুখে অরাপান করিতেছিলেন, তাহা হইতে চটক ও শোন-সমত বিনিংহত হইতে থাকিল। ত্রিশিরার মন্তক-সকল এইকপে ছিল্ল হইলে, দেবরাল বিপত্তার ও ক্ট-ভিল্ল হইরা দেবলোকে গমন করিলেন এবং তক্ষাও নিজালয়ে প্রস্থিত হইল।

ं अन्त्रात्रिर्खाः अञ्चलकु के अक्टरक विनके कतिया আপৰাকে কুতকুতা জ্ঞান করিলেন। এদিকে প্রজা-পতি ত্বটা ইন্সহত্তে নিজ তনরের নিধনবার্ডা অরণে क्यादेश जानुक-लाइन स्टेशा धरे कथा विवादनन, ছুরাছা ইক্রাবেমন তপ্স্যা-নিরত নিরত কমা-শীল, দান্তও জিতেন্দ্রির মদীর পুত্তকে নিরপরাধে নিহত ক্রিয়াছে, তেমনি তাহার সংহারের নিমিত স্পামি রক্তনামক জন্য এক পুত্র উৎপন্ন করিতেছি ; लाक नकन जना जामात वीर्या ७ समहर उरशावन অরলোকন কর্মক এবং ব্রহ্মহত্যাকারী সেই পাপাত্মা দেবেক্সও ইহার প্রত্যক্ষ কল অমুভব করুক। অন-স্তর্গতপোনিষ্ঠ সুমহাবশা স্বকী কোধভরে আচ-মন-পূর্বেক অনলে আঁহুতি প্রদান করত ভর্ত্বর বুজাত্তরের উৎপত্তি করিলেন এবং তাহাকে এই কথা বলিলেন, হে ইম্রশত্রো ! তুমি মদীর তপস্যা-প্রভাবে वर्षमान १७।

तरे पूर्वा ७ रेक्यानत-जन्म रूबाएत एनरामकरक स्वीप् क्रिक रृष्टि शाहित वाजिन धरः श्रमस् स्वीप् क्रिक रृष्टि शहित प्राम्य प्रमुक्त द्वा क्रिक प्राम्य सार्क क्रिक क्रिक रहेत ? पनस्त त्म " रेक्यक निरुष्ट क्रिक खर्डिक प्रामित रहेता वर्जपात गमन सहित । दे क्रिक्स क्रिक्स स्वर्णात श्रम्क क्रिक प्रमुक्त क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स व्यक्त स्वर्णित है। क्रिक्स क् वर्ष रहेता. व्यवतास्य मञ्जूष् मञ्जूष अवन-पूजार मुनवापान क्षित्र। जन्मद्रशा निकिश क्षित्र। देख इक्यात निशक्ति हरेता वासन वासन क्रमन महानक्षक हरेत्वन, अवश्यालना विद्याल विकित्रकान व उरक्रगार द्वानामिनी कृषिकात रुचि कदिलन। তাহাতে ব্তাহ্র ভ্রণ-পরারণ হইলে, বলহুদন আর্থণ্ডল আপন অঙ্গ-সকুল সকুছিত কর্ম্ব তাহার নেই বিহত আসা-বিবর হইতে নিছাত হইলেন। মহারাজ! ঐ ভৃত্তিকা তদবধি জীবের প্রাণবায়ু আ-ध्वत्र कतिया थाकिक। अमिरक अमन्नभग हेस्मरक हूँच-मूथ रहेए विनिःश्ठ एपिया मकरणहे हर्वश्राक्ष হইলেন। হে ভরতর্বভ! অনন্তর ক্রোধাবিফ রুত্র-বাসবের পুনর্কার বছক্ষণ পর্যান্ত ঘোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল। মহাবল পরাক্রান্ত র্ত্তান্ত্র, ত্বতার তেলো-বলে বখন সমূরে ক্রমশ সম্বর্জিত হইয়া উঠিল, তখন বিচক্ষণ স্থরপতি সমরবাপার হইতে নির্ভ হই-লেন। হে ভারত। দেবতারা ত্বফুতেত্তে সহজেই বিমোহিত হইরাছিলেন, তাহাতে আবার শচীপতির নিবর্জনে অতিমাত্র বিষয় হইরা পড়িলেন এরং অন-ন্তর কর্তব্য কি, তাহার চিন্তা করত সকলেই ভাঁহার সহিত মিলিত হইয়া মুনিগণ-সন্নিধানে মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। পরিলেবে তাঁহাদিসের পরামর্শানুসারে মন্দর-শিখরে উপবেশন-পূর্বক তাঁহারা শহাপরীত চিত্তে র্ত্তান্থরের বিনাশ কামনা করত মনে মনে অবিনাশী বিষ্ণুকে চিন্তা করিতে লাগিলেন।

র্ত্রবাসবযুক্তে নবম অধ্যায় সমাপ্ত । ৯।

रेख करिएकन, रह एत्यमण । इर्जित व्यक्षि कर्ण-वरत धरे व्यवेश कम्माश्यमत मम्ब्रांकारे शतियाश ररेत्राद्य । रेरांत व्यक्तिवाटण मन्ध रहेएण शास्त्र, ध्रम त्याम वर्ष व्यक्तिक स्वत्र ना । वर्ष पूर्व्य व्यक्ति वर्षाम व्यक्तिक क्षित्र स्वत्र वर्षाण्यम् वर्षाण्यम् म्ह्याप्तिकाम्, विकासम्बद्धाः विकास वर्षाम् स्वत्र । विकास रिवासारत स्वामानिद्यात क्षाम् नायम क्षित्र, विकास विकास করিতে পারিতেছি না; কেননা আমার বিবেচনার ব্যাহ্মর একবারেই ছর্ছার্ব হইরা উঠিরাছে। এমন কি, সে এতাছুশ মহাকার, বুদ্ধে বিজ্ঞমশালী ও তেলছা করিছে বে, হুরাহ্মরনর-নিকর-সম্বলিত অধিল ভুরনরগুলকে কবলিত করিলেও করিজে পারে। অতথক হৈ জিলশগন! সম্রোভ বেরপ কার্য্য-নিশ্চর অবধারিত করিতেছি, তাহা অবন কর। চল আমরা সকলে মিলিত হইরা বিষ্-সদনে গমন করি; তাহার সহিত মন্ত্রণা করিলে অবশাই ঐ ছুরান্মার বধোপায় জানিতে পারা মাইবে।

র্ত্তভয়-পীড়িত অমরগণ, ইন্দ্রের এই প্রস্তাবে ঋষিগণ-সমভিরাহারে গমন করত সকল-দেবাধি-পতি সর্ব্ধ-লরণ্য মহাবল বিকুর লরণাপদ্ম হইয়া, সকলেই নিবেদন করিলেন, হে ভগবন্! পূর্ব্বে আপনি অমরগণের হিতসাধনার্থে চরণত্তয়ে তিভুবন আক্রমণ করিয়াছিলেন, অমৃত হরিয়াছিলেন, সংগ্রামে অসংখ্য দৈত্যদলের দলন করিয়াছিলেন, এবং মহান্দৈত্য বলিকে বন্ধন করত পুরন্দরকে তৈলোক্যরাজ্যের আধিপত্য প্রদান করিয়াছিলেন। হে বিকো! আপনি অখিল বিশ্বের স্থাটকর্তা, দেবদেব, মহাদেব, সর্বলোক-নমক্ত ও সর্ব্বেরাপী। হে অম্বর-নিস্থদন! সম্প্রতি র্ত্তাম্বরের স্বর্থৎ কলেবরে এই অখিল ভুবনমণ্ডল পরিব্যাপ্ত হইয়াছে; অতএব হে অমরোজ্ম! আলানি বাসবসহ ত্রিদলগণের গতি-সক্ষে হউন।

বিষ্ণু কহিলেন, হে দেবগণ! ভোমাদিগের অনু-ভম হিতসাধন করা আমার অবশ্বাই কর্তব্য; অত-এব বাহাতে সেই র্ঞান্তর বিন্তু হইবে, তাহার উপার বলিতেছি অবণ কর। নে বিশ্ববাদ ধারণ-পূর্মাক বে ছানে অবস্থিত রহিরাছে, ভোমরা গল্প ও অবিগণ সমজিবাহালে তথার গমন করিরা প্রথ-মত বাস্থ্যাল প্রয়োগালা তথার গমন করিরা প্রথ-মত বাস্থ্যাল প্রয়োগালা তথার সলে সন্ধি হাপন করিতে চেতা পাও; পালাং স্থানান্ত্র ভাহাকে হে অমরকুদ! মদীর প্রভাবে ইন্দ্রের নিংসন্দেহ কর-লাভ হইবে। আমি অদৃশারপে উহাঁর আয়ু-থোন্তম বন্দু মধ্যে প্রবেশ করিব। অতএব হে স্থারো-ভ্রমণ ! ভোমরা ঋবি ও প্রথমির সহিত মিলিক হইরা অবিলয়ে গমন-পূর্বক ইন্দ্রের সঙ্গে র্ত্তাস্থরের সন্ধি কর।

ं मना करिएनन, विकुत अर्जिश चारमरण जिस्माग ঋষি ও গল্পর্বগণের সহিত একতা হইয়া ইন্দ্রকে অত্যে করত গমন করিলেন। শত্র-সহচর ঐ সমস্ত মহামুভবগণ সকলেই বুত্ৰ-সন্নিধানে উপনীত হইয়া দেখিলেন, সে সাক্ষাৎ চক্র স্থর্যার ন্যায় ভেলঃপুঞ প্রস্থালিত হইয়া অধিল দিয়াওল প্রতপ্ত করত যেন ত্রিভুবন আস করিতেছে। অনন্তর ঋষিণণ তাহার সম্বাধে উপস্থিত হইয়া প্রিয়-বচনে সম্বোধন-পূর্বক কহিলেন, হে ছুর্জন্ন! তোমার তেজঃপুঞ্চে এই সমু-োর জগৎ পরিব্যাপ্ত হইরাছে, অগচ ভূমি বিপুল-বিক্রান্ত বাসবকে পরাজয় করিতে পারিভেছ না। যুক্ক করিতে করিতে তোমাদিগের বহুকাল অতীত হইয়াছে; বিশেষত দেব অস্থ্র মানব-প্রভৃতি সমু-मत्र श्रमावर्ग निश्नीषिक स्ट्रेटिंह ; प्रकथव रह द्वा ! একণে শক্রের সহিত তোমার নিজ্য স্বধিত্ব হউক ; ইহাতে তুমি অসীম সুখ ও চিরস্থারী ইক্সলোক-সমন্ত व्याख रहेरव।

অনন্তর সেই স্থমহাবল র্ত্তাস্থর ঋষিদিগের বাক্য অবণ করিয়া অবনত মন্তকে সকলকেই তথন প্রণাম করত কহিল, হে মহাভাগ মহর্ষিগণ ও গল্পক্র-সকল! আপনারা যে কথা বলিলেন, সে সক্লই শুনিলাম; হে অনহগণ! এক্ষণে আমারও কিঞিৎ বক্তবা আহে অবণ করুন। হে দেবগণ! আপনারা আমাকে শক্রের সহিত সন্ধি করিতে কহিতেহেন, কিন্ত ক্রি প্রকারে তাহা সন্তব হইতে পারে? সন্ধি করিছে হইলে অথ্যে পরস্থারের মিত্রতা অপেক্ষা করে; গরক আমরা উভরেই কেনীয়ান; করাল ডেকলী ক্রই কনের মুখ্যে কি বুগে স্থা হাইবে?

क्षिण करिएनन, जब्दा ब्रह्मान-माज्य नश्तक দাভের ইন্ছা করা কর্ত্তর; বেহেতু ভাষাতে পরম मक्कर रहेरत्। नर्भुक्ररवत्र महिष्ठ ध्रवत्र क्रथन ति-ফলে স্কৃতিকান্ত হইতে পারে না; সত্রব নাধুনক-কুট্রের অভিলাষ করা লোক-মাত্রেরই উচিত। কুপুরুব-দিধের প্রণয় নিতাকাল-ছায়ী ও বন্ধমূল; বিশেষত, অর্থক্সমু উপস্থিত হইলে ধীর ব্যক্তি যথার্থ अर्थकृत विष्टास्त्रहे छेशाएन पित्रा शास्त्रन। कन्छ নাধুপুরুবের সহিত সমাগম মহাকলোপধারক সন্দেহ मारे ; चाउधव मश्यूक्तरवत्र विनात्मका कृता विष्टकः। वाक्तित कराह विदयन नदर। अहे हेळ माधूपिरगत সন্মত, মহান্মগণের আতায় স্থান, সতাবাদী, অদী-নাৰা ও ধৰ্মজ্ঞ বলিয়া স্বিনিশ্চিত হইরাছেন, এই বিশিষ্ট ইহাঁর সহিত ভোমার চিরসন্ধি হওয়া আ-মাদিগের প্রার্থনীয় হইডেছে। অতএব হে র্ত্ত! क्लान करूम जनाथा वृक्षिना कतिया जामाहिरगत এই বাক্যেই বিশ্বাস স্থাপন কর।

ুল্লা কৃছিলেন, মহাদ্ধাতি রুতাত্বর, মহর্ষিগণের এই বাক্য অবৰ্গ করিয়া তাঁহাদিগকে কহিল, "হে মহাপ্রভাব-সম্পন্ন তপোনিষ্ঠ দেব মহর্ষিগণ! আপ-নার৷ সকলেই আমার মাননীয়; পরস্ত আমি যে ৰুণা খলি, বদি অথে তাহার বিধান করেন, তাহা হুইলে আপনারা যাহা আজা করিতেছেন তাহা निःमत्मर প্রতিপালন করিব। হে বিপ্রেক্রগণ! व्यामात आर्थना अरे रग, कि एक कि व्याम बस्त, कि श्रवत कि कार्छ, कि व्यक्त कि नज, व नकरनत मर्था कान अवा-बादाके जामि, कि पिनत्न कि दाविकात, अवत्रश्न-तर्क्षः श्रुवन्यद्वतः वशा ना हरे। आश्रनाता স্মান্ত এই বর প্রদান করিলে, শক্তের সহিত নিকা রাজ করণে আমার অভিকৃতি হয়।" হে क्रतक्षेत्र ! इंद्रजब अंक्श व्यक्तित क्षित्रन ' छाराहे इटेरव ' आहारक भने क्या नितनन। भरे अकारत .अकि मरशांभिक हरेदात दूज गांकिनत सके-ठिक बरेन, श्रद्ध नकत हर्व-नविष्य रहेत्रा नर्वाद्धाणादे नार- খান রহিলেন। তিনি, কি উপান্ধে র্নকে, বিল্ট করিবেন, সেই চিত্তাতেই অভিনিবিক ব্রৈরা, তারার কিলাকেনং করত সর্বাদাই উৎক্তাকুল বাক্তিরে এক-একদা রক্ষা ক্ষরে পিশাহালি ক্ষেচ্যুগণের জন-শোপবোধী ভরকর-মূহুর্তে রন্ত্র-ভীরবর্তী মহাস্তর কো তাঁহার নেত্রগোচর হইল। তখন ঐ মহাকার অস্থ-রের প্রতি অবিগণের বরদ্বান বিবরণ স্থান করিয়া তিনি এইকপ চিন্তা করিলেন, "সম্প্রতি করাল সন্ধাকাল উপন্থিত; ইহা দিবস্থ নহে রাত্রিও নহে; অতএব এই সমর্নেই আমার এই সর্বাপহারী পরম শত্রু বৃত্তকে বধ করা আবশ্যক হইতেহে; যদি এ সময়ে এই মহাবল-সম্পন্ন প্রকাণ্ডদেহ মহাস্থ্যকে কোন প্রকার প্রতারণা-ভারা নিহত করিতে না পারি, তবে

পুরন্দর, মূনে মনে উক্ত প্রকার চিন্তা করিয়া,
বিফুকে স্মরণ করিলেন এবং সাগর-মধ্যে ধবলদৈলসদৃশ কেনরাশি অবলোকন করিয়া ভাবিলেন, " এই
বস্তু শুক্ষও নহে আর্ম্যও নহে, এবং ইহাকে কোন
প্রকার শস্ত্রও বলা যাইতে পারে না; অতএব এই
কেন-পুঞ্চই র্ত্রের উপরে নিক্ষিপ্ত করি, তাহা হইলে
এ ক্ষণকাল-মধ্যেই বিনক্ট হইবে।" অনন্তর তিনি
আর বিলয় না করিয়া বজুর সহিত সেই কেণরাশি
র্ত্রের গাত্রে নিক্ষেপণ করিলেন। তথন বিষ্ণু ঐ কেনমধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া র্ত্রকে বিনক্ট করাইলেন।

বৃত্ত নিহত হইলে পর নিক্-সকল তিমিরাবরণ পরিত্যাগ-পূর্বক পুনরার প্রকাশিত হইরা উঠিল; শুতামর সমীরণ স্কুত্ত সঞ্চরণ করিতে লাগিল এবং প্রকা নাতেই হর্ব-তরকে লাক্তোলিত হুইতে থাকিল। মনস্তর দেবতা, গল্লার্ম, বন্ধ, রাক্ষ্য, পল্লগ ও খাবি-গণ বছবিধ প্রশংসা-বচনে ইম্লাকে স্থানিত লাগি-লেম। ধর্মক বাসব শক্ষা-সংহারে হুইচিত্ব ও মর্মা-মুত্রের নমস্ত হুইরা সক্রাক্তেই সান্ধ্রা করত দেব-গণ-সম্বতিব্যাহারে তিলোকীক্ষেত্র নিক্তে স্বাক্-ক্ষাে পূজা করিলেন।

स्त्रामान-अनुबद्ध प्रश्रीया वृज्यान्त्र निर्थ र्रेटन, त्रवद्याक मृत्य-क्रिय-विवेशन विधारित्रण ७ पूर्व-इष्ट ত্রিশিরার বর্ণকনিত ব্রহ্মতা, উত্তর-বারাই অভি-ভূত হওরার অভিমাত ভূর্মনারমান হইলেন। ব-কীর পাপভারে অভিভূত, সুভরাং সংজ্ঞা-পূন্য ও বি-চেতন হইয়া ভিনি লোকবসভির শেষ-সীমা আত্রর कब्रुष्ठ मिल-मर्द्या, विरुष्टिमान मर्ट्यत नार्व, अवश প্রক্রভাবে রহিলেন যে, কেহই আর তাঁহার অমু-সন্ধান পাইল না। এইৰপে ব্ৰন্থতার ভরে বাাকু-निष्ठ इरेंग्ना (सरवक्त अञ्चलिक इरेरन, ममल ज्यि-মণ্ডল শুষ্ক-কানন ও বুক্ষহীন হইরা বিধন্তপ্রার হইল; নদী-সকলের স্রোভ অবরুদ্ধ ও সরোবর-নিকরের জল-সৰুল শুষ্ক হইরা গেল ; যাবতীয় প্রাণিবর্গ অনা-র্টি-নিমিত্তক অতিশর কোভপ্রাপ্ত হইল; অন্যের কথা দুরে থাকুক, দেবতা ও মহর্ষিগণেক্রাও অতিমাত্র ত্রাসযুক্ত হইলেন। ফলত রাজ-বিবচ্ছিত হওয়ায় সমুদার জগৎই বছবিধ উপদ্রবে অভিভূত হইতে লা-পিল। অনন্তর স্বর্গধামে অমররাজ-বিরহিত দেব ও रमवर्षिशंग, " अक्तरंग रक आंभोमिरशंत्र त्रांका स्ट्रेरवन " এইৰপ চিন্তার সকলেই মহাভীত হইরা উঠিলেন, जबह मिर्वशालंद मार्था किर्हे ताक्य शहरा मन करि-লেন না।

इब्रास्ट्रज्ञ-वर्ध मणम ज्यशास नमाश्च । >० । • → ।♦ | ←

শল্য কহিলেন, অনন্তর ঋষি ও ত্রিদশেশর দেবগণ পরস্পার একবাকা হইরা বলিলেন, " এই প্রীমান্
নহ্বরাজ ভেল্লী, বশলী এবং ঠুটরকাল ধার্দ্মিক;
অতএব ইহাঁকেই দেবরাজ্যে অভিবিক্ত কর ল। এইকণ ছির করিরা সকলেই নহুষের নিকটে গমনপূর্বাক কহিলেন, " হে পার্ষিব! ভূমি আমাদিগের
রাজা হও"। হে রাজন্! তখন দেই নহুষরাজ আপন
হিত্ত ইচ্ছা করত দেব, ঋষি ও পিতৃগণ, সকলকেই
কাইলেন, কে মহাস্থাপণ! আমি স্কাল, আপনাদিগের
পরিপালন কার, এমন সাধ্য আনার কি আছে?

রাজা হওরা বলিকের কার্য; ইন্সানিতা বলশালী হিলেন, স্করণ তৈলোক্যের আবিশস্তা তাহারই শোতাকর হিল।

আনবর দেব ও ঋষির্ক্ষ পুনরায় তাঁহাকে কাঁইলেন, হে রাজেল্র! তুমি আমাদিশের তপোবলযুক্ত
হইরা স্বর্গরাজ্য প্রতিপালন কর। অধীশর-বির্হে
আমরা যে সকলেই পরস্পার ভীত হইরাছি, ইহাতে
কিছুমাত্র সংশর নাই; অভএব সম্প্রতি তুমিই এই
অমরাবতীর রাজত্বে অভিবিক্ত হও। দেব, দানব,
যক্ষ, রাক্ষস, ঋষি, সিদ্ধ, গল্পর্ব ও ভূত-প্রভৃতি যে
কোন প্রাণী ভোমার নেত্রগোচর হইবে, তুমি দৃটি
মাত্রেই সকলের ভেল আকর্ষণ করত বলবান্ হইতে
পারিবে। অভএব সর্বনা ধর্মকে অগ্রবর্তী ক্রিরা
সর্বলোকের অধীশর হও এবং ত্রিদশালয়ে অবস্থানপূর্বক দেব ও ব্রক্ষবিগণের পরিপালন কর।

र् तांत्वसः। छांशांतिरभत्न अहेबल आर्थनात्र नष्ट्व স্বৰ্গরাজ্যে অভিবিক্ত হইয়া তখন ধর্মকে পুরঃসর করত সর্বলোকের অধিপতি হইলেন। ভিনি স্বভা-বত ধর্মাত্মা ছিলেন, কিন্তু উক্ত প্রকার বর ও স্বর্গের রাজৰ লাভ করিয়া পরিলেবে কামান্তা, অর্থাৎ বিষয়-ভোগে আসক্ত হইয়া উঠিলেন। সেই দৈবরাজ নম্ব रित्रशर्पत्र अभूषांत्र छेषाान, ज्ञानम्बर्क्कन छेथवन अवस्तु, কৈলাস-শিধর, হিমালয়-পৃষ্ঠ, মন্দর-শৈল, শেতপর্বত. সম্পিরি, মহেন্দ্রান্তি, মলম্বাচল, সমূত্র ও সরিৎ-প্রভৃতি বাবজীয় রমণীয় প্রদেশে অপারাগণ ও দেব-কন্যা-নিকরে পরির্ভ হইরা আবণ-মনোহর বহুতর **पिया ममानाभ, मर्क्यकांत्र पिया वापिता ও मधुत-च**त সংযুক্ত সঙ্গীত অবণ করত নানাপ্রকার বিহার করিতে नाशित्मन। विश्वाबद्ध, नाज्ञम, शक्कवंदर्श, जन्द्रज्ञाश्रग ও মূর্ত্তিমন্ত ঋতু-সকল সেই স্নাজেন্দ্রকে সর্বাদা উপা-সনা করিতে থাকিলেন। স্থাপার্শ স্কুচির স্কুর্তি ममीत्र मूम मन्द्र मक्ताद्व वहन क्तिए निक्ती

রাজা নত্ব ইক্রত্ব-লাজে শুর্ক্ততা-পর্যন্তর হইরা এইরপ জীড়া-কৌভুকে কাল হরণ করেন, একদা

সাল্ধ-প্রস্থা ক্রিয়া সভাসব্বর্গকে কহিলেন, "স্কারি এমানে আমানুধানের অধীপার ও সকল লোকের নিমন্তা र्वकृष्टि, करव रेट्ड्यन कामिनी महीरतवी सर्मा कि निवदं जामादक उजना ना करतम? जामात जाछा-करम जिमि अदिवास्य अमा मनीत निर्वाटन आ-গর্মন কর্মন^মা নহবের এই কথা শুনিরা শচী অতীর ছুৰ্মনার্মানা হইলেন এবং বৃহস্পতির নিকটে গিলা কহিলেন, ব্রহ্মন্! আমি আপনকার শরণাগতা হই-লাম, জাপনি নত্ত্বের হস্ত হইতে মোমারে পরিতাণ कक्रम । दश्कान्। जार्शनि जामादक गर्वाञ्चकन-সম্পন্না, দেবরাকের প্রিরতমা ও অত্যন্ত সুখভাগিনী बिन्द्रा बारक्रम, बबर शूर्ट्सं आमारक चरेत्रवायुका একপদ্ধী পতিব্ৰতা বলিয়াছিলেন; অতএব সেই वाकाणि असा मठा कक्रन! (१ अजावमण्यज्ञ जगवन् বিষয়ন্তম : আপনি পুর্বের জার কথনই মিধ্যা বাক্য কৰেন নাই, অভএৰ আমার প্রতি যেৰূপ উক্তি করিয়াছেন ইছা অবশ্যই সভ্য হইবেক।

ভরমোহিতা ইন্দ্রাণীর এইবপ কাতরবাণী জবণে বৃহন্দতি ভাঁহাকে সাধুনা করত কহিলেন, হে দেবি! আমি জোনাকে বে কথা বলিরাছি, তাহা অবশ্যই সত্য হইবে; তুমি দেবরাজ ইন্দ্রকে শীভ্রই এত্থানে সমাগত দেখিবে; আমি ভোমাকে সভ্য করিরা বলিভেছি, নহুব হইতে ভোমার কিছুমাত্র শহা ঘটিবার সম্ভাবনা নাই; যাহাতে শক্রের সহিত ভোমার শীল্প সমাগ্রহ হয়, আমি অবশ্যই ভাহার সহিব্দান করিব।

জিবিকে নহবরাজ বর্ষন শুনিজেন, ইন্তাণী জিলি-রানজন বৃহস্পতির পরবাপরা হইরাছেন; তথন ভাঁহার অভিশব্ধ জোমোদর হইল।

मेरिक्स्मिकि-सरबंदिन अकारम चयात

--

শেলা কাইলেন, দেবতা ও ইনান কাইলি কাইলি বিশ্বনা নহবদে কোথানিক ও মোরকুরি কাইলি কাইলেন, হে হারপাড়ে! আপনি কোথ নহরণ কালা। হে বিভো! আপনকার রোবারেল সক্রান্দিন কি অন্তর, কি গল্লার, কি কিল্লার, কি পালা, আনহার নলত লাকেই সন্তত্ত হই রাছে; অভতার হে নাথে। এই অনর্থকর কোথাবেগ পরিহার কর্মন! দেখুন, ভবাদুল পুরুষেরা কন্মিন্ কালেও ঈদুল রোবপরবল হয়েন না। হে হারেশার! খাহার নিমিত্ত আপনকার কোথ-সক্রার হইরাছে, তিনি পরকীরা মহিলা; অভতার আমাদিশের প্রতি প্রদার হইরা আপনি পরদার-হরণ-কাপ পাপ হইতে চিত্ত নিবর্তন কর্মন! আপনকার মঙ্গল হউক, আপনি ইক্রত্ব লাভ করিরা বেমন নর্মানের প্রভ্রাকের প্রভূ হইরাছেন, সেইক্রপ বথা-ধর্মামুসারে প্রভাগালন কর্মন।

কামবিমোহিত সুরাধিপতি নহুবরাজ ঋবিগণপুরক্ত অমর-নিকরের সেই বাক্য প্রবণ করিয়াও
তাহা গ্রাছ্ করিলেন না, প্রত্যুত ইন্দ্রের দোবোলেথ
করত তাঁহাদিগকে এই কথা বলিলেন, পুর্বের ইন্দ্র
যথন যশন্বিনী ঋবিপত্নী অহল্যার ভর্তা জীবিত থাকিতেও তাঁহার সতীত্ব হরণ করিয়াছিলেন, তখন ভোমরা তাঁহাকে নিবারণ কর নাই কেন? এভত্তির
তিনি যে ধর্মবিরুদ্ধ ব্যবহার ও কাপট্য প্ররোগপূর্বক আরও কতপ্রকার নৃশংস কর্ম করিয়াছিলেন,
তাহাতে ভোমরা তাঁহাকে নিবারণ কর নাই কেন?
হে দেবগণ! এক্ষণে শুলী আমাকে ভ্রুনা করুন,
যেহেতু ইহাই তাঁহ্রার পক্ষে পরম হিতকর; বিশেবত্ত একপ হইলে ভোমাদিগেরও চির্মক্রল হইবে।

দেবগণ কহিলেন, হে সর্বেশর প্ররপতে। আপ্র-কার বাহা ইক্ষা আমরা ভাষাই করিভেছি; ইক্ষা-বীকে অবিলয়েই আপনকার রিকটে আনিরা মির; লাপনি প্রীত হইনা এই কোগ পরিক্ষাণ কর্মন। শুলা কহিলেন, হে ভারত। অনর্যাণ ভার্মক কান এই কো বলিয়া ইক্ষানীকে ঐ অভত সংবাদ विकार करिया किया विकार करिया , ति स्वर्थ करिया , ति स्वर्थ करिया करिया करिया करिया , ति स्वर्थ करिया करिया

দেবগণের এই বাক্যে শচী অভিমাত্র কাভরা হইরা বাস্পাকৃল-লোচনে গদাদ-স্বরে রোদন করিতে করিতে রহস্পতিকে কহিলেন, হে • দেবর্ষি-সন্তম! নহুবকে পতি করিতে আমার ইছা হয় না; হে বন্ধন! আমি আপনকার শরণ লইরাছি, সংপ্রতি এই মহৎ ভয় হইতে আমাকে পরিত্রাণ করুন।

্ৰুহস্পতি কহিলেন, ইন্দ্ৰাণি! আমার এইৰূপ নি-শ্বর আছে যে, শরণাগত ব্যক্তিকে আমি পরিত্যাগ করি না; অতএব হে অনিন্দিতে! ধর্মজ্ঞা ও সত্য-শীলা ভোমাকে কোন ক্রমে পরিত্যাগ করিব না। আমি ব্ৰাহ্মণ, বিশেষত শ্ৰুতধৰ্মা ও সত্যনিষ্ঠ হইয়া এবং ধর্মের অমুশাসন জানিয়া শুনিয়া কি বলিয়া चकार्या कन्नर्थ अनुष रहेत ?- चर्टर सुरत्नाखनगर्। ভোমরা প্রস্থান কর, আমি কদাপি এ কর্ম করিতে পারিব না। এই বিষয়ে পূর্বে ক্রমা বেরপ সভিপ্রায় কীর্ডন করিয়াছিলেন, তাহা অবণ কর। " বে ব্যক্তি ভরাকুল শরণামত ব্যক্তিকে শতহতে সমর্পণ করে, छारीत क्षित्रमध्य अनुत्रकारम दीव अवन अनुत्रिक इन्न ना जबर वदी समदन्न वाहित्रवर्ग इन्न ना ; त्म विनार स्टेट्ड शतिवार हैका कंत्रिक तक्रे छारात प्रकृत रेव मां छाराव (य काम वर्ष शक् रेव छारा रात रहता थात्रः चर्नात्वादम् जेलनी छ रहेदमञ्चल- হাকে বিশ্বেষ । বতাৰেই হইটা বৃদ্ধা দ্বালে এই হাকা বালা বিশ্বালা বালার হবা আলাকারে কা; লাভার নতান লাভার কালা বিশ্বালার কালা কালা বিশ্বালার হাকা কালার কালা বিশ্বালার হাকা বালার কালার কালার কালা বালার কালার কালার

শল্য কহিলেন, আদিরস-প্রবর অমর-গুরুর এইকপ দৃঢ়সংকণ্প অবশানন্তর দেবগণ পুনরার উহিচেক
কহিলেন, র্হস্পতে! সম্প্রতি কির্মণে স্থনীতি-পূর্বক
কার্য্য করা হইতে পারে, আপনিই তাহার মন্ত্রণা
করন।

র্হস্পতি কহিলেন, এই এক প্রামর্শ আছে; কল্যাণী ইল্রভামিনী নছক-সমিধানে কিমুৎকালের নিমিন্ত অবসর প্রার্থনা করুন, ছাহা হইলেই আমা-দিগের মঙ্গল হইবে। হে সুরগণ কালে বছপ্রকার বিশ্ব আছে; অতএব নছব বরদান-সম্পর্কে যদিও বলবান ও গর্বিত হইয়া উঠিয়াছে, তথাপি কালই ভাহাকে কালপ্রাপ্ত করাইবে।

भगा करिएनन, उरुक्षिक धरेबल महात्रम करिएन शर व्यवस्था कर्यन श्रीक स्टेस्न बाँगएनन, " उत्तर । व्यालिन क्रम्बल वर्शवानिभएनत रिफ्ट्स्त वर्थार्थ मध्यक्षी प्रमृद्धि विज्ञालक । ११ विज्ञालक । ध्यालिक व्यामिक करिए । स्वत्य व्यापक स्टेस्न विज्ञालक श्रीक्षिक करिए । व्यवस्थ मध्य (प्रदेश क्ष्मक्षित प्रमृद्धिक करिएक) कर्यक मुद्दिक क्षालिक करिएक

দেৰগণের এই বাক্য শুবণে ইন্দ্রাণী কার্যাসিন্ধিনিমিন্ত ভাহাই কর্ত্ববা জ্ঞান করিয়া লক্ষ্যানসমূথে
ভীবণ-দর্শন নহব-সমিধানে গমন করিলেন, এবং
সেই ছুক্টান্মাও ভাঁহাকে যুবতী ও অভুল্য-কপলাবণ্যবতী অবলোকন করিয়া পরম হাইচিত্ত ও কামমোহিত হইয়া পড়িল।

नक्त-नभीदश रेखांनीत शमदन बानम व्यशास नमाख । >२ ।

नेना करिएनन, जनस्त प्रवताज नक्य नहीरक দর্শন করিয়া বলিলেন, "হে শুচিন্মিতে! সম্প্রতি আমিই এই তৈলোকোর অধীশ্বর হইয়াছি; অতএব হে বরারোছে! হে বরবর্ণিনি! তুমি আমাকে পতি-कारम खबना कर ^ग। পতিত্রতা ইন্সাণী নহবের এই कृषे बाक्य अवर्ष अवगाकृता श्रेत्रा श्रेवन-वाञ्च-विव्यालक कार्योत बाह्य किलाज-कार्यवा रहेरान क्षत्र क्रुडाक्ष्मिश्रुटि मत्न मत्न उक्षात्क क्षरीम क्षित्रा बाजनर्गन (मरदाक्राक्र किर्लन, रु खुरत्यत। जामि षाभनकात्र विकटि किश्रश्कारलत निभिन्न व्यवस्त नार्डित थार्थना कृति ; रह थएडा ! अक् कि एमा व्याख हरेतन, काशास ना अमन कतिर्मन, जारा व-প্ৰক্ৰিনিতি হয় নাই; সতএৰ মত্তে তাহা কানা भारताल सङ्केटकरक, शकार यात अकावरे फाराज मचान जा शिक्षा बाद छटव चात्र गंका करिया विवाहित चर्ताने चानसात स्वित्।

हैस्याधीत धरे सबात स्थव, व्यक्तित श्रीविक्त स्टेता सरिरंजन, रर सरकाति। जूबि व्यासारक स्वका

रमिएकड, खाराई रखेक; शत्रक रेट्यांत बद्धाम श्रांति तारे जामात निकटि जानित्व, धरे त्व गडा कतिर्था, धटितान त्यामात जात बाटक।

अवाकी वनविनी देखांशी अहेन्द्राश नक्त नहींद्रा বিদার পাইরা তথা হইতে পুনরার ব্রুপতি-নিকে-**ज्या भवन कतिराम अवश स्वत्राक्राक स्व क्या** वित्रा चारेतन, जारा त्ववंश-मन्निर्धात चविकत বর্ণন করিলেন। তখন গুরুপ্রমুখ অমরগণ তাঁহার সেই বাক্য অবণে একাএচিড হইয়া শক্রের নিমিড চিন্তা করিতে লাগিলেন। হে রাজেন্দ্র পরিশেবে তাঁহার৷ উৎকলিকাকুল মানসে অখিল-প্রভবিষ্ **एस्य एस्य विक्-अभिधारन शयन कतिया ख्रम्मत वहना-**विनाम क्रबंध करिएनम, " रह राएवण ! ऋत-গণেশ্বর পুরন্দর ব্রক্ষহত্যার অভিভূত হইরা অজ্ঞাত বাস করিতেছেন; স্থতরাং সম্প্রতি আপনকার অমু-গ্রহ ভিন্ন আমাদিণের অনাগতি নাই, বেহেতু আ-পনি জগতের প্রভু স্বৰূপে নর্বাত্রে জন্মপরিগ্রহ করিয়া সর্বভূতের রক্ষানিমিত্ত বিফুত্ব প্রাপ্ত হই-রাছেন। ছে স্থরগণাঞ্জগণা! আপনকার বীর্যাঞ্জভাবে র্তান্তর বিনফ হইলে বাসব ব্রন্ধহতাায় সংর্ত হইয়া রহিয়াছেন, অতএব কি উপায়ে তাঁহার মুক্তি হইতে পারে তাহা নির্দেশ করুন।

দেবগণের সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া বিষ্ণু কহিলেন,
বন্ধারী পুরন্দর যজের অনুষ্ঠান-ছারা আমাকে
অর্জনা করুন, তাহা হইলেই আমি তাঁহাকে পাপ্যবিষ্ণুক্ত করিয়া দিব। পুণাসাধন অধ্যমধ-ছারা আমার আরাধনা করিয়া পাকশাসন পুনর্বার কেবেক্সস্থ
লাভ করত অকুতোভর হইবেন এবং সুর্মাত নছবও
বকীয় ভ্রম্ম-ছারা বিনাশ প্রাপ্ত হইবে। অভএব
হে দেবগণ। ভোমরা সভত অবহিত থাকিয়া ভাহার
ক্রেন্তা বাহ্য

বিক্রা এই অমুডোগম, ক্রম্ভ ও মানা বাব্য নারতে পুমক্তিত স্টোনা অম্প্রাণ ক্রম্ভ ও মানানা দেববিল্ সমজিবাহারে, বৈশ্বানে পুরন্ধর ভরোজিয় চিডে

সবিহিতি করিডেছিলেন, সেই খানে সিয়া উপনীত

হইলেন। হে রাজন্! তথার মহালা মহেন্দ্রের

বিশুলি-নিমিতে ব্রন্ধত্যা-বিমোচক স্থমহান্ অশ্বমেধ বজা সন্পাদিত হইল। হে বৃধিতির! স্থরেশ্বর
বাসব ব্রন্ধহত্যাকে আল্ল-দেহ হইতে বিসর্জন-পূর্বক
বৃক্ষ, নদী, পর্বত, পৃথিবী, স্ত্রী ও অন্যান্য ভূতবর্গমধ্যে বিভক্ত করিয়া দিয়া পাপ-নির্দ্ধুক্ত ও স্থস্থচিত

হইলেন। এইনপে আল্লবান্ হইয়া দেবরাজ শচীপতি পুনর্বার স্বাধীনতা লাভ করিলেন বটে, কিন্তু
নছমকে স্থান হইতে অবিচলিত, বরদান প্রভাবে
স্থান্থ্য ও সর্বাভূতের তেজঃসংহারক দৃত্যি করিয়া
পুনরায় অমুদ্দিত হইলেন, এবং কালান্থর প্রতীক্ষা
করত সর্বাভূতের অদৃশ্য থাকিয়া ইতন্তত বিচরণ
করিতে লাগিলেন।

পুরন্দর পুনর্বার অমুদ্দিউ ছইলে শচীদেবীর সন্তাপের আর পরিসীমা রছিল না। তিনি স্বত্নুংখিতা ও সাতিশয় শোক-সমন্বিতা হইয়া 'হা শক্র ।' এইৰূপ আর্ত্তনাদ-সহকারে বিলাপ করিতে লাগিলেন, " যদি কখন আমি দানধর্মের অমুষ্ঠান করিয়া থাকি, যদি অগ্নিতে কখন আছতি দিয়া থাকি, শুক্রাবা-দারা यपि शुक्रजनशंगदक महुके कतिशा थाकि, यपि मछा আমাতে নিয়ত বিদ্যমান থাকে, তবে যেন আমি कियान कारमध वाजिनातिगी ना हरे; आमात धक-ভৰ্তৃত্ব বেন চিব্নকালই অকুগ্ন থাকে। অদ্য উত্তরারণ প্রবৃত্ত ইইরাছে: অতএব আমি দেব-সম্বন্ধিনী এই পবিতা রাত্রিদেবীর উপাসনা করিব, ইইার আরা-ধনার আমার মনোরধ সিদ্ধ হউক।" এইৰপ বি-লাপ ও কার্যানিশ্চর অবধারণ করিয়া, ইন্দ্রাণী সংসম-वर्जी इरेन्ना मिनारनवीत छेशीमना व्यक्तिरनन, ध्वर সভীত্ব-হেতুক সভানিষ্ঠার উপরে নির্ভন্ন করিরা, উপ-अपि वर्षार भएलार-निर्वासिका लेवी रेपवरानीरेक चौक्तीन कंक्रंड केरिएमन, ८६ त्मवि ! दव शास्त्र त्मव-वार्ष (मानविक्रीक्ष "प्यक्तिक क्षेत्रिक्ट्रिस, प्राचारक

নেই প্রক্রেটি প্রদর্শন করুন; ইন্টামিট ব্যক্তিরা দেবতাদিদের স্তব করিলে, দেবতারা অবশাই ব্র প্রদান করেন ' এই সভ্য বাকাটি সভ্য করুন! শচীর উপস্থাতি প্রার্থনার ত্রের্দেশ অধ্যায়

সমাপ্ত ৷ ১৩ ৷

শলা কহিলেন, অনন্তর উপশ্রুতি, মূর্ডিমতী হইয়া

সেই পতিব্ৰতা শচী-দেবীর সন্নিধানে আবির্ভূতা रहेटलन। उथन हेक्सानी, तारे चसुभम-स्भानानना-বতী যুবতী উপশ্রুতি-দেবীকে সমীপবর্জিনী দেখিয়া অতিমাত্র শৃষ্টচিত্তে সমাক্রপে অর্চনা করত কহি-লেন, হে বরাননে! আপনাকে আমি জানিতে ইক্সা করি; আপনি কে, বলুন। উপশ্রুতি উদ্ভর করিলেন, হে দেবি ! আমার নাম উপশ্রুতি : ত্বদীয় সত্যপ্রভা-বে আমি কেবল নিকটে উপনীতা হইয়াছি এমন নহে, ভোমার দর্শ**নপথে**ও আবির্ভূতা হইয়াছি। হে ভাবিনি! তুমি পতিব্ৰভা ও সংবম-নিয়মে নিভ্য নি রতা ; অতএব বৃত্ত-নিস্থদন বাসবদেবকে আমি অব-শাই তোমার নেত্রগোচর করাইব। হে দেবি। ভো মার মঙ্গল হউক, তুমি অবিলয়ে আমার অনুগামিনী रहेशा आहेत, भीखरे खुद्धमुद्धत त्रमूर्णन शाहेता। অনন্তর উপশ্রুতি প্রস্থিতা হইলে ইক্রাণীও ঠা-হার পশ্চাকামিনী হইয়া চলিলেন। হে ভারত। তিনি দেবারণা ও বছল শৈল-সকল অভিক্রম করিয়া পরিশেবে হিমালরের উত্তর পার্শ্বে আসিয়া উপ স্থিত হইলেন এবং বছবোজন-বিস্তৃত মহাসমুদ্র প্রাপ্ত र्रेजा मामाविध मरीक्र ७ वजामिक्दत शतिकीर्ग এक ख्विजीर्व महाबीटशत मिश्रियात जागमन कतिराजन। তথার উপনীত হইরা দেখিলেন, দীর্ঘ ও প্রস্থ উভয়-দিকেই শতবোজন-পরিমিত একটি পরম স্থান্দর মনোহর সরোবর রহিয়াছে; তাহাতে বছরে 💏-**छत्र विरुक्तभग देखलंक मक्तरण कत्रिएकटह**ं; में क्येंचेर्ग ৰিচিজিত সহত্ৰ সহত্ৰ দিবা কমল-সকল বিক্সিত रहेमा बहिमाटह अवर संपूर्वितेता अने अम् भटक गान

ক্ষ্মিতে করিতে তৎমছুদানে অমণ করিয়া বেড়াই-एउट्। नदनीत बवाखारन नकारनका द्रणी, नयूक्छ নাল ও শৈক্ষণ প্ৰদত কুহুমে উপশোভিতা যে अवहि नेत्र मरनाशातिगी निजनी दिल, मही छेनळ-ক্রি সহিত তাহার নালভেদ করিয়া তথ্যধ্যে প্রবেশ করিলেন এবং দেখিলেন, শত্রু তথায় সুক্ষরপ ধারণ-পূর্বক বিসভন্ত-মধ্যে প্রবিক্ট রহিয়াছেন। প্ৰভু স্থরপতিকে সেইৰপ স্কাকারে অবস্থিত দে-बिता नहीं ७ উপकृष्टि উভরেই स्का-बन्धातिगी रहेरमन वर रेक्नानी ख्रांत्रपात्रत भूकासूकिंड स्थ-সিদ্ধ মহৎ কর্ম-সকলের উল্লেখ করিয়া তাঁহাকে ত্তব করিতে লাগিলেন। শচী-কর্তৃক खुয়মান হইয়া भूतमात छोहादा जिल्लामितन, जूमि कि निमिष्ड আমার সমীপবর্জিনী হইলে এবং আমি যে এস্থানে অবস্থিতি করিতেছি, তাহাই বা কিরূপে জানিতে পারিলে?

ইন্দের এইৰূপ জিজ্ঞাসায় শচী, নছবের অমুন্তিত সমস্ত হুন্তাম্ভ বর্ণন করত কহিলেন, হে শতকতো! সেই কুরতম তুকীত্মা, ত্রিলোকের ইন্দ্রত্ব লাভে বীর্য্য-সমন্ত্রিত ও দর্পাবিক হইয়া, আমাকে তাহার ভজনা ক্রিভে আদেশ ক্রিয়াছে এবং সে নিমিতে সময় নির্দ্দিউ করিয়াও দিয়াছে; অতএব হে বিভো! বদি সেই সমরের মধ্যেই তাহার হস্ত হইতে পরিতাণ না करतन, जोरी रहेरन रा निक्तर यामारक वनवर्जिनी করিবে। হে মহাবাহো শক্র! আমি এই কার্য্যের নিমিডেই আপনকার নিকটে আসিয়াছি, এক্ষণে আপনি সেই পাপ-সংকম্প হোর-দর্শন নছবের বি-দাশ-সাধন করুন। হে বিভো। অধুনা এরুপ সমৃত वाक्तिनात नमत्र नरह ; भूर्य्त य ध्वकात नश्हात्रमूर्डि भार्त्रेण क्षित्रा देवकामानवम्दलत्र मनन क्रियाहितन, সেই ভন্নভন[ি] জীক্ষশ্ৰমণকে ঐকাশিত করুৰ এবং चलीय তেजानुक्रं व्याखं स्वैत्रं भूनतात व्यमत-त्राका मौजीय करून।

ইক্রাণীর ইক্রডেম্ব উত্কল অধ্যার দীমান্ত। ১৪।

শল্য কহিলেন, শতীর উক্তৰণ অনুনর বাকা অব-ণে ভগৰাৰ পুরন্দর পুনর্কার তাঁহাকে বলিলেন, হে ভাবিনি! অথুনা বিক্রম প্রকাশের অবসর নহে। ক্ষিণণের হবা করা প্রভাবে স্বাজিত হওরার নহন আমা অংগকা সম্বিক বল্লালী হইরাছে; হে দেবি! আমি এ বিষয়ে একটি স্থনীতি বিষান করি-তেছি; তুমি ভদমুসারে কার্য্য কর। হে কল্যালি! এ কর্মটি ভোমাকে অভি গোপনভাবে সম্পন্ন করি-তে হইবে; ইহালকুরাপি কাহারও নিকটে ব্যক্ত করা হইবে না। হে তমুমধ্যমে! তুমি নির্দ্ধনে নহন-সন্নিধানে গমন করিয়া ভাহাকে এই কথা বল, "হে জগৎপতে! তুমি খবিগণ-বাহ্ দিব্য থানে আ-রোহণ করিয়া আমার নিকটে আইম, ভাহা হইলেই আমি প্রীতা হইয়া ভোমার বশ্বর্জনী হইব"।

দেবরাজের এইকপ উপদেশ-বাক্যে কমল-নয়না
ইক্রাণী 'যথা আজ্ঞা 'বলিয়া নছব-সমীপে গমন
করিলেন। তথন নছব তাঁহাকে অবলোকন করিয়া
সন্মিত-বদনে কহিলেন, হে বরারোহে! তোমার
শোভন আগমন হইয়াছে। হে শুটিস্মিতে! এই
কিন্ধর উপস্থিত আছে, কি করিতে হইবে, আজ্ঞা
কর। হে কল্যাণি মনস্থিনি! আমি নিতান্তই তোন
মার অনুগত ভক্ত; অতএব অনুগ্রহ করিয়া আন
মাকে ভন্ধনা কর। হে সুমধ্যুদ্দে কল্যাণি! তোমার
কি অভিলাব আছে ব্যক্ত কর, আমি অবশাই তাহা
সন্পন্ধ করিব। হে সুম্প্রোণ আমার নিকটে তোন
মার কিছুমাত্র লক্ষ্যা করিবার প্রয়েজিন নাই; তুমি
নিঃসংশর-চিত্তে আমার উপরে বিশাস স্থাপন কর।
হে দেবি। আমি সভ্য-দারা শপথ করিতেছি, তোন
মার আদেশ প্রতিপালন করিব।

ইক্রানী কহিলেন, হে জগৎপতে হুররাজ! আপনি আমান্দে যে অবসর কাল নির্দিট করিরা দিরাছেন, আনি তাহারই প্রতীকা করিভেছি; নে সময় উত্তীর্ণ ইইলে, আপনিই আমার তর্তা ইইবেন। হে দে-বৈদ্রা: শক্তীতি আমার অভাক্রণে বৈ একটি কার্বোর

केमत्र स्टेशाट काका कर्तवार्तन क्सन। (र प्रानन्। चानात वहे विश्वकाराण काशाम यात्र गणा करतन, उद्धारे आर्थना कत्रिया क्लाक आमान वर्ष व्यनप्र-नरचुक कार्यना-वाकाणि तका कतितार वामि वामन-कार विकासिनी हरे। दर स्त्राधिन। जानात विक-नाय धरे त, कि विकृ कि क्रम, कि अन्नवान कि द्राष्ट्रमन्त्रन, क्ट्रे कान काटन गराउ जाद्रीरन करत्रन नाहे, जाननि अक्न अक् जर्म्स वाहरन गय-নাগমন করেন। হে বিভো! পূর্ব্ব ইন্দ্রের ত অব, হন্তী, রধ-প্রভৃতি বহুতর বাহন ছিল, একণে মহা-ভাগ ঋষিপণ মিলিত হইয়া আপনাকে শিবিকা-ছারা বহন করিতে থাকুন। হে রাজন ! আপনকার এইরপ অমুষ্ঠানেই আমার স্পৃহা হইতেছে; কেন-না স্থর কি অস্থরগণ মধ্যে কাহারও সহিত তুল্য হওয়া আপনকার উচিত হইতেছে না। দেখুন, व्यापनि पर्यन-मार्ट्स श्वकीय वीद्यावरण मकरणत्र एक আকর্ষণ করিতেছেন ; কোন বীর্যাবান্ ব্যক্তিই আ-পনকার সম্মুখে স্থন্থির থাকিতে পারে না।

শল্য কহিলেন, শচীর এই বাক্য ভাবণে স্থররাজ নছৰ তথন অভিমাত্ৰ ছাইচিত হইলেন এবং সেই व्यनिम्मिका रेक्षांगीरक वर्रे कथा वित्राख्य नागिरनन। - নছৰ কহিলেন, হে বরবর্ণিনি ! ভূমি যেৰূপ বাহ-नित्र केथा छेद्राथ कृतिता हैश यथार्थहे अपूर्व वर्षे। रह प्रवि! देशाञ आमात्रथ मृग्ठत न्पृश हरेएउहि। হে বরাদনে! আমি ভোমার আজামুবর্জী হইলাম; त्रार्क्षे मुनिर्मगटक बाह्न क्या जन्मवीर्धात कर्मा नरह ; रावांखि । धवल क्रिएड शांदा त व्यवनाहे व्यक्तिक-वनमानी मत्म्बर नारे। वित्वनमा क्रिया দেখিলে, আমিও তাদৃশ বলবান; আমি ছোরভর ভলোধর্মের অনুষ্ঠান করিয়া এক্ষণে ভূত ভবিব্যৎ वर्षमान नक्ष कारक्ष्मरे थाजू रहेशाहि। जानि कृष क्रेरण क्रमरण्य विवयम्भा छेनिक्छ रय। अक्नर আনাতে ঐতিটিত রবিয়াহে। ধর্ প্রচিত্রিতে। শ্বাদি কোম করিছে, দেব দামৰ গৰাৰ্ক কিলম নেছো-

রগ রাক্স-শ্রেছতি সর্বলোকে একজ বিলিত হই-লেও আমার নিকটে পর্যাও হইতে প্রান্তে না। আমি একবারমান বাকাকে নেন্তগোচর করি, জার্কা-রই ডেজ হরিয়া লই। অভনেত হে মেবি! আমি নিংসন্দেহ তোমার বাকা প্রতিপালন করিব। সপ্রধি ও সমন্ত ব্রন্ধরিগণ আমাকে বহন করিবেন। হে বরবর্ণিনি! তুমি আমানিগের মহিমা ও সমৃদ্ধি অব-লোকন কর।

শলা কহিলেন, সেই অতুলা-বলোপেত, মদ-বল-বিমোহিত, অব্রহ্মণা, স্বেক্ষাচারী, তুইালা নছৰ বরা-ননা শচীদেবীকে উক্তরূপ সন্তায়ণান্তে বিদার করিয়া নিয়মন্থিত ক্ষবিগণকে বিমানে বোক্তন-পূর্বক আপ-নাকে বহন করাইতে প্রবৃত্ত হইল। এদিকে ইন্দ্রাণী তাহার নিকটে বিদার লাভ করিয়া বহস্পতি-সমীপে আগমন-পূর্বক কহিলেন, ভগবদ! নছৰ আমাকে বে সময় নির্দিষ্ট করিয়া দিয়াছে, তাহার অপ্পমাত্র অবশেষ আছে; অতএব এই ভক্তকনের প্রতি দয়া করিয়া আপনি শীত্র শীত্র শক্তের অন্বেষ্ণ করুল।

শচীর এইৰপ অমুনর বাকো সন্ধৃত হইলা বৃহস্পৃতি কহিলেন, হাঁ, অবশ্যই ইহা করিব; হে দেবি !
ছুউচিত নত্ত্ব হুইতে তোমার কিছুমান ভর করিবার
প্রয়োজন নাই। হে শুভে! সেই নরাধ্য গতপ্রায়
হুইরাছে; আর অধিক বিলয় নাই, অচিরেই শ্যন
সদলে প্রস্থান করিবে। সে একে অধ্যুক্ত, তাহাতে
আবার মহর্ষিগণকৈ বাহন করার একবারে পাপভারে পূর্ণ হুইরা উঠিরাছে; স্থুতরাং কোন প্রকারেই
তাহার আর নিতার নাই। মেই ছুর্মতির বিনাশের
নিমিত্ত আমি একটা বজেরও অমুষ্ঠান করিব এবং
উহার ভারা শক্রকেও প্রাপ্ত হুইব; অতএব তোমার
কল্যাণ হুউক, ভূমি ভর করিও না।

হেরাকন্! অনস্তর মহাতেজা বৃহস্পতি, পুরুষ্টারর প্রাপ্তিকামনার হুতাশন প্রস্থালন-পূর্বাক বিধিবং আহুতি প্রদান করিলেন, এবং হ্রমান্তে আহিতে কহিলেন, আপনি শক্ষেম অনেশ্র কর্মন। ভাহাতে ভগৰান ছভাশন মুর্জিমান ছইরা ভাঁহার সন্মুখে আ-বিভূত হইলেন এবং অনুভ রমনীবেশ ধারণ করিরা সেইধানেই অন্তর্জান করিলেন। তিনি মনের ন্যায় দুভগামী হইরা, দিক, বিদিক, পর্বত, কানন, পৃথিবী ও অভ্রীক্ষ, সমুদার ছানে বিচরণ করিরা পরিশেষে মিষেব মাত্রেই পুনর্কার রহস্পতি-সমীপে উপনীত হইলেন।

আয় কহিলেন, হে রুহস্পতে। আমি সংসার
মধ্যে কুরাপি দেবরাজের অনুসন্ধান পাইলাম না;
জলে প্রবেশ করিতে আমার কথনই উৎসাহ হয় না,
স্তরাং ভাহাই কেবল অন্বেষণ করিতে অবশিষ্ট
আছে। হে বন্ধন। জলমধ্যে গমন করা আমার
সাধাাতীত; অতএব এতত্তির আপনকার অন্য কোন্
কর্ম করিতে হইবে বলুন।

ইহা শুনিয়া দেবগুরু তাঁহাকে কহিলেন, হে মহা-ছাতে! আপনি নিঃসংশয়ে সলিল-মধ্যে প্রবেশ করুন।

অন্তি কহিলেন, হে মহাজাতে! আমি আপনকার
শরণাপর হইলাম; আপনকার মঙ্গল হউক, আমি
অলে প্রবেশ করিতে পারিব না, করিলে নিঃসন্দেহ
আমার বিনাশ হইবে। দেখুন, জল হইতে অনলের,
রাজাণ হইতে কজিয়ের, এবং প্রস্তর হইতে লৌহের
উৎপত্তি হইরাছে; তাহাদিসের তেজ অন্য সকল
হানেই সংগারিত হইরা থাকে, কিন্তু স্থীর স্থীর উৎ
পত্তি স্থানে লর প্রাপ্ত হর।

अबिहरू गाँउ नरबाद शक्तम अशास नमाश्च । >e ।

র্থিপতি কহিলেন, হে অয়ে । আপনি হয়নাহ,
স্তরাং শাল্ড দেবগণের 'মুধ্-ছত্তপ হইরাছেন।
আপনি সাকী-ক্ষিণ হইরা স্বভ্তের অভরে গৃচভাবে সঞ্চরণ করেন। হৈ ছভাশন। ইতিছেরা
কথন এক, কথন বা শ্লিবিধ বলিয়া আপনকার ইত্তপ
নির্দিত করেন। আপনি শাল্ডান ক্রিটেন, এই ব্যন্ত

मश्मीदत्तत्र मणारे मश्मात सभा छिनेष्ठि रेस्ती ^रजीनेने কার আরাধনা করিয়া ব্রাক্ষণগণ পুত্রকলতের নাইড সীয় স্বীয় স্ক্রতি-লক্ষ্য চিত্রতন স্থানে গমন করিয়া षारकन। रह वर्द्धाः जाशनि ह्वावाह अवर जान নিই পরম হবা। বিজ্ঞোরা সতাদি পরম বজ্ঞসমুহের অমুঠান-বারা কেবল আপনাকেই অর্চনা করেন। **८६ हरावार ! आश्राम वह विद्यादिक श्री कर्द्रम,** আবার কালপ্রাপ্ত হইলে প্রচণ্ড মুর্ভিধারণ করিয়া व्यापनिर नकरनक्ष नःशतं करतन। विश्वित चूर्यन মগুলের উৎপত্তি হিতি ও বিলয় সকলই আপ-নাতে প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। মনীবা-সম্পন্ন পণ্ডি-তেরা আপনাকেই জলদ ও বিচ্যাৎ বলিয়া বর্ণন করি-য়াছেন। আপনকার দেহ হইতে প্রদীপ্ত শিখাবলি বিনির্গত হইয়া সমস্ত ভূতবর্গকে দহন করে। যাব-তীয় বারিরাশি আপনাতেই নিহিত রহিয়াছে। কেবল বারিরাশিই কেন ? সমন্ত জগতই আপনাতে অবহিতি করিতেছে। হে পাবক! এই তিলোকী মধ্যে কিছুই আপনকার অবিদিত নাই। দেখুন জগ-তের সকল পদার্থই আপন আপন কারণকৈ ভজনা করিয়া থাকে; অতএব আপনি কিছুমাত্র শঙ্কা না क्रिज्ञा वाजि-मर्पा अर्वम क्रम्म ; जामि ममाजन ব্রান্ধ মন্ত্র সহকারে আপনাকে সম্বর্জিত করিব। कविरव्यक्षे जगवान् इवावार, ज्यात खन्त धरेक्न

কৰিশ্রেষ্ঠ ভগৰান্ হ্ব্যবাহ, জমর গুরুর এইৰপ স্থান্ত বাক্যে প্রীতিমান্ হইয়া কহিলেন, হৈ বহ-স্পাতে! আমি সত্য করিয়া বলিতেছি, পুরুদ্ধকে অবশ্যই আপনকরি দৃটিগোচর করিয়া দিব।

শল্য কহিলেন, ইং ভরতর্বভ! অনন্তর আয়িদেব সাগরাদি পলুল পর্যান্ত যাবভীর ভলাশরে প্রবেশ করিতে করিভে, বে সরোবরে পুরন্দর নিলীন ছি-লেন, জামে সেই থানে আসিরা উপস্থিত হইলেন এবং উত্তত্য কমল লকল অব্যেশ করত দেখিলেন, দেবরাজ বিসভন্ত-মধ্যে প্রবিষ্ট রহিয়াছেল। এইবংগ ভাহার গল্পান পাইবামাজ ইভানন উবা ইইডে লীজ মুহুন্দাভি সন্ত্রীপে আগবন-পূর্বক কহিলেন, ইডর্ম্বন্ন

क्रक-करनत शहर क्रिजी श्रीक्ठक जार्थन क्रिजी हरित्रोटक्न । जन्मंत्र जात्रश्रम्भ दश्वर्थि ७ शक्त्रश्री সম্ভিব্যাহারে শচীনাধের স্লিহিত হইরা পুরা-কালীন স্থাহৎ কর্ম-সকলের আধ্যান-দারা তাঁহাকে এইমণে স্তব করিতে লাগিলেন 🕍 " হে শক্র ! ভূমি शूट्य नमूर्वि, भवत ७ वन, धर्रे चात्र-विक्रम निर्मा-ৰুণ মহাস্থ্রদিগকে বিনষ্ট করিয়াছ, এক্ষণেও বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া অবশিষ্ট শক্র-সকলের নিধন সাধন কর। হে শভক্রতো! নিজমূর্ত্তি ধারণ-পূর্বক গাতো-थान कत ; अरे प्रथ, ममूनात्र प्रवर्धि-मच्छानात्र चात-তর দায়গ্রস্ত হইয়া সহায় প্রার্থনায় তোমার নিকটে সমাগত হইরাছেন। হে বিভো! হে মহেন্দ্র ! তুমি দানবগণকে নিহত করিয়া সর্বলোকের পরিত্রাণ করিয়াছ। হে জগৎপতে দেবরাজ। পুর্বের তুমি বিষ্ণুতেকে সম্বর্জিত জলীয় কেন-মাত্র জ্ববলম্বন করি-য়া রুত্রাস্থরকে বিনষ্ট করিয়াছ। হে শক্র: বাবতীয় ভূতবর্গ-মধ্যে ভূমিই প্রধান শরণ্য ও পূজনীয়; এই বিশ্বসংসারে ভোমার তুল্য হইতে পারে, এমন প্রা-ণীই অপ্রসিজ। হে শক্র! তুমিই সর্বভূতের ভার ধারণ করিয়া রহিয়াছ এবং তুমিই দেবগণের মা-হান্ম্য বিধান করিয়াছ! অতএব হে মহেন্দ্র! সংপ্রতি जूमि चीत्र वन धाश्च हहेत्रा त्नहे खूत्रभग ७ ममूनत প্রাণিবর্গকে রক্ষা কর !

দেবর্ষিগণ এই বাপী স্তব করিলে, ইন্দ্র ক্রমে ক্রমে বর্দ্ধিত হইতে লাগিলেন, এবং স্বাভাবিক কলেবর ও বল প্রাপ্ত হইরা, সমীপ্রবর্তী শুরু রহস্পতিকে কহি-লেন, স্বস্টুতনর মহাস্থর ত্রিশিরা ও লোক-বিলোপ-মমুদ্যত মহাকার র্ত্ত, উভরেই ত নিহত হইরাছে, তবে স্থার এক্ষণে স্থাপনাদিখের কোন্ কার্য স্থব-শিক্ষী স্থাছে.?

র্কশতি করিলেন, সম্প্রতি মনুব্য-লাতীয় নছব নর্মানি দেববিগণের ক্ষেত্রভাততে বেরোলোর ক্ষিত্রভি ক্রেনা ক্লামানিয়াকে সাক্ষিত্র দীড়া দি- ইন্ত্ৰ কহিলেন, হে বৃহক্ষতে ! নছৰ মান্ত্ৰ হইরাও স্কুৰ্লভ দেব-রাজ্য কিবণে প্রাপ্ত হইল ? নে এমন কি তপস্যা করিয়াছে, এমন বীর্য্যই বা তাহার কি আছে বে, অমরগণের অধিপতি হইতে পারে ?

বৃহস্পতি কহিলেন, হে স্থরপতে! ভূমি সেই স্থ-মহৎ ইন্দ্রত্ব পদ পরিত্যাগ করিলে, দেবভারা ভীত হইয়া কেহই তাহা গ্রহণ করিতে অভিলাষ করি-लिन ना। ए गकः । ७९कारल छोहात्रा व्यथान व्यथान গন্ধর্ক, পিতৃগণ ও ঋবিগণের সহিত একতা হইরা নছৰ-সমীপে গমন-পূৰ্বক কহিলেন, রাজন্! আমা দিগের আধিপত্য গ্রহণ করত ত্রিভূবনের রক্ষাকর্ডা হও। তাহাতে নছব তাঁহাদিগকে এই কথা বলিল, আপনাদিগের রাজা হইতে পারি, আমার এমন সামর্থ্য নাই ; অতএব আপনারা তপোবল-সহকারে আমারে পরাক্রমে বর্দ্ধিত করুন। এইরূপ ক্ষিত হইয়া দেবগণ তাহার র্দ্ধিসাধন করিলে, রাজা নছ্য चात्रजत वौर्यााचिष्ठ रहेन अवः किलाकात जाधि-পত্য লাভ করিয়া ঈদৃশ ছুরান্মা ও লোক-নিষ্পীড়ক হইরা উঠিল যে, মহর্ষিগণকেও বাহন করিরা বাজা-রাত করিতে লাগিল। হে স্থরেন্দ্র । নছ্য দৃষ্টিবিব-স্বৰূপ হইয়াছে; সে যাহাকে দেখে ভাঁহারই ভেজ হরিয়া লয়; অতএর ভুমি কদাচিৎ তাহারে দৃটি-গোচর করিও না। দেবতারা ভরার্ড হইন্না নছবকে व्यवलाकन करतन ना ; मकरलहे भूषकरण विष्त्रग করিতেছেন।

শল্য কহিলেন, আঙ্গিরস-বংশচুড়ামণি বৃহস্পতি এইরপ সম্ভাবণ করিতেছেন, এমন সময়ে তথার লোকপাল কুবের, স্থাপুত্র বম, পুরাণ দেব সোম ও জলাধিপতি বরুণ আসিয়া উপস্থিত হইলেন। তাঁহারা মহেত্রের সমিহিত হইয়া তাঁহাকে এই কথা বলিলেন, হে শক্তঃ ভাগাক্রমে আপনি পর্যাপ্তার ম্বাইকুমার কিলিয়া ও ব্রুকে নিহাত করিয়ালের এবং আগ্যক্রমের কিলিয়া ও ব্রুকে নিহাত করিয়ালের এবং আগ্যক্রমেই আমরা সাপনাকে শক্তর ও কুলনী দৃক্তি করিলাম।

व्यवनाव की प्रवाद करेता थे गावन जार-পালের সহিত মুখানং সালিজন ও প্রতিসম্ভাষ্ণ-**পूर्वक क्रीशरिकटक नहरवत्र वृद्धिराज्य-गायमादर्व नि**-রোক্তি করিবার অভিপ্রায়ে কহিলেন, " হে লোক-প্রিকাণ! নছব দেবভাদিণের রাজা হইরা অভিশর জীবণমূর্তি ধারণ করিরাছে; অতএব তাহার সংহা-রার্থে ভোমাদিগকে আমার সাহায্য করিতে হই-त्व । अधि कथात्र काश्राता छक्त कतिरचन, रह रम-বেলে ানছবের ৰূপ অতিভর্তর; একবারমাত্র তা-शत त्वरमाठत इरेटन यात निखात गारे, म मृष्टि-বির হইরাছে; স্থভরাং ভাহার নিকটে খাইতেই जामानिरंगत जत्र रतः; छटव यनि जार्थान जार्यान मिश्राटक नरक नरेत्रा ভाराटक পরাজয় করেন, ভাरা इरेटन यामानिटात एिंड-व्यक्त किथिए किथिए ভাগ পাওয়া উচিত হয়।

्रेख करितन, चाति नकत्वद्ररे जात्र निर्किष्ठ ক্রিরা দিতেছি,—বস্লণ! ভূমি জলাধিপতি হও; এবং বন ও কুবেরও আমার সহিত এক এক রাজ-कार्याः व्यक्तिक रुपेन ; वना वागता नकन रात-जान मिनिज हरेना जारे, खान-पर्गन शतम मक नर-বের পরাক্তর সাধন করিব

जनसङ्ग्रामा के हेस्राटक कहिएनन, खुरत्रचंत्र ! जा-মাকে ভাগ প্রদান কর্মন, আমিও আপনকার সহা-ন্নভা করিব। তাহাতে শক্ত ভাঁহারে কহিলেন, बर्स । बहायका-इटन, 'रेखाधि-महस्तीप्र' वनिता जामात्रक अकृषि चल्क जान निर्मिष्ठ रहेर्त ।

मना कहिरनम, शांकभागम जनवान मरहस वहे-कुन बन्नधार प्रेन्ना काशांटर कान् परिकात निरंबन, ধ্যুদ্ধান চিন্তা করিয়া পরিলেবে কুবেরকে যাবতীর বক্ষপত্রপুর, ৩ পন-সকলের,, বমকে পিকুলোকের এবং বয়ণকৈ নালিলের আমিপতা প্রদান করিলেন।

रेख-बन्नमंकि महत्रहात व्यक्ति चथान

मना करिएनन, धीमान त्रवत्राच, त्र्वाक्रशांना 🕸 অন্যান্য দেবগণের সহিত মিলিভ হইনা মহুদের বিনাশোপায় চিন্তা করিভেছেন, এমন সম্বন্ধ ক্ষেত্র-তর তপৰী ভগৰান অগত্তা মূনি তথার উপস্থিত হইরা তাঁহার প্রভাক্ষোচর হইলেন। তিনি দে-विश्व चर्कना कवित्रा करितन, रह शूद्र-ন্দর! ভাগ্যক্রমে আপনি বিশ্বরূপ ও ব্রাহ্মরকে বিনক করিয়া সম্বর্জিত হইয়াছেন এবং ভাগ্যক্রমে ছুরান্ধা নহবও দেরুরাল্য হইতে পরিভ্রুত হইরাছে। হে বলস্থান! আপনাকে শত্ৰুগণ হইতে বিমুক্ত দে-খিয়া আমি অত্যন্ত আনন্দিত হইলাম।

ইন্দ্র কহিলেন, মহর্বে! আপনকার শুভাগমন হউক ; আপনকার দর্শন পাইয়া আমি অতীব প্রীত হইলাম; সম্প্রতি পাদ্য আচমনীয় পো ও অর্থ্য প্রদান করিতেছি, অনুগ্রহ-পূর্বক প্রতিগ্রহ করুন।

ু শল্য কহিলেন, ব্ৰাহ্মণভোষ্ঠ মুনিসম্ভম স্থগন্ত্য এই-ৰূপে পুজিত হইয়া আসন পরিগ্রহ করিলে, দেব-রাজ প্রীতি-প্রফুল চিত্তে তাঁহাকে জিজাসিলেন, ভগবন্ বিজসন্তম! আমার অভিলাষ এই ষে, পাপ-निक्त प्रवाभन्न नक्ष किक्ट्य चर्ग रहेटल পति खर्क হইল, সেই রুক্তান্তটি আপনি বর্ণন করেন।

অগন্ত্য কহিলেন, হে শক্র ! বল-দর্পিড, চুরান্ধ-ৰান্, ছুরাচার রাজা নছৰ বেৰূপে স্বৰ্গ হইতে জ্ৰুট হইয়াছে, সেই প্রিয় বাক্যটি বাস্তু করিভেছি, অবণ क्रम्म । ए विक्रिति व्यर्थ एत्वताक वामव ! महाजान দেবর্ষি ও পবিত্রান্ধা ত্রন্ধর্ষিণ্ সেই পাপকারী নছব-কে বহন করত প্রারিশ্রমে পীড়িত হইরা ভাহাকে একটি সংশয়ের বিষয় জিজাসা করিবেরন বে, বজীয় श्रीवर्ध विवरत व्यरमास व नमस मुख चारक जानन-কার মতে তৎনমুদার প্রমাণ কি না ? ভাষাত্ত মোহ-ডিদিরাক্স নত্ব ভাঁছারিগকে কহিল, মা; বে यसम्ब महा क्षेत्रांप गरह। अस्वित्तः सरिद्यानः पूर्वि जित्तन्तिकः भाषानिके सङ्ग्रह

वरेत्रार, क्रुंच्यार अन्त्रास्थ्यात् काच कविष्यः (क्या ३

ভোষার অতে বাহা বার্ত্তার্থনি বিভাগ ক্রি ইইভেছে, আমানিকের নিকটে ভাতাই বথাব প্রমাণ, বেত্ত্ব প্রাচীন মহাবসণ ভাতা মৃক্তকতে উক্ত করিয়া নি-রাছেন।

्यत्रेखा कहिएननं, ए बानव ! निर्मे प्रश्निनीषिष नक्त वे विक्त गरेना मुनिनित्तर गरिए वानविख्या করিতে করিতে পরিলেকেপাদ-বারা আমার মন্তক স্পূৰ্ণ করিল। হে শচীপতে। ঐ সাপকর্ম-ছারা সে वक्रार्क निरंखक ए जिसेन हरेत्रा श्रीकृत। जनस्त তাহাকে সহসাঁ উৰিয় ও ভন্নবাকুল দেখিলা আমি **এই क्या विनाम, "ता पृष्ट एक व्याधीन পण्डि**-গণের প্রচারিত এবং ব্রন্ধবিসণের অনুষ্ঠিত দোব-লেশ-পরিপুনা বেদবিহিত ধর্মের প্রতি দোবারোপ क्तिरङ्गि, जाकार उन्नरूण छुत्रामम स्विमिशस्य त्व वहिन कतिया अवनीत्रमन कतिन् अवः शामबात्रा আমার উত্তমান্ধ যে স্পার্শ করিলি, এই হোরতর তুর্বরের কলে তুই কীণপুণ্য প্রভাগন্য ও বর্গবিচ্যুত হইরা অবিলয়ে ভূতলশারী হ। রে পাপাছন। পৃথি-বীতে ভূই বিষমভর বিষয়র মূর্ডি ধারণ-পূর্বক দশ সহস্র বর্ষ বিচরণ করিয়া কালপূর্ণ হইলে পুনরায় স্বৰ্গ লাভ করিবি "।

হে অরিন্দম! এই ৰপে সেই ছুউ। দ্বা দেবরাজা হইতে পরিজ্ঞত হইয়াছে। হে শক্র! নিদারুণ ব্রাক্শ-কণ্টক নিহত হওরার আমাদিদের সৌভাগা রুক্তি হইল। হে শচীপতে! সম্প্রতি আপনি ত্রিপি-উল্লেখিটান-পুর্মক জিডেন্সির, সিতপক্ত ও মহর্ষি-গল-কর্তি সুম্বান হইয়া পুনরাম্ব লোক সকলের. ক্রিপালন কর্ত্ত।

जैना करिएनन, रह त्राज्य! जनस्त रहन, महर्चि, निर्जुटेशोक, राक्ष, शत्रम, त्राक्षन, नक्षसं, रहनकमा, चंक्षत्रा, महत्रावत, महिन, टेनम ७ क्रमधिनम मकरणरे मार्जिनत महर्के हरेता स्ट्राक्ष मनीएन चाममनन्तिक संविधिनते एक महर्चित । जेनामं चनका देशस्त्रावक् মুরাজার পালাখা। বহুবাকে যে খর্ম কর্মক অপসীত করত সহীতলৈ সপ্রস্থারী করিয়া রাখিলেই, ইহা অত্যন্ত আনক্ষের বিষয়।

नक्ष्यस्था मश्रम्भ व्यक्तिमान्यः । २५ ।

नेना करिएनन, जनस्त्र द्वानिस्पन थाष्ट्र स्वदान नजक्रू, जन्नव ७ जन्जनाभन-कर्क खुन्नमान रहेन्। नर्यनक्त-नन्त्रज्ञ माठकतीक विद्रीवटक चारतार्ग-'পूर्वक 'मरोर्डका चींग, मर्राव द्रहण्णांड, बम, वस्रन, ধনেশ্বর কুবের ও অপরাপর অমর-নিকর সমভি-वाशिदा विजूतन त्रांच्या व्यक्तिक श्रेटनम अवः मरह-ক্রাণীর সহিত মিলিত হইয়া প্রীতিপ্রকৃল চিত্তে ভাহা পালন করিতে লাগিলেন। অনন্তর স্থাসিক ভগবাদ অসিরা ইন্দ্র সভার সমাগত হইটোন এবং **অর্থকী**বেদোক্ত মন্ত্র-সকলের অনুকীর্ভন-ছারা দৈ-विकारक नमाक्कारण श्रृका कत्रिरणन । कर्मनान् श्रृत्र-ন্দর তাহাতে অতিমাত্র হাই হইয়া নেই অথকবেদী व्यक्तितारक उचन धरे रत्न व्यतान कतिर्वान रा, वा পনি অথব্যবেদের কীর্ত্তন করিলেন, এজনো এই বেদে व्यर्कानिवन-नामा कवि रहेरवन अवर जाननि यख्ड-व्रु जान भारेर्यन। यहाताजा एत्यताज जनवान् भडक्र ७ १कारण धरेबश मचान-महकारत्र अवस्ता-वित्रतरक विषात्र कतिरणन अवर मत्रूषात्र रमव ७ তপোধন ক্ষৰিগণকৈ বধাৰোগ্য পূজা করিয়া পর্মা-नरम यथा धर्मासूनारत खना शानम कतिएक गानि-(नन।

হে রাজেন্ত! মহেন্দ্র শক্তগণের বধাকাকার অক্তাত-বাস-পরারণ হইরা ভার্যার সহিত এইবপ ফুথ পাইরাছিলেন। অভএব হে ভারভ। তৃমি বে নৌপনী ও মহান্ধা জাতুলপের সহিত মহারণে ক্রিণ করছে ক্লেশ পাইরাছিলে, সে নিকিছা আর শৌক করিবার প্রয়োজন নাই। হে কৌরবনদন! হ্লাছার্ডে বিনট করিয়া শীক্ত বেমন পুনরার হারা-

ষিপটা প্ৰাপ্ত হইরাছিলেন, সেইৰণ ভূমিও সঞ-নিপাত-ছারা স্ববীর রাজা গাঁভ করিবে। হে বীর্ষা-প্রভাব-সম্পর্ম শক্তস্থান। ভক্তবেকী হুরাচার পাপাত্ম ন্ত্ৰ প্ৰতি-শাপে অভিহত হইয়া যেমন চিব্ৰকা-জৌৰ নিমিত বিন্ট হইবাছিল, তদ্ৰপ কৰ্ণ মুৰ্ব্যো-বিনাদি ভোমার চুরাত্ম শক্ররাও অচিরে বিনাশ প্রাপ্ত ইইবে। তাহার পর তুমি সহোদরগণ ও দ্রোপদীর गरिङ धरे नगांगता पन्ना त्रांटकात मट्डांग कतित्व। হে বিজয়িভোঠ যুখিহির ! যে কোন মহীপতি সংগ্রা-মে বিজয়াকাজ্যা করেন, তাঁহার সৈন্য-সন্নিবেশ नेमदत नेक-विकत्र-नामक धई त्यप-ध्यमान-निक्ष छेेेेेें छेेे बानिष्टि खर्ग कर्ता कर्डग ; मिर्टि निमिर्छ स्थामि তোমাকে এই বিজয় র্ডান্ত অবণ করাইলাম। মহা-जा रावगरगंत उव कतिरा जारात्रा अवगार कन्यांग-वर्षन करतन। तर यूषिछित्र! अधूना छूट्याधरनत्र অপরাধে এবং ভীমার্জ্বনের বাহুবলে মহাত্মা ক্রিয়-গণৈর এই মহান্ বিশ্বংস আগত প্রায়। যে মানব সংযত চিতে এই ইম্রবিজয়াখ্যান পাঠ করেন, তিনি निन्नीन ७ चर्न-विनत्नी रहेत्रा हेरकारन ७ भत्रकारन ष्मानम भरद्धांभ करतन। छाहात्र भक्त हहराउ छत्र इस ना धरः अशुक्त इरेवात्र अस्तावना शास्त्र ना। অধিক কি! কোন প্রকার আপদই তাঁহাকে আভায় করিতে পারে না ; ভিনি দীর্য পরমায়ু এবং সর্বত্রই বিষয় লাভ করেন, কদাপি পরাজিত হয়েন না।

বৈশশ্পারন কহিলেন, হে ভরতর্বভ! থার্শিকপ্রবর মহাবাছ রাজা বুমিন্তির মন্তরাজ শলা-কর্তৃক
এইবাপে আমানিত হইরা ভাহাকে বিধিবৎ পূজা
করিলেন এবং তথার বাক্য অবগান্তে এই কথা বলিকর্মে, আপনি কর্মের সার্থা কর্ম করিবেন সন্দেহ
নাই; অভএব তৎকালে অক্সনের প্রশংসা-বারা
আপনাকে কর্মের ভিকাক্যর সাধনে বত্ব করিতে
হইবে।

শল্য কহিলেন, ভাৰ বৈ ক্ৰা বলিটভাৰ, ইহা অবল্য প্ৰতিপালন ক্ৰিৰ এউটিন ভোৰাই আন্ত त्य क्लॉन विश्वकार्या क्रिक्ट शाहित, केलिन क्रिक्ट केटिन क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक

देशान्त्राप्तत करिएनंत, रह जीवक्षत्र। जनस्त्र नेसी-धिशिष्ठि जीमान् नवा कृतिनुक्तान्त्रश्व निकर्षे विशेष नहेत्रा उथन नरेत्ररना कृर्याथिन-महिधारन भवन कृतिरामन्।

শना-त्रमत्न अकेषिम[®] अशास ममस्ति । ১৮ ।

रिवमन्त्राप्तन कहिरलन, अनस्त रेष्ट्रदरनीत वीद्या-সম্পন্ন মহারথ যুযুধান বিশাল চতুরজ-বলে সমন্তিত হইয়া সাহায্য প্রদানার্থে যুধিষ্ঠিরের নিকটে আগমন क्तित्वन । नानात्म नर्माग्रङ छत्तीत्र त्याप्त्रण त्रक-লেই মহাবল-পরাক্রান্ত ও বীরাগ্রস্থা। তাহারা বহুতর প্রহরণ জাত ধীরণ করত তাঁহার সৈন্য-মধ্যে অসীম শোভা বিস্তার করিয়াছিল। তৈল-মাঞ্জিত ও চাকচকাময় পরশু, ভিন্দিপাল, শক্তি, ভোমর, मुलात. পরিঘ, यथि, প্রাস, করবাল, ধঙ্গ, কার্শ্মুক, কিরীট ও বছতর শর্নিকর-সহকারে সেই সমগ্র অনীকিনীই একটি রমণীয় ভাব ধারণ করিয়াছিল। तोमामिनी नमविष इट्टल जनमार्वनित य नश শোভা হয়, শস্ত্র-সকলের কিরণরাজি-মারা উন্তাসিত হওয়ায় সেই মেঘপ্রভ সৈন্যেরও অবিকল ভত্রপ मां । इरेग़ाहिल। (र त्राकन्। कान क्यनमें स्वीत সাগর-মধ্যে निलीन रहेता यात्र, यूपिकिटत्रत रेननाम्यन व्यंदन कतिता यूर्याप्नत तारे वेंदकी स्नी तामां সেইৰপ অন্তহিতা হইল। যুযুধানের সমাগমাতে निख्नान-नुख कामानी किमिर्वाई श्रुक्तकुर कर चाकोहिनी जनीकिनी लहेता चाबठ-छचडी नाखर-११-नमीरभ डिभनी ७ स्ट्रेशन । जन्नानक-उनम् नरा-বল-সম্পন্ন মগধরাক জয়ৎসেনও সেইৰপ এক অংকা-हिगी त्रना-जबखिवांशादत धर्मजांब-निकटे चौंप्रधन ক্ষরিলেন। পাতারাজও সমুত্র-সমিত্তি অভুসংক্রি-वृंगि वर्धावरे देनमा नवृदर भाषित्र कर्षे श्री प्रीटक्ट वृचिकित्त्रत्र (मजीभवकी भूर्यभव १० वर्गतिक । गांवर বিষয়ের সমান্ত করিনার করিনার বিশ্বনার করিন।

করিনার করিব করিনার করেনার নিক্ষার করিন।

করিনার করিব করিব করিবেন, তাহাও নানাদেশকরাসত অলেব করেরীর পুরুষ ও তাহার মহারথ
পুরুষণ হারা শোভিতা হইয়াছিল। পাঞালরাজের
আসমনের পর বাহিনীপত্তি মৎস্যাধিরাজ বিরাটও
পর্বাতবিনি মহীপালগণের বহিত মিলিত হইয়া
শাওবিনিসের সমিহিত হইলেন। তভিন অন্যান্য
ভূপতিরাও নিজ নিজ সৈনা লইয়া নানা স্থান হইতে
আগমন করিবেন। এইরপে মহামা পাওবগণের
বিবিধ-রজ-সমাকুলা সপ্ত অক্টেহিণী সেনা সমবেতা
হইল এবং সক্লেই কুরুগণের সহিত যুক্ত করিতে
সমুৎস্ক হইয়া তাঁহাদিগকে আজ্ঞাদিত করিল।

अमिरक महीशान जगनज अक अर्कोहिनी सना প্রদান করিয়া ধৃতরাষ্ট্র-তনরের হর্ষবর্জন করিলেন। স্থবৰ্ণবৰ্ণ চীন ও কিবাতগণে প্ৰিবৃত হইয়া তদীয় ছুরাধর্য দৈন্য যেন কর্ণিকার বনের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। হে কুরুনন্দন! শৌর্য-সম্পন্ন ভূরিবার। ও শুলারাজ এক অকৌহিণী সেনা লইয়া बद्ध बद्ध कुर्द्या भरतद्व ममीशवर्डी इट्रेटन । क्रिक-नसन् कुछवर्षा ७ त्छान, अञ्चक ७ क्कूत्रतानगरनत बाह्य विविद्या अक अटकोरिनी नमजिवाशिदत छैं।-হার সাহায্যার্থে সমাগত হইলেন। ক্রীড়াসক্ত মন্ত মাজকুগণ ছারা বনের বেমন শোভা হয়, বনমালা-ধারী নেই, সমত পুরুষব্যাত্র-সমূহে পরিয়ত হওয়ায় স্ববোধনের নৈনাপ্ত জজপ স্বশোদ্ভিত হইল। নিৰ্ तोनीत्रात-शटमनामी जन्मय-शक्**छि जना**ना छ्-भारतको अन्तरका वज्यकारत यहन-नक्नरकार है दिन विक्रमाक क्रमक व्याध्यम क्रियन । छारापित्रव दिनायरका समुद्राद्ध कर माम्कोषिती । ८२ व जिला क्षात क्षात्र विक विक स्टेडन पर्करणात्री WARLEL GEN CHRISTER AND STREET CONTRACTOR OF STREET

a wall the property of the second हर त्योतरा । कारबाकाविभक्ति सर्वाकाक सत्र । कानभागत समिछ कामान्य रहेता अन बार्स्नीहिनी ताना नम्बियासाख्य सूर्यायत्नम् निमिष्ठ हेर्देश्री कारात दिना-नमवात नका शुरुवत नात थानी रूरे जानिज, शत्र इत्याध्यक वज्ञान-मत्या व्यविके रहेवामाज सम्भक्त रहेता भाग। बाहिन्छी-वानी महीशाल नीलक्षक, मक्कियाश्ववानी नीलवर्ग আরুধধারী মহাবীর্য্য-সম্পন্ন সৈনিকগণের সহিত মি-লিত হইরা এবং অবস্তীর নরপজি বন্ন বিনদ ও অনু-विना महावरण পরিবৃত इहेन्ना এক এক অক্টোইণী সমভিব্যাহারে ছুর্যোধন-মমীপে সমাগত হইলেন। क्किय बारकात नद्मदास्त्रां शक् मरहाम्रत क्षक्त श्रेमा এक जारकोहिनी वाहिनी यह जानमन-श्र्वक তাঁহার হর্ষ সম্পাদন করিবেন। হে ভরতর্বভ! এত-**ढिब्र जनाना मराजा जूमिशालगरात्र ममूमारब** जिन जाकोहिंगी तना नाना तल इटेंट जानिया সমবেত হইল। এইৰপে ছুর্য্যোধনের নানা । नमाकुला धकारन पदकोहिनी त्नना रहेन। नकत्नहे পাণ্ডবদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে সমুৎস্থক হইয়া রহিল। হে রাজন্। হতিনা নগরে সৈই সুমহান্ रेमना ममवारसंत्र ममारवन रुअस मूर्त्र विक्रूक, रव সকল নরপতি স্ববল-প্রধান, অর্থাৎ পরবল-সাহায্য-নিরপেক্ষ, তাঁহাদিগের মধ্যে প্রধান প্রধান ভুপাল-বর্গেরও স্থান হইল না। হে ভারত। তাহাতে পঞ্ नमत्राका, ममछ कूक्रकाक्रव, ताहिएकात्रण, मणूर्ग মৰুভূমি, অহিছ্তা, কালকূটী, গঙ্গাকুল, বরণা, বাট-ধান ও যমুনা-তীরস্থ ভূধর, প্রভৃত ধনধানা-সম্বিত **७३ स्विकीर्ग अपने अक्वाद्ध क्वीदव-रेमदम् अदि**-ব্যাপ্ত হইয়া পড়ির ু পাঞ্চালেশর খাঁছাকে দুত-चबर्ण कुक्रभन-ममील (अद्भन किन्निक्षिष्टिमन, रनदे शुद्धाहित ज्यात्र जेशनीज रहेता त्मियान, वे सुक् **्वेड देनना छेडा व्यका**द्र मितिक त्रहितीहरू

कुर्तिक्षिक देनवा-सर्गाटन रेगड्नागडिकामा क्रम्बन क क्रमविश्या अस्तुम्ह क्रमास ६३८ ।

मक्षत्रकान श्रकत्र

বৈশম্পায়ন কহিলেন, জ্রুপদরাজের সেই পুরো-হিত কুরুসভার উপনীত হইলে, ধৃতরাষ্ট্র, ভীম ও বিহুর তাঁহার যথোচিত সংকার করিলেন। প্রথমত ভিনি সমন্ত কুশলবার্তা বিজ্ঞাপন ও অনামর জি-জ্ঞাসা করিয়া পরে সমুদর সেনানীগণ-মধ্যে এইৰূপ কহিতে লাগিলেন, হে মহাত্মগণ! সনাতন রাজধর্ম याभनामिरात्र नकरलत्रहे विमिष्ठ चारहः; उथाभि বাক্যের প্রসঙ্গ নিমিত্ত আমি তদ্বিবয়ে কিঞ্চিৎ সন্তা-বণ করিব। দেখুন, ধৃতরাষ্ট্র ও পাণ্ডু উভয়েই এক-জনের সন্তান বলিয়া বিখ্যাত ; স্থতরাং পৈতৃক ধন-সম্পরিতে উভয়েরই যে তুল্যাধিকার, তাহাতে আর কিছুমাত্র সংশয় নাই। পরস্ত খাঁছারা ধৃতরাষ্ট্রের পুত্র, হাঁহার৷ পৈতৃক ধন প্রাপ্ত হইলেন, পাণ্ডুপুত্রেরা পৈতৃক ধন না পাইলেন কেন? এৰপ অবস্থায় हेराहे वना यूङि यूङ रुष्त त्य, फूट्याधन चन्नः रुख-পত করাতেই তাঁহার। পৈতৃক ধন প্রাপ্ত হন নাই। ভাহার র্ত্তান্ত সকলই আপনারা জানেন। এই ছুর্ব্যোধন ভ্রাতৃগণের সহিত কতবার কত প্রকার উপায় দ্বারাই তাঁহাদিগের প্রাণ সংহারের চেন্টা করিয়াছিলেন! পরস্ত পরমায়ূর শেষ থাকায তাঁহা-দিগকে কোন ৰূপেই শমন-সদনে উপনীত করিতে পারেন নাই। অপিচ সেই মহাক্মারা স্বকীয় বাহ-বলে রাজ্যবর্জন করিয়াছিলেন, কিন্তু ক্ষুদ্রাশয় ধৃত-রাষ্ট্র-পুক্রেরা স্থবল-তনয়ের সহিত মিলিয়া কাপট্য-প্রয়োগ দারা তাহাও অপহরণ করিয়াছেন। ছুর্য্যো-धन मठे छ। नरकादत शाखनितरक त्य क्रश निषाक्रण কর্মে নিয়োজিত করিয়াছিলেন, তাহাও তাঁহারা স্বাধে স্বীকার করিয়া লইয়াছেন। সেই মহাদ্ম বীরগণ, ভাদশবৎসর মহারণ্যে বাস করিয়া পরিলেষে অক্তাতনাদে এক বর্ষকাল অতিবাহিত করিয়াছেন। তাঁহারা সভাতে সহধর্মিণীর সহিত যাদৃশ ছুর্বিষ্হ ক্লেল-নিবছ শছ করিয়াছিলেন, অরণোটেওও সেই-बल वह्वि स्वाक्रिश क्रिन्तमृह शास स्रेक्टाइन,

এवर विद्राष्टि नगरत्र, क्यांक्त्र गरेक्ट्र नगर्म, आश्रिक ভাবে থাকিরা, মহাপাতকীয় ন্যায়, যার পায় নাই ছুঃখ পাইরাছেন। তাঁহাদিগের নৌজন্যের কথা আর কি কহিব, সেই কুরুপুরুবেরা কৌরবগণের পূর্বাচরিত তাদৃশ ছুছ্ত সমস্তও পশ্চাৎ করিয়া এক্ষণে তাঁহাদিগের সহিত সন্ধি করিতেই অভি-नाची इटेटलह्न। चढुवि दर स्क्इवर्ग! शास्त्र-দিগের চরিত্র এবং ছুর্য্যোধনের চরিত্র পর্যালোচনা করিরা আপনারা ধৃতরাষ্ট্র-তনয়কে সন্ধি করণার্খে অমুনীত করুন। বীরাগ্রগণ্য পাগুবেরা কৌরব-দিগের সহিত বিগ্রহ করিতে কদাচ ইচ্ছুক নহেন; लाटकत व्यविनाटम चकीय त्राजाशम आश्र रून ट्राहे তাঁহাদের আকা হয়। পরস্ত ছুর্যোধনের সে ৰূপ ইচ্ছা নহে; ইনি কেবল বিগ্ৰন্থ বিষয়েই যথেষ্ট আ-গ্রহ প্রকাশ কুরিতেছেন; কিন্তু বে কারণ অবলম্বন করিয়া সমরে সমুৎস্ক হইতেছেন তাহাও মন্তব্য হইতে পারে না, কেনন। ইহাঁর অপেকা তাঁছারা ममिक वलमाली। हेर्नेत यमन এकामम मास्की-হিণী সেনা সংগৃহীত৷ হইয়াছে, ধর্ম-তনয়েরও সেই-ৰূপ সপ্ত অক্ষোহিণী অনীকিনী সমবেতা হইয়াছে এবং তাহারাও কৌরবগণের সহিত যুদ্ধ করিতে উদ্মুক্ত থাকিয়া তাঁহার অনুশাসন প্রতীক্ষা করি-তেছে। তদ্ভিন্ন, সাত্যকি ভীমদেন ধনপ্ৰয় নকুল সহ-দেব প্রভৃতি মহামহা পুরুষ-প্রধীরগণ, সহস্র অকৌ-হিণীর প্রতিৰূপ হইয়া রহিয়াছেন। অপরাপর वीव्रवर्रावरे वा श्रास्त्रका कि? छूर्या। धरनव अहे একাদশ অক্টোহ্রিণী এক দিকে, আর বছরপধারী মহাবাছ ধনপ্লয় অন্য দিকে, ইহা হইলেই পর্যাপ্ত **रुटेए পারে। একাকী কিরীটীই ইহাঁর সমুদ**র সৈন্যাপেকা যেমন অভিরিক্ত, অসামান্য-ধীশক্তি-সম্পন্ন মহাত্যুতি বাস্তুদেবও বেইৰপ। অভন্ন নৈ-त्यात बाएना, नवानांगित शत्राक्रम अबर क्रांसद वृद्धि সভা বোধগম্য করিয়া কোন্ বুলিফান্ সমুব্য আর कुक विवास धारक स्टेटक शास्त्र ? दह वर्षणाणत्ताः

আপ্রনারা বিরোধ-রাসরা পরিহার-পূর্বক ধর্ম ও প্রতিজ্ঞানুসারে পাঞ্চবিদ্ধের প্রদাতব্য বিষয় প্রদান কর্মন; আপ্রাদিশের এই উপযুক্ত সময় যেন কোন ক্রমে অতিকান্ত না হয়।

পুরোহিত-বাকো বিংশ অধ্যায় সুমাপ্ত। ২০।

देवमन्त्रीयन कहिलन, शुद्राहिएडत सह वाका শ্রবণ করিয়া প্রজ্ঞার্দ্ধ মহাগ্রাতি ভীন্ন তাঁহাকে যথা-বোগ্য সন্মান প্রদর্শন-পূর্বক ইচ্ছামূরপ সম্ভাষণ করিতে লাগিলেন, "কুরুনন্দন পাওবেরা পঞ্চ সহেশেরে দামোদরের সহিত যে কুশলী আছেন, নহার সম্পন্ন হইয়াছেন, ধর্মে নিশ্চল রহিয়াছেন এবং বান্ধবগণের সহিত যুদ্ধ করিতে ইচ্ছা ন। করি-রা সন্ধি করণে অভিলাষী হইতেছেন, ইহা পরম সৌভাগ্য ও আনন্দের বিষয়। অপিচু আপনি যে कथा विलालन, ध ममखरे मठा, मत्मर नारे; किस আপনকার বাক্য অতিশয় তীক্ষ্ণ বোধ হইল ; বোধ হয় ব্ৰাহ্মণ বলিয়াই আপনি এৰূপ উগ্ৰভাব প্ৰকাশ করিলেন। পাগুবেরা, আবাসে কি অরণ্যে, উভয়ত্রই ষে বিস্তর ক্লেশ পাইয়াছেন এবং অধুনা পৈতৃক দমন্ত ঐশ্বর্যাও যে ধর্মতঃ প্রাপ্ত হইয়াছেন তাহাতে আর সংশয় কি ? মহারথ পার্থও যে অসাধারণ অক্তকোবিদ ও বলবান্ হইয়াছেন, তাহাতেও কোন সংশয় হইতে পারে মা। সংগ্রামে কোন্ ব্যক্তি ধন-**ঞ্জের পরাক্রম সহনে সমর্থ হইতে পারে? অন্যান্য** ধন্ত্র্কারীর কথা দূরে থাকুক সাক্ষাৎ বক্ত্রধারীও পা-द्रिन कि ना मद्म्पर । आमात द्विद्यानाय, अर्ज्जून একাকীই তৈলোকোর পরাভব-সাধনে সমর্থ।"

ভীয় এইকথা বলিতে না বলিতে, কর্ণ ক্রোধারিট হইয়া ধুউতা-সহকারে তাঁহার বাকোর তিরকার কর্ত তুর্যোধনের মুখাবলোকন-পূর্বক পুরোহিত-কে কহিতে লাগিলেন, অহে বিপ্রা: তুমি যে কথার প্রমন্ত করিলে, লোক-মধ্যে কোন প্রানীরই ভাহা ভাকিছিত নাই; স্করাং পুনয়ক বাকোর পুনঃপুন

चारनाएन कतिवात चात श्राद्धांचन कि? शूर्य ছুর্ব্যোধনের প্রতিনিধি হইয়া শকুনি দুয়ুত্তকীড়ায় পাণ্ডুপুদ্র যুধিতিরকে পরাজিত করিরাছিলেন এবং তিনিও পণিত নির্মানুসারে অর্ণ্যগামী হইরাছি লেন। পরম্ভ সেই প্রতিজ্ঞাত সমর সম্যক্ ৰূপে প্রতিপালন না করিয়াই যুখিন্তির মৎস্য ও পাঞ্চাল-দিগের বল অবলয়ন-পূর্বক পৈতৃক রাজ্য প্রাপ্ত **र्हेट हेक्श क्रिट्डिंग् । याश हर्डेक, त्र खद**य উৰিগ্ন হইয়া ছুৰ্য্যোধন রাজ্যের চতুৰ্থাংশও অৰ্পণ করিতে পারেন না; ধর্মতঃ প্রদান করিতে হইলে ইনি শত্রুকেও সমগ্র বস্থারা সমর্পণ করিতে পা-রেন। অতএব পাণ্ডবেরা যদি পুনর্বার পৈতৃক রাজ্য প্রাপ্ত হইবার নিমিত্ত আকাঙ্কা রাখেন, তবে যথা-প্রতিজ্ঞানুসারে পুনরায় অরণ্যবাসী হইয়া সেই নির্দিট সময় যথাবং প্রতিপালন করুন, তাহার পরে ছুর্য্যোধনের অঙ্কদেশে অকুতোভয়ে অবস্থান করিতে পারিবেন। মূর্খতা হেতুক কেবল অধর্মাবৃদ্ধি না করিয়া ধর্মানুগত এইৰূপ ব্যবহার করাই তাঁহা দিগের শ্রেয়ংকণ্প। অথবা যদি ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া তাঁহারা যুদ্ধ করিতেই অভিলাধী হন, ভবে এই কুরুভোঠ মহামহা বীরবর্গের সক্লিহিত হইরা অবশাই আমার বাক্য স্মরণ করিবেন।

ভীয় কহিলেন, অহে রাধেয়! কেবল কথায় কি হইবে? একাকী অর্জুন যথন ছয় জন মহারথীকে পরাজিত করিয়াছিলেন, সেই অদ্ভুত কর্মাট একবার স্মরণ করিয়া দেখ। তোমাকে অধিক আর কি কহিব, সম্প্রতি এই রাজণ যে কথা বলিতেছেন তাহা যদি আমরা না করি, তবে পার্থশরে সমরশায়ী হইয়া অবশাই পাংশু ভক্ষণ করিব সন্দেহ নাই।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, অনস্তর গৃতরাই জীয়ের সমর্চন ও প্রসাদন এবং কর্ণের যথোচিত তিরন্ধার ক্রিয়া পাঁঞাল-পুরোহিতকে এই ক্ষা বলিলেন, শাস্তমুনক্ষন ভীয় আমাদিয়ের হিছুক্স বাকাই ব্যক্ত করিরাছেন; কেবল আমারিগের কেন, ইছা পাওব-গণের ও সমস্ত কর্মতেরও হিত-বিধারী। পরস্ক আমি সবিশেষ চিন্তা করিয়া সঞ্জয়কে পৃথা-পুত্র-দিগের নিকটে প্রেরণ করিব; অতএব আপনি আর বিলম্ব না করিয়া অদ্যই পাওবগণ-সমীপে প্রতি-শ্মন করুন

কুরুজেন্ঠ ধৃতরাষ্ট্র তাঁহাকে এই ৰূপ কহিয়া যথা-যোগ্য সংকার-পূর্বক পাগুবগণ-সন্নিধানে প্রেরণ করিলেন, পরে সঞ্চয়কে সভামধ্যে আহ্বান করিয়া বক্তব্য কথা বলিতে লাগিলেন।

> ধৃতরাষ্ট্রের সঞ্জয়াহ্বানে একবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ২১॥

ধৃতরাষ্ট্র কছিলেন, ছে সঞ্চয়! শুনিলাম পাওু-পুজেরা উপপ্রা নগরে সমাগত হইয়াছেন; অত-এব ভুমি তথার গমন করিয়। তাঁহাদের সংবাদ জান এবং অজাতশক্র যুধিষ্টিরকে এই বলিয়া সভাজন কর যে, হে অনঘ! ভাগাক্রমে তুমি জনপদে উপস্থিত হইরাছ। হে সঞ্জর! তুমি আমার বাক্যে তাঁহাদের मकनदकरे थरे कथा वन, " हि वर्मभन ! তোমর। ক্লেশ সহনের অবোগা হইরাও তাদৃশ ক্ষসাধ্য বন-বাসে বাস করিয়া সম্প্রতি কুশলী আছ ত ?" পাণ্ডব-দিগের কত দূর সৌজন্য দেখ, তাঁহারা কপটতা-সহ-कारत প्रताक्षिত रहेताও आमानिरभन्न উপकानी रहे-রাছেন; অতএব শীঘ্রই আমাদিগের সহিত তাঁহা-एत निक्क ऋां পिछ स्टेरव। (द मञ्जर । आंत्रि किन्त्रन् কালেও পাণ্ডবদিগের কোন প্রকার মিধ্যা ব্যবহার দৃষ্টি করি নাই। তাঁহারা নিজ বীর্যাবলে উপাক্তিত ব্যবন্ধ রাজ্যলকীই আমাকে সমর্পণ করিয়াছিলেন। काहि निका कान व्यवस्थित श्रात्र रहेता थ श्रा-পুত্রদিপ্তের এবন কোন সোব দেখিতে পাই নাই, यक्षात्रा काहानिकदक निक्का कतिएक शाति । काहात्रा ধর্মার্থের উদ্দেশেই চিরকাল সর্বকর্ম নিভান করিয়া बादकन, कामशब्दक बहेबा क्य वा माना द्यान त्थ-

मान्नाम बञ्जत असूदताथ करतन मान श्राक्का ७ देशमा-নহকারে তাঁহারা শীক গ্রীয়, সুৎপিপানা, নিক্রা তন্ত্রী, ক্রোধ হর্ষ ও অনব্ধানতার অভিতৰ করিয়া क्वित धर्मार्थ-माध्याहे निव्रष्ठ यञ्जभीत हन। छेन-যুক্ত সময়ে মিত্রদিগকে ধন প্রদান করিতে তাঁহা-मिरात कथनरे किए रहा नारे; त्य वाकि त्य का সম্মান ও অর্থ প্রাপণের যোগ্য পাত্র, পাগুরেরা তাঁ-হাকে সেই ৰূপই প্রদান করিয়া থাকেন; স্থতরাং দীর্ঘকাল প্রবাস হুইয়াছে বলিয়া তাঁহাদিগের প্রতি কাহারও মিত্রভাবের জীর্ণতা বা ধর্বতা হইতে পারে না। তাঁহাদিগের বিদ্বেষী হয়, এই কুরুপক্ষীয় মধ্যে কেবল বিষমতর পাপবৃদ্ধি মন্দমতি ছুর্যোধন ও কুদ্রতর কর্ণ ব্যতীত এমন ব্যক্তিই অপ্রসিদ্ধ। ইহারা সেই স্থুপপ্রিয়-বিরহিত মহাত্মগণের দ্বেষ করিয়া কেবল্ব তদীয় তেন্সেরই সম্বর্জন করিতেছে। ছুর্য্যোধনের বীর্যা কেবল উদ্যম মাত্র; বিশেষত এ স্থথে বিবর্জমান হইতেছে, স্থতরাং বিদ্বেষ দ্বারা পাণ্ডবদিগের তেজোবর্জন করা কি উত্তম কর্মা বিবে-ঢনা করিতেছে? অপিচ এই নির্কোধ, পাগুবেরা জীবদশার থাকিতে ভাঁহাদিগের রাজ্যাংশ অপহরণ করা যে অনায়াস-সাধ্য মনে করে, তাহাও কি যুক্তি-যুক্ত বোধ করিতেছে? ফলত অর্জুন, কেশব, রুকো-দর, সাত্যকি, নকুল, সহদেব ও স্প্রেয়গণ যে অজ্ঞাত-শক্র যুধিন্টিরের অনুগামী হইতেছেন, তাঁহারে, যুদ্ধ করিবার পূর্বেই, নিজাংশ প্রদান করা শ্রেয়স্কর। অন্য मक्रान्तव वा श्राद्यां कर कि ? शांधीवरकाम् ध हर्र तथन रहेटन अक्वांकी मनामाहीहे ममन बस्मातात्र দণ্ডনায়ক হইতে পারেন। ত্রিলোকীর অধিপতি অভিতীয়-জয়শীল মহাত্মা কেশবও সেইৰূপ ছুৱা-थर्थ। विनि, পতक-नम्रह्दद्र नाम भीष्रगामी, सम्ब-नियम, भवनिकत वर्ष कतिए शोकिएन, धकाकी नर्स-(कारू-मर्पा त्यर्थ इराजन, त्कान् मजन-पर्मानीन मानव আহার সমুধে অর্জান করিছে পারে? যে গাড়ীব-थवा नवानाकी धनक्षत्र अन ब्रान नमस छेएत निकृ ७

উত্তর কুরুদিসকে পরাজিত করিয়া তাহাদিসের অর্থ জাত আহরণ করিয়াছিলেন, দ্রাবিড়দিগকে পরা-ভূত করিয়া আপন সেনামুবর্তী করিয়াছিলেন এবং খান্তবপ্রাহে ইন্দ্রসহ সমন্ত দেবগণকে পরান্ত করত হতাশনের তৃপ্তি-সম্পাদন ও তদ্ধারা পাণ্ডবদিগের যশোমান সম্বর্জন করিয়াছিলেন, ভাঁহার সন্মুখে কোন্ ব্যক্তি অন্ত্র ধারণ করিতে সমর্থ হয়? অপিচ এক্ষণকার কালে ভীমের তুল্য গদাধারী বা গজা-রোহী আর কেহই নাই; রথ-সংগ্রামেও রুকোদর অর্জুন অপেক্ষা ম্যুন নহেন; অধিকস্ত তিনি বাছ-বলে দশ সহস্র মন্তবারণের বীর্যাবাহী; অভএব দারুণ-বৈরানল-সম্ভপ্ত তাদৃশ মহাবলশালী, নিত্য-कारी, ऋणिका-मण्जन टिक्की शुक्रव कुक रहेल অন্মৎপক্ষীয় সমস্ত প্রাণীকেই নিঃসন্দেহ নিহত করিতে পারেন। মন্ত্রোর কথা দুরে থাকুক, সা-ক্ষাৎ পুরন্দর আইলেও তাঁহাকে সমরে পরান্ত क्रिंटि সমर्थ इन ना। जलागर्स, तलगाली, भौछ्रहरू, অর্জুন-কর্তৃক স্থশিক্ষিত মাদ্রী-পুজেরাও ছুই সহো-**परत विश्वकूल-एलनकांत्री त्यानयूगरलत नाम्य निः-**শেষে শত্রুনিপাত না করিয়া নিরস্ত হইবার নহেন। आभाषित्रात এই प्रमवन मक्न मक्नाः एमरे প्रतिभूगं হইরাছে সত্য বটে, কিন্তু আমার নিশ্চয় প্রতীতি হইতেছে, উক্ত বীরবর্গের সম্মুখীন হইলে ইহারা অচিরেই সংহার-শ্যায় শয়ন করিবে। আমাদি-গের ন্যায় পাণ্ডবদিগেরও সৈন্য-সংগ্রহের অপ্রতুল নাই। দেখ, অন্বিতীয় তেজন্বী পাঞ্চালরাজ-নন্দন श्केकात्र डीशिनिटशत मट्या वर्डक्कान त्रश्ति। इन শুনিয়াছি, নোমকভোষ্ঠ ক্লম্ অমাভাগণ-সমভিবাা-হারে সমাগত হইরা পাগুর্দিগের কার্যাসিদ্ধি নিমিত আত্ম সমর্গণ করিয়াছেন। অতুল্য-প্রভাব বৃক্ষিসিংহ वीहात रेमनामर्गत वार्यनी स्टेबार्ट्स, तारे वार्वाउ-नक युधिकिदात भन्नोक म महरन कान वाकि नमर्थ रहेर शाद्ध ? शाबि रेशंड अनिवाहि त, नाउ-বেরা বাইরে আবানে অক্তাত বাস করত বিত্তর উপ-

कांत्र गांधन क्षिताहित्वन, त्रहे हुक्कावक बरुगाधि-পতি বিরাটরাজ্ও তাঁহাদের কার্য্যোজারে কুত-সঙ্কপ হইয়া সপুত্রে যুধিন্তিরের প্রতি সমধিক অমু-রক্ত হইয়াছেন। কৈকেয়গণ ঘে মহাধমুর্জারী পঞ ভাতাকে কেক্য়রাজ্য হইতে অবরুদ্ধ, অর্থাৎ বহি-নিঃসারিত করিয়াছিল, সেই অমিত-বলশালী রাজ-পুজেরা কৈকেয়দিগের নিকট হইতে স্বরাজ্যো-দ্ধারের আকাঞ্জা করত পূর্বের আমাদিগের পক্ষ ধাকিয়াও এক্ষণে পাগুবদিগের অনুবর্তী হইয়া যুদ্ধার্থী রহিয়াছেন। এতদ্ভিন্ন অন্যান্য অসংখ্য মহী-পালগণ সমানীত হইয়া পাগুৰ-কাৰ্য্যাৰ্থে সমাক্ৰপে অভিনিবিষ্ট আছেন। শুনিতে পাই, তাঁহারা সক-লেই খুর, বীর ও মাননীয়; কেবল ধর্মরাজের প্রতি প্রীতি-ও-ভক্তিযুক্ত হইয়াই ঠাঁহাকে আশ্রয় করিয়া-ছেন। শৈলাভিত, তুর্গনিবাসী ও সমাজস্থ সৎকুল-জাত হৃদ্ধ যোধগণ এবং নানাবিধ-আয়ুধধারী বীর্ঘ্য-माली (क्षष्ट्रवल, मकरलरे ममागठ रहेशा পाखर-का-र्यार्ट्श निविष्ठे द्रशिष्ठ। नगदत भूतन्त्रत-नम्न, অপ্রতিম-তেজোবীর্যা-সম্পন্ন, লোক-প্রবীর, মহান্মা পাণ্ডা-ভূপতিও সংগ্রাম-দক্ষ বছতর বীরবর্গের সহিত মিলিত হইয়া পাণ্ডবদিগের সাহায্যাথে সমাগত হইয়াছেন। শুনিতে পাই যিনি দ্রোণ, অর্জুন, বাস্থদেব, রূপ ও ভীয়ের নিকট হইতে অস্ত্র শিক্ষা করিয়াছেন; লোকে যাঁহাকে রুক্-পুত্র প্রভ্যুদের একমাত্র তুলাবল বলিয়া বর্ণন করে, সেই মহাপ্রভাব সাত্যকিও পাণ্ডবার্থে প্রাণপণ করিয়াছেন। চেদি ও कबरक महीभाटनता अ मद्यारामा ग-महकारत मम-বেত হইয়া পাণ্ডবদিগকে আতায় করিয়াছেন। পূর্বে ঐ সকল ভূপতিগণ যখন যুধিষ্টিরের রাজস্ম যজে সমাগত হইরাছিলেন, তখন তাঁহাদিগের মধ্যে চে-मी**बहरक ऋर्**यात नाम উद्धांश-अम ७ माञा-निरुद्ध উद्धानमान नितीकन कतिया, अवर शृथिवी-मृद्धा बसू-क्रिन्नतात त्यकेष्ठम ७ नमद्त छुत्रायमें विद्वतान क्रिता, क्रक, काजित्रगरात गर्स धार्मात छ्रुगार एक दत्रक

সহসা অসীম পরাক্রম প্রকাশ পূর্বক তাঁহাকে সমাক্ ৰূপে মৰ্দন করিয়াছিলেন। কৰ্মরাজ-প্রভৃতি সমু-দয় নরেন্দ্রপণ যাঁহার মানবর্জন করিতেন, সেই শিশু-পালকে কৃষ্ণ দৃষ্টিমাত্রেই ছিন্ন করিয়া পাওবদিগের यम ও मन्पादनत मञ्चलन कतियाছिलन। उৎकारन খন্যান্য ভূপালেরা সেই কেশ্ব রুক্ষকে স্থগীৰ-যো-ক্ষিত-রধার্ট দর্শনে অসম্থ বোধ করিয়া চেদিপতিকে পরিত্যাগ-পূর্বক সিংহের নিকট হইতে কুদ্র কুদ্র মূর্গযূপের ন্যায় ক্রতবেগে পলায়ন করিয়াছিলেন। পরস্ত বিনি ঐ প্রতিকূলবর্তী বাস্থদেবকে দৈরখ-সমরে পরাস্ত করিবার আশংসায় বল-পূর্ব্বক ভাঁহার প্রতি-কুলে উপিত হইতে পারিতেন সেই শিশুপালই কুঞ-কৰ্তৃক আহত ও পঞ্চত্ব প্ৰাপ্ত হইয়া, বাতম্থিত কর্ণিকারের নাায়, ধরাশায়ী হইয়াছিলেন। হে সঞ্জয়! বিশ্বাসভাজন জনগণ আমারে পাগুবদিগের নিমিত্ত কেশবের যে ৰূপ পরাক্রম প্রকাশের কথা বিজ্ঞাপন করিরাছে তাহাতে সেই জয়শীল বাস্থদেবের কর্ম-সকল স্মরণ করত আমি আর কিছুমাত্র স্বস্তি লাভ করিতে পারি না। সেই র্ফিসিংহ ক্লফ ঘাঁহাদের অগ্রণী হন, ভাঁহাদিগকে কোন শত্রুই কখন সহ্ করিতে পারে না। হে সঞ্জয়! রুফ ও অর্জুন এক রথে সমবেত হইবেন শুনিয়া ভয়ে আমার হৃদয় কম্পিত হইতেছে। আমার পুত্র মনদবুদ্ধি ছুর্যোধন তাঁহা-, দিগের সহিত যদি সংগ্রামে প্রবৃত্ত না হয়, ত্বেই মঙ্গল লাভ করিতে পারে, নচেৎ দৈত্যদল-দলনকারী ইক্স ও উপেক্সের ন্যায় তাঁহারা সমস্ত কৌরবগণ-क्टे निःमत्मर निर्मरन कतिर्दन। एर मञ्जतः आमि ধনঞ্জাকে শত্রু-সদৃশ এবং বৃষ্ণিপ্রবীর ক্লফকে সা-ক্ষাৎ সনাতন বিষ্ণু বলিয়াই জ্ঞান করি। ধর্মারুচি, भानीनज्ञानहर्वी रनभानी, यनश्री, कृतीशृक्ष अकार-শত্ৰ বুৰিন্তির, ছুৰ্যোধন-কর্ত্ক প্রবঞ্চিত হইরাছি-लाम, मच्छां उपनि द्वाराशहरू रम, जृदद व्याप्त-পক্ষীর প্রাণিমাত্রকেই ক্রি বহুন করিতে পারেন না ? হে হতপুত্র! আৰি জোৰ প্রদীপ্ত ধর্মানের মন্ত্য रहेट अভिनियं स्थापन ज्याकृत प्रशिक्षाहि, वर्जून, वास्ट्रास्त्र, जीम अथवा नकून महरमन इंडेरेंड তাদৃশ ভীত হইতেছি না। মহাতপা যুধিটির নির-তই ব্রন্মচর্য্যে যুক্ত রহিয়াছেন, স্থতরাং তাঁহার এই मोनिनिकं मक्षण्य व्यवभारे मिक् रहेटल शास्त्र। रह সঞ্জর! আমি সমাক্ বিবেচনা-পূর্বাক, ভাঁহার কো-ধোদর হওয়া বিলক্ষণ গদ্ভবপর বোধ করিতেছি, এই নিমিত্তই এক্ষণে সাতিশয় ভীত হইতেছি; অতএব তুমি অন্তর বিলয় না করিরা রখারেছিণে পাঞ্চালরাজের সেনা-সন্নিবেশ স্থানে সত্ত্র গমন কর. যুধিতিরকে কুশল প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিয়া প্রীতি-সং-यूक वाका बाता श्रूनःश्रून महायन कत वर वीर्या শালীশ্রেষ্ঠ মহাভাগ ক্লের সহিত সঙ্গত হইয়া আ-মার বাক্যে অনাময় জিজ্ঞাসান্তে এই কথা বল, 'ধৃত-রাষ্ট্র পাণ্ডবন্ধণের সহিত শান্তি স্থাপনে অভিলাবী হইয়াছেন'। হে স্থত। বাস্থদেব যে কোন কথা বলেন, যুধিষ্ঠির নিশ্চয়ই তাহা প্রতিপালন করেন ; কৃষ্ণ ভাঁহাদিগের পরমাত্মীয়, প্রিয়তম, বিদ্বান্ ও তদীয় প্রিয়কার্য্য সম্পাদনে নিত্য নিযুক্ত ; অতএব তিনি যদি সন্ধি করা কর্তব্য বলিয়া স্থির করেন ভবে ক্থনই তাহার অন্যথা হইবে না। হে সঞ্জয়! তো-মারে আর অধিক কি বলিয়া দিব, ভূমি অত্যে আ-मात वहरन পांखवंगन, त्जीभतीत शक्ष श्रूख, कनार्फन, যুযুধান, বিরাট ও সমানীত সমুদর সঞ্জরগণকেই অনাময় বার্ত্তা জিজ্ঞাসা করিবে'; পশ্চাৎ, যে যে বাক্য তংকালের উপযুক্ত ও ভারতগণের হিতকর বোধ হইবে, যাহাতে ভঠাহাদিগের ক্রোধবর্ধন না করে এবং যাহা যুদ্ধের হেতু হইয়া না উঠে, সমস্ত রাজ-গণ-মধ্যে সেই সেই বাকোরই সম্ভাবণ করিবে। भुजताद्व-गटम्मरम काविश्म ज्याति गमार्थ ॥ ३३

বৈশস্পায়ন কহিলেন, রাজা হতরাষ্ট্রের উক্ত বাক্য অবণ- করিয়া সঞ্জয় অমিত-ভেল্পী পাশুবর্গণের সন্দর্শনার্থে উপস্থয় নগরে যাত্রা করিলেন। তথায় উপনীত হইরা তিনি ধর্মজনর যুধিটির-সমীপে সমা-গমন ও রথাবং অভিবাসম-পূর্বক পশ্চাতৃক্ত ৰূপে সম্ভাবণ করিতে লাগিলেন।

গবল্প-নন্দন স্থতপুত্র সঞ্জয় প্রীতি প্রকৃল-চিত্তে অকাতশক্রকে এই কথা বলিলেন, হে রাজন! আমি ভাগ্যক্রমে আপনাকে স্থাহকায়, সহায়-সম্পন্ন ও সাক্ষাৎ মহেন্দ্র-সদৃশ দৃতি কলিলাম। রন্ধ রাজা অয়িকা-নন্দন মনীবী ধৃতরাই আমার বারা আপনাকে অনাময় বার্ডা জিজ্ঞাসা করিতেছেন। হে ভারত! পাণ্ডবভ্রেন্ঠ ভীমসেন, ধনপ্রয় ও মাস্তী-তনয় নকুল সহদেব কুশলে আছেন ত? আপনি কল্যাণকামী হইয়া যাঁহাতে সর্ব্ব প্রকার অভীই কামনার আশংসা করেন, দেই সত্যব্রত-পরায়ণা মনস্বিনী বীরপত্নী ক্রপালনাক্র স্থাতিন?

র কহিলেন, হে গবন্ধণ-তনয় সঞ্জয়! তো-মার শোভন আগমন হইরাছে; তোমারে অবলো-কন করিয়া আমরা প্রীত হইলাম। হে বিছন্! তোমার অনাময় প্রশ্ন স্বীকার করিয়া কহিতেছি, আমি সহোদর ও পুত্রকলত্রের সহিত কুশলী আছি। হে স্থত সঞ্জয়! আমি বছদিনের পর অদা কুরুর্জ অন্ধরাজ ধৃতরাষ্ট্রের কুশলবার্তা শুনিয়া এবং তোমা-কে দেখিয়া প্রীতিবশত এইৰূপ মনে করিতেছি, र्यन नरतम्परकरे मौकार मन्दर्गन कतिनाम। रह তাত! আমাদিগের পিতামহ সেই রুদ্ধ সর্বা ধর্মোপ-পন্ন মহাপ্রাক্ত মনস্বী কুরুত্রের্ড ভীয় কুশলী আছেন ত ? পূর্বের আমাদিগের প্রতি ষ্টাহার যেরপ স্নেহ ছিল, তাহার ত কিছু অনাথ। হয় নাই ? হে হুত-পুত্ৰ! বিচিত্ৰবীৰ্যা-পুত্ৰ মহাস্বা ধৃতরাষ্ট্ৰ সপুত্ৰে কুশলী चाइन ७? थाजीश-नमन विमानान् महाताक वा-জ্ঞিকেরও ত সর্বাঙ্গীন মঙ্গল ? সোমদন্ত, ভূরিশ্রবা, সভাসক শল, ডোণ, অখবামা ও রূপাচার্য্য, এই गत्रक बहात्रायप्राध ७ चात्राची चारहन १ ८१ मध्य। ভূমধল-মধ্যে বাঁহারা প্রধান ধনুর্বর বলিয়া পরি-

গণিত, তাঁহারা সকলেই কুরুমিণের প্রতি স্হা, অর্থাৎ বিনা যুক্তে ভাঁহাদের মঙ্গলবাঞ্চা স্করেন ত ? मर्गनीय-पूर्वि प्रश्रम्भाती नीनवान् अवस्थाया बाहा-দিগের রাষ্ট্র মধ্যে বাস কল্বিতেছেন, সেই কৌরব-भरंगत मर्था के महाक्षांछ, नकल-माञ्चक्कान-विमनी-ক্বত, পৃথিবীতে ধমুর্দ্ধারিগণের প্রধানতম বীরপুরু-বেরা সমুচিত সন্মান লাভ করিতেছেন ত ? তাঁহার৷ সকলেই ত স্বস্থকায় আছেন ? হে তাত! বৈশ্যা-গর্জাত মহাপ্রাজ রাজপুত্র যুযুৎস্থ কুশলে আছেন **७ ? मन्द्रमा ऋरवाधन धाहात निर्देश की, स्मर्ट** অমাত্য কর্ণেরও ত সমস্ত মঙ্গল ? হে স্থত ! ভারত-গণের বৃদ্ধা জননী, ভগিনী, বধু, পাচিকা ও দাসপত্নী-প্রভৃতি নারীগণ এবং পুদ্র, দৌহিত্র, ভাগিনেয়-প্ৰভৃতি বালক সকলেও ত স্বচ্চন্দে আছে? হে তাত! মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র ব্রাহ্মণদিগকে পূর্ব্বের ন্যায় যথাবং বৃত্তি প্রদান করেন ত ? হে সঞ্চয়! দ্বিজাতি-গণের প্রতি আমাদিগের বেরূপ দাতবা নির্দিষ্ট আছে, ছুর্য্যোধন তাহার উচ্ছেদ-করণে প্রবৃত্ত হন নাই ত ? ব্রাহ্মণদিগের কোন প্রকার অতিক্রম হই-লে ধৃতরাষ্ট্র পুজের সহিত তাহা উপেক্ষা করেন ত 🖓 সামান্য-দোষ ধরিয়া সাক্ষাৎ স্বর্গপথভূতা তাঁহাদি-গের নিতার্ত্তির প্রতি ত উপেক্ষা করেন না ? প্রজা-পতি বিধাতা এই জীবলোকে ধর্মাধর্ম-প্রকাশ-নি মিত্ত ত্রাহ্মণরপ অমুত্তম বিশুদ্ধ জ্যোতিঃপদার্থের স্টি করিরাছেন; অতএব মন্দর্মতি কৌরবেরা ধদি তাঁহাদিগের বৃত্তি-প্রতিঘাতৰূপ দোব সংযমন না করে, তাহা হইলে নিশ্চরই তাহাদের সর্ক্রনাশ रुहेरव।

হে সঞ্জয়! রাজা ধৃতরাই ও তদীয়পুদ্রগণ অমাতা-বর্গের ক্রতাক্ত ব্যবহার সকল অবগত হইতে ইচ্ছা করেন ত? স্ক্ল্ম্বপ-ধারী বাত্তবিক শক্র সকল এক-মতা অবল্যন করিয়া ভেলোৎপাদন-ঘারা জীবিকা নির্বাহ করিভেছে না ত? হে তাত। সেই কৌরবে-ক্লা সকলেই পাওবদিসের কোন পার্গের কথা জন্প- না করিতেছে না ত ? বীর্যাবান্ দ্রোণ, অশ্বপামা ও রূপ. আমাদিগের ত পাপ-প্রসঙ্গ করিতেছেন না? সকল কৌরবেরাই সমবেত হইয়া সপুত্র ধৃতরাষ্ট্রকে রাজ্য-দানার্থ অমুরোর্ধ করিতেছেন ত ? দস্থা-সমূ-হের সমবায় দৃষ্টি করিয়া তাঁহারা যোধনায়ক ধনঞ্জ-য়কে স্মরণ করিতেছেন ত ? হে তাত! অনবরত টক্কার-বিকম্পিত ধমুর্গুণ-দারা মৌর্বীর ভুজাগ্র হই-তে প্রেরিত, গাণ্ডীববিনিশুক্ত, মেঘনির্ঘোষের ন্যায় নিস্বন-বিশিষ্ট, প্রচণ্ডশর-সমূহও স্মরণ করেন ত ? হে সঞ্জয়! থাঁহার শোভনপুঋযুক্ত একষটি স্থশাণিত তীক্ষ্ণারশর সম্মত হস্তক্ষেপ, অর্থাৎ একপ্রয়াড্রেকে-পণীয়, সেই অর্জুনের তুলা বা অধিক হইতে পারে, এই পৃথিবীমধ্যে এমন যোদ্ধাই দেখিতে পাই না। যে মহাতেজন্মী গদাপাণি ভীমসেন নলবন-বিহারী মদমত্ত মহাগজের ন্যায় সমরে শত্রু-সমূহকে কম্পিত করত ইতস্তত সঞ্চরণ করেন, ইহাঁকেও তাঁহারা শারণ করেন ত ? যিনি বাম ও দক্ষিণ উভয়-পার্ছেই অক্সরাশি বিসর্জন করত সমাগত কলিঙ্গদিগকে **সংগ্রামে পরাজিত করিয়াছিলেন, সেই এই মহাবল** মাজীপুত্র সহদেবকেও স্মরণ করেন ত ? হে সঞ্জয়! পূর্বে তোমার সাক্ষাতেই যিনি শিবিও ত্রিগর্ভ-দিগকে জয় করিবার নিমিত্ত প্রেরিত হইয়াছিলেন এবং সমস্ত পশ্চিমদিক্ আমার অধীন করিয়া দিয়া-ছিলেন, সেই নকুলকেও ত স্মরণ করেন ? ছুফীমন্ত্র-ণার পরবশ হইয়া দৈতবনে ঘোষযাত্রায় সমাগত হইলে, সেই মন্দরুদ্ধি ছুরাশয়গণের যে দারুণ পরা-ভব হইরাছিল; বাহাতে ভীমসেন ও ধনঞ্চর তা-হাদিগকে শত্রুহন্ত হুক্ত করিয়াছিলেন, তা-হাও ত কখন শৃতিপথে উদিত হয়? তৎকালে আমি পশ্চাতে থাকিয়া অর্জুনকে রক্ষা করিয়াছি-नाम এবং ভीमातन ও नकूनमहामय अका क्रिया ছিলেন; অর্জুন গাণ্ডীবছত্তে শতাদিগকে স্থাদূরে অপান্ত করিয়া নির্বিদে আগমন করিলেন, ভাছাও गत्न रह छ ? रह मझहा यसन नर्सरकाकारन यह

করিয়াও আমরা ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রকে বশীভূত করিতে পারিলাম না, তথন নিশ্চয় বোধ হইতেছে কে-বল সংকর্ম দারা ইহলোকে কিছুই করিতে পারা যার না।

যুধিকির-প্রশ্নে ত্ররোবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ২৩॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে শাণ্ডব! আপনি আমারে य क्र किंदिलन, जाहा महें क्रिकेट वर्ष्टे, व्रवेश की-রবগণ ও কর্ণাদির বিষয়ে যে প্রশ্ন করিলেন, তাহাও আপনার উপযুক্ত। হে তাত পার্থ! আপনি কুরু-শ্রেষ্ঠ যে সমস্ত মনস্থিগণের কথা জিজ্ঞাসা করিলেন, তাঁহারা সকলেই আময়-খূনা আছেন। হে পাণ্ডু-নন্দন! ছুর্য্যোধনের নিকটে সাধু-চরিত হৃদ্ধগণও আছেন এবং অনেকানেক পাপাত্মারাও তাঁহার আত্মীয়ৰূপে অবস্থান করিতেছে। চুর্য্যোধন ব্রাহ্মণ-গণের রুত্তি সকল লোপ করিবেন কি, রিপুদিগকেও দান করিতে পারেন। আপনারা কন্মিন্ কালেও কৌরবদিগের বিদ্যোহাচরণ করেন নাই; স্থতরাং তাঁহাদের প্রতি আপনাদিগের যে হিংস্রধর্ম, অর্থাৎ ক্রুরতা আছে ইহা কোন ক্রমেই গ্রন্ধেয় নহে। ঈদৃশ সাধুচরিত্র আপনাদিগের প্রতি বিদ্বেষ করিলে ধৃতরাষ্ট্রই পুত্রগণের সহিত মিত্রদ্রোহী ও অসাধু বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন ; • কিন্তু হে অজাত-শত্রো! বৃদ্ধরাজ স্বয়ং সেৰপ আচরণেও, অমুজ্ঞা প্রদান করেন না, এবং পুজের অসদাচরণে ভাবী ভাবনাতেও অতিমাত্র তাপান্বিত হন, এই নিমি-खिरे माकाकूल स्ट्रेटिंग्डन ; यर्ट्यू मिक्टिंगर य সর্ব্ব প্রকার পাতক অপেক্ষা গুরুতর, তাহা ব্রাহ্মণ-मिरात पूर्व नर्समारे श्रीनर्ज्या । रह नरत्ताः! সমস্ত কোরবেরাই আপনাকে ও বোধনায়ক জিম্পুকে: সংগ্রামন্থলে অরণ করিতেছেন। ছুন্ছুভিও শব-সকলের ছোর নাদ বিক্ষারিত হইবামাত্র ভীমনেন পদাপাণি হইয়া খ্তেকন, ইহাও তাঁহারা সরণ করি-एक्ट्न। अभिन्न नम्द्र इत्रापर्य महात्रथ नकून नह-

क्षित ज्ञानका व्यवकीर्व क्षेत्रा नर्वात्रक व्यथानम করত অঞ্জ শরবর্ষণ হারা দৈনাগণকে যে অভিবৃষ্ট করেন, ইহাও তাঁহাদের স্মরণ হইতেছে। হে রাজন্ পাওব! আপনি সর্বাধর্মে উপপন্ন হইয়াও বখন তাদৃশ স্থারণ ক্লেশ-নিবহ প্রাপ্ত হইয়াছেন, তথন পুরুষের অনাগত ভাবী অবস্থার বিষয় পূর্বেই পরি-জ্ঞাত হয়, এৰপ সিদ্ধান্তে আপুমি কোন ক্ৰমেই সন্মত হইতে পারি না। হে অজাতশত্রো! এক্ষণে আপনিই প্রজাবলে এতৎসমুদায়ের ও এতদ্বতিরিক্ত অন্যান্য বিষয় সমূহের সামঞ্জ্যা করুন। মহেন্দ্রকণ্প পাওু-পুজেরা যে কামার্থে কথন ধর্ম পরিত্যাগ করেন না তাহা আমি নিশ্চরই জানি, এই নিমিত্তই আপ-নাকে এৰূপ অমুরোধ করিতেছি। হে অজ্ঞাতশতো! আপনিই প্রজ্ঞা দ্বারা এতদ্বিষয়ের দামঞ্জ্স্য করিয়া, যাহাতে কুরু পাণ্ডব ও সঞ্জয়গণ এবং সমবেত অন্যান্য নরেন্দ্র সকল সর্ব্বথা শর্ম্মলাভ করিতে পা-রেন, তাহা করুন। হে রাজন্ যুধিষ্ঠির ! আপনকার জ্যেষ্ঠ তাত ধৃতরাষ্ট্র, অমাত্য ও পুত্রগণের সহিত মি-লিভ হইয়া রাত্রিকালে আমারে যে কথা বলিয়া দিয়াছেন, তাহা যথাবং বর্ণন করিতেছি, অবহিত इहेशा खादग कड़न।

मञ्ज्ञ-वादका ठजूर्विश्म ज्यात्र ममाश्व ॥ २८॥

যুখিন্ঠির কহিলেন, হৈ স্তপুত্র সঞ্জয়। এই পাওব-সকল, স্ঞায়গণ, জনার্দান, যুযুধান ও বিরাট-প্রভৃতি উপস্থিত আছেন; অতএব ধৃতরাষ্ট্র তোমারে যেৰূপ সন্দেশ বাকোর অমুশাসন করিয়ান্তছন, তাহা বর্ণন কর।

সঞ্জয় কহিলেন, আমি যুখিন্ঠির, রকোদর, ধনপ্রস্থা,
নকুল, সহদেব, বাস্তুদেব, যুযুখান, চেকিতান, বিরাট,
পাঞ্চালেশর ও ধৃউদ্বাদ্ধ-প্রভৃতি সকলকেই আমন্ত্রণ
করিভেছি, সম্রতি কৌরব-কুলের কল্যাণ কামনায়
বে ক্রের প্রস্ক করিব, আগনারা অভিনিবেশপূর্বক ভাষা প্রবাদ কর্মন। রাজা ধৃতরাই শান্তি

शांभारन चिल्लावी रहेशा मञ्जू त्रथमञ्जा-भूक्तक चा-मारक जाननाम्रिशंत्र निकटि (श्रत्रण क्रिक्रीरेइन ; এক্ষণে সহোদর, পুদ্র ও স্বন্ধনগণের সহিত রাজা যুখিটিরের তাহাতে অভিরুচি হউক;—পাগুবদিগের শাস্তি হউক! হে ভীষণ-দৈন্যবিশিষ্ট পাৰ্থগণ! আপ-নারা সর্বব ধর্মেই উপপন্ন, জ্ঞান মার্দ্দৰ সত্য ও मात्रला-ममन्निष्ठ, मश्कूल मञ्जूष, मर्स्सवा धन्मश्म, অতএব জ্ঞাতি-বধাদি ৰূপ হীন-ক**ৰ্মে** প্ৰবৃত্ত হওয়া আপনাদিগের উপযুক্ত হয় না; কেন না নীচকর্মে লিপ্ত না হওয়াই আপনাদিগের স্বভাব। আপনা-দিগের অণুমাত্র দোব-লেশও, শুভ্রবন্ত্রে অঞ্চনবিক্যুর ন্যায় স্পট্টৰূপে প্ৰতিভাত হইতে পারে। যেছলে সংপূর্ণ সর্বনাশ এবং উত্তরকালে পাপ ও বিনাশ-কারী নরক-সঞ্চয় দৃষ্ট হয়, বিশেষত ঘাহাতে জয় পরাজয় উভয়ই সমান, সে ৰূপ কর্ম্মে কোন্ বিচক্ষণ ব্যক্তি কথন হস্তক্ষেপ করেন ? হে পাণ্ডবগণ ! মাঁ-হারা জ্ঞাতিকার্য্য সম্পাদন করিয়াছেন, তাঁহারাই ধন্য এবং তাঁহারাই যথার্থ পুত্র, স্থক্ত্ত বান্ধব ; অতএৰ কৌরবেরা যদি নিন্দিত জীবন পরিত্যাগ করে, তাহা হইলে তাহাদিগের নিয়ত বৈভবই হই-বে; পরম্ভ হে পার্থগণ! জ্ঞাতিকার্য্য-পরায়ণ আপ-नाता यपि ममूपस क्वीत्विपिरक भक्क निर्भस क्रिया নিগ্রহ-পূর্বক তাহাদিগের অমুশাসন করেন, তবে জ্ঞাতিব্ধ দারা জীবিত থাকিলেও আপনাদিগের তাদৃশ জীবিত মৃত্যুর সহিত তুলা হইবে, সন্দেহ নাই। ফলত যুদ্ধ করিলে উভর পক্ষেরই যে ক্ষয় হইবে তাহা স্পাটই দৃঊ হইতেছে ; কেন না কেশব, চেকিতান, ধৃউদ্ধান্ধ, সাতাকি-প্রভৃতি মহামহা বীর গণ সহার হইলে, কোন্ ব্যক্তি আপনাদিগকে পরা-জিক্স করিতে উৎসাহী হইবে ? মন্তব্যের কথা দুরে ধারুক, অমবুগণ-সহক্ষত সাক্ষাৎ শচীপতিও নেম্বল আলা করিতে পারেন না। অপিচ ভ্রোন, ভীয়, पाइकामा, भना, कुन, कर्न अ सन्ताना कृषिनान-

नकरेंग तका कतिरम स्कोतविष्गरकरे वा स्कान् वार्कि পরাস্ত করিবার আশংসা করিবে ? হে রাজন্! স্বয়ং यकीयमान बीकिता कान् मानव महातांक छूट्या-ধনের সেই মহতী সেনার সংহার-সাধনে সমর্থ হই-বে ? স্তরাং জয় ও পরাজয় উভয় পক্ষেই আমি কিছুমাত্র মঙ্গলের সম্ভাবনা দেখি না। মহাপ্রভাব-मन्भन्न পাণ্ডবেরাই বা, ছুদ্ধুল-সমূত নীচলোকের নাায়, ধর্মার্থ-বিৰক্ষিত জঘন্য-কর্মে কি প্রকারে প্রবৃত্ত হইতে পারেন ? অতএব আমি প্রণতভাবে অঞ্চলিবন্ধন-পূর্ব্বক বাস্তদেব ও পাঞ্চালাধিপতি র্জ-রাজ দ্রুপদের শরণাপন্ন হইয়া প্রার্থনা করিতেছি, আপনার৷ প্রসন্ন হইয়া যাহাতে কুরু ও সঞ্জয়গণের কল্যাণ-সংস্থান হয় তাহা করুন। কেশব কি ধনঞ্জয় আমার এই প্রার্থনা বাক্য রক্ষা করিবেন না এ কথা আমি কোন ক্রমেই মনে করিতে পারি না; কেন ना जना विषयात कथा मृदत थाकुक, याद्धा कतितन, ইহাঁরা প্রাণ পর্যান্তও প্রদান করিতে পারেন। হে বিশ্বন ! আমি সন্ধি স্থাপনের উদ্দেশেই আপনা-मिश्रादक व कथा विनाटिक ; जाननामिरशंत नर्साटिश-ভাবে শান্তি হয়, রাজা ধৃতরাষ্ট্র ও ভীমের ইহাই অভিমত।

मञ्जर-वाटका शक्षविश्म অधार ममाश्र ॥ २०॥

যুধিষ্ঠির কহিলেন, সঞ্জয়! তুমি যুদ্ধেছা-স্চক
আমার এমন কোন বাকা অবণ করিলে যে
হইতে ভয় পাইতেছ? হে তাত স্থতপুত্র! সমরাপেক্ষা সন্ধিই সহস্রগুণে শ্রেষ্ঠ; স্থতরাং সন্ধি লাভ
করিতে পারিলে কোন অবোধ ব্যক্তি কখন যুদ্ধার্থে
প্রের্ম্ভ হয়? হে সঞ্জয়! মনুষ্য মনে মনে যে কোন
সঙ্কণ্য করে, যদি বিনা কর্মেই তাহা সিদ্ধ হয়, তবে
আর কর্ম করিতে তাহার প্রয়ন্তি হইবে কেন?
অতএব বিনা যুদ্ধে লমুত্ম বস্তুও যে বহুমত হয় ইহা
আমার বিদিত আছে। বিনা কারণে কোন্ মনুষ্য
যুদ্ধকে কখন ইউনামন জ্ঞান করিবেক? কোন্ দেব-

শপু পুরুষ যুদ্ধ প্রার্থনা করিয়া থাকে? হে নঞ্জয়! পাওবেরা স্থাভিলাষী হইলে, যাহা ধর্ম হইতে অহীন অথচ লোকের পথ্য হয়, এইৰূপ কৰ্মই করি-য়া পাকেন। খাঁহারা কেবল ধর্মাবহ স্থারেই আশং-সা করেন, যুদ্ধাদি কন্ট-সাধ্য কর্ম তাঁহাদিগের যথা-র্থই তুংখের নিমিত্ত হয়; কিন্তু যে ব্যক্তি শুদ্ধ ইন্দ্রির-গণের প্রীতিপরবশ হইষা ছঃখ-নাশ ও স্থখলাভের বাসনা করে, তাহার ছুংখেরই বা পরিসীমা কি? প্রবলতর বিষয়-চূচিন্তা নিয়তই তাহার **শরীর দক্ষ** করিতে থাকে। তাহাতে আসক্ত হও**য়াতেই সে** পদে পদে ছংখকর কর্ম্মের অনুষ্ঠানে প্রহৃত হয় কাঠসংযোগে নিয়ত প্রজালিত হইলে পাবকের তেজ যেমন ক্রমশই বর্দ্ধিত হইয়া থাকে, অভি-লবিত অর্থ-লাভ দার৷ ইন্দ্রিয়-স্কুথৈষী পুরুষের বি-ষয়-ভৃষ্ণাও •সেই ৰূপ অধিকতর বেগে রৃদ্ধি পায়; আছতি প্রদানে প্রজ্বলিত ছতাশনের ন্যায় কিছু-তেই আর তাহার তৃপ্তি হয় না। দেখ, আমাদি**গের** সহিত মহারাজ ধৃতরাষ্ট্রের কত প্রকার স্থমহৎ ঐশ্ব-র্যোরই উপভোগ না হইয়াছে। তিনি অপ্রধান হই-য়া কথন বিগ্রাহ-সকলের ঈশ্বর হন নাই এবং অনু-ন্তম গীত-বাদ্য শ্রবণ, মাল্য গন্ধ অনুলেপনাদি দেবন, উত্তম উত্তম বসন পরিধান-প্রভৃতি **ভোগ**-स्रुट्थत पात्रापने कथन प्रथमिकाटि करतन नारे, তথাপি সেই ভোগোপচয়ের নিমিত্তে কৌরবদিগকে প্রেরণ করেন কেন? হে সঞ্জয়! বিষয়-স্পৃহা বিষয়ে অবোধ ব্যক্তির এইৰূপ সঙ্কপেই হইয়া থাকে যাহা তদীয় দেহাবচ্ছিল জীবাত্মাকে প্রতিনিয়তই ফু:খিত করে। রাজা স্বয়ং বিষমস্থ, অর্থাৎ রাগ লোভাদিতে আসক্ত থাকিয়া অপর সকলেতে যে ভন্নিবারণের সমর্থতা ইচ্ছা করিতেছেন, তাহা সাধু নহে; কেন-না তিনি আপনার চরিত্র যেৰূপ দেখিতেছেন, অপর সকলেরও সেইকপ বিবেচনা করা তাঁছার কর্তব্য। नीजकारन अभि-रमवनकाती वास्त्रि औषांगरन रमहे গমিহিত শুভকর পরিকের পরিহার বাসনায় শুদ্ধ-

पृष-वृत्तिकं गजीत शहन-मत्था विमक्कन-शूर्वक वाद्य-যোগে ভাহাকে বৃদ্ধিত হইতে দেখিয়া যেমন অমু-শোক-প্রায়ণ হয়, সেইৰূপ রাজা ধৃতরাষ্ট্র আমা-দিগকে পরিত্যাগ এবং ছুর্ব্বদ্ধি, ক্রুরতা-নিরত, ছুইট-মক্তিনিচরে পরিবৃত, মনদমতি বিমৃত পুজকে এহণ করত অতুল ঐশ্বর্যোর অধিপতি হইয়াও এক্ষণে কি নিমিত্ত বিলাপ করিততছেন ? ফলত স্থযোধন ও পুত্র-প্রিয়কামী অন্ধরাজ নিরতিশয় বিশ্বাস-ভা-জন বিপ্রুরকে অবিশয়ের ন্যায় ফ্রান করিয়া তদীয় বাক্য অবহেলন-পূর্ব্বক জানিয়া শুনিয়াও কেবল অধর্মমার্গে প্রবেশ করিতেছেন। আহা! যিনি মে-ধাবী, কৌরবগণের হিতৈষী, বছল শাস্ত্রজান-সম্পন্ন, বাগ্মী ও অদ্বিতীয় শীলবান্, এতাদুশ মহাত্মা বিছুর-কেও রাজা ধৃতরাষ্ট্র কেবল পুত্রগ্রীতি ও কৌরব-বর্গের অনুরোধ-পরবর্শ হইয়া সর্গু করেন নাই। হে সঞ্জয়! ভিনি মান্যলোকের মান-বিলোপী, স্বয়ং मानकाभी, क्रेपी, त्काबी, व्यर्थ-धर्मात व्यञ्जिखी, ছুর্ভাষী, দৈন্যভাজন-জনগণানুগামী, কামাত্মা, ছুরা-শয়গণ-কর্তৃক সম্বর্দ্ধিত, অশিক্ষ-ীয়, শুভবক্ষিত, দীর্ঘ-কোপী, মিত্রজোহা ছুর্যোধনের প্রিয়েষা হওয়ায় দেখিয়া শুনিরাই ধর্ম-কাম পরিত্যাগ করিয়াছেন। পাশক্রীড়া-সমরে বিছুর শুক্রাচার্য্য-সম্বন্ধিনী নীতি বাণীর উক্তি করিয়া যখন ধৃতরাষ্ট্র হইতে প্রশংসা লাভ ক্রিতে পারের নাই, তখনই আমার প্রতীতি হইরাছিল, কুরুবংশের ধংস আগতপ্রায়। হে স্থত! कोत्रदित। यथन विष्ठदित त्रृक्तित असूवर्डन करत नाहे, তথ্নই তাহাদিগের সমুদর রুছের সমাগম হই-্র্নাছে। তাহারা যে কাল পর্যান্ত তাঁহার এজ্ঞায়ু-নারে চলিয়াছিল, তাবৎ পর্যান্তই তাহাদিপের দ্বাষ্ট্র-বুদ্ধি হইয়াছিল। হে সঞ্চয়। সেই অর্থলোভী ধৃত-রাষ্ট্র-তনয়ের কতদুর মোহ দেখ, এক্ষণে ছুংশাসন, প্রকৃষি ও কর্ণ তাহার মন্ত্রী হইরাছে বিভএব षामि এই সমন্ত পর্যালোচন করিয়া, কি প্রকারে क्क स्कार्यात य क्लांग नांच हरेटा शास्त्र,

তাহা কিছুই অবধারণ করিতে পারি ন। ধৃতরাষ্ট্র যথন দীর্ঘদশী বিহুরকে প্রতাজিত করত অস্মদাদি শত্ৰুগণ হইতে প্ৰভুত ঐত্বৰ্য্য সঙ্কলন-পূৰ্ব্যক ৰ্থাৰ্থ ধৃতরাষ্ট্র হইয়াছেন এবং পুত্রের সহিত একবাক্য হইয়া ভূমগুলে সপত্ন-বিরহিত মহাসাম্রাজ্য বিস্তা-রের আশংসা করিতেছেন, তথন তাঁহার নিকটে যে সম্পূর্ণ সন্ধিলাভ করা যাইবে, ইহা কোন মতেই সম্ভবপর বোধ হয় না। অক্সৎ সম্বন্ধীয় যে কিছু অর্থ সম্পত্তি আছে, তাহা তিনি স্বকীয় সম্পত্তি বলিয়াই মনে করিতেছেন, স্কুতরাং অকপট সন্ধিবন্ধনে তাঁ-হার আর প্রবৃত্তি হইবে কেন? একাকী কর্ণই তাঁ-হার বিজয়-সাধনে সমর্থ হইবেন বলিয়া তাঁহার নি-শ্চর প্রতীতি হইয়াছে ; কিন্তু এই এক কথা ক্লিজ্ঞা-সা করি, কর্ণ যে, সংগ্রামে অন্ত্রধারী অর্জ্জুনকে পরাস্ত কর। অনায়াস-সাধ্য মনে করিতেছেন, তাহা কি প্রকারে সঙ্গত হইতে পারে ? পূর্ব্বেও ত বছবার মহত্তর সমর-পারাবার উপস্থিত হইয়াছিল; তৎ-কালে তিনি তৎসমুদায়ের দ্বীপ-স্বৰূপ হইয়া পরি-আন্ত কৌরবদিগকে আশ্রয় প্রদান করিতে পারেন নাই কেন? অর্জুনের অপেকা অধিক হইতে পারে, এই ধরাধামে এমন ধন্তুর্দ্ধারীই যে অপ্রসিদ্ধ, তাহা সেই কর্ণও জানেন, স্থাধেনও জানেন, ডোণও জানেন, ভীয়াও জানেন এবং তথায় অন্যান্য যে সমন্ত কৌরবগণ আছেন, তাঁহারাও জানেন। অরি-न्तम धनञ्ज्य विमामान थाकिएठ जन्ममीय दाकाशम যে প্রকারে প্রযোগনের হন্তগত হৃইয়াছে, তাহাও কাহারো অবিদিত নাই। যাবতীয় কুরুগণ ও সম-বেত ভূমিপালবর্গ, সকলেই তাহা বিশেষরূপে জা-নেন। একণে আশ্চর্য্যের বিষয় এই, যে, ধৃতরাষ্ট্র-তনয়, নব-বিতন্তি-প্রমাণ-আয়ুধধারী ধহুর্বিদ্যাপা-রদর্শী সেই কিরীটার সঙ্গে সংগ্রাম করিয়া ভছুপা-ক্রিত-পাওবদিগের সন্তাস্পদীভূত রাজ্য ধুনু হুরণ क्ता माधा वित्रा मदन मदन वित्रविष्णु कतिएछ-्राप्त । कला य पर्यास अगदान ता श्रीतित विन्हा-

बिक निनाम व्यवन भाष्ट्र ना कतिराउट, साहे भ्या-স্তই ধৃতরাষ্ট্র-তন্মেরা জীবিত রহিয়াছে; যে কাল পর্যান্ত রকোদরের ক্রোধ-পূর্ণ মুখমগুল অবলোকন না ক্রিডেছেন, তাবং পর্যান্তই স্থবোধন অর্থসিদ্ধির সম্ভাবনা করিতেছেন। হে তাত সঞ্জয়! সমর-সহিষ্ বীর্যাবান্ রকোদর, ধনঞ্জা, নকুল ও সহদেব জীবিত থাকিতে দাক্ষাৎ স্থরাধিপতিও আমাদিগের ঐশ্বর্যা-হরণে উৎসাহী হইতে পারেন না। অতএব হে স্ত! র্ধরাজ পুত্তের সহিত যদি ইহা সমাক্রপে ৰোধগম্য করিতে পারেন, তাহা হইলে আর সমরে পাওব-কোপানলে एक रहेशा को त्रविषशक विनके रहेट रत्र ना। ए मध्य ! जामानित्त्रत्र य पूर्वियर ক্লেশ ভোগ হইয়াছে, তাহা তোমার অবিদিত নাই; একণে তোমার অনুরোধ মান্য করত আমি তত্ত্বি-ষয়ে ক্ষমা করিতেছি। পূর্বেক কৌরবগণের সহিত আমাদিগের যে ৰূপ ভাব ছিল,— ছুর্য্যোধনের সহিত মামাদের যে ৰূপ ব্যবহার হইত, এক্ষণেও সেই ৰূপ থাকুক; তোমার বাক্যান্ত্সারে আমি শান্তি-মার্গেই প্রস্থিত হইব। ইন্দ্রপ্রস্থে আমার যাদৃশ রাজ্য ছিল সেইৰূপই হউক; ভরতভোষ্ঠ সুযোধন আমাকে তাহা প্রত্যর্পণ করুন।

यूरिकित-वादका वर्षिश्य अधात ममाश्व ॥ २७॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে পাণ্ডুনন্দন যুখিনির! আপনি যে কোন কর্মের অমুন্তান করিয়া থাকেন, লোক মথে ভাষা নিয়ত ধর্মামুগত বলিয়া বিখ্যাত আছে এবং প্রভাক্তও দৃষ্ট হইতেছে; অতএব খ্রীয় জীবনের ভ্রমী কীর্ত্তি অথচ অনিত্যতা পর্য্যালোচনা করত কৌরবদিগকে বিনাশ প্রাপ্ত করিবেন না। হে অকাত্তগতো। যদি যুদ্ধ ব্যতিরেকে কৌরবেরা আপনকার অংশ প্রদানে অসমত হন, তবে, আমার বিবেচনার, যুদ্ধ ছারা রাজা লাভ করা অপেকা অন্ধক র্ফি-রাজো ভিকার্ডিছারা জীবিকা নির্বাহ করাও প্রেয়। দেখুন, মনুব্যের জীবিত কাল সহ-

ৰেই অত্প, ভাহাতে আবার বিস্তুরিষ্ঠ, ছঃখনিক্ত্রে নিতা কড়িত ও চঞ্চল; বিশেষত ভারাজে যুদাদি ভয়ন্তর কর্ম দারা যে যশোলাভের চেফা করা যার, তাহাও আয়ানের অমুৰূপ হয় না; অতএব তাদৃশ জন্মনা পাপ কর্ম হইতে নির্ভ হওয়াই আপনকার কর্জবা। হে নরেন্দ্র! ধর্মের বিম্নাকর এই যে সমস্ত অভিলাব মমুবোর অন্তঃকরণে স্বভাবতঃ প্রস্কুত হয়, মতিমান মানব পূর্ব্বেই তৎসমুদায়ের প্রতিঘাত করিতে পারিলে লোক মধ্যে ভুয়সী প্রশংসা লাভ করেন। হে পার্থ! সংসারে অর্থতৃষ্ণাই নিবন্ধনী, অর্থাৎ আবন্ধ করিবার রচ্জু-স্বৰূপা হইয়াছে ; তা-হাতে যাহারা আসক্ত হয়, তাহাদের পদে পদে ধর্ম্মের বাধা উপস্থিত হইয়া থাকে। কামনার মণ্ডল যত বিস্তৃত হয় ততই অর্থাগমের আকাক্ষা বৃদ্ধি পায় এবং মন্তুষ্যও সেই পরিমাণে ধর্মচ্যুত হইতে পাকে। অতএব অযুক্ত অর্থান্থরোধ ত্যাগ করিয়া যিনি সর্বতোভাবে ধর্ম-সঞ্চয়ের প্রার্থনা করেন, তাঁহাকেই প্রবৃদ্ধ বলা যাইতে পারে। হে তাত ! भार्मिक वाक्ति भर्मादकरे मर्व कर्त्मन्न व्यर्धकर्भ नि-র্দ্দিউ করিয়া উদ্ভাসমান ভাস্করের ন্যায় মহা প্রতা-পে বিরাজ করিতে থাকেন; আর ধর্মহীন পাপ-বুদ্ধি নরাধম সমগ্র মহীমগুলের আ্বিপত্য লাভ করিয়াও বিবাদকুপে নিয়ত নিময় হইয়া রহে। যিনি পরলোকের প্রতি আহান্বিত হইয়া বেদাধ্যমন, ত্রহ্মচর্যোর অমুষ্ঠান, যজ্ঞ যাজন ও ত্রাহ্মণগণকে বিস্ত প্রদান করিয়াছেন, তিনি অনুম্ভ কালের নিমিছে আত্মাকে অশেষ স্থাপের অধিকারে সমর্পণ করিয়া রাখিয়াছেন। যে ব্যক্তি যোগাভ্যানের, অর্থাৎ চিস্ত-वृक्ति-निर्तारभत উপयोगी कर्य ना क्रिया निवृक्षिम् মুখ প্রিয়েরই অতিমাত্র সেবন পরারণ হয়, সে অর্থ-नारम स्थ-विविक्किं अथि अवन कामद्वरत्र अदहा-দিত হইয়া কেবল নিরতিশয় ছুংখ শ্বাতেই শ্রন कृतिया पादक। এই बार्टिय प्यादीय समूत्रा पार्थ हर्यात्र अत्रक्ष रहेता धर्म विमर्मन-शूनिक स्थर्भक्रिके

जानिक्रम करत जवर अन्नरनारकत व्यक्ति विश्वान-प्रमा হয়, সেই মন্দমতি মুটান্মা দেহ ত্যাগান্তে পরলোক-গামী হইয়া বিষমভর সম্ভাপ-নিকরে নিরম্ভর তাপিত হইতে থাকে; যেহেতু পরলোকে, কি পুণ্য কি পাপ কোন কর্মেরই একবারে বিপ্রণাশ হইবার সম্ভাবনা নাই; কর্ডার পাপ পুণ্য অত্যে তথার গমন করে পশ্চাৎ কর্ডা তাহার অন্ত্রীগামী হয়। মাসিকাদি आदिकार्यन काकार्यक्रिया स्थान नामासूमादत আদাপৃত স্থন্দর-গন্ধরসোপপন •অন্ন প্রদান করা যায়, উত্তম-দক্ষিণাবিশিষ্ট রাজস্থয়াদি যজ্জেতে আপনকারও সেই ৰূপ ন্যায়ামুগত কর্মাই স্থবিখ্যাত রহিয়াছে। হে পার্থ! মনুষ্যের যে কোন কর্ম্ম করা কর্ত্তব্য, তাহা ইহলোকেই সম্পন্ন করিতে হয়, পর-লোকে গমন করিয়া আর কিছুই করিতে হয় না; সজ্জনগণ পরলোক-সমুচিত যে সমস্ত স্থমহৎ পুণ্য কর্ম্যের ভূরি ভূরি প্রশংসা করিয়াছেন, তৎসমুদায়ের অমুষ্ঠান করিতে আপনকার কিছুমাত্র অবশিষ্ট নাই। পরলোকে প্রন্থিত হইলে মনুষ্য জরা, মৃত্যু, কুধা ও পিপাসা এবং মনের সমুদর অপ্রিয় পরিহার করে; কেবল ইন্দ্রিয় বর্গের প্রীতি সম্পাদন ব্যতীত তথায় আর কোন কর্মাই কর্ত্তব্য থাকে না। হে নরেন্দ্র! কর্মের কল এই ৰূপ হইয়া থাকে; অতএব আপনি হৃদয়ের প্রীতিভাজন অচিরস্থায়ী বিষয়ের অনুরোধে ক্রোধ-হর্ষ-জনিত ছেষ-কামের বশস্ত্রদ হইয়া চিরকা-লের নিমিত্তে উভয় লোক বিসর্জন করিবেন না; কর্ম-সকলের চরম সীমায় উপনীত হইয়া অধুনা मठा, मम, बार्क्डव ও बाजृश्ममा भेटमा बनर्थक बना-ঞ্জলি দিবেন না ; অশ্বমেধ ও রাজস্থা বজ্ঞের অমু-ষ্ঠান করিয়া আবার জ্ঞাতিবধৰূপ পাপ কর্ম্মের শাস্তি क्रिंदिन मा! (रू धर्मानिका शृथानम्मन शाखव-गग! আপনারা যদি এই ৰূপ দ্বেষভাবে চিরকাল সেই পাপ কর্ম করিতে প্রবৃত্ত হইতেন, তাহা হইলে আর वस् वर्षकाल का महा। प्रःथाजिमात वान कतिराजन ना । दर यूथित ! शूर्त्स त्य रेमना जाशनात जाना-

ধীন ছিল তাহা পরিত্যাগ না করিয়া তৎকালে আ-পনি যদি বন প্রস্থান না করিতেন, ভাছা হইলেও আপনার নিত্য-বাশীভূত এই সমস্ত সচিবগণ, জনা– র্দন, বীর্যাশালী যুযুধান, সম্প্রহার-কোবিদ বীর্যা-সম্পন্ন পুত্রগণের সহিত স্থবর্ণ-রথারোহী মৎস্যরাজ বিরাট এবং পূর্বে যাঁহাদিগকে আপনি পরাজিত করিরাছিলেন সেই সমস্ত ভূপালগণ আপনকার পক্ষই অবলম্বন করিতেন; স্থতরাং আপনি মহা-সহায়-সম্পন্ন, বলম্ব, প্রতাপশালী এবং বাস্তদেব ও অর্জুন কর্ত্ত পুরস্কৃত হইয়া রঙ্গ-মধ্যে প্রধান প্রধান অরাতি-নিকরের সংহার সাধন করত ধৃতরাষ্ট্র তন-য়ের দর্প চূর্ণ করিতে পারিতেন; এক্ষণে শত্রুর বলবর্দ্ধন ও আপন সহায়কর্ষণ করিয়া এবং বছ বর্ষ কাল অরণ্যবাসী থাকিয়া এই হীনাবস্থায় যুদ্ধাভি-লাষী হইতেছেন কেন? হে পাণ্ডব! যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে, কি অপ্রাজ্ঞ, কি ধর্মজ্ঞ, উভয় প্রকার লোকেই ঐশ্বর্য্য লাভ করিতে পারে এবং প্রজ্ঞাবান্ ধর্মজ্ঞ পুरूष, कि অধর্মজ্ঞ অজ্ঞ ব্যক্তি কামনা নিরোধ হে-তুক যুদ্ধে নির্ভ থাকিয়া ঐশ্বর্যা হইতে ভ্রম্ট হইতেও পারে যথার্থ বটে; কিন্তু হে পার্থ! আপনুকার বুদ্ধি কখন অধর্মে প্রবৃত্তা হয় না; ক্রোধের পরতন্ত্র হইয়া আপনি কস্মিন্ কালেও কোন প্রকার পাপাচরণ করেন নাই ; তবে কি কারণে অধুনা এতাদৃশ প্রজ্ঞা-বিরুদ্ধ কর্মের অনুষ্ঠানে অভিলাধী হইতেছেন বলুন! মহারাজ! অব্যাধি-জনিত স্বভাব-সিদ্ধ ক্রোধ এক প্রকার শিরংপীড়াকর, যশো-ধর্ম-বিলোপী ও পাপ-কলোপধায়ক ভীব্ৰভর বিব-স্বৰূপ; সে বিষ সজ্জন-গণেরই পেয়; অসাধু লোকেরা তাহা পান করিতে পারে না; অতএব আপনি সেই রোষ-বিষ পান করিয়া প্রশান্ত হউন। দেখুন, ইচ্ছা করিয়া কোন্ ৰাক্তি সেই পাপামুৰন্ধী ক্ৰোধের প্ৰাৰ্থনা কবিয়া थांदक ? दह भार्थ ! ज्याभनात भएक क्रमाई नहीत्रेजी ভোগ তৃষ্ণা নহে; যে উপভোগের নিমিকে শান্তমু-उनम जीम, ट्यान, व्यक्तीमा, क्ल, मना, जूनिवाना,

বিকর্ণ, বিবিংশতি, কর্ণ ও ছুর্য্যোধন-প্রভৃতি আত্মীয়গণ নিহত হইবেন, তাহা কদাচ আপনকার প্রেরক্ষর
নহে। এই সমস্ত স্বজনগণের নিধন সাধন করিয়া
আপনি যে স্থা লাভ করিতে পারিবেন, তাহা কিকপ হইবে বলুন দেখি? এই সাগরায়রা বস্তজ্বরার
আধিপত্য লাভ করিয়াও কি জরা মৃত্যু পরিত্যাগ
করিতে পারিবেন? কখনই নহে। অতএব হে রাজন্! এইকপ প্রিয়াপ্রিয় ও স্থাছুংখ বিবেচনা করিয়া
যুদ্ধ-ব্যাপার হইতে নির্ভ হউন। যদি অমাত্য বর্গের
অভিলায হেতুক এই অযুক্তকর্ম করিতে ইছা
করেন, তবে তাঁহাদিগের উপরেই ইহার ভার সমপ্রণ করিয়া স্বয়ং অপসত হউন; চিরকাল স্বর্গ
মার্গের অমুবর্জী থাকিয়া, এখন তাহা হইতে পরিঅই হইবেন না।

मञ्जूष्ठतात्का मश्रुविश्म ज्याशास ममाश्रु॥ २१॥

যুধিষ্ঠির কহিলেন হে সঞ্জয়! তুমি যাহা বলিতেছ, সে কথা বর্ণার্থ বটে ; ধর্মাই যে সর্ব্ব কর্ম্মের শ্রেষ্ঠ তা-হাতে আর সংশয় মাত্র নাই; কিন্তু আমি ধর্মামুষ্ঠান করিতেছি কি অধর্মাচরণ করিতেছি, তাহা বিশেষ कार्प कानिया जूमि जामारक निम्हा करा। य मञ्च-বোতে অধর্ম ধর্মকপ-সমস্ত ধারণ করে এবং সম্পূর্ণ ধৰ্মও অধৰ্ম-ৰূপে দৃশ্যমান হন অথবা স্বকীয় যথাৰ্থ স্বৰূপে প্ৰকাশ পান, বিচক্ষণ পণ্ডিতেরা জ্ঞাননেত্র সহকারে তাঁহারে সম্তক্তমে নিরীক্ষণ করিতে পা-রেন। হে मঞ্চর! নিতাকালবর্ত্তী প্রকৃত ধর্মাধর্ম মমুব্যের আপদ্ কালেও এইরূপ লক্ষণ ভজনা করি-রা থাকে; বাহার আদ্য লক্ষণ, অর্থাৎ অধর্মের ধর্মকুপ ধারণ দৃষ্টিগোচর হয়, সেই আপদ্ধর্মকেই তাহার প্রমাশ বলিয়া জান। হে সঞ্চয়! প্রকৃতি, वर्थाद वर्षमासूराजिनी कीविका, विलुखा इहेटन मसूरा জ্ঞীত্রত ও বিপন্ন হইয়া পড়ে; হতরাং তৎকালে বে কোন উপায় ৰারা ভাহার কার্য্য নিভাত্তি হয়, সে ভাহাই जनगमन कतिए भारतः, किंद य वालि

প্রকৃতিস্থ অর্থাৎ নিরাপদ থাকিয়াও আপদ্দর্যায়ী কর্ম করে, অথবা বে ব্যক্তি আপন্ন হইরাও সম্পদ্ধ-র্মের অনুসারী হয়, তাহারা অবশ্যই নিন্দনীয় হইয়া থাকে। বিধাতা যথন স্বধর্মের অবিলোপাকাঞ্জী বৈদিক ধর্মামুসারী ব্যক্তিগণের আপদ্কালীন ছুষ্ক-র্মের প্রায়শ্চিত্ত বিধান করিয়াছেন, তখন আপদ্-কালে বিধৰ্মাবলয়ন বিধিসিদ্ধ হইয়াছে; অভএব ह् मञ्जर । जाशन्विर्क्ति कर्माष्ट्र वाक्तिमिश्रादक विम বিকর্মস্থ হইতে দেখি, তবে তাহাদিগকেই নিন্দা কর; নতুবা যাহারা বিপন্ন হইয়া তৎকাল-বিহিত কোন প্রকার অধর্মকর্মে প্রবৃত্ত হয়, তাহাদিগের প্রতি দোষারোপ করা ভোমার উচিত নহে। দেখ, মনীযা-স-ম্পন্ন সক্ত্রন গণের সন্ত্র্বিচ্ছেদ, অর্থাৎ তত্ত্বজ্ঞান সাধনের নিমিত্তে নিত্যকালই তাঁহাদিগের জীবিকা বিহিতা হইয়া থাকে; পরস্ক ক্ষজ্রিয় হইয়া যাহারা সন্ন্যাস অবলম্বন-পূর্ব্বক বেদবিহিত যজ্ঞদানাদি ধর্মানুষ্ঠানে বিরত থাকে, তাহাদিগের হইতে সকল রুত্তিরই উচ্ছেদ হয় সন্দেহ নাই। আমাদিগের পিতৃপিতা-মহাদি পূর্বপুরুষগণ এবং যাঁহারা প্রজ্ঞানমাত্র প্রতী-ক্ষায় কর্মা না করিতেন তাঁহারাও মৎপ্রদর্শিত ধর্মা-মার্গেই আবহুমান কাল বিচরণ করিয়া আসিয়াছেন; আমিও আন্তিক, স্থতরাং তদ্ভিন্ন অন্য পথ স্বীকার করিতে পারি না। হে সঞ্জয়। এই পৃথিবীতে মানব-গণের এবং স্বর্গে অমরগণের যে কিছু অর্থ-সম্পত্তি, অথবা দেবগণের উপরেও যে প্রাক্তাপত্য অধিকার, कि जिपिन, कि जन्मलाक, अधर्याबाता आमि किছूरे কামনা করি না। তথাপি যদি নিতান্তই আমার অধর্ম-প্রবৃত্তি বোধ কর, তবে, যিনি অসামান্য বিজ্ঞা-নপ্রভাবে বছবিধ মহাবল রাজনাগণকেও অনুশাসন করেন, সেই সর্বাধর্মের নিমন্তা, কার্য্যকুশল, নীতিমান, वाचन-भरात डिशानिका, भनीवी कृष्य करे विमा-মান রহিয়াছেন, ইহাঁকেই এবিষয়ের স্থাহ কর। যুদ্ধে প্রবৃত হইলে আমি স্বধর্ম পরিহার করি, কি मन्त्राम व्यवस्था क्रिटिंगरे जीनमनीत हरे, प्रश्यमा

क्रिनवरे छारा वाल क्रमन, क्रम ना वास्त्रपत क्रम ও পাণ্ডব উভর পক্ষেরই হিতকামী। এই শিনি-ৰংশধর লাত্যকি, এই চেদি, অন্ধক, বার্ফের, ভোজ, কুকুর ও সঞ্জয় গণ সকলেই বাস্থদেবের বৃদ্ধির উপা-সনা করিরা শত্রুগণ দলন পূর্বক স্কুছর্মের আ-নন্দ বর্দ্ধন করিতেছেন। ক্লফের পরামশীসূসারে পরিচালিত হইয়াই রক্ষি, অস্ত্রক ও উত্রসেন প্রভৃতি मकरल रेखुजा প্রতাপশালী হইয়াছেন এবং মহা-বল-সম্পন্ন, মনস্বী ও সত্যপরারণ বাবতীয় যদিব-গণ অমুন্তম ভোগ স্থখ অমুভব করিতেছেন। কাশী-বাসী বভুও এই মহাপ্ৰভাব কৃষ্ণকে ভ্ৰাতৃৰপে প্ৰাপ্ত হইরা মহতী সমৃদ্ধি লাভ করিয়াছেন। গ্রীমাবসানে মেঘ যেমন প্রজাদিগের স্থখোদেশে অজস্র বারি বর্ষণ করে, সেইৰূপ বাস্থদেব ঐ বভুকে ভুরি ভুরি কাম্য বস্তু প্রদান করিতেছেন। হে তার্ত ! কেশব ঈদৃশ মহীয়ান্ পুরুষ; অতএব তুমি ইহাঁরে কর্মের নিশ্চ-য়চ্ছ বলিয়া অবধারণ কর। রুষ্ণু আমাদিগের যেমন প্রিরপাত্র, সেই ৰূপ সাধু বলিয়াও অভিমত; স্থতরাং আমি কেশবের কথা অতিক্রম করিতে পারি না।

যুধিষ্ঠির-বাক্যে অফাবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥২৮॥

বাস্থদেব কহিলেন, হে স্থত সঞ্জয়! আমি এই
পাণ্ডবদিগের বেমন অবিনাশ, কল্যাণ ও প্রিয় ইচ্ছা
করি, সেইরপ বছপুদ্রশালী রাজা ধৃতরাষ্ট্রেরও সমৃদ্ধি
আশংসা করি। হে সঞ্জয়! 'তোমরা সমর-প্ররুত্তি
পরিহার পূর্বাক শান্তি মার্গ অবলয়ন কর' এতদ্বাভীত তাঁহাদিগকে আর কোন কথা বলাই আমার
অভিপ্রেত নহে; বেহেতু ইহা ধৃতরাষ্ট্রেরও প্রীতিকর শুনিভেছি এবং পাণ্ডবদিগেরও ইহা সমাক্
প্রয়োজনীয় বোধ করিভেছি। কিন্তু হে সঞ্জয়! রাজাের নিমিত্তে শান্তি হওয়া বে নিভান্ত স্কুছয়, তাহা

সমাক্রণে প্রদর্শন করিয়াছেন। খৃতরাই পু্জাণের সহিত্যাহাতে নিরতিশর লুক রহিয়াছেন ভিষিত্যে ইহাঁদিগের ঘোরতর কলহ ছটিবার আর অসম্ভাবনা কি? হে সঞ্জয়! তুমি আমা হইতে কি

র হইতে কখন ধর্মের ব্যতিক্রম দৃটি কর নাই, তবে কি নিমিত্তে এক্ষণে ধর্মরাজের ধর্মভ্রষ্ট হইবার আশকা করিতেছ? ইনি স্থকর্ম সাধনার্থে উৎসাহী হইতেছেন এবং প্রসিদ্ধি ও শাস্ত্র অমুসারে পূর্ব্বের ন্যায় কুটুম্ব ভরণের অভিলাধ করিতেছেন এই নিমিত্তই কি ধর্মচ্যুত হইবেন ? এই নিমিত্তই কি ভুমি ইহাঁকে সর্ববত্যাগী হইতে পরামর্শ দিতেছ ? কলত ধর্ম্মের বিধি যথাবৎ বর্ত্তমান থাকিলেও ইহাতে ব্রাহ্মণ দিগের নানা প্রকার মতভেদ দৃষ্ট হইয়া থাকে। কেহ কেহ বলেন, কর্ম দারা পরলোকে 🖔 সিদ্ধি লাভ হয়; আবার অন্য কোন কোন পণ্ডি-তেরা নির্দেশ করেন যে, কর্ম পরিজ্যাগ পূর্বক एक विद्धान बाता निकि रत्र; किस विद्धानवान् रहे-য়াও ভক্ষ্য ভোজ্যের ভোগ ব্যতীত কোন ব্যক্তিই যে তৃপ্ত হইতে পারেন না, তাহা ব্রাহ্মণগণের বিদিত चाहि। य नकल विमा हेह्स्लास्क कर्मा-नाधिका হয় তাহাদিগেরই ফল আছে, তদ্ভিম্ন অন্য কোন বিদ্যার ফল নাই। কর্মের ফল যে প্রত্যক্ষ, তাহাতে আর কেহই আপত্তি করিতে পারে না ; দেখ, ভৃষ্ণার্ভ ব্যক্তি জল পান করিলেই তাহার পিপাসার শাস্তি হয়। ফলত শান্তে কর্মের সঙ্গে মিলিত হইয়াই 🧗 জ্ঞানের বিধি বিহিত হইয়াছে; অতএব হে সঞ্জয়! সেই সিদ্ধি-বিষয়ে কর্ম্মের সাধনতা বিদ্যমান আছে ; তাহাতে যে ব্যক্তি কর্ম্মের প্রতি অনাদর করিয়া শুদ্ধ বিজ্ঞান মাত্রেরই প্রশংসা করেন, তাঁহার কেবল রুণা বাগাড়ম্বর মাত্র প্রকাশ পার; কেননা তিনি স্বমত-রক্ষার্থে যে কোন প্রমাণ প্রদর্শন করেন, তাহা বলবৎ ছইতে পারে না। দেখ, পরলোকে যে সমস্ত দেবগণ বিরাজ করিতেছেন, কেবল কর্ম বারাই তাঁহারা डामृग डेक-शननाएवत व्यक्तिती श्रेताहरू ; कर्म बातार रेर्ट्जाटक बाह्न वर्ग कतिराज्यस्म ; जूबरना-हात्री जालूमान कर्म बातार किन-यामिनीत विधान

ক্রত নিরালসা হইয়া নিতাকাল প্রকাশমান হই-তেছেন; অমৃতাকর চন্দ্রমাও অতন্ত্রিত হইরা কর্ম-যোগে মাস পক্ষ ও নক্ষত্র যোগ প্রাপ্ত হইতেছেন; সমিজ্ঞান ছতাশন প্রজা-পুঞ্জের উদ্দেশে কর্ম নিষ্পাদন করত অবিশ্রান্ত প্রবৃত্তিত হইতেছেন; বিশ্বস্তরা ধরাদেবী আলস্য-খূন্যা হইয়া অতিমাত্র বল-সহকারে এই স্বছ্র্বহ মহাভার বহন করিতে-ছেন; নদী সকল সর্বভূতের তৃপ্তি সম্পাদন করত দ্রুতবেগে প্রতিক্ষণ বারি বহন করিতেছে; এবং মেঘবাহন দেবরাজ নিরালস্য হইয়া প্রচণ্ড খনঘোষ দারা অন্তরীক্ষ ও দিখিদিক্ সমন্ত নিনাদিত করত অজ্ঞ বর্ষণ করিতেছেন। দেবগণ-মধ্যে প্রাধান্য ইচ্ছা করিয়াই ইন্দ্র মানুসিক স্থুখ পরিহার পূর্বক তলাতচিত্তে ব্রহ্মচর্য্যের অমুষ্ঠান করিয়াছিলেন এবং সেই পুণ্য কর্ম ফলে তাহা প্রাপ্তও হইয়াছেন। সর্ব্বধা অপ্রমন্ত হইয়া সত্য ও ধর্মের প্রতিপালন এবং দম, তিতিক্ষা, সমতা ও প্রিয়কার্যা, এই সকলের যথাবৎ উপসেবন করাতেই মঘবান্ সর্ব-প্রধান অমর রাজ্য লাভ করিয়াছেন। সংশিতাত্মা দেবগুরু রহস্পতিও স্থখ-বিসজ্জন ও ইন্দ্রিয়-নিরোধ পূর্বক সমাহিত হইয়া যথাবিধি ব্রহ্মচর্য্য করিয়াছিলেন, তাহাতেই যাবতীয় ত্রিদশগণের অসামানা গৌরব-ভাজন হইয়াছেন। হে স্থত! কেবল কর্মা দ্বারা এই नक्क ब-श्रुश्च, ऋफ-तृन्द, व्यातिष्ठा-निष्ठञ्च, विश्वदेव-वर्श, वामब, यमत्रांक, कूरवत्र, शक्तर्व, यक ও अन्मरत्रांभन, সকলেই পরলোকে বিরাজ করিতেছেন। ভদ্তির যে সমস্ত ঋষিগণ তথার অতুল্যপ্রভার উদ্ভাসমান रुरेट्डिन, जाराता अक्वतिहा, वक्कर्या अ ক্রিরা কলাপের অনুষ্ঠান প্রভাবেই সেই ৰূপ হইয়া-ছেন। অভ্ৰেব হে সঞ্জর। ত্রাহ্মণ, ক্ষত্রির ও বৈশ্যাদি সর্বলোকের এইৰপ ধর্ম তত্ত্ব জানিয়া শুনিয়াও— ক্লানিগণ মধ্যে ৰিশিক জ্ঞানবান হইরাও ভূমি কৌর-বগরণর হিতার্থে পাশুবদিগের ধর্ম-সংকোচ করিতে अन्नाम मारेएक्ट रून ? अरे यूपिकिस्त्रन तक ममू-

দারে ও অশ্বনেধ রাজস্থানি কর্মকাণ্ডে নিতা সং-বোগ রহিয়াছে এবং হত্তী অশ্ব রথাদি বানারোহণ, বর্ম-পরিধান, ধয়ুর্দ্ধারণ ও অন্ত্র শত্র পরিচালনেও পুদ্ধল সম্বন্ধ আছে, ইহা ভূমি নিশ্চয় অবধারণ কর; তথাপি সংসার-বাত্রা-নির্বাহ-নিমিন্তে পাগুবের। কৌরবদিগের বধ ভিন্ন যদি অন্য কোন উপায় প্রাপ্ত হন, তাহা হইলে ভীমসেনকৈ কথিণিৎ অহিংসা রপ আর্যার্ভির বশমদ করিয়া ইইাদিগের ধর্ম রক্ষার অনুকুল পুণ্য কর্মাই করা হয়। নভুবা পিতৃ পিতা-মহাদি পুর্ব্ব পুরুষ গণের আচরিত শৌর্যা কর্মো প্রব্ত হইয়া ইহারা যথাশক্তি স্বীয় কর্ম প্রতিপা-লন করত দৈব-ক্রমে যদি কৃতান্ত-কবলে নিক্ষিপ্ত হন, তবে কাপুরুষোচিত ব্যবহার করা অপেক্ষা তাদৃশ নিধনও ইহাঁদিগের প্রশন্ত হইতে পারে।

হে সঞ্জয়! 'তুমি যদি নিতান্তই শান্তিকে গরীয়নী মনে কর, তবে যুদ্ধেরাজনাগণের ধর্মানুষ্ঠান আছে, কি অযুদ্ধ পক্ষে ধর্মানুষ্ঠান আছে, তাহা বিবেচনা করিয়া বল, তোমার সেই বাক্যটিই আমি শ্রবণ করি। প্রথমত চাতুর্ব্বর্ণোর বিভাগ ও স্বীয় স্বীয় কর্ম পর্যালোচন কর, পশ্চাৎ পাশুবদিগের স্বকর্ম কি, তাহাও নিবিইচিন্তে চিন্তা করিয়া দেখ, তাহার পর প্রশংসা কি নিকা, তোমার যাহা অভিপ্রেত হয় তাহাই কর।

ব্রাহ্মণ অধ্যয়ন, অধ্যাপন, যজন, যাজ্য-যাজন,
প্রধান প্রধান তীর্থ দর্শন, সৎপাত্রে দান ও সৎপাত্র

হইতে প্রতিগ্রহ, এই সকল কর্ম করিবেন। ক্ষত্রিয়
অপ্রমন্ত হইয়া ইর্মাভঃ প্রজা পালন, যজন, দান,
সকল-বেদাধায়ন, দারপরিগ্রহ ও বছল পুণা সঞ্চয়
করত গৃহাজ্ঞামে বাস করিবেন; এইবপ করিলেই
তিনি ধর্মাত্মা বলিয়া পরিগণিত হন এবং পবিজ্ঞ
ধর্মের অধ্যয়ন করিয়া বল্লা ক্রমে ব্রহ্মলোকে গমন
করেন। বৈশা পশুপালন, ক্রমি ও বাশিলা দারা
অর্থের উপার্জন ও অপ্রমন্ত ভাবে হাছার সংরক্ষণ,
ভাষায়ন এবং ব্রাহ্মণ ও ক্রিয় গণের প্রিয়কার্যা

সন্পাদন করত বৰ্মনীন ও সুওকারী বইয়া মুহাজয়ী হইবেন। পুত্র, ৰম্পতির নিমিতে নিরালন্য ও নিত্য-**७**त्र मनील इरेज़ा, विकाखिशराज नम्म ७ পजिन्द्या कार्टबार निष्यानिक स्ट्रेटबरू, रचनाचारान कि यळाञ्च-ষ্ঠান করিবেক না, কেন না পুরাজন খুত্র-ধর্মামুসারে উক্ত উত্তর ব্যাপারই ভাহার পক্ষে প্রতিবিদ্ধ হই-क्राट्ट। द्रान्ना अहे समस्र वर्टर्गद्र ट्लाकपिश्रदकरे मार-ধানে পালন করত আপন আপন কর্ম সাধনে নিয়োজিত করিবেন, অবস্মানুগত কামনা-সকলের অমুরোধে কদাপি বেক্চাচারী ও প্রজাগণের প্রতি অসমর্ত্তি হইবেন না। যদি তাঁহার অপেকা অধিক-তর অভিজ্ঞান ও ধর্ম-সম্পন্ন কোন শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি বিদ্যমান থাকেন, তবে দেই ব্যক্তিকে ভিনি ' প্রজা-গণ-মধ্যে কোন অসাধু ব্যক্তি তাঁছার ঐশ্বর্যোর প্রতি লোভাসক্ত হয় কি না ' ইহা পর্যাবেক্ষণ করিবার নিমিত্তে অমুশাসন করিবেন। ক্রুরমতি পাপাত্মা মনুষ্য বিধি-বৈগুণ্য-প্রযুক্ত বলাশ্রয় করিয়া কথন পারের সম্পত্তিতে লোভ করিতে পারে, সেই নিমি-ত্তেই রাজন্যগণ-মধ্যে এই যুদ্ধ-ব্যাপারের স্থটি হই-য়াছে এবং যুদ্ধের নিমিজ্তেই বর্মা, শস্ত্র ও ধমুকের উৎপত্তি হইরাছে। স্থরেশ্বর পুরন্দর দস্থাসংহারার্থে সমরের ও তৎসাধনভূত বর্মা, শস্ত্র ও শরাসনের স্থাটি করিয়াছেন; স্থুতরাং যুদ্ধে দস্থাবধ-দারা কে-वन भूगारे नक रहेआ शास्त्र। ए मक्षरा! व्यक्ता কৌরবের৷ ধর্মের মর্মাকবোধে অসমর্থ হইয়া কপট-মূতকীড়ার সেই তীব্রকাণ দম্য-দোবের সম্পূর্ণ প্রা-কুর্ভাব করিয়াছে। ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র প্রশক্তা ছর্য্যোধন তা-হাতে বিনা কারণে শাগুবদিগের ধর্মাস্থ্রত পৈতৃক রাজ্য অপহরণ করত পুরাতন রাজধর্ম অবলোকনে অক্স হইতেছেন এবং অপরাপর কৌরবেরাও সক লেই তাহার সমূবর্জী হইতেছে। হে সম্পন্ন! চৌর্যা-वृक्ति व्यवनायन-शृक्षक त्व बालि व्यक्तिव्य रहेश शत-पन चत्रभ करता क्षत्रका एक कुझाचा व्यकान्य-कट**श**रे বন পুৰ্মান আহা লুভিড করিরা লর, তাদুশ উভয়

অকার মন্ত্রই যে নিন্দনীর ভাহাতে আর কিছুমাত্র সংশর নাই ; এক্তেন জিজ্ঞাসা করি, কুর্যোধনে সেই ৰন্ধার্তির কি কিছু অনাধা-ভাব আছে? তিনি লোভ পরতর ও ক্রেম্বেশাসুগামী ক্ইয়া আপন ইক্ষানুসারে ইহাকেই ধর্ম বলিয়া জ্ঞান করিতে-ছেন। যাহা হউক, পাগুরদিগের যে ন্যান্য অংশ তাহা এক্ষণে নিঃসনেক প্রাপা হইরাছে,, স্বতরাং यामानिरगत गक्ता जारा शर्ग कतिरव स्कन ? এই অবশ্য-প্রাপ্য অংশের নিমিত্তে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়া चामानिशस्क यनि कोन्छ। तम्भिक क्हेर्ड क्रा, তাহাও শ্লাষ্য; পররাজ্য অপেকা ইইাদিগের আপন পৈতৃক-রাজ্য যে শ্রেষ্ঠ ভাহাতে আর সন্দেহ কি? হে সঞ্জয়! মনদমতি যে সমস্ত মূঢ় নরপতি মৃত্যুর বশতাশন হইয়া ছুর্যোধন কর্তুক সমানীত হইয়াছে, ভাষাদিগের মধ্যে ভূমি কৌরবদিগকে এই সকল পুরাতন ধর্মের কথা বলিও। কৌরবদিগের ব্যক্ছার (एथ, शाखनगरवत व्यक्ती मिह्सी शीलहुख-भालिनी यमचिनी याञ्चरमनी जी-धर्मिनी इंदेश अंद्वःश्रुद्ध নিরুদ্ধ। থাকিলেও ফখন সভায় গমন করিতে বাধা হইয়াছিলেন, তথন ভীয় প্রভৃতি কৌরবগণ ভাঁহারে উপেক্ষা করিয়াছিলেন,; তাঁহাদের এ কর্মাও অতি-শয় পাপময়। তৎকালে আবালর্দ্ধ সমস্ত কৌরবে-রাই মিলিত হুইয়া যদি তাঁহার সভাগমন নিবারণ করিত, তাহা হুইলে ধুতরাষ্ট্রেরও আমার প্রিয়কার্য্য করা হইত এবং তাঁহার পুত্রগণেরও স্থরুত হইত। কিন্তু কি আক্ষেপের বিষয়, ছুংশাসন ক্রমের বৈপ-ব্লীত্যে কৃষ্ণারে সভা-মধ্যেশ্বস্থরগণ-সন্নিধানে আনমূন করিয়াছিল! তথায় নীতা হইয়া তিনি কথন সকরুণ-नज्ञतः नकरलत्र द्वयाद्वका कतित्रा साकिरलन, उथन একমাত্র বিচ্নুর রাজীত আর কাহারও সহায়তা পাই-লেন না ৷ বুড়া-সমবেত রাজন্যগণ দীনতা প্রযুক্ত ভবিবরে কিছু প্রত্যুত্তর করিতে পারেন নাইট্রকেক क्रवारे धकाकी धर्मवृद्धि-गरकारत धर्माकुमछ वर्ध-वृक्त वादकात अनक क्ज़क करे मानावृद्धि हुःभानन-

কৈ প্রত্যুত্তর করিরাছিলেন। হে সঞ্জর। ভূমি সভা-इरल এই धर्मात्र मर्मारवाध ना कतित्रा अधन यूधि-ষ্ঠিরকে ধর্মোপদেশ করিতে ইচ্ছা করিতেছ ? সভা-মধ্যে উপনীতা হইয়া কৃষ্ণাই সেই স্ফুন্ধর পরিশুদ্ধ কর্ম করিয়াছিলেন যদ্ধারা, সাগর-প্রবাহ হইতেনৌ-কার নাার, আপনাকে ও পাগুবদিগকে ঘোরতর ক্ষ হইতে উদ্ধার করিয়াছিলেন। তিনি শ্বস্তরগণ-সন্নিধানে সভান্থিতা হইলে স্তপুত্র কর্ণ তাঁহারে বলিয়াছিল "দ্রৌপদি! তোমার আর অন্য গতি नारे, এथन मात्री रुरेशा छूट्याथन-त्रम्टन व्यवस्थान কর। ছে ভাবিনি! ডোমার স্বামিগণ পরাজিত হও-য়ায় এক্ষণে আর ভোমার স্বামী নহেন, স্বভরাং ভূমি অন্য কোন পতি মনোনীত করিয়া লও।" কর্ণের সেই তীব্র-তেজোযুক্ত মর্ম্মঘাতী স্থদারুণ বাক্যময় বাণ, বাহা অর্জুনের হৃদয়ে অন্থিভেদ করত প্রোধিত হইয়াছিল, অদ্যাপি তাঁহার হৃদয়-মধ্যে সেইৰূপ প্ৰতিষ্ঠিত রহিয়াছে। বন-প্ৰস্থান-नगरत পा करवता कृष्ण्य भित्रधारनत छे भक्त करि-লে ছুঃশাসন ইহাঁদিগকে লক্ষ্য করিয়া বছতর কটু-কাটবোর উক্তি করত বলিয়াছিল " ইহারা সকলে निकल जिला नाम विनय हरेम मीर्घकाला नि-মিত্ত নরকালয়ে চলিল।" অপিচ দাতক্রীড়া-সময়ে গান্ধাররাজ শকুনি ধূর্ত্তা-পূর্ব্বক যুধিষ্ঠিরকে কহিয়া-ছিল, "নকুলও যখন পরাজিত হইল তখন আর তোমার কি আছে, এখন ক্লফাকেই পণ রাখিয়া ক্রীড়া কর। P হে সঞ্জয় ! দ্যুতকালে এইৰপ যে সমস্ত বিগহিত বাক্য উক্ত হইয়াছিল, সকলই ডোমার ৰিদিত আছে; পরস্ক এই বিপদ্দুক্ত কার্য্যের নমা-ধান নিমিত্ত আমি স্বরং তথার গমন করিতে ইচ্ছা করিতেছি যদি পাগুবগণের কার্যা-হানি না করিয়া কৌরবদিসের শান্তি সংস্থাপন করিতে পারি, তাহা करेल जामात्र महाकल कनक भूगक्टकत असूछान क्त्रा रत वर कोत्रदता अ मृजुलान सरेटक विमुक एरेएक भारतम। कुरुशन-गमरक छेनचिक स्रेटल एक वर यूक्क स्विटक अवस्थ त्रस्थित, व्यक्त

উাঁহারা যদি আমার যথাযোগ্য পূজা করেন এবং হিংসা-পরিবর্জিত অর্থযুক্ত ধর্মানুগত পণ্ডিতোচিত নীতি-বাকোর প্রদক্ষ করিলে ধৃতরাষ্ট্রের পুজেরা ৰদি সমাক্ৰপ আস্থা-সহকারে তাহা পর্য্যালোচন क्टतन, छटवर मञ्चल, नजूबा रेरात स्रमाधा ररेटल, মহারথী ধনঞ্জয় ও সমর-সন্নদ্ধ ভীমসেন তাঁহাদিগকে যে পরাসিক্ত, অর্থাৎ যুদ্ধ-যজ্ঞে প্রোক্ষিত করিবেন তাহা তুমি ধ্রুব জ্ঞান করিয়া রাখ ; আপন পাপকর্ম দারা তাঁহারা আপনারাই দগ্ধ হইতে থাকিবেন। পাণ্ডবেরা পাশকীড়ায় পরাজিত হইলে ছুর্য্যোধন তাঁহাদিগকে যে সমস্ত তীব্রতর কটুবাক্যের উক্তি করিয়াছিলেন, ভীমদেন অপ্রমন্ত হইয়া গদা ধারণ করত বথাকালে ভাঁহারে নিশ্চয়ই তৎসমুদায় স্মরণ করাইবেন।

হে সঞ্জয়! ছুর্য্যোধন একটা সন্মুসময়, অর্থাৎ ক্রোধ দ্বেষ ঈর্ষা অস্থ্য়া-প্রভৃতি নিরুষ্ট-বৃত্তিময় মহাবৃক্ষ-স্বৰূপ হইয়াছেন; কৰ্ণ ঐ রক্ষের ক্ষন্ধ; শকুনি শাখা; অর্থাৎ মনোনিএহে অসমর্থ রাজা ধৃতরাষ্ট্র তাহার মূল। আর যুধিষ্ঠির একটি ধর্মময় মহারক্ষ-শ্বৰূপ হই-রাছেন; অর্জুন এই বৃক্ষের স্বন্ধ; ভীমদেন শাখা; नकूल महराव ममृक श्रूष्ट्रा कल ; धवश आमि, त्वन ७ রাহ্মণগণ ইহার মূল। রাজা ধৃতরাষ্ট্র পুত্রগণের সহিত একটি বন-স্বৰূপ আর পাণ্ডুপুল্লেরা ভাহাতে ৰাাছ-স্বৰূপ হইয়াছেন। ব্যাছ্ৰযুক্ত বনকে ছেদন করিও না এবং ব্যাঘ্রেরাও যেন বন হইতে পরিভ্রুট না হয়। বনদ্রফ হইলে ব্যাদ্র নিহত হয় এবং ব্যাদ্র-খুন্য হইলে বনও ছিন্ন হয়; অতথ্য ব্যান্ত বন রকা করিবেক এবং বনও বাজিকে পালন করিবেক। হে সঞ্জয়! ধৃতরাব্রের পুজেরা লতা-স্বৰূপ, আর পাওব-अभ इक वर्ग ररेताहरून ; महाइकटक साधात ना क्तिएक जाना कथनहै विक्रिक स्वरक भारत मा। अहे स्तिक्तम श्या-श्राह्मता स्वति कात्र वा वा का

नताथिश ५७तार्डेन स्वयंश कर्षना एत चाहारे क्सन। र विवन्। धर्महात्री करोचा शाखवशन नम्ब यूक्नील হইরাও বে শান্তি স্থাপনে প্রস্তুত আছেন, ইহা কৌর-বগণ সমীপে ভূমি ব্যার্থ বর্ণন কর।

क्रक्वांका छनजिरम अशास नगांश २३।

সঞ্জয় কহিলেন, ছে নরেজ্ঞ-প্রবর যুবিতির ! আপ-নকার কল্যাণ হউক, স্থাপনকার নিকটে বিদায় লইয়া সম্প্রতি আমি প্রস্থিত হইকাম। হে পাওব! আমার মনের আবেগ বশত বাক্য ছারা কোন অনিফ প্রসঙ্গের উচ্চারণ করা হয় নাই ত ? আমি जनार्फन, जीमरमन, चर्कून, नकून, महरपद, माजाकि ও চেকিতান, সকলকেই আমন্ত্রণ-পূর্বক প্রমন করি-তেছি; হে নরপালগণ! আপনাদিগের সর্বাধা স্থ ও মঙ্গল লাভ হউক, আপনারা আমাকে সৌমা-नशुरन निर्तेष्किंग क्रून।

যুধিতির কহিলেন, হে সঞ্চয়! তুমি অমুজ্ঞাত হইলে, যথাস্থথে গমন কর; হে বিশ্বন। ভূমি কদাপি আমাদিগের অপ্রিয় বিষয় স্মরণ কর না; কৌরবেরা ও আমরা সকলেই তোমাকে শুদ্ধাত্মা ও মধ্যস্থ সভাসদ বলিয়া জানি। হে সঞ্জয়! তুমি বিশ্বাসী দৃত, আমার অত্যম্ভ প্রিয়পাত্র, হিতবক্তা, শীলবান্ ও দীর্ঘ-দৰ্শী। তুমি মতিভ্ৰমেও কখন বিমুগ্ধ ছও না এবং কেহ ছুর্বাক্য বলিলেও ক্রোধ কর না। হে স্থত! আমরাবিলকণ জানি, তোমার আস্যা হইতে মর্ম-যাতী, ৰক্ষ্য স্থানশীয় ও নির্থক কটুবাক্য কলাপি নিৰ্মত হয় না; ভূমি ধৰ্মসম্মত, অধ্যুক্ত ও অহিংত্ৰ बाकारे बिन्स श्राक । श्रूट्स जूमि बहवात भागाति-গের দৃষ্টার ব্রহাছ, বিশেষত তুমি অর্জুনের প্রাণ-ভূল্য সখা, অজ্ঞান ভূমিই আমাদিগের প্রিরতম দুজ ; — অগবা বিকুর বদি ক্লিডীর দুত হইরা এখানে সাইনেন, তবে ফিনিও ছোনার নার বির্ভম দৃত রবিদ্ধা গায় **হউতে পারেন। হব সঞ্চ**র। সম্প্রতি कृषि असीन बरेटक शोध न वन क्विसा উপानना-

रवाना अवजा जाक्रांभारक चामाह कारका छेशानना कतः, विश्वक्ष वीर्वा, नश्कुव-त्रक्षुत्र, नगावात्र-नालात्र, नर्क-पर्त्याणभन्न, त्वसंबान्नी, उत्तर्मके, छिक्, वनवादम मिछा-नमुश्स्क ७ जभनी वृक्त-वृक्तदक अधिवामन कत এবং অন্যান্য লোকদিগকেও কুশল ক্ষিত্রানা কর। হে স্থত! মহারাজ ধৃতরাষ্ট্রের বিনি পুরোহিত এবং रय मकन जानार्या ७ अजिक्श्रग जाट्यन, यथारयांगा कूमन थम्न-महकारत काहामिरशत नकरनत मरकह সঙ্গত হও। হে তাত! মনস্বী ও শীল-বল-সম্পন্ন বে সমস্ত রুদ্ধবর্গ বেদাধায়ন-বিরহিত হইরাও বথা-শক্তি ধর্মাংশের আচরণ করত অবস্থান করেন এবং আমাদিগের অভ্যুদর আশংসা ও বরুস্মরণ করেন, তাঁহাদিগকে অত্যে আমার কুশল-বার্তা বিজ্ঞাপন করিয়া পশ্চাৎ তাঁহাদিগের অনাময় জিজ্ঞাসা কর। অপিচ যাহারা ব্যবহারাজীবী এবং যাহারা প্রজা-পালন-যোগ্য স্থানাধিকারী হইয়া রাষ্ট্রমধ্যে বস্তি করিতেছে, তাহাদিগকেও ঐৰপ অনাময় বার্তা ক্লি-জ্ঞাসা কর। হে সঞ্জয়! যিনি বেদাধায়ন-কামনায় ব্রহ্মচর্য্যের অনুষ্ঠান করিয়াছিলেন এবং অন্তব্ধে পুনর্কার চতুম্পাদ, অর্থাৎ মন্ত্র উপচার প্রয়োগ ও সংহার-ৰূপ সম্পূর্ণ মাত্রায় অবস্থাপিত করিয়াছেন, সেই নরানুগামী, বচনে-স্থিত, স্থপ্রসন্ন, অভীউ দ্রোণাচার্য্যকে অভিবাদন কর। বিনি পিতার ন্যার ব্ৰহ্মচৰ্য্য-সম্পন্ন ও অধীত-বিদ্য হইয়া অক্ৰকে পুন-রায় চতুষ্পাদ করিয়াছেন, দেই গন্ধর্ক-পুত্রতুল্য তে-জন্বী অশ্বত্থামাকে কুশল জিজ্ঞাসা কর। হে সঞ্চয়! ক্ষাক্ষত্ত-শ্রেষ্ঠ মহারথ ক্লপাচার্যোর বাস-ভবনে গমন করিরা তুমি পুনঃপুন আমার নাম কীর্ডন করত হস্ত-ছার। তাঁছার পাদ্ধর ক্রশ কর। খাঁহাতে শৌর্যা, দয়া, তপ্সা, প্রজ্ঞা, শীল, শান্তজ্ঞান, সন্তু ও ক্লহিমূতা নিত্য প্রতিষ্ঠিতা রহিয়াছে, সেই কুরুন্ত্রন श्रीकट्रस्टबङ्क छत्रश-यूगन श्रारण कतिहा भामान क्या বিক্সাপন কর। হে সঞ্চয়! বিনি কুমুবংকোর প্রণেতা नक्त-गाउक, इक्त्यवी अ मनीवी ; तरे अकारक्

क्षत्राच प्रवादिक स्थान प्रश्निक सामाज नाया अश्वाम कर । अन् अकि अके वार्थक स्मानक त्र প্রশাসিক করিয়াকে ধৃতরাষ্ট্রের লোচপুত্র মেই মন্দ मिक क्रिक लोड अशिमील स्टूटबार्यन क्रिक्त क्रिक ক্লারা কর। তাহার নাার চিরছ্তরিত তাহার কনিও कोण मनाकृष्य महावसूकात्री, कुलभन-नर्या चुत्रणम ক্লোসনকেও জুলজ বিজ্ঞান। করিবে। হে সঞ্চয়! ভারতসংগ্র নিড্য-শান্তি-কামনা তির বাঁহার অন্য चित्राय नाहै, तारे मनीया-मन्त्रात्र नाध्नील वाव्यिक-রাজকে ভূমি অভিবাদন করিবে। বিনি বছতর **ब्बिकेक्ष्मिक ७ विकाननान, कान मटारे निर्धेत** नदस्त, প্রত্যুত রেহ প্রযুক্ত সর্বদাই অমর্থ সহ ৰবিয়া, থাকেন, সামার সভিমত সেই নোমনন্তকে পুৰা করিবে। তাঁহার পুতা ভ্রিঅবা, যিনি কুরুগণ-मर्था श्रुकारुम, जामानिरभंद्र खाञ्जूना ও मधा, महा-প্রক্রারী, উত্তম রুখী এবং অমাতাগণের সহিত ্টিপযুক্ত পাত্র, ভাঁহারও কুশল জিজাসা কর। হে द्राज्ञ क्रुक्तभा-सार्था जात जात रा मकन क्षशान शृक्त चारहन, अवश् स नमल यूवकर्गन चामानिरात পুত্র, পৌত্র সংখ্যা ভাতা, তাহাদিগের মধ্যে যা-হাকে বেৰপ কৰা উপযুক্ত বোধ হয় তাহাই বলিয়া অনামর বিজ্ঞান। কর। অপিচ আমাদিনের সহিত ুমুদ্ধ করিবার নিমিঞ্জে প্রযোধন, বশাতি শালুক কেব্য় অষষ্ঠ আৰম্ভ ত্ৰিপৰ্ত প্ৰাচ্য উদীচ্য দাক্ষিণাত্য প্রতীয় প্রার্কাতীর প্রভৃতি যে কোন অনৃশংস, মুশীল ७ महाराज नियान ध्रमान भूत्रवीत जानना-भगतक समानमान कत्रिमार्ट्स, छारामिरभन्न सक्नात्करे कुन्य किछाना कर । अकारताही व्यवस्थात, दशी उ नकारिकारणंत्र माध्य मामनीक अधान अधान लिना-निहर, दिन्हीयाक-नक्त, जर्द निर्देश जमाजानन, क्षीर प्रिक्न में, बाहरका व्याप्त वात्र वात्र वात्र वात्र अवर बीहाता अक्रक्त के विक्रिका निवृक्त बारकन, अववादारे जानात कुंपलका वी विकाशन-पूर्वक जाना-मह विकास करें।

्रहरू छ। अध-तिमात वीश्रीत क्यांक चार्क्सिक मारे, तारे त्वकं कृति, वर्ष-दिनात चम्ह, नर्क-धर्त्यान-शव, महाकाक, देवला शुक्र सुन्ध्युद्ध कृणण किस्रामा কর। বিনি মারামরী দৃতে ক্রীড়ার সাহিতীয়, ক্রীড়া-সময়ে যাঁছার প্রয়োজিত গুড় ছল-সকল কোন ব্যক্তিই প্রকাশ করিতে পারে না এবং সূত-যুদ্ধে কোন ৰোকাই বাঁহারে পরাস্ত করিতে সমর্থ হর না, সেই আক্ষপ্রিয়, উত্তম ক্রীড়াকারী চিত্রসেনকেও কুশল দিজাসা করিবে। "হে স্থত। পর্বত-প্রধান-দেশবাসী भाषात्रताज भक्ति, दिनि मात्रा-अदबार्श अधिजीत चकरन्दी, कूर्या। स्टन्त मानवर्षनकाती तारे मिथा। বৃদ্ধি প্রবঞ্চকরও কুশল জিজ্ঞাসা কর। বে বীর পুরুষ ছুরাধর্ম পাগুরদিগকে একরথে পরাজিত করিতে উৎসাহী হন, বিনি মোহশীল ধার্তরাষ্ট্রদিগের মোহ উৎপাদনে অন্বিতীয়, সেই কর্ণেরও কুশল किछाना करा। यिनिष्टे धकाकी पामामिरगर ज्ङ, গুরু, ভর্জা, পিতা, মাতা, স্থক্দ্ ও মন্ত্রী, নেই দীর্ঘ-मनी यशाधरूकि विष्ट्रत्रक कुनन किञ्जाना कर !

र्ह मक्षर ! उथार अनेनानिनी य ममख इका वनि-তা আছেন, তাঁহারা আমাদিগের মাতা বলিয়া পরি-জ্ঞাতা হয়েন ; তুমি একত্র সমবেত সেই সমুদর প্রা-চীন মহিলাগণের সহিত মিলিত হইয়া অভিবাদন-পূর্বাক বল, " আপনাদিগের পুত্র পৌত্র সকল ভাল আছেন ত ? জীবিকা নির্বাহের ছ কোন ব্যতিক্রম হয় নাই ? তাহা অনিছুর-ভাবে ও স্বচ্ছন্দ-রূপে চলি-তেছে ত ? হে সঞ্চয়। প্ৰথমত এইৰূপ কিছাসা করিরা পশ্চাৎ, * অঞ্চাতশক্র যুধিনির সপুত্রে ভাল चार्टन ' वहे कथा करा रह छाउ वाहानिगरक या गारमञ्जू जाया गया। स्व अतिकानिका विनेत्रा कान, जारादार गरमादकरे अरे विमान कृतम सिकाना कर्त, " एकामना क्रिकिका, प्रध्यमका, प्रतिकारीता छ अलियो याकिया ब्राट यात्र क्लिएक छ । व्य नमहा-ৰীৰণ ! তোমানেক স্বাহ্মান্ত ক্লোমান স্বাহ্ম-इत-वर्ग एक-वान्द्रात केत्रियक छ ? क्लिमानियात

স্বামিগণও যাহাতে অমুকূল হয়েন, তোমরা আপ-নাদিগের সেইৰূপ ব্যবহার স্থাপন কর। হ সঞ্জয়! তত্রত্য যে সমস্ত অঞ্চনাগণকে আমাদিগের স্কুবা বলি-রা জান, যাঁহারা সংকুল হইতে সমাগতা, গুণোপ-পন্না ও সন্তানবর্তী হইয়াছেন, তাঁহাদিগের নিকটেও গমন করিয়া বল যে, যুধিষ্ঠির প্রসন্ধ চিত্তে তোমা-দিগকে কুশল সম্ভাষণ ক্রিয়াছেন। হে সঞ্য়! কন্যাগণের ভবনে গমন ক্রিয়া আমার বাক্যে তা-হাদিগকে অনাময় জিজ্ঞাসা-পূর্বাক আলিঙ্গন কর, পরে এই কথা বল, "তোমাদিগের স্বামিগণ কল্যাণ-যুক্ত ও অনুকূল হউন এবং তোমরাও তাঁহাদিগের অনুকূলা হও। হত তাত! যাহাদিগের দর্শন ও বাকা উভয়ই লঘু, সেই অলঞ্চা, স্কবেশা, সৌরভ-বতী, অবীভৎসা অর্থাৎ মনোজ্ঞৰূপ-ধারিণী, স্থখিনী, ও ভোগবতী বারবিলাসিনীদিগকেও কুশল জিজ্ঞাসা করিও। হে সঞ্জয়! কুরুদিগের যে সকল দাসীপুত্র, দাস ও কুজ ধঞ্জ-প্রভৃতি বছতর আশ্রিতব্যক্তি আছে, তাহাদিগের সকলকেই অত্যে আমার কুশল বার্ত্তা বিজ্ঞাপন করিয়া পাশ্চাৎ অনাময় জিজ্ঞাসা কর। দয়াশীল ধৃতরাষ্ট্র অঙ্গহীন, দীন ও বামন-প্রভ্-্তি যে সমস্ত নিৰুপায় লোকদিগকে প্ৰতিপালন করিয়া থাকেন, তাহাদিগের পুরাতন র্ভির কিছু অন্যথা হয় নাই ত? ছুর্য্যোধন তাহাদিগকে পূর্ব্ববং অলপান প্রদান করেন ত ? তথায় অন্ধার্দ্ধ ও যা-চক-প্রভৃতি যে সকল বহু সংখ্যক লোক আছে, তা-হাদিগকে তুমি আমার কুশল বার্ডা বিজ্ঞাপন-পূর্বাক অনাময় জিজ্ঞাসা করিয়া এই কথা বল, 'তোমরা কুৎ-সিত জীবনোপায়-নিমিত্ত যে ছুঃঞ্পাইতেছ তাহা-তে ভয় করিও না, পরলোকে নিশ্চয়ই পাপ করি-রাছ সেই জন্যই কফ পাইতেছ, আমি শত্রুগণের নিগ্রহ-পূর্ব্বক যথন স্থন্ত্বর্গকে অমুগৃহীত করিব তথন তোমাদিগকে অন্নবস্ত্র-দ্বারা ভরণপোষণ করিব।' হে সঞ্জয়! ত্রাহ্মণগণের উদ্দেশে আমার বার্ষিকাদি ৰুত্তি প্ৰদান করা আছে; যাহা বৰ্ডমান আছে, তাহা

কি পরে থাকিবে না! আমি সেই ব্রাহ্মণগণকে সেই ৰূপ র্ত্তিযুক্তই দেখিতেছি ; আমার তাদৃশী সিদ্ধিই তুমি সেই নরপতি ছুর্য্যোধনকে অবণ করাইবে। হে তাত! যে সকল অনাথ চুর্বল লোক চিরকাল কেবল শরীর পোষণেই যত্নপরায়ণ হইতেছে, সেই মূঢ় রূপণদিগকেও তুমি আমার বাক্যে সর্ব্বথা কুশল জিজ্ঞাসা করিও। অপিচ যাহারা নানাদিগ্দেশ হই-তে আগত হইয়া ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণকে আশ্রয় করি-য়াছে, তাহাদিগকে এবং সমুদায় মান্য-লোকদিগকে দর্শন-পূর্ব্বক কুশল ও অনাময় জিজ্ঞাসা করিবে। তদ্ভিন্ন সর্বাদিক্ হইতে আগত ও অভ্যাগত যেসমস্ত রাজা ও দূতগণ আসিয়া তথায় উপস্থিত হইয়াছেন. <u>তাঁহাদিগের সকলকেও প্রথমত কুশল জিজ্ঞাস।</u> করিয়া পশ্চাৎ আমার কুশলবার্জা বিজ্ঞাপন করিবে। হে সঞ্জয়! ছুর্য্যোধন যাদৃশ যোধগণ প্রাপ্ত হই-য়াছেন, পৃথিবীতে তাদৃশ যোদ্ধকুল আর কুত্রাপি বিদ্যমান নাই ; কিন্তু ধর্ম নিত্যকাল স্থায়ী ; আমার পকে সেই ধর্মাই শত্র-সংহার-নিমিত্ত মহাবল সম্পন্ন সহায় আছেন। হে স্থত! তুমি ছুর্যোধনকে আ-মার এই কথাটি শ্রবণ করাইও যে "হে ভারতমুখ্য ! তোমার হৃদয়ন্তিত যে গুরভিলায তোমার অন্তরা-স্নাকে নিরন্থর ক্লেশ দিতেছে, আমি সেই অভিলাষ-কেই কুরুকুলের বিষম শত্রু বলিয়। নির্দেশ করি; ঈদৃশ ছুরভিলাবের কোন যুক্তিই নাই, ইহা নিতান্ত স্মযৌক্তিক। হে বীর! তুমি কদাচ এৰপ মনে করিও না যে, যাহাতে তোমার প্রিয় হইবে, আমরা তাহারই বিধান করিব; তোমাকে অধিক কি বলিব, ভুমি, হর আমার ইক্রপ্রস্থাজ্য প্রদান কর, না

যুধিষ্টির-বাক্যে ত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত

হয় যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হও।"

যুধিন্তির কহিলেন, হে সঞ্জয়! সাধুই হউক আর অসাধুই হউক, বালকই হউক বা রন্ধই হউক, অব-লই হউক অথবা সবলই হউক, বিধাতা সকলকেই বশবর্ত্তী করেন। সর্ব্ব-নিয়ন্তা পরমেশ্বর অবোধ ব্যক্তিকেও পাণ্ডিত্য প্রদান করেন এবং পণ্ডিতকেও ছুর্ব্ধুদ্ধি দিয়া থাকেন; উৎপাদন করিবার পূর্ব্বেই তিনি সকলকে পূর্ব্ব কর্মানুসারে সমস্ত প্রদান করেন। তথাপি ছুর্য্যোধন আমাদিগের বল জি-জ্ঞান্ত হইলে ভুমি এইৰূপ যথাৰ্থ কথাই বলিবে যে, ভদীয় সৈন্যগণ পরস্পর কর্ত্তব্য কার্য্যের মন্ত্রণা করিয়া অতিমাত্র কৃষ্টিত্ত রহিয়াছে। হে গবল্পণ-তন্য সঞ্জয়! তুমি কুরুমগুলে গমন করিয়া প্রথমত মহা-বল ধৃতরাষ্ট্রকে অভিবাদন ও আলিঙ্গন করিয়া অনা-ময় জিজ্ঞাসা কর, পশ্চাৎ তিনি কুরুগণে পরির্ত হইয়া আসন গ্রহণ করিলে, এই কথা বল যে, 'হে রাজন্! আপনকার বীর্যাপ্রভাবেই পাওবেরা স্থথে জীবিত রহিয়াছে। হে অরিন্দম! তাহারা বালক হইয়াও কেবল আপনকার প্রসাদে রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছিল; অতএব অত্যে তাহাদিগকে রাজ্যপদে স্থাপিত করিয়া এক্ষণে বিনফ হইবার উপক্রমে উপেক্ষা করিবেন না; দেখুন, এই সমুদয় পৃথিবী-রাজ্য এক ব্যক্তির কখন পর্যাপ্ত হইতে পারে না; অতএব হে তাত! আমরা একত্র মিলিত হইয়াই পরম স্থথে জীবন যাপন করিব; পৃথক্ পৃথক্ থাকিয়া অনর্থক শত্রুদিগের বশবন্তী হইবেন না।

হে সঞ্জয়! আমার নাম কীর্ত্তন করত ভারত-গণের পিতামহ শান্তমু-নন্দন ভীম্মকে মন্তক-দারা অভিবাদন করিয়া এই কথা বলিবে, ' হে পিতামহ! আপনি নিমগ্ধ-প্রায় শান্তন্ত্ব-বংশের উদ্ধার করিয়া-ছিলেন, এক্ষণে আপনকার পৌজেরা যাহাতে পর-স্পর প্রীতিযুক্ত হইয়া জীবিত থাকে, স্বমত প্রকাশ দ্বারা সেই কার্য্যটি সমাধান করুন!

কুরুগণের মন্ত্রধারী বিছুরকেও ঐৰূপ কহিবে যে, ংহে সৌম্য! আপনি যুধিষ্ঠিরের হিতকামী হইয়া, যাহাতে যুদ্ধ না হয়, সর্বদা সেই প্রকার সম্ভাষণ করিবেন।'

ছুর্য্যোধনকে পুনঃপুন অমুনয় করিয়া বলিবে, 'ভুমি যে সভামধ্যগতা অসহায়া নিরপরাধা কৃষ্ণারে উপে-ক্ষা করিয়াছিলে, কেবল কুরুকুলের সংহার করিতে না হয়, এই মনে করিয়াই আমরা সেই চুঃধ সহু করিয়াছি। অপিচ নিরতিশয় বলবস্ত হইয়াও পাণ্ড-বেরা পূর্ববাপর যে সমস্ত ক্লেশ সছ্ করিয়াছেন, তৎ-সমুদায়, যাবতীয় কৌরুবগণেরই বিদিত আছে। হে সৌম্য ! তুমি যে অজিন পরিধান করাইয়া আমা-দিগকে প্রত্রাজিত করিয়াছিলে, আমরা তাহাও সম্ভ করিয়াছি, এবঁং তোমার অনুমতিক্রমে ছুঃশাসন কুম্ভীরে অতিক্রম করিয়া দ্রৌপদীর যে কেশাকর্ষণ করিয়াছিল, তাহাও উপেক্ষা করিয়াছি ; কুরুবংশের धः म ना इस मत्न कतिया आभाषिशतक मकलह সহিতে হইয়াছে; অতএব হে পরস্তপ! এক্ষণে যাহাতে স্বকীয় ন্যায়া অংশ প্রাপ্ত হই তাহাই কর ; -- লোর্ড-প্রহনা বুদ্ধিকে পরক্রব্য হইতে নিব ৰ্ত্তিত কর! হে নর্ম্বভ! এৰূপ করিলে শান্তি স্থাপন ও পরস্পর প্রীতিবর্দ্ধন হইবে। হের।জন্! আমর। সন্ধিবন্ধনে নিভান্ত ইচ্ছুক হইয়াছি; অতএব যদ্যপি আমাদিগের সম্পূর্ণ অংশ প্রদান করিতে অসক্ষত হও, অন্তত রাজ্যের কিয়দংশও প্রদান কর! কুশ স্থল, রুকস্থল, মাকন্দী, বারণাবত ও আর কোন এক খানি আম, এই পাঁচখানি আম দিলেই সমুদয় বি বাদের শেষ হইয়া যায়; অতএব হে স্লুযোধন! পঞ্জাতাকে এই পঞ্ঞাম মাত্র প্রদান কর! হে মহাপ্রাজ্ঞ ! জ্ঞাতিগণের সহিত আমাদিগের শাস্তি স্থাপন হউক; ভ্রাতা ভ্রাতার অমুবর্তন করুন; পিত৷ পুজের সহিত মিলন করুন; এবং পাঞ্চাল-গণ সহাস্য-বদনে কৌরবদিগের সহিত মিলিত হ্উন! হে ভরতর্ষভ! কুরু-পাঞ্চালদিগকে অক্ষত দেখি, ইহাই আমার কামনা; অতএব হে তাত! আইস সকলে স্থমনা হইয়া শাস্তি-সংস্থাপন করি !'

হে সঞ্জয়! আমি শান্তি স্থাপন ও যুদ্ধ করণ, উভয় অনন্তর কুরুগণ-মধ্যে সমাসীন অমর্যণ রাজ-নন্দন । পক্ষেই সমর্থ ; ধর্মার্ক্সনে যেরপে উদ্যুক্ত, অর্থোপা- ৰ্জনেও সেইৰপ প্ৰস্তুত আছি; আমি মৃদুভাব ধা-রণেও সন্মত আছি এবং কঠোরতা প্রকাশেও প্রস্তুত রহিয়াছি।

যুধিষ্ঠির-বাক্যে একত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩১॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, সঞ্জয় মহাত্মা ধৃতরাষ্ট্রের সমস্ত শাসন সম্পাদন করিয়া যুধিষ্টিরের অনুজ্ঞা-ক্রমে হস্তিনাপুরে প্রস্থান করিলেন এবং শীঘ্রই তথায় উপনীত হইয়া নগরমধ্যে ঐবেশ-পূর্বক অন্তঃ পুর-সমীপে আসিয়া দৌবারিককে কহিলেন, "দৌ-বারিক! ভুমি ধৃতরাষ্ট্রকে বল, 'পাগুবগণের নিকট হইতে সঞ্জয় আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন।' শীঘ যাও আর বিলম্ব করিও না। হে দ্বাঃস্থ! যদি তিনি জাগরিত থাকেন তবেই তুমি বলিবে; আমি মহা-রাজের বিদিত হইয়া প্রবেশ করি; থেঁহেতু আমার অত্যন্ত প্রয়োজনীয় বিষয় নিবেদন করিতে আছে ^গ। সঞ্জয়ের এই কথা শুনিয়া দৌবারিক নরপতিকে নমস্কার-পূর্বক নিবেদন করিল, মহারাজ! আপন-কার দর্শনেচ্ছায় সঞ্জয় আসিয়া দারদেশে উপস্থি তিনি পাণ্ডবদিগের নিকট হইতে দূত হইয়া আসি-য়াছেন, এক্ষণে কি করিবেন আজ্ঞা করুন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়কে বল আমি স্থণী ও অরোগী আছি; তুঁাহারে প্রবেশ করাও, তাঁহার শোভন আগমন হউক। তাঁহার সম্বন্ধে আমি কথ-নই অকল্য, অর্থাৎ অনবসরপ্রদ নহি; যখন ইচ্ছা হয়, তিনি তথনি আমার নিকটে আসিতে পারেন, অতএব অনিয়তকাল-দ্রুট্টব্য হইরাও তিনি কি নি-মিক্ত আমার দারদেশে নিয়ন্ধ রহিয়াছেন?

বৈশন্পায়ন কহিলেন, অনন্তর স্থতপুত্র গঞ্জয় বি-চিত্রবীর্যাক্ষজ মহারাজ ধৃতরাষ্ট্রের অনুমতিক্রমে প্রাক্ত ভূর ও আর্যাগণ-কর্জৃক পরিরক্ষিত বিশাল রাজভবনে প্রবেশিয়া, সিংহাসন-সমাসীন মহীপা-লের সন্নিহিত হইয়া ক্তাঞ্জলিপুটে নিবেদন করি-

লেন, মহারাজ! আমি সঞ্চয়, পাগুবদিগের নিকট হইতে আগত হইয়া আপনাকে প্রণাম করিতেছি। হে নরেশ্বর! পাগুনন্দন মনস্বী যুধিন্তির আপনাকে অভিবাদন-পূর্বাক কুশল জিজ্ঞাসা করিয়াছেন। কেবল আপনাকে কেন, তিনি প্রীত হইয়া আপনকার পুল্রগণকেও অনাময় জিজ্ঞাসা করিয়াছেন। হে রাজন্! আপনি, পুল্র পৌল্র স্বছ্র্মদ্ ও মন্ত্রিবর্গ এবং যে সমস্ত লোক আপনকার উপজীবী, সকলেরই সহিত সুখী আছেন কি না তিনি পুনঃপুন আমারে এই প্রশ্ন করিয়াছেন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয়! আমি অজাতশক্র যুধিষ্ঠিরকে স্থথে অভিনন্দিত করিয়া ভোমারে জি জ্ঞাসা করিতেছি, সেই কৌরব-রাজ যুধিষ্ঠির সহো-দর, পুত্র ও অমাত্যগণের সহিত কুশলে আছেন ত? দঞ্জয় কহিলেন, যুধিষ্ঠির অমাত্য-প্রভৃতিগণের সহিত কুশলী আছেন ; অগ্রে আপনকার যেরূপ মন হইয়াছিল, তিনি তাহাও লাভ করিতে ইচ্ছা করিতে ছেন। মহারাজ। তাঁহার সচ্চরিত্রের কথা কি কহিব, যাহাতে বিশুদ্ধ-ধর্মার্থের সঞ্গ হয়, তাহাই তাঁহার কামনা; তিনি মনস্বী, বছল শাস্ত্রজ্ঞান-সম্পন্ন, দীর্ঘ-मर्भी ও भीलवान् ; अहिश्मा **ও मग्नाहे उँ। हात अ**धान ধর্মা; ধনসঞ্য় অপেক্ষা তিনি ধর্মাকেই শ্রেষ্ঠ বলিয়া মনে করেন; তাঁহার বুদ্ধি ধর্মার্থ-বিহীন স্থপ্রিয়ের কদাপি অনুরোধ করে না। হে রাজন্। স্ত্ত-এথিতা কাষ্ঠময়ী পুত্তলিকা যেমন স্থত্তধার-কর্তৃক পরিচালিত। इर्डेश, रुख्या जानि मक्षालन करत, स्मर्बेश रेनव-कर्जुक প্রেরিত হইয়াই মন্ত্র্যা ইহলোকে ব্যাপার-বিশিষ্ট হয়; যুধিষ্ঠিরের এই নিয়ম দেখিয়া আমি পৌরুল কর্ম অপেকা দৈব-কর্মকেই শ্রেষ্ঠ বলিয়া মানি তেছি এবং আপনকার এই উত্তর কালে অশুভ-ময়, অবর্ণনীয় ঘোরতর কর্ম-দোষ দেখিয়া ইহাও মনে করিতেছি যে, ঈশ্বর যে পর্যান্ত ইচ্ছা করেন, সেই পর্যান্তই •মনুষা অতিমাত্র প্রশংসা ভাজন হইয়া থাকে। সর্প যেমন ধারণের অযোগ্য জীর্ণ কঞুক পরিত্যাগ করে, তদ্ধপ ধীরবর অঙ্গাতশত্রু যুধিষ্ঠির পাপ পরিহার-পূর্ব্বক আপনকার উপরে নিক্ষিপ্ত করিয়া অক্তিম উদারচরিত্রেই বিরাজমান হইতে-ছেন। হে রাজন্! আপনি আপনার কর্ম একবার বিবেচনা করিয়া দেখুন! ইহা ধর্মার্থ-সম্বলিত আর্যা-রুত্ত হইতে বিবজ্ঞিতি ! হে রাজন্ ! ঈদৃশ ছুইতকর্ম-দারা আপনি ইহলোকেও নিন্দাভাজন হইয়াছেন এবং পরলোকেও নিরয়ভাগী হইবেন। পুজের বশ-বর্ত্তী হইয়া আপনি যে, পাগুবদিগকে বঞ্চিত করত সংশয়াস্পদ রাজ্যপদ একাকী ভোগ করিবার আ-শংসা করিতেছেন, আপনকার এই স্থমহান্ অধর্ম শব্দটি পৃথিবীময় ব্যাপ্ত হইয়াছে; হে ভরতশ্রেষ্ঠ! এ কর্ম্ম কোন প্রকারেই আপনকার উপযুক্ত নহে। रा वाकि दुिकाशीन, फुक्कुलकांठ, नृभःम, नीर्घरेवत, যুদ্ধবিদ্যায় অধীর, হীনবীর্যা ও অশিষ্ট হয়, সে অব-শ্যই আপদের আশ্রয় হইয়া থাকে; কিন্তু যে মতি-মান্ মানব সংকুল-সম্ভূত, বলবান্, যশস্বী, বছ শা-স্ৰজ্ঞ, সুখন্ত্ৰীবী ও জিতেন্দ্ৰিয় হয়েন এবং ধৰ্ম।ধৰ্ম বিভাগী করিয়া ধারণ করিতে পারেন, তাঁহারে আর ভাদৃশ ভাগোর অধীন হইতে হয় না ; তিনি আপ-দের হস্ত হইতে সর্বথা সতন্ত্র থাকেন। স্বয়ং বুদ্ধি-कीती, अञ्च अप्रक्रि-धाती, आश्रम् काटन यथानग्राद्य ধর্মার্থের প্রয়োগ-কারী, সর্বপ্রকার স্থমন্ত্রণা-সম্পন্ন উক্তৰপ অমৃঢ় ব্যক্তি কি প্ৰকারে নিষ্ঠুর কর্ম করিতে পারেন? কিন্তু মন্ত্রণাভিজ্ঞ এই যে মহাপুরুষেরা একত্র সমবেত হইয়া আপনকার কর্ম্মে নিত্য নিযুক্ত রহিয়াছেন, সর্বধা নিষ্ঠুর কর্মা করাই ইহাঁদিগের ছিরনিশ্চয়; ইইাদিগের নিয়মামুসারেই কুরুক্ষয় উংপন্ন হইল। যুধিষ্ঠির যদি আপনকার উপরে পাপ বিসর্জন করিয়া পাপের প্রতিক্রিয়া-নিমিত্ত পাপ ইচ্ছা করিতেন, তাহা হইলে কৌরবেরা কোন্-কালে কালগ্রাসে পতিত হইত, অথচ আপনকার ্এই নিন্দাও লোকমধ্যে প্রচারিত হইত। অর্জুন चर्रापर्मनार्थ गमन कतिया है स्मापि-लाकभानभगरक

যে অতিক্রম করিয়াছিলেন, সেই স্থারদিগেরই অমুগ্রহ ভিন্ন তাহাকে আর কি বলা যাইতে পারে? যদি ভিনি দেবগণের তাদৃশ মন্মত হইয়া থাকেন, তবে ভাঁহার নিকটে অন্যের পুরুষকার যে কোন কার্য্যকারক নহে, তাহাতে আর সংশয়মাত্র নাই। কর্মনিবন্ধন এই সমস্ত গুণ ও বর্ত্তমান অনিত্য স্থপতুঃখাদি ভাবাভাব পর্যালোচন করিয়াও কর্ত্তব্য জ্ঞানের পার প্রাপ্ত না হইয়া আপনি যে কালকব-লের বলীভূত হইতেছেন, একমাত্র কাল ব্যতিরেকে তাহাতে আর কোঁন কারণই আমার উপলব্ধ হয় ना। प्रिथुन, कीरवत हकू, कर्ग, नामिका, जुक् ও क्रिस्ता, এই কয়েকটি জ্ঞানের আয়তন-স্বৰূপ হইয়াছে; তৃষ্ণা ক্ষয়ের, অর্থাৎ স্বীয় স্বীয় বিষয়ভোগের অবসানে তৎসমুদায় আপনা হইতেই চরিতার্থ হইয়া থাকে; স্কুতরাং জীব ব্যথাপূন্য ও চুঃখহীন হইয়া সে সকলকে প্রকৃষ্টৰপে পরিচালিত করিতে পারে; পরস্ত পুরু-বের কর্ম্ম যে চিরকাল যথা-রীতিক্রমে স্থপ্রযুক্ত থা-কিতে পারে আমার এৰপ প্রতীতি হয় না ; কেননা মাতা পিতার কর্মফলে সন্তান উৎপন্ন হয়; উৎপন্ন হইয়া বিধিবৎ ভোজন-দারা সম্বর্জিত হইতে থাকে ; তংকালে প্রিয়াপ্রিয়, স্থুখতুঃখ নিন্দা প্রশংসা-প্রভৃতি দ্বন্দ প্রমন্ত তাহারে নিশ্চরই আত্রায় করে; তাহার অপরাধ দেখিলে লোকে নিন্দা করে, আবার তাহা-কে সচ্চরিত্র হইতে দেখিলে প্রশৃংসা করিয়া থাকে ; অতএব হে রাজন্! আপনিও ভারতগণের বিরো-ধের হেতু হওয়ার কর্মদোবে আমার নিন্দাভাজন হইতেছেন; এই বিরোধ প্রজাকুলের নিঃসন্দেহ অন্তক্র হইবে; যদিও সমস্ত প্রকাবর্গের না হয় তথা-পি, হুতাশন যেমন শুষ্ক তৃণ-রাশি দহন করে, সেইৰূপ আপনকার অপরাধ-নিবন্ধন এই কর্মটি অন্তত কুরু-वश्यात वश्यविधान कतिरवक। रह नरतुः मर्वत-লোকমধ্যে একাকী আপনিই কামচারী কুপুত্রের বশীভূত হইয়াছেন ; আপনকার ন্যায় কোন ব্যক্তিই আর কোন কালে এরপ হয় নাই ; পুজের বশবর্তী

ও শ্লাঘাপর হইরা আপনি বে পাশকীড়া-সমরে শাস্তি অবলয়ন করেন নাই, এক্ষণে তাহার বিপাক দর্শন করুন। হে কৌরবেন্দ্র! আপনি অনাপ্তগণের সংগ্রহ ও আগুবর্গের নিগ্রহ হেতু ভূসম্পত্তির বিল-ক্ষণ সমৃদ্ধিসাধন করিয়াছেন বটে, কিন্তু পূর্বলত্ব প্রযুক্ত এই অনস্তা-মেদিনীকে কখনই রক্ষা করিতে পারিবেন না। হে নৃসিংহ! আমি রথবেগে বিকো-ভিত হওয়ায় পরিশ্রাস্ত হইয়াছি, অতএব অনুমতি প্রাপ্ত হইলে এক্ষণে শরনে গম্ন করি; কল্য প্রাতঃ-কালে কৌরবেরা সভায় সমবেত হইয়া, যুধিন্তিরের সন্দেশ বাকা অবণ করিবেন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে স্থতপুত্র ! তুমি অনুজ্ঞাত হইলে; আবাসে গমন করিয়া স্থথে শয়ন কর; প্রাতঃকালেই কৌরবেরা সভায় সমবেত হইয়া অজ্ঞাতশক্রর যথাবৎ সন্দেশ বাক্য শ্রবণ করিবেন ধৃতরাষ্ট্র সঞ্জয়-সংবাদে সঞ্জয়যান প্রকরণ ও দ্বাত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩২॥

প্রজাগর প্রকরণ।

বৈশস্পায়ন কহিলেন, অনন্তর মহাপ্রাজ্ঞ মহী-পতি ধৃতরাষ্ট্র দৌবারিককে আজ্ঞা করিলেন, আমি বিছুরকে দেখিতে ইচ্ছা করিতেছি, অবিলয়ে তাঁহা-কে এস্থানে আনয়ন কর।

দারী অন্ধরাজ-কুর্তৃক দূত-স্বৰূপে প্রেরিত হইয়া বিছুরকে কহিল, "মহাপ্রাজ্ঞ মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র আপ-নাকে দেখিতে ইচ্ছা করিতেছেন "। এইৰূপ উক্ত হই-शा विछूत त्राज-अपत्न भगन-शूर्वक षाः श्रदक करितन, ধৃতরাষ্ট্র-সমীপে আমার আগমনের সংবাদ দাও।

इं छिनिया बांत्रभाव जूभावटक निर्वात कतिव, মহারাজ! আপনকার আজ্ঞাক্রমে বিছুর সমাগত হইয়া আপনকার পাদদ্য দর্শন করিতে অভিলাষ ক্রিতেছেন, এক্ষণে কি ক্রিবেন আমারে আজ্ঞা করুন।

প্রবেশ করাও; এই বিচুরের দর্শনে আমি কখনই অসমর্থ বা অস্তুস্থ নহি।

নরপতির অমুমতিক্রমে ছারী বিছুরকে কহিল, হে মহামতে! ধীমন্মহারাজের অন্তঃপুরে প্রবেশ করুন; কেননা মহারাজ আমাকে বলিলেন, আপন কার দর্শনে তিনি কোন সময়েই অসমর্থ নছেন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনম্ভর বিছুর ধৃতরাষ্ট্র সদনে প্রবেশিয়া চিন্তানিমগ্ন নরপতিকে ক্নতাঞ্জলি-পুটে নিবেদন করিলেন, হে মহাপ্রাচ্ছ! আমি বিছুর. আপনকার আজ্ঞানুসারে সমাগত হইলাম; যদি কিছু কর্ত্তব্য পাকে আজ্ঞা করুন, আমি এই উপ স্থিত আছি।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, বিতুর! সঞ্জয় আসিয়াছেন, আমারে ভর্পনা করিয়া এই গমন করিলেন; কল্য সভামধ্যে তিনি যুধিষ্ঠিরের সন্দেশ বাক্য কহি-বেন। কুরুবীর যুধিন্তির কি বলিয়া দিয়াছেন, অদ্য যে তাহা জানিতে পারিলাম না, তাহাতেই আমার গাত্র দাহ হইতেছে এবং তাহাতেই আমায় এই-ৰূপ বিনিদ্ৰ করিয়া রাখিয়াছে। অভএব হে তাত! এই নিজাখুন্য দছ্মান ব্যক্তির পক্ষে যদি কিছু শ্রেয় দেখিতে পাও, বল; যেহেতু তুমিই আমা-দিগের ধর্মার্থ-নির্দেশে স্থানিপুণ। যে অবধি সঞ্জয় পাগুবদিগের নিকট হইতে আসিয়াছেন,সেই অবধি আমার মনের আর যথাবৎ শান্তি হ্ইতেছে না; कला ভিনি কি বলিবেন, এই চিম্ভাই অদ্য বলবতী হওয়ায় আমার সকল ইন্দ্রিয়ই অপ্রকৃতিস্থ হইয়াছে।

বিছুর কহিলেন, বলবৎ-কর্তৃক অভিযুক্ত সাধন-हीन पूर्वा वाङि, ऋष-मर्वाय, काभी ७ होत, वह সকল লোককে প্রজাগর আশ্রয় করিয়া থাকে; হে নরেক্র ! আপনি এই সমন্ত মহাদোষের মধ্যে কোন দোষে লিপ্ত হন নাই ত ? প্রধনে লোভ করিয়া পরিতাপান্বিত হইতেছেন না ত?

ধৃতরাঞ্ছ কহিলেন, আমি তোমার ধর্মানুগত ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, মহাপ্রাক্ত দীর্ঘদর্শী বিছুরকে । নিরতিশয় কল্যাণ-সাধন অমুত্তম বাক্য শ্রাবণ করি- তে ইচ্ছা করিতেছি, যেহেতু এই রাজর্ষি-বংশে তুমিই একমাত্র প্রাজ্জগণের সম্মত।

বিছুর কহিলেন, প্রশংসনীয় কর্ম্মের অনুষ্ঠান করেন, নিন্দিত কর্ম্মের সেবা না করেন এবং অনা-ন্তিক ও আদ্ধালু হয়েন, ইহাই পণ্ডিতের লক্ষণ। হে ধৃতরাষ্ট্র! এইৰূপ লক্ষণ-সম্পন্ন রাজা যুধিন্তির বৈলোক্য রাজ্যের অধিপতি হইবার উপযুক্ত পাত্র; পরস্কু আপনি ইহার বিপরীত-লক্ষণাক্রান্ত, বিশেষত অক্সন্ত্র-প্রযুক্ত রাজ্যাংশ লাভের অযোগ্য হইয়াও আজ্ঞাধীন সেই যুধিষ্ঠিরকে প্রবাসে প্রেরণ করিয়া-ছেন। প্রজ্ঞা-দারা ধর্মের মর্মাজ্ঞ এবং প্রতিভা-দারা ধর্মাত্ম। যুধিন্ঠির, আপনকার গৌরব সমালোচন করিয়া, স্বাভাবিক অনিষ্ঠুরতা দয়া ধর্ম ও সত্যবল হেতু বছক্লেশ সহা করিতেছেন। হে নরেন্দ্র! আপনি कूर्रयाथन, भकुनि, कर्ग ও कुःभामत्नत इत्छ अश्वर्या বিনান্ত করিয়া কি বলিয়া মঞ্চল-কামনা করিতে-ছেন ? আত্মজ্ঞানের সমুদেশাগ, তিতিক্ষা ও ধর্মে নিত্য অভিরতি, এই সকলের সাহচর্য্যে যে পুরুষ অর্থ-দারা অপকর্ষিত না হয়েন, তাঁহাকেই পণ্ডিত वला याय । त्काथ, इर्स, पर्भ, लड्का, অবিনয় ও আ-ন্মাভিমান থাঁহারে অর্থ হইতে আরুষ্ট করিতে না পারে, তাঁহাকেই পণ্ডিত বলা যায়। যাঁহার ভাবী কর্ম্ম, মন্ত্রণা বা মন্ত্রিত বিষয় অপর লোকে জানিতে না পারে, কেবল অনুষ্ঠিত হইলেই জানিতে পারে, ঠাঁহাকেই পণ্ডিত বলা যায়। শীত, উষ্ণ, ভয়, আ-मिक्ति, ममृक्षि कि व्यममृक्षि, कि छूटउरे यादात्र कर्डवा কর্মের ব্যাঘাত করিতে না পারে, তাঁহাকেই পণ্ডিত वना यात्र। याँशांत वष्ट-विषय़-वााशिनी वृक्ति धर्म ଓ 🖟 অর্থের অমুবর্ত্তন করে; যিনি ঐহিক কাম হইতে উভয়-লোক-শুভাবহ অর্থ প্রার্থনা করেন, তাঁহাকেই পণ্ডিত বলা যায়। মার্জিত-বুদ্ধি পণ্ডিতেরা শক্তি অনুসারে কর্ম করিতে ইচ্ছা করেন এবং শক্তি অমুসারেই অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন ; কোন বস্তুকেই তাঁহার। অবজ্ঞ: করেন না। শীঘ্রই বু:ঝ.ত পারেন

अथेठ वर्षका धावा कर्त्रन ; विलिखे बर्प इत्यक्त्रम না করিয়া কেবল কাম-প্রযুক্ত অর্থের অমুবর্তী না হন এবং জিজ্ঞাসিত না হইয়া পরের কার্য্যে বাক্য-বায় না করেন, ইহাই পণ্ডিতের প্রথম লক্ষণ। বি-শুদ্ধ-বুদ্ধি পণ্ডিতগণ অপ্রাপ্য বিষয়ের অভিলাব করেন না, বিনফী বিষয়ের নিমিত্ত শোক করিতে ইচ্ছা করেন না এবং আপদ্ধ-কালেও বিমুগ্ধ হন না। যিনি নিশ্চয় করিয়া কর্মের আরম্ভ করেন এবং আ-রম্ভ করিয়া মধ্যে স্থৃগিত না হন, খাঁহার সময় কখন নিরর্থক বায়িত হয় না, যিনি বশ্যাত্মা আর্থাৎ জিতে-ক্রিয় হয়েন, তাঁহাকেই পণ্ডিত বলা যায়। হে ভরত-শ্রেষ্ঠ! পণ্ডিতেরা শিফসমুচিত মহৎকর্ম্মে অনুরক্ত হ্ন এবং ঐশ্বর্যাপ্রদ কর্মা সকলের অনুষ্ঠান করিয়া। থাকেন; তাঁহাদিগের পক্ষে যাহা হিতজনক বোধ হয়, কদাচ তাহার প্রতি দোষারোপ করেন না। যিনি আপনার সন্মানে হর্ষযুক্ত ও অবমানে পরি-তপ্ত না হইয়া গঙ্গাপ্রবাহের ন্যায় অক্ষোভ্য ও অবি-চলিত থাকেন, তাঁহাকেই পণ্ডিত বলাযায়। যে মানব সর্বাভূতের তত্ত্বজ্ঞ, সর্বব কর্ম্মের যোগজ্ঞ ও মনুষাগণের উপায়াভিজ্ঞ হয়েন, তাঁহাকেই পণ্ডিত ৰলাযায়। যিনি প্রবৃত্তবাক্ হয়েন, অর্থাৎ বক্তৃতা করিবার সময়ে যাঁহার বাক্য কুঠিত না হয়, যিনি লোক-সম্বন্ধীয় বছতর বিচিত্র কথার প্রসঙ্গ করিতে পারেন, বিতর্ক ও প্রতিভা-বিশিষ্ট হয়েন এবং শীঘ্র শীঘ্র এন্থের অর্থ বলিতে পারেন, তাঁহাকেই পণ্ডিত বলাযায়। শান্ত যাঁহার বুদ্ধির অনুগামী হয় এবং যাঁহার বুদ্ধিও শাস্ত্রের অসুগামিনী হইয়া থাকে, বিনি মহামুভব জীর্য্যগণের মর্য্যাদাভঙ্গ না করেন, তিনিই পণ্ডিত নাম প্রাপ্ত হইতে পারেন। আর, বেব্যক্তি শাস্ত্রজ্ঞান-খূন্য অধচ আপনাকে পণ্ডিভ মনে করিয়া গর্বিত হয়, দরিদ্র অথচ উদারচিত্ত হইতে চায় এবং অপকর্ম-দারা অর্থলাভের ইচ্ছা করে, তাহাকেই পণ্ডিতেরা মূঢ় বলিয়া থাকেন। ষেব্যক্তি আপনার অর্থ পরিত্যাগ করিয়া পরার্থের

অমুষ্ঠান করিতে যায় এবং মিত্রের প্রয়োজনে মি-থাচরণ করে তাহাকেই মূঢ় বলাযায়। যেব্যক্তি কামনার অযোগ্য-বিষয়ের কামনা করে, বাস্তবিক কাম্য বিষয় পরিত্যাগ করিয়া থাকে এবং বল-সম্পন্ন লোকের দ্বেষ করে, তাহাকেই পণ্ডিতেরা মূঢ়চেতা বলেন। যে নর শত্তকে মিত্রজ্ঞান করে, মিত্রের প্রতি দেব ও হিংসা করে এবং সর্বদা দোষাশ্রিত কর্ম্মের আরম্ভ করিয়া থাকে, তাহাকেই পণ্ডিতেরা মূঢ়চেতা বলেন। হে ভরতর্ষভ ! যেবাক্তি কর্ডব্য কর্ম-সমস্ত প্রচারিত করে, সকল বিষয়েই সংশয়যুক্ত হয়, আর অপ্পকালসাধ্য ব্যাপারে বছ সময় ব্যয় করে, সেই মূঢ়। যে মানব পিতৃলোকদিগকে আদ্ধ প্রদান ও দেবগণের আরাধনা না করে এবং স্থহদয় মিত্রলাভে পরাজুখ হয়, তাহাকেই পণ্ডিতেরা মূঢ়-চেতা বলেন। যে নরাধম বিনা আহ্বানে প্রবেশ করে, জিজ্ঞাসিত না হইয়াও বছ সম্ভাষণ করে এবং অবিশ্বস্ত লোকে বিশ্বাস করিয়া থাকে, সেই মূঢ়-চেতা। যেব্যক্তি স্বয়ং কোন দোষে লিপ্ত থাকিয়াও অনোর প্রতি সেই দোষ আরোপ করিয়া নিন্দা করে এবং কিছুমাত্র ক্ষমতাশালী না হইয়াও ক্রোধ প্র-কাশ করে, তাহার পর মূঢ় আর চুইটি নাই। যে ব্যক্তি ধর্মার্থবিবজ্জিত স্বকীয় বল না জানিয়া বিনা কর্মে অলভ্য বস্তু লাভের ইচ্ছা করে, তাহাকেই মৃঢ় বলা যায়। হে রাজ্বনু! যে ব্যক্তি অশাস্য লোককে শাসন করে, ধন-বিদ্যা-বিহীন দরিদ্রের উপাসনা করে এবং কুদ্রাশয় রুপণের ভজনা করিয়া থাকে, তাহা-কেই পণ্ডিভেরা মূদ্চেতা বলেন।

যে মানব প্রভূত অর্থ, বিদ্যা বা ঐশ্বর্য প্রাপ্ত হই

য়াও উদ্ধৃত ও গর্বিত হইয়া না বেড়ান, তাঁহাকেই
পণ্ডিত বলা যায়। সম্পত্তিশালী হইয়া যে ব্যক্তি
পোষ্য-বর্গকে বিভাগ করিয়া না দিয়া একাকী উত্তম
অশন ও শোভন বসন পরিধান করে, তাহার অপেক্রা অধিক নৃশংস আর কে হইতে পারে ?

এক্জন পাপকর্ম করে, অনেকে ভাহার ফলভোগী

হয়; কিন্তু যাহারা ভোগ করে তাহারা নিচ্ছৃতি পায়, যে করে তাহাকেই দোষে লিপ্ত হইতে হয়।

ধমুর্জারী ব্যক্তি বাণ প্রয়োগ করিলে তদ্ধারা এক-জন নিহত হইতে পারে, না হইতেও পারে; কিন্তু বুদ্ধিমান্-ব্যক্তি বুদ্ধি প্রয়োগ করিলে তদ্ধারা রাজা-সমেত রাজ্যের উচ্ছেদ হইয়া যায়।

হে রাজন্! একমাত্র বুদ্ধি-ছারা কার্য্য ও অকার্যা, এই ছুইটি সমাক্রপে অবধারণ করিয়া, সাম, দান, ভেদ ও দণ্ড, এই উপায়চতুইয়-ছারা শক্র, মিত্র ও উদাসীন, এই তিনকে বশীভূত করুন; এবং রূপ, রস, গল্প, স্পর্শ ও শব্দ, এই পাঁচটি জয় করিয়া, অমাত্য, স্কুছদ, কোষ, রাষ্ট্র, ছুর্গ ও বল, এই ছয়টি বিশেষরূপে জানিয়া, আর স্ত্রী, দ্যুতক্রীড়া, মৃগয়া, পান, কটুবাক্য কঠোর দণ্ড ও অর্থদূবণ, এই সাতটি পরিত্যাগ করিয়া স্থখী হউন।

বিষরস একজনকে বিনফী করে এবং শস্ত্র-দ্বারাও একজন নিহত হয়, কিন্তু মস্ত্রের যে বিপ্লব, অর্থাৎ ইতস্ততঃ প্রচার, তাহা রাষ্ট্র ও প্রজাসমেত রাজাকে উচ্ছিন্ন করে।

একাকী কোন সুস্বাছু দ্রব্য ভোজন করিবেক না; একাকী অর্থচিন্তা করিবেক না; পথিমধ্যে একাকী গমন করিবেক না; এবং বছজন নিদ্রিত থাকিলে তমধ্যে একাকী জাগরিত থাকিবেক না।

হে রাজন্! আপনি যাঁহারে বোধগম্য করিতে পারিতেছেন না, পারাবারের তরণীর ন্যায় স্বর্গের সোপনেভূত সেই সত্য-স্বৰূপ পরব্রহ্ম একমাত্র, ছি-ভীয় রহিত।

ক্ষমাবান্ মানব ক্ষমা প্রদর্শন করিলে লোকে তাঁহারে যে অশক্ত মনে করে, ক্ষমাশীলব্যক্তিদিগের এই একমাত্র দোষ দৃষ্ট হয়, এতদ্বিল্ন অন্য দোষ প্রাপ্ত হওয়া যায় না; কিন্তু তাঁহার সে দোষও মন্তব্য নহে; কেননা ক্ষমাই পরম বল। ক্ষমাহীন ব্যক্তি স্থপরলোককে এবং আপনাকেও অশেষ দোষে নিযোজিত করে। একমাত্র ধর্মাই দর্ব্বোৎকৃষ্ট কল্যাণ; একমাত্র ক্ষমাই উত্তমা শান্তি; একমাত্র বিদ্যাই পরমা তৃপ্তি; একমাত্র অহিংসাই দর্বস্থের আকর।

সর্প ষেমন গর্জস্থিত মুষিকাদি প্রাস করে, সেইৰূপ অযোদ্ধা রাজা ও অপ্রবাসী ব্রাহ্মণ, এই ছুইজনকে পৃথিবী গ্রাস করিয়া রাথে, অর্থাৎ তাদৃশ ব্রাহ্মণ ও রাজন্যগণের কিছুমাত্র খ্যাতি-প্রতিপত্তি-লাভের সন্তাবনা থাকে না।

কাহাকেও কোন কটুবাক্য না বলা এবং অসৎ-লোকের সমাদর না করা, এই ছুইটি কর্মের অনু-ষ্ঠান-দ্বারা মনুষ্য ইহলোকে বিরাজিত ও স্পৃহণীয় হয়েন।

হে পুরুষব্যান্ত! প্রাথিতের প্রার্থনাকারিণী স্ত্রী, মার প্রশংসিতের প্রশংসাকারী পুরুষ, এই ছুই লোকশ্রেণী বিচারে পরাগ্মুখ হইয়া কেবল পরের প্রতায়েই কার্য্য করিয়া থাকে।

নির্দ্ধন হইয়া যেবাজি ভোগস্থথের কামনা করে, এবং যেবাজি ক্ষমতা-হীন হইয়া ক্রোধ করে, এই ছুই মনুষ্য স্বকীয় শরীর শোষণকারী স্থতীক্ষু কণ্টক স্বৰূপ।

গৃহস্থ অথচ নিম্বর্শা, আর কার্য্যবান্ অথচ ভিক্ষ্ক, এই ছুই মনুষ্য বিপর্বাত-কর্ম-হেতুক কদাপি শোভা প্রাপ্ত হয় না।

হে রাজন্! ক্ষমতাপন্ন হইয়াও ক্ষমাযুক্ত, আর দরিত হইয়াও দানশীল, এইছুই পুরুষ স্বর্গের উপ-রিস্থলে অবস্থান করেন।

অপাত্তে দান, আর সংপাত্তে অপ্রদান, ন্যায়া-ক্ষিত অর্থের এই চুইটি ব্যতিক্রম জানিবেন।

थनी इहेशा श्रमान ना करत, जात मित्र महिस हहेशा उभित्री, जर्थार मीनजावाभित्र ना हश, अहे छूहे वाङ्गि-क भनदम्दम दृहर श्रम्भ श्र वस्तन-भूक्षक मित्रल निक्रिश्च कत्र। कर्डवा।

পরিবাজক হইয়া যোগযুক্ত, আর সংগ্রামে অভিমুখ হইয়া নিহত, লোকমধ্যে এই ছুইপুরুষ স্থা-

মণ্ডলভেদী হয়েন, অর্থাৎ ইহাঁরা স্বর্গোপরি কোন অনির্দেশ্য লোকের উপযুক্ত হইরা থাকেন।

হে ভরতর্ষভ! বেদজ্ঞ পণ্ডিতের। বলেন, মন্ত্র্যাদিগের কনিষ্ঠ, মধ্যম ও শ্রেষ্ঠ, এই তিন প্রকার ন্যায় প্রায়ন্ত হয়।

উত্তম, অধম ও মধ্যম, এই তিন প্রকার মনুষ্য হইয়া থাকে, তাহাদিগত্তক আপন আপন উপযুক্ত এৰপ তিন প্রকার কর্মেই নিযোজিত করিবেক।

হে রাজন্! ভার্য্যা, দাস ও পুত্র, এই তিন জনই ধনের অনধিকারী; ইহারা যাহা কিছু উপার্জন করে, তাহাতে ইহাদিগের স্বামিরই অধিকার থাকে। পরধন হরণ, পরস্ত্রী গমন ও স্কুছক্জন এই তিন দোষ মহাভয়ঙ্কর।

কাম, কোধ ও লোভ, এই তিন রিপু নরকের তিন প্রকার দার ; ইহারা আত্মাকে নফ করিতে পারে ; অতএব এই তিনটিকে পরিত্যাগ করিবেক।

যেবাক্তি ভক্ত হইয়াছে, যে ভজনা করিতেছে এবং যেবাক্তি " আমি তোমার হইলাম " এই কথা বলে, এই তিন প্রকার শ্রণাগত লোকদিগকে বিষ-মেও পরিত্যাগ করিবেক না, অর্থাৎ স্বয়ং বিপদ্যুম্ভ হইলেও তাহাদিগকে রক্ষা করিবেক।

বরপ্রদান, রাজ্যলাভ ও পুত্রজন্ম, এই তিনটি এক-দিকে, আর শত্রুক্ত ক্লেশ হইতে মুক্ত হওয়া এক দিকে, এই উভয় পক্ষই তুল্যামুতুল্য।

মহাবল-সম্পন্ন ভূপতি চারিটি বিষয় পরিত্যাগ করিবেন; সেই চারিটি কি. যিনি পণ্ডিত হন, তি-নিই জানেন; অর্থাৎ অপ্পরুদ্ধি, দীর্ঘস্থত্তী, অলস ও স্তাবক. এই চারিজনের সহিত রাজা কদাপি মন্ত্রণা করিবেন না।

হে তাত! গৃহস্থ-ধর্মে অবস্থিত শ্রীসম্পন্ন আপন-কার গৃহে জ্ঞানগৃদ্ধ বা বয়োর্দ্ধ জ্ঞাতি, অবসন্ন কুলীন, দরিদ্র সথা ও অনপত্যা ভগিনী, এই চারি জন নিত্যকাল বসতি করুন।

হে মহারাজ! অমরনাথ জিজ্ঞাসা করাতে রুহ্-

শ্পতি তাঁহার নিকটে সদ্য কলপ্রদ বলিয়া যে চারিটি বিষয়ের উল্লেখ করিয়াছিলেন; তৎসমুদায় আমি কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ করুন। দেবতাদিগের সংকণ্প, ধীসম্পন্ন মানবগণের অরুভব, কৃতবিদ্য লোক-দিগের বিনয়, আর পাপকর্মাণীল ছুরাত্মা লোক-দিগের বিনাশ, এই চারিটিই সদ্য সদ্য ফলিয়া থাকে।

অগ্নিহোত্র, মৌনব্রত, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ, এই চারিটি
কর্ম্ম যদি বেদ-প্রমাণানুসারে ফথাবৎ অনুষ্ঠিত হয়
তবেই অভয়প্রদ হইয়া থাকে, অন্যথা মহাভয়ন্ধর
হইয়া উঠে।

হে ভরতর্ষভ! মনুষোর কর্ত্তব্য এই যে, সর্বপ্রথত্নে পিতা, মাতা, অগ্নি, আত্মা ও গুরু, এই পঞ্চাগ্নির পরিচর্য্যা করে। দেবগণ, পিতৃগণ, মনুষ্যগণ, ভিক্ষু-গণ ও অতিথিগণ, এই পাঁচটি গণের• নিয়ত পূজা করিলেই লোকে অথও যশোলাভে সমর্থ হয়।

হে রাজন ! আপনি যেখানে যেখানে গমন করি-বেন, মিত্র, অমিত্র, মধ্যস্থ, উপজীব্য ও উপজীবী, এই পাঁচটি নিয়তই আপনকার অনুগামী হইবে।

পঞ্চেন্দ্র-বিশিষ্ট মনুষ্যের যদি কোন একটি ইন্দ্রিয়ের ছিদ্র উপস্থিত হয়, তাহা হইলে চর্ম্মপা-ত্রের ছিদ্র হইতে জলের ন্যায়, তাহার সমস্ত বুদ্ধি শুদ্ধি বিগলিত হইয়া পড়ে।

র্জ্বর্য্যকামী পুরুবের নিদ্রা, জড়তা, ভয়, ক্রোধ, আলস্য ও দীর্ঘ-স্থত্রতা, এই ছয়টি দোষ পরিত্যাগ করা কর্ত্তব্য

বুদ্ধিমান্ মনুষ্য, সমুদ্রে ভগ্ন তব্ধণীর ন্যায়, প্রবচন-খুন্য আচার্য্য, অধ্যয়ন-খুন্য পুরোহিত, রক্ষণাসমর্থ ভূপতি, অপ্রিয়-বাদিনী ভার্য্যা, গ্রামাভিলাষী গোপ আর বনাভিলাষী নাপিত, এই ছয় ব্যক্তিকে পরি-ত্যাগ করিবেক।

সত্য, দান, পরিশ্রম, অনস্থরা, ক্ষমা ও ধৈর্যা, এই ছরটি গুণ পরিভ্যাগ করা কদাপি মনুষ্টের কর্ত্তব্য নহে। গো, সেবা, ক্নষি, ভার্য্যা, বিদ্যা ও যজ্ঞাদির অনু-ষ্ঠান, এই ছয়টি মুহুর্ত্তকাল অবেক্ষিত না হইলেই বিনফ হয়।

শিক্ষিত শিষ্য, ক্কৃতবিবাহ, বিগতকাম, ক্কৃতার্থ, ছুন্তর পারাবার হইতে উত্তীর্ণ, আর রোগমুক্ত, এই ছয় ব্যক্তি যথাক্রমে আচার্য্য, মাতা, কামিনী, প্রয়েজন, নৌকা ও চিকিৎসক, পূর্ব্বোপকারী এই ছয় ব্যক্তির প্রতি প্রায়ই অবজ্ঞা করে; অর্থাৎ শিষ্য শিক্ষিত হইলে আচার্য্যের প্রতি তাহার আর পূর্বাবং শ্রদ্ধা থাকে না; ভার্যারে বশম্বদ হইলে মাতার প্রতি অনাদর হয়; কামহন্তি-রহিত হইলে পুরুষ রমণীর প্রতি আস্থাহীন হয়; যে কোন প্রয়েজন উপলক্ষে কার্য্যে লিপ্ত হওয়া যায়, কার্য্যের উদ্ধার হইলে সে প্রয়োজনে আর প্রয়োজন থাকে না; পারাবারের পার প্রাপ্ত হইলে নৌকার প্রতি আর আদর থাকে না এবং রোগনাশ হইলে চিকিৎসকের প্রতিও আস্থা থাকে না।

হে রাজন্! আরোগ্য, আনৃণ্য, অপ্রবাস, সাধু-লোকের সহিত ব্যবহার, স্বাধান জীবিকা ও নির্ভয়ে বাস, এই ছয়টি জীবলোকের স্থুখ।

ঈর্ষাকারী, ঘূণাযুক্ত, অসম্ভুষ্ট, ক্রোধন, নিত্যশঙ্ক।
বিত ও পরভাগ্যোপজীবী, এই ছয়ব্যক্তি চিরছু:থিত।

হে রাজন্! নিয়ত অর্থাগম, অরোগিতা, প্রতি কারিণী ও প্রিয়বাদিনী পত্নী, বশয়দ পুত্র ও অর্থ ক্রী বিদ্যা, এই ছয়টি জীবলোকের স্থুখ।

যে ব্যক্তি আত্মনিষ্ঠ কাম, ক্রোধ, শোক, মোহ, মদ ও মান, এই ছয়টি রিপুর উপরে প্রভুত্ব লাভ করি তে পারেন, সেই জিতেন্দ্রিয় পুরুষ হিংসাদি পাপ-কর্ম্মে কদাপি লিপ্ত হয়েন না; স্থতরাং ভাঁহার আর অনর্থ ঘটিবার সম্ভাবনা কি?

চৌর, চিকিৎসক, প্রমদা, যাজক, রাজা ও পণ্ডিত, এই ছয় ব্যক্তির, অসাবধান, রোগগ্রস্ত, কামনাকারী, যজমান, বিবাদ-বিশিষ্ট ও মূর্খ, যথাক্রমে এই ছয় তাহা বল; যেহেতু তুমিই একমাত্র আমাদিণের ধর্মার্থ নির্দেশে স্থানিপুণ। হে বিছুর! তুমি প্রজ্ঞানপূর্বক সমুদর বিষয় আমারে যথাবং প্রশাসন কর। হে মহাসত্ত্ব! যাহা যুধিন্তিরের হিতকর এবং কৌরবগণের শ্রেমন্বর বলিয়া তোমার বোধ হয়, তাহাই ব্যক্ত কর। ভাবী অনিন্টের আশঙ্কা করিয়া আমি কেবল পূর্ববতন অপরাধই দেখিতেছি, এই নিমিত্তই ব্যাকুলিত-চিত্তে তোমাকে জিজ্ঞাসা করিতেছি, তুমি যুধিন্টিরের যাহা যথার্থ অভিপ্রেত, তৎসমুদায় অবিকল বর্ণন কর।

বিদ্নুর কহিলেন, খাঁহার পরাভব ইচ্ছা না করা যায়, তাঁহার শুভ ইউক বা অশুভ ইউক, দ্বেষ্য ইউক, বা প্রিয় ইউক, জিজ্ঞাসিত না ইইলেও তাহা যথার্থ ৰূপে ব্যক্ত করা কর্ত্তব্য; অতএব হে রাজন্! আমি কুরুগণের কল্যাণ কামনা করত আপনাকে ধর্মানুগত ও শ্রোয়ন্ধর বাকাই বলিতেছি, শ্রবণ করুন।

হে ভারত ৷ যে সকল কর্মা অসমুপায়ে অনুষ্ঠিত হইয়া সিদ্ধ হইতে পারে, মিখ্যা-সম্লত তাদৃশ কপট কর্মে আপনি কদাচ মন করিবেন না। সেই-ৰূপ যুক্তি-বিহিত ও সমুচিত উপায় যুক্ত হইয়াও যে কর্ম্ম সিদ্ধ না হয়, মেধাবী ব্যক্তি তাহাতেও মনকে প্লানিযুক্ত করিবেন না। সকল কর্ম্মেরই অনুবন্ধ, অর্থাৎ অধিকারী, বিষয়, সম্বন্ধ ও প্রয়োজন আছে; অতএব সেই অমুবন্ধ গুলি অগ্রে পর্য্যালোচন করি-য়া দেখিবেক; সম্যক্ৰপে অবধারণ করিয়াই আ-রয় করিবেক, বিবেচনা না করিয়া সহসা কোন কর্মে হস্তক্ষেপ করিবেক না। কর্ম্মের অনুবন্ধ ও পরি-ণাম এবং আপনার উদ্যম পর্য্যালোচন করিয়া ধীর বাক্তি, হয় তাহাতে প্রবৃত্ত হইবেন, না হয় তাহা হইতে নির্ভ থাকিবেন। যে রাজা ছুর্গাদি স্থান, तृक्ति, क्रम, क्लाव, प्रश्न ७ जनश्र विषया श्रमान, वर्शाः নিশ্চয় করিবার উপায় না জানেন, তিনি রাজ্যপদে অধিক কলে অবস্থিত হইতে পারেন না। যিনি ঐ

সমস্ত বিষয়ের যথোক্ত প্রমাণ সমস্ত বিলক্ষণৰূপে আলোচনা করেন এবং ধর্মার্থের পরিজ্ঞানে অভি-নিবিফ হন, তিনিই রাজ্য রক্ষা করিয়া চলেন। রাজ্য লাভ হইয়াছে বলিয়াই স্বেচ্ছামতে অযুক্ত ব্যবহার করা কর্ত্তব্য নহে; কেন না রূদ্ধাবস্থা যেমন উত্তম ৰূপকেও বিৰূপ করিয়া দেয়, সেইৰূপ অবিনয় মহতী রাজলক্ষীকেও বিনক্ট কণ্ণে। মৎস্য লোভে পড়িয়া উত্তম আমিবে আচ্ছাদিত লৌহময় বড়িশ গ্রাস্ করে, কিন্তু পরে যে বন্ধন হইবে তাহা আর ভাবি-য়া দেখে না; অতএব যে কোন গ্রসনীয় বস্তু গ্রাস করিতে পার৷ যায়, গ্রস্ত হইয়া যাহার পরিপাক হয়, এবং পরিণামে যাহা হিতকর হইতে পারে, কল্যাণেচ্ছু ব্যক্তির তাহাই গ্রাস করা কর্ত্ব্য। যে ব্যক্তি রক্ষের অপক্ষ ফল সকল চয়ন করে, সে তৎ সমুদায় হইজে প্রকৃত রস পায় না, অধিকস্ক তাহার বীজও বিনফ হইয়া যায়; পরস্ত যে বিচক্ষণ মানব যথাকালে পরিণত স্থপক ফল গ্রহণ করেন, তিনি कल श्रेटाउँ तम लांच करतन वावः वीक श्रेटाउँ পুনরায় ফল প্রাপ্ত হন। মধুকর যেমন পুষ্প সকল রক্ষা করিয়া মধু গ্রহণ করে, সেইৰূপ অহিংসা দারা রাজা প্রজাবর্গ হইতে অর্থ গ্রহণ করিবেন। উদ্যানে মালাকারের ন্যায় প্রত্যেক রুক্ষ হইতেই পুষ্প চয়ন করিবেন, কিন্তু অঙ্গার কারকের ন্যায় কোন রক্ষেরই একবারে মূলোচ্ছেদ করিবেন না। এ কর্মা করিলে আমার কি ফল হইতে পারে, না করিলেই বা কি হয়, এইৰূপ চিন্তা করিয়াই পুরুষ কর্ম্ম করিবেন, অথ্বা করিবেন না। যাহাতে পুরুষ-কার প্রকাশ করিলেও নিরর্থক হয়, তাদৃশ কতক গুলি কর্ম্ম নিতাই অনারভা, অর্থাৎ কখনই সে সক-লের আরম্ভ করা কর্ত্তব্য নহে। কামিনীরা যেমন ক্লীব পতি মনোনীত করে না, তদ্রপ যে রাজার প্রসাদও নিম্ফল এবং কোপও অকিঞ্চিৎকর, ঠা-হাকে স্বামী করিতে প্রজাগণ কদাপি ইচ্ছা করে ना। প্রজ্ঞাবান্ মনুষ্য, লঘু উপায় সাধ্য অধ্চ

মহাফল জনক এৰপ কতক গুলি কৰ্ম শীঘ্ৰই আরম্ভ করেন, বিলম্ব করিয়া তাদৃশ কর্মের ব্যাঘাত করেন না। যে রাজা প্রীতিপূর্ণ সতৃষ্ণ নয়নে সরলভাবে প্রজাসকলকে অবলোকন করেন, তিনি নিঃশব্দে সিংহাসনে আসীন থাকিলেও প্রজারা তাঁহার প্রতি অনুরক্ত হয়। বাক্যৰপ-স্থন্দর-পুষ্প-যুক্ত অথচ অফল হইবেক, অর্থৰূপ-ফলশালী অথচ ছুরারোহ হইবেক, যোগ্যকাল উপস্থিত না হওয়ায় অপক অ্থচ প্রের ন্যায় প্রতীয়মান ইইবেক; এই ৰূপ হইলে নরপতি-রুক্ষের আর কদাপি শীর্ণ হইবার मञ्जादना थादक ना। यिनि नय़न, मन, दोका ও कर्मा, এই চারি প্রকারে প্রজা বর্গকে প্রীতিযুক্ত করেন, প্রজারা অবশাই তাঁহার প্রতি প্রীত হয়। ব্যাধ হইতে মৃগযুথের ন্যায়, প্রাণিগণ ঘাঁহা হইতে তাস-যুক্ত হয়, তিনি সসাগরা ধরিত্রীর আঁথিপত্য লাভ क्रिया ७ প्रतिहोन इन। वायु रयमन कलकाविलरक ছিন্ন ভিন্ন করে, সেইৰূপ ছুৰ্নয়বৰ্ত্তী ভূপতি পিতৃ-পিতামহাদি-সমাগত অথবা স্বকীয় তেজোলন্ধ রাজ্য-क ममूरल विनष्ठे कतिया कारलन। यिनि माधुशरात्र চির-সমাচরিত ধর্ম আচরণ করেন, বস্থপূর্ণা বস্থন্ধরা নিয়তই তাঁহার ঐশ্বর্যা বর্দ্ধন করত বর্দ্ধিতা হইতে থাকেন; আর ধর্ম ত্যাগ করিয়া যে রাজা অধর্মের অনুষ্ঠান করেন, তাঁহাুর হস্তে পড়িয়া পৃথিবী, অনলে নিক্ষিপ্ত চর্মের ন্যায়, কেবল সন্ধুচিতা হন। পররাষ্ট্র-বিমর্দ্দনে যাদৃশ যত্ন করিতে হয়, স্বরাষ্ট্র-পরিপালন-বিষয়েও তাদৃশ যত্ন করা কর্ত্তব্য।

ধর্ম-দারা রাজ্যলাভ করিবেক এবং ধর্ম-দারাই পরিপালন করিবেক; ধর্মমূলক ঐশ্বর্য্য লাভ করিয়া আপনা হইতে তাহা আর পরিত্যাগ করিতে হয় না এবং তাহাও অধিকারীকে পরিত্যাগ করে না।

প্রলাপকারী উন্মন্ত ও জম্পনাকারী বালক হই-তেও উপদেশ সঙ্কলন করিবেক; প্রস্তর-নিকর হই-তে কাঞ্চনের ন্যায়, সকল বস্তু হইতেই সারগ্রহণ করিবেক। শিলাহারী যেমন শিল, অর্থাৎ ক্ষেত্র হইতে শস্য লইয়া গেলে যাহা কিছু অবশিষ্ট থাকে সেই শস্যকণা-সকল আহরণ করে, তদ্ধপ ধীর ব্যক্তি সকলের নিকট হইতেই সাধুব্যবহার, স্থভাষিত ও স্কুক্ত সঞ্চয় করিয়া সম্থোষে অবস্থিত হইবেন।

গো-সকল গন্ধ-দারা, ব্রাহ্মণগণ বেদ-দারা, রাজার। শুপ্তচর-দারা এবং ইতর লোকেরা চক্ষারা দর্শন করে।

হে রাজন! যে গবী ছুর্দ্দুহা হয়, অর্থাৎ দোহন সময়ে বিস্তর উৎপাত করে, সে বিস্তর ক্লেশ পায়; যে স্বত্নহা হয়, ভাহারে আর কেহ যন্ত্রণা দেয় না।

যাহা তপ্ত না হইয়াই প্রণত হয়, তাহাকে আর কেহ সন্তাপিত করে না; যে কার্চ আপনা হইতেই নত হয়, তাহাকে যত্ন-সহকারে নামিত করিবার প্রয়োজন কি? এই উপমা-দ্বারা ধার ব্যক্তি বলবা নের নিকটে প্রণত হইবেন; যিনি বলবানের নিকটে নত হন, তিনি বলাধিষ্ঠানী দেবতা ইক্রকেই প্রণাম করেন।

পশুদিগের বান্ধব জলধর, ভূপতিগণের বান্ধব মন্ত্রী, কামিনী-কুলের বান্ধব পতি, আর ব্রান্ধণ-সক-লের বান্ধব বেদ।

সত্য-দ্বারা ধর্ম রক্ষিত হন, যোগ, অর্থাৎ নিয়ত আলোচনা দ্বারা বিদ্যা রক্ষিতা হন, অঙ্গ মার্ক্জন-দ্বারা রূপ রক্ষা করা যায় এবং সদাচার দ্বারা কুল রক্ষা পায়। অপিচ, পরিমাণ-দ্বারা ধান্য, ব্যায়াম শিক্ষা-দ্বারা অশ্বগণ, সর্বদা তত্ত্বাবধারণ-দ্বারা গোধনগণ, আর কুংসিত পরিচ্ছদ-দ্বারা অঞ্সনাগণ রক্ষিত হইয়া থাকে।

আমার বিবেচনায়, আচারহীন পুরুষের কুল কখন ভদ্রভার কারণ হইতে পারে না; কেননা রজকাদি নীচবংশ-জাত ব্যক্তিদিগেরও যদি সদাচার থাকে. তবে তাহাই বিশিষ্ট বলিয়া গণ্য হয়। যে ব্যক্তি পরের ঐশ্বর্যা, রূপ, বীর্যা, কুল, বংশ, স্থখ, সৌভাগ্য ও পুরস্কার দর্শনে ঈর্ষাযুক্ত হয়, তাহার ব্যাধির আর অস্ত নাই; সে চিরকালই পীড়া পাইতে থাকে। অকার্য্য করণ, কার্য্যের বিবর্জন ও কলসিদ্ধির পূর্ব্যকালে মন্ত্রভেদ, এই কয়েকটি বিষয় হইতে যে ব্যক্তি ভীত হন, তিনি যে বস্তু-দ্বারা মন্ত হইতে পারেন, তাহা যেন কদাপি পান না করেন। বিদ্যা-মদ, ধন-মদ ও কৌলিন্য-মদ, গর্বিত লোকদিগের এই তিন প্রকার মদ প্রসিদ্ধ আছে; পরস্তু সাধুগণের পক্ষে ইহারা মদ না হইয়া দম হইয়া থাকে, অর্থাৎ অজ্ঞান লোকেরা ধনাদি-দ্বারা মন্ত হয়, আর সজ্জন-গণ তদ্বারা বিনয়াদি অধিকতর গুণ-সম্পন্ধ হয়েন।

দাধুগণ কোন কার্য্যোপলক্ষে কথন অসাধু লোকদিগের অর্চনা করিলে, ঐ অসক্ষনেরা সর্বাত্র অসাধু
বলিয়া বিখ্যাত থাকিলেও সাধুগণ-কর্তৃক পূজিত
হওয়ায় আপনাদিগকে সাধু বলিয়া মনে করে।
ফলতঃ সাধুরাই সাধুদিগের, জিতালা মানবগণের
এবং অসাধুবর্গের আভায়-স্বরূপ হইয়াছেন, অসাধু
লোকেরা কথন সাধুদিগের অবলম হইতে পারে
না। যে ব্যক্তি স্থন্দর বেশভ্যায় ভূষিত হয়, সে
সভা জয় করে, যাহার গোধন থাকে, তাহার মিই
দ্বা ভোজনের লালাসা পরাজিতা হয়, যানবান্
লোকের নিকটে পথও পরাজয় স্বীকার করে, কিন্তু
শীলবান্ মানব সকলকেই জয় করিয়া থাকেন।
শীলতাই পুরুষের প্রধান গুণ। যাহার শীল নই
হয়, তাহার জীবন, ধন কি বন্ধুগণ, কিছুতেই প্রয়োজন নাই।

হে ভরতর্ষত! সমৃদ্ধিশালী লোকদিগের মাংসপ্রধান, মধ্যবিস্তগণের ছুগ্ধপ্রধান, আর দরিদ্রবর্গের
তৈলপ্রধান ভোজন হইয়া থাকে, কিন্তু দরিদ্রেরা
সর্বাদা ধনিগণ অপেক্ষাও স্থমিউ অন্ন ভক্ষণ করে;
কেননা কুধা সকল বস্তুরই স্থসাদ জন্মিয়া দেয়, আঢ্যগণের পক্ষে তাহা নিতান্ত ছুল্লভ। হে রাজন্! শ্রীসম্পন্ন লোকদিগের প্রায়ই অধিক ভোজন শক্তি
থাকেনা; কিন্তু দরিদ্রদিগের জঠরানলে কার্চসকলও
স্থীণ হইয়া যায়।

व्यथम लाकि परिशत की विकास हानि इहेरड अवर

মধ্যম লোকদিগের মরণ হইতে ভয় হইয়া থাকে; কিন্তু উত্তম-প্রকৃতি মনুজগণের অবমান হইতেই অতিশয় ভয় হয়।

ঐশ্বর্যা হইতে যে মদের উৎপত্তি হয়, তাহা পান-মদ, বিদ্যা-মদ, কুল-মদ-প্রভৃতি সর্ব্ব প্রকার মদ অপেক্ষা অধিকতর অনি্ফকর; কেননা যে ব্যক্তি ঐশ্বর্য্য-মদে মন্ত হয়, একবার পতিত না হইলে তাহার আর কিছুতেই চেতনা হয় না। গ্রহগণ যেমন স্বীয় বীয় কিরণরাজি দ্বারা তারকপুঞ্জকে তাপিত করে, সেইৰূপ ঐশ্বর্য্য-মদমন্ত মানবেরা শব্দাদি ইন্দ্রিয় বিষয়-সমূহে আসক্ত হইয়া অনিবা-तिक देखियाम्या विशेषा अहे ममस **जूरनमधलटक म**सा পিত করে। যে ব্যক্তি আত্মার আকর্ষণকারী স্বভাব-সিদ্ধ পঞ্চবর্গ অর্থাৎ পঞ্চ কর্ম্মেন্দ্রিয়, পঞ্চ জ্ঞানেন্দ্রিয়. পঞ্চভূত, পঞ্চ বায়ু, চারি অন্তঃকরণ ও প্রকৃতি কর্তৃক পরাজিত হয়, তাহার আপদ্-সমস্ত শুক্লপক্ষীয় শশ্ ধরের ন্যায় পদে পদেই বর্দ্ধিত হইতে থাকে। যে রাজা অগ্রে আত্মাকে জয় না করিয়া অমাত্যবর্গকে জয় করিতে ইচ্ছা করেন এবং অমাত্য জয় না করিয়া অমিত্র জয়ে অভিলাষী হন, তাঁহারে অবশ্যই অবশ হইয়া পরিহীন হইতে হয়। অতএব প্রথমে আত্মা কেই দ্বেষ্যৰূপে যোজনা করিবেক, অর্থাৎ শত্রুজ্ঞান করিয়া অত্যে তাহারই জয়-সাধনে যত্নবান্ হইবেক ; পশ্চাৎ অমাত্য ও অমিত্রবর্গকে জয় করিতে ইচ্ছা করিলে, তাহাতে নিঃসন্দেহ ক্লতকার্য্য হইতে পারি বেক। রাজলক্ষী বশ্যেন্দ্রিয়, জিতাত্মা, বিরুদ্ধাচারী-দিগের প্রতি দশুধারী, সমীক্ষ্যকারী নরেন্দ্রকে অত্যম্ভ ভঙ্গনা করিয়া থাকেন।

হে রাজন্! পুরুষের শরীর রথ-স্বৰূপ, আত্মা সারথি-স্বৰূপ, আর ইন্দ্রিয়গণ অশ্ব-স্বৰূপ হইয়াছে; ধীর ব্যক্তি অপ্রমন্ত ও স্থানিপুণ রথীর ন্যায় উক্ত অশ্ব-সকলকে সমুচিত শাসন-সহকারে সংস্থভাবে আনয়ন পূর্বেক পরম স্থাথে সংসার্থাতা নির্বাহ করেন। অবশীভূত ও অদান্ত অশ্ব-সকল যেন পথি- মধ্যে অনিপুণ সার্রণিকে বিনফ করে, সেইৰপ অশাসিত ইক্রিয়বর্গও পুরুষের নিধন-সাধনে সমর্থ হইতে পারে। যে ছুর্বোধ মন্ত্র্যা অপরাজিত ইক্রিয়-গণের বশবর্তী হইয়া অর্থ হইতে অনর্থ ও অনর্থ হইতে অর্থ লাভের প্রত্যাশা করে, সে স্থদারুণ ছুঃখ-क्टि यथार्थ स्थ विनया विदयनो कदत्। य वार्कि ধর্মার্থ পরিত্যাগ করিয়া ইন্দ্রিয়-নিচয়ের বশানুগামী হয়, সে ঞী, প্রাণ, ধন ও পরিবার হইতে শীঘ্রই পরিহীন হইয়া পড়ে। যে মূঢ়, ইন্দ্রিয়গণের ঈশ্বর না হইয়া প্রভুত অর্থ সম্পত্তির ঈশ্বর হয়, সে ইন্দ্রিয়-গণের অনৈশ্বর্য্য-হেতুক সমুদায় ঐশ্বর্য্য হইতে যে ভ্রম্ট হইয়া যায়, ইহাতে সংশয় মাত্র নাই। অতএব মন, বুদ্ধি ও ইন্দ্রিয় সকল সংযত করিয়া অত্যে আপ-নিই আপনার অনুসন্ধান করিবেক; যেহেতু আপ-নিই আপনার বন্ধু এবং আপনিই অীপনার রিপু; যিনি আপনাকে আপনি জয় করিয়াছেন, তাঁহার আত্মাই তাঁহার বন্ধু হইয়াছেন।

হে রাজন্! ক্ষুদ্র ছিদ্রযুক্ত জাল-মধ্যে আচ্ছাদিত মহামীন-যুগলের ন্যায়, কাম আর যে ক্রোধ, ইহারা স্বীয় আবরক প্রজ্ঞান-ৰূপ জালকে ছিন্ন ভিন্ন করিয়া কেলে।

ষে মানব ধর্মার্থের প্রতি দৃটি রাখিয়া ইছলোকে বিষয়-সমস্ত লাভ কুরেন, তিনি ধন ধান্যাদি সর্ব বিষয়ে সম্পূর্ণ হইয়া সতত পরম স্থথে বৃদ্ধি পাইতে ধাকেন।

যে ব্যক্তি মতি-বিকার-সমূত আন্তরিক পঞ্চ শক্র-কে জয় না করিয়া বাছ শক্র-সকলকে জয় করিতে ইচ্ছা করে, সে শক্র জয় করিবে কি, শক্ররাই তাহা-কৈ অভিভূত করিয়া কেলে। রাজ্যমোহে ইন্দ্রিয়-বর্গের উপর প্রভূত্ব না থাকায় স্বকীয় ছফর্ম-সমূহ-দ্বারা বধ্যমান হয়, এরূপ অনেকানেক ছৢরাত্মা রাজা দৃষ্ট হইয়া থাকে। শুদ্ধের সহিত মিশ্রিত থাকায় আদ্রু কাঠও যেমন দক্ষ হয়, সেইরূপ পাপকারী-দিগকে পরিত্যাগ না করিয়া তাহাদিগের সংসর্গে

ধাকিলে, নিষ্পাপ মন্তব্যেরাও তুল্য-ৰূপ দণ্ডাই হয়েন; অতএব পাপীদিগের সহিত কদাপি সন্ধি করিবেক না। যে ব্যক্তি পঞ্চ বিষয়াসক্ত সভত উৎ-পর্ণগামী অন্তরস্থিত পঞ্চ শত্রুকে মোহ-প্রযুক্ত নি-গৃহীত না করে, সে অবশ্যই আপদের গ্রাসে পতিত হয়। ছুরাত্মা মনুষ্যদিগের কন্মিন্ কালেও অনস্থা. সরলতা, সম্ভোষ, প্রিয়বাদিতা, দম, সত্য ও ক্লেশ রাহিত্য হয় না। হে ভারত! আত্মজ্ঞান, অনায়াস, তিতিক্ষা, ধর্মে নিত্য অভিরতি, গুপ্ত কথা ও দান. এই কয়েকটি বিষয় অধম লোকদিগের অন্তঃকরণে কদাচ স্থান পায় না। মূর্খেরা নিন্দা ও তিরস্কার-দারা পণ্ডিতগণের হিংসা করিয়া কেবল আপনারাই পাপের ভাগী হয়; পণ্ডিতেরা ক্ষমা করিয়া তাহা হইতে বিমুক্ত হয়েন। যেমন অসাধুদিগের বল কে-বল হিংসা, ভূপালদিগের বল দগুবিধি, নারীদিগের বল পতিশুক্রমা, দেইৰূপ গুণশালী পুরুষগণের ক্ষমাই পরম বল।

মহারাজ! বাক্যের সংযম করা অতীব স্বত্নন্ধর; অর্থযুক্ত অথচ বিচিত্র হয়, এরূপ বন্থ কথার প্রসঙ্গ করিতে কেহই সমর্থ হয় না। স্কুভাষিতা বাণী বিবিধ কল্যাণ উৎপাদন করে; কিন্তু চুর্ভাষিতা হইলে তাহাই আবার অনর্থের হেতু হইয়া উঠে। বাণ-দ্বারা বিদ্ধ অথবা কুঠার-দ্বারা ছিন্ন হইলে বনও পুনরায় অঙ্কুরিত হয়, কিন্তু বাক্য-দ্বারা হৃদয় ক্ষত হইলে তাহার আর অঙ্কুর হইবার সম্ভাবনা থাকে না: ত্বাক্য অতীব ভয়ম্বর বিকার। কর্ণী নালীক নারাচ প্রভৃতি অস্ত্র-সকল শরীর হইতে বহিষ্কৃত করা যায়. কিন্তু বাক্য-ৰূপ শলাকে কিছুতেই উৎপাটিত করিতে পারা যায় না, কেননা তাহা হৃদয়ে একবারে বদ্ধমূল হইয়া বসে। বাক্য-বাণ-সকল বদন হইতে বহিৰ্গত হয়; ভদ্ধারা যে ব্যক্তি আহত হয়, সে দিবা নিশি শোক ক্রিতে থাকে। উক্ত ৰূপ শর-সমস্ত শক্তর মর্মাতান ভিন্ন অন্যত্ত পতিত হয় ন।; অতএব পণ্ডিত ব্যক্তি শত্রুবর্গের প্রতি ত<সমুদায় প্রয়োগ

ক্রিবেন না। দেবতারা যে পুরুষকে পরাভব প্রদান করেন, অত্রে তাহার বুদ্ধিকে অপরুফ করিয়া কে-লেন ; স্থতরাং সে, যাহাতে অনিউ হয়, সেই সকল অপকর্মাই দেখিতে পায়। বুদ্ধি কলুষিতা ও বিনাশ উপস্থিত হইলে নীতির ন্যায় প্রতীয়মানা ছুর্নীতি আর কথনই হৃদয় হইতে অপস্তাহয়না। হে ভরতর্মভ! পাণ্ডবদিগের সহিত বিরোধ-হেতুক আ-পনকার পুত্রগণেরও সেই ছুর্ঝুদ্ধি উপস্থিত হইয়াছে, কিন্তু আপনি তাহ। জানিতেছেন না। হে রাজেক্র ধৃতরাষ্ট্র! রাজলক্ষণ-সম্পন্ন, আপনকার আজ্ঞাবহ ও প্রধান দায়াদ যে যুধিষ্টির ত্রিভুবন রাজ্যেরও প্রভু হইতে পারেন, তেজ ও প্রজ্ঞাযুক্ত, ধর্মার্থ-তত্ত্বজ্ঞ যে ধর্মধারিশ্রেষ্ঠ, দয়া আনৃশংস্য ও আপন-কার প্রতি গৌরব-হেতুক অশেষ ক্লেশ-নিবহ সহ্ ক্রিতেছেন, সেই মহাত্মাই আপনকার পুত্র-সকল-কে অতিক্রম করিয়া পৃথিবীর শাসনকর্তা হউন।

বিছুর-বাক্যে চতুক্তিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৪॥

ধৃতরাণ্ড্র কহিলেন, হে মহাবুদ্ধে! তুমি অতিবিচিত্র ব্চনাবালর সম্ভাষণ করিতেছ; শুনিয়া আমার আর তৃপ্তি হইতেছে না ; অতএব পুনরায় এইৰূপ ধৰ্মাৰ্থ-যুক্ত বাক্যের প্রসঙ্গ কর।

বিচুর কহিলেন, বিভো! সর্ব তীর্থে স্নান আর সর্বভূতে সারলা, এই উভয় বিষয়, হয় পরস্পর তুল্য হইতে পারে, না হয় সারল্যই শ্রেষ্ঠ বলিয়া গণ্য হইতে পারে ; অতএব আপনি পুত্রগণের প্রতি সতত সরল ব্যবহার করুন; তাহাতে ইহলোকে উৎকৃষ্ট কীর্ত্তি লাভ করিয়া মরণান্তে স্বর্গ প্রাপ্ত হইবেন। হে পুরুষব্যান্ত! লোকে যে কাল পর্য্যন্ত মমুষ্যের পুণাকীর্ত্তি প্রকীর্ত্তিতা হয়, তিনি তাবৎ কাল পর্যান্ত স্থর্গলোকে পূজিত হইয়া থাকেন। পূর্বে কেশিনীর নিমিত্তে স্বধ্যার সহিত, বিরোচ-নের যে বাদানুবাদ হইয়াছিল, সেই পুরাতন ইতি-হাসটিই এ বিষয়ের উদাহরণ ৰূপে উল্লিখিত হয়।

হে রাজন্! কেশিনী-নামী অপ্রতিম-রূপ-সম্পন্না কন্যা বিশিষ্ট পতি কামনায় স্বয়হরে উদ্যুক্তা হইয়া-ছিলেন। যথন স্বয়ম্বরের কাল উপস্থিত হুইল, তথন দিতি-নন্দন বিরোচন তাঁহাকে লাভ করিতে ইচ্ছু হইয়া সেই স্থলে সমাগত হইলেন। তাহাতে কে-**मिनी थे रिएट अल्टरक किर्दालन, एव विद्याहन!** বান্ধণগণ শ্রেষ্ঠ, না দৈত্যেরা শ্রেষ্ঠ ? যদি বান্ধণ শ্রেষ্ঠ হন, তবে স্থধন্বা পর্যাক্ষে আরোহণ না করেন

বিরোচন কহিলেন, হে কেশিনি! প্রজাপতির বংশ-সম্ভূত আমরাই সন্তম ও শ্রেষ্ঠ; যাবতীয় লোক-সমস্ত আমাদিগেরই অধিকৃত; আমাদিগের নিকটে দেবতারাই বা কে আর ব্রাহ্মণেরাই বা কে ?

কেশিনী কহিলেন, হে বিরোচন! আমরা এই সভামগুপেই 'প্রতীক্ষা করিয়া থাকিব ; কলা প্রাতঃ-কালে স্থধন্বা আসিবেন, সেই সময়ে আমি যেন তোমাদিগকে সমাগত, অর্থাৎ একাসনে উপবিষ্ট ও পরস্পর সম্ভাষমাণ দেখিতে পাই।

विद्रोहन कहित्वन, ह् छद्ध। ह् जीकः। जूमि যাহা বলিতেছ, তাহাই করিব, প্রাতঃকালে তুমি আমাকে ও স্থধন্বাকে একত্র সমাগত দেখিবে।

विभूत करिलन, एर ताजमखम। अनस्त तजनी বিগতা ও স্থামগুল উদিত হুইলে, সুধন্বা সেই ञ्चात्न व्यागमन कतिरामन। एव विराजा! यथात्न বিরোচন কেশিনীর সহিত অবস্থিত ছিলেন, স্থুধন্বা সেই খানে আসিয়া তাঁহাদিগের সহিত মিলিত হই-লেন। হে ভরতর্যভ! কেশিনী বিপ্লকে সমাগত দেখিয়া প্রত্যুত্থান-পূর্ব্বক তাঁহারে আসন, পাদ্য ও অর্ঘ্য প্রদান করিলেন।

'আমার সহিত একাসনে উপবেশন কর' বিরো-চনের এইৰূপ প্রার্থনায় স্থধ্যা কহিলেন, হে প্রহ্লাদ-তনয়! তোমার যে এই স্থবর্ণময় উৎক্লফ আসন, ইহা আমিই পাইতে পারি, নতুবা তুল্যত্ব প্রাপ্ত হইয়া ভোমার সহিত সমানাসনে রসিতে পারি না।

विद्तांचन উद्धत कतित्वन, स्थत्रम्! चर्मा, कार्थ, তৃণ বা কুশ-নির্দ্মিত আসনই তোমার উপযুক্ত; ভূমি আমার সহিত সমান আসনে বসিবার যোগ্য नर्।

स्थया कहिरलन, পিতা পুত্র, অথবা সমবয়ক ও সমান অভিজ্ঞ ছুই জন ব্ৰাহ্মণ, ছুই জন ক্ষল্ৰিয়, बूरे जन देगा कि बूरे जुन भूज এकामतन जामीन হইতে পারে, ভদ্ভিন্ন অন্য কেহ পরস্পর একত্র বসিতে পারে না। আমি সমাসীন হইলে তোমার পিতা অবশ্যই নিম্নদেশে বসিয়া আমার উপাসনা করিতেন; ভূমি বালক, গৃহে বসিয়া স্থথে বর্দ্ধিত হইয়াছ, স্বতরাং কিছুই জান না।

বিরোচন কহিলেন, হে স্থখন্! হিরণ্য, গো অথবা অশ্ব, অস্থরকুল-মধ্যে আমাদিগের যে কোন ধন আছে, আমি তাহা পণ রাখিতেছি;ুচল, যাঁহারা জানেন, ভাঁছাদিগের নিকটে, ' আমাদের ছুইজনের মধ্যে শ্রেষ্ঠ কে ?' এই প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করি।

স্থুখন্থা কহিলেন, বিরোচন! স্থুবর্ণ, গো অথবা অশ্ব, কোন বস্তুর প্রয়োজন নাই ; তৎসমুদায় যেৰূপ আছে, সেই ৰূপই ধাকুক; পরম্ভ আমরা প্রাণের পণ করিয়া অভিজ্ঞগণ-সমীপে প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিব।

বিরোচন কহিলেন, প্রাণের পণ করিয়া আমরা কোথায় যাইব ? আমি দেবগণের নিকটে উপস্থিত হইব না; মনুষ্যদিগের নিকটে ত কথনই যাইব না।

স্থধন্বা কহিলেন, যখন প্রাণের পণ করা হইল, তখন আমরা তোমার পিতার নিকটেই গমন করিব; কেননা সেই ধর্মাত্মা প্রহলাদ, পুত্রের নিমিত্তেও মিখ্যা বলিতে পারিবেন না।

বিছুর কহিলেন, এইৰূপ পণ করিয়া বিরোচন ও स्थत्रा উভয়েই क्रुक रहेशा, यथानে প্রহ্লাদ ছিলেন, সেই খানে গমন করিলেন।

প্রহুলাদ কহিলেন, যাহারা পরস্পর কথনই সহচর হইতে পারে নাই ; সেই এই যুবক-ছয় এক-পথবর্ত্তী কুন্ধ আশীবিষ-যুগলের ন্যায় এই স্থানে সমাগত করে, ক্রীড়ায় পরাজিত অক্ষদেবী যে যামিনী যাপন

দৃষ্ট হইতেছে।—বিরোচন! ভোমরা পূর্বের কখন একত্র বিচরণ কর নাই, এখন কি নিমিত্ত এইৰূপ এক সঙ্গে বেড়াইতেছ? স্থধন্বার সহিত ভোমার স্থ্য হইয়াছে না কি ?

বিরোচন কহিলেন, স্থধন্বার সহিত আমার সথা নহে; আমরা প্রাণের পণ করিয়াছি; অতএব হে প্রহ্লাদ! আপনাকে একটি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিতেছি. আপনি তাহা মিখ্যা বলিবেন না।

প্রহ্লাদ কহিলেন, ভৃত্যেরা স্থধস্থার নিমিত্তে উদক ও মধুপৰ্ক আনয়ন কৰুক।—হে ব্ৰহ্মন্! আপনি সর্বাধা পূজনীয়; আপনকার নিমিত্তে শ্বেতবর্ণ মাংসল গবী প্রস্তুত রহিয়াছে।

स्रथा कहिलान, ह् अस्लाम! छेमक वा प्रधुलक আমারে পথি-মধ্যেই অর্পিত হ্ইয়াছে; এক্ষণে তোমাকে একটি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিতেছি, তুমি তাহার যথার্থ উত্তর দাও। ত্রাহ্মণেরা শ্রেষ্ঠ কি বি-রোচন শ্রেষ্ঠ ?

প্রহলাদ কহিলেন, ব্রহ্মন্! আমার এই একমাত্র পুত্র, এবং আপনিও এস্থানে সাক্ষাৎ অবস্থিত রহি-য়াছেন; অতএব আপনাদিগের বিবাদ-স্থলে মাদৃশ ব্যক্তি কিৰূপে প্ৰশ্নের উত্তর দিতে পারে ?

স্থাস্থা কহিলেন, গো কিয়া অন্য কোন প্রিয় ধন ভোমার ঔরস পুত্রকে প্রদান কর; কিন্তু হে মতি-মন্! আমাদের ছুই জনের যথন পরস্পর বিবাদ হইতেছে, তথন আমাদিগের প্রশ্নের উত্তর তো-মারে যথার্থ করিয়া বলিতে হইবে।

প্রহলাদ কহিলেন, হে স্থধন্ব ! আপনাকে আমি এই এক কথা জিজ্ঞাসা করি; কোন প্রশ্নের উত্তর দেওয়া ছুম্কর বিবেচনা হইলে, যে বাক্তি সত্য কি भिथा। किছूरे ना राल, मिरे हुर्किरका शूक़रवत কোথায় বাস হয়।

সুধন্বা কহিলেন, অধিবিন্না অর্থাৎ পতির অন্য দারপরিগ্রহ জন্য খেদান্বিতা রমণী যে রজনী বাস করে এবং ভার-বহনে অভিতপ্তাঙ্গ ব্যক্তি যে রাত্রি অভিবাহন করে, ছুর্ব্বিবক্তা পুরুষেরও সেই নিশার বাস হয়; অর্থাৎ অধিবিদ্ধা কামিনী-প্রভৃতির ন্যায় তাহাকে নিরতিশয় ক্লেশ পাইতে হয়। যে ব্যক্তি মিধ্যা সাক্ষ্য বলে, সে নগর-প্রবেশে প্রতিরুদ্ধ হইয়া বহির্দারে ক্ষুধায় পীড়িত হইতে থাকে এবং শত্রু-সমূহের সহিত সাক্ষাৎ করে। পশুর নিমিন্ত মিধ্যা বলিয়া দশ পুরুষ বিনফ করে; গোধন নিমিন্ত মিধ্যা বলিয়া দশ পুরুষ নিহত করে; অশ্ব নিমিত্তে মিধ্যা বলিয়া শত পুরুষের সংহার করে; পুরুষের নিমিত্তে মিধ্যা বলিয়া সহত্র পুরুষের নিধন-হেতু হয়; স্থবর্ণার্থে মিধ্যা বলিয়া জাত ও অজাত পুরুষ-বর্গের হত্যাকারী হয় এবং ভূমির নিমিত্তে মিধ্যা বলিয়া সর্বান্য করে; অতএব ভূমির নিমিত্ত করালি মিধ্যা বলিও না।

প্রহ্লাদ কহিলেন, হে বিরোচন! আমা অপেকা অঙ্গিরা শ্রেষ্ঠ, তোমা হইতে স্থায়া শ্রেষ্ঠ এবং তো-মার জননা অপেকাও ইহাঁর জননা গরীয়সী; অত-এব তুমি ইহাঁর নিকটে পরাজিত হইয়াছ; এক্ষণে এই স্থায়া তোমার প্রাণের ঈশ্বর হইলেন।—হে স্থায়ন্! আমি প্রার্থনা করিতেছি, আপনি আমার পুক্র বিরোচনকে প্রত্যর্পণ করুন।

স্বধয়া কহিলেন, হে প্রহ্মাদ! তুমি যে ধর্মকে শ্রেষ্ঠ বলিয়া গ্রহণ করিলে, কাম-প্রযুক্ত মিধ্যা কহিলে না, সেই হেতু আমি তোমার ছল্ল ত পুত্র-কে পুনঃ প্রদান করিতেছি। তোমার পুত্র বিরোচন আমা-কর্ত্বক এই প্রদক্ত হইল, কিন্তু কুমারী কেশিনীর সন্ধিধানে ইহারে আমার পাদ প্রক্ষালন করিয়া দিতে হইবে।

বিছুর কহিলেন, অতএব হে রাজেন্দ্র ! পুজের নিমিত্ত সত্য না বলিয়া ভূমির নিমিত্ত মিধ্যা বলা আপনকার উচিত নহে; মিখ্যা বলিয়া আপনি পুজ ও অমাত্যগণের সহিত অনর্থক নাশ প্রাপ্ত হইবেন না। দেবতারা কিছু পশুপালকের ন্যায় যথি ধারণ করিয়া কাহাকেও রক্ষা করেন না; যাহাকে রক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, তাহাকে বুজিযোগে সংবিভক্ত করেন, অর্থাৎ দৈবামুগ্রহে সে সকল কার্য্যই বুজিপুর্বক নিষ্পন্ন করিয়া থাকে। পুরুষ যে পরিমাণে কল্যাণে মনোনিবেশ করেন, তাঁহার সেই পরিমাণেই সকল অর্থ সিদ্ধ হয়, সন্দেহ নাই। বেদ্দমন্ত ছলজীবী মায়াবী ঝক্তিকে কখন পাপ হইতে উত্তীর্ণ করেন না; পক্ষ উদ্যাত হইলে পক্ষীরা যেমন কুলায় ত্যাগ করিয়া যায়, সেইস্বপ শ্রুভি-সকলও অন্তকালে মায়াবীকে পরিত্যাগ করেন।

মদ্যপান, কলহ, অনেকের সহিত শত্রুতা, পতি-পত্নীর বিচ্ছেদ, জ্ঞাতিভেদ, রাজার দ্বেষাস্পদ বিষয়, স্ত্রীপুরুষের বিবাদ ও দোষান্ত্রিত পথ, এই কয়েকটি বর্জনীয় বলিয়া উক্ত হইয়াছে।

সমুদ্র-সঞ্চারী বণিক্, তক্ষর, পাশক্রীড়ক, চিকিৎ-সক, শক্র, মিত্র ও নাট্যজীবী, এই সাত ব্যক্তিকে সাক্ষ্যে প্রমাণ করিবেক না।

অগ্নিহোত্র, মৌন, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ, এই চারিটি দংক্তিত কাল পরিমাণানুসারে যথাবং অনুষ্ঠিত হই-লেই অভয়প্রদ হয়, অন্যথা মহাভয়ন্কর হইয়া উঠে। গৃহদাহী, বিষদায়ী, কুণ্ডাশী, (ভগভক্ষক বা জারজান্ন-ভোজী) সোমলতা-বিক্রায়ী, পর্বাকারী, (অর্থ-লোভে অপর্বাকালেও অমাবস্যাদি ক্রিয়া প্রবর্ত্তক) সূচী, (গ্রহনক্ষত্র বা পরদোষ-স্থাচক) মিত্রদোহী, পরদারহারী, জাণহত্যাকারী, গুরুপত্মীগামী, মদ্যপায়ী, অতি পরুষভাষী, অতি ধৃষ্ট বা অশুচি, নান্তিক, বেদনিন্দক, অভিচারার্থে যজ্ঞকারী, ব্রাত্য, (গর্ত্তাধানাদি দশ-সংস্কার-বিহীন) ধনবান্ হইয়াও অভিশয় রূপণ, আর "রক্ষা কর " এইরপ প্রার্থিত হইয়াও যে, হিংসা করে, এই সমন্ত দিজাতি ব্রক্ষঘাতীর সমান

অগ্নি-ছারা স্থবর্ণের, চরিত্র-ছারা ভদ্রের, ব্যবহার-ছারা সাধুর, ভয়াগমে শূরের, অর্থক্ক সময়ে ধীরের এবং কফতর আপদ্ কালে শত্রু মিত্রের পরীক্ষা হইয়া থাকে। জরা ৰূপ হরণ করে; আশা ধৈর্যলোপ করে; মৃত্যু প্রাণ হরিয়া লয়; অস্থ্যা ধর্মাচরণের ব্যাঘাত জন্মায়; ক্রোধ শীভ্রফ করে; অসাধ্সেবা শীল নফ করে; কাম লজ্জা-বিলোপী হয়; অভিমান সকলই লোপ করিয়া দেয়।

মঙ্গল কর্ম হইতে এর উৎপত্তি হয়, প্রাগল্ভ্য (প্রত্যুৎপন্ন মতিত্ব) হইতে সম্যক্ষপ রন্ধি হয়, ক্ষিপ্রকারিতা হইতে মূল সংস্থান হয় এবং সংযম (মিত-ব্যয়িতা বা কাম-ক্রোধাদ্ধি নিরোধ) হইতে নিশ্চল প্রতিষ্ঠা হইয়া থাকে।

প্রজ্ঞা, কুলীনতা, দম, শাস্ত্রজ্ঞান, পরাক্রম, মিত-ভাষিতা, যথাশক্তি দান ও ক্বতজ্ঞতা, এই আটটি গুণ পুরুষকে সমুজ্জ্বল করে। হে তাত! একটি গুণ এই মহাকলোপধায়ক গুণ-সকলকে বল-পূর্বাক আ-শ্রুষ করে। রাজা যদি কোন মনুষ্যের প্রতি সংকার প্রদর্শন করেন, তবে এই রাজ-সমাদর ৰূপ গুণটিই উক্ত সমুদায় গুণকে অতিক্রম করিয়া উদ্ভাসিত হয়।

হে নৃপ! মমুযালোকে পশ্চাত্নক্ত এই আটটি গুণ
স্থালোকের নিদর্শন স্থৰপ; তন্মধ্যে চারিটি গুণ
সাধুলোকদিগের অনুগামী হয়, এবং সাধুরা অপর
চারিটির অনুসরণ করিয়া থাকেন। সাধুগণ যক্ত,
দান, অধ্যয়ন ও তপস্যা, এই চারিটি গুণের নিয়ত
অনুগামী হন; আর দম, সত্যা, সারল্য ও আনৃশংস্যা,
এই চারিটি গুণ সাধুদিগের অনুগত হয়। যক্ত,
অধ্যয়ন, দান, তপস্যা, সত্যা, ক্ষমা, করুণা ও অলোভ
ধর্মের এই আট প্রকার পথ উক্ত হইয়াছে; তন্মধ্যে
পূর্বের চারিটি দত্তের নিমিত্তেও সেবিত হয়, শেবোক্ত চতুন্টয় কেবল মহাত্মা লোকৈতেই থাকে।

যে স্থলে বৃদ্ধগণ না থাকেন, সে সভাই নয়; যাঁ-হারা ধর্ম বলিতে না পারেন, তাঁহারা বৃদ্ধই নন; যাহাতে সত্য নাই, তাহা ধর্মই নহে; যাহা কাপট্য-যুক্ত তাহা সত্যই নহে।

সত্য, ৰূপ, শ্ৰুত, বিদ্যা, কৌলীন্য, শীল, বল, ধন, শৌৰ্য্য ও আশ্চৰ্য্য-ভাষিত্ব, এই দশটি স্বৰ্গীয়। প্রসিদ্ধ পাপাদ্ধা ব্যক্তি পাপ করত কেবল পাপময়
কলই লাভ করে, আর পুণ্যকীর্ত্তি পুরুষ পুণ্যামুঠান
করত অনন্ত পুণ্য-সন্তোগ করেন; অতএব প্রশংসিতব্রতনিষ্ঠ পুরুষ কদাপি পাপ করিবেন না। পাপ
পুনংপুন ক্রিয়াণ হইলে বুদ্ধি নাশ করে; নইবুদ্ধি
মানব নিয়ত পাপ কর্মেরই আরম্ভ করিয়া থাকে
পুণ্য পুনংপুন অমুন্ঠিত হইলে প্রজ্ঞা বর্দ্ধন করে;
প্রজ্ঞা রদ্ধি হইলে মনুষ্য কেবল অনবরত পুণ্য কর্ম্মেন
রই আরম্ভ করেন। পুণ্যকীর্ত্তি পুরুষ পুণ্যের অমুন্ঠান করত পুণাস্থানে গমন করিয়া থাকেন; অতএব
মনুষ্য স্ক্রসমাহিত হইয়া পুণ্যেরই সেবা করিবেক।

যে ব্যক্তি অস্থ্যাকারী, মর্মচ্ছেদী, পরুষভাষী, বৈরকারী ও শঠ হয়, সে পাপাচরণ করত অচিরে মহাকট পায়। অস্থা-শূন্য ক্তবুদ্ধি পুরুষ সর্বদা শোভনকর্ম-সমুদায়ের আচরণ করত কোন কালেও বিষমতর কউভোগ করেন না; তিনি সর্ব্বেছ শোভ-মান হইয়া থাকেন। যিনি প্রাজ্ঞগণ হইতে প্রজ্ঞা সংগ্রহ করেন, তিনিই পণ্ডিত; কেননা প্রাক্ত ব্যক্তি ধর্মার্থ প্রাপ্ত হইয়া পরমস্তব্ধে বর্দ্ধিত হইতে পারেন।

দিবসেই সেই কর্ম করিবেক, যদ্ধারা রাত্রিকালে স্থথে বাস করিতে পারিবেক; আট মাসেই সেই কর্ম করিবেক, যাহাতে বর্ষাকালে স্থথে বাস করিতে পারিবেক; পূর্বে বয়সেই সেই কর্ম করিবেক, যা-হাতে র্দ্ধাবস্থায় স্থথে বাস করিতে পারিবেক এবং যাবজ্জীবন সেই কর্ম করিবেক, যদ্ধারা পরলোকে স্থথে বাস করিতে পারিবেক।

পণ্ডিতের। জীর্ণ অন্নের, গত-যৌবন। ভার্যার, সংগ্রাম-বিজিত খুরের এবং তত্ত্বজ্ঞান-পারগামী তপ-স্থীর প্রশংসা করিয়া থাকেন। অধর্ম-লক্ষ ধন-দ্বারা যে ছিদ্র আর্ড করা যায়, তাহা ত অসংর্তই থাকে, তদতিরিক্ত অন্য ছিদ্রও প্রকাশিত হইয়া পড়ে; অর্থাৎ অধর্ম-লক্ষ ধন দ্বারা পাপের প্রায়শ্চিন্ত না হইয়া বরং বৃদ্ধি হইতেই থাকে।

গুৰু প্ৰশান্তচিত্ত মানবগণের শাসনক্রতা এবং

রাজা ছুরাত্মাদিগের শাস্তা হইয়া থাকেন; পরস্ত যাহারা গোপনে পাপকর্ম করে, স্থর্য-নন্দন শমনই তাহাদের শাসনকারী হন। ঋষিগণের, নদী-নিব-হের, কুল-সকলের, মহাত্মবর্গের ও জ্রীজ্ঞাতীয় ছুশ্চ-রিজের প্রভাব বোধগম্য হইবার নহে।

হে রাজন্! দ্বিজাতিগণের পূকায় অভিরত, দাতা, জ্ঞাতিগণের প্রতি সরল-ব্যবহারী, শীল-ভাজন ক্ষজ্রিয় চিরকাল মহীপালন করেন।

শূর, ক্নতবিদ্য ও পালনাভিজ্ঞ, এই তিন পুরুষ স্থবর্ণ-পুষ্পা পৃথিবীলতার পুষ্প চয়ন করেন।

হে ভারত! বুদ্ধি-দ্বারা যে কর্মা নিম্পন্ন হয়, তাহাই শ্রেষ্ঠ; বাছ-দ্বারা যাহা কৃত হয়, তাহা মধ্যম; জন্মা-দ্বারা যাহা সম্পাদিত হয়, তাহা নিক্ষট; আর ভার-বহন কর্মা তদপেক্ষাও অপকৃষ্ট। আপনি মূঢ্-মতি ছুর্য্যোধন, শকুনি, ছুঃশাসন ও কর্ণের উপরে ঐশ্বর্যা সংস্থাপন করিয়া কি বলিয়া মঙ্গল কামনা করিতেছেন?

হে ভরতর্ষভ! সর্বপ্তণ-সম্পন্ন পাণ্ডবেরা আপন-কার প্রতি পিতার ন্যায় ব্যবহার করিয়া থাকেন; অতএব আপনিও তাঁহাদিগের প্রতি পুত্রবৎ ব্যব-হার করুন।

> বিছুর-হিত-বাকো পঞ্চত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৫॥

বিন্তুর কহিলেন, আমরা শুনিয়াছি, অত্রি-কুমার ও সাধ্যগণের যে সংবাদ প্রসিদ্ধ আছে, সেই পুরা-তন ইতিহাসটিই উক্ত বিষয়ের উদাহরণ ৰূপে উল্লি-থিত হইয়াছে। পূর্বাকালে সাধ্য-নামক দেবগণ পরিপ্রাক্তক-ৰূপে বিচরণকারী সংশিতব্রত মহাপ্রাজ্ঞ মহর্ষি আত্রেয়কে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, হে মহর্ষে! আমরা এই সাধ্যনামক দেবগণ আপনাকে দেখিয়া, আপনি কে, অমুমান করিতে পারিতেছি না; আমাদিগের বিবেচনায় আপনি বৃদ্ধিমান্ এবং শাস্ত্রজ্ঞান-দ্বারা পণ্ডিত হইবেন, অতএব আমাদিগের নিকটে

পশ্তিত-সমূচিত কোন উদার বাক্যের প্রসঙ্গ করুন।
পরিব্রাজক কহিলেন, হে অমরগণ! ইহাই কর্ত্তবালারা আমার সমাকৃ ৰূপে প্রুত্ত হইয়াছে যে, ধৃতি,
শাস্তি ও সত্যধর্মের অমুর্ত্তি-দ্বারা হৃদয়ের অহঙ্কারাদি সর্বপ্রকার গ্রন্থি অপনীত করিয়া আত্ম-তুলনায় প্রিয় ও অপ্রিয় ব্যবহার করিবেক। কেহ নিন্দা
বা তিরন্ধার করিলে তাহার প্রতি আক্রোশ প্রকাশ
করিবেক না, কেননা সহনশীল ব্যক্তির মনোবেদনাই
ঐ আক্রোশকারীকেন্তু দহন করে এবং তাহার স্কর্কত
হরণ করিয়া লয়।

আকোশী, পরাবমানী, মিত্রদ্রোহী, নীচোপদেবী, অভিমানী ও হীন-চরিত্র হইবেক না। পীড়াকর কঠোর বাক্য সর্বাধা বর্জ্জন করিবেক। ৰক্ষ ও ৰঢ় বাক্য মনুষ্যের মর্ম্ম, অস্থি, হৃদয় ও প্রাণ দহন করি-তে থাকে; অতএব ধর্ম-নিরত ব্যক্তি অকল্যাণী তীব্রতর কর্কশবাণী একবারেই পরিত্যাগ করিবেন। উগ্ৰ ও পৰুষভাষী যে নৱাধম বাক্যৰূপ কণ্টক নিচয় দার। মানবগণের মর্ম্মভেদ করে; সে নিয়তই মুখ-নিবন্ধা অলক্ষ্মী বহন করিতে থাকে; অতএব পণ্ডিত ব্যক্তি তাহাকে মনুষ্যকুলের নিরতিশয় অলক্ষী-হেতু বলিয়া জানিবেন। পণ্ডিত পুরুষ যদি অপ-রের অনল ও তপন-তুল্য প্রদীপ্ত তাদৃশ স্থতীক্ষু বাক্য-বাণ নিকরে নিরতিশয় বিদ্ধ হয়েন, তবে তদ্ধা-রা অতিমাত্র দহ্মান হইলেও ট্রাহার ইহাই মনে করা কর্ত্তব্য যে, এই মর্ম্মঘাতী ব্যক্তি আমার স্থক্ততি বিধান করিতেছে।

যে মনুষ্য সাধু কি অসাধু, তপস্বী কি তক্ষর, যাদৃশ লোক সকলের উপাসনা করে, সে রঙ্গবশবর্তী বস-নের ন্যায় অবশ্যই তাহাদিগের বশতাপন্ন হয়

কেই অত্যুক্তি করিলে যিনি স্বয়ং তাহার প্রত্যুক্তি
না করেন এবং অন্য কোন ব্যক্তিকেও তাহার বিক্লেছে কোন কথা না বলান; যিনি আহত হইয়া
স্বরং প্রতিঘাত না করেন এবং অন্য ছারাও না করান,
অপিচ যিনি আঘাতকারী ব্যক্তির অণুমাত্র অনিষ্ঠ

ইছি। না করেন সেই স্থবীর পুরুষের সমাগমে দেব-ভারাও স্পৃহয়ালু হয়েন।

প্রথমত, কোন কথার প্রসঙ্গ করা অপেক্ষা না করাই শ্রেয়; দ্বিতীয়ত, যদি কথা কহিতে হয় তবে, সত্য কথা কহাই বিধেয়; তৃতীয়ত, প্রিয় বাক্য বলা কর্ত্তব্য; চতুর্থত, ধর্মানুগত বাক্যই বক্তব্য।

পুরুষ যাদৃশ লোকের সহিত সহবাস করে, যাদৃশ লোকের উপাসনা করে, এবং যাদৃশ হইতে ইচ্ছা করে, তাদৃশই হইয়া থাকে। স্বাহা বাহা হইতে নিরুত্ত হয়, তাহা তাহা হইতেই বিমুক্ত হয়; সর্ব বিষয় হইতে নির্ত্ত হইলে আর অণুমাত্র ছুঃখও অনুভব করে না। ঐ পুরুষ কাহাকেও জয় করিতে ইচ্ছা করে না এবং অন্য-কর্ত্তৃক পরাজিতও হয় না; কাহারো বৈরকারী হয় না এবং কাহাকে প্রতিঘাতও করে না; নিনদ। কি প্রশংসা উভয়থাই সমভাবে খাকে; শোকও করে না, হৃষ্টও হয় না। যিনি সক-लात्रहे अञ्चामग्र हेष्ट्रा करतन, कोहात्र अकलाात्। मन करतन ना अवः मञावानी, मृह् ७ नास स्राम, তিনিই উত্তম পুরুষ ; যিনি অনর্থক সান্ত্রনা না করেন, প্রতিজ্ঞা করিয়া প্রদান করেন অথচ পরচ্ছিদ্রের অনুসন্ধান রাখেন, তিনি মধ্যম; আর অধম পুরু-ষের লক্ষণ এই যে, তাহাকে কিছুতেই শাসন করা যায় না ; সে দর্বদাই উৎপাতগ্রস্ত ও কলঙ্কিত হয়, মন্ত্যুর বশষদতা হইতে কোন ক্রমেই নির্ত্ত হয় না এবং দৌরাত্মা ও ক্তন্মতা-প্রযুক্ত কাহারও মিত্র হইতে পারে না। যে ব্যক্তি শ্রেষ্ঠ লোকদিগের নিকট হইতে কোন প্রকার কল্যাণ্ড সঙ্গলনে আস্থা না করে, অথচ আপনার প্রতিও শঙ্কান্বিত হয় এবং মিত্রবর্গকে দূর করিয়া দেয়, সেই অধম পুরুষ। যে মানব আপনার মঙ্গল প্রার্থনা করে, সে উত্তম পুরুষ-**मिर्टिश्वर स्था क्रिटिक, धवर ममस्क्राम** प्रथाम লোক-সকলেরও উপাসনা করিতে পারিবেক, কিন্তু चर्यस्त्रत्र त्मवा कर्नाष्ठ कतित्वक ना। चर्यम शूक्रव नित्रं উদ্যম-প্রযুক্ত বল, প্রস্তা ও পুরুষকার-সহ-

কারে অর্থ লাভ করিতে পারে বটে, কিন্তু কিন্দিন্ কালেও সম্যক্রপ প্রশংসা লাভ করিতে পারে না এবং মহাকুলের চরিত্রও প্রাপ্ত হয় না।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে বিছুর! দেবতারা এবং ধর্মার্থে স্থানিশ্চল ও বছল-শাস্ত্রজ্ঞান-সম্পন্ন মানবেরা মহাকুলের প্রতি স্পৃহা করিয়া থাকেন; অতএব তোমাকে এই প্রশ্নটি জিজ্ঞাসা করি, মহাকুল-সকল কিরূপ?

বিছুর কহিলেন, যাহাতে তপস্যা, দম, বেদ, জ্ঞান, যজ্ঞ, বিশুদ্ধ বিবাহ ও সতত অন্ন দান, এই সাতটি গুণ সমাক্ৰপে আচরিত হইয়া থাকে, তৎসমুদায়ই মহাকুল। যাঁহাদিগের চরিত্র শ্বলিত না হয়, এবং পিত্রাদি পূর্ব্ব পুরুষ যাঁহাদিগের দোষ দর্শনে ব্যথিত ना इन, याँ होता विशुक्त জीविका-मह्कादत धर्माहत्। করেন এবং সভ্যাবলম্বী হইয়া কুলের বিশিষ্ট-কীর্ত্তি ইচ্ছা করেন, তাঁহাদিগেরই মহাকুল। যজের অননু-ষ্ঠান, অবৈধ বিবাহ, বেদের উৎসাদন ও ধর্ম্মের অতিক্রম-দারা প্রশস্ত কুল-সকলও চুদ্ধলতা প্রাপ্ত হয়। দেব-দ্রব্য বিনাশ, ব্রহ্মস্ব হরণ ও ব্রাক্ষণের অতিক্রম-ছারা প্রশন্ত কুল-সকলও ছুদ্ধুলতা প্রাপ্ত হয়। হে ভারত। ব্রাক্ষণগণের প্রতি অবজ্ঞা ও নিন্দা দারা এবং ন্যস্ত ধনের অপহরণ-দারা প্রশস্ত কুল-সকলও চুদ্ধুলতা প্রাপ্ত হয়। সদ্বাবহার-বিহীন কুল-সমন্ত ধন, জন ও গবাদি পশুযুথে পরিপূর্ণ হইলেও কুল-সংখ্যা প্রাপ্ত হয় না; পরস্ত সভূত্তে ৃঅবিহীন কুল-সকল অপ্প ধনশালী হইলেও কুল বলিয়া পরি-গণিত হয় এবং প্রচুর যশোরাশি আকর্ষণ করে। অতএব চরিত্রকেই যত্ন-পূর্বেক সংরক্ষণ করিবেক; ধনের ত আগম অপগম হইয়াই থাকে, স্কুতরাং ধনাংশে কোন ব্যক্তি ক্ষীণ হইলেও তাহাকে বাস্ত-विक की । वना यात्र ना, किस्र य वाकि एतिएक इंड হয়, সেই যথাৰ্থ হত হইয়াধাকে। যে সমস্ত কুল সদৃত্তবিহীন, তৎসমুদায় গো, অশ্ব ও অন্যান্য পশু-

হইলেও কোন ক্রমে উন্নত হইতে পারে না।

আমাদিগের কুলে কেহ যেন বৈরকারী, রাজার
অমাত্য, পরধনাপহারী, মিত্রদ্রোহী, প্রতারণাপরায়ণ, মিথ্যাব্যবহারী এবং পিতৃ, দেব ও অতিথিগণের পূর্ফো ভোজনকারী না হয়। আমাদিগের
মধ্যে যে ব্যক্তি ব্রাহ্মণগণের হিংসা বা দ্বেষকারী হইবেক, অথবা রুষিকর্মের উচ্ছেদ ক্রিবেক, সে আমাদিগের সংসর্গ প্রাপ্ত হইবেক না।

সাধুগণের গৃহে তৃণ, ভূমি, জল ও স্থন্ত-বাকা, এই চারিটির কখনই উচ্ছেদ হয় না। হে রাজন্! হে মহাপ্রাজ্ঞ! পুণাকর্মা-শালী ধার্মিকেরা অতিথি-গণের সংকারাথে প্রব্রু এই কয়েকটি বস্তু পরম শ্রদা-সহকারে উপনীত করেন।

হে নৃপতে ! কুদ্র হইয়াও শকট যে ভার-বহনে
শক্ত হয়, অন্য মহীরুহ-সমূহ তাহা বহন করিতে
পারে না; সেইৰূপ সদৃত্ত-সম্পন্ন মহাকুলীনেরা যাদৃশ ভার-সহ হইয়া থাকেন, ইতর মনুষোরা কদাচ
সেৰূপ হইতে পারে না।

যাহার কোপ হইতে ভয় পাইতে হয়, সে মিত্র নহে; অথবা শঙ্কিত হইয়া যাহার উপচর্য্যা করিতে হয়, তাহাকেও মিত্র বলা যায় না ; যে মিত্রের প্রতি পিতার ন্যায় আশ্বাস করা যায়, সেই মিত্র, তদ্ভিন্ন অন্য লোকদিগের সহিত কেবল মিত্রতা-সম্বন্ধ হয় মাত্র। সম্বন্ধ বা উপকারাদি কোন প্রকার বন্ধনে সম্বন্ধ না হইয়াও যে কোন বাক্তি মিত্রভাবে ব্যবহার করেন, তিনিই বন্ধু, তিনিই মিত্র, তিনিই গতি, তিনিই পরায়ণ অর্থাৎপরম বিশ্বাস-ভাক্ষন। পণ্ডিত-সেবায় পরাত্মুথ চলচিত্ত স্থূলবুদ্ধি পুরুষের মিত্র সংগ্রহ কর। নিয়তই অনিশ্চিত। হংসগণ যেমন শুষ্ক সরোবর পরিত্যাগ করিয়া যায়, সেইৰূপ ইন্দ্রিয়-বশানুগামী অনাত্মবান্ চপল-চিত্ত মনুষ্যকে অর্থ-সকল অতিক্রম করে। চঞ্চল জলদের ন্যায় অসাধু লোকদিগের স্বভাবই এই যে, তাহারা অকস্মাৎ কুপিত হয় এবং বিনা কারণেই প্রসন্ন হইয়া থাকে।

যাহার। মিত্রগণ-সমীপে সংকৃত ও কৃতকার্য্য হইরাও ভাঁহাদের উপকার সম্পাদন না করে, তাদৃশ কৃতম্ব নরাধমেরা মৃত হইলেও মাংসভোজী জন্তুগণ তাহা-দিগকে ভক্ষণ করে না।

ধন থাকুক বা নাই থাকুক, মিত্রগণের অর্চ্চনা অবশাই করিবেক; অর্চ্চনা না করিলে তাঁহাদিগের সারবতার বা অসারতার•পরিচয় পায় না।

সন্তাপে ৰূপ নফ হয়; সন্তাপে বল ক্ষীণ হয়; সন্তা-পে জ্ঞানদ্র ইন্ড; সন্তাপে ব্যাধিপ্রস্ত হইতে হয়। যে নিমিন্ত শোক করা যায়, শোক-দ্বারা তাহাও পাওয়া যায় না, শরীরকেও সন্তপ্ত করা হয়, এবং তাহাতে শক্ররাও হর্ষ প্রাপ্ত হইয়া থাকে; অতএব আপনি শোকে কদাচ মন করিবেন না। দেখুন, মন্ত্র্যা পুনঃপুন মৃত ও জাত হয়, পুনঃ পুন হাস ও রিদ্ধি প্রাপ্ত হয়, পুনঃ পুন হাস ও রিদ্ধি প্রাপ্ত হয়, পুনঃ পুন গ্রাক্ত হয়, এবং পুনঃপুন শোক করে ও শোচিত হইয়া থাকে। স্থুখ ছঃখ, শুভাশুভ, লাভালাভ ও জীবন মরণ সকলকেই পর্যায়ক্রমে স্পর্শ করে; অতএব ধীর ব্যক্তি তাহাতে হৃষ্টও হইবেন না, শোকও করিবেন না।

মনুবোর শ্রোত্রাদি এই ছয়টি ইন্দ্রিয় নিতাই চঞ্চল; তাহাদিগের মধ্যে যেটি যে যে বিষয়ে বর্দ্ধিত হয়, সেই সেই বিষয় হইতেই, ছিদ্রকুম্ভ হইতে জল নির্গমনের ন্যায়, তাহার বৃদ্ধি নিয়ত বিগলিত হইতে থাকে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, দাহ্যবস্তু প্রাপ্ত হইলে, অপপ অগ্নিও যেমন প্রুবল হইরা উঠে, সেইৰূপ তপ্স্যায় কৃশ হইলেও উন্নত-প্রভাবশালী রাজা যুধিন্তিরকে আমি কপট-ব্যবহারে প্রবঞ্চিত করিয়াছি; স্বতরাং তিনি যুদ্ধ-ছারা আমার মন্দবৃদ্ধি পুত্রগণের নিঃশে-যে বিনাশ করিবেন। এইৰূপ ভাবনায় আমার পক্ষে সকলই নিয়ত উদ্বেগ-পূর্ণ বোধ হইতেছে;— আ-মার মন নিত্য উদ্বিগ্ন রহিয়াছে; অতএব হে মহা-মতে! যে পদ উদ্বেগ-শূন্য তাহাই আমারে বল!

বিছুর কহিলেন, হে কল্যাণিন্! বিদ্যা ও তপস্যা ভিন্ন, ইন্দ্রি-নিগ্রহ ভিন্ন এবং সমাক্ প্রকারে লোভ ত্যাগ ভিন্ন আর কিছুতেই আপনকার শান্তি দেখি-তেছি না। লোকে বুদ্ধি-দারা ভয়াপনোদন করে, তপস্যা-দ্বারা মহৎ বস্তু লাভ করে এবং গুরুশুক্রাবা-দ্বারা জ্ঞান ও যোগ-দ্বারা শান্তি প্রাপ্ত হয়। মোক্ষ-পथावलधी मानवर्गन मानकना श्रुना कि विद्याल श्रुना আত্রম না করিয়া শুদ্ধ রাগদ্বেম-বিনির্মাক্ত হইয়াই সংসারে বিচরণ করেন। স্থন্দর ^১অধ্যয়নের, স্থন্দর যুদ্ধের, স্থকৃত কর্ম্মের এবং স্থতপ্ত তপস্যার স্থখ পরিণামে রৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। হে রাজন্! ভেদপ্রাপ্ত মনুষ্যেরা স্থন্দর আন্তরণ-যুক্ত স্থথকর শ্যা প্রাপ্ত হইয়াও কথন স্থথে নিদ্রা যাইতে পারে না, রমণী-নিকরেও রতি লাভ করিতে পারে না এবং স্থত মাগধ বন্দীগণ-কর্তৃক স্তুত হইয়াও ছখে পায় না। ভেদগ্রস্ত মানবগণ কম্মিন্ কালেও ধর্মাচরণে সমর্থ হয় না, স্থুখ লাভ করিতে পারে না, গৌরব প্রাপ্ত হয় না এবং শান্তি লাভেও স্পৃহা করিতে পারে না। হিতকর বাক্যে তাহাদিগের রুঠি হয় না এবং অলক বিষয়ের লাভ ও লব্ধ বিষয়ের রক্ষা করাও তাহা-দের ঘটিয়া উঠে না। হে মনুজেন্দ্র ভেদ প্রাপ্ত লোকদিগের বিনাশ ভিন্ন আর অন্য গতি নাই। যেমন গোধনে ক্ষীরাদি সম্পত্তি হওয়া সম্ভব, ত্রাহ্মণে তপস্যা मस्रवनीयां, अवैश नातीभर्ग हांभला मस्रवभत्न, সেইৰূপ জ্ঞাতি হইতেও ভয় সম্ভাব্য। সমপরিমাণ, বছসংখ্যক হুক্ষা হুক্ষা আয়ত তম্ভ-সকলও বছত্ব-প্রযুক্ত তম্ভবায়ের বেমাঘাতাদি যে বছ ক্লেশ সহ করিয়া থাকে, ইহাই সাধু জ্ঞাতিদিগের উপমা। হে ভরতর্বভ ধৃতরাষ্ট্র! জ্ঞাতিগণ দগ্ধ কাষ্ঠের ন্যায় পৃথক্ পৃথক্ হইলে ধূমায়িত হয় এবং সমবেত হই-লেই প্রজ্বলিত হইয়া উঠে। যাহারা গো, ব্রাহ্মণ, ত্রী ও জ্ঞাতিগণের উপরে শৌর্য্য প্রকাশ করে, তাহারা রুম্ভ হইতে পক্ষ-ফলের ন্যায় অচিরেই

শালী ও স্থপ্রতিষ্ঠিত হইলেও, সমীরণ বল-পূর্ব্বক কণ কালের মধ্যেই তাহাকে ক্ষেত্রের সহিত বিমর্দিত করিতে পারে; কিন্তু যে সমস্ত মহীরুহ অনেকে একত্র-সমবেত হইয়া স্থপ্রতিষ্ঠিত থাকে, তংসমুদায় পরস্পার আগ্রিত হওয়ায় অতি বেগশালী
বায়ু সকলকেও সহ্থ করিয়া থাকে। অতএব পবন
যেমন একজাত মহীজের সহজেই নিধন-সাধন করে,
সেইৰূপ একাকী কোন মনুষ্য অশেষ গুণ-নিকরে
সমন্বিত হইলেও শক্ররা তাহার পরাভব অনায়াসসাধ্য বিবেচনা করে। সরোবরে পক্ষজ-পুঞ্জের ন্যায়
জ্যাতিগণ পরস্পার সম্মেলন ও পরস্পার আগ্রেয় দানদারাই সম্বর্দ্ধিত হয়। গো, ব্রাহ্মণ, জ্যাতি, শিশু,
নারী, শরণাগত ও যাহাদিগের অন্ন ভোজন করা
যায়, ইহারা সকলেই অবধ্য।

হে রাজন্! সধনতা ভিন্ন মনুযোর কোন গুণই শোভা পায় না; পরস্কু আতুর না হইলেই আপনকার মঙ্গল হইতে পারে, যেহেতু রোগীরা মৃতের তুল্য। মহারাজ! অব্যাধি-জনিত স্বভাব সিদ্ধ দ্বেষ এক প্রকার শিরংপীড়াকর, পাপ-ফলোপধায়ক মহাকটু নিরতিশয় ক্রেশ-দায়ক তীক্ষ্ণ ও উষ্ণ বিষস্থাকাই পেয়, অসাধুলোকেরা কখনই তাহা পান করিতে পারে না; অতএব আপনি সেই দ্বেষ-বিষ পান করিয়া প্রশান্ত হউন। রোগাতুর মনুষ্যগণ ধনাদি কল-সকলের প্রতি আদর-পরায়ণ হয় না এবং বিষয়-সমূহেও রতি লাভ করিতে পারে না। তাহারা প্রতিনিয়তই ছংখিত;—না অর্থসন্তোগ না স্বর্খ, কিছুই অনুভব করিতে সমর্থ হয় না

হে ভরতর্বভ ধৃতরাষ্ট্র ! জ্ঞাতিগণ দক্ষ কাষ্ঠের ন্যায় হে রাজন্ ! পূর্বের দ্রৌপদীরে দ্যুতে পরাজিত। পূথক পৃথক হইলে ধুমায়িত হয় এবং সমবেত হই দেখিয়া আমি আপনাকে বলিয়াছিলাম, 'পণ্ডিলেই প্রজ্বলিত হইয়া উঠে। যাহারা গো, ব্রাহ্মণ, তেরা অক্ষক্রীড়ায় প্রতারণা পরিহার করেন, অত-ব্রী ও জ্ঞাতিগণের উপরে শৌর্যা প্রকাশ করে, এব আপনি ছুর্য্যোধনকে নিবারণ করুন;' কিন্তু তাহারা বৃদ্ধ হইতে পক্ষ-কলের ন্যায় অচিরেই আপনি আমার সে বাক্য প্রাহ্থ করেন নাই। মার্দ্দব পতিত হয়। একাক্ষী সঞ্জাত কোন বৃক্ষ সূর্হৎ বল-ব্যাহি বিরোধী হয়, তাহা বলই নহে; বল ও

मार्फर वह विमिष्णिত स्थान धर्मातरे जनना कता কর্ত্তবা; নিরবচ্ছিন্ন ক্রুরতা অবলয়ন করিলে অবি-লয়েই রাজলক্ষীর বিধংস হয়; যে রাজতী মৃত্তা ও উগ্রতা উভয়কেই আত্ময় করে, তাহাই পুত্র পৌত্র পরম্পরায় সঞ্চরণ করে। অতএব হে রাজন্! আপনকার পুজেরা পাগুবদিগের প্রতিপালন করুন এবং পাণ্ডু-তনয়ের ও আপনকার নন্দনগণের সং-রক্ষণ করুন; এইৰপে সমশক্রমিত্র হওয়ায় কৌরব ও পাওবগণ মহাসমৃদ্ধ হইয়া পরমস্থথে জীবন যাপন করুন। হে আজমীঢ়! এক্ষণে আপনিই কৌরবদিগের মেধি, অর্থাৎ প্রধান আশ্রয়-স্থান হই-शाष्ट्रन ; এই कूरूकूल आপनकात्रहे अधीन तहि-য়াছে; অতএব হে তাত! স্বকীয় যশঃস্তম্ভ রক্ষা করত বনবাস-প্রতপ্ত বালক পাণ্ডবদিগকে প্রতি-পালন करून। ए कुरू-व्यवत नवरमव! जार्शन পাণ্ডবগণের সহিত সন্ধি করুন। শত্রুরা যেন আপন-কার ছিদ্র প্রার্থনা না করে। হে নরেন্দ্র ! পাণ্ডু-তন-য়েরা সকলেই সত্যে অবস্থিত আছেন, একণে আ-পনি ছুর্যোধনকে সেই সত্যপথে স্থাপিত করুন।

> বিছুর-হিত্তবাক্যে ষট্ত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৬॥

বিতুর কহিলেন, হে বিচিত্রবীর্যাঙ্গজ, রাজেন্দ্র!
আপনকার কল্যাণোদ্দেশে আমি আরও কিঞ্চিৎ
বলিতেছি, শ্রবণ করুন। স্বয়য়ৢ-নন্দন ময়ু পশ্চাত্রক্ত
এই সপ্তদশ প্রকার মনুষ্যকে মুটি-দ্বারা আকাশে
আঘাতকারী, অপরিণমনীয় শক্রধনুর নমনকারী
এবং গ্রহণাযোগ্য স্থর্য্য-কিরণের গ্রহণকারী বলিয়া
উল্লেখ করিয়াছেন। হে মরেন্দ্র! যে ব্যক্তি অশাস্য
লোককে শাসন করে, যে রোষপরবশ হয়, যে শক্রকে অতিমাত্র ভজনা করে, যে কামিনীদিগকে রক্ষা
করিতে প্রয়াস পায়, যে অযাচ্য লোকের নিকটে
যাক্রা করে, যে আজ্লাঘা করে, সদ্বংশে জিয়য়া
যে ব্যক্তি অকার্যার অমুষ্ঠান করে, বলহীন হইয়া

যে ব্যক্তি বলশালীর সহিত নিত্য-বৈরিতাচরণ করে, যে অপ্রকালারী ব্যক্তিকে কোন কথা বলে, যে অকাম্য বস্তুর কামনা করে, শ্বশুর হইয়া যে বধুর প্রতি অন্যের পরিহাসে অনুমোদন করে, বধুর দারা বীত-ভয় হইয়া যে মানব মান-কামী হয়, য়ে পরক্ষেত্রে বীজ বপন করে, যে স্ত্রীকে অতিশয় নিন্দা করে, যে লাভ করিয়াও " স্মরণ নাই " এই কথা বলে, পূর্কো দান করিয়া পশ্চাৎ প্রার্থিত হইলে যে শ্লাঘা করে, এবং যে অসত্যের শত্যন্ত প্রতিপাদনে যত্ন করে, এই সপ্তদশ পুরুষকে পাশহস্ত যম-কিক্করেরা নরকে লইয়া যায়।

যে মানুষ যাহার প্রতি যেৰূপ ব্যবহার করে, তাহার প্রতিও ঐ ব্যক্তি সেইৰূপ ব্যবহার করিবে, ইহাই ধর্ম। যে ব্যক্তি কপটাচারী হয়, তাহার সহিত কপট-ব্যবহার করা এবং যিনি সদাচারী হন, তাঁহার সহিত সদাচরণ করাই বিধেয়।

জরা ৰূপ হরণ করে, আশা থৈর্যা লোপ করে, মৃত্যু প্রাণ হরিয়া লয়, অস্থ্য়া থর্মাচরণের ব্যাঘাত জন্মায়, কাম লজ্জাভ্রফ করে, অসাধুসেবা চরিত্র নফ করে, ক্রোধ শ্রীবিলোপী হয়, কিন্তু অভিমান সকলই লোপ করিয়া দেয়।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যথন সকল বেদ-মধ্যেই পুরুষ শতায়ু বলিয়া উক্ত হইয়াছে, তথন কি নিমিত্ত লোকে সমস্ত আয়ুঃ প্রাপ্ত না হুয় ?

বিদ্বর কহিলেন, হে নরাধিপ! অভিমান, অতিবাদ, অত্যাগ, ক্রোধ, আত্মস্তরিতা ও নিত্রদ্রেই, এই ছয়টি স্থতীক্ষ্ণ অসি-স্বৰূপ হইয়া দেহিনিবহের আয়ুশ্ছেদন করে; ইহারাই মানবগণের নিধন-সাধন হয়, মৃত্যু নহে; অতএব ইহাই বিবেচনা করিয়া আপনি কল্যাণ লাভ করুন।

হে ভারত! যেব্যক্তি বিশ্বস্তলোকের দার হরণ করে, যে গুরুপদ্বীগামী হয়, দ্বিজ হইয়া যে শূদ্রাণী-পতি ও মদ্যপায়ী হয়, যে ব্রাহ্মণগণের আদেশকাল্লক, প্রেষক বা বৃত্তিহস্তারক হয়, আর যে শরণাগত বক্তিকে বধ করে, ইহারা সকলেই ব্রহ্মঘাতীর সমান। শ্রুতি আছে যে, ইহাদিগের সহিত সংসর্গ হইলেও প্রায়শ্চিত্ত করা কর্ত্তবা।

পণ্ডিতগণের বাক্য গ্রহণ-কারী, নীতিজ্ঞ, বদান্য, শেষায়ভোজী, অবিহিংসক, অনর্থকর কার্য্যে অনিপুন, ক্তজ্ঞ, সত্য, মৃতু ও বিদ্বান্ পুরুষ সর্গে গমন করেন। হে রাজন্! প্রিয়কাদী মনুষ্য-সকল সততই স্থলত; কিন্তু অপ্রিয় অথচ পথ্য বাক্যের বক্তা ও খ্যোতা উভয়ই ছুর্লত। যে ভূত্য ক্তর্তার প্রিয় অপ্রিয় পরিহার করিয়া শুদ্ধ ধর্মমাত্র অবলয়ন-পূর্ব্বক অপ্রিয় পথ্য বাক্য-সকলের উল্লেখ করে, তাহার দ্বারাই রাজা যথার্থ সহায়-সম্পন্ন হয়েন।

কুল রক্ষার নিমিত্তে তত্রত্য কোন এক পুরুষকে পরিত্যাগ করিবেক; গ্রাম রক্ষার নিমিত্তে কুল ত্যাগ করিবেক; জনপদ রক্ষার নিমিত্তে গ্রামও পরিত্যাগ করিবেক; আত্ম-রক্ষার্থে পৃথিবী পর্য্যন্ত পরিত্যাগ করিবেক। আপছুদ্ধারের নিমিত্তে ধন রক্ষা করিবেক; ধনসমূহ-দারাও দারা রক্ষা করিবেক; পরম্ভ ধন ও দারা উভয়-দারাই আত্মাকে সতত রক্ষা করিবেক। এই যে দ্যুতক্রীড়া, ইহা পূর্বেকশ্পে মা-নবগণের বৈরকর দৃষ্ট হইয়াছে; অতএব বুদ্ধিমান্ বাক্তি পরিহাসের নিমিত্তেও দ্যুতসেবা করিবেন না। হে রাজন্ ধৃতরাষ্ট্র! আমি দ্যুতকালেও বলিয়া-ছिলाম 'ইश यूक्तियूक नरह;' किस रह देविहि ववीर्या! পীড়িতের পথ্য ঔষধের ন্যায়, আপনকার সেই বাক্যে রুচি হয় নাই। হে নরেক্র ! আপনি ধার্তরাষ্ট্ররপ काकशन-कर्ज्क विविध वर्ष्युक श्रुख्व मश्रुत्रमिशतक পরাজিত করাইতে উংস্কুক হইতেছেন,—সিংহসকল পরিত্যাগ-পূর্বক শৃগালদিগকে রক্ষা করিতেছেন, কিন্তু কালপ্রাপ্তে অবশাই শোক-পরায়ণ হইবেন।

হে তাত! যিনি হিত-কার্য্যে নিরত প্রভুতজ্ঞ ভূত্যের প্রতি সর্বদা কোপ প্রকাশ না করেন, ভূত্যেরা তাদৃশ ভর্তার প্রতিই বিশ্বাস করিয়া থাকে এবং আপদ্কালেও তাঁহাকে পরিত্যাপ করে না। ভূত্যবর্গের র্ত্তি-নিরোধ-দ্বারা অপূর্ব্ব রাজ্যধন সংগ্রহের অভিলাষ করিবেক না, কেন না বঞ্চিত ও ভোগবিহীন হইলে স্নেহান্থিত অমাতোরাও বিরুদ্ধ হইয়া প্রভূকে পরিত্যাগ করেন।

পূর্বে কর্ত্তব্য কর্মসমস্ত, আয়, ব্যয় ও অমুরূপ রত্তি
নিরূপিত করিয়া পশ্চাৎ উপযুক্ত সহায়-সমগ্র সংগ্রহ
করিবেক; যেহেতু তুম্কর কার্য্য-সকলও সহায়-বলে
সিদ্ধ হইয়া থাকে।

যিনি ভর্তার অভিপ্রায় জানিয়া নিরালস্য হইয়া
সমস্ত কার্য্য করেন এবং হিতবক্তা, অনুরক্ত, মহান্ত্রভব ও শক্তিজ্ঞ হয়েন, তাঁহারে আত্মার নাায় অনুকম্পা করা কর্ত্তব্য । পরস্ত যেব্যক্তি আদিই হইয়া
কথা গ্রাহ্য না করে এবং নিযোজিত হইয়া যে অস্বীকার করে, তাদৃশ প্রজ্ঞাভিমানী ও প্রতিকূলবাদী
ভ্তাকে শীঘ্রই পরিত্যাগ করা বিধেয়। পণ্ডিতেরা
ভ্তাকে দর্প-রহিত, পুরুষকার-যুক্ত, সত্তরকর্মকারী,
সদয়, পরিছেয়, অন্য-কর্তৃক অহার্য্য, রোগশূন্য কুলে
উৎপন্ন ও উদার-বাক্য, এই অফ প্রকার গুণ সম্পন্ন
বলিয়া ব্যাখ্যা করেন।

বিশ্বাস-প্রযুক্ত অসময়ে পরের গৃহে বিজ্ঞাপন করিয়াও কথন গমন করিবেক না; রাত্রিকালে প্রা-স্পনে লুক্কায়িত থাকিবেক না এবং রাজকমনীয়া কামিনীরে কদাচ প্রার্থনা করিবেক না।

মন্ত্রণাসিদ্ধ বিষয়ের অপলাপ করিবেক না; পরস্ত যে ব্যক্তি অনেকের সহিত মন্ত্রণা করে এবং কুসং-সর্গে থাকে, তাহার নিকটে কোন কারণ প্রদর্শন-পূর্বক ছল করিয়া মন্ত্রণা প্রদানে বিরত হইবেক, 'তোমারে বিশ্বাস করি না' এ কথা কদাচ বলি-বেক না।

করুণাবান্, রাজা, পুংশ্চলী, রাজভ্তা, পুত্র, ভ্রাতা, বালপুত্রা বিধবা, সেনাজীবী ও হৃতসম্পত্তি, ইহারা ঋণাদানাদি ব্যবহারে বর্জনীয়।

প্রজ্ঞা, কুলীনতা, দম, শাব্রজ্ঞান, পরাক্রম, মিত-ভাষিতা, যথাশক্তি দান ও ক্রতজ্ঞতা, এই আটটি গুণ পুরুষকে সমুজ্জ্বল করিয়া দেয়। হে তাত!
একটি গুণ এই মহাকলোপধায়ক গুণ-সকলকে বলপূর্বক আশ্রয় করে। রাজা যদি কোন মন্ত্রেয়র
প্রতি সংকার প্রদর্শন করেন, তবে এই রাজসমাদর
ৰূপ গুণটিই উক্ত সমুদায় গুণ ধারণ করে।

স্নানশীল-বাক্তিকে বল, ৰূপ, স্বরশুদ্ধি, বর্ণবিশুদ্ধি,
স্পর্শ, গন্ধা, বিশুদ্ধতা, শ্রী, স্থকুমারতা ও বরারোহা
কামিনীগণ, এই দশটি গুণ ভজনা করে; আর পরিমিতাহারী পুরুষ ছয় গুণের ভাজন হইয়া থাকে;
তাহার আরোগা, আয়ৣ৽, বল ও স্থুখ হয়, সন্থানসন্থতি গুলি দোবশূন্য ও বলিষ্ঠ হয় এবং তাহাকে
কেহ ঔদরিক বলিয়া নিন্দা করে না।

অকর্মশীল, বছভোজী, লোকবিদ্বেষ-ভাজন, বছ-তর ছলনাকারী, নৃশংস, দেশকাল-পরিজ্ঞানে অন-ভিজ্ঞ ও অনিষ্টবেশকারী, এই সকল লোককে গৃহে বাস করাইবেক না।

রূপণ, আক্রোশকারী, অশাস্ত্রজ্ঞ, বনবাসী, ধূর্ভ, অমান্যমানী, নিষ্ঠুর-বাদী, দৃঢ়-বৈর ও রুতম্ব, ইহা-দিগকে অত্যন্ত পীড়িত হইলেও কখন যাক্রা করি-বেক না।

আততায়ী, অতিশয় প্রমাদী, নিত্য-মিধ্যাসক্ত, অদৃঢ়-ভক্তি, স্নেহ্শুন্য ও বছমানী, এই ছয় নরাধম-দিগকে সেবা করিবেক না।

অর্থ সকল সহায়নিবন্ধন এবং সহায়-সকলও অর্থ-নিবন্ধন; পরস্পর অমুবন্ধী এই ছুই বিষয় পরস্প-রের আশ্রয় ব্যতিরেকে সিদ্ধ হয় না।

উৎপাদন-পূর্ব্বক পুত্র সকলকে অঋণী করিয়া, তাহাদিগের কোন জীবিকা বিধান করিয়া এবং কুমারীগণকে উপযুক্ত স্থানে সংপ্রদান করিয়া পরি-শেষে অরণ্যবাসী হইয়া মুনি হইতে ইচ্ছা করিবেক।

প্রভুর কর্তব্য এই যে, যাহা সর্বস্থের হিতকর এবং আপনারও স্থাবহ হয় তাহাই করেন, বেহেভু ইহাই তাঁহার ধর্মার্থ সিদ্ধির সুল।

্রীহার বুদ্ধি, প্রভাব, তেন্স, সন্তু, উদ্যম ও ব্যবসায় । লক্ষীর ভাননা।

আছে, তাঁহার আর জীবিকার অভাব নিমিত্ত ভন্ন হইবে কেন ?

পাণ্ডবদিগের সহিত সংগ্রামে আপনি কতপ্রকার দোষ দেখুন, যাহাতে ইন্দ্র-সহ দেবতারাও ব্যথিত হইতে পারেন; একে ত পুত্রগণের সহিত শক্রতা তাহাতে নিতা উদ্বেগে বাস, যশঃপ্রণাশ ও শক্র-গণের হর্ষ। হে ইন্দ্র-সদৃশ। ভীন্মের, আপনকার, দ্রোণাচার্য্যের এবং রাজা যুধিষ্ঠিরের কোপ প্রবৃদ্ধ হইলে, আকাশে•বক্রভাবে পতিত ধুমকেভুর ন্যায়, এই সমস্ত লোকের ধংসোৎপাদন করিতে পারে। আপনকার শত পুত্র, কর্ণ ও পঞ্চ পাণ্ডব, ইহাঁরা সাগরায়রা অথিল বিশ্বস্তরার অনুশাসন করিতে সমর্থ। হে রাজন্! আপনকার পুজেরা বন-স্বৰূপ আর পাণ্ডু-তনয়েরা ব্যাঘ্র-স্বৰূপ হইয়াছেন; অতএব ব্যাঘ্রযুক্ত বনকে ছেদন করিবেন না এবং ব্যাঘ্রেরাও যেন বন হইতে পরিভ্রম্ট না হয়। ব্যাঘ্রগণ ব্যতী্ত বন থাকিতে পারে না এবং বন ব্যতিরেকেও ব্যা-ঘ্রেরা থাকিতে পারে না ; কেননা, ব্যাঘ্রগণ-কর্তৃক বন রক্ষিত হয় এবং বন ব্যাছ্রদিগকে রক্ষা করে।

পাপচিত্ত মন্তুষ্যের। অন্যের দোষ জানিতে যে-ৰূপ ইচ্ছা করে, শুভময় গুণ-সমস্ত জানিবার নিমিত্ত সেৰূপ ইচ্ছুক হয় না।

অর্থে পরমা সিদ্ধি ইচ্ছা করত অথ্যে ধর্মাচরণ করিবেক; যেহেতু স্বর্গলোক হইতে অমৃতের ন্যায়, ধর্ম হইতে অর্থ কখন অপগত হয় না। যাঁহার আত্মা পাপ হইতে বিরত এবং কল্যাণে নিবেশিত হইয়াছে, তিনি,এই অখিল সংসারের তত্ত্বক্ত হইনরাছেন;—প্রকৃতি আর যে বিকৃতি তাহা তিনিই জানিয়াছেন। যিনি যথাকালে ধর্মা, অর্থ ও কামের সেবা করেন, তিনি ইহলোকে ও পরলোকে মিলিড ধর্মার্থ-কামের অধিকারী হন। হে রাজন্! যিনি ক্রোধ ও হর্ষের সমুখিত বেগকে সমাক্রপে নিরোধ করেন এবং যিনি আপদ্কালে বিমুগ্ধ না হন তিনিই

পুরুষের পঞ্চ প্রকার বল নিত্যকাল প্রসিদ্ধ;
আপনকার মঙ্গল হউক, আপনি তৎসমুদায় আমার
নিকটে প্রবণ করুন। মহারাজ! যাহা বাছবল
বলিয়া প্রসিদ্ধ তাহাকে কনিষ্ঠ বল বলে; মিত্রলাভকে দ্বিতীয় বল বলা যায়; পশুতেরা ধনলাভকে
তৃতীয় বল বলেন; মনুষ্যের পিতৃপিতামহ-সম্প্রীয়
স্বাভাবিক যে বল, অভিজাত-নামক সেই বল চতুর্থ
বল বলিয়া স্মৃত হয়। হে ভারত! যে বল সকল
বলের প্রেষ্ঠ, যাহার দ্বারা উক্ত সমুদায় বল সংগৃহীত
হয়, তাহাকে প্রজ্ঞাবল বলে।

যে ব্যক্তি মন্তুষ্যের মহান্ অপকার করিতে সমর্থ হয়, তাহার সহিত বৈর-বন্ধন করিয়া "দূরস্থ আছি" এ মনে করিয়া আশ্বাস-যুক্ত হইবেক না। কোন্ মান্ মানব স্ত্রী, রাজা, সর্প, স্বাধ্যায়, প্রভু, শক্র,

ভোগ ও আয়ুর প্রতি বিশ্বাস করিতে প্রারেন ?

বুদ্ধি-বাণে অভিহত প্রাণীর চিকিৎসকও নাই ঔষধও নাই; তাহার পক্ষে হোমমন্ত্র, মঙ্গল কর্ম, অথর্বা মন্ত্র, কি পারদাদি অগদ, কিছুই স্কৃসিদ্ধ হয় না।

হে ভারত ! সর্প, অগ্নি, সিংহ ও কুলপুজ, ইহা-দিগকে অবজ্ঞা করা মন্ত্র্যোর কর্ত্তব্য নহে; যেহেতু रेशता मकत्वरे অভিতেজস্বী। त्वारक मरान् তেজঃ-পদার্থ অগ্নি কাষ্ঠ-মধ্যে লুক্কায়িত থাকে; যে পর্যান্ত অন্য-কর্ত্তৃক দীপিত না হয়, সে পর্যান্ত আর সে কাষ্ঠ-কে ভক্ষণ করে না; কিন্তু যথন নিষ্পেষণ-পূর্বক কাষ্ঠ হইতে দীপিত হয়, তথন সেই অগ্নিই তেজঃ-ছারা সেই কাষ্ঠ ও অন্য বনকে শীঘ্র নির্দহন করে। অনল-তুলা-তেজন্বী ক্ষমাশীল কুলীনেরাও অবিকল এইৰূপ; তাঁহারা বাহ্ন আকারের কোন বৈলক্ষণ্য क्षकाण ना कतिया कार्छ-मध्या अधित ना। अभाख-ভাবে অৰম্থিতি করেন, কিন্তু উত্তেজিত হইলেই স্বাভাবিক প্রভাব-পুঞ্জ প্রকটিত করিয়া থাকেন। হে রাজন্! আপনি পুত্রগণের সহিত একটি লতা-ন্ত্ৰপ, আর পাণ্ডু-তনয়েরা রক্ষ-স্বৰপ হইয়াছেন; মহারুক্ষকে আঞ্রয় না করিলে, লতা আর কখন বর্দ্ধিত হইতে পারে না। হে অম্বিকা-নন্দন! আপনি পুত্রগণের সহিত একটি বন-স্বৰূপ, আর পাগুবেরা তাহাতে সিংহ-স্বৰূপ হইয়াছেন; অতএব হে তাত! সিংহ-বিহীন হইলে বন যে বিনফ হয় এবং বন ব্যাতিরেকেও সিংহেরা যে বিনফ হইতে পারে, ইহা আপনি নিশ্চয় বোধগম্য করুন।

> বিহুর-হিতবাক্যে সপ্তত্তিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৭॥

> > ----

বিছর কহিলেন, রহ্ধ আইলে যুবকের প্রাণ উর্দ্ধে উৎক্রমণ করে, পরে প্রত্যুত্থান ও অভিবাদন-দারা তাহা পুনরায় প্রাপ্ত হয়; অর্থাৎ কোন প্রাচীন সম্ভ্ৰান্ত লোক গৃহে সমাগত হইলে, যুবক গৃহস্ব্যাক্ত সসম্ভুমে মহাব্যাকুলিত হয়, পশ্চাৎ তাঁহার সমুচিত সৎকারাদি করিয়া স্বস্থিলাভ করে। ধীর পুরুষ অভ্যাগত সাধু ব্যক্তিকে অত্যে আসন প্রদান করিয়া জলানয়ন-পূর্ব্বক পাদ-প্রকালন করাইয়া কুশল জি-জ্ঞাসানন্তর আপন অবস্থা বিজ্ঞাপন করিবেক; পশ্চাৎ সমাক্ৰপ অবেক্ষণ-পূৰ্ব্বক অন্ন প্ৰদান করি-বেক। পণ্ডিতেরা বলেন, মন্ত্রাভিজ্ঞ পুরুষ যাহার গৃহে লোভ ভয় বা কার্পণ্য-হেতুক গো, মধুপর্ক ও জল গ্রহণ না করেন, তাহার জীবন র্থা; অর্থাৎ গৃহস্থ হইয়া যে ব্যক্তি লোভাদি পরতন্ত্র হইয়া অভ্যা-গত মান্য লোককে যথাযোগ্য অতিথি-সৎকার প্রদান না করে, সে নিতান্ত পাষগু।

চিকিৎসক, শল্য-নির্মাণ-কারী, নিয়ম এই, চৌর, কুর, মদ্যপায়ী, এণহত্যাকারী, সেনার্জীবী ও বেদ-বিক্রায়ক অতিথি, জলদানের যোগ্য না হইলেও অতিশয় প্রিয়, অর্থাৎ জামাতা-প্রভৃতির ন্যায় পূজনীয়।

লবণ, পরু অল্ল, দধি, ক্ষীর, মধু, তৈল, মৃত, তিল, মাংস, কল্মূল, শাক, রঞ্জিত বস্ত্র, সর্ব্ব প্রকার গল্প-দ্রব্য ও ঋড়, এই সকল বস্তু ব্রাক্ষণের অবিক্রেয়।

बाँश्रंत्र निक्रिं लाखे था इत कि कांक्षन मकल है

সমান, যিনি রোষ-শূন্য, শোক-রহিত, বিগত-সন্ধি-বিগ্রহ ও নিন্দা প্রশংসায় বিরত হইয়া উদাসীনের ন্যায় প্রিয়াপ্রিয় পরিহার করত বিচরণ করেন, তিনিই তিক্ষুক। নীবার মূল ইকুদ শাক-প্রভৃতি উদ্ভিজ্জ-দ্বারা ঘাঁহার জীবিকা নির্বাহ হয়, ঘাঁহার আত্মা স্থন্দরকপে সংযত হইয়াছে, ঘাঁহারে আ্মি-কার্য্যে নিয়োগ করা ঘাইতে পারে, যিনি বনে বাস করিয়াও অতিথিগণের প্রতি অপ্রমন্ত থাকেন, তা-দৃশ পুণ্যকারী ব্যক্তিই তাপস-ধুরন্ধার।

বুদ্ধিশালী লোকের অপকার করিয়া " দূরস্থ আছি " এৰপ ভাবিয়া আশ্বস্ত হইবেক না; কেননা বুদ্ধিমানের বাস্ত্যুগল স্থানীর্ঘ; তিনি হিংসিত হইয়া, হিংসকেরা দূরে থাকিলেও তদ্ধারা তাহাদিগকে হিংসা করেন।

বিশ্বাসানর্থ ব্যক্তিকে বিশ্বাস করিবেক না এবং বিশ্বাসযোগ্য ব্যক্তিকেও অতিশয় বিশ্বাস করিবেক না; কেননা বিশ্বাস হইতে ভয় উৎপন্ন হইয়া, যে বিষয়ে বিশ্বাস করা যায়, তাহার মূল-সকল পর্যান্তও ছেদন করিতে পারে।

ঈর্ঘা-খূন্য হইবেক, জ্রীকে যত্ন-পূর্ব্বক রক্ষা করি-বেক, সকলকে সংবিভাগ করিয়া দিবেক, সকলের প্রেয়বাদী হইবেক এবং ভার্যারে নিকটে পরিচ্ছন্ন ও মিউভাষী হইবেক, কিন্তু তাহাদিগের বশবর্ত্তী হইবেক না। পণ্ডিতের। পূজাযোগ্যা, পবিত্রা, গৃহের শোভা-স্বরূপা, মহাভাগা পত্নীদিগকে গৃহ-লক্ষ্মী বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন, অতএব তাঁহাদিগকে বি-শেষ-ৰূপে রক্ষা করা কর্ত্ব্য।

পিতাকে অন্তঃপুর, মাতাকে পাকশালা, আর আত্মতুলা কোন লোককে গো-রক্ষণের ভার দিবেক, ভূত্যবর্গ-দারা বাণিজ্য-কার্যা ও পুত্রগণ-দারা দিজ-সেবা করাইবেক এবং আপনিই ক্ষিকর্মে গমন করিবেক

জল হইতে অনলের, ব্রাহ্মণ হইতে ক্ষজ্রিয়ের এবং প্রস্তর হইতে লোহের উৎপত্তি হইয়াছে; তাহাদিগের তেজ অন্য সকল স্থানেই সঞ্চারিত হইয়া থাকে, কিন্তু স্বীয় স্বীয় যোনিতে লয় প্রাপ্ত হয়।
পাবকসম-তেজস্বী, সচ্চরিত্র ক্ষমাশীল কুলীনেরা
বাহ্য আকারের কোন বৈলক্ষণ্য প্রদর্শন না করিয়া
কাষ্ঠ-মধ্যে অগ্নির ন্যায় নিয়ত প্রশান্তভাবে অবস্থিতি করেন।

কি বহিশ্চর কি অন্তরঙ্গ কেহই যাঁহার মন্ত্রণা জা-নিতে না পারে, সর্বতিদশী সেই মহীপতি চিরকাল ঐশ্বর্যা-সম্ভোগ করেন।

धर्मार्थ-कारमारक्रात्म (य ममस कर्म कतिए**० ह**हेर्द, তৎসমুদায় অত্থে প্রকাশ করিবেক না; ক্লত হইলেই দেখাইবেক; এৰূপ করিলে আর মন্ত্রভেদ হয় না। গিরিপৃষ্ঠে বা বিজন-প্রাসাদে আরোহণ করিয়া অথবা ভূণ-মাত্র ব্যবধান-খূন্য অর্ণ্য-মধ্যে অবস্থিত হইয়া মন্ত্রণা করা বিধেয়। হে ভারত! যে ব্যক্তি স্থহ্নদ্ না হয়, কিংবা স্থন্ছ হইয়াও যদি অপণ্ডিত হয়, অথবা পণ্ডিত ও স্থক্ত্ হইয়াও যদি আত্মবশ না হয়, তবে তাদৃশ মন্ত্র্য্য উৎক্রফ মন্ত্রণা জানিবার যোগ্য নহে। মহীপাল পরীক্ষা না করিয়া কাহাকেও আপনার অমাত্য করিবেন না; কেননা অমাত্য-বর্গের উপরেই অর্থলিপ্সা ও মন্ত্ররক্ষণ নির্ভর করে। **थाँ हाর ধর্ম্ম, অর্থ ও কাম-বিষয়ে যাবতীয় কার্য্য অমু**-ষ্ঠিত হইলেই পারিষদেরা জানিতে পারে, সেই রাজাই সর্কোৎক্রফ রাজা। মান্ত্রিত বিষয় গুপ্ত থা-কায় তাদৃশ নরপতির নিঃসন্দেহ সিদ্ধি লাভ হইয়া থাকে। মোহ-প্রযুক্ত যে ব্যক্তি অপ্রশস্ত কার্য্য-সম-ত্তের অনুষ্ঠান করে, সে সেই সেই কার্য্যের বিপরি-ণানে জীবিত হইতেও পরিভ্রম্ট হয়। প্রশন্তকর্ম-সকলের অনুষ্ঠান স্থথাবহ হয়; আর তৎসমুদায়ের অননুষ্ঠানই পশ্চান্তাপের হেতু হইয়া থাকে। যেমন বেদাধ্যয়ন না করিয়া ত্রাহ্মণ আছে-যোগ্য হয় না, তদ্রপ যাহার যাড়্গুণ্য অর্থাৎ রাজ্য রক্ষণের উপ-যোগী সক্ষি-বিগ্রহাদি ছয় উপায় একত না হইয়াছে, সে মন্ত্র শ্রবণের যোগ্য হইতে পারে না।

হে রাজন ! স্থিতি র্জি ও হ্লানের অভিজ্ঞ, বাড়-গুণ্য-বেদী, সমাদৃত-চরিত্র মহীপালের পৃথিবী স্থা-ধীনা হয়।

যাঁহার ক্রোধ ও হর্ষ র্থা না হয়, যিনি কর্ত্তব্য কর্ম-সমস্ত স্বয়ং পর্য্যালোচন করেন এবং আপন প্রত্যায়ের অধীনে কোষ রক্ষা করেন, তাঁহার সম্বন্ধে বস্তুস্কারা নিশ্চয়ই বস্তুপ্রদায়িনী হয়।

কেবল নাম ও ছত্রমাত্র-দ্বারাই মহীপতি তুই হইবেন; অর্থ-সমস্ত ভূত্যদিগকে সমিভাগ করিয়া দিবেন, একাকীই সর্কাহারী হইবেন না।

যেমন ব্ৰাহ্মণ ব্ৰাহ্মণকে জানেন, ভৰ্ত্তা স্ত্ৰীকে জানন, নৃষ্পতি অমাত্যকে জানেন, সেইৰূপ রাজাই রাজাকে জানেন।

শক্র বধ্যতা প্রাপ্ত হইয়া বশায়ত্ত হইলে তাহাকে
নিষ্কৃতি দেওয়া কর্ত্তব্য নহে। হীন-বল হইয়া বধার্হশক্রকে সর্ব্যতোভাবে উপাসনা করিবেক, কিন্তু বল
প্রাপ্ত হইলেই বধ করিবেক; কেননা নিহত না
করিলে তাহা হইতে অচিরেই ভয় উৎপন্ন হয়।

দেবতা, রাজা, ব্রাহ্মণ, রহ্ম, বালক ও আতুর, এই সকলের প্রতি প্রযত্ন-সহকারে সর্বাদা ক্রোধের সংযম করিবেক।

প্রজ্ঞাবান্ মানব মূঢ়জন-সেবিত অনর্থক কলছ পরিত্যাগ করিবেন; তদ্ধারা তিনি লোক-মধ্যেও কীর্ত্তি লাভ করিতে পারেন এবং অনর্থেও যুক্ত হন না।

কামিনীগণ যেমন ক্লীব পতিকে ইচ্ছা করে না, সেইৰূপ ঘাঁহার প্রসাদ নিক্ষল এবং ক্রোধও নির-থক, তাদৃশ ব্যক্তিকে প্রজারা স্বামী করিতে অভি-লাষ করে না।

বুদ্ধিও ধনলাভের নিমিপ্ত নহে এবং আলস্যও অসমৃদ্ধির কারণ নহে; লোক-পর্য্যায়-বৃত্তান্ত প্রাক্ত ব্যক্তিই জানেন, ইতরে তাহা জানিতে পারে না; অর্থাৎ দৈব ও প্রাক্তন কর্মকেই পণ্ডিতেরা লোকর শুভাশুভ প্রাপ্তির হেতু বলিয়া নির্দেশ করেন।

হে ভারত! সুঢ়লোকে বিদ্যার্জ, শীল-র্জ, বয়ো-র্জ, বুজি-র্জ, ধন-র্জ ও কৌলীন্যর্জ মমুষ্যদিগকে নিতাই অবমাননা করে। হীন-চরিত্র, অপ্রাজ্ঞ, অস্থ-য়াকারী, অধার্মিক, তুইভাষী ও ক্রোধন ব্যক্তিকে শীঘ্রই অনর্থ আশ্রয় করিয়া থাকে।

অবঞ্চন, মর্যাদার অমুল্লজ্ঞান ও সম্যক্ প্রণিহিত অর্থাৎ হিতকর বাক্য-সমস্ত প্রাণিবর্গকে বশীভূত করে।

অবঞ্চক, দক্ষ, ক্লতজ্ঞ, মতিমান্ ও সরল মনুষা সর্বতোভাবে ধনহীন হইলেও পরিবারণ লাভ করেন অর্থাৎ সর্বত্রেই বরণীয় হন।

ধৈর্যা, শম, দম, শৌচ, কারুণা, অনিষ্ঠুর-বাকা ও মিত্রগণের অনভিচ্ছোহ, এই সাতটি লক্ষীর উদ্দীপক।

হে নরাধিপ! যে ব্যক্তি অসংবিভাগী অর্থাৎ ভূত্য-বর্গে বন্টন না করিয়া স্বয়ং সর্বহারী, চুফাত্মা, ক্লতন্ন ও নির্ল্পক্ত হয়, লোক-মধ্যে তাদৃশ নরাধমকে পরি-ত্যাগ করা কর্ত্ব্য।

যে ব্যক্তি স্বরং সদোষ হইয়া কোন নির্দ্ধোষ অস্থ-রঙ্গ লোককে কোপিত করে, সে সসর্প-গৃহবার্দার ন্যায় রাত্রিকালে স্থাখে শয়ন করিতে পারে না।

হে ভারত! যাহারা দূযিত হইলে যোগকেমের দোষোৎপত্তি হয়, তাহাদিগকে দেবতাদিগের ন্যায় সর্বাদা প্রসাদিত করিবেক।

যে সকল অর্থ স্ত্রী, প্রমন্ত, পতিত ও অনার্য্য-লোকের হস্তগত হইয়াছে, সে সকলই সংশয় প্রাপ্ত হইয়াছে; অর্থাৎ তাদৃশ অর্থের বিনাশ অবশাস্তাবী। হে রাজন্! স্ত্রীলোক, ধূর্ভ অথবা বালক যাহ্য-দিগের শাসনকারী হয়, তাহারা অবশ হইয়া, নদীতে প্রস্তর-নির্মিত উড়ুপের ন্যায়, নিম্ম হয়।

হে ভারত! যাঁহারা বিশেষ অর্থাৎ অবাহর প্রয়োজন সমুংস্কুক না হইয়া মুখ্যপ্রয়োজন সাধনে উদ্দুক্ত হন, তাঁহাদিগকেই আমি পণ্ডিত বলিয়া মানি; কেননা বিশেষ সমস্ত প্রসঙ্গক্রমেই সিদ্ধ হইয়া থাকে। বঞ্চক, নর্ভক অথবা কুলটা কামিনীরা যাহাকে

প্রশংসা করে, সে মানব আর জীবিত থাকে না; অর্থাৎ তাহাকে অবশ্যই প্রতারণা-জালে আবদ্ধ হইতে হয়।

হে ভারত! আপনি সেই পরম ধয়ুর্দ্ধারী অমিত-তেজস্বী পাওবদিগকে পরিত্যাগ করিয়া ছুর্য্যোধনের উপরে মহৎ ঐশ্বর্যা বিনাস্ত করিয়াছেন, কিন্তু লোকত্রয় হইতে বলির ন্যায়, সেই ঐশ্বর্যামদ-বিমোহিত
কুদ্রাশয়কে অচিরেই তাহা হইতে পরিভ্রম্ট দেখিবেন।

विष्ठ्त-वादका अस्वितिश्य असाम्र ममाश्व ॥ ७৮ ॥

গৃতরাপ্ত কহিলেন, ঐশ্বর্যা বা অনৈশ্বর্যা বিষয়ে এই পুরুষ স্থাত্ত প্রথিতা কাষ্ঠময়ী পুত্তলিকার ন্যায় ক্ষমতাহীন; বিধাতা ইহাকে ভাগ্যের বশবর্তী করি-য়াছেন; অতএব তুমি বল আমি শ্রবণে তৎপর আছি।

বিদ্বুর কহিলেন, হে ভারত! অপ্রাপ্ত কালে বা-কোর প্রদক্ষ করিলে রহস্পতিও মুর্থতাপবাদ ও অবসান প্রাপ্ত হন। কেহ দান-দ্বারা প্রিয় হয়, কেহ প্রিয় বাক্য-দ্বারা প্রিয় হয়, কেহ বা মন্ত্র ও ঔষধ-দারা প্রিয় হইয়া থাকে ; কিন্তু যে স্বভাবতঃ প্রিয়, সে প্রিয়ই থাকে। ছেষা ব্যক্তি কখন সাধু, মেধাবী বা পশ্তিত বলিয়া গণা হয় না; যেহেতু প্রিয়পাত্তে যাবতীয় শুভকার্য্য এবং দ্বেষ-ভাজনে পাপকর্ম-সমস্ত দৃষ্ট হইরা থাকে। হে রাজন্! ছুর্য্যোধন জন্মিবা-মাত্রেই আমি আপনাকে বলিয়াছিলাম, 'আপনি এই একটি পুত্রকে ত্যাগ করুন; ইহার পরিত্যাগে শত পুজের বৃদ্ধি আর অপরিত্যাগে শত পুজের র্ন্ধির প্রতি আদর করা কর্তব্য নছে; পরম্ভ যে ক্ষয় বৃদ্ধি আনয়ন করে, সেই ক্ষয়ের প্রতিও বছমান कता विर्पत्त । महाब्रांक ! य कत्र वृक्ति जानम्रन करत्र, তাহা কর নয়; কিন্তু যাহা লাভ করিয়া বছবিনাশের হেতু হয়, ভাহাকেই ক্ষয় বলা যায়।

কেহ কেহ গুণ-ছারা কেহ কেহ বা ধন-ছারা সমৃদ্ধ হইয়া থাকে; হে ধৃতরাষ্ট্র! আপনি গুণহীন ধন-সমৃদ্ধদিগকে পরিত্যাগ করুন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, তুমি সকলই প্রাজ্ঞজন সম্মত, উত্তরকাল-হিতকর বাক্য বলিতেছ; পরস্ক পুত্রকে ত্যাগ করিতে আমার উৎসাহ হইতেছে না; তুমি ইহা নিশ্চয় জান, যেখানে ধর্ম সেই খানেই জয়।

বিত্বর কহিলেন, নিরতিশয় গুণ-সম্পন্ন বিনয়ান্বিত ব্যক্তি ভূতবর্গের স্থাপে মাত্র উপমর্দ্ধও কথন উপেক্ষা করেন না। পরাপবাদে নিরত সতত উপ্থানশীল মনুষ্যের। পরের ছুংখোদয়ে ও পরস্পার বিরোধ-বিষয়েই যত্ন-পরায়ণ হয়।

যাহাদিগের দর্শনে দোষ, সহবাসে স্থমহৎ ভয়, অর্থগ্রহণে মহান্ দোষ এবং প্রদানেও মহৎ ভয় হইয়া থাকে ; যাহার। ভেদনশীল, কামী, নির্লক্ত্র শঠ, তাহারাই পাপাত্মা বলিয়া বিখ্যাত এবং সহবাসে পরিগহিত। যে সকল মনুষ্য এতদ্ভিন্ন অন্যান্য মহা-দোষ-সমূহে লিগু হয়, তাহাদিগকেও পরিত্যাগ করা বিধেয়। নীচলোকে যে প্রীতি, ফল-নিষ্পত্তি ও সৌহার্দ-নিবন্ধন স্থথ, তাহা সৌহার্দ্দ নিবর্ত্তিত হইলেই প্রনন্ট হইয়া য়য়; তখন সে পূর্বে স্ক্লেদের অপবাদ ও বিনাশ সাধন নিমিত্ত য়ত্র করিতে আরম্ভ করে, এবং নিজের অপ্প মাত্র অপকার কৃত্ত হইলে মোহ-প্রযুক্ত শান্তি অবলয়ন করিতে পারে না। অতএব বিদ্যান্ মানব বুদ্ধি-সহকারে বিলক্ষণ বিবেচনা করিয়া দূর হইতেই তাদৃশ নৃশংস অক্তক্তর নীচলোক-দিগের সহিত সৌহার্দ্দ পরিত্যাগ করিবেন।

যিনি দরিদ্র, দীন ও আতুর জ্ঞাতিকে অনুগ্রহ করেন, তিনি পুত্র ও পশুবর্গ-দ্বারা রৃদ্ধি এবং অনন্ত কল্যাণ লাভূ করেন।

যাঁহার। আন্মার শুভ ইচ্ছা করেন, জ্ঞাতিগণকে বর্দ্ধিত করা তাঁহাদিগের কর্ত্তব্য; অতএব হে রাজ্জে আপুনি সর্বতোভাবে কুলবর্দ্ধন করুন; জ্ঞাতিবর্গের সংকার করিলে পরম কল্যাণযুক্ত হইবেন।

হে ভরতর্ষভ! জ্ঞাতিগণ গুণহীন হইলেও সমাক্ প্রকারে রক্ষণীয়; আপনকার প্রসাদাকাক্ষী গুণ-শালী পাণ্ডবদিগের কথা আর কি আছে? অতএব হে বিশাম্পতে! সেই কুরুবীর পাণ্ডবদিগের প্রতি প্রসন্ন হউন। হে প্রভো! তাঁহাদিগের জীবিকা নি-মিত্ত কতকগুলি কুদ্র কুদ্র গ্রাম দান করুন। হে नतारिष ! এकथ कतिरल जांथनि लांक-मर्या यर्गा-লাভ করিবেন। হে তাত! আপনি রুদ্ধ; অতএব পুত্রদিগের রক্ষা করা আপনকার কর্ত্তব্য এবং আ-মারও হিত-বাকা বলা উচিত; আমাকে আপনকার হিতৈথী বলিয়াই জানিবেন। হে ভরতর্ষভ! ঐশ্ব-র্য্যাভিলাষী ব্যক্তির জ্ঞাতিগণের সহিত বিগ্রহ করা কর্ত্তব্য নছে; যাবতীয় স্থ্থ-সমস্ত জ্ঞাতিদিগের সহিত সম্ভোগ করাই বিধেয়। জ্ঞাতিবর্গের সহিত একত্র ভোজন, পরস্পর সমালাপ ও সম্প্রীতি কঁরাই কর্ত্তব্য; বিরোধ করা কদাচ বিধেয় নহে। সংসারে জ্ঞাতি-রাই উদ্ধার করে এবং জ্ঞাতিরাই নিমগ্ন করিয়া দেয়; যাঁহারা সচ্চরিত্র হন, তাঁহারাই উদ্ধার করেন, আর যাহার। তুর্কৃত্ত হয়, তাহারাই নিমগ্ল করে। অতএব হে মানপ্রদ রাজেন্দ্র ! পাণ্ডবদিগের প্রতি সচ্চরিত্র হউন; তাঁহাদিগের ছারা পরির্ত হইলে আপনি শক্রগণের অধর্ষণীয় হইবেন।

মৃগ যেমন বিষ-লুপ্ত-শরধারী অর্থাৎ বিনাশ-হেতু ব্যাধকে প্রাপ্ত হইয়া বিনক্ত হয়, সেইৰূপ যে কোন শ্রীসম্পন্ন জ্ঞাতিকে প্রাপ্ত হইয়া কোন জ্ঞাতি অবসন্ন হয়, সে ঐ অবসন্ন জ্ঞাতির পাপভাগী হইয়া থাকে। হে নরশ্রেষ্ঠ! হয় পাগুবদিগকে না হয় পুত্রদিগকে নিহত শুনিয়া আপনকার অবশ্যই পশ্চান্তাপ হই-বে; অভএব এক্ষণে তাহা চিন্তা করুন। যথন জীব-নের স্থিরতা নাই, তখন অগ্রেই সেই কর্ম্ম পরিত্যাগ করিবেক, যদ্বারা, খট্টায় সমাৰ্চ থাকিয়া, পরিতাপ করিতে না হয়। শুক্রনাচার্য্য ভিন্ন অন্য কোন পুরুষ ক্থন অপরাধ করে না এমন নহে; কিন্তু শেবের কর্মন অপরাধ করে না এমন নহে; কিন্তু শেবের কর্মন অপরাধ করে না এমন নহে; কিন্তু শেবের কর্মনান্ত বুদ্ধিমান্ লোকেতেই বর্তে; অর্থাৎ

শুক্রাচার্য্য যেমন কুবেরের ধন-হরণাপরাধে রুজ-কর্তৃক ভক্ষিত হইয়া দশ সহস্র বৎসর তাঁহার কুক্ষি-মধ্যে অবস্থিত ছিলেন, পরে রুদ্রাণীকে স্তুতি-দ্বারা পরিতুষ্টা করিয়া তাঁহার সাহায্যে মুক্তি পাইয়াছি-লেন, সেইৰূপ আপনি অন্যায় দ্যুত-দ্বারা পাণ্ডব-দিগের রাজ্য-হরণে অমুমোদন করিয়া সংপ্রতি যাহাতে সকল দিক্ রক্ষা হয় তাহা করুন। হে নরে-শ্বর! আপনি কুলের মধ্যে প্রবীণ; অতএব চুর্য্যো-ধন পূর্বের পাণ্ডবদিগের প্রতি যে কিছু পাপাচরণ করিয়াছেন, এক্ষণে আপনিই তাহার অপনয়ন করুন। হে নরভোষ্ঠ। তাঁহাদিগকে স্ব-পদে প্রতিষ্ঠা-পন-পূর্বক বীতপাপ হইয়া আপনি মনীযিগণের পূজনীয় হইবেন। যিনি পণ্ডিতগণের স্কভাষিত সমস্ত ফলামুসারে পরিচিন্তন করিয়া কার্যো অধা-বসায় করেন, তিনি চিরকাল যশে প্রতিষ্ঠিত থা কেন। স্থনিপুণ মানবেরাও জ্ঞানের সমাক্ উপ-যোগিতা প্রাপ্ত হইতে পারেন না; কেননা যাহার উপলব্ধি হইড়ে পারে, তাহাও অবিদিত থাকে এবং বিদিত বস্তুও অননুষ্ঠিত রহে। যে বিদ্বান্ পুরুষ পাপ-ফলোপধায়ক কর্ম্মের আরম্ভ না করেন, তিনি বর্দ্ধিত হন; কিন্তু যে ব্যক্তি বিবেচনা না করিয়া পূর্ব্বকৃত পাপের অন্মবর্তী হয়, সেই চুর্মেধা মন্তুষ্য অগাধপক্ষযুক্ত বিষমতর আপদ্সাগরে নিপাতিত হইয়া থাকে।

বুদ্ধিমান্ মানব মন্ত্রভেদের পশ্চাতুক্ত এই ছয়টি দার লক্ষ করিবেন এবং অবিচ্ছেদে অর্থ-সম্পত্তি রৃদ্ধি করিবার কামনা থাকিলে নিত্যই এই কয়েকটি রক্ষা করিবেন। মন্ততা, নিজা, শক্রনিয়োজিত গুপ্ত-চরাদির অবিজ্ঞান, আত্ম-সম্ভূত আকারভঙ্গীবিশেষ, ছুই অমাত্যে বিশ্বাস ও অকুশল দূত, এই সকল হইতে মন্ত্রভেদ হইয়া থাকে। ধর্মার্থ-কামের অন্ধু-ষ্ঠানে নিমুক্ত যে মহীপতি মন্ত্রভেদের এই সমস্ত দার অবগত হইয়া সর্বাদা তৎসমুদায় সংবৃত রাখেন, তিনি শক্রগণের মন্তব্বে অধিষ্ঠান করেন।

বিশেষ ৰূপে শাস্ত্র না জানিয়া অথবা প্রবীণগণের সেবা না করিয়া রহস্পতি-ভুল্য লোকেরাও ধর্মার্থ-পরিজ্ঞানে সমর্থ হন না।

সমুদ্রে পতিত বস্তু নই হয়; অশ্রবণকারীর নিকটে বাক্য নই হয়; অযত্মশীল মুড়জনে শাস্ত্র নই হয়; আর অনগ্নিক হুত অর্থাৎ ভক্ষে আহুতি নই হয়।

মেধাবী ব্যক্তি যুক্তি-ছারা পরীক্ষা করিয়া বুদ্ধি-ছারা বারংবার যোগ্যতা নিশ্চয় করিয়া, দেখিয়া, শুনিয়া ও বিশেষৰূপে জানিয়া প্রাজ্ঞগণের সহিত মিত্রতা করিবেন।

বিনয় অকীর্ত্তি নন্ট করে; পরাক্রম অনর্থের অপ-নয়ন করে; ক্ষমা নিতাই ক্রোধ নাশ করে; আর আচার অলক্ষণ লোপ করিয়া দেয়।

হে রাজন ! যানবাহনাদি পরিচ্ছদ, জন্মস্থান, গৃহ, পরিচর্যা, ভোজন ও আচ্ছাদন-দ্বারা কুলের পরীক্ষা হয়।

কামাবস্তু উপস্থিত হইলে জীবনুক্ত পুরুষেরও তাহাতে প্রতিবাদ অর্থাৎ ভোগের স্থানিচ্ছা হয় না ; যে ব্যক্তি কামানুরক্ত তাহার কথা আর কি আছে ? রাজদেবী, বিদ্যাবান, ধার্ম্মিক, প্রিয়দর্শন, মিত্র-

ছুদ্ধুল-জাতই হউন বা কুলীনই হউন, যিনি মর্যা।
দার উল্লঙ্জন না করেন এবং ধর্মাপেক্ষী, মৃতু-স্বভাব
ও লক্ষ্যাশীল হন, তিনি শত শত কুলীন অপেক্ষা
শ্রেষ্ঠ।

শালী ও স্থভাষী স্থহদকে পরিপালন করিবেক।

যাঁহাদের চিত্তের সহিত চিত্ত, শান্তভাবের সহিত শান্তভাব এবং প্রজ্ঞার সহিত প্রজ্ঞা মিলিতা হয়, তাঁহাদের ছুইজনের মিত্রতা আর কথনই জীণা হয় না।

মেধাবী পুরুষ, ছুর্বৃদ্ধি ও অক্তজ্ঞ ব্যক্তিকে তৃণ-চ্ছন্ন কূপের ন্যায় পরিত্যাগ করিবেন; কেননা তাদৃশ মনুষ্টেতে যে মিত্রতা, তাহা শীদ্রই প্রন্থ হইয়া থাকে।

পণ্ডিত ব্যক্তি গৰ্বিত, মুৰ্থ, উগ্ৰ-স্বভাব অবিমৃষ্য-

কারী ও ধর্মচ্যুত মনুষ্যদিগের সহিত মিত্রতা করি-বেন না।

ক্লতজ্ঞ, ধার্মিক, সত্য, উদারচিত্ত, দৃঢ়ভক্তি, জি-তেন্দ্রিয়, মর্যাদায় অবস্থিত ও আপদ্কালে অপরি-ত্যাগী, এইৰূপ মিত্রই প্রার্থনীয়।

ইন্দ্রিরবর্গের অসরিচালন মৃত্যু হইতে অবশিষ্ট,
অর্থাং শব্দাদি বিষয়-নিকরে ইন্দ্রিয় সকলের নিয়োগ
না করা, আর নিজ্জীব থাকা উভয়ই তুলা; কিন্তু
সাতিশয় আসক্তি বশত তৎসমুদায়ের অতিরিক্ত পরিচালন করিলে দেবতারাও উৎসাদিত হন।

সমুদয় প্রাণিবর্গের প্রতি মৃদ্ধুতা, অনস্থয়া, ক্ষমা, ধৃতি ও মিত্রগণের মাননা, এই কয়েকটিকে পণ্ডি-তেরা আয়ুষ্কর বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন।

স্থনিশ্বল সংকণ্প অবলম্বন করিয়া যিনি ছুর্নীতিদূষিত অর্থনৈ স্থনীতি-দারা প্রত্যানয়ন করিতে
ইচ্ছা করেন, তাঁহারই অকাপুরুষত্রত, অর্থাৎ তাদৃশ
পুরুষই পুরুষকারত্রতে যথার্থক্রতী।

যে মানব উত্তরকালে প্রতিকারক্ত, বর্ত্তমানে দৃঢ়-নিশ্চয় এবং অতীতে কার্যা-শেষ-পরিজ্ঞানে সমর্থ হন, তাঁহাকে অর্থ-সকল কথন পরিত্যাগ করে না।

কর্মা, মন ও বাক্য-দারা পুনঃপুন যাহার অনুবর্ত্তন করে, তাহাই মনুষ্যকে অপহরণ করিয়া থাকে; অতএব যাহাতে কল্যাণ হয়, তাহারই অনুষ্ঠান করিবেক।

মাঙ্গলিক কর্মের অনুষ্ঠান, সহায়-সম্পত্তি, শাস্ত্র-জ্ঞান, উদ্যম, সরলতা ও সাধুগণের পুনঃপুন দর্শন, এই সকলই ঐশ্বর্যা-সাধন করে।

অনির্বেদ অর্থাৎ স্থাবমাননা-পূর্বেক বিরক্ত না হইয়া কার্য্যে আসক্তি করাই এ, লাভ ও মঙ্গলের মূল; অনির্বিন্ন পুরুষ মহান্ ও অনস্ত স্থ্য-সম্ভোগী হয়েন।

হে তাত! প্রভাবশালী পুরুষের সর্বত কমা করা অপেক্ষা অধিকতর শ্রীযুক্ত ও পণ্যতম আর কিছুই নাই। অশক্ত মমুষ্য, সকলের প্রতিই ক্ষমা করিবেক; শক্তিমান্ মানব ধর্মের নিমিত্ত ক্ষমাব-লম্বী হইবেন; অপিচ যাঁহার অর্থ ও অনর্থ উভয়ই তুল্য, তাঁহার পক্ষে ক্ষমা নিত্যই শ্রেয়স্করী।

যে স্থথের সেবনে নিয়ত প্রবৃত্ত হইলেও পুরুষ ধর্ম ও অর্থ হইতে পরিভ্রুষ্ট না হয়, তাহা যথেক্ট-ৰূপে সেবা করিবেক; মূঢ্ত্রতাচরণ অর্থাৎ ভোজনাদি বিষয়েই একান্ত আসক্তি কুরিবেক না।

জুঃথার্ড, অতিশয় ধীর, নাস্তিক, অলস, অজিতে-ন্দ্রিয় ও উৎসাহ-খূন্য মনুষ্য-সকলেতে লক্ষ্মী বর্সতি করেন না।

মৃত্তা-প্রযুক্ত লক্ষান্থিত সারল্যযুক্ত মনুষ্কেক কুবুদ্ধি লোকেরা অশক্ত মনে করিয়া ধর্ষণ করে। লক্ষ্মী অতিশয় উদার-স্বভাব, অতিরিক্ত দাতা, অতিমাত্র শৌর্যাশালী, অতিশয় ব্রতশীল ও প্রজ্ঞা-ভিমানী মনুষ্যের নিকটে ভয়-প্রযুক্ত গমন করেন না। এই লক্ষ্মী অতিশয় গুণ-বিশিষ্ট লোকেতেও অবস্থিতি করেন না এবং অত্যন্ত নির্গুণেও প্রতি-ষ্ঠিতা হন না; পরস্ত উন্মন্তা গবীর ন্যায় অক্ষা অর্থাৎ যোগ্যত্বাযোগ্যন্ত-বিবেক-বিহীনা হইয়া কোন অনি-

বেদ-সকলের কল অগ্নিহোত্র, শাস্ত্রজ্ঞানের কল শীলতা ও সচ্চরিত্র, পত্নীদিগের কল রতি ও পুত্র, আর ধনের কল দান ও সম্ভোগ।

र्फिके शूक्रस्वराज्ये व्यवश्वान करतन।

যে ব্যক্তি অধর্মাজ্রিত অর্থ-দারা উর্দ্ধদৈহিক অর্থাৎ পরকালের কর্ম করে, সে পরলোক-প্রাপ্ত হইয়া তাহার কল ভোগ করিতে পারে না; কেননা যে অর্থ-দারা তাহা নিষ্পাদিত হয়, তাহার আগমো-পায় অতিনিক্ষট।

স্ত্র-সম্পন্ন মানবগণের কি ছুর্গম পথ, কি গহন কানন, কি বিষমতর আপদ্, কি সম্ভ্রম, কি উত্থা-পিত শস্ত্র, কিছুতেই ভয় হয় না।

উদ্যম, সংযম, দক্ষতা, অপ্রমাদ, ধৃতি, শৃতি ও সমাক্ বিবেচনা-পূর্বক আরম্ভ, এই কয়েকটিকে আপনি এশ্বর্যোর মূল বলিয়া জানিবেন। তাপসদিগের বল তপস্যা; বেদজ্ঞগণের বল বেদ; অসাধুলোক-সকলের বল হিংসা; আর গুণশালী-দিগের বল ক্ষমা।

জল, ফল, মূল, ছুগ্ধ, ঘৃত, ব্রাহ্মণের কামনা, গুরু-বাক্য ও ঔষধ, এই আটটি অব্রতম্ব; অর্থাৎ জলাদি উক্ত ছয় দ্রব্য এবং ব্রাহ্মণের অনুরোধে বা গুরুর আজ্ঞাক্রমে কোন দ্রব্য ভক্ষণ করিলে ব্রতীদিগের নিয়মভঙ্গ হয় না।

যাহা আপনার প্রতিকুল, তাহা অন্যেতে সংযো-জিত করিবেক না, ইহাই সংক্ষিপ্ত ধর্ম ; এতদ্ভিন্ন অন্য ধর্মাও ইচ্ছানুসারে প্রবর্ত্তিত হয়।

অক্রোধ-দ্বারা ক্রোধ জয় করিবেক; সাধুতা-দ্বারা অসাধুকে জয় করিবেক; দান-দ্বারা রূপণকে জয় করিবেক; এবং সত্য-দ্বারা মিথা। জয় করিবেক। লম্পট, অলস, ভীয়, কোপন, পুরুষমানী, তয়র, রুতয় ও নান্তিক, এই সকল লোকে বিশ্বাস করি-বেক না।

অভিবাদনশীল ও নিয়ত র্দ্ধ-সেবী পুরুষের কীর্ত্তি, আয়ু, যশ ও বল, এই চারিটি সম্যক্-রূপে বর্দ্ধিত হইতে থাকে।

অতিশয় ক্লেশ, ধর্মের অতিক্রম অথবা শক্রর নিকটে প্রণিপাত-দ্বারা যে সকল অর্থ লব্ধ হয়, তং-সমুদায়ে আপনি মন করিবেন না।

বিদ্যাহীন পুরুষ, সম্ভতি-শূন্য মৈথুন, আহারবিহীন প্রজা ও অরাজক রাষ্ট্র, এই চারিটিই শোচনীয়।

দেহীদিগের জরা পথশুম; পর্বত-সকলের জরা জল-পাত; নারীগণের জরা অসম্ভোগ; এবং মনের জরা বাক্যৰূপ শল্য।

বেদের মল অনভ্যাস; ব্রাহ্মণের মল অনিয়ম;
পৃথিবীর মল বাহ্মীক দেশ; পুরুষের মল মিথ্যা;
সতীর মল কৌভূহল; স্ত্রীদিগের মল প্রবাস; স্থবর্ণের মল রৌপ্য; রৌপ্যের মল রঙ্গ; রঙ্গের মল
সীসক; আর সীসকের মল মল।

শর্ম-ছারা নিদ্রাকে, উপভোগ-ছারা জ্রীকে, কাষ্ঠ-

দারা অগ্নিকে এবং পান-দারা স্থরাকে জয় করি-বেক না।

যিনি দান-দারা মিত্রকে জয় করিয়াছেন, যুদ্ধে শত্রুদিগকে জয় করিয়াছেন এবং অয়-পান-দারা পত্নীগণকে জয় করিয়াছেন, তাঁহারই জীবন সার্থক।

সহস্রপতিরাও জীবিত থাকে এবং শতাধিকারীরাও জীবিকা নির্বাহ করে; অতএব হে ধৃতরাষ্ট্র!
আপনি অতিবাসনা পরিত্যাগ করুন; কোন ক্রমে
জীবন ধারণ করা না যায়, ইহা কোন প্রকারেই
সম্ভবে না। পৃথিবীতে যে কিছু ধান্য, যব, হিরণা,
পশু ও স্ত্রী-সমস্ত আছে, তৎসমুদায় এক জনের কথন
পর্যাপ্ত হইতে পারে না, ইহা বিবেচনা করিয়া বুদ্ধিনা
মান্ ব্যক্তি বিমুগ্ধ হন না। হে রাজন্! আমি পুনর্বার আপনাকে বলিতেছি, যদি নিজ পুত্র ও পাণ্ডুপুত্রগণের প্রতি আপনকার সমতা-বুদ্ধি থাকে, তবে
তাহাদিগের সকলের প্রতি সমান আচরণ করুন।

বিছুর-বাক্যে উনচত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৯॥

বিত্বর কহিলেন, যিনি সাধুগণ-কর্ত্ব পুজিত হইয়া অভিমান-পূন্য হৃদয়ে যথাশক্তি অর্থ সম্পাদন করেন, সেই সাধু পুরুষকে শীঘ্রই যশংকদম্ব আশ্রয় করে, কেননা সাধুরা প্রসন্ধ হইলে স্থখ-সম্পাদনে সমর্থ হইয়া থাকেন।

যিনি নিন্দিত হইবার পূর্বেই অধর্মযুক্ত বিপুল অর্থও পরিত্যাগ করেন, তিনি, জীর্ণকঞ্চুক-পরি-ত্যাগী সর্পের ন্যায়, ছুঃখ-সমস্ত পরিহার-পূর্বেক স্থথে অবস্থান করেন।

মিথ্যায় সমাক্ উৎকর্ষ, রাজার প্রতি কাপট্য, আর গুরুজনের নিকট অলীক-নির্বন্ধ অর্থাৎ মিথ্যা-চরণের প্রকাশোদ্যম, এই তিনটি ব্রহ্মহত্যার সমান। অস্থ্যা, হঠাৎ মৃত্যু ও অতিবাদ, এই তিনটি লক্ষীর বধ-সাধন; আর শ্রবণে অনিষ্ঠা, ত্বরা ও শ্লাঘা, এই তিনটি বিদ্যার শক্ত। আলস্য, মন্ততা-

নিবন্ধন মোহ, চপলতা, গোঠি অর্থাৎ ছুদ্ধুরা-নিমিন্ত অনেকের একত্র সমাবেশ, ঔদ্ধত্য, অভিমানিত্ব ও লুক্তব্ব, এই সাতটি বিদ্যার্থীদিগের দোষ। স্থথাভিলা-যীর বিদ্যা কোথার? বিদ্যাকাল্ফীর স্থথ নাই। স্থথার্থী হইলে বিদ্যা ত্যাগ করিবেক, বিদ্যার্থী হইলে স্থথ ত্যাগ করিবেক।

অগ্নি কাষ্ঠ-দারা তৃপ্ত হয় না; মহাসমুদ্র নদীনিবহদারা তৃপ্ত হয় না; যম সর্ব্ধপ্রাণী-দারাও পরিতৃপ্ত
হন না; এবং বাসলোচনা ললনাগণ পুরুষ-সমূহদারাও তৃপ্তি লাভ করেন না।

হে রাজন ! আশা ধৈর্য্য নাশ করে; ক্তান্ত সমৃদ্ধি নাশ করেন; ক্রোধ শ্রী-বিলোপী হয়; ক্রপণতা যশ অপনীত করে; অপালন পশুগণকে নই করে; কিন্তু একমাত্র ত্রাহ্মণ কুদ্ধ হইলে সমুদায় রাষ্ট্র বিনই করেন।

ছাগ, অশ্ব, কাংসা, রজত, মধু, আকর্ষ, পক্ষী, বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণ, র্দ্ধ জ্ঞাতি ও অবসন্ন বয়স্য, এই সকল নিয়তই আপনকার গৃহে অবস্থান করুক।

হে ভারত! মনু বলিয়াছেন, দেবতা ব্রাহ্মণ ও অতিথিগণের পূজা নিমিত্ত ছাগ, র্ষ, চন্দন, বীণা, দর্পণ, মধু, ঘৃত, লৌহ, তাম্রপাত্র, দক্ষিণাবর্ত্ত শস্থ্য, শালগ্রাম ও গোরোচনা, এই সকল দ্রব্য গৃহে স্থা-পিত করা কর্ত্তব্য; যেহেতু এ সমস্তই মঙ্গল-সাধন।

হে তাত! আপনাকে এই দার একটি মহাকলোপধারক সর্বোৎকৃষ্ট পুণ্য পদও বলিতেছি; কাম, ভর
বা লোভ-হেতুক, এমন কি, জীবনের নিমিত্তেও
কখন ধর্ম পরিত্যাগ করিবেক না। ধর্মই নিত্য,
স্থ-জুংখ অনিত্য; জীব নিত্য বটে, কিন্তু ইহার
হেতু অনিত্য; অতএব অনিত্য ত্যাগ করিয়া আপনি
নিত্য বস্তুতেই প্রতিষ্ঠিত হউন এবং তদ্ধারা সম্ভোষ
লাভ করুন; যেহেতু সম্ভোবই পরম লাভ। দেখুন,
মহাবল-সম্পন্ন মহানুভব নরেক্র-মকল ধনধান্যপূর্ণা
বস্তুদ্ধরা শাসন করিয়া বিপুল ভোগৈশ্বর্য ও রাজ্যসমস্ত পরিহার-পূর্বক কৃতাত্তের বশাসুগামী হইয়া-

ছেন। হে রাজন্! মমুষ্যেরা বহু ছুংখে প্রতিপালিত মৃত পুত্রকে স্বগৃহ হইতে উৎক্ষেপণ-পূর্বক শাশানে लंहेया यात्र अवर भूक्टर्कण हहेया करून चरत स्तापन করিতে করিতে তাহারে কাষ্ঠের ন্যায় চিতা-মধ্যে নিঃক্ষিপ্ত করে। অপর লোকে মৃত মনুযোর ধন ভোগ করে এবং বিহঙ্গণণ ও অগ্নি তাহার মেদ-মাংসাদি শরীর-ধাতু-সমস্তভক্ষণ করিয়া কেলে; কে-বল ছুইটি বস্তু পরলোকে তাহার সহচর হয় ;—পুণ্য ও পাপ, ইহারাই তাহারে বেষ্টন করিয়া থাকে; হে তাত ! পক্ষিগণ যেমন ফলপুষ্প-শূন্য বৃক্ষসকলকে পরিত্যাগ করে, সেইৰপ জ্ঞাতি, স্থৃহদ্ও পুজেরা মৃত ব্যক্তিকে পরিত্যাগ করিয়া নিবর্ত্তিত হয়। পুরুষ চিতানলে নিক্ষিপ্ত হইলে কেবল স্বরুত কর্মাই তাহার অনুগামী হইয়া থাকে; অতএব যত্নসহকারে ক্রমে ক্রমে ধর্মসঞ্চয় করাই জীবের কর্ত্তব্য ৷ হে রাজন্! এই লোকের উর্দ্ধে ও অধোভাগে ঘোরতর মহান্ অন্ধকার বিদ্যমান রহিয়াছে; তাহা ইন্দ্রিয়বর্গের মহামোহ-জনক; অতএব সাবধান হউন, যেন কোন ক্রমে তাহার আয়ন্ত না হন। এই সকল বাক্য শ্রবণ করিয়া যদি যথাবৎ প্রতিপাদন করিতে সমর্থ হন, তাহা হইলে আপনি জীবলোকে পরম যশ প্রাপ্ত আপনকার ভয় থাকিবেক না।

হে ভারত! আত্মা-একটি নদী-স্বৰূপ; পুণ্য তাহার তীর্থ, সত্য জল, ধৈর্য্য কূল এবং দয়া তরঙ্গ-স্বৰূপ হইয়াছে; সেই নদীতে স্নান করিয়া পুণ্যকর্মা পুরুষ পবিত্র হন; যেহেতু আত্মাই পবিত্রু, জল কেবল জল-মাত্র। আপনি দেহকে কাম-ক্রোধাদি-ৰূপ-কুন্তীর-বিশিক্টা পঞ্চেক্রিয়-ৰূপ-জল-যুক্তা নদী-স্বৰূপ জানি-য়া, য়ৃতিকে নৌকা-স্বৰূপ করিয়া জন্ম-ৰূপ-ভূর্গ-সমস্ত সন্তর্মণ করুন।

यिनि প্রজ্ঞার্দ্ধ, ধর্মার্দ্ধ, বিদ্যার্দ্ধ ও বয়োর্দ্ধ শ্ববন্ধুকে পুজা ও প্রসাদন-পূর্বক কার্য্যাকার্য্য জিজ্ঞা-সা করেন, ভিনি কদাপি মুগ্ধ হন না। থৈযা-ছারা শিশ্মেদের রক্ষা করিবেক; চক্ষ্রার। হস্ত পাদ রক্ষা করিবেক; মনোছারা চক্ষ্ কর্ণ রক্ষা করিবেক; এবং কর্মা-ছারা মন ও বাক্য রক্ষা করি-বেক।

ব্রাহ্মণ নিত্য উদক-ক্রিয়াকারী, নিত্য যজ্ঞোপ-ৰীতধারী, নিত্য স্বাধ্যায়ী, পতিতান্ন-ত্যাগী, সত্যবাদী এবং গুরুর উদ্দেশে কর্মকারী হইলে ব্রহ্মলোক হই তে পরিচ্যুত হন না। ক্ষজ্রিয় বেদাধ্যয়ন, অগ্নি-সং-স্তরণ, যজ্ঞ-যজন, প্রজা-পালন ও গো-ব্রাহ্মণ-রক্ষার্থে শস্ত্র সঞ্চালন-পূর্ব্বক অন্তরাত্মাকে পবিত্র করিয়া সং-প্রামে হত হইয়া স্বর্গে গমন করেন। বৈশ্য অধ্যয়ন করিয়া, ব্রাহ্মণ, ক্ষল্রিয় ও আঞ্রিতদিগকে যথাকালে ধন সংবিভাগ করিয়া, অগ্নিত্রস্-সংস্কৃত পবিত্র ধূম আঘ্রাণ করিয়া মরণোত্তর স্বর্গ লোকে দিব্য স্থখ-সমস্ত সম্ভোগ করেন। শূদ্র ব্রাহ্মণ, ক্ষল্রিয় ও বৈশ্য-সকলকে যথান্যায়ে পূজা করত সম্ভুট্ট করিয়া, বি-গতপাপ হইয়া দেহ-ত্যাগান্তে স্বৰ্গস্থখ ভোগ করে। আপনকার নিকটে চাতুর্ববর্ণ্যের এই ধর্ম বর্ণিত হইল; কিন্তু কিহেতু হইল, তাহা বলিতেছি, শ্রবণ করুন। হে রাজন্! যুধিষ্টির ফজিয়ধর্ম হইতে পরি-ভ্রক্ত হইতেছেন, অতএব আপনি তাঁহাকে রাজধর্মে নিয়ে|জিত করুন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সৌমা! তুমি আমাকে
নিত্য কাল যেৰপ অনুশাসন করিয়া থাক, তাহা
যথার্থই বটে এবং আমারও তাদৃশই মন হয়; কিন্তু
আমি পাগুবদিগের প্রতি সর্বাদা সেইৰূপ মতি করি
লেও ছুর্য্যোধনের নিকটস্থ হইলে পুনরায় আমার
বুদ্ধির পরিবর্ত্তন হইয়া পড়ে। ফলত কোন প্রাণীই
দৈবকে অতিক্রম করিতে পারে না; আমি দৈবকেই
ধ্রব জ্ঞান করি, পুরুষকার কোন কার্য্যকারক নহে।

বিছুর-বাক্যে চত্তারিংশ অধ্যায়

ममाश्च ॥ ८० ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে বিছুর! বদি ভোমার বা-

কোর কিছু অবশেষ থাকে, বল, আমার শুনিতে অভিলাষ হইতেছে, যেহেতু তুমি বিচিত্র বচনাবলির সন্তাষণ করিতেছ।

বিছুর কহিলেন, হে ভরত-নন্দন মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র!
সকল বুদ্ধিজীবিশ্রেষ্ঠ কৌমার-ব্রহ্মচারী পুরাতন সনাতন সনৎস্ক্রাত, যিনি " মৃত্যু নাই " এইৰূপ ব্যাথ্যান করিয়াছেন, তিনিই আপনকার হৃদয়গত গুঞ্
ও প্রকাশ্য সমুদয় সংশয় অপনীত করিবেন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সনাতন সনৎস্কৃজাত আমারে যে কথা বলিবেন, তুমি কি তাহা জান না? হে বিচুর! যদি তোমার বুদ্ধির অবশেষ থাকে, তবে তুমিই তাহা বর্ণন কর।

বিদুর কহিলেন, আমি শুদ্রোনিতে জন্মিয়াছি, অতএব এতদতিরিক্ত আর কোন কথা বলিতে আ-মার সাহস হয় না; পরস্ত কুমার সনৎস্ক্রজাতের যে বুদ্ধি, তাহাই আমি চিরস্থনী বলিয়া জ্ঞান করি। ব্রহ্ম-যোনিতে জন্ম গ্রহণ করিয়া যিনি অতিগুহ্ম বাক্য-সমস্তও ব্যক্ত করেন, তিনি তদ্ধারা দেবগণের নিন্দনীয় হ্রেন না; এই নিমিত্তই আমি আপনাকে এ কথা বলিতেছি।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, এই দেহ-দ্বারা ইহলোকেই সেই পুরাণ সনাতনের সহিত কিরূপে সমাগম হই-তে পারে, বল।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, হে ভারত! তথন বিদ্বুর সেই তীব্রত মহর্ষিকে চিন্তা করিলেন এবং তিনিও তাঁহার সেই চিন্তা জানিতে পারিয়া তথায় আবির্ভূত হইলেন। বিদ্বুর বিধি-বিহিত কর্ম-দ্বারা তাঁহারে সমাদর-পূর্বক গ্রহণ করিলেন এবং তিনি স্থাসীন ও বিজ্ঞান্ত হইলে এই কথা বলিলেন, ভগবন্! ধৃত-রাষ্ট্রের মনোমধ্যে কোন একটি সংশয় উপস্থিত হইয়াছে, তাহা ছেদন করিতে আমার সাধ্য নাই, অত্যব আপনিই ইহাঁরে বলুন। যাহা শ্রবণ করিয়া এই মন্ত্রেক্র ধৃতরাষ্ট্র সর্ব্যাক্রর দ্বংধ অতিক্রম করিতে পারেন এবং যাহাতে লাভ, অলাভ, প্রিয়, ছেষ্য, জরা, মৃত্যু, ভয়, অমর্ষ, কুধা, পিপাসা, মন্ততা, ঐশ্বর্য্য, অরতি, আলস্যা, কাম, ক্রোধ, ক্ষয় ও রৃদ্ধি ইহাঁরে বাধিত করিতে সমর্থ না হয়, তাহাই কীর্ত্তন করুন।

বিছুর-বাক্যে প্রজাগর প্রকরণ ও একচত্মারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৪১ ॥

সনৎস্থুজাত প্রকরণ।

বৈশম্পায়ন কছিলেন, অনন্তর মহাত্মা মনীষী মহীপতি ধৃতরাষ্ট্র সেই সকলধর্মধারিশ্রেষ্ঠ সনংস্থজাতকে সমাক্-ৰূপে পূজা করিয়া পরমা বুদ্ধি অর্থাৎ ব্রহ্মবিদ্যা অবগত হইতে অভিলাব করত একান্তে তাঁহারে জিজ্ঞাসিলেন, হে সনংস্থজাত! শুনিতে পাই, আপনি বলেন, "মৃত্যু নাই," কিন্তু দেবাস্থরেরা মৃত্যু না হইবার নিমিত্ত ব্রহ্মচর্য্যের আচরণ করিয়াছিলেন, অতএব মৃত্যু নাই এবং আছে, এই ছুই পক্ষের মধ্যে কোন্টি সত্য?

সনৎস্কলাত কহিলেন, হে রাজন্! কর্ম-দারা মৃত্যু হয় না, অর্থাৎ মৃত্যু আছে, কর্ম-বলে তাহা হইতে নিচ্ছৃতি পাওয়া য়য়, আর স্বভাবত মৃত্যু নাই, এই যে ছই পক্ষ জিজ্ঞাসা করিলে, তদিময়ে য়াহাতে তোমার সংশয় না হয়, তাহাই আমি ব্যক্ত করিতেছি, শ্রবণ কর। হে ক্ষজ্রিয়! জীবের অবস্থাভেদে এই ছইটিই সত্যু জানিবে। নমাহাধীন মৃত্যু হয়, ইহাই পণ্ডিতগণের সম্মত; অতএব আমি প্রমাদ অর্থাৎ আমৃত্যা-হেতু বলিয়া থাকি। প্রমাদ-প্রযুক্তই অস্থরেরা পরাভ্ত অর্থাৎ মৃত্যুর বশায়ত হইয়াছে এবং অপ্রমাদ-প্রযুক্তই দেবগণ বক্ষভাব লাভ করিয়াছেন। ফলত মৃত্যু কিছু ব্যাম্মের ন্যায় জস্তু-সকলকে ভক্ষণ করে না, কেননা তাহার ক্রপই উপলক্ষ হইতে পারে না।

কেহ কেহ উক্ত প্রমাদ-ৰূপ মৃত্যু-ভিন্ন ষমকে মৃত্যু বলিয়া বর্ণন করেন, কিন্তু তাহা আত্মার অবসাদ-

দশাতেই কল্পিত হইয়াছে; যেহেতু ব্ৰহ্মচৰ্য্য অৰ্থাৎ আত্মান্তুসন্ধান করিলে আর মৃত্যুর অধিকার ধাকে না। সেই কম্পিত মৃত্যু দেব শিবকর্মকারীদিগের পক্ষে শিব এবং অশিবকর্মকারীদিগের পক্ষে অশিব হইয়া পিতৃলোকে রাজ্য শাস্ন করিতেছেন। ইহাঁ-রই আদেশে মনুষাগণের ক্রোধ, প্রমাদ ও লোভ-ৰূপ মৃত্যু উৎপন্ন হইতেছে; লোকে অহঙ্কারের বশবর্জী হইয়াই কুপথে ভ্রমণ করিতেছে, কেহই আর আত্মযোগ অর্থাৎ স্বৰূপ প্রাপ্ত হইতেছে না। তাহারা মোহ-প্রযুক্ত ঐ ক্রোধাদ-ৰূপ মৃত্যুর বশী-ভূত হইয়া দেহ-ত্যাগান্তে সেই যম-লোকে বারংবার নরকে নিপতিত হয়; তৎকালে ক্রীড়াকর ইন্দ্রিয়-সকলও তাহাদিগের সহগামী হইয়া থাকে; এই নিমিত্তই অজ্ঞান মরণ-সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয়। কর্মফলা-নুরক্ত মানবেরা কর্মের কল-প্রাপ্তি-সময়ে দেহ-ত্যাগ-পূর্ব্বক ভোগ-সাধন স্বর্গাদি-স্থলে গমন করে, স্থতরাং মৃত্যুকে আর উদ্ভীর্ণ হইতে পারে না। দেহাভিমানী জীব, ব্ৰহ্ম-প্ৰাপ্তি-সাধন যম-নিয়মাদি যোগ প্রাপ্ত না হইয়া, কেবল ভোগ-যোগ অর্থাৎ ভোগলাভের বাসনাতেই উর্চ্চ, অধ ও তির্য্যগ্যোনি-ममूमारत প্রবর্ত্তিত হয়। পুরুষের মিথ্যা-বিষয়াসঙ্গে স্বাভাবিকী যে প্রবৃত্তি, তাহাই ইহার ইন্দ্রিয়বর্গের মহামোহ-জনক ; সঙ্কপ্পকৃত মিধ্যা-বিষয়-যোগ-ছারা অন্তরাত্মা নিয়ত অভিহত হওয়ায় পুরুষ সর্বতো-ভাবে অনুস্মরণ-পূর্বক কেবল বিষয়-সকলেরই উপা-मना करता विषय-विद्यारे अथरम लाक-मकलरक নিহত করিয়া কেলে, পরে কাম ও ক্রোধ ক্রমে ক্রমে তাহার অনুগামী হয়। বিব্যু-চিন্তা, কাম ও ক্রোধ, এই তিনে সমবেত হইয়া অবোধ মন্ত্র্যা-দিগকে শীঘ্রই মৃত্যু-সন্নিধানে লইয়া যায়; পরস্ক জিত-চিক্ত নিষ্কাম পুরুষেরা যোগাভ্যাস-রূপ ধর্মের সাহায্যে মৃত্যু হইতে পরিত্রাণ পান। ধৈর্য্য-সম্পন্ন বোগী পুরুষ উৎপতিত-বাসনাপুঞ্জ-দারা প্রতিবো-ধিত না হইয়া আত্মানুধ্যান করত তুচ্ছ জ্ঞানেই তং-

সমুদার নিহত করিবেন। যে বিশ্বান্ মানব এইৰপে কাম-সমস্ত বিনিহ্ত করেন, অজ্ঞান আরু যমের ন্যার হইরা তাঁহারে ভক্ষণ করে না। পুরুষ কামানু-সারী হইলে কামের সঙ্গে সঙ্গেই বিনফ হয়; পরস্ত কামনা-সকল পরিত্যাগ করিতে পারিলে, ছুংখ-রূপ যে কিছু রজোগুণ থাকে, সকলই দূর করিয়া দেয়। কামই প্রাণিবর্গের অজ্ঞান ও নরক-রূপে দৃষ্ট হই-তেছে; যেহেভু ইহাতে বিষয়-বিবেক-খূন্য হইয়া তাহারা অজ্ঞানের কার্য্য করত ছুঃখ পাইতেছে। মদমত্ত মনুবোরা পথে যাইতে যাইতে যেমন গর্ভযুক্ত প্রদেশে ধাবমান হয়, সেইৰূপ কামাসক্ত লোকেরা সংসারে বর্ত্তমান থাকিয়া আপাত-স্থপ্রপ্রদ ভার্য্যাদি বিষয়ের প্রতি ধাবমান হইতেছে। কাম-দারা গাঁহার চিত্ত অভিভূত হয় না, সেই অমূঢ়-রৃত্তি পুরুষের নিকটে মৃত্যু কি করিবে ? তাঁহার পক্ষে মৃত্যু তৃণ-নির্মিত ব্যাঘের ন্যায় অকিঞ্চিৎকর হয়; অতএব হে ক্ষত্রির! কামের আয়ু অর্থাৎ হেতুভূত মূল অজ্ঞান অপনোদন করিতে হইলে, কোনপ্রকার কামনারই গণনা বা অনুস্মরণ করিবেক না। ক্রোধ-লোভ-সম্বলিত ও মোহবান্ অর্থাৎ অনাত্মভূত দেহা-দিতে আত্মজান-বিশিষ্ট এই যে জীবাক্সা তোমার শরীরে বিদ্যমান রহিয়াছেন, ইনিই মৃত্যু; এইরূপে মৃত্যুর উৎপত্তি হয় জানিয়া মনুষ্য জ্ঞানে নিষ্ঠা করত মৃত্যু হইতে আর ভয় পায় না; কেননা মৃত্যুর গোচর প্রাপ্ত হইয়া দেহ যেমন বিনাশ প্রাপ্ত হয়, সেইৰূপ জ্ঞানের গোচর হইলে মৃত্যু স্বতই বিনষ্ট रुरेया याय।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, উপাসনা-বিশিষ্ট অশ্বমেধাদি
যজ্ঞ-দ্বারা দ্বিজ্ঞাতিগণের যে সমস্ত পুণ্যতম সনাতন লোক-প্রাপ্তির কথা বর্ণিত হইয়াছে, বেদ-সকল তং-সমুদায়ের পরার্থত্ব অর্থাৎ মোক্ষ-প্রাপ্তি-হেতৃত্ব নি-র্বাচন করেন; অতএব ইহা জানিয়া মনুষ্য কর্মকে আশ্রয় না করিবেন কেন? অর্থাৎ কর্ম-দ্বারা মুক্তি হইলে জ্ঞানের আর প্রয়োজন কি? সনৎস্কৃত্তাত কহিলেন, তুমি যেৰপ ক্রমমুক্তির
কথা বলিতেছ, অবিদ্বান্ অর্থাৎ কর্মপথাবলম্বী পুরুষ
এইরপেই সেই সত্যালোকে উপগত হন এবং বেদসমস্তও ভোগ ও মোক্ষ উভয় প্রয়োজনেরই সামানাত উল্লেখ করেন। পরাত্মা অর্থাৎ অনাত্মভূত
দেহাদিকে আত্মত্বরূপে গ্রহণকারী জীব কামনা-শূন্য
হইলে একবারেই নির্ন্তণাত্মাকে লাভ করেন; যদি
নিদ্ধাম না হন, তবে স্থসমানাড়ী-রূপ মার্গদারী
স্বর্গাদি-লোক-প্রাপক মার্গ-সমস্ত ক্রমে ক্রমে নিরস্ত
করিয়া পরিশেষে ব্রদ্ধলোক-দ্বারা ব্রদ্ধত্ব লাভ করেন।

গৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যদি অনুপ্রবেশ-দারা পরমাদ্বাই এই সমস্ত প্রপঞ্চ হইলেন, তবে সেই জন্মাদিবিহীন সনাতন পুরুষকে কে নিযুক্ত করেন? অপিচ,
নিষ্ণামের কার্যোরই বা প্রয়োজন কি এবং স্থখই বা
কিপ্রকার ? হে বিদ্বন! এ সকল বিষয় যথাবং ব্যক্ত
করুন

সনংস্কৃত কহিলেন, তুমি যে বিশেষ ভেদ-यारगत कथा विलट्ड, हेहाट प्रहान् पाय हत्, অর্থাৎ স্থাট-বিষয়ে পরমাত্মার কেহ নিয়োগকর্তা আছেন এৰূপ স্বীকার করিলে ' এ নিয়োগ কর্তার নিয়োগ কর্ত্ত। কে? তাঁহার আবার নিয়োগ কর্ত্ত। কে ?' এইৰূপ জিজ্ঞাসার নির্ত্তি হয় না এবং অদ্বৈ-তেরও হানি হইয়া পড়ে; যেহেতু পরমাত্মা ওজীবা-আর বান্তবিক ভেদ নাই, অনাদি প্রকৃতিযোগ-সম্ভূত স্থূল স্থন্ম দেহাদি ক্ষেত্রযোগ-সহকারে নিত্য পর-মাস্মাই জন্মাদি-ভাজন জীব হয়েন। যেমন জলচন্দ্ৰ কম্পিত হইলে বাস্তবিক চন্দ্রের কম্প হয় না, অথবা ঘটাকাশ চলিত হইলেও মুখ্য আকাশের চলন সম্ভবে না, তদ্ধপ ঐ ঔপাধিক তেদ-দ্বারাও পরমা-ত্মার স্বৰূপের কিছুমাত্র বৈলক্ষণ্য অর্থাৎ অদ্বৈতভঙ্গ হয় না। পরিদৃশামান এই যে মিধ্যাময় প্রপঞ্চ मरजात नामा अजीयमान श्रेरजर्ह, रेहारे मह সর্বৈশ্বর্যা-সম্পন্ন অবিকারী পরমাজা; কিকার-যোগে তিনি এই বিশ্বের স্থটি করেন; বেদে তাঁহার তাদৃশী

শক্তিই স্বীকার করিয়া থাকেন এবং শক্তি ও শক্তি-বিশিষ্টের অভেদ-সম্বন্ধ-ৰূপ লৌকিক অর্থযোগেও বেদ-সমস্তই প্রমাণ।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, জীবাত্মা ও পরমাত্মার অভেদ, জগতের অসত্যতা এবং জগতুৎপত্তির নিমিত্ত-ভূতা প্রকৃতির ব্রহ্ম হইতে অভিনত্ত্ব-হেতুক ব্রহ্মাদ্রৈত সিদ্ধ হইল; এবং তদ্ধারা মৃত্যু নাই এই পক্ষ, আর যাঁহা-দিগের মতে কর্ম-দ্বারা মৃত্যু নাশ হয়, তাঁহাদিগেরও ক্রমমুক্তি-সিদ্ধান্ত স্থির হইল; কিন্তু এই এক কথা জিজ্ঞাসা করি, এই ক্রমমুক্তির নিমিত্তে কেহ কেহ ধর্ম অর্থাৎ অগ্নিহোত্রাদি উপাসনাযুক্ত কর্ম্ম-সমন্ত আচরণ করেন, কেহ কেহ বা কর্ম্ম না করিয়া এক-বারেই মোক্ষ প্রাপ্তির উদ্দেশে সন্ন্যাস অবলম্বন করিয়া থাকেন; যাঁহারা ধর্মানুষ্ঠান করেন, তাঁহা-দিগের সেই ধর্ম্ম কি রাগাদি দোষ-ক্রপ পাপ-দ্বারা প্রতিহত হর্ম, না পাপকেই প্রতিঘাত করে?

সনৎস্কৃত কহিলেন, মোক্ষ-বিষয়ে সন্ন্যাস ও উপাসনাযুক্ত কর্ম উভয়ের ফলই উপযোগী হয়। সেই মোক্ষে স্থিতি অর্থাৎ পরমাত্ম-স্বরূপে অবস্থান নিমিন্ত সন্ন্যাস ও উপাসনাযুক্ত কর্মা, উভয়ই অবি-চল; তমধ্যে বিশেষ এই ষে, বিদ্বান্ ব্যক্তি সন্ন্যাস-পূর্বক জ্ঞান অর্থাৎ ব্রহ্মবিদ্যা-দ্বারা নিত্য-নির্ম্মুক্ত বন্ধ প্রাপ্ত হয়েন, আর দেহাভিমানী পুরুষ উপাসনা-যুক্ত কর্ম-দ্বারা পুণ্য অর্থাৎ প্রশস্ত দেবতাদি-ভাব লাভ করেন এবং কদাচিৎ তন্মিবন্ধান পাপও প্রাপ্ত হন। সেই কর্ম্মাসক্ত পুরুষ কর্মা-দ্বারা পুণ্যপাপের উভয়-প্রকার অস্থায়ী ফল প্রাপ্ত হইয়া পুনর্ব্বার কর্মেই যোজির্ত হন, কিন্তু বিদ্বান্ কর্ম্ম-যোগী ধর্মা-দ্বারা পাপ ধ্বংস করেন; স্কতরাং ধর্ম বলবান হওয়ায় তাঁহার সিদ্ধিও হইয়া থাকে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, পুণ্যকারী দ্বিজাতিগণের স্থ-ধর্মের কলভূত যে সমস্ত সনাতন লোক-প্রাপ্তির কথা বেদে বর্ণিত হইয়াছে, তৎসমুদায়ের ক্রম অর্থাৎ ধর্মের তারতম্যামুসারে উচ্চনীচ-ভাব বর্ণন করুন এবং তদ্ভিন্ন অন্য লোক-সকল অর্থাৎ নিরতিশয় প্রত্যগানন্দ-ৰূপ মোক্ষ স্থখেরও কীর্ত্তন করুন; হে বিছন্! আমি এৰূপ কর্ম অর্থাৎ স্বাভাবিক প্রবৃত্তি-বিষয়-ভূত নিষিদ্ধ বা কাম্য কর্ম্ম অবগত হইতে ইচ্ছা করিতেছি না।

সনংস্কৃত কহিলেন, মল্লাদি বলশালীগণের বল বিষয়ে যেৰূপ স্পৰ্দ্ধা হইয়া থাকে, তদ্ধপ যম-নিয়-मानि जङकलाटभ याँशानित्वत वित्नय म्मर्का इत्र, সেই যোগশীল ত্রাহ্মণ অর্থাৎ সগুণত্রহ্মবাদী পুরু-रवता रमर रहेरज विश्वक रहेशा विकारणारक विताक-মান হয়েন। আর যাঁহাদিগের ধর্মে অর্থাৎ যজ্ঞাদি কর্মকাণ্ডে বিস্পর্জা থাকে, তাঁহাদিগের সেই যজ্ঞা-**क्रिटे विविक्तियात उँ० शामन-क्रांता उद्योग्या अर्थन इय ।** সেই ব্রাক্ষণেরা ইহলোক হইতে অপহত হইয়া ত্রিপিউপ অর্থাৎ দেবলোক প্রাপ্ত হয়েন। বৈদিক-ত্বাভিমানী মানবেরা অকরণে প্রত্যবায় আশস্কায় বলিয়া থাকেন যে, ঐ ধর্মের সম্যক্ অনুষ্ঠান সাধু, কিন্তু তদ্বারা ঐহিক বা পারত্রিক কোন ফলের কা-মনা করেন না; সেই বাছ অর্থাৎ আত্মাতে বর্ণা-শ্রমাদির অভিমানিত্ব-প্রযুক্ত বহির্দ্যুথ অথচ আভা-स्त्रत व्यर्थाए रिविनकञ्च ७ निष्ठामञ्च श्ययुक्त व्यारक्षाएकर्य-निष्ठं जनभंदक अधिक माना कतिदक ना। य शृंदर, वर्षाकाटन श्राप्त ज्ञानित नाम, मन्नामी जाकाटनत উপযুক্ত ভূয়িষ্ঠ অম্বু-পান আছে, এৰূপ বিবেচনা করিবেক, সেই গৃহ প্রাপ্ত হইয়াই প্রাণ-যাত্রা নির্বাহ कतिरवक, कौन-वृद्धि मञ्चारक शोषा पिरवक ना এবং আত্মাকেও ক্ষুধায় পীড়িত করিবেক না। বে স্থলে আত্মমহিমা প্রকাশ না করিলে অশুভ ভয়-প্রাপ্তির সম্ভাবনা, সেই ভয়প্রদ প্রদেশে অবস্থিত হইয়াও যিনি তত্ৰতা জনগণ-মধ্যে স্বকীয়-বিদ্যাদি-দ্বারা আপনাকে অতিরিক্ত না করেন, অর্থাৎ আ-স্মোৎকর্ষ প্রদর্শনে পরাজুখ হন, তিনিই শ্রেষ্ঠ, অন্যে নহে। অপিচ যিনি স্বমাহাত্ম্য-বর্ণনকারী ব্যক্তির উপরে আপনাকে সংত্বরিত না করেন, অর্থাৎ

অন্যের উৎকর্ষ প্রদর্শনে অস্থয়া-পরবশ না হন এবং ব্ৰহ্মস্ব-ভোজন অৰ্থাৎ যতি ও ব্ৰহ্মচান্নী-প্ৰভৃতি মানব-গণকে প্রদান না করিয়া স্বয়ং ভক্ষণ না করেন, তাঁহার অন্নই সাধুদিগের সম্মত। কুকুর যেমন নিত্য অকল্যাণের নিমিত্ত স্বকীয় বাস্ত ভোজন করে, অর্থাৎ যাহা বমন করে তাহাই ভক্ষণ করিয়া থাকে, সেই-ৰূপ স্বীয় পাণ্ডিত্য প্ৰকাশ-দারা জীবিকা-নিৰ্ব্বাহ-কারী সন্ন্যাসীরাও বাস্তভোজী হয়। যে ব্রাহ্মণ জ্ঞাতি-গণ-মধ্যে বাস করিয়াও " তাঁহারা যেন কদাচ আ-মার ধর্মাচরণ জানিতে না পারেন " এইৰপ মনন করেন, সেই প্রচ্ছন্ন-তেজা ব্রন্ধজ্ঞ ব্যক্তিকেই পণ্ডি-তেরা ব্রাহ্মণ বলিয়া জানেন। ঈদৃশী অজ্ঞাতচর্য্যা ব্যতিরেকে কোন্ ব্রাহ্মণ উপাধিক্কত-ব্যবধান-শূন্য, অনুমানাদির অগম্য, সর্বব্যাপক, সঙ্গ-রহিত ও সর্ব্ব-দৈত-বিবৰ্জিত অৰ্থাৎ স্বজাতীয় বিজাতীয় ও স্বগত-ভেদ-খূন্য পরমাত্মাকে প্রাপ্ত হইতে পারেন ? উক্ত প্রকার অজ্ঞাতচর্যাা-প্রযুক্ত ক্ষত্রিয় পুরুষকেও ব্রহ্ম স্বপ্রাশ-দারা নিত্যকাল আত্রয় করিয়া থাকেন, অর্থাৎ ব্রাহ্মণ না হইয়াও কেবল অজ্ঞাতচর্য্যা-প্রতা-বে ক্ষত্রিয় আপনার ব্রহ্মভাব সন্দর্শন করেন। যে বাক্তি একপ্রকার আত্মাকে অন্যপ্রকারে প্রতিপাদন করে, সেই আত্মাপহারী তক্ষর কি পাপ না করে? অত্যান্ত, প্রতিগ্রহ-শূন্য, সাধু-সম্মত, নিরুপদ্রুব, শিষ্ট হইয়াও শিক্টত্বের অপ্রকাশকারী, ব্রহ্মনিষ্ঠ, ব্রহ্মজ্ঞ ও কবি অর্থাৎ অতীতদশী হইবেক; এৰূপ হইলেই আত্মপরিজ্ঞানে সমর্থ হইতে পারিবেক। যাঁহার। व्यर्थार भातरलोकिक धर्मामि विषया ଓ मेश्वरताभा-मनात्र ममृक रात्रन, ठाँशात्रा पूर्कार्य ও पूष्पुरुष्णा হন ; অর্থাৎ বৈরাগ্য-পূর্ব্বক কর্ম্ম ও উপাসনা-পরায়ণ মানবগণের কোন ভয়ই থাকে না, তাঁহাদিগকে সা-ক্ষাৎ ব্রন্ধের কলেবর বলিয়া জানিবেক। যজ্ঞ-দ্বারা প্রীত হইয়া যাঁহারা যজমানের শোভন ইফ করেন, অর্থাৎ দিব্য-স্ত্রী উত্তম অন্ন-পানাদি ভোগ্যবস্তুর অভি-

লাৰ পূৰ্ণ করিয়া দেন, সংসার মধ্যে যে কোন ব্যক্তি **(मर्ट्र (एवंशर्वक कानिएक श्राह्मन, व्यर्श व्यक्ष स्मर्था कि** যাবতীয় বজ্জের অমুষ্ঠান করিয়া তাঁহাদের সাক্ষাৎ-কার-লাভে সমর্থ হন, তিনিও ব্রহ্মনিষ্ঠের সমান নহেন; যেহেতু তদ্বিরে তিনি স্বরং প্রযত্ন করেন। ক্রিয়া সাধ্যস্ত্ব-প্রযুক্ত তাঁহার যজ্ঞাদির ফল অনিতা, কিন্তু ব্রহ্মজ্ঞের নিকটে স্বতঃসিদ্ধ ব্রহ্মের অভিব্যক্তি হ ওয়ায় তৎপরিজ্ঞান-কলভূত মোক্ষও নিত্য, স্থতরাং যজ্ঞাদি কর্মকাণ্ড ব্রহ্মজ্ঞানের তুল্য হইতে পারে না। অপ্রয়তমান অর্থাৎ আরম্ভ-পূন্য হওয়াতে যাঁহাকে দেবতারা মান্য করেন, তিনিই যথার্থ মা-निङ, नजूदा यछापि कर्ड। विलग्ना यिनि मानिङ इन, তিনি দেবতাদিগের কেবল পশুমাত্র, বাস্তবিক মান্য হইতে পারেন না; অতএব অন্য-কর্ত্তৃক মান্যমান क्रेटल अभिनारक मानाष्ट्रान कतिरक ना जवः অবমানেও পীড়িত হইবেক না। মানিত ব্যক্তি এইৰূপ মনে করিবেন যে, নিমেষ ও উন্মেষের নাায় লোকে নিয়তই স্বভাব-রৃত্তি, অর্থাৎ যাহার যেৰূপ স্বভাব সে তাহাই করিয়া থাকে ; বিদ্বান্ পুরুষেরাই মান্য লোকের সম্মান করিয়া পাকেন ; নভুবা যাহার। অধর্ম-নিপুণ এবং লোক-মধ্যে ছলনায় বিশারদ, সেই মান্যাবমানী মূঢ় লোকেরা মানভাজন মানবকে কদাচ মান্য করিবে না। মান ও মৌন, অর্থাৎ অভি-মান ও মুনিধর্ম-যোগচর্য্যা, উভয়ই একত্র বাস করিতে পারে না; ইহলোক মানের, আর পরলোক মৌ-নের, ইহাই তত্ত্বজ্ঞগণের সন্মত। হে ক্ষজ্রিয়! ইহ-লোকে ধন অভিজন ও ঐশ্বর্যাদি-ৰূপা লক্ষী মান-ৰূপ স্থথের আবাস-স্থান বটেন, কিন্তু তিনি পর-লোকের প্রতিবন্ধক-ভূতা; যেহেতু ব্রাক্ষী অর্থাৎ ব্রাহ্মণ-যোগ্যা বেদময়ী লক্ষ্মী প্রজ্ঞাহীন ব্যক্তির ছুর্নভা; অপ্রাপ্ত লোকেরা কদাচ বেদ-রহ্স্য প্রাপ্ত চ্ইতে পারে না। পণ্ডিতেরা সেই ব্রাক্ষয়থের বছ-প্রকার সাধন নির্দারণ করেন। তৎসমুদায় সমাক্-ৰূপে রক্ষা করা অতি কঠিন ব্যাপার। তন্মধ্যে সভ্য,

সারল্য, লোক-লজ্জা, ইন্দ্রিয়-নিগ্রহ, শৌচ ও শাস্ত্র-জ্ঞান, এই ছয়টি মান ও মোহের প্রতিরোধক হইয়াছে।

সনংস্কৃত বাক্যে দ্বিচত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৪২ ॥

--

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে বিদ্বন ! আপনি যে মৌনের কথা উল্লেখ করিলেন, তাহার প্রয়োজন কি ? অপিচ বাক্য-মনের সংয়া, বলপ লোক-প্রসিদ্ধ মৌন, আর শ্রুবণ মনন নিদিধ্যাসন-রূপ বেদোক্ত মৌন, এই ছই প্রকার মৌনের মধ্যে কোন্টি আপনকার অভিপ্রেত ? মৌনের লক্ষণই বা কি ? মৌন-দ্বারা বিদ্বান্ ব্যক্তি মৌন অর্থাৎ পরম-নির্বিকল্পপদ প্রাপ্ত হয়েন কি না এবং কিপ্রকারেই বা তাঁহারা মৌনাচরণ করেন? হে মুনে! এই কয়েকটি বিষয় প্রকাশ করিয়া বলুন।

সনংস্কৃতি কহিলেন, হে রাজন্! যেহেতু এই পরমাত্মাতে মন ও বেদ-সমস্ত অনুপ্রবেশ করিতে পারেন না, এই নিমিত্তই ইহাঁর নাম মৌন; যাঁহাতে প্রণব-রূপ বেদশন্দ এবং 'ইনি ' অর্থাৎ জীবাত্মা-রূপ লৌকিক শন্দ স্বভাবত উপিত হইয়াছে, তিনি তন্ম- মতের অগোচর, তাহা প্রাপ্ত হওয়াই মৌনের প্রয়োজন; বাগাদি বাহ্যেক্রিয় ও অ্নুঃকরণের নিগ্রহই মৌন; বাগাদি সংযম-ক্রমে বাহ্য ও আন্তরিক প্রপঞ্চ দরের ভান না হওয়াই মৌনের লক্ষণ; ঐরূপ অভান-দারা বাত্মনসাতীত পরম পদ প্রাপ্য হয়; এবং গুরুপদিউ 'যুক্তিক্রমে প্রণবময়ত্ব-রূপে পরব্রেক্রের ভাবনা-দারাই মৌনাচরণ সিদ্ধ হইয়া থাকে।

যদি বেদশন্দময়য়্ব-রূপে পরম-পদ প্রকাশ এবং তদ্ধারা সর্ব্বপাপের বিশ্বংস হয়, তবে মৌন-হীন ব্যক্তিরও ঋগাদি বেদাভ্যাস-দ্বারা উভয়ই সিদ্ধ হই-তে পারে, এই আশঙ্কায় ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যে ব্যক্তি ঋক্, যজ্বং ও সাম বেদ সমস্ত জানেন, তিনি পাপ-

কর্ম-সমুদায়ের অমুষ্ঠান করত পাপ-ছারা লিপ্ত হন কি না ?

সনৎস্কৃত্তাত কহিলেন, ঐ অবিচক্ষণ অর্থাৎ বাক্যমনের নিপ্রছে অসমর্থ ব্যক্তিকে পাঁপকর্ম হইতে
পরিত্রাণ করিতে, না সাম, না ঋক্, না যকুং, কেহই
পারেন না; হে রাজন্! আমি তোমাকে মিথ্যা বলিতেছি না। বেদ-সকল ছল্পানী মায়াবী ব্যক্তিকে
কথন পাপ হইতে উত্তীর্ণ করেন না; পক্ষ উদ্যাত
হইলে পক্ষীরা যেমন কুলায় ভ্যাগ করিয়া যায়,
সেইন্ধপ বেদ-সমন্তও অন্তকালে মায়াবীকে পরিত্যাগ
করেন, অর্থাৎ সে সময়ে তাহার বেদের আর ক্ষুর্তি
থাকে না।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যদি শমদমাদি স্বাভাবিক ধর্মব্যতিরেকে বেদ-সমস্ত অবিচক্ষণ ব্যক্তিকে পরিত্রাণ
করিতে না পারেন, তবে ব্রাহ্মণগণের মাহাত্মা-স্থচক
নিত্যকাল প্রসিদ্ধ, "ঋক্, যজুং ও সাম-দ্বারা পূত
হইয়া ব্রহ্মলোকে পূজিত হয়েন " "যাবতীয় দেবতা
আছেন, সকলেই বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণে অধিষ্ঠান করেন "
এই প্রলাপ-বাক্য-সকল কোথা হইতে হইল ?

সনৎস্কাত কহিলেন, হে মহানুভাব! এই বেদশান্ত্রাদি প্রপঞ্চ ঘাঁহার প্রলপিত, স্বভাবত নির্বিকার
হইলেও নাম-ক্রপাদি বিশেষ সম্বন্ধে বিকার প্রাপ্ত,
সেই পরমাত্মারই স্বক্রপে এই জগৎ প্রতিভাত হইতেছে। বেদ-সকল অধ্যারোপ-প্রসঙ্গে দৃশ্য ও অদৃশ্য
সমস্ত বিশ্বকে ব্রহ্মকপত্রে নির্দেশ করিয়া ইহাই
সম্যক্রপে ব্যক্ত করিতেছেন এবং অপবাদ-প্রসঙ্গে
বিশ্ব হইতে ব্রহ্মের বৈলক্ষণ্যও উদাহরণ করিতেছেন; অতএব ঘাঁহা হইতে আবির্ভূত হওয়াতে
বেদের সন্মান হইয়াছে, বেদোক্ত মার্গের অননুষ্ঠানদারা সেই পরমাত্মাকে যে ব্যক্তি অবজ্ঞা করে, তাহার বেদাধ্যয়নও নিম্ফল হয়। সেই ব্রহ্মলাভ নিমিত্তই এই তপ্সাা ও যাগাদি উক্ত হইয়াছে, এতছত্র-দারা বিদ্বান্ পুরুষ পুণ্য প্রাপ্ত হয়েন এবং
পুণ্য-দারা পাপ-শ্বংস করিয়া পরিশেষে জ্ঞানবিদী-

পিতাত্বা হয়েন, অর্থাৎ ব্রহ্মাকারা চিন্তর্ক্ত হওয়ায়
তাঁহার নিকটে আত্মতত্ত্ব সতঃ প্রকাশিত হয়।
বিদ্যান পুরুষ জ্ঞান-দারাই পরম পুরুষার্থ আত্মলাভ
করেন, অন্যথা আত্মভিন্ন বস্তুতে আত্মবৃদ্ধি বশত
বিষয়-স্থাভিলাষী হইয়া ইহলোকে অনুষ্ঠিত পুণ্যপাপ-সমস্ত পরিগ্রহ-পূর্ব্ধক পরলোকে তৎসমুদায়ের
কলভোগ করেন এবং পরিশেষে পুনর্বার ইহলোকেই উপাগত হন। বেদাধায়নমাত্রনিরত জ্ঞানহীন
মানবেরা ইহলোকে যে তপস্যা করেন, তাহার কল
পরলোকে দৃষ্ট হয়, কিন্তু শমদমাদি-অবশ্য-কর্তব্যতপোনিষ্ঠ জ্ঞান-সম্পন্ধ ব্রাহ্মণগণের এই লোক সমস্তই
কলপ্রদ হইয়া থাকে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সনৎস্কৃত। একমাত্র তপদ্যা কি প্রকারে সমৃদ্ধ ও অসমৃদ্ধ হয় তাহা ব্যক্ত করুন, যদ্বারা আমরা সেই দ্বৈবিধ্য বোধগম্য করিতে পারি।

সনৎস্কৃত কহিলেন, নিদ্ধন্ম অর্থাৎ কাম ও অল্লাদি-রহিত যে তপসাা, কৈবল্য-সাধনহেতুক তাহাকে 'কেবল' শব্দে উক্ত করা যায় এবং শ্রদ্ধাদিযুক্ত হইলেও যদি সকাম হয়, তবে ইহাকেই সমৃদ্ধ বলা যায়; কিন্তু কেবল দত্তের নিমিন্ত যাহা অমুঠিত হয় তাদৃশ তপস্যাকে আর সমৃদ্ধ বলা যায় না, তাহাকে ঋদ্ধ বলা যাইতে পারে। হে ক্ষপ্রিয়! তুমি আমাকে যাহা জিজ্ঞাসা করিতেছ, এ সকলই তপস্যা-মূলক; বেদজ্ঞ পণ্ডিতেরা কেবল তপস্যাদ্বারাই পরম অমৃত অর্থাৎ মুক্তি লাভ করেন

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সনৎস্ক্রজাত! নিম্কল্মধ তপস্যা শ্রেবণ করা হইল, কিন্তু তপস্যার কল্মষ কি তাহা ব্যক্ত করুন, যদ্বারা সাবধান হইয়া আমি গুহু সনাতন ব্রহ্মকে জানিতে পারি।

সনৎস্থাত কহিলেন, হে রাজন্! ক্রোধাদি দ্বাদশ প্রকার দোষ এবং বিকপ্থনাদি ত্রয়োদশ প্রকার নৃশংস বর্গই তপস্যার কল্মষ; তাহার গুণ বলিয়া দ্বিজাতিগণের যে সমস্ত বিদিত হইয়াছে, তৎসমুদায়

পিতৃগণের অর্থাৎ বংশকর্তা মন্থাদির শাত্রে উল্লি- | ধিত আছে। ক্রোধ, (ইচ্ছা-প্রতিঘাতে আক্রোশ তাড়নাদি হেভু মনস্তাপ) কাম, (স্ত্রীসঙ্গাভিলাব) লোভ, (ধনব্যয়-ভীরুতা) মোহ, (ক্নত্যাক্নত্য-বিবেক-রাহিত্য) বিধিৎসা, (উত্তরোত্তর লাভেও তৃষ্ণার অনির্ভি) অরূপা, (নির্দেয়তা) অভ্যস্থা, (পরগুণে দোঘ-দর্শন) মান, (আপনাতে পূজাবুদ্ধি) শোক, (ইফার্থনাশে চিত্ত-বৈকল্য) স্পৃহা, (ভোগ্যবর্গে সম-विक जामत) क्रेबी, (পরের উৎকর্ষ-দর্শনে मছ না করা) ও জুগুপা, (পরনিন্দা বা বীভৎসতা) মনুষ্যের এই দ্বাদশটি দোষ মনুষ্যমাত্রেরই নিত্য বর্জনীয়। হে মনুজর্ষভ! ব্যাধ যেমন মৃগ-সকলের ছিদ্র অন্থে-ষণ করিয়া বেড়ায়, সেইৰূপ উক্ত দোষ-সকলের মধ্যে প্রত্যেকেই মনুষাগণের ছিদ্রলাভার্থী হইয়া তাহা-দিগকে পর্যুপাসনা করে। বিকত্থন, (পরগুণের অপলাপ-পূর্ব্বক স্বগুণোৎকর্ষ-কথনশীল) স্পৃহয়ালু, (অতিযত্ন-পূর্ব্বক পর-মহিলাদি-সম্ভোগেচ্ছু) মনস্বী, (গর্বাধিক্য-প্রযুক্ত পরাবমানে তৎপর) কোপধারী, (কারণ বাতিরেকেও সর্ব্বদা ক্রোধন অথবা যে ব্যক্তি চিরকাল কোপ ধারণ করিয়া থাকে) চপল, (মিত্র-তাদি বিষয়ে অস্থির) ও অরক্ষণ, (শক্তি থাকিতেও স্বীকৃত বনিতাদির অপালনকারী) এই ছয় প্রকার পাপাত্মা মনুষা স্বন্ধুর্গে অর্থাৎ ঐহিক বা পারত্রিক শঙ্কটে ভীত না হইয়া এই সমস্ত পাপ ধর্মের অমু-ষ্ঠান করে। অপিচ সম্ভোগ-সম্বিদ্বিম, (জ্রীসঙ্গাদি-বিষয়ে পুরুষার্থ বুদ্ধি হওয়ায় ছুর্ব্যবস্থিত) অতি-মানী, (অত্যন্ত দর্প-বিশিষ্ট) দত্তামুতাপী, (দান করিয়া পশ্চান্তাপকারী) কুপণ, (প্রাণাম্ভেও অর্থ-ব্যয়ে অসহিষ্ণু) বলীয়ান্, (অতিশয় বল-পূর্ব্বক ব্যব-হারকারী) বর্গপ্রশংসী, (পরাভিভবের প্রশংসাকারী অর্থাৎ পরত্নুংখে সুখী) ও বনিতার প্রতি দেবকারী, (পরিণীতা পত্নীর প্রতি বিদেষ-পূর্বক পুরকামিনী-সঙ্গে আসক্ত) এই সপ্ত অপর নৃশংস বর্গ। ধর্ম, (বর্ণাজ্রম নিয়ত সন্ধ্যা উপাসনাদি) সত্য, (হিংসা

ব্যতিরেকে যথার্থ সম্ভাষণ) দম, (ইন্দ্রিয়-নিগ্রহ) তপদ্যা, (ক্লন্ডুচাক্রায়ণাদি) অমাৎসর্য্য, (পরগুণে অসহিষ্ণু না হওয়া) হ্রী, (লজ্জা) তিতিক্ষা, (ক্রোধের কারণ উপস্থিত হইলেও কুন্ধ না হওয়া) অনস্থয়া, (পরগুণে দোষাবিষ্কার না করা) যজ্ঞ, দান, ধৃতি, (অত্যন্ত আপদ্কালেও ব্রতাদির অপরিত্যাগ)ও শ্রুত, (অর্থগ্রহ সহিত, বেদাধ্যয়ন) এই ছাদশটি ব্রাহ্মণের ব্রত। যিনি এই দ্বাদশটির প্রভু হইতে পারেন, সেই সকল-গুণ-সম্পন্ন ব্রহ্মবিৎ সমগ্র-বস্থ-ন্ধারা-শাসনে সমর্থ হয়েন। যে ব্যক্তি এই গুণ-সক-লের মধ্যে তিন, ছুই বা একটিরও অধিকারী হয়েন, তাঁহারে ঐশ্বর্যাশালী বলিয়া জ্ঞান করা কর্ত্ব্য। দম, ত্যাগ ও অপ্রমাদ, এই তিনটি অমৃত অর্থাৎ মুক্তির আধার হইয়াছে; মনীষী ব্রাহ্মণেরা তৎসমুদায়কে সত্য-মুখ বলিয়া বৰ্ণন করেন, অর্থাৎ সত্যপ্রধান হই-লেই এ সমস্ত ফলোপধায়ক হয়।

দম অফাদশ গুণ-বিশিষ্ট। কৃত ও অকৃত কর্মে প্রতিকূলতা অর্থাৎ বৈদিক কর্ম্মে অশ্রদ্ধা এবং উপ-বাস ব্রতাদি কর্ম্মে ভোজন-লালসা, মিধ্যা, অভ্যস্থয়া, কাম, অর্থ, (ধনার্জ্জনার্থে অতিযত্ন) স্পৃহা, ক্রোধ, শোক, ভৃষ্ণা, লোভ, পৈশুন্য, (পর-দোষ বর্ণনে তৎ-পরতা) মাৎসর্যা, বিহিংসা, পরিতাপ, অরতি, (সৎ-ক্রিয়ায় অনভিলাষ) অপস্মার, (কর্ত্তব্য কর্ম্মের বি-শ্মরণ) অতিবাদ, (পরগ্লানি) ও আত্মাতে সম্ভাবনা, (মহত্ত্ববুদ্ধি) এই সমস্ত দোষে যে ব্যক্তি পরিবর্জিত তাঁহাকেই পণ্ডিতেরা দাস্ত বলিয়া থাকেন। দম যেমন অফাদশ গুণ-বিশিষ্ট সেইৰূপ দমের বিপর্যায় মদেরও অফীদশ দোষ; অপিচ ত্যাগ ছয় প্রকার इয় ; এই সকলের বিপর্যায় ছয় দোব ; সমুদায়ে চতুৰ্ব্বিংশতি প্ৰকার মদ-দোষ বলিয়া উল্লিখিত হই-রাছে। উক্ত ছর প্রকার ত্যাগ অতীব প্রশস্ত; তম্বধ্যে তৃতীয়টি অত্যন্ত চুদ্ধর হয়; তন্দারা লোকে নিশ্চরই ছুঃখ হইতে পরিত্রাণ পার, কেননা তাহার অমুষ্ঠান করিতে পারিলে দৈত কর করা হয়।

হে রাজেন্দ্র । ষড়্বিধ শ্রেষ্ঠ ত্যাগের বিবরণ এই, প্রথমত শ্রীলাভ করিয়া হৃষ্ট না হওয়া, অর্থাৎ ধন বিদ্যাদি ঐশ্বর্যা লাভে গর্ব্ব-ত্যাগ। দ্বিতীয়ত নিত্য বৈরাগা-যোগ হেতুক ইফীপূর্তের অর্থাৎ যজ্ঞ ও ৰাপী তড়াগাদি-প্ৰতিষ্ঠা-ৰূপ কৰ্ম্ম-কাণ্ডের পরিত্যাগ। পূর্বে যে ভৃতীয় তাাগের ক্র। উল্লিখিত হইয়াছে, তাহা কামত্যাগ;—পণ্ডিন্তরা পুরুষকে যে গুণের षात्रा व्यनिर्विष्ठनीय विलया निर्द्धन करतन, जाश्हे তৃতীয় গুণ বলিয়া স্মৃত হইয়াছে। বৈরাগ্য-প্রযুক্ত বনিতাদি ভোগ্যবস্তু-সমুদায়ের পরিত্যাগ-দারা যে কামত্যাগ হয়, তাহাকেই যথাৰ্থ কামত্যাগ বলা যায়, নতুবা কাম-পূর্বকে যথেষ্ট উপভোগ করিয়া তৎসমুদায় পরিত্যাগ করিলে, কি বছতর ধন লাভ क्रिटल अथवा कामावञ्चत्र निमिख के ममर्ख धन वास করিলে কাম ত্যাগ হয় না। অপিচ মে ব্যক্তি সর্ব-গুণযুক্ত ও ধনবান্ হয়, তাহারও কর্ম্ম-সকল অসিদ্ধ হইলে ছুংখ করা এবং তদ্ধারা আপনাকে প্লানিযুক্ত করা কর্ত্তব্য নহে। চতুর্থত কীর্ত্তিনাশাদি অপ্রিয় ঘটনা উপস্থিত হইলেও কোন ক্রমে ব্যথা প্রাপ্ত না হওয়া। পঞ্চমত অভীফ বন্ধু বান্ধব ও পুত্র কল-ত্রাদির নিকটেও যাক্কা না করা। ষষ্ঠত যোগ্য যাচককে প্রদান করায় শুভ হয়।

এই সমন্ত ত্যাগ-দ্বারা অপ্রমাদী হইবেক। সেই
অপ্রমাদও অইগুণ-বিশিষ্ট। সত্য, ধ্যান, (আত্মানুসন্ধান) সমাধান, (পরোক্ষ ও অপরোক্ষ উভয়-বিধ
সমাধি) চোদ্য, (তর্ক) বৈরাগ্য, অন্তেয়, (চৌর্য্যরাহিত্য) ব্রক্ষচর্যা, (ক্রীসঙ্গ-রাহিত্য) ও অসংগ্রহ,
(পরিগ্রহ-শূন্যতা) এই আটটি অপ্রমাদের গুণ।

হে ভারত! মদের এইৰূপ দোষ-সমস্ত উক্ত হইরাছে; সেই সমুদার দোষ পরিত্যাগ করিবেক।
অপিচ ত্যাগ ও অপ্রমাদও কথিত হইল। ঐ অপ্রমাদের ষেমন অউগুণ অভিমত, সেইৰূপ প্রমাদেরও
অউ প্রকার দোষ। সেই দোষ-সমস্তও পরিবর্জন
করিবেক। পঞ্চ ইন্দির, মন ও অতীত অনাগত

ছৃংখ-সমূহ হইতে ঐ অই প্রকার প্রমাদের উৎপত্তি হইয়া থাকে; অতএব তৎসমূদায় হইতে বিমুক্ত হইয়া স্থা ইইবেক। হে রাজেন্দ্র! সত্যাত্মা হও! সত্যেতেই লোক-সমস্ত প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। পণ্ডি-তেরা উল্লিখিত দম, ত্যাগ ও অপ্রমাদকে সত্যপ্রধান বর্ণন করেন, যেহেতু সত্যেই অমৃত সঞ্চিত আছে। বিধাতৃক্কত ধর্মা এই যে, দোষ নির্ভি হইলাছে। বিধাতৃক্কত ধর্মা এই যে, দোষ নির্ভি হইলাই ইহলোকে তপোত্রতাচরণ সিদ্ধ হইয়া থাকে; অতএব সাধুদিগের সত্যই ব্রত। উক্ত দোষ-সমস্ত হইতে বিমুক্ত ও গুণ-সমূহে সমন্বিত হইলেই কৈবল্য-সাধন অত্যর্থ-সমূদ্ধ তপশ্চরণ হয়। হে রাজেন্দ্র! ত্রমি আমাকে যাহা জিজ্ঞাসা করিলে, সেই এই পাপহর, জন্ম-মৃত্যু-জরা-বিমোচক, পবিত্র প্রসঙ্গ সংক্ষপে তোমার নিকটে ব্যক্ত করিলাম।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, ইতিহাসাদি আখ্যান ও ঋগাদি
চতুর্বেদে ভুমানদ পরমাত্মাকে জন অর্থাৎ স্থাবর
জঙ্গমাত্মক জগৎ বলিয়া উল্লেখ করেন; আবার অন্য
কতকগুলি শাখী চতুর্বেদী, (বেদ্য-চতুই্টয় প্রতিপাদক) কতকগুলি ত্রিবেদী, (বেদ্যত্রয় প্রতিপাদক)
কতকগুলি দিবেদী, (বেদ্য-দ্বয় প্রতিপাদক) কতক
গুলি একবেদী (এক বেদ্য প্রতিপাদক) এবং কতকগুলি অন্চ (ব্রহ্মাইনত প্রতিপাদক) আছেন; তন্মধ্যে
যাঁহাকে আমি ব্রক্ষজ্ঞ বলিয়া জানিতে পারি সেই
ব্যক্তি কে?

সনংস্কৃত কহিলেন, ব্রহ্মই এক মাত্র বেদ্য ও সত্য; সেই সত্যের অজ্ঞান-হেতুক বছ-সংখ্য বেদ্য অর্থাৎ উপাস্য সকল কণ্পিত হইয়াছে। হেরাজেন্দ্র! ব্রহ্ম-লাভ অতিশয় ছুর্ঘট। সত্য-স্থৰূপ পরব্রহ্মে অব-স্থিত হইয়াছে, এমন লোক অতি বিরল। সেই অন্ধ্যানন্দ বেদ্য পুরুষকে না জানিয়াই লোকে আ-পনাকে প্রাক্ত বলিয়া মনে করে এবং বাছস্থা-লোভে দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞাদির অনুষ্ঠানে প্রস্তুত্ত হয়। সত্যভ্রষ্ট বাক্তিদিগের সংকশ্পও সেইৰূপ হইয়া থাকে; অর্থাৎ যাহারা পরমানন্দ হইতে পরিচ্যুত

হয়, তাহাদিগের কুদ্রানন্দ বিষয়ে স্বভাবতই অভি-লাষ জন্মে; স্থতরাং তাহারা "স্বর্গাকাঙ্গ্রুণী ব্যক্তি জ্যোতিকৌম যজ্ঞ করিবেক " ইত্যাদি বেদ বাক্যের প্রামাণ্য-নিশ্চয়-হেভুক জ্যোতিফৌমাদি যজ্ঞের অনু-ষ্ঠান করে। কাহারো মানস-দ্বারা, কাহারো বাক্য-দারা, কাহারো বা কর্ম-দারা যজ্ঞ সিদ্ধ হয়, অর্থাৎ **क्ट क्ट (मवर्जा-धानामि-क्य वस्त्र करत्रन, क्ट्** কেহ অধ্যয়ন-জপাদি-ৰূপ युक्त करत्रन, কেহ কেহ বা প্রসিন্ধ জ্যোতিটোমাদি যজের অনুষ্ঠান করিয়া ধাকেন ; পরস্কু সত্য-সংকণ্প ব্রহ্মজ্ঞ পুরুষ সংকণ্প অর্থাৎ কম্পনীয় ব্রহ্মলোকাদির অধিষ্ঠাতা হন। আত্ম-জ্ঞানাভাবে সংকণ্পের সাফল্যনা হইলে মস্তক-মুণ্ডন বাক্য-সংযমনাদি দীক্ষিত ব্রতের আচরণ করিবেক ; পরস্তু ' দীক্ষিত ' শব্দটি দীক্ষ ধাতু হইতে নিষ্পন্ন ; কর্ম-দারা যে সংস্কার নিষ্পন্ন হয়, তাহা অবশাই বিনাশী; অতএব সাধুদিগের পক্ষে অক্ল-ত্রিমত্ব ও অবিনাশিত্ব প্রযুক্ত 'সত্য' অর্থাৎ ব্রহ্মই শ্রেষ্ঠ। জ্ঞানই প্রত্যক্ষ, তপস্যা পরোক্ষ হইয়া থাকে; অৰ্থাৎ শোকমোহাদি-নিবৃত্তি-ৰূপ জ্ঞান-ফল ইহলোকেই দৃষ্ট হয়, আর কায়িক, বাচিক বা মান-সিক তপস্যা পরলোকে ফল প্রদান করে; স্থতরাং যিনি বিশুর অধায়ন করেন, তাঁহারে বছপাস ব্ৰাহ্মণ-মাত্ৰ বলিয়াই জানিবেক। অতএব হে ক্ষজ্ৰিয়! 'কেবল অধ্যয়ন-দারাই ব্রাহ্মণ হয়' এরূপ মনে করিও না; যিনি সত্য হইতে বিচলিত না হন, তাঁ-হাকেই ভুমি ত্রাহ্মণ বলিয়া জানিবে। হেরাজন্! উপনিষং-প্রসিদ্ধ মহামুনি অর্থবা পূর্বে মহর্ষিগণ-मित्रपादन याहा कीर्जन कित्रपाहित्सन, उपमूपायह 'ছন্দঃ' এই নাম প্রাপ্ত হইয়াছে, যেহেভু উহারা পাপকর্ম হইতে পুরুষকে ছাদিত অর্থাৎ রক্ষিত করে; অতএব ধাঁহারা ব্রহ্মবিদ্যাথী না হইয়া কেবল কর্ম প্রার্থনায় উপনিষদের সহিত বেদ অধ্যুয়ন করি-য়াছেন, তাঁহারাও ছন্দোবিৎ নহেন; যেহেতু তাঁহারা বেদবেদ্য পুরুষের যথার্থ-তত্ত্ব অবগত হইতে পারেন

নাই। হে মন্ত্রজ-প্রবর! বেদ-সমস্ত সেই সত্য-স্বৰূপ <u>जन्न-विषयः चाज्जा-मद्यक्तरे উপयोगी रून, वर्षार</u> কর্মকাণ্ডার্থ জ্ঞান ও ব্রহ্মকাণ্ডার্থ জ্ঞান, এই উভয় প্রকার জ্ঞান-দারাই ব্রহ্ম প্রাপ্তির হেতু হইয়া ধা-কেন; তন্মধ্যে বিশেষ এই যে, কর্মকাণ্ডার্থ জ্ঞান যেমন মধ্যে অনুষ্ঠানান্তর অপেক্ষা করে, ব্রহ্মকাণ্ডার্থ জ্ঞান সে ৰূপ অনুষ্ঠানের অপেক্ষা করে না। অত-এব কেবল কর্মমাত্র-জ্ঞান-দ্বারা কেহ বেদজ্ঞ হইতে পারেন না, সত্য-জ্ঞান-দারাই যথার্থ বেদজ্ঞ হন। অনেকানেক মহামুভব লোক সেই বেদজ্ঞগণ-সমীপে উপগত হইয়া বেদ-বেদ্য পরব্রহ্মকে নিঃসন্দেহ প্রাপ্ত হইয়াছেন। হে রাজন্! বেদ-সকলের নিগৃঢ় মর্মাজ্ঞ কেহই নাই, তবে চিত্ত-শুদ্ধির আতিশ্যা প্রযুক্ত কোন কোন ব্যক্তি তাহা বোধগম্য করিতে পারেন; যিনি রহস্য-প্রতিপাদক বেদ-সমস্ত জানিয়াছেন, তিনি আবার বেদ্য জানিতে পারেন নাই, অর্থাৎ সবি-কম্পক হওয়াতে তাঁহার নিকট, সকল মনোহন্তির প্রলয়-কালে প্রকাশমান নির্ব্বিকণ্পক ব্রহ্ম প্রতিভাত হন নাই; পরস্ত ষিনি সত্যে অর্থাৎ সকল র্ভিবাধের অবধিভূত প্রত্যকৃ চৈতন্যে অবস্থিত হইয়াছেন, তিনিই নির্বিকণ্পক সুখ জানিয়াছেন। অহঙ্কারাদি অচেতন বেদাবর্গের মধ্যে কেহই বেদিতা নাই, স্কুত-রাং বেদ্য অন্তঃকরণ দ্বারা কেছ বেদবোধ্য আত্মাকে জানিতে পারেন নাই এবং অনাত্মাকেও জানিতে পারেন নাই; যিনি আত্মাকে জানিয়াছেন, তিনি অনাত্মাকেও জানিয়াছেন; পরস্ত যিনি কেবল অনা-স্থাকে জানিয়াছেন, তিনি সত্য-স্বৰূপ ব্ৰহ্মকে জানিতে পারেন নাই। অপিচ যে চিদান্মা বেদ অর্থাৎ প্রমাণ সমস্ত জানিয়াছেন, তিনিই প্রমেয়কেও জানিয়া-ছেন, কিন্তু সেই প্রমাণের প্রমাণকে না বেদ, না বেদজ্ঞ অর্থাৎ প্রমাণ কি প্রমাতা, কেহই জানিতে পারেন নাই; তথাপি যে সকল ত্রাহ্মণেরা পাঠ, व्यर्थ ७ व्यूक्षीनकरम त्वम्ब्ब हरत्रन, व्यश्यान ७ যজ্ঞাদি-দারা বিশুদ্ধ-চিত্ত হওয়াতে তাঁহারাই বেদিতা

আত্মাকে বেদ বাক্যামুসারে লক্ষণার্ত্তি-ছারা বোধ-গম্য করেন। পণ্ডিতেরা এইৰপ সিদ্ধান্ত করিয়া ধাকেন যে, যেমন প্রতিপদ্ তিথিতে চন্দ্রকলার জ্ঞাপন-বিষয়ে রক্ষশাখাকে নির্দেশ করা যায়, তদ্ধপ পরমান্ধার সেই পরম পুরুষার্থ যথার্থ তত্ত্ব বিজ্ঞাপন-विषएत (वन-मकल निर्फिक्य इन। निरिधाम दनद्र পরি-পাক হেতু অপরোক্ষের শাক্ষাৎকার লাভ করায় যিনি স্বয়ং সংশয়-শূন্য হইয়া যথার্থ ব্যাখ্যান-দ্বারা অপরের সমুদয় সংশয় অপনীতু করেন, সেই ব্যা-খ্যাতা (উপক্রম উপসংহারাদি বড়বিধ তাৎপর্য্য লিঙ্গ অনুসারে বাক্যার্থ-বর্ণনে স্থনিপুণ) ও বিচক্ষণ (যুক্তি-সহকারে শ্রুতিসিদ্ধ অর্থের অমুচিন্তনে সমর্থ) ব্যক্তিকেই আমি ব্রাহ্মণ (বেদজ্ঞ) বলিয়া স্বীকার করি। কি পূর্বে পশ্চিম, কি উত্তর দক্ষিণ, কি উর্দ্ধ অধঃ, কি তির্যাক্, কি অদিক্, কুত্রাপি কোন প্রকারে পরমাত্মার অন্তেষণ স্থান প্রাপ্ত হইবেক না। আত্মত্ব ৰূপে প্ৰতীয়মান বাস্তবিক অনাত্মভূত অন্নময়াদি পঞ্চ কোষ-মধ্যে কোনক্রমে তাঁহার অত্থেষণ করি-বেক। ধ্যানপরায়ণ তপস্থী বেদে আত্মার অন্থেষণ ন। করিয়া আলোচন-বিশিষ্ট ধ্যান-যোগেই সেই প্রভুকে সন্দর্শন করেন। রাগাদি-বাছেন্দ্রিয়-ব্যা-পার-রহিত হইয়া উপাসনা করিবেক; এমন কি, মনে মনেও কোন চেষ্টা করিবেক না। হে রাজন্! ভুমি এইৰূপ শারীব্লিক ও মানসিক ব্যাপার-পরি-শূন্য হইয়া হৃদয়াকাশে সেই বেদ-পরিকীর্ত্তিত বাক্য-মনের অগোচর পরত্রন্ধের সন্নিহিত হও। কেবল মৌনভাব অবলম্বন করিলেই কেহ মুনি হয় না এবং বনবাস-মাত্র-দ্বারাও মুনি হইতে পারে না; যিনি প্রত্যগাত্মার লক্ষণ (জগজ্জনাদি-হেতুত্ব ও সচিদা-নন্দকত্ব) অবগত হইয়াছেন, তাঁহাকেই শ্রেষ্ঠ মুনি বলা যায়, অর্থাৎ সন্ন্যাসী ও যোগীদিগের অপেক্ষা জ্ঞানীই শ্রেষ্ঠ হন। সর্ববিজ্ঞতা-প্রযুক্ত সর্ব্ব বিষয়ের ব্যাকরণ অর্থাৎ প্রকটন করাতে জ্ঞানী পুরুষ বৈয়া-করণ বলিয়া উক্ত হন। সেই ব্যাকরণ, মূল কারণ

ব্রহ্মকে প্রাপ্ত হইরাই হয়; যেহেতু ব্রহ্মই সমুদর
বিষয় ব্যাক্ষত করেন। সকল লোকের প্রত্যক্ষদর্শী
মন্ত্র্যা সর্বাদশী হয়েন;—ব্রহ্মবিদ্যাবান্ ব্রাহ্মণ সত্যে
অবস্থান করতই সর্বাজ্ঞ হইরা থাকেন। হে ক্ষজ্রিয়!
এইরূপ সাধন-বিশিষ্ট পুরুষ পূর্ব্বোক্ত ধর্মাদি ও
বেদ-সমুদায়েতে সোপানারোহণের ন্যায় আনুপূর্বীক্রমে অধিকা হইরা ব্রহ্ম সন্দর্শন করেন; ইহা
আমি বুদ্ধিযোগে তোমার নিকটে বর্ণন করিলাম।

সনৎস্কৃত্তাত-বাক্যে ত্রিচত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৪৩ ॥

->>

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সনৎস্কজাত! আপনি যাহা কীর্ত্তন করিলেন, তদপেকাও উৎক্ষনী, বিশ্বপ্রকা-শিকা ও ব্রহ্মপ্রাপিকা এই যে উপনিষদ্বাণী অবগত আছেন, বিষয়-সম্পর্ক পরিবজ্জিতা সেই স্বত্নপ্রভা কথা বর্ণন করুন। হে কুমার! আমার এই প্রার্থনা বাক্যে অবধান করুন।

সনৎস্কাত হহিলেন, তুমি অতিনির্বাক্ষ-সহকারে
যাহা আমারে জিজ্ঞাসা করত অতিমাত্র হ্র্যাবিষ্ট
হইতেছ, সেই ব্রহ্ম ঈদৃশ ত্রান্থিত ব্যক্তির লভ্য
হয়েন না; ' আমি ব্রহ্ম' এইরপ নিশ্চয়াত্মিকা
বুদ্ধিতে সংকলপাত্মক মন বিলীন হইলে যে একটি
অনির্বাচনীয় অবস্থা উপস্থিত হয়,—যাহাতে সমুদয়
রভির নিরোধ হইয়া কেবল চিন্তনীয় ব্রহ্মমাত্র চিন্তার
বিষয় থাকেন,—তাহাই ব্রহ্ম-প্রাপিকা বিদ্যা; সেই
বিদ্যা ব্রহ্মচর্য্য অর্থাৎ গুরুকুল-বাস-দ্বারা লভ্য হইয়া
থাকে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, "নিত্যসিদ্ধা ব্রহ্মবিদ্যা কর্মবিৎ আরস্তের যোগ্যা নহে, স্কুতরাং ব্রহ্মচর্য্য-দারা প্র-কাশীকৃতা হইয়া কার্য্যকালে আত্মাতেই অবস্থান করে " এই যে কথা আপনি বলিতেছেন, এরূপ হইলে ব্রাহ্মণের যোগ্য অমৃতত্ব কি প্রকারে লব্ধ হইতে পারে? অর্থাৎ লক্ষবস্তুর লাভার্থে যত্নের **অপেকা** না থাকায় ব্রহ্মচর্য্যাদির অনুষ্ঠান নিরর্থক না হয় কেন ?

সনংস্কৃত্যত কহিলেন, ব্রহ্ম যদিও নিত্য প্রত্যক্ষ্যক থাপি 'বৃদ্ধি-নামক-উপাধি-সম্বস্ধ-জনিত কলুবতা-প্রযুক্ত প্রকাশিত না হওয়ায় অব্যক্ত হয়েন, স্কৃতরাং যে বিদ্যা তাঁহাকে অভিব্যক্ত করিয়া দেয়, তাহা নিত্যাসিদ্ধা হইলেও তাহার সাধনার্থে অবশাই ষত্মের অপেক্ষা থাকে; অতএব যাহা শ্রেষ্ঠতম গুরু-পর-ম্পরাতে নিত্যাসিদ্ধা, তাঁহাদের বৃদ্ধিযোগে ব্রহ্মচর্যাদ্ধার যাহা প্রকাশিতা হয় এবং যাহা প্রাপ্ত হইয়া তাঁহারা এই মর্তালোক পরিত্যাগ করেন, আমি সেই সনাতনী অব্যক্ত (ব্রহ্ম) বিদ্যা কীর্ত্রন করিব।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! ব্রহ্মচর্য্য-দ্বারা সহজে
যে বিদ্যা জানিতে পারা যায়, তাহার সাধনভূত সেই
ব্রহ্মচর্য্য কি প্রকার হয়, ইহা আমারে বলুন।

সনংস্কৃত্ত কহিলেন, ব্রন্ধবিদ্যা সাধনার্থে যাঁহারা ष्पाठाटर्यात महत्व अटवन-शृक्वक अक्र पे मिवा-हाता তাঁহার অন্তরঙ্গ হইয়া ব্রহ্মচর্য্য আচরণ করেন, তাঁ-হারা ইহলোকেই শাস্ত্রকার অর্থাৎ ব্রহ্ম হয়েন এবং দেহ-ত্যাগান্তে ব্ৰহ্মের সহিত একতা-ৰূপ পরম যোগ ব্রহ্মপদ-লাভের উদেশে যাঁহারা লাভ করেন। ইহলোকে শীতোষণদি দ্বন্দ সমস্ত সহ্য করত বিষয় কামনা সকল জয় করেন, সেই সত্ত্বগুণ-ভাজন মানব-গণ, মুঞ্জ হইতে ইধীকার ন্যায়, দেহ হইতে আ-স্মাকে পৃথক্ করিয়া থাকেন। হে ভারত ! পিতা ও মাতা, ইহাঁরা কেবল শরীর উৎপাদন করিয়া দেন, পরে আচার্য্যের উপদেশক্রমে ব্রহ্ম-প্রাপ্তি-রূপ যে জন্মান্তর হয়, মোক্ষের হেতু হওয়ায় তাহাই পবিত্র, অঙ্গর ও অমর। যিনি বাক্য-দ্বারা ব্রহ্মপ্রতিপাদন এবং তৎকলভূত মোক্ষ প্রদান করত ব্রাহ্মণাদি বর্ণ-সকলকে সভ্য-দারা প্রকৃষ্ট-ৰূপে আর্ভ করেন অর্থাৎ দ্বৈত-জনিত জয় নিবারণ-দারা প্রতিপালিত করিয়া থাকেন, সেই আচার্য্যকেই পিতা ও মাতা বলিয়া মানিবেক; তাঁহার ক্লত উপকার স্বীকার

করত কোনক্রমে তাঁহার প্রতি দ্রোহাচরণ করিবেক ন। শিষ্য গুৰুকে নিত্য অভিবাদন করিবেক এবং শুচি ও সাবধান হইয়া স্বাধ্যায় ইচ্ছা করিবেক; কদাচ অভিমান বা রোষ ধারণ করিবেক না, ইহাই ব্রহ্মচর্য্যের প্রথম পাদ। যিনি শুচি হইরা শিষ্যরুত্তি-ক্রমে অর্থাৎ গুরুর উপরে জীবিকা নির্ভর না করিয়া স্বয়ং সায়ং ও প্রাতঃকালে ভিক্ষা-দ্বারা জীবিকা নির্বাহ করতই বিদ্যা লাভ করেন, ত্রন্ধচর্য্য-ব্রতা-ন্বিত সেই শিষ্যেত্ব এৰূপ অনুষ্ঠানকেও ব্ৰহ্মচৰ্য্যের প্রথম পাদ বলা যায়। কর্ম্ম, মন ও বাক্য-দারা, এমন কি, ধন ও প্রাণ-দ্বারাও আচার্য্যের প্রিয়কার্য্য সম্পাদন করিবেক ; ইহাকে ব্রহ্মচর্য্যের দ্বিতীয় পাদ বলে। গুরুর প্রতি যে ৰূপ সমঞ্জসীভূত ব্যবহার করিবে, গুরুপত্নী ও গুরুপুজের প্রতিও সেইৰূপ আচরণ করিবেক ; ইহাকেও ব্রহ্মচর্য্যের দ্বিতীয় পাদ বলা যায়। বিদ্যা-দানাদি-দারা আচার্য্য-ক্লভ স্বকীয় উপকার বিশেষ-ৰূপে জানিয়া এবং ছুঃখ নিরুত্তি ও আনন্দ-প্রাপ্তি-ৰূপ তাহার প্রয়োজন হৃদয়ঙ্গম করিয়া শিষ্য গুরুর প্রতি প্রীতচিত্তে "ইনি আমারে সর্ব্বথা বৰ্দ্ধিত করিয়াছেন [»] এইৰূপ যে মনে করেন, তাহাই ব্রহ্মচর্য্যের তৃতীয় পাদ। প্রজ্ঞাবান্ শিষ্য, আচার্য্যের विम्रामान-बाश थान मिक्कना श्रमान-दाता शतिरगांध না করিয়া, আশ্রমান্তরে অবস্থিতি করিবেন না এব " আমি এই অর্থ প্রদান করিতেছি " ইহা বাক্য-দারা ব্যক্ত করা দূরে থাকুক, মনেও চিস্তা করিবেন না ; অপিচ দক্ষিণা-লাভে আচার্য্য যাহাতে সম্ভোষ-স্থুচক কোন কথা বলেন এৰূপ চেফাও করিবেন না ; ইহাই ব্রহ্মচর্বৈয়র চতুর্থ পাদ। শিষ্য, ব্রহ্মচর্বেয়র প্রয়োজনভূত ব্রহ্মবিদ্যার একপাদ, কাল অর্থাৎ বুদ্ধি-পরিপাক-সহকারে লাভ করেন, আচার্য্যের উপ-দেশ-ছারা এক পাদ প্রাপ্ত হন, উৎসাহ-যোগ অর্থাৎ বুদ্ধি-বৈভব-দারা এক পাদ লাভ করেন এবং সহা-ধাারীদিগের সহিত বিচার-দারা এক পাদ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। পণ্ডিতেরা বলেন যে, ধর্মাদি ছাদশ,

আসন প্রাণ-ক্রয়াদি অন্যান্য অক ও বল অর্থাৎ যোগে নিতা উদাম যাহার স্বৰূপ হইয়াছে, সেই বন্ধচর্যা আচার্যোর উপদেশে বেদার্থ-যোগ অর্থাৎ কর্ম ও ব্রন্ধের প্রাপ্তি-দারা সিদ্ধ হয়। শিষা উক্ত প্রকারে গুরুদক্ষিণা প্রদানার্থে প্রবৃত্ত হইয়া যে ধন উপার্ক্তন করিতে পারিবেন, তাহা আচার্যাকে প্রদান করিবেন। আচার্যা সেই ব্লক্ত্তগান্বিতা উপজীবিকা এইৰূপে প্রাপ্ত হন। গুরুর ন্যায় গুরু-পুত্রের প্রতিও শিষোর এইৰূপ বাবহার হইয়া শ্বাকে।

শিষা পূর্ব্বোক্ত প্রকারে ব্রহ্মচর্য্যে অবস্থান করত সর্বতোভাবে বর্দ্ধিত হন এবং বছল পুত্র ও স্থখাতি লাভ করেন; অপিচ দিগ্দিগন্তর-বাসী জনগণ তাঁ-हात कल वर्षां नाम भन कान करत वर जान-কানেক শিষোরাও ব্রহ্মচর্য্যার্থে তাঁহার গৃহে অব-স্থিতি করেন। এইৰূপ ব্রহ্মচর্যা-দ্বারা দেবগণ দেবত্ব প্রাপ্ত হইয়াছেন এবং মনীষা-সম্পন্ন মহাভাগ ঋষি-রাও ব্রহ্মলোক লাভ করিয়াছেন। ইহার দারাই গন্ধর্ব ও অপ্সরাদিগের ৰূপ হইয়াছে এবং সূর্য্যও এই ব্রহ্মচর্য্য-দ্বারা প্রতি দিন গণণমণ্ডলে সমুদিত হইতেছেন। যাঁহারা চিন্তিতবস্তু-প্রদ চিন্তামণি-নামক পারদ-গুটিকা-বিশেষ প্রার্থনা করেন, ভাঁছাদের ঐ প্রার্থিত-বিষয়ের প্রাপ্তি হইলে যাদৃশ ভাব হইয়া থাকে, উক্ত দেবাদি সকলেও ঐ ৰূপে এই ব্ৰহ্মচৰ্য্য প্রাপ্ত হইয়া তাদৃশ,ভাব প্রাপ্ত হইয়াছেন, অর্থাৎ সংকপোনুসারে চিন্তিতবস্তু প্রদানের অধিকার লাভ করিয়াছেন। হে রাজন্! যিনি তপস্যার অনুষ্ঠান করত উক্ত প্রকার চতুষ্পাদ ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন এবং তদ্বারা দেহ পবিত্র করেন, সেই বিদ্বান্ পুরুষ ঐত্তপ অমুষ্ঠান-ছারা যাবজ্জীবন রাগ-ছেষাদি-পরিশূন্য থা-কেন অথবা যুক্তি-পূর্বক বেদান্ত অর্থ-সকলের অমু-ধ্যান দারা তত্ত্বজান-লাভে সমর্থ হন এবং চরমে মৃত্যুকে জয় করেন। হে ক্ষজিয়! ব্রহ্মবিদ্যা-বিহীন মানবগণ বিশুদ্ধ কৰ্ম-দারা অনিত্য লোক-সমস্ত জয় করিরা থাকেন; পরস্ত বিদ্যাবান ব্যক্তি জ্ঞান-ছারা

বিশ্বাত্মা ব্রহ্মকেই প্রাপ্ত হন; জ্ঞান ব্যতিরেকে মুক্তি লাভের আর কোন পথই বিদ্যমান নাই।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যে বিদ্বান্ পুরুষ হৃদয়ে ব্রন্ধের সং ৰূপ সন্দর্শন করেন, তাঁহার নিকটে উহা শুক্র, লোহিত, শ্যামল, কজ্জল ও ধুমল বা পিঙ্গল বর্ণের ন্যায় প্রতিভাত হয়; অতএব সেই সর্বব্যাপী অবি-নাশী পরব্রন্ধ কিৰূপ ৰূপ-বিশিষ্ট, তাহা আমারে বলুন।

সনংস্কৃতি কহিলেন, হে রাজন্! ব্রন্ধের ৰূপ শুক্ল, লোহিত, শ্যামল, ধুমল বা পিঞ্চল বর্ণের ন্যায় প্রতীয়মান হয় বটে কিন্তু তাহা না পৃথিবীতে, না অন্তরীকে, না সমুদ্রের জলে, কুতাপি বিদামান নাই। কি তারকাপুঞ্জ, কি বিছ্যুদাবলী, কি মেঘ-মালা, কি বায়ুচক্ৰ, কোন স্থানে ব্ৰঙ্গের ৰূপ আশ্রিত দেখা যায় না। তাহা না দেবতা-সমুহে, না চক্র-মগুলে, ना स्र्यामशुला, ना अक्रिक्त, ना यजूर्वित, ना व्यथक्तरवरम, ना स्विमल मामरवरम, ना तथग्रस्त, না বাইদ্রথে, না মহাত্রত যজে, কুতাপি দৃফ হইবার নহে; যেহেতু ব্রহ্ম নিতা, তাঁহার নাম ৰূপের প্রস-ক্তিই নাই। তাঁহারে কোন ক্রমে অতিক্রম করা যায় না; তিনি অজ্ঞান-ৰূপ উপাধির অতীত। প্রলয় कारल मर्य-मश्राती कालउ उँ।शाउ लीन रहेशा থাকে। তাঁহার ৰূপ অতি ছুর্লফা; উহা কুরধারার ন্যায় স্থান্দ্রতম, অথচ পর্বতাদি মহন্তর বস্তু-সকলের অপেক্ষাও মহৎ। ব্রহ্ম সর্বভূতের অধিষ্ঠান ও নি-র্বিকার। তিনিই দৃশ্যমান ভূতপ্রপঞ্চ, তিনিই ব্রহ্ম, তিনিই যশ, অর্থাৎ তিনিই সর্ব্বময়, রুহৎ ও রুমণীয়। यिमन स्वर्ग इटेट कू ७ व क्या वर घर मृखिका स লীন হয়, সেইৰূপ তাঁহা হইতে সমস্ত প্ৰাণিবৰ্গ উৎ-পন্ন হইয়াছে এবং তাঁহাতেই প্রলীন হইয়া যায়। তিনি অনাময় (দ্বৈতরোগ-বিবৰ্জ্জিত) উদ্যত (স্বগ-দাকারে উদাত) ও মহৎ যশঃ স্বৰূপ (পরমব্যাপক) পণ্ডিতেরা বলিয়া থাকেন, তাঁহার বিকার কেবল ৰাক্য-মাত্ৰে, স্বৰূপে নহে। তাঁহাতেই এই সমুদয় জ্পং প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। যাঁহারা তাঁহারে জ্বানেন, তাঁহারা অমৃত অর্থাৎ মুক্ত হন।

> সনৎস্কাত-বাক্যে চতুশ্চত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৪৪ ॥



সনৎস্থজাত কহিলেন, হে রাজেন্দ্র! শোক, ক্রোধ, লোভ, (স্পৃহা) কাম, মোহ, (প্রজ্ঞার অভাব) পরাস্থতা, (নিদ্রা-পরতা) ঈর্ষ্যা, অভিমান, বিধিৎসা, কুপা, (স্নেহ্) অস্থা ও জুগুঞ্চা, মনুযোর প্রাণ-বিনাশী এই দ্বাদশটি মহাদোষ। এই সকলের মধ্যে প্রত্যেকেই মনুষ্যদিগকে আশ্রয় করিবার নিমিত্তে তাহাদিগের পর্যাপাসনা করে। মনুষা ঐ সমস্ত দোবে আবিক ও মূঢ়বুদ্ধি হইয়া পাপকর্মের আরড়ে প্রবৃত্ত হয়। স্পৃহয়ালু, উগ্র, (নির্দন্য) পরুষ, (রুক্ষ-বাক্য) বদান্য, (বছভাষী) মনে মনে কোপধারী ও বিকথন, এই ছয় নৃশংসধর্ম। মনুষ্য অর্থ প্রাপ্ত হইয়াও তাহার উপযুক্ত বাবহার করে না, প্রত্যুত শ্রেষ্ঠ লোকের অবমাননা করিয়া থাকে। সম্মোগ-मित्रिष्यम, (जी-मङ्गानि विषद्य श्रुक्षमार्थ वृक्ति रूउयाय ছুর্বাবস্থিত) অতিমানী, দান করিয়া আত্মশ্লাঘা-কারী, রূপণ, ছুর্বল, (বল-দ্বারা পরের অনিউকারী) বছপ্রশংসী, (আত্মস্তুতি-পরায়ণ) ও সর্বাদা বনিতা-विष्विंगे, এই माज्जन পाशभील मनुषा नृगश्म বলিয়া নির্দিউ হইয়াছে। ধর্ম, সত্য, তপসাা, দম, অমাৎস্থ্য, হ্লী, তিতিক্ষা, অনস্থ্য়া, দান, প্রুত, ধৃতি ও ক্ষমা, এই দ্বাদশটি ব্রাক্ষণের মহাত্রত। যিনি এই দ্বাদশটি হইতে পরিচ্যুত না হন, তিনি এই সমগ্র বস্থার। শাসন করিতে পারেন। যে ব্যক্তি এই সকলের মধ্যে তিন, ছুই বা একটিরও অধিকারী হয়েন, তাঁহার স্বকীয় কোন বস্তুই নাই, ইহা জ্ঞান করা কর্ত্তব্য ; অর্থাৎ ধর্মাদির মধ্যে একটির প্রতিও খাঁহার পক্ষপাত হয়, তিনি তদর্থে সর্বস্থাপরিত্যাগ করেন। দম, ত্যাগ ও অপ্রমাদ, এই তিনটি অমৃ-

তের অধিষ্ঠান; মনীষা-সম্পন্ন ব্রহ্ম-পরায়ণ ব্রাহ্মণ-গণেরই এ সকলেতে অধিকার হয়।

সত্যই হউক বা অসত্যই হউক, পরের দোষ কীৰ্ত্তন করা ত্রাহ্মণের প্রশস্ত নহে; যাহারা এৰূপ করে, তাহাদিগের নরকই অধিষ্ঠান হয়। পূর্বে 'মদ অফীদশ দোষযুক্ত' এইৰূপ উল্লিখিত হই-शाष्ट्र, किन्छ मिटे माक्किल श्रक्तके बाप कीर्जिक হয় নাই; অতএব এক্ষণে তৎসমুদায়ের নির্দেশ করা যাইতেছে। 🖍 লাক-দ্বেষ্য, (পরদার-হরণাদি) প্রাতিকূল্য, (ধর্মাদি বিষয়ে বিশ্লাচরণ) অভ্যস্থরা, (গুণিগণের প্রতি দোষারোপ) মিথ্যা কথা, কাম, ক্রোধ, পারতন্ত্র্য, (মদ্যাদির বশীভূত হওয়া) পরি-বাদ, পৈশুন, (রাজ-ছারাদি-স্থলে পরদোষ-স্থচন) অর্থহানি, (নট নর্ত্তক বেশ্যাদিতে অথবা রাজ-দণ্ডে বিনিয়োগ-দ্বারা ধনক্ষয়) বিবাদ, (শত্রুতা) মাৎসর্য্য, প্রাণি-পাড়ন, ঈর্ষা, মোহ, (দর্পের হেতুভূত হর্ষ) অতিবাদ, (মর্য্যাদার অতিক্রম-পুর্বেক বাক্যপ্রয়োগ) সংজ্ঞানাশ, (কার্য্যাকার্য্য-বিবেক-রাহিত্য) ও অভ্য-স্থারিতা, (অনবরত পর-দ্রোহশীলতা) মদের এই অফীদশ দোষ ; অতএব প্রাজ্ঞ ব্যক্তি কদাচ তাহা-তে মত্ত হইবেন না, কেন না মত্ত হওয়া সততই বিগহিত।

সৌহন্যে ছয়টি গুণ জানিতে ছইবে। স্থহনের
প্রিয় ঘটনায় স্থহদেরা হৃষ্ট হন এবং অপ্রিয় ঘটনায় ব্যথিত হইয়া থাকেন। তৃতীয়ত, যিনি আপনার অত্যন্ত হিতকর বস্তু যাচমান ব্যক্তিকে দান করেন, যাক্রা করিবার অযোগ্য বস্তুও সেই স্থহদের নিঃসন্দেহ দেয় হয়। অন্তঃকরণের ভাব যাঁহার শুক্ষ, তিনি প্রার্থিত হইয়া অতিমাত্র প্রেমাস্পদ ঐশ্বর্যা ও পুত্র কলত্র পর্যন্তও প্রদান করিতে পারেন। চতুর্থত, স্থহাক্তি কোন লোককে সর্বাস্থ দান করিয়াও 'আমি ইহার উপকার করিয়াছি ' ভাবিয়া তাহার গৃহে বাস করেন না। পঞ্চমত, তিনি মিত্রাদির উপরে নির্জর না করিয়া আপনার উপাজ্ঞিত দ্রবাই

ভৌগ করেন। বঠত, মিজের হিতার্থে তিনি স্বীয় সঙ্গলের হানি ক্রিটেড পরাজুখ হন না। যে খন-मानी शृहक छक दीजिक्टम छनवान, मानमील ७ माजिक रेन, ठामून शुक्रय नकामि शक विषय रहेट জ্যোত্রাদি পঞ্চ ইন্দ্রিয় নিবর্ভিত করেন। স্বীয় স্বীয় বিষয় হইতে ইন্দ্রিয়গণের নিবর্তন-রূপ এই তপশ্চরণ ममृक रहेरमञ्ज खान-याग-वाजित्तरक रूपन छैई-গতিপ্রদ হয় মাত্র, জ্ঞানের ন্যায় ইহলোকেই কৃত-কার্যা করিতে পারে না। যাঁহীরা তীব্রতর বৈরা-গোর অভাবে ধৈর্য্য হইতে পরিভ্রম্ট হন, ভাঁহাদের " जन्मत्नादक निवा सूथ-ममस मदद्वात कतिव " धरे-ৰূপ সংকণ্প-দ্বারাই উক্ত প্রকার তপশ্চরণ সঞ্চিত रुरेया थादन। यारा रुरेए यक्क मकल व्यविक्र হয়, সেই সত্য সংকম্পের অমুরোধ-বশতই কাহারো মানস-দারা, কাহারো বাক্য-দারা, কাহারো বা কর্ম-দারা যজ্ঞ সিদ্ধা হয়, অর্থাৎ কেহ কেহ ধ্যানাদি-ৰূপ যজ্ঞ করেন, কেহু কেহু অধ্যয়ন জপাদি-ৰূপ যজ্ঞ করেন, কেহ কেহ বা প্রসিদ্ধ জ্যোতিটোমাদি যজের অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন। রাজা যেমন ভৃত্যের উপরে আধিপতা করেন, সেইৰূপ সংকণ্প-भूना हिलाञ्चा मरान-उकारवित मरा-मश्कण्य शूक्रस्वत অধিষ্ঠাতা হন। অপিচ আমার আরও কিঞ্চিৎ মত প্রবণ কর। সংকণ্প-বিহীন ঈশ্বর নির্গ্রণ-ব্রহ্মবেদী वाकार्गत मश्करण्य विरमय बार्य व्यक्षित कर्त्रत. অর্থাৎ সপ্তণোপাসক অপেক্ষা নির্গুণরেদী ব্রাক্ষণেতে সত্য-সংকল্পত্মাদি অতিশয় আবির্ভূত হয়।

ব্ৰহ্ম-প্ৰাপ্তির নিদানভূত এই বোগ-শাস্ত্ৰ শিষ্য-वर्गरक अधामन कड़ाहरवक। शिखरण्डा बरमन, এড়ডিয় অন্য সকল শান্ত কেবল বাকোর বিকার মাত্র। এই যোগশান্তে সমস্ত বিশ্বপ্রপঞ্চ প্রতিষ্ঠিত ररेशाह, प्रशंद नक्बर यात्रीय प्रश्नीय द्वरियाह : যাঁহার। তাহা জানেন, জাঁহার। অনুভ আরাৎ মুক্ত रत । दर त्रामकः। कर्मा समात्र नार्श वासू विक हरे। रहेट्ड शाहित्वक मा ै रह नदिका । विकास शूक्रव र्शियरे करूक वा यखारे करूक, उचाता कराइ मुख्न পার না এবং অন্তকালেও আনন্দ লাভ করিতে পারে না। রাগাদি-বাছেজিয়-বাপার-রহিত হইয়া একাকী উপাসনা করিবেক; এমন কি, মনে মনে কোন চেফা করিবেক না। অপিচ প্রশংসা ও নিন্দা-তে প্রীতি ও রোষ পরিত্যাগ করিবেক। হে ক্ষত্রিয়! যোগী পুরুষ সোপানারোহণের নাায় আরোপ, বাা-মিশ্র ও অপবাদ-ক্রমে পুর্ববাক্ত বেদ অর্থাৎ দৃটি-**जिन ममुनारम अवद्यान कर्नल हेहरलारक है ज़क्कारक** দর্শন করেন এবং তাঁহাতে লয় প্রাপ্ত হন। হে विषन्! कर्म अप्रका जन्मविषा य त्यामी, हेरा আমি তোমার নিকটে বর্ণন করিলাম।

সনৎস্কৃতি-বাক্যে পঞ্চ তথারিংশ অধ্যায় नमाश्च ॥ ८० ॥

সনৎস্থজাত কহিলেন, বিশ্বের উৎপত্তি স্থিতি ও **गংহারের বীজ-স্বরূপ, সর্ব্ধ-চেফা-প্রবর্ত্তক, আনন্দ-**ৰপ, বৃত্তিৰপ উপাধি-খূন্য, বিজ্ঞানময়, সুৰ্য্যাদিৰপে প্রকাশমান, মহদ্বশো-নামক সেই যে ব্রহ্ম, তাঁহা-কেই ইন্দ্রিয়গণ উপাসনা করিতেছে এবং সেই মূল কারণ হইতেই স্থ্য (জগৎ-প্রস্ব-ধর্মা মায়া-রূপ উপাধি-যুক্ত ঈশ্বর) বিরাজমান হইতেছেন। যো-গীরা সেই স্নাতন ভগৰান প্রমাত্মাকে সন্দর্মন করেন, অর্থাৎ চিত্তর্জি-নিরোধ-রূপ যোগ্যনার ই সবৈশ্বর্য্য-সম্পন্ন অখতেওকরস পরমাত্মার দর্শনিজ্ঞাত-朝村有4人作品、公司通用自治器的企业。

उक्त अवाक्ष्य निजानस क्रेना एक वर्शक यानम् नाम रेठ छना-काछि दिश्वत्क क्षाश्च इट्या कश-क्रमापि करिया नमर्थ इन এवः उन्हातारे वृक्ति शाहे ছে খাকেন। ভীষণ বস্তু-সকলেরও ভয়প্রদ জৈই বরং-ক্যোডিঃ ওক, স্থ্যাদি ক্যোডিঃ ব্রুলার্থ-সক-লেও তথার। সত্য কর করিতে অর্থাৎ ত্রহ্ম প্রাপ্ত করে মধ্যে থাকিয়া, সমুদর প্রকাশিত করিতেছেন।

বোগীরা সেই সনাতন ভগবানী পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন

পৃথিবী-প্রভৃতি পঞ্চভৃত সলিলের ন্যায় একরস ব্রেক্ষতে অবস্থিত আছে; চৈতন্য-ব্রুপে দ্যোতমান জীব ও ঈশ্বর সেই পঞ্চভৃত হইতে উৎপন্ন পাঞ্চ-ভৌতিক দেহকে হৃদরাকাশে আত্ময় করিয়া আ-ছেন। স্বযুপ্তি কালে জীব এবং প্রলয় কালে ঈশ্বরও তন্দ্রা-যুক্ত হন, কিন্তু পরমাত্মা অতন্দ্রিত। সেই মায়াচ্ছাদন-পরিখন্য, সূক্র্যারও স্বর্যা অর্থাৎ অপরি-চিন্ন সচ্চিত্রপ নিত্যপ্রকাশ ও সর্বাধিষ্ঠানভূত পর-মাত্মা ঐ জীব ও ঈশ্বরকে এবং পৃথিবী ও স্বর্গকে ধারণ করিতেছেন। যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন।

শুক্র জীব ও ঈশ্বরকে এবং পৃথিবী স্বর্গ-দিপ্সপ্তল-প্রভৃতি সমগ্র ব্রহ্মাণ্ডকে ধারণ করিতেছেন। তাঁহা হইতে দিক্ ও নদী-সমস্ত প্রবাহিত হইতেছে এবং তাঁহা হইতেই মহাসমুদ্র-সকল নির্মিত হইরাছে। ধোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন।

ষয়ং অধ্রব অর্থাৎ বিনাশশীল হইলেও যাহার কর্মের বিনাশ হয় না, সেই শরীর-ৰূপ রথের প্রা-ক্তন কর্ম-ৰূপ চক্রে অবস্থান করত ইন্সিয়-ৰূপ অশ্ব-গণ প্রজ্ঞাবান্ জীবকে হৃদয়াকাশে সেই দিবা (অশ্বনায়াদির অতীত অলৌকিক) ও অজর (সর্ম্ব বি-কার-বিবজ্জিত) পরমাস্বার সমিধানে লইয়া যায়, অর্থাৎ ইন্সিয়গণ বশীক্ষত হইলে প্রজ্ঞাবান্ জীব ভদারা পরমাস্বতা প্রাপ্ত হন, অন্যথা, শরীর নই ক্ইলেও তৎক্রত কর্মের ধংস না হওয়ায় তৎক্রণমাত্র ভাঁহারে শরীরাস্তরে নিবন্ধ হইতে হয়। বোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমাস্বাকে সন্দর্শন করেন।

ইহাঁর ৰূপ সাদৃশ্যে থাকে না, অর্ধাৎ ইনি অন্ত্র-পম-ছৰপ; কোন বাজিই চকুর্যারা ইহাঁরে দেখিতে শ্লাম না। বাঁহারা মনীবা, (মনের নিএহ) কুক্ষ মন ও হৃদয়-হারা ইহাঁরে জানেন, তাঁহারা অমৃত অর্থাৎ मुक रन। सानीता तर मनाजन जनवान श्रवमा-श्राटक मन्दर्भन करवन।

শুক্র-নামক অধিষ্ঠানে ভাসমানা অবিদ্যা-নামী তরঙ্গিণী মহাভয়স্করী। উহা চিন্তাদি, স্মরণাদি, শ্রোক্রাদি, শ্রাণাদি, বাগাদি, বচনাদি, সম্বাদি, বিষয়াদি, প্রাণাদি, শ্বসনাদি, সংক্ষার ও স্থক্তাদি, এই দ্বাদশ প্রকার সমুদায় দ্বারা গতত প্রবাহবতী এবং চক্রাদির অনুগ্রাহক, তত্তিবিষয়-প্রদর্শন-দ্বারা অশেষ সংক্ষার-পরম্পরার বিস্তারকারী স্র্য্যাদি দেবগণ-কর্তৃক সংরক্ষিতা। জীবগণ সেই অবিদ্যা-তটিনীকে পান অর্থাৎ তৎক্বত অভীষ্ট পুক্র-পশ্বাদি-দ্বারা তৃপ্তিলাভ করত তাহার মধু অর্থাৎ উক্ত পুক্র পশ্বাদি মধুর কলের প্রতীক্ষায় ইহাতে বারংবার সঞ্চরণ করিতেছেন। জীবগণ যে অধিষ্ঠানে পরিভ্রমণ করিতেছেন, যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমেশ্বর-কে সন্দর্শন করেন।

ইতন্তত ভ্রমণশীল জীব-ৰূপ ভ্রমর সম্যক্ প্রকারে চিন্তা করিয়া, অর্ধামাস অর্থাৎ চক্র যাহাতে ভোগ্য হন, সেই কর্মফল-রূপ মধু পান করেন, অর্থাৎ পার-লৌকিক কল-ভোগানন্তর ঐহিক-কলভোগ-বাসনায় পরলোকে সোম-ৰূপ অর্দ্ধ কর্মফল ভোগ করিয়া অপরার্দ্ধ-দ্বারা পুনর্ব্বার ইহলোকে অবতীর্ণ হন। সেই জীবই অন্তৰ্যামী-ৰূপে সৰ্ব্ভূতে অবস্থান করেন এবং তিনিই, যজ্ঞের কম্পনা করিয়াছেন; অর্থাৎ পরমান্সা হইতে অভিন্ন জীবান্সাই বৈদিক-মার্গের প্রবর্ত্তক। যিনি যজ্ঞ-কম্পনা করিয়াছেন, যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন। পক্ষহীন (উংক্ৰমণ-হেডু প্ৰাণ-ৰূপ উপাধি-পূন্য) চিদালা-ৰূপ বিহলগণ আপাত-রমণীর স্ত্রীপুত্রাদি-ৰূপ পত্ৰ-যুক্ত অবিদ্যা-ৰূপ বিনশ্বর রৃক্ষ আত্রয় ক্রিয়া তথায় পক্ষযুক্ত (প্রাণাদি উপাধি লাভে উৎক্ৰমণ-যোগ্য) হইয়া বাৰনামুসায়ে নানা দিকে ক্ষাৎ বছত্র বোনিতে পতিত হুন্ ি যিনি প্রাণাদি উপাধি সমকে कीवप প্রাপ্ত হন, বোগীরা সেই

সনাতন ভগবান পরমেশ্বকে সন্দর্শন করেন।
প্রাণাদি উপাধি-রূপ দর্পণ-সকল চিৎপ্রতিবিষ্কৃত
জীব-সমুদারকে চিদাকাশ হইতে পৃথক্ করিয়া দেয়।
উক্ত প্রাণাদি ব্রহ্ম হইতেই উৎপাদিত হইয়াছে।
ব্রহ্মেতে তৎসমুদায়ের অধ্যাস হইলে যখন সম্যক্
প্র্যালোচন-সহকারে ব্রহ্ম হইতে তাহাদিগকে পৃথক্
করা যায়, তখন জীবেশ্বর-ভৈদ-হেতু উপাধির অসভাব-প্রযুক্ত একমাত্র ব্রহ্মই অবশিক্ত থাকেন। যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরীমেশ্বরকে সন্দর্শন
করেন।

তাঁহা হইতে বায়ু-প্রভৃতি ভূতবর্গ উৎপাদিত হইয়াছে এবং তাঁহাতেই লয়প্রাপ্ত হইবে। তাঁহা
হইতে অমি, সোম ও প্রাণ, অর্থাৎ ভোক্তা, ভোক্তা
ও দেহেন্দ্রিয়াদি উৎপন্ন হইয়া তাঁহাতেই বিস্তৃত
রহিয়াছে। এই দৃশ্যমান সমস্ত ভূত্পপ্রপঞ্চ তাঁহা
হইতেই উদ্ভূত হইয়াছে জানিবেক; আমরা তাঁহার
স্বৰূপ নির্বাচন করিতে সমর্থ নহি। 'যোগীরা সেই
বাকোর অগোচর সনাতন ভগবান্ প্রমেশ্বরকে
সন্দর্শন করেন।

প্রাণ বায়ুতে অপান বায়ুর, মনেতে প্রাণ বায়ুর,
বৃদ্ধিতে মনের এবং পরমাত্মাতে বৃদ্ধির উপসংহার
হইয়া থাকে। যাঁহাতে বৃদ্ধির লয় হয়, যোগীরা
সেই সনাতন ভগবান পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন।

হংস যেমন কোন কোন সময়ে এক পাদ প্রকাশত করে না, সেইবপ জাগ্রং, স্বপ্ন, স্বয়ুপ্তি ও তুরীয়াখ্য পাদ-চতুইন-বিশিই হংস (পরমাত্মা) অগাধ সংসার সাগরের উর্চ্চে পাদ-ত্রন-দারা বিচরণ করত অবশিই তুরীয়াখ্য শিব অবৈত পাদ প্রকাশত করেন না। বিশ্ব, তৈজস ও প্রাক্ত-নামক উর্ক্তন পাদ-ত্রয়ের পরিচালনার্থে ব্যাপ্ত সেই তুরীয়পাদ-কে যাহার। অবলোকন করেন, তাঁহাদের আর মৃত্যু বা মৃত্যুর অভাব হয়না, অর্থাৎ জ্ঞান হইলেই অজ্ঞানক্ত মৃত্যু অমৃত্যুর বিধংস হইয়া প্রেড়া যোগীরা সেই সমাত্রন ভগবান পরমাত্মাকে সম্মূর্ণন করেন।

অদুর্গ-মাত্র (অদুর্গ-পরিমিত হৃদয়-পু্ওরীকে প্রতিষ্ঠিত) পূর্ণ অন্তরাদ্ধা প্রাণ, মন, বৃদ্ধি ও দশে-ক্রিয়াত্মক লিক্স-শরীর সংযোগে নিত্য কাল ইহ-গোক পরলোক ও জাত্রং-স্বপ্ন প্রাপ্ত ইইতেছেন। त्मरे नर्व-नियस्त्री, स्वनीय, डेशाधि-मरुत्यार्थ नर्व-কার্য্যে সমর্থ, মূল কারণ পরমাত্মা প্রতাকৃ চৈত্ন্য-ৰূপে প্রকাশমান থাকিলেও মুঢ়েরা তাঁহারে দেখিতে পায় না। মানব-মণ্ডলী-মধ্যে কেহ কেহ শমদমাদি সাধন-বিহীন, কেহ কেহ বা সাধন-সম্পন্ন আছেন, পরস্তু ব্রন্ধকে সকলের পক্ষেই সমান অর্থাৎ নির্বি-কার দেখা যায়। কি মুক্ত, কি বন্ধ, উভয়ের নিক-টেই ইনি সমান; তমধ্যে যাঁহারা মুক্ত হইয়াছেন, তাঁহারা ব্রহ্মরসের পরাকাষ্ঠা প্রাপ্ত হইয়াছেন; অর্থাৎ এক অবস্থায় যে তুঃথ থাকে, অবস্থান্তরে তাহা দৃষ্ট না হওয়ায় ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে যে, ছংখ উপাধিরই ধর্ম, ভবে, যেমন জবা পুষ্পের রক্তিমাবর্ণ ক্ষটিকে সংক্রামিত হইলে ক্ষটিককে রক্তবর্ণ দেখা যায়, সেইৰূপ ভ্রান্তি-বশ্ত উপাধি-বিশিষ্টেতে ছুংখের উপলব্ধি হইয়া থাকে, অতএব সর্বতোভাবে উপাধি-পরিত্যাগ হওয়ায় যাঁহাদের মুক্তি হইয়াছে, তাঁহাদের আর ছুংখের সংস্পর্ম থাকে না, স্থতরাং তাঁহারা অবশ্যই নিরতি-শয় আনন্দ-ভাজন হইয়াছেন। যিনি সর্বভূতে এইৰূপ সমান, যোগীরা সেই সনাতন ভগবান পর-মাত্মাকে সন্দর্শন করেন।

বিদ্বান্ পুরুষ বিদ্যা (ব্রহ্বাকারা অন্তঃকরণ-রুত্তি এবং 'আমিই এই সমন্ত বিশ্ব-প্রাপ্ত ' এই ৰূপ সর্বান্ম্যাকারা রুত্তি) দ্বারা উভয় লোক (আত্মলোক ও অনাত্ম লোক) প্রকাশিত করিয়া সঞ্চরণ করেন। তৎকালে তাঁহার অন্তত অগ্নিহোত্রও হত হইয়া থাকে, অর্থাৎ জ্ঞানে সমুদ্য কর্মকলই অন্তর্ভূত হয়। অত্রব ক্রেন্দ্রী বাণী তোমার যেন নীচত্ত সম্পাদন না করেন, অর্থাৎ তুমি জ্ঞানবান্ হইয়া 'জ্ঞামি সহান্' এই কথা বলিবারই যোগ্য হও, 'আমি দাস'

একবা যেন চিত্রকাল বলিতে না হয়। একোর নামই 'প্রজ্ঞান;' খাঁহারা ধীর অর্থাৎ ধ্যান-সম্পন্ন হন, তাঁহারাই ইয়া লাভ করিতে পারেন। খাঁহার নাম প্রজ্ঞান, বোগীরা সেই সনাতন ভগবান প্রমাত্মাকে সম্পর্শন করেন।

সেই বাকা মনের অগোচর, জগছৎপত্তি-প্রভৃতির মূল কারণ, নির্বিকার, যোগৈকগমা পরমাত্মা এই-কপ হরেন। তিনি ভোক্তা জীবকে আপনাতে সংহত অর্থাৎ বিলীন করিতেছেন। যে ব্যক্তি সেই পরমারাধ্য পূর্ণ পরমাত্মাকে জানেন, ইহলোকে তাহার অর্থ (মোক্ষ) ব্যাহত হয় না, অর্থাৎ কর্মাক্রার জানকল অনিত্য নহে। যাহাকে জানিতে পারিলে পুরুষার্থের হানি হয় না, যোগীরা সেই স্নাতন ভগবান্ পরমাত্মাকে সন্দর্শন করেন।

যাহা সহস্র সহস্র পক্ষ বিস্তার-পূর্বক দূরে গমন করে, তাহা মনের ন্যায় বেগ-বিশিষ্ট হইলেও শরীর-মধ্যে মধ্যন্থ পরমেশ্বরে সমাগত হয়, অর্থাৎ বোগীদিগের হৃদয়াকাশে অতিদূরত্ব অর্থও সর্বদা দৃষ্টকর হইয়া থাকে। যাহাতে দূরত্ব বস্তুও সমিহিত থাকে, যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমেশ্বরকে সন্দর্শন করেন।

ইহাঁর ৰূপ চকুরাদি ইন্দ্রিয় সকলের গোচর নহে;
বিশুল্পন্ত পুরুষেরা বিশুল্প চিন্ত-দারাই ইহাঁরে
দর্শন করিয়া থাকেন। যৎকালে পুরুষ জগতের
মিত্র ও মনোনিগ্রহে সমর্থ হন এবং পুলাদির বিনাশ হইলেও শোক না করেন, তৎকালেই তাঁহার
চিন্তপুল্পি হইয়াছে জানিতে হইবে। খাঁহারা এইৰূপ চিন্তপুল্পি জানিয়া সয়াস অবলয়ন করেন,
তাঁহারা অমৃত, অর্থাৎ ব্রহ্ম হন। যোগীরা সেই
মনাত্রন ভ্রমনার প্রমেশরকে সক্ষর্পন করেন।

মর্পেরা বেমন গর্জাদি-মধ্যে লুকায়িত হইয়া আপনাদিগকে আচ্ছাদিত করে, সেইৰণ কুলাচারী মুহবোরা অহীয় গুরুপরম্পরার উপদেশ এবং সীয় জীয় চরিত্র-বারা সদ্য মাংস প্রস্তীবেবনাদি পাপ- সমস্ত আছাদিত করিয়া থাকে। আপাকরমনীয় সেই সকল মনুষ্যের নিকটে বিষ্ণু লোকেরা প্রকৃতিকপে মুগ্ধ হইয়া পড়ে; যেহেতু সেই বঞ্চকেরা প্রকাশে শিফাচারের অতিক্রম না করিয়া উহাদিগকে ভয়ের নিমিত্তে মোহিত করে, অর্থাৎ নরকথান্ত করিবার অভিপ্রায়ে উহাদিপকে মদামাংস্সেবনাদি অশুচি ব্রতের উপদেশ-দারা প্রতারিত করিতে থাকে। অতএব সমাক্ পরীক্ষিত লোকদিগের সঙ্গেই সহবাস করা কর্ত্বা। যাহাকে লাভ
করিবার উদ্দেশে সাধুসঙ্গ বিধেয়, যোগীরা সেই
সনাতন ভগবান্ পরমেশ্বকে সন্দর্শন করেন।

জীবমুক্তদিগের এইৰূপ অনুভব হইয়া থাকে যে, দেহেন্দ্রিরাদি সমুদ্য় অসৎ (অনিত্য) স্থতরাং তা-হারা আমাকে কৃম্মিন্ কালেও অসৎকৃত অর্থাৎ সুখ ছৃংখ জরামরুণাদি ধর্মযুক্ত করিতে পারে না। আ-মার জন্ম-মরণ-প্রবাহ-রূপ মৃত্যু-নামক বন্ধই যখন নাই, তথন দেহ বিয়োগ-ৰূপ মৃত্যুও নাই এবং জন্ম-লাভ-ৰূপ অমৃত্যুও নাই। অপিচ যিনি সত্য ও ममान, व्यर्थाए कियन् कात्लु याहात वाथा नाह এবং যিনি সর্বে কালে ও সর্বে দেশে একৰপ, সেই ব্ৰহ্ম ঘটাদি-ৰূপ সত্য ও বৃজ্জুসৰ্পাদি-ৰূপ মিথা উভয়েরই নিএহ-স্থান হওয়াতে সমুদয় জগৎই যখন তাঁহার অধীন রহিয়াছে, তথন আমার মোকই বা কোথা হইতে হইবে? আমিই একাকী কাৰ্য্য ও কারণ উভয়েরই উৎপত্তি-প্রলয়-স্থান। যোগীর। সেই অহংৰপী সনাতন ভগবান প্রমেশ্বরকে সন্দ্র-ৰ্শন করেন।

এই ব্ৰহ্মজ্ঞ-ৰপ ব্ৰহ্ম নাধু-কৰ্ম দাৱাও উৎকৃষ্ট হন
না এবং অসাধু-কৰ্ম-দাৱাও অপকৃষ্ট হন না। দেহাভিমানী মান্ত্ৰগণ-মধ্যেই শুভাশুভ কৰ্মফল দৃষ্ট
হইয়া থাকে, ব্ৰদ্মজ্ঞ পূক্ষণে নহে; যেহেডু ব্ৰহ্মজ্ঞৰূপ ব্ৰহ্ম কৈবল্যেৰ সমান, অৰ্থাৎ কৈবল্যে পূণ্য
পাপের স্পাৰ্শ না থাকা যেমন মৰ্ম্মক্ষি-সম্মত, ব্ৰহ্মজ্ঞ
পূক্ষণেতেও সেইৰূপ। অতঞ্চৰ এই প্ৰকাৱে বোগ-

युक रहेता नसाकाजात तारे वनात थाय रहेए हेका कतिरका वानीता तारे ननाउन उपनान श्रद्धश्रद्धक मन्तर्भन करत्रन ।

অভিবাদ অর্থাৎ নিন্দা-বাক্য-সমস্ত ব্রহ্মজের হুদরকৈ ভাপিত করে না, এবং 'আমি অধ্যয়ন করি নাই, আমি অগ্নিহোত্তের অনুষ্ঠান করি নাই ' এইৰপ চিন্তাতেও ইহার মনস্তাপ হয় না। ব্ৰদ-, বিদ্যা ইহাঁরে শীড়াই সেই প্রজ্ঞা অর্পণ করেন, যাহা धान-मण्णन्न शूक्ररवज्ञारे लाख कर्त्रिता शास्त्रन । उक्-বিদ্যা প্রভাবে শোক-মোহ-নিরুদ্ভি ও সর্ব্বজ্ঞতা লাভ হইলে যাঁহার স্বৰূপ প্রাপ্ত হওরা যায়, যোগীরা সেই সনাতন ভগবান্ পরমেশ্বরকে সন্দর্শন করেন।

এই প্রকারে যিনি গুরুপদেশাস্তে ধ্যান-যোগে আত্মাকে সর্বভূতে সাক্ষাৎ করেন, ভিন্ন ভিন্ন বিষয়-কর্মে আসক্ত অন্য অন্য মানবগণ থাকিতে তাঁহাকে কি আর শোক করিতে হয় ? সর্বাদিকে জলাকীর্ণ বিন্তীর্ণ জলাশয়ে অপ্পমাত্র জল-দারাই ভৃষণার্ড ব্যক্তির যেমন স্নানপানাদি নির্বাহ হয়, সেইৰূপ ममुनाय (वन-मर्पा जाजुकारनद्र উপযোগী माद्रजाश মাত্র গুরু-বাক্যান্তুসারে গ্রহণ করিলেই ধ্যানপরায়ণ আছাজিজ্ঞাস্থ পুরুষের ইউসিদ্ধি হইতে পারে। क्रमरत मंत्रिविके अक्षे-भाज महाया शूक्य मर्भरनत विवय नर्दन। जिनि क्यापि-विदीन श्रेरले पिवा-রাত্র অতন্ত্রিত হইয়া বিচরণ করিতেছেন। আত্ম-জিজাস্থ ব্যক্তি তাঁহাকেই আত্মা জানিয়া ক্লতক্লতা-তা-প্রযুক্ত কর্ম-সকল হইতে উপরত হন, স্থতরাং উপাধি-জনিত কলুষ্তা পরিত্যাগ-হৈতু নির্মাল হইয়া পাকেন। আমিই মাতা পিতা বলিয়া স্ত হইয়াছি এবং আমিই আবার পুত্র হইতেছি। বাহা অভীত ररेबाट ७ भट्य इस्ट्रेंटव अवर वारा विम्रामान प्रशि-রাছে নে সকলেরই আত্মা আমি। হে ভারত! শামি বৃদ্ধ পিতামহ, পিতা ও পুত্র ; তোমরা আ-মার্থ , আছাতে স্বস্থান করিতেছ, অথচ তোমরা

षामात्र परिकेमि এবং पाषाहै पामात सम्मनत्त्र হেতু। আমি বিশ্বকার্যোওত প্রোভ অর্থাই বঙ্কে ञ्ज नरूरणत नाम रक ७ उईछार अनुसाठ हरि রাছি। আমি অজন-প্রতিষ্ঠ আমার অধিষ্ঠানের खः नारे। **जामि ज्यापि-विशेन हरेएने** प्रता-রাত্র নিরালস্য হইয়া সর্বত্র বিচরণ করিভেছি। আ-মাকে বিশেষ-ৰূপে বোধগদ্য করিয়া অধাৎ সর্ক-ভূতের অন্তরাত্মা সর্কেশ্বর ও সর্কাকর্তা জানিয়াই পরিণামদর্শী আন্ধ-জিজ্ঞান্ত পুরুষ প্রসন্ন থাকেন। স্কা অপেকাও স্কা, (তুর্লকা) স্থানা, (অতী-তাদি সর্ব্বপ্রকাশক মায়া-নামক শোভন দিবা লোচন-বিশিষ্ট) প্রত্যগাত্মা সর্বভূতে অন্তর্যামী-রূপে জাগ-ৰক রহিয়াছেন। এক্ষজেরা জরায়ুজাদি সর্বভূতের সেই পিতাকে সর্ব্ব-শরীরে হৃদয়-পুত্তরীকে অবস্থিত कारनन

> সনংস্কাত-বাক্যে সনংস্কাত প্রকরণ ও ষ্ট্চত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৪৬॥

যানসন্ধি প্রকরণ।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, ধীসম্পন্ন বিছুর ও সনৎ-স্থজাতের সহিত এইৰূপে কথোপকথন করিতে করিতে রাজা ধৃতরাষ্ট্রের সেই রাত্রি,অভীতা হইল। রজনী প্রভাতা হইলে পুর্বোল্লিখিত সেই সমস্ত রাজগণ সঞ্জয়ের দর্শনেক্ষায় হ্র্যাবিষ্ট হইয়া সভায় व्यदिम क्रिट्निन। शाख्यगरगत धर्मार्थ-युक्त बाका-বলি অবণ করিতে সমুৎস্ক হইয়া ধৃতরাষ্ট্র-প্রভৃতি मकरलारे मारे स्थावनाका, वर्ग-मिक्क-क्वा, क्लन-বারি-পরিবিক্তা, স্থবিত্ত রমণীর-আন্তরণ-যুক্ত त्रपुर्मत काक्नवम् प्रस्मात ७ मारूमत जानग-निकदत विद्विकीनी, ठक्कथाजा, खुक्रविता, ख्विखीनी वाज-नेकांस গমন করিলৈন। হে ভরতর্বভ! তথায় ভীয়া জোণ, कुल, भना, कुटवर्णा, जन्मध्ये, यात्रीका, विकर्न, भावात नर अवर भावित छात्राद्यत नहि। जानार त्नामस्य, वास्तिक, बरावाळ विश्वन, मरातथ यूर्क्ट्र

ও অন্যান্য শ্রবীর সকলে মিলিত হইয়া ধৃতরাষ্ট্রকে অথে করত প্রবিষ্ট হইলেন এবং ছুংশাসন, চিত্র-দেন, স্বল-পুক্ত শক্নি, ছুর্মুখ, ছুংসহ, কর্ণ, উলুক ও বিবিংশতি, ইহাঁরা অমর্যণ কুরুরাজ ছুর্য্যোধনকে অথে করিয়া পুরন্দর-পারিষদ অমর-র্ন্দের ন্যায় দেই সভার প্রবেশ করিলেন। মহারাজ! পরিঘ-সম-ভুক্ত-বিশিষ্ট সেই সমস্ত শূরগণ প্রবেশ করিলে সেই চিত্তহারিণী রাজ-সভা সিংহ-নিচয়-পরির্তা গিরি-গৃহার ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। সেই স্থ্যা-সম-দীপ্রিশালী মহাধমুর্দ্ধারী মহাতেজন্বী রাজন্য-সকলে সভায় প্রবেশিয়া বিচিত্র আসন-সমস্ত গ্রহণ করিলেন।

হে ভারত! সেই সমগ্র রাজবর্গ আসনস্থ হইলে দৌবারিক আসিয়া "স্ত-পুত্র সঞ্জয় উপস্থিত" এই কথা নিবেদন করত কহিল, "যে রথ পাগুব-দিগের নিকটে গিয়াছিল, তাহা এই আসিতেছে; আমাদিগের দূত বহন-কুশল অশ্ব-সকলের সাহাযোশীঘ্রই আগত হইয়াছেন।" অনস্তর কুগুলধারী সঞ্জয় সত্ত্বর সমীপস্থ হইয়া রথ হইতে অবতরণ-পূর্বক মহাত্ম-মহীপাল-নিচয়ে পরিপূর্ণা সভা-মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

সঞ্জয় কহিলেন, হে কৌরবগণ! আপনারা অবগত হউন, আমি পাণ্ডবদিগের নিকটে গমনানন্তর
এই আগত হইলাম। পাণ্ডবেরা যথা-বয়ঃক্রমামুসারে সমস্ত কৌরবদিগকে প্রতিনন্দিত করিলেন;
—য়কগণকে অভিবাদন, বয়স্য-বর্গকে বয়স্যের ন্যায়
সম্ভাষণ এবং যুবক-সকলকে বয়ঃক্রমামুরপ প্রতিপূজা করিয়া সাদর সমালাপ করিলেন। হে পার্থিববর্গ! পূর্কে আমি ধৃতরাষ্ট্রের অনুশাসনক্রমে পাণ্ডবগণ-সমীপে গমন-পূর্কক তাঁহাদিগকে যেরপ বলিয়াছিলাম, তাহা প্রবণ করুন।

সঞ্জয় প্রত্যাপননে সপ্তচত্তারিংশ র্থানার সমাপ্ত॥ ৪৭॥ 🐩 ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্জয়! তোমাকে রাজগণ-মধ্যে জিজ্ঞাসা করিতেছি, চুরাত্মগণের জীবিতত্তেদী অসীম-সত্ত্ব-সম্পন্ন যোধ নায়ক মহাত্মা ধনঞ্জয় কি বলিয়াছেন বল।

সঞ্জয় কহিলেন, ভাবিসংগ্রামকামী মহাত্মাধনপ্রশ্ন অর্জুন কেশবের সমক্ষে যুধিন্ঠিরের অনুমতিক্রমে যে কথা বলিয়াছেন, ছুর্য্যোধন তাহা শ্রবণ
কর্মন। ভুজবীর্য্য-বিজ্ঞানবান ত্রাস-শূন্য বীরাগ্রগণ্য
কিরীটা, বাস্থদেবের সন্নিধানে আমাকে বলিলেন,
'হে স্থত! ভুমি যাবতীয় কুরুগণের মধ্যে, আর
আমার সহিত যে সর্বাদাই যুদ্ধ ইচ্ছা করে, সেই
মন্দবুদ্ধি অতিমাত্র মূঢ়মতি, কালপক্ষ, ছুর্ভাষী, ছুরাআ, স্থতপুত্রের সমক্ষে এবং পাণ্ডবদিণের সহিত
যুদ্ধ করিবার নিমিত্ত যে সমস্ত রাজগণ সমানীত
হইয়াছেন, তাঁহাদিগেরও সাক্ষাতে ধৃতরাত্র-পুত্রকে
আমার এই কথা বলিও;—যাহাতে তিনি অমাত্যগণের সহিত মছক্ত সমগ্র বাক্য শুনিতে পান তাহা
করিও।"

মহারাজ! দেবগণ যেমন বজ্ঞধারী দেবরাজের ৰাক্য ভাৰণে ইচ্ছা করেন, ৰোধ হয়, পাণ্ডৰ ও সঞ্জয়গণও কিরীটীর উক্ত সেই সম্যক্ অর্থ-যুক্ত বাক্য সেইৰূপ আদর-পূৰ্ব্বক শ্রবণ করিলেন। গা-গুীবধন্বা অর্জ্জুন ভাবী সমরে সমৃৎস্থক হইরা রক্তোৎ-পল-তুল্য লোহিত-নয়নে এই কথা বলিলেন, " ছু-র্যোধন যদি অজমীঢ়-বংশোদ্ভব রাজা যুধিন্তিরের রাজ্য ত্যাগ না করেন, তবে নিশ্চয়ই ধৃতরাষ্ট্র পুজ-গণের অনুপভুক্ত পূর্ববক্বত কোন পাপকর্ম আছে। অন্ত্রধারী ভীমদেন, অর্জ্জুন, নকুল, সহদেব, বাস্কু-দেব, সাতাকি, ধৃউছাম ও শিখণ্ডীর সহিত এবং বিনি অপকার চিন্তা-মাত্রে পৃথিবী ও স্বৰ্গকেও নির্দ্দ্দ করিতে পারেন, সেই ইন্দ্রকণ্প যুখিটিরের महिक याशिमिरशंत युक्त हेन्द्रा, जाशास्त्र भारभत कर्म देव चात्र कि वना बाहेटल शादत ? इंट्यापन বদি এই দকলের সহিত যুদ্ধ-কামনা করেন, তবে

পাওবদিগের সমুদর অর্থই সিঞ্জ হইরাছে। যুধি-ষ্টিরের অর্থসিন্ধি নিমিত্তে তুমি আর সন্ধির প্রভাব क्रिंति थे मा ; यमि हेन्हा रस, उद्ध यूक्ट थाश्व रख। ধর্মচারী যুধিষ্ঠির প্রবাজিত হইয়া বন-মধ্যে যে নিরস্তর ফুংখ-শ্যায় বাস করিয়াছিলেন, এক্ষণে ছুর্য্যোধন পরাস্থ অর্থাৎ মৃত হইয়া সেই নিরতিশয়-তুংখদায়িনী অনর্থকরী অন্তিম-শব্যা প্রাপ্ত হউক। অন্যায়-ব্যবহারী ছুরাত্মা ধৃতরাষ্ট্র-তনয় যে সকল লোকের উপরে আধিপত্য করিয়াছিল, এক্ষণে উহার মৃত্যু হইলে তুমি লজ্জা, জ্ঞান, তপস্যা, দম, শৌর্য্য, ধর্ম-রক্ষা ও বলে উপপন্ন যুধিষ্ঠিরের প্রতি তাহা-**मिशदक अयुत्रक कत्र। आयामिरशत এই বিনয়ী,** সারল্য-সম্পন্ন, তপোদম-বিশিষ্ট, ধর্ম-রক্ষক, বল-শালী ও সভ্যবাদী, নরপতি যুধিষ্ঠির বছবিধ কপট-বাদ ও অতিমাত্র ক্লেশ পাইয়াও সহ্থ করিতেছেন। বিশুদ্ধাত্মা জ্যেষ্ঠ পাণ্ডব যথন উদ্ধত-চিত্ত হইয়া কুরুগণের প্রতি বছ বর্ষ-পর্যান্ত সংযত মহাঘোর রোষ বিসর্জন করিবেন, তথনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে। নিদাঘ কালে প্রজ্বলিত সমিদ্ধ ছতাশন যেমন শুদ্ধ তৃণ-রাশি দহন করে, সেইৰূপ যুধিষ্ঠির ক্রোধ-প্রদীপ্ত হইয়া ছুর্য্যোধনের সেনাকে দগ্ধ করিবেন দেখিয়া অবশ্যই তাহাকে পশান্তাপ করিতে হুইবে।

" যথন রথস্থ, গদা-হস্ত, অমর্যণ, ভীষণ-বেগবিশিক্ট ভীমসেনকে ক্রোধ-বিষ বমন করিতে দেখিবে,
তথনই ছর্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অন্ত্রভাপ করিবে।
সেই অভিমানী যখন সেনাগ্রগামী, বর্মধারী, স্বকীর
অসাধারণ লক্ষণ-যুক্ত অর্থাৎ গদাপাণি, পরবীরঘাতী রকোদরকে সাক্ষাৎ ক্রভান্তের ন্যায় সৈন্যসংহার করিতে দেখিবে, তখনই এই বাক্যের মারণ
করিবে। যখন ভীমসেন-কর্ত্ক নিপাতিত, গিরিশৃক্ত সমৃশ্, ভিন্নকৃত্ত ক্লের-পুঞ্লকে যেন কৃত্ত-সমৃহছারা বৃক্ত ব্যন করিতে দেখিবে, তখনই ছর্যাধন যুদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে। গদাপাণি

जीय-क्री जीयरमन यथन लालन-मर्सा यहानिश्रहत ন্যায় প্রবেশ-পূর্বেক সন্নিহিত হইয়া ধৃতরাষ্ট্রের পুত্র-দিগকে নিহত করিবেন, তথনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে। মহাভয়েও নিভীক, স্থশিক্ষিতান্ত্র, সমরে শত্রুবল-বিমর্দ্দী এই মহাবীর এক রথে অপ্রতিম রথ-সমূহ ও পদাতি-রুদ্দকে গদা-দারা নিহত এবং হস্তিগণকে শিক্য-সদৃশ পাশ-দারা বল-পূর্ব্বক নিগৃহীত করত যখন পরশু-দ্বারা বন-ष्ट्रिन्दन नाम पूर्याप्रतन्त्र ममल रेमनादक विकिश्व করিবেন, তথনই সে যুদ্ধের নিমিত্ত অমুতাপ করি-বে। যথন অনল-ছারা তৃণ-গৃহ-সমাকীণ গ্রামের नाात्र भृजताद्वे-जनप्रभारक एक स्ट्रेंट्ड प्रिथित वरः হতপ্রবীর, বিমুখ, ভয়াকুল, পরাগ্মুখ প্রায়ই অপ্র-গল্ভ-যোধ-পূর্ণ স্বকীয় বিপুল বল-নিচয়কে বজ্ঞাগ্নি-দগ্ধ পক্ক শব্যের ন্যায় ভীমসেনের শস্ত্র-জ্বালায় পরা-হত দেখিবে, তথনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অমু-তাপ-পরায়ণ হইবে।

"রথিশ্রেষ্ঠ বিচিত্র-যোধী নকুল যখন দক্ষিণ-পার্শ্ব ভূণীর হইতে শত শত শর বর্ষণ করত রথী-দিগকে একত্র নিক্ষিপ্ত করিবেন, তখনই ছুর্য্যোধন যুক্ষের নিমিত্ত অনুভাপ করিবে। চির-স্থােচিত হইয়াও নকুল বন-মধাে দীর্ঘকাল যে ছুঃখ-শযাায় শয়ন করিয়াছিলেন, তাহা শ্বরণ করত যখন ক্রোধ-পরীত আশীবিষের ন্যায় ক্রোধ-বিষ বমন করিতে থাকিবেন, তখনই ছুর্য্যোধন যুক্ষের নিমিত্ত অনুভাপ করিবে।

"হে সঞ্জয়! তাক্তাত্মা অর্থাৎ জীবিত-তাাগেও
সমুৎস্ক পার্থিবগণ ধর্মরাজ-কর্তৃক যুদ্ধার্থে সমাদিট
হইয়া শোভন রথ-নিকর-দারা সৈন্য শ্রতি ধাবিত
হইবেন দেখিয়া, ছুর্য্যোধন অবশাই পশ্চাভাপ
করিবে।

শিশু ইইয়াও কার্যো অশিশু, কৃতান্ত্র, শৌর্যা-সম্পন্ন প্রতিবিজ্যাদি পঞ্চ দৌপদী-তনমুকে যথন প্রাণ প্রতি যত্ন ত্যাগ করিয়া কৌরবদিগের অভি- মুখে প্রধাবিত হইতে দেখিবে, তখনই ছুর্যোধন যুদ্ধের নিমিক্ত অমুভাপ করিবে।

" যথন আততারী অর্থাৎ বধার্থে উদ্যত সহদেব অমুক্ষত-গতি, নিঃশন্ধ-চক্র, স্বর্গ-তারক-পুঞ্জ-থচিত, স্থদান্ত-হয়-নিচয়-যোজিত রথোপরি আকা হইয়া শরনিকর-সহকারে রাজগণের মন্তক-সমস্ত ভূতলে বিনাত্ত করিবেন;—মহাভয়য়র সমর-ব্যাপার সমারক হইলে যথন সেই রথস্থ ক্রতান্ত্র বীরবরকে বামেও দক্ষিণে বিবর্ত্তমান এবং সর্ব্বা দিকে সম্পতিত হইতে দেখিবে, তথনই দুর্যোখন যুক্ষের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে। লক্ষাশীল, স্থদক্ষ, সত্যবাদী, মহাবল-শালী, সর্ব্বধর্মে উপপন্ন, ক্ষিপ্রকারী, বেগবান, সহদেব ভূমুল সংগ্রামে যথন গান্ধার-পুত্র শকুনিকে আক্রমণ করত সৈনিকদিগকে বিক্ষিপ্ত করিবেন, তথনই দুর্যোধন যুক্ষের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে।

" মহাধনুর্জারী, শৌর্যাশালী, ক্নতান্ত্র, রথযুদ্ধ-কো-বিদ দৌপদী-পুদ্রগণকে যখন মহাবিষ আশীবিষ-সকলের ন্যায় আগত হইতে দেখিবে, তথনই দুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে।

"কৃষ্ণ-তুলা কৃতান্ত্র পরবীর-ঘাতী অভিমন্য যথন
শর-সমূহ-দারা মেঘের ন্যায় শক্র-সকলকে অভিরুষ্ট
করত বিমর্দ্দিত করিতে থাকিবেন, তথনই দুর্য্যোধন
যুক্কের নিমিন্ত অনুতাপ করিবে। বালক হইয়াও
অবালক অর্থাৎ প্রৌঢ়ের ন্যায়, বীর্যাশালী, ইন্দ্রপ্রতিম, কৃতান্ত্র স্থভ্ডা-নন্দনকে যথন কৃতান্তের
নায় শক্র-সৈন্যোপরি আপ্রতিত হইতে দেখিবে,
তথনই দুর্যোধন যুক্কের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে।

"রিংহসমান-বীর্যা, শীত্রহস্ত, যুক্ক-বিশারদ প্রভ-ক্রক-নামক স্কুবক্পণ বথন সহৈন্য , গুভরাষ্ট্র-নন্দন-গণকে বিক্ষিপ্ত করিবেন, তথনই স্কুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিক্ত অমুতাপ করিবে।

" যথন সলৈন্য হতরাপ্ত্র-তনরেরা হল মহারথ বি-রাট ও ক্রপদকে পৃথক পৃথক সৈন্য লইয়া সমরে অভিমুখীন হইতে দেখিবে, তথনই ছুর্যোধন যুঁজের নিমিত্ত অন্তলপ করিবে। ক্তান্ত ক্রপদরাক যখন রখারোহণ-পূর্বক রোবাবেশে অনায়াস-সাধ্য পুস্প-চয়নের নাার যুবাদিগের মন্তক-সমস্ত চয়ন করিতে উদ্যত হইয়া সংগ্রামে চাপমুক্ত শর-সমূহ-দ্বারা তৎ-সমুদার ছেদন করিতে থাকিবেন, তথনই দুর্য্যোধন যুজের নিমিত্ত অনুভাপ করিবে।

" পরবীর-ঘাতী বিরাটরাজ যথন মদীয় অবসর কালে অনিষ্ঠুরাক্ষতি মৎস্য-দেশীয় সৈন্যগণের সহিত শক্র-সৈন্যে প্রবিষ্ট হইবেন, তথনই ছুর্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে।

" মৎস্যপতি বিরাটের জ্যেষ্ঠ পুত্র অনিষ্ঠুরার্কৃতি উদার-মূর্ত্তি রথিজ্ঞেষ্ঠ উত্তরকে যখন সংগ্রাম-সন্মুথে পাগুবগণের কার্য্যার্থে বর্ম্মধারী দেখিবে, তথনই মূর্য্যোধন যুঁদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে।

"আমি এই অসংশয়িত সত্য-বাক্য বলিতেছি, কৌরবগণ-মধ্যে প্রকৃষ্ট বীর সাধুতম শাস্তমু-তনয় সমরে শিখণ্ডি-কর্তৃক নিহত হইলে আমাদিগের শক্ররা আর কখনই জীবিত থাকিতে পারিবে না। সেনাপতি শিখণ্ডী যখন স্থরক্ষিত রথোপরি আবাদ হইয়া রথিগণকে নিপাতিত এবং দিব্য অশ্বগণ-দারা রথ-সমূহকে বিমর্দিত করিতে করিতে ভীয়ের অভি-মুখে ধাবিত কুইবৈন, তখনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিক্ত অমুভাগ করিবে।

"ধীমান দ্রোণাচার্য্য যাঁহারে গুছ অত্ত্রের কথা বলিয়াছেন, সেই ধৃউছ্যুন্নকে যখন স্প্রুন্নগণের সৈন্যমধ্যে সম্মুখে বিরাজমান দেখিবে, তখনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিন্ত অমুতাপ করিবে। শক্ত-সহুন-সমর্থ সেই অসীম-প্রভাব-সম্পন্ন সেনাপতি যখন শর-নিকর ছারা ধার্ত্তরাষ্ট্রদিগকে বিমর্দিত করত ছোণের অভিমুখে গমন করিবেন, তখনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিন্ত অমুতাপ করিবে।

" क्रीमान, मनीवी, बनवान, मनवी, नक्सीवान, मामकत्व्यक्षे इक्षिनिश्ह माछाकि याँहात मिरागत

चयाी राजन, छारादा त्यान नवारे क्थन महिएछ পারে না। যদি ভূমি এ কথা বল বে, লোক-মধ্যে রধা-ৰচ বিভীয় কোন ব্যক্তিকে যুদ্ধে সহায়-ৰূপে বরণ করিও না, তাহা হইলে আমরা শিনির পৌত্র নির্ভীক ক্তাক্স মহাবল-সম্পন্ন একমাত্র সাত্যকিকেই বরণ করি। এই পরমান্ত-বেন্ডা, শত্রুক্ত-বিমর্দদনকারী, মহারথ সাত্যকি যুদ্ধে অঞ্চিতীয়, ক্নতান্ত্র ও ভয়-খূন্য। ইহাঁর বক্ষন্থল বিস্তীর্ণ, বাছ-যুগল স্থদীর্য এবং শরা-সনের পরিমাণ চারি হস্ত। শিনি-বংশাধিপতি শত্র-হস্তা সাত্যকি যথন আমার আদেশে শর-সমূহ-দারা মেঘের ন্যায় অরাতি-সকলকে প্রবৃষ্ট করত প্রধান প্রধান যোধগণকে আচ্ছাদিত করিবেন, তথনই ছুর্য্যোধন যুঞ্জের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে। সেই স্থুদুঢ়-শ্রাসন-ধারী, দীর্ঘবাছ, মহাত্মা সাত্যকি যথন যুদ্ধের নিমিত্তে অধ্যবসায় অবলয়ন করেন, তখন সিংহের গন্ধ পাইয়া গো-সকলের ন্যায়, শত্রুরা সম-রের অত্যে তাঁহার নিকট হইতে পলায়ন করে। দীৰ্ঘৰাছ, দৃঢ়ধন্বা, অন্তে কৃতী, স্থদক্ষ, ক্ষিপ্ৰহন্ত সেই মহাত্মা গিরি-সমস্তও ভেদ করিতে পারেন এবং সকল-লোক-সংহারেও সমর্থ হন। রণ স্থলে তিনি পগণ-মগুলস্থ স্থাের ন্যায় বিরাজমান হইতে ধা-কেন। অন্ত্র-প্রয়োগ বিষয়ে র্ফিসিংহ সাত্যকির স্ববিহিত ও ছুর্ধিগম বছতর আশ্চর্য্য শিক্ষা আছে। **অন্তের যে যে প্রকার** প্রয়োগকে পণ্ডিতেরা প্রশস্ত বলিয়া থাকেন, সাত্যকি সে সকল গুণেই উপপন্ন। যুদ্ধহলে যৎকালে মধুবংশীয় সাত্যকির শ্বেতবর্ণ रत्र-ठकुकेत्र-यूक स्वर्गमत त्रथ नितीकन कतित्व, তখনই সেই অক্তাত্মা মন্দমতি ছুর্য্যোধন অন্তু-ভাপান্বিত হইবে।

" আমারও এই কাঞ্নমণি-নিকরে উদ্ভাসিত, খেতাখ-যুক্ত, ভরস্কর, কপিয়ক রথধানিকে বখন কেশব-কর্ত্ক অধিষ্ঠিত দেখিবে, তখনই সেই অর্ত্ত-ভাষা মন্দমতি অনুভাগান্তিত হইবে। মহাসংগ্রামে আমি গাণ্ডীক সঞ্চাদন করিতে থাকিলে, উহার

জ্যাতল-নিজ্যেব-জনিত বজ্ঞ-নিজ্যেব-স্মৃত্য হোরতর महानेक यथन व्यवन कविरव जवर चकीव रेमनाभगरक বাণ-বর্ষণাক্ষম রণ-সম্মুধে গো-সকলের ন্যায় প্রভেম হইতে দেখিবে, ভখনই সেই ছুঃসহায়-সম্পন্ন, ছুর্মডি, মন্দবৃদ্ধি, মুঢ় ছুর্য্যোধন যুদ্ধ-বিষয়ে অস্তুতাপ করিবে। यथन कलमाविल-সমুদাত ভীষণ বিদ্যুৎস্কৃলিক-পুঞ্জের ন্যায় গাণ্ডীবের জ্যামুখ-বিনির্গত, স্থতীক্ষাণ্ডা, ছোর-ৰূপ, সমরে সহস্র সহস্র শত্রুছাতী, অস্থিচ্ছেদী, মর্ম-ভেদী, স্থপুঞ্ছ-যুক্ত অসংখ্য শরসমূহ সমাপতিত হইয়া বর্মাচ্ছাদিত বছল-সজাখ-কুল আস করিতেছে দে-খিবে, তথনই ছুর্য্যোধন যুজের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে। শত্রু-নির্মাক্ত বাণ-সকলকে যখন মদীয় বিবিধ শর-সমূহ-দারা সংহৃত হইয়া প্রতীপগামী হইতে অথবা বক্ৰভাবে বিন্ধ হইয়া ছিদ্যমান হইতে দেখিবে, তথনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিন্ত অমুতাপ করিবে। বিহঙ্গণ যেমন রক্ষের অগ্রভাগ হইতে কল চয়ন করে, সেইৰূপ মদাছ-বিমুক্ত বিপাঠাত্র-সকল যথন যুবকর্নের উত্তমাঙ্গ-সমস্ত রাশীক্ষত করিবে, তথনই ছুর্য্যোধন যুদ্ধের নিমিত্ত অনুতাপ করিবে। রঙ্গ-মধ্যে যখন প্রধান প্রধান রথী গজা-রোহী ও অশ্বাবারদিগকে মদীয়[ঁ] শর-নিকর-দ্বারা নিহত ও নিপাতিত হইতে দেখিবে, তখনই ধৃত-রাষ্ট্র-তনয় যুদ্ধের নিমিত্ত অমুতাপ করিবে। যখন সহোদরদিগকে শত্রুর অস্ত্রপথে পতিত না হইতে হইতেই সমর-বাাপার পরিহার করত ইতত্তত পলায়মান দেখিবে, তথনই ধৃতরাষ্ট্র-তনয় যুদ্ধবিষয়ে অমুতাপ করিবে। বিস্তৃতানন ক্রতান্তের ন্যায় আমি যখন শরাসন বিস্তার-পূর্বকে অবিচ্ছিন্নধারার প্রজ-निङ वान-সমস্ত वर्षन क्वज প्रमां ि ও त्रशादाही অরাতিদিগকে দুরে বিক্ষিপ্ত করিব, তথনই সেই मन्द्रिक जांभाविक स्ट्रेट्टा चकीत्र देमनाशन्तक বর্ণন সর্বাদকে প্রধাবিত মদীয় রণ-বারা ধূলি-সমা-কীৰ্ণ এবং গাণ্ডীব-দারা ছিল ভিন্ন ও সম্পূৰ্টিভ ইইতে मिथित, उस्मरे मिर्म मेमदृष्टि शक्ती कद्भि-

 (द। कूर्यााथन यथन नमख निमादक जन्न-भनानिक, ছিন্নগাত্র, বিচেতন, পিপাসিত, আন্ত-বাহন ও ভরা-कुन मृष्टि कन्नित्व;--यथन मिथित, वीर्यामानी व्यथान প্রধান নরেন্দ্র, অশ্ব ও হস্তী সকল হত হইয়াছে, অবশিষ্ট সকলেই আর্ত্তনাদ করিতেছে, কতকগুলি হত হইরাছে, কতক বা হইতেছে এবং প্রকাপতির অর্ক-নিষ্পাদিত অবয়ব নির্মাণের ন্যায় কেশ অহি ও কপাল-সমস্ত ইতন্তত বিকীর্ণ রহিয়াছে; তথনই সেই মন্দুচেতা তাপ-পরায়ণ হইবে। যথন শৈব্য-স্থাবাদি অশ্বপণকে এবং রখোপরি বাস্থদেবকে ও আমাকে দেখিতে পাইবে, আর গাণ্ডীব, দিব্য-শश्च পाश्चना, चक्कत्र-जूनीत्र-यूनन ও দেবদত্তশন্থ সন্দর্শন করিবে, তথনই ধৃতরাষ্ট্র-তনয় যুদ্ধ বিষয়ে অন্ত্তাপ করিবে। বেন যুগান্তে অন্য যুগ প্রবর্তিত করিতে উদাত হইয়া আমি সমবেত দস্থা-সমূহকে উদ্বর্ডিত অর্থাৎ পরাগ্মুখ করত যথন অগ্নির ন্যায় **कोत्रवभगंदक महन कत्रिएक थाकिव, उश्चनहे छूट्या**न-ধন সপুজে তাপান্বিত হইবে। ক্রোধবশবর্তী কুড়-চেন্তা মন্দমতি ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র ভ্রাতৃবর্গ, সৈন্য ও ভৃত্য-গণের সহিত ঐশ্বর্যাভ্রফী হইলে দর্প-শূনা, বিহত-চিত্ত ও কম্পিত-দেহ হইয়া অবশাই পশ্চাত্তাপ क्तिरव।

" कान पिन शूर्वाट्य आमात मक्यावन्तनापि उपक जिला ७ क्यावनाता जिल्ला ७ क्यावनाता जिल्ला जाका आमात जाका आमात जिल्ला ७ क्रिक वाका विल्लान, ' मवामाहिन ! जामात्त क्षावनात क्षावन क्

আমার এতি অমুকুল হইয়াই এইৰপ বিধান করি-ब्रास्टिन। इस्क यूर्क श्रवह ना रहेबा मरन मरने যে পুরুবের জয়াভিনন্দন করেন, ইন্দ্র-প্রভৃতি দেব-গণ তাঁহার শত্রু হইলেও তিনি সকলকে অতিক্রম করিতে পারেন; মামুষগণ-মধ্যে তাঁহার আর চি-স্তার বিষয় কি ? যে ব্যক্তি অত্যম্ভ শৌর্যা-সম্পন্ন মহাতেজন্বী বাস্থদেব কৃষ্ণকে যুক্ষে জয় করিতে ইচ্ছা করে, সে বাছ-দ্বারা অপ্রমেয়-জলনিধি মহা-माभन्न উद्धीर्ग इरेट्ड चिनावी रस्। य निर्द्याध করতল সহকারে অভ্যুচ্চ কৈলাস পর্বতকে ভেদ করিতে ইচ্ছা করে, সে পর্বতের কিছুই করিতে পারে না, কেবল তাহারই নধসহ হস্ত বিশীর্ণ হইয়া যার। যাঁহার গর্তে মহাত্মা প্রক্রামের জন্ম হয় সেই यमः-श्रमीक्षा अस्त्रिगीत्क यिनि अक तरथ ममस्त ভোজ-বংশীয়ু রাজনাগণের উৎসাদন-পূর্ব্বক বলাৎ-কারে ভার্য্যা ৰূপে বহন করিয়াছিলেন, সেই বাস্ত্-দেবকে যুক্তে জয় করিতে যে ইচ্ছা করে, সে প্রেজ্ব-লিত ছতাশনকেও হস্ত-দ্বারা নির্বাপণ করিতে পারে, চন্দ্র স্থর্যোরও প্রভা রোধ করিতে পারে এবং বল-পূর্বক দেবগণের অমৃত হরিতেও সমর্থ হয়। দেবতাদিগের ভূষণ স্বৰূপ এই বাস্থদেব বল-সহকারে গান্ধারদিগকে সমাক্ ৰূপে প্রমধিত এবং নগ্নজিৎ নরপতির সমগ্র পুত্রবর্গকে পরাজিত ক্রিয়া গভীর গর্জনকারী আবদ্ধ স্থদর্শন প্লাজাকে মুক্ত করিয়া-ছিলেন। ইনি বক্ষস্তটের **আঘাত-ছারা পাণ্ড্য-রা**জ-क् निरुष्ठ थवश मस्तर्कृत ममत्त किन्निमिश्वरक मिन्छ क्रिज़ोहिटलन। हेराँ-कर्ज़्क मधा रहेजा वाबागंत्री नभन्नी वष्टवर्ष পर्यास त्राज-भूना। हिला वक्नवा-नामक त्रहे थिनिक निवाप-त्राक, वाहादक होने शुद्ध অন্যের অজের বোধ করিতেন, সে শৈলোপরি বেগে অভিহত স্ভাস্থরের নাায় ক্লফ-কর্তৃক হত হইয়া मृजू-नेवात्र नत्रन कतित्राहिन। अभिन्न हैनि वन-দেবের সহিত মিলিভ হইরা রুক্তি ও অক্সকদিগের সভা-মধ্যগত স্তুষ্ট উপ্রেলন-ডনম্মে নিপাতিত করিয়াছিলেন এবং ভারাকে স্থারিয়া উপ্রসেনকে রাজ্য দিয়াছিলেন। ইনি মায়া-প্রভাবে ভয়-পূন্য আকাশ-ছিত শালুরাজ সৌভের সহিত যুদ্ধ করিয়া ছিলেন এবং সৌভ-ছারে কর-যুগল-ছারা শতমী শক্তি গ্রহণ করিয়াছিলেন; অতএব কোন্ মরণ-ধর্ম-শীল ব্যক্তি ইহাঁর প্রাক্রম সম্ভ করিতে পারে ?

" অস্থরদিগের প্রাগ্জোতিষ-নামে এক অতি-ভরকর, অসহনীর জুর্গম নগর ছিল; তথার ভূমি-পুত্র মহাবল নরকান্তর অদিতির শোভন মণিকুওল-যুগল হরুণ করিয়া সেই স্থানে রাখিয়াছিল। মৃত্যু-ভয়-খূন্য দেবতারাও ইন্দ্র-সহ সমাগত হইয়া তাহা-কে যুদ্ধে পরাস্ত করিতে পারেন নাই; পরে কেশ-বের সেই প্রসিদ্ধ বিক্রম, বল ও অপ্রতিহত অস্ত্র দেখিয়া এবং দস্থা সংহার করা ইহাঁর স্বভাব-সিদ্ধ ধর্ম জানিয়া ইহাঁকেই তাঁহারা দস্য-ব্ধার্থে নিয়ো-জিত করিয়াছিলেন। সিদ্ধি-সমূহে ঐশ্বর্যাবান্ বাস্ত্র-দেবও সেই ছুদ্ধর কর্মা অঙ্গীকার করিয়াছিলেন। এই মহাবীর নির্মোচন নগরে ছয় সহস্র প্রাণী নিহত করিয়া,—মুরাস্থর ও অসংখ্য রাক্ষ্য-পুঞ্জকে নিপাতিত করিয়া মুরের নির্শ্বিত তীক্ষ্ণধার ভয়ঙ্কর পাশ-সমন্ত ছেদন-পূর্বক আপনাকে মোচিত করি-ब्राष्ट्रितन । थे श्वादनहे स्त्रहे महावल नवकाञ्चरत्रव সহিত এই অতিবলশালী বিষ্ণুর সংগ্রাম হইয়াছিল, ভাহাতে সে বায়ুমথিত কর্ণিকারের ন্যায় রুক্ট-কর্তৃক নিহত হইয়া পঞ্জ পাইয়াছিল। অপ্রতিম-প্রভাব-সম্পন্ন বিদ্যাবান্ কৃষ্ণ এইৰূপে ভূমি-পুত্ৰ নরক ও মুরাম্বরকে নিপাতিত করিরা মণ্নি-কুগুল-বর আ-হরণ করত 🕮 ও যশঃ-পুঞ্জে পরির্ত হইরা প্রত্যা-গভূ হইয়াছিলেন। তখন দেবতারা সমরে ইইার সেই ভীবণ কর্ম দেখিরা ইহাঁরে 'যুদ্ধে প্রবৃত হইলে ভোমার পরিশ্রম হইবেক না; আকাশে কি জল-মধ্যে সর্ব্রেই তোমার পতি হইবেক এবং শস্ত্র-সমস্ত তোমার গাত্র-মধ্যে প্রবেশ করিতে পারিবেক না ' এইৰণ বৰ বিশ্বাছিলেন; তাহাতে কৃষণ্ড হুতাৰ্থ

হইরাছিলেন। উদ্শ অপ্রমের, গুণ-লম্পত্তি-সমৃদ্ধ,
অনন্তবীর্যা, অনহনীর, মহাবল বাস্থদেব বিশ্বুকে
ছুর্যোধন জর করিতে আশংসা করিতেছে; বেহেতু
সেই ছুরাত্মা সর্ব্বদাই ইহাঁরে আবদ্ধ করিতে বত্ন
পাইতেছে; পরস্ক ইনি আমাদিগের মুখাবেক্ষার
তাহাও সম্থ করিতেছেন। ছুর্যোধন আমার ও
কল্পের মধ্যে সহসা কলহ উৎপাদন প্রার্থনা করিতেছে, কিন্তু পাগুরদিগের প্রতি ক্লম্পের আত্মীয়তা
বা স্নেহ অপহরণ করা যে অসাধ্য ব্যাপার, তাহা
কুরুক্তেত্রে যুদ্ধে গমন করিয়াই জানিতে পারিবে।

" আমি রাজ্য-লাভে সমুৎস্ক হইয়া শান্তমুতনয় ভীয়, দপুত্ৰ দ্ৰোণ ও অপ্ৰতিদ্বন্দী ক্লপাচাৰ্য্যকে নম-ক্ষার-পূর্বক যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইব। যে পাপরুদ্ধি, পাণ্ডব-দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে সমুৎস্থক ছইবে আমার বিবেচনায় তাহার নিধন হওয়া ধর্মতঃ প্রাপ্ত, অর্থাৎ যদি ধর্ম থাকেন তবে অবশ্যই ভাহার মৃত্যু হইবে। সেই নৃশংসেরা কেবল কপট পাশ-ক্রীড়ায় আমা-দিগকে ভাদশ বৎসরের নিমিত্ত জয় করিয়াছিল। আমরা রাজ-পুদ্র হইয়াও সেই দীর্ঘকাল মহাকটে অরণ্যে বাস করিয়াছিলাম এবং এব্ধ বংসর অজ্ঞাত বাস করিতেও বাধ্য হইয়াছিলাম ; স্থতরাং পাগু-বেরা জীবিত থাকিতে তাঁহাদিগের রাজ্যপদে অধি-ষ্ঠিত হইয়া ধার্ত্তরাষ্ট্রেরা আর কি প্রকারে আনন্দ লাভ করিতে পারে? আমরা যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে তাহারা যদি ইন্দ্র-প্রভৃতি দেবগণকে সহায় করিয়াও व्यामानिशत्क क्या कतिएक मुमर्थ रय, कारा रहेल নিশ্চয়ই বোধ করিতে হইবে যে, ধর্ম্মাপেক্ষা অধর্মা-চরণই ল্রেষ্ঠ এবং জগতে কোন সংকর্মই বিদ্যমান নাই। ছুৰ্য্যোধন যদি এই জীৰাত্মাকে কৰ্ম্ম-বন্ধ এবং আমাদিগকে আপন অপেক্ষা বিশিষ্ট বোধনা করে, ভূবে ৰাস্থদেৰের সাহায্যে আমি নিশ্চরই তাহাক্তে স্কলগণের সহিত নিহত করিবার আশংসা করিবা त्वास्त्रा क्रिक्श क्र क्रिक्श क्र क्रिक्श क्र क्रिक्श क्र क्र क्रिक्श क পাপ-কর্ম যদি নিক্ষণ না হয় এবং সামাদিগের

शक्क रुख रहेर्ड जरीत मानमानि भूग कर्ये वित র্থা না বাদ্ধ, ভবে এই উভয় পক পর্যালোচন कतिया दिविदन प्रदर्शायदनत शताजवर निम्मदन्तर সাধু। হে কৌরবগণ! আমি বে কথা বলিতেছি, हेश তোমाদিপের প্রত্যক্ষই হইবে ;— यूक्त প্রবৃত্ত হইলে ধৃতরাষ্ট্র-তনয়েরা আর জীবিত থাকিবে না। যুদ্ধ ভিন্ন অন্য কোন উপায় অবলয়ন করিলে কৌর-বেরা জীবিত থাকিতে পারে, কিন্তু যুদ্ধে তাহাদিগের কিছুমাত্র অবশেষ থাকিবে না। আমি কর্ণের সহিত ধার্ত্তরাষ্ট্রদিগকে নিহত করিয়া কুরুগণের সমগ্র রাজ্য ব্দর করিয়া লইব; অতএব তোমাদের যে কিছু কর্ত্তব্য ধাকে, তাহা এই সময়ে কর;—আপন আপন অভিলবিত কলত্র-প্রভৃতি সদ্ভোগ করিয়া লও। আগত ও অনাগত বছ প্রকার দৈবযুক্ত রহস্য, কুরু-বৃত্তান্ত বিজ্ঞাপন করিতে পারেন, এরূপ বছল শাস্ত্র-खान-मण्णन्न, मौलवस, कूलीन, मञ्चरमद्र-(वर्षी, हन्स स्टर्यात श्रहण विक्कारन स्निन्भूण, नक्कत-त्यारभन्न निक-মুজ্জ, দিব্য প্রশ্ন-কোবিদ, (অনাগত অর্থের বিজ্ঞা-পক) শৈবাগম প্রসিদ্ধ সর্বতে৷ ভদ্রাদি চক্র-সকলের অমুসন্ধানকারী অর্থাৎ কোন্ নক্ষত্র কোন্ গ্রহ-দারা বিন্ধ হইয়াছে ইত্যাদি বিষয়ের বিচারক, শুভাশুভ मूर्ड-दिमी रुक्त जाक्तांशन यमिछ विमामान ना शादकन, তথাপি প্রত্যক্ষদর্শী র্ফিসিংহ জনার্দনও তাদৃশ লক্ষণ-সমস্ত নিঃসন্দেহ সন্দর্শন করিতেছেন, যাহা-তে আমাদিগের অক্লাতশক্ত যুখিন্তির শক্তগণের নিএছ নিমিন্ত আপনাকে ক্লতকার্য্য বোধ করিতে পারেন। অপিচ আমিও শ্বরং অপ্রমন্ত হইয়া সেই ভাৰী র্ত্তান্ত অবিকল দর্শন করিতেছি। আমার ৰোগ-প্ৰভাৰৰতী পৌরাণিকী দৃষ্টির কোন ব্যাঘাত रत नारे। जामि निकत्तरे जानिएडिं, यूट्स क्षत्र् ररेल १७ताई-शूरकता आत की विक शांकित ना। भागात अहे शाखीव-काम्य न्यूके ना श्रेत्राथ विका-নিত হইতেছে, আহত্ত না হইরাও বস্তুপ্তণ কম্পিত

रहेटछाड अवर बाग-नकन जून-मूच रहेटछ प्रस्तु र विनिर्गठ रहेन्ना शंभरन छेगाठ रहेरण्टह । चनीत জীর্ণ-কঞ্চুক ভাগে করিয়া ভুজক বেমন নির্গত হর, সেইৰূপ আমার এই ধড়ুগ খানি প্ৰসন্ন ইইয়া কোৰ হইতে নিঃহত হইতেছে এবং ধজের উপ-রেও 'হে কিরীটিন্! কবে তোমার রথ-যোজিত হইবে ' এইৰূপ ভয়স্কর উগ্র বাক্য-সকল উক্ত হই-তেছে। রাত্রিকালে শিবা-সকল ঘোররবু করিতেছে এবং অন্তরীক্ষ হইতে রাক্ষস-সমূহ নিষ্পতিত হই-তেছে। আমার শেতাখ-যুক্ত রথ দেখিয়া মৃগ, শৃগাল, ময়ুর, কাক, গুধু, বক, তরকু ও স্থবর্ণ-পক্ষ পক্ষি-সৰুল পশ্চাৎ পতিত হইতেছে; বেহেতু আমিই একাকী শর-নিকর বর্ষণ করত যাবতীয় যোধগণকে শমন সদনে লইয়া যাইতে পারি। নি-দাঘে গহন-বুন-দহনকারী সমিদ্ধ হুতাশনের নাায় আমি লোক-সংহারে স্থির-নিশ্চয় হইয়া পৃথক্ পৃথক্ অস্ত্রমার্গ অবলয়ন-পূর্ব্বক অতিবেগশালী মহান্ত্র স্থূণা-কর্ণ, পাশুপত ও ব্রহ্মান্ত এবং ইন্দ্র আমাকে যে অস্ত্র প্রদান করিয়াছেন, সকলই বিসর্জ্জন করত প্রজা-কুলের আর কিছুমাত্র অবশেষ রাখিব না। হে সঞ্জয়! ভুমি তাহাদিগকে বলিও যে এইৰূপ করিয়াই আমি শান্তি লাভ করিব, যেহেভু ইহাই আমার প্রধান ও স্থির অভিপ্রায়। হে স্থত। ছুর্য্যো-ধনের কত দূর মোহ দেখ, যাখাদিগকে ইন্দ্র-প্রভৃতি সমবেত দেবগণের সাহা্য্য লাভ করিয়াও কেহ সমরে পরাস্ত করিতে পারে না, তাহাদিগের সহিত বল-পূর্বক কলহু করা সে শ্রেয় বোধ কদ্লিভেছে! যাহা হউক সম্প্রতি শান্তমু-নন্দন বৃদ্ধ ভীন্ন, ক্লপ, **দ্রোণ, অশ্বর্থামা ও ধীমান বিছুর, ইহাঁরা সকলে** বে কথা ৰলিতেছেন, তাহাই হউক;—সমন্ত কৌরুৰেয়া আয়ু**নত হ**উক ^স।

যানসন্ধি প্রকরণে সঞ্চয়-বাক্যে অইচন্থারিংশ অধ্যার সমাপ্ত ৷ ৪৮ ৷ বৈশম্পায়ন কহিলেন, হে ভারত! অনস্তর শান্তমু-তনর ভীন্ন সেই সমবেত সমস্ত রাজগণ-মধ্যে ছুর্য্যো-ধনকে এই কথা বলিতে লাগিলেন।

পূর্বে একদা রহস্পতি ও শুক্রাচার্য্য ব্রহ্মার নিকটে উপস্থিত হইয়াছিলেন, এবং ইন্দ্র-সহ দেব-গণ, অগ্নি-সহ বস্থপণ, আদিত্যগণ, সাধাগণ, আনকাশস্থ সপ্তর্ষিগণ, গন্ধর্ব বিশ্বাবস্থ ও শোভন অপ্সরোগণ, এই সমস্ত স্থর্গবাসীরাও তথায় গমন করিয়া দেই লোক-রন্ধ বিশ্বেশ্বর পিতামহকে নমন্ধার-পূর্বেক বেইন করিয়া উপবিই হইয়াছিলেন। তৎ-কালে পূর্বেদেব নর ও নারায়ণ ঋষি অসীম তেজঃপ্র্লু-সহকারে যেন তাঁহাদিগের মন ও তেজ গ্রহণ করত সকলকেই অতিক্রম করিয়া প্রস্থিত হইলেন। তাহাতে রহস্পতি ব্রন্ধাকে জিজ্ঞাসিলেন, হে পিতা-মহ! আপনাকে উপাসনা করেন না, এই ছুই ব্যক্তিকে? ইহাঁদের রন্ধান্ত আমাদিগকে বলুন।

ব্রহ্মা কহিলেন, পৃথিবী ও স্থর্গের উদ্ভাসনকারী, দেদীপামান, বিরাজমান, মহাসত্ত্ব, মহাপরাক্রম, মহাবল-সম্পন্ন যে ছুই ঋষি সকলকে ব্যাপিয়া অতিক্রম করিয়াছেন, তাঁহারাই এই নর নারায়ণ। স্ব-কীয় তপস্যা-ছারা ডেজস্বী হইয়া ইহাঁরা মনুষ্য-লোক হইতে ব্রহ্মলোকে সমাস্থিত হইয়াছেন। হে ব্রহ্মন্! ইহাঁরা কর্ম্ম-ছারা লোকের নিশ্চয়ই আনন্দ-বর্দ্ধন করিয়াছেন; মহাপ্রাক্ত এই ছুই পরস্তপ বস্তুত অভেদ হইলেও দেব-গন্ধর্ব্বগণ-পূজিত হইয়া অন্তর্মন বিনাশার্থে দ্বিধাভূত হইয়াছেন।

ব্রন্ধার সেই কথা শুনিয়া ইক্রপর্হস্পতি-প্রভৃতি দেবগণের সহিত, যে স্থানে নর নারায়ণ তপস্যা করিতেছিলেন, তথায় গমন করিলেন এবং তৎ-কালে দেবাস্থরের যুদ্ধে মহাভয় উৎপন্ন হওয়ায় প্রস্থ মহাত্মার নিকটে বর প্রার্থনা করিলেন। হে ভরত-সন্তম! তথন তাঁহারা " কি প্রার্থনা আছে বল " এই কথা বলিলে ইক্র কহিলেন, আপনারা আমার সাহায্য করুন। অনস্তর তাঁহারা শক্রকে

" তুমি যাহা ইচ্ছা করিতেছ তাহা করিব, " এই কথা কহিলেন এবং শত্ৰুও তাঁহাদিগের সহিত দৈত্য मानवर्गाटक अञ्च क्रिटिन। श्रेत्रस्थ नत्राम्य ममदत्र পৌলোম ও কালকঞ্চ-প্রভৃতি ইন্দ্রের শত শত সহস্র সহত্র শত্রু-সমূহ সংহার করিয়াছিলেন। যুদ্ধ কালে জ্ঞান্তর এই অর্জুনকে গ্রাস করিতে উদ্যত হইলে ইনি ভ্রামামাণ রখোপরি অবস্থান ক্রত ভল্ল-ছারা তাহার শিরশেছদন করিয়াছিলেন। ইনি সমুদ্র-পারে সমরে যটি সহস্র নিবাতকবচদিগকে জয় করিয়া হিরণাপুরের উৎপীড়ক হইয়াছিলেন। এই পরপুর-বিজয়ী মহাবান্ত অর্জুন ইন্দ্র-সহ দেবগণকেও পরাজিত করিয়া হুতাশনের তৃপ্তি-সম্পাদন করিয়া-ছিলেন। সেইৰূপ নারায়ণও অন্যান্য ভূরি ভূরি দৈত্যদানবদিগকে বধ করিয়াছিলেন। এতাদৃশ মহা-বীৰ্য্য-সম্পন্ন সেই এই পুৰুষ-যুগলকে একত্ৰ মিলিড দেখ। গ্রুতি আছে যে, পূর্ব্বদেব নরনারায়ণ দেবে-রাই ৰীরবর মহারথ বাস্থদেব ও অর্জুন ৰূপে সম-বেত হইরাছেন। মনুষালোকে ইন্দ্র-সহ স্থরাস্থরে-রাও ইহাঁদিগকে জয় করিতে পারেন না। ক্লফুই সেই নারায়ণ এবং অর্জুনই নরুদেব বলিয়া স্মৃত হইয়াছেন। এক আত্মাই দ্বিধাকৃত হইয়া নরনারায়ণ ৰূপ ধারণ করিয়াছেন। ইহাঁরা শৌর্য্য কর্ম-দ্বার। অক্ষয় ধ্রুবলোক-সমস্ত ব্যাপ্ত করেন এবং যুদ্ধকাল উপস্থিত হইলে সেই সেই স্থানে পুনঃপুন জন্ম-গ্ৰহণ করিয়া থাকেন। এই হেতু বেদবিৎ নারদ রৃঞ্চি-দিগের নিকটে এই সমস্ত র্জান্ত বর্ণন করত কহি-शारहन (य, यूक्करे हेश्रामत कर्डवा कर्मा।

তাত চুর্য্যোধন! যথন সনাতন মহাস্থা ক্ষাক্র্নিকে এক রথে অবস্থিত দেখিবে,—যথন কেশবকে শব্ধ, চক্র ও গদা হস্তে লইতে এবং ভামধন্থা
অর্জুনকে অন্ত্র-সমস্ত গ্রহণ করিতে দৃষ্টি করিবে,—
তথনই জামার এই বাক্য স্মরণ করিবে; যদি না
কর, তবে কৌরবগণের নিশ্চয়ই এই বিনাশ উপস্থিত। হে তাত! ধর্ম ও অর্থ হইতে তোমার বৃদ্ধি

পরিজ্ঞতা হইরাছে; ভূমি বদি আমার বাক্য গ্রহণ
না কর, তাহা হইলে অসংখ্য স্থলনগণকে নিহত
ল্পবণ করিবে। সমন্ত কৌরবেরা তোমারই মতামুবর্ত্তী হইতেছেন, পরস্ক তুমি পরশুরামের শাপগ্রস্ত
হীনজাতি স্থত-পুদ্র কর্ণ, স্থবল-নন্দন শকুনি এবং
নিজ সহোদর কুদ্রাশয় পাপমতি জুংশাসন, এই
তিনজনের মতকেই ল্পেয় বোধ করিতেছ।

কৰ্ণ কহিলেন, হে পিতামহ! আপনি আমাকে र्य कथा विषालन, हेश आश्रनकांत्र वक्तवा नरह; কেননা আমি স্বধর্ম হইতে অপগত না হইয়া ক্ষত্র-ধর্মে অবস্থিত আছি; বিশেষত আমাতে এমন কোন ছুশ্চরিত্র নাই, যাহাতে আপনি আমাকে নিন্দ। করিতে পারেন। ধৃতরাষ্ট্র-তনয়েরা কশ্মিন্ কালেও আমার কিছুমাত্র পাপ জানেন নাই; আমি ছুর্যোধনের কখন কোন অনিফাচরণ করি নাই, বরং এই ইফসাধনই করিব যে, রণস্থ সমস্ত পাগুব-দিগকে নিহত করিয়া দিব। পূর্বে যাহাদিগের সহিত বিরোধ হইয়াছে, সক্জনেরা তাহাদিগের সহিত আর কি প্রকারে সন্ধি করিতে পারেন? রাজা ধৃতরাষ্ট্রের সর্ব্ব-প্রকার প্রিয় সাধন করা আ-মার নিতান্তই কর্ত্তব্য এবং ছুর্য্যোধনের প্রিয়কার্য্য সম্পাদন করাও বিধেয়, যেহেতু তিনিই রাজ্যপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, কণের বাক্য প্রবণ করিয়া শান্তমু-নন্দন ভীম মহারাজ ধৃতরাষ্ট্রকে সম্ভাবণপূর্বক পুনরায় এই কথা বলিলেন, কর্ণ "পাণ্ডবদিগকে বধ করিব" বলিয়া নিতাই প্লাঘা করে, কিন্তু
এ মহাত্মা পাণ্ডবগণের বোড়শাংসের সম্পূর্ণ এক
অংশও নহে। তোমার ছ্রাত্মা পুক্রদিগের যে মহান্
অনর্থ আগত হইতেছে, সে কেবল এই ছুর্মাতি স্ততপুজেরই কর্ম জানিবে। তোমার পুক্র মন্দর্জি
ছুর্যোধন কেবল ইহাকে আশ্রয় করিয়াই সেই বীরবর অরিন্দম দেব-পুক্রদিগকে শ্রমানিত করিয়াছে।
পাণ্ডবেরা পুর্বে একৈকে যে স্কুছর কর্ম করিয়াছে,

কৰ্ণ ভাচুৰ কোৰ কৰ্ম সম্পাদনে সমৰ্থ ইইয়াছে? विज्ञा वे नगरत धनश्चन विक्रम ध्वकाम-शूक्तक वर्धन ইহার প্রিয়তম ভ্রাতাকে নিহত করিয়াছিলেন, তাহা দেখিয়া তথন এ কি করিয়াছিল ? ধনঞ্জয় সমবেত কৌরবগণকে একাকী আক্রমণ করিয়া সম্যক্ প্রকারে প্রধর্ষণানন্তর যথন বল-পূর্বেক সকলের বস্ত্র গ্রহণ করিয়াছিলেন, তথন কি এ প্রবাসে গিয়াছিল? সে স্থলে কি উপস্থিত ছিল না? ঘোষধাতার গন্ধর্বের। তোমার পুত্রকে যখন হরণ করিয়াছিল, তখন এই স্থৃতপুত্ৰ কোথায় ছিল যে একণে বৃষভের ন্যায় এৰপ আক্ষালন করিতেছে? সে স্থলেও যে, মহাত্মা ভীম, অৰ্জুন ও নকুল সহদেব সমাগত হইয়া সেই গন্ধৰ-দিগকে পরাজিত করিয়াছিলেন। হে ভরতর্যভ! এই ল্লাঘাকারা ধর্মার্ধ-বিলোপী কর্ণের এইৰূপ বছ-তর মিধ্যা বংক্যই সর্বাদা উক্ত হইয়া থাকে, অতএব ইহা বিবেচনা করিয়া ভুমি মঙ্গল চেফা কর।

ভীয়ের বাক্য শুনিয়া মহামনা ভরদ্বাজ-নন্দন রাজগণ মধ্যে পূজা করত ধৃতরাষ্ট্রকে এই কথা বলিজেলন, হে নরেক্র! ভরতশ্রেষ্ঠ ভীয় যে কথা বলিজেছেন, তাহাই করুন; অর্থলিক্স্দিগের ইচ্ছামূর্রুপ বাক্য রক্ষা করা আপনকার উচিত নহে। যুদ্ধের পূর্বের পাণ্ডবদিগের সহিত মিলন করাই আমি শ্রেমকর বোধ করি। সঞ্জয় অর্জুনের উক্ত যে বাক্য নিবেদন করিলেন, সে সকলই আমি স্বীকার করিয়া লইতেছি; ধনপ্রয় তাহা নিশ্চয়ই সম্পন্ন করিবেন, কেননা ত্রিলোক মধ্যে তৎসদৃশ ধন্ত্র্জর আর বিদ্যামান নাই।

রাজা ধৃতরাষ্ট্র দোণ ও ভীমের সেই অর্থযুক্ত বাক্যে অনাদর করিয়া সঞ্চয়কে পাণ্ডবদিগের কথা জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন। তিনি যখন ভীম দো-ণের প্রতি সমাক্ উত্তর প্রদান করিলেন না, ভখনই সমুদ্য কৌরবেরা জীবনে নিরাশ হইল।

ভীয়াদির উপদেশ-কথনে উনপঞ্চাশন্তর অধ্যায় সমাপ্ত । ৪৯ । ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চর! আমাদিগের প্রীতি
নিমিন্তে এছলে বহুঁল সৈন্য সমাগত হইয়াহে শুনিয়া সেই ধর্ম-পুত্র রাজা যুখিন্তির কি বলিলেন?
ভাবী যুজের উদ্দেশে তিনিই বা কি রূপ চেন্টা করিতেছেন? জাতা ও পুত্রগণ মধ্যে কে বা আজ্ঞালাভার্থী
হইয়া তাঁহার মুখ নিরীক্ষণ করিতেছে? মন্দমতি
মৎপুত্রগণ-কর্তৃক প্রতারণা ও অবমাননা-ভারা কোপিত সেই ধর্মজ্ঞ ধর্মচারী যুখিন্তিরকে " শান্তি অবলম্বন করুন " এই কথা বলিয়া কে বা যুদ্ধ হইতে
নিবারণ করিতেছে?

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! পাণ্ডব-সহ পাঞ্চালেরা রাজা যুধিন্তিরের মুখ নিরীক্ষণ করিয়া রহিয়াছেন এবং তিনিও সকলকে অমুশাসন করিতেছেন। পাণ্ডব ও পাঞ্চালগণের রথ-সমূহ পৃথগ্ভূত হইয়া যুক্ষে আগত কুন্তী-নন্দন যুধিন্তিরকে অভিনন্দিত করিতেছে। উদয়োমুখ প্রভাকরের প্রতি নভো-মণ্ডলের ন্যায় পাঞ্চালগণ সমুদিত তেজোরাশি-সদৃশ প্রদীপ্ত-তেজা কুন্তী-তনয়ের প্রতি অভিনন্দন করিতছেন। পাঞ্চাল, মৎস্য ও কেকয়গণ-মধ্যে গোপাল ও মেষপাল পর্যায় সকলেই আনন্দিত হইয়া যুধিন্তিরকে প্রতিনন্দিত করিতেছে। ত্রাক্ষণ-ছহিতা, ক্রিতে, যুক্ষার্থে সক্ষক্ষ পার্থকে দেখিবার নিমিত্ত সমাগতা হইতেছে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয় ! পাগুবেরা ধৃউছ্যুন্ন ও জন্যান্য সোমকগণের যে যে সৈন্যের সহিত আ-মাদিপের যুজ্জযোগ অবধারণ করিষাছে, তাহা বর্ণন কর।

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, সঞ্চয় কুরুসভা-মধ্যে সেই কথা জিজাসিত হইয়া মনে মনে যেন কিছু চিন্তা করত বারংবার উৎকট দীর্ঘ-নিশাস ত্যাগ করিতে করিতে দৈবক্রমে অক্সাৎ মুর্ছান্তিত হইলেন। তথন বিছুর সভা-মধ্যে কুরুগণ-সমীপে ধৃতরাষ্ট্রকে কহিলেন, মহারাজ! সঞ্চয় এই মূর্ছিত হইয়া ভূতলে

পতিত হইলেন; বুদ্ধিহীন ও চেতন-রহিত হওয়ায় কোন কথা উচ্চারণ করিতে পারিতেছেন না।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জ মহারথ কুন্তী-পুত্রদিগের সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন, বোধ হয়, সেই পুরুষ-ব্যান্দ্রেরাই ইহাঁর চিন্তকে অত্যন্ত উদ্বেজিত করি-য়াছেন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, সঞ্জয় আশাসিত হইয়া চেতন লাভ-পূর্বক সভা-মধ্যে কুরুগণ-সল্লিধানে মহা-রাজ ধৃতরাষ্ট্রকে এই কথা বলিলেন, হে রাজেন্দ্র! আমি মহারথ পাগুবদিগকে মৎস্যরাজ-ভবনে নি-রুদ্ধ-ৰূপে আবাস-হেতু রুশকায় দৃষ্টি করিয়াছি। মহারাজ! পাগুবেরা যাঁহাদিগের সহিত আপনা-দিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন, শ্রবণ করুন। তাঁহারা বীর্যাবান ধৃষ্টভ্যামের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ নিশ্চয় করিয়াছেন। যে ধর্মাত্মা না রোষ, না ভয়, না লোভ, না অর্থ, না হেতুবাদ, কোন কার-ণেই কখন সত্য পরিত্যাগ করেন না; ধর্মধারিভোষ্ঠ যে মহাত্মা ধর্ম-বিষয়ে প্রমাণ-স্বৰূপ রহিয়াছেন; সেই অজাতশত্রু যুধিষ্ঠিরের সহিত পাগুবেরা আপ-নাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। থাঁছার বাহুবলে ভুল্য হইতে পারে, পৃথিবী-মধ্যে এমন क्टिश विषामान नारे; य ध्यूकाती, ममख महीभान-গণকে বশবর্তী করিয়াছিলেন; যিনি কাশি, অঙ্গ, মগধ ও কলিঙ্গ-দেশীয়দিগকে যুদ্ধে জয় করিয়াছি-লেন; সেই ভীমসেনের সহিত পাগুবেরা আপনা-দিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। থাঁছার বীর্ঘা-প্রভাবে যুধিষ্ঠিরাদি চারিজন প্রধান মানব জতুগৃহ হইতে সহসা ভূ-পৃষ্ঠে নিঃসারিত হইয়া-ছিলেন; যে কুন্ত্রী-পুত্র রকোদর মনুষ্য-খাদক হিড়িয় রাক্ষস হইতে তাঁহাদিগের রক্ষক হইয়াছিলেন; मिक्त्रांक क्य़ज्थ यथन ट्योभनीटक रतन करतन, তখন যে কুন্তী-পুত্র ব্কোদর তাঁহার আত্রয় হইয়া-ছিলেন; এবং যিনি বারণাবত নগরে সমবেত দক্ধ-প্রায় পাণ্ডব-সকলকে মুক্ত করিয়াছিলেন; তাঁহারা

সেই ভীমসেনের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ व्यवधात्रं कतित्रारह्न। त्जोभनीत श्रीजि-मन्नामतन यप्रवाम् रहेशा विनि विषमञ्ज अग्रहत गन्नामान-निश्रंदत প্রবেশ-পূর্বক ক্রোধবশ-নামক রাক্ষসগণকে নিহত করিয়াছিলেন ; যাঁহার ভুজযুগলে দশ সহস্র মাতকের ভুলা বীর্যাসার সমর্পিত হইয়াছে; সেই ভীমদেনের সহিত পাগুবেরা আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। যে বীর পূর্বে ছতা-শনের তৃটি নিমিত্ত কৃষ্ণকে সহায় করিয়া, যুদ্ধে প্রবৃত্ত পুরন্দরকে জয় করিয়াছিলেন; যিনি সাক্ষাৎ শূলপাণি দেবদেব উমাপতি মহাদেবকে যুদ্ধ-দারা পরিভুট করিয়াছিলেন; যে ধমুর্দ্ধারী, সমগ্র লোক-পালবর্গকে বশীভূত করিয়াছিলেন; সেই ধনঞ্জয়ের সহিত পাণ্ডবেরা আপনাদিগকে সংগ্রামে অভিযুক্ত করিয়াছেন। যিনি মেচ্ছগণ-পরির্ত পশ্চিম দিক্কে वनवर्जी कत्रिशां हिल्लन, त्मरे विविज-र्याधी नकूल তথায় যোদ্ধা-ৰূপে বাবস্থিত হইয়াছেন। হে কুরু-শ্রেষ্ঠ! পাণ্ডবেরা সেই অতিধমূর্দ্ধারী বীরবর স্থদৃশ্য মাদ্রী-পুজের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অব-ধারণ করিয়াছেন। যিনি কাশী অঙ্গ মগধ ও কলিঙ্গ-বাসীদিগকে যুদ্ধে জয় করিয়াছিলেন, পাগুবেরা দেই সহদেবের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। হে রাজন্! পৃথিবী-মধ্যে অশ্বপামা, ধৃফকৈতু, রুক্মী ও প্রছ্যুত্ম, এই চারিজন मञ्जूषा-माज याँहात वीर्षात मृम्म, माजीत जानन-বর্দ্ধন সেই নরবীর কনিষ্ঠ পাগুব সহদেবের সহিত আপনাদিগের মহাবিধংস-কর সমর-ব্যাপার হইবে। হে ভরতর্ষভ! যিনি পূর্বের কাশীরাজের কন্যা থা-কিয়া মরণান্তেও ভীঘের বধ ইচ্ছা করত ঘোরতর তপসা করিয়াছিলেন, পরে পাঞ্চালরাজের কন্যা-करि कविशा रेमवक्र म् शूलवड् थाथ श्रेशाइन ; विनि जी शूक्र त्वत खेगी खेग नमल कारनन ; यूक्क मान य পाक्षाल-नम्मन किलकमिश्राक यूकार्थ आश्र इह-রাছিলেন ; পাওবেরা সেই কৃতাক্র শিখণ্ডির সহিত

व्यापनातिरभत युक्-त्याभ व्यवधात्रण कतितारहन। ভীমের নিধনেছার বনস্থ বন্ধ বাঁহাকে পুরুষ করি-রাছিলেন, সেই মহাধমুদ্ধারী উত্তযুর্ভি শিখণ্ডির সহিত পাগুবেরা আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। কেকয়-দেশীয় রাজ-পুত্র মহাধন্ত্র্জারী ও বর্ম-সন্নদ্ধ যে শুরবীর পঞ্চ সহোদর আছেন, তাঁ-হাদের সঙ্গেও পাগুবের্রা আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। যিনি দীর্ঘবাছ, শীঘ্রান্ত, ধৈর্যাশালী ও সভ্যবিক্রম ; সেই রক্ষিবীর যুযুধানের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ হইবে। অজ্ঞাতবাসকালে যিনি মহাত্মা পাগুৰগণের রক্ষক হইয়াছিলেন, সেই বিরাটের সহিত আপনাদিগের সমরে সমাগম হই-বে। কাশীপতি যে মহারথ রাজা বারাণসীতে প্রতি-ষ্ঠিত আছেন, তিনিও পাওবদিগের যোদ্ধা হইয়া-ছেন;—পাগুবেরা সেই কাশীরাজের সহিত আপনা-দিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। শিশু হই-য়াও সমরে জুর্জ্ঞয়, আশীবিষ-সদৃশ ভীষণ-মূর্ত্তি, মহা-ত্মা দ্রৌপদী-পুত্রগণের সহিত পাগুবেরা আপনা-দিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। যিনি বীর্য্যে ক্লফ-সদৃশ এবং ইন্দ্রিয়-নিঞ্ছে যুধিষ্টির-ভুল্য, সেই অভিমন্ত্যুর সহিত পাগুবেরা আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। বীর্য্যে অপ্রতিম, মহারথ, মহাযশা, শিশুপাল-পুত্র যে ধৃফকৈতু কুক হইলে সংগ্রামে ছুঃসহনীয় হয়েন ; যিনি অক্ষৌহিণী সেনায় পরির্ত হইয়া পাণ্ডবদিগকে আতায় করিয়াছেন; সেই চেদিরাজের সহিত পাগুবেরা আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। দেবগণের পক্ষে বাসবের ন্যায়, যিনি পাগুবদিগের আশ্রয় হইয়াছেন, পাণ্ডবেরা সেই বাস্থদেবের সহিত আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। হে ভরতর্বভ! তাঁহারা চেদিপতির ভ্রাতা শরভ ও করবর্ষের সহিতও আপনাদিগের যুদ্ধ-যোগ অবধারণ করিয়াছেন। জরাসন্ধ-পুত্র সহদেব ও জয়ৎসেন, যুদ্ধে অপ্রতি রথ এই ছুই ৰীরের৷ পাগুব-কার্য্যার্থে ব্যবস্থিত হইরাছেন। বছৰেল-সমূহে পরির্ত মহাতেজা দ্রুপদরাজও পাওবার্থে আত্ম-সমর্পণ-পূর্বাক সমরে সমূৎস্থক হইরা ব্যবস্থিত আছেন। এতন্তির পূর্বাও উত্তর-দেশীর অন্যান্য অসংখ্য মহীপালগণকেও আ-শ্রুর করিরা ধর্মারাজ সংগ্রামার্থে ব্যবস্থিত রহিয়া-ছেন

সঞ্জয়-বাক্যে পঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥৫০॥

ध्छताद्वे किरिलन, रह मक्ष्य ! जूमि याँशापिरशत नारमास्त्रथं क्रिल, हेर्गन्ना मकरलहे मरहादमाह-সম্পন্ন; পরম্ভ তাঁহারা সকলে মিলিত হইয়া এক্ **मिर्क, जात्र जीम এकाकी এक मिरक, जूना। सुजूना।** হে তাত! ব্যাঘ্র হইতে মহারুরুর ন্যায়, অমর্যণ ক্রোধ-পরীত ভীমসেন হইতে আমার অত্যন্ত ভয় হ**ইয়া থাকে। সিংহ হইতে অপর পশু যেমন** ভর পায়, সেইৰূপ র্কোদর হইতে ভীত হইয়া আমি দীর্ষ ও উষ্ণ নিশ্বাস পরিত্যাগ করত সমস্ত রাত্রি জাগরণ করি। সেই বাসব-সম তেজস্বী মহাবাছর সমকক্ষ হইয়া সমরে তাঁহাকে সহ্ করিতে পারে, এই সৈন্য-মধ্যে আমি এৰপ এক জনকেও দেখিতে পাই না। সেই অমর্যণ, দৃঢ়-বৈর, পরিহাসেও হাস্য-খুন্য, উদ্ধত-স্বভাব, বক্রদর্শী, মহারব, মহাবেগ, মহোৎসাহ, মহাবাছ, মহাবল, কুন্তী-পুত্র কুরুভোষ্ঠ মধ্যম পাণ্ডব হকোদর রণক্ষেত্রে দগুপাণি কৃতান্তের ন্যার গদা ধারণ করত যুদ্ধ-দারা, উৎকট-নির্বান্ধ-এন্ত মন্দর্জি মদীয় পুত্রগণের অন্তকারী হইবে! আমি মনে মনে সমুখিত ব্রহ্মদুঞ্রের ন্যায় সেই অফকোণ-যুক্তা কাঞ্চন-ভূষণা লৌহময়ী ভীষণ গদা সন্দর্শন করিতেছি! সম্পূর্ণ যৌবনাবস্থার বলপ্রাপ্ত निःह रामन मृत्रयूथ-मर्पा विष्त्रव करत, मनीय रेमना-গণ-মধ্যে ভীমও সেইৰূপ বিচরণ করিবে! সেই বহুভোজী, প্রতিকুল ও সতত অসমীক্ষ্যকারী রুকো-দর একাকী আমার সমন্ত পুত্রগণের উপরে বাল্য-

কালেও ক্রুর-বিক্রম প্রকাশ করিত! বাল্যকালেও

যুক্তে প্রবৃত্ত হইরা সে যে মত্ত মাতঙ্গের ন্যায় ছুর্য্যো-ধনাদি মদীয় পুত্রদিগকে বিমর্দ্দিত করিত, তাহা ম্মরণ করিলে অদ্যাপি আমার হৃদর কম্পিত হয়! আমার পুজেরা দর্বদাই তাহার বীর্যা-প্রভাবে ক্লেশ প্রাপ্ত হইত ; স্থতরাং সেই ভীমপরাক্রম ভীমদেনই গৃহ-বিচ্ছেদের হেতু হইয়াছে! আমি যেন সমুখে দৃষ্টি করিতেছি, ভীম ক্রোধ-মুচ্ছিত হইয়া সমরে মনুষ্য, হস্তী ও অশ্ব সৈন্য-সকলকে গ্রাস করিতেছে! হে সঞ্জয়! অত্রে জোণার্জ্জ্ন-সদৃশ, বেগে বায়্-ভুল্য এবং ক্রোধে মহেশ্বর-সম সমর-ভীষণ অমর্ষণ শূর-বীর ভীমসেনকে কোন্ ব্যক্তি সংগ্রামে নিহত করি-তে পারে বল! সেই রিপুঘাতী মনস্বী তৎকালেই আমার পুত্র-সকলকে যে নিহত করে নাই, ইহাই আমি পরম লাভ বোধ করি। যে ব্যক্তি পূর্ব্বে ভীম-বল যক্ষ ও রাক্ষস-সকল বধ করিয়াছে, মানুযে কি প্রকারে সমরে তদীয় বেগ সহ্য করিতে পারিবে ? হে সঞ্জয়! সে বাল্যকালেও কথন আমার বশীভূত হয় নাই, এক্তবে আমার কুপুদ্রগণ হইতে ক্লেশ প্রাপ্ত হইয়া আর কিব্রূপে বশবর্ডী হইবে! সে নি-তান্ত নিধুর ও অত্যন্ত কোপন-স্বভাব ; যদিও ভগ্ন হয় তথাপি সন্নত হইবার নহে। যে রুকোদর অমর্ষ-প্রযুক্ত বক্রভাবে দৃষ্টি নিক্ষেপ করে এবং যাহার জ্র-মধ্যভাগ সতত সন্ধুচিত থাকে, সে আর কি-প্রকারে শান্তি অবলম্বন করিতে পারে? ভীমের যে প্রকার রূপ ও বীর্য্য তাহা আমি পূর্বের তাহার वालाकारलहे वााम-भूरथ यथार्थ ७ स्निन्छ-करण শুনিয়াছিল।ম। তিনি বলিয়াছিলেন যে, মধ্যম পাণ্ডব রুকোদর অতিশয় শৌর্যাশালী, অপ্রতিম-বল-সম্পন্ন, গৌরবর্ণ, তালরক্ষের ন্যায় উন্নত, প্রমা-ণে অর্জুন অপেক্ষা প্রাদেশ-মাত্র অধিক, বেগে অশ্ব-সকলের এবং বলে কুঞ্চরগণের অতিক্রমকারী, অব্যক্ত-শ্বরে জম্পনাকারী ও মধুবর্ণ-ভুল্য নয়ন-বিশিষ্ট। সেই উগ্রমূর্ত্তি কুর-পরাক্রম ভীমসেন সম-রে ক্রোধপুর্ণ হইয়া লৌহময় দণ্ড-সহকারে রথ হন্তী,

অশ্ব ও নরগণকে নিহত করিবে সন্দেহ নাই। হে তাত! পূর্ব্বে আমি প্রতিকূলাচরণ করত সেই অমর্বী নিত্য-ক্রোধী, প্রহারিশ্রেষ্ঠ ভীমকে অবমানিত করি-রাছি ; এক্ষণে আমার পুজেরা তাহার সেই কাঞ্চন-ভূষণা, লৌহময়ী, স্থূলা, স্থপাশ্ব-যুক্তা, শতনাশিনী, भठ-निर्शात-मय-भक्कातिनी खत्रक्षती भना निःकिश्वा হইলে কিপ্রকারে তাহা সম্ করিতে পারিবে ! হে তাত! মন্দরুদ্ধি মদীয় পুত্রগণ অপার, অপ্লব, অগাধ, শ্রবেগ-বেগিত, ভীমসেন-ৰূপ ছুর্গম সাগর উত্তীর্ণ হইতে ইচ্ছা করিতেছে! আমি বারংবার চীৎকার করিলেও পণ্ডিতমানী অবোধেরা তাহা অবণ করে না! ইহারা কেবল মধুই দেখিতেছে, নিকটে যে বিষম প্রপাত রহিয়াছে, তাহা আর বোধগম্য করি-তেছে না! যাহারা সেই নরৰূপী ক্নতান্তের সহিত যুদ্ধ করিতে যাইবে, তাহারা সিংহ-নিহত মৃগযূথের ন্যায়, অবশ্যই বিধাতা-কর্তৃক প্রেরিত অর্থাৎ নিধন প্রাপ্ত হইবে! হে তাত! শিক্য-স্থাপিতা, চারিহ্স-পরিমিতা, ষট্ কোণ-সমন্বিতা অপরিমিত-তেজো-যুক্তা, ছুঃখ-জনক স্পর্শান্বিতা গদা নিফিপ্তা হইলে, আমার পুত্রেরা তাহা কিব্বপে সহু করিতে পারিবে! রুকোদর যথন চতুর্দিকে গদা সঞ্চালন করিভে করি-তে হস্তিগণের মন্তক সমস্ত ভেদ করিবে ; হর্কাী-দ্বয় লেহন, মুছর্মুছ বাষ্প পরিত্যাগ ও ভৈরব রব বিস্তার করিতে করিতে গজগণ উদ্দেশে ধাবিত হইবে; প্রতিকুলে আপতিত প্রমন্ত কুঞ্জর-পুঞ্জের প্রতি প্রতিগর্জন করিবে এবং রথমার্গে অবগাহন-পূর্বক প্রধান প্রধান সৈন্যগণকে লক্ষ্য করিয়া নিহত করিতে থাকিবে, তথন প্রজলিত অগ্নির ন্যায় তাহার নিকট হইতে কোন মনুষ্য কি আর নিষ্কৃতি পাইবে ? সেই মহাবাছ মদীয় সৈন্যগণকৈ ভগ্ন করত পথ করিয়া গদা হস্তে যেন নৃত্য করিতে করিতে যুগান্ত প্রদর্শন করিবে! হে সঞ্জয়! পুষ্পিত-রক্ষ-সমূহ ভগ্নকারী মত্ত মতিকের ন্যায়, রুকোদর সংগ্রামে আমার পুত্রগণের সেনা-মধ্যে প্রবেশ করিবে; রথ-সকলকে

রথি-শূন্য, সারথি-বিহীন, অশ্ব-শ্বহিত ও ধক্ত-বিচ্যুত করিবে এবং রথী ও গজারোহীদিগকে সমাক্-ব্যপে পীড়িত করিতে থাকিবে; এইবপে গঙ্গাবেগ যেমন অমূপ-দেশস্থ তীরবর্তী বছবিধ রক্ষ-সকল ভগ্ন করে, তাহার ন্যায় আমার পুত্রগণের সেনা-সমস্ত ভগ্ন করিয়া কেলিবে! যে বীরবর পূর্বে বাস্তদেবকে সহায় করিয়া মহাবীর্য্য-সম্পন্ন রাজা জরাসন্ধের অন্তঃপুরে প্রবেশ-পূর্বেক তাঁহাকে নিপাতিত করি-য়াছিল, সেই ভীমসেনের ভয়ে পীড়িত হইয়া আন্মার পুত্র ও ভৃত্যগণ এবং অন্যান্য রাজবর্গ অবশ্যই দিগ্দিগন্তরে পলায়ন করিবে!

হে সঞ্জয়! মগধাধিপতি বলিশ্রেষ্ঠ ধীমান্ জরাসন্ধ এই সমগ্রা ধরা-দেবীকে বশে আনিয়া নিপীড়িত করিয়াছিলেন। ভীমের প্রতাপে কৌরবগণ এবং নীতি-দ্বারা অন্ধক ও হৃষ্ণিগণ তাঁহার যে বশগামী इय गारे, तम क्विन देविया । महावाह ब्रुक्तापत তাদৃশ নহাবীর-সল্লিধানে গদন-পূর্ব্বক কোন প্রকার আয়ুধ গ্রহণ না করিয়াই কেবল বাছবল-মাত্র-সহ-কারে ভাঁহারে বিন্ট করিয়াছিল; ভাহা অপেকা আর কি অধিক হইতে পারে? হে সঞ্জা! সমর मगरत त्म, विष-विमञ्जनकाती व्यामीवित्यत नाम, তিরসন্নিরুদ্ধ তেজংপুঞ্জ মদীয় পুত্রগণের উপরে অব-শাই পরিত্যাগ করিবে! দেরোজ মহেন্দ্র যেমন বজ্র-দ্বারা দানব-দল দলন করেন, ভীমসেনও সেই-ৰূপ গদা হন্তে লইয়া আমার পুত্রদিগকে প্রধর্ষিত क्तित्व! व्यमह्नीय़, व्यनिवार्या, डेल्क्टे-त्वन्नानी, অতিপরাক্রান্ত, লোহিত-নয়ন রুকোদরকে আমি যেন আপতিত হইতে দেখিতেছি! রুকোদর গদা-বিহীন, শরাসন-খূন্য, রথ ও বর্ম-বিচ্যুত হইয়া কেবল বাছ-যুগল-ছারা যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেও কোন্ বলশালী পুরুষ তাহার অঞ্চে অবস্থিত হইতে পারে ? ভীয়া, দ্রোণ ও শরদ্বৎ-পুত্র এই বিপ্র ক্লপাচার্য্য ইহাঁরাও আমার ন্যায়, সেই ধীসম্পন্ন ভীমসেনের বীর্য্যবল অবপত আছেন। এই নরবরগণ যুদ্ধে বিনাশ প্রাপ্ত হওয়া-

কে আর্যাত্রত বলিরা জানেন, স্থতরাং তদিধানেই অভিলাবী হইয়া মদীয় সৈন্যাগ্রে অবস্থিত হইবেন। **८ मध्य ! रेलव मर्व्य वर्ष मर्भिक-वलभानी, विरम-**বত পুরুবের পক্ষে; কেননা আমি পাণ্ডবদিগের নিশ্বর জয় হইবে দেখিতেছি, তথাপি আমার পুত্র-দিগকে নিবারণ করিতেছি না। ভীষ-প্রভৃতি এই সমস্ত মহাধমুর্দ্ধরগণ ইন্দ্র-প্রকটিত পুরাতন মার্গ অর্থাৎ সমর-বাাপার আত্রয় করিয়া পার্থিবোচিত যশোরক্ষা করত ভুমুল সংগ্রামে প্রাণ পরিত্যাগ করিবেন। হে তাত! ইইাদিগের নিকটে আমার পুজেরা যেৰূপ, পাণ্ডবেরাও অবিকল সেইৰূপ; ইহারা সকলেই ভীয়ের পৌত্র এবং দ্রোণ ও রূপা-চার্য্যের শিষা; তবে এই রুদ্ধ-ত্রয় আমাদিগের নিকট হইতে যে কিছু অভিলবিত বস্ত প্রাপ্ত হইয়াছেন, স্বাভাবিক উদারতা-প্রযুক্ত যুদ্ধ-দারা অবশ্যই তাহার নিষ্কুয়-বিধান করিবেন; যেহেতু পণ্ডিতেরা বলেন যে, ক্ষজ্র-ধর্মলাভার্থী শস্ত্রধারী ক্ষজ্রিয়ের পক্ষে সংগ্রামে নিহত হওয়াই সর্ব্বোক্তম। অতএব হে সঞ্জয়! যাঁহারা যাঁহারা পাগুবদিগের সহিত যুক করিতে ইচ্ছা করিতেছেন, তাঁহাদিগের সকলের নিমিন্তই আমি শোক করিতেছি! হা! বিছুর অগ্রে মুক্তকণ্ঠে যাহা ব্যক্ত করিয়াছিলেন, সেই ভয় এই আগত হইল! হে ভাত! জ্ঞান ছুঃখের বিনাশ-হেভু रुम्न, रेहा जामात्र विद्युष्टना-निक्क नदर ; कांत्रण এरे আগতপ্রায় অতিবলশালী চুঃখ জ্ঞানেরও বিঘাতক হইতেছে। লোক-র্ভান্তদর্শী জীবমুক্ত ঋষিরাও यथन ऋरथ ऋथी ও क्रःरथ क्रःथिं इरायन, उथन কলত্র, পুদ্র, পৌদ্র, রাজ্য ও বন্ধুগণ-প্রভৃতি নানা বিষরে সহস্র প্রকারে আসক্ত থাকিয়া আমি যে ছু:খে অভিভূত হইব, তাহা আর বিচিত্র কি ? এই বে মহান সংশয় উপস্থিত হইতেছে, ইহাতে কি সামার শ্রের আছে? আমি সম্যক্-ৰূপে অমুধ্যান করিয়া কেবল উত্তরকালে কৌরবদিগের বিনাশই দর্শন করিভেছি! দ্যুতক্রীড়াই কুরুগণের এই মহা-

বিপদের মূল বলিয়া প্রতীত হইতেছে! ঐশ্বর্যাকামী মন্দমতি ছুর্য্যোধন কেবল লোভ-প্রযুক্তই এই পাপ-কর্ম করিয়াছিল। আমার বোধ হইতেছে, ইহা দ্রুতগামী কালের পর্যায় ধর্ম; এই কালের চক্রে আমি নেমির ন্যায় আসক্ত রহিয়াছি, স্থতরাং ইহা হইতে আমার পলাইবার সাধ্য নাই! হে সঞ্জয়! এক্ষণে আমি কোথায় যাই! কি করি! কিপ্রকারেই বা কার্য্য করি! এই মন্দমতি কৌরবেরা কালের বশগামী হইয়া অচিরেই বিনফ হইবে! হে তাত! আমার শত পুত্র যথন নিহত হইবে, তখন আমি অবশ হইয়া কিৰূপে জ্ৰীগণের রোদন-ধনি ভাবণ করিব ! হা ! কি প্রকারে আমার মরণ হয় ! নিদাঘে সমীরণ-সমুভেজিত সমিদ্ধ হুতাশন যেমন শুদ্ধতৃণ-রাশি দহন করে, গদাপাণি ভীমসেন অর্জ্জনের সহিত মিলিত হইয়া মদীয় নন্দ্নগণকে সেইকপে নিহত করিবে!

ধৃতরাষ্ট্র-বিলাপে এক পঞ্চাশত্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥৫১॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, যাঁহার মিধ্যা-বাক্য কদাচ শুনিতে পাওয়া যায় না এবং ধনঞ্চয় যাঁহার যোদ্ধা, সেই যুধিষ্ঠিরের ত্রিভুবন রাজ্যও সম্ভবিতে পারে। আমি নিরন্তর চিন্তা করিয়াও এমন কোন ব্যক্তিকে দেখিতে পাই না, যে রথ-দারা সংগ্রামে সেই গা-গুীবধস্বার প্রতিপক্ষে গমন করিতে পারে। অর্জ্জুন যথন গাণ্ডীব ধারণ-পূর্ব্বক কর্ণিনালীক-প্রভৃতি হৃদয়-চ্ছেদী সায়ক-সমস্ত নিক্ষিপ্ত করিতে থাকিবে, তথন কেহই তাহার তুল্যবল হইয়া তাহাকে নিবারণ করিতে পারিবে না। ক্কতান্ত্র, বলিভোষ্ঠ, সমরে অপরাজিত বীর্যা-সম্পন্ন নরর্যত দ্রোণ ও কর্ণ যদি তাহার প্রতিকুলে গমন করেন, তাহা হইলে লোক-মধ্যে বিজয় বিষয়ে মহান্ সংশয় উপস্থিত হইতে পারে, কিন্তু বস্তুত আমার বিজয় হইবে না ; কেননা কর্ণ অতিশয় রূপালু ও অনবধান-যুক্ত এবং আ-চার্যাও রুদ্ধ ও উত্তয় পক্ষের গুরু; ওদিকে পার্থ বি-

লক্ষণ সমর্থ, বলবাম, দৃঢ়ধন্বা ও ক্লম-রহিত। ইইারা সকলেই শূর ও অস্ত্রকোবিদ এবং সকলেই মহতী খ্যাতি লাভ করিয়াছেন ; স্বতরাং ইহাঁদিগের ঘোর-তর তুমুল সংগ্রাম এবং সকলেরই অপরাজয় হইতে পারে। ইহাঁরা অমরগণের ঐশ্বর্যাও পরিত্যাগ করিতে পারেন, তথাপি বিজয় ত্যাগ করিতে পারেন না ; অতএব জোণ কর্ণের, অধবা অর্জুনের বধ হই-লেই যুদ্ধের শান্তি হওয়া সম্ভব; কিন্তু অর্জুনের रुष्ठा वा **रक्का रकरहे विमामान नाहे।** य वाकि মন্দমতি মৎপুত্রগণের প্রতি সমাক্ উদ্যম-সহকারে যুদ্ধার্থে প্রস্তুত হইয়াছে, এক্ষণে কি প্রকারে তাহার ক্রোধ-শান্তি হইবে ? অন্যান্য অনেক লোকেও অস্ত্র-বিদ্যা জানে, জয় করে ও জিত হইয়া থাকে; পরস্ক অর্জুনেরই একান্ত বিজয় শ্রুত হওয়া যায়। হে স্ত! ত্রয়ক্রিংশৎ বৎসর অতীত হইল, পার্থ খাওব বনে অগ্নিকে তর্পিত করিয়াছিল এবং তচুপলক্ষে সমত্ত স্থরগণকেও জয় করিয়াছিল। অধিক কি, আমরা কুতাপি তাহার পরাজয় শুনিতে পাই না। হে তাত! সমান শীলতা ও চরিত্র-সম্পন্ন হ্রুথীকেশ याहोत यूटक मात्रिथ रुहेर्यन, हेर्ट्युत विकरात नागा তাহার নিশ্চয়ই জয় হইবে। শুনিতে পাই কৃষ্ণ রখোপরি সার্থি, অর্জুন রথী এবং গুণ-যোজিত গাণ্ডীব শরাসন, এই তিন তেজঃ পদার্থ একত্র সম-বেত হইয়াছে। আমাদিগের তাদৃশ শরাসনও নাই याकां अने विषय मात्रिक नारे, शत्रु पूर्वापत्नत বশামুগামী মন্দবুদ্ধি হতভাগ্যেরা তাহা জানিতেছে ना ! हि मञ्जूष । मखरक निপতिত हरेल अमीश्र वर्णनिও শেষ द्रार्थ, किंह वर्ड्जून-निर्माुङ শর-সমস্ত কিছুমাত্র শেষ রাথে না! আমি যেন প্রত্যক্ষ দেখি-তেছি, ধনঞ্জয় বাণ-বিসৰ্জ্জন করত সৈন্যগণকে নিহত क्रिंडिट्र ७ वष्ट्र अत्र वर्ष । अर्थ মন্তক-সমন্ত উচ্ছেদন করিতেছে; গাণ্ডীবোশিত বাণ-ময় তেজ্ঞপুঞ্চ সর্বতঃ প্রদীপ্ত হইয়া সংগ্রামে আমার পুত্রগণের বাহিনী দহন করিতেছে; এবং

সবাসাচীর রথ-নির্ধোষ-ভয়ে ভীতা ও বাাকুলিতা হইয়া ভারতী-সেনা সর্বনিকে পলায়মানা হইতেছে! ফলত, যেমন প্রচণ্ড শিখা-যুক্ত অনিল-সমিধা মহানল সর্বতঃ সঞ্চরণ করত শুদ্ধ তৃণ দহন করে, অর্জুনের অস্ত্রামিও মদীয় সৈন্যগণকে সেইৰূপ দহন করিবে! হে তাত! আ্তভায়ী কিরীটী যথন সেই অসংখ্য নিশিত বাণ-সমূহ উদ্বমন করত বিধাতৃ-প্রেরিত সর্বাহর অন্তর্কের ন্যায় অসহনীয় হইয়া উঠিবে;—যথন শুনিব কৌরবগণের ভবনে, রণাগ্রেও তাহাদিগের চতুস্পান্থে নিরম্বর বহুপ্রকার ছর্নি-মিন্ত ঘটনা হইতেছে; তথ্নই ভারতদিগকে মহান্ বিশ্বংস আ্রাঞ্য করিবে!

ধৃতরাষ্ট্র-বিলাপে দ্বিপঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫২॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, পরাক্রান্ত পাগুব-সকল যেৰূপ জিগীযু, তাহাদিগের পুরঃসর সহযোগীরাও সেইৰূপ আত্ম-বিসর্জ্জন-পূর্ব্বক বিজয়ে ক্নতনিশ্চয় হইয়া রহি-রাছে। হে বৎস! শত্রুপক্ষীয় পাঞ্চাল, কেকয়, মৎস্য, মাগধ-প্রভৃতি পরাক্রাস্ত মহীপালগণের কথা ভুমিই এই অধিল লোকচয়কে বশীভূত করিতে পারেন, সেই জিতেন্দ্রিয়, সকল-লোকশ্রেষ্ঠ এক্রিঞ্চ পাগুর-দিগের জয়-সাধনে স্থিরনিশ্চয় রহিয়াছেন। যিনি অর্জুনের নিকটে অচির-কাল-মধ্যেই সমস্ত বিদ্যা গ্রহণ করিয়াছিলেন, সেই শিনি-বংশধর সাত্যকি বীজের ন্যায় শর বপন করত সমরে অবস্থান করি-বেন। পাঞ্চাল-নন্দন ক্রুরকর্মা পরমাক্রবেন্ডা মহারধ ধৃঊছান্নও মদীর সৈনাগণের সহিত যুক্ক করিবে। হে তাত! যুধিন্তিরের ক্রোধ ও অর্জুনের বিক্রম অতিশয় ভয় হইতেছে। হে সঞ্জয়! সেই মন্থুব্যেন্দ্র-গণ যখন অন্তরীক্ষে অমান্তুষ শরকাল বিস্তার করিবে, আমার সৈন্যেরা তথন কোন ক্রমেই তাহা উদ্ভীর্ণ

ক্ষেপ করিভেছি। পুরুষভার্ত পাপু-নন্দন मर्गनीय, मनत्री, मन्त्रीवान, उन्न-एडमायूक, रमधावी, স্কৃত-বৃদ্ধি, ধর্মাত্মা, মিত্র অমাত্য ও যুদ্ধোদেশাগী श्रुक्तकारण स्मान्त्रज्ञ, महात्रथ महावीत मरहामत्र ७ चक्त बर्रा डेननम, देश्यामानी, विनम्नाविक, व्यनिर्भूत, বদানা, লক্ষাশীল, সভাপরাক্রম, বছল-শাত্রজ, কুতাত্মা, বৃদ্ধমেবী ও জিতেন্ত্রিয়ু; সেই সর্বাঞ্ডণ-সম্পন্ন, প্ৰজ্ঞুনিত সমিদ্ধ পাবক-সদৃশ পাওবায়ি-মধ্যে কোন্ চেতন-খুন্য মুমুর্ মন্দমতি, পতকের ন্যায় পতিত হইবে? দাছবস্ত প্রাপ্ত হইলে অপ্প অগ্নিও যেমন প্ৰবল হইয়া উঠে, সেইৰূপ তপস্যায় क्रम हरेटल उन्नड-अचावमानी ताका यूथिवित्रक আমি কপট-বাবহারে প্রবঞ্চিত করিয়াছি, স্থতরাং তিনি যুদ্ধ-দারা আমার মন্দর্দ্ধি পুর্ত্তগণের নিঃ-শেষে বিনাশ করিবেন। হে কৌরবগণ! তাঁহাদিগের সহিত যুদ্ধ না করাই আমি শ্রেয়:কম্প বিবেচনা করি; একণে তোমরাও তাহা সম্যক্-রূপে বোধ-গম্য কর। যুদ্ধে সমস্ত কুলেরই নিশ্চয় বিনাশ হই-বে। অতএব যদি যুদ্ধ না করা তোমাদিগের ইফ হয়, তাহা হইলে আমরা শান্তির নিমিত যত্ন করি ; ইহাই আমার বুদ্ধির পরাকাণ্ঠা এবং ইহাতেই আ-মার মনের শান্তি হইতে পারে। আমাদিগকে ক্লেল পাইতে দেখিলে যুখিন্ঠির কথনই উপেকা করিছে পারিবেন না, কেন না তিনি বর্থন অধর্ম-ৰাবা কলহ উৎপাদন বিষয়ে আমাকেই হেভুনি-र्फन कतिया निका करतन, उपन आर्थिङ इहेरल क्मार कनार शत्र केर्रितन ना।

্যুতরাই বাকো ত্রিপঞ্চাশক্তম অধ্যার সঙ্গাপ্ত । ৫৩।

সঞ্জর ক্ষিত্রেন, গ্লহারাজ। আপনি বাহা বলি-তেকো, তাহা বর্ণার্থ বড়ে, বুম হইলে গাড়ীব-যারা ক্ষাত্রিন-কুলের বে বিনাশ হইবে, তাহা প্রভাক্ত দুউ

হইতে পারিবে না, এই নিমিন্তই আমি এবল আ- । ইইতেহে; পরন্ত নিত্য-কাল ধীর-স্ক্রাব বাকিনা, কেপ করিতেছি। পুরুষ্টোর্চ পাণ্ডু-নন্দন বিশেষত স্বাসামীর তত্ত্বজ হইরাও আপনি বে পুত্র-দর্শনীর, মনস্বী, সন্মীবান, বন্ধ-তেকোযুক্ত, মেধাবী, গুণুর বশগামী হইতেছেন, ইহাই আমি বুবিতে

না। হে ভরতর্বভ! আপনি প্রথম হইতে পাপ্তবদিগকে বঞ্চিত করিয়া আসিয়াছেন; অতএব চিরকাল অপরাধ করিয়া এক্ষণে আপনকার বিলা-পের সময় নহে। মহারাজ! যিনি জ্যেষ্ঠ তাত, শ্রেষ্ঠ-স্থ্ৰত্বং সমাকৃ সাৰ্ধান-চিত্ত, তাঁহার হিত বিধান করাই সর্বভোভাবে কর্ডব্য; অনিষ্টকারী ব্যক্তিকে কর্থন গুরু বলা যায় না। দ্যুতকালে আপনি পাগুর-দিগকে পরাজিত শুনিয়া "এই জিত হইল, এই লক হইল ^স বলিয়া বালকের ন্যায় হাস্য করিয়া-ছিলেন, এবং ভাঁহারা বছতর কটু বাক্য-দারা তির-স্কৃত হইলেও উপেক্ষা করিয়াছিলেন; ভাবিয়াছি-লেন, পুত্রেরা সমস্ত রাজ্য জয় করিল, কিন্তু অচি-রেই যে বিনিপাত হইবে, তাহা আর দেখিতে পান নাই। মহারাজ! জাঙ্গল-সন্থলিত কুরুরাজ্য আপন-কার পৈতৃক রাজ্য ; ভদ্তিন্ন আপনি বীরগণ-কর্ভৃক উপাৰ্চ্জিত অধিল বস্থা-রাজ্যও প্রাপ্ত হইয়াছেন। পাণ্ডবগণ বাহুবীর্য্য-সহকারে পৃথিবী:উপার্জ্জন করি-য়া আপনাকে সমর্পণ করিয়াছিলেন, কিন্তু আপনি মনে করেন, " আমি স্বয়ং ইহা লাভ করিয়াছি।" হে রাজসভ্য! পাগুবেরা দ্যুতে পরাজিত এবং বন-গমনে উদ্যত হইলে আপনি যে বালকের ন্যায় পুনঃপুন হাস্য করিয়াছিলেন, সেই নিমিত্তেই অর্জুন, আপনকার পুজেরা গলব্রিরাজের কবলে পডিড হইয়া অপার বিপদ্ নাগরে নিময়-প্রায় হইলে, তাঁহাদিগকে প্রত্যানয়ন করিয়াছিলেন। হে রাজন্! वर्ज्य निर्मिष्ठ नद्ग-मगूर वर्षण कद्गितन, गारमत्यानि मञ्जूरवात क्वी पूरत थोकूक, नाशत-नकनं एक हरे-त्रा बात्र। महात्राच ! वाग-निटक्र शक्ती निरंत्रत बर्द्य धनक्षत्र त्यकं, भन्नायम-अंभूतादत्रत मत्था गांधीय त्यकं. नर्कालांक-गर्था दिनाव खिर्छ, एक-नमस्र-मर्था सू-मर्गम रक्षके अवः बक्र नक्टलत्र नट्या वित्रक्रियान वानव-

ধৰু শ্ৰেষ্ঠ ; সেই ধৰুধারি-প্ৰধান শ্বেতাশ্ব-যুক্ত কপি-ধজ রথখানি এই কয়েকটিকে বহন করত সমরে कालहरकत्र नात्र छेमाछ रहेत्रा व्यामानिशत्क निः-সন্দেহ বিনফ করিবে। হে ভরতর্বভ! ভীমা🐙 বাঁহার যোদ্ধা, সম্প্রতি তাঁহারই এই সমগ্রা পৃথিবী **এবং সেই রাজাই সর্বব্রেখান রাজা। হে রাজন্!** আপনকার বাহিনী ভীম-কর্তৃক হত-প্রায় হইয়া পলায়ন করিতেছে দেখিয়া ছুর্য্যোধন-প্রভৃতি কৌর-বেরা অবশ্যই ক্ষরপ্রাপ্ত হইবে। হে বিভো! আপন-কার পুত্রগণ ও অনুগামী ভূপাল-সকল ভীমার্জুন ভয়ে ভীত হইয়া কদাচ বিজয় লাভ করিতে পারি-বেন না। মৎসা, পাঞ্চাল, কেকয়, শালু ও শ্রসে-নেরা এক্ষণে আপনাকে অর্চনা করিতেছেন না, বরং সকলেই অবজ্ঞা করিতেছেন ; কেন না তাঁহারা তাঁহাকে প্রাপ্ত হইয়াছেন এবং তাঁহার প্রতি ভক্তি-হেতুক আপনকার পুত্রগণের সহিত সর্বাদাই বি-রোধ-চেফা করিতেছেন। মহারাজ। সর্বাধা-বধানর্হ ধর্মযুক্ত পাগুবদিগকে যে ব্যক্তি অপকর্ম-ছারা ক্লেশ দিয়াছে এবং এক্ষণেও তাঁহাদের প্রতি বিদেষ করি-তেছে, আপনকার পুত্র সেই পাপ পুরুষ ছর্য্যোধন-কে অমুচরবর্গের সহিত সর্বোপায়-দারা শাসিত করাই কর্ডব্য, তাহার নিমিত্ত শোক করা আপন-কার উচিত নহে। পাশক্রীড়া সময়েও আমি এবং ধীমান্ বিছুর উভয়েই আপনাকে এ কথা বলিয়া-ছিলাম। হে রাজেন্দ্র আপনি অক্ষমের ন্যায় পাশুবদিপের প্রতি এই যে বিলাপ করিতেছেন, এ नकनरे निवर्धक।

> সঞ্জন-বাক্যে চতুঃপঞ্চাশত্তম অধ্যায় সমাপ্ত 1 ৫৪ ॥

মুর্য্যোধন কহিলেন, মহারাজ। আপনি ভর করি-বেন না এবং আমাদিনের নিনিভেও শোক করি-বেন না ; হে প্রভো! আমরা সমরে শক্ত জর করি-

তে বিলক্ষণ সমর্থ। হে ভরতর্বভ! यৎকালে মধ্-স্থদন, পররাষ্ট্র-বিমর্দ্দী স্থমহৎ বলচক্রে পরির্ভ হইয়া, বনে প্রব্রাক্তিত পাগুবগণ সন্নিধানে আগমন করিয়াছিলেন এবং কেক্য়, ধৃষ্টকেভু, দ্রুপদ-নন্দন ধৃউছ্যন্ন ও অন্যান্য অসংখ্য অমুযান্নী রাজবর্গ তাহা-দিগের অমুগত হইয়াছিল;—যথন ক্লক্ষপ্রমুখ সেই সমস্ত মহারথগণ ইন্দ্রপ্রস্থ-সমীপে সমাগত ও একত্র মিলিত হইয়া যাব্তীয় কুরুগণের সহিত আপনাকে নিন্দা করিয়াছিল এবং ক্লফ্সার-মূগ-চর্ম্মধারী সমা-সীন যুধিষ্ঠিরের উপাসনা করত স্বজনগণ-সম্বলিত আপনকার সমুচ্ছেদ-বিধানে অভিলাষী হইয়া তা-হাকে "পুনরায় রাজ্য গ্রহণ করা কর্ত্তব্য " এইৰূপ প্রবৃত্তি দিয়াছিল ;—তখন সেই বৃত্তান্ত ভাবণে আমি জ্ঞাতিক্ষয়-ভয়ে ভীত হইয়া ভীন্ন, দ্রোণ ও রুপা-চার্যাকে বলিরাছিলাম "হে মহাত্মগণ! আমার বোধ হয়, পাগুবেরা অক্ষৎক্ত নিয়মে অবস্থিত হইবে না; কেন না বাস্তুদেব আমাদিগের সম্পূর্ণ সমুচ্ছেদ ইচ্ছা করিতেছেন। আমার বিবেচনায় কেবল বিছুর-ব্যতিরেকে আপনারা সকলেই বধ্য হইবেন। কুরুসন্তম ধর্মজ্ঞ ধৃতরাষ্ট্রও, বোধ হয়, বধার্ছ হইবেন না। জনার্দ্দন আমাদিগের সম্পূর্ণ সমুচ্ছেদ করিয়া এই অদ্বিতীয় কুরুরাজ্য যুধিন্ঠিরে প্রতিষ্ঠিত করিতে অভিলাষ করিয়াছেন। অতএব সে বিষয়ে আমাদিগের কর্ত্তব্য কি ? আমরা কি প্রণতি স্বীকার করিব, পলায়ন-পরায়ণ হইব, না প্রাণের প্রতি আস্থা ত্যাগ করিয়া শত্রুদিগের সহিত প্রতিষুদ্ধ করিব? প্রতিযুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে আমাদিণের নি-শ্বরুষ্ট পরাজয় হইবে, বেছেভু সকল পার্থিবেরাই যুখিচিরের বশবর্জী; বিশেষত রাধীয় সমস্ত লোক আমাদিগের প্রতি বিরক্ত হইরাছে; মিত্রগণ কুপিত হইয়াছেন এবং অখিল ব্লাজন্যগণ ও অজনবর্গ "व्यामानिभरक मर्वाषा धिकान धाना व्यतिर**्ट**न। ज व्यवस्था व्यवनिक श्रीकात क्रिक्ट स्मिन नारे, किन मा निक्क कर्ता ज्यामानियात्र वित्रकान श्रामक

ভাছে ; পরস্ত যুক্কই আমার অভিপ্রেত, স্থতরাং আমার পিতা প্রজ্ঞানেত্র জনাধিপ ধৃতরাষ্ট্র যে আ-মার নিমিত্ত কফতর অনন্ত ক্লেশ পাইবেন, সেই জনাই আমি শোক করিতেছি।—হে নরোত্তম! আপনকার অপর পুত্রেরাও যে আমার প্রীতি-নিমিত্ত শত্রুদিগের অবরোধ করিয়াছিলেন, তাহা পূর্বেই আপনকার বিদিত আছে।—সেই মহারথ পাগুবেরা সম্প্রতি অমাত্যগণ-সহু ধৃতরাষ্ট্রের কুলো-**চ্ছেদ-দারা বৈর-নির্যাতন করিবে** "।

হে ভারত! অনন্তর দ্রোণ, ভীয়, রূপ ও অশ্ব-পামা আমাকে মহতী চিন্তায় আবিষ্ট ও বিকলে-ক্রিয় দৃষ্টি করিয়া কহিলেন, "হে পরন্তপ! যদি শক্ররা আমাদিগের প্রতি বিদ্রোহাচরণ করে, তা-হাতে ভর করিও না। যুদ্ধে সমান্থিত হইলে শত্রু-গণ আমাদিগকে কদাচ পরাজিত করিতে পারিবেক না। আমরা প্রত্যেকে সকল ভূপালবর্গকে জয় করি-তে সমর্থ। তাহারা আহ্বক, আমরা নিশিত শর-নিকর-দারা সকলেরই দর্প চুর্ণ করিব। হে ভারত! পূর্ব্বে কুরুসম্ভম ভীম পিতার মরণে নিরতিশয় কুদ্ধ হইয়া এক রথে একাকীই অখিল পার্থিবকুলকে জয় করিয়াছিলেন এবং অসীম রোবভরে তাহাদিগের অনেককেই সংহার দশায় উপনীত করিয়াছিলেন; অনস্তর তাহারা ভয়ঃপ্রযুক্ত এই দেবব্রতের শরণা-পন্ন হইরাছিল। সেই এই ভীন্ন আমাদিগের সহিত মিলিত হইয়া সংগ্রামে শত্রুদিগকে জয় করিতে অবশ্যই স্থসমর্থ হইবেন; অতএব হেু ভরতর্ষভ! তো-মার ভর দূর হউক। " এই অমিত-তেঞ্চন্দী মহারথ-গণের তৎকালে এইৰূপ নিশ্চয় হইয়াছে। হে রাজন্! मम्या वस्मता भूटर्व भक्तभएनत वभवर्जिनी हिल বটে, কিন্তু এক্ষণে ভাহারা আর আমাদিগকে সমরে পরাজয় করিতে সমর্থ হইবে না। হে ভরতর্বভ! শক্ত্ত পাওবেরা অধুনা সহায়-খুন্য ও বীৰ্যাহীন হইরাছে এবং পৃথিবীও একণে আমাতেই প্রতি-ঠিতা আছে। হে পরস্তপ! আমি যে সমন্ত পার্থিব- কে বদি একবার আমাত করি, তবে সেই ঘোর-

গণকে সমানীত করিয়াছি, তাঁছারা কি স্থা, কি ছুঃখ, সর্ব্বাবস্থাতেই এক-বাক্য। আপনি নিশ্চয় জানুন, আমার নিমিত্ত সেই সকল ভূপালেরাই অ্থিতেও প্রবেশ করিতে পারেন এবং সমুদ্রেও নিমগ্র হইতে পারেন। আপনাকে পরের শ্লাঘায় ভীত হইয়া বছবিধ বিলাপ করিতে এবং চুঃখিত হইতে দেখিয়া ইহাঁরা উন্মন্ত বোধে উপহাস করি-তেছেন। হে কুরুসন্তম। এই সকল রাজগণ-মধ্যে প্রত্যেকে পাগুবদিগের প্রতিরোধে সমর্থ। বিবে-চনা করিয়া দেখুন, আপনাকে সকলেই বড় বলিয়া মনে করে; অতএব আপনকার এই আগত ভয় অপগত হউক। আমার সমগ্র সৈন্যকে হ্বন্ন করিতে वामवल ममर्थ इन ना ; अमन कि, इनदन छेमाल হইলে স্বয়ন্তু ব্রহ্মার নিকটেও ইহা অক্ষয় হয়।

হে বিভো! যুধিষ্ঠির মদীয় সৈন্য ও প্রভাব হইতে ভীত হইয়াই নগরের প্রত্যাশা পরিত্যাগ করিয়া কেবল পাঁচখানি গ্রামমাত্র যাক্তা করিয়াছে। হে ভারত ৷ আপনি যে রুকোদরকে সমর্থ মনে করিতে-ছেন সে র্থা; আমার সমগ্র প্রভার আপনি অব-গত নহেন, এই নিমিত্তই এ**ৰপ মনে** করিতেছেন। গদাযুদ্ধে পৃথিবী-মধ্যে কোন ব্যক্তিই আমার সমান নাই; তদ্বিয়ে কেহ আমাকে কখন অতিক্রম করিতে পারে নাই এবং পারিবেও না। আমি সমাহিত-চিত্ত হইয়া গুরু-গৃহে বছ ছু:থে বাস করত যুদ্ধ-বিদ্যার পারগামী হইয়াছি; অতএব কি ভীম, কি অন্য কেহ, কোন ব্যক্তি হইতেও কথন আমার ভয় নাই। আমি যখন শিষ্য-ভাবে বলদেবের উপাসনা করিয়াছিলাম, তৎকালে ভাঁহার এইৰপ निक्त रहेम्राहिक त्य, 'शना-यूत्क छूर्त्याथत्नत जूला क्टिश नारे। 'कनाउ चामि यूक्त रनधत-मृग, ववः বলেও পৃথিবী-মধ্যে আমার অধিক কেই নাই। जीय यूटक जायात शरा-श्रहात कथनरे महत्रद्विएक পারে না। হে নরপতে। স্থামি কুপিত হইয়া ভীম-

खन अर्जिन जारादक जानित्य जनक-निनदा नरेना যাইতে পারেনি হে রাজন্! আমার ভরের কথা দূরে থাকুক, ব্কোদরকে গদা-হত্তে দেখিবার নিমিত্ত আমি ইচ্ছাই করিয়া থাকি, বেহেতু ইহাই আমার স্থুচির-প্রার্থিত নিত্য-মনোর্থ। সমরে আমি গদা-ঘাত করিলে, র্কোদর অবশ্যই বিশীর্ণ-গাত্র ও জীবন-হীন হইয়া ভূতলে পতিত হইবে। আমার গদা-প্রহারে একবার অভিহত হইলে পর্বময় হিমা-লয় গিরিও সহস্রধা বিদীর্ণ হইয়া যায়। 'গদাযুদ্ধে ছুর্যোধনের ভুল্য কেহই নাই ' ইহা যে নিশ্চয় তাহা সেই ভীমও বিশেষ ৰূপে জানে এবং কুষ্ণা-ৰ্জুনও অবগত আছে। অতএব হে রাজন্! আপন-কার র্কোদর ভর অপগত হউক; মহাসমরে আমি অবশাই তাহাকে নিহত করিব; আপনি বিমনা হইবেন না। হে ভরতর্বভ! সে আমা-কর্তৃক হত হইলে, তুল্য-ৰূপ অথবা অপেক্ষাকৃত উৎকৃষ্ট বছ-দৃংখ্যক রথিগণ অর্জুনকে শরজালে বিক্ষিপ্ত করিতে থাকিবেন। মহারাজ। ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ, অশ্বত্থামা, কর্ণ, ভুরিশ্রবা, প্রাগ্জোতিষ।ধিপতি শল্য ও সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ, ইইাদিগের এক এক জন সমস্ত পাগুবগণকে নিছত করিতে পারেন; সকলে মিলিত হইলে ক্ষণ-काल-मदश्र जाहापिश्रदक नमन-मद्दान लहेशा याह-বেন। সমগ্র পার্থিব-সৈন্য একাকী ধনঞ্জয়কে কি নিমিত্ত জয় করিতে পারিবেক না, ইহার কোন হেজুই বিদ্যমান নাই। ভীন্ন, ছোণ, অশ্বত্থামা ও কুপাচার্য্যের শর-সমূহ-দারা শত শতবার পরিব্যাপ্ত ও অবশ হইরা পার্থ অবশাই যমালয়ে গমন করিবে।

হে ভারত। গলা-নন্দন পিতামহ, শান্তমু হইতেও অধিক, ব্রশ্নবি-সদৃশ এবং দেবগণেরও স্ফুল্সহ হইয়া লক্ষিয়াছেন। কোন ব্যক্তিই ভীলের নিহন্তা নাই; কেন না ইহাঁর পিতা প্রশন্ন হইয়া ইহাঁরে বর দিয়া-ছিলেন শোল ইক্ষা না করিলে ভোমার স্ভুল হইবে না শা মহারাক। জোগাহার্যাও নহর্ষি ভর্ষাক হই-ভ্রেক্তানীতে ক্ষুপ্রহণ করিয়াছেন; প্রসাক্ত-বেভা অশ্বামা এই জোণ হইতে জন্মিয়াছেন এবং এই चार्गागुना विभान क्रुपे गर्सि भोजम स्हैरेड শরতত্বে উৎপন্ন হইরাছেন; আমার নিশ্চর বোধ আছে যে, কেছই ইইাদিগকে বধ করিতে পারে না। মহারাজ! অশ্বপামার পিতা, মাতা ও মাতুল, এই তিন জন অযোনিজাত ; সেই শৌর্যাশালী অশ্ব-পামাও আমার পক্ষ রহিয়াছেন। এই মহারধগণ সকলেই দেৰতুল্য ;ুসংগ্ৰামে ইহাঁরা শক্তেরও পীড়া উৎপাদন করিতে পারেন। হে ভরতর্বভ! অর্চ্জুন করিতে পারে না; সকলে মিলিত হইলে ইহাঁরা অবশ্যই ধনপ্রয়কে বধ করিবেন, সন্দেহ নাই। হে নরব্যাঘ্র! আমার বিবেচনায় কর্ণও ভীম, জোণ ও ক্লপাচার্য্যের সদৃশ। পরস্তরাম স্বরং ইহাঁকে অমুক্তা করিয়াছিলেন যে, তুমি আমার সমান। অপিচ ইহাঁর चाव-काठ मानाइत कुखन यूगन हिन; माइल শচীর নিমিত্তে অতিশয় ভীষণা অমোঘা শক্তির বিনিময়ে ইহাঁর নিকট হইতে তাহা যাক্সা করিয়া-ছিলেন। অতএব তাদৃশ শক্তি দ্বারা রক্ষিত এই শক্রতাপন বীরবর হইতে অর্জ্র কিৰূপে জীবিত থাকিবেক? হেরাজন্! করতল-বিন্যস্ত কলের ন্যার নিশ্চয়ই আমার বিজয়-লাভ হইবে এবং শক্রদিগে-রও ভূমগুলে নিঃসন্দেহ সম্পূর্ণ পরাক্ষয় হইবে।

হে ভারত! এই ভীয় এক দিনে দশ সহস্র সৈন্য
নিহত করেন এবং মহাধমুর্জারী দ্রোণ, অশ্বত্থামা
ও ক্লপাচার্য্যও তাঁহার সদৃশ। সংশপ্তক ক্ষপ্তিয়গণ
"হয় আমরা অর্জুনকে মারিব, না হয় অর্জুন
আমাদিগকে মারিবে " এইবাপ স্থির-প্রতিক্ত আছেন। অপিচ অর্জুনবধে ক্তনিশ্চর অন্যান্য পার্ধিবেরাও তাহাকে অসমর্থ বোধ করিয়া থাকেন;
অত্তবে আপনি পাশুবগণ হইতে অক্সাৎ বাধা
পাইতেছেন কেন? হে পরস্তপ! ভীমসেন নিহত
হইলে শক্ত্রণ-মধ্যে আর কোন্ ব্যক্তি আমাদিগের
দহিত যুদ্ধ করিবে? বাদ জানেন তবেতাহা আমারে

क्रिकाबीटक सम्बार्ग कतिप्रांट्स ; श्रेत्र माज-दिका महिक यूक् कतिरद ? वीम स्नाटनन कर्द्य कामाद्र

বলুন। হে রাজন্! তাহারা পঞ্চ জাতা, ধৃষ্টতান্ন ও
সাত্যকি, এই যে সাতজন যোদ্ধা, ইহাই শক্রদিগের
শ্রেষ্ঠবল বলিয়া অভিমত; কিন্তু আমাদিগের প্রধান
বল ভীয়, দোণ, রূপ, অশ্বংখামা, কর্ণ, সোমদন্ত,
বাহ্লিক, প্রাগ্রেল্যাতিবাধিপতি শল্যা, অবন্তিপতি
বিন্দু ও অনুবিন্দু, জয়দ্রথ এবং আপনকার পুত্র
ছংশাসন, ছংসহ, ছুর্মুখ, ক্রুতীয়ু, চিত্রসেন, পুরুমিত্র,
বিবিংশতি, শল, ভূরিজ্বা ও বিকর্ণ, এই সমস্ত
বিশিষ্ট সৈন্যাধ্যক্ষ। মহারাজ্য আমি একাদশ
অক্ষোহিণী সেনা সংগ্রহ করিয়াছি, আর শক্রদিগের
সাত অক্ষোহিণী মাত্র সমানীত হইয়াছে; অতএব
আমা অপেক্ষা তাহারা ন্যুন-সংখ্য হইলেও কিরপে
আমার পরাজয় হইবে স্থির করিতেছেন?

হে রাজন্! রহস্পতি বলেন, শক্র-সৈন্য আপন সৈন্যের তৃতীয়াংশে হীন হইলে তাহার সহিত যুদ্ধ করা বিধেয়। আমারও এই সেনা শক্রগণ অপেকা তৃতীয়াংশে অধিক। অপিচ আমি শক্রদিগের সৈন্যকে বিস্তর গুণহীন দেখিতেছি এবং আমারও বছগুণে গুণোদয় দৃটি করিতেছি; অতএব হে ভা-রত! মদীয় বলের আধিক্য এবং পাণ্ডবদিগের অপেতা ইত্যাদি সমস্ত র্ভান্ত জানিয়াও মোহ প্রাপ্ত হওয়া আপনকার উচিত নহে।

পরপুর-বিজয়ী দ্বর্ঘোধন ধৃতরাষ্ট্রকে এই কথা বলিয়া প্রতিপক্ষের সমুদায় চেফা পরিজ্ঞানান্তে ইতি-কর্ত্তব্যতা বিধানেচ্ছু হইয়া সঞ্জয়কে পুনরায় জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন।

> ছুর্য্যোধন-বাক্যে পঞ্চপঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫৫॥

ছুর্য্যোধন কহিলেন, হে সঞ্জয়! কুন্থীতনয় যুধি-তির সপ্ত অক্টোহিণী লাভ করিয়া যুদ্ধ-কামনায় রাজগণ সহ কিৰপ ইচ্ছা করিতেছে?

সঞ্জ কহিলেন, হে রাজন ! যুখিন্তির যুদ্ধ-লাভারী হইয়া অভিশর হুফটিত আছেন ; ভীম ও অর্জুন, ইহাঁরাও উভরে আফ্লাদিত রহিয়াছেন এবং নকুল সহদেবও কিছুমাত্র তয় করিতেছেন না। কুন্তীননন্দন বীভংফু অন্ত্রপ্রয়োজক মন্ত্র পরীক্ষা করিতে অভিলাষী হইয়া সমস্ত দিল্পগুল উদ্ভাসিত করত দিব্য রথ সংযোজিত করিয়াছিলেন। মহারাজ! বর্ম্মধারী ধনঞ্জয়কে মেন বিত্রাদ্পুক্ত জলধরের ন্যায় দৃষ্টি করিলাম। তিনি সর্বতোভাবে চিন্তা করিয়াছ্টিতে আমাকে এই কথা বলিলেন, "সঞ্জয়! আমরা যে কৌরবদিগকে জয় করিব, তাহার এই পূর্ব্ব লক্ষণ দেখ।" ফলত অর্জ্জুন আমাকে যে কথা বলিলেন, আমিও তাহাই বোধ করিতেছি

ছুর্য্যোধন কহিলেন, তুমি দৃতি-পরাক্ষিত পাণ্ডব-দিগকে অভিনন্দিত করতই প্রশংসা করিতেছ; সে যাহা হউক, সংপ্রতি অর্জ্জুনের রথে কিরূপ অশ্ব এবং কি প্রকার ধক্ত তাহা বর্ণন কর।

সঞ্জয় কহিলেন, হে বিশাম্পতে! স্বফা বিশ্বকর্মা ইন্দ্র ও প্রজাপতির সহিত মিলিত হইয়া অর্জ্জুনের রথে অতি বিচিত্র-রূপে রূপ-সমস্ত নির্মাণ করিয়া-ছেন। দেবমায়া-সহকারে তাঁহারা তৃদীয় ধজে।পরি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ও রহৎ রহৎ মহামূল্য দিব্য মূর্ত্তিসকল কম্পিত করিয়াছেন। অপিচ ভীমসেনের অন্তুরোধে প্ৰন-নন্দন হনুমান্ তাহাতে আত্ম-প্ৰতিমূৰ্ত্তি আ-রোপিত করিবেন। বিশ্বকর্মা সেই ধজেতে এরপ মায়া বিধান করিয়াছেন যে, তাহা সর্ব্ব দিকে বক্র ও উৰ্জভাবে এক যোজন স্থান ব্যাপ্ত করিয়াছে, তথাপি তরু-নিকরে সংহত হইলেও তাহার গতি-রোধ হয় না। নভোমগুলে নানা বর্ণযুক্ত শক্রধযু যেৰূপ প্ৰকাশ পায় এবং সে যে কি পদাৰ্থ তাহা যেমন জানিতে পারি না, বিশ্বকর্মাও সেই ধজকে তদ্রপ নির্মাণ করিয়াছেন ; তাহার বহু প্রকার ৰূপ দৃঊ হইয়া থাকে। অগ্নিযুক্ত ধুম যেমন তেজোমন বহুবিধ বিচিত্র ৰূপ বর্ণ ধারণ করত আক্ষাশ রোধ করিয়া উন্ধিত হয়, বিশ্বকর্মার নির্দ্মিত সেই ৰজও তজপ উদ্ভিত হইয়াছে; তাহার ভার কি নিরোধ

किंदूरे श्रेष ना। ए नायुक्तः। तारे किंपिक यार्थ গন্ধরাজ চিত্ররথের প্রদন্ত শ্বেতবর্ণ বাতবেগী শত-সংখ্যক উদ্ভন্ন দিব্য অশ্ব-যোজিত আছে। পূর্বে এই ৰর প্রদত্ত হইয়াছে বে, বারংবার নিহত হইলেও তৎসমুদায়ের সংখ্যা নিত্যকাল পরিপূর্ণ থাকিবে। রাজা যুধিষ্টিরের রথেও অর্জ্জুনের অশ্ব-তুল্য বীর্য্য-শালী গজদন্তের ন্যায় শুভ্রবর্ণ রহদাকার ঘোটক-সমস্ত যুক্ত আছে। ভীমসেনের রথে বায়ু-তুল্য বেগ-শালী সপ্তর্ষি-সদৃশ-তেজো-বিশিষ্ট হয়-নিচয় রহি-য়াছে। কুষ্ণগাত্র, ভিত্তিরি বিহঙ্গের নাায় চিত্রিত-পৃষ্ঠ, হৃষ্টপুষ্ট বাহনগণ সহদেবকে বহন করিতেছে। তাঁহার ভ্রাতা অর্জুন প্রীত হইয়া তাঁহারে তৎসমুদয় প্রদান করিয়াছিলেন। বীরবর অর্জ্জুনের স্বীয় অশ্ব-গণ অপেক্ষাও ঐ সকল অশ্ব উৎকৃষ্ট। বায়ু-তুল্য বল ও বেগ-বিশিষ্ট মহেক্রদন্ত হরিদ্বর্ণ উত্তম তুর-क्रमगंग, इज्रमंक वामरत्रत्र नाांत्र, नकुल वीतरक वहि-তেছে এবং ততুলা বয়স্ ও বিক্রমশালী, মহাবেগ-युक्ज, इरुश्काञ्च, विठिज-क्वि, प्रविष्ठ मम्य मकल অভিমন্যু প্রভৃতি কুমারগণকৈ বহন করিতেছে।

সঞ্জন-বাক্যে ষট্পঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৫৬ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, ছেসঞ্জয়! পাগুবদিগের নি-মিক্ত প্রতি-পরবশ হইয়া ছুর্যোধনের বাহিনী সহ করিবার উদ্দেশে কে কে সমাগত হইয়াছে দেখিলে?

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! অন্ধাক ও র্ফিবং-শের শ্রেষ্ঠ রুফকে এবং চেকিতান ও যুযুধান সাত্য-কিকে তথায় উপস্থিত দেখিলাম। এই শেবোক্ত পুরুষমানী স্থবিখ্যাত মহারথেরা উভয়েই এক এক অকৌহিণী সমভিবাহারে পাগুবদিগকে আশ্রয় করিয়াছেন। পাঞ্চালরাক ক্রপদ, বীর্য্য-সম্পন্ন সত্য-ক্রিছির্যায় প্রভৃতি দল তনরে পরিবৃত এবং শি-শ্রুক পরিপালিত হইয়া যুধিকিরের মান বর্জন

করত সমস্ত সৈনাগণের দেহ আচ্ছাদিত করিয়া এক মকৌহিণী সেনা সমভিব্যাহারে সমাগত হইয়া-**ছেন। পৃথিবীপাল বিরাটরাজ বীর্যাশালী স্থ্**য্যদন্ত ও মদিরাশ্ব প্রভৃতি ভাতৃ ও তনয়গণের সহিত এক অক্ষোহিণী সৈন্যে পরিরত হইয়া শব্ধ ও উত্তর নামক পুত্র-দ্বয় সমভিব্যাহারে পার্থকে আশ্রয় করিয়াছেন। জরাসন্ধ-পুত্র মগধাধিপতি সহদেব ও চেদিরাজ ধৃষ্ট-কেতু, ইহাঁরা পৃথক পৃথক এক এক অক্ষোহিণী লইয়া সমাগত হঁইয়াছেন। রক্তশ্বজ কেকয় রাজ-কুমারেরা পঞ্চ সহোদর এক অক্ষোহিণী পরির্ভ হইয়া পাণ্ডবদিগকে আশ্রয় করিয়াছেন। যাঁহারা পাণ্ডবার্থে ছর্যোধনের সৈন্যসহিত যুক্ক করিবার নিমিত্ত তথায় সমাগত হইয়াছেন, তাঁহাদিগকে এতাবৎ-সংখ্যক দৃষ্টি করিলাম। যিনি মানুষ দেব গন্ধর্বে ও অস্কর সম্বন্ধীয় ব্যুহরচনা জানেন, সেই মহা মনা ধৃউছাম তথায় সৈন্যাধ্যক্ষ হইবেন।

হে রাজন্! শান্তমুনন্দন ভীয়া, শিখণ্ডির ভাগৰূপে কম্পিত হইয়াছেন; বিরাট রাজা মৎস্যদেশীয় যোধগণের সহিত সেই শিখণ্ডির পার্ফিরক্ষক হই-বেন। মদ্রাধিপতি বলশালী শল্যরাজ জ্যেষ্ঠ পাণ্ড-বের ভাগে পতিত হইবেন; তদ্বিষয়ে কেহ কেহ विनिद्यान त्य, जामापिरभंत मर् উक वीत- एश श्रत-স্পার সদৃশ নহেন। শত সহোদর ও পুত্রগণের সহিত ছুर्य्याधन এবং পূर्व ও পশ্চিম দেশীয় রাজন্যগণ ভীমসেনের ভাগে নির্দ্দিউ হইয়াছেন। অর্জ্জুনের ভাগে ভাস্কর-তনয় কর্ণ, অশ্বত্থামা, বিকর্ণ ও সিদ্ধু-রাজ জয়দ্রথ, এই কয়েক জন পতিত হইয়াছেন। এতভিন্ন যাঁহারা পৃথিবী-মধ্যে অসামান্য শ্রমানী এবং দুর্দ্ধর্ব বলিয়া পরিগণিত, তাঁহাদিগকেও অর্জ্জুন নিজ ভাগৰূপে কম্পিয়াছেন। মহাধন্ত্র্জারী কেক্য়-রাজপুত্তেরা পঞ্চ সহোদর কৈকেরদিগকেই সমরে ভাগৰপে নির্দ্দিক্ট করিয়া যুদ্ধ করিবেন। কেবল কৈকেয়েরা নহে, মালব ও শালুকগণ এবং ত্রিগর্ভ-तिरात्र **अपान तारे अनिक मश्मश्चक इ**त्र, हेराँद्रांश

ठाँशामित्वत्र जात्व निर्मिष्ठ रहेग्राट्य । अज्जा-नस्मन অভিমন্ত্র তুর্য্যোধন ও তুঃশাসনের পুত্রদিগকে এবং রুহ্রল রাজাকে নিজভাগে স্থির করিয়াছেন। হে ভারত! স্বর্ণধন্ধ মহাধন্ত্র্কারী ধৃউচ্চান্ন প্রভৃতি ক্রপদতনয়েরা দ্রোণের অভিমুখে যুদ্ধ-যাত্রা করি-বেন। চেকিতান সোমদত্তের সহিত দ্বৈরথ সংগ্রাম অর্থাৎ যুগ্ম-যুদ্ধ ইচ্ছা করিতৈছেন এবং সাত্যকিও ভোজরাজ ক্তবর্মার সহিত এৰপ সমরাভিলাবী হইতেছেন। সমরে ঘোরতর আরাবকারী শুরবীর মাজীনন্দন সহদেব, আপনকার শ্যালক স্থবলতনয় শকুনিকে নিজভাগে কণ্পিত করিয়াছেন, এবং ঐ ধূর্ব্তের পুত্র উলুককে ও সারস্বতদিগকে নকুল বার নিজভাগ ৰূপে নির্দিষ্ট করিয়াছেন। হে রাজন্! এতত্তিম্ন অন্যান্যযে সমস্ত পার্থিবগণ সংগ্রামে প্রত্যু-कामन क्रियन, পाश्चरवत्रा छांश्वामिरशत्रे निक निक নামানুসারে ভাগ নির্দিষ্ট করিয়া রাখিয়াছেন। এইৰূপে তাঁহাদিগের সৈন্য সমস্ত যথা ভাগে বিভক্ত হইয়াছে, এক্ষণে পুত্রগণ সহিত আপনকার যে ৰূপ কর্ত্তব্য হয় তাহা অবিলয়ে সম্পন্ন করুন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয়! আমার এই ছুর্ণৃতিদেবী মৃঢ় পুল্রেরা আর জীবিত রহিল না! রণমধ্যে বলশালী ভীমের সহিত যাহাদিগের যুদ্ধ হইবে তাহারা আর কিরণে জীবনের প্রত্যাশা করিতে পারে? পৃথিবীস্থ সমস্ত রাজগণ কালধর্ম অর্থাৎ মৃত্যু-কর্ভৃক পশুবৎ অভিবিক্ত হইয়া, পাবকে পতঙ্গ সজ্জের ন্যায়, গাণ্ডিবায়ি-মধ্যে প্রযোগ করিবে। ক্লতবৈর মহাত্মা পাণ্ডবর্গণ সংগ্রামে মদীয় বাহিনীকে যে প্রভন্ম করিয়া দিবেন, তাহা আমি নিশ্চয় মনে করিতেছি। কোন ব্যক্তি পাণ্ডব-যুদ্ধে প্রভন্মা সেই সেনার অন্ত্রগামী হইবে? পাণ্ডবেরা সকলেই অতিরণ, শুর, কীর্জিমন্ত, প্রতাপী, তেজে স্থ্যা ও আমিত্বল্য এবং সমর-বিজয়ী। হে সঞ্লয়! বাঁহা-দিশের মুধিন্তির নায়ক, মধুস্থদন রক্ষক এবং ভীম, অর্জুন, নকুল, সহদেব, সাত্যকি, দ্রুপদ, ধৃউছ্যুন্ধ,

উত্তদৌজা, যুধাময়া, শিখণ্ডী, কজাদেব, উত্তর, বভু.
কাশী চেদি মৎস্য ও পাঞাল দেশীর সমস্ত সঞ্জয়গণ
ও প্রভদ্রকগণ যোজা; ইচ্ছা না করিলে ইন্দ্রও বাঁহাদিগের নিকট হইতে এই পৃথিবী হরণ করিতে
পারেন না; বাঁহারা পর্বতপুঞ্জ ভেদ করিতেও সমর্থ;
সেই অলৌকিক প্রতাপশালী সর্বাগণ-সম্পন্ন, রণধীর বীরদিগের সহিত আমার এই ছুই পুজ যুজ
ইচ্ছা করিতেছে! আমি বছতর বিলাপ করিলেও
তাহা শুনিতেছে না!

ष्ट्राधिन कहित्वन, जामता উভन्न পक्षहे এक-জাতীয় এবং উভয় পক্ষই ভূমিগোচর; তবে আ-পনি কি নিমিত্ত কেবল পাণ্ডবদিপের জয়-সম্ভাবনা করিতেছেন ? হে তাত! পাওবেরা কি, অমরগণ-সহক্কত সাক্ষাৎ শচীপতিও এই অমিত-তেজ্বী মহাধনুর্দ্ধারী ভীম, দ্রোণ, রূপ, কর্ণ, জয়দ্রথ, সোম-দত্ত ও অশ্বত্থামাকে সমরে পরাজয় করিতে পা-রেন না। অন্ত্রধারী, শূর ও মহাপ্রাণ যাবতীয় মহী-পালেরাই আমার নিমিত্ত পাণ্ডবদিগকে প্রতি-বাধিত করিতে সমর্থ। পাগুবেরা মদীয় সৈন্যগণের প্রতি নিরীক্ষণ করিতেই পারিবে না। সপুত্র পাগুব-গণের সহিত যুদ্ধ করিতে আমি সম্পূর্ণ পরাক্রান্ত, সন্দেহ নাই। হে তাত! যে সকল পার্থিবগণ আ-মার প্রিয়করণে সমুৎস্কক আছেন, ইহাঁরা, তম্ভদারা हतिन-मांवकिंग्रित नाम, भाखविंग्रिक भ्रम्भादन আবদ্ধ করিবেন। পাণ্ডৰ ও পাঞ্চালগণ আমা-দিগের স্থবিপুল রথবংশ ও শর-সমূহ-দারা তাড়িত হইয়া অবশ্যই পলায়ন-পরায়ণ হইবে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্জয়! আমার এই পুত্র উন্মত্তের ন্যায় বিলাপ করিতেছে; ধর্মরাজ মুধি-ঠিরকে মুদ্ধে পরাজয় করিতে এ কখনই সমর্থ নহে। সেই যশসী, ধর্মজ্ঞ, মহাজ্মা পাশুবদিগের ও ভদীয় পুত্রগণের ঘৈরপ বলবভা, তাহা ভীয়ই জাবেন; বেহেতু ইনি সেই মহাজ্মগণের সহিত মুদ্ধ করিতে নিস্পৃহ হইয়াছেন। কিন্তু হে সঞ্জয়! ভূমি পুনরায় আমার নিকটে তাঁহাদিগের বিচেটিত বর্ণন কর কোন বাক্তি সেই প্রভাপ্রদীপ্ত, তেজঃপুঞ্জ, মহাধমু-র্দ্ধারী পাণ্ডবদিগকে ঘৃত-দারা ছতাশনের ন্যায় অধিকতর উদ্দীপিত করিতেছে?

সঞ্জর কহিলেন, হে ভারত! ধৃষ্টত্নান্ন সর্বনাই তাঁহাদিগকে এই বলিয়া সন্দীপিত করিতেছেন, "হে ভরতসত্তমগণ! যুদ্ধে প্রবৃত্ত হও, যুদ্ধ হইতে কদাচ ভন্ন পাইও না! তথায় ছুর্যোধন-কর্ভৃক প্রা-র্থিত হইয়া যে কোন পার্থিবেরা ক্রোধপরীত হইয়া শস্ত্র-সন্তুল তুমুল সংগ্রামে সমাগত হইবে, অমুচর-গণের সহিত তাহাদিগের সকলকেই আমি একাকী, তিমি যেমন জল হইতে মৎস্যজাত গ্রহণ করে, সেইৰপ করিয়া গ্রহণ করিব। অপিচ উপকৃল যে-মন সাগরকে নিরুদ্ধ করিয়া রাথে, আমি ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ, কর্ণ, অশ্বস্থামা, শল্য ও স্থযোধনকেও সেইৰপ রোধ করিব "। ধৃউছাম এইৰপ উক্তি করিলে ধর্ম।ত্মা রাজা যুধিন্ঠির তাঁহাকে কহিলেন, হে মহাবাহো! পাওবসহ পাঞ্চালেরা তোমারই ধৈর্যা ও বীর্যোর উপরে অধিরোহণ করিয়া আছে ; অতএব ভুমি আমাদিগকে সংগ্রাম হইতে উদ্ধার কর! আমি তোমাকে ক্ষজ্রিয়ধর্মে বিশেষ-রূপে অবস্থিত এবং একাকীই কৌরবগণ-বিনিগ্রহে বি-লক্ষণ সমর্থ বলিয়া জানি। হে পরস্তপ ! কৌরবেরা যুদ্দেন্তু হইয়া সন্মুখে উপগত হইলে তুমি যেৰূপ বিধান করিবে, তাহা অবশ্যই আমাদিগের শ্রেয়ঃ-কম্প হইবে। নীতিজ্ঞগণের মত এই যে, যে শূর পুরুষ পৌরুষ প্রদর্শন করত সংগ্রাম হইতে অপ-গত, ভগ্ন অথবা শরণেচ্ছুদিগের অত্থে অবস্থান করেন, তাঁহাকে সহস্র-দারা ক্রয় করিবেক। হে नतर्यछ ! कृषि भूत्र उठ, वीत्र उठ वठ वद विकास्त । বট; অতএব সমরে ভয়ার্ভদিগের পরিতাগকারী रहेदन, मदम्बर नाहे।

কুন্তীনন্দন ধর্মাত্মা যুখিঠির এইৰপ কহিলে, গৃষ্ট-ছাত্ম আমাকে ভয়লেল-পরিখুন্য এই বাক্য বলি-

লেন, "হে স্থত! তুমি অবিলয়ে শীঘ্র গমন কর, এবং ছুর্য্যোধনের সংগ্রামে দীক্ষিত যাবতীয় জানপদ-গণকে,— বাহ্দিক ও প্রতীপবংশধর অল্পায়ু কুরু-গণকে, তথা রূপ, কর্ণ, দ্রোণ, অশ্বত্থামা, জয়দ্রও, ছঃশাসন, বিকর্ণ, ছুর্য্যোধন ও ভীন্নকে এই কথা বল, যে দেবরক্ষিত ধনঞ্জয় তোমাদিগকে বধ না করেন এ নিমিত্ত সাধু উপায় দ্বারাই যুধিষ্ঠিরকে বশীভূত করা তোমাদিগের কর্ডব্য; অতএব তোম-রা ধর্মরাজের রার্জা প্রদান নিমিন্ত এই লোকপ্রবীর পাণ্ডব সমীপে শীঘ্র যাক্কা কর। সত্যবিক্রম সব্য-সাচী ভূতীয় পাণ্ডব যেৰূপ যোদ্ধা, পৃথিবী-মধ্যে তাদৃশ কোন যোদ্ধাই বিদ্যমান নাই; যেহেতু দেবগণ এই গাণ্ডীব-ধম্বার দিব্য রথ রক্ষা করিয়া ধাকেন ; স্থতরাং মনুব্য-কর্ভৃক তাহা পরাজিত হই-বার বিষয় নহে ; অতএব তোমরা যুদ্ধে চিত্তাকর্ষণ করিও না।

সঞ্জয়বাক্যে সপ্তপঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্তা। ৫৭।।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, আমি বিলাপ করিতেছি তথা-পি কি আমাকে অগ্রাহ্য করিয়া এই মন্দবৃদ্ধি মূঢ়ে-রা, কুমার কাল হইতেই ব্রহ্মচারী, ক্ষজ্রিয় ভোজো-যুক্ত যুধিষ্ঠিরের সহিত যুক্ত করিবে ?—হে ভরত-मखम कूर्यग्राधन! यूक रहेट निवृक्ष रुख! हर जाति-ন্দম! পণ্ডিতেরা কোন অবস্থাতেই যুদ্ধের প্রশংসা করেন না। অমাত্যগণের সহিত তোমার জীবিকা-নিৰ্বাহাৰ্থে পৃথিবীর অর্জাংশই যথেষ্ট; অতএব হে পরস্তপ! পাগুবদিগের যথোচিত অর্দ্ধাংশ প্রদান কর। তুমি মহাত্মা পাগুবগণের সহিত সদ্ধি ইচ্ছা कत्र, हेरा ममछ कोत्रदात्राई धर्मयूङ ताथ करतन। হে পুত্র! ভূমি আপনার এই বাহিনীর প্রতিই সমক্ ৰূপে পৰ্য্যবেক্ষণ করিয়া দেখ; ইহা ভোমার বিনাশের হেতু হইয়াছে, কিন্তু তুমি মোহ প্রযুক্ত তাহা বুৰিতে পারিভেছ না। দেখ, না আমি, না

বাহ্লিক, না ভীয়, না ছোণ, না অশ্বপামা, না সঞ্চয়, না সোমদন্ত, না শল, না রূপ, না সভাত্রত, না পুরুমিত্র, না জয়, না ভূরিশ্রেবা, কেহই যুদ্ধ ইচ্ছা করিতেছেন না। হে তাত! শত্রুগণ-কর্ভৃক পীড়িত হইলে কৌরবেরা যাঁহাদিগের উপরে নির্ভর করিবে, তাঁহারা যুদ্ধ করিতে সমুৎস্কুক হইতেছেন না, কিন্তু তুমি তাহাতে স্পৃহা করিতেছ। তুমি স্বয়ং ইচ্ছামুন্দারে করিতেছ এমনও নহে; কুর্ন, পাপাত্মা ছঃশান্দন ও স্থবল-পুত্র শকুনি, ইহারাই তোমাকে প্রবৃত্ত করিতেছে।

ছুর্য্যোধন কহিলেন, না আপনি, না দ্রোণ, না অশ্বর্থামা, না সঞ্জয়, না ভীন্ন, না কাম্বোজ, না রূপ, না বাহ্লিক, না সত্যব্রত, না পুরুমিত্র, না ভূরিশ্রবা, না আপনকার অন্য কোন সম্পর্কীয় লোক, কাহারও উপরে নির্ভর না করিয়া জামি যুদ্ধার্থে স্পর্দ্ধা করি-তেছি। হে ভাত! কেবল আমি ও কর্ণ, এই চুই পুরুষত্রেষ্ঠই যুধিষ্ঠিরকে পশু করিয়া রণযজ্ঞে দী-ক্ষিত হইব। আমার রথ তাহাতে বেদী হইবে; কবচ সভা হইবে; খড়্ন ও গদা ব্ৰুব ও ব্ৰুক্ হইবে; বাহন-চতুষ্টয় চাতুর্হোত্র হইবে; শর-সকল কুশের कार्या कतिरत এবং यमहे घृठ-श्वन्त हहेरत। ह নৃপতে ! এইৰূপে আমরা শ্বরং আত্ম-ৰূপ যজ্ঞ-দ্বারা সমরে যমরাজের যজন করিয়া বিজয়লাভাস্তে হতা-মিত্র ও শ্রীসমন্থিত হইয়া সমাগত হইব। হে তাত! আমি, কুর্ণ ও আমার ভ্রাতা ছুংশাসন, আমরা এই তিনজনেই সমরে সমস্ত পাওবদিগকে নিহত করিব। হয় আমি পাগুবদিগকে মারিয়া ধরা শাসন করিব, না হয়, আমাকে বধ করিয়া পাণ্ডু-পুজেরা এই অধিল ভূমণ্ডলের ভোক্তা হইবে। হে অক্ষয়-সত্ত্ব-সম্পন্ন অবনীনাথ! আমার রাজ্য, ধন, জীবন, সকলই পরিত্যক্ত হউক, তথাপি আমি পাণ্ডবদিগের সহিত কখনই একত্র বাস করিতে পারিব না। হে গুরো! স্তীক্ষ্ণ স্থচীর অগ্রভাগ-দারা বাহা বিধ্য হইতে

পারে, আমাদিগের তাবৎ-পরিমিত ভূমিও পাণ্ডব-দিগকে অর্পিত হইবে না।

ছুর্য্যোধনের এই কথার ধৃতরাষ্ট্র ভূপতিদিগকে সম্বোধিয়া কহিলেন, হে ভূপালগণ! আমি ছুর্য্যো-ধনকে ত পরিত্যাগ করিলাম, এক্ষণে তোমাদিগের নিমিত্ত শোক করিতেছি, যেহেতু তোমরা শমন-সদনে গমনোশুখ এই মন্দমতির অমুগমন করিবে। মৃগযুধ-মধ্যে ব্যাঘ্র সকলের ন্যায়, প্রহারিশ্রেষ্ঠ পাও-বেরা, সমরে সমবেত তোমাদিগের মধ্যে প্রধান প্রধান সৈনিকগণকে নিশ্চয়ই নিহত করিবে। আ-মার বোধ হইতেছে যেন দীর্ঘবাছ সাত্যকি, করতল-গৃহীতা বিমর্দ্দিতা কামিনীর ন্যায় ভারতীসেনাকে স্ববশে আনয়ন ও প্রধর্ষণ করত প্রতিকুলে বিক্ষিপ্তা করিতেছেন। কলত, মধুবংশধর সাত্যকি, যুধিষ্ঠিরের সম্পূর্ণ বলকে অধিকতর পরিপূর্ণ করিয়া, বীজের ন্যায় শর-সমূহ বপন করত সমরে অবস্থান করি-বেন। ভীমসেন, যুদ্ধে প্রবৃত্ত সৈন্যগণের প্রযুখে অবস্থিত থাকিবে, এবং সৈনিকেরা তাহাকে ছুর্গের ন্যায় জ্ঞান করিয়া সকলেই অকুতোভয়ে আশ্রয় করিবে। যখন তোমরা ভীম-বিনিপাতিত, বিশীর্ণ-দস্ত, ভিন্ন-কুন্ত, শোণিতাক্ত, বিশীর্ণ-গিরিনিকর-সদৃশ কুঞ্জরপুঞ্জকে দৃষ্টি করিবে, তথনই ভীমসেনের বি-মর্দ্দনে ভীত হইয়া আমার এই বাক্য স্মরণ করিবে। র্থ-গজ-পরিশূনা সৈন্যগণকে ভীমসেন-কর্তৃক যখন অগ্নিপথের ন্যায় নিঃশেষে দগ্ধ হইতে দেখিবে, তথনই তোমরা আমার এই বাক্য স্মরণ করিবে। তোমরা যদি পাগুবদিগের সহিত সদ্ধি না কর. তাহা হইলে তোমাদিগের মহাভয় আগত হইবে; ভীমের গদাঘাতে নিহত হইয়াই তোমরা শান্তি লাভ করিবে। কুরুগণের এই বৃহৎ বল-নিচয়কে যখন ছিন্ন মহাবনের ন্যায় ভীমদেন-কর্তৃক পাতিত দেখিবে, তখনই তোমরা আমার এই বাক্য সমরণ করিবে।

বৈশাপায়ন কহিলেন, মহারাজ! রাজা ধৃতরাষ্ট্র সেই সমস্ত পৃথিবীপতিদিগকে এই কথা বলিয়া পুনরায় সঞ্জয়কে সম্ভাষণ-পূর্বক জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন

ধৃতরাষ্ট্র-বাক্যে অফপঞ্চাশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫৮

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে মহাপ্রাজ্ঞ! মহাত্মা বাস্ত্র-দেব ও ধনঞ্জয় যে কথা বলিয়াছেন, ভাহা আমারে বল; তোমার বাকা শ্রবণে আমি ইচ্ছা করিতেছি। मक्षत्र करिएलन, रह ताजन्! आमि क्रकार्ज्जूनरक যেৰূপ দেখিলাম, তাহা অবণ করুন। সেই বীরদ্বয় याहा विलया नियारहर्न, ठाहाउ व्यापनारक विलव। (महे नतरमव-यूत्रात्मत्र निकटि कथाव्यमः कतिवात নিমিত্ত আমি সাবধান ও কৃতাঞ্চলি হইয়া নম্রবদনে পদাঙ্গুলি নিরীক্ষণ করিতে করিতে অন্তঃপুরে প্রবেশ করিলাম। মহারাজ! যেখানে কৃষ্ণার্জুন এবং ভামিনী দ্রৌপদী ও সত্যভামা থাকেন, সে স্থানে অভিমন্ত্র অথবা নকুল সহদেবও গমন করিতে পারেন না। তথায় ঐ অরিন্দমেরা উভয়েই মাধী-স্থরাপানে মন্ত, চন্দন-চর্চ্চিত, অখী, উত্তম বস্ত্রধারী ও দিব্যালঙ্কার-ভূষিত হইয়া বছরত্ন-বিচিত্রিত, বি-বিধ আন্তরণাকীর্ণ, কাঞ্চন-ময় মহাসনে উপবিষ্ট ছিলেন। দেখিলাম, অর্জ্জুনের ক্রোড়ে কেশবের এবং দৌপদী ও সত্যভামার ক্রোড়ে মহাত্মা অর্জ্জু-নের পাদলয় রহিয়াছে। পার্থ পাদ-দারা আমারে काक्षन-भाषभीठे अपान कतिरलन ; किस आमि रख-দ্বারা তাহা স্পর্শ করিয়া ভূমিতেই উপবিফ হই-লাম। পার্থ পাদপীঠ হইতে যথন পাদদর উত্তোলন করিলেন, তখন দেখিলাম তাহা অতীব শুভলক্ষণা-ক্রান্ত। তাহার তলদেশে উর্নরেখা রহিয়াছে। মহা-রাজ! শ্যামবর্ণ, রুহদাকার, তরুণ-বয়ক্ষ, শালক্ষদ্ধের ন্যায় উদ্গাত কৃষ্ণাৰ্জ্জুনকে একাসনে আসীন দেখিয়া আমি মহাভরাবিউ হইলাম। তাঁহারা যে ইন্দ্র ও

विक्-त्रमृत्र, मन्त्राचा क्रूर्याधिन, जीव क्लार्पत्र त्रः खाः এবং কর্ণের ল্লাঘা-হেভু তাহা বোধগম্য করিতেছেন ना। তাদৃশ नतरात्रव-षत्र याहात्र निरात्मवर्खी, त्महे ধর্মরাজের মানসিক সঙ্কণ্প যে সিদ্ধ হইবে তাহা তথনই আমার নিশ্চয় হইয়াছে। আমি অন্ন পান ও বস্থাভরণ-দারা সংকৃত হইয়া এবং মধুর সম্ভা-বণাদি অন্যান্য সংক্রিয়া লাভ করিয়া মস্তকে অঞ্জলি বন্ধন-পূর্বক আপনুকার সন্দেশ বাক্য নিবেদন করি-লাম। তথন অৰ্জুন ধনুগুণ-কিণাঙ্কিত হস্ত-দারা কেশবের শুভলক্ষণ-যুক্ত চরণ আনমন করত বাক্য-প্রয়োগ নিমিত্ত তাঁহাকে নিয়োজিত করিলেন। সর্বাভরণ-ভূষিত, ইন্দ্র-বীর্য্যোপম, বাগ্মিশ্রেষ্ঠ রুঞ্ড ইক্রকেতুর ন্যায় উপ্থিত হইয়া উপবেশন-পূর্ব্বক আমাকে কথনযোগ্যা, আহ্লাদকরী, ধার্ত্তরাষ্ট্রগণের ত্রাস-বিধারিনী, মৃত্বপূর্ব্বা, স্থদারুণ বাণী-দ্বারা সম্ভা-ষণ করিলেন। পশ্চাৎ আমি বচনযোগ্য কেশবের সেই উপদেশাক্ষর-সমন্বিত, ইন্টার্থযুক্ত, হৃদয়শোষণ বাক্য শ্রবণ করিলাম।

বাস্থদেব কহিলেন, "হে সঞ্জয়! তুমি আমা-দিগের বচনামুসারে জ্যেষ্ঠদিগকে অভিবাদন আর কনিষ্ঠদিগকে কুশল জিজ্ঞাসা করণানম্বর কুরুশ্রেষ্ঠ ভীয় ও দ্রোণাচার্য্যের শ্রুতিগোচরে মনীষী ধৃত-রাষ্ট্রকে এই কথা বলিও যে, তোমাদিগের মহাভয় আগত হইল। তোমরা এই সময়ে ব্রাহ্মণগণকে দক্ষিণা দান করত বিবিধ যজ্ঞ-দ্বারা যজন কর ; পুক্র-দারাদির সহিত আমোদ প্রমোদ করিয়া লও; সংপাত্তে অর্থ প্রদান কর; কামজাত পুত্র প্রাপ্ত হও এবং প্রিয়বর্গের প্রিয়াচরণ কর; বেহেভু রাজা যুধিন্ঠির বিজয়-বিষয়ে ত্বরান্বিত হইতেছেন। আমি पृत्रच थाकात कृष्ण य क्रूण-चत्त 'शाविन्म शा-বিন্দ বৈলিয়া অংমারে আহ্বান করিয়াছিলেন, সেই প্রবৃদ্ধ ঋণ আমার হৃদর হইতে অপনীত হইতেছে না। তেজোময় ছুরাধর্ষ গাণ্ডীব ধাঁহার শরাসন, মৎ-সহক্ত সেই সব্যসাচীর সহিত তোমাদিগের শক্ততা

रुरेशाष्ट्र। कालभद्रीख ना रुरेत्व काम् राख्नि मिष-তীয় পার্থকে যুদ্ধে প্রার্থনা করিতে ইচ্ছা করে.? অন্যের কথা দূরে থাকুক, সাক্ষাৎ পুরন্দরও পারেন না। যে মানব অর্জুনকে সমরে জয় করিতে পারে, সে বাছযুগল-সহকারে ধরাকে উদ্বহন করিতে পারে, কুক্ক হইয়া সমস্ত প্রজাপুঞ্জ দহন করিতে পারে এবং স্বর্গ হইতে দেবগণকেও পাতিত করিতে সমর্থ হয়। কলত, আমি দেব, গন্ধর্বে, যক্ষ, অস্তর, মনুষা ও পল্লগগণ-মধ্যে এমন ব্যক্তিই দেখিতে পাই না যে, সংগ্রামে ধনঞ্জয়ের অভিমুখে গমন করিতে পারে। বিরাটনগরে একের ও বছ-সংখ্য যোধগণের মধ্যে সেই যে মহান্ অদ্ভুত ব্যাপার শ্রবণ করা যায়, তাহাই ইহার যথেট নিদর্শন।—বিরাট-নগরে তোমরা একাকী ধনঞ্জয়-কর্তৃক ভগ্ন হইয়া দিগ্দিগ-ग्रुद्ध रा भनामन क्रिमाहित्न, जाहार स्राप्त यर्थक নিদর্শন। বল, বীর্যা, তেজ, শীঘ্রতা, লযুহস্ততা, অবিষাদ ও ধৈৰ্যা, একাধারে এই কয়েকটি গুণ পাৰ্থ ভিন্ন অন্যত্ৰ বিদ্যমান নাই ⁷।

মহারাজ! শ্বীকেশ বচনাবলি-দ্বারা পার্থকে আনন্দিত করত, যথা-সময়ে বর্ষণকারী গগণস্থ পাকশাসনের ন্যায় গর্জন করিতে করিতে এই ৰূপ
কহিলেন। শ্বেতবাহন কিরীটা অর্জ্জনত কেশবের
কথা শুনিয়া সেই লোমাঞ্চ-কর মহাবাকোর উল্লেখ
করিলেন।

সঞ্জয়-বাক্যে একোনবন্টিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫৯॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনস্তর প্রজ্ঞানেত নরেশ্বর ধৃতরাষ্ট্র, সঞ্জয়ের বাক্য শ্রবণ করিয়া, তাহার দোষ-গুণ-পর্যালোচনে প্রব্ত হইলেন। পুত্রগণের বি-জয়কামী বিচক্ষণ বুদ্ধিমান মহীপতি যথামতি স্থ-ক্ষামুস্ক্রন-রূপে গুণ দোষ গণনা করিয়া এবং উভয় পক্ষেত্র বলাবল যথার্থরূপে অবধারিত করিয়া প্রভাব উৎসাহ ও মন্ত্র-জনিত ত্রিবিধ শক্তি-সংখ্যা করিতে

মামুষ-সম্বন্ধীয় ভেজ ও শক্তি-বিশিষ্ট এবং কৌরব-দিগকে অপ্পতর শক্তিযুক্ত হির করিয়া ছুর্যো-ধনকে কহিলেন, হে ছুর্য্যোধন! আমার চিরকাল এই চিন্তা হইতেছে; কিছুতেই ইহার নিরুত্তি হয় না। কেবল অনুমানাধীন নহে, আমি ইহা প্রত্যক্ষই সত্য বোধ করিতেছি। পুত্রগণের প্রতি সকলেই স্নেহ করে এবং সাধাানুসারে তাহাদিগের প্রিয় ও হিতা-মুষ্ঠানও করিয়া পাকে। যাঁহারা উপকার করেন, তাঁহাদিগের পক্ষেও প্রায় এইৰূপ লক্ষিত হয়। সাধুরা উপকারীদিগের বছতর উৎকৃষ্ট প্রিয়ানুষ্ঠান দারা প্রত্যুপকার করিতে সম্পূর্ণ ইচ্ছা করেন। অত এব ছতাশন খাণ্ডবে অর্জুনক্ত উপকার স্মরণ করত এই ভয়ন্ধর কুরু-পাগুব-সংগ্রামে অবশ্যই তাঁছার সাহায্যকারী হইবেন এবং সমাক্-ৰূপে আ-হুত হইলে, ধর্মাদি দেবগণও পুত্র-প্রেমে পাণ্ডব-গণের প্রতি যুগপৎ অমুকূল হইয়া সাহাব্যার্থে আ-গমন করিবেন। আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে, তাঁহারা ভাষা দ্রোণ রূপাদির ভয় হইতে তাহা-দিগকে রক্ষা করিতে অভিলাষী হইয়া অশনি-সদৃশ ভীষণ ক্রোধ প্রাপ্ত হইবেন। অতএব সেই বীর্য্য-শালী, অস্ত্রপারগত, নরজ্রেষ্ঠ পাগুবেরা দেবগণ-সহক্রত হইলে, মানুষে আর তাহাদিগের প্রতি नितीकन कतिराज्ये ममर्थ स्ट्रीय ना। याँचात रामव-লোক-সমূত তুরাসদ উৎকৃষ্ট গাণ্ডীব শরাসন, বরুণ-প্রদত্ত শস্ত্রপূর্ণ অক্ষয় দিব্যভূণীর-দ্বয়, কুত্রাপি অনা-সক্ত, ধুমের নাায় গতি-বিশিষ্ট দিবা কপিশ্বজ এবং চতুরস্তা পৃথিবী-মধ্যে অতুল্য রথ ; যাঁহার শত্রুক্ল-ভয়ক্ষর মহামেঘ-সদৃশ ও মহাবজ্ঞ-সম ঘোর নিনাদ জনগণ-কর্ত্তক ভ্রুত হইয়া থাকে; সমস্ত লোকে যাঁহারে বীর্যো লোকাতীত জ্ঞান করে এবং ভূপাল-গণ খাঁছাকে যুদ্ধে দেবগণেরও অজেয় বলিয়া জা-নেন; যিনি এককালে পঞ্চশত বাণ গ্রহণ করত নিমেষমাত্রে স্বদূরে নিক্ষিপ্ত করেন, অথচ কেহই

ভাহা দেখিতে পায় না ; বাছবীৰ্য্যে কাৰ্ডবীৰ্য্য-সদৃশ, যুদ্ধার্থে অবস্থিত, রুধিভোষ্ঠ, অরিন্দম যে পার্থকে ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ, অশ্বর্থামা, মদ্ররাজ শল্য ও মধ্যস্থ मानवर्गन, ष्यत्नोकिक-वीर्या-मन्भन्न ष्र्भानगरनंत्र अ व्यभन्नोद्धम विषया वार्षा करतन; यिनि धकरवर्ग পঞ্চশত শর নিক্ষেপ করিয়া থাকেন; সেই মহাধনু-क्षात्री मरहत्व ७ উপেक्-जूना विक्रमनानी व्यर्क्न्नरक আমি যেন এই মহাভয়স্কর সমরে সৈন্য-সমূহ সংহার করিতে দেখিতেছি। হে ভারত! সমস্ত দিবারাত্র এইৰপ চিন্তা করিতে করিতে, কি প্রকারে কৌরব-গণের শাস্তি হইবে, সেই ভাবনাতেই নিমগ্ন হইয়া আমি নিজা-খূন্য ও স্থাহীন হইয়া রহিয়াছি। হে তাত! কুরুগণের এই স্থমহান বিধংস উপস্থিত; অতএব যদি শান্তি ভিন্ন এই কলহের অন্তকারী অন্য কোন উপায় না থাকে, তবে পাগুর্বদিগের সহিত দক্ষি করাই আমার নিত্য-ম্পৃহণীয়, বিগ্রহ নহে; কেননা আমি পাণ্ডবদিগকে কুরুগণ অপেকা সমধিক শক্তি-সম্পন্ন জ্ঞান করিতেছি।

> ধৃতরাষ্ট্র-বিবেচনে য**টি**তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৬০ ॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, অতিমাত্র অসহিয়ৄ ধৃতরাষ্ট্র-তনয়, পিতার এই বাক্য শ্রবণে অত্যন্ত ক্রোধাবিষ্ট হইয়া পুনরায় এই কথা বলিলেন, হে রাজসন্তম! আপনি যে দেব-সহক্ত পাগুবগণকে অপরাজেয় বিবেচনা করিতেছেন, আপনকার সে ভয়
অপগত হউক। হে ভারত! পূর্বের দৈপায়ন ব্যাসদেব, মহাতপা নারদ ও জামদয়্য পরশুরাম আমাদিগকে এই কথা বলিয়াছিলেন যে, কাম ছেষের
অসংযোগ; লোভ-রাহিত্য, দ্রোহ-শূন্যতা ও বিষয়সকলের প্রতি উপেক্ষা অর্থাৎ র্থাজ্ঞান-দারাই
দেবতারা দেবত্র প্রাপ্ত হইয়াছেন। ছে ভরতর্বভ!
দেবগণ মামুক্রের নায় কাম, লোভ, দয়া অথব।
দেব-হেত্রাক্রদাচ কোন কার্য্যে প্রবৃত্ত হন না।

অগ্নি, বায়ু, ধর্মা, ইন্দ্র ও অশ্বিনীকুমার-ছয় যদি কাম-যোগাধীন প্রবৃত্ত হইতেন, তাহা হইলে আর পার্থেরা ছুঃখ প্রাপ্ত হইত না। অতএব হে ভারত! আপনি কোন ক্রমেই এ চিস্তা করিবেন না ; কেননা এই দেবতারা শম-দমাদি দৈবভাব-সকলের প্রতি নিত্যকাল অপেকা ব্লাখেন। তবে যদি কামযোগ-বশত ইহাঁদিগের দ্বেব ও লোভ লক্ষিত হয়, তাহা হইলে দৈব-প্রামাণ্য অনুসারে উহা কদাচ বিক্রম প্রকাশ করিতে পারিবে না। অগ্নি যদি সর্বদিকে ব্যাপ্ত হইয়া সকল লোক-দহনেচ্ছু হন, তথাপি আমা-কর্তৃক মন্ত্রপূত হইয়া তৎক্ষণাৎ নির্বাণ প্রাপ্ত হই-বেন। হে ভারত! দেবগণ পরম তেজোযুক্ত বটেন, কিম্ভ তাঁহাদিগের অপেক্ষাও আমার তেজ অনুপম कानिद्वन। (इ द्राकृन् ! ध्रुती विनीर्यामांगा प्रथवा গিরি-শিখর-সমন্ত বিদীর্ণ হইলেও আমি লোক-সমক্ষে মন্ত্রপূত করত পুনরায় তৎসমুদায় যথাস্থানে স্থাপিত করিতে পারি। এই চেতনাচেতনাত্মক স্থাবর জঙ্গম জগতের বিনাশার্থে যদি ঘোরতর निनाम-युक्त मिलावर्ष ७ श्रव्य वाश्च छे । इस, তথাপি প্রাণিগণের প্রতি অনুকম্পা করিয়া আমি সমস্ত জগতের সাক্ষাতেই তাহা বারংবার নিবারণ করিতে পারি। আমি জল-সকল স্তন্তিত করিলে তন্মধ্যে রথ পদাতি-সমস্তও গ্রমন করিতে পারে; অতএব আমিই একাকী স্থরাস্থর-সম্বন্ধীয় যাবতীয় প্রভাব-সমূহের প্রবর্ত্তরিতা। কোন কার্য্যোপলক্ষে আমি অক্টোহণীগণে পরিরত হইয়া যে সকল দেশে যাত্রা করি, তথায় যেখানে যেখানে ইচ্ছা করি, সেই সেই স্থলেই আমার অশ্ব-সকলের গতি হয়। আ-মার অধিকারে সর্পাদি ভয়ানক হিংস্রজম্ভ সকল নাই; প্রাণিগণ মন্ত্রবলে রক্ষিত হওয়ায় হিংস্ত্র-কেরা আর তাহাদিগকে হিংসা করিতে পারে না। হে রাজন্! জলধর আমার অধিকারস্থ লোকদিগের পক্ষে নিকামবর্ষী অর্থাং ব্রথেই-জলদারী হয়। আ-মার প্রজাগণ সকলেই ধর্মিঠ, স্থতরাং আমার

मानिकार प्राप्ति कार्यक्षियाक्षि भाग राजिस्स केल्या उत्तरपात क महानमा बाहे । व्यक्तिय व्यक्ति জ্ঞোজান সম্পূৰণকে রক্ষা করিছে, কি অখিনী-কুজাৰু-ৰন্ধ, কি-আমি, কি দেবপণ-সহ বাসব, কি ধৰ্মা, टक्क्ट्रे छेश्नाहाविक हटेदवन ना । ल्डेडांझा यान च्या-মার শক্তাহিগকে বথার্থই রক্ষা করিছে পারিতেন, ভাৰা হুইতে আর পাওবেয়া তরোদশ বৎসর ছুংখ পাইত না ৷ আমি আপনাকে ইহা সভ্য বলিতেছি त्य, जामात्र (दवजाकन वाक्निक ना त्वन, ना शक्तर्स, না অসুর, না রাক্ষম, কেছই পরিত্রাণ করিতে সমর্থ হইবে না। হে পরস্তপ! মিত্রগণ কি শত্রুগণ, উভ-য়ের পক্ষেই আমি চিরকাল শুভ বা অশুভ, যাহা কিছু চিন্তা করি, পূর্বে আর কথনই তাহা বাাহত হয় नाई। अथवा (र कान विषदः 'हेश हहेरव' এहे कथा विल, शृद्ध बाद्र कथन छाहा बनाबा हर नाहे, এই নিমিত্তে লোকে আমারে সভ্যবাক্ বলিয়া জানে। হেরাজেন্দ্র! সকল লোকেই আমার এই দিল্পগুলবিখ্যাত মাহাজ্যের সাক্ষী আছে; আপন-কার আশ্বাসন নিমিত্তেই আমি ইহা উক্ত করি-লাম, শ্লামা করিয়া নছে। হে রাজন্! আমি পূর্বে আরু কদাচ প্লাঘা করি নাই; কেননা আপনাকে প্রেশংসা করা অসতের আচরণ। আপনি পাওব, মংস্যা, পাঞ্চাল ও কেকমগণকে এবং সাত্যকি ও ৰাস্থ্ৰদেৰকেও আমা-কর্তৃক পরাজিত অবণ করি-বেনা সাগরে আসিয়া নদী সকল বেমন সর্বতো-ভাবে বিলুপ্ত হইরা যায়, সেইৰূপ আমার নিকটে আসিয়া ভাহারা অনুচরবর্গের মহিও বিনই হইবে। ভাহাদিখের অপেকা আমার বুদ্ধি, ভেল, বীর্যা, बिका ७ डेनाम, नक्यरे नर्वाधक (अर्छ ७ उरक्र । অন্তঃবিষয়ে জীয়, জোগ, কুপ, শলা ও শল, যাহা क्षिक्ष कार्यक, कार्य वक्षण जामार्ट विश्वाम The Market of the second of th अस्तिकार असिका पूर्वापम करे क्या विका

विकास के अर्था न कर शतिकान नव में यूप निर्मा

নেকু বইয়া পাঞ্জানেকেকেকোলোচিড জ্ঞান্তবা বিষয় পুনরায় জিঞ্জানাক্ষয়িতে লাগিলেন। দুর্ব্যোধন-বাহন্য একবন্ধিতম অধ্যায় সমাধ্য । ৬১%।

বৈশম্পারন কহিলেন, ছুর্যোধন সঞ্জরকৈ পেই-ৰূপে জিজাসা করিতেছেন এমন সময়ে, কর্ণ জড়ি-विठिब-वीर्यामानी अर्ज्जूनटक हिन्छा ना कतिया क्रेंक-সভা-মধ্যে ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রকে প্রহর্ষিত করত কহিলেন, পূর্বে আমি মিধ্যা প্রতিজ্ঞা করিয়া অর্ধাৎ "আমি বান্ধা-কুমার ^স এইরূপ ছল করিরা পরশুরামের নিকট হইতে যথন ব্রদান্ত গ্রহণ করিয়াছিলাম, তৎকালে সেই গুরুদেব মহর্ষি, ভাদৃশ মহা অপরা-ধেও আমাকে "ভোমার অন্তকালে এ অন্তের প্রতিভা থাকিবে না " এই মাত্র শাপ দিয়াছিলেন; সেই তীত্রতেজা মহর্ষি ক্রুদ্ধ হইলে স্সাগরা ধরি-ত্রীকেও দগ্ধ করিতে পারেন, কিন্তু আমি শুক্রাবা ও স্বীয় পৌরুষ-দারা তাঁহার চিত্তপ্রসাদ উৎপাদিত করিয়াছিলাম। আমার সেই অন্ত বিদ্যমান আছে এবং পরমায়ুরও অবশেষ আছে, অতএব অর্জুনকে জয় করা আমারই ভার; আমি ভরিষয়ে সম্পূর্ণ সমর্থ। খবির সেই প্রসাদ লাভ করিয়া আমি পা-ঞাল, কৰাৰ, মৎস্য ও পুত্ৰপৌত্ৰ-সহ পাগুৰ্দিশকে নিমেষ মাত্রে নিহত করিয়া শার্র-বিজিত লমস্ত लाकरे थाश रहेर। जीय, छान ७ अधान अधान ভূপালগণ, সকলেই আপনকার নিকটে অবস্থান করুন ; আমি স্বকীয় প্রধান বলমাত্র-সহকারে প্রমন করিয়া পাশুবদিগকে নিহত করিব ; ইহা আমারুই ভার ৷

কর্ণ এইবাপ কহিতেছেন, এখন সমরে ভীয় তাঁ-হারে বলিলেন, কর্ণ ! কালপ্রভাবে তোমার নিজ্ঞান্ত বৃদ্ধিজংশ হইরাছে; ভূমি অনুর্থক শ্লাঘা ক্ষিত্রেছ ক্ষেত্র ইছা কি জান না বে, প্রধান হত হইলেই ধৃতরাই-পুরোরা নিহত হইকেই ক্ষেত্র ক্ষেত্র সহিত্য ভাষা থাওৰ দহন করত কৈ কর্ম করিরাছিলেন, তাহা ওনিরা ভোষার সবস্থাক্তৰে আজাকে নিরমিউ করাই কর্ডবা। ত্রিন্দাধিপতি মহালা ভগবান্
মহের তোমাকে বে শক্তিটি প্রদান করিরাছেন,
সকরে কেশবের চক্রালাতে ভাষাকে বিশীর্ণা ও
ভলীরতা হইতে দেখিবে। অহে কর্ণ! সর্পম্থ-নামে
ভোষার বে শরটি শোভা পাইতেছে; যাহাকে
ভূমি উৎকৃষ্ট মাল্য-দারা সর্বাদা প্রযম্ম-সহকারে
পূলা করিরা থাক; তাহাও অর্জুনের শর-নিকরে
অভিহত হইরা ভোমার সহিত বিলয় প্রাপ্ত হইবে।
অহে কর্ণ! যিনি প্রগাঢ় ভূমুল সংগ্রামে ভোমার
সম্প এবং ভোমা অপেক্রাও সম্বিক শ্রেষ্ঠ শক্রগাকে নিহত করিরাছেন, বাণ ও ভূমিপুল্র নরকের
নিগ্রহ্কারী সেই বাস্থ্যের অর্জুনকে রক্ষা করিভেছেন।

কর্ণ কহিলেন, মহাদ্বা যতুপতি যেরপ বর্ণিত হইলেন, সেইরপই বটেন; বরং তদপেক্ষাও তিনি শ্রেষ্ঠ, সন্দেহ নাই; পরস্ত পিতামহ আমারে যে কিঞ্চিৎ পরুষ-বাক্য বলিলেন, তাহার কল অবণ করুন। আমি এই শত্র-সমন্ত নিক্ষিপ্ত করিলাম; পিতামহ আমাকে আর কথন যুদ্ধে দেখিতে পাই-বেন মা, সভাতেই দেখিবেন।— হে পিতামহ! আপনি শান্তভাব অবলয়ন করিলে ভূমগুলস্থ সমুদ্য় ভূপালাগণ আমার প্রভাব সন্দর্শন করিবেন।

কর্ণ এই রপ কহিলা সভা পরিত্যাগ-পূর্বক

যভবনে গমন করিলেন। তথন ভীয় হাস্য করিতে
করিতে কুমুগণ-মধ্যে তুর্যোধনকে বলিলেন, সূতশুল্ল করিলেনে, কলিলরাল, অনুস্থা, চেদিপতি ও

ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও আমিই শক্রগণের শত

ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও আমিই শক্রগণের শত
ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও আমিই শক্রগণের শত
ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও আমিই শক্রগণের শত
ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও আমিই শক্রগণের শত
ক্রিক-প্রভৃতি করিলেও কর

মতক সময় চূর্ব করিয়া লোক সংখ্যে আহ্না করে।
নরাধম বৈকর্ষন বংকালে অনিকানীয় করবান আন শুরাম-সমিধানে "আমি ব্রাহ্মণ " এই কথা ব্যিয়া অল্ল গ্রহণ করিয়াছিল, তথনই তাহার ধর্ম ও তপ্সাা বিন্ত হইরাছে।

হে নৃপতীক্র! ভীম সেই কথা কহিলে এবং কর্ন অত্র পরিত্যাগ-পূর্বক গমন করিলে, ধৃতরাষ্ট্র-ভনর অপ্পবৃদ্ধি ছুর্য্যোধন শাস্তমু-নন্দনকে সম্ভাবণ করি-তে লাগিলেন।

> কর্ণাদি-বাকো দ্বিক্টিডম অখ্যায় সমাপ্ত। ৬২।

ছুর্যোধন কহিলেন, হে পিতামহ! পাওবের। তুলা-জন্মা 🕫তবে আপনি তাহাদিগেরই একান্ত জয় স্থির করিতেছেন কেন? দেখুন, বীর্যো, পরাক্রমে, বয়সে, বুদ্ধিতে, শান্ত্র-জ্ঞানে, অন্ত্র-শিক্ষায়, যুক্ষা-ভ্যানে, শীঘ্রত্বে ও কৌশলে, তাহারা এবং আমরা मञ्ज्यारयानि; তবে তাহাদিগেরই বিজয় হইবে, ইহা কিৰপে আপনি অবগত হইতেছেন ? হে রাজৰ ! আমি না আপনাতে, না জোগে, না ক্লপে, না বাহ্লিকে, না অন্য কোন নরে<u>ুল্রে,</u> কাহারও *উপ*রে নির্ভর না করিরাই পরাক্রম প্রকাশের উপক্রম করিতেছি। আমি, বৈকর্ত্তন কর্ণ, আর আমার ভ্রাতা ছুঃশাসন, আমরা এই তিন জনেই সময়ে নিশিত শর-সমূহ-সহকারে পঞ্চ পাগুবকে নিহত করিব ; ভাহার পর বছল-দক্ষিণা-যুক্ত বছবিধ মহা-বজ্জ-ছারা এবং গো অশ্ব ও ধনরাশি-ছারা ত্রাক্ষণ-গণকে পরিতৃপ্ত করিবৰ নমনীয় বৈন্যাধ্যক্ষণ ব্যৱন ভক্ষারা সমাকুলিভ ভূগশাবক-সমূহত্ত্ব ন্যার শ্বং बारकारन नमाकृषिक कन-मधानक कारी विजीन ব্যক্তিদিদের ন্যার**্শক্রিগতেক** সু**ধ সুখ্রের নিম্ন**রে क्याक्न स्पन्ति अधिकारिक कत्रित, क्रमबहैन्स-

भागताः अवर् अर्थः अस्ति । वर्षः गतिरातः स्विद्यः। ুৰিছুত্ব কহিবেন, নিশ্চিত্ৰদৰ্শী পণ্ডিতের৷ এই बक्ताद्व क्ष्महरूरे शक्रम (ध्यम्भाषन वित्रा शेट्यन ; বিলেরত, ব্রাক্ষণের পক্ষে দম সনাতন ধর্ম। দম-শালী ৰাজির দান, ক্ষমা ও সিদ্ধি প্রকৃত-ৰূপে উল্পন্ন হয়। দম দান, তপ্রা, জ্ঞান ও অধ্যয়নের অনুবর্ত্তন এবং তেজের সংবর্ত্তন করে। দমই উত্তম পৰিত্ৰ-বস্তু। দমপ্ৰভাবে পুৰুষ বিগত-পাপ ও সমৃদ্ধ-তেলা হইয়া পরম পদার্থ লাভ করেন। রাক্ষস इट्रेंट थानिश्रानंत स्वत्र खन्न इंग्न, चमान्य लाक সকল হইতেও সর্বাদা সেইৰূপ ভয় হইয়া থাকে। चमान्त्रमिरगत्र प्रमन निमिक्डरे बक्का कि खिरात रुधि করিয়াছেন। পণ্ডিতেরা আশ্রম-চতুষ্টয়েতেই দমকে উদ্ভম ত্রত বলিয়া বর্ণন করেন। দম যে সকল গুণের উৎপত্তি-হেতু হয়, তৎসমুদায়কে উহার नक्र विवाद इरेट्स । हि त्रास्त्र सुन् । योश्त क्रमा, ধৃতি, অহিংয়া, সমতা, সত্যা, সারল্যা, ইন্দ্রিয়-নিএহ, ধৈৰ্য্য, প্ৰিয়ভাবিতা, অকাৰ্য্য-নির্ভি, অচঞ্চলতা, অকাৰ্পণ্য, অক্ৰোধ, সম্ভোষ ও শ্ৰদ্ধালুতা থাকে, म्बर्धे महाश्रुक्रवरकरे नास्त वना यात्र। नास्त श्रुक्रव কাম, লোভ, দর্প, ক্রোধ, নিজা, প্লাঘা, অভিমান, वैश्री ও শোক, এ সকলের সেবা করেন না। অকূ-রভা, অশঠতা ও শুদ্ধতা, ইহাই দান্তের লক্ষণ। र भूक्व जालानुन, जन्मश्री, काम-ममरखत **অবিচিন্তনকারী ও সমুদ্রবৎ গম্ভীর হন, তিনিই দান্ত** বলিয়া পরিকীর্ত্তিত হন। স্কুচরিত্র, শীল-সম্পন্ন, क्षत्रज्ञाचा, जाज्ञज्ञ, विकानवान शूक्रव हेरलात्क সন্মান প্রাপ্ত হইয়া পরলোকে সক্ষতি লাভ করেন। আশিশ হইতে ধাঁহার ভয় নাই এবং প্রাণিগণেরও । খাঁহা হইতে ভয়ের সম্ভাবনা হয় না; বিনি সর্বা-পুরের হিজকারী ও বন্ধু, সেই পরিণত-বৃদ্ধি পুরুষই ्र**भूबद्धवाद्यम् विवास दिशाफ**्र इन । छाँहा हरेएठ व्याप महाराष्ट्रे छेएवन थाल रह ना। अकार शति-্রাক্তর বিষয় বিষয় প্রত্যাস করি হইয়া

বালার পারের। পূর্বা কালে নিক-লোক্রিমের
বর্জানি কর্মা কারা কারা আহার আচরণ করিয়া পাবর্জান কালে সাধুরা কারার আচরণ করিয়া পাকেন, তাহাই অবলয়ন করিয়া শম-পরায়ণ দার
পুরুষেরা আনন্দিত হন। অথবা জ্ঞানে তৃথ্য হওয়ায়
যে লিতেন্দ্রির পুরুষ নৈছর্ম্য অর্থাৎ কাম্য-কর্মাভাব
অবলয়ন-পূর্বাক মৃত্যুকাল প্রতীক্ষা করিয়া লোকে
বিচরণ করেন, তিনি ব্রক্ষত্ব লাভের উপযুক্ত হন।
গগণে বিহঙ্গগণের সঞ্চরণ-মার্গ বেমন উপলব্ধ হয়
না, সেইবাপ প্রজ্ঞান-তৃথ্য মুনির বর্ম্মও দৃষ্ট হইবার
নহে। অথবা যিনি গৃহ পরিত্যাগ-পূর্বাক সয়্মাসধর্মেতেই অভিমনন করেন, স্বর্গলোকে ভাঁহার
লাম্মত তেলামর লোক-সমস্ত কল্পিত হয়।

বিছুর-বাক্যে ত্রিব**টি**তম অধ্যায় সমাপ্ত । ৬৩ ।

বিছুর কহিলেন, হে তাত! প্রাচীন লোকদিগের নিকটে ভানতে পাই, কোন পক্ষিহন্তা পক্ষি ধরি-বার উদ্দেশে ভূমিতে পাশ-বোজনা করিরাছিল। ভাহাতে ছুইটি সহচারী রুদ্ধ পক্ষী যুগপৎ পত্তিত र्रुया मार्च भाग धर्ग-भूक्षक উভয়েই আকাশে উড্ডীন হইল। তথন শাকুনিক তাহাদিগকে প্ৰগণা-ক্রান্ত দেখিয়া বিশেষ নির্বেদ-যুক্ত না হইস্নাই ভা-হাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিল। মৃগযু শকুনাৰ্থী হইয়া সেইৰূপে অমুধাৰৰ কন্নিভেছে, এমন সময়ে, আহ্নিক ক্রিয়া সমাপনাত্তে আঞ্জম-স্থিত কোন মুনি তাহাকে দেখিতে পাইকেন। হে ভারত ! তথন সেই মুনি, ভূচর হইয়াও অন্তরীক্ষ্যর বিহঙ্গ-যুগলের সত্তর অনুসরণকারী ঐ ব্যাধকে এই ভাবের এক ল্লোক-ঘারা জিজ্ঞাসিলেন " অহে শাকু-নিক! তুমি পদ-সঞ্চারী হইয়াও উড্ডীয়মান বিষয়ে-যুগদের বে অনুসরণ করিতেছ, ইছা আমার ক্রিড-্রায় আক্রর্যোর বিষয় বোধ **ক্ইভেছে।**

ু শাকুনিক কহিল, ইহারা উভরে মিলিও হুইরা

ক্ষামার পাশ হরণ করিছেছে, কিন্তু যেখানে পর-পার বিবাদ করিবে সেই খানেই আমার বশবর্তী হইবে।

্বিছুর কহিলেন, সেই কালএন্ত স্বত্নপুঁদ্ধি পক্ষিত্বর পুরুষাৎ বিবাদ প্রাপ্ত হুইল এবং পরস্পার বিগ্রহ ক্রিয়া ভূতলে পড়িল। তথন ব্যাধ সেই কাল-পাশ-বশারুগামী বিহঙ্গদিগকে কুন্ধ ও যুদ্ধ-প্রহৃত দেখিয়া অক্তাতসারে নিকটে গমন-পূর্বাক গ্রহণ করিল। এইৰপে যে সকল জ্ঞাতিগণ অৰ্থ নিমিত্ত পরস্পর বিগ্রহ করে, তাহারা ঐ বিবাদকারী শকুন-দ্বয়ের নার শক্তর বশবর্তী হয়। একত্র আহার বিহার, ममानाभ, कार्याकार्यात जिल्लामा ও मिनन, এই সকলই জ্ঞাতির কার্যা, বিরোধ করা কদাচ কর্তব্য নহে। যে সকল জ্ঞাতি পরস্পর স্থমনা হইয়া যথা-কালে র্দ্ধগণের উপাসনা করে, তাহারা সিংহ-রক্ষিত অরণ্যের ন্যায় অধর্ষণীয় হয়। হে ভরতর্বভ! য়াহারা প্রভৃত অর্থ লাভ করিয়াও সতত দীনের ন্যার অবস্থান করে, তাহারা শত্রুগণ-হস্তে শ্রীসম্প্র-দান করে। হে ধৃতরাষ্ট্র! জ্ঞাতিগণ দগ্ধকার্চের ন্যার পৃথক্ পৃথক্ হইলে ধুমায়িত হয়, আর সমবেত হইলেই প্রস্থালিত হইরা থাকে। হে কুরু-নন্দন! আমি পর্বতে বেরপ দৃটি করিয়াছিলাম, সেই আর একটি বিষয় বলিতেছি, তাহাও অবণ করিয়া বাহা জ্বের বোধ হয় করুন। কোন সময়ে আমরা কিরাত-शव **अवर मद्ञो**व्धि-विमा, क्रक-विमा ও ধাতু-বিষ্যান্ত্র অভিজ্ঞ দেবকণ্প ত্রাহ্মণগণের সহিত মিলিত হটুয়া মিল্ক-গল্পব্ৰ-সেবিত, ওবধি-নিচয়ে উদ্ভাসমান, নৰ্জন্তিক লডাপরিকীর্ণ হওয়ায় কুঞ্চের ন্যায় প্রতীয়-मान केन्द्र भित्रि भक्तभारत भगन कतिहाहिलाम। उद्योद्ध (विश्वास, विश्वस मझ्ळाशांक वर्षार शर्क-एकत व्यवस्था अक्षात्र अधार प्रतियो क्षात्र क्षात्र विश्व कि क्षात्र क পরিমিত, পীকার্থ, সামকিকা-সমূত মধু অর্থাৎ অমৃত রহিয়াছে। ঐ বধু কুবেরের জভান্ত প্রির, একঃ क की का जीवित-नक्तक कारा उक्ता निवरकर ।

पात्रामित्त्रज्ञ त्रविचाहात्री जरे क्रूक विकासक वाकारवता करितन त्व, वे मधु भान कतिता उच्छ मत्रवधर्मभीन रहेजां प्रमात् बाल रहा, प्रा ব্যক্তিও লোচন লাভ করে এবং র্ক্কও যুবা হইয়া পাকে। অনন্তর কিরাতেরা তাহা অবলোকন করি-য়া গ্রহণে অভিলাষ করত সেই দর্গ-সন্কুল বিষয় গিরি-গহ্বরে বিন্ট হইল। হে মহীপতে। আপন-কার এই পুত্রটিও সেইৰূপ একাকী পৃথিবী ইচ্ছা করিতেছেন; ইনি মোহ-প্রযুক্ত কেবল মধুই দেখি-তেছেন, কিন্তু পরে যে প্রপাত আছে, তাহা আর দেখিতে পাইতেছেন না। ছুর্য্যোধন সমরে সব্য-সাচীর সহিত সংগ্রাম-কামনা করিতেছেন বটে, কিন্তু আমি ইহাঁর তাদৃশ তেজ বা বিক্রম কিছুই দেখিতে পাই না। অর্জুন এক রথে পৃথিবী জয় করিয়াছিলের এবং বিরাট-নগরে সাধুষায়ী অর্থাৎ বছল সৈন্য-সামন্ত সমভিব্যাহারে যুদ্ধ-যাত্রাকারী ভীয় দ্রোণ প্রভৃতিকে সন্ত্রন্ত ও ভগ্ন করিয়া দিয়াছি-লেন; সে স্থলে আপনকার কি হইয়াছিল, দেখুন! সেই মহাবীর কেবল আপনকার মুখ প্রতীক্ষা করি-রাই ক্ষমা করিতেছেন; কিন্তু সমাক্-রূপে কুন্ধ हरेल महे धनक्षा वदः फ्रियन ও मरमात्राक ममस्त সমীরণ-যুক্ত হুতাশনের ন্যায় কিছুই আর অবশিষ্ট রাখিবেন না। অতএব হে ধৃত্রাষ্ট্র ! রাজা যুধিষ্টির-কে ক্রোড়গত করুন; কেন না যুদ্ধে প্রবৃদ্ধ হইলে উভয় পক্ষেরই একান্ত জন্ন হয় না।

বিছুর-বাক্যে চতুংবটিতম অধ্যায় ::

• সমাপ্ত ॥ ৬৪ ॥

And Andrew State of Marketine State of Marketine State of State of

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, বংস দুর্যোধন ! আমি তো মাকে যে কথা বলিতেছি, তাহা বিশেব ক্রপে বেলে গ্রাম কর । অনভিজ্ঞ পথিকের নার ভূকি ক্রেলে উৎপথকেই পথ বিবেচনা করিছেছ : ক্রেছের ক্রেল বোক্থারী পঞ্চ মহাস্ক্রের নার পঞ্চ পাঞ্চরত

তেজোহরণে অভিলাষী হইতেছ। তুমি পরমগতি অর্থাৎ মৃত্যুর প্রতীক্ষা না করিয়া আর ইহলোকে পরম ধর্মনিষ্ঠ কুন্ডী-নন্দন যুধিষ্ঠিরকে জয় করিতে পার না। র্ক্ষ যেমন মহাবায়ুকে পরাভূত করি-বার আশংসা করে, সেইৰূপ তুমি অনুপম-বলশালী রণান্তকারী ভীমদেনকে প্রাত্ত করিবার আশংসা করিতেছ। ভূধর-নিকর-মধ্যে স্থমেরুর ন্যায় সকল শস্ত্রধারি শ্রেষ্ঠ গাভীবধন্বা ধনঞ্জুরের সহিত কোন্ বুজিমান মানব যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হয়? পঞ্চোল-কুমার ধৃউছামই বা অশনি-নিক্ষেপকারী পুরন্দরের ন্যায়, শত্রু-মধ্যে শর-সমূহ নিক্ষিপ্ত করত কোন্ ব্যক্তিকে অদ্য নিপাতিত করিতে না পারেন? অন্ধক ও রুঞ্চি-বংশে সমাদৃত, পাণ্ডব-হিতকার্য্যে নিরত, সমরছুর্দ্ধর্ব সাত্যাকিও তোমার সৈন্যঞ্চ্স করিবেন। গৌরব ও উৎকর্ষের ভুলীতায় যিনি লোকত্রর অতিক্রম করেন, সেই পুগুরীকাক্ষ রুফের সহিত কোন বুদ্ধিমান মানব যুদ্ধ করিতে উৎসাহী হইবে ? তাঁহার কলত্র, জ্ঞাতি, বান্ধব, আত্মা ও এই পৃথিবী-রাজ্য এক দিকে, আর ধনঞ্জয় এক দিকে। অৰ্জুন যাঁহাতে বন্ধভাব হইয়াছেন, সেই বাস্থদেবও ছুর্দ্ধর্য এবং কেশব যাহাতে অবস্থিতি করিতেছেন, সেই সৈন্যও সমস্ত পৃথিবীর অবিষয়। অতএব হে তাত! হিত্রবাদী সাধু স্বন্থদাণের বাক্যে আস্থা কর;—শান্তমুতনয় রুদ্ধ পিতামহ ভীমের বাক্য গ্রহণ কর। আমি যাহা বলিতেছি এবং কুরু-গণের হিতদর্শী দ্রোণ, রূপ, বিকর্ণ ও মহারাজ বাহ্লিক যাহা বলেন, তাহাও মনোবোগ-পূর্বাক শুন। হে ভারত! ইহঁরাও আমার তুলা; তুমি আমাকে যে ৰূপ মান্য কর, ইহাঁদিগকেও সেইৰূপ মান্য করিবে; যেহেতু ইহাঁরা সকলেই ধর্মজ্ঞ এবং সমান স্নেহ-যুক্ত। বিরাট নগরে তোমার ভাতৃবর্গের সহিত সৈন্যগণ অতিমাত্র ভীত হইয়া তোমার সম্মুখে গো-সমস্ত পরিত্যাগ-পূর্বক সেই যে পলায়ন করিরাছিল এবং ঐ নগরে একের ও অনেকের[া] বাস্তদেবের মুখাবলোকন-পূর্বক এই ধর্মার্থ-যুক্ত

মধ্যে সেই যে মহা অদুত-ব্যাপার হইয়াছিল এবণ করা যায়, তাহাই ইহার যথেফ নিদর্শন। অর্জ্জুন একাকী যথন সেইৰূপ করিয়াছিল, তথন সকলে মিলিত হইয়া যে করিবে তাহাতে আর সন্দেহ কি ? অতএব তুমি তাহাদিগকে যথার্থ ভ্রাতৃভাবে গ্রহণ কর এবং ভরণীয় বোধে পরিপালন কর। ধৃতরাষ্ট্র-বাক্যে পঞ্চ ষষ্টিতম অধ্যায়

ममाखा । ५०॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, মহাপ্রাক্ত মহাভাগ ধৃত-রাষ্ট্র ছর্যোধনকে এই কথা বলিয়া পুনরায় সঞ্জরকে জিজ্ঞাসিলেন, হে সঞ্জয়! বাস্কুদেবের পর অর্জুন অবশিষ্ট যে কিছু বলিয়াছিলেন, তাহা ব্যক্ত কর; যেহেতু শুনিতে আমার অত্যন্ত কৌতূহল হইতেছে। সঞ্জয় কহিলেন, কুন্তীপুত্র ছুর্দ্ধর্ষ ধনপ্রয় বাস্ত্র-দেবের বাক্য শ্রবণ করিয়া অবসর প্রাপ্তে তাঁহার শ্রুতিগোচরেই আমাকে বলিতে লাগিলেন, " হে সঞ্জয়! তুমি পিতামহ শান্তনু-তনয় ভীন্ন, গৃতরাষ্ট্র, দ্রোণ, রূপ, কর্ণ, মহারাজ বাহ্লিক, অশ্বত্থামা, সোম-দন্ত, স্থবল-পুত্র শকুনি, ছুঃশাসন, শল, পুরুমিত্র, বিবিংশতি, বিকর্ণ, চিত্রসেন, জয়ৎসেন, অবস্থিপতি বিন্দ ও অনুবিন্দ, কুরুবংশীয় ছুর্মুখ,জয়দ্রথ, ছুঃসহ, **ভূরিশ্রবা, ভগদত্ত, জলসন্ধ এবং পাণ্ডবানলে হব**-নাৰ্থে ছুৰ্য্যোধন-কৰ্তৃক সমানীত যে সমস্ত মুমূৰ্যু ভূ-পতিগণ কৌরবদিগের প্রিয়-সাধন নিমিত্ত যুদ্ধার্থে সমাগত হইয়াছে, সকলকেই আমার বাক্যানুসারে কুশল-প্রশ্ন ও বন্দনা করিবে, পরে পাপকারিগণের অগ্রপণ্য স্কুযোধনকে নৃপতিবর্গ-মধ্যে এই কথা বলিবে। হে সঞ্জয়! সেই অমর্যণ, চুর্মাতি, পাপাত্মা, অতিলুক রাজপুত্র ছুর্য্যোধন যাহাতে অমাতাগণের সহিত আমার এই সমগ্র বাক্য শুনিতে পায় তাহা করিও! লোঁহিত-প্রান্ত-স্থারীর্য-নেত্রযুক্ত ধীমান্ ধন-ঞ্জর আমাকে এইৰপে বচন-বন্ধ করিয়া পরিশেষে

বাক্যের উক্তি করিলেন। " তুমিঁ মধুপ্রবীর বাগ্মী
মহাত্মা মধুস্থানের সমাধানযুক্ত যেরূপ বাক্য প্রবণ
করিলে, সমাগত ক্ষিতিপালগণ-মধ্যে আমারও সেই
রূপ বাক্যই কহিবে। তন্মধ্যে এই একটি কথা বিশেষ করিয়া বলিবে যে, হে ভূপালগণ! যাহাতে
মহাসমর-যক্তে অন্তবলাপহারী শরাসন-রূপ ক্রুবদারা রথবায়ু-সমুদ্ধত মহাশরানলে হোমকার্য্য সম্পন্ন
করিতে না হয়, তোমরা সকলে সমবেত হইয়া আদর-পূর্বক তদ্বিষয়ে সবিশেষ যত্মপরায়ণ হও। যদি
তোমরা শক্রঘাতী যুধিষ্ঠিরের প্রার্থিত স্বকীয় অংশ
প্রদান না কর, তাহা হইলে আমি নিশিত শর-সমূহ
সহকারে অন্ধ, পদাতি ও কুঞ্জরগণের সহিত তোমাদিগকে পিতৃগণের অশিব দিন্ডাগে লইয়া যাইব।"

হে অমরকণ্প মহারাজ! তদনন্তর আমি বিদায়-কাল-সমুচিত সম্ভাষণ-পূর্ব্বক চতুর্ভুক্ত হরি ও ধন-ঞ্জয়কে নমস্কার করিয়া আপনকার নিকটে সেই উদার-বাক্য আনয়ন করিবার নিমিত্ত সত্ত্বর হইয়া বেগে এস্থানে উপস্থিত হইলাম।

> সঞ্জয়-বাক্যে ষট্যফিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৬৬॥

> > -----

বৈশস্পায়ন কহিলেন, ধৃতরাষ্ট্র-তনয় ছুর্য্যোধন
সঞ্চয়ের সেই বাক্যে অনাদর করিলে এবং সকলেই
নিস্তক্ষ হইলে সভাস্থ রাজগণ গাত্রোপান করিলেন।
মহারাজ! পৃথিবীস্থ সকল ভূপালগণ উপিত হইলে
পুত্রবশাস্থগামী রাজা ধৃতরাষ্ট্র তাঁহাদিগের বিজয়
প্রার্থনা করত আপনার, পাগুবগণের ও অপর সকলের কিরপ নিশ্বর, তাহা নির্জ্ঞানে সঞ্চয়কে জিজ্ঞানিতে আরম্ভ করিলেন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয় ! আমাদিগের নিজ সেনা-মধ্যে যে কিছু সার অসার আছে তাহা বল। অপিচ ভুমি পাণ্ডবদিগেরও সমস্ত র্বভাস্ত বিশেষ ৰূপে অবগত আছ ; অতএব ভাহাদিগের কি শ্রেষ্ঠ,

উভয় পক্ষেরই সারবেন্তা, সর্বদর্শী, ধর্মার্থ বিষয়ে স্থানিপুণ ও নিশ্চয়জ্ঞ; এই নিমিন্তই তোমাকে জি-জ্ঞাসা করিতেছি, ভূমি সমুদায় প্রকাশ করিয়া বল। যুদ্ধে প্রয়ন্ত হইলে কোন্ পক্ষ বিনফ হইবে ?

সঞ্জয় কহিলেন, হে রাজন ! আমি নির্জ্জনে আপনাকে কদাচ কোন কথা বলিব না, কেননা তাহাতে
আপনি অস্থ্য়াবিউ হইবেন ; অতএব মহাত্রতনিষ্ঠ
পিতা ব্যাসদেবকে,এবং মহিষী গান্ধারীকে আনয়ন
করুন। তাঁহারা ধর্মজ্ঞ, নিপুণ ও নিশ্চয়াভিজ্ঞ ;
স্থতরাং আপনকার অস্থ্যার অপনয়ন করিতে
পারিবেন। হে নরেন্দ্র । তাঁহাদিগের সন্নিধানেই
আমি কেশব ও পার্থের সম্পূর্ণ অভিপ্রায় বাক্ত

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, এইৰপে উক্ত হইয়া ধৃত-রাষ্ট্র বিছুর-দ্বারা গান্ধারী ও ব্যাসদেবকে আনয়ন করাইলেন এবং তাঁহারাও আসিয়া শীঘ্র সভাপ্রবেশ করিলেন। অনন্তর মহাপ্রাক্ত ক্ষণ্ট্রপায়ন, সঞ্জয়ের ও আত্মজ্ঞ ধৃতরাষ্ট্রের সেই মত জানিয়া তাহাতে অমুমোদন-পূর্বেক কহিলেন, সঞ্জয়! ইনি তোমাকে যে কথা জিজ্ঞাসা করিতেছেন,—তুমি বাসুদেব ও অর্জুন-বিষয়ক যে কিছু তথা জান, এই জিজ্ঞাস্থ ধৃতরাষ্ট্র-সনিধানে তৎসমুদায় যথাবৎ ব্যক্ত কর

ব্যাস-বাক্যে সপ্তধা্টিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৬৭

সঞ্জয় কহিলেন, পরম পূজিত ধয়ুর্জারী বাস্থদেব ও অর্জুন সর্বসংহারার্থে সমত হইয়া ইচ্ছায়ুসারে অন্যত্র অর্থাৎ বদরিকাশ্রম হইতে ভারতবর্ষে উৎ-পন্ন হইয়াছেন। হে বিভো! মনস্বী বাস্থদেবের সেই কামরূপী চক্র পঞ্চহস্ত-পরিমিত স্থান ব্যাপ্ত করিয়া তুর্লক্যরূপে বর্জমান রহিয়াছে। ভেজঃপুঞ্জে অবভাসিত সেই চক্র কৌরবদিপের প্রতি অপ্রকাশ্য ভাবে অবস্থিত আছে। পাগুবগণের সার বল ও অসার বল জানিবার নিমিত্তে তাহাই উত্তম প্রমাণ।

মহাবল মাধব যেন ক্রীড়া করিতে করিতে ঘোর-ৰূপ নরক, শ্যুর, কংস ও চেদিপতি শিশুপালকে জন্ন করিয়াছিলেন। ঐশ্বর্যাবান্ বিশিফীত্মা পুরু-বোত্তম পৃথিবী, অন্তরীক্ষ ও স্বর্গকে মানস মাত্রেই আত্মবশে আনয়ন করিতে পারেন। হে রাজন্! আপনি যে সারাসার বল জানিবার নিমিত্ত পুনঃ-পুন পাগুবদিগের কথা জিজ্ঞাসা করিতেছেন, তাহা मःकिर्प व्यवग करून। यमि नमस क्रगर এक দিকে, আর জনার্দ্দন এক দিকে থাকেন, তথাপি সারাংশে জনার্দ্দন সম্পূর্ণ জগৎ অপেক্ষা অতিরিক্ত হন। জনাৰ্দ্দন সংকল্প মাত্ৰেই এই জগৎকে ভস্ম করিতে পারেন, কিন্তু তাঁহাকে ভন্ম করিতে সম্পূর্ণ জগৎও সমর্থ হয় না। যেখানে সত্য, যেখানে ধর্ম, যেখানে লজ্জা, যেখানে সরলতা, সেই খানেই গো-বিন্দ অবস্থান করেন; যে পক্ষে ক্লফ বাঁকেন, সেই পক্ষেই জয় হয়। সর্বভূতের অন্তরাত্মা পুরুষোত্তম জনার্দ্দন যেন লীলা করিতে করিতে পৃথিবী, অন্ত-রীক্ষ ও স্বর্গকে পরিচালিত করিতেছেন। বোধ হয়, তিনি লোকের সমাক্ মোহোৎপাদন করিবার অভিপ্রায়ে পাগুর্বদিগকে ব্যাজমাত্র করিয়া, আপন-কার অধর্ম-নিরত মৃঢ় পুত্রদিগের দহনেচ্ছু হইতে-ছেন। ভগবান কেশব চৈতন্য-যোগে কালচক্র, জগচ্চক্র ও কর্মাচক্র সুমস্ত নিরস্তর পরিবর্ত্তিত করি-তেছেন। আমি আপনাকে ইহা সত্য বলিতেছি, সেই একমাত্র ভগবান, কালের, মৃত্যুর ও স্থাবর-জঙ্গমাত্মক সমস্ত বিশ্বের উপরে প্রভুত্ব করিতে-ছেন। মহাযোগী কেশব হরি সকল জগতের প্রভু হইয়াও ছুর্বল দরিদ্রের ন্যায় কর্ম্ম করিতে আরম্ভ করেন এবং সেই মায়াযোগ-দারা লোক সকলকে বঞ্চিত করেন। যে সমস্ত মানব তাঁহার যথার্থ স্বৰূপ গ্রহণ করেন, ভাঁহারা আর বিষুগ্ধ হন না।

সঞ্জয়-বাক্যে অফ্রবটিতস অধ্যায়
সমাপ্ত । ৬৮ ।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয় ! তুমি মাধবকে কি প্রকারে সর্বলোক-মহেশ্বর বলিয়া জানিলে এবং আমিই বা কি নিমিন্ত তাঁহাকে জানিতে পারি না তাহা আমারে বল।

সঞ্জয় কহিলেন, রাজন্! তাহার কারণ শ্রবণ করুন। আপনকার বিদ্যা নাই, কিন্তু আমার বিদ্যার হানি হয় নাই; যে ব্যক্তি বিদ্যাহীন ও তমে। ধস্ত হয় অর্থাৎ "তত্ত্বমিন শ্বেতকেতাে শ প্রভৃতি বেদ্মপ্রতিপাদক বাক্য-সকলের তাৎপর্যাগ্রহ না হওয়ায় অজ্ঞান-প্রযুক্ত নির্বিষয়ানন্দমাত্র স্বস্থনপ হইতি পরিভ্রফ হয়, সে কেশবকে জানিতে পারে না। হে তাত! আমি বিদ্যা-দারা সেই মধুস্থদনকে ত্রিযুগ, (স্থূল স্কন্ম ও কারণ-শরীরযুক্ত) কর্তা অথচ স্বয়ং অক্ত, ক্রীড়াকর ও সর্বাভূতের উৎপত্তি-বিনাশ-হেতু বলিয়া জানিতেছি।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্জয়! জনার্দ্ধনের প্রতি তোমার যে নিত্যকাল অধিক ভক্তি রহিয়াছে, সেটি কিৰূপ, যদ্ধারা তুমি তাঁহাকে ত্রিযুগ বলিয়া জানি-তেছ?

সঞ্জয় কহিলেন, আপনকার মঙ্গল হউক, আমি জ্রীপুত্রাদি-ৰূপে পরিণতা অবিদ্যা বা কাপট্যের সেবা করি না এবং ঈশ্বরে সমর্পণ-ব্যতিরেকে অনর্থক ধর্মাচরণেও আমার প্রবৃত্তি হয় না; কেবল ভক্তি-যোগে শুদ্ধভাব প্রাপ্ত অর্থাৎ রাগদ্বেবাদি-রহিত হইয়া শাস্ত্র হইতে জনার্দ্ধনকে জানিতেছি।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, তুর্য্যোধন! হৃষীকেশ জনার্দন-কে আশ্রয় কর! হে তাত! সঞ্জয় আমাদিগের অত্যন্ত বিশ্বাসপাত্র; অতএব ইহাঁর কথাক্রমে তুমি কেশবের শরণাপন্ন হও!

ছুর্য্যোধন কহিলেন, দেবকী-পুক্ত ভগবান কেশব যদি অর্জুনের সহিত মিত্রতা স্বীকার করত সমস্ত লোক সংহার করেন, তথাপি আমি এক্ষণে তাঁহাকে প্রাপ্ত হইতে পারি না।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে গান্ধারি! তোমার এই

ঈর্ষাযুক্ত, ছুরাত্মা, অভিমানী, হিতকারিদিগের বচ-নাতিবর্ত্তী, স্বত্নর্শ্বতি পুত্র কেবল অধঃপতিত হই-তেছে।

গান্ধারী কহিলেন, রে ঐশ্বর্যকাম! রে ছুরাত্মন্! রে মূর্থ! তুমি রুদ্ধগণের শাসনাতিগামী হইয়া পিতাকে ও আমাকে পরিত্যাগ করিয়া এবং ঐশ্বর্য্যে ও জীবনে জলাঞ্জলি দিয়া শক্রদিগের প্রীতিবর্দ্ধন ও আমার শোক-সম্বর্দ্ধন করত যথন ভীমসেন-কর্তৃক নিপাতিত হইবে, তথনই পিতার বাক্য শ্বরণ করিবে।

ব্যাস কহিলেন, রাজন্ ধৃতরাষ্ট্র! আমি তোমাকে যাহা বলিতেছি শ্রবণ কর। তুমি ক্লের প্রিয়পাত্র; সঞ্জয় যখন তোমার দৃত হইয়াছেন, তখন অবশ্যই ইনি ভোমাকে কল্যাণে নিয়োজিত করিবেন। ইনি সনাতন পরাৎপর হৃষীকেশকে বিশেষ-ৰূপে জানেন; অতএব তুমি একাগ্র হইয়া অবণ-পরায়ণ হইলে তোমাকে মহাভয় হইতে মুক্ত করিবেন। হে বৈচিত্রবীর্য্য ! মন্তুষ্যেরা ক্রোধ ও হর্ষ-দারা সমা-রুত হইয়া বহুতর পাশে আবদ্ধ রহিয়াছে; যাহারা স্বৰ্কীয় ধন-সমূহে ভুষ্ট না হয়, সেই কাম-মোহিত পুরুষেরা অন্ধ-কর্তৃক নীয়মান অন্ধ-সকলের ন্যায় স্ব স্ব কর্ম-দারা বারংবার ক্রতান্তের বশীভূত হয়। যদ্ধারা মনীধী সাধুগণ গমন করেন, তাহাই এক মাত্র ব্রহ্মপ্রাপক পথ; মহান্ পুরুষ সেই পথ দৃষ্টি করিয়া মৃত্যুতে আর আসক্ত হন না, অনায়াসেই তাহা অতিক্রম করেন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, তাত সঞ্জয়! যাহাতে কিছুমাত্র ভারের সম্ভাবনা নাই,—যদ্ধারা কেশবের সন্নিহিত হইয়া আমি উত্তমা-সিদ্ধি প্রাপ্ত হইতে পারি, সেই পথ আমারে বল!

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! অরুতাত্মা পুরুষ কথন রুষ্টাত্মা জনার্দনকে জানিতে পারে না; আত্ম-ক্রিয়ার উপায়ও ইন্সিয়-নিগ্রহ ভিন্ন আর কিছুই নাই। উদ্ধৃত ইন্সিয়-বর্গের কাম-ত্যাগ, অর্থাৎ যে

কামনায় তৎসমুদায় নিয়েজিত হয় তাহার নির্ন্তি, কেবল অপ্রমাদ-প্রযুক্তই হইয়া থাকে। অপ্রমাদ ও হিংসা-রাহিত্য, এই ছুইটিই জ্ঞানের উৎপত্তি-স্থান, সন্দেহ নাই। অতএব হে রাজন্! আপনি নিরালস্য হইয়া ইন্দ্রিয়-সংযমে ষত্র করুন; আপন-কার বুদ্ধি যেন তত্ত্ব হইতে পরিভ্রেফ্ট না হয়; উহা-কে নানাপ্রকার বিষয়-মার্গে সঞ্চরণ হইতে নির্ত্ত করুন। বিপ্রেরা ইন্দ্রিয়-সংযমকেই নিশ্চল জ্ঞান বলিয়া বর্ণন করেন। ইহাই জ্ঞান এবং মনীধীরা যে পথে গমন করেন, ইহাই সেই পথ। হে রাজন্! অজিতেন্দ্রিয় মনুষ্যেরা কেশবকে প্রাপ্ত হইতে পারে না; বশী অর্থাৎ জিতেন্দ্রিয় পুরুষই আগম-লক্ক যোগ প্রভাবে তদীয় তত্ত্বজ্ঞানে সমর্থ হন

সঞ্জয়-বাক্যে একোন সপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৬৯॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! আমি জিজ্ঞাসা করি-তেছি, তুমি পুনরায় আমাকে পুগুরীকাক্ষের কথা বল। হে তাত! নামকর্মের অর্থক্ত হইলে আমি সেই পুরুষোত্তমকে প্রাপ্ত হইতে পারিব।

সঞ্জয় কহিলেন, আমি যে পরিমাণে শারণ করিতে পারি, সেই পরিমাণে বাস্থদেবের শুভনামার্থ শ্রবণ করিয়াছি, কেননা কেশব অপ্রমেয়; বাক্য-ছারা তাঁহার পরিমাণ করা যায় না। সর্বভূতের বসন অর্থাৎ মায়া-ছারা আবরণ-হেতুক, বস্তুত্ব অর্থাৎ তেজাময়য়্ব-হেতুক এবং দেবগণের কারণম্ব-হেতুক তিনি বাস্থদেব বলিয়া বেদ্য হন এবং ব্যাপকয়্ব-প্রযুক্ত বিষ্ণু-শব্দে উক্ত হইয়া থাকেন। হে ভারত! তিনি মুনির কর্মা তত্বালোচন, নিশ্চিত-তত্ত্বে চিত্তের প্রণিধান ও তাহার নিরোধ-হেতু, মা (আত্মার উপাধিভূতা বুদ্ধিরভিকে) ধবন (দ্রীকরণ) করেন, এই নিমিত্তে তাঁহাকে মাধব বলিয়া জানিবেন। তিনি মধুনামক দৈত্যের এবং মধুশন্ধবাচ্য পৃথি-ব্যাদি চতুর্বিংশতি তত্ত্বের সংহার-স্থান হইয়াছেন

ৰলিয়া মধুস্থদন নামে কীৰ্ভিত হন। ক্ৰবি শব্দ সত্তা-। মাত্র বাচক, আর ণ শব্দ স্থখ-বাচক, এই উভয় শব্দের 'সন্ধাত্রানন্দৰপত্ত্ব এই প্রকার ভাবার্থ-**ংবাংগ যতুকুল-সভূত কৃষ্ণ কৃষ্ণ** নাম প্রাপ্ত হইয়া-**ছেন। পুগুরীক শব্দে তাঁহার পরম ধাম অর্থা**ং স্বৰূপ প্ৰতিপন্ন হয়; ঐ ধাম নিত্য, অক্ষয় ও অবায়; অক্ষর-পুগুরীক-ৰূপত্ব-হেতু তিনি পুগুরীকাক্ষ এবং দস্থাজনের আসোৎপাদন অর্থাৎ অর্দন করেন বলি-রা জনার্দন হইরাছেন। যেহেতু সত্ত্তণ তাঁহা হই-তে পরিচ্যুত হয় না এবং তিনিও সত্ত্ব হইতে পরি-ভ্ৰষ্ট হন না, এই নিমিত্তই ভাঁহার নাম সাভ্ৰত **হইয়াছে। বৃষ শব্দে ধর্ম্ম আর ভা শব্দে** দীপ্তি বুঝায় ; রুষের ভা যাহা হইতে হয়, এই অর্থে ১ুষ্ড শব্দ দ্বারা বেদ প্রতিপন্ন হয়; রুষভ খাঁহার ঈক্ষণ অর্থাৎ চক্ষুর ন্যায় বিজ্ঞাপক হয়, ভাঁহান্তক রুষভেক্ষণ वना यात्र । कृष्य विनर्दना श्रूस्य, এकात्र । वृष्टज्यन **নাম প্রাপ্ত হইয়াছেন। সমর**-বিজয়া কেশব জন-রিতা দারা জন্মগ্রহণ করেন না বলিয়া ভাঁহার অজ नाम इहेशाटह। नाम भटक नमभानी आह छेन्द्र শব্দে উৎকৃষ্ট ৰূপে প্ৰকাশমান বুঝায়; বিভু মগ্ন-স্থদন দমশালী এবং ইন্দ্রিরণ মধ্যে স্বরং প্রকাশ-মান বলিয়া দামোদর নাম ধারণ করেন। যদ্দর হর্ষাম্বিত হওয়া যায়, এই অথে হৃষীক শব্দ প্রতিপন্ন হয়। ইহার অর্থ স্বৰূপানন্দ এবং ঈশ শন্দের অর্থ **ঐশ্ব্যাবান্; ক্লফের হর্ষ, সুখ** ও ঐশ্ব্যা আছে **ৰলিয়া তিনি ক্ষীকেশ সংজ্ঞা প্ৰাপ্ত হ**ইয়াছেন এবং ৰাছ-যুগল-ছারা স্বর্গ ও পৃথিবী ধীরণ করার মহা-ৰাছ বলিয়া শৃত হইয়াছেন। অধঃপ্রদেশে তাঁহার কদাচ ক্ষয় হয় না অর্থাৎ সতত উদ্ধ-ৰূপতা-প্রযুক্ত তিনি সংসার ধর্মে কখন লিপ্ত হন না, একারণ অধোক্ষজ এবং নরগণের অয়ন অর্থাৎ আতায় স্থান হেতুক নারায়ণ নামে কীর্ত্তিত হইয়াছেন। যিান পুরণ করেন, তাঁহাকে 'পুরু ব এবং খাঁহাতে অবসন্ন হর, ভাঁহাকে 'দ' বলা যায় ; এই ছুই শব্দের যোগে

পুरूष मक निष्णेस रहा; कृष्ण পূत्रन ও महन प्रारीष বিশ্বের স্থাটি ও সংহার করেন বলিয়া উদ্ভম পুরুষ হইয়াছেন, একারণ তাঁহার নাম পুরুষোভ্তম হই-য়াছে। তিনি সমস্ত কারণ ও কার্যোর উৎপত্তি-বিনাশ-হেতু হইয়াছেন এবং সর্বাদা সর্বা বিষয় জা-নিতেছেন, একারণ পণ্ডিতেরা তাঁহাকে সর্ব্ব বলিয়া উল্লেখ করেন। ক্লফ সত্যে প্রতিষ্ঠিত এবং সত্যও কুষ্ণে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে; গোবি**ন্দ সতা হইতেও** সভা, একারণ নামেতেও সভা হইয়াছেন। ভিনি বিক্রমণ-হেতুক বিফু, জয়ন-হেতুক জি**ফু, নিত্যতা**-হেতুক অনন্ত এবং গো অর্থাৎ গদ্যপদ্যাদি বাকোর পরিজ্ঞান-হেতুক গোবিন্দ নামে পরিকীর্জিত হন। তিনি নিধাাভূত বিশ্বপ্রপঞ্চকে স্বকীয় সন্তার স্কুর্তি প্রদান দারা সত্যের ন্যায় প্রতীয়মান করেন এবং তদ্বারা প্রজা সকলকে মোহিত করিয়া থাকেন। এবিষিধ ধর্মনিত্য মহাবাছ ভগবান্ মধুস্থদন অচ্যুত, কুরুকুলের বিনাশ না হয়, এ নিমিত্ত রূপা-প্রকাশার্থে আগমন করিবেন

> সঞ্জনবাক্যে সপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭০॥

গৃতরাই কহিলেন, হে সঞ্চর! পরম দেহ-ছারা উদ্ভাসমান ও দিহিদিক্ সমস্ত প্রকাশকারী বাস্থ-দেনকে যাহারা নিকটে দৃটি করিবে, সেই লোচন-যুক্ত ব্যক্তি সকলের ভাগোর প্রতি আমি স্পৃষ্টা করিতেছি। সমবেত কোরবেরা ভারতগণের পূজনীয়া স্থাজ্যদিগের কল্যানকরা ঐশ্বর্যকামী ব্যক্তিবর্গের গ্রহণীয়া মুমূর্ লোকদিগের অগ্রহণীয়া অনি-দেনীয়া বচনাবলির উজ্জিকারী, শত্রুগণের সংহার ক্ষোভোৎপাদন ও যশোনাশ-বিধারী, উদ্যমশালী, যাদবদিগের শ্রেষ্ঠ-প্রনেতা, অদ্বিতীয় র্ফিবীর, মহা-ছা রুফকে সন্দর্শন করিবে এবং সেই শত্রুছাতী বরেণ্য র্ফিসিংহও সদয়-বাক্য-ছারা মদীয় জনগণকে মোহিত করিবেন। আমি সেই সনাত্রনতম আছ-

ভত্ত্বজ্ঞ ঋষি, বাক্যের সমুদ্র, যতিগণের কলস অর্থাৎ
অনায়াস-লভ্য, শোভন পক্ষযুক্ত অরিউনেমি-নামা
গরুড়, প্রজাবর্গের সংহারক, ভুবনের আলয়, বিশ্বযোনি, অজ, নিভ্য, শ্রেষ্ঠ সকল হইতে শ্রেষ্ঠ, আদিমধ্য-চরম-খূন্য, অনস্তকীর্ডি, সহস্রদীর্ষ, পুরাণ পুরুষকে রক্ষক-কপে আশ্রয় করি! সেই ত্রৈলোক্য-নির্মাণকারী দেবাস্থরনাগরাক্ষসাদি ভূত-বর্গের জনরিভা, বিদ্যা-সম্পন্ন নরাধিপগণের শ্রেষ্ঠ, প্রাৎপর
ইন্দ্রামুজের শরণাপন্ন হই!

ধৃতরাষ্ট্র-বাক্যে যানসন্ধি প্রকরণ ও এক-সপ্রতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭১॥

ভগবদ্ধান প্রকরণ।

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, সঞ্জয় প্রতিগমন করিলে পর ধর্মরাজ যুখিন্ঠির যতুকুল-শ্রেষ্ঠ রুফকে বলিলেন, হে মিত্রবৎসল! মিত্রগণের মিত্রতা প্রকাশ করিবার এই এক উপযুক্ত সময় উপস্থিত; তোমা ভিন্ন আমি এমন কোন লোককেও দেখিতে পাই না যে ব্যক্তি আমাদিগকে উপস্থিত আপদ্ হইতে মুক্ত করিতে সমর্থ হয়। তোমাকে আশ্রম করিয়াই আমরা অকুতোভয়ে রুথাভিমানী স্থযোধন সমাপে স্বকীয় অংশ প্রাপ্তি নিমিত্ত অভিযোগ করিতে পারিব। হে অরিন্দম! সর্ব্ধ প্রকার আপদ্ সময়ে ভূমি রক্ষিবংশীয়গণের যেমন পরিত্রাণ করিয়া থাক, অধুনা পাশুবেরাও তোমার সেইরপ রক্ষণীয় হইবে; ভূমি এই মহাভয় হইতে আমাদিগকে রক্ষা কর।

ভগবান্ কহিলেন, হে মহাবাহো! এই আমি উপস্থিত আছি, যাহা বলিতে ইচ্ছা হয় বলুন। হে ভারত! আপনি আমাকে যে ৰূপ আজ্ঞা করিবেন, আমি নিঃসম্পেহ তাহাই সম্পাদন করিব।

যুধিন্তির কহিলেন, ধৃতরাষ্ট্র ও তাঁহার পুত্রের যে-রূপ অভিলবিত তাহা সকলই শুনিয়াছ; সঞ্জয় আসিয়া আমাকে যে কথাগুলি বলিলেন, তাহার আছুই ধৃতরাষ্ট্রের সম্বাতি-বাতীত নহে। সঞ্জয়কে

ধৃতরাষ্ট্রের আত্মা বলিলেই হয়, কেবল ু ভেদ মাত্র। বিশেষত দূতেরা প্রভুর নিদেশ বাক্যই অবি-কল ব্যক্ত করিয়া থাকে; তাহা না করিয়া অন্যথা-বাদী হইলে তাহারা বধ-যোগ্য হয়। ধৃতরাষ্ট্র অসম-দর্শিতা-প্রযুক্ত পাপমনা ও লোভ-পরতন্ত্র হইয়া আমাদিগকে রাজ্য প্রদান না করিয়াই শান্তি স্থাপ-নের বাঞ্ছা করিতেছেন'। হে প্রভাব-সম্পন্ন রুঞ্! ধৃতরাষ্ট্র আমাদিগের সেই প্রতিজ্ঞায় নিশ্চল থাকি-বেন ' এই মনে করিয়া আমরা যে তাঁহার আজ্ঞা-ক্রনে দ্বাদশ বর্ষ বনবাস এবং প্রচ্ছন্নবেশে এক বৎ-সর অজ্ঞাত বাস করিয়াছিলাম, কোনক্রমে প্রতিজ্ঞা উল্লঙ্ঘন করি নাই, তাহা আমাদিগের সমতি-ব্যাহারী ব্রাহ্মণেরাই অবগত আছেন। এক্ষণে রুদ্ধ-রাজ মন্দলোকের শাসনান্ত্বর্তী হইয়া পুত্র-স্নেহ-**বশত স্বধর্কে**র প্রতি দৃষ্টি করিতেছেন না। হে জনা-ৰ্দন! তিনি স্ববোধনের বশীভূত হইয়া আত্ম-হিত-কামনায় লোভ করত আমাদিগের প্রতি নিতান্ত মিথ্যাচরণ করিতেছেন। আমি যে জননীর এবং মিত্রগণের কোন মঙ্গল বিধানে অসমর্থ হইতেছি, ইহার পর আমার অধিক ছুংখের বিষয় আর কি হইতে পারে ? হে মরুস্থদন! কাশারাজ, চেদিপতি, পাঞ্চালেশ্বর, মংসাপাল ও তুমি আমার সহায় থা-কিতেও আমি পাঁচখানি গ্রামমাত্র প্রার্থনা করত অক্সরাজ-সমীপে এই রূপ নিবেদন করিয়াছিলাম " হে তাত! অবিস্থল, র্কস্থল, মাকন্দী, বারণাবত ও অপর কোন একটি বাসস্থান, এই পঞ্চ গ্রাম বা নগর আমাদিগকৈ প্রদান করুন, আমরা পঞ্চ সহো-দরে মিলিত হটয়া সেই সেই স্থলে বাস করিব ; ভরতবংশের ধংস হয়, ইহা কোন মতেই আমা-দিগের মতসিদ্ধ নহে; কিন্তু ছুফীত্মা ধৃতরাথ্র-তনয় আপনাতে স্বামিত্ব মানিয়া সেই পাঁচথানি গ্রাম প্রদান করিতেও সম্মৃত হয় না; ইহার পর অধিক ছুংখের বিষয় আর কি হইতে পারে!

হে কৃষ্ণা যে ব্যক্তি সংকুলে জাত ও জ্ঞান-

শিক্ষাদি-ছারা বর্দ্ধিত হইরা পর-ধন-লালসার লুজ হয়, তাহার সেই লোভই বুদ্ধিনাশের নিদান হয়; বৃদ্ধিনাশ হইলেই লক্ষা যায়; লক্ষা বিগতা হইয়া ধর্মকে নউ করে; ধর্ম বিনউ হইয়া একৈ হতঞী করেন; প্রী হতশ্রী হইয়াই পুরুষকে বধ করেন; ষেহেতু নির্ধনতাই পুরুষের মরণ। পক্ষিগণ যেমন পুষ্প-ফল-বিবজ্ঞিত তরুবর হইতে অপহত হয়, জ্ঞাতি, স্থহদ্ও ব্রাহ্মণেরাও নির্ধন ব্যক্তিকে সেই-ৰূপ পরিত্যাগ করিয়া যান। হেঁ তাত! প্রাণ বায়ু যেমন মৃত ব্যক্তিকে পরিত্যাগ করে, সেইৰপ জ্ঞাতিগণ আমারে পতিতের ন্যায় বোধ করিয়া ষে পরিত্যাগ করিবেন, ইহাই আমার মৃত্যু। শম্বর कहिशाहित्नन, य व्यवश्वांत्र 'व्यमा शृंदर व्यव्न नारे, कमा कि रहेर्दा ! मर्दाना এই बंश চিন্তা করিতে হয়, তদপেক্ষা পাপীয়সী দশা আর হইতে পারে না। সংসার-তত্ত্বজ্ঞ পণ্ডিতের। ধনকে পরম ধর্ম বলিয়া উক্ত করিয়াছেন, যেহেতু ধনই সকলের মূলাধার। এই জগতীতলে ধনশালী ব্যক্তিরাই যথার্থ জীবিত থাকে; যাহারা নির্ধন, তাহারা কেবল জীবমূত। যাহারা স্বীয় বল অবলয়ন-পূর্বক কোন লোকের ধন হরণ করে, তাহারা কেবল তাহারই বিনাশের নিদান হয় এমন নহে, তাহার ধর্মা অর্থ কাম, সকলই উৎসন্ন করিয়া কেলে। নির্ধনতা প্রাপ্ত হইয়া কোন কোন লোকে মৃত্যুকামনা করিয়াছে, কেহ কেহ নগর পরিত্যাগ-পূর্বক আমবাসী হইয়াছে, কেহ কেহ প্রব্রজ্যা-ধর্ম অবলম্বন করত অরণ্যাশ্রয় করিয়াছে, क्ट क्ट वा मानव-लीला मन्नत्रग-शूर्वक এकवादत ক্লভান্তের শরণাপন্ন হইয়াছে। অর্থের নিমিত্তে च्यानिक উद्योग-एमा क्षाल इहेशाएड, व्यभात मक्रत ৰশীভূত হইয়াছে, কেহ কেহ বা পরের দাস্যর্ত্তি পর্যান্ত স্বীকার করিয়াছে। পুরুষের অর্থনাশ-রপ বে আপদ্, তাহা মৃত্যু অপেকাও গুরুতর; বেহেতু व्यर्थे जाहात धर्म कारमत अक्साळ माधन। উहात ধর্মানুষ্ট্রী স্বাভাবিক যে মৃত্যু, ভাহা ও চিব্লস্তন

लाकवर्ष ; जूम धनव नमछ व्यानिवर्ग-मृत्या तक्रहे তাহা অতিক্রম করিতে পারে না। ফলত যে রাক্রি মহতী সম্পত্তি-লাভে চিরকাল স্থথ-সড্যোগে সহু-**দ্ধিত হ**ইয়া পরিশেষে নিঃসম্বল হইয়া পড়ে, তাহার **যেৰূপ যন্ত্ৰণা, স্বভাবত ধনহীন ব্যক্তির কথন**ই সে-ৰূপ নহে। ধন-বিচ্যুত মনুষ্য আপন অপরাধে মহ। তুঃথ প্রাপ্ত হইয়া তথন ইন্দ্রাদি দেবগণের প্রতি দোষারোপ করিতে থাকে, আপনাকে কোন ক্রমে নিন্দা করে না। তৎকালে সমস্ত, শাস্ত্র-শিক্ষাও তাহার ছুংখনাশ করিতে সমর্থ হয় না। সে কথন ভূতাবর্গের উপর ক্রোধ প্রকাশ করে, কথন বা ঈর্ষা-পরবশ হইয়া স্থহানাণের প্রতি দোষ দিতে থাকে। এইৰূপে নিরম্ভর ক্রোধাভিভূত হইয়াসে পুনঃপুন মোহ প্রাপ্ত হয়, মোহের বশীভূত হইয়া **ক্রুর কর্ম্মে**র অনুষ্ঠান করে এবং পাপাসক্ত হইয়া জাতি-বিপ্লবের প্রয়োজক হয়। জাতি-সঞ্চর যে পাপ-কর্মের অগ্রগণ্য এবং নরক-প্রাপ্তির অসাধারণ-হেতৃ তাহাতে আর কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। পাপানুষ্ঠারী वांकि यिन कान अकाद्र अद्वाध आहा ना इत्र, **তाहा हरेल** जाहात्क व्यवनाहे नद्गरंक याहेत्ज हम् । একমাত্র প্রজ্ঞা ব্যতীত তাহার প্রবোধ লাভেরঙ অন্য উপায় নাই। প্রজ্ঞাচক্ষু প্রাপ্ত হইলে সে পাপ-পারাবার **হইতে কথঞ্চিৎ উর্ভার**্হইতে পারে। প্রজ্ঞালাভ করিলেই মনুষ্য শাস্ত্র-সমস্ত পর্যাবেক্ষণ করে এবং শান্ত্রনিষ্ঠ হইয়া ধর্মান্ত্র্ষ্ঠানে প্রবৃত্ত হয়। তৎকালে লজ্জা তাহার প্রধান অঞ্চ-স্বরূপ হইয়া উঠে; যাহার লক্ষা থাকে সে অবশ্যই পাপবিদ্বেঘী হয়; স্বতরাং তাহার সমৃদ্ধিরও রৃদ্ধি হইতে থাকে। পুরুষ যাবৎ শ্রীসম্পন্ন থাকে, তাবৎকাল পর্যান্তই ভাহাকে যথার্থ পুরুষ বলিয়া গণ্য করা যায় : বিনি নিত্য ধর্মানুষ্ঠায়ী ও প্রশান্তাত্মা হন এবং সর্বাদা বিচার করিয়া কার্যা করেন, তিনি কদাপি ক্ষ্মদর্শ মতি করেন না এবং পাপকর্মেও কৰন প্রবৃত্ত হন न। लब्जा-चूना ও विगृष् वास्ति वा खी, मा शुक्रक:

ভাহার ধর্মে অধিকার থাকে না; সে শুডের ন্যায় নিক্ট বলিয়া পরিগণিত হয়। ত্রীমান্ পুরুষ দেব-গণের, পিতৃগণের ও আত্মার প্রীতি সম্পাদন করেন এবং ভদ্মারা মৃক্তিলাভে সমর্থ হন। মুক্তিই পুণ্য-কর্মা মানবগণের পরাকাষ্ঠা।

হে মধুস্থদন! আমি যে কথা বলিলাম, তাহা আমাতেই তুমি প্রতাক দর্শন করিতেছ; আমরা রাজ্য হইতে পরিভ্রম্ট হইয়া যে প্রকারে এই কয়েক বংসর বাস করিতেছি, তাহা তোমার জগোচর নাই; অতএব এক্ষণে কোন ন্যায়ামুসারে আমরা **এ পরিত্যাপ করিতে পারি না। স্ব**রাজ্য-লাভে যত্ন করত যদি আমাদিগকে নিহত হইতে হয়, তাহাও ভোর। হে মাধব! তদ্বিষয়ে আমাদিগের প্রথম কল্প এই যে, আমরা সন্ধিবন্ধন-দারা পর-স্পর প্রশান্ত হইয়া সমভাবে রাজাভোগ করি। যদি একান্তই মে ৰূপ না হয়, তাহা হইলে অনিছাতেও কৌরবদিপকে বধ করিয়া অপহৃত রাধ্র-সমন্ত পুন-রায় হস্তপত করিতে হইবে; কিন্তু সংগ্রামে প্রহৃত হইরা নিদারুণ সংহার-কার্যো লিপ্ত হওয়া অতীব নিক্ল**ফ-কম্প। হে কৃষ্ণ! যে সকল** শত্ৰু অতিশয় कृ्कुं ଓ व्यवका-छोक्न रहा; नारारात्र महिल কিছুমান ্সমন্ত্র থাকে না, তাহাদিগকেও বধ করা অমুচিত ; বাহাদিগের সহিত ঈদৃশ নিকট সম্বন্ধ त्र**रियादक, त्मरे क्लोतविमर्शत कथा** आत कि विनव ? **অসংখ্য জ্ঞাতিবর্গের এবং আমাদের সহারভূত** গুরুজনগণের বা করা যে অতিমাত্র পাপ কর্মা, তাহাতে আর নদেহ কি? ফলত যুদ্ধ-ব্যাপারে **क्लाम ध्यकाब मङ्गलबर्ट म**खावना नारे। शब्छ এই পাশমর কর্মাই ক্ষত্তিরগণের ধর্ম হইয়াছে এবং भामताक अबे अध्य किञ्च-कृत्व जन्म श्रह कित्र-রাছি; স্থতন্তাং ধর্মাই হউক বা অধর্মাই হউক যুদ্ধ जिन्न चना देशन वावकान चौमानिरगत भएक निन्न-नीत । मृटजेब्रा अक्षांस करत, विटमात्रा वाणिका करत, चामना रिश्ना किन्न अवर जान्मराना जिन्ना-काना

দাশাৰ্হ! যাহার যে ৰূপ ধর্ম সে তদমূৰূপ বাবহারেই প্রবৃত্ত হয়; দেখ, যেমন মৎদ্যেরা মৎস্য-ছারা জীবন ধারণ করে এবং কৃত্বুরেরা কুত্রুর হিংসা করে, সেই-ৰূপ ক্ষত্ৰিয়েরাও ক্ষত্ৰিয়দিগকে নিহত করিয়া **থাকে।** হে রুফ! যুদ্ধস্থলে কলি সদা সন্নিহিত থাকে; কেন না যুদ্ধে মহাপ্রাণী-সক**ল অজন্ত বিনক্ট হয়। বল** নীতির উপরে নির্ভুর করে বটে, কিন্তু জয় ও পরা-জয় দৈবেয়ই আয়ন্ত। হে য**ূত্রেষ্ঠ**় **জীবগণের** জাবন কি মরণ কাহারো স্বেচ্ছাধীন হয় না এবং কাল প্রাপ্ত না হইলে কেহই স্থুখ ছুঃখের অধিকারী হইতে পারে না। এক ব্যক্তিও ব**হু**সংখ্য**ক লোকের** প্রাণ সংহার করিতে পারে, আবার বছলোকে মিলিত হইয়াও একজনকৈ নিহত করে; পুরুষ-কার-বজ্জিত হীন-বল মনুষ্যও শুরবীরকে বিনষ্ট করিতে পারে এবং অযশস্বীও যশস্বীর ধংসবিধান করিয়া থাকে। উভয় পক্ষেরই যুগপৎ জয়পরাজয় দৃষ্ট হয় না বটে, কিন্তু প্ৰায়ই সমান ৰূপ অপচয় দৃষ্টি করা যায়; যাহারা পরাজ্মুথ হয়**, তাহাদের** रेमना-क्यम् ७ धन-वाम् উভम्नरे मृ**क्वे हरेम्ना शास्क**। ফলত, যুদ্ধ-ব্যাপার সর্ব্বথাই পাপ কর্ম্ম; একজনকৈ আহত করিয়া কোন ব্যক্তি প্রতিহত না হয় ? আ-হত ব্যক্তির জয় পরাজয় উভয়ই সমান। **আমার** বিবেচনায় মরণে আর পরাজয়ে কোন বি**শেষ নাই।** যাহার জয় হয়, তাহারও নিঃসন্দেহ অপচয় হইয়া থাকে। শত্রুগণ তাহাকে নিহত করিতে না পারুক, অন্তত তাহার কোন না কোন প্রীতিভাঙ্গন ব্যক্তি-কেও বিনষ্ট করে; স্থতরাং একে বল-বিহীন, তা-হাতে আবার পুজ্র-সংহাদরাদি প্রিয়-জনগণকে দে-খিতে না পাইলে অবশাই তাহার জীবনের প্রতি সর্ব্বতোভাবে বৈরাগ্য জন্মে। ধাঁহারা ধীর, লক্ষা-শীল, সদ্যুণ-সম্পন্ন ও কারুণিক হন, তাঁহারাই সংগ্রামে নিহ্ত হৈইয়া থাকেন; নিরু**উ-লোকে** আয়ই পরিতাশ পায় 🕩 হে জনার্দ্দন! উৎফুট্ট শক্ত

সকলকে বিনফ করিয়াও চিরকাল পশ্চান্তাপ করিতে হয়; বিশেষত, যদি হতাবশিষ্ট কোন শত্ৰু থাকে, ভবে বৈর-বিষয়ে তাহার পাপময়ী আসক্তিও অব-শিষ্ট থাকে; ঐ অবশিষ্ট ব্যক্তি ক্রমে বল পাইয়া বিজয়ী পক্ষের হতাবশিউদিগের আর কিছুমাত্র অবশেষ রাখে না ; শক্রতার শেষ করিবার অভি-नारक त्म मर्वतमः शाद्र यञ्जवान रहा। এই काल कहा শক্ততার সৃষ্টি করে এবং পর্মাজত ব্যক্তি ছুংখে কালাতিপাত করিতে থাকে। কাহারও সহিত যাহার শক্রতা নাই, তাহার আর জয় পরাজয়ের চিন্তা থাকে না, স্থতরাং সে প্রশান্ত-চিত্তে স্থে নিজা যায়; কিন্তু জাতবৈর পুরুষের সদাই ছুংখ; সসর্প আবাসে ৰাস করিলে মনে মনে যাদৃশ উদ্বেগ জন্মে, তাহা-কেও সেইৰপ চিন্তাকুল-চিত্তে শয়ন করিতে হয়। य वाक्ति नकत्वत्र উচ্ছেদক হয়, সে कैमां शि यटणा-ভাজন হইতে পারে না; সহস্র সহস্র যশ থাকি-লেও সে তাহা হইতে পরিচ্যুত হয় এবং সর্বলোক-मर्स्य हित्र इति । क्षेत्र करोर्डि मध्य करत । ही र्यकाल প্রজ্বলিত থাকিলেও শাত্রবানল নির্বাণ হইবার নছে। শত্ৰকুলে যদি কোন পুরুষ বিদ্যমান থাকে, তাহা হইলে তাহার পূর্ব্বপুরুষ-ক্লত বৈর-র্ত্তান্ত বিজ্ঞাপন করিবার লোকও অনেক থাকে। হে কে-শব! বৈর-ছারা কখন বৈরের উপশম হয় না; বরং মৃতপ্রাপ্ত অগ্নির ন্যায় তাহা কেবল বর্দ্ধিত হইতেই পাকে। অতএব যখন ছিদ্র নিত্যস্থায়ী, কোন ক্রমে তাহার পরিহার করা যায় না, তথন এক পক্ষের বিনাশ ব্যতিরেকে আর শাস্তি নাই। যাহারা ছিড্র-লাভে ইচ্ছুক হয়, তাহাদের এই দোষ নিত্যকাল-সংসক্ত থাকে। পুরুষকার-নিবন্ধন যে একটি প্রবল মানসিক সম্ভাপ নিরম্ভর অন্তর্দাহ করিতে থাকে, হয় ভাহার পরিহার, না হয় মরণ, এই উভয়ের অন্যতর উপার-ঘারা শান্তি হইতে পারে। হে মধুস্থদন। শত্র-গণের সমুলোচ্ছেদ করিতে পারিছেবও রাজ্যপ্রাপ্তি-ৰপ অচুর ফল লাভ হয়; পরত শত্রুপথের সমুলো-

চ্ছেদ অতিশয় নিষ্ঠুরের কার্যা। রাজ্যের ভ্যাগ-ছারা যে শান্তি হইতে পারে, রাজ্য ব্যতিরেকে বধের সহিত তাহার কিছুমাত্র বিশেষ থাকে না; কেন না তাহাতে শত্রুপক্ষের সংশয় এবং আত্ম-পক্ষের সমু-চ্ছেদ হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা। অতএব ক্লাজ্য ত্যাগ করিতেও আমাদের ইচ্ছা হয় না এবং কুলক্ষয় করিতেও অভিরুচি হয় না। এতদ্বিষয়ে যাহাতে কোন প্ৰকারে যুদ্ধ করিতে না হয়, সৰ্ব্বপ্ৰযত্নে এৰূপ চেন্টা করিয়া যদি অবনতি-দ্বারা শাস্তি লাভ করা যায়, তাহা হইলেই সর্বাংশে উত্তম হয়; যেহেভু সেইৰপ শান্তিই গরীয়সী। সাত্রবাদ-ছারা কোন ফল না দর্শিলে যুদ্ধ ত প্রসিদ্ধাই রহিয়াছে; তখন আর পরাক্রম প্রকাশে নিরস্ত থাকা কোন ৰূপেই উচিত নহে। কিন্তু সাত্ত্ব প্ৰতিহত হইলে অবশ্যই निमां क्रि वाशिदात मध्य हैन इहे सा थारक ; कुकूत-দিগের কলহ-কালে পণ্ডিতেরা তাহার বিলক্ষণ উপমার স্থল দৃষ্টি করিয়াছেন। কুরুরগণ প্রথমে লাঙ্গুল-চালন, গর্জন, প্রত্যুত্তর প্রদান, চক্রাকারে পরিভ্রমণ, দম্ভপ্রদর্শন ও ঘন ঘন চীৎকার ধনি করে, পরে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হয়। হে কৃষ্ণ! তন্মধ্যে যেটা বল-বান্ হয়, সে অন্যকে পরাজয় করিয়া তাহার মাংস ভক্ষণ করে। বিবেচনা করিয়া দেখিলে, মনুবোর মধ্যেও অবিকল এইৰূপ, কিছুমাত্ৰ বিশেষ নাই। পরস্ত তুর্বলদিগের প্রতি আসা ও বিরোধ না করাই विनिष्ठेपिरभेत गर्ववर्षा कर्खवा, रून ना पूर्विन वास्त्रि সহজেই অবনতি স্বীকার করে। হে জনার্দ্দন! ধৃত-রাষ্ট্র আমাদিগের জ্যেষ্ঠ তাত, রাজা, রুদ্ধ ও সর্বাধা মাননীয়; অতএব তাঁহার নিকটে সন্মান, পূজা ও অবনতি প্রদর্শন করা আমাদিপের যে কর্ডব্য কর্ম্ম, তাহাতে আর সন্দেহ কি? কিন্ত হে মাধব ! ধৃত-রাষ্ট্রের পুত্র-ক্ষেছ অতীব বলবাদ; পুত্রের বদ্যীভূত হইয়া তিনি আমাদিগের প্রণিপাত অত্বীকার করি-বেন। অতএব অনম্ভর কর্ত্তব্য বিষয়ে জুমি কি উপ**্** যুক্ত বিবেচন। কর? কি একারে জামরা ধর্ম ও অর্থ হইতে পরিচ্যুত না হই ? হে মধুস্থদন ! হে পুরুষোত্তম রুক্ষ ! ঈদৃশ বিষমতর অর্থক্চলু সময়ে আমি তোমা ভিন্ন আর কোন ব্যক্তির নিকটে পরা-মর্শ জিজ্ঞাসা করিব ? তোমার সদৃশ প্রিয়, হিতৈষী, সর্বাকর্মের গতিজ্ঞ এবং সর্বা বিষয়ের যথার্থ-সিদ্ধান্ত-কারী স্বস্থদ্ আমাদিগের আর কে আছে ?

বৈশস্পায়ন কছিলেন, ধর্মরাজের এই সকল কথা শুনিয়া জনার্দ্দল তাঁহারে প্রত্যুত্তর করিলেন, মহারাজ! আমি আপনাদিগের উভয়েরই প্রয়োজনসিদ্ধি নিনিত্তে কৌরব সভায় গমন করিব; তথায় আপনকার অভিপ্রেত বিষয় স্থির রাখিয়া যদি
শান্তি লাভ করিতে পারি, তাহা হইলে আমার মহাকলোপধায়ক স্থমহৎ পুণ্য কর্মের অনুষ্ঠান করা হয়। সন্ধি করিতে পারিলে আমি কোপাবিই কুরু স্প্রাদিগকে, পাগুবগাকে, ধৃতরাষ্ট্রের পুত্র-সকলকে এবং এই সমগ্র ভূমগুলকে মৃত্যুপাশ হইতে মুক্ত

যুধিন্তির কহিলেন, হে ক্লফ! তুমি কৌরবদিগের সির্নধানে গমন কর, ইহা কোন প্রকারেই আমার অভিমত নহে। তুমি সমুক্তি করিলেও সুযোধন কদাচ তোমার কথা রক্ষা করিবে না। হে ক্লফ! ছুর্যোধনের বশবর্জী অসংখ্য ক্ষন্তিরগণ তথায় সমবেত রহিয়াছে; অতএব তমধ্যে তোমার প্রবেশ করা কোন মতেই আমার প্রীতিকর হইতেছে না। হে মধ্ব! তোমার প্রতি কেহ অনিফাচরণ করিলে আমার রাজ্য ধন বা স্থথের কথা দুরে ধাকৃক, স্বর্গ-পুরের সমন্ত ঐশ্বর্যা অথবা সাক্ষাৎ দেবত্ব পদার্থও কদাপি প্রীতি-জনক হইবে না।

ভগবান্ কহিলেন, মহারাজ! ছুর্য্যোধনের যেৰপ পাপবৃদ্ধি, তাহা আমার অবিদিত নাই; তথাপি তাহার নিকটে গমন করিলে আমরা সর্বলোকবভী রাজনাগন-সলিধানে নিন্দা-পুনা থাকিব। আমি কুন্ধ হইলে, সিংহ-সমীপে ইতর প্শুবর্গের নামার, যাবতীয় পার্থিবগণ মিলিত হইয়াও আমার সম্মুখে স্থানির থাকিতে পারিবে না। যদি তাহারা আমার প্রতি কোন প্রকার অযুক্ত-বাবহারে প্রহত্ত হয়. তাহা হইলে আমি সমস্ত কুরুকুল ভন্মীভূত করিয়া ফেলিব, এইরূপ নিশ্চয় করিতেছি। হে পার্থ! সে স্থলে আমার গমন করা কখনই নিরর্থক হইবে না; যদিও প্রয়োজন-সিদ্ধি না হয়, তথাপি পরিশেষে আর আমাদিগকে পরিবাদ্রান্ত হইতে হইবে না।

যুধিষ্টির কহিলেন, কৃষ্ণ! তোমার বাহা রুচি হয় কর। সর্বাথা কুশলী হইয়া কৌরবগণ-সমীপে গমন করত তাহাদিগকে এৰূপ প্রশান্ত কর, যাহাতে আমরা সন্ধিস্থতে বন্ধ থাকিয়া পরস্পর গ্রীতমনে কালযাপন করিতে পারি। এক্ষণে প্রার্থনা এই, প্রত্যাগমন সময়ে তোমাকে যেন ক্রতকার্য্য ও কল্যাণ-যুক্ত দেখিতে পাই। হে প্রভাব-সম্পন্ন জনা-র্দন! তুমি আমাদিগের ভ্রাতা অথচ সধা;—আমার ও অর্জুনের তুল্যৰূপ প্রিয়; তোমার সহিত আমা-দিগের এৰপ সৌহৃদ্য জিম্মাছে যে কোন বিষয়েই তোমার প্রতি শঙ্কার সম্ভাবনা নাই; অতএব আ-মাদিগের মঙ্গল-সাধনার্থে শুভ্যাতা কর। হে রুষ্ণ। তুমি আমাদিগকৈও জান এবং শত্রুদিগকৈও জান; যেৰপ প্রয়োজন তাহাও তোমার অগোচর নাই এবং যেৰূপ প্ৰস্তাব করা উচিত তাহাও অবিদিত নাই; অতএব হে কেশব! সাথ্বাদই হউক অথবা যুদ্ধের প্রদঙ্গই হউক, যাহা আমাদিগের হিতকর অথচ ধর্মানুযায়ী হইবে, তাহাই স্কুযোধনের নিকট ব্যক্ত করিবে।

> যুধিষ্ঠির-ধাক্যে দ্বিসগুতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭২॥

যুধিন্টিরের বাক্যাবসানে রুফ কহিলেন, আমি সঞ্জয়ের বাক্যও শুনিয়াছি এবং আপনকার কথাও শুনিলাম; শত্রুদিগের এবং আপনকার বেৰুপ অভিপ্রায় তাহাও আমার অবিদিত নাই। আপন-কার বুদ্ধি ধর্মকে আগ্রন্থ করিয়াছে; তাহাদিগের

মতি কেবল শক্রতার অমুবর্ত্তন করিতেছে। যুদ্ধ না ক্রিয়া যাহা কিছু লাভ করা যায়, তাহাই আপনকার বছমত বোধ হইতেছে; কিন্তু হে বি-শাস্পতে ! সমুদায় আশ্রমীরা বলেন, ক্ষল্রিয় যে ভিক্ষাজীৰী হয়, এৰূপ যাৰজ্জীবন ব্ৰহ্মচৰ্য্য কৰ্ম ক্ষজিয়ের পক্ষে বিহিত নহে। বিধাতা সংগ্রামে জয় ও বধের যে বিধান করিয়াছেন, তাহাই ক্ষত্রি-য়ের সনাতন ধর্ম ; কুপণতা প্রকাশ করা তাহার পক্ষে কদাচ প্রশংসার বিষয় নছে। হে মহাবাহে। যুবিষ্ঠির! দীনভাব অবলম্বন করিলে ক্ষজিয়ের জীবিক। নির্বাহ করা অতীব ছুঃসাধ্য হয়; অত-এব হে পরয়প! সমুচিত বিক্রম প্রকাশ-পূর্বাক শক্র নাশ করুন। ধৃতরাষ্ট্রের পুত্তেরা অতিমাত্র লুক্ হইয়া অনেকানেক বীর পুরুষদিগের সহিত দীর্ঘ-কাল সহবাস করিয়া নিরতিশয় স্নেই ও নিত্রতা প্রকাশ-দার। যেৰূপ বল-সম্পন্ন হইয়াছে, তাহাতে কোন ক্রমেই তাহারা আপনকার সহিত সন্ধি করি-বেনা। হে বিশাম্পতে! ভীন্ন দ্রোণ রূপাচার্য্য-প্রভৃতি সহায় রহিয়াছেন মনে করিয়া তাহারা আপনাদিগকে অতিশয় বলশালী জ্ঞান করিতেছে; স্থতরাং যে পর্যান্ত আপনি মৃত্যভাব অবলয়ন-পূর্বাক তাহাদিগের নিকট নম্রতা প্রকাশ করিবেন, সে পর্য্যন্ত তাহারা অবৃশ্যই আপনাকে রাজাভোগে বঞ্চিত করিয়া রাখিবে, সন্দেহ নাই। হে অরিন্দম! ধৃতরাষ্ট্র-তনয়েরা না করুণা-বৃদ্ধি, না দীনতা, না ধর্মার্থ-জ্ঞান কিছুতেই আপনকার মনোরথ পূর্ণ ক্রিতে সমর্থ হইবে না। হে পাওঁব! আপনাকে তাদৃশ ছুম্বর কৌপীন ধারণ করাইয়াও তাহারা যে অনুতাপাল্বিত হয় নাই, ইহাই সন্ধিনা করিবার নিমিত্ত বলিয়া স্বীকার করুন।

হে রাজন ! আপনি এতাদৃশ ধর্ম-পরায়ণ, মৃত্যু, দাক, দানশীল ও ব্রতনিষ্ঠ হইলেও যে ব্যক্তি ভীয়, জোণ, ধীমান বিত্রুর, মহাস্থা ব্রাহ্মণনণ, রাজা ধৃতরাষ্ট্র, প্রধান প্রধান কৌরব-সকল ও নগরস্থ সমুদ্য লোকের

সাক্ষাতেই আপনাকে কপট-পাশক্রীড়ায় বঞ্চিত করিয়া স্বকীয় নিক্ষ কর্ম জন্য কিছুমাত্র লক্ষা বোধ করে নাই, তাদৃশ ছুঃশীল, ছুরাচার, কুরুমতি ছুর্য্যোধনের প্রতি আপনি কদাচ শ্লেহ করিবেন না। হে ভারত। আপনকার কথা দূরে থাকুক, তাহারা সকল লোকেরই বধ্য। একবার মনে ক্রিয়া দেখুন দেখি, ছুর্য্যোধন ভ্রাতৃবর্গের সহিত মিলিভ হইয়া মহাপ্রহৃষ্ট-মনে আত্ম-শ্লাঘা করিতে করিতে বহুতর অসদৃশ বচনাবলি দারা আপনাকে ও আপ-নকার সংখ্যাদরদিগকে কিন্দুপ মর্গ্ম-পীড়া প্রদান করিয়াছিল! সে মুক্তকণ্ঠে কহিয়াছিল "এই পৃথিবী মধ্যে পাওবদিগের ' এই বস্তু নিজস্ব । এমন কিছুই নাই; এমন কি, ইহাদিগের নাম ও গোত্র পর্যন্ত লুপ্ত হইল ; মহাকাল-সহকারে ইহারা অবশ্যই পরা-ভব প্রাপ্ত হইবে ; ইহাদের রাজ্যাঙ্গ একণে আমার অধিকৃত হইল, স্বতরাং ইহারা জীবিকা নির্বাহাথে প্রজাগণের সাহায্য অবলম্বন করিবে। আরও দে-খুন, চ্যুতক্রীড়া প্রবর্তিত হইলে, পাপমতি ছুরাজা ছুঃশাসন, অনাথার ন্যায় রোরুদ্যমানা ডৌপদী দে বাকে কেশে আকর্ষণ পূর্যক রাজসভামধ্যে আনিয়া ভাগ জোণাদির সাকাতেই বারয়ার 'গ্রাগ্রী বলিয়া বিদ্রপ করিয়াছিল। তংকালে আপনি ভীম-পরক্রেম ভাতৃদিগকে বারণ করিয়া রাখিলেন, স্কুত রাং তাঁহারা ধর্মপাশে নিবন্ধ থাকিয়া তাহার কিছুই প্রতিক্রিয়া করিতে পারিলেন না। আপনি বনে গমন করিলেও ছুর্যোধন জ্ঞাতিবর্গমধ্যে পুর্ব্বোক্ত-ৰূপ ও অন্যান্যপ্ৰকার বহুতর কঠোর বাক্যের উক্তি করত শ্লাঘ। করিয়াছিল; সে স্থলে যে সকল সংস্ব-ভাবসম্পন্ন লোক সমানীত হইয়াছিলেন, তাঁহারা অপেনাকে নিরপরাধ মনে করিয়া কেবল অশ্রুকঠে রোদন করত সভামগুপে উপবিক ছিলেন। বাংশাৰ-সকল কি রাজন্যান, কেহই তাহার কথায় আহ্লাদ थकाम करतन नारे, वतः **ममख्मखामरा**न्तारे छा-হাকে নিন্দা ক রয়াছিলেন। হে শত্রুতাপন মহা-

রাজ! কুলীন ব্যক্তির যে নিন্দা তাহাই বধ; বরং
নিন্দা-দূষিত জঘন্য জীবন বহন করা অপেক্ষা একবারে বিনই হওয়া শতগুণে শ্রেষ্ঠ। পৃথিবীস্থ সমস্ত
ভূপালবর্গের নিন্দাস্পদ হইয়াও সে বখন লক্ষা
বোধ করে নাই, তখন আর তাহার নিহত হইবার
অপেক্ষা কি আছে? যাহার চরিত্র ঈদৃশ জঘনা,
তাহাকে বিনই করা অতি সামান্য কার্যা। অন্যান্য
মূল সকল ছিল্ল হইলে কেবল মধ্যম মূল অবলম্বন
ঘারা যাহার পতন নিরুদ্ধ থাকে, তাদৃশ রক্ষের
নাায় এবং সর্পের নাায় ভয়াবহ সেই কুদ্রাশয় ছুর্মাতি
সকল লোকেরই বধযোগ্য; অতএব হে শক্রনাশন!
তাহাকে বিনই করুন; তাহাতে কিছুমাত্র সংশয়
করিবেননা।

হে অনম ! ধৃতরাষ্ট্র কি ভীয়ের নিকটে আপনি ষে প্রণিপাত স্বীকার করেন, ইহা সর্ব প্রকারেই ষা শনকার উপযুক্ত এবং আমারও অভিমত; ষ্মতএৰ হে ব্লাজন! আমি তথায় গমন করিয়া, ছুর্য্যোধনের প্রতি যাহাদিগের দ্বিধা ভাব আছে, ভাহাদের সকলেরই সংশয় ছেদন করিব; সমবেত ब्राक्रमख्ली मरधा जाशनकात मर्ख-शूक्रव-माधावन গুণ-সমূহের এবং ভাহারও দোষ-রাশির সংকীর্ত্তন করিব। নানা জনপদেশ্বর ভূপালবর্গ আমার সেই ধর্মার্থযুক্ত হিতকর বাক্য শ্রবণ করিয়া অবশ্যই আপনাকে ধর্মাত্মা ও সভ্যবাদী বলিয়া বিশ্বাস করি-दिन এবং ছুর্যোধন লোভ পরবশ হইয়া যেৰূপ ছুউাচার করিতেছে তাহাও বুঝিতে পারিবেন। क्विल दाक्रमश्रमी क्न, ममाश्र खान्नगानि वर्ग-छ्रू-केंद्र-मध्य कि कनश्रमवानी कि नाशतिक, कि वालक কি রুদ্ধ, সকলের সাক্ষাতেই আমি ছুর্য্যোধনের নিন্দ্। করিতে থাকিব। আপনি বর্থন শান্তি প্রার্থনা করিতেছেন, তথন স্থাপনাকে আর কে স্থার্শিক वनित्व ? किस मञ्जूषा भाटबर वावजीय क्लेत्विमधरक, विद्युष्ठ श्रुक्त भूति भूति निन्म। क्रिय मत्म्व नारे। र बाक्य। सारे नर्याणांक-विविक्किं शांशिके

ছুর্ব্যোধন নিন্দা-নিহত হইলে আপনকার কর্ত্তর্য কর্মের আর অবশিউ কি থাকিবে? অতএব আমি কুরুমগুলী সমীপে গমন পূর্ব্যক আপনকার অর্থ-হানি না করিয়া সন্ধি করণে সর্ব্যথা যত্ত্বান্ হইব এবং তাহাদিগের যুদ্ধ-বিষয়িণী প্রবৃত্তিও যাবতীয় চেউড অবলোকন করিয়া অচিরেই আপনকার জয়ের নি-মিত্ত প্রত্যাগমন করিব ।

হে ভারত! ছর্নিব্লিজ সমুদায়ের যেৰূপ প্রাছুর্ভাব দেখিতেছি, তাহাতে শত্রুগণের সহিত যে যুদ্ধ করিতে हरेदव रेहा नर्सक्षार প্রতীত হইতেছে। দেখুন, मन्ना সময়ে মৃগ ও বিহঙ্গগণ ভয়ঙ্কর শব্দ করিতেছে; প্রধান প্ৰধান হন্তী ও অশ্ব সকলেতে ঘোর ৰূপ লক্ষিত হইতেছে এবং ছতাশন বহু প্রকার বিকটতর বর্ণ ধারণ করিতেছে। অতএব হে নরেক্র! মমুষ্য লো-কান্তকারী ছুণ্মন্ত অন্তকের আবির্ভাব হইবার সম্ভাবনা না হইলে কদাচ এৰূপ ঘটিত না। অতএব এই সময়ে আপনকার যোধগণ কৃত নিশ্চয় হইয়া শস্ত্র যন্ত্র কবচ রথ হয় হস্তিপ্রভৃতি সামরিক সামগ্রী সমন্ত সজ্জিত করিয়া অশ্ব গজ ও রথ-সমূহের পরি-চর্যায় নিযুক্ত হউক। হে নরেন্দ্র ! সংগ্রাম নিমিত্ত ষাহা যাহা সংগ্ৰহ করিতে হইবে, আপনি সমগ্ৰৰূপে **७९मभूमारसद्र आरसाजन क**दिसा दा**थून। रह পा**खब-রাক্ষ! ছর্যোধন পূর্বে দূতে দারা আপনকার যে প্রচুর-সমৃদ্ধিশালী রাজাটি হরণ করিয়াছে, এক্ষণে সে জীবিত থাকিতে কোন প্রকারেই আপনাকে ভাহা প্রত্যর্পণ করিতে সমর্থ হইবে না।

> কৃষ-বাক্যৈ ত্রিসপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৩॥

ভীম কহিলেন, হে মধুস্থান! যাহাতে কুরুদিগের মধ্যে শান্তি স্থাপন হয় এইৰপ প্রস্তাব করিও; যুদ্ধ প্রসঙ্গ ধারা তাহাদিগকে কদাচ ভয় প্রদর্শন করিও না। ক্রোধ-পরবৃশ, উৎসাহ-সম্পদ্ধ, কল্যাণ-বিদ্বৌ ও মহাভিষানী ছুর্যোধনকে কোন প্রকারে উপ্র-

বাকা বলা উপযুক্ত হইৰে না, অতএৰ সাম্ববাদ-षाताहे जाहात्क माजुना कतिछ। ए इस्पः य वाकि স্বভাবত পাপাত্মা, দস্থানির্বিশেষ-চিত্ত, ঐশ্বর্যামদ-মন্ত, পাগুবদিগের সহিত ক্লত-বৈর, অদীর্ঘদর্শী, নিষ্ঠুর, সাধুজনের অবমানকারী, ক্রুর-পরাক্রম, চির-ক্রোধী, অবিনীত, পাপুমতি ও বঞ্চনা-প্রিয় ; যে মূচমতি বরং প্রাণ দিতেও স্বীকৃত হয়, তথাপি স্বমত পরিহার-পূর্বক স্বেচ্ছা_ছভঙ্গ করিতে কোন প্রকারে সম্মত হয় না ; তাদৃশ পামরের সহিত সন্ধি করা নিতান্ত ছুঃসাধ্য। সে আপনিও ধর্মের মর্ম্ম বুঝিতে পারে না এবং স্কুছাক্যেরও বশয়দ হয় না, স্থুতরাং ধর্মত্যাগী ও মিধ্যা-প্রিয় হইয়া কেবল স্থ্যুক্ষাণের বাক্য ও মনের প্রতি প্রতিঘাত করে মাত্র। তৃণ-দারা আচ্ছন থাকিরাও ভুজঙ্গ যেমন স্বভাবনিদ্ধ খল-স্বভাব প্রকাশ করিয়া•খাকে, সেও সেইৰূপ স্বাভাবিক ছুফভাব আশ্রয় করত ক্রোধের বশীভূত হইয়া পাপ সংকলন করে।

হে কেশব! ছুৰ্য্যোধনের যত সেনা, যেৰূপ শীল, যেমন স্বভাব, যে প্রকার বল ও যাদৃশ পরাক্রম, তাহা সকলই তোমার বিদিত আছে। দেখ, পূর্বে কৌরবেরা পুজাদির সহিত সর্বদা প্রসন্ধ-চিত্ত ধা-কিত এবং আমরাও যেন পুরন্দরের অনুজবর্গের ন্যার স্বান্ধ্রে পরস্পুর আহলাদ আমোদে কাল-যাপন করিতাম; কিন্তু হে মধুস্থদন! শিশির-বিগমে বন যেমন দাব-দহনে দগ্ধ হইতে থাকে, সেইৰূপ ছুর্য্যোধনের ক্রোধ-ছতাশনে এক্ষণে যাবতীয় ভারত বংশ ভত্মীভূত হইবে। হে কৃষ্ণ! বাহারা জনতি, स्कृष् ७ वाञ्चव मञ्जूषादात मञ्चलक कतिशाहिल, পশ্চাছুক্ত সেই অফাদশ নৃপতি স্থবিখ্যাত আছে। ধর্ম্মের পরিবর্ত্তন কাল সমাগত হইলে তেজঃপুঞ্জে প্রজ্বলিত সমৃদ্ধ অস্থ্রদিগের বংশে বেমন কলির উৎপত্তি হইয়াছিল, সেইৰূপ হৈহয়-বংশে উদ্ধৃত-च्छाद छेनावर्छ, नीशवर्शन जनस्मज्ञ, छानकञ्च-বংলে বছল, ক্রমিবংশে বস্থ, সুবীর-বংশে অজবিন্দু,

स्त्राद्धे-वंश्राम अपर्किक, वनीर-वंश्राम अर्केस, हीन-বংশে ধৌতমূলক, বিদেহ-বংশে হয়ঞীব, মহেন্সস-বংশে বরয়ু, স্থন্দরবেগ-বংশে বাহু, দীপ্তাক্ষ-বংশে পুৰরবা, চেদিমৎস্য-বংশে সহজ, প্রবীর-বংশে রুষ-ধজ, চক্রবৎস-বংশে ধারণ, মুকূট-বংশে বিগাহন এবং নন্দিবেগ-বংশে সম রাজা উৎপন্ন হইয়াছিল। যুগান্ত সময়ে এই সমস্ত কুলনাশন নরাধ্যেরা বেমন উক্ত কুল-সমূহে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিল, সেইৰূপ উপস্থিত যুগাবসানে কাল-প্রেরিত কুলাঙ্গার ছুর্য্যো-ধনও সাক্ষাৎ পাপের অবতার স্বৰূপ হইয়া কুরু: বংশে উৎপন্ন হইয়াছে। অতএব হে উগ্ৰপরাক্রম_্ উগ্রতা পরিহার-পূর্বক তাহার নিকটে মৃদ্ধুমন্দ-ভাবে, যাহাতে তাহার চিত্ত আক্লুফ হইতে পারে. এৰপ অভিলবিত বিষয়ের বাছল্য-সমশ্বিত, ধৰ্মাৰ্থ-সংযুক্ত ও হিতকর বাক্য বলিও। হে রুক্ষ! আমর। নম্রভাব ধারণ করিয়া বরং ছুর্য্যোধনের অনুগত হইয়া চলিব, তথাপি আমাদিণের ভরত-বংশের যেন ধংস না হয়। হে বাস্থদেব। বাহাতে কৌরব-দিগের সহিত কোন বিষয়ের সংস্রব না খাকায় আমানের পরস্পর উদাসীনের ন্যায় ব্যবহার না হয়, তোমাকে তাহারই চেন্টা করিতে হইবে; তাহাদিগের ছুর্বুদ্ধি বশত যেন কোন প্রকারে कुरूकुटल कुलक्कंग्र-निवंशन (क्षियम्प्रभा ना इग्न। एक কৃষ্ণ! প্রবীণতম পিতামহ ও অন্যান্য সভাসদ্বর্গকে কহিবে, সকলে যত্নপর হইয়া স্কুর্য্যোধনকে প্রশাস্ত করুন; ভাতৃগণ মধ্যে সৌজাত সংস্থাপিত হউক। শাস্তি বিষয়ে আমি এইৰূপ কহিতেছি এবং ব্ৰাক্তাও ইহার প্রশংসা করেন; অর্জুনও যুদ্ধার্থী নহেন, কেন না উহাঁর শরীরে বিস্তর দয়া আছে।

> তীম-বাক্যে চতুঃসপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৪॥

2.37

বৈশস্পায়ন কহিলেন, পর্বতের সমুদ্ধ অথবা পাবকের শীতত্ব যেমন অসম্ভাবিত, সেইবাপ কুপা-

পরীত ভীমদেনের এই অভ্তপূর্ব মার্দ্দবযুক্ত বাক্য শুনির৷ শ্রনন্দন শাঙ্গ ধরা রামামুজ মহাবাছ কেশব তাঁছারে পরিহাস করিবার উদ্দেশে এবং বায়ু-সংযোগে বহির নাায়, প্ররোচনা বাক্যে উত্তে-क्रिक क्रिवात मानत्म क्रिक लागित्वन, रह इंदर्का-দর ় অন্য সময়ে আপনি ত হিংসা-প্রিয় কুর্তম श्रुजताष्ट्र-भूक्रिपरगत्र विभर्षनाज्ञिनात्य गुरक्तत्रहे थानः-সা করিয়া থাকেন। হে পরস্তপ! ঐ চিস্তায় আপ-নার নিজা হয় না; আপনি অধোমুখে শয়ন করত জাগরিত থাকিয়াই রাত্রি শেষ করেন; সর্বাদা শান্তি-বিরোধী খোরতর রুক্ষ বাকা প্রয়োগ করেন এবং স্বকীয় ক্রোধানলে অহর্নিশ সম্ভপ্ত হইয়া সধুম পাবকের ন্যায় অপ্রশাস্ত চিত্তে দীর্ঘ নিশ্বাস ত্যাগ করিতে করিতে বেন অতিশয় ভারার্ত্ত পুর্ববের মত একান্তে শয়ন করিয়া থাকেন। বাহারা আপন-কার প্রকৃত ভাব না জানে, তাহারা এই সকল অন্তুত আচরণ দর্শনে আপনাকে উন্মন্ত বলিয়াই স্থির করে। হে রুকোদর! কোন মাতঞ্চ নির্দুল রুক্ষ সকল দলন-পূর্বাক ক্ষিতিতলে পদাঘাত করত তৎ-সমুদায় বক্রীকৃত করিতে প্রবৃত্ত হইয়া যে ৰূপ শব্দ করে, আপনিও কখন কখন সেইৰূপ ঘোর শব্দ করিতে করিতে ধাবমান হন। হে পাগুব! লোকের সহিত সংসর্গ বা সমালাপ করিতে আপনকার অভিরতি হয় না ; কেবল নির্জ্জনে একান্তে অবস্থিতি क्रिंडिंग्डे जान नार्श। कि पिन, कि याभिनी, नर्क সময়েই নির্দ্ধনে অবস্থান ব্যতীত অন্য কিছু আপ-নার প্রীতির বিষয় হয় না। হে ভীম! আপনি একান্তে আসীন হইয়া কোন কোন সময়ে অকন্মাৎ হাস্য বা রোদন করিতে করিতে জামু-ছয়োপরি সন্তক অবলয়ন-পূর্বক নিমীলিত-নয়নে বহুক্ষণ নিস্তক্ষ হইয়া থাকেন; আবার সহসা ভুকৃটি বন্ধন ও ওষ্ঠ-ময় দংশন করিতে করিতে বিকটভাবে বারু-ষার দৃষ্টি বিক্ষেপ করেন। এই সমন্ত ব্যাপার [ু] কেবল ক্রোধের অনুভাব মাত্র।

ংহ পরন্তপ! পূর্বে জাতৃগণ-মধ্যে স্বাপনি 🐗 🗟 ৰপ প্ৰতিজ্ঞা-পূৰ্বক গদা গ্ৰহণ করিয়াছিলেন যে, "ভানুমান স্থ্য বেমন পূর্বদিকে স্বকীর ভেজঃ-পুঞ্জ উদ্ধাত করিতে দৃষ্ট হন এবং পশ্চিম দিকে অন্তমিত হইয়া মেরু প্রদক্ষিণ করেন, কোন কালে তাহার ব্যতিক্রম হয় না, আমি সেইৰূপ সভ্য করিয়া বলিতেছি, অমর্যপরবশ ছুর্য্যোধনের সন্ধি-হিত হইয়া এই গদ্যা-দারা তাহাকে নিহত করিব, কদাচ ইহার অন্যথা হইবে না।" কিন্তু কি আ**-**শ্রুষা: আপনার সেই বুদ্ধি অদ্য শাস্তি বিষয়ে প্রধাবিতা হইতেছে। অহো ভীম! যথন আপনা-কেও ভয় আশ্রয় করিতেছে, তথন ইহা বিলক্ষণ প্রতীত হইতেছে যে, যুদ্ধকাল উপস্থিত হইলে যুদ্ধাকাঙ্গ্দী ব্যক্তিগণের মনের ভাব সমুদায় বিপ-রীত হইয়া পড়ে। অহো পার্থ! আপনি কি জাগ-রিত, কি নিজিত, সর্বাবস্থাতেই বিপরীত নিমিত্ত-সমস্ত নিরীক্ষণ করিয়া থাকেন, বোধ হয়, তাহাতেই আপনার শান্তি কামনা হইতেছে। হা! আপনি ক্লীবের ন্যায় আপনাতে কিছুমাত্র পুরুষকারের আশংসা করিতেছেন না। আপনি মোছে অভি-ভূত হইয়াছেন, তাহাতেই আপনার মন এৰপ বিক্লত হইয়াছে, সন্দেহ নাই। আপনকার হৃদয় কম্পিত হয়; আপনকার চিত্ত বিষাদ যুক্ত হয়; আপনি উরু স্তম্ভ দারা আক্রান্ত হন, তাহাতেই প্রশান্তি ইচ্ছা করেন। হে পার্থ! মানবীয় চিত্তের কিছুমাত্র স্থিরতা নাই ; বাতবেগ-প্রচলিত শাল্মলি-वीरस्त्रत नाारा, উंदै। कथन एक्ष्ण कथन वा ऋत्र रहेन्ना পাকে। গো-সকলের মানুষী বাণীর ন্যায় আপনার এই অসম্ভাবিত নিন্দিত বুদ্ধি দর্শনে পাণ্ডু-পুজেরা নিতান্তই উদ্বিগ্ন হইতেছেন; তাঁহাদিগের চিল্ত-ভূমি যেন উভূপ-বিহীন হইয়া বিষাদ সাগরে নিমগ্র হইতেছে। হে ভীমসেন! আপনার ঈদৃশ অসদৃশ বাক্য প্রবংগ আমার অভিশ্র আশ্চর্যা জ্ঞান হই-তেছে। বেমন শৈলের সঞ্চরণ অসম্ভব, আপনকার

মৃথ হইতে একপ বাকা নিঃসরণ হওরাও সেইকপ
অসকত। অতএব হে ভারত! আপনি যে কুলে
উৎপন্ন হইরাছেন এবং যে সমস্ত অলৌকিক কর্ম্মের
অমুষ্ঠান করিরাছেন, তৎসমুদার পর্যালোচন করিরা
উৎসাহ-সম্পন্ন হউন। হে বীর! বিষাদ পরিহারপূর্বক চিত্ত স্থির করুন। হে অরিক্সম! ভবাদৃশ
অসম-শৌর্যাশালী ব্যক্তির একপ প্লানিযুক্ত হওরা
কদাচ উপযুক্ত নহে। ক্ষজ্রিয়েরা স্কুকীর প্রতাপ-দারা
যাহা লাভ করিতে না পারে, তাহা আর তাহাদিগের যথার্থ উপভোগের বিষয় হয় না।

কুষ্ণ-বাক্যে পঞ্চ সপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৫॥

------8-----

বৈশস্পায়ন কহিলেন, নিতাকোধী, অসহনশীল ভীমসেন বাস্থদেবের উক্ত ৰূপ বাক্য শ্রবণৈ সদখের নাায় তৎক্ষণ মাত্র উত্তেজিত ও প্রত্যুত্তর প্রদানে সত্ত্র হইয়া কহিতে লাগিলেন, হে অচ্যুত! আমি এক প্রকার অমুষ্ঠানের মানস করিতেছি, কিন্তু তুমি আমাকে আর এক প্রকার বিবেচনা করি-তেছ ! সংগ্রামে আমার যে নিরতিশয় প্রীতি আছে এবং আমার পরাক্রম যে কখন মিখ্যা হয় না, দীর্ঘকাল একত্র সহবাস করায় তুমি অবশ্যই আ-মার তাদৃশ সত্ত্ব জানিতে পার ; কিন্তু কি আশ্চর্য্যের বিষয়, সকল জানিয়া শুনিয়াও যেন অনভিচ্ছের ন্যায় প্লবহীন ফ্রদ-মধ্যে ভাসমান হইতেছ এবং সেই নিমিত্তই আমাকে ঈদৃশ অযুক্ত-বাক্য দ্বারা ভর্মনা করিতেছ। হে মাধব! ভীমদেনের প্রকৃত স্বৰূপ জানিতে পারিয়া কোন্ ব্যক্তি তোমার মত এতাদৃশ অপ্ৰতিৰূপ বাক্য প্ৰয়োগ করিতে সমৰ্থ হয় ? তুমি, যে আমার যথার্থ স্বৰূপ জানিতে পার নাই এই নিমিত্তই আমাকে আপনার অসাধারণ পৌরুষ ও পরাক্রমের কথা ব্যক্ত করিতে হইল। আপন মুখে আপনার প্রশংসা করা সর্ববণাই গর্হিত কর্ম সন্দেহ নাই, বিস্তু কি করি তোমার অতি-

শর ভৎসনা বাক্যে তিরক্ত হইরা আত্মবলের পরিচয় না দিয়া আর ক্ষান্ত থাকিতে পারিলাম না। হে কৃষণ অধিল প্রজাপুঞ্জের উৎপত্তি স্থান ও আধারভূত এই বে অচল, অসীম ও অনন্ত **ज्**रलाक ७ क्वारलाक जनताकन क्रिटेंक्, यहा-পি স্যাথ ইহারা কুন্ধ হইয়া শিলান্তরের ন্যায় সহসা মিলিত হইয়া যায়, ভাহা হইলেও আমি বাহু-যুগল দারা এই সচরাচর লোকদমকে নিগৃহীত করিতে পারি। প্রকাণ্ড পরিঘ-যুগলের ন্যায় আমার এই ভুজ-দ্বয়ের মধ্যভাগে একবার দৃষ্টিপাত করিয়া দেখ; ইহাতে পতিত হইয়া পরিত্রাণ পায়, এই मम् ज्रा ज्रा अन मार्या विकास क्षा क्षा कि एक जिल्ला পাই না। আমি কোন ব্যক্তিকে আক্রমণ করিলে, গিরিরাজ হিমালয়, অপার জলনিধি, অথবা বজ্ঞ-ধারী স্বয়ং পুরন্দর, ইহাঁরাও বল প্রকাশ করিয়া আমার হন্ত হইতে তাহাকে রক্ষা করিতে পারেন না। হে অচ্যুত। পাগুবদিগের প্রতি আততারী. সমরযোগ্য ক্ষত্রিয় সকলকে ভূতলে নিঃকিপ্ত করিয়া আমি অনায়াসেই পাদতলে নিম্পেষণ করিতে থা-কিব। হে জনার্দ্দন! পূর্বের রাজন্যবর্গকে পরাজয়-পূৰ্ব্বক যে ৰূপে বশীভূত করিয়াছিলাম, তাহা কিছু তোমার অবিদিত নাই; তদ্বারাই ভূমি আমার বিক্রমের বিলক্ষণ পরিচয় পাইয়াছ। অথবা যদি উত্থানশীল প্রভাকরের দেদীপ্যমান প্রভা-নিকরের ন্যায় আমার প্রচণ্ডভর প্রভাপপুঞ্জের বিষয় অব-গত হইয়া না থাক, তবে সেই ঘোরতর তুমুল সংগ্রাম-সময়ে তাহা বোধগম্য করিতে পারিবে। ছুর্গন্ধ-যুক্ত ত্রণ স্থান উদ্বাটনের ন্যায় তুমি আ-মাকে ঈদৃশ কর্কশ বাক্য-সহকারে তির্স্কার করি-তেছ বটে, কিন্তু আমি আপন মতি অনুসারে তো-मारक এই যে कथा विननाम, जाहा जरशकाख আত্রীকে অধিক করিয়া জান। যে দিন সেই লো-कास्त्रकात्री मक्षणे दूषा अङ्ख ददेव, १५३ मित्रहे সকল সম্যক্ ৰূপে দেখিতে পাইবে। কেবল ভূমি

কেন? সকল লোকেই দেখিবে, আমি কখন গজানিরাই, রধীও অশ্ববারদিগকে দূরে নিংক্ষিপ্ত করিয়া কেলিতেছি, কখন অসীম রোষভরে ক্ষব্রিয়-শ্রেষ্ঠ মহা মহা বীরগণকে সংহার দশায় উপনীত করিতিছি, কখন বা প্রধান প্রধান সৈনিকদিগকে বিকর্ষণ করিতেছি। হে মধুস্থদন! আমার মজ্জাপ্রভাত দেহসার-সমন্তও অবসম হয় নাই এবং চিক্তও উৎকল্পিত হয় নাই; যদি সর্বলোক সংকুদ্ধা হইয়া আমার বিরুদ্ধে আগমন করে, তাহাতেও আমার কিছুমাত্র ভয় হয় না। তবে রূপাপর হইবার তাৎপর্যা আর কিছুই নহে, কেবল সৌহাদ্য প্রকাশ করা মাত্র। আমাদিগের ভরতবংশের যেন ধংস না হয়, এই ইচ্ছাতেই রূপা করিয়া সকল ক্রেশ সম্থ করিতেছি।

٠. بخير

ভীম-বাক্যে বট্সপ্ততিভ্রম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৭৬ ॥

ভগবান্ কহিলেন, আপনকার অভিপ্রার জানি-বার নিমিত্তই আমি প্রণয়-হেতু ইহা বলিয়াছিলাম, নতুবা ভর্মনা, পাণ্ডিত্য, ক্রোধ কি বলিবার ইচ্ছা-হেতু বলি নাই। আপনকার বেৰূপ মাহাত্ম্য, যাদৃশ পরাক্রম ও বে প্রকার কর্মা, তাহা সকলই আমার বিদিত আছে; অতএব সে নিমিত্ত আপনাকে তিরক্ষার করিতেছি না। হে পাগুব! আপনি আ-পনাতে যাদৃশ কল্যাণের সম্ভাবনা করিতেছেন, আমি তদপেকা সহস্রপ্তণ মঙ্গলের আশংসা করি-তেছি। হে ভীম! সর্ব্ব-রাজগণ-পূজিত বেরূপ সমু-ন্নত-বংশে আপনকার জন্ম হইয়াছে, আপনি বন্ধু, ৰান্ধৰ ও স্থেম্ম সহিত সৰ্বাংশেই তাহার উপ-युक्त, मरम्बर नारे। किंख र द्राकामत! सन् ७ माञ्च मश्कीय मत्मरान्त्रान धर्म निक्षा कतिवात অভিলাবী হইরা মনুব্যেরা একতর নিশ্য করিতে नेमर्थ इस ना ; रून ना याश श्रूकरवत्र अर्थनिक्तित হেন্তু হয়, তাহাই আবার তাহার বিনাশের কারণ

হইয়া থাকে; অতএব পুরুষের কর্ম সর্ব্বধাই সন্দিশ্ধ। দোষদর্শী বিচক্ষণ পণ্ডিতগণ কর্ম্মের এক প্রকার গতি স্থির করেন, কিন্তু সমীরণ-বেগের ন্যায় তাহা অন্যথা পরিবর্ত্তিত হইয়া উঠে। মনুষ্যক্ত কর্ম সম্যক্ ন্যায়োপপন্ন, স্থবিচারিত ও স্থনীতিসম্পাদিত হইলেও দৈব-কর্তৃক ব্যাহত হয়, আবার শীত উষ্ণ বৰ্ষা কুধা পিপাসা-প্ৰভৃতি অনমুষ্ঠিত দৈব কৰ্মও (भोक्रय-मह्कादत दिकल हहेशा भएए। याहा कल-ভোগের নিমিত্ত নির্দ্দিষ্ট হইয়াছে, সেই প্রারক কর্ম ভিন্ন পুরুষ স্বয়ং যে কর্ম্মের অনুষ্ঠান করে তাহাতেও তাহাকে বন্ধ থাকিতে হয় না; কেন না তিষ্বিরে 'জ্ঞান বা প্রায়শ্চিত্ত-দ্বারা সঞ্চিত পাপের নাশ হয় ' এইৰূপ শ্ৰুতি-শ্ৰুতি-সিদ্ধ প্ৰমাণ আছে। অতএব হে পাণ্ডব! কর্ম্ম ব্যতীত লোকযাত্রা নির্বা-হের আর অন্য গতি নাই। পরস্ক দৈবকর্ম ও পৌরুষ কৰ্ম উভয়ের সমন্বয়ে কল সিদ্ধি হয়, এইৰূপ বিবে-চনা করিয়া কর্ম্মের অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হওয়া কর্ত্তব্য। যিনি এইৰূপ কৰ্ত্তব্য বোধে কৰ্ম্মে প্ৰবৃত্ত হন, ভাঁহার অসিদ্ধি-পক্ষেও ব্যথা নাই, সিদ্ধি-পক্ষেও আহ্লাদ নাই। হে ভীমদেন! ভদ্বিষয়ে এইৰপ নিশ্চয়ই আমার বিবক্ষিত ছিল; শত্রুগণের সহিত যুদ্ধ করিলে একান্তই সিদ্ধি-লাভ হইবে, ইহা বক্তব্য ছিল না। অপিচ মানসিক ভাবের বিপর্যায় হইলে এক-বারে তেজোহীন হইয়া বিষয় ও গ্লানি প্রাপ্ত হওয়া উচিত নহে, এ নিমিত্তেও আমি আপনাকে ঐ সকল কথা বলিয়াছি। হে পাগুব! কল্য গৃতরাষ্ট্র-সন্নিধানে গমন-পূর্বক আপনাদিগের অর্থ হানি না করাইয়া শান্তি-সংস্থাপন নিমিত্তই সর্ব্বথা বত্নবান্ হইব। যদি তাহারা সন্ধিকরে, তাহা হইলে আমারও অনস্ত কীর্ত্তি, আপনাদিগেরও অভীফীসদ্ধি এবং তাহা-দিগেরও অনুত্তম মঙ্গল লাভ হইবে;কিন্তু তাহা না क्रित्रा यनि त्मरे व्यटवांथ क्लोत्रत्वत्रा मनीय वाकः অবহেলন-পূৰ্বক স্বমত রক্ষার্থেই অভিনিবিষ্ট হয়, তবে অবশাই ঘোরতর সমর কার্যোর অনুষ্ঠান হইবে, সন্দেহ নাই। হে ভীমসেন! ঐ যুদ্ধে আপনকার উপরেই সমন্ত ভার নিহিত রহিয়াছে। আপনি
ও অর্জুন উভরেই সেই ভার ধারণ করিয়া অন্যান্য
বোধগণকে বহন করিতে বাধ্য হইবেন; কেন না
যুদ্ধ হইলে আমাকে অর্জুনের সার্থি হইতে হইবে; আমি সার্থ্য কার্য্যে নিযুক্ত হই ইহাই ধনপ্রেরে কামনা, নতুবা আমার যুদ্ধ করিবার আকাজ্যা নাই এমন নহে। স্কৃতএব হে র্কোদর!
আপনকার ক্লীব-তুল্য বাক্যে সম্ভাষণ করাতে মতির
প্রতি আশক্ষা করিয়া আমি প্রভা-হীন তেজঃপুঞ্জ
পুনরুদ্ধীপিত করিয়া দিলাম।

কৃষ্ণ-বাক্যে সপ্তসপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৭॥

অর্জুন কহিলেন, হে জনার্দ্দন! আমার যাহা কিছু বক্তব্য, তাহা ধর্মরাজই বলিয়াছেন ; পরস্ত তোমার কথা শুনিয়া বোধ হইতেছে, তুমি ধৃতরাষ্ট্রের লোভ বশতই হউক অথবা আমাদিগের উপস্থিত দীনতা জনাই হউক, শাস্তি হওয়া কদাচ সুসাধ্য জ্ঞান করি-তেছ না। অপিচ তুমি ইহাও মানিতেছ যে, পরা-क्रम अकाम ना कतिरल शुक्ररमत मकलह निकल হয়; পুরুষকার ব্যতীত কোন কর্মণ্ড হইতে পারে ना এবং তজ্জना কোন कटलाम्य इट्वाद्र असावना নাই। এইৰূপ মনে করিয়া তুমি যে সকল কথার উল্লেখ করিলে, তাহা যথার্থই হইবে সংশয় কি ? কিন্তু সচরাচর অবিকল সেই ৰূপই ঘটিয়া থাকে, ইহা কোন মতে স্বীকার করা যায় না। কোনু বস্তু-কেই এককালে অসাধ্য বলিয়া বিবেচনা করা উচিত নহে। হে প্রভো! ভুমি আমাদিগের অবসাদ-জনক এই বিষমতর ক্লেশ দর্শনে সন্ধিবন্ধন হওয়া ছুম্কর জ্ঞান করিতেছ বটে, কিন্তু আমাদিগের কফে যাহা-দের কোন ফলোদয় নাই, সেই শকুনি ছুঃশাসন কর্ণ-প্রভৃতি ছুর্মভিগণের কর্মেই আমাদিগকে এই কর্ফ সম্ভ করিতে হইতেছে; স্থতরাং সম্যক্ ৰূপে সন্ধি-

अखार मन्माप्तिक हरेतन व्यवमार्ट मकत हरेरक পারে। অতএ**ব হে ক্নফ**! যাহাতে শক্রবর্গের **সহি**ত সন্ধিবন্ধন হয়, সর্বতোভাবে তাহারই যত্ন কর। হে বীর জনার্দ্দন ! প্রজাপতি ব্রহ্মা যেমন স্থর ও অস্তুর উভয় বর্গেরই দখা, দেইৰূপ পাণ্ডব ও কুরুদিগের মধ্যে তুমিই আমাদের প্রধান স্থৃহৃদ্। অতএব হে মধুস্থদন! কুরু পাগুবদিগের মানস-ত্ত্র নিরাকরণ-পূর্বক শান্তি-স্থধের সংস্থাপন কর। আমার বোধ ইইতেছে, আমাদিগের হিতামুষ্ঠান করা তোমার কদাচ তুষ্কর হইবে না, চেফা করিলে অবশ্যই স্থাসিদ্ধ হইবে। চেন্টাই বা আর কি? একবার গমন মাত্রেই তুমি আপন কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পন্ন করিতে পারিবে। হে বীর! ছুরাত্মা ছুর্য্যোধনের প্রতি বদি অন্য প্রকার আচরণ করা তোমার অভিপ্রেত হয়, তবে তোমার স্বেচ্ছানুসারেই তাহা নিষ্পন্ন হইবে। ফলত, তাহ্য-দের সহিত আমাদিগের সন্ধিই হউক অথবা তো-মার অভিপ্রেড যুদ্ধ করিতেই হউক, স্থবিচার-সহ্-কারে তুমি যেৰূপ অভিলাব প্রকাশ করিবে, তাছাই আমাদিগের গুরুতর ও সর্বথা আদরণীয়। হে মধু-স্থদন। সেই ছুফীত্ম। যথন ধর্ম্ম-নন্দনের স্থাইখেশ্বর্যা সহু করিতে না পারিয়া কোন ধর্মানুগত উপায়ের অসদ্ভাবে কপট পাশক্রীড়ারূপ নিষ্ঠুর উপায় অব-লম্বন-পূর্বেক তাঁহার সমস্ত রাজ্যধন অপহরণ করিয়। লইয়াছে, তথন তাহাকে সপুত্ৰ-বন্ধু-বান্ধবে বিনফী করাও কোন প্রকারে অনুচিত হইতে পারে না। ক্ষত্রিয়-কুলে এমন কোন্ ধনুর্দ্ধারী পুরুষ জন্মগ্রহণ করিয়াছে, যে ব্যক্তি যুদ্ধার্থে আহ্ত হইয়া প্রাণ-বিয়োগ-স্থলেও পরাত্মুখ হইতে পারে? হে বছ-পতে! স্থযোধন যখন আমাদিগকে অধর্মে পরা-জিত ও বনে প্রব্রজিত করিয়াছে, তথনই আমার বধ্যতা প্রাপ্ত হইয়াছে। অতএব হে রুঞ্চ! তুমি মিত্রের নিমিত্ত সম্প্রতি যেৰূপ অমুষ্ঠানের ইচ্ছা করিতেছ, ইহা বিচিত্র নছে। নিতান্ত মৃত্যভাব কি একান্তিক উগ্রতা অবলয়ন করিলেই বা কিরপে

উত্তম কার্য্য হইতে পারে? অথবা যদি ভোমার মতে তাহাদিগের এখনই বধ করা শ্রেয়ংকল্প বোধ হয়, ভুমি তাহাই অবিলয়ে নিম্পন্ন কর, তাহাতে কৈছুমাত্র বিচার করিবার প্রয়োজন নাই। হে মাধব! পাপরুদ্ধি ছুর্য্যোধন দ্রৌপদীরে সভা-মধ্যে আনয়ন করিয়া যাদৃশ ক্লেশ দিয়াছিল এবং তাহার সেই অত্যাচার যেৰূপে সহু করা হইয়াছিল, তাহা সকলই তোমার বিদিত আছে; অতএব হে মাধব! সে যে একণে পাগুরদিগের প্রতি সম্যক্ ন্যায়ায়ুসারে চলিবে, ইছা কখনই আমার বুদ্ধিতে আইসে না; বরং ইছাই বোধ হইতেছে যে, উয়র ভূমিতে বীজনপনের নাায় তাহা নিতান্তই নিম্ফল হইবে। অতএব হে রিফনক্লন! সম্প্রতি পাগুরদিগের হিতসাধন ও অনম্ভর কর্ত্র্ব্য বিষয়ে যাহা তোমার যুক্তিযুক্ত বোধ হয়, শীঘ্র তাহার অনুষ্ঠান কর।

অর্জুন-বাক্যে অউ সপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৮॥

ক্লফ কহিলেন, হে মহাবাহো পাণ্ডব! ভূমি বাহা বলিতেছ, তাহাই হইবে; আমি কুরু ও পাওব উভয় বর্গেরই কল্যাণ-প্রতিপাদনে সমুৎস্কুক হইব ; কিন্তু হে অর্জুন! দৈব ও মানবীয় উভয় প্রকার কর্মের সম্ভাবেই ইহা সম্পূর্ণ রূপে আমার আয়ন্ত। দেখ, মানুষ-কর্ম্মসহকারে ক্ষেত্র সকল রসবৎ ও পরি-শোধিত হইলেও দৈবক্ষত বৰ্ষণ-ব্যতীত তৎসমুদায়ে কদাপি কল-নিষ্পত্তি হয় না। তদিবরে কেহ কেহ যত্ন-সম্পাদিত বারিসেক পর্যান্ত পৌরুষের কথা বলি-তে পারেন, কিন্তু জল-দেচন করিলেও দৈববিড়য়নায় শুষ্ক হওয়াও নিংসন্দেহ দেখিতে পান। অতএব ইহাই নিশ্চয় করিয়া মহাত্মা পণ্ডিতগণ 'দৈব কর্মা ও মামুষ কর্ম উভয়েতেই লোক-হিতকার্যা সংযুক্ত রহিরাছে' বলিরা বর্ণন করিরাছেন। আমিও পুরুষ-কারে যত দূর হইতে পারে তাহা করিব; কিন্তু প্রাক্তন কর্মের খণ্ডন করিতে কোন প্রকারেই সমর্থ হইব না। হে পাৰ্থ! সেই ছুৰ্ম্মতি ছুৰ্য্যোধন একে ত ধর্ম-ভয় ও লোক-ভয় পরিত্যাগ-পূর্বক যদৃচ্ছাচারে প্ৰবৃত্ত হইয়াও তথাবিধ পাপকৰ্ম জন্য কিছুমাত সম্ভপ্ত হয় না, তাহাতে আবার শকুনি, কর্ণ ও ভ্রাতা ছুংশাসন-প্রভৃতি ছুফ মন্ত্রিগণ নিয়তই তাহার সেই পাপিষ্ঠ-বৃদ্ধির বর্দ্ধন করিতেছে; স্থতরাং সপরিবারে বিনফ হওয়া ব্যতিরেকে সে যে রাজ্য ত্যাগ করিয়া শান্তি-বিধানে সম্মন্ত হইবে, ইহা কোন প্রকারেই আমার বোধগম্য হয় না। ধর্ম্মরাজ যুধিষ্ঠিরও অব-নতি-দ্বার। আপন রাজ্য পরিত্যাগের ইচ্ছা করিতে-ছেন না এবং ছুর্মতি ছুর্য্যোধনও যাচ্যমান হইয়া তাহা কদাচ প্রত্যর্পণ করিবে না; স্কুতরাং তাহার নিকটে ধর্মরাজের অনুশাসন বাক্য ব্যক্ত করাই আমার অনুচিত বোধ হইতেছে। হে ভারত ! धर्मात्रोक (व अद्याकात्र कथा विलया मिरलन, পा-পাত্মা ছুর্যোধন তৎসমুদায় কদাচ নিষ্পন্ন করিবে না। কিন্তু তাহা না করিলেই সে সকল লোকের বধ্য হইবে, সন্দেহ নাই। হে ভারত! সেই ছুরাত্মা তোমাদিপের কৌমার কালে যখন সর্বদা অনিষ্ট-চেফা করিয়াছে এবং পরেও যুধিষ্ঠিরের ঐশ্বর্যা সন্দর্শনে অসহিষ্ণু হইয়া নিষ্ঠুরতর উপায়-দ্বারা তাঁ-হার রাজ্য লোপ করিয়াছে, তখন আমার ত নিশ্চয়ই বধার্হ হইয়া রহিয়াছে, অধিকম্ভ উপস্থিত পাপাচরণ নিমিত্ত সম্প্রতি ভূমণ্ডলস্থ সমস্ত মানবেরই বিনা-भान्त्राम इट्टा

হে কৌন্তের! বাহাতে তোমার সহিত আমার বিছেদ হুয়, তির্বিয়ে ছুর্য্যোধন বিস্তর যত্ন পাইয়াছিল;
পরস্ক তাহার সেই পাপময় অভিসন্ধি আমি কদাপি
গ্রাহ্ম করি নাই। হে মহাবাহো! তাহার বেরূপ মত
তাহাও তুমি জান এবং আমি বে ধর্মরাজের প্রিয়কার্য্য সাধনেই নিরত রহিয়াছি, তাহাও তোমার
বিদিত আছে। অতএব তাহার ছুর্মাতি এবং আপনার অভিপ্রায় বিলক্ষণ রূপে জানিয়া শুনিয়াও তুমি
অনভিজ্ঞের নাায় এক্ষণে কি নিমিন্ত আমার প্রতি

এৰপ আশঙ্কা করিতেছ ? বিশেষত, ভূভার-হরণার্থে স্বৰ্গ হইতে দেবতাদিগের অবতরণ-ৰূপ যে দিব্য বি-ধান আছে, তাহাও তোমার অগোচর নাই; অতএব হে পার্থ! শত্রুদিগের সহিত বিধিবিহিত সন্ধি-বন্ধন কি প্রকারে হইতে পারে? তবে আমা হইতে বাক্য বা কর্মা দ্বারা যত দুর হওয়া সম্ভব, তাহা অবশ্যই আমি করিব, কিন্তু তাহাদিগের সহিত্যে সন্ধি করি-তে সমৰ্থ হইব, এৱপ আশা ক্ষ্ণিতে পারি না। গত সংবৎসরে গো-হরণ সময়ে সে সেইৰূপ নিপীড়িত হইলে, ভীম পথি-মধ্যে তাহারে কি এই শান্তির কথা বলেন নাই ? তিনি যাক্সা করিলেও সে তাহা-তে সন্মত হয় নাই। কলত তুমি যখন তাহাদিগকে ব্ধ্য বলিয়া নিশ্চয় করিয়াছ, তথনই তাহারা পরা-ভূত হইরাছে। স্থযোধন এক ক্ষণের নিমিত্তেও লেশ মাত্র তুষ্ট না হউক, তথাপি ধর্মারাজের শাসন আমাকে সর্বাধাই প্রতিপালন করিতে হইবে এবং দেই ছুরাত্মার পাপ-কর্মত পুনর্ব্বার পর্য্যালোচন করিতে হইবে।

> কৃষ্ণ-বাক্যে একোনাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৭৯॥

নকুল কহিলেন, হে মাধব! ধর্মজ্ঞ ধর্মরাজ স্বভাবসিদ্ধ বদান্যতা-গুণের অনুবর্ত্তী হইয়া যে সমস্ত
বছবিধ বাক্যের উল্লেখ করিলেন, তাহাও আপনি
শুনিলেন এবং ভীমদেন ও ধনঞ্জয় রাজার মতানুসারে যেরূপ শান্তি ও বাছবীর্যা, উভয়েরই প্রসঙ্গ
করিলেন, তাহাও অবগত হইলেন এবং আপনার
মতও পুনংপুন প্রকটিত করিলেন; কিন্তু হে পুরুযোক্তম! অত্যে শক্রদিগের মত শ্রবণ করিয়া পশ্চাৎ
এ সমুদর অতিক্রম-পূর্বাক সময়ানুসারে যাহা উপযুক্ত বোধ হয় তাহাই করিবেন। হে শক্র-দমন
কেশব! বিশেষ বিশেষ নিনিত্ত অনুসারেই মতন্থির
করিতে হয় এবং তাহা করিলেই মনুষ্য সমুচিত
কার্য্য-নির্বাহে সমর্থ হইতে পারে। এক সময়ে

কোন বিষয় এক প্রকার অবধারিত হয়, কিন্তু সম রান্তরে তাহার অন্যথা হইয়া পড়ে। কলত **পৃথি**বীর সকল মনুষ্যই অনিত্য-মতি;--চিরকাল একৰূপ মতের অমুবর্ত্তী হইয়া কার্য্য করিতে পারে, এমন লোক অপ্রসিদ্ধ। হে ক্লফ ! দেখুন, যৎকালে আমর বনবাসে অদৃশ্য ছিলাম, তথন আমাদিগের এক প্রকার বুদ্ধি ছিল, কিন্তু এখন দৃশ্য হইয়া সে বুদ্ধির অন্যথা হইয়াছে। রাজ্যের প্রতি সম্প্রতি আমাদের যেরপ আদর হইতেছে, বনবাস সময়ে কখনই সেৰপ হয় নাই। হে জনাৰ্দন! এই দেখুন, আমর। বনবাস হইতে প্রত্যাগত হইয়াছি শ্রবণ করিয়া আমাদিগের সাহায্যার্থে এই সপ্ত অক্ষৌহিণী সেনা আপনকার প্রসাদে সমাগত হইয়াছে। অচিন্তা বল-(भोक्रयमाली এই সমস্ত পুরুষসিংহদিগকে সমর-স্থলে শস্ত্র ধারণ করিতে দেখিলে কোন্ ব্যক্তি ভয়-পীড়িত না হইবে? অতএব হে পুরুষ-সত্তম! আপনি কুরুমগুলী-মধ্যে গমন করিয়া প্রথমে সাম্ব্রাদ এবং পশ্চাৎ ভয়-প্রদর্শন-পূর্ব্বক এব্বপে বাক্য-প্রয়োগ করি-বেন যাহাতে সেই মন্দমতি স্থযোধন ভয়-বিচ-লিত না হয়। হে কেশব! দেখুন, যুধিষ্ঠির, ভীম-रमन, অপরাজিত অর্জুন, महद्दिन, আমি, আপনি, বলদেব, মহাবীর্যা সাত্যকি, মহাবাছ মংস্যরাজ, অমাত্য-সহ পাঞ্চালেশ্বর, ধৃউচ্চার, বিক্রম-শালী কাশিরাজ, চেদিপতি ধৃউকেতু-প্রভৃতি বীর পুরু-ষেরা সমরে প্রবৃত্ত হইলে, মাংসশোণিতধারী কোন্ মনুষ্য আমাদিগের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিতে পারি-বে ? অতএব হে মহাবাহো! আপনি তথায় গমন মাত্রেই ধর্মরাজের অভিলবিত বিষয় সম্পূর্ণ রূপে সাধন করিবেন, সন্দেহ নাই। হে অনঘ! আপন-কার উক্ত হিতবাক্য-সমস্ত অন্য কেহ বুঝিতে পাক্লক না পারুক, অস্তত বিছর, ভীম, দ্রোণ ও বাহ্মিক, ইহাঁরাও হৃদয়ক্ষম করিতে সমর্থ হইবেন এবং তদ-মুসারে অনুনয় বিনয়-ছারা জনাধিপ ধৃতরাষ্ট্রকে এবং সহামাত্য প্রাচার প্র্যোধনকেও ভাহা বুঝাই-

তে পারিবেন। হে জনার্দন! আপনি বক্তা এবং বিষয়কে প্রশৃত্বল করিতে না পারেন?

> নকুল-বাক্যে অশীতিত্তম অধ্যায় সমাপ্ত। ৮০॥

সহদেব কহিলেন, হে অরিন্দম! ধর্মরাজ যে কথার উল্লেখ করিলেন, যদিও তাহা সনাতন ধর্মানুষারী বটে, তথাপি যাহাতে যুদ্ধ হয়, তাহাই আপনাকে করিতে হইবে। হে দাশার্হ! যদি কৌর-বেরা আপনা হইতেই পাগুবদিগের সহিত শান্তি ইচ্ছা করে, তথাপি তাহাদিগকে আমাদের সহিত সমরে প্রবর্তিত করিতে হইবে। হে কৃষ্ণ! দ্রুপদনন্দিনী পাঞ্চালীকে সেইন্ধপে সভাস্থলে আনয়ন করিতে দেখিয়া, স্থযোধনের সংহার ব্যতীত কি প্রকারে তাহার প্রতি আমার ক্রোধের শান্তি হইতে পারে? ভীমার্জুন ও ধর্মরাজ যদিচ ধর্মানুসারেই চলিতে চাহেন, তথাপি আমি সে ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া সংগ্রামে তাহার সহিত কেবল যুদ্ধ করিতেই আগ্রহান্থিত হইতেছি।

সাত্যকি কহিলেন, হে মহাবাহো! মহামতি সহ-দেব যথার্থই বলিয়াছেন; স্থযোধনের প্রতি আমারও যে কোপ আছে, তাহাকে বিনই করিলেই সে কোপের শান্তি হইতে পারে। অরণ্য-মধ্যে পাশুব-দিগকে চীরাজিনধারী ও বছতর-ছু:খ-পরীত দৃষ্টি করিয়া আপনারও যাদৃশ কোধোদয় হইয়াছিল, তাহা কি আপনার স্মরণ হয় না? অতএব হে পুরু-ধোন্তম! রণ-কর্কশ বীরবর মাজীপুত্র যে কথার প্রসঙ্গ করিলেন, সমগ্র যোধগণেরও তাহাতেই সন্ম-তি আছে।

বৈশস্পায়ন কহিলেন, মহামতি সাত্যকি এই কথা বলিয়া নিরস্ত হইলে, স্বাদিক্ হইতেই সৈনিক দিগের ঘোরতর সিংহ্নাদ হইতে লাগিল; সকলেই " সাধু সাধু " বলিয়া তাঁহার স্বাতোভাবে প্রশংসা

করিতে থাকিল এবং সকলেই সমরোৎসাহ প্রকাশ করিয়া তাঁহারে অতিশয় আক্রাদিত করিয়া তুলিল। সহদেব-বাক্যে একাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥৮১॥

रियम्लायन कहिलन्, चिंठ क्रूक वर्ग ७ स्नुनीर्च क्रिंग धार्तिनी ज्ञानिमनी यमाश्विनी क्रूका महात्रथ সহদেব ও সাত্যবিশ্ব উক্তৰূপ প্ৰস্তাবে ভূৱি ভূরি প্রশংসা করিলেন, কিন্তু ধর্মারাজের প্রস্তাবিত ধর্মার্থ-সংযুক্ত ও হিতকর বাক্য প্রবণ করিয়া, বিশেবত ভীমসেৰকে শান্তি-সমুৎস্থুখ দেখিয়া অত্যন্ত চুৰ্ম্মনায়-মানা ও শোকাকুলা হইয়া অগ্রুপূর্ণ নয়নে রোদন করিতে করিতে আসন-সমাসীন দাশার্হ রুঞ্চকে কহিতে লাগিলেন, হে মহাবাহো ধর্মজ্ঞ মধুস্থদন জনার্দ্দন ! ধৃতরাষ্ট্র পুত্র অমাত্য-বর্গের সহিত মিলিত हरेशा প্রতারণা অবলম্বন-পূর্ব্বক পাণ্ডবদিগকে যে ৰূপে স্থখভংশিত করিয়াছে, তাহাও তোমার বিদিত আছে এবং সঞ্জয় এখানে আগমন করিলে রাজা যুধিষ্ঠির তাহাকে নির্জ্জনে লইয়া অগ্রে আপনার যে ৰূপ মন্ত্ৰণা শ্ৰবণ করাইয়াছিলেন, পরে বিদায় কালে তাহাকে যে কথা বলিয়া দিয়াছিলেন, তাহাও তোমার স্থগোচর আছে। হে মহাদ্যুতি-সম্পন্ন কেশব! তিনি ছুর্য্যোধন ও তাহার স্থৃহদ্বর্গকে বলিবার নিমিত্ত এইৰূপ নির্দ্দেশ করিয়াছিলেন, যে আমাদিগকে অবিস্থল, तृकञ्चल, মাকन्দी, বারণা-বত ও অবশিষ্ট কোন একখানি গ্রাম, এই পাঁচ খানি গ্রাম প্রদান করিতে হইবে। কিন্তু হে রুঞ্। স্থােধন সন্ধিপ্রার্থনাকারী হ্রীমান্ যুখিষ্ঠিরের এই কথা শুনিয়া গ্রাহ্য করিলনা। অতএব হে জনার্দ্দন! যদি বিনা রাজ্য-প্রদানে ছুর্য্যোধন সন্ধি করিতে ইচ্ছুক হয়, তবে সেখানে গমন-পূর্বক কোন ক্রমে তাহা করা কর্ত্তবা নহে। হে মহাবাহো। পাণ্ডবেরা স্ঞ্জয়-গণের সহিত মিলিত হইয়া অবশাই সেই ক্রেব্ধ-ভূরিষ্ঠ ভয়ন্কর কৌরব সৈন্যের প্রতিকূলে অবস্থিত হইতে পারিবেন। হে মধুস্থদন! যথন সাম বা দান-দারা ভাহাদিগের নিকট কোন অর্থই সিদ্ধ হইবার সম্ভাবনা নাই, তথন আর তাহাদের প্রতি রুপা করা তোমার কর্তব্য নহে? হে ক্লফ ! যাহারা সাম বা দান-দারা উপশাস্ত না হয়, সেই সকল শত্রুর প্রতি জীবিতাকাক্ষী ব্যক্তির দণ্ড- প্রয়োগ করাই যথার্থ কর্ত্তব্য। অতএব হে মহাবাহো অচ্যুত! সদৈন্য পাওবদিগের সহিত মিলিত হইয়া ভোমারও কৌ-রবগণের উপরে অবিলয়ে মহাদণ্ড নিক্ষেপ করা কর্ত্তব্য হইতেছে। হে রুষণ! একর্ম পাগুপুত্রগণেরও উপযুক্ত এবং তোমারও যশস্কর, বিশেষত ইহা নিষ্পন্ন করিতে পারিলে ক্ষজ্রিয়দিগের পক্ষে অতীব স্থাবহ হয়; কেন না ক্ষজ্ঞিয়ই হউক বা ব্ৰাহ্মণ ব্যতীত অক্ষজ্রিরই হউক, লোভ-পরারণ হইলে তা-হাকে নিহত করা স্বধর্মানুষ্ঠায়ী ক্ষজ্রিয়জনের অবশ্য কর্ত্তব্য কর্ম। পরস্ক ব্রাহ্মণ সর্ব্ব পাপে অবস্থিত হইলেও কোন প্রকারে বধার্হ হইতে পারেন না; বেহেতু তাঁহারা সর্ব্ব বর্ণের গুরু এবং দানীয় দ্রব্য সকলের অগুভোজী। হে জনার্দন! অবধ্যকে বধ করিলে যাদৃশ দোবের সম্ভাবনা, বধ্যের অবধেও যে তাদৃশ দোষের আস্পদ হইতে হয়, তাহা ধর্মজ্ঞ পণ্ডিতেরা স্পফই ব্যক্ত করিয়াছেন। অতএব যা-হাতে সেই দোষ ভোমাকে স্পর্শ করিতে না পারে, সসৈনিক সঞ্জয় ও পাগুবদিগের সহিত একবাক্য হইয়া ভুমি তাহারই বিধান কর।

হে কেশ্ব! ভোমার নিকটে আমার কোন বিষরই গোপন করিবার নাই, যখন যাহা বলিতে হইরাছে তাহাই অসঙ্কোচে ব্যক্ত করিরাছি; এক্ষণে
পুনরুক্ত হইলেও বিশ্বাস-হেতুক তোমারে আরও
কতকগুলি কথা বলিতেছি শ্রুবণ কর। - দেখ্র দেখি,
এই পৃথিবী-মধ্যে আমার মত হতভাগিনী সীমন্তিনী
আর কে আছে? হে ক্লফ! আমি ক্রপদরাজের
ছহিতা, বেদীমধ্য হইতে উৎপন্না, ধৃউছ্যুন্মের ভগিনী এবং তোমার প্রিয় সখী। আজমীয়-কুলে পরি-

ণীতা হইয়া আমি মহান্ধা পাণ্ডুরাজের সূবা এবং পঞ্চ-বাসব-সম-তেজন্বী পাঞ্পুল্লগণের মহিনী হই-রাছি। ঐ পঞ্চ বীরের ঔরসে আমার পাঁচটি মহা-রথ পুত্র হইরাছে। হে রুঞ্চ! অভিমন্থা তোমার যাদৃশ স্নেহভাজন, আমার পুজেরাও ধর্মত ভোমার সেইৰপ প্ৰীতি-পাত্ৰ। হে কেশব! এতাদৃশ সৌ-ভাগ্য-লক্ষণবতী হইয়াও আমাকে, তুমি জীবিত ধাকিতে, পাণ্ডুপুত্রগণের সাক্ষাতেই সভায় আনীতা হইয়া কেশগ্ৰহাদি-জনিত অশেষবিধ ছুঃসহ ক্লেশ পাইতে হইয়াছে! পাগুৰগণ এবং পাঞ্চাল ও বৃক্ষি-বংশীয়েরা জীবিত থাকিতেও আমি সভা-মধ্যে থাকিয়া ছুফুমতি পাপিষ্ঠগণের দাসী হইয়াছিলাম! তাহা দেখিয়াও যখন পাণ্ডুতনয়েরা রোষ-খুনা ও নিশ্চেফ হইয়া রহিলেন, তথন আমি 'হে গোবিন্দ! আমারে পরিতাণ কর' এই বলিয়া মনে মনে কেবল তোমাকেই চিন্তা করিয়াছিলাম। হে কেশব! অনন্তর যৎকালে শশুর মহাশয় অন্ধরাজ ধৃতরাষ্ট্র আমাকে বলিলেন "পাঞ্চালি! ভুমি আমার বছ-মতা ও বর-প্রদান-যোগ্যা; অতএব বর প্রার্থনা কর " তথন আমি 'পাণ্ডবদিগের দাসত্ব না থাকে এবং তাঁহারা আ<mark>পন আপন শোভন রধ</mark> ও আয়ুধ ममञ्ज भूनतार श्राश्च इन, देशहे चामात श्रार्थना ' এই কথা বলিলে সক**লে দাসত্ব হইতে মুক্ত হ**ইয়া বনবাসার্থে প্রস্থান করিয়াছিলেন। **অতএব হে পু**গু-রীকাক্ষ জনার্দ্দন! আমার এবশ্বিধ তুঃখ-সমূহের বিষয় তুমি বিশেষৰূপে অবগত আছ; এক্ষণে পতি, জ্ঞাতি ও বান্ধবগণের সহিত আমারে পরিত্রাণ কর। হে কৃষণ আমি ধর্মত ভীম ও ধৃতরাষ্ট্র উভয়েরই পুত্রবধু; কিন্তু তাঁহাদিগের সাক্ষাতেই গুরাত্মা ছুর্য্যো-ধন আমাকে বল-পূর্বক দাসী করিয়াছিল। অভএব তাদৃশ ছংসহ ব্যাপারের অনুষ্ঠান করিয়াও ধর্থন সেই নরাধম মুহুর্ত্ত কাল মাত্রও জীবিত রহিয়াছে, তথন পার্থের ধমুম্মন্তাতেও ধিক্ এবং ভীমসেনের

পরাক্রমেও ধিক্। হে ফুক্ষ! যদি আমি তোমার.

অনুগ্রহের পাত্রী হই,—আমার প্রতি যদি তোমার ক্লপা থাকে, তবে ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রের প্রতি তুমি সম্পূর্ণ কোপ-বিধান কর।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, লোহিতাপাঞ্চী পদ্মান্দী গঙ্গেন্দ্রগামিনী বরারোহা পাঞ্চালী কাতরভাবে এই ৰূপ সম্ভাষণ করিয়া মৃদ্ধ অথচ কৃটিল অগ্রভাগ-যুক্ত, श्रम्मत नीलवर्ग, नरानानम्कत्र, मर्व्यगत्य अधिवानिङ, দর্ব লক্ষণ-সম্পন্ন, মহাভুজগ-সদৃশ কেশপাশ বাম হত্তে ধারণ-পূর্বাক পদ্মপলাশলোচন ক্রফের সমীপ-বর্ত্তিনী হইয়া অক্ষপূর্ণ-লোচনে পুনরায় এই কথা বলিলেন, হে পুগুরীকাক্ষ! তুমি শত্রুগণের সহিত দন্ধি করিতে ইচ্ছুক হইতেছ বটে, কিন্তু সমস্ত কার্য্য কালে, জুঃশাসন-কর-কলিত এই কেশ-পাশের কথা তোমার যেন স্মরণ থাকে। হে কৃষ্ণ! যদি ভীমার্জুন मीनठा व्यवनद्यन कतिया এकास्ट्रे मिन्न-वन्नात्न व्यक्ति-লাষ করেন, তথাপি আমার হৃদ্ধ পিতা মহারথ পুদ্রগণের সহিত মিলিত হইয়া যুদ্ধ করিবেন ; আ-মার মহাবীর্য্যশালী পঞ্চ পুজেরাও অভিমন্মাকে অত্যে লইয়া কুরুদিগের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হই-বে। হে মধুস্থদন! যদি আমি ছুঃশাসনের সেই শ্যামবৰ্ণ হস্তটা সম্পূৰ্ণ ৰূপে ছিন্ন ও ধূলি-সমাকীৰ্ণ হুইতে না দেখি, তবে আর আমার এই শোক-मन्रश्च ऋमरत्रत रकान कारलई मास्त्रि इटेरवना। आमि अमीश्व-भावक-जूना अवन माकानन क्रमः मरश था-রণ করিয়া কেবল সময় প্রতীক্ষায় এই ত্রয়োদশ বর্ষকাল কথঞ্চিৎ অতিবাহিত করিয়াছি, কিন্তু এক্ষণে ভীমের বাকাশলো পীড়িত হইয়া আমার সেই ক্রদর বিদীর্ণ হইরা যাইতেছে ! হা ! এতকাল পরে অদ্য এই মহাৰাছর ধর্মের প্রতি দৃটি হইল!

পীনায়ত-নিতয় বিস্তীর্ণ-লোচনা ক্রফা বাষ্প-গদাদ কণ্ঠে এইকপ বছতর কাতরোক্তি বিদ্যাস-পূর্ব্ধক বন ঘন উৎকম্পের সহিত সশব্দে রোদন করিতে লাগিলেন। তাঁহার শরীরক্থ ধাতু-সমস্ত যেন প্রদীপ্ত তুংখানলে দ্রবীভূত ও নেত্রজলে পরিণত হইয়া নি-

বিড়তর কুচ-দ্বয়ে অভিবর্ষণ করত বক্ষস্থল প্লাবিত করিতে থাকিল। তথন ক্লফ তাঁহারে সান্ধনা করি-বার উদ্দেশে কহিতে লাগিলেন, কুঞে! ভুমি যেমন একণে রোদন করিতেছ, সমস্ত ভরতকুল-কার্মিনী-দিগকেও অচিরেই এইৰূপে রোদন করিতে দেখিবে। হে ভীৰু! জ্ঞাতি বান্ধৰ সকল বিনফ হইলে তাহা-দিগকে তোমার মতু রোদন করিতে হইবে। হে ভাবিনি! ভুমি যাঁহাদিগের প্রতি কুপিতা হইয়াছ, তাহারা অবশাই হতমিত্র ও হত বল হইবে, সন্দেহ नारे। आमि जीमार्ज्जून ७ नकून महरतरतत महिल মিলিত হইরা যুধিষ্ঠিরের নিদেশে এবং বিধি-নির্মিত অদৃষ্টের নিয়োগে নিশ্ময়ই তাহা প্রতিপাদন করিব। কাল-পক্ক ধৃতরাষ্ট্র-পুজেরা যদি আমার কথা রক্ষা না করে, তবে নিঃসন্দেহ নিহত ও ধরাশায়ী হইযা শৃপাল কুরুরাদির ভক্ষণীয় হইবে। হে পাঞ্চালি! যদি হিমালয় পৰ্বতও কখন স্বস্থান হইতে স্থলিত হইয়া পড়ে, যদি বস্থন্ধরাও শতধা বিদীর্ণা হইয়া যায়, যদি নক্ষত্ৰ-পুঞ্জ-সম্বলিত নভোমগুলও পতিত হয়, তথাপি আমার এই বাক্য ব্যর্থ হইবার নহে। আমি সত্য করিয়া তোমার নিকটে প্রতিজ্ঞা করি-তেছি, তুমি স্বামীদিগকে অচিরেই বীতশক্র ও এী-সমস্বিত দেখিতে পাইবে ; অতএব রোদন পরিহার-পূর্ব্বক বাষ্প সম্বরণ কর।

দ্রোপদীকৃষ্ণ-সম্বাদে দ্বাদীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৮২॥

অর্জুন কহিলেন, হে কেশব! তুমিই এক্ষণে কুরুবংশীয়দিগের অনুস্তম স্থকদ্। তুমি উভর পক্ষের রই নিত্য সম্বন্ধী ও প্রীতিপাত্র এবং উভর পক্ষের শাস্তি সংস্থাপনেও সমর্থ। অতএব যথন কুরুপাণ্ডব্দিগের কুশল প্রতিপাদন করাই তোমার কর্ত্তব্য, তথন অন্যমতি না করিয়া অগ্রে তাহার অনুষ্ঠানেই যত্ন করে। হে শক্রনাশন পুগুরীকাক্ষ! তুমি অসহনশীল ভ্রাতা স্থ্যোধন-সমিধানে গমন করিয়া শাস্তি

নিমিন্ত যাহা কিছু বালতে হয় বল। তাহাতেও যদি সেই নির্কোধ ধর্মার্থসংযুক্ত ভবছুক্ত কল্যাণময় হিত-বাক্য গ্রহণ না করে, তবে নিতাস্তই ছুর্দেবের বশ-বর্ত্তী হইবে।

কৃষ্ণ কহিলেন, হাঁ; যাহা ধর্মসম্মত, আমাদিগের হিত-জনক অথচ কুরুগণের মঙ্গল-কর হয়, তাহাই সম্পাদন করিবার উদ্দেশে আমি মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র-সমীপে গমন করিব।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, শর্ৎ ঋতুর শেষে হিমাগম হইলে যৎকালে সকল শস্য সম্পত্তির আবির্ভাব হয়, সেই কার্ডিক মাসের রেবতী-নক্ষত্রযুক্ত কোন এক দিবসে, নিশাবসানে বিমল অথচ কোমল করশালী দিবাকরের উদয়োপক্রমে মিত্রদৈবত মুহুর্ভ সম্প্রাপ্ত **इहेटल, ऋ। इ। ऋथ-मन्भन्न विलट्धिर्श कृष्ण, अविवृद्यम्**त স্তুতিপাঠ প্রবণে বাসব যেমন বীত-নিদ্র হন, সেই-ৰূপ বিশ্বস্ত ব্ৰাহ্মণগণের সঙ্গল্য, পবিত্র ও স্থন্ত বচনা-বলি শ্রবণ করিতে করিতে গাত্যোপান করিয়া শৌচ-ক্রিয়াদি প্রাতঃকৃত্য-সমস্ত সমাপনানন্তর স্নাত ও অলম্বৃত হইয়া প্রথমত স্থ্য্য ও পাবকের উপাসনা করিলেন, পরে র্য-পৃষ্ঠ-স্পর্শন, ব্রাহ্মণদিগকে অভি-বাদন, অগ্নি-প্রদক্ষিণ এবং সম্মুখে মাঙ্গল্য দ্রব্যজাত সন্দর্শন করিয়া যুধিষ্ঠিরোক্ত বাক্যের অনুস্মরণ-পূর্ব্বক শিনির পৌজ দাতাকিকে কহিলেন, শস্থ, চক্র, भना, जून, मेक्टि ও অন্যান্য প্রহরণ-সমন্ত রুখোপরি স্থাপিত কর; যেহেতু ছুর্য্যোধন, কর্ণ ও শকুনি-প্রভৃতি সকলেই ছুরাদ্মা; শত্রু ছুর্বল হইলেও বল-বান্ ব্যক্তির তাহাকে অবজ্ঞা করা কর্ত্ব্য নহে।

অনন্তর অগ্রধারী ভৃত্যেরা গদাধারী চক্রপাণি কেশবের সেই আজ্ঞা গ্রহণ করিয়া তদীয় রথসজ্ঞা নিমিত্ত অগ্রসর হইল এবং সেই প্রদীপ্ত-কালাগ্নি-ভুল্য ভৃতল-প্রধাবী হইয়াও আকাশগামীর ন্যায় দ্রুত-সঞ্চারী, চক্রস্থা-সদৃশ বিচিত্র চক্রন্তরে সমল-স্কৃত, অর্দ্ধচক্র চক্র মৎস্য ও মৃগ পক্ষি-সমূহের প্রকৃতি এবং বিবিধ পুষ্প ও মণিরত্নাদি-দারা সর্ব্বত স্লেশা- ভিত, অভিনব-স্থ্যসদৃশ-সমুজ্জল, স্থর্হৎ অংশচ চার্ক্রদর্শন, সর্বাঙ্গেই মণিকাঞ্চনাদি-বিচিত্রিত, শোভন
ধজ-পতাকা-সমন্থিত, সর্ব্বসামগ্রী-স্থসজ্জিত, বাাঘ্রচর্ম্মে পরিবেটিত, শক্রগণের অনভিভবনীয় অথচ
যশো-বিলোপী, যতুবংশের আনন্দবর্জন, অসামান
রথখানি সর্বস্থায় ভূষিত করিয়া পরিশেষে শৈব্য,
স্থাীব, মেঘপুষ্পা ও বলাহক-নামা সকল গুণ-সম্পন্ন
স্থাসিদ্ধ অশ্ব-চতুই্টয়কে স্থানাহার করাইয়া তাহাতে
সংযোজিত করিল। অনন্তর বিহঙ্গরাজ গরুড় আন
সিয়া ক্রন্থের অসীম মহিমার সমধিক সম্বর্জন করত
রথ-ধজে অধিষ্ঠিত হইল।

তথন পুরুষোত্তম শৌরি সাত্যকি-সমভিব্যাহারে স্থুমেরুশিখর-সদৃশ, সজল-জলধর ও ছুল্ছুভির গভীর-শব্দান্তুকারী, কামগামী বিমানের ন্যায় সেই পরম-রমণীয় রথোপরি আৰু হইয়া তদীয় নির্ঘোষ-সহ কারে পৃথিবী ও অন্তরীক্ষমগুল নিনাদিত করত শুভ যাত্রা করিলেন। তৎকালে আকাশ মেঘশুন্য হইল। শুভ-স্থাক অনুকূল বায়ু বহন করিতে লাগিল। ধূলি-সমস্ত উপশান্ত হইয়া পাড়ল। মঞ্চল-কর মৃগ-**পক্ষি-मकल यथाक्राय अञ्चलकामी इहेन्ना मध्**स्मन বাস্থদেবের দক্ষিণ ভাগ দিয়া অমুগমন করিতে লাগিল। সারস, শতপত্র ও হংস সমস্ত মঙ্গলাবহ ধনি করিতে করিতে সর্ব্ব-দিকেই তাঁহার অমুবর্ত্তন করিতে থাকিল। মন্ত্রাছতি-সহকারে মহাহোম কার্য্য হইবার সময়ে পাবক দক্ষিণাবর্ত্ত-শিখ ও ধুম-भूना रुरेल। विभिष्ठ वामाप्तव, भूतिक्राम, शरा, जन्ध. শুক্র, নারদ, বাল্মীক, মরুন্ত, কুশিক, ভৃগু-প্রভৃতি ব্ৰন্ধৰ্ষি ও দেবৰিগণ সমবেত হইয়া যদ্ধকুল-স্কুখাবছ বাসবানুজ গোবিন্দের দক্ষিণ পার্শ্বে অবস্থিত হই-লেন। এই সমস্ত মহাভাগ সাধু মহর্বিগণ-কর্তৃক পুজিত হইয়া কৃষ্ণকৌরবগণের সদনাভিমুখে প্রস্থান করিলেন। কুন্তীপুত্র যুধিষ্ঠির, ভীম ও অর্জ্জুন, মার্জা-স্থৃত নকুল সহদেব এবং বিক্রাস্ত চেকিতান, চেদি-পতি ধৃষ্টকেতু, মহারথ ক্রপদ, কাশীরাজ, শিখণ্ডী,

ধৃউত্বাস, কেকয় ও পুদ্রগণের সহিত বিরাট-প্রভৃতি কাল্রিরের। কার্যা-নিম্পান্তি নিমিত্তে কিয়ৎ দূর পর্যাস্ত কাল্রির্মন্ত বাস্তদেবের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিলেন। অনস্তর ছাতিমান, ধর্মরাজ যুধিটির বছক্ষণ পর্যাস্ত গোবিন্দের অমুগমন করিয়া রাজগণসলিধানে তাঁহাকে তৎকালোচিত এই কথা বলিয়া দিলেন। যিনি কাম, কোধ, ভয় বা কোন প্রকার প্রয়োজন-সাধন নিমিত্ত কথন অন্যায়ের অমুবর্তন করেন না; যিনি স্থিরবৃদ্ধি, লোভ-বর্জিত, ধর্মজ্ঞ, ধৃতিমান, সর্বাভূতের অম্বর্যামী ও সর্বাজীবের ঈশ্বর; সেই সর্বাগ্তণ-সম্পন্ন, শ্রীবৎসলাঞ্ছন, প্রতাপবান দেব দেব কেশবকে আলিক্ষন করিয়া কুন্তীতনয় এই রূপ সন্দেশ করিতে লাগিলেন।

कहिरलन, रह कनार्फन! रय महीयत्री মহিলা আমাদিগকে শৈশবাবধি পরিবর্দ্ধিত করিয়া আসিয়াছেন ; যিনি নিরম্ভর উপবাস, তপস্যা, স্বস্ত্য-য়ন, দেবতা-পূজা, অতিথি-সংকার ও গুরুজন-শুঞ্জ-ষায় নিরতা আছেন ; যাঁহার পুজের প্রতি প্রীতি ও বৎসলভার ইয়ন্তা নাই ; যাঁহার প্রতি প্রীতি করা ব্যতীত আমাদিগেরও অন্য গতি নাই; তর্নী যেমন তিমি-মকর-কুদ্রীরাদি ভীষণ-জলজম্ভ-কুল-সঙ্কুল সা-কাৎ ক্লতাম্ভ স্বৰূপ অৰ্ণৰ হইতে উদ্ধার করে. সেই ৰূপ যিনি ছুৰ্যোধন-প্ৰযোজিত মহা মহা ভয় হইতে ! আমাদিগকে বছবার রক্ষা করিয়াছেন এবং আমা-দিগের নিমিত্তে সতত বছতর ছংখ অনুভব করি-য়াছেন ; ছু:খ সহনের অযোগ্যা সেই কুম্ভী দেবীকে কুশল বার্তা জিজ্ঞাসা করিও। ছে অমিত্র-কর্ষণ মাধব! দাৰুণ পুক্ত-শোকে তিনি অতীব বিধুরা আ-ছেন; অতএব পুনঃপুন আশ্বাস প্রদান করত পাগুব-দিণের নাম পরিকীর্তন-পূর্বক তাঁহারে অভিবাদন ও আলিঙ্গন করিও। হে অরিন্দম!ক্যোন প্রকারে ক্লেশের পাত্রী না হইয়াও তিনি বিবাহকালাবধি খশুরাদি-কৃত তুঃখ ও অপকার-সমস্ত অবলোকন করত কেবল ছুঃখই অমুভব করিতেছেন। হে কুষ্ণ!

আমার এমন স্থধের সময় কি কখন উপস্থিত হই-বে, যৎকালে আমি অশেষ-ক্লেশ-পতিতা জননীকে স্থানী করিতে পারিব! আহা! বন-গমন-সময়ে তিনি পুত্রগণের আসঙ্গ-লালসায় দীনভাবে রোদন করিতে করিতে আমাদিগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমানা হইয়াছিলেন, কিন্তু আমুরা তাঁহারে পরিত্যাগ করি-য়াই অরণ্যে প্রস্থান করিয়াছিলাম! হে কেশব ছুংখ-সমূহে পতিত হইলেই যে মনুষোর মৃত্যু হয়, এমনও নিশ্চর নাই। জননী পুত্রগণের মনঃপীড়ায় গাঢ়তর পীড়িতা আছেন, বিশেষত যতুবংশীয়ের তাঁহার যথোচিত সৎকার করিতেছেন, স্বুতরাং এপর্য্যন্ত জীবিতা থাকিলেও থাকিতে পারেন; যদি থাকেন, তবে আমার বাক্যে তুমি তাঁহারে অভিবা দন করিও এবং কুরুবর ধৃতরাষ্ট্র, বয়োধিক রাজগণ, ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ, অশ্বত্থামা, বাহ্লিক, সোমদন্ত ও ভরতবংশীয় সমস্ত মানভাজন মানবগণকে, তথা কুরুগণের মন্ত্রধারী অগাধ-ধীশক্তি-সম্পন্ন সকল-ধর্ম্মা-ভিজ্ঞ মহাপ্রাজ্ঞ বিহুরকে আমার প্রণাম ও আলি-**अ**न जानाई ७।

যুধিন্ঠির সকল মহীপাল-সমকে কেশি-নিস্থদন ক্ষকে এইৰপ কহিয়া পরিশেষে তাঁহার অমুজ্ঞা গ্রহণ-পূর্বক প্রদক্ষিণ করিয়া প্রতিনির্ভ হইলেন। পরস্ক ধনঞ্জয় তথন প্রতিনির্ভ না হইয়া গমন করিতে করিতে স্বীয় সথা পরবীরঘাতী অপরাজিত পুরুষোভ্তম দাশাইকে কহিলেন, বিভো গোবিন্দ! পূর্বে যথন মন্ত্রহান্থির করা যায়, তথন আমাদিগের অর্ধরাজ্যের প্রার্থনা করাই যে অবধারিত হয় তাহা সমুদয় রাজগণের বিদিত আছে। হে মহাবাহো জনার্দন! সম্প্রতি স্বযোধন যদি কোন প্রকারে আমাদিগকে অবমাননা না করিয়া যথোচিত সংকার-প্রদর্শন-পূর্বক অকপটে ও স্বছ্লেন তাহা প্রদান করে, তাহা হইলে আমারও প্রীতি হয় এবং তাহা-রাও মহাভয় হইতে পরিত্রাণ পায়। কিন্তু তাহা না করিয়া যদি সেই তুরুপায়দর্শী তুইমতি জন্য

কোন অভিসন্ধিতে প্রবৃত্ত হ্য়, তবে নিশ্চয়ই আমি ক্ষজ্রিয়াধমগণের ধংস-বিধান করিব।

অর্জুন এই কথা কহিলে র্কোদরের আর আ-হলাদের পরিসীমা রহিল না; তিনি হর্ষ ও রোষ-ভরে মুছমুছ কম্পিত হইতে ধাকিলেন এবং কম্পায়মান-কলেবর হইয়া সাতিশয় হর্ষাভিষিক্ত-চিত্তে এৰপ ভয়ন্ধর শব্দ করিতে লাগিলেন যে, তত্রত্য যাবতীয় ধমুর্দ্ধারিগণ জাঁহার সেই বিষমতর নিনাদ শ্রেবণে অতিমাত্র কম্পিত-কায় হইল এবং অশ্ব গজ-প্রভৃতি সমুদায় বাহনগণ মূত্র পুরীষ পরি-ত্যাগ করিতে লাগিল।

ধনঞ্জয় কেশবকে ঐ কথা কহিয়া এবং স্বকীয় বিনিশ্চয় বিজ্ঞাপন করিয়া তদীয় অনুজ্ঞা গ্রহণ-পূর্ব্বক আলিঙ্গনান্তে প্রতিনির্ত্ত হইলেন। অনস্তর সমস্ত রাজগণ প্রতি-গমন করিলে জনার্দ্দন হুট-চিত্তে শৈব্য-স্থাবাদি-বাহন-চতুষ্টয়-সমন্বিত-রধা-রোহণে সত্তর গমন করিতে লাগিলেন। দারুক বাস্থদেবের সেই ঘোটকগুলিকে এৰূপ ক্ৰতবেগে চালাইয়া দিলেন যে, বোধ হইল তাহারা যেন আ-কাশকে গ্রাস করিতে করিতে পস্থাকে পান করিয়া ठिनन ।

কির্ৎদূর গমনানম্ভর মহাবাহ্ন কেশব পথি-মধ্যে কভিপর মহর্ষির সন্দর্শন পাইলেন। তাঁহারা ত্রান্ধী **জ্রীতে দেদীপ্যমান হইয়া পথের উভয় পার্শ্বে অব-**স্থিত ছিলেন। জনার্দ্দন রথ হইতে শীঘ্র অবতীর্ণ हरेशा (मरे मकल अधिरक अधिरापन-পূর্বক यथा-বিধি পূজা করত এই বলিয়া সম্ভাষণ করিতে লাগি-লেন, হে মহর্ষিগণ! সমস্ত লোক-মধ্যে সকলে কুললী আছে ত? ধৰ্মের স্থন্দর ৰূপ অমুষ্ঠান হইতেছে ত ? ক্ষজ্রিয়াদি বর্ণত্রয় ব্রাক্ষণগণের শাসনে অবস্থিত আহে ত ?

ঋবিদিগের ঞাতি এইৰূপে পূজা-প্রয়োগ করিয়া মধুসুদন পুনরায় তাঁহাদিগকে জিজ্ঞাসিলেন, আপ-

পথ অবলম্বন করিয়াছেন ? আপনাদিগের মহীতলে আগমন করিবারই বা প্রয়োজন কি ? কি কার্য্য উপস্থিত হইয়াছে ? আপনাদিগের কোন্ কর্ম আ-মাকে সম্পন্ন করিতে হইবে বলুন।

স্থরাস্থরপতি পিতামহের সধা জামদগ্না, মধুস্থদন গোবিদের এই কথা ভাবণে তাঁহার সন্নিহিত হইয়া আলিঞ্চন-পূর্ব্বক কহিলেন, হে মহাছ্যুতে দাশাই কেশব! পুরাতন দেবাস্থর-রূদের সর্ব্ব-রৃত্তান্তদশী এই সমস্ত পুণাক্কৎ দেবর্ষিবর্গ, বহুশ্রুত ব্রাহ্মণগণ ও মহাতপন্ধী মানভাজন রাজর্ষিপুঞ্জ, সর্বাদিক্ হইতে সমবেত পার্থিব ক্ষজ্রিয়-সমূহের সক্ষনি-কামনায় হস্তিনায় গমন করিতেছেন। হে জনার্দন। যেহুলে অশেষ সভাসদবর্গ, বছল-রাজ-নিচয় এবং সত্য-স্বৰূপ তুমি বিদ্যমান থাকিবে তাহা যে অতীব দর্শনীয় হইবে তাহাতে আর সন্দেহ নাই। অতএব আমরা সেই বিশিষ্ট দ্রুষ্টব্য বস্তুর দর্শন নিমিন্তই গমন করিতেছি। হে পরস্তপ মাধব। কুরু-সদন-সম বেত রাজগণ-মধ্যে তুমি ধর্মার্থ-সংযুক্ত যে সমস্ত বাকোর প্রসঙ্গ করিবে, তৎসমুদায় ভাবণ করিতে আমাদিগের ইচ্ছা হইয়াছে। ভীন্নদোণাদি সাধু সমূহ, মহামতি বিছুর, যছুকুল-চুড়ামণি ভুমি, সক-লেই তোমরা সভা-মধ্যে সমবেত থাকিবে; অতএব হে গোবিন্দ! তোমার এবং তাঁহাদিগের উক্ত সত্য, হিত অথচ রমণীয় বচনাবলি শ্রবণ করাই আমা-দিগের অভিপ্রেত। হে মহাবাহো! তুমি এই নি-মিত্তই আমন্ত্রিত হইলে; আমরা পুনর্কার তোমার সহিত সাক্ষাৎ করিব। হে বীর ! সম্প্রতি ভূমি নি-বিদে প্রস্থান কর, পশ্চাৎ আমরা যাইরা তোমারে সভাগত এবং অসীম বল-প্রতাপ-সহকারে স্থানিবা আসনে সমাসীন দেখিব।

ভগবৎপ্রস্থানে ত্রাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৩ ॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, হে পরস্তপ মহারাজ! মহা-नाता काथाम नः निक्ष हरेमा हिन ? नच्छा कि कान् वाह प्रविकी-कनरमत श्रवहान-नमरम श्रवहीत-मःहात-

কারী, শস্ত্রপাণি, দশজন মহারথ, সহস্র অশ্বনার ও পদাতি এবং বছল ভক্ষ্য ভোজ্য সমেত শত শত কিম্বর-বর্গ তাঁহার অমুগমন করিয়াছিল।

জনমেজয় কহিলেন, যতুকুলপতি মহাত্মা মধুস্থান কিৰপে প্রস্থান করিয়াছিলেন, কি প্রকার নিমিত্ত-সমন্তই বা তৎকালে আবির্ভূত হইয়াছিল ?

বৈশম্পায়ন কহিলেন, মহাত্মা বাস্তুদেবের প্রয়াণ-नगरत रा नकन रित्र ७ उर्भाजिक निमिल-नमूरहत আবির্ভাব হইয়াছিল, আমি সমুদায়ই কীর্ত্তন করি-তেছি, তাবণ করুন। হে রাজন্! রুক্ষ যে যে স্থান দিয়া গমন করিয়াছিলেন, তদ্বাতীত অপর সমস্ত প্রদেশেই আকাশ মেঘ-খূন্য থাকিলেও বিচ্যুৎ-সম্বলিত অশ্নি-নিৰ্ঘোষ ঘন ঘন নিনাদিত হইয়া-ছিল। পর্জন্য মেঘ-খূন্য আকাশে পশ্চাদ্বর্তী থাকি-য়াও সাতিশয় বর্ষণ করিয়াছিল। সিন্ধু-প্রভৃতি সপ্ত महानती शृद्धां जिमूशी इहेगा ७ शक्त न वाहिनी हहे-পাছিল। দিক্-সমন্ত বিপরীত হইয়াছিল। কিছুই স্থার বোধগম্য হইবার বিষয় ছিল না। সর্বতিই দিগ্ৰাহ ও ভূকম্প হইয়াছিল। কূপ ও কুম্ত-সমস্ত সহসা উচ্চলিত হইয়া শতধা জলসেক করিয়াছিল। হে রাজন্! এই সমগ্র ভূমগুল ধূলিজালে সমাকীণ ও অন্ধকারে আচ্ছন্ন হইয়াছিল, স্নতরাং না দিক্ না विषिक किছूरे काना यात्र नारे। नर्स प्राप्तरे धरे এক বিশেষ আশ্চর্যোর বিষয় সংঘটিত হইয়াছিল যে, কোন শরীর দৃষ্ট না হইয়াও আকাশে অকন্মাৎ এক একটা ভয়ঙ্কর শব্দ শ্রুত হইতেছিল। হস্তিনা-পুরে দক্ষিণ-পশ্চিম বায়ু, অশনি-সদৃশ সাতিশয় কর্কশ শব্দ সহকারে নিরম্ভর প্রবাহিত হইয়া, শত শত বৃক্ষ-সমন্ত উন্মূলিত করত সমুদয় প্রদেশকে এককালে প্রমধিত করিয়াছিল। হে ভারত ! বাস্থ-দেব পধি-মধ্যে বেখানে যেখানে অবস্থিত হইয়া-ছিলেন, তথায় সকল বস্তুই অনুকূল হইয়াছিল। व्यथ-ज्लार्भ प्रक्रिश मभीतरात मध्यात এवः ভূति ভূति क्रमण ७ व्यनाता क्रूक्रम-ममूर्द्त वर्षेष इटेशाहिल।

যে পথ দিয়া গোবিন্দ প্রস্থান করিয়াছিলেন, ভারা সমতল ও সর্বপ্রেকার স্থুখকর ছিল। ভাষাতে কুশা-কুর কি কণ্টকাদি কোন বিশ্বই ছিল না। সূর্বব্রই সহস্র সহস্র ব্রাহ্মণগণ সমাগত হইয়া ধনপ্রদ রুক্ষকে বছতর আশীর্বাচনে সম্বর্জিত করিয়াছিলেন এবং ক্ষজ্রির ও বৈশ্যেরা মধুপর্ক ও ধনদান-দ্বারা তাঁহার যথাবিহিত অর্চনা করিয়াছিল। কোন কোন স্থানে স্রীলোকেরাও আসিয়া সেই সর্বান্থতের হিতামুন্ঠান-নিরত মহাত্মা কেশবের উপরে স্থান্ধ বন্য-পুষ্পা-সমস্ত বর্ষণ করিয়াছিল।

হে ভরতর্বভ! ভগবান রুক্ষ প্রস্থানানন্তর হৃদয়ভূক্তিকর পরমরমণীয় পশু-ভূয়িষ্ঠ গ্রাম-সকল সন্দশন এবং বিবিধ নগর ও রাষ্ট্রপুঞ্জ অতিক্রম করিয়া
শালিভদন-নামে একটি সর্বাশস্য-সমাকীর্ণ পরমধর্মনিলয় স্থাধার ও মনোরম প্রদেশে আসিয়া উপনীত
হইলেন। তাঁহারে দর্শন করিবার মানসে উপপ্রবা
নগর হইতে অসংখ্য পুরবাসিবর্গ সমাগত হইয়া
পথি-মধ্যে অবস্থিত ছিল। ভারতেরা সম্যক্ প্রকারে
তাহাদিগের রক্ষণাবেক্ষণ করিতেন, স্ততরাং পরচক্র হইতে নিরুদ্বিগ্ন এবং কোন প্রকার বাসনের
অনভিজ্ঞ থাকায় তাহারা নিত্য সম্ভূফ্ট ও হৃষ্টিচিন্ত
ছিল। এক্ষণে অসীম-প্রভাব-সম্পন্ন পরম পূজনীয়
কৃষ্ণকে প্রদীপ্ত-ছতাশনের ন্যায় স্থ-দেশ-মধ্যে সমাগত দেখিয়া তাহারা সমুচিত অতিথি-সংকার-দ্বারা
তাহার পূজা করিল।

অনন্তর অংশুমালী দিবাকরের কিরণ-জাল স্কুর-বিত্তীর্ণ এবং গগণ-মণ্ডল লোহিত-বর্ণ হইলে পর-বীর-হন্তা কেশব রকস্থল প্রাপ্ত হইরা রথ হইতে অবতরণ-পূর্বক সার্রথিকে অশ্ব-মোচনের অমুজ্ঞা দিয়া বধাবিধি শৌচ-ক্রিয়া সমাপনানন্তর সন্ধাাবন্দনাদি করিলেন। দারুকও রথ হইতে হয়-সমন্ত উন্মোচন-পূর্বক শাস্ত্রামুসারে তাহর্মদগের পরিচর্যা। করিয়া যুগ-যোজ্রাদি অপসারণানন্তর তাহাদিগকে বিমুক্ত করিয়া দিলেন।

সমস্ত कर्जवा कर्य मण्लाभ स्टेटन मध्यमन करि-লেন, যুধিষ্ঠিরের কার্য্য নিমিত্ত অদ্য এই স্থানে আমাদিগকে রাত্রি-যাপন করিতে হইবে। অমুচর-বর্গেরা তাঁহার সেই আজ্ঞার অনুসারে তথায় বস্ত্রা-বাস সন্নিবেশ করিয়া ক্ষণকাল-মধ্যে গুণযুক্ত অন্ন পান সমস্ত প্রস্তুত করিল। হে রাজন্! ঐ আমে रि मकल প্রধান প্রধান ব্রান্ধণেরা আর্যা, কুলীন, শালীনতা-সম্পন্ন ও প্রক্নত-ব্রেক্ষ-ধর্মের অমুষ্ঠায়ী ছিলেন, তাঁহারা শত্রদমন মহাত্মা হ্রবীকেশ-সমীপে আগমন করিয়া আশীর্বাদ ও মঙ্গল-সংযুক্ত বচনা-বলি-ছারা তাঁহার যথাবিধি পূজা করিলেন। ভাঁহারা দৰ্বলোক-পূজিত মহামতি বছুপতিকে কেবল পূজা क्रिताहे काछ हरेएन अपन नएह, व्हन-त्रव्रताबि-বিরাজিত আপন আপন ভবনে লইয়া যাইবার নিমিত্তেও প্রার্থনা জানাইলেন। ভক্তবৎসল ভগবান্ তাঁহাদিগের প্রস্তাবে সম্মত হইয়া যথাযোগ্য সং-কার-পুরঃসর সকলের সদনে গমন করিয়া পুনরায় তাঁহাদিগের সমভিব্যাহ।রে স্বস্থানে আসিয়া উপ-স্থিত হইলেন। অনন্তর কেশব সেই সমন্ত বাহ্মা-দিগকে সুস্বাহু ভক্ষ্য ভোজ্য-সকল স্থন্দর ৰূপে ভো-জন করাইয়া এবং আপনিও সকলের সহিত ভোজন করিয়া পরম স্থথে যামিনী যাপন করিলেন।

ভগবদ্ধানে চুতুরশীতিত্ম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৪ ॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, এদিকে ধৃতরাষ্ট্র দূতগণমুখে মরুস্থদনের আগমন-বার্তা বিদিত হইয়া লোমাঞ্চিত-কলেবরে মহাভুজ ভীয়, দোণ, সঞ্জয় ও
মহামতি বিছুরকে সাদর সম্ভাষণ করিয়া অমাত্যবর্গ-সম্বলিত ছুর্যোধনকে সম্বোধন-পূর্বাক কহিলেন,
হে কুরুনন্দন! সর্বাত্তই একটা অদ্ভুত ও মহা আশ্চর্যোর বিষয় শ্রুত হইতেছে। গৃহে গৃহে, কি স্ত্রী, কি
বালক, কি রহ্ম, সকলেই বলিতেছে, "প্রভূত-পরাক্রমশালী বৃত্বপতিপাণ্ডবদিগের কার্যা-সাধন-নিমিত্ত

अञ्चारन छेशागं इरेरवन "। कि च्राम्भन्न, कि चा-गहरू, नकलारे नमापत-पूर्वक के कथात्र आत्मा-লন করিতেছে এবং চত্বরে ও সভা-সমূহেও উহার **१४क् १५क् वामास्याम क्हेटल्टा अध्यमन कृष्ण** যে সর্বাধাই আমাদিগের মাননীয় ও পুজার্হ তাহা-তে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। তিনি সর্বভূতের ঈখর এবং ধৃতি, বীর্যা, প্রজ্ঞা ও প্রতাপের অদ্বিতীয় আ-ধার। তাঁহাতেই লোক-যাত্রা প্রতিষ্ঠিতা রহিয়াছে। অতএব সেই পুরুষোন্তমের প্রতি সন্মান প্রদর্শন কর, যেহেতু তিনিই সনাতন ধর্ম। তিনি পুঞ্জিত হইলে যেমন স্থাধের নিমিত্ত হন, সেইৰূপ অপুজিত হইলেও ছুঃখের কারণ হইয়া থাকেন। হে অরি-न्त्र ! यानदवन्त वास्रदानव यान स्वविहिष्ठ পরिচর্য্যা-দারা আমাদিগের প্রতি পরিতুই হন, তাহা হইলে আমরা সমগ্র রাজবর্গ-মধ্যে সম্পূর্ণ রূপে সর্ব্বপ্রকার অভীকার্থ প্রাপ্ত হইতে পারিব। অতএব হে পর-ন্তপ! তুমি অদাই তাঁহার পূজার উপযোগী সমস্ত वस्तुत मिश्रधान क्ता। श्रीथ-मध्धा मर्व्यकाम-ममिश्र সমাজ-সমূহ নির্মিত করাও। হে মহাবাহে। ছুর্যোা-ধন! যাহাতে তোমার প্রতি তাঁহার প্রীতি জন্মে তাহার অনুষ্ঠান কর।—হে ভীয় ! ইহাতে আপন-কারই বা অভিমত কি ?

অনন্তর ভীয়-প্রভৃতি সকলেই জনাধিপ ধৃতর।দ্বের
এই কথার যথেন প্রশংসা করত কহিলেন, "ইহা
অতীব কর্ত্তবা কর্মা"। তথন তুর্যোধন ভাঁহাদিগের
সকলেরই অভিমত বোধ করিয়া রমনীয় সভা-বস্তু
সমস্ত নির্দেশ করিয়া দিলেন। অনুজ্ঞাত অমুচরবর্গেরা যাবতীয় স্থরমা-দেশে বিভাগক্রমে সর্ব্বরত্তবাধন তংসমুদায়ের শোভা সম্পাদনার্থে বিবিধশুণযুক্ত বিচিত্র আসন, নয়ন-মনোহারিণী কামিনী,
উৎকৃষ্ট গদ্মদ্রবা, উত্তম উত্তম অলকার, স্থক্ষ স্থক্ষ
বস্ত্র, স্থান্ধি-পুত্পমালা, রসবৎ অন্ন পান ও অন্যান্য
বছবিধ ভোজ্যবস্তু সমস্ত প্রদান করিলেন। যদিও

কৌরবরাজ স্থানে স্থানে এইৰপ অনুপম সভা-সকল প্রস্তুত করাইলেন, তথাপি রুক্ষের বাস নিমিছে সবিশেষ যত্নপর হইয়া রুকস্থল গ্রাম-মধ্যে বছ-রত্ন-সমস্থিতা একটি পরমর্মণীয়া সভা-সংস্থাপিতা করিলেন।

রাজা তুর্য্যোধন এই সমস্ত অতিমানুষ দেবভোগ্য সন্মিধান-জাত সম্পন্ন করিয়া তথন ধৃতরাষ্ট্রকৈ সংবাদ দিলেন। দাশার্হ কেশব সেই সকল সভা ও বিবিধ রত্ননিচয়ের প্রতি দৃক্পাতও না করিয়া কৌরব-সদনে উপনীত হইলেন।

> ভগবদ্বানে পঞ্চাশীতিত্য অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৮৫॥

অদিকে ধৃতরাষ্ট্র বিদ্বরকে সমোধিয়া কহিলেন,
ক্ষন্তঃ! জনার্দন বাস্থদেব উপপ্রব্য হইতে এস্থানে
উপাগত হইয়াছেন; আদ্য র্কস্থলে অবস্থিতি করিতেছেন, কল্য প্রাতঃকালে এস্থলে আগমন করিবেন। তিনি আছক-বংশীয় যাবতীয় যাদবগণের
অধিপতি, মহামনা, মহাবীর্য্য ও মহাসত্ত-সম্পন্ন।
স্থবিস্তীর্গ র্ফিরাজ্যের তিনিই এক মাত্র ভর্তা ও
রক্ষাকর্তা। কেবল র্ফিরাজ্যের কেন, সেই ভগবান্
মাধব এই অধিল লোক-ত্রয়েয় প্রপিতামহ। আদিত্য বস্থ ও রুজেরা যেমন রহস্পতির বুজিকেই
অবলম্বন করেন, সেইৰূপ র্ফি ও অক্ষক-বংশীয়েরা
মহামতি রুক্ষের মহতী প্রজ্ঞার উপাসনা করিয়া
চলেন। অতএব হে ধর্মজ্ঞ! তাদৃশ মহাত্মা ব্যক্তিকে
বেরপ পূজা করিতে হইবে, তাহা তোমার সাক্ষাতে
বলিতেছি শ্লবণ কর।

আমি তাঁহারে বাহ্মিদেশ-জাত এক-বর্ণ সুসজ্জিতাঙ্গ চারি চারি উৎকৃষ্ট অশ্ব-সম্বালিত বোড়শসংখ্যক স্থবর্ণ-মর রথ প্রদান করিব। হে কৌরব!
ঈব-সদৃশ-দন্তযুক্ত নিত্য-প্রমন্ত, প্রহার-দক্ষ আটটি
মাতঞ্গ দিব। উহাদিপের প্রত্যেকের সঙ্গে আট
আট জন অমুচর নিমুক্ত থাকিবে। স্থবর্ণবর্ণা শুভা-

ননা অক্সাতগৰ্ত্তা এক শত দাসী এবং তাবৎ-সংখ্যক দাস প্রদান করিব। এতত্তিম্ন আমি তাঁহারে শৈল-বাসী লোকদিগের প্রদত্ত অফীদশ সহস্র স্থকোমল চিত্ৰ-কম্বল, চীন-দেশোদ্ভব এক সহস্ৰ মৃগচৰ্ম এবং অন্যান্য যে কোন বস্তু তাঁহার যোগ্য হইতে পারে, সকলই উপঢৌকন দিব। মদীয় ভাগুারে উত্তম-কান্তি-সমন্বিত যে একটি স্থবিমল মণি আছে, যাহা দিবা নিশি সমভাবে নেমুজ্জ্বল থাকে, তাহাও তাঁহারে উপহার স্বৰূপ প্রদান করিব; যেহেতু কেশবই উহার যথার্থ উপযুক্ত পাত্র। অপিচ অশ্বতরী-সংযুক্ত যে রথখানি এক দিবদের মধ্যে চতুর্দ্দশ যোজন পরিভ্রমণ করিতে পারে, আমি তাহাও তাঁহারে সমর্পণ করিব। তাঁহার সমভিব্যাহারে যাবৎসম্খ্যক বাহন ও অনুচরবর্গ আছে, তাহার অফগুণ পরি-মাণে নিত্য নিত্য ভক্ষ্যভোজ্য নির্দ্দিষ্ট করিয়া দিব। কেবল ছর্যোধন-ব্যতীত আমার অপর সমস্ত পুত্র পৌত্রেরা স্থপরিষ্কৃত রখোপরি আবাড় এবং স্থন্দর বেশভূষায় ভূষিত হইয়া যতুপতির প্রভালামনার্থ অগ্রসর হইবে। সর্বালঙ্কার-শোভিতা, সর্বাকল্যাণ-সংযুতা, সহস্র সহস্র প্রধানা বারাঙ্গনারা পদত্রজেই মহান্ত্রত্ব কেশবের প্রত্যুদ্ধামন করিবে। নগর হই-তেও যে সকল কল্যাণযুতা, কন্যাগণ জনার্দ্দনের সন্দর্শনার্থ গমন করিবে, তাহারা বিনা আবরণে যাইবে। অধিক আর কি বলিব, প্রজাগণ যেমন অভিনব-সমুদিত দিবাকরকে আনন্দভরে নিরীক্ষণ করে, সেইৰূপ কি স্ত্ৰী, কি পুৰুষ, কি বালক, নগরন্থ ममल लाकरे मराजा मधुस्रमनत्क मरहार्य जवलाकन করুক। ভৃত্যবর্গেরা আমার আজ্ঞাক্রমে সমুপা-পিত ধজ-পতাকা-পুঞ্জে দিক্ সকল স্থশোভিত করুক **এবং যে পথে গোবিন্দের আগমন হইবে, জলাব-**সেক-সহকারে তাহা ধূলিখুনা করিয়া রাখুক। ছুর্য্যো-ধনের ভবনাপেকা ছুঃশাসনের নিকেতন অধিক-তর প্রশংসা-ভাজন; অতএব শীঘ্র করিয়া অদ্য উহা সমাক্-ৰূপে পরিচ্চৃত ও সর্বপ্রকার অলঙ্কারে সজ্জীভূত করুক। ঐসহাসমৃদ্ধ নিকেতন রুচিরাকার প্রাসাদ-নিচয়ে উপশোভিত এবং সর্বাকালেই শুভা-বছ ও রমণীয়। ঐ গৃহে আমার ও ছুর্য্যোধনের সমুদ্র রত্ন আছে; তন্মধ্যে যাহা যাহা যত্নপতির যোগ্য হইতে পারে, তৎসমুদার অসংশরে তাঁহারে প্রদান করিতে হইবে।

ধৃতরাষ্ট্র-বাক্যে বড়শীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৮৯।

विष्ठुत कहित्नन, रह ताकन्। आभात कथा पृत्त ধাকুক, আপনি ত্রৈলোক্যেরও বছমত। নিরতিশয় সততা-হেতুক আপনি সর্বলোকেরই সম্মানার্হ ও প্ৰীতিস্থল হইয়াছেন। এৰপ অবস্থায় আপনি বাৰ্দ্ধক্য-দশাতে অবস্থিত থাকিয়া যে কথা বলিতে পারেন, তাহা শাস্ত্র বা স্থবিবেচনার অসুমোদিত হইবে ইহাই সম্ভাবিত; যেহেতু আপনি স্থিরবুদ্ধি अ इवित्र। एइ त्राक्षन् ! श्वकारमाक-मर्था नकरमङ् ইহা নিশ্চয় করিয়া রাখিয়াছে যে, পাষাণের উপর लिथा, पिवाकरत मीखि ववः माभरत जत्रक रवन्त्रभ, আপনাতে ধর্মও সেইৰূপ। হে পার্থিব! আপনকার গুণ-সমূহ-সহকারে মানবগণ সর্বাদাই সম্বর্দ্ধিত হইয়া সাসিয়াছে; অতএব সবান্ধবে আপনি সেই গুণা-বলির সংরক্ষণার্থে সুদা যত্নপর থাকুন। সহারাজ। সরলতা অবলম্বন করুন; অজ্ঞানতা-প্রযুক্ত পুত্র, পৌত্র, স্থহদ্ ও অন্যান্য প্রিয়জনগণকে বিনফ করি-বেন না। হে রাক্সেন্ত ! আপনি অভ্যাগত ক্লফকে যে বছধন প্রদানের অভিলাব করিতেছেন, তাহার কথা দূরে থাকুক, তম্ভিন্ন আপনকার আরও যাহা কিছু আছে, এমন কি এই সসাগরা পৃথিবী পর্যান্ত প্রদানেরও তিনি. যোগ্য পাত্র। আমি দেহ-স্পর্শ-পূর্বাক সত্য করিয়া বলিতেছি, শুদ্ধ ধর্ম্মোদেশে অথবা ভাঁহার প্রিয়কার্য্য-সাধনার্থে আপনকার এরপ हेक् इब नारे। ए वक्थन ! केन्न भूति नात्नत সংকশ্প-ছারা কেবল ছলনা, অসত্য ও কপটতামাত্র

প্রকাশ পাইতেছে। এই বাছ কর্ম-দারাই আমি আপনকার অন্তর্নিগুঢ় অভিপ্রায় অবগত হইতেছি । হে রাজন্! পাওবেরা পাঁচজনে কেবল পাঁচখানি কুদ্র গ্রাম পাইবার অভিলাব করিতেছেন; কিন্তু আপনি তাঁহাদিগকে তৎসমুদায় প্রদান করিতেও ই**ন্ছা করেন না; স্থত**রাং কে আর শান্তি-স্থাপন করিবে? আপনি অর্থদারা মহাবাছ বাস্থ্রুবেবকে হস্তগত করিবেন এবং এই উপায়ে পাওবগণ হইতে তাঁহাকে বিচ্ছিন্ন করাইবেন, ইহাই আকাজ্ঞা করি তেছেন; কিন্তু আমি আপনাকে এই এক সার কথা বলিতেছি, তিনি না ধন, না বত্ন, না পূজা, किছूতिই धनक्षम हहेटि शृथक्क्र हहेवात नरहन ! ক্ষের মহামুভাবতা এবং অর্জুনের দৃঢ়ভক্তিমন্ত। উভয়ই আমার বিদিত আছে; স্থতরাং প্রাণভুল্য ধনঞ্জয়কে গোবিন্দ যে কথনই পরিত্যাগ করিতে পারিবেন না, ইহা আমি বিশেষ ৰূপে জানিতেছি। হে মহীপতে! আপনি সহস্ৰ সহস্ৰ প্ৰয়াস পাই-

लिও बनार्फन क्वल वार्तिपूर्व कुछ, शाम श्राकानन ও কুশল জিজ্ঞাসা ব্যতীত আর কোন বস্তুরই প্রার্থনা বা স্বীকার করিবেন না। অতএব হে রাজন্! সেই মানভাজন মহান্মা পুরুষের যেৰূপ আতিথা প্রিয়-তর, তাহাই তাঁহার প্রতি নিয়োজিত করুন ; তিনি সম্মানের যোগ্য পাত্র। চে রাজেন্দ্র ! কেশব কল্যাণ কামনা করত যদর্ধে কুরুগণ-সল্লিধানে আগমন করিতেছেন, তাহাই তাঁহারে প্রদান করুন। রুঞ্রের ইচ্ছা এই যে, আপনকার, ছুর্য্যোধনের এবং পাণ্ডব গণের মধ্যে শাস্তি স্থাপন হয় ; অতএব হে রাজন্ ! আপনি তাঁহার সেই **প্রার্থনাটি পূর্ণ করুন**। মহা-রাজ! আপনি পিতা, পাওবেরা আপনকার পুত্র; আপনি বৃদ্ধ, তাহারা শিশু; অতএব তাহারা যখন আপনকার প্রতি পুজের সমূচিত আচরণে প্রবৃত্ত আছে, তখন আপনিও তাহাদিপের প্রতি পিতৃ-বভাবহার করুন

বিছুর-বাকো বপ্তালীভিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৭ ॥

फूर्याधिन कहिरलन, विष्ठुत क्रयः-विवस्त स्व स्व कक्ष विवासन, मकसरे में मा जनार्फन পाखनगर्गत প্রতি যে ৰূপ অমুরক্ত, তাহাতে তাহাদিগের সহিত তাঁহার ভেদ-সাধন করা নিতান্ত ছুঃসাধ্য ব্যাপার। অতএব হেরাজেন্দ্র! তাঁহার সংকারার্থে আপনি বে নানা-ৰূপ অর্থ প্রদানের সঙ্কণ্প করিতেছেন, তাহা কদাচ প্রদাতব্য নহে। কেশব অবশ্যই সম্প্র-দানের যোগা পাত্র বটেন, কিন্তু দেশ ও কাল উভয়ই অযুক্ত। হে রাজন্। ক্লফ মনে করিবেন 'ইহারা কেবল ভয়প্রযুক্তই আমার অর্চ্চনা করিতেছে । হে বিশাম্পতে! আমার এই স্থির সিদ্ধান্ত আছে যে, যে কাৰ্য্যে অবমান-সম্ভাবনা থাকে, তাহা বুদ্ধিমান্ ক্ষজ্ঞিয় পুরুষের কোন ক্রমেই কর্ত্তর্য নহে। সমস্ত लाक-मध्या त्मरे विभाल-नयन एवकी-नम्मन त्य जि-ভুবনের পূজাতম, তাহা সর্বাধাই আমার বিদিত আছে, কিন্ধু হে প্রভো! কার্য্যের গতিক্রমে তাঁহারে अक्राट कोन क्षकांत उपहात्रहे अमान कता हहरव না; যথন যুজের উদেয়াগ করা হইয়াছে, তথন বিন। যুদ্ধে কি প্রকারে তাহার নিবারণ হইতে পারে ?

বৈশান্সায়ন কহিলেন, কুরুপিতামহ তীয়া ছুর্য্যোধনের এই কথা শুনিয়া বিচিত্রবীর্যাক্ষক মহীপতি

ধৃতরাষ্ট্রকে বলিলেন. তোমরা জনার্দ্ধনের সংকারই
কর আর অসংকারই কর তাহাতে তিনি কিছুমাত্র
কুদ্ধ হইবেন না, কিন্তু কোন ক্রমেই তোমরা তাঁহারে অবজ্ঞা করিতে পারিবে না; কেশব অবজ্ঞা
সহনের পাত্র নহেন। হে মহাবাহো! তিনি মনে
মনে যে কার্য্য কর্ত্তর্য বলিয়া অবধারিত করিয়াছেন,
সর্ব্য প্রকার উপায়-সহকারেও কোন ব্যক্তি তাহার
অনাধা করিতে সমর্থ হইবে না। অতথ্র সেই বীরবর যে কথা বলেন, তাহাই অসংশায়ে সম্পন্ন কর;—
সদ্পদেশকারী বাস্ত্রদেবের সাহায়ো পাগুর্দিগের
সহিত সন্ধিবন্ধনে উদ্বুক্ত হও। হে রাজন্! ধর্মাত্মা
জনার্দ্ধন বাহা বলিবেন, তাহা নিশ্চরই ধর্মাও অর্থের
অমুগত হইবে; অতথ্র তোমার কর্ত্র্য এই যে

সবান্ধবে মিলিত হইয়া তাঁহার সন্ধিধানে প্রীতিকর বাক্যই উক্ত করিবে।

দুর্য্যোধন কহিলেন, হে পিতামহ! আমি এই সম্পূর্ণ রাজ্যলক্ষী পাগুবদিগের সহিত বিভাগ করিন রা যাবজ্জীবন সন্তোগ করিব, ইহা কোন ক্রমে সঙ্গত হইতে পারে না; একারণ যুক্তি-ছারা মনে মনে এই একটা স্থমহৎ কার্য্য অবধারিত করিয়াছি, শুবণ করুন। মনে করিয়াছি পাগুবগণের পরম গতি জনার্দ্ধনকৈ নিরুদ্ধ করিয়া রাখিব। রুক্ষ বদ্ধ হইলে যাবতীয় রক্ষিবংশ, পাগুবগণ—এমন কি এই সমগ্র ভূমগুলই আমার বশবর্ত্তী হইবে। অতএব আপনি আমাকে একপ কোন যুক্তি বলুন, যাহাতে জনার্দ্ধন প্রাত্তংকালে এখানে আগত হইয়া সঙ্ক-শিত বন্ধনোপায় সমস্ত কোন ক্রমে বোধগমা করিতে না প্রারেন এবং তন্ধিবন্ধন আমাদিগের কোন অপকার না হয়।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, ছুর্ব্যোধনের কৃষ্ণ-বন্ধন বিষয়ক এই ঘোরতর দারুণ বাক্য শ্রবণে গৃতরাষ্ট্র অমাত্যবর্গের সহিত সাতিশয় ব্যথিত ও বিমনা হইলেন। অনন্তর তিনি তাঁছারে এই কথা বলি-লেন, হে প্রজ্ঞাপালক! তুমি কদাপি আর এ কথার প্রসঙ্গ করিও না; ইহা সনাতন ধর্মের অমুগত নহে। ক্ষীকেশ একে ত দূত হইয়া আসিয়াছেন, তাহাতে আবার আমাদিগের চির-সম্বন্ধী ও প্রীতি-পাত্র; বিশেষত কৌরবদিগের প্রতি কথনই কোন অনিষ্টাচরণ করেন নাই; অতএব কি বলিয়া তিনি বন্ধনের যোগা হইতে পারেন ?

ভীম কহিলেন, গৃতরাই ! তোমার এই স্থমন্দ্র মতি কুসন্থান নিতান্তই কালপ্ররীত হইয়াছে ; সুহ্ন-জ্ঞানেরা হিতাকাক্ষা করিলে এ কেবল অহিতই প্রার্থনা করিয়া থাকে। আশ্চর্য্যের বিষয় এই ষে তুমিও ইহার স্কুদ্বর্গের বাক্য অবহেলন করিয়া এই উৎপথবর্ত্তী পাপামুবন্ধী পাপান্থার অমুবর্ত্তন কর। তোমাকে অধিক আর কি বলিব, সুতুর্মতি মুবোধন যদি অক্লিউকর্মা কৃষ্ণের কোন প্রকার অনিষ্টাচরণে প্রবৃত্ত হয়, তবে ক্ষণকাল মধ্যেই অমাতা বাহ্মবের সহিত সংহারদশা প্রাপ্ত হইবে, সন্দেহ নাই। এই তাক্তধর্মা, নৃশংস, ছুর্মাতি ও পাপাস্থার অনর্থ-সংযুক্ত অযুক্ত বাক্য প্রবণ করিতে আমার কোন প্রকারেই উৎসাহ হয় না। এই বলিয়া সত্যপরাক্রম ভরত শ্রেষ্ঠ বৃদ্ধ ভীম সাতিশয় রেষে-ভরে সভা হইতে গাজ্বোপান করত সম্বর প্রস্থান করিলেন।

ত্র্যোধন-বাক্যে অফার্শীতিতম অধ্যার সমাপ্ত। ৮৮॥

বৈশস্পায়ন কহিলেন, এ দিকে রুষ্ণ প্রাতঃকালে 🖯 গাত্রোপান করিয়া সমুদয় আহ্নিক-কৃত্য সমাপনা-নন্তর ব্রাহ্মণগণের অনুজ্ঞা এহণ-পূর্ব্বক নগরোদেশে প্রস্থিত হইলেন। তৎকালে বৃকস্থল-বাসী সেই প্রধান প্রধান মনুষ্যেরা মহাবল-সম্পন্ন মহাবাছ হ্বী-কেশের অমুমতি লইয়া স্ব স্থ স্থানে প্রতিগমন করিলেন। ও দিকে ছুর্য্যোধন ভিন্ন ধৃতরাষ্ট্রেক্ক অন্য সকল পুত্রেরা এবং ভীশ্ব দ্রোণ রূপ প্রভৃতি যাবতীয় সজ্জনগণ আগমনকারী বাস্তদেবের প্রত্যুদ্যমনার্থে অগ্রসর হইয়া আইলেন। তভিন্ন অন্যান্য অসংধ্য পৌরজনেরাও কেশবের সনদর্শন বাসনায় বছবিধ বানারোহণে কেহ কেহ বা পদত্রত্তে আগমন করিল। কেশব পথি-মধ্যে অক্লিফকৰ্মা ভীন্ন, দ্ৰোণ ও ধৃত-রাষ্ট্র-পুত্রদিগের সহিত মিলিত হইস্মা সকলের সম-ভিব্যাহারে নগরে উপনাত হইলেন। হে রাজন্! কুষ্ণের সন্মান প্রদর্শনার্থে নগর সমাক্-রূপে অলঙ্ক্ত এবং রাজপথ-সমস্ত বছবিধ রত্ন-নিচরে সমাকীর্ণ হইরাছিল। হে ভরতর্বভ! বাস্থদেব যথন পুরপ্রবেশ करतन, उथन कि खी, कि त्रक, कि मिस, क्रिश আর পৃত্ ছিল না; সকলেই তাঁহার দর্শনেচ্ছায় রাজমার্গে দণ্ডায়মান ছিল, তাঁহারে দেখিবামাত্র ধরাতলে মন্তক অবনত করত ন্তর্ন স্তুতি করিতে লাগিল। মহারাজ! স্কুদ্শা প্রাসাদপুঞ্জের উপরি-ভাগে বরবর্ণিনী কামিনীগণ এত অধিক পরিমাণে অবস্থিত ছিল বে, বোধ হইল তাহাদিগের ভার-বশত সেই স্বরহৎ গৃহ-সকলেরও বেন ভূমিসাৎ হই-বার উপক্রম হইতেছে। বাস্থদেবের অশ্ব-চতুইন স্বভাবত অতিবেগশালী ছিল; কিন্তু বিপুলতর জনস্থাবে রাজমার্গ আর্ত হওয়াতে তাহাদিগের তাদৃশী গতির আর প্রসক্তি মাত্র রহিল না।

শক্রতাপন পুগুরীকাক্ষ কেশব এই রূপে কথিছিং রাজপথ অতিবর্ত্তন করিয়া পরিশেষে ধৃতরাট্রের প্রাসাদ-নিকরে উপশোভিত পাণ্ডুরবর্ণ ভবনে উর্ভার্ণ হইলেন। তিনি রাজ-গৃহের তৃতীয় কক্ষ্যা অতিক্রম করিয়া বিচিত্রবীর্যা-পুক্র নরবর ধৃতরাট্রের সন্দর্শন পাইলেন। যত্ত্বপতি সমীপবর্ত্তী হইবামাত্র প্রজ্ঞাচক্ষ্ মহাযশা অক্ষভূপতি ভীম ও জোণের সহিত গাত্তোপান করিলেন। রূপাচার্যা, সোমদত্ত, মহারাজ বাহ্লিক-প্রভৃতি অপর সকলেও জনা-দিনের সম্মানার্থে আপন আপন আসন হইতে উঠিয়া দণ্ডায়নান হইলেন।

অনস্তর র্ফিনন্দন মধুস্থদন, মহাযশসী রাজা
ধৃতরাপ্তের সন্নিহিত হইরা যথাযোগ্য-বচনে তাঁহার
ও ভীয়ের পূজা করিলেন। তাঁহাদিগের প্রতি
তাদৃশী ধর্মানুসারিণী পূজা-প্রয়োগ করিয়া মাধব
বয়ঃক্রমানুসারে ক্রমে ক্রমে সমুদয় ভূপালবর্গের
সহিত আলিঙ্গনাদি করিলেন; পরে জোণ, অশ্বথামা, রূপ. যশসী বাহ্লিক ও সোমদত্তকে সবিশেষ
অর্চনা করিলেন। তথায় স্থপরিচ্ছয় মহামূল্য কাঞ্চনময় প্রশস্ত আসন সন্নিবেশিত ছিল, জনার্দ্দন
অক্ষরাজের আজ্ঞাক্রমে তাহাতে উপবিই হইলে
পর রাজ-পুরোহিতেরা যথা-নিয়মে গো, মধুপর্ক ও
পানীয় আহরণ-পূর্বক তাঁহারে উপহার প্রদান
করিলেন। অতিথি-সংকার নিষ্পান্ন হইলে, গোবিন্দ
কুরুগণে পরিরত ইইরা সকলের সহিত সম্বন্ধানুরপ্র

অবস্থিত রহিলেন।

শক্তাপন মহাৰশা মাধব কুরুসভা-মধ্যে সেই কৌরব্দিপের সহিত বধানাারে সমাগত হইয়া এবং ধৃতরাষ্ট্র-কর্তৃক সমাদৃত ও পুজিত হইয়া পরিশেষে রাজার অনুমতি লইয়া তথা হইতে নির্গমন-পূর্বক বিছুরের রুমণীয় আবাসে আসিয়া উপস্থিত হই-লেন। বিছুর অভ্যাগত গোবিন্দকে সর্ব্বকল্যাণ-সম-বিত কমনীয় বস্তু নিকর দারা আন্তরিক ভক্তিসহ-কারে অর্চনা করিয়া কহিলেন, হে পুগুরীকাক। আপনকার সন্দর্শনে আমার অন্তঃকরণে যাদৃশী প্রীতি জন্মিয়াছে, তাহা আর কি বলিব, আপনি সর্ব্য-ভূতের অন্তরাত্মা সকলই জানিতেছেন।

সর্বা-ধর্মাভিজ্ঞ মহামতি বিছুর উক্তরপসম্ভাষণান-ন্তর মধ্সুদনের আতিথা করিয়া পাগুবদিগের কুশল বার্ত্তা জিজ্ঞাসা করিলেন। সর্ব্বদর্শী ধতুপতিও তাঁ-হারে পাণ্ডবগণের সমস্ত র্ক্তান্ত বিস্তারিত ৰূপে কহিলেন। তিনি নিশ্চয় জানিতেন ক্ষত্তা পাণ্ডব-দিপের পরম স্থঙ্গ্; তাঁহাদিপের প্রতি তাঁহার রোষ থাকা দুরে থাকুক বরং ভূয়দী প্রীতিই আছে ; বিশেষত তিনি স্থবুদ্ধিসম্পন্ন, বিজ্ঞানবান্ ও ধর্মার্থ-পরায়ণ; স্থতরাং তাঁহার নিকটে পাওবদিণের সমুদয় চেটিত বর্ণন করিতে সঙ্কোচের বিষয় কি ?

> ক্ণবিছুর-সংবাদে একোন-নবতিত্য অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৯ ॥

दिमन्त्रीयन कहिएलन, मेळ-एमन खनार्फन विष्ट-রের সহিত সমাপমানন্তর অপরাক্রে পিতৃষ্সা পৃথা-দেবীর নিকটে গমন করিলেন। কুন্তী প্রসন্ধ প্রভা-কর-সন্নিত ক্ষেকে আগত দেখিয়া তাঁহার কণ্ঠ ধারণ পূর্ব্বক স্বকীয়-নন্দন গণকে স্মরণ করত রোদন করিতে नानितनः महे अभीय-मद्यानी वीत भूक्षवित्रत्र সহচারী গোবিন্দকে চির কালের পর দৃটি করায় 🖏 🚉 র নেত্র-নীর-নির্গমের আর ইয়ভা রহিল না।

সম্ভাবণ ও পরিহাসাদি করত বছক্ষণ পর্য্যন্ত তথায় । যোধপতি মধুস্থদন আতিথ্য-গ্রহণানন্তর আসনে উপ-विभन क्रिल, जिनि वाष्ट्रीशकाष्ट्री प्रतिख्क वर्गन কহিতে লাগিলেন, তাত কেশব! যাঁহারা বাল্য-কালাবধি গুরু-শুক্রবণে নির্ভ, পরস্পার পরস্পার্রের স্থ্রুদ্, প্রীতিপাত্র ও সমাস্তঃকরণ ; বশীক্তুত ক্রোধ-হর্ষ ত্রহ্মনিষ্ঠ যে সভাবাদী ধার্ম্মিকেরা সর্ব্বদা বছজনে সমাকীর্ণ থাকিবার উপস্কুক্ত হইরাও প্রতারণা দ্বারা রাজ্য-বিচ্যুত হওয়ায়ু,নির্জ্জনে আশ্রয় গ্রহণ করিয়া-ছিলেন; আমি সকাতরে রোরুদামানা হইলেও আমারে পরিত্যাপ করিয়া ঘাঁহারা প্রীতিকর ও সুখ-সাধন বস্তু সমুদার পরিহার-পূর্বক আমার হৃদয়-এছি বিদারণ করত অরণ্যে গমন করিয়াছিলেন; সেই মহাপ্রাণ পাশুবেরা বনবাসের সর্বাধা অযোগ্য হইরাও সিংহ-ব্যাঘ্র-মাতঙ্গাদি-সমাকীর্ণ মহারণ্যমধ্যে কিৰপে অবস্থিত হইয়াছিলেন? বালককালে ভাঁহারা যথন পিত্হীন হন, তথন আমিই তাঁহাদিখের লালন পালন করিয়াছিলাম; অধুনা পিতা মাতা উভয়েরই অদর্শনে তাঁহারা কি প্রকারে বিজনকাননে বাস করিয়াছিলেন ? হে কেশব! পাগুবেরা শৈশবাবধি শঙ্খ ছুন্দু ভি মৃদক্ষ ও বেণু প্রভৃতি বাদ্যধনি সহকারে প্রতিদিন প্রতিবোধিত হইতেন। গৃহে অবস্থান কালে যাঁহারা প্রাসাদোপরি স্থপরিষ্কৃত মুগদর্ম-শয্যায় শয়ান থাকিয়া প্রভূাবে বারণের রুংহিত, অখের হেষিত, রখনেমি নিনাদ, শব্दভেরীবীণাবেণু-ধনি ও মহান্ধা ব্রাহ্মণগণের পুণ্যাহ-নির্ঘোষ দারা জাগরিত হইয়া বছবিধ ৰস্ত্ৰ, রত্ন ও অলঙ্কার প্রদান করত পূজার্হ বিপ্রদিপের পূজাকরিতেন এবং তাঁহারাও অর্চিত रुरे हा अकृत-मञ्जलि अजियान बादा याँशानिभाक অভিনন্দিত করিতেন, তাঁহারা বে মহাবনে শ্বাপদ-গণের ক্রুরতরভীবণ গক্ষিতরৰ শ্রবণে নিদ্রা যাইতে পারিতেন, ইহা কোন ক্রমে আমার বোধগম্য হয় না **(र अध्यान) याँ शामिराजे अ अधिमन्द्र-निनाम, मन्द्रात्र्-**নিঃস্থন, কামিনীগণের স্থমধুর গীত-ধনি এবং স্থত-মাগধ বন্দীদিগের স্থললিত স্তুতি-পাঠ দারা নিদ্রা

ত্যাগ করা অভ্যাস ছিল, তাঁহারা সহারণ্য-মধ্যে হিংস্র জম্ব-নিচয়ের চীৎকার রব শ্রবণে কি ৰূপে প্রতিবোধিত হইতেন!

হে ক্ষণ যিনি সত্যৈকনিষ্ঠ, ত্রীমান্, দান্ত ও
সর্বাভূতে সমদয়ালু; যিনি কামদ্বেষাদি বশীভূত
করিয়া সর্বাদা সাধু পথে বিচরণ করত অষরীষ
মান্ধাতা যযাতি নছৰ ভরত্ব দিলীপ শিবি ঔশীনর
প্রভূতি পুরাতন রাজর্ষিগণের স্বছ্র্কাই ভার ধারণ
করেন; সর্বাগুণে বিভূষিত হওয়ায় যিনি ত্রেলোকারাজ্যের অধিপতি ইইবারও উপযুক্ত পাত্র; কি ধর্মা,
কি শাস্ত্র, কি ব্যবহার, সর্বা মতেই যিনি কুরুদিগের
প্রেষ্ঠ; সেই বিশুদ্ধ-কাঞ্চন-সদৃশ-কান্তি, প্রিয়দর্শন,
স্তুশীল, সদাচার, ধর্মাজ্ঞ, সত্যপ্রতিজ্ঞ, অজাত শক্র,
বর্মাত্মা, মহাবাচ যুধিষ্ঠির কেমন আছেন?

হে মধুস্থান! নিতাকোধী, বাতবেগী, মহাবলসম্পন্ন যে ব্কোদর অযুত মন্ত মাতঙ্গের বল ধারণ
করেন; সর্বাদা প্রিয়ক্যো-সাধন করায় যিনি ভাতার
অতীব প্রীতিপাত্র হইয়াছেন; যাঁহার অসামান্য
শৌর্যানল সজ্ঞাতিবান্ধ্য কীচককে, ক্রোধবশদিগকে,
হিড়িশ্বকে ও বকাস্থরকে ভন্মীভূত করিয়াছে; শস্ত্রধারি-জ্রেষ্ঠ, শক্রতাপন যে মহাবীর পরাক্রমেবাসবসম, বলে বায়ুতুল্য এবং ক্রোধে মহাকাল-সদৃশ
হইয়াও ক্রোধ, বল ও অসহিষ্ণুতা নিরোধ-পূর্বাক
বশাক্রতাশ্বংকরণে স্পেদরের শাসনান্ধ্যর্তী রহিয়াছেন; সেই ভেজারাশি, অমিত-প্রতাপশালী,
প্রধানতম, মহান্ধা, ভীম-দুর্শন ভীমসেনের কুশল
বার্ত্রী আমারে বল! হে বৃক্ষিনন্দন জনার্দ্দন! সেই
পরিষবাছ মধ্যম পাণ্ডব বৃক্ষাদর এখন কেমন
আছেন?

হে কৃষ্ণ! দ্বিন্ত হইয়াও যে অর্জুন সহস্র-বাস্ত্র বিদ্ধিত করিয়াছি; সেই মহাবলপরাক্রান্ত মহাস্ত্রবিৎ অতীত অর্জুনের সহিত নিতা স্পর্দ্ধা করেন; যে চিত্রযোধী নকুল কি কুশলী আছেন? হে মহাবাহো! অসামানা বীরপুরুষ এক বেগে পঞ্চশত বাণ নি- চিরস্তুখোচিত মহারথ নকুলকে কি আমি পুনরায় কেপে সমর্থ হন; যাঁহাকে শস্ত্র-শিক্ষা বিষয়ে কার্ত্র- দেখিতে পাইব ? হা! নিমেষকাল মাত্র যাঁহারে না বীষ্য ভূপতির সহিত, প্রতাপে আদিত্যের সহিত, দেখিলে আমি কোন ক্রমেই ধৈষ্য বা ভূটি লাভ

ইন্দ্রিন-নিপ্তাহ্নে মহর্ষির সহিত, ক্ষমায় পৃথিবীর সহিত এবং বিক্রমে মহেন্দ্রের সহিত তুল্লা করা যাইতে পারে; বাঁহার অসাধারণ বীর্যাবলে অপ্রিল ভূপাল-বর্গ-মধ্যে কৌরবদিগের বিপুলতর, প্রদীপ্ত ও স্থপ্রথিত আধিপতা প্রকটিত হইয়াছে এবং পাগুবেরা এপর্যান্ত যাঁহার বাহুবলের নিরন্তর উপাসনা করিতেছেন; সমরে বাঁহার অভিমুখীন হইয়া কোন ব্যক্তি প্রাণে প্রতাবের্তিত হইতে পারে না; যে বীরবর সর্ব্ব ভূতের বিজয়কর্তা, কোন কালে কাহারও নিকটে পরাভূত হইবার নহেন দেবরাজ পুরন্দর যেমন অথিল অমর-নিকরের আল্লায় স্থল, সেইনপ যে সর্ব্বের্থি-শ্রেষ্ঠ সভ্যাবিক্রম ভূতীর পাগুব পাগুবগণের একমাত্র অবলয়; তোনার আল্লা ও স্থাভূত সেই ধনঞ্জয় এক্ষণে কি ক্রপ আছেন?

হে মধুস্থদন! সর্ব্ব জীবে দয়াবান্, লক্ষ্যাশীল, মৃতু, স্কুমার, ধার্মিক, মহাস্তবেত্তা, মহাধনুর্দ্ধারী, শৌযা-শালী ও সংগ্রামশোভী সহদেব আমার অতিমাত্র প্রীতিপাত্র। হে রুফ! সেই ধর্মার্থ-নিপুণ শুভ-চরিত্র মহাত্মা যুবা নিরন্তর ভাতৃগনের শুক্রষায় নিরত থাকেন এবং ভাতারাও তাঁহার সচ্চরিত্রের সর্বাদা প্রশংসা করেন। হে বছুনন্দন! জ্যেষ্ঠদিগের স্লেছ-বর্দ্ধনকারী এবং মদীয় শুশ্রাষা তৎপর সেই যোধ-পতি বীরবর মাদ্রীপুত্র সহদেব কেমন আছেন বল : হে রুঞ ! যে শৌর্যা-সম্পন্ন প্রিয়দর্শন স্থকুমার পাণ্ডৰ ভাতৃ-বৰ্গের অতিমাত্র প্রীতিপাত্র; যাঁহাকে যুধিষ্টিরাদির বহিশ্চর প্রাণ-স্বরূপ বলিয়া নির্দেশ করা যাইতে পারে; তুঃখ সহনের অযোগ্য যে স্থকু-মার বৎসকে আমি চিরকাল স্থুখ-সম্ভোগে পরি-বর্দ্ধিত করিয়াছি; সেই মহাবল পরাক্রান্ত মহাস্ত্রবিৎ চ্রস্থাচিত মহারথ নকুলকে কি আমি পুনরায় चमािश कीविछ। त्रश्तिष्ठा प्रशे!

ছে জনাৰ্দ্দন! সৰ্বাঞ্চণ-সমন্বিতা, মহাকুল-প্ৰস্থতা অমুপম-রূপ-সম্পন্না যে দ্রৌপদী আমার পুত্র সকল হইতেও প্রিয়তর।; পতিধর্ম-পরায়ণা যে সভা-বাদিনী পতিসামীপ্য কামনায় পুত্র সাত্রকর্ষে অনা-দর প্রদর্শন-পূর্বক, প্রিয়ত্স নন্দনগণকে পরিত্যাগ করিয়া পাণ্ডবদিগের সহচারিলী ইইরাছেন ; সর্বং-কাম-সমর্কিতা মহাভিজন-সম্পন্না সকল মঞ্চল-যুতা সেই ৰূপগুণেশ্বরী কেমন আছেন ? হায়! সাজনৎ **অগ্রিকণ্প মহাধনুর্ধর শূরবীর পঞ্চসামীর ভ**্গা-भिनो इरुगाए शाकाली इन्यज्ञातिने क्रियाटर হে অরিন্দম! এই চতুলন ব্যকাল আছে আর कौंशांत मूथां मामर्गन कांत्र माहे। हा। उनसार प्र অদর্শনে তিনি যে কি পর্যান্ত ননঃপীয়া পাইতিতছেন ৰলিতে পারি না! সভাবাদিনী জ্রুপদনন্দিনী তাদৃশ সাগু-চরিতা হইয়াও যথন অক্ষয় কৃথ সল্লোগের व्यविकातिंगी इटेटलन ना, उथन निकारि (बाध इटे-**८७८६, अस शू**र्गा-कर्म पात्री ल्लाएक सूर्यनाट मनार्व হইতে পারে না। কৃষ্ণকে আমি যে সভাগতা দেখিরাছিলাম, ভাঁছার সেই ছুর্বতা স্মর্ণ করিলে, षामात ना ष्यर्ध्नन, ना यूथिष्ठित, ना तृत्कामत, ना নকুল সহদেব, কাহারও প্রতি আর প্রাতি থাকে না। পূর্দের পূর্বের আমি বছপ্রকার ছঃখ-রাশি অমু-ভব করিয়াছি বটে, কিন্তু ক্রোধ লোভের অনুবর্তী चनार्या कूर्यााथन जीधर्मिंगी এक्वजा छोलनीटक সভামধ্যে আনাইয়া শ্বস্তরগণের সমীপবর্ত্তিনী করিলে সমস্ত কৌরবের৷ যে তাঁছাকে তদৰস্থায় নিরীক্ষণ করিরাছিল, তাহার অপেকা অধিকতর ছুংখ আ-মারে আর কথনই সম্ করিতে হর নাই। তৎকালে ধৃতরাষ্ট্র, মহারাজ বাহ্লিক, কুপাচার্যা, সোমদত্ত ও **अन्याना**्कान कान क्रम्भकीरत्रत्रा निर्द्यपयुक्त ७ ছু:খিত ছইয়াছিলেন, সন্দেহ নাই; কিন্তু সমন্ত স্ক্রাস্থগণ-মধ্যে বিহুরকেই আমি অধিক প্রশংসা

क्रिंडि शांति ना, तिरे नकूलित अजाम्म विष्ट्रित व क्रिं। मण्ड श्रेलिरे लाक् श्रूमनीय अ मान-ভাজন হইতে পারে, নতুবা শুদ্ধ বিদ্যা বা ধন দারা क्ष्य प्रस्कु लाख्त अधिकाती हत्र ना। एक क्रमः! সেই মহারুদ্ধি, গন্তীর-প্রকৃতি মহাত্মা বিছুরের **ত্ত**-লিলিভা-ঝেশ **সমুজ্জ্বল অলঙ্কার, সমুদ্র লোককৈ** অভিভূত করিয়া সমধিক উদ্ভাসমান রহিয়াছে। বৈশ-পায়ন কহিলেন,, গোবিন্দের সমাগমে কুস্তী ক্লাটা ও শোকার্তা হৃইয়া এইৰূপ নানাবিধ ছঃখ-নভূহ কীর্ত্তন করত পুনরায় কহিতে লাগিলেন, হে অরিন্দম! পূর্ব্ব-কালীন কুন্পতিগণের আচরিত ব্যক্ষরীড়া মৃগয়া-প্রভৃতি ব্যসন-সমস্ত কি পাওব-দিনের স্থাবহ হয়? অশুভ পাশকীড়া নিমিজে ুৰ্ভ ধৃতধাষ্ট্ৰপুজেরা সভামধ্যে কুরুগণ-সন্নিধানে ফুঞ্চাকে যে অশেব প্রকার মৃত্যুবৎ ক্লেশ দিয়াছিল, ভাহা অনল-স্বৰূপ হইয়া আমারে নিরন্তর দগ্ধ করি-তেছে। হে পরস্তপ জনার্দন! আমি নগর হইতে नन्दनगर्गत निर्दामन ७ वन खमगापि वर्ष्टविय पृःथ-পুঞ্জের অভিজ্ঞা হইরাছি! হে মাধব! পরগৃহে অবরুদ্ধ হইয়া বৎসদিগকে যে অজ্ঞাত বাস করিতে হইয়াছিল, ইহার অপেক্ষা অধিক্তর ক্লেশের বিষয় আমার ও পুত্রগণের কখনই ঘটে নাই। অদ্য চতু-र्फण वर्त्रत्र इरेल, पूर्वाधन आमात नन्मनश्रादक নির্বাসিত করিয়াছে। যদি পুণা ফলের ক্ষয় না হইয়া থাকে, তবে এতাদৃশ দীর্ঘ ছুংখের পর এক্ষণে আমাদিগের স্থ হইলেও হইতে পারে। হে রুফ। আমি ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রদিণের প্রতি কোন কালে পাওব-গণ হইতে কিছুমাত্র বিশেষ করি নাই; চিরকালই তাহাদিগকে পুত্র-নির্বিশেষে সন্দর্শন করিয়াছ; এই সভ্যের উপর নির্ভর করিয়া বলিতে পারি, অবশ্যই পাণ্ডবদিগের সহিত তোমাকে উপস্থিত সংগ্রাম হইতে বিমুক্ত, হত-শক্ত ও পুনর্কার লক্ত-রাজ্য দেখিব। পাওবেরা ধর্মকে আঞ্চর করিয়া বে ৰূপ সভা ত্ৰত প্ৰতিপালন ক্রিয়াছেন, তাহাতে শত্রুগণ কুখনই তাঁহাদিগকে পরাত করিতে সমর্থ ছইবে না। ষাহা হউক, বর্জমান সুংখভোগ নিমিত আমি আপনাকেও তিরকার করিতে পারি না এবং সুর্যোধনকেও দোষ দিতে পারি না; কেবল পিতা-কেই এবিবরে দোষী বলিতে হয়। দ্যুতদেবী ধূর্ত্বেরা যেমন বিজয়ী ধূর্তকে পণিত ধন অর্পণ করে, সেইবর্গ করিয়া তিনি আমারে কুন্তিভোজ নরপাতর হতে প্রদান করিয়াছিলেন। আমি বন্দুক হতে লইয়া বালাকীড়া করিতেছিলাম. ভোমার পিতাহ আনমাকে আপন স্থাভূত অপুত্রক মহান্ত্রিভোজের হতে সমর্পণ করিয়াছিলেন। স্কুর্যাই আমি পিতা এবং শশুরগণ, সকলেরই বঙ্গনার পাতী হইয়াছি; অতএব হে কৃঞ্ছা এতাদৃশী অত্যন্ত তুংখ-ভাগিনী হত্তাগিনীর আর জীবিতা ধার্কিবার কল কি?

অর্জুনের জন্ম সময়ে র সনীলোগে "তোমার এই পুত্রটি বিশ্ব-বিজয়ী হইবেন; ইহার হুবিস্তীর্ণ যশো-রাশি স্বর্গ পর্যান্ত স্পর্শ করিবে; ইনি মহাসমরে কুরু-দিগকে নিহত করত রাজ্য লাভ করিয়া ভাতৃগণের সহিত তিনটি নহাবজ সম্পন্ন কারবেন " এই যে रिनववानी इहेबाहिल, जहात थांज चामि स्कान প্রকারে দোঘারোপ করিতে পারি না। সর্বব্যাপক ধর্ম-ক্রপী নারার। বিধাতাকে স্ব্রথাই নুমস্কার। ধর্মাই প্রজা সকলকে নিত্যকাল ধারণ করিতেছেন रू यष्ट्रनम्मन क्रुकः! यान वर्ष था**रकन उटद, रव श्रका**त দৈৰবাণী হইয়াছিল, তুলি সম্পূৰ্ণ **ৰূপেই তাহা সম্পন্ন** করিবে। হে মাধব। পুত্রগণ-বিরহে জীবিতা থাকায় আমি যে ৰূপ শোকানলৈ দগ্ধ হইতেছি, ভাদৃশ निर्माङ्ग लाक जामाद्र ना देवस्य यञ्जना, ना जर्ब-নাশ, না শত্রুতা, কিছুতেই অমুভব করিতে হয় নাই। আমি যখন সেই সর্ব্বশস্ত্রধারি-শ্রেষ্ঠ গাণ্ডীব-ধন্বা ধনঞ্চয়কে দেখিতে পাইডেছি না, তথন আর चामात श्रमातत भाषि काथात्र! व्ह लाविन्म! এই **ठकुक्म वर्ष काल मिर्ट यूथिकिंत्र, इंटकाएत्र, धनक्षत्र ଓ** নকুল সহদেবকে না দেখিরা আমি নিতান্তই জীব-খৃতা রহিরাছি! হে জনার্দন! বাহারা চিরকালের

নিমিত্ত অমুদ্দিউ হইয়া যার, আত্মীর অজনেরা তাহাদিগের মরণ অবধারণ করিরা প্রাক্ত শান্তি করে; কিন্তু আমার পক্ষে পুত্রগণ জীবদ্দশার থাকি-রাও মৃতবহ গণ্য হইতেছে এবং আমিও ভাহা-দিগের নিকটে মৃতার ন্যায় হইয়াছি।

হে কেশব! তুমি আমার বাক্যে ধর্মাত্মা রাজা
যুখিষ্টিরকে এই কথা বলিও "বংস! ভোমার ধর্মের
বিস্তর হানি হইতেছে; অতএব যাহাতে ধর্ম নই
না হয়, তাহা কর । হে জনার্দন! যে নারী পরাশ্রের জীবন ধারণ করে, তাহার জীবনে ধিক্; যাক্রালক্ষ জীবিকা অপেক্ষা মরণও শত ংগে শ্রেষ্ঠ।

হে বাস্থদেব! তুমি ধনঞ্জয়কে এবং নিয়ত উদামশালী রকোদরকেও আমার এই কথা বলিও "ক্ষজ্রিয়া জননী যে নিমিন্ত পুত্র প্রসব করেন, তাহার এই
উপযুক্ত কাল সমাগত হইয়াছে; অতএব এই উপস্থিত সময়ে বদি কাল তোমাদিগকে অতিক্রম করে,
তাহা হইলে তোমরা লোকের বছমানাম্পদ হইয়াও
ঘোরতর ঘৃণাকর কর্ম করিবে। তোমরা ঘৃণাকর
কর্মে যুক্ত হইলে আমিও তোনাদিগকে চিরকালের
নিমিন্তে পরিত্যাগ কারব; যেহেতু যোগ্য-কাল উপস্থিত হইলে প্রিয়তম জীবনকেও পরিত্যাগ করিতে
হয় ম।

হে পুরুষোন্তম! তুমি ক্ষপ্রধর্মে নিতা-নিরত
মাজীপুত্রদয়কেও আমার নাম করিয়া এই কথা
বলিও "হে নন্দনগণ! তোমরা প্রাণ পণ করিয়াও
বিক্রম-দারা সমুপার্চ্জিত ভোগ-স্থাের প্রার্থনা কর;
যেহেতু বিক্রম-লব্ধ অর্থই ক্ষপ্রধর্ম-দীবী মন্ধুবাের
সর্বাদা মনঃপ্রীতিকর হয় ।

হে মহাবাহো! তথায় গমনানম্ভর প্রভ্যেকের প্রতি ঐকপ কহিয়া, সর্ব্বশস্ত্রধারি-প্রধান ভৃতীয় পাণ্ডব বীরবর অর্জুনকে বিশেষ করিয়া বলিও, যেন তিনি দ্রৌপনীর প্রদর্শিত-পথেই সর্ব্বধা বিচরণ করেন,—ভাঁহার প্রীতি-সম্পাদনে যেন কোন প্রকারে শৈধিল্য না করেন। হে মধুস্থদন! ভূমি বিলক্ষণ অবগত আছ, ভীমাৰ্চ্জুন অতাম্ভ কুপিত হইলে | সাক্ষাৎ ক্লতান্ত-মূর্ত্তি ধারণ করিয়া দেবগণকেও বিন্ট করিতে পারেন ; কিন্তু এতাদৃশ বীর্ঘা-সম্পন্ন হইলেও তাঁহাদিগের প্রিয়ত্না ভার্য্য পা-क्षानी य मजाऋत जानीजा इहेशाहितन वदः ভুঃশাসন ও কর্ণ ভাঁছার প্রতি যে অত্যাব্য পরুষ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছিল, ইহার পর অধিক অপ-মানের বিষয় তাঁহাদিগের আর কি হইতে পারে? ছুর্মাতি ছুর্যোধন প্রধান প্রধান কুরুগণের সাক্ষাতে মহামনা ভীমদেনের যে অবমাননা করিয়াছিল, অবশ্যই তাহার সমুচিত ফল দর্শন করিবে; কেন না বৈরের স্থত্র পাইলে শত্রস্থদন রুকোদর শান্ত থাকিবার নহেন; বিশেষত অপেকাল মধ্যেই তাঁ-হার শত্রুতার উপশম হয় না ; তিনি যে প্র্যান্ত শত্রুগণের সমূলে সংহার করিতে না পারেন, সে পর্যান্ত আর কোন ক্রমেই নিস্তার নাই।

হে কৃষ্ণ ! পুত্রগণের দ্যুতে পরাজয়, রাজ্য-হরণ
ও বনবাসও আমার ছুংখের কারণ নহে; কিন্তু সেই
পতিপরায়ণা সর্বাঞ্চ-স্থলরী মহীয়সী দ্রৌপদী যে
এক বত্রে সভা-মধ্যে আনীতা হইয়া ছুর্বৃত্তগণের
পরুষ বাকা শুবণ করিয়াছিলেন, তাহাই নিদারুণ
ছুংখ; তদপেক্ষা অধিকতর ক্লেশের বিষয় আমার
আর কিছুই নাই। আহা! ক্লপ্রধর্মে নিত্য-নিরতা
স্ত্রীধর্ম-যুতা বরারোহা কৃষ্ণা অসামান্য-নাথবতী
হইয়াও তৎকালে অনাথা হইয়াছিলেন! হে পুরুযোত্তম মধুসুদন! তুমি, বলিশ্রেষ্ঠ বলরাম ও মহারথ প্রত্যায়, আমার ও আমার পুত্রগণের সহায়
থাকিতে এবং ছুর্জ্মর্থ ভীমসেন ও অপরায়্মুথ অজেয়
ধনপ্রয় জীবিত থাকিতেও আমারে যে এবয়িধ
ছুংসহ ছুংখ সন্থ করিতে হইল, ইহাই আশ্রহ্মা!

বৈশম্পারন কহিলেন, অনন্তর পার্থ-সথা বাস্থদেব, পুত্রগণ-ছুঃখে অভিমাত্র বিধুরা অমুশোক-পরারণা পিতৃষদা পৃথাকে আশ্বাদ প্রদান করিতে লাগি-লেন।

বাস্থদেব কহিলেন, হে মহাপ্রাজ্ঞে! এই পৃথিবীতলে আপনকার মত সৌভাগ্যবতী সীমন্তিনী আর
কে আছে? আপনি শ্রুসেন ভূপতির ছুহিতা এবং
আজমাঢ়-কুলে পরিণীতা; মহাকুলে জন্ম গ্রহণ ও
মহাকুলে পাণিগ্রহণ করায় যেন এক ব্রদ হইতে
অন্য ব্রদে আগতা হইয়াছেন। আপনি প্রভূত ঐশ্বর্যাশালিনী, সর্বা-কল্যাগ্রবতী এবং ভর্তার নিরতিশয়
আদরভাগিনী ছিলেন। বীরপত্নী হইয়া আপনি
নহাবির নন্দনগণৈর জননী হইয়াছেন, মৃতরাং স্ত্রীলোকের যে সকল গুণ থাকা সন্তব, কিছুই আর
আপনকার অবশিষ্ট নত; আপনি সর্বাগ্তণেই
বিভূষিতা হলাছেন। অতএব ভবাদৃশী মহাভাগা মাহলাকে প্রথা বুংখ উভয়ই অনুভব করিতে হয়।

ে ছে দেবি ৷ আপনকার পুজেরা নিজা আলস্য, ক্রোধ হর্ষ, ক্ষুধা পিপাসা, শাভ উঞ্চ-প্রভৃতি যাবতীয় দ্বন্দ-সমস্ত বর্ণাকৃত করির। বার সমুচিত স্থাবেই নির-ন্তর নিরত রহিয়াছেন। মহে। ৎসাহ ও মহাবল-সম্পন্ন পাগুরগণের সামান্য লোকের প্রার্থনীয় আ-হার-বিহারাদি আমা স্থথে কিছুমাত্র অভিরুচি নাই, বীরস্থুখই তাঁহাদিগের নিত্য প্রীতির আস্পদ; অকিঞ্চিৎকর স্বণ্প বিবয়ে তাঁহারা ক্থনই পরিতুষ্ট হইবার নহেন। ধৈর্যাশালী পণ্ডিতেরা কোন বস্তুর পরাকাঠাই সেবন করিয়া খাকেন। ভাঁহারা হয় মামুবোচিত চুড়ান্ত ক্লেশ-সমস্ত সহু করেন, না হয় উৎকৃষ্ট ভোগ-স্থথের এক শেষ অনুভব করেন; পরস্ত গ্রামাস্থ্র-প্রিয় মানবেরা কেবল মধ্যমাবস্থার প্রার্থনা করে; অত্যন্ত ছুঃখ বা অত্যন্ত স্থুখ তাহা-দিগের কদাচ কামনার বিষয়ু হয় না। অতএব স্থুখীর পাণ্ডবেরা চিরকাল এক শেষেই রত রহিয়া-ছেন, মধামাবস্থায় পতিত হইতে কদাপি প্রবৃত্তি করেন নাই। বিষয়ের উভয়-সীমা-প্রাপ্তিই ঘে স্থথ-ক্রী এবং উভয়ের মধ্যভাগ ছঃখহেতু, ইহা পণ্ডি-তেরাও স্পর্কাক্ষরে নির্দেশ করিয়া রাখিয়াছেন।

হে অয় ! পাণ্ডবগণ ও পাঞ্চালী আপনাকে অভি-বাদন করিয়া আত্ম-কুশল নিবেদনানন্তর আপনকার অনাময় বার্তা জিজ্ঞাসা করিয়াছেন। আপনি পুত্র-দিগকে অচিরেই কৃতকার্যা, অরোগ, সর্বলোকের ঈশ্বর, হতামিত্র ও জী-সংযুক্ত দেখিবেন, সন্দেহ নাই।

পুত্ৰ-ছুঃখে অভিভূতা কুষ্ঠী দেবী এইৰূপে আখা-সিতা হইয়া অজ্ঞানজনিত-মেৰ্হ-নিগ্ৰহ-পূৰ্বক জনা-র্দনকে প্রত্যুক্তর করিলেন, হে মহাবাহে৷ মধুস্থদন ক্লম্ম তোমার বিবেচনায় যে কোন কার্য্য পাগুব-দিগের পথা ও হিতঁকর হয়, ধর্মের অবিলোপে ও অকপটে তাহারই অনুষ্ঠান কর। হে পরস্তপ! তোমার সত্যনিষ্ঠা ও বংশমর্য্যাদার যেৰূপ প্রভাব, তাহা আমি বিশেষ ৰূপে জানি। মিত্রগণের কার্য্য-বাবস্থা বিষয়ে ভুমি যাদৃশ বুদ্ধি বিক্রম প্রকাশ করিয়া থাক, তাহাও আমার বিদিত আছে। অধিক আর কি বলিব, আমাদিগের কুলে ভুমিই ধর্ম, ভুমিই সত্য এবং তুমিই মহতী তপস্য। ; তুমি পাগুবগণের ভাতা অথচ তুমিই পরব্রহ্ম; অথিল ব্রহ্মাণ্ড ভোমা-তেই প্রতিষ্ঠিত রহিয়াছে। তুমি যে কথা বলিলে তাহা অবশাই সত্য হইবে, কদাপি তাহার অনাথা इक्टव ना।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, মহাবাছ হৃষীকেশ কুন্তীর সহিত উক্তৰপ সম্ভাষণানম্ভর তাঁহার অনুমতি গ্রহণ-পূর্বক প্রদক্ষিণ করিয়া তুর্যোধনের ভবনোদ্দেশে প্রস্থিত হইলেন।

> কুন্তীকৃষ্ণ-সংবাদে নবতিত্ত অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯০॥

বৈশান্সায়ন কহিলেন, মহাষশা গোবিন্দ জনার্দ্দর,
পৃথার অসুমতি গ্রহণান্তে প্রদক্ষিণ-পূর্ব্বক প্রস্থিত
হ্ইয়া, বছবিধ-বিচিত্র-আসন-সমাকীর্ণ পরম-শোভাসমিথিত সাক্ষাৎ পুরন্দর-গৃহোপম ছুর্য্যোধন-গৃহে
আসিয়া প্রবেশ করিলেন। রাজপুরের ছার-দেশে

व्यानकारनक रागेवादिक हिल, किन्छ किन्हे छ। हारत নিবারণ করিতে সমর্থ হইল না; তিনি আবাধে তৃতীয় কক্ষ্যা অতিক্রম করিয়া, সজল-জলধর-সন্নিভ, বিশাল-শৈলশিখর-সদৃশ-সমুন্নত, অসীম-শোভা-সমু-জ্ঞুল প্রাসাদোপরি আর্চ হইলেন। তথায় উপ স্থিত হইয়া দেখিলেন, মহাবাছ স্থােধন অশেষ নরপতিবর্গ ও কুরুর্ন্দে পরির্ত হইয়া রাজসিংহা-সনে আসীন রহিয়াছেন; তাঁহার সমীপ-দেশে ছুঃশ সন, কর্ণ ও স্থবলপুত্র শকুনি আপন আপন আ-সনে উপবিষ্ট আছেন। যতুনন্দন মধুস্থদন অভ্যা-গত হইলে মহাযশস্বী ধৃতরাষ্ট্র-তনয় তাঁহার অভা র্থনা নিমিত্ত তৎক্ষণমাত্র অমাত্যবর্গের সহিত আ-সন পরিত্যাগ করিয়া উঠিলেন। কেশব অত্যে তাঁ-হার ও <mark>তদীর অমাত্যগণের সহিত, পরে ত</mark>ত্রতা যাবতীয় রাঞ্জ-নিচয়ের সহিত বয়ংক্রমানুসারে আ-লিঙ্গনাদি করিয়া বছবিধ-আন্তরণ-সমাকীর্ণ স্থপরি-ষ্কৃত কাঞ্চন-ময় পর্যাঙ্কোপরি উপবিষ্ট হইলেন। তখন কুরুরাজ তাঁহার সৎকার নিমিত্ত গো, মধুপর্ক. উদক, গৃহ, রাজ্ঞ্য, সকলই নিবেদন করিলেন। কৌ-রবগণ ও অন্যান্য ভূপালবর্গ সকলেই প্রসন্ধতা-কর-কান্তি, পর্যাঙ্ক-সমাসীন গোবিন্দের উপাসনা করিতে লাগিলেন।

অনন্তর রাজা ছুর্যোধন বিজয়িজ্ঞেষ্ঠ যতুপতি কেশবকে ভোজনার্থ নিমন্ত্রণ করিলেন, কিন্তু তিনি তাহাতে অনুমোদন অথবা সন্মতি-প্রকাশ করিলেন না। ইহাতে কুরুরাজ সয়োধন-দ্বারা কর্ণকে উন্মুখ করিয়া সভা-মধ্যে ক্লম্বকে মৃত্রভাবে এই কথা বলিলেন, হে জনার্দ্দন! আপনকার নিমিত্তে বছতর অন্ন পান ও বসন শ্রনাদি উপনীত হইয়াছে, কিন্তু আপনি তাহার কিছুই গ্রহণ করিলেন না; ইহার কারণ কি? হে মাধব! আপনি কুরুপাণ্ডব উভয় পক্লেরই হিতামুষ্ঠানে রত রহিয়াছেন; আপনি ধৃত-রাষ্ট্রের প্রধান সম্বন্ধী ও প্রীতিপাত্র; ধর্ম্ম ও অর্থের

যথার্থ তত্ত্ব সম্পূর্ণকপেই আপনকার বিদিত আছে; অতএব হে চক্রগদাধর গোবিন্দ! সর্ব প্রকারে যোগ্য হইয়াও আপনি যে মদীয় বস্তু-সমস্ত গ্রহণ করিলেন না, ইহার হেতুকি, শুনিতে ইচ্ছা করি।

বৈশপারন কহিলেন, ছুর্য্যোধনের এই বাক্য আ-পাতত মৃত্ব বোধ হইল বটে, কিন্তু উত্তর কাল বিবেচনা করিলে উহা নিতান্তই শঠতা-পূর্ণ। যাহা হউক
রাজীবনেত্র মহামনা গোবিন্দ তাঁহার ঐ কথা শুনিরা বিশাল দক্ষিণ-বাছ উত্তোলন-পূর্বেক বর্ষাকালীন
নিবিড়-জলধরের ন্যায় গন্তীর-স্বর-সম্বলিত, নিন্তীবনবিবিজ্ঞিত, জলুপ্ত-পদ-পদার্থ, অবাধিতার্থ, জড়তারহিত, স্থন্দর-হেতু-সংযুক্ত ও উৎকৃষ্ট কলোপধায়ক
বাক্যে প্রত্যুত্তর করিলেন, হে ভারত! দূতেরা কৃতকার্যা হইতে পারিলেই, যাহার নিকটে প্রেরিত
হয়, তাহার পূজা গ্রহণ ও দ্রব্য ভক্ষণ করিয়া থাকে;
মতএব আমি কৃতকার্য্য হইলে আপনি আমাকে
ও আমার জমাত্যগণকে ইচ্ছানুন্নপ অভ্যর্থনা করিবেন।

জনার্দ্দনের এই কথার ছুর্যোধন পুনরার তাঁহারে কহিলেন, হে মধ্সুদন! আমাদিগের প্রতি আপনকার একপ অসদৃশ বাবহার করা যুক্তিযুক্ত হর না; আপনি ক্বতকার্যা হউন না হউন তাহা আমরা ধরিতেছি না, কেবল যতুকুল-সমস্কেই আপনাকে পূজা করিবার নিমিছে যত্ন করিতেছি; কিন্তু যত্ন করিরাও পারিতেছি না। হে পুরুষোভ্তম! আমরা প্রীতি-সহকারে আপনকার আর্চনা করিতে সমুৎস্কক , হইলেও আপনি কি কারণে তাহা স্বীকার করিতেছেন না, কিছুই বুকিতে পারি না। হে গোনকার সহিত আমাদিগের কোন শক্তনতাও নাই এবং যুক্ত বিগ্রহও ঘটে নাই; অতএব বিবেচনা করিয়া দেখিলে আপনকার এ কথা বলা কোনমতে সক্ষত হয় না।

ইহা শুনিয়া ৰাস্থদেব সহামাত্য স্থােধনের প্রতি দৃটি করিয়া ঈষৎ হাস্য করিতে করিতে কহিলেন,

व्यामि ना काम, ना क्वांथ, ना व्यर्थ, ना लाख, ना দ্বেম, না হেতুবাদ, কিছুতেই ধর্মত্যাগ করিতে পারি না। হে রাজন্! যাহার প্রতি কোন বাক্তির প্রীতি জম্মে, সে তাহারই অন্ন ভোজন করিয়া থাকে; অথবা যাহারা আপদ্যুত্ত হয়, ভাহারাও অন্যের প্রদত্ত পান ভোজন গ্রহণ করে; কিন্তু আপনিও আমার কোন সম্প্রীতির কার্য্য করেন নাই এবং আমরাও আপদাত হই নাই ; স্থেতরাং কি প্রকারে আপনার অন্ন স্বীকার করিতে পারি? হেরাজন্! আপনি বিনা কারণে, নিজ-প্রিয়ানুবর্তী সর্বপ্তণ-সম্পন্ন ভাতা পাগুর্বদিগের প্রতি জন্মাবধি দ্বেষ করিতেছেন। বিনা কারণে তাঁহাদিগের প্রতি বিদ্বেষ করা কোন মতেই উচিত হইতে পারে না। পাণ্ডবেরা চির-কাল ধর্মের অনুবন্তী রহিয়াছেন; তাঁহাদিগকে কে কি বলিতে পারে ? যে ব্যক্তি তাঁহাদিগের প্রতি দ্বেষ করে, সে আমার প্রতিও দ্বেষ করে ; যে তাঁহা-দের অমুকুল হয়, সে আমারও অমুকূল; ধর্মচারী পাণ্ডবগণের সহিত আমাকে অভেদাল্লা বলিয়া জানিবেন। কাম ক্রোধের অনুবন্তী যে মৃঢ়মতি প্রগাঢ় মোহ-বশত গুণশালী লোকের সহিত বিরোধ করিতে ইচ্ছা করে এবং সর্বাদাই ভাঁহার দ্বেষ করিয়া থাকে, পণ্ডিভেরা ভাহাকে পুরুষাধম বলিয়া নির্দ্দেশ করিয়াছেন। ইঞ্রিয়-পরতন্ত্র যে নরাধম ক্রোধ-মো-হের বশয়দ হইরা সাধুগুণ সম্পন্ন জ্ঞাতিগণকে নিয়ত লোভ দৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করে, সে কখনই অধিককাল সম্পত্তি-পদে প্রতিষ্ঠিত থাকিতে পারে না। পরস্ক বে মতিমান্ মাদব হৃদয়ের অঞিয় হইলেও গুণ-গরিষ্ঠ লোকদিগকে প্রিয়-কার্য্য-দারা বশীভূত করি-তে পারেন, তিনি চিরকাল প্রশন্ত-বশোমার্গে বিচ-রণ করেন। অতএব এই সমস্ত বিবেচনা করিয়া দেখিলে, আপনার এই চুফাভিসন্ধি-সম্বলিত অশুভ অল্ল কদাচ ভক্ষণীয় নহে; একমাত্র বিছুরের অল্ল ভোজন করিব, ইহাই আমার নিশ্চয়।

মহামনা মহাবাছ বাস্থদেব অসহনশীল ছুর্য্যো-

ধনকে এইকপ কহিয়া ভাঁহার রত্নপ্রভা-সমুন্থাসিত
ভবন হইতে নির্গমনানন্তর মহাত্মা বিছুরের নিকেতনে উপনীত হইলেন। তথায় উপস্থিত হইলে
ক্রোণ, রূপ, ভীয়, বাহ্লিক ও অন্যান্য কৌরবেরা
তাঁহার নিকটে আগমন করিলেন। সেই কৌরবেরা
বীর্যা-সম্পন্ন মধুস্থদন মাধবকে কহিলেন, হে যতুপতে! আমরা বহুরত্র-সমন্থিত গৃহ-সমন্ত আপনাকে
নিবেদন করিতেছি। পরস্ত্রী মহাতেক্সা মধুস্থদন
তাঁহাদিগকে এই উত্তর করিলেন, আপনারা সকলে
গমন করুন, আপনাদিগের আগমনেই আমার
বর্ধেই অর্চনা করা হইয়াছে।

কৌরবেরা প্রতিগমন করিলে পর বিদ্বর পরম বত্ববান্ হইরা সর্বকাম-সহকারে অপরাঞ্চিত দাশাহের অভার্চনা করিলেন। অনন্তর •তিনি মহাত্মা
কেশবকে বছল-গুণযুক্ত অনেক-বিধ ক্স্তিদ্ধ অমপান
উপহার দিলেন। মধুস্থদন রুক্ষ অগ্রে তৎসমুদায়ের
অধিকাংশ এবং উৎকৃষ্ট ধন প্রদান-ছারা বেদজ্জ
ব্রাহ্মণগণকে পরিতৃপ্ত করিলেন পশ্চাৎ দেবগণ-পরিরুত বাসবের ন্যায় সহচর-বর্গে মিলিত হইয়া সেই
অবশিষ্ট পরিত্র অম্প্রপান অভাবহার করিলেন।

কৃষ্ণ-ছুর্যোধন-সন্থাদে একনবভিত্য অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১॥

-

বৈশশায়ন কহিলেন, কৃষ্ণ আহারান্তে বিশ্রান্ত হইলে, রাত্রিকালে বিছুর তাঁহাকে এইৰপ কহিতে লাগিলেন, হে জনার্দ্দন কেশব! আপনকার এখানে আগমন করা সমাক্ বিবেচনারু কর্মা হয় নাই। ছুর্য্যোধন অতি-মন্দ্র্মতি, ধর্মার্থের অতিবর্ত্তী ও অত্যন্ত ক্রোধী। আপন মান-কামনার সে অনায়াসে মানা-লোকের মান হনন করে; বিজ্ঞগণের শাসনে থাকে না; ধর্মশাস্ত্র উল্লঙ্খন করিয়া কার্য্য করে। হে কেশব! তাহার মূঢ়তা ও দৌরাত্ম্যের কথা কি কহিব! সে এৰপ নির্ব্বোধ ও ছুরাগ্রহ-গ্রন্ত যে হি-তৈবিগণেরও বিনেত্ব্য নহে! কেছ্ কোন উপ্কার

করিলে তাহার প্রত্যুপকার করা দূরে থাকুক, বরং ষ্মপকারেরই চেফা পায়। সে নিভান্তই অক্কৃতজ্ঞ, কামাত্মা, মিধ্যাপ্রিয়, ধর্মত্যাগী, প্রাজ্ঞমানী মিত্র-দোহী সকলের নিকটেই সদা-শঙ্কিত, অতিমাত্র বি-भूष, खक्रुखबुक्ति, हेक्किरायत खनीश्वत, मकल कर्त्याङ **স্বেচ্ছাচারী এবং সর্ব্ব কার্যোই অ**ব্যবস্থিত-চিত্ত। আমি যে সমস্ত দোষের উল্লেখ করিলাম, এতছিল **ছুर्यााधन आत्र अप्राकारनक मार्चित आम्मा**म । অতএব আপনি মঙ্গলকর বাকোর প্রমঙ্গ করিলেও সে ক্রোধ-বশত কদাচ তাহা গ্রহণ করিবে না। ভীয় দ্রোণ রূপ কর্ণ অশ্বত্থামা জয়ত্রথ-প্রভৃতি বীরবর্গের প্রতি তাহার ভূয়সী বিজয়-প্রত্যাশা রহিয়াছে, সূত-ताः तम मास्त्रि द्वापान यम करत ना। ए **क**नाकिन! ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণ ও কর্ণ-প্রভৃতি ছুর্মাতি-সকলের এৰপ নিশ্চয় আছে যে, ভীয় দ্ৰোণ-প্ৰভৃতি বীর্-গণের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করা দূরে থাকুক, পাগুবেরা তাঁহাদিগকে নিরীক্ষণ করিতেই সমর্থ হইবে না ए मध्यमन! व्यविष्य प्राची कृर्याधिन शार्थित-সৈন্য-সমূহ সংগ্রহ করিয়া আপনাকে ক্নতার্থ মনে করিতেছে। তাহার মুর্বুদ্ধি ও মুরাশার কথা আর कि विलव ; तम, कर्गहे अकाकी नेक-विकास ममर्थ হইবে, এইৰূপ নিশ্চয় করিয়া রাখিয়াছে; স্বভরাং শান্তি-লাভে তাহার কথনই প্রবৃত্তি হইবে না।

ফে কেশব! আপনি কৃত্তপাগুৰদিগের পরস্পার সৌজ্ঞা আকাজ্জা করিয়া সান্ধিবন্ধনে যতুবান হই-তেছেন বটে, কিন্তু ধৃতরাষ্ট্রের সমুদ্য় পুক্রগণেরই প্রতিজ্ঞা এই যে, "পাগুরদিগকে আমরা কোন বস্তুই উচিত্যত প্রতিদান করিব না"। অতএব যাহারা এরপ কৃতনিশ্চয় হইয়া রহিয়াছে, তাহা-দিগের প্রতি কোন বাক্য প্রয়োগ করিলে অবশাই তাহা নির্থক হইবে, সন্দেহ কি? হে মধুস্থদন! যেখানে সত্তুক ও তুরুক্ত উভয়ই সমান, সে স্থলে প্রাক্ত ব্যক্তির, বধিরগণ-সন্ধিধানে গায়নের ন্যায়, অনর্থক বাক্য-বায় করা বিধেয় নহে। হে মাধৰ!

চাণ্ডাল-সমীপে बाक्तारात नाान्न, जाशनकात मरे व्यविक प्रयागि-भूना पृष्टिशत निकटण वाका-वास করা কোন ক্রমেই সঙ্গত ও যুক্তিযুক্ত হইবে না। বলগর্ষিত বিমূঢ় ছুর্য্যোধন কথনই আপনকার বাক্য রক্ষা করিবে না; তাহার নিকটে আপনি যে কোন কথা বলিবেন, তাহাই নির্থক হইবে। হে রুক্। সেই বছ-সংখ্যক তুর্বুদ্ধি অশিষ্ট তুষ্টমতি পাপা-স্থারা যথন সকলে একত্র উপবিষ্ট থাকিবে, তং-কালে তাহাদিগের মধ্যে আপনকার অবতীর্ণ হওয়া এবং প্রতিকূল বাক্যের প্রদঙ্গ করা আমার কদাচ অভিমত নছে। কখন বিজ্ঞলোকের উপাসনা না করা, অতুল ঐশ্বর্যোর অধিপতি হওয়া, অহকারে বিমুগ্ধ থাকা, বয়োধর্মে উদ্ধত ও অতিমাত্র অসহিষ্ণু হওয়া ইত্যাদি হেতু বশত ছুর্য্যোধন আপনকার হিতবাকা এছণ করিবে না। হে মাধব! তাহার সৈন্যও অতি বলিষ্ঠ এবং আপনকার প্রতি তাহার মহতী শঙ্কাও আছে, স্বতরাং আপনি কোন কথা विनिद्या तम् । विनिद्या विनिद्या । विक्रमार्कन! ধূতরাষ্ট্রপুত্রগণের এইৰূপ স্থির নিশ্চয় হইয়াছে যে অমর-নিকরে পরিবৃত দাক্ষাৎ পুরন্দর আদিয়া ममद्र श्रव्ह इरेल ७ ज|हामिर १ व कक्ष कित्र পারিবেন না। অতএব এতাদৃশ ছুরাশাসম্পন্ন, কাম ক্রোধান্ত্রবর্ত্তী, ভুর্বেরাধগণের নিকটে আপনি যে কোন বাকোর প্রদঙ্গ করিবেন, তাহা সম্যক্ অর্থযুক্ত इंडेटलेख निकास निवर्धक इंडेटव । यन्त्रमिक वियूष् ত্র্য্যোধন হতী অশ্ব রথ ও পদাতি-সম্বলিত বিপুল-ভর সৈন্য-মধ্যে অবস্থান করত ভয়-খূন্য ছইয়া মনে করিতেছে, সমগ্র বস্থন্ধরাই আমার করতলগতা হইয়াছে ; এবং এই মনে করিয়া সে অখিল জগতী-তলে নিংসপত্ন সাদ্রাজ্যের আশংসা করিতেছে; অতএব বিনা যুদ্ধে ভাহার নিকটে শাস্তি লাভ করা कान करमरे मस्वभित्र नरह। य वर्थ धकवात लक হইয়াছে, তাহা চিরকালই তাহার নিকটে বদ্ধমূল থাকিবে, কলপি হস্ত-বহিৰ্ভূত হইবে না, ইহাই

তাহার ধ্রুব জ্ঞান। হা! অবোধ ছুর্য্যোধনের নিমিত্ত বুঝি ধরিত্রীর ধংসদশা উপস্থিত হইল! যেহেতু তাহার সাহায্যার্থে পৃথিবীস্থ যাবতীয় ছুফ ক্ষাদ্রিয় ও কিতিপাল-বর্গ যেন কাল-প্রেরিত হইয়া পাণ্ডব-দিপের সহিত সমর-কামনায় স্ক্রদিক্ ছইতে সমা-গত হইয়াছে। হে কৃষ্ণ! ঐ সমস্ত ভূপতিগণ পূর্বে আপনকার সহিত শত্রুতী করিয়া হৃত সর্বস্থ হইয়া-ছিল, এক্ষণে আপন্দার ভয়ে কর্ণের সহিত যোগ করিয়া সকলেই ছুর্য্যোধনের আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছে এবং তাহার কার্য্য-সাধনার্থে প্রাণ পর্যান্ত পণ করিয়া পাণ্ডবদিগের সহিত যুদ্ধ করিবার নিমিত্ত মহাহৃষ্ট হ্ইয়া রহিয়াছে। অতএব হে বীরবর যতুপতে! তাহাদিগের মধ্যে আপনি প্রবেশ করেন, ইহা কোন প্রকারেই আমার মত-সিদ্ধ নহে। হে শক্ত-স্থদন ! সেই কুউচিত্ত একত্র সমুপবিষ্ট অশিষ্ট শত্রু-সমূহ-মধ্যে আপনি কি প্রকারে গমন করিবেন? হে শত্রনাশন মহাবাহো ! আপনি দেবগণেরও অপ-রিভবনীয়, স্থতরাং সকলই আপনকার সম্ভব হয়; আপনকার প্রভাব, পৌরুষ বা বুদ্ধি, কিছুই আমার অবিদিত নাই। হে মাধব! পাওবদিগের প্রতি আমার যেৰূপ প্রীতি আছে, আপনকার প্রতিও তাহার কিছুমাত্র অন্যথা নাই; আমি প্রেম, বছ-মান ও সৌহৃদ্য প্রযুক্তই আপনাকে এই কথা বলি-তেছি। হে পুণ্ডরীকাক্ষ! আপনকার সন্দর্শনে আ-মার অন্তঃকরণে যাদৃশী প্রীতি জন্মিয়াছে, তাহা আর কি বলিব; আপনি সর্বব ভূতের অন্তরাক্সা, সকলই জানিতেছেন।

> বিছুর-বাক্যে দ্বিনবভিত্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯২॥

ভগবান কহিলেন, বিদ্বর! মহাপ্রাক্ত ও বিচক্ষণ ব্যক্তিরা যেরপ কহিয়া থাকেন, মদ্বিধ স্থক্ত্দকে ভবা-দৃশ স্থক্দ্যক্তির যে কথা বলা উচিত হয়, এবং যাদৃশ ধর্মার্থযুক্ত ও যথার্থ বাক্য উক্ত করা আপনকার

অভ্যাস, আপনি পিতা মাতার ন্যায়, আমারে সেইৰপই বলিয়াছেন। আপনকার এই বাক্য সর্বা-ধাই যুক্তিযুক্ত, সত্য ও সাধু-সন্মত. সন্দেহ নাই; তথাপি একবার অবহিত হইয়া আমার আগমনের হেতু ভাবণ করুন। হে ক্ষন্তঃ! আমি ছুর্য্যোধনের দৌরাত্ম্য এবং ক্ষজ্রিয়গণের শত্রু ভাব, সকলই অব-গত আছি এবং অবগত ধাকিয়াও অদ্য কুরুমগুল-মঁধ্যে সমাগত হইরাছি। যে 👽 জিল এই অশ্ব-রথ-মাতঙ্গ-সমাকীর্ণ বিপর্যান্ত মেদিনী-মণ্ডলকে মৃত্যু-পাশ হইতে বিমুক্ত করিতে সমর্থ হয়, দে অবশ্যই অনুত্তম ধর্মলাভ করিতে পারে। আমি নিঃসংশয়ে বলিতে পারি, ষমুধ্য স্বীয় শক্তি অনুসারে কোন ধর্ম কার্য্য নিষ্পাদনে ষত্ন করিয়া যদিও ক্লভকার্য্য হইতে না পারে তথাপি তাহার পুণ্ঃ ফল প্রাপ্ত হয়, আবার মনে মনে কোন পাপ কর্মের চিন্তা করিয়া তাহার অনুষ্ঠান না করিলেও তক্জনিত ফল ভোগের অধিকারী হয় না। আমি আপ্নাকে যে কথা বলিলাম, ধর্মজ্ঞানী পণ্ডিতেরাও ইহাই নির্দ্দিষ্ট করিয়াছেন। হে কক্ত: সংগ্রামে আশু বিনাশোশুখ কুরু ও সঞ্জয়গণ-মধ্যে শান্তি-স্থাপন করিতে আমি অকপটে যত্ন করিব। এই উপস্থিত মহাঘোর আপদ্ কৌরবদিগের মধ্যেই সমু্পিত হইয়াছে; বেহেতু কর্ও ছর্ব্যোধন ইহার প্রবর্তক এবং সমবেত ক্ষল্রিয়েরা সকলেই উহাদিপের অমৃ-বর্ত্তী। আপদ্গ্রস্ত ক্লিশ্যমান মিত্রকে যে ব্যক্তি যথা-শক্তি অনুনয় দারা তাহা হইতে বিমুক্ত করিবার চেফা না করে, পণ্ডিতেরা তাহারে নৃশংস বলিয়া উক্ত করেন। মিত্র, ক্ষমতানুসারে যত্ন করিয়া, যে কোন উপায় দ্বারা, এমন কি কেশগ্রহ পর্যান্ত করিয়াও মিত্রকে অকার্য্য হইতে নিবর্ত্তিত করত কাহারও নিন্দনীর হন না। অতএব হে বিছুর! ছুর্যোা-ধন ও তদীয় অমাতাগণের মতুক্ত কার্য্য-সাধন-সমর্থ ধর্মার্থসংযুক্ত শুভময় হিত বাক্য গ্রহণ করা কর্ত্ব্য। কেবল ধৃতরাষ্ট্র-পুক্রদিগের নছে, আমি পাণ্ডৰগণের

এবং পৃথিবীস্থ ুযাবতীয় ক্ষজ্রিয়-বর্গের হিত-সাধন নিমিত্তেও অৰুপটে যত্ন করিব। আমি হিতামু-ষ্ঠানে যত্ন-পরায়ণ হইলেও যদি ছুর্য্যোধন আমার প্রতি কোন শঙ্কা করে, তথাপি মিত্রের কর্ত্তব্য কর্ম দম্পন্ন করিলাম বলিয়া আমার ক্লয়ের প্রীতি হইবে। জ্ঞাতিগণ-মধ্যে পরস্পর ভেদ হইবার স্ত্ত হইলে যে মিত্র সর্বপ্রেয়ত্বে মধ্যস্থতা অবলয়ন না করে, পণ্ডিতেরা ভাহাকে মিত্র বলিয়াই গণনা করেন না। সন্ধি বিষয়ে আমার যত্ন করিবার আরও একটি হেতু এই যে, অধর্মনিষ্ঠ সৌহৃদ্য-খূন্য মুচ্ লোকেরা যেন বলিতে না পারে, ক্লম্ব সমর্থ হইয়াও কোপযুক্ত কুরু পাণ্ডবদিগকে যুদ্ধ হইতে নিবারণ করিল না। আমি কুরুপাণ্ডৰ উভয় পক্ষেরই কার্য্য-সাধনার্থে এখানে আগমন করিয়াছি; স্থতরাং তদিষয়ে যত্ন করিয়া কোন লোকেরই নিদ্যাস্পদ হইব না। অবোধ ছুর্য্যোধন যদি আমার ধর্মার্থযুক্ত মঙ্গলময় বাকা শ্রবণ করিয়াও অগ্রাহ্য করে, তবে নিতাম্বই কালের বশবর্জী হইবে। অথবা যদি পাণ্ডবদিগের অর্থহানি না করাইয়া আমি কুরুগণ-মধ্যে শান্তি-সংস্থাপন করিতে সমর্থ হই, তাহা হুইলে আমারও মহাফলোপধায়ক পুণাকর্ম করা হয় এবং কৌরবে রাও মৃত্যুপাশ হইতে নিষ্কৃতি পাইতে পারে। ফলত আমি বিজ্ঞলোকের সমুচিত, ধর্মান্তমো-দিত, অর্থযুক্ত ও হিংসা-বিবৰ্জ্জিত যাদৃশ শুভ-বাকোর প্রসঞ্চ করিব, ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রেরা তাহা যদি সবিশেষ পর্য্যালোচন করিয়া দেখে, তবে অব-শাই আমারে সমাদর করে এবং যে শান্তির নিমিত্ত আগমন হইয়াছে, তাহাতেও সন্মত হইতে পারে। পরস্তু তাহা না করিয়া যদি তাহার৷ আমার প্রতি কোন অনিষ্টাচরণে উদ্যুক্ত হয়, তাহাতেই বা আ-মার ভয়ের বিষয় কি ? আমি কুদ্ধ হইলে কেশরি-সন্নিধানে ইতর জন্তগণের ন্যায় কৌরবগণ ও সম-বেত সমস্ত পার্থিববর্গ আমার সম্মুখে অবস্থিত থাকিতেই সমর্থ হইবে না।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, যতুগণ-স্থাবহ রক্ষিকুল-পতি বাস্থদেব বিছুরের সহিত এইৰপ কথোপকথন করিয়া পরিশেষে স্থাস্থার স্থায় শয়ন করিলেন।

রুক্ষবাকে। ত্রিনবতিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৯৩॥

-**---00**0.--বৈশম্পায়ন কহিলেন, ধীসম্পন্ন রুষ্ণ ও বিছুরের উক্তৰূপে কথোপকখন করিতে করিতে সেই উচ্ছৃল-নক্ষত্র-ভূষিতা শুভা শর্কারী পরম স্বধে অতিবাহিতা হইল। অমিত-প্রতাপশালী ক্লফের ধর্মার্থকাম-যুক্ত বিচিত্র-পদপদার্থ মনোহর বচনাবলি অবণে অপরি-তৃপ্ত মহাত্মা বিছুর এবং অনুৰূপ কথার প্রসঙ্গকারী কেশব উভয়েরই যেন অনিচ্ছাতে যামিনী অতীতা হইল। পর দিন প্রভূাবে স্বস্থর-সম্পন্ন বছসংখ্য স্থতমাগধ-বন্দিগণ শব্দছুল্ভ-নির্ঘোষ-দারা কেশ-वरक अजिरवाधिक कतिल। यष्ट्रकूल-त्थकं मानाई জনার্দ্দন গাত্রোত্থান করিয়া অত্যে আবশ্যক প্রাতঃ-কুত্য-সমস্ত সম্পন্ন করিলেন, পরে স্নানান্তে জপ ও হোম-কাৰ্য্য সমাধান-পূৰ্ব্বক সমাক্ ৰূপে অলঙ্ক্ত হুইয়া আদিত্যের উপাসনা করিতে লাগিলেন। অপরাজিত বাস্থদেব এইব্রপে সন্ধ্যাবন্দনা করি-তেছেন, এমন সময়ে ছুর্য্যোধন ও স্থবলপুত্র শকুনি তাঁহার সন্নিহিত হইয়া কহিলেন, হে গোবিন্দ! মহারাজ ধৃতরাধ্র ও ভীম-প্রভৃতি কুরুগণ এবং পৃথি-বীস্থ যাবতীয় রাজবর্গ, সকলেই সভামগুপে আসীন इरेग़ा, अमद्रशंश रियम श्रूतन्हरतत्र श्रीर्थना करत्रन, সেইৰূপ আপনকার আগমন প্রতীক্ষা করিতেছেন।

ইহা শুনিয়া শত্রতাপন জনার্দ্দন পরম মনোহর শিক্টাচার-দারা উভয়কে অভিনন্দিত করিলেন, অনস্তর শুভক্ষণ পাইয়া ব্রাহ্মণদিগকে হিরণ্য, বস্ত্র, গো শুশ্বশ্ব-প্রভৃতি প্রদান করিতে লাগিলেন। এইকপে বহুতর রত্মরাজি বিতরণ করিয়া তিনি ব্যাদ্দি আসনে উপবিষ্ট হইলেন, তথন নিজ সার্ধি

দারুক তাঁহার সমীপবর্তী হইয়া বন্দনা করিল এবং অনতি বিলয়ে অমুত্তম-তুরঙ্গম-যোজিত, সর্বারত্ন-বিভূবিত, কিন্ধিণী-সমাকীর্ণ, মহামেঘ-সদৃশ পভীর-गक्काती, अञ्चर्ग, बृह्हाकात्र, हिरा तथ वहेत्रा छेश-স্থিত হইল। তথন যাদবগণ-নয়ন-নন্দন মহামনা জনার্দিন গলদেশে কৌস্তুভ মণি ধারণ করত পরম শোভায় উদ্ভাসমান ইইয়া অগ্নিও ব্ৰাহ্মণদিগকে প্রদক্ষিণ-পূর্বক তার্গতে আরোহণ করিলেন। তৎ কালে তিনি যদিও কুরুপক্ষীয় অনেকানেক অনুচর-বর্গে পরিবারিত ছিলেন, তথাপি র্ফি-পক্ষের পরি-রক্ষকেরা তাঁহার শরীর সংরক্ষণার্থে সভত অবহিত ছিল। সর্ব্ব-জীবশ্রেষ্ঠ সকল-প্রাজ্ঞ-প্রবর দাশার্হের রথারোহণান্তে অধিল ধর্মতন্ত্রক্ত মহামতি বিচুর তাঁহার পশ্চাহ আরোহণ করিলেন। ছুর্য্যোধন শকুনি-সমভিব্যাহদের দ্বিতীয় রথে আৰু চ্ইয়া শত্রুতাপন যত্নন্দনের অনুগামী হইলেন। সাত্যকি রুতবর্মা-প্রভৃতি রক্ষি-পক্ষীয় মহারথেরাও কেহ অখে, কেহ পজে, কেহ কেহ বা রথে আরোহণ করিয়া তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিলেন। মহারাজ! প্রস্থানোমুখ সেই সমস্ত বীরগণের হেম-পরিকর-মনে।হর-তুরঙ্গচয়-যোজিত, স্থছোষ-সম্পন্ন, বিচিত্র-বর্ণ রথ-সমূহ পরম শোভায় বিরাজিত হইতে থা-কিল। অসামান্য জ্ঞীসম্পন্ন ধীমান্ ৰাস্থদেব যথা সময়ে রাজর্ষি-সঞ্চরণযোগ্য মহাপথ প্রাপ্ত হইলেন। ছুর্ব্যোধন পূর্ব্বেই তাহা সম্মাক্তিত ও জলসেক-দারা ধ্লিখ্ন্য করিয়া রাখিয়াছিলেন। অনস্তর কে-শবের প্রস্থান সময়ে কাহল শব্ধ-প্রভৃতি অশেষবিধ वारमामाम रुरेरा नामिन। मर्वरनाक-श्रवीत मक-তাপন সিংহ-বিক্রম অসংখ্য যুবকগণ ক্লঞ্চের রখ বেফ্টন করিয়া চলিলেন। বিচিত্র বেশ-ভূবায় ভূষিত অন্যান্য বছ সহস্র সৈনিকেরাও অসিপ্রাস-প্রভৃতি আয়ুধ-সমন্ত হন্তে লইয়া ভাঁহার অত্যে অত্যে প্রধা-বিত হইল। এতম্ভিন্ন পঞ্চ শত গঙ্গারোহী ও সহস্র সহস্র রধিগণ প্রস্থানকারী বীর্যাবান দাশার্হের

পশ্চাৎ পশ্চাৎ ষাইতে লাগিল। কুরু-পুরবাসী আবাল-বৃদ্ধ-বনিতা সকল লোকেই অরিন্দম জনার্দ্দনের দর্শন-কামনায় পথি-মধ্যে আসিয়া অবস্থিত
হইল। বরারোহা কামিনীগণ এত অধিক পরিমাণে
বাতায়নমঞ্চে আত্রয় করিয়া রহিল যে, বোধ হইতে
লাগিল যেন তাহাদিগের দেহভারে ভবন-সমুদায়ের
প্রস্থালিত হইবার উপক্রম হইতেছে।

মধুস্থদন গোবিদদ কুরুগণে পূজা গ্রহণ ও বছ-তর মধুর বাক্য শ্রবণ করিতে করিতে এবং সকলের প্রতি অবলোকন ও প্রতি-সংকার করিতে করিতে मन्द्र मन्द्र मध्यादत भगन कतिरामन। व्यनस्त मञ्जात সন্নিহিত হইলে তাঁহার অমুযায়িগণ শব্ধনি ও বেণু-নির্ঘোষ-সহকারে সমস্ত দিল্পগুল নিনাদিত করিল। তথন সভাস্থ ধাবতীয় সংশ্বভাব-সম্পন্ন অমিততেজন্বী রাজন্যগণ ক্লফের আগমীনাকাজ্ফায় হর্ষভরে কম্পিত হইতে লাগিলেন; বিশেষত তাঁ-होत अञ्जल-जलप-भंक-अपृथ शंजीत तथ-निनाप व्यवर्ग, তিনি সমীপবর্ত্তী হইয়াছেন বোধ করিয়া, লোমা-क्षिज-कटलवत्र श्र्रेटलन । अकल-यामवश्रवत्र वास्नुटमव সভাদ্বারে উত্তীর্ণ হইয়া কৈলাস-শিখরোপম রথ হইতে অবতরণ পূর্বক সাতাকিও বিদ্বরের হস্ত ধারণ করিয়া সর্বতে ক্লফমণি-নিকর-বিনিঃস্ত মনো-হর প্রভাপুঞ্জে উদ্ভাসমান, অভিনব-নীরদ-প্রতিম, माकार प्रारंख-महन-महम मजाप्रथाल প্রবিষ্ট হই-লেন এবং দিবাকর যেমন স্বকীয় করনিকর সহকারে অপরাপর জ্যোতিঃ পদার্থ নিচমের প্রভারোধ করেন, সেইৰূপ অলোক-সামান্য স্বকীয় কান্তি-পুঞ্জ দারা ममूमम् कोत्रविनशस्य पाष्ट्रामिष्ठ कतित्वन । कर्न ७ ছুর্য্যোধন তাঁহার সম্মুখে এবং ক্লুতবর্ম্মা ও রুফিবংশী-য়েরা পশ্চাম্ভাগে অবস্থিত রহিলেন। ভীম্ম দ্রোণ প্রভৃতি সজ্জনগণ ধৃতরাষ্ট্রকে অগ্রে করিয়া জনার্দ্ধনের অভ্যৰ্থনা নিমিত্ত আপন আপন আসন হইতে বিচ-লিভ হইলেন। যতুনন্দন অভ্যাগত হইবামাত্র প্রজ্ঞা-চকু মহাযশা অন্ধরাজ ভীয় ও দোণের সহিত

তৎক্ষণাৎ গাজোপান করিলেন। মমুকাধিপুতি মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র দণ্ডায়মান হইলে তত্রত্য সহস্র সহস্র ভূপালগণ অমনি চতুর্দ্দিক্ হইতে উঠিয়া দাঁড়াইলেন। অনন্তর অক্সরাক্তের আদেশ ক্রমে ক্লফের নিমিত্ত কাঞ্চন-রাজি-বিরাজিত সর্বতোভড নামক প্রসিদ্ধ আসন উপকম্পিত হইল। ইতিমধ্যে ধর্মাত্মা মাধব ঈষৎ হাস্য করত ধৃতরাষ্ট্র, ভীন্ম, দ্রোণ ও অন্যান্য রাজন্যদিগকে সম্বন্ধ ও বয়ঃক্রমানুসারে বন্দন সম্ভাষণাদি করিতে লাগিলেন এবং পৃথিবীস্থ সমস্ত ভূপালবর্গ ও কুরুগণেরাও তাঁহারে সভায় অভ্যাগত সম্মানার্হ ব্যক্তির সমুচিত সম্যক্ অর্চনা 🕐 করিতে থাকিলেন। পরপুরবিজয়ী যছপতি জনা-ৰ্দন নৃপতিমগুল-মধ্যে অবস্থিত হইয়া দেখিতে পাইলেন, পূর্ব্বে আগমন সময়ে অন্তরীক্ষন্থ যে সমন্ত ঋষিগণের সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন, তাঁহারা অভাগত হইয়াছেন। নারদ-প্রভৃতি সেই সকল দেবর্ষি-বৃন্দকে সন্দর্শন করিবামাত্র তিনি শাস্তন্ত্রনন্দন **जीश्राक मृष्ट्रमम् वहान कहिएलन, एह नद्रभएछ** ! औ দেখুন পবিত্রাস্থা মুনিগণ মর্ত্যলোকীয় সভা সন্দর্শন-কামনায় সমাগত হইয়াছেন ; ইহাঁদিগকে আসন ও পাদ্য অর্ঘ্যাদি প্রচুর সংকার দ্বারা আবাহন করুন। ইহাঁরা আসীন না হইলে আর কাহারও উপবিফ হইবার সাধ্য নাই; অতএব অবিলয়ে ইহাঁদিগের পূজা বিধান করুন। ভীয়, দেবর্ষিদিগকে সভা-দ্বারে উপস্থিত দেখিয়া অমনি সমস্ত্রমে ভৃত্যবর্গকে আদেশ করিলেন, 'সত্ত্র আসন আনয়ন কর'। ভূত্যেরাও তৎক্ষণমাত্র মণিকাঞ্চন-বিচিত্রিত, স্থপরিষ্কৃত, বছ-মূল্য রুহদাকার আসন সমস্ত আনিয়া উপস্থিত করিল। হে ভারত : মুনিগণ অর্ঘ্য-গ্রহণ-পুরংসর তৎসমুদায়ে উপৰিষ্ট হইলে জনাৰ্দ্দন ও রাজন্যগণ আপন আপন আদনে উপবেশন করিলেন। ছঃশাসন সাত্যকিকে একখানি উত্তম আসন এবং বিবিংশতি কৃতবর্মাকে একথানি উৎরুই কাঞ্চন-পীঠ প্রদান করিলেন। সতত অসহনশীল, উন্নতবাসনা-সম্পন্ন কর্ণ ও ছুর্য্যো-

ধন উভয়েই ক্লফের অনতি দুরে একাসনে উপ-বিক হইলেন। পাক্ষাররাজ রাজাশকুনি গান্ধার-গণে পরির্ত হইয়া স্বপুত্র-সমভিব্যাহারে আসন গ্রহণ করিলেন। মহামতি বিছুর ক্লঞ্চের আসনের অব্যবহিত সন্নিধানে শুক্লবর্ণ মহামূল্য মৃগ-চর্ম্মের আন্তরণ-যুক্ত মণিময় পীঠে আসীন হইলেন। মহারাজ! অমৃতের আস্বাদনে যেমন চিত্তের তৃপ্তি-সাধন হয় না, তদ্ধপ সেই সভাস্থিত যাবতীয় সাধু-প্রকৃতি ভূপাল-সকল চির-কালের পর জনার্দনকে অবলোকন করিয়া কেহই আর পরিতৃপ্ত হইলেন না। অতসী-পুষ্প-সদৃশ-কান্তি পীতাম্বরধারী জনা-র্দন স্থবর্ণ-মধ্যে সংস্থাপিত ইন্দ্রনীল মণির ন্যায়, সভাম্গুপে বিরাজিত হইতে লাগিলেন। তত্ততা ় সকল লোকেই গোবিন্দের প্রতি চিন্ত-নিবেশ করত নিন্তন হইয়া রহিলেন; কেহই আর কুত্রাপি কোন কথার উল্লেখ করিলেন না।

কৌরব সভায় ক্লফের উপবেশনে চতুর্নবতি-তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৪॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, সভামগুপস্থ সেই সমস্ত

ताब्रनागग जामन-धर्ग-পূर्वक नीत्रव रुरेश। तरिल, শোভন দন্তরাজি ও ছুন্ফুভি-সদৃশ গভীর-স্বর বিশিউ কৃষ্ণ কথা-প্রদঙ্গ উত্থাপন করিলেন। ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি দৃষ্টিপাত করত, সভার সকল লোকে শুনিতে পায়, এইৰূপ করিয়া তিনি বর্ষাকালীন নবীন নীর-দের ন্যায় প্রগাঢ় শব্দে সম্ভাষণ করিতে লাগিলেন। ভগবান্ কহিলেন, হে ভারত! বীর-বর্গের অপ্র-ণাশে কুরু ওপাগুবগণমধ্যে যাহাতে শান্তি স্থাপন হয়, তদ্বিবয়ে যত্ন করিবার নিমিত্ত আমার আগ-মন হইয়াছে; এতন্তিন্ন আমার অন্য কোন হিত वाका वक्कवा नारे। ए अतिकम महाताक। हेर-লোকে যাহা কিছু জানিতে হয়, তাহা সকলই আ-পনি জানিয়াছেন; স্থতরাং আপনাকে অপরাপর

আপনকার এই কুল শাস্ত্রজ্ঞান ও সদাচার সম্পন্ন এবং সৰ্বস্থেণে বিভূষিত হওয়ায় সমগ্ৰ ভূপালৰগ-মধ্যে এক্ষণে শ্রেষ্ঠ বলিয়া পরিগণিত হইতেছে। হে ভারত! অনেকের অনেক গুণ আছে বটে, কিন্তু কৌরবদিগের ক্নপা, অমুকম্পা, ক্ষমা, কারুণা, আনৃশংসা, সত্য ও সারলা, এই করেকটি গুণ সর্কো-পরি; ইহাতেই আপনীদিগকে সর্বাপেক্ষা বিশিষ্ট করিয়াছে। অতএব হৈ রাজন। এতাদৃশ স্কপ্রতিষ্ঠা-ভাজন মহীয়ান্ কুলে কোন অযুক্ত আচরণ হওয়া নিতান্ত অমুচিত; বিশেষত তাহা যদি আপন-কার নিমিত্ত সংঘটিত হয়, তবে আরও অসঞ্চত হইরা উঠে; যেহেতু বাহ্য ও অন্তরক্স লোকদিগের প্রতি ৰূপটাচারী উৎপথবর্ত্তী কৌরবদিগের আপ-নিই একমার্চ প্রধান বারয়িতা। কিন্তু হে কুরু-সন্তম ! ছুর্যোধন প্রভৃতি আপনকার অশিষ্ট পুত্রেরা ধর্মার্থের প্রতি পরাজুখ, লোভাক্নফ-চিন্ত ও মর্য্যাদা-শূন্য হইয়া অনুভূম আত্মীয় ও বন্ধুগণের প্রতি নির-তিশয় নৃশংস ব্যবহার করিতেছেন, তথাপি আপনি তাহা জানিয়াও জানিতেছেন না। হে পুরুষর্যভ ! এই মহাঘোর আপদ্ কুরুগণ-মধ্যেই সমুশ্বিত হইয়াছে; কিন্তু আপনি উপেক্ষা করিলে, ইছা সমগ্র ভূমগুল বিনাশের নিদানভূত হইবে। হে ভারত। আপন-কার ইচ্ছা হইলে এখনও ইহার শাস্তি হইতে পারে। আমার বিবেচনায় শান্তি-স্থাপন হওয়া কোন ক্রমেই ভুষ্ণর নহে; ইহা আপনকার এবং আমার উভয়ে-রই আয়ত্ত রহিয়াছে। হে রাজন্! আপনি পুত্র-দিগকে শাস্ত করুন, আমিও পাগুবগণকে শাস্ত করিব। হে ভরতর্ষভ! স্বদল-সমেত আপনকার পুত্রেরা অবশাই আপনকার আজ্ঞা প্রতিপালন করিবেন; আপনকার শাসনে অবস্থান অপেকা তাঁহাদিগের অধিকতর হিতকর বিষয় আর কি আছে ? হে কৌরবরাজ! আপনি শাসন-প্রচারে অভিলাষী হইয়া যদি শান্তি-সংস্থাপনে বত্ন করেন, মঙ্গলের কথা আর কি বিজ্ঞাপন করিব ? হে রাজন্! [।] তাহা হইলৈ আপনকার এবং পাগুবদিগের উভয়

পক্ষেরই মঙ্গল; অতএব হে রাজেন্দ্র! আপনি অকপটে পর্যালোচন করিয়া স্বয়ং তাহার সম্বিধান করুন। পাগুবেরা আপনকার সহায়ভূত হউন। তাঁহাদিগের দ্বারা অভিরক্ষিত হইয়া আপনি নিরু-ছেগে ধর্মার্থের অমুষ্ঠান করুন। হে মমুজাধিপ! বছপ্রকার যত্ন করিলেও তাদৃশ অসামান্য সহায় লাভ করা ছুঃসাধ্য হয়। মঁহাত্মা পাণ্ডবেরা আপন-কার রক্ষা করিলে, পার্থিব রীজন্যগণের কথা দূরে থাকুক, অমর-রুন্দ-সহক্ষত স্বয়ং দেবরাজও আপ-নাকে পরাক্ষয় করিতে সাহসী হইবেন না। হে ভরত-র্ষভ! যে স্থলে ভীম, দ্রোণ, রূপ, কর্ণ, বিবিংশতি, অশ্বর্থামা, বিকর্ণ, সোমদন্ত, বাহ্লিক, জয়দ্রথ, কলিঞ্গ-পতি, কাম্বোজেশ্বর, স্থদক্ষিণ, যুধিন্ঠির, ভীমসেন, সব্যসাচী, নকুল, সহদেব, সাত্যকি ও ৠুযুৎস্থ-প্রভৃতি মহা মহা বীরগণ একত্র সমবেত হইবৈন, তথায় কোন্ বিপরীত-বুদ্ধি মানব ইহাঁদিগের সহিত প্রতি-যুদ্ধ করিতে অগ্রসর হইবে? হে শক্রনাশন! সম-বেত কুরু পাগুবদিগের সাহায্যে আপনি সমস্ত লোক-মধ্যে নিরতিশয় প্রভুত্ব লাভ করিতে পারি-বেন; কোন শত্রুই আপনাকে পরাভূত করিতে সমর্থ হইবে না। যে সকল মহীপাল আপনকার সমান এবং ঘাঁহারা আপনা হইতে শ্রেষ্ঠ, সকলেই আপনকার সহিত সৃক্ষিবন্ধন করিবেন; স্থতরাং আপনি সর্বতোভাবে রক্ষিত হইয়া পুত্র পৌত্র পিতৃ ভ্রাতৃ ও স্বহৃদ্বর্গের সহিত পরম স্বথে জীবন যাপন করিতে পারিবেন। মহারাজ! অন্যের নিকটে আপনকার সাহায্য গ্রহণেরই বা প্রয়োজন কি ? কেবল পাগুবদিগকেই পূর্ব্বের ন্যায় সমুচিত সংকার প্রদর্শন-পূর্ব্বক অগ্রবর্ত্তী করিয়া আপনি অখিল ভুবন-মগুলের সাম্রাজ্য-স্থখ-সম্ভোগ করিবেন। হে ভারত! কোন প্রকারে স্বার্থ সাধন হয়, ইহাই আ-পনকার প্রার্থনা ; কিন্তু পাগুবদিগের এবং স্থপক্ষীয় গণের সমবেত সাহায্যে অপেনি যে যাবতীয় শক্র বিজয় করিয়া তাহাদিগের ভুজোপার্চ্চিত বস্থধা-

রাজ্যের উপভোগ করিবেন, ইহার অপেক্ষা আপন-কার গুরুতর স্বার্থ আর কি আছে ? হে মহারাজ! ঈদৃশ স্বার্থ পরিহার করিয়া যদি সমর-ব্যাপারে প্রবৃত্ত হন, তাহা হইলে কেবল মহান্ অনর্থেরই স্থ্রপাত হইবে। হে রাজেন্দ্র! সংগ্রামে মহামারীর স্টি ব্যতীত আর কিছুই লক্ষিত হয় না ; উভয় পক্ষের ক্ষয় হইলেই বা আপনকার কোন্ ধর্ম প্রকাশ পায় ? হে রাজন্! মহাবল পাগুবেরাই হউক অথবা আপনকার পুজেরাই হউক, যদি উভয় পক্ষের এক পক্ষ নিহত হয়, তাহাতেই বা আপনি কি স্থুখ লাভ করিবেন বলুন। হে ভরতর্ষভ! উহারা উভয় পক্ষেই অসীম-শৌর্য্য-সম্পন্ন ও ক্নতাস্ত্র এবং সকলে যুদ্ধার্থী হইয়া রহিয়াছে; অতএব এই উপ-স্থিত মহাভয় হইতে তাহাদিগকে রক্ষা করুন,—যা-হাতে মহারথ শূর বীর কুরু-পাগুবদিগকে সমরে পরস্পর আহত ও পরিক্ষীণ হইতে দৃষ্টি করা না যায়, তাহার উপায় বিধান করুন! হে নৃপসত্তম! পৃথিবীস্থ সমস্ত রাজন্যগণ একত সমবেত হইয়া-ছেন; ইহাঁরা রোষপরবশ হইলে এই সমগ্র প্রজা-পুঞ্জকে সংহার দশায় উপনীত করিলেও করিতে পারেন; অতএব হে রাজন্! আপনি অনুকম্পা-বিভরণে লোক রক্ষা করুন! আপনি বিদামান থাকিতে যেন অধিল প্রজামগুলের ধংস না হয়! হে কুরুনন্দন! আপনি সত্ত্ত্তণাবলগ্নী হইলেই প্রজা-কুলের শেষ থাকে, নতুবা সকলই নিঃশেষ হয়। হে রাজন্! বিশুদ্ধ-বংশোন্তব, মহামানা, বদানা, অবদাত-কর্ম, ত্রীমন্ত ও পরস্পার সহায়ভূত এই সমস্ত ভূপালবর্গকে আপনি মহাভয় হইতে পরিত্রাণ ক্রন! হে শত্রুতাপন ভরতর্বভ! ইহাঁরা অমর্য ও বৈর পরিহার-পুরঃসর পরস্পার কুশলে মিলিত হইয়া একত্র ভোজনপানানন্তর শোভন বেশ-ভূষায় ভূষিত, माना-भक्षाभू निश्च ७ यथा योगा न १ क्र ७ इहे या जा-পন আপন ভবনে প্রতিগমন করুন।

হে তরত-শ্রেষ্ঠ! পাণ্ডবদিগের প্রতি আপনকার

বেৰপ স্নেহ ছিল, এক্ষণে এই যুদ্ধকাল-সমাগমে সেইৰপ শ্লেহ প্ৰকাশ করিয়া তাঁহাদিপের সহিত সন্ধি করুন। হে নরেশ্বর! বাল্যাবস্থায় তাঁহারা যখন পিতৃহীন হইয়াছিলেন, তখন আপনিই ওঁহো-দিগকে পুজ্র-নির্বিশেযে পরিবর্দ্ধিত করিয়াছিলেন; অতএব এক্ষণেও পুত্রগণের ন্যায় যথান্যায়ে তাঁহা-দের প্রতিপালন করুন। বিবেচনা করিয়া দেখিলে, সর্ব্ব সময়েই, বিশেষত এই ব্যসন কালে আপন-কারই তাঁহাদিগকে রক্ষা করা কর্ত্বা; তাহা করিলে আপনকার ধর্ম ও অর্থ উভয়ই রক্ষা পায়; অতএব হে ভরতর্ষভ! যাহাতে ধর্মার্থের বিনাশ না হয়, তাছাই করুন। হে রাজন্! পাওবেরা আপনাকে অভিবাদন ও প্রসাদন-পূর্বেক এই কথা বলিয়াছেন, " অাপনকার শাসন-ক্রমে আমরা প্রভূত ছুঃখ অনু-ভব করিয়াছি,—বিজন বন-মধ্যে দ্বাদশ বৎসর এবং জন-সমাজে অজ্ঞাতে এক বংসর বাস করিয়।ছি। হে তাত! 'আমাদিগের যেৰপে নিয়ম হইয়াছে, জোষ্ঠতাত মহাশয় অবশাই তাহাতে বর্তমান থাকি-বেন ' এইৰূপ নিশ্চয় করিয়া আমরা কোন প্রকারে সেই নিয়ম উল্লঙ্খন করি নাই। আমাদিগের সম-ভিব্যাহারী ব্রাহ্মণেরা তাহা সবিশেষ অবগত আ-ছেন। অতএব হে ভরতর্যভ! আমরা নিয়মান্ত্রসারে কার্যা করিয়াছি, সম্প্রতি আপনিও তাহার অনুবরী इউন। হেরাজন্! আমরা চিরকাল ক্লেশ ভোগ क्रिया अकर्ण याहारा स्कीय दाकाल्य आश्र हरे, তাহার সম্বিধান করুন। আপনি ধর্মার্থের মন্মজ্ঞ হুইয়া আমাদিগকে সর্বতোভাবে পরিতাণ করুন। আপনি পিতা; আপনি যাহা আজা করিবেন, তাহাই আমাদিগকে সম্পন্ন করিতে হইবে, ইহাই বিবেচনা করিয়া আমরা বহু ক্লেশ সহ্য করিয়াছি; অতএব আপনিও এক্ষণে পিতা সাতার ন্যায় আ-মাদিগের প্রতি স্নেহ প্রকাশ কর্ফন! 'হে ভারত! গুরুর নিকটে শিষ্যের যাদৃশ গুরুতর ব্যবহার করা উচিত, আমরাও আপনকার প্রতি সেইরূপ বাবহার 🚶

করিয়াছি; অতএব আপনিও আমাদিগের প্রতি গুরুর অনুরূপ, বাৎসল্য-ভাব প্রকটন করুন। পুত্রেরা উৎপথবর্ত্তী হইলে পিতার কর্ত্তব্য এই যে, তাহা-দিগকে পুনরায় পথস্থ করেন; এক্ষণে আমরাও রাজ্য নাশ-হেতুক পথভ্রুত হইয়াছি, আপনি স্বয়ং ধর্মপথে থাকিয়া আমাদিগকে স্বপথে সংস্থাপিত করুন "।

মহারাজ! আপনকার সেই পুত্তেরা অতত্য সভা-সদ্গণকেও এই কথা বলিয়াছেন, "সভা-মধ্যে ধর্মজ্ঞ সভাসদ্বর্গ বিদ্যমান থাকিতে কোন ন্যায়-বহিভূত কর্ম হওয়া নিতান্ত অসঙ্গত। বিচক্ষণ দর্শকগণ-সন্নিধানে যে স্থলে অধর্ম ধর্মকে এবং মিথাা সতাকে নিহত করে, তথায় সভাসদেরাই হত হয়। যথন ধর্মা অধর্ম-কর্তৃক বিদ্ধ হইয়া সভার শ্রণাপন্ন হার, তথন সভ্যগণ তাঁছার সেই শল্য উদ্ধার না কাঁরলে আপনার।ই বিদ্ধ হইয়া পড়ে। নদী যেমন তীরজাত বৃক্ষচয়কে উন্মূলিত করে, তদ্ৰপ ধৰ্মই তাহাদিগকে পীড়া দিতে থাকেন । হে ভরতর্যভ! এক্ষণে বিবেচনা করিয়া দেখুন, যে পাগুবগণ কেবল ধর্ম্মেরই মুখাবলোকন ও অনুধান করত নিস্তক্ষ-ভাবে রহিয়াছেন, তাঁহারা সত্য, ধর্মা ও ন্যায়ানুগত বাক্যই উক্ত করিয়াছেন। অতএব ভাঁহাদিগকে রাজা প্রদান ব্যতীত আপনি আর কোন্ কথার প্রসঙ্গ করিতে পারেন ? এই সভা-মধ্যে যে সমস্ত মহাপালগণ অবস্থিত রহিয়াছেন, ইহাঁরাই বা কি বলিতে পারেন ? হে পুরুষর্যভ! আমি ধর্মার্থ নিশ্চর করিয়া আপনাকে যে কথা বলিতেছি, ইহা যদি সত্য বোধ করেন, ভবে এই সকল ফাত্রিয়-দিগকে মৃত্যুপাশ হইতে বিমুক্ত করুন। হে ভরত-শ্রেষ্ঠ! প্রশাস্ত হউন; রোষ-বর্শীভূত ছুর্যোগনের অনুগামী হইবেন না। হে পরত্তপ! পাণ্ডবদিগকে যথোচিত পৈতৃক অংশ প্রদান-পূর্ব্বক পুত্রগণের সহিত সিদ্ধার্থ হইয়া অনুত্তম ভোগ-স্থখ অনুভব করুন। হে নরাধিপ! আপনি অজাতশক্র যুধি-ষ্টিরকে নিত্যকাল সাধুজন-ধর্মে অবস্থিত জানেন

উদ্যোগপৰ্ব।

এবং তিনি আপনকার ও আপনকার পুত্রগণের প্রতি যেরপ সাধু-ব্যবহার করিয়া থদ্ধকন, তাহাও আপনকার বিদিত আছে। দেখুন, আপনি তাঁহারে জতুগৃহে দাহিত ও দেশান্তরিত করিলেও তিনি পুন-রায় আপনকার আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছিলেন। তদ-নন্তর আপনি পুত্রদিগের সহিত মন্ত্রণা করিয়া তাঁ-হাকে যখন ইন্দ্রপ্রস্থে বিবাসিত করিয়াছিলেন, তখনও তিনি সেইখানে অবস্থান করত স্বর্কীয় বীর্য্য-বলে যাবতীয় পার্থিবগণকে বশীভূত করিয়া আপন-কারই অভিমুখীন করিয়াছিলেন, কোনক্রমে আপ-নাকে অতিবর্ত্তন করেন নাই। মহারাজ! তিনি এতাদৃশ বিনম্রভাবে বর্ত্তমান থাকিলেও স্থবল-পুত্র শকুনি তাঁহার রাষ্ট্র ও ধনধান্যাদি অপহরণ করিবার মানদে পাশ-ক্রীড়া-রূপ পরম কাপট্য 🛊য়োগ করি-য়াছিলেন। অমেয়াত্মা যুধিষ্ঠির তাদৃশী ছুরবস্থা প্রাপ্ত হইয়াও—প্রাণ-প্রিয়তমা পাঞ্চালীকে সভাগতা দেখিয়াও ক্ষত্রধর্ম হইতে কিছুমাত্র বিচলিত হন নাই। হে ভারত! আমি আপনকার এবং তাঁহা-দিগের উভয় পক্ষেরই মঙ্গল কামনা করিতেছি; অতএব আপনি ধর্মা, অর্থ ও স্থাবের নিমিত্ত শান্তি স্থাপন করুন; অনর্থক প্রজাক্ষয় করিবেন না। হে নরেন্দ্র! যাহা আপনকার অনর্থ বলিয়া প্রতীত इट्रेट्ड्, डाहारक्ट्रे अर्थ जवः याहारक वर्थ वित्रा বোধ করিতেছেন, তাহাকেই অনর্থ বিবেচনা করিয়া, লোভ-মার্গে অভিদূর প্রস্থত পুত্রদিগকে নিবর্ত্তিত করুন। হে বিশাম্পতে! অরিন্দম পাণ্ডবেরা আ-পনকার শুক্রাষা করিতে অথবা যুদ্ধ করিতে উভ- 🦠 য়েতেই প্রস্তুত আছেন; তন্মধ্যে যাহা আপনকার পথ্যতম হয়, আপনি ভাহাতেই অবস্থান করুন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, সভাস্থিত যাবতীয় পার্থিব-গণ মনে মনে ভগবছুক্ত সেই বাক্যের বিস্তর প্রশং-সা করিলেন, কিন্তু ছুর্য্যোধনের সম্মুখে কেহই কোন কথার উপক্রম করিতে পারিলেন না।

কৃষ্ণ-বাক্যে পঞ্চনবভিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৫॥

বৈশপায়ন কহিলেন, মহাত্মা কেশব উক্তৰপ বাক্য বিন্যাস করিলে, সমগ্র সভাসদ্বর্গ লোমাঞ্চিত-কলেবর হইয়া নিস্তব্ধ-ভাবে রহিলেন। সমুদ্য পা-থিবেরা 'কোন পুরুষই ইহার উত্তর করিতে উৎ-সাহী হইতে পারেন না' মনে মনে এই প্রকার চিন্তা করিতে লাগিলেন। সমস্ত ভূপতিগণ সেই ৰূপে নিরব হইয়া রহিলে, জামদগ্য ঋষি কৌরব-সভায় এই কথা বলিলেন, হে রাজন্! আমি উপ-মার সহিত এই একটি কথার প্রস্তাব করিতেছি, ইহার যাথার্থা বিষয়ে কোন শক্ষা না করিয়া অবণ কর এবং যদি ইহা সাধু বিবেচনা হয়, ভবে অবণ করিয়া আপন কল্যাণ সঙ্কলন কর।

আমরা শুনিয়াছি, পূর্বকালে দন্তোদ্ভব নামে এক সার্বভৌম রাজা ছিলেন। তিনি এই সসাগরা বস্থন্ধরার একাধিপত্য সম্ভোগ করিয়াছিলেন। সেই মহারথ বার্যাবান্ ভূপতি প্রতিদিন নিশা-বিগমে প্রাতঃকালে গাতোখান করিয়া ব্রাহ্মণ ও ক্ষজ্রিয়-দিগকে জিজ্ঞাসা করিতেন " এই পৃথিবী-মধ্যে কি শুদ্র কি বৈশ্য, কি ক্ষজ্ঞিয় কি ব্রাক্ষণ, এমন কোন্ শত্রধারী পুরুষ বিদামান আছে, য়ে, সমরে আমার অপেকা শ্রেষ্ঠ অথবা আমার ভুলা হইতে পারে 🕫 সেই মহীপতি সম্থ ভূমওলে ভাঁহার সদৃশ শৌষ্য-শালী আর কেহই নাই, এইরূপ চিন্তা করত মহা-দর্পে মন্ত হইয়া সকাত্র ঐ কথা বলিতে বলিতে বি-চরণ করিতেন। একদা কতকগুলি অদীন-সত্ব অকু-ভোভয় বেদজ্ঞ ব্ৰাহ্মণ তাঁহাকে ঐৰূপ পুনঃপুন আত্ম-শ্লাঘা করিতে প্রতিবেধ করিলেন। কিন্তু সেই সম্পত্তি-মদ-গর্বিত অতিমানী মূঢ় নরপতি বারংবার নিথিধামান হইয়াও বিপ্রদিগকে প্রতাহ উক্ত ৰূপ প্রশ্ন করিতে লাগিলেন। তখন ঐ বেদত্রত-সময়িত তপোনিষ্ঠ মহাত্মা দ্বিজাতিগণ তাঁহার ঐ রূপ উদ্ধাত-ভाৰ দৰ্শনে কোধে প্ৰদীপ্ত হইয়া কহিলেন, অহে ভূপতে ! এই ধরাধানে বছ-সমর-বিজয়কারী চুই জন পুরুষত্রেষ্ঠ বিদ্যমান আছেন; তুমি কদাচ তাঁহা-

দিগের সমকক্ষ হইতে পারিবে না। এই কথা শুনি-বা-মাত্র রাজা দড়োদ্ভব পুনরায় বিপ্রদিগকে জিজ্ঞা-সিলেন, আপনারা কোন্ বীর-ছয়ের কথা উল্লেখ করিতেছেন ? তাঁহারা কোথায় জান্মিয়াছেন, কোন্ স্থানে আছেন, কি কর্মাই বা করিয়া থাকেন ?

হে ভারত! রাজার এই ৰূপ জিজ্ঞাসায় ব্রাহ্মণেরা কহিলেন, আমরা শুনিয়াছি, মহাত্মা নর ও নারায়ণ তপ্যাা-প্রায়ণ হইয়া এই মনুষ্য-লোকে আগমন-পূর্বক গন্ধমাদন পর্বতে কোন অনির্দেশ্য ঘোর-তর তপশ্চরণে প্রবৃত্ত আছেন; তুমি তাঁহাদিগেরই সহিত যুদ্ধ কর।

রাজা দড়োন্ডব উক্ত বার্ত্তা শ্রবণে অসহিফু হইয়া তৎক্ষণাৎ ষড়ঞ্জিনী মহতী সেনা সংযোজন-পূর্বাক সেই অপরাজিত নর নারায়ণের উদ্দেশে প্রস্থিত হইলেন এবং অতিশয় বন্ধুর ভয়স্কর গন্ধমাদন-শিখরে উপনীত হইয়া সেই অরণ্যাশ্রিত তাপস-ছয়ের অদ্বেষণ করিতে লাগিলেন; পরিশেষে পুরু-ষোক্তম-যুগলের উদ্দেশ পাইয়া দেখিলেন, তাঁহার। কুৎপিপাসায় নিরতিশয় ক্লশাঙ্গ, শীত বাত ও আ-তপ-দারা কর্ষিত এবং সর্বাঙ্গে শিরা-সমাকীর্ণ হইয়া রহিয়াছেন। এইৰপ নিরীক্ষণ করত তিনি তাঁহা-मिरात मिर्मात आगमन-पूर्वक खनाम-वन्मनानि করিয়া কুশল-বার্তা জিজ্ঞাসা করিলেন এবং তাঁহা-রাও আসন জল ও ফলমূলাদি-দারা তাঁহার সমু-চিত অতিথি সৎকার করিয়া কহিলেন, "তোমার কোন্ কার্য্য নিষ্পান্ন করিতে হইবে বল'। এই কথায় রাজা ব্রাহ্মণদিগের নিকটে যেৰপ কহিতেন, তাহাই আমুপূর্ব্বিক কীর্ত্তন করত বলিলেন, আমি স্বকীয় বাহুবলে সমগ্র ভূমগুল পরাক্ষিত এবং যাবতীয় শক্রবর্গ নিহত করিয়াছি, এক্ষণে আপনাদিগের সহিত যুদ্ধ করিবার বাসনায় এই শৈল-দেশে সমা-গত হইয়াছি; অভএব আপনারা অন্থগ্রহ-পুর্বাক আমাকে এই চিরাভিল্বিত আতিথাটি প্রদান করুন

নর নারায়ণ কহিলেন, হে রাজসন্তম ! এ তপস্যার আশ্রম, ইহাতে ক্রোধ লোভের লেশমাত্রও নাই ; যুদ্ধ বা অন্ত্রশন্ত্রের কথা দুরে থাকুক, এন্থলে কুটিল-স্বভাব লোকই অপ্রসিদ্ধ ; অতএব এন্থান পরিত্যাগ করিয়া তুমি অন্যত্র যুদ্ধাকাঞ্জা কর ; এই জগতী-তলে অনেকানেক ক্ষজ্রিয়গণ বিদ্যমান আছেন।

পরশুরাম কহিলেন, হে ভারত! তাপস-দ্ম ক্ষমা প্রার্থনা ও সান্ত্রনা বঁরত পুনংপুন এই রূপ কহিলেও দন্তোদ্ভব কিছুতেই আপন নির্বান্ধ পরিহার না করিয়া সমরাভিলাবে বারম্বার তাঁহাদিগকে আহ্বান করিতেই লাগিলেন। তথন নর ঋষি একমুটি কাশত্রণ হত্তে লইয়া রোমভরে কহিলেন, অহে যুদ্ধাভিলাবিন্ ক্ষজ্রিয়! এস যুদ্ধ কর; সেনা সংযোজন করিয়া তোমার যে কিছু অস্ত্র শস্ত্র আছে, সমুদায় গ্রহণ কর; অতংপর আমি তোমার সমর শ্রদ্ধা অপনীত করিব।

দস্তোদ্ভব কহিলেন, হে তাপস! যদি এই অস্ত্রই আমার প্রতি প্রয়োগ করা আপনার যুক্তিযুক্ত বোধ হয়, তবে ইহা-দ্বারাই আমি আপনকার সহিত যুদ্ধ করিব, যেহেতু যুদ্ধার্থেই আমার আগমন হইয়াছে।

পরশুরাম কহিলেন, দড়োন্ডব এই কথা বলিয়া তাপসের জিঘাংসায় সৈন্যগণ-সমভিব্যাহারে এক-বারে শর-বর্ষণে দিজাওল সমাকীর্ণ করিলেন। লক্ষ্যাবেধী অপরাক্ষিত ঋষিবর ইষীকান্ত্র-সহকারে তাঁহার সেই শক্রদেহ-ছেদনকারী ভয়ঙ্কর অস্ত্র-সমূহ ছিন্ন ভিন্ন করত বার্থ করিয়া ফেলিলেন এবং তাঁহার প্রতি একপ ঘোরতর অপ্রতিসন্ধেয় ঐষীকান্ত্র প্রয়োগ করিলেন যে, তাহা অতীব অদ্ভুতের ন্যায় প্রতীত হইল। তিনি মায়াবলে শুদ্ধ ইষীকা-দারা তদীয় সৈন্যগণের চক্ষ্-কর্ণ-নাসিকাদি ছেদন করিতে লাগিলেন। সর্ব্বত্র কাশপুঞ্জে সমাচিত হওয়ায় আকাশ শ্বেতকান্তি ধারণ করিয়াছে দেখিয়া রাজা দড়োন্ডব তাঁহার পাদদ্বয়ে নিপতিত হইলেন এবং কলাণ কামনা করত 'আমার মঙ্গল হউক' বার্যার এই

কথা বলিতে লাগিলেন। তখন শরণাপন্নগণের। রক্ষাকর্ত্তা মহামুভাব নর ঋষি তাঁহাকে এইৰূপ কহিলেন, হে রাজন ! ভুমি অদ্যাবধি ধর্মাত্মা ও ব্রন্ধনিষ্ঠ হও, পুনর্বার কখন এ প্রকার অসদভিসন্ধি করিও না। হে নৃপশার্দ্দুল। পরপুর-বিজয়ী ক্ষজ্রিয় পুরুষ স্বধর্মের অমুস্মরণ করত মনে মনেও কখন এতাদৃশ ছুরভিলাষী হয়েন না। অতএব হে রাজন্! কোন লোক তোমার অপেক্ষা নিরুফই হউক অথবা উৎক্লুফুই হউক, তুমি দর্পাবিষ্ট হইয়া কদাত তা-হার অবমাননা করিওনা; কোন ব্যক্তির প্রতি অবজ্ঞা প্রদর্শন না করাই তোমার উপযুক্ত। হে পার্থিব! তুমি রুতবুদ্ধি, লোভ-শূন্য, নিরহক্কার, জি-তেন্দ্রির, দান্ত, ক্ষান্ত, মৃতু ও স্থার হইয়া প্রজা-পালনে তৎপর হও; বলাবল না জানিয়া আর কখন কাহারো অপমান করিও না ; এফুণে অনুজ্ঞা করিতেছি, কুশলে গমন কর, কিন্তু পুনরায় কখন এৰপ অসদাচরণ করিও না। আমাদিগের বচনামু-সারে তুমি ব্রাহ্মণদিগের নিকটে সর্বদা আত্ম-কুশল জিজ্ঞাসা করিও।

পরশুরাম কহিলেন, এইরপ উপদিউ হইয়া রাজা দন্তোদ্ভব সেই তাপস-যুগলের পদ-দ্বয়ে অভিবাদন-পূর্বেক স্বপুরে প্রত্যাগমন করিলেন এবং তদ্বিধ অতিশয় ধর্মাচরণ করিতে থাকিলেন। এক্ষণে বিবেচনা করিয়া দেখ, পূফা কালে নর ঋষি এই যে কর্মা করিয়াছিলেন, ইহা নিতান্তই স্থমহৎ বলিতে হইবে। নারায়ণ আবার তাঁহা অপেক্ষাও বহু গুণে শ্রেষ্ঠ ছিলেন। অতএব হে রাজন্ঃ যে পর্যান্ত ধন্তুঃ-শ্রেষ্ঠ গাণ্ডীবে কাকুদীক, (যে অস্ত্র-দ্বারা অভিভূত হইয়া রথ-গজাদির ককুদের উপর শয়ন করে; অর্থাৎ প্রস্থাপন অস্ত্র) শুক, (শুক নলিকান্যায়ে ভয়ের কারণ না থাকিলেও ভয়দর্শী হইয়া অশ্বর্থাদি পাদে গাত্তর আল্লিই হয়; অর্থাৎ মোহন অস্ত্র) নাক, (য়দ্বারা স্বর্গ নগর অবলোকন করে; অর্থাৎ উন্মাদন অস্ত্র) অফিসন্তর্জন, (লোচন মাত্র

দারা অনুবিদ্ধ হইয়া তাদে মৃত পুরীব পরিত্যাগ করে; অর্থাৎ ত্রাসন অন্ত্র) সন্তান, (অবিচ্ছেদে শস্ত্র রুটির প্রযোজক; অর্থাৎ ঐক্রাদি দিব্য অস্ত্র) নর্ত্তক, (নর্ত্তন-কারক ; অর্থাৎ পৈশাচ অস্ত্র) ঘোর, (মহামারীর স্টিকারী; অর্থাৎ রাক্ষ্স অস্ত্র) ও আস্যমোদক (যদ্ধারা অভিহত হইরা মুথে পাষাণ রাখিয়া মরণার্থে উদ্যত হয়; অর্থাৎ যাম্য অস্ত্র) এই অফ প্রকার অস্ত্র যোজিত না হইতেছে, সে পর্যান্ত অভিমান পরিহার করিয়া ভুমি ধনঞ্জয়ের অনুগত হও। ঐ সকল অস্ত্র-দ্বারা বিদ্ধ হইয়া সকল মনুষ্যই পঞ্জ প্রাপ্ত হয়;—সকল মনুষ্যই উন্মন্ত, বিচেতন ও বিহ্বল-চিত্ত হইয়া কার্য্য করে ;—অন-বরত শয়ন, উল্লক্ষন, বমন, মূত্র-ত্যাগ, রোদন ও হাস্য করিতে থাকে। হে ভারত! সর্বলোক-নি-र्याতा, সকলকর্মাভিজ্ঞ, জগদাুরু নারায়ণ যাঁহার বন্ধু, সেই অর্জুনের প্রতাপানল যে সমরাঙ্গনে নি-তান্তই ছুঃসহ হইবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি ? সংগ্রামে খাঁহার সদৃশ আর কেহই নাই, সেই কপি-ধ্বজ বীরবর জিফুকে জয় করিবার নিমিন্ত এই ত্রি-ভুবন মধ্যে কোন্ ব্যক্তি সাহসী হইতে পারে? ফলত অর্জুনেতে যে কত প্রকার গুণ আছে, তাহার সংখ্যা করা ছুঃসাধ্য। জনার্দ্দন আবার তাঁহা অপে-ক্ষাও বহু অংশে শ্রেষ্ঠ। মহারাজ! তুমি ধনপ্পয়কে কেবল কুন্ডীর পুত্র বলিয়াই জানিতেছ, কিন্তু প্রকৃষ্ট বীর্য্য-সম্পন্ন সেই যে পুরুবোত্তম নরনারায়ণ, তাঁহা-রাই এই অর্জুনকেশব ৰূপে অবতীর্ণ হইয়াছেন, ইহা বিশেব ৰূপে হৃদয়ঙ্গম কর। হে ভারত! যদি ইহা নিশ্চয় বলিরা তোমার প্রতীত হয় এবং আ-মার কথায় কোন শঙ্কা না থাকে, তবে বিশুদ্ধমতি অবলয়ন করিয়া পাণ্ডবদিগের সহিত সন্ধি কর; অথবা যদি আপনার ভেদ না হওয়া শ্রেয় জ্ঞান হয়, তাহা হইলেও তোমার শান্তি স্থাপন করা কর্ত্তবা; যুদ্ধে মন করা কদাচ বিধেয় নহে। হে ভরতশ্রৈষ্ঠ ! তোমাদিগের এই কুল বস্থা-মধ্যে বছমত ও স্থ-

প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, এক্ষণে তোমার কল্যাণে ইহা-কে সেইনপই থাকিতে দাও;—যাহা যথার্থ স্বার্থ তাহাতেই চিত্ত-নিবেশ কর।

> জামদগ্ন্য-বাক্যে ষণ্ণবতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৬॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, জামদগ্য-বাক্য-শ্রবণে ভগ-বান্ কণু ঋষিও কুরুসভা মধ্যে ছুর্যোধনকে সম্বো-ধিয়া এই কথা বলিতে লাগিলেন।

কণু কহিলেন, লোক-পিতামহ ব্ৰহ্মা যেমন অক্ষয় ও অব্যয়, মহান্তুভাব নরনারায়ণ ঋবিরাও অবিকল সেইৰূপ। অখিল দেবগণ-মধ্যে বিফুই একমাত্ৰ সনা-তন, অজেয়, অব্যয়, নিতা-স্বৰূপ ও সর্বেশ্বর ; তদ্ভিন্ন চন্দ্ৰ, স্থ্যা, পৃথিবী, জল, বায়ু, অগ্নি, আকাশ, গ্ৰহ ও তারক-পুঞ্জ, সকলই প্রলয় কালে বিনফ হইয়া थात्क ;--- क्र १९ क्रायंत्र माक्ष माक्ष मक्त वस्र है अहे লোক ত্রয় হইতে অপস্তত হইয়া ধংস দশা প্রাপ্ত হয় এবং পুনঃপুন স্ফ হইতে থাকে। মনুষ্য, মৃগ, পক্ষী ও তির্যাগ্যোনি-জাত অন্যান্য জীবেরা ত মুহুর্ত্ত কাল মধ্যেই মরিয়া যায়। দোর্দগুপ্রতাপশালী ভূপালগণ রজেলক্ষী সম্ভোগ করিয়া আয়ুংক্ষয়ে আপন আপন স্ক্রত তুদ্ধৃত ভোগের নিমিত্ত পুনরায় নূতন হইয়া ধাকেন অর্থাৎ মরণান্তে পুনর্বার জন্মগ্রহণ করেন। অতএব এই সমস্ত বিবেচনা করিয়া তুমি ধর্মপুত্র যুধিষ্টিরের সহিত সন্ধিবন্ধন কর। কুরু পাগুবগণ মিলিত হইয়া **পৃথি**বী পালন করুন। হে পুরুষর্যভ স্থােধন! 'আমি বলবান্' এৰূপ অভিমান করা কদাচ কর্ত্তব্য নহে; যেহেতু বলবান্ অপেক্ষাও অনেকানেক বলশালী পুরুষ দৃষ্ট হইয়া থাকেন। হে কুরু-নন্দন! দেব-বিক্রম পাণ্ডবেরা সকলেই অলৌকিক বলসম্পর্নী; প্রকৃত বলশালীদিগের নিকটে সৈন্যবল বল বুলিয়াই পরিগণিত হইতে পারে না। পণ্ডিতেরা পর্ক্তাছক কন্যা-প্রদানাভিলাধী মাতলির

বরান্বেষণ-ৰূপ এই পুরাতন ইতিহাসটি ইহার উদা-হরণ-স্বৰূপ বর্ণন করেন।

ত্রিলোকাধিপতি পুরন্দরের মাতলি নামক যে
প্রিয়তম সারথি, তাঁহার গুণকেশী-নামী ত্রিভুবনবিখ্যাতা এক দেবনপিণী কন্যা ছিল। লাবণ্য ও
শরীর-সৌঠবে সেই কন্যা সকললোক-ললনাচয়কে
অতিক্রম করিয়াছিল। তাহার সম্প্রদান সময় উপস্থিত জানিয়া মাতলি ভার্যার সহিত সাতিশয় বিমর্যস্তুক্ত হইলেন এবং তদ্যাতচিত্ত হইয়া এইনপ
চিন্তা করিতে লাগিলেন। অহো! উদার-চরিত মানোম্নত, যশস্বী, বিনম্র-স্থভাব মানবগণের কুলে কন্যা
জন্ম হওয়া কি ছঃথের বিষয়! সজ্জনগণের পক্ষে
কন্যকা মাতৃকুল, পিতৃকুল ও যে কুলে প্রদান করা
যায়, এই তিন কুলই সংশ্রান্থিত করে। আমি
মানস-নেত্রস্থিকার পুষ্ণ-নূপে অয়েষণ করিলাম, তথাপি
কুত্রাপি আমার যোগ্য পাত্র মনোনীত হইল না।

কণু কহিলেন, না দেব, না দৈত্য, না গন্ধর্ব, না
মানুষ, না অশেষ ঋষিপুঞ্জ, কেহই আর মাতলির
কন্যার সদৃশ পাত্র ৰূপে স্পৃহণীয় হইলেন না। তথন
তিনি স্থধর্মা-নামী নিজ সহধর্মিণীর সহিত রাত্রিকালে মন্ত্রণা করিয়া নাগলোক গমনে ক্নত-সঙ্কপ্প
হইলেন এবং পর দিন প্রাত্তঃকালে "যদিচ দেব
মনুষ্য-মধ্যে গুণকেশীর ৰূপগুণ-সদৃশ কোন উপযুক্ত পাত্র প্রাপ্ত হওয়া গেল না, তথাপি নাগলোকে
অবশ্যই কেহ না কেহ থাকিবে " স্থধর্মাকে এই ৰূপ
সন্তাষণানন্তর প্রদক্ষিণ করিয়া এবং কন্যার মন্তকে
আঘ্রাণ লইয়া মহীতলতলে প্রবেশ করিলেন।

মাতলীয় উপাখ্যানে সপ্তনবতিত্ম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৭॥

কণু কহিলেন, মাতলি পথি-মধ্যে গমন করিতে ক্লরিতে বদৃচ্ছাক্রমে মহর্ষি নারদের সহিত মিলিত হইলেন। নারদ বরুণের সহিত সাক্ষাৎ করিতে যাইতেছিলেন, ঘটনা-ক্রমে মাতলিকে দেখিতে পাইয়া জিজ্ঞাসিলেন, হে দেবরাজ-সারথে! কোথায় গমন করিতে উদ্যত হইয়াছ? স্বকীয় কার্য্য-সাধনের উদ্দেশে কি সহস্রাক্ষের শাসনে?

নারদ-কর্তৃক এই বাপ জিজ্ঞাসিত হইয়া মাতলি বরুণালয়ে আপন কার্য্য-সংক্রান্ত সমস্ত রুক্তান্ত যথা-বং বর্ণন করিলেন। অনস্কর দেবর্ষি কহিলেন, তবে চল আমরা উভয়েই একত্র গ্রামন করি; আমিও জলাধিপের সন্দর্শন নিমিত্ত স্বর্গ হইতে আসিতেছি। হে মাতলে! বস্থধাতল প্রদর্শন-পূর্বেক আমি তোমাকে তদীয় সকল বিবরণ কহিব এবং দেখিয়া শুনিয়া সেই খান হইতেই কোন উপযুক্ত বর মনো-নীত করিয়া লইব।

অনন্তর মহাত্মা মাতলি ও নারদ পাতাল পুরে উত্তীর্ণ হইয়া সলিলাধিপতি লোকপুলি বরুণের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। তথার নারদ দেবর্ষি-সদৃশী এবং মাতলি মহেন্দ্র-সমুচিতা পূজা প্রাপ্ত হইলেন। এইৰূপ সমাদর লাভে উভয়েই প্রীতি-প্রফুল্ল-চিন্ত হইয়া নিজ নিজ কার্য্য-রন্তান্ত বিজ্ঞাপনানন্তর বরু-ণের অনুজ্ঞায় নাগলোকে বিচরণ করিতে লাগিলেন। নারদ রসাতল-নিবাসী যাবতীয় জীবগণের সমুদ্য বিবরণই জানিতেন, স্কৃতরাং তিনি মাতলির নিকটে সমস্ত বিশেষ করিয়া বর্ণন করিতে লাগিলেন।

নারদ কহিলেন, হে হৃত! তুমি পুল্রপৌল্রাদিপরিরত সলিলাধিপ বরুণদেবকৈ অবলোকন করিলে,
সম্প্রতি তাঁহার এই সর্বতোভাবে শুভাবহ প্রভূতসম্প্রতি তাঁহার এই সর্বতোভাবে শুভাবহ প্রভূতসম্প্রতি-সমন্থিত অধিকার সন্দর্শন কর। পুষ্কর নামে
ভাঁহার যে পুষ্করাক্ষ, অতীব রূপ-সম্পন্ন, দর্শনীয়
পুল্রটিকে দেখিয়াছ, তিনি স্থশীলতা, সভ্তুত্ত শৌচাচার ছারা সর্বাপেক্ষা বিশিষ্ট, মহাপ্রাক্ত এবং
পিতার অধিকতর প্রীতিপাত্র। ন্রপলাবণ্যে দ্বিতীয়
লক্ষী-স্বর্পা জ্যোৎস্নাকালী-নামী সোম-কন্যা তাঁহাকে পতিত্বে বরণ করিয়াছেন। অদিতির জ্যেষ্ঠ

পুজ স্থ্যাও ঐ জ্যোৎস্নাকালী-কর্তৃক শ্রেষ্ঠ পতিরূপে রত হইয়াছিলেন বলিয়া শৃত হইয়া থাকেন। হে স্থরেশ-মিত্র! যাহা প্রাপ্ত হইয়া স্থরগণ স্থরত্ব লাভ করিয়াছেন;—যাহা সর্বাবয়বে কাঞ্চন-বিনিশ্মিত; সেই বারুণীস্থরাভবন এই অবলোকন কর।

হে মাতলে! এই দেখ, রাজ্য-বিচ্যুত দৈত্যগণের প্রদীপ্ত প্রহরণজাত দৃষ্ট হইতেছে। কথিত আছে, কোন কালেই এ সমস্ত অন্ত্রের ক্ষয় হয় না; পুনঃ-পুনঃ প্রক্ষিপ্ত হইলেও ইহারা স্বস্থ অধিকারীর হস্তে প্রত্যাবর্ত্তিত হয়। ইহাদিগকে প্রয়োগ করিতেও মহান্ অনুভাব অর্থাৎ প্রচুর মানসিক বল অপেকা করে। এই সমস্ত অস্ত্র এক্ষণে দেবগণের জয়-লক্ষ হইয়াছে। এই স্থানে অমরর্ন্দ্-বিনিজ্জিত দিব্য-প্রহরণ-বিশিষ্ট অসংখ্য রাক্ষস ও দৈত্য-নিবহের আবাস ছিল। এই বারুণ-হ্রদে ঐ মহতী শিখা-যুক্ত প্রচণ্ড বাড়বানল, ধুমশূন্য-বক্লিপরিরত অর্থাৎ প্রখর-জালা-সমন্থিত স্থদর্শনচক্র এবং লোক-সংহারার্থ-সংরক্ষিত এই গাণ্ডীময় অর্থাৎ গ্রন্থিভূয়িষ্ঠ কোদও সদা জাগৰক রহিয়াছে। এই চাপটিকে দেবতারা প্রতিনিয়ত রক্ষা করেন। ইহা হইতেই সেই স্থ-প্রসিদ্ধ গাণ্ডীব ধনুর নামকরণ হইয়াছে। লক্ষ চাপের তুল্য-বল ও সতত নিশ্চল থাকিলেও কার্য্য-কালে ইহা যে কত দূর বল ও তেজোরাশি ধারণ করে, তাহা বর্ণন করা ছুঃসাধ্য। ইহা রাক্ষস-প্রকৃতি রাজনাগণ-মধ্যে অশাস্য ব্যক্তিদিগকেও শাসন করিয়া থাকে। এক্ষবাদী ব্রহ্মা প্রথমেই এই প্রচণ্ড কোদণ্ডের হৃষ্টি করিয়াছিলেন। শুক্রাচার্য্য কহিয়াছেন, নরেক্রগণের পক্ষে এই শস্ত্রটি পরমা-यूथ। मिलनतो एकत श्रुटलता ७३ मरहा मत्र धत्रक-খানি ধারণ করিয়া থাকেন।

আরও দেখ, ছত্রগৃহ-মধ্যে জলাধিপের এই যে আতপত্র ব্রহিয়াছে, ইহা জলধরের ন্যায় সর্বত্র শীতল বারি বর্ষণ করে। ছত্র-বিনির্গত সেই বিচিত্র জল চন্দ্রত্ব্যা নির্মাল হইলেও ঘোরতর তিমির-সহ-

কারে এরপ আর্ত থাকে যে, কাহারও দৃষ্টিগোচর হইতে পারে না। হে মাতলে! এস্থানে এইরপ বহুবিধ অদুত পদার্থ-জাত দুইতা রহিয়াছে; কিন্তু সমুদার দেখিতে হইলে তোমার কার্যোর হানি হয়; অতএব আর বিলয় না করিয়া চল শীঘ্র শীঘ্র গমন করি।

মাতলীয় উপাথ্যানে অফনবতিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৯৮

নারদ কহিলেন, নাগলোকের মধ্যস্তানে অবস্থিত এই যে পুরুটি দৃষ্ট হইতেছে, ইহা পাতাল বলিয়া বিখ্যাত। এখানে অসংখ্য দৈত্য-দানবের বসতি আছে। স্থাবর-জ্ঞ্সমাত্মক যে কোন জীবপুঞ্জ জল-বেগ-সহকারে এই পাতাল-পুরে আনীত হয়, ইহাতে প্রবেশ করিবার সময়ে তাহারা ভয়-পীড়িত হইয়া ঘোরতর শব্দ করিতে থাকে। সলিলভোজী বাড়-वानन अञ्चारन नियुज्दे अमीख त्रियार । উहा দেবগণ-কর্ত্তৃক আপনাকে নিবন্ধ জানিয়াছে, স্থতরাং মর্য্যাদার অতিবর্ত্তী না হইয়া যত্ন-সহকারে স্থির-ভাবে আছে। দেবতারা শক্র-সংহারান্তে অমৃত পান করিয়া এই স্থানে সঞ্চিত করিয়া রাথেন, এই নি-মিন্তুই এখানে অমৃতদীধিতি শশধরের ক্ষয় ও উপ-**इस मृष्ठे इस ना। এই স্থানে অদিতি-नन्मन इ**स्थीत-क्री विक् विमाधाशीमित्रत विमधनित পরিবর্জনার্থে বেদ-বাক্য-দারা স্থবর্ণ-নামক জগংকে পরিপূর্ণ করত প্রতি পর্বাকালে সমুপিত হন। যেহেতু চন্দ্র-প্রভৃতি সমুদয় জলমুর্ত্তি এই স্থানে পতিত হয়, অর্থাৎ জল-পাতন করে, সেই নিমিন্তে এই উত্তম পুর 'পতজ্জল'. নামের সংক্ষেপে পাতাল বলিয়াই বিখ্যাত হয়। জগতের হিতকারী মাতঙ্গরাজ ঐরাবত এইখান इइटिंड सिर्वे स्मीजन जन नहेश सिन-मभूर-मर्या সঞ্চালিত করে, যাহা অমরাধিপতি মহেন্দ্র পৃথি-वीटक वर्षन कतिया थाटकम। अहे थाटन नानाविध আকার-বিশিষ্ট বছপ্রকার জলচারী তিমি-সমন্ত

জল-মধ্যে সোমপ্রভা পান করিয়া বাস করে। হে স্ত! এই পাতালতলাশ্ৰিত এৰপ অনেক জীব আছে যাহারা দিবসে প্রভাকর করে গতান্ত হইয়া রাত্রিকালে পুনরায় জীবিত হয়। তাহার কারণ এই, এখানে স্থধাংশু প্রতি রজনীতে সমুদিত হইয়া কর-নিকর-ৰূপ হস্ত-সমূহ-সহকারে অমৃত স্পর্শ করাইয়া দেহি-সকলকে উজ্জীবিত্ব-করেন। বাসব-কর্তৃক হৃত-সর্বস্ব কাল-পীড়িত স্থাধর্ম-নিরত স্থপ্রসিদ্ধ দৈত্যগণ এই পুরে নিবদ্ধ হইয়া বাস করিতেছে। সর্ব্বভূত-মহেশ্বর ভগবান্ ভবানীপতি সকল লোকের কল্যাণ কামনার এই স্থানে অনুত্তম তপশ্চরণ করিয়াছি-লেন। নিয়ত বেদাধায়ন-কর্ষিত গোত্রতধারী স্বর্গ-বিজয়কারী মহর্ষি দিজাতিগণ প্রাণবায়ু সংযমন-পূর্ব্বক এই খানে বসতি করিতেছেন। যেখানে সে খানে শয়নু⁶করা, যে কোন ভোজন-দারা পরিতৃপ্ত হওয়া এবং যে কোন বসনে আর্ত থাকা, ইহাকেই গোব্রত বলা যায়। এই, পুরে স্থপ্রতীক-নামক নাগের বংশে নাগরাজ ঐরাবণ, বামন, কুমুদ, অঞ্জন-প্রভৃতি প্রধান প্রধান বারণ-সমুদায়ের উৎপত্তি হইয়াছে। অতএব হে মাতলে! অনুসন্ধান করিয়া দেখ, এম্বলে যদি কোন গুণশ্রেষ্ঠ বর তোমার স্পৃহণীয় হয়, তবে তাঁহার নিকটে গমন করিয়া যত্ন-সহকারে প্রার্থনা করা যায়। বারিরাশি-মধ্যে শোভা-প্রদীপ্ত এই যে অণ্ডটি বিন্যস্ত রহিয়াছে, প্রজাপুঞ্জের স্থটি অবধি ইহা প্রস্কৃটিত বা চলিত হয় নাই। আমি কখন কোন বাক্তিকে ইহার জন্ম বা স্বভাব বর্ণন করিতে শুনিতে পাই না। ইহার পিতা মাতা কে, কেহই জানে না। হে মাতলে! এইৰপ প্ৰসিদ্ধি আছে যে, জগতের চরম কালে ইহা হইতেই প্রলয়ানল সমু-থিত হইয়া সচরাচর ত্রৈলোক্যকে ভক্ষীভূত করিবে। নারদের এই সমস্ত বাক্য শ্রবণে মাতলি উত্তর করিলেন, না, এন্থলে আমার কোন পাত্র মনোনীত হয় না ; অতএব অচিরে অন্যত্র গমন করুন। মাতলীয় উপাধ্যানে নব নবত অধ্যায় সমাপ্ত ॥৯৯॥

नात्रम कहित्नम, वक्ष्मभाग्नां होती रेपछा-मानव-গণের পাতালতল-সমাচ্ছিত এই উৎকৃষ্ট মহানগর হিরণ্যপুর নামে বিখ্যাত। ইহা ময়দানবের মনঃ-কম্পিত এবং বিশ্বকর্মার বছতর প্রয়ত্নে বিনির্মিত। মায়াসহঅ-প্রচারকারী মহাতেজন্বী শূর্বীর দানব मकल शृद्ध वत्रवाश रहेशा वे शाम व्यक्षितमि क्रियांट्र। উহাদিগকে ना दुक्त, ना यम, ना वक्रण, ना ধনপতি, না অন্য কোন ব্যক্তি, ক্লেুহই বশীভূত করিতে পারেন না। হে মাতলে! বিষ্ণুপদোদ্ভব কালকঞ্জ-নামক অম্বর-পুঞ্জ এবং ব্রহ্মচরণ-সম্ভূত নৈঋ্তি ও যাতৃধান-নামক রাক্ষদেরাও এই পুরে বাস করি-তেছে। তাহারা সকলেই বিশাল-দম্ভযুক্ত, ভয়ানক-বেগশালী, বাতবেগ-পরাক্রম এবং মায়াবল-সম্পন্ন। এতদ্বিন্ন এখানে নিবাতকবচ নামে স্থারও কতক গুলি যুদ্ধত্বৰ্মদ দানবের বসতি আছে 🕻 শক্রও যে তাহাদিগের বিক্রম রোধ করিতে শক্ত হননা, তাহা তোমার অবিদিত নাই। মনে করিয়া দেখ, তুমি, তোমার পুত্র গোমুখ এবং পুত্রসহ শচীপতি দেব-রাজ, তোমরা সকলেই তাহাদের নিকটে বছবার **७क्र मिशा शनायन क्रियाहिएन।**

হে মাতলে! দৈতাগণের এই রজতময়, কাঞ্চনময়, পদ্মরাগময়, বিধি-বিহিত বছতর শিশপকর্ম
দারা যথাযোগ্য রূপে সমন্বিত মনোহর গৃহ-সমস্ত
অবলোকন কর। এ সমুদায়ই বৈদুর্য্য ও অন্যান্য
মণি-নিকর-দারা বিচিত্রিত, প্রবালরাজি-রুচির, হারকসার-সমুজ্জ্বল, আকন্দপুল্প ও ক্ষটিকের ন্যায় শুল্রবর্ণ, অবিরল এবং অতিশয় উন্নতঃ। সকলই যেন
সরাগ-মৃত্তিকাময়, শিলাময়, কাষ্ঠময়, স্থ্যা-প্রভাসদৃশ বা প্রদীপ্ত-ছতাশন-তুল্য রূপে প্রকাশ পাইতেছে। মহা-প্রমাণ ও বছল-শিশপগুণ-যুক্ত এই
সমস্ত প্রাসাদের রূপত বা দ্রব্যত নির্দেশ করা দ্বঃসাধ্য; গুণেতেই ইহাদের সমুদায় সিদ্ধ হইয়াছে।

অপিচ এই মনোরম ক্রীড়াকানন, রত্ননিচয়-সম- ক্রিয়-করণ-হেতুক ব্রাহ্মণ্য লাভ করিতে পারে না। বিত ভাজন, মহামূল্য আসন, স্বরুচির শয়ন, জলদ- হি মাতলে। আমি প্রাধান্য অনুসারে ইহাদিগের

তুল্য শৈল, জলপ্রস্ত্রবণ এবং অভিলাষানুরপ পুষ্পফল-প্রদ কামচারী পাদপ-সমন্ত সন্দর্শন কর। হে
মাতলে! যদি এ স্থলে তোমার মনোনীত কোন
পাত্র থাকে, দেখ, নতুবা তোমার মতানুসারে উভয়ে
অন্য কোন দিকে গমন করি।

মাতলি উক্তৰণ সন্তাষণকারী নারদকে কহিলেন, দেবর্ষে! দেবগণের বিপ্রিয় করা আমার কোন প্রকারে কর্ত্তব্য নহে। দেব ও দানব, উভয় ভ্রাতৃবর্গই চিরকাল বৈরাসক্ত রহিয়াছেন; অতএব শক্র-পক্ষের সহিত আমি কি ৰূপে সম্বন্ধ-বন্ধনে সমুৎস্কক হইব? সম্বন্ধ-চেফা দূরে থাকুক, দানবদিগের সহিত আমার সাক্ষাৎ করাও অনুচিত; অতএব চলুন, শীঘ্র শীঘ্র অনাত্র গমন করি; আপনকার আত্মা যে অতিমাত্র হিংসাত্মক, তাহা আমার বিলক্ষণ বিদিত আছে।

মাতলীয় উপাখ্যানে শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০০॥

নারদ কহিলেন, এই লোক, গরুড়-বংশায় পরগতাজী পক্ষিগণের অধিকৃত। বিক্রম প্রকাশে, দ্রুত গমনে বা ভার বহনে ঐ সমস্ত বিহৃত্যদিগের কিছু মাত্র পরিশ্রম নাই। বিনতা-নন্দন গরুড়ের স্বযুথ, স্থনাম, স্থনেত্র, স্থবর্চা, স্থরুক্ ও স্থবল, এই ছয় পুত্র হইতে উক্ত কুল বিস্তৃত হইয়াছে। কশাপবংশোদ্রব, বিনতা-কুল-মঙ্গল-বির্দ্ধন প্রধান প্রধান বিহঙ্গমগণ সন্থান-পরশ্পরা সহকারে আভিজাতা-সম্পন্ন শত সহস্র কুল প্রবর্ভিত ও পরিবর্দ্ধিত করিয়াছেন। সেই সমস্ত কুলোৎপন্ন পতিল্রিগণ সকলেই শ্রীযুক্ত, শ্রীবৎসলক্ষণ, প্রচুর সম্পত্তির অধিপতি ও অপ্রতিম-বলশালী। কর্ম-দারা ইহাদিগকে ক্ষত্রিয় বলিয়া নির্দ্দিত করা যাইতে পারে, কিন্তু সর্পভারী হওয়ায় ইহারা সাতিশয় নিষ্ঠুর হইয়াছে; জ্ঞাতিক্ষর-করণ-হেতুক ব্রাহ্মণ্য লাভ করিতে পারে না। হে মাতলে। আমি প্রাধান্য সন্ত্রশারে ইহাদিগের

নামোলেথ করিতেছি, শ্রবণ কর। বিষ্ণুর পরিগৃহীত হওর।য় এই কুল অতীব শ্লাঘ্য হইয়াছে। বিষ্ণুই ইহাদিগের উপাস্য দেবতা, বিষ্ণুই পরায়ণ। ইহাদের হৃদয়ে বিষ্ণু সদা সন্নিহিত রহিয়াছেন এবং ইহাদের নিতা গতি-স্বৰূপ হইয়াছেন।

স্বর্ণচূড়, নাগাশী, দারুণ, চগুতুগুক, অনিল, ञनन, विশालाक, कूखनी, পश्चिष्ट, वज्जनिष्ठंड, বৈনতেয়, বামন, বাতবেগ, দিশাচক্ষু, নিমিষ, অনি-মিষ, ত্রিবার, সপ্তবার, বাল্মীকি, দীপক, দৈতাদ্বীপ, সরিদ্বীপ, সারস, পত্মকেতন, স্থমুখ, চিত্রকেতু, চিত্র-বৰ্হ, অনঘ, মেঘক্তং, কুমুদ, দক্ষ, সৰ্পান্ত, সোমভো-জন, গুরুতার, কপোত, স্থর্যানেত্র, চিরান্তক, বিষ্ণু-ধর্মা, কুমার, পরিবর্হ, হরি, স্থস্তর, মধুপর্ক, ছেমবর্ণ, মলয়, মাতরিশ্বা, নিশাকর ও দিবাকর, গরুড়বংশীয় অসংখ্য বিহ্গগণ-মধ্যে আমি কেবল একদেশমাত্র ধরিয়া তোমাকে এই কয়েকটি নাম বলিলাম। যাঁহারা যশ, কীর্ত্তি ও তেজঃপুঞ্জে প্রাধান্য লাভ করি-য়াছেন, এম্বলে তাঁহাদিগেরই নাম কীর্ত্তিত হইল। হে মাতলে! যদি এস্থানে তোমার রুচি না হয়, তবে চল অন্যত্র গমন করি; যেখানে তুমি মনোনীত পাত্র প্রাপ্ত হইবে, সেই থানেই তোমাকে লইয়া যাইব।

> মাতলীয় উপাথ্যানে একাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০১॥

> > ---

নারদ কহিলেন, সম্প্রতি আমরা যে পুরে আসিয়া উপস্থিত হইলাম, ইহার নাম রসাতল। ইহা পৃথিবীর সপ্তমতলে অবস্থিত। এই খানে অমৃত-সম্ভবা
গো-মাতা স্থরতি নিত্য বিরাজমানা রহিয়াছেন এবং
প্রতিনিয়ত পৃথিবীর সারাংশ-সম্ভূত, ষড্রসের সারভূত, অমুত্তম, অন্বিভীর রসের আকর্বস্থাপ ক্ষীর
করণ করিতেছেন। এই অনিন্দিতা ধেনু-জননী
পূর্ব্বে অমৃতপান-পরিতৃপ্ত, সার বস্তুর উল্লারণকারী,

লোকগুরু ব্রহ্মার মুখ হইতে উৎপন্না হইয়াছিলেন।
ইহাঁর মহীতল-নিপতিত একমাত্র ক্ষীরধারা হইতে
মহাব্রদ-স্বরূপ পরম পবিত্র ক্ষীর-নিধির হাটি হইরাছে। এই ক্ষীরসাগরের পর্যান্তভাগ সর্বনা ফেনপুঞ্জে পরিবেটিত থাকায় যেন পুষ্পিতের ন্যায়
প্রতীত হয়। সেই সমস্ত কেনরাশি পান করত
কেনপ-নামক মুনিবরেরা এই স্থানে অবস্থিতি
করেন। শুদ্ধ কেন প্লান করাতেই তাঁহারা কেনপ
নামে বিখ্যাত হইয়াছেন। হে মাতলে! তাঁহারা
এতাদৃশ কঠোর তপস্যা-নিরত, যে দেবগণও তাঁহাদিগের নিকটে ভীত হইয়া থাকেন।

সুরভির গর্ত্ত-সম্ভূতা অপর চারিটি ধেমু পূর্বাদি
চারিদিকে অবস্থান করিতেছেন। দিক্-সকল ধারণ
করায় তাঁহারা দিক্পালী বলিয়া প্রসিদ্ধা। যিনি
পূর্ব্ব দিক্ ব্লুকা করিতেছেন, তাঁহার নাম স্থকপা;
যিনি দক্ষিণ দিক্ ধারণ করিতেছেন, তাঁহার নাম
হংসিকা; যে মহামুভাবা বিশ্বরূপা ধেমু বরুণদেবের
রক্ষিত পশ্চিম দিকের ধারণকর্ত্রী, তাঁহার নাম
স্থভদা; আর যিনি কুবের-সম্বন্ধিনী ধর্ম্ম-জনিকা
উত্তর দিক্ ধারণ করিতেছেন, তাঁহার নাম সর্ব্বকামছ্যা। দেবাস্থরণণ মন্দর গিরিকে মন্থনদণ্ড করিয়া
ইংটাদিগেরই ছ্ম্মিজ্রিত সাগর জল মন্থন-পূর্ব্বক
বারুণী স্থরা, লক্ষ্মী, উচ্চৈঃশ্রবা-নামক অশ্বরাজ এবং
রত্বপ্রেষ্ঠ কৌস্তভ মণি উদ্ধৃত করিয়াছিলেন।

হে মাতলে! সুরভীর অনন্ত গুণের কথা আর কি বলিব! তিনি যে অনির্বাচনীয় অনুপম চুগ্ধ প্রদান করেন, তাহা স্কুধাহারী নাগদিগের পক্ষে স্থধারূপে, স্বধা-ভোজী পিতৃলোকের পক্ষে স্বধা-রূপে এবং অমৃতপায়ী অমরগণের পক্ষে অমৃত-রূপে পরিণত হয়। "রসাতলতলে বাস করিলে যাদৃশ স্থথোদয় হয়, তাদৃশ বিশুদ্ধ স্থথ, না নাগলোকে, না স্বর্গে, না বি-মানে, না ত্রিপিউপে, কুত্রাপি সম্ভূত হইবার নহে।" রসাতল-নিবাসিগণ পূর্ব্ব কালে এই যে পৌরাণিকী গাথা গান করিয়াছিলেন, তাহা অদ্যাপি লোকমধ্যে

বিশ্রুত এবং পণ্ডিতগণ-কর্ত্ত্ক গীত হইয়া থাকে মাতলীয় উপাথ্যানে দ্বাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১০২ ॥

নারদ কহিলেন, দেবরাজের অমরাবতীর ন্যায় এই যে দর্ব্ব-প্রধানা পুরীটি দৃষ্টি করিতেছ, ইহার নাম ভোগবতী; ইহা নাগ্রাজ বাস্থকির পালিতা। যিনি প্রভাব-পূজিতা এই খ্রুস্করাকে নিত্যকাল ধারণ করিয়া আছেন; তপোবলে সর্বলোকের অগ্রগণা, ধবল-শৈল-সদৃশ শুভ্রদেহ, দিব্যাভরণ-বি-ভূষিত, সহস্র মন্তকধারী, প্রদীপ্ত-জিহ্বা-নিচয়-সম-ন্বিত মহাবল পরাক্রান্ত সেই শেষ নাগ এই স্থানে বিরাজমান রহিয়াছেন। এই পুরে নাগ-মাতা স্থর-সার সহত্র সহত্র পুত্রগণ সর্বর প্রকার পীড়া-খূন্য হইয়া স্বচ্ছন্দে বাস করিতেছে। তাহীরা সকলেই নানাবিধ আকার-বিশিষ্ট, নানালকার-ভূষিত, মণি স্বস্তিক চক্র ও কমগুলুর চিহ্নযুক্ত, মহাবলবস্ত এবং স্বভাবত ভয়ঙ্কর। তন্মধ্যে কেহ কেহ সহস্র-শীর্ষ, কেহ কেহ পঞ্চশত-মন্তক, কেহ কেহ শতানন, কেহ কেছ সপ্ত-শিরা, কেছ কেছ পঞ্চ-মুখ, কেছ কেছ ত্রি-মূর্দ্ধা, কেহ কেহ বা দিশীর্ষ; সকলেরই প্রকাণ্ড দেহ এবং গিরি-পরিসরের ন্যায় স্থবিস্তীর্ণ আভোগ। হে মাতলে! এস্থানে একবংশ-সম্ভূত কত সহস্ৰ, কত অযুত, কত অর্ধুদ নাগের বসতি রহিয়াছে, কে বলিতে পারে ? ভন্মধ্যে শ্রেষ্ঠতানুসারে আমি কতক গুলির নাম কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ কর।

বাস্থাকি, তক্ষক, কর্কোটক, ধনঞ্জয়, কালিয়, নছয়, কয়ল, অশ্বতর, বাছকুগু, মণি, আপূরণ, খগ, বামন, ঐলপত্র, কুকুর, কুকুণ, আর্যাক, নন্দক, কলশপো-তক, কৈলাসক, পিঞ্চরক, ঐরাবত, স্থমনোমুখ, দিখিমুখ, শন্ধ, নন্দক, উপনন্দক, আগু, কোটরক, শিখী, নিষ্ঠুরক, তিভিরি, হস্তিভন্ত, কুমুদ, মালা-পিগুক, পদ্ধ-দ্বয়, পুগুরীক, পুষ্পা, মুদারপর্ণক, কর-বীর, পিঠরক, সমৃত্ত, রন্ত, পিগুার, বিলুপত্র, মৃবি-

কাদ, শিরীষক, দিলীপ, শঋশীর্ষ, জ্যোতিষ্ক, অপরাজিত, কৌরব্য ধৃতরাষ্ট্র, কুহর, ক্লাক, বিরজা, ধারণ, স্থবাহ্ন, মুখর, জয়, বিধির, অয়, বিশুণ্ডি, বিরস ও স্থরস; কশ্যপের এই সমস্ত এবং এতদ্ভিন্নও কত শত পুত্র যে এই পুরে বিদ্যমান আছে, ভাহার সংখ্যা করা ফুঃসাধ্য। অতএব যদি এস্থানে তোমার কোন স্পৃহণীয় পাত্র থাকে, দেখ।

কণ্ব কহিলেন, মাতলি অব্যক্তভাবে একটি লোক-কে সতত সমাক্ ৰূপে অবলোকন করিয়া তাহার প্রতি প্রতিমান্ হইলেন এবং নারদকে তাহার রুজান্ত জিজ্ঞাসিলেন, হে দেবর্ষে! কৌরব্য আর্যা-কের সন্মুখ-ভাগে এই যে ছ্যাতিমান্ দর্শনীয় যুবা পুরুষটি অবস্থিত রহিয়াছে, এ কাহার কুলনন্দন? ইহার পিতা কে, মাতাই বা কে? কোন্ ভাগ্যধর ভোগীর বংশধল হইয়াই বা এ জন্ম-পরিগ্রহ করি-য়াছে? প্রণিধান, ধৈর্য্য, ৰূপ ও বয়ংক্রমামুসারে এটি শুণকেশীর শ্রেষ্ঠ বর বলিয়া আমার মনোনীত হই-তেছে।

কণু কহিলেন, স্বয়ুখ-নামক নাগরাজের সন্দর্শনে
মাতলি প্রতিমনা হইয়াছেন দেখিয়া নারদ তাঁহার
জন্ম, কর্মা ও মাহাস্মা বিজ্ঞাপন করত কহিলেন,
ইনি ঐরাবত-কুলে উৎপন্ন, স্বয়ুখ নামে বিখ্যাত,
আর্যাকের প্রিয়তম পৌল্র এবং বামনের দৌহিত্র।
হে মাতলে! চিকুর-নামক নাগরাজ ইহাঁর পিতা।
অপেকাল হইল তিনি গরুড়ের হত্তে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত
হইয়াছেন।

ইহা শুনিয়া মাতলি অতিমাত্র হৃষ্ট হইয়া নারদ-কে এই কথা বলিলেন, তাত! এই ভুজঙ্গ-শ্রেষ্ঠ স্থাপুথই আমার মনোমত জামাতা হইলেন; ইহাঁর প্রতি আমার অতিশয় প্রীতি জন্মিয়াছে; অতএব হে মুনে! এই নাগরাজের হত্তে আমার প্রিয়তমা ছুহিতাকে,সম্প্রদান করিবার নিমিত্ত যত্ন করুন।

মাতলীয় উপাখ্যানে ত্রাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥১০৩॥

মাতলির প্রার্থনায় নারদ আর্যাক নাগের নিকট-বত্তী হইয়া কহিলেন, হে ভুজগসভ্তম! আমার সম-ভিব্যাহারী এই মহাত্মা ব্যক্তি দেবরাজের সার্থি ও প্রিয় স্কুন্দ্; ইহাঁর নাম মাতলি। ইনি শৌচাচার ও শীলগুণ-সম্পন্ন, তেজস্বী, বীর্য্যবান্ এবং প্রভূত-বলশালী। ইনি পুরন্দরের কেবল সারথি মাত্র নহেন, প্রাণসম সখা এবং মন্ত্রীও বটেন। প্রতি সমর স্থলেই বাসবের সহিত ইহার প্রভাবের অপ্প-মাত্র তারতম্য প্রকাশ পায়। দেবাস্থ্র সংগ্রাম সময়ে ইনি শক্রের অশ্বসহস্ত-যুক্ত জয়শীল অনু-ত্তম রথখানি এৰূপ দ্রুতবেগে লইয়া সমরাঙ্গনে উপস্থিত করেন, যে বোধ হয় যেন মনে মনেই সঞ্চা-লন করিয়া আনিলেন। ইহাঁর প্রভাবের কথা আর কি বলিব, ইনি অশ্ব পরিচালন-কৌশলে অগ্রেই শত্রুদিগকে পরাক্ষিত করিয়া রাখেন, পশ্চাৎ পুর-न्मत जूब-षत्र-महकारत विजय लाज करतन। हैनि পূর্বে প্রহার না করিলে ইন্দ্র প্রহরণ-প্রয়োগে প্রবৃত্ত হন না। ইহাঁর গুণকেশী-নামে একটি অশেষ-গুণ-সমন্বিতা সতাশীলা বরারোহা কন্যা আছে। বস্থা-তলে তৎসদৃশী ৰূপলাবণ্যবতী কামিনী আর কুত্রাপি নাই। তাহার উপযুক্ত পাত্র অন্বেষণ নিমিত্ত ইনি পরম यञ्ज-সহকারে তৈলোক্য-রাজ্যে বিচরণ করি-তেছেন; সম্প্রতি স্বয়ুখ-নামা তোমার পৌত্রটি ইখাঁর মনোনীত হইয়াছে। অতএব হে দেবোপম সৌম্য আর্ম্যক! যদি তোমার সমাক্ অভিমত হয়, তবে অবিলয়ে কন্যারত্ব-পরিগ্রহে যত্নবান্ হও। ধেমন বিফুকুলে লক্ষ্মী এবং হতাশনের স্বাহা, সেইৰূপ স্থমধ্যমা গুণকেশী তোমার কুল-লক্ষ্মী হউন। শক্তের শচীর ন্যায় গুণকেশী স্বস্থুখের সদৃশী পাত্রী এবং স্থমুখও গুণকেশীর অনুৰূপ; অতএব তুমি পৌজের নিমিত্ত সেই কমনায় ললনাকে প্রতিগ্রহ কর। স্বয়্থ পিতৃহীন হইলেও কেবল গুণুমাত্র লক্ষ্য করিয়া আমরা উহাক্টে বরণ করিতেছি। তোমার বছমান, এরাবফ্লের মাহাত্মা এবং স্বমুখের শীল

শৌচ দম-প্রভৃতি অশেষ গুণবন্তা-প্রযুক্তই মাতলি
স্বয়ং সমাগত হইয়া কন্যা-দানে উদ্যত হইয়াছেন,
এক্ষণে তোমারও ইহাঁর প্রতি সমুচিত সন্মান
প্রদর্শন করা কর্তব্য।

কণ্ব কহিলেন, আর্যাকের পুত্র নিহত এবং পৌত্র-টি কথঞ্চিৎ জীবিত থাকার তিনি নারদের ঐ বাক্য শ্রবণে যুগপৎ হর্ষ ও বিধাদে আক্রান্ত হইয়া কহি-লেন, মহর্ষে ! আপনস্থার এই বাক্য আমার বহুমত হইবে না ইহা কদাচ হইতে পারে না। যিনি ইক্রের স্থা, তাঁহার সহিত সম্বন্ধ বন্ধন করিতে কাহার অনিচ্ছা হইতে পারে? কিন্তু হে মহামুনে! যে কারণে সেই সম্বন্ধ বন্ধমূল হইতে পারে, তাহারই ত্র্বলতা-প্রযুক্ত আমাকে চিন্তা করিতে হইতেছে। হে তাত! একে ত স্বমুখের জনয়িতা মৎপুত্র, বি-নতা-তনয়েরু করাল কবলে পতিত হওয়ায় আমরা শোকার্ত্ত রহিয়াছি; তাহাতে আবার সেই নিষ্ঠুর विरुक्त यारेवात ममत्य विनया शियाटह " आशामी মাসে স্বয়্থকেও ভক্ষণ করিব;" ইহাতে আমার আর হর্ষের বিষয় কি আছে ? আমি নিশ্চয় জানি-তেছি, স্থপর্ণ যাহা বলিয়াছে, তাহা অবশ্যই সম্পন্ন করিবে ; স্থতরাং সেই কথা স্মরণ করিয়া আমার मक्न इर्वरे विनये इरेश शिशाद्य।

অর্যাকের এই কথা শুনিয়া মাতলি তাঁহারে কহিলেন, আমি এ বিষয়ে এক পরামর্শ স্থির করিলাম; আপনকার পৌত্র স্থাম্থকে জামাতৃতাবে বরণ করিয়াছি, অতএব এই পল্লগ আমার ও নারকের সমভিবাহারে গমন করিয়া ত্রিলোকেশ্বর স্থারপতি বাসবের সহিত সাক্ষাৎ করুন। স্থপর্ণের বাধা উৎপাদনে আমি সর্বতোভাবেই যত্ন করিব, পরে শেব কার্যা-ছারা ইহাঁর পরমায়ুর বিষয় জানিতে পারিব। হে ভুজগসত্তম! আপনকার কল্যাণ হউক, আপনি অমুজ্ঞা করুন, স্থাম্থ কার্যা-সাধন নিমিত্ত আমার সমভিব্যাহারে দেবরাজ সমীপে গমন করুন। কণ্ব কহিলেন অনস্তর সেই মহাতেকশ্বী মাতলি,

নারদ ও আর্মাক, সকলেই স্থমুখকে সঙ্গে লইয়া অমর নগরে আগমন-পূর্ব্বক দেখিলেন, দেবাধিপতি মহাত্যুতি পুরন্দর স্বকীয় সিংহাসনে আসীন রহি-য়াছেন এবং দৈবগত্যা চতুতু জধারী ভগবান বিষ্ণুও তথাম উপস্থিত আছেন, তথন নারদ তাঁহাদিগের সন্নিধানে মাতলি-সংক্রান্ত সমস্ত রুক্তান্ত আদ্যোপান্ত वर्गन क्रिट्लन।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনীন্তর বিষ্ণু ভুবনেশ্বর পুরন্দরকে কহিলেন, " বাসব! এই ভুঙ্গঙ্গকে অমৃত দান করিয়া অমরগণের সমান কর; তোমার ইচ্ছায় মাতলি, নারদ ও স্থমুখ, সকলেই অভীফ লাভ कक्रन । विकृत এই निष्म वाका ध्वरण भूतन्त्र বহুক্ষণ পর্যান্ত মনে মনে গরুড়ের পরাক্রম চিন্তা করিয়া পরিশেষে এই উত্তর করিম্বেন, আমারে যাহা আদেশ করিতেছেন, তাহা আপনিই সম্পন্ন করুন,--স্থুমুখকে স্বয়ং অমৃত প্রদান করুন।

বিষ্ণু কহিলেন, হে বিভো! ভুমি এই চরাচর সর্বলোকের অধিপতি; অতএব তুমি যাহারে যাহা প্রদান করিবে, কে তাহার অন্যথা করিতে উৎসাহী इर्टें ?

ইহা শুনিয়া বলরত্র-নিস্থদন সহস্রাক্ষ সেই ভুজঙ্গ-কে উত্তম আয়ুঃ প্রদান করিলেন, কিন্তু ভাঁহাকে অমৃতপারী করিতে দৃষ্ত হইলেন না। স্থমুখ বর লাভ করিয়া যথার্থই স্থমুথ হইলেন, অর্থাৎ তাঁহার মুখমগুলে তৎকালে স্থস্পট আনন্দ-চিহ্ন প্রকাশ পাইতে লাগিল। যথা সময়ে অভিলাষামুৰূপ দার-পরিগ্রহ করিয়া তিনি স্বভবনে গমন করিলেন এবং নারদ ও আর্যাকও কৃতকার্যা ও মহাহৃষ্ট হইয়া দেবরাজের অর্চন-পূর্বাক স্ব স্ব,স্থানে প্রস্থিত হই-লেন।

> মাতলীয় উপাধ্যানে চতুরধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৪ 🗈

তেয় অমর পুরের ঐ র্ভান্ত শুনিতে পাইলেন। দেবরাজ সর্পকে আয়ুং প্রদান করিয়াছেন শুনিয়া স্থপর্ণের আর ক্রোধের পরিদীমা রহিল না। তিনি তংকণ মাত্র বিপুলতর পক্ষ-বিস্তার-ছারা ত্রিভুবন রুদ্ধ করত মহাবেণে ধাবমান হইয়া বাসব-সলিধানে আগমন-পূর্বাক কহিলেন, ভগবন্! তুমি অবজ্ঞা করিয়া আমার রুভিরোধে প্রবৃত্ত হইলে কেন? পূর্বে যদৃচ্ছাক্রমে বর দান করিয়া এক্ষণে কি নিমিত্ত তাহা হইতে বিচলিত হইতেছ ? সর্বভূতের বিধাতা প্রজা স্থটি অবধি আমার যে আহার বিহিত করি-য়াছেন, তাহার ব্যাঘাত করিতে তুমি কি হেতু উদ্যত হইয়াছ ? হে দেব ! 'স্ব্যুখের দ্বারা আমার বছল সম্ভান-সম্ভতির উদর পূরণ করিতে হইবে ' এই মনে করিয়া আমি এই মহানাগকে বরণ করত সময় নির্দ্দিউ করিয়া রাখিয়াছিলাম; এক্ষণে বর-লাভ-দারা এ যধন আমার অবধ্য 🗨 ইল, তখন অন্য কোন ব্যক্তিকে হিংসা করিতে কি বলিয়াই বা উং-শাহী হইতে পারি ? ভুমি ইহাকে বেমন বরপ্রদান করিয়াছ, অন্যের প্রতিও সেইরূপ অমুগ্রহ করিবার অসম্ভাবনা কি ? হে বাসব! তুমি স্বেচ্ছামুসারে এই-ৰূপ ক্ৰীড়া করিতে থাকিলে আমারে পরিজন ও ভূত্য-বর্গের সহিত অবশ্যই প্রাণ-ত্যাগ করিতে হইবে; তাহা হইলেই তুমি যথেট সম্ভুট হও। হে বলর্ত্রহন্! তৈলোক্যের ঈশ্বর হইয়া আমি যথন পরের ভৃত্যত্ব স্বীকার করিয়াছি, তখন আমার পক্ষে এৰূপ ঘটনা হওয়া উপযুক্তই বটে; কেবল এৰপ কেন? আমি এতদপেক্ষা অধিক ক্লেশ পাই-বারও যোগ্যপাত্র। হে তৈলোক্যরাজ দেবেন্দ্র বাসব! ভোমাতে আমাতে কোন প্রভেদ না থাকিলেও যখন তোমাতেই ত্রিলোকীর রাজত্ব ব্যবস্থিত হই-য়াছে, তথন বিফুই একাকী আমার মহিমা ধর্ব করণের কারণ নহেন। দেখ, দক্ষের ছহিতাও আ-মার জননী এবং কশ্যপও আমার পিতা; আমিও কহিলেন, হে ভারত! এদিকে মহাবল বৈন- [।] অবলীলা-ক্রমে সর্বলোকের ভার বহন করিতে

পারি; আমারও এই বিপুল বল সর্বভূতের অসহ্য; দৈত্য-সংগ্রামে আমিও স্থমহৎ কর্ম্ম সম্পন্ন করি-রাছি; প্রত্তশ্রী, প্রত্তেসেন, বিবস্থান, রোচনামুখ, প্রস্তুত, কালকাক্ষ-প্রভৃতি দৈত্যদিপকে আমিও নি-হত করিয়াছি; তবে যে তোসার অনুজের পরি-চারক হইয়া যত্ন-পূর্ব্বক রধ-ধজ রক্ষা করি এবং नम्द्रा नम्द्रा स्थादिक शृद्धं क्रिया वस्त क्रि, हेश-তেই ভূমি আমাকে অবজ্ঞা করিতেছ। হে বাসব! সমগ্র বিশ্ব-মধ্যে আমার সদৃশ তারপহ অথবা আ-মার অপেক্ষা অধিকতর বলশালী আর কে আছে ? আমি সৰ্বাংশে ৰিশিষ্ট হইয়াও ইহাঁকে স্বান্ধবে বহন করিতেছি। সংপ্রতি তুমি যে অবজ্ঞা করিয়া আমাকে ভোজনে বঞ্চিত করিলে, ইহাতে ভূমি ও ইনি উভয় হইতেই আমার গৌরব নফ হইল।— অহে বিষো! অদিতির গর্ত্তে এই ইন্দ্র-প্রভৃতি যে সমস্ত বল-বিক্র-সম্পন্ন খুর বীরগণের জন্ম হই-য়াছে, তন্মধ্যে তুমিই সর্বাপেক্ষা অধিক বলশালী সন্দেহ নাই; কিন্তু আমি পক্ষের একদেশ-দ্বারা তোমাকে অফ্লেশে বহন করিয়া থাকি; অতএব হে ভ্রাতঃ! তুমি স্থিরচিত্তে বিবেচনা করিয়া দেখ, আমাদিগের মধ্যে অধিক বলবান্ কে ?

কণু কহিলেন, ভগবান্ চক্রপাণি অক্ষোভণীয় পিক্ষিরাজের উত্তর-কাল-ভয়াবহ এই দারুণ বাক্য ভাবণ করিয়া স্থাভীর বচন-রাজি-দারা ভাঁহারে ক্ষোভিত করত কহিতে লাগিলেন, গরুত্মন্! তুমি অতান্ত তুর্মল হইয়াও আপনাকে বলবান্ বলিয়া মানিতেছ; আমার সমক্ষে ভোমার এরপ আত্মান্মান্য করা উচিত নহে। অহে অগুজ! তোমার কথা কি, এই সমস্ত তৈলোক্যও আমার দেহ-ধারণে অলক্ত; আমি আপনিই আপনাকে বহন করি এবং ভোমাকেও ধারণ করিয়া চলি; সত্য কি মিথ্যা আন্মার এই বাহুটি বহন করিয়া দেখ্য যদি এই একটি হন্ত ধারণ করিতে পার, তাহা হইলেও তোমার সমুদায় গর্মা সার্থক স্থাকি হুইবে।

বিষ্ণু এই কথা বলিয়া গরুড়ের ক্ষক্সদেশে সেই প্রসারিত হস্তটি যেমন সংলগ্ন করিলেন অমনি তিনি মহাভারার্ড হইয়া বিকল ও নফচেতন হইয়া পড়িলেন। ধরাধর-নিকর-সম্বলিত সমগ্র বস্থন্ধরার যাদৃশ ভার, অচ্যুত-দেহের সেই একটি শাখায় তাঁ-হার তাদৃশ ভার অমুভূত হইল। সমধিক-বলশালী দমাবান্ ভগবান্ বলু-দারা প্রপীড়িত করত যদি তাঁহার জীবন বিনর্ফ করিলেন না, তথাপি গুরুতর-ভারে অতিমাত্র ব্যথিত হওয়ায় বিহঙ্গরাজ শিথিল-কলেবর, বিচেতা ও বিহ্বল হইয়া অনবরত বমন করিতে করিতে অঙ্গ হইতে পক্ষ-সমস্ত বিক্ষিপ্ত করিতে থাকিলেন এবং মস্তক-দ্বারা তাঁহাকে প্রণাম করিয়া কাতর-ভাবে এই কথা বীলিলেন, " হে ভগ-বন্! হে বিষমূর্তে ! তোমার এই শরীর-মধ্যে যখন সকল লেক্-সভূত সমন্ত তেজোরাশি সন্নিবেশিত রহিয়াছে, তথন যদৃচ্ছা-প্রসারিত ভুজদণ্ড-দ্বারা আ-মাকে নিষ্পিট করা আর বিচিত্র কথা কি ? হে দেব! এক্ষণে অনুগ্রহ করিয়া ভবদীয় ধঙ্গবাসী এই বলদর্পানল-বিদগ্ধ অপেচেতা বিহ্বল পক্ষীর প্রতি ক্ষমা প্রদর্শন কর! হে সর্ব্বশক্তিমন্! আমি পূর্ব্বে আর কথন তোমার পরম বলের মাহাত্ম্য জানিতে পারি নাই. এই নিমিত্তই মনে করিতাম, আমার সমান বীর্যাবান্ আর কেহই নাই "।

হে রাজেন ! গরুড়ের কাতরোক্তি শ্রবণে ভগবান্
প্রদান হইয়া সেহ প্রযুক্ত তাঁহাকে 'পুনরায় কথন
যেন একপ না হয় ' এই বলিয়া পদামুঠ-দ্বারা স্থাপ্থ
সর্পকে তাঁহার বক্ষঃস্থলে নিক্ষিপ্ত করিলেন। সেই
অবধি বিহঙ্গরাজ উক্ত ভুজক্ষের সহিত প্রীতিভাবে
একত্র বাস করিতে লাগিলেন। হে গান্ধারী-তনয়!
বিক্রলে আক্রান্থ হওয়ায় অমিত-বলশালী মহাযশস্বী বিনতা-নদন গরুড়ের এইকপে গর্কা থ্র্কা
হইরাছিল। হে তাত! সেইকপ তুমিও যাবৎ পর্যান্থ
সংগ্রাম-স্থলে সেই মহাবীর পাণ্ডুপুত্রগণের সন্নিহিত
না হইতেছ, তাবৎ কাল পর্যান্থই জীবিত রহিয়াছ।

প্রহারিশ্রেষ্ঠ মহাবল প্রন-নন্দন ভীমদেন এবং লোকাতীত-প্রতাপ-সম্পন্ন ইক্র-তনয় ধনঞ্জয় কোন্
ব্যক্তিকে না সমরে নিহত করিতে পারেন ? অহে
স্থযোধন! শ্বয়ং বিফু, বায়ু, বাসব, ধর্ম ও অশ্বিনীকুমার-ছয়, এই সমস্ত দেবগণের সহিত বুদ্ধ করা
দূরে ধারুক, ইহাঁদিগকে তুমি নিরীক্ষণ করিতেই
সমর্থ হইবে না। অতএব হে নৃপদন্দন! বিরোধ
করিবার প্রয়োজন নাই; উপীধ্যায়-শ্বরূপ বাস্তদেব
ছারা শান্তি সংস্থান করিয়া কুল রক্ষা কর। এই
মহাতপা নারদ ঋষি, বিফুর পূর্বোক্ত মাহাল্ম্য-সমস্ত
তংকালে প্রত্যক্ষ দর্শন করিয়াছিলেন। সেই চক্রপাণি গদাধর তোমার সভায় এই উপস্থিত।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, কণু এইৰূপ উপদেশ দিলেন বটে, কিন্তু ছুর্মতি ছুর্যোধন তাহা প্রবণ করিয়া
ভুকুটী-কুটিলাননে নিশ্বাস ত্যাগ করিছত করিতে
কর্ণের মুখাবলোকন-পূর্ব্বক উল্ভৈম্বরে হাস্য করিয়া
উঠিলেন এবং এইৰূপে কণু ঋষির সেই হিতকর
বাক্য-কদম কদর্থিত করত করিকর-সদৃশ উদ্ধুদেশে
তাড়ন-পূর্ব্বক এই উত্তর করিলেন, মহর্ষে! আমার
যে অবস্থা ও যে গতি হইবে, ঈশ্বর আমাকে সেইৰূপ করিয়াই স্ফ করিয়াছেন এবং আমিও সেই
অনুসারে চলিতেছি; অতএব আপনকার প্রলাপে
আর অধিক কি হইবে?

মাতলীয় উপাথ্যানে পঞ্চাধিক শততম অধ্যার সমাপ্ত॥ ১০৫॥

জনমেজয় জিজ্ঞাসিলেন, অনর্থে নির্বাস্কারী,
পরার্থে লোভ-মোহিত, অসৎসঙ্গে অভিরত, মরণে
ক্রতসংকণ্প, জ্ঞাতিগণের ছুঃধকর্ত্তা, বন্ধুবর্গের শোকবর্ধান, স্মুক্তং-সকলের ক্রেশদাতা, শত্রু-দলের হর্ষকর্ধাক সেই বিমার্গগামী সুযোধনকে তদীয় বাস্কাবেরা
নিবারণ করিলেন না ফেন ? স্নেহকারী সুক্তবের ভগবান্ ক্র্য্ণ এবং পিতামহ ভায়, ইহারাই বা কি

নিমিত্ত সতুপদেশ সহকারে তাঁহাকে সৎপথে আন-য়ন না করিলেন ?

বৈশম্পায়ন কহিলেন, ভগবান ও ভীয় উভয়েই, যেৰূপ হিভোপদেশ ৰাক্য বলা সঙ্গত ও যুক্তিযুক্ত, সেইৰূপই বলিয়াছিলেন; তদ্বাতীত মহর্ষি নারদও বিস্তারিত-ৰূপে যে বছৰিধ বচনাবলির প্রসঙ্গ করি-য়াছিলেন, তাহা প্রবণ করুন।

নারদ কহিয়াছিলেন, স্থক্দের বাক্য প্রবণ করে, এমন লোকও তুর্গভ এবং হিত-বাক্যের উপদেশ করেন, এমন স্থক্ত্বও তুল্পাপ্য; যেহেতু হিতবক্তা ব্যক্তি যাহা কর্ত্বর বলিয়া নির্দেশ করেন, শ্রোহা তাহাতে আস্থা করেন না। কিন্তু হে কুরুনন্দন! আমার বিবেচনায় হিতকারী স্থক্ত্লাণের বাক্য প্রবণ করা নিতান্তই কর্ত্বর; নির্বন্ধ-পরবশ হওয়া কোন ক্রমে উচিত নহে, যেহেতু নির্বন্ধ অতীব স্থদারুণ। নির্বন্ধাতিশয় বশত গালব মুনি যেরূপে পরাভব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, সেই পুরাতন ইতিহাসটিই ইহার উদাহরণ।

হে ভারত! পূর্বকালে তপদ্যা-পরায়ণ বিশ্বা-মিত্রের ধর্মা জিজ্ঞাসার্থে ভগবান্ স্বয়ং ধর্মা বশিষ্টের মূর্ত্তি ধারণ করিয়া তাঁহার নিকটে গমন করিয়াছি-লেন। হে রাজন্! সগুর্ষিগণ-মধ্যে অন্যতমের বেশ ধারণ-পূর্ব্বক তিনি ক্ষ্ধার্ত্ত ভোজনেচ্ছু হইয়া কৌ-শিকের আশ্রমে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। বিশ্বা-মিত্র অমনি সমস্ত্রমে প্রমান্নের চরু পাক ক্রাইতে লাগিলেন; কিন্তু ছম্মবেশী ধর্মরাজ ভাছার প্রতীকা না করিয়া অন্য তপস্থিগণের প্রদন্ত অয় ভোঙ্গনে কুধা শান্তি করিলেন। তাঁহার ভোজন শেষ হইলে বিশ্বামিত্রও দেই অত্যুক্ত অন আনিয়া উপরিত করিলেন। তথন ভগবান্ ধর্ম " আমার ভোজন করা হইয়াছে, তুমি অবস্থান কর ' এই বলিয়া তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। প্রশংসিত-ব্রতামুষ্ঠায়ী মহাত্যুতি বিশ্বামিত্রও তাঁহার কথাসূদারে দেই ভালে **অবস্থিত** বহিংলান। বাই যুগল দ্বাধা **ভ**ংজার পার্ক্তি

মস্তকে ধারণ-পূর্বকে তিনি স্থাণুর ন্যায় নিশ্চল ও বায়ুভক্ষ হইয়া আশ্রমের সন্নিধানে দণ্ডায়মান থা-কিলেন। তাঁহার প্রিয় শিষ্য গালব মুনি গৌরব ও বছমান-হেতুক প্রীতি-পরবশ হইয়া প্রিয়কার্য্য করণেচ্ছায় পরম যত্ন-সহকারে তাঁহার শুক্রাষা করিতে লাগিলেন। এই রূপে শত সম্বৎসর বিগত হইলে ধর্মরাজ পুনরায় বশিষ্ঠের বেশ ধারণ করিয়া ভোজন-কামনায় কৌশিক-সমীপে সমাগত হইলেন; দেখিলেন, সেই ধীমান মহর্ষি মন্তকে অন্ন ধারণ করিয়া সমীরণ ভক্ষণে তদবস্থায় অবস্থিত রহিয়া-ছেন এবং ঐ অন্নও অবিকল সেইৰূপ উষ্ণ ও অভি-নব রহিয়াছে। ইহা দেখিয়া তিনি তাহা গ্রহণ-পূর্ব্বক ভক্ষণ করিয়া " বিপ্রর্ষে! আমি যথেউ সম্ভুই হইলাম " এই বলিয়া প্রস্থান করিলেন। বিশ্বামিত ধর্মের বাক্যে ক্ষন্তভাব হইতে বিমুক্ত ও ব্রাহ্মণত্ব প্রাপ্ত হইয়া অতিশয় প্রীত হইলেন।

অনন্তর তিনি সেই তপ্যা-নিরত গালব-নামক নিবার শুক্রারা ও ভক্তি-ছারা প্রীতিমান্ হইয়া তাঁহাকে এই কথা বলিলেন, বৎস গালব! এক্ষণে তোমাকে অমুজ্ঞা করিতেছি, তুমি যথা ইচ্ছা সমন কর। মুনিসত্তম মহাছ্যুতি কুশিক-ভনয়ের এই আ-দেশ বাকা প্রবণে গালব হুইটিত হইয়া মধুর বচনে প্রভাত্তর করিলেন, গুরো! গুরু-কর্ম্ম নিমিত্ত আপনাকে কি দক্ষিণা প্রদান করিব? দক্ষিণা-যুক্ত হই-লেই মানবীয় কর্ম্ম সিদ্ধ হয়। দক্ষিণা প্রদান না করিলে কেহ কর্মাকল-লাভে সমর্থ হইতে পারে না। সাধু যাজ্ঞিকেরা দক্ষিণা-ছারাই স্বর্গ-লোকে যক্ত কল প্রাপ্ত হইয়া থাকেন। অভএব গুরুদক্ষিণার উপযোগী কোন্ বস্তু আহরণ করিতে হইবে, আজ্ঞা কর্মন।

ভগবান বিশ্বামিত গালবের শুক্রবাতেই জিত হইয়াছেন মনে করিয়া অপর দক্ষিণা গ্রহণে আর অভিলাবী ছিলেন না, স্থতরাং তাঁহাকে "গমন কর গমন কর" পুনঃপুন এই কথাই বলিতে লাগিলেন; কিন্তু গালব বারষার ঐবপ আদিই হইয়াও আগ্রহহেতুক "কি প্রদান করিব কি প্রদান করিব " এই
বাক্যই ভূরোভূর ব্যক্ত করিতে থাকিলেন। তথন
বিশ্বামিত্র তাঁহার তাদৃশ নির্বন্ধাতিশয় দর্শনে কিথিও রোব-পরবশ হইয়া কহিলেন, গালব! চল্রের
ন্যায় শুল্রবর্ণ অথচ এক দিকে শ্যামকর্ণ, এরপ অই
শত অশ্ব আমারে প্রদীন কর; যাও আর বিলয়
করিও না।

গালব-চরিতে বড়ধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১০৬ ॥

নারদ কহিলেন, হে স্থোধন! ধীমান্ বিশ্বামিত্র উক্ত ৰূপ আদেশ ক্রিলে গালব একবারে চিন্তা-হ্রদে নিমগ্ল हरेश পড়িলেন। তাঁহার আসন, শয়ন ও ভোজন, সকলই রহিত হইল। অতিমাত্র অমু-তাপ ও প্রথর শোকানলে নিরন্তর দক্ষ হওয়ায় তিনি সমধিক পাণ্ডুবর্ণ ও অস্থিচর্ম সার হইলেন এবং সাতিশয় চুঃখভারে প্রপীড়িত হইয়া মনে মনে এইৰপ বিলাপ করিতে লাগিলেন, "হা! আমি দীনহীন তপস্বী হইয়া চন্দ্রের নাায় শ্বেতবর্ণ অফশত অশ্ব কোধায় পাইব! আমার এমন ধনশালী মিত্র-বর্গই বা কোধায় আছে, যাহাদিগের নিকটে প্রার্থনা করিয়া লইব! আমার অর্থ কোথায়, সঞ্যুই বা কোথায়! হা! আমার ভোজন-পানাদি স্থ-সম্ভোগ বিষয়ে আর কি প্রকারে শ্রহ্মা হইতে পারে? অন্যের কথা দূরে থাকুক, আমার জীবিতের আস্থাই নিরন্তা হইয়াছে। জীবনের আর প্রয়োজনই বা কি ? অনর্থক জীবন-ভার বহন করা অপেক্ষা বরং আমি সমুদ্র-পারে অথবা পৃথিবীর অতি দূর-সীমায় গমন করিয়া আত্ম বিসৰ্জ্জন করি। অধন, অক্লভার্থ, कीवरनत वरूजत উৎङ्खे कननार्ड विक्रंड, भगधाती পুৰুষের চেক্টা ও যত্ন ব্যতীত কি ৰূপে স্থখ হইতে পারে? যে ব্যক্তি প্রণয়-বন্ধন-দারা স্থক্দাণের ধন-ভোগ করিয়া তাঁহাদিগের অভীষ্ট-সম্পাদন-ৰূপ

প্রত্যুপকার করিতে অসমর্থ হয়, ভাহার জীবন অপেক্ষা মরণই শ্রেষ্ঠ। করিব বলিয়া প্রতিশ্রুত হইয়া যে অভাজন সেই কর্ডব্য কর্ম্ম সম্পন্ন না করে, তাদৃশ মিধ্যাবাদী হতভাগ্য মানবের যাগ যজ্ঞ नकलहे विनष्टे हत्र। अनुष्ठ-श्रित्र नत्राधरमत ना শরীর-শোভা, না সম্ভতি, না আধিপত্যা, কিছুই থাকিতে পারে না; তাহার সদাতি লাভের আর সম্ভাবনা কি ? কৃতম ব্যক্তিক যশ কোথায়, স্থান কোথায়, স্থথই বা কোথায় ? ক্লতম কোন কালেই শ্রন্ধাস্পদ হইতে পারে না, কোন কালেই ক্রতম্বের নিন্তার নাই। ধনহীন পাপ পুরুষের জীবন মরণ উভয়ই তুল্য। পাপীয়ান্ ব্যক্তির প্রতিজ্ঞা প্রতি-পালন করিবার সামর্থ্য কি ? সে ক্রতম্ম হইয়া নি-শ্চয়ই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অতএব বুআমিও সেই পাপীয়ান, কৃতম, কৃপণ ও মিধ্যাবাদী হইলাম। গুরুর নিকটে ক্লভকার্য্য হইয়া ভাঁহার বাক্যপ্রতি-পালনে यथन অসমর্থ হইলাম, তথন সকলই আ-মাতে সম্ভাবিত হইল। স্থতরাং আমার আর জী-वत्नत्र कल कि? श्रामि श्रुक्रवाका-मन्भामत्न यथ-পরোনান্তি যত্ন করিয়া পরিশেষে প্রাণ পরিত্যাগ করিব। যজ্ঞ হলে সকল দেবতারাই আমার সন্মান করিয়া থাকেন; কিন্তু তাঁহাদিগের নিকটে আমি পূর্বের আর কথন কোন প্রার্থনা করি নাই। অতএব সম্প্রতি, সকলদেবশ্রেষ্ঠ, অগতির গতি-স্বৰূপ, ত্রি-ভুবনেশ্বর, বিশ্বব্যাপী ক্লম্পের শরণাপন্ন হই। যাঁহা হইতে স্থরাস্থর নর কিন্নর-প্রভৃতি যাবতীয় ভূত-বর্গের উপরে ভোগ-মুখ-সমস্ত প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, সেই যোগিতোঠ অবায় কৃষ্ণকৈ আমি প্রণত-ভাবে সম্পূর্ণন করিতে ইচ্ছা করি "।

গালব এই কথা বলিতে না বলিতে অকস্মাৎ তাঁহার প্রিয়-স্কুদ্ বিনতাত্মল গরুড় আসিয়া তাঁ-হারে দর্শন দিলেন এবং অতিশয় ক্ফটিত্তে তাঁহার প্রিয়কামনায় এই কথা বলিলেন, প্রিয়সথ! তোমার সহিত আমার যথেউ সৌক্দা আছে; স্কুদ্দাণের কর্ত্তব্য এই যে, সম্পত্তি-সত্ত্ব প্রিয়তম স্কর্ছদের অভীক সিদ্ধি বিষয়ে যত্ন করেন। অতএব হে বিপ্র! আমার পরম সম্পত্তি-স্বৰূপ বাসবামুক্ত বিফুর সন্নিধানে আমি পূর্বেই তোমার প্রয়োজন সিদ্ধি নিমিন্ত আবেদন করিয়াছিলাম এবং তিনিও আমার সেই কামনা পূর্ণ করিয়াছেন। অতএব এস তোমাকে যথা স্থাথে লইয়া যাই; সাগরপারে অথবা ভূমগুলের প্রান্তদেশে, যেখানে ইচ্ছা হয় চল, বিলম্ব করি বার প্রয়োজন নাই।

গালব-চরিতে সপ্তাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৭॥

স্থপর্ণ কহিলেন, হে বিজ্ঞান্ত গালব! অজ্ঞাতজন্ম ভগবান্ চক্রপাণির আজ্ঞাক্রমে তোমাকে বিজ্ঞাসা করিতেছি, প্রথমে কোন্ দিক্ দর্শন নিমিত্ত লইয়া যাইব বল। পূর্ব্ব, দক্ষিণ, উত্তর ও পশ্চিম, ইহার মধ্যে কোন্ দিকে গমন করিতে তোমার অভিলাষ হয়? যে দিকে সকল-লোক-প্রকাশকারী প্রভাকরের উদয় হয়; সন্ধ্যা-সময়ে ষেখানে সাধ্য-নামক গণ-দেবতারা তপশ্চরণ করেন; যে দিকে জগড়াপিনী

কে পূর্বে প্রাপ্ত হওয়া যায়; ধর্মের ছুইটি চক্ষঃস্থানপ চল্র ও স্থায় এবং স্বয়ং ধর্ম যে দিকে প্রতিঠিত হইয়াছেন; যে দিয়ুখে যজ্ঞীয় হবা-সমস্ত ছত
হইয়া সর্বা দিকে প্রস্তত হয়; যে দিক্ দিবস ও
কালের ছার-স্থানপ হইয়াছে; পূর্বে দক্ষপ্রজাপতির
কন্যারা যেখানে প্রজা স্থাটি করিয়াছিলেন; কশ্যপ
শ্বারি আত্মজ্ঞগণ যে দিকে প্রয়্রেছলেন; কশ্যপ
শ্বারি আত্মজ্ঞগণ যে দিকে প্রয়্রেছলেন;
সেই পূর্বেদিক্ই অমরগণের সকল ঐশ্বর্যাের মূল;
যেহেতু ঐ দিকেই শচীপতি স্বরাজ্যে অভিবিক্ত
হইয়াছিলেন এবং যাবতীয় দেবগণ ঐথানেই পূর্বে
তপশ্বরণ করিয়াছিলেন। হে দিজবর! এই নিমিত্তই
উহার নাম পূর্বেদিক্ হইয়াছে। ইল্রের স্থা-রাজ্যে
জভিষিক্ত হইবার বছকাল পূর্বেও দেবভারা ঐ
দিকে অবস্থিত ছিলেন, এই হেতু পূর্বেভন লোকেরা

উহাকে পূর্ব্ব দিক্ নামে বিখ্যাত করেন। স্থাভি-लायी ऋत-निकरत्रत मकल कार्याहे शूर्ट्स के पिरक নিষ্পন্ন হইয়াছিল। লোকভাবন ভগবান্ পিতামহ পূর্ব্বে ঐখানে বেদগান করিয়াছিলেন। জগৎপাবন र्र्याएमवं अंशांक उन्नवामीमिशक माविजीत छेन-**एम्म अवः योख्डवन्कारक यक्ट्र्यम्**ममञ्ज श्रामान कति-করিয়া সোম যজ্জস্থলে দেবগণ-কর্ত্তৃক পীত হন। দর্বভক্ষ হভাশন এই দিকে নিয়ত পরিভূপ্ত হইয়া আত্মবোনি অর্থাৎ সোম আজ্য পয়ংপ্রভৃতি ভক্ষণ करत्रन। जलाधिপতি वक्षणराप्त এই थान इहेर्ड পাতালতল আশ্রয় করিয়া স্বকীয় রাজ্যলক্ষী প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। পূর্বে মিতাবরুণের যজ্ঞকালে পুরা-তন বশিষ্ঠ ঋষির এই খানেই উৎপত্তি, স্থিতি ও বিনাশ প্রকাশিত হয়। প্রণবের যে সহজ্ঞ প্রকার পথ, তাহা এই দিকেই গাঁত হয়। ধুমপায়ী মুনিগণ এই খানে ছবিধুম পান করিতেন এবং দেবতাদিগের যজ্ঞভাগ নিমিত্ত শচীপতি সহস্রাক্ষ বরাহ-প্রভৃতি বহুতর বন্য-মৃগ-সমস্ত উৎসর্গ করিয়া উপহার কাপ্পিত করিতেন। কিরণমালী দিবাকর এই দিকে উদিত হইয়া ক্রোধ-বশত যাবতীয় অহিত ও ক্রভন্ন মানব বা অস্থর-সমুদায়কে নিহত করেন। অধিক আর কি বলিব, এই দিক্টি ত্রিলোকের দ্বার স্বক্প; স্বর্গ ও সুখ-লাভের ইহাই অনুত্তম পথ। অতএব যদি তোমার ইচ্ছা হয়, তবে এই পূর্বেদিগ্বিভাগে প্রবেশ করি। হে গালব। আমি যাঁহার আজ্ঞাকার।, তাঁহার প্রিয়কার্যা সম্পন্ন করা আমার নিতান্তই কর্তবা; অতএৰ এক্ষণে কোন্দিকে গমন করি বল; যদি পূর্ব্ব দিক্ দর্শনে ইচ্ছানা হয়, তবে আর এক দিকের বিবরণ কীর্ত্তন করিতেছি, প্রবণ কর। গালব-চরিতে অফীধিক শততম অধ্যার मयाथ ॥ >०৮ ॥

স্থপর্ণ কছিলেন, এই দক্ষিণ দিক্। "পূর্বের স্থ্য-

দেব যজ্ঞের অমুষ্ঠান নিমিত্ত গুরুকে দক্ষিণা-স্বৰূপে এই দিক্ দান করিয়াছিলেন, এই হেতু ইহা দক্ষিণা मिक् नाटम अनिका इहेशाइ। इह विश्व ! अहे शान এই লোক-ত্রয়ের পিতৃপক্ষ প্রতিষ্ঠিত আছেন। শ্রুত আছে, ধুমপায়ী দেৰতারাও এই খানে অব-স্থিতি করেন। বিশ্বদেব-নামক যে ত্রয়োদশ গণ-দেবতা আছেন, তাঁহারী লোক-মধ্যে পিতৃগণের তুল্য-ভাণিত্ব প্ৰাপ্ত 🖁 সমান-ৰূপে পূজ্যমান হইয়া তাঁহাদিগের সহিত নিতাকাল একত বাস করেন। হে দিজসভ্ম! পণ্ডিতের৷ এই দিক্টিকে ধর্মের দ্বিতীয় দ্বার-স্বৰূপ বলিয়া ব্যক্ত করেন; যেহেতু এই খানে হুক্মানুহক্ষ-ৰূপে লোকের পরমায়ুর পরিমাণ নির্ণীত হয়; বিশেষত এই দিকে দেবর্ষি, পিতৃলোকর্ষিও রাজর্ষি সকল চিরকাল পরম স্বখে অধিবসতি ভরিতেছেন। হে বিপ্রবর ! সত্য, ধর্মা ও কর্মা, সকলই এই খানে; যে ব্যক্তি কর্ম্ম-দ্বারা আ-ত্মাকে অবসন্ন করে, পরিণামে এই দিক্ই তাহার গতি। এক সময়ে সকলকেই এই দিকে আগমন করিতে হয়; পরস্তু ইহা অজ্ঞান-তিমিরে আচ্চুন্ন থাকে বলিয়া অনায়াদে প্রাপণীয় হয় না। হে দ্বিজ-শ্রেষ্ঠ! অক্ত-পূণ্য জঘন্য মানবগণের প্রতিকূল দর্শন জন্য এই খানে বহু সহস্র বিকটাকার রাক্ষস-নিবহের স্থি হ্ইয়াছে। হে বিপ্রা: **স্থর**-সম্পন্ন গন্ধর্বেগণ এই দিকে মন্দর-মহীধর-কুঞ্জে এবং বি-প্রধিগণের আশ্রম-পুঞ্জে স্থমধুর গাখা গান করিয়া লোকের চিত্ত বুদ্ধি হরণ করেন। রৈবত-নামা দৈত্য-রাজ এই খানে মন্ত্রময়ী-গাথা-সম্বলিত সামগান অবণ করিয়া পুত্র, কলত্র, অমাতা ও রাজ্য-প্রভৃতি সমুদায় পরিত্যাগ-পূর্ব্বক অরণ্যবাসী হইয়াছিলেন। হে ব্ৰহ্মন্! মন্নুও যবক্ৰীত-তনয় এই দিকে ষে নিয়ম সংস্থাপিত করিয়াছেন, স্থাদেব কোন কা-লেই তাহার অতিবর্তন করিতে পারেন না। পুলস্তা-বংশোদ্ভব রাক্ষসাধিপতি মহাত্মা রাবণ এই খানে তপশ্রণ-পূর্বক দেবগণ-সন্নিধানে অমরত্ব প্রার্থনা

করিয়াছিলেন। বৃত্তান্ত্রও অসভৃত্ত-ছারা এই খানে। শক্রের সহিত শত্রুতা করিয়াছিল। হে গালব! এই দক্ষিণ দিকে সকলের প্রাণ মিলিত হইয়া পুনরায় পঞ্চধা অর্থাৎ প্রাণ-অপানাদি-ভেদে পৃথক্ পৃথক্ হইয়া যায়। ছুদ্ভুত-কর্মকারী নরাধমেরা এই খানে ঘোরতর ছুর্বিপাকে পঢ়ামান হইতে ধাকে। এই দিকে নরকসিন্ধুগামী পুরুষ-নিষ্বরে পরির্তা বৈ-তরণী-নান্নী ভয়াবহা আপগাঞ্জিবাহিতা ব্লহিয়াছে। এঝনে আগত হইয়া লোকে নরক ও স্বর্গ-স্থুখ উভ-य़रे প্রাপ্ত হয়। মরীচিমালী প্রভাকর এই দিকে আ-রুত্ত হইয়া স্থুরুস পানীয় ক্ষরণ করিতে থাকেন এবং পুনরায় বশিষ্ঠ-সম্বন্ধিনী উদীচী দিক্ প্রাপ্ত হইয়া হিম হইতে বিমুক্ত হন। হে গালব! পুর্বে আমি এক দিন ক্ষুধার্ত্ত হইয়া আহারাথে চিষ্ণু করত এই খানে যুদ্ধে প্রবৃত্ত ছুইটা প্রকাণ্ডকায় रेंड्ड ও কচ্ছপ প্রাপ্ত হইয়াছিলাম। যিনি লোক-মধ্যে কপিলদেব বলিয়া বিখ্যাত, ঘাঁহার প্রভাবে সগর-বংশের ধংস হইয়াছিল, দেই চক্রধনুনামা মহর্ষি এই খানে स्थारत्व इरेट उर्भन्न इरेशाहित्वन। এरे निक বেদপারগা শিবা-নামী সিদ্ধা ত্রাহ্মণী সকল বেদ অধ্যয়ন করিয়া স্বকায় অক্ষয় দেহ প্রাপ্ত হইয়া-ছিলেন। এই খানে নাগরাজ বাস্থকি, তক্ষক ও ঐরবেতের পরিরক্ষিতা ভোগবতী পুরী বিরাজ-माना त्रिशाहा। मृंजाकाल लाटक এই দিকে মহাঘোর অন্ধকার প্রাপ্ত হয়। স্বয়ং সূর্য্য বা মগিও ঐ অন্ধকার অপনীত করিতে পারেন না। হে গালব! তুমি সেবনীয় হইলেও এই পথ তোমার গমনীয় হইবে ; সংপ্রতি যদি গমন করা কর্ত্তব্য হয়, ভবে আমারে বল, না হয় অপর পশ্চিম দিকের কথা শ্রবণ কর।

> গালব-চরিতে নবাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৯॥

स्पर्व कहित्तन, रह दिक्मखम ! धरे निक्षि कना-

ধিরাজ বরণদেবেক্ক অতীব প্রীতিকরী ; যেহেতু এই খানেই তাঁহার উৎপত্তি এবং প্রতিষ্ঠা। অংশুসালী দিবাকর দিবসের পশ্চিম অর্থাৎ চরম সময়ে এই **पिरक यकी**य कित्राता कि विश्वक्षन करतन, **०**ই নিমিত্তই ইহা পশ্চিম নামে প্রসিক্ষ হইয়াছে। অত্রত্য জলজন্তুগণের উপর আধিপত্য করিতে এবং বারিরাশির সংক্ষরণ নিমিত্তে ভগবান্ কশ্যপ ঋষি বরুণকে অভিষিক্ত করিয়াছিলেন। তিমিরাপহারী শশধর এই খানে জলদেবের সমগ্র ছয় রস পান করিয়া শুক্লপক্ষের প্রথমে পুনরায় তরুণ মুর্লিতে উদিত হন। হে দ্বিজ! পূর্ব্বে দৈত্যগণ এই দিকে প্রচণ্ড বায়ুবেগে অর্দিত, পরাজিত ও নিবন্ধ হইয়া ঘন ঘন নিশ্বাস ত্যাগ করিতে করিতে মৃত্যু-শ্যায় শয়ান হইয়াছিল। যাহা হইতে পশ্চিম সন্ধাার উৎপত্তি হয়, সেই অন্তর্গিরি এই খানে প্রণয়ভাজন স্থাকে প্রতি দিন প্রতিগ্রন্থ করে। দিবাবসানে এই খান হইতেই রাত্তি ও নিদ্রা বিনির্গতা হইয়া জীবিতকালের অর্দ্ধভাগ হরণ করিবার নিমিত্তই যেন সমস্ত জীব-লোক আক্রমণ করে। দেবরাজ পুরন্দর নিজ বিমাতা অস্তঃসত্বা দিতি দেবাকে এই খানে প্রস্থা দেখিয়া ঈর্ষাহেতৃক তাঁহার মেই গর্ভ কে একোন পঞ্চাশৎ খণ্ডে ছিন্ন করিয়াছিলেন এবং তাহাতেই মরুকাণের জম হইর।ছিল। শৈলাধি-রাজ হিমালয়ের বিপুল মূল অত্ততা চিরন্তন মন্দর মহীধরে সংলগ্ন হইয়াছে; সহস্র বংসর পরিভ্রমণ ক্রিলেও ইহার চরম-সীমা প্রাপ্ত হওয়া যায় না। গো-মাতা স্থরভি এই খানে কাঞ্ন শৈল ও কাঞ্ন কমল-যুক্ত সাগর-সদৃশ বিস্তীর্ণ সরোবরের ভার প্রাপ্ত হইয়া ক্ষীর ক্ষরণ করেন। চন্দ্র স্থর্য্যের হিংদা-ভিল।বী স্থ্যাপ্রতিম রাছদৈতোর মন্তক-পূন্য ছিন্ন-দেহ অত্রতা সমুদ্র-মধ্যে প্রতি নিয়ত দৃষ্ট হইতে থাকে। অনুশ্য ও অপ্রমেয়-তেজঃপুঞ্জ হরিতরোম। অর্থাৎ চির-যৌবন-সম্পন্ন স্কুবর্ণশিরা নামক মুনিবর এই দিকে যে বেদ পান করেন, তাহার বিপুলতর

ধনিও নিরন্তর শ্রুতিগোচর হয়। হরিমেধা মুনির কুমারী ধজৰতী স্থৰ্যোর "তিষ্ঠ তিষ্ঠ" এইৰূপ শাসনক্রমে এই খানে আকাশমার্গে অবস্থিতা ছিলেন। ह् भालव! এই मिटक, कि मिन कि यामिनी, সর্বদাই বায়ু, বহ্নি, জল ও আকাশ চুংখ-জনক স্পূর্ণ পরিহার করে। প্রভাকরের গতি এই দিক্ পর্যান্তই বক্রভাবে আবর্ত্তিতা হয় এবং এই দিকেই সমস্ত জ্যোতিঃপুঞ্জ আদিতামগুলে প্রবেশ করে। ছাদশ-রাশিভুক্ত সপ্তবিংশতি নক্ষত্র ও অভিজিৎ, ইহারা এক এক করিয়া অফাবিংশতি রাত্রি স্থর্য্যের সহিত সংক্রম করিয়া, চন্দ্রের সহিত সংযোগ হইলে পর, পুনরায় চন্দ্রের সঙ্গে সঙ্গেই স্থ্যমণ্ডল হইতে ক্রমে ক্রমে বিনির্গত হয়। যদ্বারা সাগর-সকলের উদ্ভব इरेशा थारक, त्मरे नमी-ममूनारम् উৎপত্তি স্থান এই পশ্চিমদিগুাগে নিতাকাল বিরাজ করিতেছে। ত্রি-ভুবনের যাবতীয় বারিরাশি অত্তা বরুণালয়ে অব-স্থিত রহিয়াছে। এই খানে পন্নগরাজ অনন্তের বাস স্থান। অনাদিনিধন বিষ্ণুদেবের ইহাই অনুত্তম মহর্ষি কশ্যপেরও এই খানে আবাস ভূমি। হে গালব! দিম্বর্ণন-প্রসক্ষে পশ্চিম-মার্গের এই র্ক্তাস্ত তোমার নিকটে সংক্ষেপে পরিকীর্ভিত হইল। হে দ্বিজ্সন্তম! এক্ষণে তোমার কি মতি হয়? কোন্ मिटक भमन कतिव वल।

> গালব-চরিতে দশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১০॥

**

স্থপর্ণ কহিলেন, হে দিজেনজম গালব! এই দিকে লোকে পাপ হইতে উজীর্ণ এবং মুক্তি-পদার্থ প্রাপ্ত হইয়া থাকে, এই উজারণ শক্তি-প্রযুক্তই ইহার উজর দিক্ নাম হইয়াছে। এই উজর দিন্তাগস্থ সেবনীয় নিধি-সকলের মার্গ পূর্বে ও পশ্চিম দিকে ব্যাপ্ত হইলে মধাম বলিয়া স্মৃত হয়। এই বরিষ্ঠ-দিন্তাগে অসৌমা, অজিতেক্তিয়ে অথবা অধার্মিক

লোকেরা কদাপি বসতি করে না। অত্তত্য বদরিকা-व्यय्य नातात्रण कृष्ण, नात्राख्य कियू अवश वित्रस्वन ব্রনা বিরাজমান রহিয়াছেন। অত্তত্য হিমালয়-পৃঠে যুগান্ত-ছতাশন-প্রতিম পরম পুরুষ মহেশ্বর প্রকৃতি পার্বতীর সহিত নিত্যকাল বিহার করি-তেছেন। তিনি মায়া-সমন্বিত হইলেও শুদ্ধ নর-নারায়ণ ব্যতীত আক্ল কাহারও দৃশ্য নহেন; কি মুনিগণ, কি বাসব-বহু অমর-রুন্দ, কি গন্ধর্বে যক্ষ অথবা সিদ্ধবর্গ, কেহই তাঁহার দর্শন পান না। এই খানে সহঅ-শিরা, সহস্রাক্ষ, সহঅ-চরণ, একমাত্র व्यवाय श्रुक्ष श्रीमान् विकृत्तव मिहे मायाविक महन শ্বকে সন্দর্শন করেন। হে ব্রহ্মছ্ত-প্রবর! দ্বিজরাজ চন্দ্রমা এই দিকেই বিপ্রবাজ্যে অভিবিক্ত হইয়াছি-লেন এবং মুহাদেব গগণ-বিচ্যুতা স্থরধুনীকে মন্তকে ধারণ কব্লিয়া মনুষ্য-লোকে সমর্পণ করিয়াছি-লেন। শৈল-তনয়া উমাদেবী, মহেশ্বর-বর-কামনায় যে ছুম্কর তপদ্যা করিয়াছিলেন, তাহাও এই খানে অনুষ্ঠিত হইয়াছিল। এক সময়ে এখানে গিরি-রাজ, উমা, কন্দর্প ও হর-রোষানল অতীব শোভ-মান হইয়াছিল। হে দ্বিজর্মভ! ধনপতি কুরের অত্রত্য কৈলাস-শিখরে রাক্ষস, যক্ষ ও গন্ধর্বগণের আধিপত্যে অভিষিক্ত হইয়াছিলেন। চৈত্ররথ-নামে তদীয় মনোহর উদ্যান, বৈখানস মুনিগণের আশ্রম, মন্দাকিনী ও মন্দর, এই খানে নিত্য-শোভিত রহি-য়াছে। ্রাক্ষসগণের পরিরক্ষিত সৌগন্ধিক বন, मामिल मोषल, नवज्ग-ज्ञिष्ठे श्राटमम, कमली-कानन, কম্পতরুবীথিকঃ এবং নিত্য-সংযমশালী স্বেচ্ছা-বিহারী সিন্ধগণের অভিলাষ-ভোগ্য স্থরুচির বিমান-সমস্তও এদিকের অমুপম রমণীয়তা সম্পাদন করি-তেছে। স্থপ্রসিদ্ধ সপ্তর্ষিমগুল ও দেবী অরুশ্বতী এই দিকে বিরাজ করিতেছেন। স্থাতি নক্ষত্রেরও এই খানে অবস্থিতি ও উদয়। লোকগুরু পিতামহ যজ্ঞের সন্নিহিত হইয়া এস্থানে প্রতি নিয়ত অব-शान करतन। ठळ, सूर्या ও এছनक्षज्ञान এই দিক্

দিয়া নিতা নিতা পরিভ্রমণ করিতেছেন। হে ছিজ-সন্তম ! সত্যবাদী মহাত্মা মুনিগণ এই খানে ইতন্তত পরিভ্রমণ করত গায়স্থিকা-দ্বার নামে লোক-সঞ্চারের চরমসীমা রক্ষা করিতেছেন। তাঁহাদিগের উৎপত্তি, ক্তি-কি তপস্যা, কিছুই জানা যায় না; তাঁহারা ইচ্ছামুসারে সহস্র সহস্র প্রকার পরিবর্ত্তন সম্ভোগ করেন। কোন মন্ত্র্যা তাঁহ্মদিগের পরিরক্ষিত ঐ গায়ন্তিকা-দার অতিক্রম করিয়া যেখানে যেখানে প্রবৈশ করে, সেই খানেই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। অব্যয় নারায়ণ-দেব ও নরোক্তম জিম্ফু ব্যতিরেকে আর কোন ব্যক্তিই কন্মিন্ কালে তথায় গমন করিতে সমর্থ হয় নাই। হে গালব! এই দিকে ধনেশ্বর কুবেরের অধিকৃত উত্তুঙ্গ কৈলাস-শৃঙ্গ বিরাজমান রহিয়াছে। এই খানে বিচ্যুৎপ্রভা-কামী দশ জন অপারার জন্ম হইয়াছিল। বামনাবতার কালে ভগ-বান্ বিষ্ণু যখন পাদত্রয়ে তিভুবন আক্রমণ করিয়া-ছিলেন, তখন এই উত্তর দিকে এক পদ সন্নিবেশিত করায় এখানে বিষ্ণুপদ-নামে এক অনুত্তম তীর্থের স্টি হইয়াছে। মরুত্ত-নামা কোন নরপতি এই উত্তর দিগ্ভাগে, যে স্থলে জাম্নদ নামক স্থবর্ণ-সরোবর আছে, তথায় উশীরবীজাথ্য প্রদেশে একটি অসাধারণ ষজ্ঞ করিয়াছিলেন। এই খানে জীমুত-নামা মহাত্মা বিপ্রধির সমকে হিমালয়ের স্থবিমল বিশুদ্ধ স্থবৰ্থনি প্ৰকাশিত হইয়াছিল। সেই মহৰ্ষি ঐ সমস্ত ধনরাশি ত্রাহ্মণদিগকে প্রদান করিয়া নিজ নামে প্রথিত করিবার নিমিত্তে তাঁহাদিগের নিকটে প্রার্থনা করিয়াছিলেন; তাহাতে 'সেই ধন জৈমৃত ধন বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছে। হে গালব! দিক্পাল-গণ এই খানে প্রতিদিন উভয় সন্ধ্যা সময়েই " কাহার কি কার্য্য আছে বল " উল্লৈঃস্বরে এইৰূপ বাাহার করিয়া থাকেন। হে দ্বিজভোষ্ঠ ! এই উত্তর দিক্টি উক্তৰপ ও অন্যান্য বছতর গুণে সর্বাপেকা **শ্রেষ্ঠ হইয়াছে। সর্ব্ব বিষয়েই সকলের উত্তর অ**র্থাৎ প্রধান বলিয়া ইহা উত্তর নামে বিখ্যাত। হে ভ্রাতঃ!

চতুর্দিকের এই বিস্তারিত বৃস্তান্ত তোমার নিকটে যথা-ক্রমে বর্ণন করিলাম; এক্ষণে কোন দিকে গমন করিতে ইচ্ছা হয় বল। তোমাকে সমস্ত দিক্ ও অথিল-ভূমগুল দর্শন করাইবার নিমিত্ত আমি অতিশয় উদ্যুক্ত হইয়াছি, অতএব আমার পৃষ্ঠদেশে সত্তর আরোহণ কর।

গালব-চরিতে একাদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১১॥

গালব কহিলেন, হে গরুজন! হে বিনতানদবর্জন! হে ভুজজেল্ড-শত্রো স্পর্ণ! যেখানে ধর্মের
লোচন-দ্বর উন্মীলিত হয়, সেই পূর্ব্ব দিকে আমাকে
লইয়া চল। তুমি সর্ব্বাগ্রে যাহার উল্লেখ করিলে
এবং 'এই খানে দেবতারা সন্নিহিত আছেন' বলিয়া
যাহার গুণামুকীর্জন করিলে, সেই দিকে যাও। সেখানে সত্য ও ধর্মের যে সম্যক্ অবস্থিতি আছে,
ইহা তুমি স্পাইই ব্যক্ত করিয়াছ এবং সমস্ত দেবগণের সহিত মিলিত হইতে আমারও ইচ্ছা হইতেছে; অতএব হে অরুণামুজ! আমার এই অমরবৃদ্দ সন্দর্শনের অভিলাষ্টি পূর্ণ কর।

নারদ কহিলেন, বিনতা-তনয় সেই ব্রাহ্মণকৈ 'আমার পৃঠে আরোহণ কর ' এই কথা বলিলে গালব তৎক্ষণমাত্র তাঁহার উপরে আরু ছইলেন এবং যাইতে যাইতে কহিতে লাগিলেন, হে পর্নগান্দন! পূর্বাহ্নে সহস্র-করধারী প্রভাকরের যেরপরপ পৃষ্ট হইয়া থাকে, এই প্রস্থান সময়ে ভোমারও অবিকল সেইরপ রূপ দেখা যাইতেছে। হে বিহঙ্গরাক্ষ! ভোমার গমনের এতাদৃশ অদ্ভূত বেগ লক্ষিত হইতেছে, যে বোধ হইতেছে, প্রবলতর পক্ষসম্পাত্রাতে প্রেরিত হইয়া অনুগামী রক্ষ-সকলও যেন আমাদিগের সঙ্গে সকলই কেন, সাগরের সমগ্র সলিলরাশি ও শৈল-বন-কানন-সম্বলিতা অথিল বস্থ-

হ্মরাকেই তুমি যেন পক্ষবাতে আকর্ষণ করিয়া যাইতেছে। অনবরত পক্ষবায়ু-সঞ্চালনে মীননা-গাদি-সঙ্গুল জল-সমস্ত যেন আকাশে পরিচালিত হইতেছে। তুলাৰপ আনন-বিশিষ্ট বছতের মৎসা, তিমি ও তিমিঙ্গিল এবং নরমুখাকার নাগ-সমূহ বেন উন্মধিতের ন্যায় দৃষ্ট হইতেছে। হে বিহঙ্গ-পতে! মহার্ণবের ভীষণ রবে আমার শ্রোত্র-দ্বয় বধির হইয়া পড়িয়াছে। আমি না শুনিতে পাই, না দেখিতে পাই, না আপন প্রয়োজন অবধারণ করিতে পারি, কিছুই পারিতেছি না। আমার সকল ইন্দ্রিয়ই রুদ্ধ হইয়াছে। অতএব হে ভ্রাতঃ! ব্রদ্মহত্যা না হয় এৰপ মনে করিয়া কিঞ্ছিৎ মন্দভাবে গমন কর। তোমাকে অধিক कि विविव, सूर्या, पिक् वा গগণ-মণ্ডল অবলোকন করা আমার স্বৃদূরপরাহত হই-য়াছে, সর্বত্রই কেবল অন্ধকার দেখিতেছি; এমন কি. তোমার এই শ্রীরও আমার দৃটিগোচর হই-তেছে ना ; रक्रवल উৎकृष्णकाणीय मिन-इराय नाय উদ্ভাসমান নয়ন-যুগল মাত্র নিরীক্ষণ করা ঘাই-তেছে। তোমার শরীরের কথাও দূরে থাকুক, আমি আত্ম-দেহই দেখিতে পাইতেছি না। আমার শরীর इहेट अधि উश्विज इहेटजर्छ, शरम शरम क्विन ইহাই দেখিতেছি। অতএব হে বিনতাত্মজ ! অবি-লম্বে আপন নয়ন-যুগল সম্বরণ-পূর্ব্বক আমার এই অগ্নির নির্বাপণ কর। গমনের এতাদৃশ মহাবেগ নিরুদ্ধ করিয়া আমার নিষ্কৃতি বিধান কর ! হে পন্ন-গাশন! আমার গমনে আর কিছুমাত প্রয়োজন নাই ; ভুমি সত্মর নির্ম্ত হও ; তোমার এ বেগ আর কোন ক্রমে সহু করা যায় না। আমি চন্দ্রের ন্যায় শুভ্ৰকান্তি-যুক্ত এক দিকে শামকর্ণ-বিশিষ্ট অষ্ট শত অশ্ব প্রদান করিব বলিয়া গুরুর নিকটে যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলাম, তাহা হইতে উত্তীর্ণ হইবার আর পথ দেখিতে পাই না; কেবল জীবন পরিত্যাগ করাই ভাহার একমাত্র উপার দৃষ্ট হইতেছে; যে-হেতৃ আমার কিছুমাত ধনও নাই এবং কোন ধনবাদ্

বন্ধুও নাই ; বিপুল অর্থ ব্যতিরেকেও উক্ত প্রতিক্তা হইতে নিষ্কৃতি পাওয়া সর্বাণা ছুঃসাধ্য।

নারদ কহিলেন, বিনতানন্দন স্পর্ণ, গালবের এই কপে বহুতর কাতরোক্তি শ্রবণেও গমনে ক্ষান্ত না হইয়া, ঈবং হায়া-পূর্বক তাঁহারে প্রত্যুত্তর করি-লেন, বিপ্রর্ষে! তুমি যখন আত্ম-বিসর্জ্ঞানের অভিলাষ করিতেছ, তখন তোঁমাকে বড় বুদ্ধিমান্ বলিয়া বোধ হইতেছে না; কেন না মৃত্যু কখন স্বেচ্ছা-ক্রমে সম্পাদিত হইবার নহে; মৃত্যু সাক্ষাৎ পরমেশ্বর। তুমি যদি এতাদৃশ কাতরই হইবে, তবে পূর্বে আমাকে নিম্বেধ করিলে না কেন? যাহা হউক, তোমার প্রয়োজন-সিদ্ধি হইবার একটি মহান্ উপায় আছে। অতএব সাগর-সমীপে ঋষভ-নামে এই যে পর্বত রহিষ্যুছে, এই খানেই বিশ্রাম ও ভোজন করিয়া প্রতিনিত্ত হইব।

গালব-চরিতে দ্বাদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১২॥

নারদ কহিলেন, তদনন্তর বিপ্র ও বিহঙ্গরাজ উভয়ে ঋষভ-শৈল-শিখরে নিপতিত হইয়া দেখি-লেন, তথায় শাণ্ডিলী-নামী এক ব্রাহ্মণী তপস্যা করিতেছিলেন। দেখিবা মাত্র স্থপর্ণ ভাঁহাকে অভি-বাদন এবং গালব যথোচিত পূজা করিলেন। তিনিও তাঁহাদিগকে স্বাগত বার্তা জিজ্ঞাসা করিয়া অতিথি-সংকার-সমুচিত আসনাদি প্রদান করিলেন। এইৰপে সংকৃত হইয়া অতিথি-দ্বয় বিফারাসনে উপবিষ্ট হইলে, শাণ্ডিলী তাঁহাদিগকে বলি মন্ত্ৰ-সম্ব-র্দ্ধিত সিদ্ধান্ন প্রস্তুত করিয়া দিলেন। তাহা ভক্ষণ-পূর্বক উভয়েই পরিতৃপ্ত হইয়া ভূমিতলে যেমন শয়ন করিয়াছেন, অমনি প্রগাঢ় নিদ্রায় বিমোহিত হইরা পড়িলেন। অনস্তর সম্বর গমনেচ্ছার স্থপর্ণ মুহূর্ত্ত কাল পরেই জাগরিত হইয়া উঠিলেন, কিন্তু পদ মুখে সংলগ্ন হওয়ার ভিনি যেন মাংসপিতের

ন্যায় হইয়া রহিয়াছেন। গালৰ তাঁহাকে তদবস্থ নিরীক্ষণ করত অতিশয় বিষম হইয়া জিজ্ঞাসিলেন, তোমার এ স্থানে আগমন করিবার কি এই ফল লক্ষ হইল। এ ভাবে আমাদিগকে কত কাল যে এখানে বাস করিতে হইবে, বলা যায় না। তুমি কি মনোমধ্যে কোন ধর্ম-হানিকর অশুভ বিষয়ের চিন্তা করিয়াছ। তোমার অবশাই কোন গুরুতর ব্যভি-চার হইয়া থাকিবে, সন্দেহ নাই।

গালবের এই কথায় স্থপর্ণ উত্তর করিলেন, বিপ্র! আমার মানসিক ব্যাভিচার এই যে, যে স্থানে প্রজাপতি ব্রহ্মা, দেব দেব মহেশ্বর এবং সনাতন বিষ্ণু বিরাজমান রহিয়াছেন; যে স্থানে ধর্মা ও যজ্ঞ নিত্য সমিহিত আছেন, সেই পবিত্র ধামে ইনি বাস করেন, এই মনে করিয়া আমি এই সিদ্ধা ব্রাহ্মণীকে তথায় লইয়া যাইবার সংকল্প করিয়াছিলাম। যাহা হউক, সম্প্রতি প্রিয়-কামনায় প্রণত হইয়া ভগবতীর নিকটে এই প্রার্থনা করি।—হে মহাভাগে! আমি অজ্ঞান-বশত আপনকার এ স্থানে বসতি করা অমু-চিত বিবেচনা করিয়া কিঞ্চিৎ শোক-প্রবণ মানসে ভবদীয় বছমান-প্রযুক্তই এই যে অনভিমত বিষ্যার চিন্তা করিয়াছিলাম, তাহা স্ক্রতই হউক, আর ছছ্তই হউক, আপনি নিজ মাহাত্মা-গুণে ক্রমা কর্মন।

এই ৰূপ অনুনয়-বাক্য প্রবণে শাণ্ডিলী, বিহঙ্গেশব্ধ ও দিক্সবর উভয়ের প্রতিই প্রীতা হইয়া, গরুড়কে সমোধিয়া কহিলেন, স্পর্ণ! তোমার ভয় করিতে
হইবে না; ভুমি শোভন-পক্ষযুক্ত ইইলে, অতএব
শক্ষা পরিত্যাগ কর। হে বৎস! ভুমি আমার নিন্দা
করিয়াছিলে বলিয়াই কিঞ্চিৎ রুফা হইয়াছিলাম,
যেহেতু আমি নিন্দা সহিবার পাত্র নহি। যে পাপাত্মা আমাকে নিন্দা করে, সে সর্বলোক হইতে
নিঃসন্দেহ পরিভ্রফ হয়। আমি সর্ব্ব-লক্ষণ-বিবভিত্তা ও নিন্দিতা হইলেও কেবল শুদ্ধাচার-পরারুণা থাকাতে এতাদুলী অনুদ্বমা সিদ্ধি লাভ করি-

য়াছি। সদাচার-রক্ষে ধর্ম ও ধন উত্তর ফলই ফলিত

হইয়া থাকে। পরিশুদ্ধ আচার-হেতুক লোকে নিশ্চরই লক্ষী লাভ করিতে পারে। অধিক আর কি
বলিব, সদাচার সকল অলক্ষণই নই্ট করে। অতএব
হে আয়ুয়ন্ বিহঙ্গরাজ! সম্প্রতি যথা ইচ্ছা গমন
কর; কিন্তু সাবধান! যেন আর কুত্রাপি নিন্দার্হ
স্ত্রীলোকদিগেরও নিন্দা করিও না। আমার প্রসাদে
তুমি পূর্বের ন্যায় বলবীয়্য-সম্পন্ন হইবে।

শান্তিলী এই কথা বলিবামাত্র পক্ষিরাজের পূর্বা-পেক্ষা অধিক বলযুক্ত পক্ষ-যুগল উদ্যাত হইল। অনস্তর তাঁহার আজ্ঞাক্রমে গরুড় তথা হইতে প্রস্থান করিলেন, পরস্তু গালবের প্রার্থনানুক্রপ তুর-ক্ষম সমস্ত প্রাপ্ত হইলেন না। বাগ্মিশ্রেষ্ঠ বিশ্বামিত্র পথি-মধ্যে গালবের সন্দর্শন পাইয়া স্থপণ-সন্ধিধানে তাঁহাকে এই কথা বলিলেন, বিপ্র! তুমি আমাকে যে অর্থ প্রদান করিবে বলিয়া স্বয়ং প্রতিজ্ঞা করি-য়াছিলে, আমার বিবেচনায় তাহা পরিশোধ করি-বার ত সময় উপস্থিত হইয়াছে, এক্ষণে তোমার বিবেচনায় কি হয় বলিতে পারি না। আমি এ পর্যান্ত প্রতীক্ষা করিয়া আছি, আরও কিছু কাল করিব; সম্প্রতি যাহাতে তাহা স্থাসন্ধ হয়, তাহার পথ দেখ।

ইহা শুনিয়া গালব সাতিশয় ছুঃখিত ও কাতর হইলেন দেখিয়া স্থপর্গ তাঁহারে কহিলেন, হে দ্বিজ-শ্রেষ্ঠ গালব! বিশ্বামিত্র তোমাকে পূর্বেযে কথা কহিয়াছিলেন, তাহা এক্ষণে আমার প্রত্যক্ষণোচর হইল; অতএব এস, ইহার একটা প্রামর্শ করি; গুরুর প্রাধিত সমস্ত অর্থ প্রদান না করিয়া তোমার আর উপবেশন করিবারও সাধ্য নাই।

> গালব-চরিতে ত্রয়োদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১১৩ ॥

নারদ কহিলেন, বিহঙ্গরাজ স্থপর্ণ দীনভাবাপন্ন গালবকে কহিতে লাগিলেন, হে ছিজভোঠ! ধন

হিরণ্যরেতা অধির ছারা ভূগরে নির্মিত ও বারু-দ্বারা পরিব**র্দ্ধিত হয় বলিয়া এবং সমুদয় জগৎ** हित्रगा ध्ययान विषया धरनत नाम 'हित्रगा' भरक ক্থিত হয়। ধন লোক সকলকে ধারণ করে ও করায় অর্থাৎ পোষণ ও জীবন ধারণের প্রয়োজক হয়, এই কারণে 'ধন' নামে উল্লিখিত হইয়া থাকে। অতএব লোক-যাতা নির্বাহের হেতুভূত সেই ধন ত্রিলোক-মধ্যে চিরকাল অবস্থিত আছে। পূর্বভাদ্রপদ ও উত্তরভাদ্রপদ নক্ষত্র-যুক্ত শুক্র বা-সরে অগ্নি মনোরথ-সমুপাক্ষিত ধন ধনপতির রৃদ্ধি নিমিত্তে মনুষ্যদিগকে নিত্যকাল প্রদান করিয়া থাকেন। পূর্বভাত্রপদ ও উত্তরভাত্রপদ নক্ষত্রের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা অজৈকপাদ ও অহিত্রশ্ন এবং ধন-পতি কুবের সেই ধন রক্ষা করিয়া থাকেন ; স্থুতরাং তুষ্পাপা ধন প্রাপ্ত হওয়া নিতান্তই তুঃসাধ্য, পরস্ক ধন-ব্যতিরেকেও তোমার অশ্ব লাভ করা কোন প্রকারে সম্ভবনীয় নহে। অতএব হে ব্রহ্মন্! যিনি তোমাকে কৃতকার্যা করিতে পারেন, রাজর্ষি-বংশ-সম্ভূত এৰপ কোন বদান্য ভূপতির নিকটে গিয়া তুমি গুরুপ্রদেয় অর্থ যাক্কা কর। সোমবংশ-জাত এক জন নরপতি আমার সথা আছেন ; চল তাঁহা-রই সন্নিধানে গমন করি। এই বস্থধা-মধ্যে তাঁহার বিস্তর বিভব আছে। তিনি নছবের পুত্র সত্য-বিক্রম রাজর্ষি; তাঁহার নাম যযাতি। সাক্ষাৎ ধনেশ্বরের ন্যায় তাঁহার ঐশ্বর্যোর সীমা পরিসীমা নাই। আমি অমুরোধ করিলে এবং তুমি স্বয়ং প্রার্থনা করিলে তিনি অবশ্যই তোমার প্রার্থনামূরপ অর্থ প্রদান করিবেন। হে বিছন্। তাহা দান করিয়াই ভুমি গুরুর ঋণ পরিশোধ করিতে পারিবে।

গরুড় ও গালব পরস্পর এইনপ কথোপকথন এবং যেনপ করা কর্ডব্য তাহার পরিচিন্তন করত উভয়েই, প্রতিষ্ঠানে অবস্থিত য্যাতি নরপতির নিকটে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। য্যাতি তাঁহা-দিগকে সমাগত দেখিয়া উৎক্ষতত্ব পাদ্য অর্ধ্য-

প্রভৃতি অভিধিসংকার প্রদান-পূর্ব্বক ক্ষাগমনের হেতু জিজ্ঞাসা করিলে স্থপর্ণ তদীয় সংকার প্রতি-গ্রহানন্তর উত্তর করিলেন, সধে নাছব! এই তপো-নিধি আমার একটি প্রাণসম মিত্র; ইহাঁর নাম গালব। দশ সহস্র বর্ষ কাল ইনি বিশ্বামিত্তের শিষ্য ছিলেন। সেই মহাতপা মহর্ষি ষ্ৎকালে ইহাঁকে গৃহে গমন করিতে সুর্মুক্তা করিলেন, তথন গুরুর উপকার করণেচ্ছায় ইনি তাঁহাকে এই কথা বলি-लেন, " जगरन्! আপনকার অমুমতি হইলে কিঞ্চিৎ গুরুদক্ষিণা প্রদান করি । ইহাঁর বিভব যে অভি অণ্প, তাহা বিশ্বামিত্র জানিতেন, স্থতরাং তিনি পুনঃপুন এইৰূপ উক্ত হওয়ায় কিঞ্চিৎ রোষ-পর্বশ হইয়া কহিলেন, " আমাকে জাতিগত-দোষ-খূন্য, চন্দ্রের ন্যায় শুভ্রবর্ণ, এক দিকে শ্যামরুর্ণ অফ শত অশ্ব প্রদানতকর। হে গালব। যদি গুরুদক্ষিণা দিতে ইচ্ছা হয়, তবে এই অর্থ দাও '।

তপোধন বিশ্বামিত্র ক্রোধভরে এইৰূপ আজ্ঞা করিলে, এই দ্বিজ্ঞোষ্ঠ মহাশোকে অনুতাপ করিতে লাগিলেন; তাহার প্রতিকারে সর্বথা অশক্ত হও-য়ায় এক্ষণে তোমার শরণাগত হইয়াছেন। হে নর-ব্যাত্র! ইহাঁর অভিলাব এই বে, তোমার নিকটে ভিক্ষা প্রতিগ্রহ করিয়া গুরুদক্ষিণা প্রদান-পূর্ব্বক গত-ব্যথ ও নিশ্চিন্ত হইয়া মৃহতী তপস্যার অনুষ্ঠান করিবেন। হে নরেশ্বর । তুমি রাজর্ষি-সমুচিত স্বকীয় তপস্যা-ছারা পরিপূর্ণ থাকিলেও গালব ভোমাকে নিজ তপসার অংশভাগী করত সমধিক পূর্ণ করি-বেন। শ্রুত আছে, অশ্বের, শরীরে যতগুলি লোম থাকে, অশ্ব-প্রদায়ী মনুষ্যেরা ভাবং সংখ্যক লোক প্রাপ্ত হন। হে মহীপতে! ইনিও প্রতিগ্রহের বথার্থ পাত্র এবং ভূমিও দান করিবার উপযুক্ত পাত্র; অতএব তোমার এই দান, শস্থার্পিত ক্ষীর-সারের উপমা লাভ করুক।

গালব-চরিতে চতুর্দশাধিক শতভ্য অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১১৪॥

नात्रम कहिरलन, यक्क-महरखन यक्कनकर्छा, पनि-তীয় দানশৌগু, দর্ব প্রকার প্রতিভা-সমন্থিত পা-র্থিবগণের অগ্রগণ্য, মহাপ্রভাব-সম্পন্ন রাজা যযাতি, সুপর্ণের ঐ অমুন্তম তথ্য বচন অবণে অবহিত-মনে বছক্ষণ চিন্তা ও পুনংপুন অবধারণ করিয়া, বিশেষত প্রিয় মিত্র গরুড় ও দিজ্ঞেষ্ঠ গালবের সন্দর্শনে এবং তদীয় তপদ্যার নিদর্শন ও শ্লাঘনীয় ভিক্ষার বিবরণ শ্রবণে ' আদিতাকুল-সম্ভূত অন্যান্য নরপতি-বর্গকে অভিক্রম করিয়া ইহাঁরা যে আমারই নিকটে আসিয়াছেন, এ আমার অণ্প সৌভাগ্যের বিষয় নহে ' এইৰূপ বিবেচনা করিয়া উত্তর করিলেন, হে বিহঙ্গপতে ! অদা আমার জন্ম সকল হইল ; হে অনঘ! তুমি আমার এই কুল ও দেশকে অদ্য পবিত্র করিলে। হে সথে! সম্প্রতি আগ্রি এই একটি কথা তোমাকে বলিতে ইচ্ছা করিতেছি, ভুমি পূর্ব্বে আমাকে যেৰূপ ধনবান বলিয়া জানিতে, এক্ষণে আর সে ভাব নাই; আমার ধন-সঞ্চয়ের ক্ষয় ইই-য়াছে; তথাপি আমি তোমার আগমন নিরর্থক করিতে পারি না; বিশেষত এই বিপ্রর্ষির আশা বিফলা করিতে আমার কোন ক্রমেই উৎসাহ হয় না; অতএব যাহাতে ইহাঁর এই কার্য্য সম্পন্ন হয়, তাহা আমি অবশ্যই প্রদান করিব। বিবেচনা করিয়া দেখ, অতিথি বান্ধণ প্রার্থনা করিয়া যদি হতাশ হইয়া নির্ভ হন, তবে নিশ্চয়ই কুল-দহন করেন। হে বৈনতেয়! কৌন ব্যক্তি "দেহি " এই বলিয়া যাক্কা করিলে তাহার আশা নাশ করিবার নিমিত্ত " নাস্তি " এই ষে কথা বলা, ইহার অপেকা পাপিষ্ঠ কর্ম আর কিছুই নাই। সেই হতপ্রার্থিত নিরূপায় যাচক অক্তার্থ ও হতাশ হইয়া হিত করণে পরাজুধ যাচ্য ব্যক্তির পুত্র পৌত্রাদি সকলই বিনফ করেন। অতএব হে গালব! আপনি চারি **वश्यां कार्यानकर्जी, मर्ख-धर्म्यान**हामिनी, अमत-কন্যা-সদৃশী আমার এই বালা ছুহিতাকে প্রতিগ্রহ করুন। ইহার অসাধারণ ৰূপ-হেতুক দেব, মনুষ্য ও

অস্থরেরা সর্বাদাই ইহাকে প্রার্থনা করিরা থাকেন অই শত শ্যামকর্ণ অখের কথা কি, ইহার বিশাহ নিমিন্ত রাজারা রাজ্য পর্যান্তও পণ দিবেন, সন্দেহ নাই। অতএব হে প্রভো! আপনি আমার এই মাধবী-নামী কন্যাকে প্রতিগ্রহ করুন। আমি দৌ-হিত্রবান্ হই, এই মাত্র আমার কামনা।

যযাতির এই কথায় গালব ভদীয় ছুহিভাকে গ্রহণ করিয়া "পুনরায় সাক্ষাৎ করিব" এই বলিয়া পক্ষি-রাজ ও কন্যার সহিত প্রস্থান করিলেন। স্থপর্গও " এখন ত তোমার এই অশ্ব লাভের উপায় উপলব্ধ হইল " এই কথা বলিয়া গালবের অমুমতি গ্রহণ-পূর্বক স্ব ভবনে গমন করিলেন। পতঙ্গরাজের প্রস্থানান্তে গালব কন্যার সহিত চিন্তা করত অশেষ রাজনাগণ-মধ্যে দানক্ষম কোন মহীপতির নিকটে শুল্কার্থে গমন করিলেন। প্রথমত তিনি ইক্ষাকু-বংশোদ্ভৰ রাজসম্ভম হ্যাশ্বকে মনে মনে প্রাপ্ত হই-লেন। হর্যাশ্ব অযোধ্যার অধিপতি, মহাবীর্যাসম্পন্ন, চতুরঙ্গ বলাম্বিত, ধন ধান্যাদি অর্থবলোপেত, অদ্বি-তীয় প্রজাবৎসল এবং বিপ্র-প্রিয়; বিশেষত সন্থা-নার্থী হওয়ায় শান্তিরসাবলম্বন পূর্ব্বক নিরস্তর উত্তম তপস্যায় রত ছিলেন। বিপ্রবি গালব তাঁহার সন্নি-হিত হইয়া কহিলেন, হে রাজেন্দ্র! বছল প্রস্ব-সহকারে কুলবর্দ্ধনশীলা আমার এই স্থলক্ষণা কন্যা-টিকে শুল্ক দ্বারা ভার্য্যার্থে প্রতিগ্রহ করুন। হে হর্যাশ্ব ! বেৰূপ শুচ্ক দিতে হইবে, ভাহা আপনার নিকটে বর্ণন করিতেছি, শুনিয়া যাহা কর্ত্বদ ইয় অবধারণ করুন।

গালব-চরিতে পঞ্চদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১৫॥

নারদকহিলেন, নৃপোত্তম হর্যাখ গালবের উক্ত প্রভাব প্রবাদ সন্তান হেডুক দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশাস পরিত্যাগ পূর্বক অভিনিবিট চিত্তে বছ প্রকার চিন্তা করিয়া বলিলেন, আপনকার এই কন্যাটি বছ স্থল-

গালব উত্তর করিলেন, প্রসিদ্ধ-দেশ-জাত, প্রশস্ত-দেহ-যুক্ত একদিকে শ্যাম কর্ণ এবং চন্দ্রের ন্যায় শুল্র-বর্ণ অফ শত অশ্ব আমারে প্রদান করুন; তাহা হইলেই এই আয়তলোচনা শুভাঙ্গী, অগ্নিজননী অরণীর ন্যায় আপনার পুল্রগণের প্রস্বকারিণী হইবেন।

নারদ কহিলেন, কামে মোহিত রাজর্ষি হর্যাশ্ব ঐ
কথা শ্রবণে দীনভাবে ঋষিসন্তম গালবকে বলিলেন,
আমার অন্য প্রকার শত শত ঘোটক আছে বটে,
কিন্তু আপনকার যাদৃশ প্রার্থনীয়, তদ্রপ ছুই শত
মাত্র অশ্ব আমার অশ্বশালায় সন্নিহিত রহিয়াছে;
গ্রতথ্ব হে গালব! আপনকার কন্যাতে আমি
থকটি মাত্র অপত্য উৎপন্ন করিব; আপনি অনুগ্রহ
করিয়া আমার এই কামনাটি পূর্ণ করুন।

হ্যান্থের এই বাক্য শুনিয়া দেই কন্যা গালবকে কহিলেন, কোন ব্রহ্মবাদী ঋষি আমাকে এই একটি বর দিয়াছিলেন, যে, প্রস্বান্তে প্রস্বান্তে তুমি কন্যাই থাকিবে; অতএব হে বিপ্র! আপনি হয়োভ্রম সমস্ত প্রতিগ্রহ করিয়া নিঃসংশয়ে আমারে রাজ-হস্তে সম্প্রদান কর্মন। এইকপে চারিজন ভূপতি হইতে আপনকার অফ শত অশ্ব পূর্ণ হইবে এবং

আমারও পুত্র-চতুষ্টর উৎপন্ন হইবে। হে ছিজসন্তম! আমার বিবেচনার আপনকার এই প্রকারে শুরু-দক্ষিণার আহরণ করাই কর্তব্য হইতেছে, এক্ষণে আপনার যেরূপ ইচ্ছা।

কন্যার এইৰূপ বাক্যে তথন গালবমুনি পৃথিবী-পাল হর্যাশ্বকে এই কথা বলিলেন, হে নরজেষ্ঠ হর্যাশ্ব! আমার প্রাপ্তিত শুল্কের চতুর্থাংশ প্রদান-দ্বারা আপনি এই কন্যাকে প্রতিগ্রহ করিয়া একটি পুক্র উৎপন্ন করুন।

এইৰপ অনুজ্ঞাত হওয়ায় হয়াশ্ব প্রীতিপ্রফুলচিত্তে গালবকে অভিনন্দিত করিয়া কন্যা গ্রহণপূর্বক যথাকালে ও যথা প্রদেশে অভিলয়িত পুজ্র
লাভ করিলেন। ভাস্কর-সদৃশ প্রভাশালী সেই রাজকুমার পশ্চ্ থনপতি ভূপতিগণ অপেক্ষাও ধনাঢা,
অদ্বিতীয় দীনশীল, বস্তমনা নামে একজন স্থপ্রসিদ্ধ
নরপতি হইয়াছিলেন। ধীমান্ গালব প্রীতমানস
হর্যাশ্ব-সমীপে যথাকালে পুনরায় উপস্থিত হইয়া
কহিলেন, হে নরেক্রা! আপনার ত এই অভিনবদিবাকর-প্রতিম মনোহর পুজ্র প্রস্থৃত হইয়াছে;
অতএব এক্ষণে অন্য কোন নরপতি সল্লিধানে আন্
মার ভিক্ষার্থে গমন করা উচিত।

হর্যাশ্ব সতা-বচনে নিবদ্ধ ও সুস্থিত ছিলেন, স্থতরাং এক্ষণেও পৌরুষে বর্তমান থারিয়া অবশিষ্ট ছয় শত অশ্বের ছুর্লভত্ত হেতুক মাধবীকে
প্রত্যার্পণ করিলেন। মাধবীও শেই দেদীপ্যমানা
রাজলক্ষ্মী পরিত্যাগ-পূর্বক ইচ্ছামুসারে পুনর্বার
কুমারী হইয়া গালবের পশ্চাদর্তিনী হইলেন। তথন
গালব "অশ্ব গুলি এখন আপনকার নিকটেই
থাকুক ইহ্মাশ্বকে এই কথা বলিয়া কন্যা সুমভিব্যাহারে দিবোদাস-নামক নরপাল সন্নিধানে প্রস্থান
করিলেন।

গালব-চরিতে বোড়শাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১৬॥ পথি-মধ্যে মাধবীকে কিঞ্চিৎ ব্রিয়মাণা দেখিয়া গালব কহিলেন, ভদ্রে! কাশী-প্রদেশ-নিচয়ের অধি-পতি ভীমসেন-নন্দন দিবোদাস-নামা স্থবিখ্যাত মহীপতি অভুল্য-প্রভাব, মহাবীর্য্য-সম্পন্ন, পরম ধার্ম্মিক ও নিয়ত সত্যব্রত-পরায়ণ; তাদৃশ শুদ্ধা-চার জনেশ্বরের নিকটে আমরা যখন গমন করি-তেছি, তখন আর তোমার শেক্ষ করিবার আবশ্যক নাই; ভুমি মন্দ মন্দ সঞ্চারে আগমন কর।

নারদ কহিলেন, অনন্তর গালবমুনি দিবোদাসের সন্নিহিত ও তৎকর্তৃক যথান্যায়ে সৎকৃত হইয়া আপন প্রয়োজন বিজ্ঞাপন-পূর্বক তাঁহাকে সন্তা-নোৎপাদন নিমিত্ত অনুরোধ করিলেন।

দিবোদাস কহিলেন, দ্বিজ্বর! আপনকার অধিক বলিবার আর আবশ্যক নাই, আমি পূর্ণেরই এ কথা শুনিয়াছি এবং শুনিবামাত্রই এ বিষয় আমার প্রার্থ-নীয় হইয়াছে। আপনি অন্যান্য নরাধিপ-বর্গকে পরিত্যাগ করিয়া আমার নিকটে যে আসিয়াছেন, ইহাই আমার পরম সৌভাগ্য; আপনকার প্রার্থনাও কিয়দংশে কলবতী হইবে, সন্দেহ নাই। হে গালব! আপনকার অভীফ অশ্ব বিষয়ে হ্যাশ্বের যেরূপ বিভব আমারও তদ্রপ; স্বতরাং আমিও আপন-কার এই কন্যাতে একটি রাজপুত্র উৎপন্ন করিব।

ষিজন্মেন্ঠ গালব ও তাহাই হউক " এই বলিয়া মহীপতি দিবোদাসের হস্তে কন্যা সমর্পণ করি-লেন। তিনিও বিধি-পূর্বাক সেই কন্যার পাণি-গ্রহণ করিলেন। যেমন প্রভাবতীতে স্থর্যা, স্বাহাতে বহ্নি, শচীতে বাসব, রোহিণীতে চক্র, উর্মিলাতে যম, গৌরীতে বরুণ, ঋদ্ধিতে ধনেশ্বর, লক্ষ্ণীতে নারায়ণ, জাহুবীতে সাগর, রুদ্রাণীতে রুদ্র, সর-স্থতীতে বন্ধা, অদৃশ্যম্ভীতে শব্রি, অরুদ্ধাতীতে বশিষ্ঠ, স্ক্রন্যাতে চ্যবন, সন্ধ্যাতে পূল্ন্তা, লোপামুদ্রাতে অগন্তা, সাবিত্রীতে সত্যবান, পুলোমাতে ভৃগু, অদিতিতে কশ্যপ, রেণুকাতে জমদ্যি, হৈমবতীতে বিশ্বামিত্র, তারাতে বৃহস্পতি, শতপর্বাতে শুক্র,

ভূমিতে ভূমিপতি, উর্কাশীতে পুরর্বা, সতাবতীতে খাচীক, সরস্বতীতে মন্ত্র, শকুন্তলাতে তুয়ন্তর, ধৃতিতে নিতাধর্মা, দময়ন্তীতে নল, সতাবতীতে নারদ, জরৎ কারুতে জরৎকারু, প্রতীচ্যাতে পুলস্ত্যা, মেনকাতে উর্ণায়ু, রস্তাতে তুয়ুরু, শতশীর্ষাতে বাস্কুকি, কুমারীতে ধনপ্রয়া, সীতাতে রাম এবং রুয়িণীতে জনার্দিন রমণ করিয়াছিলেন, সেইরপ রাজর্ষি দিবোদাসও মাধবীতে রমণ করিতে লাগিলেন। এইরপে কিয়ৎকাল পরম স্কুথে বিহার করিয়া মাধবী, প্রতর্দন নামে দিবোদাসের একটি পুজ্র উৎপন্ন করিললেন। অনন্তর সময় উপস্থিত হইলে ভগবান্ গালব দিবোদাস সমীপে আগমন-পূর্বাক কহিলেন, মহারাজ! আমার কন্যাকে প্রত্যর্পণ করুন, ঘোটক-শুলি এক্ষণে আপনকার নিকটেই থাকুক, সম্প্রতিশুল্ক নিমিত্ত আমি অন্যত্র গমন করি।

সত্যে স্থিত ধর্মাত্ম। মহীপতি দিবোদাস সমর প্রাপ্ত বিবেচনা করিয়া তৎক্ষণ মাত্র ভাঁছারে কন্যা প্রতিদান করিলেন।

গালব চরিতে সপ্তদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১৭॥

নারদ কহিলেন, সত্যপ্রতিজ্ঞা যশস্থিনী মাধবী
পূর্বের ন্যায় সেই নৃপত্রী পরিত্যাগ-পূর্বেক পুনরায়
কুমারী হইয়া দিজজ্ঞেষ্ঠ গালবের অমুগামিনী হইলেন। তথন গালব স্বকার্যা-সাধনার্থে অভিনিবিফচিন্তে বিশিষ্ট রূপ চিন্তা করিয়া উদীনর নরপতির
সহিত সাক্ষাৎ করিবার নিমিন্ত ভোজনগরে গমন
করিলেন। তথায় উপস্থিত হইয়া তিনি সত্যপরা
ক্রম উক্ত মহীপতিকে কহিলেন, হে সর্ব্যধর্মাভিজ্ঞ!
আমার এই কন্যাটি আপনকার ভূপাল-কুমার-যুগলের জননী হইবেন। ইহার গর্ত্তে সোম-স্থ্যপ্রতিম
মনোজ্ঞ নন্দন-দ্বর উৎপন্ন করিয়া আপনি, ইহলোক
ও পরলোক, উভয় লোকেই কৃতার্থ হইতে পারি
কেন। পরস্ত কন্যার বিবাহ নিমিন্ত আমাকে এক

দিকে শ্যামকর্ণ, চক্তের ন্যায় শুল্রবর্ণ চারি শত অশ্ব_। বাক্য শুনিয়া দ্বিজ**্রেষ্ঠ গালব তাঁহাকে** বিস্তর শুল্ক-স্বৰূপ প্ৰদান করিতে হইবে। মহারাজ! কেবল গুরুদক্ষিণা প্রদান নিমিত্তই আমার এরপ যত্ন করা, নতুবা অশ্ব-দ্বারা নিজের কিছুমাত্র প্রয়ো-জন নাই। অতএব যদি উক্ত ৰূপ হয় দান করা অাপনকার সাধাায়ত্ত হয়, তবে আর বিচার না করিয়া অবিলয়েই এ কর্ম সম্পন্ন করুন। হেরাজর্ষে! আপনি অপুত্রক রহিয়াছেন, এক্ষণে অপত্য-দ্বয় উৎপন্ন করুন,—পুত্র-ৰূপ প্লব-দ্বারা পিতৃলোক-দিগকে ও আপনাকে উত্তারিত করুন। হে রাজর্ষে! পুজ্ৰ-ফলভোক্তা পুণ্যাত্মা মানব কদাপি স্বৰ্গলোক হইতেও পাতিত হয়েন না এবং অপুত্রক বাক্তি-গণের ন্যায় কখন ঘোরতর নরকেও গমন করেন না। ্ৰ গালবের এইৰূপ ও অন্যৰূপ বিবিধ বাক্য শ্ৰবণ করিয়া রাজা উশীনর প্রত্যুত্তর করিলেন, গালব! जार्शन त्य त्य कथा विलालन, मकल र अनिलाभ এবং আমার চিত্তও পুত্রোৎপাদনে তৎপর হইল; কিন্তু কি করি বিধাতা সর্ব্বোপরি বলবান্। হেব্রহ্মন্: আমার অশ্বশালায় অন্য প্রকার সহস্র সহস্র অশ্ব-যূথ রহিয়াছে বটে. কিন্তু আপনকার অভিলবিত তুরঙ্গজাতির তুই শত মাত্র সংস্থান আছে; অতএব অপর নরপতি ভয় যে পথে গমন করিয়াছেন, আমিও সেই পথে গমন করিব, অর্থাৎ আপনকার কন্যাতে একটি পুত্রমাত্র উৎপন্ন করিব এবং তাঁহার৷ আপনাকে যেৰূপ মূল্য প্ৰদান করিয়াছেন, আমিও নেইৰপ দিব। হে দ্বিজসন্তম! আমার যে কিছু অর্থ, তাহা পৌর ও জানপদগণের নিমিত্ত, আত্ম-ভোগার্থ নহে। যে রাজা কাম বশত পরকীয় ধন অন্যকে প্রদান করে, সে কদাপি ধর্মশালী অথবা যশোযুক্ত হুইতে পারে না। অতএব চে ধর্মাত্মন্! দেবকন্যা-সদশী এই কুমারীকে একটি পুত্র প্রসব নিমিত্ত আনারে সম্প্রদান করুন, আমি অসংশয়ে প্রতিগ্রহ করিব।

নরপতি উশীনরের সেইৰূপ বছ প্রকার কল্যাণ

প্রশংসা-পূর্বক কন্যা সম্প্রদান করিয়াবন প্রস্থান করিলেন। কৃতপুণা উশীনরও সাক্ষাৎ লক্ষী-সদৃশী मार्थवीत्क व्याश्च रहेशा कथन रेनल-कन्मत्त्र, कथन নদী-নির্মরে, কথন বাতায়ন-বিমানে, কখন উদ্যানে, কথন বনে, কখন বিচিত্র উপবনে, কখন রমণীয় হর্ম্মাতলে, কথন প্রসাদ-শিখরে কখন বা শয়ন-মন্দিরে, যেখানে ইচ্ছা পরম-স্থাথে কেলি করিতে লাগিলেন।

সমনন্তর সময়ক্রমে তাঁহার নবীন-ভাক্ষর-সদৃশ **এक्टि नय़न-मत्नाह्त श्रृक्त कविना। भिवि-नामा** य জগদিখ্যাত ভূপতি, মহামুভব পার্থিব-কদম্বের চূড়া-মণি স্বৰূপ ছিলেন, তিনিই ঐ উদীনরের অঙ্গজ। হে রাজন্। পুত্র প্রস্থত হইলে, গালব উশীনর-সমীপে উপীন্থিত হইয়া নিজ কন্যা গ্ৰহণ পূৰ্ব্বক তথা হইতে প্রস্থান করিয়া বিনতা-নন্দন স্থপর্ণের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন।

> গালব-চরিতে অফীদশাধিক শততম व्यवाग्न ममाश्च ॥ ১১৮ ॥

नातम कहित्वन, शब्रुष्ट शालवत्क प्रतिथा हामा করত এই কথা বলিলেন, বিপ্রা! সৌভাগাক্রমে সম্প্রতি তোমাকে ক্নতার্থ হইতে দেখিলাম। স্থপ-র্ণের এই বাক্য শুনিয়া গালব উত্তর করিলেন, আমি ক্লথার্থ হইব কি, আমার কার্য্যের এখনও চতুর্থাংশ অবশিষ্ট রহিয়াছে। তখন বাগ্মি-শ্রেষ্ঠ বিহঙ্গরাজ কহিলেন, গালব! সে বিষয়ে তোমার আর যত্ন করিবার আবশ্যক নাই ; তাহা কোন ক্রমেই সম্পন্ন रुरेवात नरह। भूता-काल जगवान भंगीक भवि কান্যকুজ্ঞদেশীয় গাধি নরপতির সত্যবতী-নামী ছুহি-তাকে ভার্যার্থে প্রার্থনা করায় গাধিরাজ তাঁহাকে এই कथा वित्राहित्वन, जगवन्! आमारक शुक्क স্বৰূপে শশধরের ন্যায় শ্বেতবর্ণ এক দিকে শ্যামকর্ণ

সহত্র অশ্ব প্রদান করুন। श्राচীক " তাহাই হইবে » এই কথা বলিয়া বৰুণালয়ে গমন-পূৰ্ব্বক অশ্ব-তীৰ্থে অশ্ব লাভ করিয়া রাজাকে প্রদান করিয়াছিলেন। গাধিরাজ পুগুরীক নামে একটি বজ্ঞ করিয়া দক্ষিণা-चक्रा के ममख जूतक छीन वाक्रामिशक निशाहि-লেন। তাঁহাদের নিকট হইতেই রাজা হর্যাশ্ব, দি-বোদাস ও উর্গানর, প্রত্যেকে ছুই ছুই শত অশ্ব ক্রয় করিয়াছিলেন। অবশির্ট চারি শতও বিক্র-য়ার্থে পথি-মধ্যে আনীত হইবার সময়ে দৈবক্রমে সেই খান হইতেই অপহ্নত হইয়াছে। অতএব হে বৃন্ধন্! অপ্রাপ্য বস্তু প্রাপ্ত হওয়া কোন কালেই সাধ্য নহে; স্বভরাং এই কন্যাকেই অবশিষ্ট ছুই শত অশ্বের স্থানীয় করিয়া ছয় শত অশ্বের সহিত প্ররু-স্থানে সমর্পণ কর। হে দ্বিজসভূম গালব! এইৰূপ করিলেই ভুমি বিগত-মোহ 🖢 রুতকার্য্য इहेर्दा।

স্থপর্ণের ঈদৃশ সংপ্রামর্শ শ্রবণে গালব 'তাহাই হউক' এই বলিয়া তাঁহার সমভিব্যাহারে অশ্বগণ ও কন্যাকে লইয়া বিশ্বামিত্র-সন্নিধানে আগমন-পূর্বাক কহিলেন, গুরো! আপনি যেরূপ অশ্ব প্রার্থনা করিয়াছিলেন, তাদৃশ ছয় শত অশ্ব এই উপস্থিত, অপর ছুই শতের পরিবর্ত্তে এই কন্যাটিকে প্রতিগ্রহ করুন। ইহাঁর গর্ত্তে তিনজন রাজ্যির ধর্ম-সম্মত্ত তিনটি পুত্র প্রস্থত হইয়াছে; সম্প্রতি আপনিও আর একটি নরোভ্রম সন্তানের উৎপাদন করুন। এইরূপে আপনকারও অফ শত অশ্ব পূর্ণ হউক এবং আমিও আপনকার নিকটে অশ্বণী হইয়া যথা-স্বথে তপস্যা করি।

বিশ্বামিত বিহক্ষরাজ সহ গালবকে এবং তাদৃশী বরারোহা ললনাকে নিরীক্ষণ করিয়া কহিলেন, গালব! পূর্বেই আমারে এই অমূল্য কন্যারত্নটি প্রদান কর নাই কেন? তাহা হইলে আমারই কুলপাবন পূক্ত-চতুইয় উৎপন্ন হইতে পারিত। যাহা হউক, সম্প্রতি একটি সস্তানের নিমিত্তই তোমার কন্যাকে প্রতিগ্রহ করিতেছি; অশ্বগুলিও আমার আশ্রমে থাকিয়া সর্বত্ত বিচরণ করুক।

সমনন্তর মহান্তাতি বিশ্বামিত মাধবীর সহিত যথাস্থাবে বিহারাদি করত কালক্রমে তাঁহার গর্ত্তে অফকনামা একটি আত্মজ উৎপৃদ্ধ করিলেন এবং উৎপন্ন
হইবামাত্রই তাহাকে ধর্মো ও অর্থে সংযোজিত
করিয়া সেই অশ্বপ্তলি সমর্পণ করিলেন। অফক
ধর্মার্থ লাভে ক্রটিন্ত হইয়া সোমপুর-সদৃশ প্রভাশালী কোন নগরে গিয়া প্রবেশিলেন এবং মহামুনি
বিশ্বামিত্রও শিষাকে কন্যা প্রত্যর্পণ করিয়া বনে
গমন করিলেন।

গালব স্থপর্ণের সহিত মিলিত হইয়া এই রপে গুরুদক্ষিণা প্রদান-পূর্বেক প্রীতি-প্রফুল্ল-মানসে মাধবীকে সম্বোধিয়া কহিলেন, হে বরারোহে! তুমি বস্থমনা-প্রভৃতি যে চারিটি পুত্র-রত্ন প্রসব করিলে, তন্মধ্যে এক জন অদ্বিতীয় দানপতি, এক জন অসামান্য-শৌর্যাশালী, এক জন সত্যধর্মে নিরত এবং আর এক জন অসাধারণ যাজ্ঞিক। ঈদৃশ অনন্য-সাধারণ গুণ-বিশিষ্ট কুমার-চতুষ্ট্য-দ্বারা তুমি কেবল আপন পিতাকেই নহে, আর চারিজন রাজ্যিকে এবং আমাকেও তারিত করিলে; অতএব হে স্থ-মধ্যমে! সম্প্রতি আগমন কর।

দিজশ্রেষ্ঠ গালব কন্যাকে এইৰপ সম্ভাষণ-পূর্বক পিতৃ-সন্নিধানে সমর্পণ করিয়া সর্পভোজী স্থপর্ণের অনুমতি গ্রহণানম্ভর অরণ্যে প্রস্থান করিলেন। গালব-চরিতে একোনবিংশতাধিক শততম

অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১১৯ ॥

নারদ কৃহিলেন, রাজা যয়তি নিজ কন্যা মাধবীর পুনর্বার স্বয়য়র করণে অভিলাঘী হইলে, তাঁহার চূই পুত্র পূরু ও যন্ত্র, ভগিনীকে রথোপরি আরোহণ করাইয়া, প্রামের আশ্রম-পদে গমন-পূর্বক আ-শ্রমে আশ্রমে পরিভ্রমণ করিতে লাগিলেন। তথায় নাগ, যক্ষ, মনুষ্য, গহার্ক, মৃগ, পক্ষী এবং শৈল হুক

ও বনাশ্রিত যাবতীয় জীবজন্তগণের সমাগম হইল। তত্রতা বিস্তীর্ণ কানন নানা দেশীয় নরেশ্বর ও ব্রহ্ম-कष्भ ঋषितृनम-षाता मर्क्य मिरकरे ममात्र्छ रहेशा পড়িল। এইৰপে মহতী জনতা হইলে যথন বর-সমন্ত নিৰ্দ্দিশামান হৃষ্টতে লাগিল, তথন বরবর্ণিনী যযাতি-নিদ্নী অপর বর-নিকর পরিহার-পুরঃসর অরণাকেই বর-ৰূপে বরণ করিলেন; অর্থাৎ রথ হইতে অবতরণ-পূর্বক বন্ধু বান্ধবগণকে নমস্কার করিয়া পুণাতম বনস্থলে আতায় গ্রহণানন্তর তপ-শ্চরণু করিতে লাগিলেন। এইৰূপে বন-প্রণয়িনী হুইয়া মাধবী বিবিধ উপবাস, দীক্ষা ও প্রাণায়াম নিয়মাদি-ছারা আত্ম লঘুতা সম্পাদন-পূর্বক মৃগ-চারিণী হইলেন, অর্থাৎ রাগ-দেযাদি-পরিবর্জন ও श्रृरात्र ना। त्र वनावृद्धि व्यवस्थन क्रित्रा श्रष्ट्रान् धर्म সঞ্য় করিতে থাকিলেন। ব্রহ্মচর্য্য-সমন্বিতা হইয়া তিনি বৈদুর্য্যাঙ্কুর-সদৃশ হরিতবর্ণ, মৃদ্ধ, তিক্ত অথচ মধুর উত্তম উত্তম শস্প সকল ভোজন, পবিত্র নির্ঝ-রিণী-প্রবাহিত, স্থরদ, স্থশীতল, স্থবিমল পানীয় পান এবং ব্যাঘ্রাদি শ্বাপদ-কুল-বজ্জিত, হরিণরাজি-বিরাজিত, দাব-দহ্ন-বিরহিত, বিজন গহন-মধ্যে মূগীর নাায় মূগগণের সহিত বিচরণ করত স্থবিমল পর্মোপার্জ্জন করিলেন।

এ দিকে রাজা যযাতি বহু সহস্র বর্ষ পরমায়ু ভোগ করিয়া পরিশেষে পূর্ব্ব-রাজ্পণ-চরিত প্রব্র-জ্যাত্রম অবলয়ন-পূর্ব্বক কালধর্মের বশীভূত হই-লেন। পূরু ও যতু-নামক তাঁহার নরোত্তম নন্দনযুগলের বংশ-ছয় বর্জমান হইতে থাকিল। ঐ তুই বংশ হইতে নহুষ-তনয় ইহলোকে ও পরলোকে
প্রতিষ্ঠা-ভাজন হইয়াছিলেন। মহর্ষিকপ্প বিভবসম্পন্ন নরপতি যযাতি স্বর্গলোকে অবস্থিত ও পূজিত
হইয়া বহুগুণিত বহু সহস্র বর্ষ পর্যান্ত অনুত্তম স্বর্গস্থ-সড়োগ করিলেন; কিন্তু পরিশেষে ইদবছুর্বিবপাক বশত মোহাজ্বর ও গর্বাভিভূত-চিত্ত হইয়া
তিনি সহ-সমাসীন মহীয়ান্ রাজ্বি ও মহর্ষিগণ-

मिन्नियात ममल मानव, श्वास ७ जमत्रवृक्तत्क मत्न मत्न व्यवमानना कतिरू लाशिरलन। वल-निक्रमन দেবরাজ শত্রু তৎক্ষণ মাত্র তাঁহার সেই ভাব বোধ-গম্য করিতে পারিলেন এবং সেই সকল রাজর্ষিবর্গও তাঁহাকে বারষার ধিক্কার প্রদান করিলেন। অনন্তর ভাঁহার প্রতি নিরীক্ষণ করিয়া সকলে এইৰূপ তর্ক করিতে থাকিলেন, এ ব্যক্তি কে? কোন্ রাজার পুত্র ? কি প্রকারে এস্থলে স্বয়ং আগত হইল ? কোন্ কর্ম-দারা সিদ্ধ হইল ? কোথায় তপস্যা করিল ? কিৰূপে স্বৰ্গলোকে বিজ্ঞাত হইল ? কোন্ ব্যক্তিই বা ইহাকে জানে ? স্বর্গবাসী রাজর্ষি-প্রভৃতি সমুদয় লোকে যথাতির প্রতি এইৰূপ বিতর্ক করত পরস্পর জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন। অমর-ভবনের শত শত দার-রাচক, বিমানপাল ও আসনপাল সকলেও জিজ্ঞানিত হইয়া এই উত্তর করিলেন, না, আমরা কেহই ইহাকে জানি না। এই ৰূপে সকলেরই জ্ঞান আরত হওয়ায় কোন ব্যক্তিই আর তাঁহাকে জানিতে পারিলেন না; স্থতরাং মুহুর্ত কাল মধ্যেই তিনি একবারে তেজোহীন হইয়া পড়িলেন।

যযাতি-মোহে বিংশত্যধিক শত্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১২০॥

নারদ কহিলেন, অনস্তর মহীপতি যযাতি বিষুণিত
মানসে আসন হইতে প্রচলত এবং স্বস্থান হইতে
পরিচ্যুত হইলেন। প্রবলতর শোক-সন্তাপে প্রপীডিত হওয়ায় তাঁহার বিজ্ঞান-ভ্রংশ হইল, উজ্জ্বল
মালা-সমস্ত লান হইয়া গেল, অঙ্গদ মুকুট-প্রভৃতি
আভরণ ও বিচিত্র বসন-সকল স্থালিত হইয়া পড়িল
এবং শরীরের সমুদায় অঙ্গই শিথিল ও ঘূর্ণায়মান
হইতে থাকিল। তাঁহাকে আর কেহই জানিতে
পারিলেন না, কিন্তু তিনি সকলকেই পুনঃপুন অবলোকন করিতে লাগিলেন, কখন কখন বা তাহাতেও
বিঞ্চিত হইতে থাকিলেন। এইনপে সর্ব্ধ প্রকারেই
খুন্য হইয়া তিনি মহীতলে পতিত হইবার পুর্বের

শ্নাচিত্তে চিন্তা করিতে লাগিলেন, 'হা! আমি
ধর্মহানি-জনক এমন কি অশুভ বিষয়ের ভাবনা
করিয়াছি, যদ্মারা স্থান হইতে পরিভ্রুট হইলাম?'
এইৰূপ চিন্তাপরীত আসন-পরিচ্যুত আলম্ব-শূন্য
নরপতি য্যাতিকে তত্রতা রাজন্যগণ, সিদ্ধবর্গ ও
অশ্বরা সকল কৌতুকের সহিত অবলোকন করিতে
থাকিলেন

ह् ताक्षन्! व्यनस्त कीन-श्रुंग मानवन्नरात्त्र निशा-তনকারী কোন পুরুষ দেবরাজের শাসনক্রমে যযা-তির সন্নিহিত হইয়া কহিলেন, অহে পার্থিব-পুত্র! তুমি অতি মদে মন্ত হইয়া কাহাকেও আর অবজ্ঞা করিতে অবশিউ রাথ নাই; তোমার অভিমান-ৰশতই স্বৰ্গলোক ভ্ৰফ হইল; ভুমি আর এ স্থার্মে বসতি করিবার যোগা নহ; তোমালে কেহই জা-নিতে পারিতেছেন না; অতএব যাও, শীঘ্র নি-পতিত হও। ইহা শুনিয়া সন্ধাতিশালী ব্যক্তিগণের অগ্রগণ্য নছ্ধ-নন্দন য্যাতি '' সাধুগণ-মধ্যেই পতিত হইব " বারত্রয় এই কথা বলিয়া, কোথায় পড়িবেন চিন্তা করিতে লাগিলেন। এই সময়ে প্রতর্দন, বস্থ-মনা, শিবি ও অফক-নামক নৃপ-চতু উয় নৈমিষা-রণ্যে বাজপের যজ্ঞ-দারা স্থরেশ্বরের ভৃপ্তি-সাধন করিতেছিলেন দেখিতে পাইয়া তিনি তাঁহাদিগের মধ্যেই পতিত হইলেন। তাঁহাদিগের যজ্ঞীয়-ধুম-রাজি স্বর্গদ্বার পর্যান্ত সমুম্বিতা হইয়া যেন একটি ষ্পূর্ব্ব স্রোভৃন্বিনীর আকার ধারণ করিয়াছিল। জগতীপতি য্যাতি তাহারই আঘ্রাণ পাইয়া ধরা-গামিনী शक्रांत नात मारे ध्रमती नही अवलश्चन করত ভূতলে আসিয়া পড়িলেন। এইৰূপে পুণ্য-ফলের অপচয় হওয়ায় তিনি নিজ দৌহিত্রভূত সেই সমুজ্জ্বল-শোভান্থিত, যজ্জনিষ্ঠ, লোকপালোপম, প্র-চণ্ড ছ্তাশন-সদৃশ্ রাজসিংহ-চতু্ঊর মধ্যে নিপতিত হইলে, তাঁহারা তাঁহাকে শোভা-নিকরে দেদীপ্যমান নিরীকণ করিয়া জিজ্ঞাসিলেন, আপনি কে? কোন্ দেশের কোন্ নগরের বন্ধু ? আপনি দেবতা, গন্ধার্ক,

যক্ষ কি রাক্ষস ? এ স্থানে কোন্ অর্থই বা প্রার্থনা করেন ? আকার দৃট্টে বোধ হইতেছে, আপনি কথনই মনুষ্য হইবেন না ৷

যথাতি কহিলেন, আমি রাজর্ষি যথাতি, ক্ষীণপুণ্য হইয়া স্বৰ্গলোক হইতে বিচ্যুত হইলাম; সাধুগণ-মধ্যে পতিত হইব, এইনপ আকাজ্যা করায় এক্ষণে তোমাদিগের মধ্যেই নিপাতিত হইয়াছি।

নূপগণ কহিলেন, হে পুরুষর্যন্ত! আপনকার সেই সদন্তিলাষ সার্থক হউক, আপনি আমাদিগের ধর্ম ও যজ্ঞের ফল প্রতিগ্রহ করুন।

যথাতি বলিলেন, আমি ক্ষজ্রিয়, প্রতিগ্রহারিকারী ব্রাহ্মণ নহি; বিশেষত পরের পুণ্যক্ষয় করণে আ-মার প্রবৃত্তি হয় না।

নারদ কহিলেন, যযাতে এই কথা বলিতেছেন, ইতাবসরে ব্রহ্মচ্যা-পরায়ণা মৃগচারিণী মাধবী সেই স্থানে সমাগতা হইলেন। তাঁহাকে দেখিবামাত্র সেই নৃপ-চতুইয় অভিবাদন-পূর্ব্বক নিবেদন করি-লেন, হে তপোধনে! এ স্থানে আগমনের প্রয়োজন কি? আমরা সকলেই আপনকার পুত্র; অতএব কোন্ আদেশ প্রতিপালন করিতে হইবে, আজ্ঞাকরুন।

তাঁহাদিগের সেই বাক্য শ্রবণে তাপদী দাতিশয় হর্ষণদাদ-মানদে পিতার সমীপবর্তিনী হইয়া চরণ বন্দন করিলেন এবং পুত্রগণের মস্তক-স্পর্শ-পূর্বক কহিলেন, হেরাজেন্দ্র! আমার এই পুত্রেরা আপনকার পর নহেন, দাক্ষাৎ দৌহিত্র; অতএব ইহারাই আপনকার পরিতাণ করিবেন। এ প্রথা কিছু আধু-নিকী নহে, পূর্বের পূর্বের একপ শত শত ঘটনা দৃষ্ট হইয়াছে। হেরাজন্! স্থামি আপনকার ছহিতা মুগচারিণী মাধবী; অতএব আমারও যে কিছু ধর্ম্ম-সঞ্চয় আছে, তাহার অর্ক্তভাগ গ্রহণ করুন। বিকেচনা কলিয়া দেখুন, লোকে অপত্য-ক্ত-কর্মের কলভাগী হয় বলিয়াই দৌহিত্র কামনা করে; আমারে গালব-হত্তে সমর্পণ করিবার সময়ে আপনি যে

দৌহিত্রে অধিকারী থাকিবার প্রার্থনা করিয়াছিলেন, তাহারও এই মাত্র তাৎপর্যা।

অনন্তর প্রতর্দন-প্রভৃতি নরপাল-চতুই য় অবনত-মন্তকে জননী চরণে প্রণাম করিয়া স্বর্গবিচ্যুত মাতা-মহের পরিত্রাণ কামনায়, পূর্বে তাঁহারে যে কথা বলিয়াছিলেন, এক্ষণে নমস্কার-পূর্বক তারতর, স্থ-রিশ্ব অথচ গ্রন্তীর স্বরে মেদিনী পরিপূর্ণা করত তাহাই পুনরায় কহিলেন।

তাঁহাদিগের বাক্যাবসানে গালব ঋষিও বন হইতে সমাগত হইয়া যযাতিকে কহিলেন, মহারাজ! মদীয় তপ্যারে অউমাংশ-দ্বারা আপুনি পুনর্বার স্বর্গা-. রোহণ করুন।

য্যাতি-প্তনে একবিংশত্যধিক শত্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১২১॥

নারদ কহিলেন, নরপুঞ্চব মহীপতি ঘ্যাতি, প্রতদ্বনাদি সেই সমস্ত সাধুগণ-কর্তৃক প্রতিজ্ঞাত হইবামাত্র বিগত-মোহত্বর, দিব্য-দেহ, দিব্য-মাল্যায়রধারী,
দিব্যাভরণ-ভূষিত ও দিব্য-গন্ধগুণ-সমন্বিত হইয়া
ধরাতলে পাদ-স্পর্শ না করিয়াই পুনরায় স্বর্গমার্গে
আরোহণ করিলেন। ইত্যবসরে, লোক-মধ্যে দানপতি বলিয়া বিশ্বাত, উদার-চরিত বস্তমনা প্রথমত
উচ্চৈঃস্বরে তাঁহাকে এই কথা বলিলেন, হে মহীপতে! আমি ভূলোকস্থ সমস্ত জাতির প্রতি দ্বেষ,
নিন্দা ও অবমান রাহিত্য-দ্বারা যে ফল প্রাপ্ত হইয়াছি, অধুনা আপনাকে তাহা প্রদান করিলাম,
আপনি তাহার অধিকারী হউন। অপিচ, আমি
দানশীল, ক্ষমাশীল ও যজ্ঞনিষ্ঠ হইয়া যে ফল লাভ
করিয়াছি, তাহাতেও আপনি সংযোজিত ইউন।

অনন্তর ক্ষজ্রির শ্রেষ্ঠ প্রতর্জনও মাতামহকে সম্বোধিয়া কহিলেন, মহারাজ! আমি নিত্যকাল ধর্মনিরত ও সমর-পরায়ণ থাকিয়া ক্ষজ্রির শৈর সমুন্চত বীর-শন্দ-নিবন্ধন যে পুণ্য কল প্রাপ্ত হইয়াছি, অধুনা আপনি তাহাতে সংযোজিত ইউন।

তৎপরে উশীনর-পুত্র ধীমান্ শিবি এই রপ স্থমধুর বাক্য বিন্যাস করিলেন, হে রাজন্! আমি
বালক অথবা অবলাগণের নিকটেও কখন বে মিথ্যা
কথা কহি নাই; পরিহাস সময়ে, সময়ে, পরাজয়ে,
আপথকালে অথবা দূত্তকীড়াদি বাসন সময়েও বে
অনৃত ব্যবহার করি নাই, সেই সত্যপ্রভাবে আপনি
স্বর্গারোহণ করুন। মে সত্যের অনুরোধে আমি
রাজ্য, কর্মা, স্থথ, এমন কি, প্রাণ পর্যান্তও পরিত্যাগ
করিতে পারি, সেই সত্যবলে আপনি স্বর্গারোহণ
করুন। যে সত্যের মাহাজ্যে ধর্মা, পাবক ও শতকরু আমার প্রতি প্রতি হইয়াছেন, সেই সত্য-সহকারে আপনি স্বর্গারোহণ করুন।

অনন্তর কুশিক-বংশোদ্ভব মাধবী-তনয় রাজর্ষি
অফকও বঙ্গল যজ্ঞানুষ্ঠায়ী যথাতিকে এই কথা
বাললেন, প্রভা! আমি পুওরীক, গোসব ও বাজপেয়-প্রভৃতি যে অসংখ্য যজ্ঞ-সমূহের অনুষ্ঠান করিয়াছি, আপনি তৎসমুদায়ের ফলভাগী হউন। যজ্ঞকার্য্য নির্ব্বাহ নিমিত্ত আমি যে, ধন, রত্ন বা অন্যান্য
পরিচ্ছদ, কোন বস্তুই নিয়োজিত করিতে অবশিক্ট
রাখি নাই, সেই সত্যনিষ্ঠতা-সাহচর্য্যে আপনি স্বর্গারোহণ করুন।

এইৰপে দৌহিত্রভূত সেই ভূপাল-চতুষ্টয় যজ্জদানাদি-কৃত নিজ নিজ পুণাধর্ম-সহকারে, স্বর্গন্ধই

যযাতি রাজের তৎক্ষণমাত্র পরিত্রাণ করিলেন।
তাঁহারা পূর্বোক্ত প্রকারে তাঁহারে যেমন যেমন
কহিতে লাগিলেন, সেই সেই পরিমাণে তিনি বস্থমতীর সীমা পরিত্যাগ-পূর্বেক অমর নগরে প্রস্থিত
হইতে থাকিলেন; স্থতরাং ইহা অবশাই স্বীকার
করিতে হইবে যে, বিশুদ্ধ রাজবংশ-চতুষ্টয়ে সম্ভূত
সেই কুলপাবন মহামুভবেরাই মহাপ্রাক্ত মাতামহকে স্বর্গারোহণ করাইলেন। তাঁহারা প্রত্যেকে
আপন আপন পুণাফল প্রদান করিয়া পরিশেষে
সকলেই সমবেত হইয়া কহিলেন, হে নরেক্তঃ
আমরা সকলেই আপনকার দৌহিত্র এবং সকলেই

সর্বাধর্ম-গুণাদ্বিত; অতএব আমাদিণের সেই সেই ধর্ম-মাহাত্মো আপনি নির্বিত্তে স্বর্গারোহণ করুন। ব্যাতি-স্বর্গারোহণে দ্বাবিংশতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১২২॥

- নারদ কহিলেন, রাজা য্যাতি ভুরিদক্ষিণাপ্রদ সাধু-চরিত্র নিজ দৌহিত্রগণ কর্ভৃক উক্ত রূপে পুন-বৰার স্বৰ্গপুরে আরোহিত হইয়া তাঁহাদিগকে বিদায় প্রদান-পূর্বেক তথায় অবস্থিত হইলেন। স্বকীয় স্থক্ত-সহকারে পরিবর্দ্ধিত হইলেও তিনি দৌহিত্র-ফল-বিনিজ্জিত নিশ্চল স্থান প্রাপ্ত হইয়া বহুতর স্থগন্ধি পুষ্প-বর্ষণে সমাকীর্ণ, পুণ্যগন্ধি পবিত্র পবন-হিলোলে আলিঙ্গিত এবং পরম-শোভায় সমুদ্রাসিত হইতে থাকিলেন। গন্ধর্বে ও অপ্সরাপ্ত্রণ নিরতিশয় প্রীতি-সহকারে তাঁহার সম্মুখে নৃত্যশীত করিতে লাগিলেন এবং অন্যান্য দেবানুচরেরাও ছুন্তুভি-শব্দ-দারা তাঁহারে সমাদর-পূর্বক গ্রহণ করিলেন। বছবিধ দেবর্ষি, রাজর্ষি ও সিদ্ধচারণগণ তাঁহার স্তব স্তুতি করিতে থাকিলেন এবং দেবতারাও অমুক্তম অর্ঘ্য প্রদান-পূর্বক অর্চনা করিয়া ভাঁহাকে যথো-চিত অভিনন্দিত করিলেন।

মহামতি য্যাতি এইৰপে স্বৰ্গফল প্ৰাপ্ত হইয়া
নিশ্চিন্ত ও প্ৰশান্তচিত্ত, হইলে, পিতামহ ব্ৰহ্মা, তাঁহাকে বচনামৃত-দ্বারা পরিতৃপ্ত করত কহিলেন,
রাজ্বর্ষে! তুমি লোক-হিতকর বহুতর পুণ্য কর্মা-দ্বারা
চতুপ্পাদ ধর্ম সঞ্চয় করিয়া অক্ষয় স্বর্গলোক প্রাপ্ত
হইয়াছিলে এবং এন্থলে তোমার কীর্ত্তিভাগুরও
অক্ষয় ছিল; কিন্তু তুমি আপন অবিচক্ষণতা দোষে
সমস্ত স্বর্গবাসিগণের অন্তঃকরণ এরপ অজ্ঞানারত
করিয়াছিলে যে, তৎকালে কেহই আর তোমাকে
জানিতে পারেন নাই; স্কতরাং সকলের অপরিজ্ঞাত হওয়ায় তুমি তৎক্ষণ-মাত্র পাতিত হইয়াছিলে; সম্প্রতি স্বকীয় দৌহিত্রগণের প্রীতি-দ্বারা
পরিত্রাণ পাইয়া পুনরায় এস্থানে আগত হইয়াছ

এবং স্বকর্ম-বিনিজ্ঞিত পুণ্যতম স্থানিশ্চল চিরন্তন অক্ষয় পদ প্রাপ্ত হইয়াছ।

যথাতি কহিলেন, ভগবন্ পিতামহ! আমার একটি মহান্ সংশয় আছে, অমুগ্রহ-পূর্বক আপনা-কে তাহার অপনোদন করিতে হইবে; আপনি বিদ্যমানে অনাকে জিজ্ঞাসা করা আমার উচিত নহে। সে সংশয় এই, বছ সহক্র বংসর পর্যায় প্রজাপালন এবং যজ্ঞ-দানাদি অশেষবিধ পুণা-সঞ্চয় করিয়া আমি যে মহৎ কল প্রাপ্ত হইয়াছিলাম, তাহা অপেকাল-মধ্যেই ক্ষীণ হইল কেন ? কি অপরাধে আমি পাতিত হইলাম ? হে মহাত্মাতে! আন্মার নিমিত্ত যে শাশ্বত লোক-সমস্ত নির্দ্দিত হইয়াছিল, তাহা কিছু আপনকার অবিদিত নাই; সম্প্রতি কি নিমিত্ত সে সমুদায় বিনেষ্ট হইল ?

পিতামহ কহিলেন, হে রাজেন্দ্র ভুমি বস্তকাল পর্যান্ত প্রজাপালন ও যজ্জদানাদি অনন্ত পুণা-সঞ্যু করিয়াযে মহৎ ফল উপার্ক্তন করিয়াছিলে, এক-মাত্র অভিমান দোবেই তাহার ক্ষয় হইয়াছিল এবং সেই জনাই তুমি স্বৰ্গবাসিগণ কৰ্তৃক ধিক্কৃত ও পাতিত হইয়াছিলে। হে রাজধে। এই স্বর্গলোক, ছল, বল, অভিমান, হিংসা বা শঠতা-দারা কখন নিত্যস্থারী হইতে পারে না; অতএব এই অবধি, না উত্তম না মধ্যম না অধম, কাহাকেও আর তুমি অবমাননা করিও না। তোমাকে অধিক কি বলিব, যাহারা অভিমানানলে দগ্ধ হয়, তাহাদিগের সদৃশ পাপীয়ান্ আর কুতাপি দৃষ্ট হয় না। হে রাজন্! যে সকল পুণাশাল মানব ভোমার এই পতন ও আরোহণ বিষয়ক কথোপকথন করিবে, তাহারা ঘোরতর আপদ্মুস্ত হইলেও অনায়াদে উর্ভার্ণ হইবে, সন্দেহ নাই।

নারদ কহিলেন, হে মহীপতে! পূর্বকালে যথাতি রাজা অভিমান বশত এবং গালব-মূনি অভিমাত্র নির্বান্ত-হেতুক এই এই দোষ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। হিতাভিলাধী পুরুষের হিতৈধী স্কৃষ্ণাণের বাকা

শ্রুবণ করা অতীব কর্ত্তব্য, নির্বেন্ধ-পরবশ হওয়া কোন প্রকারেই উচিত নহে; যেহেতু নির্বান্ধ সারা কেবল ক্ষয়োৎপত্তি হইবারই সম্ভাবনা। অতএব হে গান্ধারে! ভুমিও অভিমান ও কোধ বিসর্জন কর। হে বীর! যুদ্ধাড়ম্বর পরিহার করিয়া পাণ্ডব-দিগের সহিত সন্ধিস্তে সম্বন্ধ হও। হে রাজন্! লোকে যে কিছু দান করে এবং তপসা৷ যজ্ঞ-প্রভৃতি যে কোন কর্ম করে, কদাপি তাহার অপচয় অথবা অনর্থক বিনাশ হয় না এবং কর্ডা ভিন্ন অন্য কোন ব্যক্তিও তাহার কলভাগী হইতে পারে না। ইহ-লোকে যে ব্যক্তি রাগ-রোষ-বিবচ্ছিত বছ শাস্ত্রজ্ঞান-সম্পন্ন মহামুভবগণের অভিমত, নানা প্রকার শাস্ত্র ও যুক্তি-দার। অবধারিত এই মহাফলোপধায়ক অমুন্তম উপাখ্যানটি সমাক্-ৰূপে হৃদয়ঙ্গম করিতে পারেন, তিনি ধর্মাদি ত্রিবর্গদর্শী হইয়া বস্থধা-রাজ্য সম্ভোগ করেন।

যয়াতি স্বর্গারোহণে ত্রয়োবিংশত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১২৩॥

নারদের বাক্য শেষ হইলে, ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, ভগবন্ দেবর্ষে! আপনি যে কথা বলিলেন, তাহাই যথার্থ; আমারও এইকপ ইচ্ছা; কিন্তু কি করি, ইচ্ছা থাকিলেও আমার প্রভুত্ব নাই।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, কুরুশ্রেষ্ঠ ধৃতরাষ্ট্র নারদকে এইৰূপ কহিয়া ক্লফকে সম্বোধন-পূর্বক বলিলেন, হে কেশব! তুমি আমাকে লোক-হিতকর,
স্বর্গসাধন, ধর্মামুগত ও ন্যায়-সম্মত বাক্যই বলিয়াছ; কিন্তু হে তাত! আমি স্বয়ং স্বাধীন নহি;
মন্দমতি ছুর্যোধন কোন প্রকারেই আমার প্রিয়কার্য্য করিতে প্রয়ন্ত হয় না। অতএব হে মহাবাহো
পুরুবোন্তম! মদীয় শাসনাতিবর্ত্তী ঐ অবোধ ছুরাস্থাকে তুমিই অমুনীত করিতে যত্ন কর। ঐপাপিষ্ঠ,
প্রাক্ততম বিছুরের, গান্ধারীর এবং ভীয়-প্রভৃতি
অন্যান্য হিতৈধী সুক্রেরের মাধুক্তি প্রবণ করে না;

অতএব হে জনার্দন! তুমিই ঐ পাপচিত্ত ক্রুরতম অচেতন ছুর্যোধনকে অমুশাসিত কর। এইৰূপ করিলেই তোমার স্কুছদের সমুচিত স্থুমহৎ কার্যা করা হয়

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনস্তর সকল ধর্মার্থ-তত্ত্বা-ভিজ্ঞ কৃষ্ণ অমর্ষ-পরবশ ছুর্য্যোধনের সন্নিহিত হইয়া এইৰূপ স্থমধুর বাক্টাবলি বিন্যাস করিতে লাগি-লেন, হে কুরুসভম ছুর্ব্যোধন! আপনি যুদ্ধার্থে অতি-মাত্র নির্বান্ধ-যুক্ত হইয়াছেন বলিয়া আপনার শা-ন্তির নিমিত্তে আমি এই যে কথা বলিতেছি, সবি-শেষ মনোনিবেশ-পূর্বক ইহা বোধগম্য করুন। হে ভারত! আপনি মহাপণ্ডিত-কুলে উৎপন্ন, বছল শাস্ত্রজ্ঞান ও সদাচার-সম্পন্ন এবং ঐশ্বর্যাদি সর্ব্ব-গুণে সমশ্বিচঃ; অতএব মদীয় বাক্যানুষায়ী সাধু-ব্যবহার কর্দ্ধা আপনার অতীব কর্ত্তব্য। হে তাত ! আপনার বিবেচনায় সম্প্রতি যে কর্মটি কর্ত্তব্য বলিয়া অবধারিত হইতেছে, তাহা ছুম্কুল-জাত, ছুরা-ত্মা, নৃশংস ও নিলক্ষ্য লোকেরাই করিয়া থাকে। হে ভরতর্ষভ! এই অখিল বস্তুন্ধরামধ্যে সাধুমানব-গণের প্রবৃত্তিই ধর্মার্থ সংযুক্তা দৃটি করা যায়; অসৎ লোকদিগের পক্ষে তাহার সম্পূর্ণ বিপরীত, অর্থাৎ তাহারা যে কোন কর্মো প্রবৃত্তি করে, তাহা প্রায়ই অধর্মানুগত ও অনর্থপূর্ণ হয়। সম্প্রতি আপনাতেও সেই বিপরীতা প্রবৃত্তিই পুনঃ পুনঃ সংলক্ষিতা হই-তেছে। ঈদৃশ ছুষ্পা হন্তিতে যে ঐকান্তিক অমুবন্ধ, তাহা নিতান্তই অধর্মানুগত, ভয়াবহ ও মহা অনিফ-জনক; এমন ঝি, উহা প্রাণ পর্যান্ত হরণ করিতে পারে। এতাদৃশ অনর্থকর অমুবন্ধের কোন বিশিষ্ট কারণও দৃষ্ট হয়না; বিশেষত তাহা রক্ষা করিবারও আপনার সাধ্য নাই। অতএব হে পরস্তপ! যদি উক্ত অনর্থ পরিহার পূর্বক আত্মকল্যাণ সাধনে ইচ্ছা থাকে,-যদি ভ্রাত্বর্গ, ভূত্যগণ ও মিত্র সকলের অধর্ম-পূর্ণ অযশন্ধর কর্ম হইতে নিষ্কৃতি পাইবার অভি-লাষ হয়, তবে অসীম-শৌর্যাশালী, অসামান্য-প্রজ্ঞা-

সমন্বিত, মহোৎসাহ-সম্পন্ন, বছ শাস্ত্রাভিজ্ঞ পাগুব-গণের সহিত সন্ধি করুন; তাহা হইলেই উক্ত অভিলাষ পূর্ণ হইতে পারিবে। সন্ধি করিলে কেবল আপনারই উপকার হইবে, এমন নহে; তদ্ধারা মহামতি ধৃতরাষ্ট্রের এবং ভীম্ম দ্রোণ বিচুর রূপ সোমদন্ত বাহলীক অশ্বত্থামা বিকর্ণ সঞ্জয় বিবিংশতি প্রভৃতি যাবতীয় সাধুমিত ও জ্ঞাতিগণেরও অনু-ত্তম-হিত সাধন ও সাতিশয় প্রীতি-সঞ্চার হইবে। হে তাত! আপনাদিগের শান্তিতে সমস্ত জগতেরই বছল স্থুমঙ্গলের সম্ভাবনা। হে ভরতর্ষভ! আপনি সাধুকুলে প্রস্থৃত, খ্রীমান্, শাস্ত্রজ্ঞ ও দয়াশীল ; স্থৃত-রাং জনক জননীর শাসনে অবস্থান করা আপনার নিতান্তই কৰ্জব্য। হে তাত ভারত! পিতা যেৰূপ শাসন করেন, সংপুত্রেরা তাহাই শ্রেমুজ্ঞান করেন কোন যোরতর আপদে পতিত হইলে লোকে পি-তার শাসন স্মরণ করিয়া থাকে। সম্প্রতি আপনকার পিতার এই স্পৃহা হইতেছে যে পাগুবদিগের সহিত মিলন হয়; অতএব অমাত্যবর্গের সহিত আপন-কারও তাহাতে স্পৃহা করা কর্ত্ব্য। যে বাক্তি স্কুদ্রাণের শাসন অবণ করিয়া গ্রহণ না করে; স্বকর্ম ফলের পরিপাকান্তে উহা ভক্ষিত মহাকাল ফলের ন্যায় তাহাকে দগ্ধ করিতে থাকে। মোহ-প্রযুক্ত যে মানব হিত বাক্য প্রতিপাদন না করে, म भीर्षस्व ७ शैनार्थ इरेशा व्यवगारे পन्ठाखार्य ধোজিত হয়। পরস্ত যে বুদ্ধিমান্ মনুষ্য আত্মমত পরিহার পূর্বক পূর্বেই সেই হিতবাক্য স্বীকার করিয়া লন, তিনি ইহলোকে পরম স্থাখে সমৃদ্ধিত হইতে থাকেন। যে ব্যক্তি প্রতিকূল বোধে হিতৈ-বী মিতের বাক্য গ্রাহ্ম না করিয়া অসৎলোকদিগের বাস্তবিক প্রতিকূল বচন শ্রবণ করে, সে অবশ্যই শক্রদলের বশগামী হয়। যে অভাজন, সচ্চরিত্র মানবগণের সাধু মত অতিক্রম করিয়া অসৎ ব্যক্তি সকলের মতানুবর্তী হয়, তাহার স্কুছর্গ অচিরেই তাহাকে বিপদ্ধান্ত দেখিয়া শোক করিতে থাকেন।

বে অবিচক্ষণ নরপতি, গুণগরিষ্ঠ প্রধান অমাত্য-দিগকে পরিত্যাগ করিয়া, নিরুষ্টতম ছুরাশয় মক্তি-সকলের সমাদর করে, সে ঘোরতর আপদ্ সাগরে পতিত হইয়া কোন কালেও তাহা হইতে উত্তীৰ্ণ হইতে পারে না। হে ভারত! যে র্থাচারী মৎ-সরী মহীপতি, সাধু মিত্রদিগের কল্যাণকর বচনে কর্ণপাত না করিয়া, যথার্থ আত্মীয়গণের প্রতি ছেয এবং অপর ব্যক্তি সকলের গৌরব করে, স্থজন-বশ্যা বস্থন্তরা নিশ্চয়ই তাহারে পরিত্যাগ করেন। হে ভরতর্বভ! আপনিও সেই বীর-শ্রেষ্ঠ পাণ্ডবগণের সহিত বিরোধ করিয়া অশিষ্ট, অসমর্থ, মুঢ়লোক সকল হইতে পরিত্রাণ প্রার্থনা করিতেছেন। এই জগতীতলে আপনা ভিন্ন আর কোন্ মানব রাসব-সম মহারথ জ্ঞাতি সকলকে অতিক্রম করিয়া অন্য হইতে পরিত্রাণের আশংসা করে! আপনি কুন্তী-পুত্রদিগকে জন্মাবধি নিত্য কাল ক্লেশ দিয়া আসিয়া-ছেন, কৃন্ত ধর্মাত্ম। পাগুবগণ তাহ।তেও আপনার প্ৰতি কদাপি কু<mark>পিত হন নাই। অতএৰ হে ম</mark>হা-বাহে৷ ! আপনি আজন্ম কপট ব্যবহার করিলেও সেই মহাযশস্বী পরমান্ত্রীয় প্রধান বান্ধবগণ আপনকার প্রতি যেমন সম্পূর্ণ সদচেরণ করিয়া আসিয়াছেন, সেই ৰূপ আপনকারও কর্ত্তব্য যে, রোষপরবশ না হইয়া এখনও তাঁহাদিগের প্রতি সাধু বাবহার করেন।

হে ভরতর্ষত। প্রজ্ঞাসম্পন্ন বিচক্ষণ মানবর্গণ যে কোন কর্ম্মের আরম্ভ করেন, তাহা প্রায়ই ত্রিবর্গযুক্ত অর্থাৎ ধর্মা, অর্থ ও কাম সম্বলিত হয়। এককালে ত্রিবর্গ লাভের অসম্ভব হইলে, তাঁহারা ধর্মা
ও অর্থের অন্মরোধ করেন। যদি ধর্মার্থকামের
এক একটি লাভ করা উদ্দেশ্য হয়, তহা হইলে
উত্তম-প্রকৃতি পণ্ডিতর্গণ শুদ্ধ ধর্মেরই অনুসরণ
করেন; মধ্যম-প্রকৃতি লোকেরা কলহাস্পদ অর্থলাভে উদ্দৃক্ত হয় এবং নীচ-প্রকৃতি অবোধ নরাধমেরা কেবল কামেরই অনুরোধ রক্ষা করে।

ইন্দ্রিয়-বশীক্লত যে মূঢ়মতি লোভহেতুক ধর্মধনে জলাঞ্জলি দিয়া কোন জঘন্য উপায়ের দারা কামার্থ লাভের বাসনা করে, সে নিয়তই বিনাশ প্রাপ্ত হয়। যে বাক্তি কামার্থ-লাভে অভিলাষী হইবে, সে অত্রে ধর্মাচরণ করিবেক; যে হেতু অর্থ অথবা কাম ক্লাপি ধর্ম হইতে অপগত হয়না অর্থাৎ ধর্মামু-গত না হইলে অর্থ কামের সার্থকতা হইতে পারে না। হে বিশাম্পতে! পণ্ডিতেরা ধর্মকেই ত্রিব-র্গলাভের উপায় বলিয়া নির্দিষ্ট করিয়াছেন; কেন না যে কোন মতিমান্ মানব ধর্মাবলয়ন করিয়া ত্রিবর্গলাভে সমুৎস্কু হন, তিনি শুদ্ধ তৃণ-রাশি-মধ্যে অগ্নির নাায় ক্রমশই বর্দ্ধিত হইতে থাকেন। হে ভাত ভরতর্বভ! আপনি কেবল অনুপায় দারাই সকল রাজগণ মধ্যে প্রথিত, অদীম-সমৃদ্ধি-সমৃদ্ধা-সিত, সুমহ্ৎ সাম্রাজ্য লাভের অভিলাব করিতে-ছেন। হে রাজন্! যে ব্যক্তি সম্পূর্ণ স্থাবহার-নির্ভ সচ্চরিত্র মানবগণের প্রতি কপটভাচরণ ক্রে, সে कुठात बाता वरनत नाारा, अवनार आश्रनारक ছिन করে। যাহার পরাভব ইচ্ছা না করিবেক, তাহার মতিচ্ছেদ করিবেক না; কেন না মতিভ্রংশ না इहेटल हे अहे वाक्तित विख कन्यान कर वियस्य नि-বিষ্ট হইতে পারে।

হে ভারত! আত্ম কলাণকামী জিতেন্দ্রির পুরুষ, মহারভব পাণ্ডবগবের কথা দূরে থাকুক, এই ত্রিভুবন মধাে কোন প্রাকৃত মনুষাকেও কথন অবমাননা করেন না। যে বাজি অমর্ষ-পরবশ হয়, তাহার আর কি হুমাত্র হিতাহিত বােধ থাকে না; দেখুন, লােক-বেদ-প্রসিদ্ধ স্থবিস্তারিত প্রমাণ সমস্তও তাহার নিকটে ছিল ও অকিঞ্চিংকর হইয়া পড়ে। হে ভ্রাতঃ! তুর্জ্জন-সঙ্গ পরিত্যাগ পূর্বক পাণ্ডবদিগের সহিত সঙ্গত হওয়াই আপনকার সর্বথা শ্রের; যে হেতু তাঁহারা আপনকার প্রীতি সম্পাদনে নির্বত হইলে আপনি সর্বাভীক প্রাপ্ত হইতে পারিবেন। হে নূপ সন্তম! একবার মনে করিয়া দেখুন, আপনি

পাণ্ডবদিগের বিনিজ্জিত বস্থা-রাজ্য সম্ভোগ করত সেই পাণ্ডবগণকেই পশ্চাৎ করিয়া অন্য হইতে পরিত্রাণের আশংসা করিতেছেন ;—ছুর্বিষহ, ছুঃশা সন, কর্ণ ও শকুনি প্রভৃতি কুসচিব নিচয়ে ঐশ্বর্যা-সমাধান-পূর্বাক কল্যাণ লাভে সমুৎস্কুক হইতেছেন। পরস্তু পাগুবদিগের সহিত ইছারা না জ্ঞানে, না धर्मा (र्थ, ना विक्रास, क्रिकूट डू जूना नरहन । क्वन ইহারাই কেন? এই সমবেত সমস্ত ভূপালেরাও সমর সময়ে ক্রোধ-পরীত ভীমসেনের প্রথব মুখ-প্রভা সনদর্শনে সমর্থ হইতে পারেন না। হে মহা-বাহো! এই সলিহিত সমগ্র পার্থিব বল—এই ভীম দ্রোণ কর্ণ কৃপ ভূরিশ্রবা সৌমদত্তি অশ্বপামা জয়দ্রথ প্রভৃতি মহা মহা বীর সকল আপনকার সহায় ভূত রহিয়াছেন, ক্লিম্ভ অর্জুনের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিতে ইহাঁরা সক**র্**লই অক্ষম। ইহাঁদিগের কথা দূরে থাকুক, স্থরাম্বর নর গন্ধবৈ প্রভৃতি সর্বালোক সম বেত হইয়৷ যুদ্ধ কারলেও অর্জুনকে পরাত্ত কারতে পারেন না; অতএব হে ভ্রাতঃ! আপনি যুদ্ধ বিষয়ে কদাচ মনোনিবেশ করিবেন ন।। আপনকার এই সমগ্র সৈনাদলমধ্যে এমন একটি লোক অথে-যণ করিয়া দেখুন দেখি, যিনি সমরে অর্জুনের হত্তে পতিত হইরা স্থস্থ শরীরে কুশলে গৃহেগমন করিতে পারেন ? খাঁহার জয় হইলে আপনকার জয় হয়, অগ্রে এমন কোন সমর্থ পুরুষ প্রদর্শন করুন, নতুব। অনর্থক জনক্ষয় করিবার প্রয়োজন কি? যিনি থা ওবপ্রস্থে গল্পর্কা যক্ষ্য অসুর ও পল্লগচয়-সম্বলিত অখিল অমরগণকে প্রাজিত ক্রিয়াছেন, সেই অলৌকিক শৌর্যাশালী তৃতীয় পাগুবের সহিত কে যুদ্দ করিতে পারে ? বিরাটনগর-সংক্রান্ত যে স্থমহৎ অদ্বত র্ত্তান্ত শ্রবণ করা যায়, একাকী ধনপ্লয়ের সহিত বহু-সংখ্য-মানবীয় সংগ্রামের তাহাই পর্য্যাপ্ত নিদর্শন। অন্যের কথা কি আছে, ত্রিপূর্রবিজয়ী माका । महाराव याहात युरक मरकाविक हरेसारहन, সেই অসামান্য-বীর্যাবল-সম্পন্ন শ্রাগ্রগণ্য, অঞ্রেয়

তুষ্পুধর্ষ অচ্যুত জিফুকে জয় করিবার আশংসা করিতেছেন; ইহার দারা আপনকার যে কত দূর ছুরাশা প্রকাশ পাইতেছে, তাহা আর বলিবার নহে। সমরাঙ্গনে প্রতিকূলে প্রধাবিত মৎসহকৃত পার্থকে আহ্বান করিতে কোন্ মানব সাহসী হইতে পারে? মানব কি? সাক্ষাৎ পুরন্দরও সমর্থ হয়েন না। যে ব্যক্তি সমরে অর্জুনুকে পরাজিত করিতে পারে, সে বাছ-যুগল দ্বারা ধরজিল উত্তোলন করিতে পারে, ক্রুদ্ধ হইয়া যাবতীয় প্রজা পুঞ্জকে দগ্ধকরিতে পারে এবং দেবগণকেও স্বর্গ-বিচ্যুত করিতে সমর্থ হয়। অতএব হে নরাধিপ! অপেনি পুত্র, ভাতা, জ্ঞাতি ও অন্যান্য সম্বন্ধি গণের প্রতি একবার দৃষ্টি-পাত করুন; ভরতবংশ-সম্ভূত এই সমস্ত উত্তম উত্তম বীরবর্গ যেন আপনকার নিমিত্তে বিন্ট না হন; কৌরবগণের এই স্থপ্রতিষ্ঠিত, স্ক্রীহৎ কুলের যেন এককালে পরাভব ও শেষ হইয়া না যায়;এবং লোকে যেন " নউকীর্ত্তি কুলত্ন " বলিয়া আপনকার নিন্দা না করে। সন্ধি করিলে মহারথ পাগুবেরা আপনাকেই যৌবরাজ্যে এবং জনেশ্বর ধৃতরাষ্ট্রকে মহারাজ্যে সংস্থাপিত করিবেন। অতএব হে ভ্রাতঃ ! সমাগম-সমুদ্যতা রাজলক্ষীর প্রতি অবমাননা করি-বেন না। পাগুবদিগকে অর্দ্ধাংশ প্রদান করিয়া আপনি মহতী লক্ষী লাভ করিবেন। স্থলদাণের বাক্য রক্ষা করিয়া পাণ্ডবদিগের সহিত দঙ্গত হইলেই আত্মীয় মিত্রগণের পরম প্রীতিভাজন হইয়া স্থিরতর কল্যাণলাভে সমর্থ হইবেন।

কুঞ্বাকো চতুৰ্বিংশত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১২৪॥

-->-⊗-e---

বৈশম্পায়ন ,কহিলেন, হে ভরতর্বভ! কেশবের বাক্য শুনিয়া শান্তমুনন্দন ভীয়া অমর্যবশীক্ষত ছুর্যোল-ধনকে বলিতে লাগিলেন, বৎস! স্থৃহৃদ্যাণের শান্তি কামনায় মহাত্মা কৃষ্ণ তোমাকে যে কথা বলিলেন, রোবের বশবন্ধী না হইয়া সর্বধা তাহারই অমুসরণ

কর। মহাত্মভব কেশবের এই অমুক্তম উপদেশ বচন অবহেলন করিলে কিছুতেই আর ভোমার শ্রের নাই; তুমি কস্মিন্ কালেও প্রকৃত সুখ ও কল্যাণের সন্দর্শন পাইবে না। হে রাজন্! মহা-ৰাছ বাস্তদেৰ ভোমাকে ধর্মার্থের অনুগত প্রকৃষ্ট ইউ-সাধন বাক্যই বলিয়াছেন ; অতএব তুমি একান্ত চিত্তে তাহা স্বীকার করিয়া লও; অনর্থক প্রজা-ক্ষয় করিও না। হে ভরত-শ্রেষ্ঠ! মহামতি যত্ন-পতি, প্রজ্ঞানেত্র ধৃতরাষ্ট্র ও বিচক্ষণ বিদ্বুর, ইহাঁদি-গের অর্থযুক্ত তথা বাকা অতিক্রম করিলে তুমি, অন্ধরাত্ত জীবিত থাকিতেই, ঘোরতর দৌরাত্ম্য বশত, সমস্ত ভূপতিগৰ মধো সমধিক-সমৃদ্ধি-প্ৰজ্ঞালিতা এই মহতী ভারতী লক্ষীর ধংস বিধান করিবে এবং অহম্বার মদে মন্ত হইয়া পুজ্র ভ্রাতৃ বান্ধব ও অমাত্য-বর্গের সহিত আপনাকেও জীবন ধনে বঞ্চিত করি-বে, সন্দেহ নাই। অতএব হে তাত! তোমাকে পুনঃ পুন নিষেধ করিতেছি, ভুমি কুলঘাতী, কুপু-কুষ, ছুট্মতি ও কুপ্ৰগামী হইয়া জনক জননীকে ছুন্তর শোক সাগরে নিমগ্ন করিও না।

ভীয় এই বলিয়া নিরস্ত হইলে পর দ্রোণাচার্য্য, অমর্ববর্ণাভূত ঘন ঘন নিশ্বাস পরিত্যাগকারী ছুর্যোধনকে এইৰপ কহিতে লাগিলেন, বৎস! কেশব ও শান্তমু-তনর ভীয়া তোমাকে যে ধর্মার্থযুক্ত বাক্য বলিলেন, তুমি অনন্যমনা হইয়া তাহাই ভজনা কর। হে নরাধিপ! ইহারা মহাপ্রাক্ত, মেধার্বী, দান্ত ওবছ-ক্রত; বিশেষত উভয়েই তোমার পরম হিতেধী; মুতরাং ইহারা তোমারে হিতবাকাই বলিয়াছেন; অতএব ভুমি নিঃসংশয়ে তাহা ভজনা কর। হে মহাপ্রাক্ত পরন্তপ! কৃষ্ণ ও ভীয়া যাহা বলিয়াছেন, তাহার অনুষ্ঠান কর; বুদ্ধির মোহ বশত কোন ক্রমে মাধবকে অবজ্ঞা করিও না। এই কর্ণ প্রভৃতি যেসমস্ত কুমন্ত্রিগণ নিরন্তর উত্তেজনা দ্বারা তোমাকে উৎসাহান্তিত করিতেছে, ইহারা কোন কালেও তোমার বিজয় সাধনে সমর্থ হইবে না; সমর সময়ে ইহারা

পরের গ্রাবার বৈর অর্পণ করিয়া নিশ্চয়ই নিশ্চিন্ত থাকিবে। অতএব ছেনরাধিপ! সমস্ত প্রজাবর্গ এবং পুদ্র ভাতৃ প্রভৃতি আগ্নীয় স্বজনগণকে নিরর্থক বিনফ করিও না; তুমি ইছা স্থির জান, যে সৈন্য-মধ্যে বাস্তুদেব ও অর্জুন বিরাজ করেন, তাহা নিতা-স্থ অন্যো হে তাত ভারত। স্ক্রর রুক্ত ভীগ্নের অভিমত এই সত্য বাকো যদি আস্থানা কর, তবে অবশাই পশ্চান্তাপ কারতে হইবে। অজ্ঞানের বিষয়ে জামদ্যা ঋবি যে ৰূপ বৰ্ণন করিয়াছেন, তিনি তদপেকাও সহস্রগুণে শ্রেষ্ঠ। দেবকা-নন্দন মধু-স্থানের কথা আর কি কহিব, দেবতারাও ইহাঁর প্রতাপানল সহা করিতে পারেন না। হে ভরতর্যভ! তোমার নিকটে প্রিয় ও স্থখকর বিষয়ের প্রসঞ্ कतिरलारे वा कि रूरेरव ? खूरुमारगत य कि हू वला कर्डवा, डाहा मकनरे छेक रहेन ; अकर्प डामात বেৰূপ অভিকৃচি হয়, কর। তোমাকে পুনর্বার আর কোন কথা বলিতে আমার ইচ্ছা হয় না।

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, আচার্যায় বাক্যাবসানে
মহামতি বিতুরও অমর্থণ ছুর্যোধনের মুখাবলোকন পূর্বক এই কথা বলিলেন, হে ভরত-সভ্ন।
আমি তোমার নিনিত্ত কিছুমাত্র শোক করি না,
কিন্তু এই যে রন্ধ-দম্পর্তা, তোমার মাতা আর পিতা
(খাঁহারা শত্রু স্বরূপ তোমাকে সহায় পাইরা অবশাই অসহায় হইবেন) ইহাঁদিগের নিমিত্তই শোকাকুল হইতেছি। অহহ! উদৃশ কুলয় পাপাজা ও
কুপুরুষ পুত্র উৎপন্ন করিয়া ইহাঁয়া যে হত-নিত্র,
হতামাতা, অনাথ ও ভিকুক হইয়া, ছিলপক্ষ পাক্রযুগলের নায়ে, শোক করিতে করিতে এই পৃথিবীভলে বিচয়ণ করিবেন, তাহাই অসহা।

অনন্তর রাজা ধৃতরাই, ভাতৃগণের সহিত সমাসীন রাজর্ন্দেপরিবারিত তুর্যোধনকে স্বরং কহিতে লাগি-লেন, বংস তুর্যোধন! মহাত্মা কৃষ্ণ তেনোরে অক্ষয় যোগক্ষেম সমন্থিত নির্তিশয় শুভাবহ এই যে বাকা বলিলেন, নিবিউচিত্তে ইহার ভাবার্থ বোধগমা ক্রি- য়া গ্রহণ কর। এই অক্লিউকর্মা কৃষ্ণ আমাদিগের সহায় হইলে, আমরা সকল রাজগণ মধ্যে সর্বাক্তির অভিন আভাই প্রাপ্ত হইব, সন্দেহ নাই। অতএব হে তাত! কেশবের সাহায্যে সন্ধিস্তত্তে সমাক্ সম্বন্ধ হইয়া যুথিন্তিরের সহিত মিলন কর। ভারত-কুলের এই সম্পূর্ণ অনাময় স্বস্তায়নের অমুষ্ঠান কর। আচার্য্য স্বৰূপ বাস্তদেবের উপদেশালুসারে শান্তি সংস্থাপনে প্রবৃত্ত হও। আমার বিবেচনায় সামি করিবার এই যথার্থ উপযুক্ত সময় উপস্থিত হইয়াছে; অতএব কদাচ ইহার অতিক্রম করিও না। দয়াবান্ কেশব তোমার হিতার্থ সম্পাদনালিমি-তাই শান্তি প্রার্থনা করত এই সকল বাক্য শ্বিনাস করিলেন; এ কথায় কর্ণপাত না করিয়া যদি তুমি ইইাকে প্রভার্থান অর্থাৎ অবমাননা কর, তাহা হইলে নিশ্বাই তোমার পরাভব হইবে।

গৃতরাট্র বাক্যে পঞ্জিংশতাধিক শৃতত্ম অধ্যায় সমাগু॥ ১২৫॥

देवनन्थायम क्रिटनम, शृज्जाह्न-वाका खदर। जीश ও দ্রোণ তাহ। যুক্তিযুক্ত নিশ্চর করিয়া উভয়েই भिरं मामनाजिवजी ऋरवायनरक अने कथा वानरनन, হে ভারত! যে পর্যান্ত রুফার্জ্ঞুন যুদ্ধার্থে স্থসজ্জিত ना इट्रेट्टएन; य পर्याच भा छीत कामछ छ्त्रिजात्व আছে; পুরোহিত ধৌমা যে পর্যাত বর্জীয় হুতাশনে শক্রবলের হবন না করিতেছেন; লক্ষান্তুরোধী মহা-ধ্বা যু্ধিন্তির ফুল হইয়া যে প্রয়ন্ত তোমার সেনার উপর কটাফপতে না করিতেছেন; সেই ভয়ঙ্কর সময় উপস্থিত ন। হইতে হইতে বিরোধের শান্তি হউক। প্রচণ্ডধন্বা ভীমসেন স্বকীয় দৈন্য মধ্যে অবস্থিত হইয়া যে পর্যান্ত দৃষ্টিপথের পথিক না হইতেছেন, এবং দণ্ডপাণি কৃতান্তের ন্যায় গদাহন্তে করিয়া যে প্রযান্ত অরাতি-দৈন্যসাগর মন্থন করত ইতন্তত বিচ-রণ না করিতেছেন; সেই ভীষণ সময় সমাগত না হইতেই বিরোধের উপশম সহকারে পাওবদিগের

সহিত সন্ধি-সংস্থাপন হউক। রুকোদরের বীর- । মহীপালবর্গের রাজধানী-নিকরে পরস্পর সৌহা-ঘাতিনী গদার আঘাতে যে পর্যান্ত গজযোধগণের भछक ममल, कालभक्त जाल कल निष्ठारत नाात्र, मम-রাঙ্গনে পাতিত না হইতেছে; সে পর্যান্ত বিরোধের শান্তি হউক। যে পর্যান্ত নকুল, সহদেব, ক্রপদ-তনয় ধৃউছ্যান, বিরাট, শিখণ্ডী, শিশুপাল-পুত্র প্রভৃ-তি কৃতান্ত্র বীরগণ বর্ম পুরিধান পূর্বক, মহাণ্ব মধ্যে কুন্তীর নিবহের ন্যায়, অপার সৈন্যজলবি-জলে নিমক্জন করত অনবরত শস্ত্রধারা বর্ষণ দারা মহামারীর স্টি না করিতেছেন ; সে পর্যান্ত বিরো-ধের শান্তি হউক। যে পর্যান্ত নরপাল সকলের স্বকুমার শরীর-নিকরে খরতর শররাশি নিপতিত না হইতেছে; সে পর্যান্ত বিরোধের শান্তি হউক। পাণ্ডবদিগের ক্ষিপ্রকারী, মহাধন্তর্দ্ধারী, অতি-দুরত্ব লক্ষ্যবেধী, ক্লৃতান্ত্র সৈনিকেরা কেপর্যান্ত ত্র্দীয় যোধগণের চন্দনাগুরু-পরিষিক্ত, হার-মণি-সমুদ্ভা-সিত বক্ষত্ল নিচয়ে লৌহ্ময় মহান্ত্ৰ সমস্ত বিনি-বেশিত না করিতেছে, সে পর্যান্ত বিরোধের শান্তি হউক।

হে রাজন্! নৃপকুঞ্জর স্থদক্ষিণ ধর্মারজে যুধিষ্ঠির তোমাকে মস্তকাবনমন পূর্বক অভিবাদন করিতে দেখিয়া বাছ-যুগল ছারা গ্রহণ করুন; শান্তির উদ্দেশে ধজাকুশ-পৃতাকা-চিক্লিত দক্ষিণ হস্তটি তোমার ক্ষমদেশে বিনাস্ত করুন এবং তুমি উপ-বিউ হইলে, রত্নৌষধি-সম্বলিত সমুজ্জুল-রত্নাসূরীয়-শোভিত করতল দার। তোমার পৃঠ পরিমার্জন क्क़न। (इ ভরতর্ষত। শাল-ক্ষ্ণেশহাবাহু রুকোদর তোমার সহিত আলিঙ্গন করিয়া সাস্ত্রাদ সহকারে শান্তি নিমিত্ত কথোপকথন করুন। অর্জ্জুন ও যমজ সোদর দ্বয় তোমাকে অভিবাদন করিলে, তুমি মন্তকে আঘাণ লইয়া তাহাদিগের সহিত প্রীতি-পূর্বক সম্ভাষণ কর। হে পার্থিব! তোমাকে বীরাগ্রগা পাণ্ডৰ ভ্ৰাতৃগণের সহিত মিলিত দেখিয়া যাবতীয় নরাধিপগণ আনন্দাশ্রু বিসর্জন করুন। অধিস

র্দের ঘোষণা হইতে থাকুক। অধিক আর কি বলিব, তুমি ভাতৃভাবে বস্থালক্ষ্মী সম্ভোগ করত প্রবল মানস ত্মর হইতে বিমুক্ত হও।

ভীম জোণ বাক্যে বড়্বিংশতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১২৬॥

বৈশস্পায়ন কহিলেন, রাজা ছুর্য্যোধন কুরুসভা মধ্যে অপ্রিয় বাক্য তাবণ করিয়া মহাবাছ যশস্বী বাস্ক্রদেবকে প্রভাত্তর করিলেন, হে কেশব ! আপনি যে কথা বলিলেন, তাহা সমাক্ বিবেচনা পূৰ্বক বলা উচিত ছিল। হে মধুস্থদন! পাণ্ডবগণের ভক্তি-বাদে বশাভূত হইয়া উক্ত ৰূপ সম্ভাষণ দারা বিনা কারণে আমার সবিশেষ নিন্দা করিলেন; কিন্তু জিজ্ঞাসা করি, আপনি কি বলাবল বিবেচনা করিয়া। চিরকলে আমার এইৰূপ কুৎসা করেন? কেবল আপনিই নহেন;ক্ষুত্তা, রাজা, আচার্যাও পিতা-**मह, हे**हाँता ७ धना। ना ताज गंग मार्या थात काहा-কেও না করিয়া শুদ্ধ আমাকেই নিন্দা করিয়া থাকেন। আনি আত্মক্ত কোন ব্যভিচারই দেখিতে পাই না, অথচ আপনারা ও অপরাপর নৃপতি-বর্গ, সকলেই আমার প্রতি বিদ্বেষ করেন। হে অরিন্দম কেশব। আমি নিবিট চিত্তে চিন্তা করি-য়াও আপনার কোন গুরুতর অপরাধ প্রত্যাদ করিতে পারি না। গুরুতর কেন? আমার বাণুমাত্র দোষও লক্ষিত হয় না। হে মধুস্দন! পাওবগণের প্রেমাস্পদ অভিমত দূতে ক্রীড়ায় শকুনি যে তাহা-দিগের রাজ্য জিতিয়া লইয়াছেন, তাহাতে আমার ছুদ্ধৃত কি আছে ? বরং তৎকালে যে কিছু ধন জিত হুইয়াছিল, ভাহা তাহাদিগকেই প্রতার্পণ করিতে অনুজ্ঞা দিয়।ছিলাম। হে বিজয়ি-শ্রেষ্ঠ! পাশ-ক্রীড়ায় পুনরায় পরাজিত হইয়া অজেয় পাওবের। যে বনে এর্জিত হইরাছিল, তাহাতেই বা আমা দিগের অপরাণ কি? হে কৃষ্ণ! তাহারা কেন্

অপবাদে আমাদিগকে শত্রু বলিয়া স্থির করে এবং অশক্ত হইয়াও প্রতিকূলবর্ত্তী অরাতির নাায় মহা-হর্ষ সহকারে আমাদিগের সহিত বিরোধ করিতে প্রবৃত্ত হয় ? আমরা তাহাদিগের কি হানি করি-রাছি? কি অপরাধে তাহারা স্ঞ্যুগণের সহিত ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র সকলের হিংসা করিতে অভিলায করে ? আমরা কি কোনউগ্রভর কর্ম্ম বা বাক্য দারা ভ্রফ-জ্ঞান হইয়া ভয় প্রযুক্ত তাহাদিগের निकटि अ्था इहेव ? कर्नाठ नटह ; माका १ एनव-রাজ আইলেও আমরা কিছু মাত্র ভীত হইব না। হে শত্রনিস্থদন রুষ্ণ! আমি ক্ষত্রধর্মের অনুষ্ঠান-কারী এমন কোন মনুষাকেই দেখিতে পাই না, যে আমাদিগকে পরাস্ত করিতে উৎসাহী হইতে পারে। स्थानन । পाछवितिकात कथा पृत्त थाकूक, সাক্ষাৎ দেবতারাও ভীম দ্রোণ রূপ কর্ণ প্রভৃতি মদীয় বীর বর্গকে পরাজিত করিতে সমর্থ নহেন। टिमाधव! अधर्म अिंडिशालन कतिया यिनिष्ठ रिनव-क्रा बामता मः शास्त्र यथाकारण निधन প্राश्च इहे, ভाश रहेत्व आमामिरात अर्थना इहेर्त। एर জনার্দিন! আমরা সমরে শর শ্যায় শ্যান হই, ইহাই আমাদিগের ক্ষত্রির কুলের পরম ধর্ম। অতএব হে মাধব! আমরা শত্রুগণের নিকটে প্রণত ন। হইয়া বীর শয্যায় শয়ন করিলেও উহা আমা-দিগকে কিছুমাত্র পরিতাপিত করিবে না। বীর-কুলে উৎপন্ন হইয়া কোন্ ক্ষজ্রধর্ম্মজীবী পুরুষ কেবল জীবন রক্ষণে তৎপর হইয়াই শত্রু সমীপে প্রণত হয় ? আত্ম-হিতাভিলাষী বিচক্ষণ ক্ষজ্রিয়েরা "নিয়-**उरे উদামশीল হইবেক, কোন ক্রমে অবনত হই-**বেক না ; যে হেভু উদ্যমই পুরুষ কার ; বরঞ্চ অপ-ব্ৰস্থানে ভগ্ন হইবেক তথাপি কোন কালে নত হইবেক নাম মাতঙ্গ মুনির এই বচনটি সর্বাদা সমা-দর পূর্বক গ্রহণ করিয়া থাকেন। মদিধ ক্ষজিয়ের। অন্য কাহাকেও চিন্তা না করিয়া ধর্মের নিমিত্তে কেবল ত্রাহ্মণদিগকেই প্রণাম করিবেক; পরস্তু

অন্যের সহিত, মাতঙ্গ মুনির উক্ত বচনামুসারে যাবজ্জীবন ব্যবহার করিবেক; ইহাই তাহাদিগের ধর্ম এবং ইহাই আমার নিয়ত মত-সিদ্ধ।

হে কেশব! পূর্বে পাগুবদিগকে আমার পিতা যে রাজ্যাংশ প্রদান করিয়াছিলেন, এক্ষণে আমি জীবিত থাকিতে তাহা আর কস্মিন্ কালেও পুনরায় লভা হইবার নহে। রাষ্ট্রী ধৃতরাষ্ট্র যে পর্যান্ত জীবিত রহিয়াছেন, সে পর্যান্ত কি আমরা, কি তাহারা. সকলকেই ন্যস্তশস্ত্ৰ হইয়া তাঁহারই উপজীবী হইতে হইবেক। হে জনাৰ্দ্দন! যৎকালে আমি বালক ও পরাধীন ছিলাম, তখন পিতা, অজ্ঞান প্রযুক্তই হউক অথবা ভয় প্রযুক্তই হউক, আমার রাজ্য পাওব-দিগকে প্রদান করিয়াছিলেন; কিন্তু এক্ষণে তাহা আর কোন প্রকারে দাতব্য হইতে পারে না। হে র্ফি-নন্দন াহাবাহো কেশব! সম্প্রতি ছুর্য্যোধন জীবিত থাকিতে তাহারা কোন কালেও তাহা পুন-ব্বার লাভ করিতে পারিবেক না। অধিক কি, স্থতীক্ষ্ণ স্থচীর অগ্রভাগ দ্বারা যাবং-পরিমাণ ভূমি বিদ্ধ হইতে পারে, আমাদিগের রাজ্য হইতে তাহাও পাণ্ডবদিগের প্রতি অর্পিত হইবেক না।

ভূর্যোধন-বাকো সপ্তবিংশতাধিক শৃততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১২৭॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, অনন্তর ক্লম্ম রোষক্ষায়িত লোচনে ছুর্যোধনের প্রতি নিরীক্ষণ পূর্বাক কুরু-সভামধাে হাস্য করিতে করিতে তাঁহারে কহিতে লাগিলেন, অহে ছুর্যোাধন! স্থির হও; তুমি অমাত্য-বর্গের সহিত অবশ্যই বীর শ্যাা লাভ করিবে;—অচিরেই এই অভীফ প্রাপ্ত হইবে; যে হেতু ঘোরতর সমর ব্যাপার নিঃসন্দেহ উপস্থিত হইবে। রে মূচ্মতে! তুমি যে মনে করিতেছ 'পাণ্ডবদিগের প্রতি আমার কোন ব্যতিক্রম হয় নাই' তাহা সমস্ত নরাধিপেরাই বোধ গ্না করুন। হে ভারত! তুমি মহাত্মা পাণ্ডবগণের অসীম ঐশ্বর্যা

সন্দর্শনে তপামান হইয়া শকুনির সহিত কুমস্ত্রণা পূর্বাক দ্যুতক্রীড়া-রূপ যে ছুফ অভিসন্ধি করিয়া-ছিলে, তাহা কাহার না বিদিত আছে? হে তাত! সেই সরল-স্বভাব শ্রেষ্ঠতম জ্ঞাতিগণ যে কুটিলাচার শকুনির সহিত তাদুশ অন্যায়্ কর্মের উপাসনা করিতে সমাক্ রপে সমত হইয়াছিলেন, ইহাই বা কি প্রকারে সম্ভাবিত হইতে-পোরে ? হে মহাপ্রাক্ত! অক্ষ-ক্রীড়ার সাধু মানবগণের মতিভ্রংশ হয় এবং অসং লোকদিগের স্থক্তেদ ও নানা প্রকার বিপ-দের উৎপত্তি হইরা থাকে। তুমিও সাগুলীল বাক্তি-দিণের সহিত প্রামর্শ না করিয়া কেবল পাপান্ত্-ৰত্নী ছুরাচারগণের কুমন্ত্রণায় সেই ছুট্ট দ্যুতনিবন্ধন ঘোরতর বাদনের স্থ্রপাত করিয়াছ। ভুমি, পাঙ্ব-দিগের প্রাণ হইতেও গরীয়দী মহাকুল-সভূতা শীল-সম্পন্না প্রিয়তমা মহিণী দ্রৌপদীকে ঐকাশ্য সভা-মধ্যে আনয়ন-পূর্বাক বছতর কটুক্তি-ছারা যাদৃশ তুঃসহ তুঃখ প্রদান করিয়াছিলে, এই পৃথিবীতলে আর কোন্ ব্যক্তি ভ্রাতৃ-ভাষ্যার তাদৃশ ছুরবস্থ। করিতে সমর্থ হয়? অপিচ, সেই পরত্বপ কুন্তী-পুত্রেরা যৎকালে বনে গমন করেন, ভখন গুরাত্মা তুঃশাসন তাঁহাদিগকে যে সকল কথা বলিয়াছিল, সমস্ত কৌরবগণ মধ্যে তৎসমুদায় কাহার অগোচর আছে? কোন্ সাধু পুরুষ সম্পূর্ণ সচ্চরিত্র, সভত ধর্ম্ম-ঢারী, অলুকা, আত্মায় বন্ধুগণের প্রতি ঈদৃশ অযুক্ত ব্যবহার করেন? নিষ্ঠুর অনার্য্য নরাধমগণের বেরপ উক্তি কর। উচিত, তাহাই কর্ণ, ছুঃশাসন এবং তুমি বারম্বার ব্যক্ত করিয়াছিলে। পাগুব্রেরা যথন বালক ছিলেন, তৎকালে তাঁহাদিগকে মাতার সহিত বার-ণাবতে দক্ষ করিবার নিমিত্তে তুমি পরম যত্নবান্ হইয়াছিলে; কিন্তু ভাগ্যক্রমে ভোমার সে যত্ন সিদ্ধ হয় নাই। সেই বিষমতর ছুফীভিসক্ষি হইতে নি-ফৃতি পাইয়া তাঁহারা একচক্রা নগরীতে কোন ব্রাহ্ম-ণের আলয়ে জননীর সহিত স্থাচরকাল ছল্বেশে বাস করিয়াছিলেন। আরও দেখ, ভুমি বিহ-প্রয়োগ

সর্পবন্ধনাদি **সর্ব্ব** প্রকার উপায় সহকারে তাঁহা-দিগের বিনাশ চেন্টা করিয়াছিলে, কিন্তু কিছুতেই কৃতকার্যা হইতে পার নাই। অতএব এতাদৃশ নি-দারুণ চুর্বুল্ল-পরবশ হইয়া সেই মহামুভব পাওব-গণের যখন পদে পদে অনিফাচরণ করিয়াছ, তখন আরু কি বলিয়া তাঁহাদিগের নিকটে তোমার অপ-রাধ হয় নাই ? রে পাপাত্মন্! ভাঁছারা প্রার্থনা করি-লেও তাঁহাদিগের পৈতৃক অংশ প্রদান করিতে ভূমি একংণে অসমত হইতেছ বটে, কিন্তু যুখন ঐশ্বয়াভ্ৰউ ও নিপাতিত হইবে, তখনই তাহা প্ৰদান করিতে হইবে। হা কি আশ্চর্যা! তুমি চিরকাল বোরতর অনার্যা ও মিধ্যাচারী হইয়া অতিমাত্র নিষ্ঠুরতা সহকারে পাওবদিগের প্রতি অশেষ ছুফ্ত কর্ম্মের অন্মুঠান করিয়াও এক্ষণে ভাহার অন্যথা প্রতিপাদন করিতেছ। হে পার্থিব! তোমার মাতা পিতা ভীয় জোণ বিছুর এভৃতি গুরুজন-বর্গ তো-মাকে " শান্ত হও " এই কথা বারম্বার বলিতেছেন, তথাপি ভুমি শান্তি স্থাপনে সন্মত হইতেছ না। হে রাজন্ ! সঞ্জি হইলে তোমার এবং যুগিটিরের উভয়েরই পরম লাভ ; কিন্তু ভাহাতে ভোমার রুচি ইতেছে না ; ইহাতে তোমার বুদ্ধিলাঘৰ ব্যতীত আর কি বলা যাইতে পারে ? হে নরাধিপ! ভুনি স্ক্রন্সাণের বাক্য উল্লব্জন করিয়া কোন কালেও কল্যাণ ল।ভে সমর্থ হইবে না; সম্প্রতি যে কর্মের অনুষ্ঠানে তোমার আগ্রহ হইতেছে, ইহা নিতান্তই অধ**র্ম্মা ও অযশস্কর**।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, যতুনন্দন এইৰপ কহিয়া
নিরস্ত হইলে, কুরুনতি ছুঃশাসন কুরু-সভা-মধ্যে
অমর্যণ ছুর্যোধনকে সম্বোধিয়া এই কথা বলিল,
মহারাজ! যদি আপন ইচ্ছায় আপনি পণ্ডেবদিগের সহিত সন্ধি না করেন, তবে কৌরবেরা
নিশ্চয়ই অ্যুপনাকে বন্ধন করিয়া কুন্তাপুত্রকে প্রদান
করিবেন; অন্যের কথা কি? ভীমা, দ্রোণ এবং
আপনার পিতা, ইইরাই কর্ণ, আপনি আর আনি,

এই তিনজনকৈ পাগুবদিগের হত্তে সমর্পণ করিবেন।
মান্যলোকের অবমানকারী, মর্যাদাবিচ্ছিত, লক্ষ্ণশ্না, ছুই্টমতি ছুর্যোধন, ভাতার এই বাক্য প্রবণে
সাতিশয় রোষভরে মহাভুজকের নায় প্রবলবেগে
নিশ্বাস ত্যাগ করিতে করিতে আসন হইতে উঠিয়া
ধৃতরাই, জনার্দন, ভীয়, দ্রোণ, বিহুর, মহারাজ
বাহ্লিক, কুপ ও সোমদত্ত, ইহাঁদিগের সকলকেই
অনাদর করিয়া অশিক্টের ন্যায় সভা হইতে প্রস্থান
করিলেন। নরবর ছুর্যোধনকে প্রস্থিত দেখিয়া
অমাত্য সহ তদীয় ভাতৃবর্গ ও যাবতীয় রাজন্যগণ
সকলেই তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিলেন।

তথন শান্তমুনন্দন ভীয় ছুর্যোধনকে তাদৃশ ক্রোধভরে সহসা উথিত এবং সোদরগণ সমভিব্যাহারে
সভা হইতে প্রস্থিত দেখিয়া কুফকে সম্বোধিয়া কহিলেন, হে জনার্দন! যে ব্যক্তি ধর্মার্থ পরিত্যাগ করিয়া সংরম্ভের অনুমোদন করে, তাহার শক্রগণ তাহাকে অচিরেই বাসনে পতিত দেখিয়া হাস্য করিতে
থাকে। এই অনুপায়জ্ঞ রূথা রাজ্যাভিমানী ছুরায়া
রাজপুত্র ছুর্যোধন কেবল ক্রোধ লোভেরই বশবর্ডী
হইয়া চলে। ইহার অনুবর্ডী এই সমস্ত ক্ষত্রিয়গণ
যেন কালপক্ষ কলের ন্যায় অচির-পতনোমুখ বোধ
হইতেছে; যেহেতু উহারা মোহ-বশত মন্ত্রিগণ সমভিব্যাহারে সকলেই ইহার অনুসরণ করিল।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, মহাবীর্যাবান্ কমললোচন
যতুনন্দন, ভীয়ের এই বাক্য শ্রবণে তাঁহাকে ও
দ্রোণ প্রভৃতি অন্যান্য কুরুর্দ্ধ সকলকে সম্বোধিয়া
কহিলেন, আপনারা যে ঐশ্বর্যা-দূষিত উচ্চৃত্বল
দ্রুর্য্যাধনকে বল-পূর্ব্রেক সংযত করিতেছেন না, ইহাতে আপনাদিগের মহান্ ব্যতিক্রম হইতেছে। হে
অরিন্দম অনঘগণ! তদ্বিয়ে সংপ্রতি পশ্চাত্রক
এই কার্যাটি আমি উপযুক্ত বোধ করিতেছি; ইহার
অনুষ্ঠান করিলে মঞ্চল হইতে পারে, অতএব আপনারা তৎসমুদার শ্রবণ করুন। হে ভারতবর্গ! আমি
যে বাক্যের প্রস্তাব করিব, যদি অমুকূল বোধে আপ-

নাদিগের ইহা স্পৃহণীয় হয়, তবে প্রত্যক্ষ হিতজনক হইবে। দেখুন, উপ্রদেন-স্থৃত ইন্দ্রিয়-পরতন্ত্র ছুরা-চার কংস, পিতা জীবিত থাকিতেই সেই র্দ্ধ ভোজ-রাজের ঐশ্বর্যা হরণ করিয়া মৃত্যুর বশগামী হইয়া-ছিল। তাহার সেই দৌরাক্মা-হেতুক আত্মীয় বান্ধবণণ তাহাকে পরিত্যাগ করিলেন এবং আমিও জ্ঞাতিগণের হিতকামনার মহাসমরে তাহার সংহার করিলাম। অনন্তর আমরা ও জ্ঞাতিবর্গ ভোজরাজ-কুলবর্দ্ধন আছক-পুল্ল উপ্রসেনকে যথেই সৎকার প্রদর্শন-পূর্বেক পুনরায় রাজ্যাভিষিক্ত করিলাম।—হে ভরত-নন্দন মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র! এই রূপে কুল-রক্ষা নিমিত্ত একমাত্র কংসকে পরিত্যাগ করিয়া যাবতীয় যাদব, অন্ধক ও বৃক্ষিবংশীরেয়া সমবেত হইয়া পরম স্থ্যে সম্বর্দ্ধিত হইতে থাকিলেন।

আরও ঠুঃখুন, দেবাস্থরের ঘোরতর সমর সময়ে কাল-স্বৰূপ আয়ুধ সমস্ত উদ্যত হইলে যুখন লোক-পুঞ্জ সন্দিশ্ধ-চিত্ত ও বিনাশোলুখ হইল, তথন সক্ষ-দর্শী লোকভাবন ভগবান্ প্রজাপতি পরমেষ্ঠী এই কথ। বলিয়াছিলেন, এই যুদ্ধে অস্থুর, দৈত্য,ও দানব সকল পরাভূত এবং আদিতা, বস্থ ও রুদ্র-প্রভৃতি দেবতারা বিজয়ী হইবেন; পরস্তু দেবাস্থর গন্ধর্ক যক্ষ মান্ত্র্য রাক্ষস ভুজঙ্গ-প্রভৃতি সকলেই পরস্পর হতাহত করিতে থাকিবে। প্রজাপতি ব্রহ্মা মনে মনে এইৰূপ অবধারণ করিয়া ধর্মকে আদেশ क्रितलन, এই সমস্ত দৈত্য দানবগণকে বন্ধন-পূব্বক वरूरात रूट ममर्भा कत्। बक्तात धरे कथा ख्रावरा ধর্ম তাঁহার অনজ্ঞানুসারে যাবতীয় দৈত্য দানব-দিগকে বন্ধন করিয়া বরুণকে দিলেন। তথন জলা-ধীশ্বর বরুণ তাহাদিগকে ধর্মের এবং নিজের পাশ-দারা বন্ধন-পূর্বক যত্ন সহকারে স¦গর-মধ্যে নিতা সংযত করিয়া রাখিলেন। সেইরূপ আপনারাও সম্প্রতি ছুর্য্যোধন, কর্ণ, শকুনি ও ছুঃশাসনকে বন্ধন করিয়া পাণ্ডবদিগের হত্তে প্রদান করুন। পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন, যদি একজনকে পরিত্যাগ করিলে কুল-

রক্ষা হয়, তবে অবশ্যই তাহা করিবেক; সমস্ত থামের রক্ষা নিমিত্ত কুলও পরিত্যাগ করিবেক; জনপদ রক্ষার্থে থাম ত্যাগ করিবেক এবং আত্ম-রক্ষা নিমিত্ত পৃথিবী পর্যান্তও পরিত্যাগ করিবেক। অতএব হে ক্ষান্তিয়র্ষত মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র! আপনি ছুর্যোধনকে সংযত করিয়া পাগুর্বদিগের সহিত সন্ধি সংস্থাপন করুন; আপনকার নিমিত্ত যেন যাবতীয় ক্ষান্তিয়গণ বিন্ত না হন।

> কৃষ্ণ-বাক্যে অফাবিংশত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত । ১২৮।

> > ---

বৈশম্পায়ন কহিলেন, জনেশ্বর ধৃতরাষ্ট্র ক্লফের উক্ত বাক্য শ্রবণে ত্বরান্বিত হইয়া সর্ব্ধর্মজ্ঞ বিছু-রকে আছা করিলেন, বংদ! তুর্কি শীঘ্র গমন क्रिया मीर्घनर्मिनी মহাপ্রাজ্ঞা গান্ধারীকৈ এই স্থলে আনয়ন কর ; তাঁহার সহিত মিলিত হইয়া আমি ছুর্ম্মতি ছুর্যোধনকে কিঞ্চিৎ অনুনয় করিব; তিনিও যদি এই চুফটেতে। চুরাত্মাকে শান্ত করিতে পারেন, তাহা হইলেও আমরা পরম স্থন্দ্ বাস্তদেবের বাক্য রক্ষা করিতে পারি। শান্তি-প্রদঙ্গ দারা গান্ধারীর ছুর্বান্ধি ছঃসহায়-সম্পন্ন লোভাভিভূত কুসন্তানকে स्र्राथ जानम्न क्रां जमस्य नहा जागाक्रास তিনি যদি ছুর্যোধন-কৃত, আমাদিগের এই মহা-ঘোর ব্যসনের উপশ্ম করিতে পারেন, তাহা হইলে সেই মহদনুষ্ঠান আমাদিগের চিরকাল অক্ষয় যোগ क्लाप्त निभिष्ठ इरेटन, मल्लर मारे। विष्ठुत मरा-রাজ ধৃতরাষ্ট্রের এই আদেশ বাক্য প্রবণ মাত্র দীর্ঘ-দর্শিনী পান্ধারীকে তথায় আনয়ন করিলেন।

অনন্তর ধৃতরাষ্ট্র তাঁহাকে সম্বোধিয়া কহিলেন, দেখ গান্ধারি! তেঁশার এই শাসনাতিবর্তী চুরাত্মা পুক্র ঐশ্বর্যা লোভে সমস্ত ঐশ্বর্যা, এমন কি, জীবন পর্যান্ত বিসক্ষন করিতে উদ্যত হইয়াছে। সেই মর্যাদো-পুন্য মূঢ়মতি চুরাত্মা স্ক্রন্তা উল্লঙ্গন করিয়া অতিশয় অশিক্টের ন্যায়, পাপামুবদ্ধী পামর-গণের সহিত সভা হইতে নির্গত হইয়া গেল।

रेवमन्भायन कहिरलन, त्महे यमश्विनी बाजभूकी शाक्षात्री यामीत वाका व्यवत् शूष्ठन-क्नागार्थिनी হইয়া এই কথা বলিলেন, মহারাজ! সেই রাজ্য-কামী আতুর পুত্রকে শীঘ্র আনীত করুন। ধর্মার্থ-বিলোপী অশিষ্ট লোকে কখন রাজ্য প্রাপ্ত হইতে পারে না; তথাপি সেই অবিনীত ছুর্য্যোধন ইহা দর্ব্ব প্রকারে প্রাপ্ত হইয়াছে। হে ধৃতরাষ্ট্র! এ বিষয়ে আপনিই অতিশয় নিন্দনীয়; যেহেতু তাহার পাপা-ত্মতা অবগত থাকিয়াও আপনি পুত্র-প্রেমের বশী-ভূত হইয়া কেবল তাহার বুদ্ধিরই অনুবর্তন করেন। হে রাজন্! সেই পাপাত্মা ছুর্যোধন কাম ক্রোধের আয়ত্ত এবং সম্পূর্ণ মোহাস্থিত হইয়াছে; স্বতরাং এক্ষণে তাহাকে বল-পূর্ব্বক নিবর্ত্তিত করিতে আপ-নার আর সাধ্য নাই। মূঢ়মতি, কুসচিব-পরতন্ত্র, অজ্ঞান, ছুরাত্মা ও লোভাশ্রিত ব্যক্তিকে আপনি যে রাজ্য প্রদান করিয়াছিলেন, এক্ষণে তাহার ফল ভোগ করিতেছেন। হে মহীক্র। আত্মীয় লোকের সহিত ভেদ হওয়া আপনার যেকি কারণে উপেক্ষার বিবয় হইতেছে, কিছুই বুঝিতে পারি না। শত্রুগণ আপনাকে স্বজন হইতে বিচ্ছিন্ন দেখিয়া, অবশাই উপহাস করিবে, সন্দেহ নাই। মহারাজ! আগ্রীয়-গণের নিকটে সাম অথবা দান ছারা যে আপদ হইতে উত্তীৰ্ণ হওয়া যায়, কোন্ বুদ্ধিমান্ বাক্তি সে স্থলে দণ্ড প্রয়োগ করে ?

বৈশন্পায়ন কহিলেন, গান্ধারীর বাক্যে এবং ধৃত-রাষ্ট্রের শাসন ক্রমে বিছুর অমর্থণ ছুর্যোধনকে পুনরায় সভামগুপে প্রবেশ করাইলেন পুর্যোধন জননীর বচনাকাঙ্গনী হইয়া ক্রোধপূর্ণ তাত্রবর্ণ নয়নে প্রচণ্ড ভূজক্ষের ন্যায় ঘন ঘন নিশ্বাস ত্যাগ করিতে করিতে ক্রম পুনর্বার তথায় প্রবিক্ত হইলেন, তথ্য গান্ধারী ঐ উৎপথবর্ত্তী কুপুত্রকে যথোচিত ভর্মনা করত শান্তির নিমিত্ত এইকপ কহিতে লাগিলেন,

হিত বাকা বোধগন্য কর। ইহার ঘারা উত্তরকালে আলীয় বন্ধু বান্ধবগণের সহিত্তভোমার পর্ম স্থাে-দয় হইবে। হে পুত্রক! তোমার পিতা ভরত-সক্তম ধৃতরাষ্ট্র এবং ভীম দ্রোণ রূপাচার্যা বিছুর প্রভৃতি অন্যান্য স্থক্লাণ তোমাকে যে কথা বলি-য়াছেন, তাহা নিঃসংশয়ে প্রতিপালন কর। তুমি শান্ত হইলেই ভীয়ের, ধূতরাঞ্লের আমার ও ছো-ণাদি স্থহ্ন দ্বর্গের সম্যক্ অর্চনা করা হয়। হে মহা-প্রাজ্ঞ ভরতর্বভ! কেবল স্বকীয় কামনানুসারেই কথন রাজ্যের প্রাপ্তি, রক্ষা ও ভোগ হইতে পারে ना । ज्यतमन्त्रिय पूर् वाकि मीर्घकान त्राका मद्यारा কদাপি সমর্থ হয় না। বিজিতাত্মা মেধাবী মনুধাই রাজ্য পালনের যথার্থ উপযুক্ত পাত্র। কাম ও ক্রোধ উ**ভয়ই পূরুষকে অর্থ সকল হইতে** নিয়ত আকর্ষণ করিতে থাকে; অতএব যে ভাগাবান্ রাজা এই ছুই বিষম শত্রুকে জয় করিতে পারেন, তিনিই বস্থ-ধা-বিজয়ের অধিকারী হন। লোকের ঈশ্বর হইয়া প্রভুত্ব করা অতীব মহৎ ব্যাপার। ছুরাত্মা পাম-রেরা সহকেই রাজ্যপদ লাভের অভিলায করিতে পারে বটে, কিন্তু ইহার রক্ষা করা ভাহাদিগের কথনই সাধ্য হয় না। যে ব্যক্তি এই উচ্চ পদের আকাঙ্গা করে, তাহার ইন্দ্রিয় সমস্ত অর্থে ও ধর্মো সংযত করা অত্যে কর্ত্তবা। কাষ্ঠ-সংযোগে অগ্নির যেমন রূদ্ধি হয়, সেইৰূপ ইন্দ্রিয় সকল নিগৃহীত **इटेटनरे जीटनत दुक्षि दक्षि इटेटल थाटक।** जिटिनग्न चना ख चर्च मकल रामन পथि-मर्पा कुमार्राधरक বিনট করিতে পারে, অবশীক্কত ইন্দ্রিয়বর্গও সেই-क्रि भूक्र दिन निधन माध्य मार्थ इस्। य वर्गाक অত্রে আত্মাকে জয় না করিয়া অমাত্যদিগকে জয় করিতে ইচ্ছা করে এবং অমাত্যবর্গকে বদীভূত না করিয়া শত্র-বিজ্ঞরে অভিলাষ করে, ক্ষেঅবশাই অবশ হইয়া **সম্পত্তি হ্ইতে বিচ্যুত হ**য়। আজু-হিতৈষী পুৰুষ প্ৰথমে আত্মাকে দ্বেষ্য-ৰূপে যোজনা

বংস ছুর্যোধন! একবার নিবিষ্ট-চিত্তে আমার এই | করিবেক, অর্থাৎ আত্মগত যে সমস্ত স্থাভাবিক ছুরভিসন্ধি প্রকাশ পায় তৎসমুদায়ের বিরুদ্ধাচরণে তৎপর হইবেক; তদত্তে অমাতা ও অমিত্রবর্গকে জয় করিবার অভিলাষ করিলে, ভাহা আর কোন ক্রমেই বার্থ হইবে না। রাজলক্ষী, জিতেক্রিয় জি-তামাত্য, অত্যাচারীদিগের প্রতি দণ্ডধারী, সমীক্ষ্য-কারী বীর বাক্তিকে সাৃষ্ট্রিশর দৃঢ়তা সহকারে ভজনা করেন। স্থক্স-ছিত্র-সর্ফুল জাল-দ্বারা সমার্ত মৎস্য-যুগলের ন্যায়, শরীরস্থ কাম ও ক্রোধ পুরুষের প্রজ্ঞা লোপ করে। যে ছুই হইতে ভীত হইয়া দেব-তারা রাগ-দ্বেষাদি-বিবচ্ছিত, স্বর্গধানে গমনোদ্যত মানবের সম্বন্ধে উহার দ্বার রুদ্ধকরেন, তাহারা র্দ্ধি-প্রাপ্ত কাম ক্রোধ ব্যতীত আর কিছুই নছে। যে বিচফণ ভূমিপতি কাম ক্রোধ লোভ দম্ভ দর্প-প্রভৃতি রিপুর্কাকে সমাক্-রূপে জয় করিছে জানেন, তিনিই এই ধরা-রাজ্যের শাসন করিতে পারেন 🕇 ধর্মার্থ-লিপ্সু ও শত্র-বিজয়াকাঞ্জী মহীপতি সতত ইন্দ্রিয়-নিগ্রহে তৎপর হইবেন। যে ব্যক্তি কাম ক্রোধে অভিভূত হইয়া আত্মীয় স্বজন অথবা অন্য লোকদিগের প্রতি কপটতাচরণ করে, তাহার বহু সহায় প্রাপ্ত হইবার সম্ভাবনা থাকে না। হে বৎস! একভাবাপন্ন অসীম-শৌর্যাশালী শত্রুনাশন মহা-প্রাক্ত পাণ্ডবদিগের সহিত মিলিত হইলে ভুমি পরম স্থবী হইয়া পৃথিবী সড্যোগ করিতে পারিবে। হে তকে! শান্তমু-ভনয় ভীয়া ও মহারথ দ্যোণাচার্য্য তোমাকে যে কথা বলিয়াছেন, তাহা সম্পূর্ণই সত্য ; ক্বন্ধ ও ধনঞ্জয়কে ধেকহুই পরাজয় করিতে পারে না। অতএব এই অক্লিউকর্মা মহাবাহু ক্লুফের শরণাপন্ন হও; কেশব প্রসন্ন হইলে উভয় পক্ষেরই স্থখ-সম্পা-দক इटेरवन, मत्म्ह नारे। य व्यवाध प्रसूषा श्रीछ, ক্তবিদ্য ও হিতকামী স্বহুলাঞ্জার শাসনে অবস্থান ना करत, त्म व्यवभारे भक्तमरलत व्यानम्बर्कन रहा। হে তাত! যুদ্ধে কিছুমাত্র শ্রেয় নাই; তাহাতে না धर्मा, ना पर्थ, किছूरे मिन्न हरेटि পादि ना , स्उताः

ভদ্মারা সুখ লাভের সম্ভাবনা কি ? তাহাতে নিত্যই যে জয় হইয়া থাকে, এমনও নিশ্চয় নাই; অতএব এতাদৃশ অনর্থকর ব্যাপারে কদাপি চিত্ত নিবেশ করিও না। হে অরিন্দম! পাছে পাণ্ডবদিগের সহিত ভেদ হয়, এই ভয়ে ভীত হইয়াই তোমার পিতা, ভীয় ও বাহ্লিক তাঁহাদিগের ন্যায্য অংশ প্রদান করিয়াছিলেন; এক্ষণে ঐ শ্রীণ-কর্তৃক নিহত-কন্ট-কা সমগ্র-বস্থারা সভ্তোগ করত তুমি সেই প্রদা-নের প্রত্যক্ষ কল অমুভব করিতেছ। অতএব ছে মহাপ্রাক্ত! যদি অমাত্যবর্গের সহিত রাজ্যের অর্দ্ধাংশ ভোগ করিতে ইচ্ছুক হও, তবে এখনও মহীপাল পাওবদিগকে যথোচিত অর্দ্ধাংশ প্রদান কর। হে ভারত ! পৃথিবীর অর্জভাগ-দারাই অমাতা বাহ্বব-বর্গের সহিত তোমার পর্যাপ্ত জীবনোপ্লায় হইবে; বিশেষত স্মৃহদাণের বাক্য প্রতিপালন করায় তুমি বিপুল যশোলাভ করিতে পারিবে। হে পুত্রক! সেই শ্রীমন্ত, ধৃতিমন্ত, বুদ্ধিমন্ত, জিতেক্রিয়, পাণ্ডব-গণের সহিত যুদ্ধ করিলে উহা তোমাকে মহৎ স্থ হইতে ভ্রুফ করিতে পারে। অতএব হে ভরতর্ষভ! পাণ্ডু-পুত্রদিগকে স্বকীয় অংশ প্রদান-পূর্বক স্থক্ত-বর্গের মন্ত্যু পরিহার করিয়া যথোচিত রাজ্যশাসন কর। ছে বৎস! তুমি পাগুবদিগকে ত্রোদশ বৎসর কাল রাজ্য-বিচ্যুত করিয়া তাঁহাদিগের যে অপকার করিয়াছ, ইহাই যথেষ্ট হইয়াছে ; অতএব হে মহা-প্রাক্তঃ সংপ্রতি কাম-ক্রোধ-সম্বর্দ্ধিত সেই অপ-কারের উপশম কর। তুমি কুন্তী-নন্দনগণের অর্থাপ-হরণে অভিলাঘী হইতেছ বটে, কিন্তু কিমান কালেও এ অভিলাষ পূর্ণ করিতে পারিবে না; কেবল ভুমিই নহ, দৃঢ়কোধী স্থতপুত্র অথবা তোমার ভাতা ছুঃশা-সন, কেহই ভাহাতে সমর্থ হইবে না; হইবার মধ্যে এই চ্ইবে যে, ভীম জেণে রূপ কর্ণ ভীমসেন ধনঞ্জয় ধৃষ্টচুন্ন-প্রভৃতি বীর-সমস্ত অতিমাত্র কুক হইলে ধরা-রাজ্যে প্রজামাত্র থাকিবার আর সম্ভাবনা থা-কিবে না। অতএব হে তাত! অমর্ঘের বশীভূত

হইয়া সমৃদ্ধিশালী কুরুবংশের অনর্থক ধ্বংস করিও না। এই সমগ্র মহীমগুল যেন তোমার নিমিজ্ব সংহার-দশায় উপনীত না হয়। রে মৃঢ়! তুমি যে মনে কর, ভীয় দোণ রুপ-প্রভৃতি সকলেই সর্ব্ব শক্তি সহকারে যুদ্ধ করিবেন, তোমার সে আশা কদাচ ফলবতী হইবে না; কেন না, কি পাগুবগণ, কি তোমরা, উভয় পক্ষের প্রতিই ঐ বিদিভাল্পা মহারথগণের রাজ্য, স্নেহ ও সম্বন্ধ সমান; বিশেষত ধর্মাই তদপেক্ষা অধিক প্রবল। অতএব যদিচ রাজ্বণিও ভয়ে ইহাঁরা জীবিত পরিত্যাগে সম্মত হন, তথাপি যুধিষ্ঠিরের প্রতি কোপদৃষ্টি করিতে পারিবন না। হে তাত! লোভ হইতে মনুষোর অর্থ সম্পত্তি হয়, ইহা কুত্রাপি দৃষ্ট হয় না; অতএব হে ভরতর্ষভ! লোভ করিবার প্রয়োজন নাই; শান্ত

গান্ধারী-বাক্যে একোনত্রিংশদ্ধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১২৯॥

বৈশস্পায়ন কহিলেন, ছুর্য্যোধন, জননীর ঐ অর্থ-যুক্ত স্থভাষিতের প্রতি অনাদর করিয়া রোষপরীত িত্তে পুনরায় সভা হইতে নির্গমন-পূর্ব্বক অক্নতাত্মা নর।বনগণ-সলিধানে প্রস্থান করিলেন। তথায় উপ-স্থিত হইরা তিনি দৃতে প্রেয় স্ক্রল-পুত্র রাজা শক্-নির সহিত মন্ত্রণা করিতে থাকিলেন। পরিশেষে ছুর্যোধন, কর্ণ, শকুনি, ও ছুঃশাসন, এই চারিজনের এইৰূপ সংকল্প স্থির হইল যে, " এই ক্ষিপ্ৰকারী জনার্দন, রাজা ধৃতরাষ্ট্র ও ভীম্মের সহিত মিলিত হইয়া পূর্ব্বেই আমাদিগকে হন্তগত করিবার চেটা। क्तिराज्या, किंख हेल रामन विनादक विकास क्रिया-ছিলেন, সেইৰূপ আমরাই অগ্রে বল-পূর্ব্বক ঐ পুরুষব্যাত্র বাস্তদেবকে সহসা নিগৃহীত ক্রিব। ক্লক্ষ পৃহীত হইয়াছে শুনিলে পাগুবের। ভগ্নংখ্র ভুজ্-**ক্ষের নাার অবশাই হতচিত্ত ও নিরুৎসাই হ**ছবে, मर्भर नारे; व्यर्क्षु धर मश्वाएर जाशान्ता

দর্বাচ্ছাদক এবং দকল কল্যাণের মূল। এই দর্ববাদবশ্রেষ্ঠ অভীউপ্রদ ক্ষীকেশ গৃহীত হইলে,
পাগুবেরা এবং তাহাদিগের সহায়ভূত সোমকের।
উদ্যম-শূন্য হইবে; অতএব ধৃতরাষ্ট্র সহস্র প্রকার
আক্রোশ প্রকাশ করিতে থাকিলেও আমরা এই
সময়েই ঐ ক্ষিপ্রকারী কেশবকে এইখানে বদ্ধ রাবিয়া নিরুদ্ধেগে শক্রগণের সহিত যুদ্ধ করিব ম।

ইঞ্ভিজ মহাবিচক্ষণ বীৰ্যাবান সাতাকি সেই তুউচিত্ত পাপাত্মাদিগের ঐ পাপময় অভিসন্ধি শীঘ্রই বুঝিতে পারিলেন এবং তজ্জন্য সভা হইতে নির্গত হইয়া হুদিক-নন্দন ক্লতবর্মার সহিত পরা-মর্শ করিয়া ভাঁহারে কহিলেন, আমি অক্লিউকর্মা ক্লফকে এই র্ক্তান্ত বিজ্ঞাপন করি, ইতি-মধ্যে তুমি वाहिनी याजना-शूर्वक मृष्ठत मन्नक ७ रेमना-वृाटर সংরক্ষিত হইয়া অবিলয়ে সভাদারে উপস্থিত হও। এই বলিয়া তিনি গিরি-গুছা-মধ্যে সিংছের ন্যায়, সভামগুপে প্রবিষ্ট হইয়া অগ্রে মহাত্মা কেশবকে, তৎপরে ধৃতরাষ্ট্র ও বিছুরকেও ঐ ছুরভিসন্ধির বিষয় বিজ্ঞাপিত করিলেন। তাহাদিগের সেই ছুফ অভি-প্রায় ব্যক্ত করিয়া হাস্য করিতে করিতে কহিলেন, यन्त्रमि छ्त्रामाराता कि धर्मा, कि वर्थ, कि काम, मर्सारम्थे माधू-कन-विगरिष्ठ पूछ-निश्रह-क्रि य জঘন্য কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিতে অভিলাষী হই-ভেছে, তাহা কোন প্রকারেই সম্পন্ন হইবার নহে। ক্রোধ লোভের বশবর্তী এই সমবেত পাপাত্মা মূঢ়-গণ কাম ক্রোধে অভিভূত হইয়া কলহ-ৰূপ ভয়হ্বর विकात व्याश्व हरेटव । हेरामिटभत पूर्व्यक्तित कथा कि কহিব, বালক অথবা জড়বুদ্ধি উন্মন্ত লোকেরা যেমন ৰস্ত্ৰ-দারা প্রাক্তিত অনল ধারণের ইচ্ছা করে, সেই-ৰূপ ইহারা পুগুরীকাক্ষ ৰাস্তদেৰকে বল-পূর্ব্বক গ্রহণ করিতে সমুৎস্কুক হইতেছে।

কুরু-সভা-মধ্যে সাজাকির এই বাকা আবণ করিয়া মহামতি দীর্ঘদর্শী বিহুর, মহাবাছ ধৃতরাষ্ট্রকে সম্বো-বিয়া কহিলেন, হে শত্রভাপন মহারাজ! আপনকার পুজেরা নিতান্তই কালপরীত হইয়াছে। উহারা
যখন সকলে মিলিত হইয়া ঘোরতর অযশক্ষর
অসাধা কর্ম করণে উদাত হইতেছে;—যখন বাসবামুজ জনার্দনকে বলাৎকারে অভিভূত করত সহসা
নিগৃহীত করিবার বাসনা করিতেছে; তখন আর
উহাদিগের কাল প্রাপ্ত হইবার অবশিষ্ট কি?
প্রদীপ্ত-পাবক-সন্নিধানে পতঙ্গগণের নাায় উহারা
এই ছুপ্তাধর্ম ছুরাসদ পুরুষ-শার্দ্দলের সমীপস্থ হইয়া
কতক্ষণ জীবিত থাকিতে পারিবে? অমিত-প্রতাপশালী জনার্দন ইছা করিলে, ইহারা সকলে সমবেত
হইয়া যুদ্ধ করিলেও, নাগ-দল-দলনকারী সংকুদ্ধ
কেশরার নাায়, একাকীই সকলকে শমন-সদনে
প্রেরণ করিতে পারেন। পরস্ত এই পুরুষোত্তম
অচ্যত ধর্ম-বিচ্যুত হইয়াঈদৃশ নিন্দনীয় কর্মে কদাচ
লিপ্ত হইরেন না।

বিত্র এই কথা বলিয়া নিরস্ত হইলে মহামনা কেশব ধৃতরাষ্ট্রের প্রতি দৃষ্টি করিয়া, পরস্পর শ্রবণ-कार्त्रो स्ट्रुकाण मिन्नधारन कहिरलन, महाद्राख! ইहाता যদি কুদ্ধ হইয়া বল-পূৰ্ব্বক আমাকে নিগৃহীত করিতে পারে;—ইহারাই আমার নিগ্রহ করুক অথবা আমিই ইহাদিগের করি, উভয়থাই আপনি অনুজ্ঞা করুন। উহারা যত সংরক্ষ হউক না কেন, আমি একাকীই সকলকে শাসন করিতে উৎসাহী হইতে পারি, কিন্তু কোন ক্রমেই এরপ নিন্দিত পাপ-কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিব না। আপনকার পুজেরা পাওবার্থে লুক হইয়া আপন অর্থেই বঞ্চিত হইবে, তাহাতে আমার হানি কি আছে ? ইহারা যদি এৰূপ ইচ্ছা করে, তাহা হইলে ত যুধিষ্ঠির **जनाज्ञात्मरे क्रुजकार्या इरेटनन। ज्यामि जमारे हेरा-**দিগকে এবং ইহাদিগের যাবতীয় অমুকৃল সহায়-বৰ্গকে নিগৃহীত করিয়া পাগুৰ্গণ-সন্মিধানে সমৰ্পণ করিতে পারি ; তাহা আর আমার ছ্ছর কি ? কিন্তু হে ভরত-নন্দন মহারাজ! আপনকার সাক্ষাতে ক্রোধ ও পাপ-বুদ্ধি জনিত এতাদৃশ নিন্দিত কর্মে

আমি কদাচ প্রবৃত্ত হইব না। হে রাজন্! এই |
ছুর্য্যোধন যেরূপ করিতে ইচ্ছা করেন, সেইরূপই
হউক, ভাহাতে আমার কিছুমাত্র আপত্তি নাই;
বরং আপনকার সমুদ্য় পুক্রদিগকে আমি ভদ্বিয়ে
অনুদ্রাই দিতেছি।

ক্ষের এই কথা শুনিবাসাত্র ধৃতরাষ্ট্র বিছুরকে কহিলেন, সেই রাজালুক পাপাত্মা ছুর্য্যোধনকে অমাত্য, মিত্র, সোদর ও অমুচর-বর্গের সহিত শীঘ্র আনয়ন কর; যদি পুনরায় উপদেশ-বাক্য-ছারা তাহাকে স্থপথবর্তী করিতে পারা যায়, তাহার চেন্টা করিতে হইবে।

অন্ধর:জের আদেশক্রমে ্রিছুর, রাজগণে পরি-রত ছুর্য্যোধনকে, আগমনে[†]এনিচ্ছু হইলেও, ভাতৃ-গণের সহিত পুনর্কার সভা-মণ্ডপে পুবেশ করাই-লেন। তথন ধৃতরাথ্র, কর্ণ ছংশাসন ও ছুর্কৃত্ত ভূপাল-বর্গে পরিবেটিত সেই ছুরাশয়কে ভর্মনা ব্রত কহিলেন, রে পাপাত্মন্ কুরমতে। তুমি কুদ্র কর্ম-কারী পাপচিত্ত সহায়গণের সহিত মিলিত হইয়া নিদারুণ পাপ-কর্মা করিতে ইচ্ছা করিতেছ? শুনি-লাম, পাপাত্মা পামরগণের সাহায্যে এই ছুম্পুধর্য ছুরাসদ পুগুরীকাক্ষকে নিগৃহীত করিতে তোমার অভিলাব হইয়াছে। তোমার মত মূঢ় ও কুল-পাংসন নরাধম ভিন্ন-সাধুজন-বিগর্হিত ঈদৃশ অযশ-ক্ষর ও অসাধ্য কর্ম্মের অমুষ্ঠানে আর কাহার ছুরা-গ্রহ হইতে পারে ? হা! বাসব-সহ তিদশেরাও খাঁ-হাকে বল-পূর্বক গ্রহণ করিতে পারেন না, চন্দ্র-ধারণেচ্ছু বালকের ন্যায় ভূমি সেই কেশবকে ধরিতে প্রার্থনা করিতেছ? সমর সময়ে দেব গন্ধবি অস্কর মামুষ ভুজক-প্রভৃতি দর্বলোকেই থাঁহার প্রতাপ সহনে অসমর্থ, ইনিই সেই ব।স্থদেব, ইহা কি তো-মার বোধগম্য হইতেছে না? তুমি নিশ্চয় জান, रुख-बाता वाशू श्रर्ग अवर अनल भातन कता रामन ष्ट्रकत,--- मखक-हाता वस्था वहन कता रयमन व्यमखव, ৰল-দ্বারা মুরারিকে গ্রহণ করাও সেইৰূপ ছুংসাধ্য।

অন্ধরাজ এই বলিয়া নিরস্ত হইলে মহামতি বিছুরও অমর্ষণ ছুর্যোধনের প্রতি দৃষ্টি করত কহি-লেন, হে ভরতর্ষভ! সৌভ নগরের পুরদারে দ্বিদ नामा वानरतन्त्र मर्स अयर्ष्ट्र विक्रम अकाम कतिहा খাঁহারে গ্রহণ করিবার মানসে প্রচুর শিলা বর্ষণ-দারা সমাচ্ছন্ন করিয়াও ক্তকার্য্য হইতে পারে নাই, সেই মাধবকে তুমি বল-পূর্ব্বক বন্ধন করিবার প্রার্থনা করিতেছ ? নির্মোচন-পুরে ছয় সহস্র মহা-স্থর যাঁহারে গ্রহণ করিতে অভিলাষী হইয়া পাশ-দারা বন্ধন করিবার নিমিত্তে সর্ব্ব প্রয়ত্ত্বে বিক্রম প্রকাশ করিয়াও গ্রহণ করিতে পারে নাই, সেই মাধবকে ভূমি বল-পূর্ব্বক বন্ধন করিবার প্রার্থনা করিতেছ? কামৰূপ দেশে সমাগত হইলে থাঁহারে এহণ করিতে সমুৎস্কুক হইয়া অমিত-বলশালী নর-কাস্থর বছল দানবগণের সহিত চেফী করিয়াও ক্লতকার্য্য হয় নাই, সেই শৌরিকে ভুমি বল-পূর্ব্বক বন্ধন করিবার প্রার্থনা করিতেছ ? অলৌকিক প্রভাব-সম্পন্ন যে পুরুষোত্তম বাল্যাবস্থায় পূতনা রাক্ষর্সী ও পক্ষি-ৰূপধারী অস্থুর ছয়ের ধংস করিয়াছেন; গোকুল-রক্ষার্থে বামকরে গোবর্দ্ধন গিরি ধারণ করিয়াছেন ; অনিফকারী অরিফ, ধেমুক, চামূর ও অশ্বরাজাদি মহাবল অস্ত্রর্ন্দকে এবং কংস, জরা-সন্ধ, দন্তবক্র ও শিশুপাল-প্রভৃতি প্রবল-পরাক্রান্ত রাজন্যগণকে সমরানলে আছতি প্রদান করিয়াছেন; যে অমিত-তেজস্বী মহাবাছ, বাণরাজ বরুণরাজ ও পাবক-দেবের পরাজয় সাধন করিয়াছেন এবং পারিজাত হরণ করিয়া সাক্ষাৎ শচীপতিকেও পরাস্ত করিয়াছেন ; যিনি স্বয়ং সকলের বিধাতা, কাহারও বিধেয় নছেন ; সর্ব্ব পৌরুষের কারণ-স্বৰূপ হওয়ায় যিনি ইচ্ছানুসারে সকল কর্মাই অনায়াসে সম্পন্ন করিতে পারেন; একার্ণবে শয়ান ধাকিয়া ধিনি মধুকৈটভ নামক অস্তর-দরকে এবং জন্মান্তর প্রাপ্ত হইয়া বেদাপহারী হয়গ্রীবাস্থরকে নিহত করিয়া-ছেন; সেই ঘোর-বিক্রম অচ্যুত গোবিন্দকে ভূমি

এ পর্যান্ত জানিতে পারিলে না ? কুপিত আশীবিষ
সদৃশ প্রচণ্ডতর তেজারাশি, সর্বাথা অনিন্দাস্পদ
অক্লিউকর্মা মহাবাছ রুফকে প্রধর্ষিত করিবার
মাশরে তদীর সনিধানে উপস্থিত হইলে, প্রদীপ্তপাবক-পতিত পতক্লের ন্যায় তোমাকে অমাত্যবর্গের সহিত আর ক্ষণমাত্রও জীবন বহন করিতে
হইবে না।

বিছুর-বাক্যে ত্রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৩০ ॥

বৈশম্পায়ন কছিলেন, বিছুর এইৰূপ বলিলে পর শক্রনিচয়-নিহন্তা অতুল্য-বীর্য্যবান্ বাস্ত্রদেব ধৃতরাষ্ট্র-তনর ছুর্যোধনের প্রতি কটাক্ষ করত এই কথা বলিলেন, অহে ছুর্যোধন! ভুমি দারুণ ছুর্বদ্ধি বশত আমাকে একাকী বিবেচনা করিয়াই পরাভব-পূর্ব্বক প্রহণ করিতে ইচ্ছা করিতেছ; কিন্তু ইহা নিশ্চয় জান, আমি একাকী নহি; যাবতীয় পাণ্ডব এবং অক্সক ও বৃষ্ণি-বংশীয়েরা এই খানেই রহিয়াছেন; আদিত্য, রুদ্র, বস্থু ও ঋষিগণ, সকলেই আমার সন্নিহিত আছেন। এই বলিয়া পরবীরহন্তা কেশব উচ্চৈঃস্বরে হাস্য করিয়া উঠিলেন। সেই অউহাস্য-সহকারে অগ্নিতুলা তেজঃপুঞ্জধারী মহাত্মা শৌরির শরীর হইতে বিদ্যাদাকার অমুষ্ঠ-প্রমাণ দেবতা সকল विनिर्शठ इरेट नाशिरनग। ननारि उक्ता, वक-স্থলে রুদ্রগণ, ভুজ-নিকরে লোকপালগণ এবং মাস্যদেশে অগ্নি, আদিত্যগণ, সাধ্যগণ, বস্থগণ, विश्वितीक् नात्र-षर, वामव-मश् मञ्जान, विश्वदिनवर्गन, তথা অসংখ্য যক্ষ, রাক্ষস ও গন্ধর্কাগণ প্রাত্তুত হ্ইলেন। ছুই হস্ত হইতে বলদেব ও ধনঞ্জয় উৎপন্ন ह्**रेलन। एकिए। धन्न**कांती अर्ड्न, वादम हल्यांती বলরাম, পশ্চাদ্ভাগে যুধিষ্টির, ভীম ও মার্ক্রাপুত্র-দ্বয় এবং সন্মুখে যাবতীয় অস্তাক-বংশীয় আর প্রচ্যন্ত্র-প্রভৃতি সমন্ত র্ফিবংশীয়েরা প্রচণ্ড আয়ুধ-জাত উপিত করত উপবিফ হইলেন। তাঁহার নিজ বাছ-

পুঞ্জেও শম্ব চক্র গদা শক্তি শাঙ্গ লাঙ্গল নন্দক-প্রভৃতি প্রদীপ্ত প্রহরণ-সমস্ত সমুদাত দৃষ্ট হইল এবং নেত্র-দ্বয়, নাসিকারস্কু, ভ্রোত্র-যুগল ও সমুদায় রোমকৃপ হইতে দিবাকরের প্রথর-কর-নিকরের নাায় মহারৌদ্র সধুম অগ্নিকণা সমস্ত বিনির্গত হই-তে লাগিল। বিশ্বমূর্ত্তি মহাত্মা কেশবের সেই ঘোর-ৰূপ সন্দৰ্শনে কেবল জোণ, ভীন্ম, মহামতি বিছুর, মহাভাগ সঞ্জয় ও তপোধন ঋষিগণ ব্যতীত তত্ততা সমগ্র রাজবর্গই শঙ্কাপরীত-চিত্তে নেত্র-নিমীলন क्रितिन। ज्यवान् जनार्यन जलकारन प्राणीम মহাভাগদিগকে দিবাচকুঃ প্রদান করিয়াছিলেন; স্তরাং তাঁহাদের আর শঙ্কা হয় নাই। হে ভরত-র্যভ! দেবতারা কুরুসভা-মধ্যে মাধ্বের সেই স্থ্যহং আশ্চর্যা ব্যাপার অবলোকন করিয়া ছুন্দুভি ধনি ও পুষ্পা বর্ষ্ণী করিতে লাগিলেন; সমগ্র মহীমগুল বিচলিত ও সাগর-সমস্ত আন্দোলিত হ্ইতে থাকিল এবং সকল পার্থিবেরাই পরম বিশায় প্রাপ্ত হই-लन। अनस्रत शूक्तवताच अतिनन्म मधूस्नन क्र्यः সেই বিচিত্র অদ্ভুত সমৃদ্ধি-সম্বালত স্বকীয় দিব্য শরী-রের সংহরণ করিলেন এবং ঋষিগণের 'অনুজ্ঞা লইয়া সাত্যকি ও কৃতবর্মার হস্ত ধারণ-পূর্বাক সভ। इश्रेट निर्गठ इश्रेटनन। उपकारन स्य महा रकाना-इल উপস্থিত হইল, সেই স্বরোগে নারদাদি ঋষি-বৰ্গও অন্তৰ্হিত হইয়া আপন আপন অভীফ স্থানে প্রস্থান করিলেন। তাঁহাদিগের সেই আকস্মিক অন্তর্জানও অপর এক আশ্চর্য্যের বিষয় হইল। নর-ব্যাত্র মধুস্থদনকে প্রস্থিত দেখিরা কৌরবেরা, অমর-রুন্দ যেমন বাসবের অনুসরণ করেন, সেইৰূপ ঠাঁ-হার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিলেন; পরস্ক অমেয়াত্মা বাস্তদেব দেই অনুগামী রাজমগুলের প্রতি জ্রফেপ-মাত্রও না করিয়া সধুম-পাবকের ন্যায় নিৰ্গত হইয়া চলিলেন। দ্বারদেশে উপনীত হইয়াই দেখিলেন, কিঞ্কিণী-রাজি-বিরাজিত, হেমজাল-পরি-কীর্ণ, শ্বেতবর্ণ ব্যাঘ্রচর্ণে সমার্ত, সামগ্রী-সম্ভার-

শোভিত, শৈব্য স্থগীবাদি হয়-চতুষ্টয়-যোজিত, মেঘ সদৃশ গভীর-নিস্বন, ধবল-বর্ণ, শীঘ্রগামী মহারথ লইয়া দারুক উপস্থিত আছেন। রথখানি প্রস্তুত রহিয়াছে দেখিয়া শৌরি তৎক্ষণ-মাত্র তাহাতে আ-রোহণ করিলেন এবং রুঞ্চিদেগের বছমত হৃদিক-তনয় মহারথ ক্তবর্মাও রুথাকা দৃষ্ট হইলেন। মহারাজ! অরিন্দম যতুনন্দ্র এইৰূপে রথারোহণ-পূর্বক প্রস্থানে উদাত হইলে মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র তাঁহারে পুনরায় এই কথা বলিলেন, হে শত্রুকর্ষণ জনার্দান ! পুত্রগণের নিকটে আমার বতদূর ক্ষমতা, তাহা তুমি প্রতাক্ষই দেখিলে; কিছুই তোমার পরোক্ষ নাই; আমার ঈদৃশী অবস্থা দেখিয়া বি-শেষত কুরুদিগের শান্তিকামনায় আমি যেৰূপ যত্ন-পরায়ণ হইলান, তাহাও বিদিত হইয়াু তুমি আর কোন ক্রমেই আমার প্রতি শঙ্কা করিছে পারিবে না। হে কেশব! পাগুবদিগের প্রতি আঁমার কিছু-মাত্র ছুক্ট অভিপ্রায় নাই ; আমি সর্ব্ব প্রয়ত্নে শান্তি সংস্থাপনে সমুৎস্কুক হইয়া ছুর্য্যোধনকে যে কথা বলিয়াছিলাম, তাহা তোমার বিদিত আছে এবং যাবতীয় কুরুগণ ও অন্যান্য পার্থিবেরাও বিশেষৰূপ कारनन।

বৈশল্পায়ন কহিলেন, অনন্তর মহাবাছ বাস্থদেব জনেশ্বর ধৃতরাই, ভীয়, দ্রোণ, রুপ, বাহ্লিক ও বিছুরকে সম্বোধিয়া বলিলেন, কুরুসভা-মধ্যে যাহা যাহা হইল, মন্দমতি ছুর্যোধন সাতিশয় রোষভরে ঘোরতর অশিতের ন্যায় যে রূপ কর্মের অনুষ্ঠানে উদ্যত হইল এবং মহাপতি ধৃতরাই যে প্রকারে আপনাকে প্রভুত্ব-বির্দ্ধিত বলিয়া বর্ণন করিলেন, সকলই আপনাদিগের প্রত্যক্ষ হইল; এক্ষণে যুধি-জির-সমীপে গমনোদ্দেশে আমি সকলের নিকটে বিদায় গ্রহণ করিলাম। এইরূপে সকলের অনুমতি লইয়া পুরুষর্বভ ক্ষরীকেশ রথারোহণে প্রস্থিত হইলে ভীয়, দ্রোণ, রূপ, বিছুর, ধৃতরাই, বাহ্লিক, অশ্বপামা, বিকর্ণ ও যুযুৎস্থ-প্রভৃতি মহাধমুর্দ্ধারী মহারথ ভরত-প্রবীরগণ তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ যাইতে লাগিলের। ভগবান দেবকী-নন্দন কুরু-গণের সাক্ষাতেই সেই কিল্কিণী-যুক্ত মহারথে আ-কাঢ় হইয়া পিতৃস্বসার সহিত সন্দর্শন নিমিত্ত তদীয় ভবনে গমন করিলেন।

বিশ্বৰূপ দৰ্শনে একত্রিংশদধিক শতভ্য অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৩১॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, বাস্থদেব পিতৃষ্বসার নিকেতনে প্রবেশ-পূর্বাক তাঁহার চরণ-দ্বয়ে অভিবাদন
করিয়া, কুরুসভা-মধ্যে যাহা যাহা হইয়াছিল তৎসমুদায় সংক্ষেপে বর্ণন করত কহিলেন, আমি ও
ঋবিগণ, সকলেই বহুতর হেতুযুক্ত গ্রহণীয় অনুক্তম
হিত-বাক্য বলিলাম, কিন্তু মুদুমতি ছুর্য্যোধন কোন
ক্রমেই তাহা গ্রহণ করিল না। ইহাতেই বোধ হইতেছে, ঐ পাপাত্মা ও তদীয় বশগামী যাবতীয় নরপতিবর্গ কলেপক্ক কলের ন্যায় অচিরেই পতিত
হইবে। সম্প্রতি আমি আপনকার নিকটে বিদায়
লইয়া শীঘ্র পাগুবগণ সন্নিধানে গমন করিব; অতএব হে মহাপ্রাক্তে! আপনকার বচনানুসারে তাঁহাদিগকে কি কি বলিতে হইবে, ব্যক্ত করুন; আপনকার সন্দেশ-বাক্য শ্রবণ করিতে আমার ইচ্ছা
হইতেছে।

কুন্তী কহিলেন, বৎস কেশব! তুমি আমার বাকে।
ধর্মান্তা রাজা যুধিন্তিরকে এই কথা বলিও, "হে
পুত্রক! তোমার ধর্মের বিস্তর হানি হইতেছে;
শান্তিপ্রধান শ্রোত্রিয়ের ন্যায় তোমার এই বেদাধা
য়ন-কলুষিতা অসমীচীনা মন্দবুদ্ধি কেবল একমাত্র
ধর্মের প্রতিই অবেক্ষণ করিতেছে; অতএব এখন ও
সাবধান হও, আত্ম-ধর্মের অনর্থক বিনাশ করিও
না। প্রজাপতি স্বয়ন্তু ধর্মকে যাদৃশ স্বৰূপে হৃতি
করিয়াছেন, তুমি তাদৃশ স্বৰূপে উহাকে স্ক্রিক্ষণ
কর। দেখ, তাহার বাছ হইতে বাছবীর্য্যোপজীবী
ক্রিজ্ঞায়ের হৃত্তি ইইয়াছে; ক্যজ্ঞায়ের ধর্ম্ম এই, ক্রুর-

কর্ম অর্থাৎ যুদ্ধাদি-দ্বারা নিতা প্রজাপালনে তৎপর হইবেক। আমি পণ্ডিতগণের মুখে যেকপ শুনিয়াছিলাম, তদমুসারে এ বিষয়ের একটি উপমাও বিলতেছি, অবণ কর। পূর্বকালে ধনাধিপতি বৈ-অবণ রাজর্ষি মুচুকুন্দের প্রতি প্রীত হইয়া তাঁহাকে সমস্ত মহীমগুল প্রদান করিতে উদ্যত হইয়াছিলন; পরস্ত এ বীর্যাবান্ ভূপতি তাহা গ্রহণ করেন নাই। তিনি কহিয়াছিলেন, আমার প্রার্থনা এই যে, স্বকীয় বাছবীর্যো উপার্জন করিয়াই রাজ্যভোগ করি। তাহা শুনিয়া কুবের অতিশয় বিশ্বিত ও প্রীত হইয়াছিলেন। ক্রপ্রমানিষ্ঠ রাজা মুচুকুন্দও আপন সংকল্পানুসারে বাছবীর্যা-দ্বারা উপার্জন-পূর্বক বস্থবা শাসন করিয়াছিলেন।

"হে তাত! প্রজারা স্থরক্ষিত হইয়া যে কোন ধর্ম্মের অমুষ্ঠান করে, রাজা তাহার চতুর্থাংশ লাভ করেন। ভূপতি স্বয়ং ধর্মাচরণ করিলে তাহা দেবত্ব मन्त्रानत्तत (रजू रम्र ; किन्छ यनि व्यवसावत करतन, তবে অবশাই তাঁহারে নরকে গমন করিতে হই-বেক। স্বামী সমাক্ রূপে দণ্ডনীতির প্রয়োগ করি-লে উহা ব্রাহ্মণাদি-বর্ণ-চতু্টয়কে স্ব স্ব ধর্মে নিবদ্ধ রাখিয়া অশেষ ধর্ম-সঞ্চয়ে সমর্থ করিতে পারে। এমন কি, যৎকালে দণ্ডনায়ক সর্বতোভাবে স্বধর্ম-সমুচিত নীতিশাস্ত্রানুষায়ী কার্য্য করেন, তথন কলে-শ্রেষ্ঠ সতাযুগ প্রবর্ত্তিত হয়। হে ধর্মজ্ঞ। 'কাল রাজার কারণ, কি রাজা কালের কারণ ' একপ সংশয় বেন তোমার অন্তঃকরণে স্থান না পায়; তুমি নিশ্চয় জান, রাজাই কালের কারণ। ধর্মা-ধর্ম-প্রবৃত্তির তারতমা অনুসারে রাজাই সতা, ত্রেতা, দ্বাপর ও কলি, এই যুগ-চতুই্টয়ের কারণ হইয়া থাকেন। যে নরপাত পূর্ব্বোক্ত ৰূপে সত্য-কালের প্রবর্ত্তরিতা হন, তিনি অত্যন্ত স্বর্গভোগ করেন; যিনি ত্রেতাযুগের প্রবর্তন করেন, তাঁহারও স্বৰ্গতোগ হয় বটে, কিন্তু অত্যস্ত নহে; দ্বাপর প্রব-र्डनकः त्री ७ यथा-मखर পूगाकलाः म श्राक्ष इन ; किस्र

যে রাজা কলির প্রাত্নতাব করে, তাহাকে অতান্ত পাপ ভোগ করিতে হয়। সেই ছুদ্ধা মহীপাল তদ্বারা অনন্ত কাল নরকে বাস করে। রাজার যে দোষ, তাহা সমস্ত জগতে সংক্রামিত হয় এবং জগ-তের দোষও রাজাকে স্পর্ম করে। অতএব হে পুত্রক! পিতৃপিতামহ্গণের আচরিত যথার্থ রাজ-थर्म-ममञ्ज अर्थाात्माष्ट्री कता जूमि त्य थर्म व्यव-স্থিত হইতে অভিলাষী হইতেছ, তাহা কদাচ রাজ-র্ষিগণের ধর্ম্ম নছে; যেহেতু কারুণারসের পোষক-তায় নিয়ত বৈক্লবাযুক্ত ও অক্লুরতায় ব্যবস্থিত হই-লে প্রজাপালন-জনিত ফললাভের কিছুমাত্র সম্ভাবনা থাকে না। তুমি আপন বুদ্ধি অনুসারে সম্প্রতি যে ৰূপ আচরণ করিতেছ, ইহার অমুৰূপ আশী-র্বাদ, পূর্বে,না পাণ্ডু,না আমি,না পিতামহ, আমরা কেহই বে, মার প্রতি প্রয়োগ করি নাই। আমি নিতা নিতা তোমার যজ্ঞ, দান, তপসাা, শৌহাঁ, প্রজ্ঞা, মস্তান, মাহাত্মা, বল ও পরমায়ুরই প্রার্থনা করিতাম। শুভপ্রদ ব্রান্ধরোও সমাকৃ প্রকারে আরাধিত হইয়া তোমার দীর্ঘায়ু, ধন ও পুত্রাদি প্রার্থনা করত পিতৃলোকও দেবলোকের উদ্দেশে প্রতাহ স্বাহা ও স্বধা প্রদান করিয়াছিলেন। পিতৃ-বর্গ ও দেবভারাও ক্ষজ্রিয় পুত্রদিগের প্রতি নিত্য-কাল দান, অধ্যয়ন, যজ্ঞ ও প্রজাপালনের আশংসা করিয়া থাকেন। অতএব হে তাত। এই দানাদি थर्मरे रुष्ठेक, वा अथर्मरे रुष्ठेक, **का**ं छि-थर्मा नुमादि তুমি এই সকলের অনুষ্ঠান করিবার নিমিন্ডেই জন্ম গ্রহণ করিয়াছ; পরম্ভ দানাদি করা দূরে থাকুক, তোমরা সংকৃল-সম্ভূত ও বিদ্যাবস্ত হইয়াও এক্ষণে জীবিকা-বিরহে পীড়া প্রাপ্ত হইতেছ। ক্ষুধার্ত্ত মান-বেরা শৌর্যাশালী দানপতি ভূপতির আশ্রয় লাভ করিয়া সম্ভউ-ঢিন্তে যে প্রতিষ্ঠিত হন, ইহার অপে-ক্ষা অধিকতর ধর্ম আর কি হইতে পারে? পৃথি-বীতে রাজ্য লাভ করিয়া ধার্মিক পুরুষের কর্ত্তব্য **এই यে, काहारक मान-षाता, काहारक वल-षाता,**

কাহাকে বা মিফবাক্য-দ্বারা বশীভূত করেন। ত্রাহ্মণ ভিক্ষাবৃত্তি অবলম্বন করিবেন, ক্ষজ্রিয় প্রজাপালক হইবেন, বৈশ্য ধনোপার্জন করিবেক এবং খুদ্র ঐ ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয়ের পরিচর্য্যা করিবেক, ইহাই সনা-তন ধর্ম। স্থতরাং ভিক্ষাধর্মও তোমার পক্ষে প্রতিষিদ্ধ এবং কৃষি-ব্যবসায়্ও অযুক্ত ; ক্ষত অর্থাৎ বিপন্ন ব্যক্তির ত্রাণকারী ক্ষতিয় হওয়ায় বাছবীর্য্যই তোমার একমাত্র উপজীবিকার স্থল। অতএব হে মহাবাহো! সাম, দান, ভেদ, দণ্ড অথবা বিনয়, যে কোন উপায়ে হউক, শত্ৰ-হস্ত-পতিত পৈতৃক অংশের পুনরুদ্ধার কর। দেখ, মিত্রগণের আনন্দ-বর্দ্ধনকারী তোমাকে প্রসব করিয়াও আমি যে বান্ধব-হানা হইয়া পরপিতেও জীবন ধারণ করিতেছি, ইহা অপেকা তোমার অধিক ছুংধ আর ্কি আছে? অতএব হে পুত্র! রাজধর্মের অনুবর্তী হইয়া যুদ্ধ কর। রুধা কাপুরুষত্ব প্রকাশ করিয়া পিতৃপিতামহ-গণের নাম লোপ করিও না এবং আপনিও অনু-জবর্গের সহিত ফীণপুণা হইয়া পাপময়ী নারকী গতির অধিকারী হইও **না** "।

কুন্তীবাক্যে দ্বাত্রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমপ্তি॥ ১৩২॥

কুন্তী কহিলেন, হে,পরস্তপ! আমি যুধিন্তিরকে বলিবার নিমিন্ত তোমাকে যে কথা কহিয়া দিলাম, পণ্ডিতেরা বিছুলা ও তৎপুত্রের সংবাদরপ এই পশ্চাছুক্ত পুরাতন ইতিহাসটি তাহার উদাহরণ দিয়া থাকেন। ইহা হইতে যে কিছু মঙ্গল সঙ্কলন করা যাইতে পারে, অথবা তদপেক্ষাও যদি কিছু অধিক সন্তব হয়, তুমি তাহাই যুধিন্তিরের নিকট বাক্ত করিবে।

পূর্বকালে সংক্ল-সম্থতা বিদ্বলা-নামী এক দীর্ঘ-দর্শিনী ষশস্থিনী রাজনন্দিনী ছিলেন। তিনি ক্ষত্র-ধর্ম্ম-নিরতা, দান্তা, কিঞ্চিৎ কোপনা ও কুটিল-স্বভাবা এবং বছল রাজসভা-নিচয়ে স্থপ্রসিদ্ধা; অনেকের

অনেক বাক্য ভাবণ করিয়াছিলেন এবং অনেক শাস্ত্রও অধ্যয়ন করিয়াছিলেন। ঐ কর্কশা রাজ-কন্যা আপন উরস পুত্রকে সিন্ধুরাজ-কর্ভৃক বিনি-জ্জিত হইয়া উদামখূন্য বিষণ্ণচিত্তে শয়ান থাকিতে দেখিয়া এই বলিয়া ভৎসনা করিয়াছিলেন "রে শক্র-নন্দন! তুমি আমার নন্দন নহ; আমার গর্ট্তেও তোমার জন্ম হয় নাই এবং তোমার পিতাও তোমাকে উৎপাদিত করেন নাই; ভুমি কুলের কণ্টক স্বৰূপ হইয়া কোথা হইতে আসিয়াছ, বুঝিতে পারি না। তোমার না আছে সংরম্ভ, না আছে পুরুষকার; তোমার আকার, বুদ্ধি, প্রবৃত্তি, সকলই ক্লাবের ন্যায়; তোমাকে পুরুষ বলিয়া গণনা করাই অবিধেয়; তুমি চিরকালের নিমিত্ত একবারে নিরাশ হইয়া বশিয়াছ; রে তুর্বুদ্ধে! যদি কল্যাণের কামনা থাকে, তবে এখনও পুরুষোচিত চিম্বাভার বছন কর। অপে দারা পরিতৃপ্ত রাধিয়া অপরিমেয় আত্মাকে অনর্থক অবমানিত করিও না। নির্ভীক হও; উৎসাহ ও অধ্যবসায় দ্বারা দৃঢ়তর করিয়া শঙ্কাপহৃত চিত্তের প্রতিসংহার কর। রে কাপুরুষ! পরাজিত, মান-শূন্য এবং বন্ধুবর্গের শোক প্রদ হইয়া অধিল অরাতি-দলের আনন্দ বর্ধান করত এইৰূপে শয়ন করিয়া থাকিও না; শীঘ্র গাত্তোত্থান কর। হা! ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নিমগা সকল যেমন অপ্প জলেই পরিপূর্ণা হয় এবং মূষিকের অঞ্জাল যেমন অপ্প দ্রব্যেই পূর্ণ হইয়। উঠে, দেইৰূপ কাপুৰুষেৱাও অত্যপ্সনাত্তে পূরি-ভূপ্ত হওয়ায় সহজেই সম্ভুট্ট হইয়া থাকে। রে কুলা-ঙ্গার! বরং কুপিত বিষধরের দক্তোৎপাটন করিয়া निरुठ रु७, उथापि क्कूद्रित नाास नीवजाद निधन প্রাপ্ত হইও না। জীবনে সংশয়াপন্ন হইয়াও বিক্রম প্রকাশ কর। গগণচারী শ্যেন পক্ষী যেমন নিঃশঙ্ক চিত্তে বিপক্ গণের প্রতি লক্ষ করে, তুমিও সেই-ৰূপ অকুতোভয়ে ইততত পরিভ্রমণ, আফোশ প্রকাশ অথবা তুঞ্জীভাব অবলয়ন করত শক্র ছিত্র অন্বেষণ কর। রে ফ্লীব-প্রকৃতে। ভূমি বঞাছত

মৃতের নাায় এৰপ জড়ভাবে শয়ান রহিলে কেন? শীঘ্র উপিত হও। শক্র-বিনিক্ষিত হইয়া একণে শয়ন করিবার সময় নহে। দীনভাব অবলয়ন করিয়া লোকের স্তিপধ হইতে অপনীত হইও না, স্বকীয় পুরুষকার দারা সর্বত্র বিখ্যাত হও। সাম দানাদি উপায় সমুদায়ের তারতম্য অনুসারে পণ্ডি-তেরা যে উত্তম মধ্যমাদি অবস্থার ব্যবস্থা করিয়া-ছেন, তশ্বধ্যে মধাম, জ্বনা বা অধ্য অবস্থায় নিবিউ ন৷ হইয়া তুমি তেজস্বি-সমুচিত দণ্ডৰূপ উৎকৃষ্ট উপয়ে আশ্রয় করত উত্তম শ্রেণীর উপযুক্ত হও। অরে ভীরু-স্বভাব! অনল-সংলগ্ন তিন্তুক কাষ্ঠের নাায় মুহূর্ত্ত মাত্রও প্রজ্বলিত হইয়া উঠ, রুথা জীব-नावी हरेशा जाला-भूना जूवाधित नााग्न व्यवसार ध्रम আচ্ছন থাকিও না। চিরকাল ধূমিত হওয়া অপেকা মুহুর্ত্ত কাল জ্বলিত হওয়াও শতগুণে শ্রেষ্ঠ। আমার মত এই যে, কোন রাজার গৃহে অতাত্ত তীক্ষ্ণ বা অতান্ত মৃত্ন-স্বভাব পুক্র যেন জন্মগ্রহণ না করে। রণ-কোবিদ বীর পুরুষ সম্মুখ-সংগ্রামে গমন করিয়া মানুষসাধ্য যাবতীয় উত্তম কর্ম্ম সম্পন্ন করিয়া ধর্ম্মের নিকট অঋণী হন, কোন প্রকারে আত্মাকে বিগর্হিত করেন না ; স্থতরাং তিনি অভীষ্টলাভে ক্তকার্য্য হইতে পারুন বা নাই পারুন, কদাচ শোকাকুল হন না, বরং প্রাণের প্রতি আস্থা-পূন্য হইয়া অনন্তর কর্ত্তব্য কার্যোর আরম্ভ করেন। অতএব হে পুত্র! ভূমি হয় বাছবীর্যা প্রকাশ কর, না হয় নিত্য-সিদ্ধ পঞ্চত্ত্ব প্রাপ্ত হও। ধর্মকে পশ্চাৎ করিয়া অনর্থক জীবদ বহনের প্রয়োজন কি ? রে ক্লীব ! ভোমার ইফাপূর্ত্ত (অগ্নিহোত্র, তপসাা, সত্য, বেদারুপালন, আতিথ্য ও বৈশ্বদেবাদি ক্রিয়া আর বাপী কূপ তড়াগাদি-খনন, দেবমন্দিরাদি-প্রতিষ্ঠা, অন্নদান ও আরামাদি-निर्माण) । यावजीय कीर्जि-कलाभ, मक्नहे विलुश হইল, এবং ভোগ স্থাধের মূল একবারে বিচ্ছিন্ন হইয়া পড়িল; অতএব এৰূপ অসার হইয়া আর জীবিত থাকিবার ফল কি? যদি একান্ত নিমগ্ন

বা পতিত হইতে হয়, তাহা হইলে বীর পুরুষের कर्डवा **এই यে, म**क्रत जड्डारमम धातन **পূ**र्वक তাহাকে সমভিব্যাহারে লইয়াই সেইৰূপ হয়েন; একবারে ছিন্ন-মূল হইলেও নির্তিশয় বিবাদ-যুক্ত ও ভগ্নোদ্যম হওয়া কোন প্রকারেই উচিত নহে। অতএব হে অবোধ পুত্র! সংকুল-সম্ভূত মহাপ্রাণ ঘোটকেরা যেৰূপ উল্লেম সহকারে যুগদণ্ড আকর্ষণ ক্রিয়া থাকে, তাহাই স্মর্ণ ক্রিয়া সমুচিত প্রাক্রম ও মান প্রকাশ কর এবং কোন্ কর্ম দ্বারা আপ-নার পুরুষকার প্রকটিত হয়, তাহা অবগত হও। ভোমার নিমিন্ত যে কুল নিমগ্নপ্রায় হইয়াছে, তুমি আপনিই ভাহার উদ্ধারার্থে যত্ন কর। লোকে যাহার অনুষ্ঠিত কোন অদুত মহৎ কর্ম্মের জ্বপেনা না করে, সে কেবল লোক-সংখ্যার বর্দ্ধক মাত্র; তাহাকে না जी, ना शूक्त्य, कि हुरे वला यात्र ना ; क्लीरवंद मर्पारे গণনা করিতে হয়। দান, তপস্যা, সতা, বিদ্যা বা অর্থ-লাভ বিষয়ে যাহার যশোর্ত্তান্ত সংকীর্ত্তিত না হয়, সে মাতার বিষ্ঠামাত্র, কদাপি পুত্রপদের বাচ্য নহে। যে মহীয়ান্ মানব শাস্ত্র-জ্ঞান, তপস্যা, ধন-সম্পত্তি, বিক্রম ও অন্যান্য পুরুষকার দ্বারা সকলকে অতিক্রম করেন, তিনিই যথার্থ পুরুষ। রে মূর্খ! অসমীক্ষ্যকারী কাপালিকের ন্যায় কাপুরুষোচিত, ঘৃণার্ছ, অযশক্ষর, ছঃখাবহ ভিক্ষার্ত্তির অন্বেষণ করিও না। হা! লোকের অবজ্ঞা-ভাজন, অশনবসন-বি-বক্জিত যে ছর্বল পুরুষকে দেখিয়া শত্র-দলের আনন্দ-রৃদ্ধি হয়, এতাদৃশ লোভকর দীন হীন অশ্প-প্রাণ কুদ্র-স্বভাব বন্ধুকে প্রাপ্ত হইয়া বান্ধবগণ কদাচ স্থী হইতে পারেন না। হা! স্বস্থান-ভ্রন্ট, রাষ্ট্র হইতে নির্বাসিত, সর্বপ্রকার কাম-রসে বঞ্চিত ও নিতান্ত নিঃসম্বল হইয়া আমাদিগকে জীবিকাভাবেই প্রাণ ত্যাগ করিতে হইবে! রে সঞ্জয়! সাধুজন-সমাজে অসদৃশ ব্যবহারী বংশধংসকারী কুলপাংশুল তোমাকে উৎপন্ন করিয়া আমি পুত্রৰূপী সাক্ষাৎ কলির জননী হইয়াছি। আমার মত আর কোন

नीयखिनी यन केनृण खगर्षण्ना निरूप्नार निर्वीर्या শত্রুনন্দন কুনন্দনকে গর্ম্ভে ধারণ না করে! রে হত-ভাগা! নিরুদাম-ধুমে আচ্ছন্ন না থাকিয়া প্রচণ্ড উৎসাহানলে সমধিক প্ৰজ্ঞলিত হও; সমাক্ ৰূপ व्याक्रमग-शूर्वक भक्त मःश्वात कत्र ; मूह्र्ड वा क्रग-কালের নিমিত্তেও অরাতিগণের মন্তকোপরি জ্বলিয়া উঠ। अभर्य ও अकमायूळ र्रु ७ हारे यथार्थ शूक्र वित কার্য্য; যে ব্যক্তি নিয়ত ফুমাশীল ও অমর্ষ-খূন্য **খাকে, সে জ্রীও নহে পুরুষও নহে** ; তাহাকে একটা नপুংসক বলিলেই হয়। সম্ভোব, দয়া, অমুদ্যম ও ভয়, ইহারা লক্ষীবিনাশের নিদানভূত; নিরীহ वांकि दाकार्ति मह९ कल लाट कथनहे ममर्थ इस না। অতএব হে পুত্ৰক! পরাভব-সাধন উক্তৰূপ मात्र-ममूह हहेट जाजादक मर्स व्ययद्व विभूक कत। क्रमग्रत्क लोह-निर्मिट्य नाग्र मृष्ट केंद्रिया चकीय সম্পত্তির অমুসন্ধানে প্রবৃত্ত হও। বিবেটনা করিয়া দেখ, পুর-বিষহণে অর্থাৎ রাজকার্য্য ও প্রজাপাল-নাদি গুরুতর ভার ধারণে শক্ত হয় বলিয়াই লোকে পুরুষ-নামে উক্ত হইয়া থাকে; স্থতরাং যে ব্যক্তি স্ত্রীবদ্ধাবহার করত ইহলোকে জীবিত থাকে, তা-शास्क वार्थनामा विभाग निर्फिक्षे कताहे विरश्य। নিংছের ন্যায় প্রবল-প্রতাপ-বিস্তারকারী মহোমত-চিত্ত শূরবীর নরপতির পঞ্চত্ত প্রাপ্তি হইলেও তদীয় স্থ্যাসিত অধিকারন্থ প্রজাগণ সুখ-সম্ভোগে হৃষ্ট পাকিতে পারে। যে স্থবিচক্ষণ মহীপতি আপনার প্রিয় সুখ পরিত্যাগ করিয়া রাজ্যলক্ষীর অন্থেষণে প্রবৃত্ত হন, তিনি অচিরেই অমাত্য বন্ধু-বান্ধবগণের र्ह्याप्रभागन करतन।

পুত্র কহিলেন, ভূমি যদি আমাকেই দেখিতে না পাও, তাহা হইলে তোমার এই সমগ্র-ভূমগুল, আভরণ, ভোগ-স্থু অথবা জীবিতেরই আর প্রয়ো-জন কি?

মতো কহিলেন, আুমি রাজ্য বা আ্ভরণাদির লোভেই তোমাকে এইরপে উভেজিত করিতেছি,

এমন নহে ; কিন্তু আমার প্রার্থনা এই যে, অনাদৃত নিক্ষ লোকেরা যে লোক প্রাপ্ত হইয়া থাকে, আমাদিগের শত্রুরা সেই সকল লোক প্রাপ্ত হউক, আর আদৃতাত্ম। মহীয়ান্ মানবগণের যে লোক প্রাপ্ত হওয়া উচিত, আমাদিগের সূক্ষর্গ সেই লোকে গমন করুন। হে তাত! ভৃত্যগণ-পরিবজ্জিত পর-পিভোপজীবী মানসত্ব দীনহীন কাপুরুষগণের সমুচিত জঘন্য-হৃত্তির অমুবর্ত্তন করিও না। সমস্ত প্রাণিপুঞ্জ যেমন জলধরের অনুজীবী হয় এবং অমর-গণ যেমন শতক্ৰতুর অনুবর্ত্তন করেন, সেইৰূপ ব্রাক্ষণবর্গ ও স্থহ্নদৃদ ভোমার উপরে জীবিকা নির্ভর করুন। হে সঞ্জয়! স্থপক্ব-কল-নিচয়-পরিকীর্ণ কোন র্ফাকে আশ্রয় করিয়া বিহঙ্গেরা যেমন জীবন ধারণ করে, সেইৰূপ অথিল প্রাণিবর্গ যে ভাগ্যধর পুরু-যের আশ্রয়ে আপন আপন জীবিকা নির্বাহ করিয়া থাকেন, তাঁহার জীবনই সার্থক। বাসবের বাহু-বীর্য্য-সম্বর্জিত স্থরগণের ন্যায় বান্ধবেরা যে মহাবীর পুরুষের দোর্দ্দণ্ড-প্রতাপ-সহকারে স্থরৈশ্বর্যো পরি-বর্জিত হন, তাঁহার জীবনই সার্থক। যে ভাগাবান্ মানব স্বীয় বাত্বল অবলম্বন-পূর্বেক সমুন্নত জীবন-ভার বহন করেন, তিনি ইহলোকে কীর্ভিলাভ করি-য়া পরকালে কল্যাণমন্ত্রী পরমা গতি প্রাপ্ত হন।

বিছুলা,পুত্রানুশাসনে ত্রয়স্ত্রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৩৩॥

বিছুলা কহিলেন, হে পুজক! যদি ঈদৃশী ছুরবন্থা
সময়ে পৌরুষ পরিহারের ইচ্ছা কর, তাহা ছইলে
তুমি অচিরেই হীন-সন-সেবিত অতিনীচ-মার্গে বিচরণ করিবে, সন্দেহ নাই। ক্ষজ্রিয়-কুলে জন্মএহণ
করিয়া যে ব্যক্তি অসার জীবনাকাজ্লায় যথাশজ্জি
বিক্রম প্রকাশ-দারা তেজঃপ্রদর্শন না করে, পণ্ডিতেরা তাংশকে চৌর বলিয়া নির্দ্ধিই করেন। হা!
মুমূর্জন-সন্ধিনে ঔবধের নাায়, যথার্থ স্বার্থ-সম্ব্রু

मात उপत्र वन धकाम क्रतिष्ठ अममर्थ स्ट्रें एउटि ! দেখ, সিন্ধুরাজের সহায়-ৰূপে বিস্তর লোক আছে বটে, কিন্তু কেহই তাহার প্রতি অমুরক্ত নহে; সকলেই অসম্ভট রহিয়াছে; ছুর্বলতা-হেতুক, বি-শেষত উপায়-পরিজ্ঞান-বিরহে তাহারা আত্ম-বিমো-চনে অসমর্থ হইয়া কেবল স্বামীর বাসন-সমূহমাত্র প্রতীকা করিতেছে। তদ্ভিন্ন যে সকল ব্যক্তি স্পন্ট-কপেই তাহার শত্রুতাচরণ করে, তাহারা তোমার পৌরুষ দেখিলে যত্ন-সহকারে আপন আপন পক্ষ হইতে সহায়-সম্পত্তির রুদ্ধি করিয়া তোমার সঙ্গে সঙ্গেই ভাহার প্রতিকুলামুঠানে প্রবৃত্ত হইবে। অতএব সেই সকল লোকের সহিত মিলিত হইয়া কালসমুচিত শত্রু-বাসনের আকাজ্ফা করত গিরি-তুর্গালয়ে আশ্রয় এহণ কর। সিন্ধুরাজ অজর কি অমর, এৰূপ মনে করিয়া নিশ্চেষ্ট থাকিও না। হে পুল! তুমি নামে সঞ্চয়, কিন্তু সঞ্চয়ের কার্য্য তো-মাতে কিছুই দেখিতে পাই না; এই নিমিত্তই বলি-তেছি, ব্যর্থ-নামা না হইয়া স্বীয় নামেরও সার্থকতা কর এবং তদ্ধারা আমার সম্ভানেরও উপযুক্ত হও। তোমার বাল্যাবস্থার একজন সমাগদশী মহাপ্রাজ্ঞ ব্রাহ্মণ তোমাকে দেখিয়া বলিয়াছিলেন "এই ব্যক্তি প্রথমে মহাকটে পতিত হইয়াও পরিশেষে প্রচুর-সমৃদ্ধি-লাভ করিবে ^দ। তাঁহার সেই বাক্য স্মরণ করিয়াই আমি তোমার বিজয়ের আশংসা করি-তেছি এবং সেই জন্যই ভোমাকে এরপ আগ্রহ-সহকারে উত্তেজিত করিতেছি ও পরেও বারম্বার করিব; যেহেতু আমি নিশ্চয় জানিতেছি, যে ব্যক্তি স্বর্ত্ত বর্ণার্থনীত্যমূসারে কার্য্য করে এবং অন্যান্য লোকেরাও যাহার অর্থসিদ্ধি বিষয়ে আপ্যায়িত रुरेन्ना नाराया करत, जारात मरनातथ व्यवमारे भून হইয়া থাকে। হে সঞ্চয়! " এতন্থারা আমার পূর্ব-मिक्क विषयात छे भवत है इंडेक खबरा कत्र है इंडेक, কিছুতেই আমি নির্ত হইব না " এইরপ দৃঢ়সংকল্প করিরা তুমি যুক্ষার্থে সনোনিবেশ কর ; এককালেই

উহার উপসংহার করিও না। শ**হর-মুনি কহি**রা-हिल्लन, य व्यवद्यांत्र ' अमा भूटर व्यञ्ज नाहे, कना कि হইবে ' দৰ্বদা এইৰূপ চিন্তা করিতে হয়, ভাহার অপেক্ষা পাপীয়দী অবস্থা আর হইতে পারে না। এমন কি, পতি পুক্র বধে যাদৃশ ছু:থ হওয়া সম্ভব, তদপেক্ষাও তিনি উক্ত ছুঃখকে গুরুতর বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। ফলত 🕍রিদ্রা-ছঃখ, মরণের একটি নামান্তর-মাত্র। দেখ, আমি মহাকুলে জন্মগ্রহণ-পূৰ্ব্বক এক ব্ৰদ হইতে যেন অন্য হ্ৰদে আগতা হইয়া সকলের ঈশ্বরী, সর্ব্ব-কল্যাণবতী এবং স্বামীর সাতি-শয় সমাদর-পাত্রী ছিলাম। পূর্ব্বে স্থক্ছর্গ আমাকে মহামূল্য মাল্য ও অলঙ্কার-নিচয়ে বিভূবিতা, গন্ধা-নুলিগু-স্থনাজ্জিত-দেহা, উত্তমাম্বর-পরিধানা ও পরম-শৃষ্ট। দৃষ্টি করিয়া এক্ষণে দারুণ ছুর্দ্দশান্বিতা দেখি-বেন! হে ৰ্প্লেয়! তুমি যথন আমাকে ও তোমার ভার্য্যাকে 🗓 নহীনা অতিমাত্র স্কুর্বলা দেখিবে, তখন আর তোমার জীবিত থাকিবার ইচ্ছা হইবে না। দাস দাসী ভৃত্যবৰ্গ আচাৰ্য্য ঋত্বিক্ পুরোহিত-প্রভৃতি সকলেই জীবিকা-বিরহে আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া যাইবেন দেখিয়া তোমার জীবনেরই বা প্রয়োজন কি থাকিবে? ভূমি পূর্বে যে সমস্ত প্লাঘনীয় ও যশন্ধর ক্রিয়া-কলাপের অমুষ্ঠান করিতে, এক্ষণে যদি তৎসমুদায় দেখিতে না পাই, ভাহা হইলে আমারই বা হৃদয়ের শান্তি কোথায় ? কোন ত্রাহ্মণ আমার নিকটে যাক্সা করিলে, যদি তাঁহাকে 'নাই' এই কথাটি বলিতে হয়, তাহা হইলে আমার হৃদয় अककारल विनीर्भ इहेन्ना याहेरव ; रकन ना शूर्ट्स कि আমি, কি আমার স্বামী, 'নাই' এ বাক্য কথনই ব্রাহ্মণের প্রতি উক্ত করি নাই। আমাদিগকেই সকলে আত্রয় করিত, আমরা আর কোন কালে কাহারও আত্রয় গ্রহণ করি নাই; স্থতরাং যদি পরের আশুয়ে একণে জীবিকা নির্বাহ করিতে হয়, ভাহা হইলে আমি নিশ্চয়ই,জীবন পরিত্যাগ করিব। অতএব হে ৰংস! অপার ছঃধ-পারাবারে তুমিই

আমাদিগের পারকর্তা হও! প্রবস্থন্য বিপদ-সাগরে তুমিই প্লবের কার্যা কর! ইহাতে তোমাকে যদি অস্থানে স্থিতি করিতে হয়,—যদি ঘোরতর সঙ্কটে পতিত হইতে হয়, তাহাও স্বীকার করিয়া লও! অধিক কি বলিব, আমাদিগের এই মৃত-দেহ-সমূহে कीव-मक्शांत कता। यपि कीवन धात्रापत वामना ना থাকে, তবে সকল শত্রুই পুতোমার সহনীয় হইতে পারে; নতুবা যদি ঈদৃশী क्रीवैर्डि অবলয়ন পূর্বক চিব্লকাল নির্বেদ-পরায়ণ ও ভগ্ন-মনা হইয়া থাকিতে হয়, তবে অবিলয়েই এই পাপ-জীবিকা পরিত্যাগ कत्र। य वाङि मोर्यामानी रुम्न, त्म এक मक वध করিয়াই প্রসিদ্ধি লাভ করিতে পারে। দেখ, পুর-ন্দর একমাত্র বৃত্তান্তরকে নিহত করিয়াই মহেক্র হইয়াছেন ;—সমস্ত দেবগণের উপর প্রভুত্ব লাভ করিয়া চিরকালের নিমিত্ত সর্বলোকের্স্টেশ্বর হইয়া রহিয়াছেন। উৎসাহ-সম্পন্ন বীর-পুরুষ খ্রমরে আছ-नाम প্রথাপন-পূর্বক সন্নাহযুক্ত রণোছুধ শক্রদিগকে আহ্বান করিয়া স্বকীয় যুদ্ধবিক্রম-দ্বারা তাহাদের সেনাগ্রভাগ বিদ্রাবণ অথবা সৈন্যাধ্যক্ষ প্রধান পুরু-ষের নিধন-সাধনানন্তর যখন বিপুলতর যশোলাভ করেন, তখনই তাঁহার অপরাপর অরাতিবর্গও ব্যধিত ও ভীতচিত্ত হইয়া আপনা হইতেই অবনতি স্বীকার করে। পরম্ভ যাহারা কাপুরুষত্ব অবলয়ন করে, তাহারা অবশ হইয়া আত্ম-বিসর্জ্ঞনে সমুদ্যত, तगरक, मोर्गामानी शूक्रयरक मर्यकाम-मञ्जूष दात्र। অবশ্যই পরিপূর্ণ করিয়া থাকে। সাহস-সম্পন্ন সাধু-পুরুষেরা, রাজ্যেরই বিধংস হউক স্লথবা জীবনেরই সংশন্ন উপস্থিত হউক, তথাপি শত্রুকে প্রাপ্ত হইলে তাহার শেষ না করিয়া আর ক্ষান্ত থাকিবার নহেন। অতএব হে সঞ্জয়! কেবল বিক্রম প্রকাশ করিলেই স্বৰ্গারোপম অধবা অমৃত-সদৃশ রাজ্যপদ লক্ষ হই-তে পারে, ইহা হৃদয়ক্ষম করিয়া প্রস্থালিত অলাত-দত্তের ন্যায় শত্রুগণ-মধ্যে নিপতিত হও। হে कब्बिय़। সুমরাঙ্গনে বিপক্ষ বিনাশ করিয়া স্বধর্ম-

প্রতিপাদন কর। আমি যেন তোমাকে শক্তগণের শ্রীবর্দ্ধনকারী ও অতিমাত্র কাতর না দেখি। অশ্বৎ-পক্ষীয়েরা শোক করিতে করিতে এবং বিপক্ষেরা আহ্লাদ প্রকাশ করিতে করিতে তোমাকে চতু-দ্দিকে বেফন করিয়া রহিয়াছে, তুমি অতান্ত দীন-ভাবে তাহাদিগের মধাগত রহিয়াছ দেখিয়া আমি যেন দীনহীনার ন্যায় রোদন না করি! হে পুত্ত। তুমি পূর্ব্বের ন্যায় হৃষ্টচিত্ত হইয়া সৌবীর-কন্যাগণের भ्राघनीय ७ थ्रामान-जाकन २७; व्यवमन रहेशा रेम-ন্ধব-কন্যাদিগের বশগামী হইও না। ত্বাদৃশ ৰূপগুণ-मन्भन्न, विमालझ्छ, भशकूल-मञ्जूछ, लाक-विशाछ, যশস্বী যুবা যে র্ষভের ন্যায় অন্যের আজ্ঞাবহ হইয়া বিসদৃশ ব্যবহার করে, আমার বিবেচনায় তাহাতে আর মরণে কিছুমাত্র প্রভেদ নাই। यদ্য-পিস্যাৎ আমি ভোমাকে পরের চাটুকার হইতে অথবা কিন্করের ন্যায় পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে দেখি, তাহা হইলে আমার হৃদয়ের আর শান্তি কোথায় ? অন্যের পৃষ্ঠচর হয়, এমন নরাধম পুরুষ তোমার এই বংশে কমিন্ কালেও জন্মগ্রহণ করে নাই ; অতএব হে বৎস! পরের অমুচর হইয়া তো-মার কদাপি জীবন ধারণ করা উচিত হয় না। ক্ষজ্ঞিয়গণের যেৰূপ চিরপ্রসিদ্ধ পরম ধর্ম, তাছা আমার বিলক্ষণ বিদিত আছে; পূর্ব্ব পূর্ব্ব ও পর পর পণ্ডিতেরা ভদ্ধিবরে যে কিছু উক্তি করিয়াছেন এবং প্রজাপতি বিধাতাও তাহাকে যাদৃশ চিরস্তন ও অবায়-ৰূপে বিনিশ্মিত করিয়াছেন, তাহা আমি বিশেষ ৰূপে জানি। পৃথিবী-মধ্যে কোন প্ৰসিদ্ধ ক্ষজ্রিরবংশে উৎপন্ন হইয়া যে ব্যক্তি সর্ব্ব-ধর্ম্মের যথাৰ্থ সন্মাভিজ্ঞ হয়, কেবল জীবনমাত্ৰ প্ৰতীক্ষা করিয়া ভয়প্রযুক্ত শত্রুর নিকটে অবনতি স্বীকার কর। তাহার কোন মতেই কর্ত্তব্য নহে। উদ্যুষ্ পুরুষকার: অতএব সতত উদামশালীই হইংব্রক, कियान् कारमञ्ज व्यवन्य इट्रिक ना ; बन्नक व्यविक् च्रत्न जग्न पर्थार ज्वार्य मृज स्ट्रेर्वक, जर्थान কাহারে। নিকটে অবনতি স্বীকার করিবেক না।
মহামনা বীরপুরুষ মন্ত-মাতক্ষের ন্যায় অকুতোভয়ে
বিচরণ করিবেন; কেবল ধর্মান্তুরোধে ব্রাহ্মণগণসন্ধিধানে নিতাকাল অবনত হইবেন, নতুবা অপর
সমস্ত বর্ণকেই বল-পূর্ধক স্ববশে আনয়ন করিয়া
যাবতীয় ছন্ধর্মের ধংসবিধান করিবেন; তদ্ধারা
যদি সমধিক সহায়-সম্পন্ন অথবা একবারে নিঃসহায়
হইয়া পড়িতে হয়, তথাপি যাবজ্জীবন সেইবপ
অনুষ্ঠান-পরায়ণ হইবেন।

বিছুলা-পুক্তামুশাসনে চতুস্ত্রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৩৪॥

পুত্র কহিলেন, হে অমর্থনে অকরণে বীরাভিমানিনি জননি! বোধ হয়, স্কুকঠোর ক্রফলোহের
দংঘাত-দারা বিধাতা তোমার এই কঠিনতর হুদরের নির্মাণ করিয়াছেন। হায়! ফাত্রিয় ধর্ম কি
বিচিত্র! যাহার অনুরোধে তুমি আমাকে ইতরের
নায় জ্ঞান করিয়া সমরের করাল-কবলে নিক্ষিপ্ত
করিতেছ!—গর্ত্তধারিণী জননী হইয়াও যেন পরমাতার নায় এই একমাত্র পুত্রকে ঈদৃশ বচন-বাণে আবিদ্ধা করিতেছ! তোমাকে এই এক কথা জিজ্ঞাসা
করি, তুমি যদি আমাকেই দেখিতে না পাও, তাহা
হইলে তোমার এই সমগ্র-ভূমঙল, আভরণ, ভোগস্থথ অথবা জীবিতেরই আর প্রয়োজন কি? ঈদৃশ
বিশিক্ত প্রিয় পুত্র সঙ্গ-রহিত হইলে তোমার জীবন
লইয়া আর কি হইবে?

মাতা কহিলেন, সঞ্জয়! বিচক্ষণ মানবগণের সকল কর্মাই ধর্মা ও অর্থের নিমিত্তে আরক্ষ হইয়া থাকে; আমি সেই ধর্মার্থের প্রতি লক্ষা করিয়াই তোমাকে যুদ্ধার্থে নিষোজিত করিতেছি। দেখ, তোমার পরাক্রম প্রদর্শন করিবার এই মুখ্যকাল উপস্থিত হইন্যাছে; অতএব এই উপস্থিত সময়ে তুমি যদি কর্ম্বর কর্মোর অনুষ্ঠান না কর, তাহা হইলে লোকসমাত্তে অসম্মানিত হইয়া আমার অতিমাত্র অনি-

ফাচরণ করিবে। তোমার আর অর্থ-সম্পত্তি বা খ্যাতি-প্রতিপত্তি-লাভের কিছুমাত্র সম্ভাবনা থাকিবে না। তোমাকে অপ্যশ-এন্ত হইতে দেখিয়াও আমি যদি স্নেহ-প্রযুক্ত তাহার নিবারণার্থে কোন কথা না বলি, তাহা হইলে আর কোন ক্রমেই যুক্তি-সম্মত যথার্থ স্নেহের কার্য্য করা হয় না; তাদৃশ বাৎসল্যকে পণ্ডিতেরা দামর্থ্য-খূন্য অহেতুক গর্দ্ধভী-বাৎসল্য বলিয়া উর্ক্ত করেন। অতএব হে সঞ্চয়! মুখগণের অবলয়িত সাধুজন-বিগর্ছিত অসৎ পথ পরিত্যাগ কর। দেখ, এই জ্গতীতলে মহতী অবিদ্যা প্রায় সর্ব্বত্রই বিরাজ করিতেছে এবং অনে-কানেক প্রজাপুঞ্জও উহাকে আশ্রয় করিয়া রহি-য়াছে; ঐ অবিদ্যার হস্ত হইতে মুক্ত হইয়া তুমি यिन मनाठाती रू७, जाहा रूरेलारे आमात व्याः হইবে; ধর্ম্মার্থ-গুণযুক্ত, দৈব মানুষ-কর্ম্মোপেত, সাধু গণ-সমাচা[:ত একমাত্র সদৃত্ত ব্যতীত ভুমি আর কিছুতেই আমার প্রীতিভাজন হইতে পারিবে না। যিনি উক্তৰপ সদৃত্ত-সম্পন্ন স্থবিনীত পুত্ৰপৌত্ৰাদির প্রতি প্রীতিপরারণ হন, তাঁহার প্রীতিই যথার্থ প্রীতি; নতুবা যে ব্যক্তি অনুদ্যমশালী ছুর্ব্বনীত মন্দবুদ্ধি তনয়ের প্রতি প্রীতি করে, তাহার সন্থা-নের ফলই এককালে ব্যর্থ হইয়া বায়। মন্ত্রবোচিত কর্ত্তব্য কর্ম্মের অনুষ্ঠানে পরাত্মুখ, প্রভ্যুত নিন্দনীয় নিরুষ্ট কর্মা করণে সাতিশয় 'আগ্রহান্বিত পুরুষাধ-মেরা না ইহকালে, না পরলোকে কুত্রাপি স্থখলাভ করিতে পারে না। হে সঞ্জয়! তুমি নিশ্চয় জান, কেবল যুদ্ধ ও জদ্ধের নিমিত্তই পৃথিবীতে ক্ষজিমের স্ফি হইয়াছে। ক্ষজ্রিয়, শত্রুদিগকেই পরাজিত করুক অথবা আপনিই বধ্যমান হউক, উভয়থাই ইন্দ্ৰলোক প্ৰাপ্ত হইয়া থাকে। মিত্ৰবৰ্গকে বশবৰ্ত্তী করিয়া ক্ষত্রিয় পুরুষ যাদৃশ স্বখ-সমৃদ্ধির অধিকারী হয়, স্বর্গে পুণাতম শক্ত-ভবনেও তাদৃশ হংগ প্রাপ্ত হইতে পারে না। মনস্বী ব্যক্তি বিপক্ষগণ-কর্তৃক বছবার পরাভূত হইলে কোপ-তাপে দহমান ও

নিশ্বি।-পরবশ হইয়া, হয় আয়-বিসর্জ্ঞান করিবেন, ।
না হয় শক্রবর্গকে একবারেই বিনিপাতিত করিয়া
কেলিবেন; এতভিন্ন আর কি প্রকারে তাঁহার হদয়ের শান্তি হইতে পারে? ইহ সংসারে প্রজ্ঞাবান্
পুরুষ অতাশ্প বস্তুকে অপ্রিয় বোধ করেন; অতাশ্প
বস্তু যাহার প্রিয় হয়, তাহার সেই অশ্প বস্তুই
নিশ্চয় অনিইকর হইয়া বাকে। প্রিয়-পদার্থের
আত্যন্তিক অভাব হইলে পুরুষের আর কিছুমাত্র
কল্যাণ লাভের সম্ভাবনা থাকে না, বরং সাগরবিলীন জাহুবীর ন্যায় একবারেই সর্ব্বাভাব হইয়া
উঠে।

পুত্র কহিলেন, জননি! এরপ অভিপ্রায় ব্যক্ত করা ভোমার কর্ত্তবানহে, বিশেষত পুত্রের প্রতি ঈদৃশী প্রবৃত্তি দেওয়া কোন ক্রমেই উচিত হয় না; এ সময়ে জড় অথবা মুকের ন্যায় নিক্ষভাবে থা-কিয়া কেবল কারুণা প্রদর্শন করাই বিথেয়।

মাতা কহিলেন, বংস! তুমি যে একপ বিবেচনা করিলে, ইহাতেই আমার ভূয়দী প্রীতিলাভ হইল; আমার প্রতি যেকপ নিয়োগ করিতে হয়, তুমি তাহাই করিতেছ এবং আমিও তদমুসারে তোমা-কে সমধিক করুণাকর বিষয়েই পুনঃপুন প্রেরণ করিতেছি। তোমা-ছারা অথ্যে যাবতীয় সৈম্বাব-গণকে নিহত করিয়া পশ্চাৎ তোমার ভূরি ভূরি প্রশংসা ও সমাদর করিতে থাকিব। অধিক কি? তোমার যে সম্পূর্ণ কপেই বিজয় লাভ হইবে, তাহা যেন আমি ক্ষাইই দেখিতেছি।

পুদ্র পুনরায় কহিলেন, আমার না আছে অর্থবল, না আছে সহায়-সম্পত্তি, কিছুই নাই; তবে
আর কি প্রকারে বিজয় লাভ হইতে পারে; আঁপনার ঈদৃশী দারণ ছুরবস্থা জানিয়াই আমি আপনা
হইতে সে প্রত্যাশার নিরস্ত হইয়া রহিয়াছি; ছৢয়র
অর্গলাভের নায় আমার রাজালাভের অভিপ্রার্থ
নির্দ্তি পাইয়াছে। অতএব হে পরিণত-প্রজ্ঞে!
আমি রুতকার্যা হইতে পারি, যদি এতাদৃশ কোন

উপার দেখিতে পাও বিশেষ করিয়া ব্যক্ত কর। তোমার সেই অমুশাসন আমি সম্পূর্ণ রূপেই প্রতিপালন করিব।

মাতা উত্তর করিলেন, বৎস! 'সমৃদ্ধি হইবে না-' পূর্বেই এৰপ চিন্তা করিয়া আত্মাটক অবমানিত করা কর্ত্তব্য নহে, কেন না ঘটনাক্রমে পূর্ব্বাসিদ্ধ অর্থেরও উৎপত্তি হইতে পারে এবং উপস্থিত ধনে-রও বিনাশ হইতে পারে। সমুচিত উপায় প্রয়োগ করিলে অবশ্যই সমৃদ্ধির সংস্থিতি হয়; নির্বোধত। প্রযুক্ত কেবল অমর্থমাত্র অবলম্বন করিয়াই অর্থের আরম্ভ করা কর্ত্তব্য নহে। হে তাত। সর্ব্ব প্রকার কর্ম্মেরই ফলসিদ্ধি বিষয়ে নিয়ত অনিত্যতা দুই হইয়া থাকে। যাহারা ফলের অনিত্যত্ব স্থির করি-য়াও কর্মের অনুষ্ঠানে পরাজুখ না হয়, তাহাদিগের অভীফ-সিদ্ধি হইতেও পারে, না হইতেও পারে ; কিন্তু অনিশ্চিত বোধে যাহারা একবারেই অমুষ্ঠানে বিরত হয়, তাহারা আর কশ্মিন্ কালেও ক্তকার্যা হইতে পারে না। কর্মের চেন্টা না করায় এক-বারেই কলের অভাব, এই একসাত্র গুণ, আর চেটা করাতে ফলসিদ্ধি হওয়া না হওয়া উভয় গুণই সম্ভ-বিতে পারে। হে রাজপুত্র! আরম্ভ করিবার পূর্ব্বেই যে ব্যক্তি সর্ব্ব কর্ম্মের অনিভ্যত্ব নিশ্চয় করির৷ ভয়োদ্যম হয়, সে বৃদ্ধি ও সমৃদ্ধি উভয়কেই প্রতি-কূলবর্জিনী করে। অতএব 'নিশ্চরই কার্যাসিদ্ধি হই-বেক ' এইৰূপ মনে করিয়া সতত অব্যথিত চিভে উদ্যম-পরায়ণ হওয়া, কার্য্যসাধনে জাগনক থাকা এবং মাঙ্গল্য-কর্ম্মের অন্তুষ্ঠানে তৎপর হওয়া কর্ত্তব্য। হে পুত্র! যে প্রজ্ঞাবান্ নরপতি দেবতা ও বান্ধণ-গণের আরাধনা এবং স্বস্তায়নাদি যাবতীয় মাঙ্গলিক কর্মের অনুষ্ঠান করিরা অভীষ্টসিদ্ধি বিষয়ে ক্লড-সংকল্প হরেন, অৰশ্যই তাঁহার এইদ্ধি হয়। পূর্ব দিক্ যেমন দিবাকরকে আলিঙ্গন করে, সেইজ্বপ नक्नीरमरी याशमा रहेर७हे छोहारक यानिक्रम করেন। হে সঞ্জয়! আমি উপদেশার্থে যে সমস্ত নি-

पर्णन, উপाय ও উৎসাহ-जनक वाकामि वेनिनाम, তোমাকে ভাহার অমুৰপই দেখিতেছি; অতএৰ जुमि निःमः भएत श्लोक्षय ध्वकाम कर । मर्क ध्वयपु-সহকারে অভিপ্রেত পুরুষার্থ সমাহরণে সমুৎস্তৃক হও। ভোমার শক্রর প্রতি বাহারা কুন্ধ রহিয়াছে, যাহারা লোভের বশীভূত আছে, শত্রুরা যাহাদিগকে পরিকীণ করিরাছে, যাছারা বিমানিত হইয়াছে, ৰাহার। গর্বিত হইরা রহিয়াছে এবং যাহার। শত্রুর সহিত সংগ্রামার্থে স্পর্দ্ধা করিতেছে, সমুচিত যত্ন-পরায়ণ হইয়া সেই সমন্ত লোকদিগকে হন্তগত কর। তাহাদিগের অগ্রিম বেতন প্রদান কর এবং কল্যাণ-मन्भारत উদ্যমশালী ও প্রিয়য়দ হও। এইৰূপ করিলেই ভুমি, সহসা-সমুদ্দৃত প্রবল বেগযুক্ত সমীরণ বেমন ঘনতর ঘনঘটাকে ছিন্ন ভিন্ন করে, সেইৰপ ঐ বছসংখ্যক মানবগণকে অনায়াসে ভেদ করিতে সমর্থ হইবে এবং তাহারাও তোমারে প্রীতিভাজন ও অগ্রবর্ত্তী করিবে, সন্দেহ নাই। শত্রু যখন জা-নিতে পারে বে, বৈরী জীবনের প্রতি আস্থা-খূনা হইয়া যুদ্ধার্থে উদাম প্রকাশ করিতেছে, তথনই গৃহ-স্থিত সর্পের নাায় তাহা হইতে ভীত হয়। তাহাকে পরাক্রান্ত জানিয়া সে যদি বশীভূত করিতে চেফা পায়, ভবে সামদানাদি-ছারা অমুকুলে ব্যবস্থাপিত করিবেক; তাহা হইলে কলে ফলে তাহারে বশী-ভূত করা হইবে; কারণ, সন্ধি স্থাপন দারা স্থান-লাভ করিলে কখন ধনের রৃদ্ধি হইলেও হইতে পারে। পুরুষ ধনশালী হইলেই মিত্রেরা তাঁহারে ভজনা করেন এবং আত্রয় ৰূপে অবলয়ন করিয়া থাকেন; কিন্তু দৈবক্ৰমে তিনি যদি অৰ্থ-সম্পত্তি হুইতে পরিচ্যুত হন, তাহা হুইলে সেই মিত্রগণ ও ৰান্ধৰৰৰ্গ, সকলেই তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া যান ; কেবল পরিভাগে নহে, ঘৃণী করিভেও নিরন্ত इन मा। य बाज्जि नेकंटक महोत्र क्षिया विश्वेष्ठ ৰাকে, তাহার যে কোন কালে দ্বাজ্যপ্রাপ্ত হওরা,

সে কেবল সম্ভাবনামাত্র, কার্যো কলিও হইবার নহে। বিছ্লা-পুত্রান্তুশাসনে পঞ্চত্রিংশদধিক শতভ্য স্থ্যার সমাপ্ত । ১৩৫ ॥

মাতা কহিলেন, সঞ্চয় ! রাজার পক্ষে যে কোন আপদ্ উপস্থিত হউক না কেন, কদারা ভয়-ব্যাকুল रु७ हा कथनरे छेठिछ नुदेर; यपिछ मतन मतन भक्रांत আবিৰ্জাব হয়, তথাপি বাছে সেৰূপ ভাব প্ৰদৰ্শন করা হইবে না; কেন না রাজাকে অবসন্ধ-চিত্ত দেখিলে রাষ্ট্র, বল, অমাত্য-প্রভৃতি সকলেই ভাঁতি-বিহ্বল ও ভিন্নমনা হইয়া পড়ে। তাদৃশ অবস্থায় কেহ কেহ প্রভুকে পরিত্যাগ করে, কেহ বা শক্রর আত্রয় লয় এবং যে সকল ব্যক্তি পূর্বের বিমানিত হইয়া থাকে, তাহার স্থােগ পাইয়া প্রহার করি-বার ইচ্ছা 뤗রে। যাঁহারা অত্যন্ত স্থক্ত্ তাঁহারাই কেবল প্রাৰ্ভুভক্তি-পরতন্ত্র হইয়া স্বামীর উপাসনা করেন। কলাণ-সাধনে অভিলাষী হইলেও অসা-মর্থ্য-প্রযুক্ত তাঁহাদিগকে বন্ধ-বৎসা ধেমু-নিচয়ের ন্যায় নিশ্চেট থাকিতে হয়। স্থতরাং বান্ধবরুন্দকে পতিত দেখিয়া বান্ধবেরা যেমন শোক করেন, ঐ বিশ্বত স্কুদর্গও সেইৰূপ অমুশোক-পরায়ণ স্বামীর প্রতি শোক করিতে থাকেন। ফলত স্বামী বাসন প্রাপ্ত হইলে ঘাঁহারা কায়মনো-বাক্যে, তাঁহার রাষ্ট্র-রক্ষার বাসনা করেন, ভাঁহারাই যথার্থ অভিমত স্থন্দ্ এবং পূর্বের পূর্বের যাহারা পূজিত হইয়া থাকে, তন্মধ্যে তাঁহাদিগের পূজা করাই সার্থক। অভএব হে পুত্ৰ! তাদৃশ্স্ক্ৰগৰ্কে তুমি যেন ভয়-ব্যাকুলিত করিও না; তোমাকে শঙ্কাভিভূত দেখিরা তাঁহারা যেন পরিত্যাগ না করেন। তোমার প্রভাব, পৌরুষ ও বুন্ধি-পরিজ্ঞানে অভিলাষিণী হইয়া আমি যে এই नकल कथा विनिनाम, त्म त्कवन आयोग-विधान ও তেলোবর্জন নিমিত্তই জানিবে। যদি ইহা সমাক্ ৰূপে তোমার বোষগমা হয় এবং আমি

ষশার্থই বলিতেছি, বলি একপ প্রতীতি হইরা থাকে,
তবে ধীরতা অবলয়ন-পূর্বক জয়ার্থে উল্লুক্ত হও।
হে সঞ্চয়! আমাদের একটি অতিবিন্তীর্ণ বিশাল
ধনাগার আছে; তাহা তোমার বিদিত নাই; আমা
ডিল তাহা আর কেহই জানে না; তাহাতে যে
বিপুল অর্থরাশি আছে, সকলই তোমাকে প্রদান
করিতেছি। হে বীর! এজন্তিল তোমার অনেক
শত মহামূল্য স্থযোগ্য স্থহাদাণও বিদ্যমান রহিয়াছেন; তাঁহারা সকলেই স্থগতুংখ-সহ এবং সকলেই
অপরাজ্মধ। হে শক্রকর্ষণ! কোন কল্যাণকামী
পূরুষ বল-পূর্বক কোন প্রকার ইন্টার্থ আহরণের
অভিলাষ করিলে, তাদৃশ সহায়েরাই তাঁহার যথার্থ
সচিবের কার্যা করিয়া থাকেন।

সঞ্জয় স্বভাবত স্বম্পেচেতা হইলেও জননীর ঈদৃশ স্থৃচিত্র-পদপদার্থ চিত্তহর অনুশাসন-ব্ব্যু অবণে তৎক্ষণমাত্র তাঁহার সেই ভয় ও অবসাটে র অবসান হইল। তথন তিনি সাহসে ভর করিয়া কহিলেন, জননি! ভাবি-কল্যাণ-দর্শিনী ভুমি যখন আমার শিক্ষরিতী রহিয়াছ, তখন আর আমার কিছুই অসাধ্য নাই। আমি উদক-মধ্যে নিমগ্নপ্রায় এই পৈতৃক রাজ্যের হয় উদ্ধার করিব, না হয় সমরে প্রাণ বিসর্জন করিব। তোমার উপদেশ প্রদান-नमदत्र व्यामि धात्रहे निस्क-जाद हिलाम, क्वल মধ্যে মধ্যে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ প্রত্যুক্তর করিয়াছি-লাম; তাহার তাৎপর্য্য এই, যে, তোমার অপরাপর অমুশাসন-বাকা ভাবণ করিতে পাইব। তুর্লভ অমৃত-পানে যেমন পরিতৃপ্ত হওয়া যায় না, সেইৰূপ ত্র্দীয় ৰচন-স্থাস্থাদনের বলবতী আকাজ্ঞা নির্ভা না হওয়াতেই আমি মৌনাবলয়ন করিয়াছিলাম; এই দেখ, এক্ষণে শক্তশাসন এবং বিজয়-লাভের নিমিত্ত **এই উদ্যম-পরায়ণ হইলাম।**

কৃষী কহিলেন, বিছুলার স্থতীক্ষ্ণ বাক্যবাণে এই-ৰূপে প্রবিদ্ধ এবং সদখের ন্যায় উত্তেক্ষ্ণিত হইয়া সঞ্জয় তাঁহার শাসনামূৰণ সমস্ত কার্যাজাত অবাধে

নিষ্পন্ন করিয়াছিলেন। কোন মহীপতি শঙ্কণীড়িত' ও অবসাদ প্রাপ্ত হইলে, মন্ত্রী অরাভিদলনের উৎকৃষ্ট উপারভূত এই অমুন্তম তেকোবর্জন র্ভান্তটি ভাঁহা-त्र **अव** कत्राहेत्वन । विकिशीषु वास्तित कर्-नामक এই ইতিহাসটি অবণ করা অতীব কর্ডব্য। যে ব্যক্তি একবারমাত ইহা কর্ণগোচর করে, সে অচিরেই वस्था-विकास वर भक्रमर्कत नमर्थ इस। शक्रिंी স্ত্রী বীর পুদ্র জননের হেতৃভূত ও পুংসবন-স্বৰূপ এই রমণীয় র্জান্তটি পুনঃপুন অবণ করিলে অব-শাই শুরবীর কুমার উৎপন্ন করেন। যে কোন क्षित्रा त्रम्भी मत्नानित्यम-शृक्षक हेरा ध्वव करत्रन, তিনি নিশ্চয়ই বিদ্যা-বীর, দান-বীর, তপস্যা-বীর, बाक्नीत्नाजात्र त्मनीशामान, माधुनन-नननीत्र, त्यात्र-তর তেজন্বী, মহাবল-সম্পন্ন, মহাভাগ, মহারথ, धृजिमील, कूर्कर्य, नर्सविकश्ली, ज्ञानाक्त, ज्ञाध्-গণের শাসনকারী, ধর্মচারি-নিচয়ের রক্ষাকর্ত্তা, সত্যবিক্রম, বীর তনয়ের জননী হইতে পারেন, मत्मर नारे।

বিছুলা-পুত্রানুশাসনে বট্ত্রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৩৬ ॥

কৃতী কহিলেন, হে কেশব! তুমি অর্জুনকে আন্মার নাম করিয়া এই কথা বলিবে, "বৎস। তোমানিক প্রেন করিয়া বৎকালে আমি নারীর্দ্ধে পরিবৃত্তা হইয়া আশুম-সন্নিধানে উপবিন্টা ছিলাম, তথন অন্তরীক্ষে এই একটি মনোহারিণী দৈববাণী হইয়াছিল "কৃত্তি! তোমার এই পুশুটি নাক্ষাৎ সহজ্রাক্ষের তুল্য হইবেন। ইহাঁর যশ অর্গ-স্পর্শ করিবে। ভীমসেনকে সহায় করিয়া ইনি সমগ্রন্থা-বিজয়-পূর্বকে সর্বলোক প্রমণিত করিবেন; বাহ্মদেবের সাহাব্যে সংগ্রামে সমবেত সমস্ত কৌরব-দিগকে পরাভূত করিয়া অপহৃত পৈতৃক রাজ্যাংশ্যর পুনরুকার করিবেন এবং আতৃবর্গে ক্ষিলিত হইয়া তিনটি মহাব্যেরের অনুষ্ঠান করিবেন গা হে

° দাশাৰ্হ অচ্যুত! মেই সব্যমাচী বীভৎস্থ যেৰূপ সভ্য-সন্ধাও অক্ষ্ম-সন্ধ্ৰ-সম্পন্ন, তুমি তাহারে সেইৰূপ বলবান্ ও ছুক্কাসদ বলিয়া জান; অতএব দৈববাণী বাহা:ৰলিয়াছিল, তাহাই যেন সি**দ্ধ** হয়। হে যতু-নক্ষন! যদি ধর্মা থাকেন, তবে অবশাই তাহা সত্য হইবে—তুমিই সর্ব্ব-প্রয**েদ্ধ** তাহা সম্পন্ন করিবে। ফলত উক্ত আকাশবাণী-দারা যাহা ব্যক্ত হইয়াছে, আমি কোন ক্রমেই তাহার প্রতি দোবারোপ করি-তে পারি না; মহীয়ান্ ধর্মকে সর্বাধা নমস্কার। ধর্মাই এই অধিল-প্রজাপুঞ্জের একমাত্র ধারণ-কর্তা।

হে কৃষণ! ধনঞ্জয়কে ঐ ৰূপ কহিয়া নিত্য-উদ্যম-শानी वृत्कामत्रदक्छ এই कथा विनाद "काळिया-রমণী যদর্থে পুত্র প্রসৰ করেন, তাহার উপযুক্ত সময় এই উপস্থিত; পুরুষভোষ্ঠ বীরবরের৷ বৈর প্রাপ্ত হইয়া কখনই অবসন্ন হন না^স। হে মাধব! ভীমের বুদ্ধি তোমার চিরকাল বিদিত আছে ; সেই শক্তদলনকারী রকোদর যে পর্যান্ত অরাতিবর্গের সংহার করিতে না পারেন, সে পর্যান্ত তিনি আর শास्त इष्ट्रात नरहन।

হে কৃষণ! মহাত্মা পাওরাজের পুত্রবধ্, সকল-धर्मात मित्रिक छानवजी यमित्रनी कनाभी कृष्णरक এই कथा विलय " हि महकूल-मञ्जू छ ! हि महा-ভাগে! হে মনস্বিনি! আমার সমুদয় পুত্রগণের প্রতি ভুমি যে সাধীসমুচিত যথাবং আচরণ করি-রাছ, ভাহা তোমার উপযুক্তই বটে ^৯।

হে পুরুষোত্তম! অনন্তর ক্ষত্রধর্ম-নিরত মাদ্রী-পুজ-ছয়কেও কহিবে " বৎসগণ! তোমরা প্রাণপণ করিরাও বিক্রমার্চ্চিত ভোগ-স্থবের প্রার্থনা কর; रस्टर्जू विकास-शक्त वर्षरे क्रज्यधर्म-कीवी मञ्जूरवात সর্বদা সর্গ্ঞীতিকর হয়। দেখ, তোমরা সর্ব-ধর্মের সঞ্চায়ক ক্ইলেও ভোমাদিগের সাক্ষাৎ-कारतहे शाक्षानीरक शहर-वाका-ममख दा छेङ हहे-রাছিল, কোন্ কজির পুরুষ ভা্হা সহ করিতে পারে ? हि कृष्ण ! शूक्रविरभन्न ताकाहत्र । ज्ञानात | क्रिएं नागितन अवः नकत्वरे अकवाका हरेशा

ছুঃৰ নাই, দ্যুতপরাজয়েও পরিতাপ নাই এবং বনে গমন করাও শোকের কারণ নহে; কিন্তু রেই প্রতি-व्यागा नर्साक-अन्मती महीयनी क्वोशनी त्य मजा-मत्था রোদন করিতে করিতে ছুরাত্মগণের কটুক্তি-সমস্ত অবণ করিয়াছিলেন, ভাহাই মর্মবিদারক ছোরভর ছংখ। আহা! ক্ষত্রধর্ম্মে নিত্য-নিরতা জ্রীধর্মযুতা বরারোহা পাঞ্চালী স্কৃত্তম-নাথবতী হইয়াও তৎ-কালে অনাধা হইয়াছিলেন! হে মহাবাহো কেশব! তুমি সেই সর্ব্ব-ধনুর্দ্ধারিশ্রেষ্ঠ পুরুষব্যান্ত অর্জুনকে বিশেষ করিয়া এই কথা বলিও, যেন তিনি দ্রৌপ-দীর প্রদর্শিত পথেই বিচরণ করেন। ভীমার্জ্জুন অত্যন্ত কুদ্ধ হইলে যেন যমজ-যম-যুগলের ৰূপ-ধারণ করিয়া অমরগণকেও যে মরণ-মার্গে উপনীত করিতে পারেন, তাহা তোমার বিলক্ষণ বিদিত আছে। তঁ হ্লারা এতাদৃশ বীর্য্যসম্পন্ন হইলেও তাঁহা-দিগের প্রিমহিবী পাঞ্চালী যে সভাস্থলে আনীতা হইয়াছিলেন, ইহার অপেক্ষা অধিক অপমানের বিষয় তাঁহাদের আর কি হইতে পারে? হে জনা-র্দন! কুরুবীরগণের সমক্ষে ভীমকেও ছুংশাসন যে কটুবাকা-সকল বলিয়াছিল, তাহাও পুনরায় স্মরণ করাইয়া দিও। আমার নাম করিয়া সপুত্র-কলত পাণ্ডবদিগকে কুশল-বার্তা জিজ্ঞাসা করিও এবং আমারও কুশল-বার্ভা বিজ্ঞাপন করিও; এক্ষণে নির্বিদে শুভ পথে প্রস্থিত হও এবং তথায় উপ-স্থিত হইয়া আমার পুজ্রদিগকে প্রতিপালন কর।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনম্ভর মহাবাছ কৃষ্ণ কুন্তীকে অভিঝাদন ও প্রদক্ষিণ করিয়া মৃথেলের ন্যায় সবিলাস-সঞ্চারে তদীয় আবাস হইতে নির্গত ररेलन এवः जीवापि क्रूश्व्यक्तिप्रक विषाय প্রদান-পূর্বক কেবল কর্ণকে রথোপরি আরোহণ করাইয়া সাভাকি-সমভিব্যাহারে প্রস্থান করিলেন। যতুনন্দনের গমনান্তে কৌরবেরা নির্ম্পনে সমবেত হইরা তদীর পরমাদ্ভুত মহদাশ্র্যা র্ভাত্তের জপ্পন।

এইবল অভিগ্রায় ব্যক্ত করিলেন, "এই সমগ্র ভূমগুল মোহাজিত ও মৃত্যুপালের বণীভূত হই-রাছে। ছূর্যোগনের মুখ ভা লোবে এই রাই অবশ্যই সংহার দশায় উপনীত হইবে "।

এ দিকে সকল-যাদবগণের হর্ষবর্দ্ধন পুরুষোত্তম ক্ষণ, নগর হইতে নির্গমনানন্তর বহু ক্ষণ পর্যান্ত কর্নের সহিত মন্ত্রণা করিলের পরে তাঁহাকে বিদার করিয়া মহাবেগে শাঘ্র অখ চালাইয়া দিলেন। মন ও প্রনের ন্যায় মহাবেগশালী সেই সমন্ত বাহনগণ দারুক-কর্তৃক পরিচালিত হইয়া যেন উর্দ্ধাসে আকাশ পান করিতে করিতে চলিল এবং অতি ক্রত-গামী শ্যেন প্রকার ন্যায় মুহুর্ভ-মধ্যে বহু পথ অতিক্রম করিয়া শাক্ষ ধন্বা ক্রফকে অচিরেই উপপ্রব্য নগরে উপনীত করিল।

কৃষ্ণ-প্রত্যাগমনে সপ্তত্তিংশদধিক **গ্রু**ততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৩৭॥

-

रेवमन्शान्नन कहिरलन, कुछीरमवी क्रकरक रय मकल কথা কহিয়া দিলেন, মহারথ ভীয়া ও জোণাচার্য্য তৎসমুদায় শ্রবণ করিয়া শাসনাতিবর্তী ছুর্য্যোধনকে विलितन, एर श्रूक्षवताख! क्मव-मन्निधान कुछी যে উগ্রতর ধর্মার্থযুক্ত অনুত্তম বাকা উক্ত করি-লেন, তাহা কি তোমার শ্রুতিগোচর হইল ? বাস্ত্র-দেবের প্রীতিপাত্র তদীয় তনয়েরা উক্ত উপদেশ-वाका व्यवनारे श्राजिभानन कत्रित्वन । एर कोत्रव ! পূর্ণের তাঁহারা ধর্মপাশে নিৰদ্ধ থাকিয়া তোমা হইতে বিস্তর ক্লেশ পাইয়াছিলেন, একণে রাজ্য-नाज-वाजित्रारक कान जन्म भाग रहेरवन ना। সভা-মধ্যে তুমি জেপদীকে যে অনির্বাচনীয় ক্লেশ দিরাছিলে, গুল ধর্মভরে ভীত হইরাই তাঁহারা ভোষার দেই দৌরাক্সা সহু করিয়াছিলেন; কিন্তু অধুনা আর সে ধর্ম-ভন্ন নাই ; এক্সনে রুভাস্ত ধন-প্তার, দৃট্দসংকণ্প : হকোদর, : গাণ্ডীৰ কোমণ্ড, ভি অক্ষয় जूनीन-यूननः किनिश्व तथ, अनीय-यनवीर्या-नमस्तिज

नकूल गररपर धर अकुष्ठिछ-शत्राक्तम विविकागरक সহার পাইরা <u>যুখিতির আর কোন প্রকারেই কাঙ</u> হইবার নহেন। হে মহাবাহো। ইতি পূর্বে বিরাট नगरत वीमान् भार्थ वीत वकाकीर जामाहिशस्क त्व যুক্ষে বিনিজ্জিত করিয়াছিলেন, ভাহা ও ভোমার প্রতাক্ষই আছে। ভত্তিন্ন নিবাতক্রচাদি ছোর-বিক্রম দানবগণ সেই রৌক্রাজ্রধারী বানরকেভনের প্রতাপানলে দক্ষ হইয়াছিল। অপিচ ঘোষযাত্রা কালে কর্ণ-প্রভৃতি এই সকল মহারথগণ এবং করচ-ধারী ও রথাকঢ় ভূমি, সকলেই ভোমরা অর্জুনের বাছবলে গল্পৰ্ব-হন্ত হইতে মুক্তি পাইরাছিলে। এই সমত্ত ব্যাপার**ই তাঁহার পরাক্রমের প**র্য্যাপ্ত নিদর্শন। অতএব হে ভরত**ভ**ৈষ্ঠ। ভ্রাতৃবর্গে মিলিজ হইয়া পাণ্ডবদিপের সহিত সন্ধিবন্ধন কর। ক্লভা-ন্তের দন্তান্তর্গতা এই সসাগরা বস্থলরার পরিতাণ কর। বিবেচনা করিয়া দেখ, যুখিন্ঠির তোমার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা, ধর্মানীল, বংসল, প্রিয়য়দ ও পণ্ডিত; অত-এব পাপাশয় পরিহার করিয়া ভাদৃশ পুরুষ-প্রবীরের সহিত সঙ্গত হওয়াই তোমার সর্বতোভাবে কর্ডব্য। যুধিষ্ঠির তোমাকে বদি অপনীত-শ্রাদন, প্রশাস্ত-ভুক্টি ও শান্তমূর্ত্তি নিরীক্ষণ করেন, তাহা হইলেই কুরুকুলের শান্তি হয়। অতএব হে অরিন্দম <u>ন</u>ৃপ-নন্দন ! তুমি অমাত্যবর্গের সহিত সমবেত সেই রাজা যুধিন্ঠিরের সমীপবন্তী হইয়া পূর্বের ন্যায় আলিঙ্গন ও অভিবাদন কর। ভীমাগ্রজ কুন্তী-তনর যুধিষ্ঠির তোমাকে অভিবাদন করিতে দেখিয়া ক্লেছ-ভরে পাণিযুগল-দারা ধারণ করুন। **আজামুলন্ধিত**-স্থূগ-বা**হু, সিংহ-কন্ধ, প্রহারি-শ্রেষ্ঠ** ভীমসেন তোমা-কে ভুজ-ছয়ে আলিক্স কর্মন; তদনস্তর কণ্ঞীব কমল-লোচন ধনঞ্জয় অভিবাদন করুন এবং পৃথিবী-মধ্যে অপ্রতিম-রূপ-সম্পন্ন নরব্যান্ত নকুল সহদের व्येष्ठि व्यक्ति-भूर्यक शक्त नाह पातायना क्याना দাশাহ-প্রভৃতি নরপতিগণ ভোষাদিগের বিজ্ঞান নে পুলকিত হইরা আননদাক্র বিসর্জন কর্মন। হে

রাজেন্দ্র ভূমি অভিযাম পরিত্যাগ করিয়া ভাতৃ-গণের সহিত্ত মিলিভ হও এবং সকলে একত্র হইরা এই সমগ্র ধরা-রাজ্যের শাসন কর। সমবেত ভূ-পর্ত্তিগণ হর্বভরে পরস্পর আলিঙ্গন করিয়া স্বস্থ कारन अज्ञान कब्रन। एर वस्र्याधित ! यूरक किছू-माज धारतांकन मारे; स्क्लातांत्र निवातंग-वाका ব্রুবণ করিয়া ভাহাতে প্রবৃত্তি-খূন্য হও। সংগ্রামে क जिय़-कू त्वत व्यवभाषाती सम्मा विनाम-नक्ष मृक्षे **रहे** एड । हि वीत ! तिथ, ब्लाजिः भनार्थ-नकन প্রতিকূলবর্ত্তী হইয়াছে ; বাবতীয় মৃগ পক্ষিগণ ভয়-ক্ষর ভাব ধারণ করিয়াছে এবং ক্ষজ্রিয়-ধংসকর অন্যান্য বছতর উংপাত-সমস্তও দৃতিগোচর হই-ट्टिष्ट् । विटमयङ आमामिटशत्र निद्यमन-मद्धारे छू-র্নিমিস্ত-সকলের অধিক প্রাত্নভাব দেখা যাইতেছে। প্রদীপ্ত-উক্ষা-সমূহ ভোমার দৈন্যগণকে প্রপীড়িত ক্রিভেছে ; বাহন সকল হর্ষশূন্য হইয়া যেন নিরন্তর রোদন-পরায়ণ রহিয়াছে; অশুভাবহ গ্ধু-সমস্ত দেনা-নিচয়ের চতুষ্পার্শ্বে ইতন্তত পরিভ্রমণ করিয়া বেড়াইতেছে; নগর ও রাজভবনের আর পূর্ব্বের ন্যায় শোভা নাই; শিবা-সকল অশিব শব্দ করিতে করিতে প্রদীপ্ত দিবাওলে আশ্রয় গ্রহণ করিতেছে। অতএব হে মহাবাহো! জনক জননীর এবং অস্ম-नामि हिटेजियभागंत वाका श्विजिमान कतः; (मर्थ, শম ও সমর উভয়ই ডোমার আয়ত রহিয়াছে। হে শত্রকর্ষণ! যদি একান্তই স্থত্তর্গর বাক্য রক্ষা না কর, ভবে নিজ বাহিনীকে পার্থবাণে প্রপীড়িতা দেবিয়া অবশাই ভোমারে পশ্চাভাপ করিতে হই-(व;---नःश्वारम विश्वजूना-एकची कीयग-भक्कनकारी जीमहत्तरमञ्ज महानाम अवर भाखीरवन्न व्यव्छ निचन আবণ করিরা জাদাদিদের এই বাক্য অরণ করিতে **इरेटर । यति हेरा टिलामात्र विभन्नील कान रत, लटर** निक्वत्रहे कार्या भन्निगंछ इस्टेंब, मटमह मारे। ্জীন্নজোণ-বাকো অফীত্রংশদ্ধিক শততম

व्यथाय नवास । ১৩৮।

বৈশন্সায়ন কহিলেন, ভীন জোণের এই ৰাফ্য
লবণে মুর্যোধন বিমনা ও অধামুখ হইয়া জন্তরের
মধ্যহল সক্ষৃতিত করত বক্রনয়নে ভূতল নিরীক্ষণ
করিতে লাগিলেন, কিছুই উত্তর করিলেন না। তাঁহাকে সেইৰপ বিমনায়মান দেখিয়া উক্ত নরবরের।
পরস্পার মুখাবলোকন-পূর্বক পুনরায় তৎসির্মানে
উত্তর-বাক্য কহিতে লুশিলেন।

ভীয় কহিলেন, আমরা শুক্রবা-নিরত অস্থা-খুন্য ব্রন্থনিষ্ঠ সভাবাদী পার্থের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিব, ইহার অপেক্ষা অধিক ছুংখের বিষয় আর কি আছে!

দ্রোণ কহিলেন, হে রাজন্! আমার পুত্র অশ্ব-পামার প্রতি আমার যেৰূপ ক্লেহ, ধনঞ্জয়ের প্রতি তদপেক্ষা অধিক। অশ্বত্থামা আমার প্রতি যাদৃশ वष्ट्रमान अक्रार्मन करत्रन, किश्वक उपरिशका अधिक বছমান ও্র্পিন্ততা প্রকাশ করিয়া থাকেন। ক্ষজ্রধর্মের অমুষ্ঠায়ী হইয়া আমাকে পু্ল্রাপেক্ষাও প্রিয়তম সেই অর্জুনের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিতে **হই**বে! অহো! ক্ষজ্রিয়-জীবিকা কি গর্হণীয়া! লোক-মধ্যে খাঁহার তুলা ধন্ত্র্জারী আর কেহই নাই, সেই বী-**७९**स् क्वन यामात्र धनारमरे नर्सारभका ध्वरु হইয়াছেন। যে ব্যক্তি মিত্রদ্রোহী, ছুফীভাব, নান্তিক, সারল্য-খুনা ও শঠতা-পূর্ণ হয়, সে যজ্ঞত্বলে সমাগত মুর্থের ন্যায় কদাপি সাধুসমাজে পূজালাভ করিতে পারে না। পাপাত্মা মমুষ্য পাপকর্ম হইতে পুন:-পুন নিবারিত হইলেও বেমন পাপামুঠানেই অভি-লাবী হয়, সেইজপ পুণ্যান্তা পুরুষ পাপ-ছারা নির-ন্তর উত্তেজিত হইলেও শুক্ক পুণ্য কর্মেরই বাসনা করেন। হে ভরত-সভম! জুমি শঠতা-দারা পাশুব-দিগকে প্রভারিত করিলেও তাঁহারা ভোমার প্রিয়-কার্যা-সম্পাদনে রত আছেন ; পরস্ক ভোমার দোব-সমন্ত কেবল অহিতের নিমিন্তেই কণ্ণিত হুইভেছে। দেশ, কুরুর্ন্ধ ভীয়, আমি, বিছুর ও বাস্থদেব, আম-রা সকলেই তোমারে হিডোপদেশ করিয়াছি; কিন্তু

ভূমি কাহারও বাক্য ভারেক্সান করিতেছ না। ' আ-मान विखन वन चाट्य थहे मटन कतिशारे जूमि তিমিমকর কুত্তীরাদি-সঙ্গুল মহার্ণব তরণেচ্ছু গঙ্গা-বেপের ন্যায় সহসা পাণ্ডৰ-দৈন্য-সাগর উত্তীর্ণ হই-বার অভিলাব করিতেছ। পরিভুক্ত-বসন পরিধান অথবা পরিত্যক্ত মাল্যধারণের ন্যায়, ভুমি যুধি-ষ্ঠিরের রাজ্যলক্ষী প্রাপ্ত ব্যুয়াই অতি লোভ-বশত এৰপ মনে করিতেছ; কিন্তু তোমাকে এই এক কথা জিজ্ঞাসা করি, যুধিষ্ঠির দ্রৌপদী-সহচর ও ধৃতায়ুধ ভাতৃর্দে পরির্ত হইয়া বনে অবস্থান করিলেও কোন্ বীর পুরুষ রাজ্যে অবস্থিত থাকি-য়াও তাঁহারে পরাভূত করিবে ? যাবতীয় যক্ষ-কুল ঘাঁহার আজ্ঞামুবর্তী কিঙ্কর হইরা রহিয়াছে, **रम्हे परनम्बत-मिक्षपारन्छ धर्मात्राक ममिक् विद्राक-**মান হইরাছিলেন। পাগুবগণ কুবের-কুবনে গমনা-নম্ভর বছতর রত্নলাভ করিয়া এক্ষণে স্থিদীয় স্থবি-ন্তীর্ণ রাষ্ট্র আক্রমণ-পূর্ব্বক শ্বরাজ্য বিস্তারের বাসনা করিতেছেন।

হে রাজন্! আমাদের ত আয়ুঃশেষ হইয়াছে; আমরা যথাসাধ্য দান, হোম ও অধ্যয়ন এবং ধন-দারা ব্রাহ্মণগণের তৃপ্তিসাধন করিয়াছি; স্বতরাং আমাদিগকে এক প্রকার ক্লভক্লভ্য বলিয়াই অব-ধারণ কর। এক্ষণে পাশুবদিগের সহিত যুদ্ধ করিয়া क्विन তোমाक्टर द्रोका, सूथ, मिळ, धन, नकनरे विमर्ज्जन-পূर्वक मह९ वामन প্রাপ্ত হইতে হইবে। ষোরতর-তপোত্রত-পরায়ণা সভ্যবাদিনী দৌপদী দেবী যাঁহার বিজয়াশংসা করিভেছেন, ভাদৃশ পা-গুৰকে ভূমি কি প্ৰকারে পরাজিত করিবে ? জনা-र्फम बाहात मजी अवर मर्स-ध्यूकातिरव्यष्ठ धनक्षत्र বাঁহার জাতা, তাদৃশ পাওবকে তৃমি কি প্রকারে পরাজিত করিবে ? জিতেন্সিয় ধৃতিশীল ব্রান্ধণেরা যাহার বহার রহিরাছেন, সেই উত্ততপা বীর্যাশালী ৰুমিটিরকে ভূমি কি প্রকারে পরাভূত করিবে? ञ्चलमान कुछत विभाग मागरत निमय रहेरल कन्नान-

কামী স্থাজ্যাজ্যির বেরপ কার্যা করা কর্তন্য, তদমু-সারে আমি পুনর্কার তোমাকে বলিভেছি, যুদ্ধে প্রয়োজন নাই; কুরুকুলের অভ্যুদর নিমিও কেই বীরবর্গের সহিত সন্ধিবন্ধন কর; পুত্র, অমাত্য ও দৈন্যগণের সহিত অনর্থক প্রাত্তব প্রাপ্ত হইও না।

ভীগদোণ-ৰাক্যে ভগবন্দান প্ৰকরণ ও একোন চত্মারিংশদধিক শতভ্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৩৯॥

-m0@0m-

कर्गविवाम व्यक्त्रग।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্জয়! মধুস্থদন ক্ষম রাজপুত্র ও অমাত্যগণে পরিবৃত হইয়া কর্ণকে রধারোপণ-পূর্বাক নগর হইতে নির্গত হইয়াছেন.। সেই
অমেয়ায়া পরবীরহন্তা গোবিন্দ স্থতপুত্র-সন্ধিধানে
কোন কথার প্রস্তাব করিলেন, কি কি সাম্ববাদই বা
প্রয়োগ করিলেন? জলদকাল-সমুম্পিত-নব-নীরদনিম্বন জনার্দনে, রাধা-পুত্রকে যে সকল কথা কহিয়াছেন, তৎসমুদায় মৃতু কি তীক্ষ্য, বিশেষ করিয়া
আমার নিকটে বর্ণন কর।

সঞ্চয় কহিলেন, হে ভারত! মধুস্থান আমুপুর্ঝী ক্রমে কর্ণকে মৃতু ও তীক্ষ্ণ উভয় প্রকার বাকাই উক্ত করিয়াছেন। সেই অমেয়াত্মা যাহা কিছু বলি-য়াছেন, সকলই প্রিয়, ধর্মযুক্ত, সত্য, হিতকর ও হৃদয়গ্রাহী; আপনকার নিকটে আমি সমুদয় বর্ণন করিতেছি, শ্রবণ করুন।

বাস্থদেব এই কথা বলিয়াছিলেন, হে রাধেয়!
তুমি অনেকানেক বেদপারগ ব্রাহ্মণগণের উপাসনা
করিয়াছ এবং অস্থা-শূন্য হইয়া নিষ্ঠা ও প্রহ্মা-সহকারে বহুতর তত্ত্বার্থও জিজ্ঞাসা করিয়াছ; স্থতরাং
তুমি সমাতন বেদবাদ-সকলেরও যথার্থ-বেতা এবং
স্থান-তম ধর্মালান্ত্র-সমূহের পরিজ্ঞানেও স্থাক্ষ।
দেখ, ব্রীলোকের কন্যাবস্থায় কানীন ও সহেছা
নামে যে তুই প্রকার পুদ্র ক্ষিয়া থাকে, শান্তক্তানসম্পন্ন মানবেরা কন্যার পরিণেতাকেই তাহাদিপের

পিভা বলিয়া নির্দিষ্ট করিয়াছেন; স্থতরাং কুন্তী-দেবীর কন্যাবস্থায় ভোমার জন্ম হওয়ায় ধর্মশাত্রের নিদেশামুমারে ভূমিও ধর্মত পাণ্ডু-রাজেরই পুত্র হইয়াছ; অতএব আইস, যুধিন্টিরের অত্যে তুমিই রাজা হইবে। তোমার পিতৃপক্ষে পাণ্ডবর্গণ এবং মাতৃপক্ষে র্কিবংশ; হে পুরুষর্বভ! এই ছুই পক্ষকে ভোমার নিভ্য সহায় বলিয়া জান। অদাই আ-মার সমভিব্যাহারে এস্থান হইতে প্রস্থিত হও। হে তাত! ভূমি যুধিষ্ঠিরের পূর্বের কুন্তীর গর্বের জন্মি-য়াছ, ইহা পাগুবগণ অদ্য অবগত হউন। পাগুবেরা পঞ্চ সহোদর, দ্রৌপদীর পঞ্চ পুত্র, অপরাজিত স্থভজা-তনয় এবং পাণ্ডব-কার্য্যার্থে সমাগত অন্ধক বৃষ্ণি-প্রভৃতি যাবতীয় রাজা ও রাজপুত্রগণ, সকলেই ভোষার চরণৰক্ষন করিবেন। পাগুব-ভাবিনী ক্রপদ-निक्ति शाखरभरात नाम लामात निकटि यर्छ-কালে উপগতা হইবেন। তোমার অভিষেক নিমিত্ত রাজনাগণ ও রাজকন্যা-সকল কাঞ্চনময়, রৌপ্যময় ও म्थ्र कुछ, मर्स्कोवधि, मर्स्कवीब, मर्स्वव्र ও लठा-প্রভৃতি সমগ্র-দ্রবা-সামগ্রী আনয়ন করুন; সংশি-তাত্মা ৰিজোক্তম ধৌম্য অগ্নিহোত্র সম্পাদন করুন এবং পাণ্ডবদিগের বৈদিক-কর্মানুষ্ঠায়ী পুরোহিত চতুৰ্বেদী বিজ্ঞাতিগণ অদ্যই তোমাকে অভিবিক্ত করুন। পুরুষক্রেষ্ঠ পাশুবেরা পঞ্চ সহোদর, দৌপ-দীর পঞ্চ পুক্র, পাঞ্চাল ও চেদিবংশীয় কুটুষগণ এবং আনি, সকলেই আমরা মিলিত হইয়া ভোমাকে বস্থা-রাজ্যের আধিপত্যে অভিবিক্ত করিব। সং-শিতত্রত ধর্মাত্মা ধর্মনন্দন যুধিষ্ঠির তোমার যুব-রাজ জ্উন। তিনি খেত-বাজন ধারণ-পূর্বাক তো-মার প্রশাহ। পশ্চাৎ রখারোহণ করিবেন। হে वानन् ! कृषि चिविक स्रेल, महारतमानी कृछी-তনর ভীমনেন ভোষার:মন্তকোপরি খেত ছত্র ধারণ করিবেন। অর্জুন কিছিণীশত-শব্দায়িত, ব্যাঘ্রচর্ম-পরিবৃত্ত, শুক্রবর্ণ-কর্ম্ব নিচর-সংব্যোজিত রথ পরি-চালন করিবেন। ভাঁহার আত্মক অভিমন্ত্রাও তো-

মার নিতা সন্নিহিত থাকিবে। নকুল, সহদেব; জৌ-পদীর পঞ্চ পুত্র, মহারধ শিখণ্ডী ও পাঞ্চাল-দেশীর অন্যান্য সহক্ষিপণ ভোমার অমুগামী হইবেন। অন্ধক, র্ফি, দাশার্হ ও দশার্ণবংশীয় ভূপতিবর্গ এবং আমি, সকলেই তোমার পরিবারভূত ও অমু-যায়ী হইব। অতএব হে মহাবাহো! ভুমি ৰূপ, হোম ও বছবিধ মাজলাকর্মে সংযুক্ত থাকিয়া সহো-দর পাণ্ডবগণের সহিত পরম স্থথে রাজ্যভোগ কর। **जिविड़, कूखन, অञ्च , जान**हत्र, চুচুপ ও রে‡প-দেশীয় রাজন্যপণ তোমার অগ্রযায়ী হউন এবং স্থত-মাগধ বন্দী-সকল অশেষবিধ স্তুতিদ্বারা ভোমাকে স্তব করিতে থাকুক। পাগুবেরা " বস্থবেণের জয় " এই বলিয়া সর্বত্তই তোমার বিজয় ঘোষণা করুন। হে কৌন্তেয়! নক্ষত্রাজি-বিরাজিত দ্বিজরাজের নায় তুমি ভাতৃগৃহণ পরির্ত হইয়া রাজ্যশাসনে প্রর্ত হও এবং 🗣 বারা কুন্তীরও আনন্দবর্দ্ধন কর। তো-মার মিত্রগণ প্রকৃষ্ট এবং রিপুবর্গ ব্যাপিত হইতে থাকুক। ভাতৃভূত পাওবগণের সহিত অদ্যই তো-মার সৌভ্রাত্র সংস্থাপিত হউক।

ভগবদ্বাক্যে চত্মারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৪০ ॥

কর্ণ কহিলেন, হে র্ফিনন্দন কেশব! তুমি যে সৌহার্দ্দ, প্রণয়, সখাও হিতৈবিত্ব প্রযুক্তই আমাকে এই সকল কথা কহিলে, তাহাতে আর সংশয় নাই। আমি সকলই স্বীকার করিয়া লইতেছি। হে রুঞ্চ! তুমি যেরপ বিকেচনা করিতেছ, তাহাই সত্য; ধর্মা-শাস্ত্রের নিদেশাসুসারে আমি ধর্মাত পাণ্ডুর পুত্রই বটি। জননী কন্যা কালে সুর্যাদের হইতে আমাকে গর্রে ধারণ করিয়াছিলেন এবং জ্মিবামাত্র সেই আদিত্যের বচন-ক্রমেই বিসম্জন দিয়াছিলেন। জতএব হে জনার্দ্দন! সেইয়পে উৎপন্ন হওয়ায় আমি ধর্মত পাণ্ডুরাজেরই আম্বন্ধ বটি, কিছ কুন্তী-দেবী আমার কিছুমাত্র কুশল চিন্তা না করিয়া

আপনা হইতেই আমাকে প্রক্রিডাগ করিয়াছিলেন। তৎকালে স্তজাভীয় অধিরথ আমাকে দেখিবামাত ক্ষেত্ৰকালে পৃত্ত আনম্ন করিয়া স্বীয় বনিতা রাধার হত্তে অমর্থণ করেন। হে মাধব! আমার প্রতি লেহ-প্রযুক্ত রাধার স্তন-যুগলে তৎক্ষণমাত কীরের আবির্ভাব হয় এবং পুত্র-নির্বিশেষে তিনি আমার মূত্র পুরীবাদিও (হণ করেন। অতএব ধর্মজ্ঞ এবং নিরন্তর ধর্মশাস্ত্র অবণে নিরত হইয়াও কি প্রকারে মাদৃশ ব্যক্তি তাঁহার পিওলোপ করণে সমর্থ হইতে পারে ? বিশেষত রাধার ন্যায় অধি-রথও স্নেহহেতুক আমাকে পুজ বলিয়াই জানেন এবং আমিও চিব্লকাল ভাঁহাকে পিতা বলিয়াই জ্ঞান করি। পুত্র-প্রেমের বশষদ হইয়া তিনি শাস্ত্রোক্ত বিধি অনুসারে দিজাতিগণ-দারা আমার জাত-কর্মাদি-সমন্ত নির্বাহ করাইয়া 'বস্থবেশ্ব ' এই নাম-করণ করান এবং যৌবন কাল প্রাপ্ত 💐 লে স্বজা-তীয় কন্যাগণের সঙ্গেই বিবাহ দেন। হে মধুস্থদন জনার্দন! তাহাদিগের গর্ৱে আমার পুত্র ও পৌত্র-গণ উৎপন্ন হইয়াছে এবং তাহাদিগের প্রতিই আ-মার इनम्य ও বাসনা-বন্ধন-সমস্ত নিবন্ধ হইয়া রহি-য়াছে। স্থতরাং অপরিমেয় স্থবর্ণরাশি অথবা অথগু महीम थल आश्र हरेला ७ -- माजिन सर्व वा ভ स्तित আবেগে অভিভূত হইলেও আমি তাদৃশ প্রীতিবন্ধ-নের কোন ক্রমেই অপনোদন করিতে পারি না। হে ক্লফ ! এই ধৃতরাষ্ট্র-কুলে আমি ছুর্য্যোধনের আ-অন্নে ত্রয়োদশ বর্ষ কাল অক্টকে রাজাভোগ করি-য়া আদিতেছি; এ পর্যান্ত বছবিধ যক্তাদিরও অমু-ষ্ঠান করিয়াছি; পরস্ত স্তজাতির সংস্তাব ভিন্ন ক্রনই কোন কর্ম করি নাই। আমার আবাহ বি-বাহাদি সমুদর কার্য্যই স্কুডদিগের সহিত সম্পন্ন হইরাছে ৷ হে বাব্দের ৷ আমাবে প্রাপ্ত হইরাই ब्राका क्रूट्याधन शांख्यमिरशत सन्छि विद्याध ७ শন্ত্র-সমুদ্ধমে এর্ড হইরাছেন ৷ সেই হেড়ু ভিনি দৈরণ-সমস্তে অঞাষায়ী এবং সবাসাচীর পরম প্রতি-

षणी-करण आबारकरे निर्फिष्ठ क्रिक्सारहन । अख्या र् क्यीरकम स्नार्कन! अक्तरा वथ, बक्क, खन्न खुधवा লোভ-ছারা বিচলিত হইয়া সেই ধীসম্পন্ন মৃত্যুঞ্জী-তনয়ের প্রতি মিধ্যাচরণ করিতে আমার কোন ক্রমে উৎসাহ হয় না। অধুনা যদি সব্যসাচীর সহিত दित्रथ-यूटक थात्रखना इहे, छाहा हरेटन आगात এবং পার্থের উভয়েরই ভূয়দী অফীর্ভি হইবে। হে মধুস্থদন ! তুমি নিংসন্দেহ আমার হিতের নিমিন্তই বলিতেছ এবং তোমার বশস্বদ পাগুবেরাও যে তো-মার উপদিউ সকল কার্যাই নিষ্পান্ন করিবে, ভাহা-তেও আমার সংশয় নাই। হে যাদ্ব-নন্দন মধুসুদন! এ অবস্থায় তুমি পাগুবদিগের নিকটে আমাদিগের এই মন্ত্রণার বিষয় এক্ষণে গোপন করিয়া রাখ, ইহাই আমার সর্বতোভাবে শ্রেয়ক্ষর বোধ হই-তেছে। হে অরিন্দম! সংযতেন্দ্রির ধর্মাত্মা যুধি-র যদি আমারে কুন্ডীর প্রথম পুত্র বলিয়া জানি-তে পারেন, তাহা হইলে তিনি স্বয়ং রাজ্য গ্রহণ না করিয়া আমাকেই সমর্পণ করিবেন এবং জামিও সেই স্থসমূদ্ধ বিশাল রাজ্য প্রাপ্ত হইয়া পূর্ব্ব-প্রতি-জ্ঞানুসারে ছুর্য্যোধনকে প্রদান করিতে বাধ্য হইব। অতএব হে মধুস্থদন! সেই ধর্ম্মান্ধা যুধিষ্ঠিরই চিব্ল-কালের নিমিত্ত রাজা হইয়া থাকুন। হ্বীকেশ যাঁহার নেতা, মহারথ ভীম ও ধনঞ্জর বাঁহার যোজা এবং নকুল সহদেব ও জৌপদী-পুজেরা বাঁছার পৃষ্ঠ-চর, তাঁহার পক্ষে সকল ভূমগুলের চির-রাজ্য-সদ্ভো-গেরই বা অসম্ভাবনা কি? হে ক্লক্ষ্: যুখিছির, ক্ষজ্রিয়-গণের যেৰপ মহান সমবার সংগৃহীক করিয়াছেন, ভাহাতে অক্সদানির সাহায্য করিবার কিছুমাত্র প্রয়োজন নাই। দেখ, পাঞাল-পুত্র ধৃউত্নায়, লি-ধ্ঞী, উত্তমৌলা ও যুধাসভূা, মহারধ দাভাকি, বভাগর্ম। মৌমকি, চৈদা, চেকিতান, ইন্সগোপক-कीटवेत अन्नेसः लाहिन्छ-वर्ग क्लक्ट्रस्ता ११ महस्त्रास्त्र ভীষদেনের মাতৃত শ্রক্তর্কুর ন্যার বিচিত্র বর্ণ-যুক্ত बाह्यवाणी प्रशासना कृषीएडाक, क्रावक ल्यानकिर,

वित्रां छ-शूळ मध्य धदर निधित्र नात्र चक्कत्र कामशूतक স্বয়ং তুমি, এই প্রধান প্রধান ক্ষল্রিয়গণ একত্র সম-(व ङ इहेशार्ष्ट्म। रह वार्रक्ष श क्रूर्याधिन मर्द्व-द्राज्ञ-গণ-সধ্যে প্রথিত এই প্রদীপ্ত রাজ্য প্রাপ্ত হইয়াছেন বটে; কিন্তু এক্ষণে তাঁহাকে একটি স্থমহান্ শস্ত্ৰ-যজ্ঞের অমুষ্ঠান করিতে হইবে। হে জনার্দান রুষ্ণ! ভুমি এই যজের বেতা ও অধর্যা হইবে, অর্থাৎ ় ভোমাকেই ইহাতে অধ্যক্ষতা ও যজুর্বেদী ঋত্বিকের কর্ম্ম সম্পন্ন করিতে হইবে। সন্নাহ-যুক্ত কপিধজ বীভৎস্থ ঋষেদী হোতার কার্য্য করিবেন। গাওীব শরাসন ত্রুক্ এবং প্রতিপক্ষীয় পুরুষগণের বীর্যাই আজ্য-স্বৰূপ হইবে। হে মাধব! শস্ত্ৰবিক্ষেপ-সময়ে সবাসাচী ঐন্দ্র, পাশুপত, ত্রান্ধ ও স্থূণাকর্ণ-প্রভৃতি যে नमञ्ज मञ्ज धारतांश कतिर्वन, जर्मगूमात्रहे यख्डीत মন্ত্র-নিচরের স্থানীয় হইবে। পরাক্রমে পিতৃতুল্য अथवा उपरभक्तां अधिक वनभानी ञ्चा-नम्न অভিমন্ত্রা সমাক্ প্রকারে গীতত্তোত্র অর্থাং উল্গাতা क्हेट्टन। अभन्नाक्रुटन घन घन शक्कनकाती, शब्द-দৈনোর দাক্ষাৎ অন্তক-স্বৰূপ, মহাবল-পরাক্রান্ত, নরবাাঘ্র ভীমদেন সামবেদী উদ্গাতাও স্তোতার কার্য্য করিবেন। জপ-ছোম-সংযুক্ত নিত্য-ধর্মপরা-রণ রাজা যুধিটির আপনিই ব্রন্ধা অর্থাৎ হোম-কার্যোর পর্যাবেক্ষক হইবেন। শব্দ, মুরজ ও ভেরী-नकरमञ्ज निनाम धदः উৎकृष्ट निःहनाम नमखहे स्-ব্ৰহ্মণ্য অৰ্থাৎ কালের ভোজনাৰ্থক আবাহন মন্ত্ৰ-चक्र इहेर्द । यमची महावीया माजीनस्न नक्ल সহদেব দেই ঘজে সমাকৃ ৰূপে শামিত অৰ্থাৎ क्षतिक পশু हिश्मा कतिदन। ए जनार्कन शाविकः! विक्रियंबर्ग मे छ-नमूर-नश्युक स्विमल-तथेता कि-निष्य এই হাজে বুপ-কপে উপকল্পিত হইবে। কৰ্ণি নালীক নারাচ-প্রভৃতি অক্র-সমস্ত বৎসদন্ত ও উপর্ংহণ व्यर्थाः भाषाक्षि-माधन एमनामित्र वाशीय रहेत्व । (र हाक ! त्रे पट्टा रहा मन-निकन्न ता म-क्लम-नमू-मारत्त, भद्रामम-मम्ख शिवज अर्थाय मारमायरक-

পণসাধন অভিবৰণ-সমূহের, ঋড়্গ সমুদায় কপাল সকলের, মন্তক-সমন্ত পুরোডাশ-পাকপাত্র-পুঞ্জের, শক্তিরাজি অधिमन्तीপনার্থ সমিধ-কদম্মের, গদা-নিবহ পরিধি অর্থাৎ আহুতি-রক্ষণার্থে অগ্নির উভয়-পার্ম্বে স্থাপিত-কার্চ-নিচয়ের এবং রুধির হবির কার্য্য করিবে। দ্রোণ ও শরদ্বং-পুক্ত রূপাচার্য্যের শিষ্যগণ সদস্য কর্ম্ম কৃমিবেন। গাগুীবধন্বা ধনঞ্জয় এবং দ্রোণ-দ্রোণি-প্রভৃতি অন্যান্য মহারথগণ যে সমস্ত শস্ত্র বিসর্জ্জন করিবেন, তৎসমুদায় পরিস্তোম অর্থাৎ সোম-চমসাদির স্থানীয় হইবে। সাত্যকি প্রতিপ্রানাক অধাৎ অধ্যুার সহকারি-সমুচিত মন্ত্রসংধারণ কর্ম্ম সম্পন্ন করিবেন। ঐ যজ্ঞে ছুর্য্যো-ধন দীক্ষিত হইবেন এবং মহতী অনীকিনীই তাঁহার পত্নী-স্বৰূপা হইবে। হে মহাবাহো! অতিরাত্ত যক্ত-কর্ম বিস্তৃত্যুইলে ভীমসেনাক্মজ মহাবল ঘটোংকচ উহাতে পশ্ডিহিংসা করিবে। হে রুঞ্চ! প্রতাপশালী ধৃউত্নার, যিনি দ্রুপদ-সভায় যজ্ঞীয় কর্মারন্তে ছতা-শন হইতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন, তিনিই এই যচ্ছের मिकिना-श्वाप रुरेदान।

হে কৃষ্ণ! ছুর্যোধনের প্রীতি নিমিত্ত আমি পাশুবদিগকে যে সকল কটুবাকা কহিয়াছিলাম, সেই
অকর্ম জন্য এক্ষণে যথোচিত অনুতাপান্থিত হইতেছি। যথকালে তুমি আমাকে সবাসাচি-কর্জ্ক বিনফ হইতে দেখিবে, তথন মছুক্ত ঐ শস্ত্র-যজ্জের পুনরায় আরম্ভ হইবে। মধ্যম পাশুব রুকোদর যখন যোরতর-গর্জনকারী ছুংশাসনের রুধির পান করিবেন,
তথনই সোমরস্থানের কার্য্য হইবে। হে জনার্দ্দন!
যখন পাঞ্চাল-পুত্র মৃষ্টছার ও শিখণ্ডী, জোণ ও
তীম্মকে নিপাতিত করিবেন, তথনই ঐ যজ্জের জনসান অর্থাৎ কিয়ৎকালের নিমিত্তে বিরাম হইবে।
হে আধন! মহাবল তীমসেন যখন ছুর্যোধনকে
নিহত্ত করিবেন, তথনই গুডরান্ত্র-তনহার ফ্লে সমাপ্র
হবৈ। হে কেশব! মৃতরাত্রের সুবা ও প্রসুবাগণ
বর্ষন স্থানি-পুত্র-বিকীনা ও জনাথা হইরা সকলে

একত্র সমাগম-পূর্বক গান্ধারীর সহিত রোদন-পরা-য়ণা হইবেন, তখনই এই কুকুরগৃধুকুরর-নিকর-সদুল শস্ত্রয়ন্তে অবভূথ অর্থাৎ সমাপ্তি-স্নান হইবে।

ह् कित्र-थवत मध्यमन! खवरनर खामात व्यार्थना अहे रय, विमा ও वरसातृष्क काळिएसता स्वन তোমার নিমিত্তে র্থা মৃত্যু স্বীকার না করেন।— ত্রৈলোক্য-মধ্যে পুণ্যতম 🌪 কুরুক্ষেত্রে সমবেত হইয়া সমৃদ্ধ ক্ষজ্ঞিয়-মগুল যেন শস্ত্র-ছারা নিধন প্রাপ্ত হন। হে র্ফিনন্দন পুগুরীকাক্ষ! এ বিষয়ে তোমার যেৰূপ অভিরুচি হয় কর;—অথিল-ক্ষত্রিয়-কুল যাহাতে স্বর্গধামে গমন করিতে পারে, তাহারই मिश्रियोन करा। ए ब्रमार्फन! এই জগতীতলে যে পর্যান্ত গিরি ও সরিং-সমস্ত অবস্থিত থাকিবে, তাবং কাল পর্যান্ত এই কীর্ত্তিধনি প্রতিনিয়তই প্রতি-ধনিত হইবে ;—ব্রান্সণেরা মহাভারত-সুনরের নিত্য সংকীর্ত্তন করিবেন। হে বাফের। যুদ্ধে 🖣 শ, অর্থাৎ জয় অধবা সাধ্যানুৰপ পরাক্রম প্রকাশ-পূর্বক যে মৃত্যু, তাহাই ক্ষজ্রিয়গণের ধন। অতএব হে পরস্তপ কেশব! আমাদিগের এই মন্ত্রণার বিষয় চিরকাল সংরত রাখিয়াই তুমি ধনঞ্জাকে যুদ্ধের নিমিত্ত আমার নিকটে উপনীত করিও।

> কর্ণ-বাক্যে একচত্বারিংশদধিক শতভ্য অধ্যায় সমপ্তে॥ ১১১॥

সঞ্জয় কহিলেন, পরবীর-হন্তা কেশব কর্ণের ঐ
বাকা ভাবণ করিয়া ঈবং হাস্য-পূর্বক পুনরায় এইকপ কহিতে লাগিলেন, হে কর্ণ! রাক্ষালাতের উপায়
কি ভামাতে লকাস্পদ হইল না ? আমি ভোমারে
পৃথিবী প্রদান করিতে সম্মত হইলাম, তথাপি তাহার শাসন নিমিত্তে তোমার কি ইচ্ছা হইতেছে
না ? ইহাতে আমার নিশ্বর প্রতীতি হইতেছে,
পাওবদিগের অবশান্তাকী বিজয় লাভ ছইবে; তুতীয়
পাওবের বানর-কেতন রথোপার যে প্রচপ্ততর
জয়য়য় সমুদ্ধিত হইবে, তাহা বেন স্পাইই দুই

হইতেছে। বিশ্বকর্মা কপিখনে ঈদুশী দিবামায়। বিস্তার করিয়াছেন যে, বোধ হইতেছে যেন ইন্দ্র-কেতুর ন্যায় প্রকাশমানা অসংখ্য পতাকা উড্ডীয়-মানা হইয়াছে এবং জয়াবহ ভয়ক্কর দিবা ভূত-সমস্তও তাহাতে অবলোকিত হইতেছে। হে কণ ! স্বাসাচীর উর্দ্ধেও প্রসারে এক যোজন পরিমিত, প্রজ্ঞালত-পাবক-সদৃশ, স্থানাভিত রথধ্জ এরপে সমুচ্ছ্রিত হইয়াছে, যে, শৈল ৰা বৃক্ষ-নিচয়ে অবরুদ্ধ হইয়া অদৃষ্ট থাকিবার নছে। সংগ্রাম-মধ্যে কৃষ্ণ-সার্থি শ্বেতবাহন ধনপ্লয়কে যথন তুমি ঐন্তর, আ-গ্নের ও বায়ব্য-প্রভৃতি অস্ত্র-সমস্ত বিসর্জ্জন করিতে **मिथित क्रिक्स माकार जमिन-निर्फारमत नाम गा-**গ্রীব-শব্দ অবণ করিবে, তথন মুর্জিমান্ কলিদেবের আবির্ভাব হইবে, সত্য ত্রেতা বা দ্বাপরের আর প্রসক্তি-মাত্র থাকিবে না। যথন দেখিতে পুাইবে, জপ-হোম-সমাযুক্ত অপরিভবনীয় মহারাজ যুধি-ঠির সমরঞ্জনে অবতীর্ণ হইয়া স্বকীয় মহাচমূর সংরক্ষণ করিতেছেন এবং আদিত্যের ন্যায় প্রতা-পান্বিত হইয়া শত্ৰুবাহিনীর সন্তাপবৰ্দ্ধন করিতে-ছেন, তথন সত্য ত্রেতা বা দ্বাপরের আর প্রসক্তি-মাত্র ধাকিবে না। यथन দেখিবে, মহাবল ভীমদেন, প্রতিদ্বিদ্যাতী মদক্রিত-গণ্ড প্রচণ্ড-মত্ত-মাতঙ্গের ন্যায়, ছুংশাসনের শোণিত পান করিয়া সমর-রঞ্জ-ভূমি-মধ্যে নৃত্য করিতেছেন, ত্থন সত্য তেতা বা দাপরের আর প্রসক্তিমাত থাকিবে না। যথ্ন द्यापाठार्या, ना**ख्यू-**जनत जीवा, द्यापाठार्या, क्रुशाठा<u>र्या</u>, মহারাজ স্ববোধন, সিম্মুনন্দন জয়দ্রথ-প্রভৃতি মহা মহা বীরবর্গ যুদ্ধার্থে রণস্থলে অবতীর্ণ হইলে, ভীম-थया नवानानी अविवादयहे छ। हा निगदक निवादिक করিতেছেন, তখন সভা ত্রেতা বা দাপরের আর व्यमक्तिमाज पाकित्व ना। यथन प्रिथित, शर्वात-मर्श्वी महारण नकून महत्त्व, मर्थारम स्वात्उत শস্ত্র-সম্পাতের আরম্ভ হইলে, প্রমৃত্ত-গ্রন্থয়লের ন্যায় ধৃতরাষ্ট্র-পুজ্ঞগণের সৈন্য-সমস্ক বিক্ষোভিত

করিতেছেন, তথন সত্য ত্রেতা বা দ্বাপরের আর । কর বছবিধ ছংস্বপ্ন, ভয়াবহ ছুর্নিমিত্ত এবং বিষমপ্রসক্তি-মাত্র থাকিবে না।
তর স্থদারুণ উৎপাত্ত-সমস্ত নিরস্তর দৃষ্ট হইতেছে।

অহে কর্ণ ! ভুমি এখান হইতে গমন করিয়া ভীয়, দ্রোণ ও ক্লপকে এই কথা বলিও যে, বর্ত্তমান মাস সর্ব্ব প্রকারেই উত্তম; এ মাসে ভক্ষ্যভোজ্য ও কাষ্ঠাদি অতিশয় স্থলভ ; বনে সর্ব্ব প্রকার ওবধি ও কল-সকলের প্রচুর উৎপত্তি হইয়া থাকে; মিকি-কার উপদ্রব অতি অপ্প; পথে কর্দ্দমের লেশমাত্র नाहे; कल विलक्षण स्रुतम, वात्रु क्रेयर छेय अथि শিশির; স্থতরাং এ মাস সর্বর্থাই স্থথকর। অদ্য হ্ইতে সপ্তম দিবসের পর অমাবাস্যা হ্ইবে; পণ্ডি-তেরা ইন্দ্রকে ঐ তিথির দেবতা বলিয়া বর্ণন করি-য়াছেন; অতএব সেই দিবসেই সংগ্রামের আরম্ভ কর। এতদ্বিন্ন যে সকল রাজন্যগণ যুদ্ধার্থে উপগত হইয়াছেন, তাঁহাদিগকেও বলিবে, তোমাদিগের যাহা অভীষ্ট, তাহা আমি সম্পূর্ণ-রূপে সম্পন্ন করিব; —ছুর্য্যোধনের বশবন্তী সমুদয় রাজা ও রাজপুত্রগণ শস্ত্র-দারা নিধন প্রাপ্ত হইয়া সদ্যতি লাভ করিবেন।

ভগবদাকো দিচস্বারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪২॥

সঞ্চয় কহিলেন, কেশবের ঐ হিতকর শুভ বাকা আবণ করিয়া কর্ণ তাঁহাকে যথোচিত পূজা-পূর্বক বলিলেন, হে মহাবাহো! তুমি জানিয়া শুনিয়াও কি নিমিত্ত আমাকে সম্মোহিত করিতে ইচ্ছা করিতেছ? তুমওলের এই যে সমাক বিনাশ উপস্থিত হইতেছে, ইহার কারণ কেবল শক্নি, জামি, ছংশাসন, আর রাজা ছুর্যোধন। হে কৃষণ! কুম পাওবদিগের যে ঘোরতর মহৎ যুদ্ধ উপস্থিত হইবে, তাহাতে আর সংশর মাত্র নাই। বস্থারা ইহাতে অবশাই ক্লমির কর্মমে পরিলা হইবে। ছুর্যোধনের বশাস্ত্বতী বাকতীর রাজা ও রাজপুত্রগণ সমর ক্লেত্রে শস্ত্রায়ি-ছারা হয় হইয়া নিশ্চরই, শমন-ভবন প্রাপ্ত হইবেন। হে য়ধুমুদ্দন! রোমাঞ্চন

তর স্থদারুণ উৎপাত-সমস্ত নিরম্বর দৃষ্ট হইতেছে। তন্ধারা ছর্যোধনের পরাজয় আর যুধিন্টিরের বিজয় স্পৃষ্ট-ৰূপেই স্থাচিত হইতেছে। হে বাঞ্চেয়! দেখ, তাক্ষ্ণ এছ মহাজ্বাতি শনৈশ্বর প্রাণিপুঞ্জের সম্ধিক পীড়া-জননার্থে প্রজাপতি-দৈবত রোহিণী-নক্ষত্ৰকে পীড়িত ক্ষ্লিতেছেন। মঙ্গল বক্ষভাবে জ্যেষ্ঠাতে সঞ্চরিত ইইয়া মিত্রকুলের সংহারাথেই যেন মিত্র-দৈবত অনুরাধা নক্ষতের সহিত সঙ্গম প্রার্থনা করিতেছেন। হে রুফ! রাছগ্রহ আবার চিত্রাকে বিশেষ ৰূপে পীড়িত৷ করিতেছেন; স্থতরাং নিশ্চয়ই কুরুগণের মহাভয় উপস্থিত হইল। চন্দ্রের অন্তৰ্গত চিহ্ন ব্যাবৃত্ত অৰ্থাৎ যথাস্থান হইতে বিচলিত হইয়াছে। রাহু সর্বাদাই স্থায়ের সন্নিহিত হই-তেছে। এই কম্পযুক্ত উচ্চা-সমন্ত আকাশ হইতে নির্বাতের নিহত নিপতিত হইতেছে। মাত**ল**গণ অনবরত অনিউ-ধনি করিতেছে এবং তুরঞ্চ-সকল পানীয় বা ওদনের প্রতি আদর না করিয়া অকারণ অপ্রত-বিসর্জন করিতেছে। হে মাধব! নিমিন্তবেদী পণ্ডিতেরা বলিয়াছেন, এই সমস্ত ছুর্নিমিত্তের প্রাছ্ন-र्ভाव हरेल वहन कीव-मश्राद्रक मास्न छन्न छेशिक्छ হয়। হে মহাবাহো মধুস্থদন। ছুর্য্যোধনের সমগ্র-रेमना-मध्य कि व्यश्व, कि शक्त, कि मसूषा, मकलातरे অপ্প ভোজনেও প্রভূত পুরীষ দৃষ্ট হইতেছে। বিচক্ষণ পণ্ডিতগণ ইহাকে কেবল পরাভ্রেরই লক্ষণ বলিয়া নির্দ্দিষ্ট করিয়াছেন।

হে কৃষ্ণ ! এ দিকে পাগুৰদিগের ৰাহনগণ বিলক্ষণ হাইপুই এবং মৃগাদি সমস্ত উঁহোদিগের
দক্ষিণ দিকু দিয়া গমনাগমন করে; এ কেবল তাঁহাদিগের বিজ্ঞরেই লক্ষণ দুই হইতেছে। পরস্ত ছুর্ছোাধনের বামভাগ দিয়া মৃগ-সকলের গ্রিভিবিধি হর এবং অমানুষী বাণী-সমস্ত অনুক্ষণ ফাত হইতে থাকে; তাহা পুরাভবেরই লক্ষণ। পরিত্র পক্ষী মন্ত্র, হংস, সারুস, চাতক ও চকোর-নিকর পাগুৰ-

দিগের অনুগাসী ছইতেছে; কিন্তু কৌরবগণের পশ্চাতে গুধু, কাক, বক, শোন, রাক্ষস, র্ক় ও মক্ষিকা-সমূহ অমুসরণ করিতেছে। ছুর্য্যোধনের দৈন্য-মধ্যে ভেরী সকলেরও শব্দ নাই, কিন্তু পাণ্ডব-**मिट्यां अपेर-मम्ख आ**र्ड ना रहेशा निनामिड **क्हेटल्डा (क् माथव ! क्रूट्याध्याव क्रिकावाद** কুপাদি-জলাশর-সমস্তও যেনীমহার্বভের ন্যায় শব্দ বিস্তার করিতেছে; দেবগণ অমুক্ষণ মাংস-শোণিত বর্ষণ করিতেছেন; অকন্মাৎ স্থন্দর দীপ্তিশীল মনোহর প্রাকার পরিঘ বপ্র ও তোরণ-বিশিষ্ট গন্ধব-নগর আবিভূত হইতেছে; তথায় রুক্বর্ণ প্রকাণ্ড পরিঘ স্থাকে আচ্ছন্ন করিয়া রহিয়াছে ; উদয় ও অন্ত উভয় সন্ধ্যাই মহৎ ভয় বিজ্ঞাপন করিতেছে; এক পক্ষ, এক চকু ও এক চরণ-বিশিকী বিকটাকার বিহঙ্গ-সকল ঘোরতর শব্দ 🖣রত ভয়ঙ্কর দর্শন বিস্তার করিতেছে; শিবা-সকল অহর্নিশি বিষমতর অশিব রব করিতেছে; ক্লফবর্ণ গ্রীবা ও রক্তবর্ণ পাদযুক্ত ভয়ানক পক্ষি-সমস্ত সন্ধাতিমুখে গমনাগমন করিতেছে; সৈনিকেরা প্রথমত ত্রাহ্মণ-গণকে পশ্চাৎ গুরু ও ভক্তিযুক্ত ভৃত্যবর্গকেও দ্বেষ क्रिटिंग्डिं। एक् मधुष्ट्रम्म ! এ ममखरे প्रताज्यित लक्षन । कूर्याभरनद्भ स्नना-मित्रवन-एल भूर्वि कि লোহিতাকার ধারণ ক্রিয়াছে; শত্রের বর্ণের ন্যায় দক্ষিণ দিকের বর্ণ হইয়াছে এবং পশ্চিম দিকের বর্ণ অপক্ষ-মৃত্তিকা-পাত্রের ন্যায় প্রতীত হইতেছে। সকল দিকৃই প্রদীপ্ত হইয়া কেবল ছুর্যোধনের অসামান্য ভয়ের বিষয় বিজ্ঞাপিত করিতেছে।

হে অচ্যত! আমি স্বপ্নে দেখিরাছি, যেন যুধিন্ঠির ভাতৃগণের সহিত সহস্র-স্তম্ভ-বিশিষ্ট একটি প্রাসা-দোপরি অধিরোহণ করিতেছেন। তাঁহারা সকলেই অত্যুৎকৃষ্ট-বসনে বিভূষিত এবং শ্বেতবর্ণ উন্ধারে স্থানাভিত দৃষ্ট হইলেন। তাঁহাদিগের আসনসমন্ত শুভর্ণ বোধ হইল। হে জনার্দ্দন কৃষ্ণ! তংকালে ইহাও দেখিরাছিলাম, যেন কৃষিরপঙ্কে

কলুবিতা ধরিত্রীকে তুমি অক্রজালে পরিক্ষিপ্তা করিতেছ এবং অমিত-তেজা যুধিষ্টির অস্থিরাশির উপরে আৰুঢ় হইয়া অতিশয় হৃষ্টচিত্তে সূবর্ণ-পাত্তে ঘৃত পারস ভক্ষণ করিতেছেন। আরও দেখিলাম, যুধিষ্ঠির সমগ্র-বস্থন্ধরাকে গ্রাস করিতেছেন। ইহা-তে স্পায়ই বাক্ত হইতেছে, তিনি তোমার প্রদন্ত অথও মহীমওল সডোগ করিবেন। যুধিষ্ঠিরের ন্যায়, ভীষণকর্মা নরব্যাত্র রুকোদরও যেন সমুল্লত-रेमन-मिथरत আরোহণ-পূর্ব্বক গদা-হত্তে লইয়া অবলীলা-ক্রমে অবনীকে কবলিতা করিতেছিলেন। ইহাতেও বিলক্ষণ প্রতীতি হইতেছে, তিনি মহা-সংগ্রামে আমাদিগের সকলকেই বিনফ করিবেন। হে হ্ৰীকেশ! যেখানে ধৰ্ম সেই খানেই যে জয় হইয়া থাকে, তাহা আমার বিদিত আছে। হে কৃষ্ণ ! গাণ্ডীবধম্বা ধনঞ্চয় তোমার সহিত পাণ্ডুরবর্ণ বারণোপরি আরোহণ করত পরম শোভায় উদ্ভাস্থ-মান দৃষ্ট হইয়াছিলেন। হে ক্লফ্ষ্! ঐ ব্যাপারের মর্মানুসন্ধান করিয়া দেখিলে, তোমরা যে সমর-মধ্যে ছুর্য্যোধন-প্রভৃতি অধিল পার্থিব-কুলের সং-হার-সাধন করিবে, ভাহাতে কি আর আমার সংশয় **হইতে পারে? হে ऋषीक्ष्म! দেখিলাম, নকুল,** সহদেব ও সাত্যকি, এই তিন নরজ্রেষ্ঠ মহারথেরা শুক্লবর্ণ কেয়ুর, কবচ, মালা ও অম্বরে বিভূষিত হইয়া উত্তম নরযানে অধিরোহণ-পূর্ব্বক বিরাজ করিতেছেন; তাঁহাদিগের মন্তকোপরি পাণ্ডুরবর্ণ ছত্ত-সমস্ত ধৃত হইয়াছে। হে জনাৰ্দন কেশব! **कू**र्यगायत्नत रेमना-मत्याक व्यथाया त्रश ७ यक्-বংশীয় ক্বতুবর্মা, এই তিন ব্যক্তিকে শ্বেতোফীয ধারণ করিতে দেখিলাম; তদ্ভিন্ন অপর সমস্ত পা-র্থিবেরই রক্তবর্ণ শিরোবেইটন দৃষ্ট হইল। হে মহা-ৰাহে৷ মাধব! মহারথ ভীয় ও দ্যোণাচার্যা আমাকে এবং ছুর্যোধিনকে সমভিবাছারে লইয়া উট্টুর্যোক্তিত যান রোহণে বেন দক্ষিণাভিনুখে প্রস্থান করিলেন। ইহাতে নিশ্চয়ই বোধ হইতেছে, আমরা অচির-

কাল-মধোই শমন-সদনে আতিথা এইণ করিব। হে জনার্দন! আমি, রাজনাবর্গ ও সেই সেই ক্ষজ্রির মণ্ডল, আমাদের সকলকেই যে গাণ্ডীবানলে প্রবেশ করিতে হইবে, তাহাতে আর আমার কিছুমাত্র সংশ্র নাই।

ক্লফ কহিলেন, হে কর্ণ! যখন আমার বাকা তোমার হৃদয়ক্লম হইল না, তখন বস্থা-রাজ্যের নিশ্চয়ই বিনাশ উপস্থিত হইল। হে আতঃ! সর্ব-ভূতের সংহার-সময় সন্ধিহিত হইলে, স্থনীতির ন্যায় প্রতীয়মানা বাস্তবিক স্থনীতি কদাপি হৃদয় হইতে অপসারিতা হয় না।

কর্ণ কহিলেন, হে মহাবাহো কৃষ্ণ ! বদি আমরা এই বীরবংশ-ধংসকর মহাসমর হইতে উত্তীর্ণ হইয়া জীবিত থাকিতে পারি, তবেই তোমার সহিত পুন-রায় সাক্ষাৎ করিব, নচেৎ স্বর্গধামে আমাদিগের নিশ্চয় সঙ্গম হইবে। হে অনঘ! ইদানীং সেই স্থলেই তোমার সহিত আমাদিগের মিলিত হওয়া সম্ভবপর বোধ হইতেছে।

সঞ্জয় কহিলেন, রাধাতনয় কর্ণ মাধবকে এই কথা বিলয়া গাঢ়তর আলিঙ্গন-পূর্বেক তাঁহার নিকটে বিদায় গ্রহণ করিয়া রথপ্রস্থ হইতে অবতীর্ণ হই-লেন; পরে স্থবর্ণ-ভূষিত স্থকীয় রথে আরোহণ করিয়া দীন-মানসে আমাদিগের সহিত প্রতি-নির্ভ হইলেন। অনস্তর সাত্যকি-সহচর কৃষ্ণ চল চল শ্বারাথিকে পুনর্বার এই কথা বলিয়া অবিলয়েই প্রস্থান করিলেন।

ক্ষ-কর্ণ-সংবাদে ত্রিচত্তারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪৩॥

বৈশাস্পায়ন কৃছিলেন, কৃষ্ণ, কর্ণকে অনর্থক অমুনয় করির। কুষ্ণ গুল হইতে পাগুর্বদিন্তৈর নিকটে
গমন করিলে, বিহুর পৃধা-দেবীর সৃদ্ধিত হইয়া
মন্দ মন্দ খরে শোক করত কহিতে লাগিলেন, হে

জীৰপুত্ৰি! যুদ্ধঘটনা না হওয়াই আমার যে নিত্য অভিমত, তাহা আপনকার বিদিত আছে; পরস্ত আমি সহস্র সহস্রবার চীৎকার করিলেও ছুর্য্যোধন কোন ক্রমেই আমার বাক্য গ্রহণ করে না। রাজা যুধিন্তির চেদি, পাঞ্চাল, কৈকয়, ভীম, অর্জুন, নকুল, সহদেব, রুষ্ণ ও শাত্যকি-প্রভৃতি সহায়-সম্পন্ন এবং অসাধারণ বলক্ষ্মি হইয়াও শ্বরাজ্য পরিহার-পূর্ব্বক উপপ্লব্য-নগরে অবস্থিত রহিয়াছেন, তথাপি জ্ঞাতি-সৌহার্দ্দ-প্রযুক্ত ছুর্বলের ন্যায় হইয়া কেবল ধর্ম্মেরই আকাঙ্কা করিতেছেন। পরস্তু এই অঙ্গ-রাজ ধৃতরাষ্ট্র গতবয়ক্ষ হইয়াও কোন প্রকারে শাস্ত মার্গে বিচরণ করিতেছেন। কলত জয়দ্রথ, কর্ণ, ছুঃশাসন ও শকুনির তুর্ব্বুদ্ধি ক্রমে ইহাঁদের পরস্পর ভেদ উপট্টিত হইবে। যথার্থ ধর্মনিষ্ঠের প্রতি ষাহারা অধিশ্ব করিয়া ঈদৃশ বিদূষিত কার্যোর অনু-ষ্ঠান করিয়াছে, তাহাদিগের সেই অধর্ম অবশাই কলানুবন্ধী অর্থাৎ বিনাশ-জনক হইবে। আহা! কৌরবেরা বল-পূর্বকে ধর্ম্মের মর্মচ্ছেদ করিলে, কোন্ ব্যক্তির হৃদয়ে ব্যথার সঞ্চার না হইতে পারে! হে দেবি! কৃষ্ণ যখন সন্ধি করিতে না পারিয়া প্রতি-গমন করিলেন, তথন পাগুবেরা সংগ্রামের সমু-দেঘাগ করিবেন; পশ্চাৎ কুরুগণ-ক্নত-অনয়ের বীর-क्ष्मिक्ष कल निःमत्मिह कलिख इदेख। এই সমস্ত চিন্তা করিয়া আমি, কি দিন কি রাত্রি, কোন সময়েই নিদ্রালাভ করিতে পারি না।

পরম-হিতৈবাঁ বিছুরের এই কথা শ্রবণে কুন্তী ছুঃখার্তা হইয়া দীর্ঘনিশ্বাস পরিত্যাগ করত মনে মনে এইৰূপ আন্দোলন করিতে লাগিলেন, হা! অর্থ কি অনর্থের মূল! ইহার নিমিন্ত এই মহান্ জ্ঞাতিবধ উপস্থিত হইল; অতএব সর্ব্বধাই ইহাকে ধিকৃ! এই যুদ্ধে স্ক্রন্থরের পরান্তব হইবে। পাওবগণ, চেদি, পাঞ্চাল ও বাদব সকলে সমবেত হইয়া কৌরবদিগের সহিত যুদ্ধ করিবে, ইহার পর অধিক

ছৃংখের বিষয় আর কি জাছে: সংগ্রামে সামি নিশ্চরই দোৰ দৃষ্টি করিতেছি এবং যুদ্ধনা করাতেও অস্মৎপক্ষের পরাভব দেখিতেছি; কেন না অর্থহীন যে জন্ন-লাভ করা ভাহাও শ্রেমকর নছে। এইৰূপ চিম্ভা করিয়া আমার অন্তঃকরণে প্রবল ছু:খপ্রবাহ প্ৰবৰ্ত্তিত হইতেছে। যোধপীত শাস্তমু-নন্দন পিতা-মহ, জোণাচার্যা ও কর্ণ, ইভারা ছুর্য্যোধনের সহায়-ভূত থাকিয়া আমার সমধিক ভয়বর্দ্ধন করিতেছেন। কিন্তু বোধ হয়, শিষ্যপ্রিয় আচার্যা কখনই ইচ্ছা-পূর্বক শিষ্যগণের সহিত যুদ্ধ করিবেন না; পিতা-মহই বা কি বলিয়া পাণ্ডবদিগের প্রতি স্নেহ প্রকাশ ना कतिरान ? তবে मिथ्रामणी এक माज कर्गरे याव-ায় অনিটের মূল হইতেছে। ঐ পাপাত্মা, তুর্মতি তুর্য্যোধনের মোহামুবর্তী হইয়া সর্বাষ্ট্র পাণ্ডব-গণের প্রতি দেষ করে; যাহাতে তাহাদিগৈর অনর্থ ঘটে, তদ্বিয়েই অতিমাত্র নির্বন্ধ প্রকাশ করিয়া থাকে; বিশেষত দে স্বয়ং অতিশয় বলবান্; স্কুতরাং সম্প্রতি তাহার ছুশ্চরিত্রই আমার অন্তর্দাহের কারণ হইতেছে। অতএব অদ্য আমি তাহার নিকটে গমন করিয়া নিগৃঢ় তথ্য বিষয় সমস্ত প্রদর্শন-পূর্বক, বাহাতে পাণ্ডবদিগের প্রতি তাহার চিত্ত প্রসন্ন হয়, ভব্বিষয়ে চেন্টা করি। যে ব্বপে তাহার জন্ম হই-য়াছিল, তাহার বিবরণ বিশেষ করিয়া বর্ণন করিব। যৎকালে আমি পিতৃ-ভবনে কুন্তিভোজরাজের অধী-নে অন্তঃপুর-মধ্যে বাস করিতাম, তখন ভগবান্ ছুর্বাসা ঋষি আমার সেবায় সম্যোষিত হইয়া একটি মন্ত্র প্রদান-পূর্বক আমারে এই বর দিয়াছিলেন, " তুমি সন্তান-কামনায় যে কোন দেবতাকে ইচ্ছা হয়, এই মন্ত্র বলে নিকটে আহ্বান করিতে পারি-বে । সেইৰূপ বিচিত্ৰ বরলাভ করিয়া আমি জী-স্বভাৰ-স্থলভ , চপলতা-হেতৃক, বিশেষত বালভাৰ-প্রযুক্ত অন্থির অন্তঃকরণে বারস্বার বছপ্রকার চিন্তা

করিতে লাগিলাম। মন্ত্রের বলাবল এবং ব্রাহ্মণের বাক্য-বল পরীক্ষা করিবার নিমিত্ত আমার অভান্ত কৌতূহল হইল; পরস্ক তৎকালে বিশানপাতী ধাতী কর্তৃক সংরক্ষিতা এবং সখীরন্দে পরির্তা থাকার, বিশেষত 'কিব্রুপে দোষের পরিহার হয়, কিপ্রকারে পিতার অপবাদনা হয়, কিসে আমার স্থয়ত হইতে পারে, কি প্রকারেই বা আমি অপরাধিনী না হই ' এইৰপ চিন্তায় ব্যাকুলিতা হওয়ায় এক এক বার উক্ত সংকল্প হইতে পরাশ্বুখী হইতে লাগিলাম। পরিশেষে একান্ত কৌভূহলাক্রান্তা হইয়া ছুর্ঝাসাকে নমস্কার-পূর্ব্বক বালিশতা-প্রযুক্ত কন্যা-কালেই সেই লক্ষমন্ত্র উচ্চারণ করত স্থাদেৰকে আহ্বান করি-লাম। অতএব যে ব্যক্তি কন্যাকালে মদীয় গৱে উৎপন্ন হইরাও পুত্রবৎ পরিরক্ষিত হইরাছিল, অধুনা সে আপন ভাতৃগণের হিতকর মতুক্ত পথ্য-বাক্য কি নিমিত্ত রক্ষা না করিবে ? কুন্তী এইৰপ উত্তম কার্য্য-নিশ্চয় ও প্রয়োজন অবধারণ করিয়া কর্ণের উদ্দেশে ভাগীরধী-তীরে গমন করিলেন। তথায় সেই পরম দয়ালু সভাত্রত মহাধীর উর্কবাছ হইয়া পূর্ব্বমুখে বেদোক্ত মস্ত্র উচ্চারণ-পূর্ব্বক ৰপ করিতে ছিলেন দেখিয়া তাঁহার ছুঃখিনী জননী সলিহিতা হ্ইয়া, জপাবসানে স্বকার্য্য-সাধনের প্রতীক্ষার তাঁ-হার পশ্চান্ডাগে দণ্ডায়মানা থাকিলেন। রুক্ষিবংশ-সম্ভূতা পাণ্ডুরাজ-গৃহিণী স্বকুমারী পৃথাদেবী বছক্ষণ পর্যান্ত প্রচণ্ড মার্ডণ্ড-তাপে সন্তাপিতা হওয়ায় পরিশুষ্ক কমল-মালার ন্যায় লানবর্ণা হইয়া পরি-শেষে কর্ণের উত্তরীয় বজ্রের ছায়া অবলম্বন করিয়া রহিলেন।

ধার্মিকবর যতত্ত্বত অমিত-বলশালী মহামানী
মহাতেজা দিনকর-তনয় কর্ণ, যে পর্যান্ত সম্পূর্ণ-রূপে
পৃষ্ঠদেশ সম্প্র না হইল, দে পর্যান্ত জপ করিয়া পরে
পৃষ্ঠ-পরিবর্তীন-পূর্কাক দেখিলেন, কুন্তীদেবী সন্তায়মানা। অককাৎ তাঁহারে দৃষ্টি করায় ভিনি সবিক্ষয়-

চিত্তে ক্তাঞ্চলি ও প্রণত হইয়া যথা ন্যারে জডিবা-দন-পূর্বক তৎকাল সমুচিত পশ্চাছুক্ত-কপে সন্তা-মণ করিতে লাগিলেন।

কুন্তী-কর্ণ-সমাগমে চতুশ্চত্বারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪৪॥

কর্ণ কছিলেন; আমি রাধা ও অধিরথের আত্মজ্ব কর্ণ, আপনাকে অভিবাদন করিতেছি; আপনি কি নিমিত্ত আমার নিকটে আসিয়াছেন, কি করিতে হইবে, ব্যক্ত করুন।

कुछी कहिरलन, कर्ग ! जूमि कोरखत्र, त्रार्थत्र नह ; অধিরথও তোমার পিতা নহেন; তুমি স্থতকুলে উংপন্ন হও নাই। আমি তোমার জন্মের যে নিগৃঢ় রভান্ত ব্যক্ত করিতেছি, তাহাই নিশ্চয় বলিয়া জান। হে পুত্ৰক! আমি কন্যাবস্থায় প্ৰথমেই তোমাকে পর্ত্তে ধারণ করিয়াছিলাম, স্বতরাং তুমি আমারই कानीन পুত্র, কুন্তিরাজ-ভবনে উৎপন্ন হইয়াছ। হে শন্তবারিভোর্ছ কর্ণ। এই যে সকল-লোক-প্রকাশ-কারী ভগবান ভামুমান নিত্যকাল গগণ-মণ্ডলে বিরাজ করিতেছেন, ইনিই তোমারে মদীয় গর্বে জন্ম প্রদান করিয়াছেন। হে ছর্দ্ধর্য পুত্র! আমার পিত্-সদনে তুমি দেবকুমার-সমুচিত অসীম শোভা-সমন্বিত মনোহর কুওল ও কবচে বিভূষিত হইয়া মদীয় গর্মে উৎপন্ন হইরাছিলে। এক্ষণে ভ্রাতৃগণের সহিত পরিচয় না থাকায় তুমি যে মোহ প্রযুক্ত ভূর্যোধনের সেবা করিতেছ, ত্বাদৃশ বিচক্ষণ ব্যক্তির ভাহা কোন ক্রমেই উপযুক্ত হইতেছে না। হে পুত্র ! মানব-ধর্ম-নিরপণে পণ্ডিতেরা পিতৃবর্গের এবং একমাত্র স্নেহরদ-দর্শিনী জননীর সম্যোষ সম্পা-দন করাকেই ধর্মের ফল বলিয়া অবধারিত করিয়া-ছেন। অতএব **গর্মারিনীর তু**টিসাধন করা তোমার यजीव कर्षवा श्रेराज्य । शृत्व पार्कुरानत हेशा-ক্ষিতা যে রাজলক্ষী লোভবশয়ৰ অসাধুগণ-কর্তৃক অপহতা হইরাছিল, তুমি যুধিটিরের সেই রাজঞী

য়তরাট্র-পূত্রণণ হইতে বলপূর্বক গ্রহণ করিয়া উপ-ভোগ কর, তাহা হইলেই আমার যথেই তুটি লাভ হয়। কৌরবেরা জন্য কর্ণার্জ্বনের সমাগম সন্দর্শন করুক। ঐ অসাধু পামরগণ তোমাদিগকে সৌজাত্র-হত্তে সম্বন্ধ দেখিরা অবনতি স্বীকার করুক। লোক-মধ্যে রাম কৃষ্ণের নাম যেমন একত্র উচ্চারিত হই-রা থাকে, কর্ণার্জ্জ্বনের নামও অদ্যাব্ধি সেইরূপ মিলিত-ভাবে প্রচারিত হউক। আহা! তোমরা উভয়ে একাল্মা হইলে ইহলোকে তোমাদিগের আর কি অসাধ্য থাকিতে পারে?

হে কর্ণ! তুমি পঞ্চ সহোদরে পরির্ভ হইলে,
মহাযজ্ঞহলীয় বেদীর উপরে অমরগণ-পরির্ভপ্রজাপতির ন্যায়, অবশাই স্থানোভিত হইবে, সন্দেহ
নাই। তুমি সর্বাগুণে উপপন্ন এবং মদীর সমন্ত
শ্রেষ্ঠ বান্ধার-নণ-মধ্যে জ্যেষ্ঠ; অতএব " স্তপুক্র "
এ শক্ষি তোমাতে যেন আর কথনই প্রযুক্ত না
হয়; তুমি বীর্যাবান পার্থ।

কুন্তী-বাক্যে পঞ্চত্মারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৪৫॥

বৈশিশায়ন কহিলেন, অনন্তর কর্ণ সূর্যা-মগুলবিনির্গত। একটি স্নেহময়ী আকাশবাণা শ্রবণ করিলেন। ভগবান্ ভাস্কর পুদ্রস্নেহের বশ্সদ হইয়া
স্বয়ং সেই সারবতী ভারতী উচ্চারণ করিয়াছিলেন।
সে বাক্য এই "হে কর্ণ! কুন্তী সত্য কথাই কহিয়াছেন; তুমি নিঃসংশয়-চিত্তে জননীর ঐ বাক্য প্রতিপালন কর। হে নরশ্রেষ্ঠ! স্বত্তোভাবে তদমুযায়ী
আচরণ করিলে তোমার যথেক মঙ্গল হইবে "।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, জননী কুন্তী এবং জনক স্বয়ং সূর্যাদেব-কর্ভৃক এই রূপ উক্ত হইলেও সত্যনিষ্ঠ কর্ণ বীরের মতি কিছুমাত্র বিচলিতা হইল না। তিনি মাতাকে সমোধিয়া কহিলেন, হে ক্ষল্রিয়ে! স্থাপনি যে বলিলেন, আপনকার আজ্ঞা প্রতি-পালন করাই স্থামার ধর্মের দ্বার-স্বরূপ, এ কথায়

আমি শ্রদ্ধা করিতে পারি না। হে মাতঃ! জন্মিবা-गात जागारत विमर्कान मिया जाशीन প্রাণ-বিনাশ-কর যেরূপ যোরতর অনিষ্টাচরণ করিয়াছিলেন, **उन्हाता आमात यम कीर्जि मकलरे विलुख ह**हेबा**ट**ह। আমি যদি কল্রিয়-কুলেই জন্মিয়া থাকি, তথাপি আপনকার নিমিত কাত্রয়ের সমুটিত কোন সং-স্কারই প্রাপ্ত হই নাই। ্রতএব বিবেচনা করিয়া দেখুন, কোন শত্রু উকি আপনকার অপেকা অধিক-তর অহিতাচরণ করিতে পারে? কি আশ্চর্য্যের বিষয়! আপনি আমাকে দয়া করিবার সময়ে দয়া না করিয়া,—বিধিবিহিত সর্ব-প্রকার আচার ও সংস্কারে বিবাঞ্জিত রাখিয়া, এক্ষণে আজ্ঞা-পাশে নিবদ্ধ করিতে যত্ন করিতেছেন। পূর্বের যথন আ-পনি জননীর ন্যায় আমার কোন প্রকার হিত एक्को हे करतन नाहे, **ख्यन निक्त रवश्व हहेर**कहा, क्विन आश्चरिटिश्विती इहेश्वाहे **धकरा श्रु**ख विशा সামাকে সম্বোধন করিতেছেন। রুঞ্-সহ্চর ধনপ্রয় হইতে কোন্ ব্যক্তি ভর-পীড়িত হইতে না পারে ? সম্প্রতি পাণ্ডবদিগের সভার বা সংগ্রামে গমন করিলে কোন্ ব্যক্তিই বা আমাকে ভাত বলিয়া অবধারিত না করিবে ? পুর্বের আমি তাহাদিগের ভাতা বলিয়া বিদিত ছিলাম না, এক্ষণে যুদ্ধকালে প্রকাশিত হইয়া যদি তাহাদের পক্ষ অবলয়ন করি, তাহা হইলে সম্প্র ক্রিয়-মণ্ডল আমাকে কি বলিবে? বিশেষত যাহাতে আমার স্থুৰ হুইতে পারে, এৰপ সর্ব প্রকার ভোগ্যবস্তু প্রদান-পূর্বক ধৃতরাষ্ট্রের পুজ্রগণ আমাকে যে এ পর্যান্ত যার পর নাই পূজা করিয়া আসিয়াছেন, তাহাই বা এক্ষণে কি বলিয়া বিফল করিতে পারি ? শত্রুবর্গের সহিত বৈর-বন্ধান ক্রিয়া যাঁহারা নিত্যকাল আমার উপা-সনা করিতেছেন এবং বস্থগণ যেমন বাসবকে নম-ক্ষার করেন, সেইৰূপ সর্বদাই আমার নিকটে বি-ন্ত্র-ভাব ধারণ করিয়া রহিয়াছেন; থাঁহারা মদীয় পরাক্রম ও বীর্যাবল-সহকারেই শত্র-সংহারে সমর্থ

হইবেন বলিয়া আশংসা করিতেছেন; তাঁহাদিগের সেই মনোরথ আমি কি প্রকারে ছিন্ন করিতে পারি ? ঘোরতর চুন্তর সমর সাগরের পার পাইবার আশয়ে যাঁহারা আমাকে তর্ণী-স্বৰূপ অবলয়ন করিয়া তাহা হইতে উন্তীর্ণ হইবার অভিলাষ করি-তেছেন, অধুনা কি বলিয়া আমি তাঁহাদিগকে পরি-ত্যাগ করিতে সমর্থ হই ? যাহারা চুর্য্যোধনের উপ-জীবী, তাহাদিগের কর্ত্তব্য-কর্ম্মের এই প্রস্কৃত কাল উপস্থিত হইয়াছে; অতএব এ সময়ে আমি প্রাণ-পরিরফণের প্রত্যাশা না রাখিয়া অবশ্যই তাঁহার প্রত্যুপকারাথে যুদ্ধ করিব। যে সমন্ত অন্থির-চিত্ত নরাধমেরা প্রভু-সলিধানে চিরকাল উৎরুফ ভরণ পোষণ প্রাপ্তে ক্লতক্লতা হইয়া ওঁহে'র কার্য্যকাল উপস্থিত হইলে তৎক্বত উপকারের প্রতি কিছুমাত্র দুটি না রাখিয়া অনায়াসে তাঁহাকে পরিত্যাগ করি-য়া যায়, সেই ভর্কৃ-পিগুপিহারী অবিশাসী ক্রতন্ন মহাপাতকিগণের না ইহলোক, না পরলোক, কিছুই থাকিতে পারে না।

হে জননি ৷ আপনাকে মিধ্যা কহিবার প্রয়োজন কি, ধৃতরাষ্ট্রের পুত্রগণ নিমিত্ত আমি যাবতীয় বল ও শক্তি বিস্তার-পূর্ব্বক আপনকার নন্দনগণের সহিত নিশ্চয়ই যুদ্ধ করিব। দয়া, ধর্মা ও সংপুরুষ-সমুটিত বিশুদ্ধ-চারিত আমাকে অবশ্যই রক্ষা করিতে হইবেক; অতএব যথার্থ হিতকর হইলেও সম্প্রতি আপনকার এ বাক্য কোন ক্রমেই প্রতি-পালন করিতে পারি না। তবে আমার প্রতি আ-প্রকরে এ অনুরোধও নিক্ষ্য হইবে না; আমি সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইয়া কেবল অর্জুন ব্যতিরেকে वाशनकात गुधिरित, जीम अनकूल महामन, এই চারি পুত্রের বিনাশ নিমিত্ত যত্ন করিব না। আপন-কার নিকটে আমি প্রতিজ্ঞা কুরিয়া বলিতেছি, সমরে যুখিটিরাদি আমার সহনীয় ও বধা হইলেও কদাচ ভাহাদিগকে বিন্ট করিব না। যুধিষ্টিরের দৈন্য-মধ্যে কেবল অর্জুনের সহিত আমার যুক্ত

হইবে; কেন না সমরে অর্জুনকে বিনফ করিলেই আমি যথেট কল লাভ করিব অথবা তংকর্তৃক নিহত হইয়া যশোযুক্ত হইব। হে যশস্থিনি! আ-পনকার পঞ্চ পুজের আর কদাচ বিনাশ হইবে না; কেন না অর্জুন বিনফ হইলে কর্ণকে লইয়া আপন-কার পঞ্চ পুজ্র থাকিবে, অথবা আমি মরিলে অর্জু-নের সহিত সেই পঞ্চ পুজ্রই থাকিবে।

কর্ণের এই বাক্য শ্রবণে কুন্তী ছংখাবেগে কম্পিতকলেবরা হইয়া সেই অদীম-ধৈর্যাশালী অবিচলিতচিন্ত মহাবীরকে আলিঙ্গন করত কহিলেন, হে
পুত্রক! তুমি যাহা বলিতেছ, তাহাই সম্ভবপর বোধ
হইতেছে; এই উপস্থিত সংগ্রামে কৌরবেরা ক্ষয়
প্রাপ্ত হইবে; কি করা যায়, দৈববল সর্কোপরি
প্রবল। হে শক্রকর্ষণ! তুমি যে যুধিষ্টিরাদি ভাত্চতুষ্টয়ের সহিত যুদ্ধে প্রবন্ত না হইবার প্রতিজ্ঞাপুর্বাক তাহাদিগের প্রতি অভয় প্রদান করিলে,
তোমার এই প্রতিজ্ঞাটি যেন সমাক্ রূপে প্রতিপালিতা হয়।

অনন্তর পৃথা কর্ণকে এই কথা বলিলেন, পুত্র! তোমার কল্যাণ হউক; তুমি অরোগী হইয়া কুশলে থাক। কর্ণও অবনত-মন্তকে তাঁহাকে 'যে আজ্ঞা' এই কথা বলিলেন; তৎপরে উভয়ে বিচ্ছিন্ন হইয়া পৃথক্ পৃথক্ দেশে গমন করিলেন।

কুন্তী-কর্ণ-সংবাদে কর্ণবিবাদ প্রকরণ ও ষট্চত্বা-রিংশদধিক শততম অধ্যায় সমপ্তি॥ ১৪৬॥

সৈন্যনির্যাণ প্রকরণ।

বৈশন্পায়ন কহিলেন, এ দিকে অরিন্দম কৃষ্ণ হস্তিনা হইতে উপপ্রব্য নগরে উপনীত হইয়া পা-গুবগণ-সন্নিধানে তথাকার সমস্ত র্ভান্ত আদ্যোপান্ত বর্ণন করিলেন। বছকণ পর্যান্ত স্ক্রামণ ও পুনঃপুন নত্রণা করিয়া পরিশেষে বিভান্ত কি তিনি স্কীয় বাস-ভবনে গমন করিলেন। অনস্তর দিনকর জ্ঞভূধর-শিখর অবলয়ন করিলে, পাগুবেরা পঞ্চলহোদর, বিরাট-প্রভৃতি সমস্ত নরপতিগণকে বিদার
করিয়া ক্ষের অমুধ্যান-পরায়ণ ও তদাত-মানস
হইয়া অবিলয়ে তাঁহারে নিকটে আনয়ন-পূর্বক
পুনরায় মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন।

যুধিষ্ঠির কহিলেন, বে পুগুরীকাক্ষ! ভুমি হস্তিনাপুরে গমন করিয়া সভা-মধ্যে ছুর্যোধনকে কি কথা
কহিয়াছিলে, তাহা বিশেষ করিয়া আমাদিগের
নিকটে বর্ণন কর।

বাস্থদেব কহিলেন, আমি হস্তিনায় গিয়া কুরু-সভা-মধ্যে ছুর্যোধনকে, যাহা তথা, পথা ও হিত, তাহাই বলিয়াছিলাম; কিন্তু সেই ছুর্মতি কোন ক্রমেই তাহা গ্রহণ করিল না।

যুধিন্তির 🖟 জজ্ঞাসিলেন, হে হৃষীকেশ জনার্দ্দন! ছুর্যোধন বিংপথগানী হইলে, কুরুর্দ্ধ পিতামৃহ সেই ক্ৰোধন-প্ৰকৃতি পাপাত্মাকে কিৰূপ উক্তি করি-লেন; ভরদ্বাজ-নন্দন মহাভাগ আচার্যাই বা কি বলিলেন; পিতা ধৃতরাষ্ট্র ও জননী গান্ধারী কি কথা কহিলেন; আমাদিগের কনিষ্ঠ তাত, ধার্মিকবর বিছুর, যিনি আমাদিগের নিমিত্ত সততই শোক-তাপে সম্ভপ্ত রহিয়াছেন, তিনিই বা ছুর্য্যোধনকে কি বলিলেন এবং সভাসমাসীন সমস্ত ভূপালবৰ্গই বা কিৰূপ সম্ভাষণ করিলেন ; তৎসমুদায় যথাক্রমে বর্ণন কর। হে কেশব। কুরুত্রেষ্ঠ ভীম্ম ও ধৃতরাষ্ট্র এবং অন্যান্য সভাসদ-সমস্ত সভা-মধ্যে সেই কাম-লোভাভিভূত হন্দমতি প্রাজ্ঞমানী ছুর্য্যোধনকে তাহার অপ্রিয়ভূত যে যে কথা কহিয়াছিলেন, সকলই তুমি আমার নিকটে ব্যক্ত করিয়াছ, কিন্তু তৎসমু-দায় আমার হৃদয়ক্ষম হয় নাই; অতএব তাঁহা-দিগের সেই বচনাবলি পুনরায় অবণ করিতে আ-মার একান্ত বাসনা হইতেছে। হে বিভো গোবিন্দ! যাহাতে যোগ্য-কাল অতীত না হয়, তাহার সমিট্রা কর; হে তাত কৃষ্! যেহেতু তুমিই একমাত্র জান মাদিগের গতি, তুমিই প্রস্কু এবং তুমিই গুরু-স্বরূপ হইয়াছ।

বাস্থদেব কহিলেন, হে রাজেন্দ্র ! কুরু-সভা-মধ্যে রাজা ছুর্য্যোধন যে ৰূপ উক্ত হইয়াছিল, তাহা বর্ণন করিতেছি, শুনিয়া হৃদয়ঙ্গম করুন। আমার যে কিছু বক্তব্য ছিল, তাহা শ্রবণ করাইলে, ধৃতরাষ্ট্র-তনয় হাস্য করিয়া উঠিল ; 🗫 হাততে ভীম্ম অতিশয় कुक रहेशा अहेकन कहिए नागितन, रह पूर्या-ধন! কুলের রক্ষা নিমিত্ত আমি তোমাকে এই যে কথা বলিতেছি, ইহা সম্যক্ ৰূপে বোধগম্য কর। হে রাজশার্দূল! তাহা শ্রবণ করিয়া স্ব কুলের হিত-নাধনে বজুবান্ হও। হে তাত! আমার পিতা শান্তমু লোক-বিখ্যাত ছিলেন। প্রথমে আমিই তাঁহার একমাত্র পুত্র ছিলাম। পণ্ডিতেরা এক পুত্রকে পুত্র বলিয়াই গণনা করেন না; একার আর একটি পুত্রের নিমিত্ত পিতার একান্ত ইচ্ছা হইল। 'কিসে আমার কুলের উচ্ছেদ না হয়, কি প্রকারেই বা আমার যশ বিস্তৃত হয় ' এইৰূপ চিন্তাই তাঁহার ঐ ইচ্ছার মূলীভূত কারণ। জনকের উক্ত মনোর্থ জানিতে পারিয়া আমি ব্যাসদেব-জননী কালীকে আপন মাতৃ-স্বৰূপে আহ্রণ করি-লাম। কুলরক্ষা এবং পিতার অভিলাষ পূরণার্থে আমি ছুষ্কর প্রতিজ্ঞা ক্রিয়াও ঐ কর্ম্ম সম্পন্ন করি-রাছিলাম। সেই প্রতিজ্ঞানুসারে আমি যে রাজা হইতে পারি নাই এবং চিরকাল উর্নরেতা হইয়া রহিয়াছি, তাহা তোমার বিলক্ষণ বিদিত আছে। রাজ্যপদ প্রাপ্ত হই নাই বলিয়া "আমার কোন কালেই বিষাদ বা পরিতাপের আবির্ভাব হয় নাই। স্বকৃত প্রতিজ্ঞাপালন করত আমি হৃষ্ট ও সম্ভূষ্ট-চিত্তে জীবন ধারণ করিতেছি।

হে রাজন্! কালক্রমে ঐ সত্যবতী জননীর গর্টে কুরুকুল-ধুরন্ধর ধার্মিকবর মহাবাছ বিচিত্রবীর্য্যের জিন্ত ইল। পিতার স্বর্গলাভ হইলে, আমি ঐ অসীম শ্রীসম্পন্ন কনিষ্ঠ ভ্রাতাকে আপন রাজ্যে

প্রতিষ্ঠিত করিল।ম। বিচিত্রবীর্যা রাজা হইলেন, আমি অধশ্বর থাকিয়া তাঁহার পোষা ছইয়া রহি-লাম। হে রাজেন্দ্র! তাঁহার বিবাহের কাল উপ-স্থিত হইলে, উপযুক্ত কন্যা আহরণ করিয়া বিবাহ **षिनाम। मिट्टे विवाह छेशनएक आभारक एव वह**न পার্থিব-কুলকে পরাজিত করিতে হইয়াছিল, তাহা তুমি বহু বার শ্রবণ করিয়াছ। অনস্তর আমি পরশু-রামের সহিত দশ-যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে প্রজাকুল ভয়ব্যাকূল হইয়া বিচিত্রবীর্যাকে প্রবাসিত করিল। অবোধ ভ্রাতা ক্রীসঙ্গে সাতিশয় আসক্ত হওয়ায় অচিরেই ফকারোগে আক্রান্ত হইলেন। এই রূপে কুরু-রাজ্য অরাজক হইলে, যথন স্থরেশ্বর বারি-বর্ষণে বিরত হইলেন, তখন প্রজাগণ ভয় ও ক্ষ্পায় পীড়িত হইয়া মৎসালিধানে সত্ত্র প্রধাবিত হইল। সকলে সমবেত হইয়া আমাকে এই বলিয়া অনু-রোধ করিতে লাগিল, " হে শাস্তমু-কুলবর্দ্ধন! রাজ-বিবজ্জিত হওয়ায় আপনকার প্রজা-সমুদায় সংহার-দশায় উপনীতপ্রায় হইল; অতএব আমাদিগের কল্যানের নিমিত্ত অধুনা আপনিই রাজ্যভার গ্রহণ করুন। অপেনকার প্রসাদে আমাদিগের ঈতি অর্থাৎ শস্যহানিকর অনার্টি-প্রভৃতির অপনোদন হউক। হে গাঙ্গেয়! স্থদারুণ ব্যাধি-নিকর-ছারা প্রপীড়িত হওয়ায় সমস্ত প্রজাপুঞ্জ অম্পাবশিষ্ট হইরাছে; যাহারা এ পর্যান্ত জীবিত আছে, তাহা-দিগেরই পরিত্রাণার্থে মুনোনিবেশ করুন। হে বীর! অধুনা আপনকার অমুগ্রহ ব্যতীত আমাদিগের মনোবেদনার উপশম হইবার আর উপায়ান্তর নাই; অতএব রূপা বিতরণ-পূর্বক ধর্মামুসারে প্রজা-পালন করুন; আপনি জীবিত থাকিতে যেন সমস্ত সাম্রাজ্যের বিনাশ উপস্থিত না হয় "।

প্রজাগণ এইরূপ বছতর কাতরোক্তি প্রকাশ করিলেও আমার স্বস্থির-চিত্ত কিছুমাত্র ক্ষোভিচ্ছ বা বিচলিত হইল না। সাধুগণ-চরিত সদাচার স্মরণ করিয়া আমি স্থাক্ত প্রতিজ্ঞা রক্ষণেই তৎপর

থাকিলান। তথন সমস্ত পুরবাসি-বর্গ, আমার বিনাতা কল্যাণময়ী কালী, ভৃত্য, পুরোহিত, আচার্য্য
ও বহু-শান্ত্রজ্ঞ ব্রাহ্মণগণ, সকলেই অভিমাত্র সম্থপ্ত
হইরা আমাকে রাক্যপদ গ্রহণে অমুরোধ করত
কহিলেন, হে মহামতে! আমাদিগের হিতার্থে
ভূমি রাজ-সিংহাসনে আরোহণ কর; ভূমি বিদ্যানা থাকিতেও ভোমার পিতামহ প্রতীপ মহারাজের রক্ষিত এই বিস্তীর্ণ সাম্রাজ্য যে বিনাশ প্রাপ্ত
হইবে, ইহা অভান্ত পরিভাপের বিষয়!

তাঁহাদিণের এই বাকা শ্রবণে আমি অতিশয় ডুঃখিত ও কাতর হইয়া ক্তাঞ্জলিপুটে তাঁহাদিগকে পুনংপুন নিবেদন করিলাম, আমি পিতার গৌরব এবং কুলের রক্ষার্থে রাজত্ব-রহিত ও ঊর্ধ্বরেতা হই-বার প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, অধুনা কি প্রকারে রাজ্য-ভার গ্রহণ করিতে পারি ? সামানাত সকলকে এই-কপ কহিয়া পরিশেষে অঞ্জলিবন্ধন-পূর্বকে মাতা-কেও এই বলিয়া বারংবার প্রসাদিতা করিলাম, জননি! আমি আপনকার নিমিত্তই উক্ত ৰূপ তুম্ছেদা প্রতিজ্ঞা-পাশে আবদ্ধ হইয়াছিলাম, অত-এব আপনি আর আমাকে রাজ্যভার গ্রহণের আজ্ঞা করিবেন না। হে অয়! কুরুবংশ-সম্ভূত বিশেষত শান্তসুর ঔরদে উৎপন্ন হইয়া আমি কি বলিয়া প্রতিজ্ঞাভঙ্গ করিব? শুদ্ধ আপনকার নিমিত্তই আমি যথন ঐ প্রতিজ্ঞায় আৰু হইয়াছি, তথন আপনিই বা কি বলিয়া উহা উল্লুজ্ঞন করিতে প্রবৃত্তি দেন ? অতএব হে স্কুতবৎসলে! আপনকার প্রেষ্য ও দাস-স্বৰূপ হইলেও আমি এ আজ্ঞাটি কোন সতেই প্রতিপালন করিতে পারি না।

মহারাজ! আমি মাতা ও পৌরজন-বর্গকে এইকপে অমুনয় করিয়া পরিশেষে আতৃ-জায়ার গর্ত্তে
পুলোৎপাদন নিমিত মহামুনি ব্যাসদেবকে প্রার্থনা
করিলাম। সে জন্য জননীও তাঁহাকে বিত্তর অমুরোধ করিলেন। হে ভরতসভ্তম! মুনিবর আমাদিগের প্রার্থনায় প্রসন্ন হইয়াতিনটি পুল্ল উৎপন্ন

করিলেন। তথ্যো তোমার পিতা ধৃতরাষ্ট্র অন্ধ হইয়াছিলেন, স্বভরাং জোষ্ঠ পুত্র হইলেও ইন্দ্রিয়-বৈকল্য-ছেতুক রাজা হইতে পারেন নাই। সকল-লোক-বিখ্যাত মহাত্মা পাণ্ডই রাজত্ব প্রাপ্ত হইয়া-ছিলেন। তিনি যখন রাজা হইয়াছিলেন, তখন তাঁহার পুজেরা অবশ্যই তাঁহার উত্তরাধিকারী। অতএব হে বৎস! অনুর্থিক কলহ করিও না, রাজ্যের অর্জ অংশও পাগুবদিগকে প্রদান কর! বিবেচনা করিয়া দেখ, আমি জীবিত থাকিতে কোন্ বাক্তি রাজ্যশাসনে সমর্থ হইতে পারে? অতএব কদাচ আমার বাক্যে অনাস্থা করিও ন।; আমি সর্বাদাই তোমাদিগের কেবল শান্তি ইচ্ছা করিতেছি। তো-মার ও তাহাদিগের প্রতি আমার কিছুমাত্র বিশেষ নাই। আমি তোমাকে যেৰূপ উপদেশ করিলাম, তোমার চুনক জননী ও বিছ্রেরও এই মত। হে তাত! ৰ্হ্দ্ধগণের বাক্য অবশাই শ্রোতবা; অত্এব আমার এই কথায় কোন শঙ্কা না করিয়া আপনার ও অধিল ভূমগুলের মঙ্গল-সাধন কর; নির্থক সর্বানে প্রবৃত্ত হওয়া কোন মতেই বিধেয় নহে।

রুঞ্-বাক্যে সপ্তচত্বারিংশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪৭॥

বাস্থদেব কহিলেন, ভীয় উক্ত ৰূপ কহিয়া নিরস্ত হইলে, বচনক্ষম দ্রোণাচার্য্য নৃপগণ-সন্নিধানে ছুর্য্যোধনকে সম্বোধিয়া আপনকার শুভকর এই বাক্য বলিলেন, হে তাত! প্রতীপ-নন্দন শাস্তমু যেমন কুলরক্ষার্থে রুতসঙ্কণ্প ছিলেন এবং তদীয় পুত্র দেবত্রত ভীয় কুলরক্ষা নিমিত্ত ষেৰূপ স্থিরনিশ্চয় হইয়াছিলেন, সেইৰূপ সত্যসন্ধ ও জিতেন্দ্রিয় পাণ্ডুনরপতিও কুরুকুলের ধুরন্ধর ছিলেন। সেই সমাধিনিষ্ঠ, স্বত্রত-পরায়ণ ধর্মাত্মা স্বয়ং রাজা হইয়াও অগ্রজ ধৃতরাষ্ট্র এবং কনিষ্ঠ বিছুরকে স্বকীয় রাজ্যপদ সমর্পণ করিয়াছিলেন। হে রাজন্! কুরুল্রেষ্ঠ নরপতি পাণ্ডু ধৃতরাষ্ট্রকে সিংহাসনে স্থাপিত করিয়া

ভার্যা-হয় সমভিব্যাহারে জরণো প্রস্থিত হইয়াছিলেন। তথন পুরুষব্যাত্র বিছুর স্বাভাবিক বিনীতভাবে অধন্তন থাকিয়া ভূতোর নায়ে বালবাজন হতে
লইয়া ধৃতরাষ্ট্রের উপাসনা করিতে লাগিলেন এবং
যাবতীর প্রজাপুঞ্জও জনাধীশ্বর পাগুরাজের নায়
তাহাকে যথানিয়মে রাজ-সন্মান প্রদান করিতে
থাকিল।

পরপুর-বিজয়ী পাগুরাজ ধৃতরাষ্ট্র ও বিচুরের হতে রাজ্যভার বিনান্ত করিয়া সকল মহীমণ্ডল পর্য্য-টনে বহির্গত হইলে পর সত্যপ্রতিজ্ঞ বিপুর কোষ-সঞ্জ, দান, ভৃতাবর্গের তত্ত্বাবধান ও ভরণ পোষণ-বিষয়ে নিযুক্ত ধাকিলেন, আর পরপুরঞ্জ মহা-তেন্সা ভীম সন্ধি-বিগ্রহাদি বিষয়ে ব্যাপৃত থাকিয়া ताख्यान-मिश्वादन मानामानामि कार्या मकदलत अर्था-বেক্ষণ করিতে লাগিলেন। মহাবল-সম্পান্ন নরপতি ধৃতরাষ্ট্র সিংহাসনে আক্র হইলে, মহীত্মা বিছুর সর্বাদাই তাঁহার সন্নিহিত থাকিতেন। অতএব হে জনাধিপ! ভূমি সেই ধৃতরাষ্ট্রের কুলে জন্মগ্রহণ क्रिया कि वृश्चिम। कूल-एडम-मन्नामरन अबुख इहे-তেছ ? তাদৃশী ছুম্পুর্ত্তি পরিহার-পূর্ব্বক ভাত্গণের সহিত মিলিত হইয়া অমুক্তম ভোগ-সমস্ত উপভোগ কর। হে রাজসন্তম! যুদ্ধ-ভীরুতা বা অর্থ-লালসা-হেতুক আমি তোমাকে এই কথা বলিতেছি, কদাচ এরপ বিবেচনা করিও না; ভীমের প্রদন্ত অর্থই আমি ভোগ করিতেছি, তোমার দত্ত নছে। হে জনাধিপ! ভোমার নিকটে জীবনোপায় প্রার্থনা করিতে আমার কথনই আকাজ্ঞা হুইবে না। হে শক্রকর্ষণ! তুমি নিষ্ণয় জান, ভীয় যে দিকে, দ্রোণও দেই দিকে প্রস্থিত; স্থতরাং যদি আমার মত গ্ৰহণ করিতে হয়, তবে ভীয় বাহা বলিয়াছেন, তাহাই কর;—পাণ্ডুপুত্রদিগকে রাজ্যের অর্জাংশ দাও। হে ভাত! আমি জোমার ও তাঁহাদিগের সমান আচার্যা-কর্ম করিয়াছি; অতএব উভয় পক्षिरे आमात नर्वम। नमान जिहा आमात निकटि

ক্ষমণামা যেমন, খেতবাহন ধনপ্তমণ্ড সেইৰূপ। ফলত বছল ৰাক্য-বায় করিবারই বা প্রয়োজন কি, যেখানে ধর্মা সেই খানেই জয়।

কৃষ্ণ কহিলেন, মহারাজ! অমিত-তেজা দ্রোণা-চাৰ্যা এইৰূপ কহিলে পর, সত্যপ্রতিজ্ঞ সকল-ধর্মজ্ঞ বিছুর বদন পরিবর্ত্তন-পূর্ব্তক ভীলের মুখাবলোকন করত কহিতে লাগিলেন, হে দেবব্রত! আমি যাহা বলিতেছি, একবার নিবিষ্ট-চিত্তে বোধগম্য করুন। আপনি যে প্রনেউ কৌরব-বংশের পুনরুদ্ধার করি-য়াছেন, সেই নিমিত্তই কি আমার ভূয়োভূয় বিলাপ ও আর্ত্তনাদের প্রতি উপেক্ষা করেন? নিম্বলঙ্ক कुरुकुल এই कुलमृष्य द्वर्याधन क ? क्रमृष द्वर्षि-নীত পাপাত্মা কদাচ এ কুলের যোগ্য নহে; কিন্তু কি আশ্চর্যা! আপনি ঐ লোভাভিভূত, অনার্যা, অক্তজ্ঞ, নফীমতির মতানুবর্ত্তন করিতেছেন। যে নরাধম ধর্মার্থদর্শী জনকের শাসন অবহেলন করি-তেছে, তাহার নিমিত্ত এই সমস্ত কৌরব-কুল যে নির্মূল হইবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি? অতএব হে মহারাজ! যাহাতে সর্বোচ্ছেদ না হয়, এখনও তাহার উপায় করুন। আপনি আমাকে, ধৃতরাষ্ট্রকে এবং অপরাপর সকলকেই যেন চিত্রার্পিত-পুত্তলি-কার ন্যায় করিয়া রাখিয়াছেন। হে মহাবাহো! প্রজাপতি প্রজা হটি করিয়া কালক্রমে ভাছার যেমন সংহার করেন, সেরূপ করা আপনকার উচিত হইতেছে না। আপনি স্বয়ং যে কুলের রক্ষা করি-য়াছেন, সম্প্রতি ভাহার আপাত-ধংসদশা দৃষ্টি করি-য়াও উপেক্ষা করিবেন না। অবশ্যস্তাবী সংহার সময় উপস্থিত হইল বোধ করিয়া য্দাপি আপন-কার মতিভ্রংশ হইয়া থাকে, তবে আমাকে ও ধৃত-রাষ্ট্রকে সমভিব্যাহারে লইয়া অরণ্যে প্রস্থান করুন, नजूरा जागारे এरे थनवृक्षि स्ववृत्यि व्रूट्याधिमाटक **অবিলয়ে বজ্জন** করিয়া পাওবগণ-পরিরক্ষিত ভারত-ब्राटकात[्]मामन कङ्गन। (६ त्राक्रमार्फ्_रन_! स्प्र्_{स,} কুরু ও পাণ্ডবগণের এবং অমিত-তেজন্বী ভূপাল-

নিচয়ের মহান বিধংস বিলোকিত হইতেছে; অত-এব এখনও প্রসন্ম হউন।

বিছুর স্থান-মানসে এইৰপ কহিয়া নিরস্ত হই-লেন এবং অনুধ্যান-পরায়ণ হইয়া পুনঃপুন দীর্ঘ-নিঃশাস পরিত্যাগ করিতে লাগিলেন।

তদনম্বর কুলনাশ-ভীতা স্থবল-রাজ-নন্দিনী গা-क्षाद्री बृश्यान-ममरक मिहे चि वृग्धान शाश्रमि ছুর্যোধনকে সম্বোধিয়া ক্রোধভরে ধর্মার্থামুগত এইৰূপ বাক্য উক্ত করিলেন, রে ছুর্ব্বুদ্ধে! এই রাজ-मडा-मद्धा य ममल नदाधिल, ब्रक्तिश्वं ७ व्यनाना সভাসম্বৰ্গ প্ৰবিষ্ট হইয়াছেন, তাঁহারা সকলেই প্ৰবণ করুন, আমি ভোর অপরাধের কথা ব্যক্ত করি ;— অমাতাগণে পরিবৃত ও রাজপরিচ্ছদে সক্ষিত হইয়া তুই বে কত দুর পাপকর্মের অনুষ্ঠান করিতেছিস্, ভাহার দীমা নির্দেশ করি। রে পাপবুদ্ধে! কুরু-গণের রাজ্য আমুপূর্ব্ব ভোজ্য অর্থাৎ পর পর অধি-কারি-ক্রমে ভোক্তব্য, ইহাই আমাদিগের ক্রমাগত कुलथर्म ; किन्छ चात नृभः म-कर्मन ! जूरे छूनी छि-পরতন্ত্র হইয়া মে ধর্মে জলাঞ্চলি প্রদান-পূর্বক চির-স্তন কুরুরাজ্যের ধংসবিধানে প্রবৃত্ত হইতেছিস্। व्यद्भ द्वर्राधन! मनीवी धृजताद्वे ७ ठाँशत व्यञ्जना मीर्घमर्भी विषुत, रेशाँतारे उ**७**८३ ताकाश्राप श्राज-ষ্ঠিত ছিলেন, এক্ষণে তুই মোহ-পরবশ হইয়া ইহাঁ-দিগকে অভিক্রম-পূর্বক কি বলিয়া রাজত্ব প্রার্থনা করিস্? ভীম জীবিত থাকিতে মহামুভাব অন্ধরাজ ও বিছুর, ইহাঁরাও কদাপি স্বাধীন হইতে পারেন ना। किन्छ ७३ नद्राट्यक महाचा शकानमन धर्म-পালনে স্থনিশ্চল থাকিয়া রাজ্য-বাসনা পরিত্যাগ করিয়াছেন। সেই নিমিত্তই এই অপরিভবনীয় সাক্রাজ্য পাণ্ডুরাজের হস্তগত হইরাছিল। অতএব একণে তাঁহার পুজাগৰ ভিন্ন অনা কোন্ বাজি ইহার প্রভু হইতে পারে? শুরু পাওবেরাই পুত্রপৌদ্রাদি ক্রমে, পিতৃপিতামহ-সম্মীয় এই সমগ্র রাজ্য-সম্প্র-দের অধিকারী; **আর কাহারও ইহাতে ত্বত্ব নাই। অ**-

বীম-মনীবা-সম্পন্ন সভাপ্রভিচ্ছ কুরুকুল-মুখ্য মহাস্থা দেবপ্রত বাহা বলিতেছেন, তাহার কিছুমাত্র অন্যথা না করিয়া আমাদিগের তদমুঘায়ী কার্য্য করাই সর্বতোভাবে কর্তব্য,—স্বধর্ম পরিপালন করত পা-শুবদিগকেই নিজ রাজ্য প্রদান করা বিধেয়। অস্ত্র-রাজ ও বিছুর, ইহারাও উভয়ে একবাক্য হইয়া মহা-ব্রত ভীমদেবের অমুগ্রাক্রমে মছক্ত এই বাক্যই ব্যক্ত করুন। তাহা হইলেই যথার্থ স্কুল্যের কার্য্য এবং ধর্মের পুরস্কার করা হয়। মহারাজ ধৃতরাষ্ট্র ও ভীম-কর্তৃক অনুজ্ঞাত ও পুরস্কৃত হইয়া ধর্মপুত্র যুধিন্তির ন্যায়ানুগত এই কুরুরাজ্য ধর্মানুসারে দীর্ঘ-কাল শাসন করুন।

কৃষ্ণ-বাক্যে অফচত্বারিংশদ্ধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪৮॥

£ --

বাস্থদেব কহিলেন, মহারাজ ! গান্ধারীর বাক্যাব-সানে জনেশ্বর ধৃতরাষ্ট্র রাজর্ফ-সন্নিধানে ছুর্য্যো-ধনকে এইৰূপ কহিতে লাগিলেন, বংস! যদি জন-কের প্রতি তোমার ভক্তি থাকে, তবে তোমার কল্যাণের নিমিত্ত আমি যে কথা বলিতেছি, সম্যক্ ৰূপে হৃদয়ক্ষম করিয়া তাহারই অমুষ্ঠান কর। হে ভরতভ্রেষ্ঠ! দেখ, প্রথমে প্রজাপতি সোম কুরুবংশ-বর্জনের প্রবর্ত্তক হইয়াছিলেন; নছবাত্মজ য্যাতি সোম হইতে ষষ্ঠ পুরুষ। তাঁহার রাজর্ষি-প্রধান পঞ্চ পুত্র হয়; তন্মধ্যে মহাতেজা যতু সর্বব জ্যেষ্ঠ; স্থতরাং তিনিই সকলের প্রভু ছিলেন। হে ভাত। তাঁহার কনিষ্ঠ পুরু; তিনিই আমাদিগের বংশবর্জন-কর্ত্তা। র্যপর্ব্ব-রাজের ছুহিতা শর্মিষ্ঠার গর্ব্বে তাঁহার জন্ম হয়। বছু দেববানীর পুত্র এবং অমিত-ভেজস্বী শুक्रावीदर्शत पोरिख। तारे महावीत हरेए छे ষাদব-কুলের উৎপত্তি হয়। 'ছুর্ব্বুদ্ধির পরতন্ত্র হইয়া তিনি সম্পূর্ণ দর্প সহকারে সমস্ত ক্ষতিয়-মণ্ডলকে व्यवमानिक क्रिन्नाहिट्यन अवर व्यवस्य विद्या-

हिं इरेश कन्दकृत भागन्छ अवरर्गन क्रिसाहि-লেন। সেই মহাবল-সম্পদ্ধ অপরাজিত বছু পিডাকে ও আতৃবৰ্গকে অৰজা করিয়া এই চতুঃসীমাৰক সমগ্র ভূমগুলে বাছবল বিস্তার-পূর্বক অধিল মহী-পালবৃন্দকে বশবর্তী করত হত্তিনানগরে অবস্থিত हरेब्राहिटलन। (र शाक्षादत ! नहव-नम्पन ययाजि সাতিশয় কুদ্ধ হইয়া সেৰু ছুৰ্বৃত্ত পুত্ৰকে শাপ প্রদান করিলেন এবং রাজ্য হইতেও অবরোপিত করিয়া দিলেন। নৃপদত্তম য্যাতির আর যে তিন পুত্র ঐ বলদর্গিত জ্যেষ্ঠ তনয়ের অমুবর্জী হইয়া-ছিলেন, তাঁহাদিগকেও রোষভরে অভিশপ্ত করিয়া পরিশেষে তিনি কনিষ্ঠ নন্দন পুরুকে স্বকীয় রাজ্য-পদে নিবেশিত করিলেন। পুরু একান্ত বিনীত এবং সর্বভোভাবে তাঁহার আজ্ঞাবন্তী ছিলেন, স্তরাং কনিষ্ঠ হইয়াও স্বভাব-গুণে মুর্কাধ্যক্ষ হই-লেন। অতএব বিবেচনা করিয়া দেখ, বুঁপুক্ত হইলে জ্যেষ্ঠও পরিতাজ্য হইয়া পিতৃ-রাজ্যে বঞ্চিত হইয়া थारक এবং ब्रह्माश्रास्त्री कनिर्छद्रां विश्वम्थन-নিকর-দারা রাজত্ব প্রাপ্ত হয়।

এইৰপ আরও একটি নিদর্শন দেখ, আমার প্রপিতামহ পৃথিবীপাল প্রতীপ সর্ব্ব-ধর্মজ্ঞ ও ত্রি-লোক-বিখ্যাত হইয়া ধর্মান্ত্রসারে রাজ্যশাসন করি-তেন। হে তাত! সেই রাজসিংহের দেবকণ্প মহায়শসী তিনটি পুত্র জমে। তম্মধ্যে দেবাপি জ্যেষ্ঠ, বাহ্লিক দিতীয়, আর আমার পিতামহ ধৃতিমান্ শাস্তর্ম কনিষ্ঠ। রাজসক্তম মহাতেজা দেবাপি কোঠনামক কুষ্ঠরোগ-বিশেষ-দারা আক্রান্ত হইয়াছিলনে। কি বালক, কি র্দ্ধ, সকলেই দেবাপিকে অন্তঃকরণের সহিত প্রীতি করিত। কলত তিনি পরম ধার্মিক, সত্যবাদী, পিতৃসেবা-পরায়ণ, পৌর ও জানপদবর্গের প্রিয়পাত্র, সাধুগণের সংকার-ভাজন, বদানা, সত্যপ্রতিজ্ঞ, সর্ব্বলোকের হিত্ত-কার্মো নিরত, জনক ও ব্রাদ্ধাগণের আক্রান্ত্রত্তি এবং মহাত্মা বাহ্লীক ও শাস্তর্ম্বর প্রিয় জাতা ছি-

লেন। সেই একাছ-ভূত মহাছাগণ-মধ্যে পরম সৌ-ভাত্ত-ধর্ম প্রতিনিয়তই বিরাজমান ছিল।

কালক্রমে নৃপদন্তম র্ক্করাক প্রতীপ শাস্ত্র-বিধানামুদারে ক্যেষ্ঠ পুত্রের অভিষেক নিমিত্ত আয়োক্রন করিতে লাগিলেন;—অভিষেক্রের উপযোগী
যাবতীয় মাক্লা দ্রব্য সমস্ত আহরণ করাইলেন।
কিন্তু ব্রাহ্মণ ও প্রাচীনবর্গ পৌর ক্রানপদগণের সহিত
একবাক্য হইয়া দেবাপির রাজ্যাভিষেক বিষয়ে
আপত্তি উপস্থাপিত করত তাঁহাকে তদ্বিষয় হইতে
নির্ত্ত করিলেন। রাজা অভিষেক নিবারণ-বার্তা
শ্রবণে অশ্রুক্ত হইয়া পুত্রের নিমিত্ত অভিশয়
শোক করিতে লাগিলেন।

এইৰপে দেবাপি বদান্য, ধর্মজ্ঞ, সত্যপ্রতিজ্ঞ ও প্রজাগণের প্রীতিপাত্র হইয়াও কেবল চর্মাদোর-হেতুক রাজ্যলাভে বঞ্চিত হইয়াছিলেন। ভূপাল বিক-লাক হইলে দেবতাদিগের তুটি হয় না, এই নিমিন্তই ব্রাহ্মণেরা তাঁহার অভিষেক বিষয়ে প্রতিষেধ করি-য়াছিলেন। বিকল-দেহ রাজপুত্র দেবাপি, রাজাকে নিবারিত হইতে দেখিয়া শোক-মন্তপ্ত-মানসে অরণ্য আশ্র করিলেন। হে রাজন্! বাহ্লিক মাতামহের मञ्क्रिमाली রাজ্য প্রাপ্ত হইয়া পিতা ও ভ্রাতৃগণকে পরিত্যাগ-পূর্বক পূর্বেই মাতুলকুলে অবস্থিত হই-য়াছিলেন; স্থতরাং পিতার পরলোকান্তে লোক-বিখ্যাত শান্তনুই বাহ্লিকের অন্তব্জা-ক্রমে রাজ্য-ভার গ্রহণে সম্মত হইলেন। হে ভারত! বাহ্লিক যেমন শান্তমুকে নিজ ভোগ্য রাজ্যপদ প্রদান করি-য়াছিলেন, মতিমান্ পাঞুও সেইৰূপ স্বিশেষ চিস্তা করিয়া আমাকে আপন রাজকার্য্যের ভার দিয়া-हिल्न। **चामि (कार्छ हरेल** हीनाक विन्ना রাজত্ব লাভে বঞ্চিত হইয়াছিলাম; স্বতরাং কনিষ্ঠ হইরাও পাণ্ডুই এই কুরু-রাজ্যের অধিকারা হইয়া-ছিলেন। •অতএব হে অরিন্দম। একণে পাও অবিদ্যমানে তদীর পুত্রগণ ব্যতিরেকে আরু কোন্ बालित हेराए अधिकात रहेए भारत ? आमि:स्व

রাজ্যের অংশী হইতে পারি নাই, তুমি কি বলিয়া তাহার আকাজন করিতেছ ? তুমি রাজার পুত্র নহ এবং রাজ্যেরও অধিকারী নহ, কেবল ছুরাশা-পর-তক্স হইরা পরধন হরণে উদযুক্ত হইতেছ। মহাত্মা যুখিন্তির রাজপুত্র, স্কুতরাং রাজ্যও তাঁহার ন্যায়ামু-গত। দেই মহামুভাবই এই কুরুকুলের ভরণ পোষ। ও শাসন-কর্তা। রাজার পক্ষে ক্ষমা, ডিভিকা, দম, আর্ক্সব, সভানিষ্ঠা, শাস্ত্রজ্ঞান, অপ্রমাদ, সর্বভূতে অমুকল্পা ও যথা নিয়মে অমুশাসন প্রভৃতি যে সমস্ত গুণ থাকা আবশাক, যুধিন্তিরে তাহার কিছু-মাত্র অসম্ভাব নাই। তিনি সত্যসন্ধ, সতত অপ্রমন্ত, वक्-कार्तत निरम्भवजी, প্रकाशूरक्षत श्रानः जाकन, स्कृतात्वत श्रवि प्राचान्, किट्डिस्स्स, माध् वदः সাধুগণের ভরণ-কর্তা। অতএব অরে ছর্ব্বিনীত! তুমি রাজার পুত্র না হইয়া বিশেষত অসাধু-চরিত, মহালুক এবং বন্ধুগণের অনিষ্ট চেষ্টায় নিরন্তর তৎপর হইয়া ক্রমপ্রাপ্ত পাওবদিগের এই রাজ্য কি প্রকারে অপহরণ করিতে পারিবে ? যদি ভাতৃ-গণের সহিত কিছুকাল জীবিত থাকিবার ইচ্ছা খাকে, তবে এখনও মোহ পরিত্যাগ করিয়া সেই মহাত্মা পাওপুত্রদিগকে বাহন ও পরিছেদ-সম্বলিত রাজ্যের অর্দ্ধাংশ প্রদান কর।

বাস্থদেব-বাক্যে একোন পঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৪৯॥

বাস্থদেব কহিলেন, এইবপে ভীয়, জোণ, বিছুর, গান্ধারী ও ধৃতরাষ্ট্র আপন আপন উপদেশ-বাক্য উক্ত করিলেন, তথাপি সেই মন্দমতি পাপাত্মার কিছুমাত্র উন্ধেষ হইল না। সে সকলের বাক্য অব-হেলন করিয়া ক্রোধ-সংরক্ত-লোচনে গাত্রোপান করত সভা হইতে প্রস্থান-পরায়ণ হইল। যে সমস্ত ভূপালবর্গ ভাহার নিমিক্ত জীবন পর্যান্ত বিসক্ষন করিতে উদ্যত হইয়াছিল, ভাহারাও ভাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হইল। ছুর্যোধন ঐ নউমিতি

পার্থিবদিগকে বারংবার এইৰূপ আজ্ঞা করিল " অদ্য পুৰানক্ত্ৰ, অভএৰ অদ্যই তোমরা কুরু-ক্ষেত্রে গমন কর ^স। অনন্তর সেই ভূপালগণ <u>কা</u>ল-প্রেরিড হইয়া ভীন্নকে দেনাপতি করত মহাহর্ষ-ভরে অপেন, আপন সৈন্য-সমভিব্যাহারে যুদ্ধ্যাতা করিল। মহারাজ! কৌরবগণের একাদশ অক্ষৌ-হিণী অনীকিনী সমাপুচা হইয়াছে; তালচিক্লিত-কেতু মহাবীর ভীম তাহাদিগের সর্বাত্যে বিরাজিত রহিয়াছেন; অতএব এক্ষণে যে ৰূপ করা উপযুক্ত ও কর্ত্তব্য হয়, তাহার সন্থিধান করুন। হে ভারত! আমি গমন করিলে কুরু-সভা-মধ্যে ঘাহা যাহা হইয়াছিল ;—ভীম, দ্রোণ, বিছুর, গান্ধারী ও ধৃত-ता<u>ष</u>्टे, आगात ममत्क पूर्या। धनत्क त्य त्य कथा कहि-য়াছিলেন; সকলই আনুপূর্ব্বিক বর্ণন করিল।ম। হে রাজন্ ৄ, যাহাতে আপনাদিগের ভাতৃ-সদ্ভাব সংস্থাপিত হিয়, ঈদৃশ স্থাসিদ্ধ বংশের বিধংস না হয় এবং প্রজাগণের উত্তরোত্তর সমৃদ্ধি হইতে থাকে, তাহাই ইচ্ছা করিয়া আমি প্রথমত সাম্ব্রাদ প্রয়োগ করিয়াছিলাম ; কিন্তু যখন দেখিলাম, সান্ত্-वाम आञ्च इहेन ना, उथन অগতা। ভেদ-প্রয়োগ ক্রিতে বাধ্য হইলাম এবং আপনাদিগের দৈব-মামুবোচিত স্থমহৎ কর্ম্ম-সকলেরও কীর্ত্তন করি-লাম। হে ভারত! স্থযোধন আমার সামপুর্ব্ধ-বাকোও যখন অনাদর করিল, তখন আমি সমগ্র পার্থিববর্গকে সমানয়ন-পূর্ব্বক ভেদিত করিতে কিছু-মাত্র সঙ্কুচিত হইলাম না এবং ঘোরতর অমানুষ অদুত কর্ম-সম্ভ প্রদর্শন করিতেও তাটি করিলাম না। সমবেত নরপতিদিগকে বাক্যুও মন্ত্রণা-ছার। বারংবার ভেদিত ও ভর্ৎসিত করিয়া, সুযোধনকে তৃণবং অবজ্ঞা করিয়া, কর্ণকে পুনঃপুন ভয়-প্রদর্শন করিয়া এবং ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রগণের দৃত্তকীড়ার মুলী-ভূত পাপাত্মা শকুনিকে ভূয়োভূয় নিন্দা করিয়াও স্থামি পরিশেষে পুনরায় সাত্ত দে প্রবৃত হইলাম। क्रून्दर्भत् अटलम् अदर कार्यात भोक्या निमिर्छ

আমি ছুর্যোধনকে রাজ্য সম্প্রদানের কথাও বলিলাম। কহিলাম 'সেই শুরবীর পাণ্ডবেরা মান ও প্রভুত্ব পরিত্যাগ-পূর্বক তোমাকেই রাজ্য সমর্পণ করিয়া ধৃতরাষ্ট্র, ভীম ও বিছুরের আজ্ঞাধীন হইয়া থাকুন। তোমার হিতার্থে অন্ধরাজ, গাঙ্গেয় ও বিছুর যাহা কিছু বলেন, সকলই হউক; তুমিই রাজ্যাধিকারী হও, কেবল পাঁচখানি প্রামমাত্র পাণ্ডবিদিগকে প্রদান কর। হেরাজসভ্তম! তাঁহারা যেকোন প্রকারে হউক, অবশ্যই তোমার জনকের ভরণীয় '।

এইৰপ অনুনীত হইয়াও সেই স্থদারূণ ছুটাছ্মা কোন প্রকারেই অংশ প্রদানে সম্মত হইল না। অতএব হে রাজন্! তাদৃশ পাপিষ্ঠগণের প্রতি সম্প্রতি চতুর্থ উপায় দণ্ডপ্রয়োগ ব্যতীত আমি আর কিছুই দেখিতে পাই না। তাহাদিগের সহায়ভূত অবোধ নরাধিপেরাও বিনাশার্থে কুরুক্ত্রে যাত্রা করিয়াছে। হে পাণ্ডব! কুরুসভা-মধ্যে যাহা কিছু হইয়াছিল, এই সকলই আপনকার নিকটে ব্যক্ত করিলাম। বিনা যুদ্ধে তাহারা কখনই আপনাকে রাজ্য প্রদান করিবে না। তাহারা যে সকলেই আসন্ন-মৃত্যু এবং সর্কোচ্ছেদের হেতু হইয়া উঠি-য়াছে, তাহাতে আর কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।

> কৃষ্ণ-বাক্যে পঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমৃপ্ত । ১৫০

বৈশন্সায়ন কহিলেন, জনার্দ্দনের বাক্য প্রবণ করিয়া ধর্মাত্মা ধর্মরাজ যুধিন্তির কেশবের সমক্ষে ভ্রাতৃগণকে বলিলেন, হে নরসন্তর্মগণ! কুরুসভা-মধ্যে যাহা হইয়াছিল, তৎসমুদার ভোমরা প্রবণ করিলে এবং কেশবের বাক্যও অবধারণ করিলে; অতএব এক্ষণে আমার সৈন্য-বিভাগে প্রবৃত্ত হও। এই সপ্ত অক্ষোহিণী বিজ্ঞরের নিমিত্ত সমবেত হই-য়াছে। যে বিখ্যাত সপ্ত মহারথী ইহাদের অধ্যক্ষ হইবেন, তাহা প্রবণ কর। ক্রপদ, বিরাট, ধৃষ্টপ্রায়, শিপ্তী, সাত্যকি, চেকিতান ও ভীমসেন, এই সপ্ত वीत (मना-नातक इहेरवन। हेहाँता मकरलहे एक्छाागी वर्धार वाच-विमर्क्कन-भूर्वक ममस्त ममूर्श्यक,
मकरलहे रिपछ, भूत, श्रूष्ठिउ-उठ, लक्काणील,
नीछि-मन्भन्न, यूक्कविणात्रम, वाग ७ व्यस्त श्रूमिश्र्म् वरः मकरलहे मर्व श्रूकात व्यक्त-याधी। किछ एः
कूर्यनम्भन महरमव! यिनि वहे मश्र करनत नात्रक
हहेरठ পारतन वरः मश्यारम मत-मिथायूङ भावकमम जीवारक मश्र कतिर्छ ममर्थ इन, रेमना-विजानरिखा वक्ष कान वािकरक निर्वाचन कत। एः
भूरूयवााधा! कान वीत भूरूष व्यामािमर्गत छेभयुङ
रमनाश्रिक हहेरठ भारतन, उिषयर श्राज्ञिक वाङ

সহদেব কহিলেন, যে ধর্মজ্ঞ পুরুষকে আশ্রম করিয়া আমরা স্বকীয় রাজ্যাংশ লাভের প্রত্যাশা করিতেছি, সেই সমাকৃ যোগযুক্ত, সম-ছুঃখ-স্লুখ, রুতান্ত্র, যুদ্ধত্রমদি, বলবান, মৎসারাজ বিরাট মহী-পতি সংগ্রামে ভীয়কে ও অন্যান্য মহারথগণকে সহা করিবেন।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, সহদেৰ সেইৰূপ উক্তি করিলে, তদনন্তর নকুল বীর এই কথা বলিলেন, যিনি বয়সে, শাজে, ধৈর্য্যে, কুলে কি অভিজনে, नर्स विषदारे अवीन, नज्जामीन, वनात्रिक, जीमान्, সর্বাশাস্ত্র-বিশারদ, তুর্দ্ধর্য ও সতাপ্রতিজ্ঞ; যিনি ভর্ন-ঘাজ-সমীপে শাস্ত্র শিক্ষা করিয়াছেন এবং মহাবল দ্রোণ ও ভীমের প্রতি নিয়ত স্পর্দ্ধা করেন; রাজ-বংশের অগ্রগণ্য ও শ্লাঘনীয় যে বাহিনীপতি, পুত্র-পৌজগণে পরির্ত হওয়ায় শত-শাখাযুক্ত মহা-র্কের ন্যায় প্রতীয়মান হইতেছেন; সমর-শোভন ষে পৃথিবীপতি রোষ-হেতুক দ্রোণ বিনাশ নিমিত্তে সক্রীক হইয়া ঘোরতর তপস্যা করিয়াছিলেন এবং যে পার্থিকভার শশুর হইয়াও পিতার ন্যায় সর্বদ। र्यामापिशक প্রতিপালন করেন; সেই ক্রপদরাজ व्यामानित्रात तमनी-नायक रूडेन। व्यामात वित्यहनाय তিনি অভিমুখাগত দ্রোণ ও ভীম্বকে সহিতে পারি- বেন, যেহেতু দেই নৃপেক্ত দিব্যান্ত্র-কোবিদ, প্রভাপ-শালী ও জোণের সখা।

মাদ্রী-পুলেরা আপন আপন অভিপ্রার ব্যক্ত করিলে পর কুরুনন্দন বাসবোপম বাসব-তনয় সব্য-দাচী কহিলেন, অগ্নিশিখার ন্যায় বর্ণযুক্ত মহাভূজ এই যে দিবা-পুরুষ, তপঃপ্রভাব ও ঋষি-সম্ভোষণ-দারা উৎপদ্ন হইয়াছেন; ধমুদ্ধারী, কবচী, খড়্গী, দিব্য-হয়নিচয়-যুক্ত রখেপেরি আক্রচ ও সল্লক হইয়া রধ-নির্যোবে মহামেঘের ন্যায় গর্জন করিতে করি-তে অগ্নিকুও হইতে সমুখিত হইয়াছেন; যাঁহার मूर्जि, वक्कञ्चल, जूक-यूगल, कक्कषश, गर्क्कन ও পরাক্রম সিংহের তুলা এবং জ্যুগল, দন্তাবলি, মুখ, কপোল-ছয়ের উপরিভাগ, বাছ, ক্ষম্বসন্ধি, বিশাল নেত্রযুগল ও পদধ্য অতি স্থন্দর ; যে মহাবল, মহাচ্যুতি, স্থ-প্রতিষ্ঠিত, অফুশ, শস্ত্র সকলের অভেদ্য, প্রমত্ত-বারণ-তুলা, অসীম-বীর্য্য-সম্পন্ন, সত্যবাদী, জিতে-ক্সিয় পুরুষ ডোণ-বিনাশার্থে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন; আমার বিবেচনায় সেই এই ধৃষ্টছাম ভীম্মের বক্সা-শনি-সম-স্পর্শ, ত্বলিত-মুখ ভুজঙ্গগণ-সদৃশ, বেগে যমদৃত-সম, নিপাতে পাবকোপম, সমরে পরশুরাম কৰ্তৃক বিষহিত, বজ্ৰ-নিষ্পেষ-দাৰুণ বাণ-সমস্ত সহ্ ক্রিতে পারিবেন। মহারাজ! আমার নিশ্য বোধ হইতেছে, আমি একমাত্র ধৃউছ্যুন্ন ব্যতিরেকে এমন পুরুষই দেখিতে পাই না, বে ব্যক্তি সেই মহাত্রত ভীন্নকে দহু করিতে দমর্থ হয়। অতএব এই অভেদ্য-কবচধারী, এমান্, যূপপতি মাতঙ্গ-ভুল্য, শীঘ্রহন্ত, চিত্রবোধী বীরবর সেনাপতি হন, ইহাই আঁমার অভিমত।

ভীমদেন কহিলেন, হে রাজেন্দ্র ! সমাগত সিদ্ধ ও ঋষিগণ যাঁহারে ভীম-বধার্থে সমুৎপন্ন বলিয়া বর্ণন করেন; মন্তুষোরা সংগ্রাম-মধ্যে দিবাজি প্রয়োগকারী যে বীরবরের মহান্দা রামের ন্যায় ৰূপ সন্দর্শন করিবে; সমরে সমন্ধ রথছিত সেই ক্রপদ-নন্দন শিখণ্ডীকে যুদ্ধে শক্ত-ঘারা ভেদ করি- তে পারে, এমন পুরুষই আমি দেখিতে পাই না। হে রাজন! বীর্ঘা-সম্পন্ন শিখণ্ডী ভিন্ন অন্য কোন ব্যক্তিই দৈরথ সমরে মহাত্রত ভীন্নকে নিহত করি-তে পারিবেন না; অভএব আমার মতে তিনিই আমাদিগের সেনাপতি হইবেন।

্ৰিন্তির কহিলেন, হে তাত! ধৰ্মাত্মা কেশৰ সমস্ত জগতের সারাসার ও বলাবল এবং ইহাঁদিগের অভিপ্রায়, সকলই জানেন; অতএব দাশাই কৃষ বাঁহাকে বলিবেন, তিনি ক্নতান্ত্রই হউন আর অক্ন-তাস্ত্রই হউন, রুদ্ধই হউন কি যুবাই হউন, নিশ্চয়ই আমার সেনাপতি হইবেন। হে তাত! রুফই আ-মাদিগের বিজয় পরাজয়ের মূল; আমাদিগের প্রাণ, রাজ্য, শুভাশুভ, স্থুখ চুঃখ, সকলই ইহাঁতে প্রতি-ষ্ঠিত রহিয়াছে ; আমাদের ধাতাও ইনি, বিধাতাও ইনি; স্বৰ্পুনাং আমাদের সিদ্ধিও ইহাঁতে প্রতি-ষ্ঠিতা আছে; অতএব দাশাৰ্হ কৃষ্ণ যাঁহাকে বলেন, তিনিই আমাদিগের সৈন্যাধ্যক হউন। সম্প্রতি রজনী সন্নিহিতা হইতেছে; অতএব এই সময়ে বাগ্মীশ্রেষ্ঠ কৃষ্ণ তাহা ব্যক্ত করুন, তদনন্তর আমরা তাঁহার বশবর্তী হইয়া সেনাপতি নির্দারণ, শস্ত্র-मकरलत्र অधिवामन এवः मक्रल कर्म्म मन्नामन-शृक्षक নিশাবিগমে রণাঙ্গনে প্রস্থান করিব।

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, ধীসুম্পন্ন ধর্মরাজের সেই
বাক্য প্রবণে পৃগুরীকাক্ষ জনার্দ্দন ধনপ্রহার মুখাবলোকন-পূর্বক তদীয় মতে অমুমোদন করিয়া
যুধিন্ঠিরকে কহিলেন, মহারাজ! আপনারা বে সমস্ত
বিক্রান্তযোধী মহারথগণকে আপনকার সেনা-নায়ক
বলিয়া উল্লেখ করিলেন, তাঁহারা আমারও অভিমত; কেন না, তাঁহারা সকলেই আপনকার শক্তসংহারে সমর্থ। লোভপরীত পাপচিত্ত ধার্ডরাইগণের কথা দূরে থাকুক, ইহাঁরা মহাসমরে ইক্সেরও
ভয়োৎপাদন করিতে পারেন। হে মহাবাহো!
আপনকার প্রিয়-সাধন নিমিত্ত আমিও মহাসমরের
শান্তি স্থাপনার্থে তথায় বিস্তর যত্ন করিয়াছি; তা-

হাতে ধর্মের নিকটেও আমরা অশ্বণী হইরাছি;
দোষ-বচনৈষী কোন ব্যক্তিই আর আমাদিগকে
নিন্দা করিতে পারিবে না। অবিচক্ষণ মূর্য ছুর্যোাধন আপনাকে রুতান্ত্র মনে করিতেছে এবং আতুর
হইরাও আপনাকে বলস্থ দেখিতেছে; অতএব শীঘ্র
দৈন্য-যোজনা করুন, কেন না আমার বিবেচনার
বধ ভিন্ন অন্য কোন উপারেই ভাহারা সাধ্য হইবার
নহে। ধনপ্রয়, কোধপরীত ভীমসেন, যম-সম যমজযুগল, যুযুধান, অমর্যণ ধৃষ্টছাম, অভিমন্তা, দৌপদীর পুজ্রগণ, বিরাট, দ্রুপদ ও অক্ষোহিণীপতি
অন্যান্য ভীমবিক্রম নরেক্রগণকে নিরীক্ষণ করিয়া
ধৃতরাষ্ট্র-তনয়েরা আর অবস্থান করিতে পারিবে
না। আমাদিগের এই ছুম্পুধর্ম, ছুরাসদ, সারবৎ
দৈন্য সমরে ছুর্য্যোধনের সৈন্যগণকৈ অবশাই নিহত
করিবে, সন্দেহ নাই।

কৃষ্ণ এইৰূপ উক্তি করিলে যাবতীয় নরোভ্তমগণ দাতিশয় হর্ষ প্রাপ্ত হইলেন। সম্যক্ হৃষ্টচিত্ত হও-साय ठाँशामित्रत स्मरान् इर्वधनि ममूत्थि इरेन। সত্ত্রর হইয়া ইতস্তত প্রধাবনকারী সৈন্যগণের "যো-জনা কর, সজ্জা কর " এই ৰূপ নিনাদ, হয়-কুঞ্জর-শব্দ, নেমি-নির্ঘোষ, শব্ধ ছুন্তুভি-ধনি, সর্বব্যই ভুমুল শব্দ হইতে লাগিল। সদৈন্যে প্রস্থিত পাগুবগণের সেই ছুর্জর্বা বাহিনী যেন পরিপূর্ণা গঙ্গার ন্যায় দৃশ্য-মানা হইল। সৈনোর অগ্রভাগে ভীমসেন, কবচ-ধারী নকুল সহদেব, অভিমন্ত্যা, দ্রৌপদী-পুত্রগণ ও ধৃউছুাম রহিলেন এবং প্রভক্রক ও পাঞ্চালগণ ভীম-সেনকে অগ্রে করিয়া প্রস্থিত হইলেন। অনন্তর পৰ্বকালে অৰ্থাৎ অমাবস্যা বা পূৰ্ণিমা সময়ে সমু-দ্রের ন্যায়, সেই সংপ্রন্থিত প্রকৃষ্ট সৈন্যগণের ছোর-তর কোলাহল শব্দ উত্থিত হইয়া যেন গগণ-স্পূর্শ করিল। ফলত শত্ত-বলবিদারণ্কারী বর্মধারী যোধ-পণ সকলেই সর্বতোভাবে হৃত হইরাছিল। তাহা-দিদের মধ্যে ব্লাজা যুখিন্টির শক্ট, আপণ, বস্ত্রাগার, यान, वार्न, धन-प्रश्नप्त. (शार्माक-श्राक्तभन यञ्ज,

আয়ুর্বেদজ অন্ত্র-চিকিৎসকগণ, পরিবাদ্ধবর্গ এবং অসার, ছুর্বল ও রুশ সৈনা-সকল সংগ্রহ করিয়া গমন করিলেন। পাঞ্চাল-নিদ্দনী সত্যবাদিনী দ্রৌ-পদী দাস দাসীগণে পরিবৃতা হইয়া দ্রীগণ-সহ উপ-প্রবা-নগরে প্রত্যাবর্তন করিলেন।

হে রাজন ! পার্থনন্দনেরা একস্থানবর্ত্তী ও নানা-ञ्चान मक्षात्री त्रक्षक रेमनामल-बाता धन-मात्रामित तका-विधान कतिया जवर शा-स्वर्गामि अमान कत्रक ব্রাহ্মণগণে সংর্ত ও ভুরমান হইরা মণি-বিভূষিত রথনিকরে আরোহণ-পূর্বক স্থমহৎ ক্ষর্নাবার সম-ভিব্যাহারে প্রস্থিত হইলেন। কেকয়-দেশীয় পঞ্ রাজপুত্র, ধৃফকেতু, কাশীরাজ-পুত্র, শ্রেণিমান্, বস্তু-দান, অপরাজিত শিখণ্ডী-প্রভৃতি সকলেই হৃষ্ট, তুই, কবলী, সশস্ত্র ও সমলস্কৃত হইরা রাজা যুধি-ষ্ঠিরকে বেফন-পূর্বকে অনুগমন করিলেন। পশ্চি-মার্চ্চে বিরাট, ধৃউছায়, স্থধর্মা, কুন্তিভোজ ও ধৃউ-ত্যুদের পুত্রগণ চত্মারিংশৎ সহস্র রথ, চুই লক্ষ অশ্ব, যটি সহস্ৰ গজ ও বিংশতি লক্ষ পদাতি-সৈন্য লইয়া যাত্র। করিলেন। অনাধৃষ্টি, চেকিতান, চেদিরাজ ও সাত্যকি, ইহাঁরা বাস্থদেব ও ধনঞ্জাকে বেইন-পূর্বক যাইতে লাগিলেন। এইৰপে ব্যুহ্বজ্ব-সৈনিক প্রহারী পাণ্ডবগণ কুরুক্তের প্রাপ্ত হইয়া গর্জন-কারী র্যভ-সমুহের ন্যায় দৃষ্ট হইলেন। সেই অরি-ন্দমেরা কুরুক্তেতে অবগাহ্নানম্ভর শব্ধ ধনি করিতে থাকিলেন এবং কৃষ্ণাৰ্জ্জুনও স্বীয় স্বীয় শস্থনাদ করি-लन। जननि-निनारमत जूना शक्षकतात्र निर्दाष অবণ করিয়া সমস্ত সৈন্যই সর্বতোভাবে লোমা-ঞ্চিত-কলেবর হইল। ফলত তেজস্থিগণের ঘোরতর সিংহনাদ শব্ধ ছুম্ছুভি-রবের সহিত মিলিত হইয়া পৃথিবী, অন্তরীক ও সাগর-সকলকে প্রতিধানিত क्त्रिन।

অনন্তর স্থাজা যুখিন্তির বহুল তৃণ-কান্তযুক্ত, সম-ভল, স্থানিগ্ধ প্রদেশে সেনা-সন্নিবেশ করিলেন। সেই মহামতি মহীপতি শ্মশান, দেবালয়, মহার্ধ-

গণের আশ্রম, তীর্থ ও আয়তন-সমন্ত পরিহার-পূর্বক মনোহর, উর্বর, শুচি ও পবিত্র স্থানেই নি-বেশ করাইলেন; তদনন্তর বাহনগণকে স্থাধে বি-আম করাইয়া পুনরায় উত্থান-পূর্বেক শত সহস্র ভূপালগণে পরির্ভ হইয়া প্রস্থান করিলেন। এ দিকে পার্থ-সহ কেশব ছুর্যোধনের শত শত আরক্ষ দৈনিকদিগকে অপুসারিত করত সর্বতঃ পরিক্রমণ করিতে লাগিলেন। ক্রপদ-নন্দন ধৃউছুান্ন ও মহা-রথ বীর্যাবান্ যুযুধান সাত্যকি, ইহাঁরা শিবির পরি-মাণ করাইলেন। হে ভারত। কেশব কুরুকেত-মধ্যে হিরপৃতী-নামী নির্মাল-জলা, কন্ধর পঞ্ক-খুন্যা, স্তার্থা, পুণ্য সরিৎ প্রাপ্ত হইয়া তথায় পরিখা খনন করাইলেন এবং রক্ষার নিমিত্ত তথায় অনূশ্য বল-সকল সন্ধিবেশিত করিলেন। মহাত্মা পাগুবগণের শিবির-নির্মাণ বিষয়ে যেকপ নিয়ম ছিল, কেশব নরেন্দ্রগণের নিমিত্তে তাদৃশ শিবির-সমস্তই নির্মাণ করাইলেন। হে রাজেন্দ্র তথায় রাজগণের প্রভৃত কাষ্ঠ ও ভক্ষ্যভোক্ষ্য অন্নপান-যুক্ত শত শত সহস্ৰ দহস্র মহামূল্য শিবির-সমস্ত যেন বিমান-নিকরের नाम मही जल शृथक् शृथक् निविच इहेल। उथाम নিয়মিত বেতন প্রাপ্ত, সর্বপ্রকার উপকরণ-যুক্ত প্রজ্ঞাশালী শত শত শির্ণ্পী ও শাস্ত্রবিশারদ বৈদ্য-গণ অবস্থিত রহিলেন। রাজা যুধিষ্টির প্রতি শিবির মধ্যেই পর্বতোপম রাশি রাশি মহাযন্ত্র, শরাসন, ধনুর্স্তর্ণ, বর্মা, শস্ত্র, ভূণ, নারাচ, তোমর, পরশ্বধ, ষ্টি, মধু, ঘৃত, জল, পশুভক্ষ্য উত্তম তৃণাদি, তুষা-ঙ্গার, ধূনক-চুর্ণ-প্রভৃতি আবশ্যক বস্তুজাত সংস্থা-**পিত ক্**রিলেন। তথায় লৌহ-বর্মাচ্ছাদিত, কণ্টকিত-সন্নাহ-যুক্ত, সহস্র-যোধী শত-যোধী বারণগণ গিরি-সদৃশ দৃশ্যমান হইতে লাগিল। হে ভারত ! পাওব-দিগকে কুরুক্তেতে সন্নিবিফ জানিয়া মিত্র রাজগণ বলবাহন সমভিব্যাহারে সেই স্থানে অভিসরণ করি-लन। दक्कर्रात अपूर्वनिकात्री, त्मामशात्री, तहल

দক্ষিণা-দায়ী, সেই সমস্ত ভূপালগণ পাওবদিগের বিজয়-সাধনার্থে সমাগত হইলেন।

শিবিরাদি নির্মাণে এক পঞ্চাশদধিক শতভ্রম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৫১॥

জনমেজর কহিলেন, হে মহামতে! वास्ट्राप्त-পালিত, সপুত্র বিরাষ্ট্র ও দ্রুপদরাক্ত সমস্থিত, কৈ-কেয় ও র্ফিগণ-প্রভৃতি শত শত ভূপালবর্গে পরি-র্ত, দেবগণ-রক্ষিত মহেন্দ্রের ন্যায় মহার্থগণ-কর্তৃক সংরক্ষিত, মহারাজ যুধিষ্ঠিরকে সমর-বাস নায় সসৈন্যে কুরুক্ষেত্রে সমাগত ও সন্নিবিষ্ট শ্রবণ করিয়া রাজা ছুর্য্যোধন কি কার্য্য করিলেন ? সেই তুমুল সম্ভম সময়ে কুরুকেত্রে বে যে ব্যাপার হই-য়াছিল, তাহা বিস্তারিত ৰূপে শ্রবণ করিতে আ-মার ইচ্ছা (ইেতেছে। পাওবগণ বাস্তদেব বিরাট দ্ৰুপদ ধৃষ্টত্বান্ন শিখণ্ডী সাত্যকি-প্ৰভৃতি সেই সমস্ত অতুল-বিক্রান্ত মহারথেরা সমরে ইন্দ্র-সহ দেবগণ-কেও ব্যথিত করিতে পারিতেন; অতএব হে তপে-ধন! কুরু পাগুবগণের যে যে ব্যাপার ঘটিয়াছিল, তাহা বিস্তরক্রমে শ্রবণ করিতে আমি একান্ত অভিলাষী হইতেছি।

বৈশাপায়ন কহিলেন, দাশার্হ ক্লফ কুরুসভা হই-তে প্রতিগমন করিলে পর রাজা ছুর্যোধন কর্ণ, ছুংশাসন ও শকুনিকে এই কথা বলিলেন, "হে নরেক্রগণ! ক্লফ যখন অক্তকার্য্য হইয়াই পাগুর-গণ সমীপে গমন করিয়াছেন, তখন তিনি ক্রোধা-বিউ হইয়া নিশ্চয়ই তাহাদিগকে উদ্দীপিত করিয়া তুলিবেন, সন্দেহ নাই। পাগুর্বদিগের সহিত আ-মার যুদ্ধ হয়, ইহা বাস্থদেবের নিতান্ত অভিপ্রেত। ভীমার্জুনও সেই দাশার্হের মতন্ত্র। আবার যুধি-তির ভীমার্জুনের অত্যন্ত বশান্ত্বর্জী। পুর্কো তিনি সকল সহোদরগণের সহিত আমা-কর্তৃক অবমা-নিতও হইয়াছেন। আমি বাহাদিগের সহিত বৈরতা

করিয়াছিলাম, সেই বিরাট ও দ্রুপদও বাস্থদেবের বশানুগামী হইয়া সেনা-নায়ক হইয়াছেন; স্বতরাং সম্প্রতি লোমাঞ্চকর ঘোরতর তুমুল সংগ্রাম হইবে; . অতএব তোমরা আলস্য-খুন্য হইয়া সমরোপযোগী সমস্ত আয়োজন কর। কুরুক্তেতে বছ স্থান-ব্যাপী শক্রগণের তুর্ষিগম্য, প্রাকার-পরিখাদি-পরিকার্ণ, সন্নিছিত-জল-কাঠ, অক্ষব্য 🌓 দাযুক্ত, বিবিধ আয়ুধ-পূর্ণ, ধ্ব-পতাকা-সমাকুল, শত শত সহস্র সহস্র শিবির সমস্ত নির্মিত কর। নগরের বহিভাগে সৈন্যগণের, গমন নিমিত্ত সমান পথ করিয়া রাখ। अमारे अविनाद्य द्यायना क्रिया माउ व्य 'क्ना যুদ্ধযাত্রা হইবে '। সেই মহাত্মগণ হৃষ্টচিত্ত হইয়া " তাহাই হইবে " এইৰূপ প্রতিজ্ঞা করিয়া পরদিন রাজগণের নিবাসার্থে সমস্ত কার্য্য সম্পন্ন করিলেন। শুনন্তর সমবেত পার্থিবগণ সেই রাজশ্রাসন আবণে অমর্যান্বিত হইয়া মহার্হ আসন-সমস্তীহইতে গা-ত্রোপান করিলেন; স্থবর্ণ-কেয়ুর-সমুজ্জ্বল, চন্দনা-শুক্ল-ভূষিত, পরিঘ-সদৃশ বাহু-সকল ধীরে ধীরে স্পর্শ করিতে লাগিলেন এবং কমল-ভুল্য কর-নিকর महकाद्र अखतीय ७ উखतीय वज्र, উक्षीय ७ ভূষণ-জাত পরিধান করিতে থাকিলেন। প্রধান প্রধান রখীরা রথ-সমস্ত, হয়-কোবিদেরা অশ্বগণ এবং গজ-শিক্ষা-নিপুণেরা কুঞ্জর-সকল সাজ্জিত করিতে প্রবৃত্ত হইলেন; তদনন্তর কাঞ্চন-নিশ্মিত বহুতর বিচিত্র। কর। বর্মা ও সর্বব প্রকার শস্ত্র-সমস্ত ধারণ করিলেন। পদাতি পুরুষেরাও স্বীয় স্বীয় শরীরে বিবিধ শস্ত্র ও ছেম-চিত্রিত অসংখ্য কবচ-নিচয় ুআহরণ করিল। হে ভারত ! নিরতিশয় হৃষ্ট-মানস মানবগণে সমা-বৃত হওয়ায় ছুর্য্যোধনের সেই নগর উৎসব-সময়ের ন্যায় উদগ্র ও সমাকুল হইয়া উঠিল। হে রাজন্! তৎকালে যোধ-ৰূপ চক্ৰোদয়ে উদ্ধৃত কুৰুৱাজ-ৰূপ মহার্ণব, চক্রোদয়ে বাস্তবিক অর্ণবের ন্যায় পরি-দৃশামান হইতে লাগিল। উক্ত মহাসমুদ্রে জন-সমূহ জল ও আবর্ত্ত-স্বৰূপ হইল; রথ, কুঞ্চর ও তুরঙ্গ-

সকল মীন-ৰূপ ধারণ করিল; শৃষ্ট্ কুন্তু ভি-নিনাদ প্রবাহ-নির্ঘেষ হইল; কোষ সঞ্চয় রত্মচয়ের স্থানীয় হইল; বিচিত্র আভরণ ও বর্ম-সকল তরঙ্গ এবং উজ্জ্বল শস্ত্র-সমন্ত নির্মাল কেনপুঞ্জ-স্বৰূপ হইল; উন্নত-প্রাসাদ-শ্রেণী তীরস্থ পর্বতাবলির সাদৃশ্য প্রাপ্ত হইল এবং পথ ও আপণ সমস্ত ভ্রদাকার ধারণ করিল।

চুর্য্যোধন-দৈন্য-সজ্জায় দ্বিপঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৫২॥

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, যুখিন্ঠির রুফিনন্দন বাস্থদেবের পূর্ব্বাক্ত বাক্য স্মরণ করিয়া পুনরায় তাঁহারে
জিজ্ঞাসিলেন, হে অচ্যুত! মন্দমতি ছুর্যোধন কি
কপে এ কথা কহিল? হে বাস্থদেব! এই উপস্থিত
সময়ে আমাদিগের কি ৰূপ কার্যা করা উপযুক্ত হয়
এবং কি ৰূপ অনুষ্ঠান করিলেই বা আমরা ধর্ম
হইতে পরিচ্যুত না হই? হে মহাবাহো! তুমি
ছুর্যোধনের, কর্ণের, শকুনির এবং ভ্রাতৃগণ-সহ আমারও অভিপ্রায় জান; অপিচ বিছুর ও ভীয়ের
সেই বাক্য এবং কুন্তীর অভিপ্রায়ও সম্পূর্ণ ব্যবেণ প্রবাহ হা
করিয়াছ; অতএব হে বিপুলপ্রজ্ঞ! বারংবার বিচার-পূর্ব্বক সে সমস্ত অতিক্রম করিয়া যাহাতে
আমাদিগের মঙ্গল হয়, তাহাই অসংশয়ে বাক্ত

রুক্ত ধর্মরাজের ধর্মার্থযুক্ত ঐ বাক্য প্রবণ করিয়া মেঘ ও ছুন্তুভির ন্যায় গভীর নির্ঘোষে এই কথা কহিলেন, আপনি যে ধর্মার্থ-সমন্থিত হিত-বাক্যের উক্তি করিয়াছিলেন, থলবুদ্ধি ছুর্য্যোধনে তাহা স্থান প্রাপ্ত হইল না। সেই ছুর্মোধা ভীয়ের, বিছুরের, কি আমার, কাহারও কোন কথা প্রবণ করে না; সকলই অতিক্রম করিয়া কার্য্য করে। সেই ছুরাত্মা ধর্মেরও ক্রামনা করে না এবং যশেরও প্রার্থনা রাথে না; কর্ণকে আশ্রয় করিয়া "সকলকেই জয় করিলাম" ইহাই মনে করে। পাপ-নিশ্বয় ছুরাত্মা ছুর্যোধন আমারও বন্ধনাদেশ করিয়াছিল, কিন্তু সে অভিলাষ লাভ করিতে পারে নাই। তদ্বিবয়ে না ভীয়া, না দ্রোণ, কেহই যুক্তিযুক্ত বাকোর উক্তি करतन नारे; अक्याज विष्ठूत वाजिरत्रक नकरणहे তাহার অমুবর্ত্তন করিয়।ছিলেন। মূঢ়মতি শকুনি, কর্ণ ও ছুঃশাসন সেই অমর্ষণ মুদূকে আপনকার বিষয়ে অনেক অযুক্ত বাক্য কহিয়াছিল। ছুর্য্যোধন रय नकल कथा विलशास्त्र, मञ्जूषश वर्गन कविवात আমার প্রয়োজন কি? তাহার সংক্ষেপ মর্মাএই যে, দেই ছুরাত্মা আপনকার প্রতি উচিতমত ব্যবহার করিবে না। ফলত আপনকার সেনাভুক্ত এই সমন্ত রাজগণ-মধ্যে যে কিছু পাপ ও অকল্যাণ নাই, সে সমন্তই তাহাতে প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। আমরাও বিষয় পরিত্যাগ করিয়া কোন ক্রমেই কৌরবদিগের সহিত শান্তি ইচ্ছা করিনা; স্থতরাং এ অবস্থায় युक्तरे कर्खवा।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, হে ভারত! বাস্থদেবের সেই বাক্য ভাবণ করিয়া পার্থিবগণ কোন কথা না বলিয়া সকলেই রাজার মুখ নিরীক্ষণ করিতে লাগি-লেন। তথন যুধিষ্ঠির রাজবর্গের অভিপ্রায় বুঝিয়া ভীমার্জ্বন ও নকুল সহদেবের সহিত একবাকা হইয়া যুদ্ধ সজ্জা করিতে আজ্ঞা দিলেন। অনন্তর পাণ্ডব-रिना-मर्पा महान् कालाह्न मक উल्पिত हहेन; যুদ্ধ-সজ্জার আদেশ হওয়ায় সকল সৈনিকেরাই সাতিশয় হৃষ্টচিত্ত হইল। পরস্ত ধর্মাত্মা যুধিষ্ঠির অবধাগণের বধাবলোকন করত নিশাস পরিত্যাগ क्तिरं क्तिरं जीमार्क्नरं धरे कथा विललन, যাহার পরিহারার্থে আমি বনবাস স্বীকার করিলাম এবং অশেব ক্লেশ-পরম্পরা প্রাপ্ত হইলাম, সেই महान् अन्धं अकर्ण श्रयञ्च-करम आमानिशस्य आ-আয় করিতেছে। যে ব্ৰয়ে আমরা যত্ন করিলাম, ভাহা আমাদিগের প্রয়ত্ত হইল, পরস্ক কিছুমাত্র প্রযন্ত্র না করিলেও আমাদিগকে মহান্ কলছ প্রাপ্ত হইল! অবধ্য মান্য লোকদিগের

সহিত কি ৰূপে সংগ্রাম হইবে! বৃদ্ধ গুরুগণকে হনন করিয়া আমাদিগের সে বিজয়ই বা কীদৃশ হইবে!

ধর্মরাজের সেই কথা শুনিয়া পরস্তপ সবাসাচী.
তাঁহাকে বাস্থদেবের পূর্বোক্ত বাক্য অবণ করাইলেন এবং ইহাও কহিলেন, হে রাজন্! দেবকীনন্দন
কুন্তী ও বিছুর-সম্বন্ধীয় গ্রুষ বাক্যের উক্তি করিয়াছিলেন, তাহা সম্পূর্ণ রূপেই আপনি অবধারণ করিয়াছেন; আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে, তাঁহারা কোন
ক্রমেই অধর্ম কথা বলিবেন না; বিশেষত যুদ্ধ না
করিয়া আমাদিগের নির্ভ হওয়াও কর্ত্ব্য নহে।

তথন বাস্থদেবও সব্যসাচীর সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া হাস্য করিতে করিতে "ইহাই বটে " এই-ৰূপ উক্তি করত তাহার বিস্তর পোষকতা করি-লেন। মহাহাজ! তদনন্তর যুদ্ধার্থে ক্তুসংকল্প হইয়ু। সৈনিক-সহা পাগুবেরা পরম স্থাথে সেই রাতি বাস করিলেন।

যুধিষ্ঠিরাৰ্জ্জ্ন-সংবাদে ত্রিপঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমপ্তি॥ ১৫৩॥

বৈশন্পায়ন কহিলেন, হে ভারত ! অনন্তর রজনী প্রভাতা হইলে রাজা চুর্য্যোধন আপনার সেই একা-দশ অকৌহিনী সৈন্য যথা-নিয়মে বিভক্ত করিলেন এবং নর, হস্তা, রথ ও অশ্ব-সকলের উক্তম, মধ্যম ও অধম নির্বাচণ-পূর্বক ঐ সমস্ত সৈন্যগণ-মধ্যেই অগ্রে, মধ্যভাগে ও পশ্চাতে থাকিবার নিমিজে নির্দিষ্ট করিয়া দিলেন। অমুকর্ষ (রথের নিমদেশে নিবদ্ধ ভগ্য-সংস্কারার্থ কাষ্ঠ), ভূণীর (রথবাছ বিশাল বাণ-কোষ), বরুথ (রথাছ্যাদন ব্যাদ্রচর্ম্মাদি), ভোমর (হস্ত-ছারা ক্ষেপণীয় শল্যযুক্ত দণ্ড), উপাসঙ্গ (অশ্ব-গত্ত-বাছ বাণ-কোষ), শক্তি (লোহদণ্ড), নিষঙ্গ (পদা-তি-বাছ বাণ-কোষ), খণ্টি (গুরুতর কাষ্ঠদণ্ড), মজ, পতাকা, শরাসন-তোমর (ধ্যুকের ছারা ক্ষেপণীয় স্থল বাণ), নানা প্রকার রক্ষ্ম, পাশ (সমীপাগত

প্রতিপক্ষের গলদেশে নিক্ষেপার্থ রক্ষু), আন্তরণাদি পরিচ্ছদ, কচগ্রহ-বিক্ষেপ (কেশে গ্রহণ-পূর্ব্বক শত্রুর প্রতি নিক্ষেপার্থ তীক্ষাত্র দণ্ড-বিশেষ), তৈল, গুড়, वानुका, नमर्श-कृष्ठ, धूनक-চूर्ग, घण्ठैकलक (घण्ठायूक-কলান্থিত শত্ৰ), অয়োগুড় (লৌহ গুলি), জলোপল (कनकतानीन अउत), मध्न जिन्मिना (ध्नयुक লগুড়), মধুচ্ছিফ (মোম), মুদুলার, কণ্টকময় দণ্ড, লাঙ্গল, বিষদিশ্ধ ভোমর, খূর্প, পিটক (বেত্রনির্মিত রুহৎ করগু), পরশু-প্রভৃতি দাত্র, অঙ্কুশাকার তোমর, দম্বযুক্ত করপত্র, বাসী, রক্ষাদন (লৌহ-কণ্টক), ব্যাঘ্র-চর্ম ও দ্বীপিচর্মে পরির্তর্থ, ঋটি ্হন্তদ্বারা ক্ষেপ-ণীয় চক্রাকার কাষ্ঠ-ফলক), শৃঙ্গ, ভল্ল-প্রভৃতি বহুতর শস্ত্র, কুঠার, কুদাল, তৈলক্ষৌম (তৈলাক্তবস্ত্র-বি-শেষ; প্রহার স্থলে যাহার ভস্ম প্রদন্ত হয়), সর্পি (ক্ষতশোধনার্থ পুরাতন ঘৃত) প্রভৃতি অশেষ-বিধ সামরিক সামগ্রী-সমন্থিত অশেষ-বিধ স্ক্রীদৃশ্য সৈন্য-গণ স্থবৰ্ণজালে অলঙ্কৃত ও নানারত্নে বিভূষিত হও-য়ায় প্রজ্বলিত পাবকের ন্যায় দৃষ্ট হইতে লাগিল। কবচধারী, স্থশিক্ষিত-শস্ত্র, অশ্বন্ধাতি-তত্ত্বজ্ঞ, সৎ-কুলোদ্ভব খুরের। সার্থ্য-কার্য্যে নিবেশিত হইলেন। রথ-সকলেতে উত্তম উত্তম চারি চারি অশ্ব বোজিত হইল; অশুভ নিবারণার্থ যন্ত্র ও ঔষধাদি, অশ্ব-গণের শিরোভূষণার্থ ঘন্টা মালা মৌক্তিক-গুচ্ছাদি, ধজ, পতাকা, মুকুট, ঝাভরণ, অসি, চর্মা ও পট্টিশ-সমস্ত নিবদ্ধ হইল এবং প্রাস, ঋষ্টিক ও এক এক শত শরাসন বিন্যস্ত হইল। সন্মুখস্থ প্রধান আশ্র-যুগলে এক জন এবং চক্রসন্নিহিত প্রশ্চান্তাগন্থ হয়-बा छूरेकन मात्रिथ निर्वाकिक रूरेन। के छूरे সার্রথি রথিঞ্চেষ্ঠ এবং রথীও হয়-তত্ত্বজ্ঞ। এইৰূপে स्वतिक्छ नगरत्रत्र नगात्र भव्मन्नग-कर्ज्क

ব্রাক্ত নগরের ন্যার নক্ষ্যান্তত্ত্ব স্বর্ণমালা-মণ্ডিত সহস্র সহস্র রথ সর্বাদিকে সমা-কীর্ণ হইল। রথের ন্যায় হন্তী সকলও বন্ধকক্ষ ও সমলস্কৃত হইল এবং প্রত্যেকের উপরে সাতজন সৈনিক পুরুষ সারোহণ করায় যেন রত্মযুক্ত গিরি-

নিকরের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। এ সাত-জনের মধ্যে ছুইজন অঙ্কুশধারী, ছুইজন উত্তম ধ্যু-দারী, ছইজন উৎকৃষ্ট ঋড়্গধারী আর একজন শক্তি ও ত্রিখুলধারী। মহারাজ! মহাত্মা চুর্য্যোধনের সেই সৈন্য বছতর বর্ম ও ভূণীর যুক্ত প্রমন্ত গজ-পুঞ্জে সমাকীর্ণ হইল। বিচিত্র-কবচধারী পভাকান্বিত উত্তমালস্কৃত অশ্ববারগণে উপশোভিত, উল্লুক্ষনাদি-দোষ-পরিখুনা, স্থশিক্ষিত, স্বর্ণালস্কার-পরিচ্ছদ অ-যুত অযুত লক্ষ লক্ষ তুরঙ্গমগণ অশ্ববার-সকলের বশায়ত্ত রহিল এবং নানা প্রকার ভঙ্গি-বিশিষ্ট, নানা প্রকার কবচ ও শস্ত্রযুক্ত, হেমমালা-বিভূষিভ অসংখ্য পদাতি সকলও স্কুসক্ষিত হইল। এক এক রথের প্রতি দশ দশ হন্তী, এক এক হন্তীর প্রতি দশ দশ অশ্ব এবং এক এক অশ্বের প্রতি দশ দশ জন পদাতি পাদরক্ষক-স্বৰূপ নিযোজিত রহিল। রথের পঞ্চশেৎগুণ হন্তী, হন্তীর শতগুণ অশ্ব এবং অম্বের সপ্তগুণ মন্ত্র্যা, ইহারা ভিন্ন-সন্ধানকারী অর্থাৎ ছিন্ন ভিন্ন সৈন্যগণের পুনর্ব্বার সংযোজনাথে নিযুক্ত হইল। পঞ্চশত গজ ও পঞ্চশত রূথে এক সেনা, দশ সেনায় এক পৃতনা, দশ পৃতনায় এক বাহিনা এবং দেনা, বাহিনী, পৃতনা, ধজিনী, চমু, বৰ্জাথনী ইত্যাদি পৰ্য্যায়ক্ৰমে এক অক্টোহিণী নি-রুক্তা হইল। ধীমান ছুর্য্যোধন এই ব্লীতিক্রমে সৈন্যব্যুহ রচনা করিলেন। উভয় পক্ষে সমুদায়ে অফাদশ অক্ষোহিণী হইল। তন্মধ্যে পাওবদিগের माञ অदक्षीहिंगी चात्र कोत्रवगरगत बकामम अदक्षी-হিনী সৈন্য হইল। পঞ্পঞ্চাশৎ মন্ত্ৰেয় এক পত্তি, তিন পত্তিতে এক সেনামুখ বা গুলা এবং তিন গুলো এক গণ বিহিত হয়; ছুর্য্যোধনের সেনা-মধ্যে এরূপ लक लक १० मख्यहाती यूकार्थ मञ्रू देशा রহিল। মহাবাছ রাজা ছুর্য্যোধন সম্যক্ বিবেচনা क्रिया ज्युर्धा मोर्गाणी वृक्षिमान् मानवश्वरक ষেনাপতি করিলেন; রূপ, জোণ, শল্য, জয়ড়থ, कारबाकाधिभां छ स्राक्तिन, इ. उवर्त्रा, अश्रयामा, वर्न,

ভূরিশ্রবা, শকুনি ও বাহ্নীক, এই সকল মহাবল নরোত্তমগণকে ঘথানিয়মে পৃথক্ পৃথক্ অক্টো-হিণীর নায়ক করিয়া সমুচিত অভিসম্ভাষণ করিলেন এবং প্রতি দিন প্রতি ক্ষণে আপনার সমক্ষে ইহাঁ-দিগের পুনঃপুন বছবিধ পূজা করিতে লাগিলেন। হে রাজন্! সেইরূপ নিয়ম-নিবদ্ধ হইয়া তাঁহারা ও তাঁহাদিগের পার্ফির্ক্ষক সৈনিকেরা সকলেই রাজার প্রিয়কার্য্য-সাধনে সমুৎস্কক হইলেন।

ছুর্যোধন-সৈন্যবিভাগে চতুঃপঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৫৪॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, অনন্তর ছুর্য্যোধন সকল মহাপালগণের সহিত মিলিত হইয়া কৃতাঞ্জলিপুটে শান্তমূতনয় ভীম্বকে এই কথা বলিলেন, হে পিতা-মহ! সেনা-নায়ক ব্যতীত স্থমহতী সেনাও সমর প্রাপ্ত হইয়া পিপীলিক-সংঘাতের ন্যায় বিদীর্যা-মানা হয়; কেন না ছুই জনের বুদ্ধি কোন ক্রমেই কখন সমান হয় না এবং পৃথক্ পৃথক্ বল-নায়ক-দিগের শৌর্যাও পরস্পার স্পর্জা করে। হে মহা-প্রাক্ত! শুনিতে পাওয়া যায়, ব্রাহ্মণ সকল কুশধজ উচ্ছিত করিয়া অমিত-তেজস্বী হৈহয়দিগের বিরুদ্ধে যুদ্ধবাত্রা করিয়াছিলেন। তৎকালে বৈশ্য ও শূদ্রে-রাও তাঁহাদিগের অনুগামী হইয়াছিল। এইৰূপে এক দিকে ক্ষজ্রিয়শ্রেষ্ঠগণ আর অন্য দিকে অপর বর্ণতার মিলিত হইলেন। অনস্তর যুদ্ধারম্ভ হইলে ব্রাহ্মণাদি বর্ণত্রয় পুনংপুন ভগ্ন হইতে লাগিলেন; স্তরাং ক্ষল্রিয়েরা এক পক্ষ হইয়াও ঐ বছল বল-নিচরকে জয় করিলেন। তাহাতে সেই ছিজসভ্তমের। ক্রিরিদিগকেই তাহার হেতু জিজ্ঞাস। করিলেন এবং धर्माक कालिए सत्राध जाँ हा मिना दक यह यथार्थ উত্তর করিলেন যে, আমরা সমরে এক জন মহা-বৃদ্ধি-সম্পন্ন মানবের কথা প্রবণ করি, একন্ত আপ-নারা সকলেই স্বীয় স্থীয় বুদ্ধির বশবর্তী। হে পিতা-নহ! অনম্ভর সেই ব্রাক্ষণেরা নীতিকুশল ও শৌর্যা-

শালী একজন বিপ্রকে সেনাপতি করিলেন এবং তাহাতে ক্ষল্রিয়দিগকে জয় করিতেও সমর্থ হই-লেন। এই রূপে যাহার। স্থদক্ষ, পূর, হিতৈমী ও ও পাপখ্না কোন পুরুষকে সেনাপতি করে, তাহা-রা সংগ্রামে শত্রুদিগকে জয় করিয়া থাকে। আপনি শুক্রাচার্যা-তুলা, অভেদ্য ও ধর্ম্মনিষ্ঠ, বিশেষত সততই আমার হিতাক্সক্ষী; অতএব যেমন কিরণ-শালিগণের আদিতা, ওষধি সকলের চন্দ্রমা, যক্ষ-গণের কুবের, দেবগণের বাসব, পর্বত সকলের স্থ-মেরু, পক্ষিদিগের স্থপর্ণ, অমরবর্গের কার্ছিকেয় এবং বস্থগণের হুতাশন প্রধান নায়ক, সেইকুপ আপ-নিই আমাদিগের প্রধান সেনাপতি হউন ; কেন না ইন্দ্রক্ষিত অমরহৃন্দের ন্যায় আমরা আপনকার বাছবলে রক্ষিত হইয়া দেবগণেরও অধর্ষণীয় হুইব, সন্দেহ নাই। আপনি দেব-সৈন্যের অগ্রযায়ী কুমা-রের ন্যায় গিমাদিগের অত্যে অত্যে প্রয়াণ করুন, আমরা মহার্ষভের অনুগামী বৎসগণের ন্যায়, আপনকার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করি।

ভীয় কহিলেন, হে মহাবাহো! ভুমি যাহা বলি-তেছ, তাহা এইৰূপই বটে; কিন্তু আমার পকে তোমরাও যেৰূপ পণ্ডেবেরাও সেইৰূপ। অতএব হে নরাধিপ! আমাকে তাহাদিগেরও শ্রেয় বাক্য বলিতে হইবে এবং স্বক্কত প্রতিজ্ঞানুসারে তোমার নিমিত্তেও যুদ্ধ করিতে হইবে। সেই একমাত্র ধন-ঞ্জয়-ব্যতিরেকে পৃথিবী-মধ্যে আমার তুল্য যোদ্ধাও আর দেখিতে পাই না। মহারুদ্ধি পাওুতনয় ধনঞ্য অনেকানেক দ্বিব্যান্ত্রের অভিজ্ঞ, স্থভরাং সমরে আমার সদৃশ হইতে পারেন, কিন্তু তিনি যুদ্ধন্থলে প্রকাশিত হইয়া কখনই আমার সহিত যুদ্ধ করিতে পারিবেন না। শস্ত্রবল-সহকারে আমি ক্ষণ কাল-মধ্যেই স্থরাস্থর-রাক্ষস-সম্বলিত এই সমস্ত জগৎকেই নির্মমুখ্য করিতে পারি ; কিন্তু হে জনাধিপ ! পাণ্ডু-পুত্রদিগকে উৎসাদিত করা আমার কোনক্রমে সাধ্য নহে, অতএৰ আমি শব্ৰপ্ৰয়োগ দারা প্ৰতি দিন অন্য দশ সহস্র যৌধনণকৈ নিহত করিব।
সম্মুখ সংগ্রামে মদি পূর্বেই তাহারা আমাকে আহত না করে, তবেই এই রীতিক্রমে তাহাদিগের
নিধন সাধন করিব। হে রাজন্! আমি অপর এক
নিরম-ছারা ইচ্ছামুসারে তোমার সেনাপতি হইব।
সেই নিরম কি, তাহা আবঁণ কর। হয় কর্ণ অগ্রে
যুদ্ধ করুন, না হয় আমি কির; কেননা এই সূতপুত্র সমরে নিতাই আমার সহিত অতিশয় স্পর্দ্ধা
করেন।

কর্ণ কহিলেন, রাজন্! গঙ্গানন্দন জীবিত থাকিতে আমি কোন প্রকারেই যুদ্ধ করিব না; ভীয় নিহত হইলে গাণ্ডীবধন্বা অর্জুনের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইব।

বৈশস্পায়ন কহিলেন, অনন্তর ছুর্যোধন বছল-দক্ষিণা প্রদান-পূর্বক ভীয়কে বথাবিশ্ব সেনাপতি করিলেন এবং তিনিও অভিষিক্ত হইয়া শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর রাজাজ্ঞানুসারে বাদক-গণ অব্যগ্র হইয়া শত শত সহস্র সহস্র ভেরী ও শৠধনি করিতে থাকিল। বছবিধ সিংহনাদ ও বাহনগণের শব্দ সমস্ত প্রাছুর্ভূত হইল। বিনা মেঘে রুধির-বর্ষণ হইয়া কর্দম হইল। নির্ঘাত, ভূমিকম্প ও বারণগণের রুংহিত ধনি-সমস্ত যাবতীয় যোধ-গণের মনঃপীড়া উৎপাদন করত উত্থিত হইতে লাগিল। আকাশ হইতে দৈববাণী ও উল্কাপাত হইতে থাকিল এবং শিবা-সকলও ভয় বিজ্ঞাপন করত বারম্বার তীত্রতর শব্দ করিতে লাগিল। হে রাজন্! রাজা ছুর্যোধন যথন ভীল্মকে সেনাপত্যে অভিষিক্ত করিলেন, তথন এইৰূপ শত শত ভয়ঙ্কুর ব্যাপার সমস্ত উপস্থিত হইল।

পরবল-বিমর্কন শান্তমুনন্দনকে সেনাপতি করণানন্তর কুরুরাজ ছুর্যোধন ভূরি ভূরি গোও নিফ প্রদান-পূর্বক আকাগগতে ক্ষিত্রীটন করাইয়া ও তাঁহাদিগের জয়াশীবোদে বর্জনান ইইয়া দৈনিকগণ-সমীভিনাইটের নির্গত হইলেন এবং ভীয়কে অঞ করিয়া ভাতৃগণের সহিত কুমহৎ ক্ষাবার লইয়া
কুরুক্তেত্রে ভাগমন করিলেন। পরিলেবে তিনি
কর্ণের সহিত সমস্ত কুরুক্তেত্রে পরিভ্রমণ করন্ত সমতল দেশে শিবির নির্মাণ করাইলেন। প্রভূত ভূণকাঠযুক্ত, মধুর ও উর্বর প্রদেশে সন্ধিবেশিত সেই
শিবির অবিকল হন্তিনাপুরের ন্যায় শোভা পাইতে
লাগিল।

ভীন্ন-সৈনাপত্যে পঞ্চপঞ্চাশদধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৫৫ ॥

জনমেজয় কহিলেন, বুদ্ধিতে রহস্পতি-সদৃশ, কন্মায় পৃথিবীতুলা, গান্তীযোঁ সাগরসম, স্থৈয়ে হিমালয়-প্রতিম, উদার্য্যে প্রজাপতিনিভ, তেজে ভাক্ষ-রোপম, শর বর্ষণদ্বারা মহেক্রের ন্যায় শত্রুকুলের সংহারকারী, সকল মহীপালগণের উপরিবর্ত্তী, শত্র্র্বারিশ্রেষ্ঠ, ভারতগণ-পিতামহ গঙ্গানন্দন মহায়াভীয়কে মহাভয়য়য় লোমাঞ্চকর প্রবিতত যুদ্ধযজ্ঞে দির্ঘিকালের নিমিত্ত দীক্ষিত প্রবণ করিয়া সকল-শত্রধারিশ্রেষ্ঠ মহাবাহু যুধিষ্ঠির তদ্বিষয়ে কি বলিলেন, ভামার্জুনই বা কি উক্তি করিলেন এবং ক্ষই বা কি প্রত্যুত্তর দিলেন?

বৈশন্পারন কহিলেন, আপদ্ধার্থ-কুশল বাগ্যি-শ্রেট মহাবৃদ্ধি যুধিন্তির সকল সহোদরগণকে ও যতুননদন বাস্থদেবকে সমানয়ন-পূর্বক স্থমধুর-সম্ভাবণে এই কথা বলিলেন, তোমরা সমন্ধ ও সুসজ্জিত হইয়া সাবধানে থাক এবং সমস্ত সৈনাগণ-মধ্যে পরিভ্রমণ কর। অগ্রেই পিতামহের সহিত ডোমানিগের যুদ্ধ হইবে, অতএব আমার সপ্ত অক্টোহিণা সেনা-মধ্যে সপ্ত সেনাপতি নিযুক্ত কর।

রুষ্ণ কহিলেন, হে ভরতর্ষত। এই উপস্থিত সময়ে ভবাদৃশ বাক্তির বেরূপ উক্তি করা উচিত, আপনি তদমুরূপ অর্থ্যুক্ত বাকাই বলিলেন। হে মহাবাহে।। ইহা আমার সম্পূর্ণ স্থাহণীয় হইভেছে; অতএব এই অপরিহার্যা কর্ত্ব্য-কর্মের অনুষ্ঠান কর্ম্ম;

ज्ञाभनकात त्मना-मर्था माछ जन नायक निर्फिछे कल्लन।

বৈশন্সারন কহিলেন, হে রাজন্! অনন্তর রাজা র জ্রপদ, বিরাট, সাত্যকি, ধৃউল্লায়, ধৃউকেতু, শিশুণী ও মগধাধিপতি সহদেব, যুদ্ধাভিকাজনী এই সপ্ত মহাভাগ বীরগণকে আনয়ন করিয়া বিধিপূর্ব্যক সেনাপত্যে অভিবিক্ত করিলেন; যিনি জ্রোণ-বিনাশার্থে সমিজ হুতাশন হইতে উৎপন্ন হইয়াছিলেন, সেই ধৃউল্লামকে সর্ব্য-সেনাপতি করিলেন এবং সেই সমস্ত মহালা সেনাপতিগণের উপরে গুড়াকেশ বনপ্তারকে আধিপত্য প্রদান করিলেন। বলরামান্ত্রক মহাবাহ্ শ্রীমান্ জনার্দ্ধন সেই অর্জ্জ্নেরও নারক ও অশ্বনিয়ন্তা হইলেন।

महात्राक ! नील श्रेषित्र धाती देवलान-निर्थत-मृत्र, মদলোহিত-লোচনান্ত, সিংহলীলা-গতি, মহাবাহু, জীমান্ হলায়ুধ বলদেব সেই মহাবিধংসকর উপস্থিত যুদ্ধ সন্নিহিত দেখিয়া দেবগণ-রক্ষিত বাসবের ন্যায়, অক্রুর, উদ্ধব, গদ, শাষ, প্রত্নাম ও চারুদেঞ্-প্রভৃতি বলোক্কত, সমাপতিত শার্দূল-সজ্জসদৃশ, প্রধান প্রধান র্ফিগণ-কর্তৃক অভিরক্ষিত হইয়া পাণ্ডব-সদনে আ-দিয়া প্রবেশ করিলেন। তাঁহাকে সমাগত দেখিয়া ধর্মরাজ যুধিষ্ঠির, মহাছাতি কেশব, ভীম-কর্মা वृत्कामन्न, भाशीवधन्न। धनक्षत्र ७ व्यन्ताना न्नाक्रभग नकरनरे अञ्चार्थान-शृक्षक छाहात वथारवाना ममानत করিলেন। অনন্তর রাজা যুধিন্তির পাণিদারা তাঁহার क्तरमार्भ क्रिलिन এवং वास्ट्राप्तव-श्रञ्जि नकत्नहे ভাঁছাকে অভিবাদন করিলেন। অরিন্দম হলায়ুধ বরোর্দ্ধ বিরাট ও ক্রপদকে অভিবাদন করিয়া যুধি-ভিরের সহিত উপবেশন করিলেন। অনম্ভর সেই পাर्चिवनं नर्क मिटक উপविके रुरेटन द्वारिगी-नम्मन वनामव बाञ्चामात्रम मुधनितीका-भूक्त कहिरमन, এই মহাতর্মর দারুণ পুরুষ-ক্ষর উপস্থিত হইবে; जाबि (वांध काँब्रे हेरा निष्कत्तरे देवनिस्तत्त्व, त्कान करमे अञ्चलम क्रिवात माथा नाहे। अक्ररण आमात

मनन এই यে তোমাদিগকে স্ক্রেনগণ দহ এই यूक श्रेटि नमाक्तरं উद्धीर्न, प्रदांश ও प्रकड-দেহ দেখি। পৃথিবীস্থ সমস্ত ক্ষজ্ৰিয়কুল কালপক হইয়াই সমবেত হইয়াছে, সন্দেহনাই। মাংস-শোণিত-কর্দ্দমময় মহান বিমর্দ্দ অবশ্যই উপস্থিত হইবে। হে ভরতনন্দন যুধিষ্ঠির! আমি নির্জ্জনে বাস্থদেবকে পুনঃপুন বলিয়াছিলাম যে, হে মধুস্থদন! পাগুবেরা আমাদিগের যেৰূপ, রাজা ছুর্য্যোধনও সেইৰূপ; অতএব সমান সম্বন্ধিগণে সমান ব্যবহার কর ;—ছুর্য্যোধনকেও সাহায্য প্রদান কর ; যেহেভু তিনিও তদর্থে বারংবার সমাগত হইতেছেন। কিন্তু তোমার নিমিত্তে মধুস্থদন আমার সে বাক্য রক্ষা क्रितिलन ना ; धनक्षरत्रत प्रथार्वका क्रित्रा हिन তোমাতেই সর্বভাবে নিবিফ হইয়াছেন। পাণ্ডব-দিগের যে কৃষ্ণায়ই জয় হইবে, ইহা আমার নিশ্চিত বোধ হইতেছে, কেন না বাস্থ্যদেবের সেইৰূপই অভিনিবেশ। আমিও ক্লফ বিনা জীবলোক সন্দ-র্শনে উৎসাহী হইতে পারি না, এই নিমিত্তই কেশ-বের অভিপ্রেত বিষয়ের অনুবর্ত্তন করিতেছি। গদা-যুদ্ধবিশারদ বীরবর ভীম ও নরপতি ছুর্যোধন, উভয়েই আমার শিষা; স্থতরাং উভয়ের প্রতিই আমি সমান স্নেহান্বিত। অতএব সংপ্রতি আমি সরস্বতীর তীর্থসেবনার্থে গমন করিব; কৌরবদিগকে সমক্ষে বিনফ হইতে দেখিয়া উপেক্ষা করিতে পারিব না।

মহাবাছ বলরাম এইৰপ সম্ভাষণ করিয়া পাওব-গণ-কর্তৃক অমুক্তাত হইয়া মধুস্থদনকে নিবর্ত্তন-পুর্বেক তীর্থযাত্রায় প্রস্থান করিলেন।

> বলদেব-বাক্যে বট্পঞ্চাশদধিক শতভম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৫৬॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, ইত্যবসরে সাক্ষাৎ ইন্দ্র-সধা দাক্ষিণাত্যপতি অতিবশস্থী হিরণারোমা ভোজ-নরপতি মহান্ধা ভীন্নকের পুঞ্জ, দিঅওলে রুস্থী-

নামে বিখ্যাত, সতারংকণ্প মহাবাছ নরপতি জলদ-নিস্থন বিজয়ধমু লাভ করিয়া যেন সমস্ত জগতের ভয়ে(ৎপাদন করত পাণ্ডবগণ-সন্নিধানে যাতা করেন। তিনি গন্ধমাদনবাসী কিংপুরুষসিংহ ক্রমের শিষ্য इरेब्रा डाँशब निक्षे इरेट्ड म्डूप्शाम धसूर्व्यम मण्न् ৰূপে প্ৰাপ্ত হইয়াছিলেন এবং তেকে গাণ্ডীব ও শাঙ্গ ধনুর তুল্য দিবালকণ্ডযুক্ত বিজয়-নামক মা-হেন্দ্র ধন্ত্র লাভ করিয়াছিলেন ৷ স্বর্গবাসিগণ-মধ্যে বরুণের গাণ্ডীব, মহেন্দ্রের বিজয় ও বিষ্ণুর শাঙ্গ, এই ভিন ধমুকই দিব্য ও অতি তেজস্বী বলিয়া বিখ্যাত; তম্বধ্যে প্রসেনা-ভয়াবহ শাঙ্গ শ্রাসন কৃষ্ণ ধারণ করিতেন, ইন্দ্রনন্দন অর্জ্জুন খাগুব বনে পাবকের নিকট হইতে গাণ্ডীব লাভ করিয়াছিলেন, আর মহাতেজা রুশ্নী দ্রুমের নিকটে বিজয় ধমু প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। হৃষীকেশ মুরদ্বৈত্যের যো-জিত অন্ত্রময় পাশ-সমস্ত ছেদন-পূর্বকে বল-দারা ঐ দৈত্যকে নিহত করিয়া এবং ভূমিপুত্র নরকাস্থরকে নিঃশেষে জয় করিয়া অদিতির মণিকুগুল-যুগল আহরণ করত ষোড়শ সহস্র রমণী, বিবিধ রত্ন ও উত্তম শাঙ্গ থিমুঃ প্রাপ্ত হন। স্ববাছবল-গর্বিত বীর-বর রুক্মী পূর্বের ধীসম্পন্ন বাস্তদেবের রুক্মিণী-হরণ সহু করিতে না পারিয়া " আমি জনার্দনকে বধ না করিয়া নির্ভ হইব না '' এইৰূপ প্রতিজ্ঞা করিয়া প্রবৃদ্ধা গঙ্গার ন্যায় স্থৃদুর-বিস্তৃতা বিচিত্র আয়ুধ ও বর্মযুক্তা মহতী চতুরক্ষিণী সেনা সমভিব্যাহারে नर्समञ्ज्ञधातित्थार्थ कृत्यन्त्र व्यक्तुन्त्र कृतिशाहित्नन, পরে ঐ যোগীশ্বর প্রভু রক্ষিনন্দনতক প্রাপ্ত হইয়া পরাজিত ও লচ্ছিত হইয়া কুণ্ডিরাজ নিকটে আ-গমন করিয়াছিলেন। পরবীরহন্তা রুক্সী যে ছলে কৃষ-কর্তৃক সমরে পরাজিত হন, তথায় ভোজকট नारम अक्षि छेखम नशद्र निर्माण क्रियाहित्वन। মহারাজ! প্রভূত-গজ-বাজি-সম্বলিত স্থমহৎ সৈন্য-যুক্ত ঐ নগর পৃথিবীতে ভোজকট নামে বিখ্যাত আছে। সেই মহানীয়া ভোজরাজ বিপুল দৈনাগণে

পরিবারিত হইয়া এক অকোহিণী সমভিবাগহারে সহসা পাগুবগণ-সমীপে আগমন করিলেন। অন-ন্তর সেই কবচী, ধন্ধী, তলধারী, ধড়্গী, শরাসমী রুলী পাগুবগণের বিদিত হইয়া ৰাস্তুদেবের প্রিয় করণেছার আদিতাবর্ণ ধ্রুরে সহিত মহাচমু-মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। তথন রাজা যুধিষ্ঠির দূর হইতে প্রভ্যাদামন করিয়া ভাঁহার যথোচিত পূজা করিলেন। রুরী পাণ্ডবগণ-কর্তৃক যথা ন্যায়ে পুঞ্জিত ও স্থসং-স্তুত হইয়া এবং তাঁহাদিগের সকলকে প্রতি পূজা করিয়া সৈনিক-সহ বিশ্রামানস্তর বীরগণ-মধ্যে ধন-ঞ্জয়কে কহিলেন, হে পাশুব! এই যুদ্ধে অবস্থিত হইয়া যদি সাহায্য নিমিত্তে ভীত হইয়া থাক, তাহা হইলে আমি ভোমাকে শত্রুদিগের অসহনীয় সা-হাযা প্রদান করিব। এই পৃথিবীতে বিক্রমে আ-মার তুলা কোন পুরুষই বিদ্যমান নাই। হে পা-গুব! সমরে তুমি আমাকে যে অংশ প্রদান করিবে, আমি তাহাই নিহত করিব ; দ্রোণ, রূপ, ভীয় কি কর্ণ, সকলকেই বিনষ্ট করিব। অথবা এই সমস্ত রাজবর্গ নিশ্চেফ হইয়া অবস্থান করুন, আমি একা-কীই সংগ্রামে শত্রুগণকে বধ করিয়া ভোমারে পৃথিবী প্রদান করিব।

ধীমান ধনপ্রম ধর্মাজ ও কেশবের সলিধানে এবং নরেন্দ্রগণ ও অন্যান্য ক্ষজিয়-বর্গের সমক্ষে এইৰপ উক্ত হইয়া যুধিন্টির ও বান্তদেবের মুখাব-লোকন করিয়া সহাস্য-বদনে প্রশাস্ত-ভাবে ভাঁহাকে এই কথা কহিলেন, "হে বীর! আমি কৌরবকুলে উৎপল্প, বিশেষত পাগুর পুত্র হইয়া এবং দ্রোণা-চার্যের শিষ্য, বাস্তদেব-সহায়-সম্পল্প ও গাণ্ডীব-ধারী হইলা "ভীত হইলাছি " এ কথা কি প্রকারে বলিতে পারি? ঘোষ্যাতা সমলে যখন স্থমহাবল গন্ধর্বগণের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিলাম, তথন কোন্ব্রাক্তি আমার সহায় হইয়াছিল? খাণ্ডব বনে সেই দেব-দানব-সমাকুল ঘোরতর সংগ্রামে যখন যুদ্ধ করিয়াছিলাম, তথন কে আমার সহায় হইয়াছিল?

যথন নিবাতক্বচ ও কালকেয় দানবগণের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিলাম, তথন কে আমার সহায় হইয়া-ছিল ? অপিচ বিরাটনগরে যৎকালে বছ-সংখ্যক কৌরবগণের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিলাম, তথনই বা কে আমার সহায় হইয়াছিল ? যুদ্ধার্থে রুদ্র, মহেন্দ্র, কুবের, যম, বরুণ, ছতাশন, রুপ, দ্রোণ ও মাধবকে আরাধনা করিয়া, দিবা তেজাময় স্থৃদৃঢ় গাণ্ডীব-শরাসন ধারণ করিয়া এবং অক্ষয় শর-সংযুক্ত ও দিব্যাক্র-পরিবারিত হইয়াও "ভীত হইয়াছি " এই যশোবিলোপী বাকাটি সাক্ষাৎ বক্সধারী পুরন্দর-কেও মাদৃশ বাক্তি কি প্রকারে বলিতে পারে ? হে নরশার্দ্দ্র । আমি ভীত হই নাই এবং আমার সহায়েরও প্রয়োজন নাই; অতএব হে মহাবাহো! আপনকার ইচ্ছা ও স্বযোগানুসারে হয় অন্যত্র গমন করুন, না হয় এই খানে অবস্থিত হউন।

হে ভরতর্বভ! অনন্তর রুক্মী সেই সাগর-সদৃশ সৈন্য নিবর্ত্তন-পূর্বাক দুর্ঘ্যোধনের নিকটেও সেইরপে গমন করিলেন, তাঁহাকেও সেইরপ কহিলেন এবং সেই পূর্মানী দুর্ঘ্যোধনও সেইরপে প্রত্যাখ্যান করিলেন। অতএব রুফিকুল-সম্ভূত রোহিণীনন্দন বলদেব ও বস্থাধিপ রুক্মী, এই দুই জন মাত্র যুজ হইতে অপগত হইয়াছিলেন। রাম তীর্থ্যাতায় গমন করিলে এবং ভীয়ক-পূজ সেইরপে প্রতিন্ত্র হইলে পর পাণ্ডবেরা পুনর্বার মন্ত্রণার্থে উপবেশন করিলেন। মহারাজ! পার্থিবগণ-সমাকুল ধর্মরাজের সেই সতা তারকাপুঞ্জ-বিচিত্রিত দ্বিজনরাজ-বিরাজিত নভোমগুলের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল।

ক্রি-প্রত্যাধ্যানে সপ্তপঞ্চাশদধিক শতভ্য অধ্যায় সমাপ্ত,॥ ১৫৭ ॥

জনমেজয় কহিলেন, হে দ্বিজর্মভ ৽ কুরুকেতে বি সৈন্য সকল সেইবাপে বুছেবন্ধ হইলে কালপ্রেরিভ কৌরবেরা কি করিল ?

रियमणात्रन कहित्यन, यहाताचा रिम्माश्रम त्महे ৰূপে বৃহ্বদ্ধ হইয়া প্ৰস্তুত থাকিলে ধৃতরাষ্ট্র সঞ্চয়-কে এই কথা বলিলেন, হে সঞ্জয়! আইস, কুরু পাওবদিপের সেনা-নিবেশ বিষয়ে যাহা যাহা হইল, তৎসমুদায় সম্পূর্ণ-ৰূপে আমার নিকটে ব্যক্ত কর। আমি পুরুষকারকে অনর্থক বিবেচনা করিয়া দৈব-কেই শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিষ্টিভছি; যেহেভু বিনাশ-পরি-ণামী যুদ্ধ-দোষ সমস্ত বোধগম্য করিয়াও নিক্লফ-বুদ্দি ছুদ্ভিদেবী পুক্তকেও নিয়মিত করিতে পারি-তেছি না এবং আপনারও হিতসাধনে সমর্থ ছই-তেছিনা। হে স্থত! আমার বুদ্ধি দোষাত্রদর্শিনী হয় বটে, কিন্তু ছূর্যোধনকে প্রাপ্ত হইয়া ভাহা পুন-রায় পরিবর্ত্তিত হইয়া পড়ে। অতএব হে সঞ্চয়! এৰপ অবস্থায় যাহা হইবার তাহা অবশ্যই হইবে ; রণে তমুদ্যাগ করাও ক্ষত্রিয়ের প্রশংসিত ধর্ম वट्छे।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! আপনি যাহা ইচ্ছা করিতেছেন, ইহা আপনকার উপযুক্ত প্রশ্ন বটে ; কিন্তু এই দোষটি 'ছুর্যোধনের উপরে আরোপিত করা আপনকার উচিত নহে। হে রাজন্! আমি নিঃশেষে বলিতেছি শ্রবণ করুন। যে মানব আপন ছুশ্চরিত-হেতুক অশুভ প্রাপ্ত হয়, তাহার কাল কি দৈবের প্রতি দোষারোপ করা উচিত নহে। মহা-রাজ! মনুষ্যগণ-মধ্যে যে ব্যক্তি সূর্ব্ব প্রকার নিন্দ-নীয় কর্ম্মের আচরণ করে, সে গর্হিতাচরণ করত সকল লোকেরই বধার্ছ হয়। হে মনুজ্ঞােষ্ঠ ! পাগু-বেরা দ্যুতক্রীড়ায় পরাভব প্রাপ্ত ছইয়া কেবল আপনকার প্রতীক্ষাতেই অমাত্যগণের সহিত অব-মান ও তিরকার সমস্ত সহ্য করিয়াছিলেন। সম্প্রতি সমরে অশ্ব, গজ ও অমিত-তেজস্বী রাজগণের বি-ধংস হইবার যে ৰূপে স্ত্রপাত হইল, তাহা সর্ব-তোভাবে আমার নিকটে প্রবণ ক্রুন। তে মহা-প্রাক্ত! মহাযুদ্ধে সকল লোক সংহারের যথ:-ভূত মূল রুজান্ত স্থাম্মর-চিজে আবণ-পূর্বক এইরূপ

অবধারণ করুন যে পুরুষ কর্মন শুভাশুভ কর্মের

স্থাং কর্জা হন না; দারুযন্তের ন্যার অস্বভন্ত হইরাই

ক্রিরমাণ হরেন। শুভাশুভ কর্মের অমুষ্ঠান বিষয়ে

ক্রিরিধ মত দৃষ্ট হর। কেছ কেছ বলেন, লোকে

সম্পর-নির্দিষ্ট কর্মাই করিয়া থাকে; কেছ কেছ
বলেন, যদুজাক্রমেই করে; আর অপর কেছ কেছ
বলেন, যে বর্জমান কর্মের অমুষ্ঠান বিষয়ে পূর্বজন্মকৃত কর্মা-সকলের প্রয়োজকতা থাকে।

সঞ্চয়-বাক্যে সৈন্যানির্যাণ প্রকরণ ও অ্টপঞ্চাশ-

দ্ধিক শতভম অধাায় সমাপ্ত ॥ ১৫৮ ॥

উলূক দুতাগমন প্রকরণ।

সঞ্য় কহিলেন, মহারাজ! মহাত্মা পাণ্ডবের। हित्रपूर्णी नहीं मभीरा निविष्ठ इहेरल क्रे कोतरवता अ যথাবিধি নিবিষ্ট হইলেন। প্রতাপশালী নরপতি ছুর্য্যোধন তথায় শিবির সন্নিবেশ করিয়া, নূপতিগণ-কে সম্মানিত করিয়া এবং রক্ষক সৈন্য বিন্যাস-পূর্ব্বক যোধগণের রক্ষণীয় দ্রব্যজাতের রক্ষা বিধান করিয়া পরিশেষে কর্ণ, ছুঃশাসন ও শকুনিকে আ-নয়ন-পূর্বকে মন্ত্রণায় প্রহৃত হইলেন। হে ভারত! ছুর্যোধন কর্ণের সহিত সম্ভাষণ করিয়া এবং কর্ণ, ছুংশাসন ও শকুনির সৃহিত মন্ত্রণা করিয়া নিজ্জনে উলুককে আহ্বান-পূথকে এই কথা বলিলেন, " হে কিতবনদ্দন উলুক! তুমি সোমক সহু পাণ্ডবগণ ममीर्प भगन कत अवः भगन कतिया वास्र रात्र व्यवग भागदा यर्ज्जन क पामात वैहे कथा वल (ध, বছ বৰ্ষ প্ৰয়ন্ত যাহা চিন্তিত হইয়াছে, সেই দৰ্ম-লোক-ভরম্বর কুরুপাণ্ডব-যুদ্ধ এই উপস্থিত হইল। হৈ কৌন্তেয় ! ভূমি বাস্তুদেব-সহক্ষত হইয়া অনুজ-গণের সহিত গর্জন করিতে করিতে যে সুমহৎ প্লাঘা-বাকোর উক্তি করিয়াছিলে, যাহা সঞ্জয় আ-সিয়া কৌরবগণ-মধ্যে ব্যক্ত করিয়াছিলেন, তাহার সময় এই সমাপত হইরাছে; অতএব ভোমরা যে

ৰূপ প্ৰতিজ্ঞা করিয়াছিলে, সম্প্ৰতি ভাষা প্ৰতি-পালন কর। হ উলুক ! ভাতৃগণ ও যাবভীয় সোমক ও কেকয়গণের সহিত সমবেত জ্যেষ্ঠ পা-ওবকেও আমার বাকো এই কথা বল, যে, "প্রাসদ্ধ थार्मिक रहेशा जूमिर वा कि विनशा अथएम प्रम করিতেছ ?—নৃশংদের নাায় কি প্রকারে সমস্ত জগ-তের বিনাশ ইচ্ছা করিতেছ? আমার মনে হয়. তুমি সর্বভূতের অভয় দাতাই হইবে। হে ভরত-র্ষভ ৷ প্রবণ করা যায়, পূর্বের দেবভারা রাজ্য হরণ করিলে পর ঐহ্লাদ এই একটি শ্লোক পাঠ করি-য়াছিলেন, 'হে দেবগণ! যাহার ধর্মচিত্র উচ্ছিত ধজের নাায় নিয়ত প্রকাশিত থাকে, কিন্তু পাপ কর্ম সমন্ত প্রচ্ছনভাবে অবস্থান করে, তাহার সেই ব্রতকে বিড়ালের ব্রত কছে। হে নরাধিপ ! এ বিষয়ে নারদ আমার পিতার নিকটে এই উন্ভন আখ্যান বর্ণন করিয়াছিলেন, এক্ষণে আমি তোমার নিকটে ইহার আহুন্তি করিতেছি, শ্রবণ কর।

"হে রাজন্! কোন সময়ে একটা দুফীত্মা মার্চ্জার मर्क्तकर्ण्या वित्रेष्ठ इरेशा शका-जीएत डेर्क्सवाद्य इरेशा অবস্থিত ছিল। সে জন্তগণৈর বিশ্বাসার্থে হিংস:-রহিত হইয়া 'আমি ধর্মাচরণ করিতেছি ' সকল व्यानीत्करे वरे कथा विनेष्ठ। त्ह त्राजन्। वरेकाल বছকাল গত হইলে অওকেরা তাহার প্রতি বিশাস করিল এবং দকলে সমবেত হইয়া ঐ বিড়ালের বিস্তর প্রশংসা করিতে লাগিল। পক্ষিভোজী মা-ৰ্জ্জার সেই পক্ষিগণ-কর্তৃক পূজামান হইয়া মনে করিল যে, এত কালের পর আমার তপস্যার কল ও কার্য্যোক্ষার হইল। হে ভারত! অন্মূর দীর্ঘ-কালের পর মূষিকেরাও সেই স্থানে আসিয়া উপ-স্থিত হইল এবং সেই ব্রতচারী ধার্মিককে দন্তযুক্ত महोकार्या अखिनिविके मृक्षि कतिन। रह ताजन् ! তাহাতে নিশ্চয় জ্ঞান হওয়াতে তাহাদের এই মাত হইল, যে, আমাদিগের অনেক শত্র আছে, অতএব हैनि आभारतत माञ्च दरेश दौनक देक मकरलत

সভত রক্ষা করুন । এইবাপ মনংস্থ করিয়া ভার্ছীরা विजातन मिन्निहिष्ठ इहेग्रा अहे कथा वनिन, त्य, আপনকার প্রসাদে আমরা যথা-স্থাথে বিচরণ করি-তে অভিলাষ করি; আপনি আমাদিগের অব্যা-হতা গতি এবং আপনিই আমাদিগের পরম বন্ধু; একারণ আমরা সকলে মিলিত হইয়া আপনকার শ্রণাগত হইলাম; আপনি ধর্ম-প্রায়ণ এবং নিতাকাল ধর্মেই ব্যবস্থিত আছেন; অতএব হে महाध्योख्य ! वज्रधाती रयमन प्रविशासक त्रका करतन, সেইৰপ আপনি আমাদিগকে রক্ষা করুন। হে ताजन्। त्रहे भूविकास्रकाती भार्जात भूविकशन-कर्ज्क দেইৰূপ উক্ত হইয়া তাছাদিগকে প্ৰত্যুত্তর করিল, বে, তপস্যা ও রক্ষা, এই ছুই কর্মের এককালে স্থােগ দেখিতে পাই না; কিন্তু হিতসাধনের নি-মিত্ত ভোমাদিগের এই বাক্য আমাকে অবশাই রক্ষা করিতে হইবে এবং আমার বাক্যও ভোমা-দিগের নিত্য প্রতিপালন করা কর্তব্য ; আমি দৃঢ়-ব্রতে অবস্থিত হইয়া তপদ্যায় পরিশ্রান্ত হই, স্বতরাং বিশেষ ৰূপ চিন্তা করিয়াও গমনের কোন শক্তি দেখিতে পাইতেছি না; অতএব অতঃপর প্রতি দিন তোমরা আমাকে নদীকূলে লইয়া যাইবে। হে ভরতর্বত! মুঘিকেরাও 'তাহাই হইবে ' এই ৰূপ প্ৰতিজ্ঞা করিয়া সেই মাৰ্জ্জারের নিকটে বৃদ্ধ ওঁ বালক সকল সমর্পণ করিল। অনস্তর সেই পাপ-वृक्ति क्रुके। चा भार्कात पृषिक मकनरक एक व कत्र उ चृलदंपर, स्वर्ग ७ मृष्वज्ञ रहेट नांशिल। এই क्ट् ষুদিকের। অতিশব্ধ ক্ষয় পাইতে লাগিল এবং সেই विज्ञान वनवान् ও তেজायुक रहेश वर्षिक रहेरक পার্কিল। অনন্তর এক দিন সুবিকেরা সমবেত হইয়া পরস্পর এই কথা কহিল, যে, মাভুল নিভ্য নিভ্য ইজি পাইতেছেন আর আমরা অতিশর কীণ হই-তেছি। হৈ রাজন ! অন্তর ডিভিক নামে কোন वृक्षिमान् मृतिक तिरे अन्या चीर्-नम्मात्रक अहे কথা বলিল, ভোমরা বিলেখ-ৰূপে মিলিভ হইয়া

नती-जीदत वाहरत, चामि माजूदनत मंदनहे रजाया-দিগের পশ্চাতে গমন করিব। তথন 'সাধু সাধু' এই কথা বলিয়া সকলেই ভাহার প্রশংসা করিল এবং ডিণ্ডিকের সেই অর্থযুক্ত বাক্য যথ:-ন্যায়ে প্রতি-পালন করিল। অনস্তর বিড়াল অনভিজ্ঞতা-প্রযুক্ত ডিণ্ডিককে ভক্ষণ করিলে মৃষিকেরা সকলে একত্রিভ হইয়া নির্জ্জনে মন্ত্রণা ক্রিভে লাগিল। হে রাজন্! কোকিল-নামা একটি বৃদ্ধতম মুবিক জ্ঞাতিগণ-মধ্যে এই যথার্থ-বাক্যের উক্তি করিল, যে, মাতুল ধর্ম-কামী নহেন; আমাদিগের শত্রু হইয়াও কেবল ছলনার নিমিত্তে মিত্রভাব অবলম্বন করিয়াছেন; যে ব্যক্তি ফল মূল ভক্ষণ করে, তাহার বিষ্ঠা কখন লোমযুক্ত হয় না; দেখ, ইহাঁর গাত্র উত্তরোত্তর বৰ্দ্ধিত হইতেছে এবং মূষিকগণ ক্রমে ক্রমে ক্ষীণ হইয়া পর্ক্তিতছে; বিশেষত অদ্য সাত আট দিন হইল, ডিণ্ডিককে দেখিতে পাওয়া যায় না। কো-কিলের এই কথা শুনিয়া সকল মূষিকেরাই ইতন্তত পলায়ন-পরায়ণ হইল এবং স্বছ্টাস্থা মার্ক্সারও স্বস্থানে প্রস্থান করিল। অতএব রে চুফীত্মন্! তুমিও সেই বিড়াল-ব্ৰত অবলয়ন করিয়াছ;— মূবিকগণ মধ্যে বিড়াল যেমন আচরণ করিয়াছিল, তুমিও জ্ঞাতিবর্গ-মধ্যে সেইৰূপ আচরণ করিতেছ। তোমার বাক্যে এক প্রকার প্রকাশ পায়, কর্ম অনা প্রকার দৃষ্ট হয়; তোমার বেদও উপশ্ম কেবল লোক-সমীপে দম্ভপ্রকাশের নিমিস্ত মাত্র হে রাজন্! তুমি ধর্মিষ্ঠ বলিয়া বিখ্যাত, অতএব এই কাপটা পরিহার-পূর্বক ক্ষত্রধর্মে সমাস্থিত रुरेया ममल कार्या करा। ए जन्नजमलम ! वास्वीया-দারা পৃথিবী লাভ করিয়া দিলাভিগণ ও পিভৃগণকে যথোচিত দান কর। ভোমার মাতা বছ বংসর ক্লেশ পাইরাছেন, অতএব তাঁহার হিতসাধনে বত্ন-পরারণ হইরা সমরে শক্ত জয়-পূর্বক ভদীর অঞ্জ-মোচন এবং পরত্ব সন্মান আছরণ কর। ভূমি যত্ন করিয়া পাঁচখানি আম আর্থনা করিয়াছিলে, কিন্তু

আমরা 'ক্রিপে পাওবদিক্ত কোপিত করিব, কি প্রকারে সমরে যুদ্ধ করিব ' এই মনে করিয়।ই তাহা প্রদান করি নাই। তোমার নিমিত্তে ছুফাডি-প্রার বিছুরের পরিত্যাগ ও জতুগৃহে তোমাদিগের দাহ সর্গ করিয়া পুরুষকার অবলম্বন কর। হে নরাধিপ ! তুমি কুরুসভায় আগমন সময়ে কুঞ্কে 'হে রাজন্! আমি শান্তি 🗣 সমর উভয়ের নিমি-**ত্তেই এই অবস্থিত আছি ' এই যে কথা বলি**য়া দিয়াছিলে, সেই সমরের সময় এই সমাগত হই-য়াছে। হে যুধিন্তির ! ইহার নিমিত্ত আমি এই সমন্ত প্রস্তুত করিয়া রাখিয়াছি। ক্ষত্রিয় ব্যক্তি যুদ্ধ অপেকা আর কি পরম লাভ জ্ঞান করিতে পারেন ? ছে ভরতর্বভ! তুমি ক্ষজ্রির-কুলে জন্মিয়া, পৃথিবীতে বিখ্যাত হইয়া এবং দ্রোণ ও রূপাচার্য্য হইতে অস্ত্র শিক্ষা করিয়া সমান জন্ম 😘 সমান বল-সত্ত্বেও বস্থদেব-তনয়কে আশ্রয় করিয়াছ কেন ?

হে উলুক ! তুমি পাগুবগণ-সমীপে বাস্কদেবকেও এই কথা বলিও, যে, তুমি আত্মার্থেও পাণ্ডবার্থে যত্নপর হইয়া আমার সহিত প্রতিযুদ্ধ কর। পূর্বে সভামধ্যে ম.য়া-দার্ যে ৰূপ ধারণ করিয়াছিলে, পুনরায় সেই ৰূপ প্রকটিত করিয়া অর্জুনের সহিত আমার অভিমুখে ধাবিত হও। ইক্রজাল, মায়া কি কুহক সমত্ত ভয়স্কর হয় বটে, কিন্তু সংগ্রামে গৃহী-তাস্ত্র ব্যক্তির নিকটে ভরজনক হওয়া দূরে থাকুক বরং কোপাবহই হইয়া থাকে। আমরাও নিজ শরীরে বছতর ৰপ প্রদর্শন করত স্বর্গে ও আকাশে গমনার্থে উৎসাহ করিতে পারি এবং রসাতল কি ইন্দ্রপুরেও প্রবেশ করিতে সমর্থ হই। পরস্ত মায়া ও उम्रक्षमर्भनामि वभीकत्रं थकात-ममूर-बाता य निक्ति, **जाहा श्रुक्रयकात्र-मण्यस मसूरवात्र द्विशमा हरेए** পারে না; কেন না বিধাতাই মানস-মাতে সমস্ত व्यानीत्क तमवर्जी करतन, व्यन्तरत नरक् । रह यह-नम्म ! जूमि दा बिलास थाक, चामि नःशास्म ५७-রাইপুত্রদিশকে নিহত করিরা পাওবগণকে উত্তম

রাজা প্রদান করিব এবং সঞ্চয় জামার নিকটে তোমার "মং-সহরত স্বাসাচী পার্থের সহিত তোমাদিগের শক্তা" এই রূপ যে সকল বাকা উক্ত করিয়াছিলেন, সম্প্রতি পাণ্ডবার্থে পরাক্রমী হইয়া তংসমুদায় প্রতিপালন করত সত্যপ্রতিক্ত হও। সমরে যত্নপরায়ণ হইয়া যুদ্ধ কর। আমরা দেখি, তুমি একবার পুরুষ হও। যে ব্যক্তি শক্রকে বিশেষ রূপে জানিয়া বিশুদ্ধ পৌরুষ অবলয়ন-পূর্বেক শক্রণরে শোক বর্জন করেন, তিনিই স্কুজীবনে জীবিত থাকেন। হে রুষণ! লোক-মধ্যে অক্তমাৎ তোমার মহৎ যশ বিখ্যাত হইয়াছে; কিন্তু পুংস্তুযুক্ত অনেক নপুংসকও যে আছে, তাহা এক্ষণে জানা যাইবে। হে কংসভ্তা! মৎসদৃশ কোন নৃপতিই তোমার প্রতি কথন যুদ্ধার্থে অভিযোগ করেন নাই।

रि छेलुक् स्तरे मृंक्रहीन त्वख-जूला, पूर्ध, बह-ভোজী, বিদ্যা-খূন্য ভীমসেনকেও পুনঃপুন আমার এই কথা বলিও, যে, হে পার্থ! পূর্কে বিরাটনগরে তুমি যে বল্লভ নামে বিখ্যাত স্থপকার হইয়াছিলে, সে কেবল আমারই পৌরুষ। সভা-মধ্যে ভুমি যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলে, তাহা যেন:মিখ্যা না হয়; যদি শক্তি থাকে, ছুঃশাসনের রুধির পান কর। হে কৌন্তের! তুমি যে বলিরা থাক, আমি সংগ্রামে ধার্তরাষ্ট্রদিগকে ত্বরায় নিহত করিব, ভাহার কাল এই আগত হইয়াছে। হেভারত। তুমি ভক্ষ, ভোজ্য ও পেয় বিষয়েই পুরস্কারার্ছ; ভোজন করা কোথায় আর যুদ্ধ করাই বা কোথায়? এস পুরুষ হইরা যুক্ত কর। হে ভারত! তুমি গতাস্থ হইরা शरा व्यानिक्रन-शूर्वक निष्कत्रहे पुष्ठनभाग्नी इहेरव। হে বৃক্লের ! বভা-মধ্যে ভোমার নেই যে আক্ষা-লন, ভাহা নিতান্তই অকিঞ্ছিৎকর।

হে উলুক! তুমি নকুগকেও আমার বাকো বলিও, বে, হে ভারত! সম্প্রতি স্থির হইয়া যুদ্ধ কর; আমরা ভোমার কেমন পৌরুষ দেখি। হে ভারত! বের প্রতি অকুমান, আমার প্রতি বেব ও ক্ষণার যে পরিক্লেশ, তাহ্ন এক্ষণে যথাবৎ স্মর্শ কর ৷

রাজপণ মধ্যে তুমি সঁহদেবকেও আমার এই কথা ৰলিও, যে, হে পাণ্ডব! অধুনা যত্নপর হইয়া সংগ্রামে যুদ্ধ কর। ক্লেশ-সমস্ত শ্বরণ কর।

বিরাট ও দ্রুপদকেও , আমার বাক্যে বলিও, যে, যে পর্যান্ত প্রকা হৃটি হইয়াছে, তদব্ধি মহাগুণসম্পন্ন ভূতোরাও কথন স্থামিদিগকে বিশেষ ৰূপে
দৃষ্টি করে নাই এবং রাজারাও কথন ভূতাবর্গকে
দেখেন নাই; অর্থাৎ স্থামি ভূত্যের পরস্পর গুণাগুণ পরিজ্ঞান স্থকর নহে; এই রাজা অক্লাঘা, এই
মনে করিয়া তোমরা আমারও বধার্থে আগমন
করিয়াছ; এছণে সকলে মিলিত হইয়া পাওবদিগের ও আপনাদিগের নিমিত্তে আমার সহিত
যুদ্ধ কর।

পাঞাল-নদ্দন ধৃউদ্বাহকেও তুমি আমার বাক্যে এই কথা বলিও, যে, এই তোমার সময় প্রাপ্ত হইয়াছে এবং তুমিও তাহাকে প্রাপ্ত হইবে; সমরে
দোশের সন্ধিছিত হইয়া আপনার উত্তম হিত জানিতে পারিবে। আইস, স্কুদ্ ও সহচরগণের
সহিত মিলিয়া যুদ্ধে প্রেন্ত হইয়া আত্মার্থে স্কুদ্ধর
কর্ম কর।

হে উলুক! অনস্তর শিথগুকৈ আমার বাক্যে বলিও, যে, সকল ধনুর্জারিশ্রেষ্ঠ, মহাবাছ কুরুনন্দন গালের জ্রী-জ্ঞানে অবজ্ঞা করিয়া তোমাকে বধ করিবেন না, অতএব তুমি এক্ষণে স্থানির্ভয় হইরা যুদ্ধ কর; আমরা জোমার-পৌরুষ দেখি।

এইৰপ কহিয়া রাজা তুর্যোধন হাস্য-পূর্বক পুন-বার উলুকতে কহিলেন, তুমি বাস্তদেবের সাক্ষাতে পুনরায় ধনপ্লয়কে বলিও, যে, হে বার! তুমি, হয় আমাদিগকে প্রাজিত করিয়া এই পৃথিবী শাসন কর, না হয় আমাদিপের সিকটে নিক্ষিত হইয়া রণ-শায়ী হও। হে পাঞ্জারাজা হইতে নিবাসন

क्ना क्रिम, दनवानक इस्मान शतिक्रम खन्न कन्न পৌরুষ প্রকাশ কর। ফাল্রিয়া জননীযে নিমিত পুত্র প্রসব করেন, তাহা সকলই এই আগত হই-য়াছে; অতএব সংগ্রামে বল, বীর্যা, শৌর্ষা ও সাতিশয় শীঘ্রাক্রতা-প্রভৃতি পৌরুষ প্রদর্শন করত কোপের নিষ্কৃতি বিধান কর। ঐশ্বর্যা হইতে ভং-শিত, দীর্ঘকাল নির্বেশীসত, নির্বাত্তশয় ক্লেশ প্রাপ্ত ও দীনভাবাপন্ন হইলে কাছার ऋদয় বিদীর্ণ না হয়? কোন মনুষ্য সংকুল-সম্ভূত, খূর, পরধনে অগুধু কোন্ ব্যক্তির অথও রাজ্য আক্রমণ করিয়া তাহার কোপোদ্দীপন না করে ? তুমি যে সেই মহৎ আ-স্ফালন বাক্যের উক্তি করিয়াছিলে, এক্ষণে কর্ম-ছারা তাহা সপ্রমাণ কর। কর্মানা করিয়া কেবল মিথ্যা শ্লাঘা করিলে সাধুরা তাহাকে কুপুরুষ বলিয়া জানেন। শৈক্রগণ বশে অবস্থানের নিষ্কৃতি ও রা-জ্যের পুনরুকার, এই ছুইটিই যুদ্ধকামী ব্যক্তির প্রয়োজন; অতএব পৌরুষ প্রকাশ করিয়া ভাষা সম্পন্ন কর। তুমিও দ্যুতে পরাজিত হইয়াছিলে এবং ক্লঞ্চাকেও সভা-মধ্যে আনয়ন করা হইয়া-ছিল; ইহাতে পুরুষমানী মনুষা অবশাই অমর্ষা-ষিত হইতে পারে। হে পাগুৰ ! তুমি গৃহ হইতে বিবাসিত হইয়া দ্বাদশ বর্ষ কাল বন-মধ্যে এবং এক বংসর দাস্যর্ত্তি অবলম্বন করিয়া বিরাট্টের গৃহে বাস করিয়াছিলে; অতএব রাজা হইতে নির্বাসন নিবন্ধন ক্লেশ, বনবাস ও কৃষ্ণার পরিক্লেশ্য স্মরণ করত পুরুষ হও। অপিচ শত্রু-সমুচিত অঞ্রিয় বিবয় সকলের •পুনঃপুন উক্তিকারী ছুংশাসনাদির প্রতি অমর্ব প্রদর্শন কর; যেহেতু অমর্বই পৌরুষ। हि भाषी। मरशास्य कामात्र काम, वन, बीधा, জ্ঞান-যোগ ও অন্তলাঘৰ দৃষ্ট হউক; যুদ্ধ কর, পুরুষ হও। তোমার শত্র সকলের নীরাজনাদি সংস্থার নিৰ্বাহ হুইয়াছে, কুৰুকেত্ৰ কৰ্ম-খুনা আছে, অখ সকল পুষ্ট রহিয়াছে এবং নৈনিকেরাও ভূতি প্রাপ্ত হুইয়াছে ;ুঅতএৰ কেশবের সহিত্যিলিয়া কলাই

युक्त अतृत रु। (र कोर्डरी कृमि नगरत जीत्मत সহিত সমাগত না হইয়াই অনর্থক লাঘা করিতেছ क्ति ? क्वान चरवाथ मसूचा यमन भक्तमानन भर्क-তে আরোহণ করিতে ইচ্ছা করে, তুমিও সেইকপ র্থা গর্বা করিতেছ; অতএব আত্ম-শ্লাঘা পরিহার-পূর্বাক পুরুষ হও। সংগ্রামে স্বত্র্ধর্ষ স্থত-পুত্র, বলিশ্রেষ্ঠ শল্য ও শচীপতি-সম জোণাচার্য্যকে পরা-জিত না করিয়া কি বলিয়া রাজ্য ইচ্ছা করিতেছ? হে পার্থ! ভুমি যে বেদমন্ত্রে ও ধনুর্বেদে আচার্যা, উভয় বেদেরই পারপ্রাপ্ত, সমর-ধুরন্ধর, অক্ষোভ-ণীয়, অক্ষয়-সন্ত্ৰুসম্পন্ন মহাত্ৰাতি সেনাপতি দ্ৰোণকে জয় করিতে অভিলাষী হইতেছ, তাহা নিতান্তই নির্থক ; কেন না বায়্-কর্তৃক স্থমেরু গিরি উন্মথিত হইয়াছে, ইহা কদাপি শ্রবণ করা বায় না। যদি সমীরণ কথন মেরু বহন করিতে পারেক্সম্বর্গ ভূতলে নিপতিত হয়, অথবা কালচক্রের পরিবর্ত্তন হইয়া যায়, তবে তুমি আমাকে যা বল, তাহা সম্ভবিতে পারে; কেন না ভীন্ন দ্রোণের অস্ত্রাঘাত প্রাপ্ত হইয়া কোন্মানব জীবনের আকাজ্ফা করে? পাৰ্থই হউক বা অন্য কেহই হউক, কোন্ ব্যক্তি कुन्नात्न शृद्ध भगन कतिए भारत ? मगरत है । ता যাহারে হস্তব্যৰূপে নিশ্চিত অথবা ভয়শ্বর শস্ত্র-প্রহারে আবিদ্ধ করেন, পদ-দারা ভূতল-স্পর্শক।রী এমন কোন্ মর্ণ-ধর্মশীল মনুষ্য জীবিত থাকিয়া পরিত্রাণ পায় ? রে মন্দমতে ! তুমি কুপশায়ী ভে-কের ন্যায় মূঢ় হইয়া, অমরগণ-রক্ষিতা স্বর্গপুরীর ন্যায়, প্রাচ্য, প্রতীচ্য, দাক্ষিণাত্য, উদীচ্য, কাম্বোজ, नक, सन, नालू, भरमा, कूक्र-मधारमनीत सिष्ठ वर দ্ৰবিড় অন্ধ্ৰ ও কাঞ্চী-দেশীয় পুলিন্দগণ-প্ৰভৃতি নরেন্দ্রপণের অভিরক্ষিতা সাক্ষাৎ দেব-সৈন্য-সদৃশী স্থৃত্র্বা এই সমবেতা রাজ-সেনাকে বোধগম্য করি-তে সমর্থ হইতেছ না কেন ? রে জম্পরুক্কে ! রে মূঢ়! जूबि मरलाटम अहे ज्यात्रगीत भनाद्यस्मत्र नाम সমাক্-ৰূপে. প্ৰবৃদ্ধ নানাবিধ অসংখ্য ৰোধ-সমূহের

সহিত এবং নাগ-বল-মধান্থিত আমার সহিত যুদ্ধ করিতে কিপ্রকারে অভিলাষ করিতেছ ? রে ভা-রত! তোমার যে অকর তুণদম, অগ্নিদত্ত রথ ও দিব্য কেতু, তাহা রণ-স্থলেই জ্বানা যাইবে। রে অর্জুন! তুমি মিধ্যা শ্লাঘা পরিহার-পূর্বক যুদ্ধ কর; অনর্থক বছতর রূপা গর্বে কর কেনু ? কেবল বিক্থন মাত্ৰেই যুদ্ধ সিদ্ধ হয় না; সমাক্-ৰূপ বিক্ৰম প্ৰকাশ ছারা ইহার সিদ্ধি হইয়া থাকে। রে ধনঞ্জয়: লোক-गर्धा यपि भ्राघा-मार्जे अहे कर्मा निक्ष इस, जाहा হইলে সকলেই কৃতকার্য্য হইতে পারে; কেন না র্থা গর্ব্ব প্রকাশে দরিক্র কে আছে ? আমি ভোমার সহায়ভূত বাস্থদেবকেও জানি, তালপ্রমাণ গাণ্ডীব-কেও জানি আর তোমার মত কেহ যোদ্ধা নাই, তাহাও জানি এবং জানিয়াই তোমার এই রাজ্য ধারণ করিতেছি। রে পার্থ! মমুষ্য, ছলনাদি দারা কথন সিদ্ধি লাভ করিতে পারে না; একমাত্র বিধাতাই সংকপ্প-মাত্রে অমুকূল সমস্ত বশবর্জী করেন। আমি ত্রয়োদশ বৎসর তোমার রাজ্যভোগ করিলাম; তুমি কেবল বিলাপ করিতে করিতে দেখিলে, অতঃপর তোমাকে স্বান্ধ্য নিহত করিয়া আরও বছকাল ইহার শাসন করিব। রে ফাল্কন! যথন দাস্যপণে পরাজিত হইয়াছিলে, তথন জো-মার গাণ্ডিব কোথায় ছিল এবং ভীমদেনের বলই বা কোথায় ছিল? তৎকা**লে অনিক্ষিতা কৃষ্ণা ব্যতি**-রেকে, গদাধারী ভীমদেন কি গাণ্ডিব-যুক্ত কান্তুন হইতে তোমাদিগের মুক্তি হয় নাই। তোমরা অমামুবোচিত দাসত্ব প্রাপ্ত হইরা আমাদিগের मात्राकर्त्य जवन्त्रिङ रहेटल, शाक्षाल-निम्मनी क्रकाहे ভোমাদিগকে মুক্ত করিরাছিল। আমি যে ভোমা-দিগকে যণ্ড অর্থাৎ নিম্ফল তিল বলিয়া উক্ত করি-রাছিলাম, তাহা যথার্থই বটে; কেন না তৎকালে ভূমি বিরাটনগরে বেণীধারণ করিরাছিলে। অশিচ বিরাটের মহানদে ভীম যে স্থপকার কর্মে আঙ इहे**ड, त क्वल कोब्लिहे (श्रोक्रय) त शर्थ**!

ক্ষজিরের প্রতি ক্ষজিরের। এইৰপ দণ্ডই দিয়া थां कन ; प्राथ, जूमि नशूश्नक-तिभी इहेशा तिभी ধারণ-পূর্বক কন্যাগণকে নর্ডন করাইতে। রে কা-ন্ধুন! জামি বাস্থদেবের ভয়ে কি তোমার ভয়ে কখন পুনরায় রাজ্য প্রদান করিব না, অতএব কেশ-বের সহিত মিলিয়া যুদ্ধ কর; কেন না সংগ্রামে গৃহীত-শস্ত্র ব্যক্তির নিকটে মায়া, ইন্দ্রজাল কি কুহক সমস্ত কখন ভীষণ হয় না, বরং কোপাবহই হইয়া থাকে। অব্যর্থ-শস্ত্রধারী আমাকে প্রাপ্ত হইয়া সহস্ৰ সহস্ৰ বাস্তুদেব কি শত শত অৰ্জুন **म्म मिरक श्रवाञ्चन-श्रदाञ्च इटेरव। य्व प्र्य्वूटक**! তুমি ভীমের সহিত যুদ্ধ কর বা মন্তক-দারা গিরি ভেদ কর অথবা বাছদারা পশ্চাত্তক অগাধ পুরুষ-সাগর সম্ভরণ কর অর্থাৎ মন্তক-দ্বারা গিরিবিদা-त्रांत नात अरे पूरे वालातरे व्यमस्य। अरे व्यमीम পুরুষ-সাগরে রূপাচার্য্য মহামীন, বিবিংশতি মহা-ভুৰুক, ভীম বেগ, দ্ৰোণ ভীষণ গ্ৰাহ, কৰ্ণ, শল ও শল্য মংস্য ও আবর্ত, কাম্বোজ বাড়বানল, রুহত্বল মহাতরঙ্গ, ভূরিশ্রবা তিমিঞ্চিল, যুযুৎস্থ ও চুর্ম্মর্যণ জল, ভগদত্ত মারুত, শ্রুতায়ু ও ক্রতবর্মা মহাপারা-ৰার, ছংশাসন প্রবাহ, স্কুষেণ ও চিত্রায়ুধ নাগ ও নক্র, জয়ক্রথ উপকূলবর্তী পর্বতে, পুরুমিত্র গান্তীর্যা এবং শকুনি উপকূল-স্বৰূপ হইয়াছেন। রে পার্থ! সাগরে অবগাহন করিয়া তুমি যথন পরিশ্রম-দারা নফচেতন হইবে এবং তোমার বন্ধুবান্ধব সকল নিহত হইয়া যাইবে, তখনই তোমার মনোমধ্যে পরিতাপের উদর হইবে এবং অশুচি ব্যক্তির মন বেমন স্বৰ্গ লাভের প্ৰত্যাশা হইতে নির্ভ হয়, সেইৰপ পৃথিবী শাসনের প্রত্যাশা হইতে তোমার মন নিবর্ত্তি হইবে; কেন না অতপদ্মীর অভিল-বিত বর্গলোক লাভের ন্যায় প্রশাসনীয় রাজ্য লাভ করা তোমার নিতান্ত স্বত্ন্বর। 🤭 💎

উলুকের প্রতি ছুর্যোধন-বাক্যে একোনঘট্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৫৯॥ সঞ্জ কহিলেন, কিভব-ভনর উলুক পাশুবের সেনা-নিবেশ প্রাপ্ত হইয়া পাশুবগণ-সমীপে আ-গমন-পূর্বক যুধিন্তিরকে কহিলেন, আপনি দূত-বাক্যের অভিজ্ঞ, অভএব ভূর্য্যোধন যাহা আদেশ করিয়া দিয়াছেন, ভাহাই ব্যক্ত করি, শুনিয়া আ-মার প্রতি কুক্ত হইবেন না।

যুধিষ্ঠির কহিলেন, হেঁ উলুক ! তোমার ভর নাই; অদীর্ঘদর্শী লুক ছুর্য্যোধনের যে কিছু অভিপ্রেত, তুমি অব্যাকুলিত-চিত্তে তাহা ব্যক্ত কর।

অনন্তর উলুক অমিত-তেজন্বী মহাত্মা পাণ্ডবগণ, হঞ্জয়গণ, মৎসাগণ, যশন্বী কৃষণ, সপুত্র দ্রুপদ ও বিরাটের সন্নিধানে এবং অন্যান্য যাবতীয় ভূপাল-বর্গ-মধ্যে এই কথা বলিলেন, হে যুধিষ্ঠির! মহামনা রাজা তুর্যোধন কুরুবীরগণের ভাবণ-গোচরে আপ-নাকে এই শীক্য বলিয়াছেন, ভাবণ করুন।

" হে পাণ্ডব! তুমি স্বয়ং দূাতে পরাজিত হইয়া-ছিলে এবং कृष्णादि अञा-भाषा आनयन कर्ता इहे-**ब्राह्मि, इराट्ड श्रुक्रवमानी मनूया खरमारे खमर्या-**বিত হইতে পারে। তুমি গৃহ হইতে নির্বাসিত हरेशा ज्ञापम वर्ष काल वन-मरधा अवश अक वरमत দাস্যর্ত্তি অবলম্বন করিয়া বিরাটের গৃহে বাস করিয়াছিলে ; অতএব অমর্য, রাজ্যহরণ, বনবাস ও দ্রৌপদীর পরিক্লেশ স্মরণ ক্রত পুরুষ হও। ছে পাণ্ডব! অশক্ত হইয়াও ভীম যে প্রতিক্তা করিয়া-ছিল, यो न मर्थ र्य, कुः भामत्नत क्षित्र शान क्रक्रक। তোমার শস্ত্র সকলের নীরাজনাদি সংস্কারও সম্পন্ন হইয়াছে, কুরুক্ষেত্রও কর্দম-খূন্য আছে, পুধও সমান হইয়াছে এবং অশ্ব সকলও হৃষ্টপুষ্ট রহি-য়াছে; অতএব কলাই কেশবের সহিত মিলিয়া যুদ্ধ কর। হে কৌন্তের! তুমি সমরে ভীলের সহিত সমাগত না হইয়াই অনর্থক শ্লাঘা করিতেছ কেন? कान **अदा**थ मञ्जा रामन शक्तमानन-निधरतः आ-রোহণ করিতে ইচ্ছা করে,ঃ ভূমিও সেইরপ র্থা গর্বা করিতেছ; অতএব আত্ম-সামা পরিহার-পূর্বক পুরুষ হও। সংগ্রামে স্বছ্র্দর্ষ স্থতপুত্র, বলিভার্ষ

শল্য ও ৰাক্ষাৎ শচীপতি-নম দ্রোণাচার্য্যকে পরা-জিত না করিয়া, কি বলিয়া রাজ্য কামনা করি-তেছ ? হে পার্থ! তুমি যে বেদমন্ত্রে ও ধমুর্বেদে चार्गार्था, উভর বেদেরই পারপ্রাপ্ত, সমরধুরস্বার, অক্ষোভণীয়, অক্ষয়-সত্ত্বসম্পন্ন, মহাস্থ্যুতি সেনাপতি দ্রোণকে জয় করিতে অভিলাষী হইতেছ, তাহা নিডান্তই নির্থক; কেন না সমীরণ-কর্তৃক স্থমেরু ভূষর উন্মধিত হইয়াছে, ইহা কোন কালে অবণ করা যায় না। যদি পবন কখন মেরু বহন করিতে পারে, স্বর্গ ভূতলে নিপতিত হয়, অথবা কালচক্রের পরিবর্ত্তন হইয়া যায়, তবে তুমি আমাকে যা বল, তাহা সম্ভব হইতে পারে; কেন না এই অরিমর্দ-নের সন্নিহিত হইলে কোন্ কাক্তি জীবনের আকা-ক্ষা করে ? অশ্ববারই হউক, গন্ধারোহীই হউক, অথবা রথীই হউক, কোন্ মানব কুশবে গৃহে গমন করিতে পারে? সমরে ভীম দ্রোণকর্তৃক হন্তব্য-ৰূপে নির্দ্ধারিত অথবা ভয়ন্কর শস্ত্র-প্রহারে বিদ্ধ হইয়া পদদারা ভূতল-স্পর্শকারী এমন কোন্মরণ-ধর্মালীল মনুষ্য জীবিত থাকিয়া পরিতাণ পায়? রে মনদমতে ! তুমি কুপশারী ভেকের ন্যায় মূঢ় হইয়া অমর রন্দ-রক্ষিতা স্বর্গ-পুরীর ন্যায়, প্রাচ্য, প্রতীচা, দাক্ষিণাতা, উদীচা, কামোজ, শক, খশ, শালু, মৎস্য, কুরুমঁধ্য-দেশীর মেচ্ছ এবং দ্রবিড় অরু ও কাঞ্চী-দেশীয় পুলিন্দগণ-প্রভৃতি অসংখ্য নরেন্দ্র-গণের অভিরক্ষিতা, সাক্ষাৎ দেবচমূ-সদৃশী স্বত্র্ধর্যা এই সমবেতা রাজ-সেনাকে বোধগমা করিতে সমর্থ হইতেছ না কেন? রে অম্পরুদ্ধে! তুমি সংগ্রামে এই অপারণীয় গঙ্গা-বেগের ন্যায় সম্যক্-ৰূপে প্রবৃদ্ধ নানাবিধ অসংখ্য-যোধ-নিবহের সহিত এবং গজ-নৈন্য-মধ্যে অবস্থিত আমার সহিত যুদ্ধ করিতে কি প্রকারে অভিলায করিতেছ ?"

উলূক ধর্মনন্দন যুধিষ্ঠিরকে এই কথা বলিয়া পশ্চাৎ অর্জ্জুনের প্রতি মুখাবর্জন করত কহিলেন, "রে অর্জুন! ভূমি মিধ্যা শ্লাঘা পরিহার-পূর্বক যুদ্ধ

কর; অনর্থক বছতর র্থা গর্বে কর কেন? কেবল विकथन-भाष्यके यूक निक रहा ना ; नमाक्-कर्ण वि-क्रम थकाम-बाता हेरात निक्कि रहेशा थाएक। त्त धनक्षत ! लाक-मध्य यमि भाषामात्वरे अरे कर्या निक रय़, जारा रहेल नकलारे क्रजकार्या रहेल्ज পারে, কেন না রুধা গর্বে প্রকাশে দরিক্র কে আছে? আমি তোমার সহায়ভূত বাস্থদেবকেও জানি, তাল-প্রমাণ গাণ্ডিবকেও জানি, আর তোমার মত কেহ যোদ্ধা নাই তাহাও জানি এবং জানিয়াই তোমার এই রাজ্য ধারণ করিতেছি। রে পার্থ! মনুষ্য, ছলনাদি-দারা কখন সিদ্ধি লাভ করিতে পারে না ; একমাত্র বিধাতাই সংকশ্পমাত্রে অনুকূল সমস্ত বশ-বর্ত্তী করেন। আমি এই ত্রয়োদশ বৎসর তেগমার রাজ্যভোগ করিলাম, ভুমি কেবল বিলাপ করিতে করিতে দেখিলে; অতঃপর তোমাকে সবান্ধবে নি-হত করিয়া আরও বছকাল ইহার শাসন করিব। त्र कान्तुन! यथन मात्राभाग भन्नानिक हरेशाहितन, তখন তোমার গাণ্ডিব কোথায় ছিল ? এবং ভীম-সেনের বলই বা তথন কোথায় ছিল? তৎকালে অনিন্দিতা কৃষ্ণা ব্যতিরেকে গদাধারী ভীমদেন কি গাণ্ডিবযুক্ত কাল্কুন হইতে তোমাদিগের মুক্তি হয় নাই। তোমরা অমানুষোচিত দাসত্ব প্রাপ্ত হইয়া আমাদিগের দাস্যকর্মে অবস্থিত হইলে, পাঞ্চল-निम्नी कृष्णे रे जामापिशतक मुक्त क्रियाहिन। আমি যে তোমাদিগকে যণ্ড তিল বলিয়া বিজ্ঞপ করিয়াছিলাম, তাহা যথার্থই বটে; কেন না তৎ-কালে ভূমি বিরাটনগরে বেণী ধারণ করিয়াছিলে। অপিচ বিরাটের পাকশালার ভীম যে স্থদকর্মে প্রান্ত হইত, সে কেবল আমারই পৌরুষ। ফলত क्रिलाराता क्रिलारात अछि नर्समा এই बेश मे एक्ट्रे দিয়া থাকেন; দেখ, ভূমি নপুংসক-বেশী হইয়া বেণী ধারণ পূর্বক কন্যাগণকে নর্ভন করাইতে িরে ফাল্কন! আমি বাস্কদেবের ভরে, কি ভৌমার ভয়ে कथन श्रनतात्र ताका ध्यमान कतिव ना ; अज्यव

কেশবের সহিত মিলিয়া যুদ্ধ কর; কেন না সমরে শক্রধারী হইলে আমার নিকটে মায়া, ইন্দ্রজাল, কুহক কি বিভীবিক৷ সমস্ত কথন ভয়প্রদ হয় না, বরং কোপাবহই হইয়া থাকে। অব্যর্থ শস্ত্রধারী আমাকে প্রাপ্ত হইয়া সহস্র সহস্র বাস্তুদেব ও শত শত অর্জুন দশ দিকে পলায়ন-পরায়ণ হইবে। রে ছুর্বুদ্ধে ! তুমি ভীমের সহিত যুক্ষ কর বা মন্তক-দারা গিরি বিদারণ কর অথবা বাহু দ্বারা পশ্চাতুক্ত অগাধ পুরুষ-সাগর সন্তরণ কর। এই অসীম পুরুষ-সাগরে ক্লাচার্যা মহামীন, বিবিংশতি মৎসা, বৃহ-দ্বল মহাতরক্ষ, ভূরিশ্রবা তিমিকিল, ভীয় বেগ, ক্রোণ ভরঙ্কর আহ, কর্ণ শল ও শল্য মৎস্য ও আ-বর্জ, কামোজ বাড়বানল, যুযুৎস্থ ও দুর্ম্মর্বণ জল, ভগদত্ত মারুত, প্রুতায়ুও কৃতবর্মা মহাপারাবার, ছুঃশাসন প্রবাহ, স্থবেণ ও চিত্রায়ুধ নাগ ও নক্র, জয়দ্রথ উপকূলবর্ত্তী ভূখর, পুরুমিত্র গান্তীর্যা এবং শকুনি উপকূল-স্বৰূপ হইয়াছেন। রে পার্থ ! এই जकरा मञ्ज-अवश्युक, नमाक् अवृक्ष शूक्य-नागदव অবগাহন করিয়া তুমি পরিশ্রম-দারা যথন নফ-চেত্তন হইবে এবং তোমার বন্ধুবান্ধাব সমস্ত নিহত হইয়া ঘাইবে, তথনই তোমার মনোমধ্যে পরি-তাপের উদয় হইবে এবং অশুচি ব্যক্তির মন যেমন স্বৰ্গ-লাভের প্ৰজ্যাশা হইতে নির্ভ হয়, সেইৰূপ পৃথিবী শাসনের প্রত্যাশা হইতে তোমার মন নি-বর্ত্তিত হইবে; কেন না অতপস্থীর অভিলবিত স্বর্গ-লোক লাভের নাায়, প্রশাসনীয় রাজ্য লাভ করা ভোষার নিতান্ত স্বচ্ছর "।

উলুক-বাকো ৰফ্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৬০॥

সঞ্জর কহিলেন, মহারাজ! উলুক ক্রোধ-পরীত আশীবিষ-সদৃশ সব্যসাদীকে বাক্য-রূপ শলাকা-ছারা সমাক্-রূপে পীড়িত করত ছুর্য্যোধনোক্ত সমস্ত বাকা পুনরার উক্ত করিলেন। পাগুবেরা পূর্কেই অভ্যন্ত কুন্ধ ছিলেন, এক্ষণে তাঁহার সেই বাক্য অবণ করিয়া বিশেষত কিতৰ-পুজের নিকটেও ধর্ষণ প্রাপ্ত হইরা একবারে অতিমাত্র রোষান্বিত হইরা উঠিলেন। সকলেই আসনোপরি দণ্ডায়মান হইলেন, বাছ-বিক্ষেপ করিতে লাগিলেন এবং পরস্পর মুখ নিরী-ক্ষণ করিতে থাকিলেন। ভীমসেন অবনত-মন্তকে আশীবিষের ন্যায় নিশ্বাস ত্যাগ করিতে করিতে লোহিত-প্রান্ত নেত্রযুগল-দ্বারা কেশবের মুখবেলো-कन कतिरलन। उथन यष्ट्रनन्मन, পবन-जनग्रस्क व्यक्ति-মাত্র ক্রোধাভিহত ও ব্যাকুলিত দেখিয়া যেন ঈষৎ হাস্য করিতে করিতে কিতব-পুত্রকে কহিলেন, হে উলূক! তুমি শীঘ্র প্রস্থান কর এবং স্কুযোধনকে বল, যে, তোমার বাকাও প্রত হইল এবং অর্থও গৃহীত হইল, তোমার যে ৰূপ অভিপ্রায় তাহাই হউক। 奪রাজসভ্ম ! মহাবাছ কেশব উলুককে এই কথা বলিয়া পুনর্কার মহাপ্রাক্ত যুধিষ্ঠিরের মুখাবলোকন করিলেন। উলুকও সমস্ত স্ঞ্যুর্গণ, যশস্বী কেশব, সপুত্র দ্রুপদ ও বিরাটের সন্নিধানে **এবং যাবতীয় ভূপালবর্গ-মধ্যে বাক্য-শলাকা-সহ-**কারে ক্রোধপরীত আশীবিষ-ভুল্য ধনপ্পয়ের মর্ম্ম-ভেদ করত ছুর্যোধনোক্ত সমস্ত বাক্য পুনরায় ব্যক্ত করিলেন এবং কৃষ্ণ-প্রভৃতি অন্যান্য সকলকেও যথোক্ত বাকা সমুদায় কহিলেন। পার্থ উলুকের উক্ত সেই স্থদারুণ পাপময় বাকা আবণ করিয়া সাতিশয় বিকুক হইলেন এবং ঘর্মাপনয়নার্থে লক্টি মার্চ্জনা করিলেন। মহারাজ। তথন সেই রাজসভা পার্থকে তদবস্থ নিরীক্ষণ করিয়া এককালে অধীরা হইয়া উঠিল। পাওবদিগের মহারথেরা মহাত্মা ক্লফ ও পার্থের অবমানে কিছুতেই আর ধৈর্য্য ধরিতে পারিলেন না। স্বভাবত স্থিরচিত্ত হইয়াও ঐ পুরুষ-ব্যাঘ্রেরা উলূকের কথা শুনিয়া ক্রোধে প্রস্থালিত হইলেন। ধৃউছান্ন, শিখণ্ডী, সাভাকি, কেক্য়রাজ-नम्मरनत्रा शक्ष मरहामत्र, त्राक्षम घरहाएकह, स्त्रीश-দীর পুত্রগদ, অভিমন্থ্য, ধৃউকেতু, ভীমসেন ও

নকুল সহদেব, সকলেই ক্রোধে লোহিত-লোচন হইয়া রক্তচন্দন-চর্চিত অঙ্গদ, বলয় ও কেয়ুরনিকরে বিভূষিত বাহু সকল প্রধারণ-পূর্বক আসন হইতে লক্ষ্ক দিয়া উঠিলেন। রুকোদর তাঁহাদিগের আকার ইঙ্গিত বুঝিয়া কোধে প্রত্তলিত হইয়া দত্তে দস্ত নিষ্পেষণ ও স্বরূষ্য় পরিলেহন করত স্ববেগে উত্থিত হইলেন এবং সহসা নেত্রযুঞ্জল উৎক্ষেপণ, হস্তে হস্ত নিষ্পেষণ ও দম্ভ সমস্ত কটকটায়মান করিয়া উলুক-क् किहितन, तत पूर्थ! कूर्यगाधन जातक त्य कथा বলিয়া দিয়াছিল, অসমর্থের ন্যায় আমাদিগের উত্তেজন নিমিত্তক তোর সেই বচন শ্রবণ করা हरेल, এकार जूरे नकल कि अंगर नेत्र मर्पा ऋज-পুত্র ও ছুরাত্মা শকুনির ভাবণ-গোচরে স্থযোধনকে ষে কথা বলিবি, তাহা বলিতেছি শ্রবণ কর্। "রে ছুরাচার ! আমরা জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার নিত্য 🕰ীতিকামী, এই নিমিত্তই তোমার দৌরাত্মা সহু করিয়াছিলাম; কিন্ত তুমি তাহা বছজ্ঞান করিতেছ না[®]। ধীমান্ ধর্মরাজ কেবল কুলের হিত কামনাতেই শমাকাজ্জী হইয়া কুরুগণ-সমীপে কেশবকে প্রেরণ করিয়াছি-লেন; কিন্তু তুমি নিতান্তই কাল-প্রেরিত হইয়া শমন-সদনে গমনকামী হইতেছ; এক্ষণে আইস, व्यामापिरभत्र महिल युद्ध क्रता जाहाल क्लाहे हहेरत। রে পাপাত্মন্! আমি যে ভাতৃগণ-সহ তোমাকে বধ করিব বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, তাহা সেইৰূপই হই-বে, তদ্বিষয়ে কিছুমাত্র সংশয় করিও না। বরুণালয় জলনিধি যদি সদ্যই বেলা অতিক্রম করে; পর্বত সকলও যদি বিশীর্ণ হইয়া বায়, তথাপি আমার (सह वाका मिथा। इहेवांत्र नदह। दत्र ध्र्कृत्कः। यति ষম, কুবের বা রুজ আসিয়া তোমার সহায় হন, তথাপি পাওবের। প্রতিজ্ঞা পালন করিবেন। আমি অভিলাবামুসারে অবলাই ছুংশাসনের রুধির পান করিব। অপিচ তৎকালে যে কোন কল্রিয় আমার প্রতি কুছ হইরা অভিযুবে ধাবিত হইবে, সে যদি ভীয়কেও সত্যে করিয়া আইনে, তথাপি ভাহাকে | পৃথিবীত সমস্ত ক্ষমিয়গণকেও গ্রামা করি না

ষমালয়ে প্রেরণ করিব। আমি ক্ষান্তর-সমাতে যে বাক্য উক্ত করিয়াছি, তাহা যে সত্য হইবে, তদ্বিষয়ে অন্তরাত্মার শপথ করিতেছি ^৯।

ভীমসেনের বাক্য শুনিয়া অমর্ষণ সহদেবও ক্রোধে लाहिज-नयन रहेया रिजनिक-जन-मभारक परकाती খুর-সদৃশ এই কথা কহিলেন, রে পাপাত্মন্! তোর পিতাকে যাহা বলিবি, আমার সেই বাক্য অবণ কর্। "যদি তোমার সহিত ধৃতরাষ্ট্রের সম্বন্ধ না হইত, তাহা হইলে কৌরবগণের সহিত, আমা-দিগের কদাচ বিচ্ছেদ হইত না। হে পাপকর্মন্! তুমি ধৃতরাষ্ট্র-কুলের, আত্ম-কুলের ও সমস্ত লোকের বিনাশার্থে সাক্ষাৎ বৈর পুরুষ-ৰূপে উৎপন্ন হই-রাছ^স। রে উলূক! তোর পাপাত্মা পিতা আমা-দিগের জন্মাবধি নিত্যই নিদারুণ অহিতাচরণ করি-তে ইচ্ছা করে; অতএব আমি সেই শত্রুতা-সম্বন্ধের স্বৃত্বর্গম পার প্রাপ্ত হইব ; শকুনির সাক্ষাতে অগ্রে তোরে নিহত করিয়া পশ্চাৎ স্পর্জা-বিশিষ্ট সকল ধমুর্জারিগণের গোচরে শকুনিকে বিনষ্ট করিব।

ভীম ও সহদেবের এই বচন প্রবণ করিয়া অর্চ্জুন ঈষৎ হাস্য করিতে করিতে রুকোদুরকে কহিলেন, হে ভীম! আপনকার সহিত যাহাদের শক্রতা হয়, তাহারা জীবিত থাকে না; গৃহমধ্যে স্থখ-সেবিত মন্দেরা মৃত্যুপাশের বশবর্তী হইয়াই রহিয়াছে; কিন্তু হে পুরুষোত্তম ! উলুককে পরুষ সম্ভাষণ করা আপনকার কর্ত্তব্য নহে; কেন না, দূতেরা কি অপ-রাধ করে? তাহারা যথোক্ত বাক্যেরই অমুবাদ ক্রিয়া থাকে। মহাবাহ ধনঞ্জর ভীম-পরাক্রম ভীমকে এইৰপ কহিয়া ধৃউদ্ধান-প্ৰভৃতি স্ক্ৰীর-গণকে সম্ভাষণ করত ৰলিলেন, আপনারা সেই পাপান্ধা ছুর্য্যোধনের কটুক্তি, বিশেষত বাস্থনেবের ও আমার কুৎসা অবণ করিলেন এবং শুনিয়া আমা-मिर्गत रिक्कामनात्र अकरण द्रावाविक रहेक्काइह्न। সামি বাস্তদেবের প্রভাবে ও স্বাপনাদ্রিদের প্রয়ত্নে এক্ষণে এই বাকোর বাহা উত্তর হর,—উলূক হুর্যো। ধনকে যাহা কহিবে, আপনাদিগের অমুক্তা-ক্রমে আমি ইহাকে ভাহা বলিয়া দিব। এই বাকোর যাহা প্রতিবাক্য, ভাহা কলা সৈন্য-সমূধে গাণ্ডীব-হারা ব্যক্ত করিব, কেন না ক্লীবেরাই বচন-ছারা উত্তর দিয়া থাকে।

অনস্তর সেই রাজসত্তম সমস্ত পার্থিবগণ ধনঞ্জ-রের ঐ বাক্যভঙ্গীতে বিশ্বিত হইয়া তাঁহাকে প্রশং-সা করিতে লাগিলেন। তথন ধর্মরাজ যুধিন্তির তাঁহাদিগকে যথা-বয়ংক্রনানুসারে যথা-ন্যায়ে অমু-নম্ন করিয়া অপ্রেরণীয় বাক্য বলিবার উদ্দেশে উলুক-কে কহিলেন, কোন প্রধান নরপতি আপনাকে অব-মানিত জ্ঞান করত কান্ত থাকিতে পারেন না; অতথব আমি তোমার বাক্য শ্রবণেক্ষ্যায় রত থাকি-য়া এক্ষণে তাহার প্রত্যুত্তর করিব।

হে ভরতর্বভ! ভরতভোষ্ঠ যুখিটির ছুর্য্যোধনের **নেই বাক্য শ্র**বণ করিয়া ক্রোধভরে যেন গর্বিভের ন্যায় হইয়া অভি-লোহিত-নয়নে আশীবিষের ন্যায় নিশাস পরিত্যাগ ও হুক্তম পরিলেহন করত জনা-র্দ্ধন ও ভ্রাতৃগণের মুখ নিরীক্ষণ করিয়া বিপুল ভুজ-**मश्र अधात्रग-शूर्वक किञ्च-नन्मनाक कहिएनन, जाञ** উলুক ৷ তুমি সেই কুলপাংসন, ক্নতম্ন, বৈরাবতার ছুর্মাত ছুর্য্যোধনের নিকটে গমন করিয়া তাহাকে এই কথা বল, যে, রে পাপাত্মন্ ! ভুমি পাগুবগণের প্রতি নিয়তই কুটিলাচরণ করিয়া ধাক। রে পাপ! বে ব্যক্তি স্বীয় বীর্যো পরাক্রম করিয়া শক্র সকলকে षास्तान करत जवर जयमूना इरेया निक ताका भूर्ग করে, তাহাকেই ক্ষম্রিয় পুরুষ বলা যায়; অতএব রে কুলাধন! ভূমি কজির হইরা সংগ্রামে আমা-দিগকে আহ্বান কর; মানভাজন জ্মাভাগণকে ষ্পত্রে করিয়া যুক্ষ করিও না। রে কৌরব! ছাত্ম-বীর্যা ও ভূত্য-বীর্য্য আতার করিরা সমরে পার্থগণকে শাব্দান কর। সর্বাধা ক্ষত্রির হও। বে নরাধন পর-चन्त्रक क्रिया भक्तन्तिक चास्त्रान क्रया,

স্বরং গ্রহণে অসমর্থ হর, তাহাকে নপুংসক বলিরা গণ্য করা বার; অতএব তুমি যথন স্বরং অসমুর্থ হইরা পরের বীর্যো আপনাকে বহুজ্ঞান করিভেছ, তথন আর কি বলিরা আমাদিগের প্রতি এই প্রকার তর্জন গর্জন কর?

রুষ কহিলেন, হে উলুক! তুমি আমার এই বাকাও চুর্যোধনকে ছলিও যে, রে চুর্মতে! তুমি বলিয়াছ, কল্য যুদ্ধ হইবে; এক্ষণে তাহা প্রাপ্ত হও; পুরুষকার অবলয়ন কর। রে মৃঢ়! তুমি যে মনে করিতেছ, পাগুবেরা জনার্দ্ধনকে কেবল সার্ধা-কর্মের নিমিত্ত বরণ করিয়াছেন, স্থতরাং তিনি

করিবেন না এবং এই মনে করিয়াই যে নির্জয় হইতেছ, তাহা চরম-কালেও হইতে পারে না; কেন না ক্রোধ হইলে, আমি তৃণরাশি-দহনকারী ছতাশনের নাায় সমস্ত পার্থিবগণকেই নির্দাহন করিতে পারি। কিন্তু যুধিন্ঠিরের নিয়োগক্রমে যুদ্ধে প্রবৃত্ত বিজিতালা মহালা ধনপ্লয়ের সারথ্য কর্মাই করিব। তুমি যদি ত্রৈলোক্য উল্লঙ্গন করিয়া পলায়ন কর, অথবা ভূগর্ত্ত-মধ্যেই প্রবেশ কর, তথাপি প্রভাতে সেই সেই স্থলে অর্জুন রথ দৃটি করিবে। তুমি ভীমসেনের বাক্যকে র্থা জ্ঞান কর বটে, কিন্তু এক্ষণে ইহা অবধারণ করিয়া রাখ, যে, ছঃশাসনের রুধির পান করাই হইয়াছে এবং ইহাও নিশ্চয় জান যে, প্রতিক্লভাষী তোমার প্রতি না পার্থ, না রাজা যুধিন্ঠির, না ভীমসেন, না নকুল সহদেব, কেহই দৃক্পাত-মাত্র করেন না।

কৃষ্ণ-বাক্যে এক্ষটাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৬১॥

সঞ্চয় কহিলেন, হে ভয়তর্বভ! মহাযাশা ধরঞ্জয়
ছুর্ব্যোধনের সেই বাক্য আবণ করিয়া কেশবের মুখ
নিরীক্ষণ-পূর্বক অতি-লোক্ত-নয়ন-ফুগলে উল্কের প্রতি দৃতি করিয়া বিপুল-ভুজদণ্ড প্রহারণ করত
ক্লিলেন, বে ব্যক্তি অবীর্য্য আজয় করিয়া গ্রন্ত-

नक्नारक चाच्यान करत्र अवश्र निर्कन्न स्टेन्ना यूक्त करत्र, । ভাहादकरे शुक्रव बना यात्र ; किन्छ य शत्र-वीर्या चव-লম্বন করিরা শত্রুগণকে আহ্বান করে, সে অসম-ৰ্থতা-প্ৰযুক্ত লোক-মধ্যে পুরুষাধম ক্ষল্রিয়বন্ধু অর্থাৎ কাতিমাত্রে ক্ষজ্রির বলিয়া পরিগণিত হয়। রে মুঢ়! ভুমিও পরের বীর্যো আপনাকে বীর্যাবান্ জ্ঞান করিতেছ এবং স্বয়ং কাপুরুষ হইয়াও শত্রু সকলকে ধর্ষিত করিতে অভিলাদী হইতেছ। রে চুর্ব্বুদ্ধে! ভুমি যে, সকল রাজগণ-মধ্যে র্দ্ধ, হিতবুদ্ধি, জিতে-ন্ত্রিয়, মহাপ্রাজ্ঞ ভীন্নকে মরণার্থে দীক্ষিত করিয়া র্থা শ্লাঘা করিতেছ, তাহার ভাব আমাদিগের বিদিত হইয়াছে। রে কুলপাংসন! তোমার অভি-প্রায় এই যে, অর্জুন দয়া করিয়া গঙ্গানন্দনকে নিহত করিবে না। রে ছুর্য্যোধন! ভূমি ঘাঁহার বীর্য্য আশ্রম করিয়া অনর্থক গর্বব করিতেছ, স্ত্রেই ভীমকে व्यामि न्यक्ता-युक्त मकल धसूक्तातिगंग ममस्क व्यथ-মেই বিনম্ট করিব।

হে উলুক! তুমি কুরুগণ সমীপে গমন-পূর্বক স্থােধনের সলিহিত হইয়া তাহাকে এই কথা বল, যে, সব্যসাচী অর্জুন তাহাই বলিয়াছেন, নিশাব-সানে সমরারম্ভ হইবে। মহাসত্ত্ব সত্যপ্রতিজ্ঞ ভীয় কুরুগণ-মধ্যে সকলের আনন্দবর্জন করত " আমি সঞ্জয়-দৈন্য ও শালেষ্যুক্দিগকে নিহত করিব, ইহা আমারই ভার; আমি দ্রোণ ব্যতিরেকেও একা-কী সকল লোক সংহার করিতে পারি; অতএব পাণ্ডবগণ হইতে তোমার ভয় নাই " এই যে বাক্য কহিয়াছিলেন, ভাহাতেই তোমার এইৰপ নিশ্চয়-জ্ঞান হইয়াছে যে, সমস্ত রাজ্য আপনার হইল এবং পাওবেরাও চির কালের নিমিত্ত আপদাত হইল। ভূমি ভাষাতেই দৰ্পপূৰ্ব হইয়া আপনাতেও যে অনৰ্থ ৰিদ্যমান রহিরাহে, ভাহা আর দেখিতে পাইতেছ ना ; ज्ञञ्जव जामात नमरक जामि नमस्त जीव-त्वरे क्षत्रद्व निरूष कतित्। सूर्यामस्य रेवना मञ्जा করিয়া হোমুরা রখী ও ধল্ধারী হইয়া রভাস্ক

ভীয়কে রক্ষা কর; কেন না ভোষান্তিগর বাক্ষা-তেই আমি ঐ দ্বীপ অৰ্থাৎ রক্ষক স্বৰূপ মহাবীরকে শরনিকর-সহকারে রখ হইতে নিপাতিত করিব। स्ट्राधन कला পिতामस्टक मनीत मत्रकाटन नमा-কীৰ্ণ দেখিয়া শ্লাঘা-বাক্য যে কি ৰূপ, ভাহা বিশেষ ৰূপে জানিতে পারিবে। রে স্থযোধন! ভীমসেন ক্রোধপরীত হইয়া সভা-মধ্যে তোমার ভাতা কুদ্র-দৃষ্টি, অধর্মজ্ঞ, নিত্য-বৈরী, পাপরুদ্ধি, অতিনৃশংস পুরুষাধম ছুঃশাসনকে যে কথা বলিয়াছিলেন, সেই সত্যপ্রতিজ্ঞাটিকে তুমি অচিরেই পরিপূর্ণা দেখিবে এবং অভিমান, দর্প, ক্রোধ, কটুবাকা, নিষ্ঠুব্লডা, অবলেপ, আত্মশ্লাঘা, নিৰ্দ্দয়তা, তীক্ষ্ণতা, ধৰ্মবিদেষ, অধর্ম, অপবাদ, রৃদ্ধ-বাক্যের অতিক্রম, বক্রদর্শন ও যাবতীয় অপনয়ের বিলক্ষণ ফল দেখিতে পাইবে। রে নরাধম! রে মৃঢ়! বাস্থদেবকে সহায় করিয়া আমি কুদ্ধ হইলে ভোমার জীবনে বা রাজ্যে আর কি প্রকারে আশা হইতে পারে ? আমি যখন ভীয় ও দ্রোণকে শাস্ত করিব এবং স্থত-পুদ্রকে নিপাতিত করিয়া ফেলিব, তখনই ভুমি জীবিতে, রাজ্যে ও পুত্রগণে নিরাশ হইবে। রে স্ক্রেখন। তুমি জ্রাত্ ও পুজ্রগণের নিধন জ্রবণ করিয়া এবং স্বাপনিও ভীমদেনের নিদারণ আঘাত প্রাপ্ত হইয়া স্বকীয়

ত সমস্ত শারণ করিবে। রে ধূর্ক্ত ! আমি কথন ছুইবার প্রতিজ্ঞা করি না ; তোমাকে সত্যই বলি-তেছি, সম্প্রতি যে যে কথার উল্লেখ করিলাম সক-লই সত্য হইবে।

যুধিন্তিরও উলুককে এই কথা বলিলেন, তাত উলুক! তুমি স্থবোধনের নিকটে গিয়া আমার এই বাক্য বল, যে, স্বীয় চরিত্রের দৃফীন্তে আমার চরিত্র বোধগম্য করা ভোমার উচিত নহে। উভরের অন্তর এবং সভ্য ও মিধ্যার প্রভেদ আমার বিদিত আছে। ত্বে ভাত! আমি কোন প্রকারে আভি-গণের বধাভিলাব করিব কি, কীট ও পিশ্রীলিকারও অনিট কামনা করি না। রে স্ক্রেক্তর কোন প্রকারে তোমার মহাবিপদ্ দৃষ্টি করিতে না হয়, এই নিমিছেই আমি পূর্বে পাঁচখানি প্রাম প্রার্থনা করিয়াছিলাম; কিন্তু তুমি মুঢ়তা-প্রযুক্ত কামপরীত চিত্ত হইরা রুণা গর্ব করিতেছ এবং বাস্তদেবের হিতবাকাও অগ্রান্থ করিতেছ। এক্ষণে আর বহুল বাক্য-বায়ের প্রয়োজন কি? বন্ধু-বাস্ত্রবগণের সহিত যুদ্ধ কর। হে উলুক! আমার অনিউকারী কৌরব-কে বলিও, যে, তোমার বাক্যও শ্রবণ করা গেল এবং অর্থও গৃহীত হইল; তোমার যে ৰূপ অভি-প্রেত তাহাই হইবে।

जनस्त जीयरमन भूनर्सात करिलन, रह छेलूक ! দেই ছুর্মাত, পাপপুরুষ, শঠ, নিরুতি-পরায়ণ, পা-পাস্থা, ছুরাচার, রাজপুত্র ছুর্যোধনকে আমার এই কথা বলিও, যে, তোমাকে হয় গৃধ্বের উদরে না হয় হস্তিনাপুরে বাস করিতে হইবে। রে নরাধম! ভোমার নিকটে শপথ করিয়া বলিতেছি, আমি সভা-মধ্যে যে বাক্যের প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, তাহা অবশাই সভা করিব; সমরে ছুংশাসনকে নিহত করিয়া ভাহার রুধির পান করিব এবং ভোমারও खेक्रवज्ञ ७ व कित्रा विनाना मरशास्त्रिमित्र निर्शा-ভিত করিব। রে স্থ্যোধন! আমি সমুদায় ধার্ভরাষ্ট্র-গণের এবং অভিমন্ত্য সমস্ত রাজপুত্রদিগের সাক্ষাং মৃত্যু-স্বৰূপ। রে ছুর্য্যোধন! আমি প্রতিজ্ঞাত কর্ম-দারা তোমাদের সকলকেই ত সম্ভফ করিব, তদতি-রিক্ত আমার আরও একটি বাক্য শ্রবণ কর; আমি ভোমাকে সকল সহোদরগণের সহিত নিহত করিয়া ধর্মরাজের সাক্ষাতে পদছারা তোমার মন্তক আ-ক্রমণ করিব

হে মহীপতে ! অনন্তর নকুল এই কথা বলিলেন, হে উল্ক ! ভূমি কৌরবাধম স্থােধনকে বলিও, ষে, ভামার সমস্ত বাক্য যথাবং অবণ করা হইল, হে কৌরবা ! ভূমি আমাকে যে ৰূপ আদেশ করি-ভেছ, আমি ভাহাই সম্পন্ন করিব।

ह न्भरक ! महरमबंध अहे अध्यूक वारकात्र ।

উজি করিলেন, যে, হে সুযোধন! তোমার বেৰপ মতি, তাহাই হইবে; আমাদিগের এই ক্লেশ দর্শনে তুমি যেমন হুট হইয়া আত্মশ্লাঘা করিতেছ, সেই-ৰূপ পুত্র, জ্ঞাতি ও বান্ধবগণের সহিত শোক-প্রায়ণ হুইবে।

বৃদ্ধ রাজা বিরাট ও দ্রুপদও উলুককে এই কথা বলিলেন, সাধুলোকের দাসত্ব প্রার্থনা করি, ইহা নিতাই আমাদিগের অভিমত; কিন্তু আমরা দাস কি প্রভু, এবং যাহার ষাদৃশ পুরুষত্ব, তাহা কলাই প্রকাশ পাইবে।

অনন্তর শিখণ্ডী উলুককে এই কথা বলিলেন, সতত পাপ-নিরত রাজা ছুর্যোধনকে তুমি এই কথা বলিও, যে, হে রাজন্! আমি সমরে কি ৰূপ ভয়ঙ্কর কর্ম করি, তাহা প্রত্যক্ষ দৃষ্টি কর। যাহার বীর্য্য আশুর ক্রিয়া তুমি যুদ্ধে বিজয় নিশ্চয় করিতেছ, তোমার সেই পিতামহকে আমি রথ হইতে নিপাতিত করিব। মহাত্মা বিধাতা আমাকে ভীয়-বধার্থেই স্ফ করিয়াছেন; অতএব আমি সকল ধমুর্দ্ধারিগণের সমক্ষে ভীয়কে অবশ্যই বিনষ্ট করিব, সন্দেহ নাই।

ধৃষ্টগ্নামও কিতব-পুত্র উলুককে এই কথা বলি-লেন, তুমি রাজপুত্র স্থবোধনকে আমার এই বাক্য বলিও, যে, আমি বন্ধু-বান্ধব ও স্বজনগণের সহিত জোণকে নিহত করিব এবং এৰপ কর্ম করিব, যাহা আর কেহই কথন করিতে পারিবে না।

অনন্তর ধর্মরাজ করণা প্রকাশার্থে তাহাকে এই
মহং বাকোর উজি করিলেন, হে রাজন ! আমি
কোন প্রকারেই জ্ঞাতি-বধ ইচ্ছা করি না, কিন্তু
তোমার দুর্বুদ্ধি দোবে ইহা সর্বতোভাবেই বিস্পান্ত
হইল ! ধৃতীহ্যুম-প্রভৃতি সমুদ্য সেনানীদিগের মহতী
প্রতিক্তা প্রতিপালন বিষয়ে আমাকে অবশাই অমুমতি করিতে হইবে। অতএব হে উলুক ! বদি
ইচ্ছা হয়, শীঘ্র গমন কর, না হয় এই খানেই অবক্তিক্তে, কেন না আমরাও জোমার বাজ্বব

हि ताबन्। अनस्तत छमूक धर्माशूक यूधिकित्तत অমুমতি লইয়া ছুর্য্যোধন-সমীপে প্রস্থান করিলেন। তথায় অমর্ষণ স্থবোধন নিকটে উপস্থিত হইয়া তিনি অর্জুনের যথোক্ত আদেশ বাক্য সম্পূর্ণ-রূপে কহিলেন। বাস্থদেব, ভীম ও ধর্মরাজের পৌরুব, नकूल महरत्व, विदािं , फुलत्, धृक्येब्राञ्च ও শिथंखीत बहन এবং কেশব ও অর্জ্জুনৈর যথোক্ত সন্দেশ-ৰাক্য, সমস্তই নিবেদন করিলেন। হে ভারত! ছুর্য্যোধন উলুকের সেই কথা শুনিয়া ছুঃশাসন, কর্ণ ও শকুনিকে বলিলেন, যে তোমরা রাজগণকে এবং শ্বীয় সৈন্য ও মিত্র-সৈন্যদিগকে আজ্ঞা কর, যেন क्टर्यानरात शृर्ख ममूनस निनिक्ता युक्त मञ्जा করিয়া প্রস্তুত থাকে। অনম্ভর কর্ণ-সমাদিক দূতগণ সমাক্-ৰূপ ত্বপ্ৰিত হইয়া কেহ কেহ রথে, কেহ কেহ উষ্ট্ৰে, কেহ কেহ অশ্বিনীতে, কেহ ক্বেহ বা উন্তম উত্তম অখে আরোহণ করিয়া কর্ণের শাসনামুসারে সমস্ত সেনা-মধ্যে শীঘ্র পরিভ্রমণ করিল এবং সমু-मात्र त्राक्षवर्गत्क " स्ट्रांगिन्दत्रत्र शूर्ट्य रेमना-मक्का করিতে হইবে " এইৰূপ বিজ্ঞাপন দিল।

উলুক-প্রত্যাগমনে দ্বিফ্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৬২॥

সঞ্চয় কহিলেন, উলুকের বাক্য প্রবণ করিয়া ক্রীপুত্র যুথিন্তির ধৃউলুয়-পুরোগমা বাহিনীকে যুদ্ধ-যাত্রা করাইলেন। ধৃউল্লাম-বশবর্ত্তিনী, পৃথিবীর ন্যায় অকম্পনীয়া, অশ্ব-গজ-রথ পদাতি-সমূহ-সমবিতা সেই চতুরকিণী সেনা অর্জ্জন-সহ ভীমসেনাদি মহারথগণ-কর্তৃক অভিরক্ষিতা হওয়ায় তুর্গম প্রশাস্ত দাগরের উপমা প্রাপ্ত হইল। মহাধমুদ্ধারী জোণ-লাভার্থী যুদ্ধত্বমদ ধৃউল্লাম তাহার অগ্রবর্ত্তী হইয়া সৈনিক সমস্ত নির্বাচন-পূর্বাক আকর্ষণ করিতেলাগিলেন। ঐ অগ্রবর্ণ মহাধমুদ্ধারী, বল ও উৎসাহ অনুসারে রথিগণকে সমাদেশ করিলেন। কর্ণের প্রতি ভীমকে, শলোর

প্রতি ধৃউকেভূকে, রূপের নিমিত্ত উত্তমৌকাকে, অশ্বত্থামার নিমিত্ত নকুলকে, ক্নতব্দ্মার নিমিত্ত टेमवादक अवश अञ्चल्यदेव निमिष्ठ वृक्षिवश्मीत्र यूयू-ধানকে নিযোজিত করিলেন; ভীয়ের নিমিত্ত শিখ-গুীকে সন্মুখে স্থাপিত করিলেন ; শকুনির প্রতিপক্ষে সহদেবকে, শলের প্রক্তিকেতানকে ও ত্রিগর্জগণের প্রতি দ্রৌপদীর পঞ্চ পুত্রকে নির্দ্দিন্ট করিলেন এবং র্যদেন ও অবশিষ্ট মহীপালগণের নিমিত্ত অভি-মন্ত্রাকে নিযুক্ত রাধিলেন; কেন না ভাঁহাকে ভিনি পার্থ অপেকাও সমরে সমধিক সমর্থ জ্ঞান করি-তেন। সেনাপতিপতি মেধাবী ধৃষ্টছ্নান্ন যোধগণকে এইৰপ পৃথক্ পৃথক্ ও সমবেত ৰূপে বিভক্ত করিয়া দ্রোণকে স্বকীয় অংশ-ৰূপে কণ্পিত করিলেন এবং এইৰূপে ব্যুহ রচনা-পূৰ্বক যুদ্ধাৰ্থে ক্তনিশ্চয় হইয়া যথোদ্দিউ সৈন্য-সমস্ত যোজিত করত পাগুরগণের বিজয়ার্থে রণাঙ্গনে প্রস্তুত হইয়া রহিলেন।

সেনাপতি-নিয়োগে উলুকদৃতাগমন প্রকরণ ও ত্রিষফ্যধিক শততম অধ্যার সমাপ্ত॥ ১৬৩॥

~~##**@**##~~

রথাতিরথসংখ্যান প্রকরণ।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, অর্জুন সমরে ভীয়ের বধ প্রতিজ্ঞা করিলে আমার ছুর্য্যোধনাদি মদ্দমতি পুজেরা কি করিল? আমার বোধ হইতেছে, বাফু-দেব-সহায়-সম্পন্ন দৃঢ়ধয়া ধনঞ্জয় সংগ্রামে জ্যেষ্ঠ তাত গঙ্গাতনয়কে নিশ্চয়ই নিহত করিবে। হে সঞ্চয়! পার্থের প্রতিজ্ঞা-বাক্য অবণ করিয়া সেই অমিত-প্রজ্ঞাশালী, অহাধয়ুর্জারী, প্রহারিভার্ত, কৌ-রব-ধুর্জার, মহাবৃজ্জি, পরাক্রম-সম্পন্ন ভীয়ই বা কি বলিলেন এবই সৈনাপত্য প্রাপ্ত হইয়া কিরপই বা চেক্টা করিলেন?

বৈশশ্পার্থন কহিলেন, অনন্তর সঞ্চয়, অমিত-তেজন্বী কুরুর্জ ভীমদেব বেরীপ কহিয়াছিলেন, সে সমত হভাত্তই তাঁহারে নিবেদন করিলেন। সঞ্চয় মহাভারত।

কহিলেন, হে নরপতে ! ভীম দৈনাপতা প্রাপ্ত হইয়া ष्ट्र(गांधनत्क जास्नामिष्ठ कत्रष्ठ वहे कथा वितानन, আমি শক্তিপাণি দেনানী কুমারকে নমস্কার করিয়া অদ্য ভোমার সেনাপতি হইব, সন্দেহ নাই। আমি সেমা-কর্ম ও বিবিধ বৃৃহ-রচনা বিষয়ে অভিজ্ঞ এবং স্থৃত ও অস্ত অর্থাৎ বেতন প্রাপ্ত ও মিত্রতা-হেতুক मयांगठ रेमनिकमिंगरक किंबर्प कर्म कताहरि इस, তাহাও জানি। হে মহারাজ! যুদ্ধযাতা, যুদ্ধ ও পরাজ্রপ্রতিকার বিষয়ে আমি রুহস্পতির ন্যায় সম-ধিক পারদর্শী। আমি দেব, গন্ধর্বে ও মামুব-সম্বনীয় যে সমস্ত ব্যুহরচনা জানি, তদ্বারাই পাগুবদিগকে মোহিত করিব; অতএব তুমি চিন্তা দুর কর। হে রাঙ্গনৃ! তোমার বাহিনীকে সর্বতোভাবে রক্ষা করত আমি শাক্রামুসারে অকপটে যুদ্ধ করিব; অতএব তোমার মানস-ত্তর অপনীত হউক।

ছুৰ্য্যোধন কহিলেন, হে মহাবাহো গাঙ্গেয়! আপ-নাকে আমি সভ্য করিয়া বলিতেছি, সমুদয় দেব ও অস্তরগণেও আমার ভর নাই; ভবাদৃশ স্বছ্র্দ্বর্য বাক্তি সেনাপত্য গ্রহণ করিলে এবং পুরুষব্যাঘ্র দ্ৰোণাচাৰ্য্য আহলাদ-পূৰ্ব্বক যুদ্ধাৰ্থে অবস্থিত হইলে যে ভর থাকিবে না, তাহার কথা আর কি আছে ? হে ভরতভোঠ ! পুরুষপ্রধান আপনারা ছুই জন **অवन्धि** रहेरन आंभात निन्ध्तर विकास रहेरव ; वि-জয়ের কথা দূরে থাকুক, দেব-রাজ্যও ছুর্লভ হয় না। হে কৌরব! সম্প্রতি শত্রুদিগের ও আপনার কিয়ৎ-সংখ্যক রধী ও অতিরধী আছে, তাহা জানিতে ইচ্ছা করি। পিতামহ, আত্ম পর উভয় পক্ষেরই অভিজ্ঞ, একারণ আমি এই অখিল-রাজবর্গের সহিত্ত উহা প্রবণ করিতে. অভিলাষী হইতেছি।

ভীয় কহিলেন, হে গান্ধারীনন্দন রাজেন্দ্র ! শ্বকীয় वल-मत्था त्रथमश्था ध्ववं कतः। याँ हाता त्रथी ७ चित्रथी, नमूमात्र काङ कतिए हि। दि ताजन् ! তোমার নেনা-মধ্যে বঁহু সহত্র, বছ লক্ষ্, বহু অর্ঞ্চুদ রধী আছেন, ভন্মধ্যে বাঁহারা প্রধান, ভাঁহাদিগেরই

কথা আবণ কর। প্রথমত চুংশাসন-প্রভৃতি শত সংখ্যক সহোদরগণের সহিত ভূমিই এক জন প্রধান ্রথী। তোমরা সকলেই প্রহরণ বিষয়ে ক্লভকার্য্য এবং ছেদ্য ও ভেদ্য ৰিষয়ে বিশারদ। তোমরা রধ-व्यत्य ଓ गंककरकं राक्ति मश्यस्त्रा, गना, व्याम ଓ অসিচর্মেও সেইৰূপ গ্রহর্ডা; ভোমরা সকলেই ক্বতান্ত্র, ভারবহনে *স্*নীর্থ এবং শরে ও অন্ত্রে দ্রোণ ও রূপাচার্যোর শিষা। এই মনস্বী ধার্ত্তরাষ্ট্রগণ পাণ্ডবগণ-কর্তৃক ক্রতাপরাধ হইয়া সমরে যুদ্ধতুর্মদ পাঞ্চালদিগকে নিহত করিবেন। হে ভরতশ্রেষ্ঠ। সর্ব-সেনাপতি আমিও ভোমার শত্রুত পাওব-দিগের পরাভব-সাধন-পূর্ব্বক বিধংস করিব। হে রাজন্ ! শ্বকীয় গুণ-সমন্ত ব্যক্ত করা আমার উচিত নহে; আমি যেৰপ তাহা তোমার বিদিতই আছে। শস্ত্রধারিক্সেষ্ঠ, অতিরথ, ভোজরাজ ক্রতবর্মাও সং-থানে তোমার অর্থসিদ্ধি করিবেন, সন্দেহ নাই : ইনি শক্তজ্ঞগণের অধর্ষণীয়, দৃঢ়ায়ুধ ও দূরে অক্র নিক্ষেপে সমর্থ ; স্থতরাং মহেক্র যেমন দানবগণের সংহার করেন, সেইৰূপ ইনি শত্তুসৈন্য বিন্ফ করি-বেন। আমার বিবেচনায় মহাধনুষ্কারী মদ্ররাজ শল্যও এক জন অতিরখ। এই রাজসত্তম রণে রণে বাস্থদেবের সহিত নিত্যই স্পর্দ্ধা করিয়া থাকেন; বিশেষত নিজ ভাগিনেয়গণকে পরিত্যাগ করিয়া তোমার পক্ষ অবলয়ন করিয়াছেন; অতএব ইনি সাগর-তরঙ্গ-সম শর-সমূহ-দ্বারা শত্রুদিগকে প্লাবিভ করত মহারথ পাওবগণের সহিত যুদ্ধ করিবেন। মহাধনুর্জারী, রথযুথপতির যূথপতি, সোমদত্ত-পুত্র ভূরিশ্রবা ক্বতান্ত্রও বটেন এবং ভোমার হিতকারী স্থক্ত বটেন; স্থতরাং শত্রু সৈন্যের স্থমহান্ বিধংস-সম্পাদনে সমর্থ হইবেন। মহারাজ ! সিন্ধুরাজ জয়-দ্রথ বিশুণ রথ বলিয়া আমার অভিমত। এই রথ-মন্তম সম্পূর্ণ বিক্রম প্রকাশ-পূর্বেক সমরে যুদ্ধ করি-वन। ए ताकन्! जीभनीरत्न ममदत्र भाखवत्रा ইহাঁরে যে নিরভিশর ক্লেশ দিরাছিলেন, তাহা

সমাক্রণে সারণ করত এই পরবীরহন্ত। যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইবেন। হে রাজন্! তৎকালে ইনি স্থদারূপ তপ্যা অবলম্বন-পূর্বেক পাণ্ডবদিগের সহিত যুদ্ধ করিবার নিমিত্ত স্থান্তলিত বরলাভ করিয়াছিলেন; অতএব হে তাত! এই রাজশার্দ্দ জয়দ্রথ সমরে সেই বৈর সারণ করত স্থান্তভাজ প্রাণ পরিত্যাগ করি-য়াও পাণ্ডবগণের সহিত যুদ্ধ/করিবেন।

কৌরব-রথাতিরথুসংখ্যার চতুঃষ্ট্যধিক শত্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥১৬৪॥

ভীম কহিলেন, হে রাজসন্তম! কামোজরাজ স্থ-দক্ষিণ একগুণ রথী; তোমার অর্থসিদ্ধি আকাক্ষা করত ইনি সমরে শত্রুগণের সহিত যুদ্ধ করিবেন। কৌরবেরা সংগ্রামে তোমার নিমিত্ত প্রহারকারী এই রথসিংছের ইন্দ্র-ভুল্য পরাক্রম দৃষ্ট্রিকরিবেন; যেহেতু ইহাঁর রথ-সমূহে শলভপুঞ্জের ন্যায় তীত্র-বেগাম্বিত কাম্বোজগণের স্বদূর বিস্তার দৃষ্ট হইবে। মহারাজ! মাহিশতী-বাসী নীলবর্মা নীলরাজ এক জন রথী; ইনি রথ-সমূহ-সহকারে তোমার শত্র-**पिरागत ४१म कतिराजन। एक कुरूनन्मन! शृर्स्व मह-**দেব ইহাঁর সহিত শত্রুতা করিয়াছিলেন; স্কুতরাং তোমার নিমিত্ত ইনি নিয়তই যুদ্ধ করিবেন। ছে তাত! স্বৃঢ় বীর্যা ও পরাক্রম-সম্পন্ন, সমরে স্থ-निश्रुण, व्यविद्यामीय विनम ও व्यञ्जिनम, উভয়েই রথোক্তম বলিরা পরিগণিত। হে মহারাজ! সমরে জীড়া-নিরত যুধপ-যুগলের ন্যায় যুক্কামী হইয়া এই পুরুষব্যান্ডেরা যুদ্ধ-মধ্যে ক্নতান্তের ন্যায় বিচরণ করত হস্তবিচ্যুত গদা, প্রাস, অদি, নারাচ, তোমর-প্রভৃতি প্রহরণপুঞ্জ-ছারা তোমার শক্রনৈন্য সমস্ত দথা করিতে থাকিবেন। হে রাজেন্ত্র। ত্রিগর্ভেরা পঞ্চ সহোদর রথভোগ্ঠ বলিয়া আমার অভিমত; বিরাটনগরে পাওবেরা ইহাঁদিগের সহিত শত্রুতাও করিয়াছিলেন; স্থতরাং মকরগণ বেমন উদ্ধত-ভরঙ্গ-যুক্তা গঙ্গাকে বিক্ষোভিতা করে, সমরে পা-

গুৰদিগের সমুচ্ছ্রিত-পতাকিনী বাহিনীকেও ইহাঁরা সেইৰপ বিলোড়িতা করিবেন। এই পঞ্চ রখ্নমধ্যে সতার্থ প্রধান। হে ভারত! পূর্বের ভীমামুজ শ্বেত-বাহন দিখিজয়ে প্রবৃত্ত হইয়া ইহাঁদিগের যে অনিফ করিয়াছিলেন, তাহা সমাক্-ৰূপে স্মরণ করিয়া ইহাঁরা সংগ্রামে যুদ্ধ করিবেন;—পাণ্ডবদিগের সন্ধি-হিত হইয়া মহাধমুদ্ধারী মহারথ প্রধান প্রধান ক্ষিত্রিয়-ধুরন্ধারগণকে নিহত করিবেন।

হে রাজন্! তোমার পুত্র লক্ষণ ও চুঃশাসনের পুত্র, এই কুরুশার্দূল-যুগল রথসত্তম বলিয়া আমার অভিমত; তরুণ ও স্থকুমার রাজকুমার হইরাও এই পুরুষব্যান্থেরা সমরে অপরাস্থুখ, মহাতেজস্বী, যুজ্বলরে বিশেষজ্ঞ ও সর্বতোভাবে প্রণেতা। এই বীরদ্বর ক্ষত্রধর্মের রত হইরা স্থমহৎ কর্ম করিবেন। হে নরভ্রেষ্ঠ মহারাজ! দগুধার একগুণ রথ; ইনিনিজ সৈনো রক্ষিত হইরা তোমার সংগ্রামে যুদ্ধ করিবেন। হে তাত! মহাবেগ-পরাক্রম, রথসত্তম কোশলরাজ রহদ্বলও এক-রথ বলিয়া আমার অভিমত। ধার্তরাষ্ট্রগণের হিতকার্যো নিরত হইরা এই উগ্রায়ুধ মহাধনুর্জারী সংগ্রামে স্বকীয় বন্ধুগণকে আনন্দিত করত যুদ্ধ করিবেন।

হে রাজন! রথযুথপতির যূথপতি ক্রপাচায্য প্রিয়তম প্রাণ বিসর্জন করিয়াও তোমার শক্র সকলকে
দহন করিবেন। হে তাত! অজেয় কার্ত্তিকেয়ের
ন্যায় যিনি শরস্তম হইতে মহর্ষি গৌতমাচার্য্যের
পুত্র হইয়াছিলেন, সেই এই বীরবর বিবিধ আয়ুধ
ও কার্ম্মক-যুক্ত স্ববহুল সৈন্য-সমস্ত নিঃশেষে দহন
করত সাক্ষাৎ অগ্নির ন্যায় সমরে বিচরণ করিবেন।

কৌরব-রথাতিরথসংখ্যার পঞ্চষট্যকি শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৬৫॥

ভীয় কহিলেন, হে নরাধিপ! তোমার মাতুল এই শকুনি এক-রথ; পাঙ্বদিগের সহিত বৈর-যোজন করিয়া ইনি অবশাই যুদ্ধ করিবেন, সংশ্য

নাই। সমরে প্রতিকৃলে প্রধারিত এই বীরের সৈন্য সকল বেপে मधीत्रन-ममृभ, वह्नविध आधुधयूक ও ও স্বছর্কর 🕼 মহাধনুর্কারী মহারথ ভোণপুত্ত অশ্ব-থামা সকল ধন্বীর অতিক্রমকারী, সমরে চিত্রযোধী अ. कृषाळा । सरात्राक । भाशीयथवा चार्क्त्वत्र नात्र ইহাঁর শরাসন-বিনিশ্বক্ত সায়ক সমস্ত সংসক্ত হইয়া প্রান্থিত হয়। আমি এই রথসভ্তম মহাবীরের গুণ সংখ্যা করিতে অসমর্থ; এই মহারথ ইচ্ছা করিলে ত্রৈলোক্য দহন করিতে পারেন। ইনি আশ্রমবাসী হইয়া তপদ্যা-দারা কোধ ও তেজ উভয়ই পোষণ করিয়াছেন এবং উদার-ধীসম্পন্ন হওয়ায় দোণ-'কর্ত্ত দিব্যাস্ত্র-সমূহ-দারাও অনুগৃহীত হইয়াছেন; কিন্তু হে ভরতর্বভ! ইহার একটি যে মহাদোষ আছে, তাহাতে আমি ইহাঁকে রথ বা অতিরথ ৰলিয়া মনে করি না। হে রাজন্! এই ব্রাহ্মণ নিতাই আয়ুষ্কামী; স্থতরাং জীবন ইহাঁর অত্যন্ত প্রিয়। যাহা হউক, উভয় সেনার মধ্যে ইহাঁর সদৃশ कान याकार विमामान नारे। श्रमेख मतीत्रधाती এই অশ্বর্থামা একরথে দেবগণের বাহিনীকেও নি-হত করিতে পারেন এবং তলনির্ঘোষ-দারা পর্বত-मकन एक उ विनीर्ग कति एक ममर्थ रन। अञ्चव व रे অপরিমিত-গুণশালী, দারুণ-ছ্যুতি, অসম-প্রহারী, वीतवत्र, मख्यानि काटलत न्यात्र व्यमश् रहेत्रा विष्ठत्रन করিবেন। ক্রোধে যুগান্ত-ছ্তাশন-সদৃশ, মহাছ্যুতি, সিংহগ্রীব অশ্বর্থাম। ভারত-যুদ্ধের পৃষ্ঠ প্রশমিত করিবেন। ইহাঁর পিতা মহাতেজা জোণাচার্য্য রুজ হইয়াও যুবগণ অপেকা শ্রেষ্ঠ; সংগ্রামে ইনি যে স্থমহৎ কর্ম করিবেন, তাহাতে আমার কিছুমাত্র সংশব্ন নাই। সেনাৰূপ তৃণকান্ঠ-সমুন্থিত, অন্ত্ৰবেগ-পৰনে উচ্চুত দ্ৰোণ-ৰূপ মহানল সমরে নিশ্চল হইয়া যুধিষ্ঠিরের সৈদ্যা সমস্ত নির্দহন করিবেন। कनज तथ्यूथभयूथ-नम्रहत यूथभि ७ वह नद्रत्यर्थ ভর্মাজ-নন্দন ছোমার অভীব হিতকর্ম সম্পাদন क्रिरियन। ज्ञान मुक्कां क्रियक शर्मत आंत्रां श्र

বৃদ্ধ গুরু, সমন্ত সঞ্জনগণেরই আন্তকারী হুইতে পান রেন ; কিন্তু ধনপ্রন্ন ইহাঁর অতিশর প্রিন্ন ; এই মহা-श्रञ्जाती श्रनिर्मिष्ठ क्षतीश जानाया कर्म मन्न করিয়া অক্লিফকারী পার্থকে কদাচ বিনফ করিতে পারিবেন না। ছে বীর! অর্জ্জুনের গুণনিকর-দারা ভরদাজ-তনয় নিত্যই শ্লাঘা করিয়া পাকেন এবং পুক্রাপেক্ষাও উহাকে अধিক বিবেচনা করেন। এই অসীম প্রতাপ-সম্পন্ন মহাবীর সমরে এক রথে দিব্যান্ত্র-সমূহ-দারা একত সমবেত দেব, গন্ধর্ব ও মানুষদিগকেও নিহত করিতে পারেন। হে রাজন্! ভোমার শত্ররথ-বিমর্জন মহারথ রাজশার্ভূল পৌরব রথ-শ্রেষ্ঠ বলিয়া আমার অভিমত। তিনি স্বকীয় বিপুল দৈন্য-সহকারে শত্রু-বাহিনীকে প্রতাপিত করত, অ্যি বেমন শুদ্ধ ভূণ দহন করে, সেইৰূপ পাঞ্চালদিগুকে নির্দিশ্ধ করিবেন। হে ভারত ! সত্য-কীর্ভি, এক-রথ, রাজপুত্র রুহম্বল সাক্ষাৎ ক্নতান্তের ন্যায় তোমার শত্রবল-মধ্যে বিচরণ করিবেন। ইহাঁর বিচিত্র কবচ ও আয়ুধধারী যোধগণ তোমার শত্রু সকলকে নিহত করত রণাঙ্গনে পরিভ্রমণ করিয়া বেড়াইবে।

হে রাজেন্ত ! কর্ণপুত্র মহারথ র্বসেন তোমার এক জন প্রধান রথী। এই বলিজ্ঞেষ্ঠ, তোমার শক্রসৈন্যকে প্রকৃষ্টৰূপে দহন করিবেন। হে রাজন্ !
তোমার রথজ্ঞেষ্ঠ পরবীরহন্তা, মহাতেজ্ঞা, মধুবংশীর জলসন্ধ সমরে প্রাণ বিসর্জ্ঞান করিবেন। গলক্ষর ও রথ উভয়ত্রই বিশারদ এই মহাবাছ সংগ্রামে শক্র-বাহিনীকে-বিক্ষিপ্তা করত যুদ্ধ করিবেন। মহারাজ! এই রাজসন্তম রথ বলিয়া আমার অভিমত;
তোমার নিমিত্তে ইনি সলৈন্যে মহারণে প্রাণ পরিতার্গ করিবেন। ইনি সংগ্রামে বিক্রান্ত-যোধী ও
চিত্রবোধী; স্বভরাং নির্ভীক হইয়া শক্রগণের সহিত্
সমরে প্রবৃদ্ধ হইবেন।

হে রাজন ! সমরে অপরাজ্য সাক্ষাৎ কৃতাত্ত-সদৃশ অসীম-শৌর্যসম্পন্ন বাহ্নীক অতিরথ বলিয়া

শামার অভিমত; কেন না সমর প্রাপ্ত হইয়া ইনি क्ति क्षेकारत है निवृद्ध हरान ना। नमागि माझ-তের নাায় তিনি সংখামে শক্ত সকলকে নিশ্চয়ই ়নিহত করিবেন। মহারাজ! তোমার সেনাপতি মহারথ সভাবান সমরে অন্তুতকর্মা, রথী ও শক্র-রথের পীড়াকারী। যুদ্ধ দেখিয়া ইহাঁর কোন প্রকা-রেই ব্যথা হয় না; ইনি র্থপথে অবস্থিত শত্র-দিগকে বিশিত করত সহসা তাহাদিগের উপরে পতিত হন। অরাতিগণে পরাক্রান্ত এই পুরুষোত্তম তোমার নিমিত্ত সংগ্রামে সংপুরুষোচিত স্থমহৎ কর্ম করিবেন। হে রাজন্! কুরকর্মা, মহারথ, ताकरमञ्च अलयुष भूकं रेवत त्यत्रं कत्र भक्ति मित्र নিহত করিবেন। ইনি সমস্ত রাক্ষস-সৈন্য-মধ্যে রথ-সক্তম, মায়াবী ও দৃঢ়বৈর, স্থতরাং সমরে ঘোরৰপে বিচরণ করিবেন। হে রাজেন্দ্র ! প্রাণ্জ্যোতিষাধি-পতি প্রতাপবান্ বীরবর ভগদন্ত, গজালুশ ধারণেও শ্রেষ্ঠ এবং রধেও বিশারদ। পূর্বের গাণ্ডীবধম্বার সহিত ইহাঁর যুদ্ধ হইয়াছিল। উভয়েই জয়াকাজ্ফী रहेशा वर्ष पिन পर्याष्ठ युक्त करतन। अनस्रत हेनि পাকশাসন ইন্দ্ৰকে মধ্যস্থ মানিয়া সেই মহাত্মা পাগুবের সহিত সন্ধি করিয়াছিলেন। গজক্ষন-বিশারদ এই রাজা সংগ্রামে দেবগণ মধ্যে এরা-বভারত বাসবের ন্যায় যুদ্ধ করিবেন।

কৌরব-রথাতিরথসংখ্যায় বট্যত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৬৬॥

ভীয় কহিলেন, হে রাজন ! গান্ধার-প্রধান, যুবা, দর্শনীয়, মহাবল-পরাক্রান্ত, দূদক্রোধ-পরায়ণ, ছুরাধর্ম, নরবাত্রে অচল ও রুষক উভয় ভ্রাভাই রথী; ইহারা মিলিত হইয়া তোমার শক্রগণের বিষংসক্রিবেন। হে ভারত! তোমার এই প্রিয়ভম স্থা, মন্ত্রী, নায়ক, বন্ধু, অভিমানী, অভ্যন্ত উচ্চাভিলাষী, আত্মন্ত্রীয়াধাকারী, নিভা রণ-কর্ষণ, নীচ পুরুষ, সূর্য্যাভারা করি, যিনি সর্বাদাই তোমাকে পাণ্ডবদিগের

সহিত যুদ্ধ করিবার নিমিত্ত উৎসাহিত করেন. ইথাকে সংগ্রামে না রথ, না অতিরথ, কিছুই বলা যায় না। ইনি অনভিজ্ঞ ও সতত দয়ালু হওয়ায় महकाञ पिरा करह ७ कुछल-युशल वियुक्त इहेगा-ছেন; অতএব রামের অভিশাপ, ব্রাহ্মণের উক্তি ও কবচাদি সাধন-সকলের বিয়োগ-হেতৃক অর্ধ্ব-রথ বলিয়া আমার অভিমত। সমরে অর্জুনের সন্নিহিত रुरेश रेनि कमाठ कीविज थाकिशा मुक्ति भारेदन ना। অনম্বর সর্বশস্ত্রধারিশ্রেষ্ঠ দ্রোণাচার্য্যও কহিলেন. (इ গাল্পেয়! আপনি যাহা বলিতেছেন যথার্থ বটে, ইহাতে কিছুমাত্র মিখ্যা নাই; কর্ণ প্রতি সমরেই অভিমানী হন, কিন্তু বিমুখ হইতেও দৃষ্ট হইয়া থা-কেন; অতএব এই ঘূণী ও প্রমাদী ব্যক্তি আমারও অর্দ্ধরথ বলিয়া অভিমত। ইহা প্রবণ করিয়া রাধেয় ক্রোধে নয়ন-দ্বয় উৎক্ষেপণ-পূর্বক অকুশবৎ বাক্য-দ্বারা ভীন্নকে পীড়িত করত কহিলেন, হে পিতা-মহ! আমি নিরপরাধ ছইলেও তুমি কেবল দ্বে-হেতুক এইৰূপ বাক্যবাণ সহকারে আমাকে ইচ্ছানু-সারে পদে পদে ছেদন করিয়া থাক; তথাপি ছুর্য্যো-ধনের নিমিত্ত আমি সে সকলই সহাকরি। "আ-মার নিকটে তুমি অর্ধর্থ-রূপে পরিগণিত " এই বলিয়া তুমি যে আমাকে কাপুরুষের ন্যায় মক্ষজান করিতেছ, ইহাতে কি সংশয় নাই ? হে গাঙ্গেয় ! আমি মিথাা বলিতেছি না, তুমি সমস্ত জগতের, বিশেষত কৌরবগণের নিয়ত অহিতকারী, কিন্তু রাজা তাহা জানিতেছেন না। গুণের প্রতি বিদ্বেষ-হেতৃক তুমি যেমন আমার অপরাগ করিতে ইচ্ছা করিতেছ, সমরে সমান-গুণসম্পন্ন উদারকর্মা রাজ-গণ-মধ্যে ভেদ করণেচ্ছু হইয়া কোন্ ব্যক্তি আর এৰপ তেজোহানি করে? হে কৌরব! বয়ংক্রম, পক্ককেশ, ধন, কি বন্ধু-ছারা ক্ষজিয়ের মহারথত্ব সংখ্যা করিতে পারা যায় না। কজিয়েরা বল-খারা. बाक्रालाता मज-बाता, देवरणाता धनबाता विदेश मृद्याता वसःक्रम-बातारे खार्छ विलया गृष्ठ रेसे। शेत्रेख जूमि

क्विन मार्थयूङ कामरद्द नमामङ रहेन्ना जानन ইচ্ছামুনারেই রথ ও অতিরথ সকলের ব্যাখ্যান করিরা ভেদে। ৎপাদন করিতেছ। — হে মহাবাহে। ছুর্ব্যোধন ! আপনি সম্যক্ বিবেচনা করিয়া দেখুন ; অপিনকার অনিউকারী এই ছুফাভিপ্রার ভীয়কে পরিত্যাগ করুন; কেন না একবার ভিন্ন হইলে সৈন্যকে পুনরায় সংঘটিত করা নিতান্ত ছঃসাধ্য হইবে। হে নরপতে! যাহারা নানা দেশ হইতে পৃথক্ পৃথক্ সঙ্কলিত হইয়া এক কাৰ্য্যাৰ্থে সমুখিত हर, जाहारमद्भ कथा मृद्र थाकूक, जिम व्याख हरेला মূল সৈন্যও ছুঃসংশ্বের হইরা থাকে। হে ভারত! ভীন্ন এই যাবতীয় যোধগণের প্রত্যক্ষেই আমা-দিগের তেজাহানি করিতেছেন; স্থতরাং যুদ্ধ विवरत हेराँ पिरान विलक्ष मः भग्न छे पन हरेल। হা ! রধিগণের পরিজ্ঞান কোথায় আর অপেবুদ্ধি ভীন্নই বা কোধায়! আমিই একাকী পাগুবগণের দৈনাকে আবারিত করিব। শার্দ্দূল-সন্নিহিত র্যভ-পুঞ্জের ন্যায় পাণ্ডব ও পাঞ্চালেরা অবার্থ-বাণ-मञ्जाशी व्यामात्क व्याश्व इरेशा एम पित्क भनाशन করিবে। যুদ্ধ, বিমর্দদ, মন্ত্র ও স্থভাবিতই কোথায়, আর রন্ধ, মন্দান্মা, কালপ্রেরিত ভীন্মই বা কোথায়? ইনি একাকী সমস্ত জগতের সহিত নিতাই স্পর্কা করেন এবং একপ অসত্যদর্শী হয়েন যে, কাহাকেও আর পুরুষ বলিয়া জ্ঞান করেন না। শাস্ত্রে এৰপ निवर्णन चाट्ह वटि, य बृक्तगरनंत्र वाका व्यवन कता কর্ত্তব্য, কিন্তু অতিবৃদ্ধগণের নছে ; কেন না পণ্ডিত-গণের বিবেচনায় তাঁহারা পুনর্বার বালকত্ব প্রাপ্ত হ্নী হে রাজশার্দ্ল! আমিই একাকী আপন যুদ্ধে পাওবদিগের দৈন্য সমস্ত নিহত করিব, কিন্তু ভীয় যশোলাভ করিবেন। হে নরপতে। আপনি এই ভীন্নকৈ সেনাপতি করিয়াছেন; যশ সেনা-পভিতেই গমন করে, যোধগণে নহে; অভএব **१ इ. जि. श्रीमन्सन कीरिंड शांकिएड जा**नि कान अकारतरे युक्त कतिव ना ; जीत्र निर्ठ ररेल

পর সমস্ত মহারথগণের সহিত সমরে প্রার্থ ইইব। ভীম কহিলেন, রে স্থতপুত্র ! সুর্য্যোধনের সং-থানে আমার এই সাগরোপম স্থমহান ভার সমু-দ্যত হইয়াছে; জামি বহু বর্ষ পর্যান্ত ইহার চিন্তা করিতেছি ; অতএব সেই লোমাঞ্চকর প্রতপ্ত সমর সময় সমাগত হইলে পরস্পর ভেদকরা আমার কর্ত্তবা নহে, এই নির্মিত্তই তুমি জীবিত রহিয়াছ। আমি র্দ্ধ হইয়াও শিশু-স্বৰূপ ভোমার প্রতি বি-ক্রম প্রকাশ করিয়া তোমার যুদ্ধ-লালসা ও জীব-নাশা ছেদ করিতে পারি, কিন্তু এই নিমিত্তেই করি-লাম না। রে স্থতজ! তুমি আমার কি করিবে, তোমার গুরু জামদগ্য পরশুরাম মহান্ত্র-সকল পরি-ত্যাগ করিয়াও আমার কিছুমাত্র ব্যথা জনাইতে পারেন নাই। রে নিরুফকুলপাংসন! সাধুরা কথন ইচ্ছা করিরী নিজ বলের প্রশংসা করেন না; কিন্তু আমি সম্ভপ্ত হইয়াই তোমাকে উহা বলিতেছি। কাশীরাজ স্বয়য়রে সমবেত পার্থিব ক্ষজ্রিয়কুলকে এক রথেই জয় করিয়া আমি বল-পূর্ব্বক কন্যা সমস্ত হরণ করিয়াছিলাম। অপিচ রণাঙ্গনে এতা-দৃশ সহস্র সহস্র এবং এডদপেক্ষাও বিশিষ্ট সসৈন্য ক্ষজ্রিয়গণকে একাকীই নিরস্ত করিয়াছিলাম। সং-প্রতি সাক্ষাৎ বৈর-পুরুষ তোমাকে প্রাপ্ত হইয়া কুরুগণের মহান্ অনর্থ উপৃস্থিত হইল; এক্ষণে বিনাশের নিমিন্ত যত্ন কর, পুরুষ হও। রে স্বছ-র্মতে ! যাহার সহিত তুমি সর্বাদা স্পর্দা করিয়া থাক, সেই পার্থের সহিত সমরে যুদ্ধ কর, আমি এই যুদ্ধ হইওেঁ ভোমাকে একবার বিমুক্ত হইতে দেখিব।

অনন্তর প্রতাপবান রাজা সুর্য্যোধন তাঁহাকে কহিলেন, হে গালের! আমার প্রতি নিরীকণ করুন, দেখুন, মহৎ কার্য্য উপস্থিত হইরাছে; অত-এব বাহাতে আমার পরম মঙ্গল হর, একাগ্র হইরা তাহাই চিন্তা করুন! আপনারা উভরেই আমার মহৎ কর্ম করিবেন। সম্প্রতি শক্তদিনের রখসন্তর্ম গণের কথা আবণ করিতে ইচ্ছা করি; তথার যে সমস্ত অভিরথ ও রথমুখপতি আছে, তাহাদের র্জ্ঞান্ত বর্ণন করুন। ছে কৌরব! আমি শক্তগণের বলাবল অবণে অভিলাষী হইতেছি, যেহেতু রজনী প্রভাতা হইলেই এই যুদ্ধারম্ভ হইবে।

ভীয়-কৰ্ণ-কলহে সপ্তৰ্ফ্যধিক শতত্ম অধ্যায় সমাপ্ত[®]॥ ১৬৭ ॥

ভীয় কহিলেন, হে নৃপতে! তোমার এই সমস্ত রথ, অতিরথ ও অর্দ্ধরথের বর্ণন করা হইল; অতঃ-পর পাগুবদিগেরও রথাদির বিবরণ অবণ কর। হে রাজন্! সম্প্রতি পাগুবগণের বল-বিজ্ঞানে তো-মার যদি কৌভূহল হয় তবে, এই সকল ভূপাল-পণের সহিত তাহাদিগের রথসংখ্যা অবগত হও। হে তাত! স্বয়ং রথশ্রেষ্ঠ কুন্তীনন্দন রক্ষা যুধিষ্ঠির সমরে অগ্নির ন্যায় বিচরণ করিবেন, সন্দেহ নাই। হে রাজেন্দ্র! ভীমদেন অফগুণ রথী; সংগ্রামে গদায় কি সায়কে কেহই তাঁহার সমান নাই। তিনি অযুত হতীর বলধারী, অভিমানী এবং তেজেও মামুষ नरहन। श्रुक्रयत्थर्छ माजीश्रुत्ख्रता ७ উভয়েই तथी এবং ৰূপে ও তেজে সাক্ষাৎ অশ্বিনী-কুমার-সদৃশ। ইহাঁরা সৈন্যমুখে সমাগত হইয়া নিরতিশয় ক্লেশ-সমস্ত স্মরণ করত রুদ্রের ন্যায় যে বিচরণ করিবেন, তাহাতে আমার কিছুমাত্র সংশয় নাই। পাঞু-পুত্রেরা দকলেই মহাবল, মহাত্মা, সিংহের ন্যায় শরীর-বিশিষ্ট, শালস্তব্তের ন্যায় উন্নত এবং প্রমাণে অন্যান্য পুরুষগণ অপেকা প্রাদেশ মাত্র অধিক। হে তাত! এই পুরুষবাাঘ্রেরা সকলেই ব্রহ্মচর্য্যের অমুষ্ঠানকারী, তপস্বী, লজ্ঞাশীল, ব্যাছের ন্যায় বলোগ্ধত এবং বেগে, প্রহারে ও সম্মর্ফে অলে ক-সাধারণ। হে ভরতর্ষভ! ইহাঁরা দিখিজর কালে সকলেই মহীপালগণকে পরাজিত করিয়াছিলেন। नम्द्र रेर्हें। क्टिंग्रें जाबूब, भेषा ७ में बन्मे नश् করিতে পারে, এমন পুরুষই অপ্রসিন্ধ; সহ করা

দূরে পাকুক, ইহাঁদিগের ধন্তুতে জ্যারোপ করিতে, গুৰ্বী গদা সকল উত্তোলন করিতে অথবা শর সমুস্ত বিক্ষিপ্ত করিতেও কেহ সমর্থ হয় না। বাল্যকালেও তাঁহারা বেগে, লক্ষ্য হরণে, ভোক্ষো ও ধূলি-প্রক্ষে-পণ-ক্রীড়ার তোমাদিগের সকল অপেক্ষাই শ্রেষ্ঠ হইরাছিলেন। **তাঁহারা সকলেই বলোদ্ধত, সূতর**াং সংগ্রামে তোমার এই সৈন্য প্রাপ্ত হইয়া নিয়তই বিশংসিত করিবেন; অতএব তাঁহাদিগের সহিত যেন সমর-সমাগম না হয়। হে রাজেন্দ্র ভাঁছারা একৈকে সমরে সমস্ত মহীপালগণকেই যে নিহত করিতে পারেন, তাহা রাজস্থরে তোমার প্রতাক্ষই হইয়াছে। তাঁহারা দ্রৌপদীর পরিক্লেশ ও দ্যুত-কালীন পরুষ-বাক্য-সমুদায় স্মরণ করত সংগ্রামে রুদ্রের ন্যায় বিচরণ করিবেন। নারায়ণ-সহায়-সম্পন্ন লোহিত-নয়ন যে অর্জুন, উভয় সেনা-মধ্যেই তাদৃশ বীর্যাশালী রধী আর বিদ্যমান নাই; মমুষ্যে কি, পূর্বের দেব, যক্ষ, রাক্ষস বা ভুজঙ্গগণ-মধ্যেও তাদৃশ মহারথী হইয়াছে, কি উত্তর কালে হইবে, আমি কুতাপি এৰপ অবণ করি নাই। মহারাজ। ধীমান্ পার্থের কপিধজ রথ, বাস্তুদেব সার্থি, ধন-ঞ্জয় যোদ্ধা, দিব্যধনু গাণ্ডীব, বাতবেগী অশ্বগণ, **षट्डमा क्वर, षक्षम जूरीत-यूगम, मट्हन्स क्र**फ क्रव्यत यम ও वक्रग-मश्वकीय अज्य-मभूर, जीमनर्भन গদা সমস্ত এবং বজ্ঞপ্রভৃতি নানা প্রকার প্রধান প্রধান প্রহরণ-জাত একত্রিত হইয়াছে। কলত যে ব্যক্তি সমরে এক রথে হিরণ্যপুরবাসী সহত্র সহত্র দানবগণের সংহার করিয়াছিলেন, তাঁহার সদৃশ রথী আর কে হইতে পারে ? এই অসীম-বলশালী সত্য-বিক্রম মহাবাছ ক্রোধ-পরবশ হইয়া স্বীয় সৈন্য রক্ষা করত ভোমার সৈনিকদিগকে নিহত করিবেন। হে রাজেল ! আচার্য্য, কিয়া আমি এই ছুইজনমাত্র ধনঞ্জারে সাহিত যুদ্ধার্থে উদ্দুক্ত হইতে পারি, এতদ্বিদ্ধ উভয় সেনার মধোই আর এবুপ তৃতীয় त्रथी विषामान नारे य वाङि गत्रश्चिकत वर्षनेकाती এই মহাবীরের অভিমুখে গমন করিতে পারে। গ্রীয়াতে মহাবাত-প্রেরিত জীমুতের ন্যায় বাস্তদেব-সহায়-যুক্ত কুন্তীনন্দন সবাসাচী যুদ্ধার্থে স্থসজ্জিত রহিয়াছেন। তিনি যুবা ও কৃতী আর আমরা উভ-

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, তথন তীমের এই বাক্য শ্রুবণ করিয়া এবং সংবেগান্থিত-মানসে পাণ্ডব-দিগের পুরাতন সামর্থা প্রত্যক্ষদর্শনের ন্যায় সম্যক্-রূপে স্মরণ করিয়া রাজগণের স্থর্ণাঙ্গদ-বিভূষিত চন্দন-চর্চিত ভুজ-সমস্ত শিধিল হইয়া পড়িল।

পাণ্ডব-রথাতিরথসংখ্যার অফ্টবফ্টাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৬৮ ॥

ভীম কহিলেন, মহারাজ! দৌপদীর পঞ্চ পুজেরা দকলেই মহারথ; বিরাট-পুত্র উত্তরও আমার বিবেচনার রথত্রেষ্ঠ। মহাবাছ অভিমন্ত্য রথযুথ-পতির যুধপতি। সমরে পার্থ ও বাস্কদেবের সম-কক্ষ, শত্রুবিনাশী, শীঘ্রান্ত্র, চিত্রযোধী, মনস্বী ও দৃঢ়ব্রত সেই মহাবীর নিজ পিতার পরিক্লেশ সমস্ত সংস্মরণ করত বিক্রম প্রকাশ করিবেন। হে রাজন্! द्क्षिथवीत्रभग-मर्पा नमिषक व्यमवी, निर्जीक, चूत-বীর সাত্যকি রথযুধপতির যুধপতি এবং উত্তমৌজা ও বিক্রান্ত যুধামক্যুও রথত্তেষ্ঠ বলিয়া আমার অভিমত। হে ভারত! ইহাঁদিগের বহু সহস্র রথ, নাগ ও অৰ দৈনা আছে। কুম্ভীপুত্ৰের প্রিয় কাম-নার তাঁহারা দেহ-বিসর্জন-পূর্বক যুদ্ধ করিবেন,— পাণ্ডবদিপের সহিত মিলিয়া পরস্পর আহ্বান করি-ভে করিতে অগ্নিও মারুতের নাার তোমার সেনা-मर्था विष्त्र क्रियन।

হে রাজেন্ত্র! সমরে অপরাজের, মহাবীর্যা, পুরুষ-শ্রেষ্ঠ বৃদ্ধরাজ বিরাট ও ক্রপদও মহারথ বলিয়া আমার অভিমত; কেন না সেই ক্ষত্রহর্ম-পরারণ রাজ-বয় বয়সে বৃদ্ধ হইলেও শক্তি-সহকারে বীর-প্রস্থিত-পথে অবস্থিত হইয়া পরম বস্ত্র করিবেন।

হে রাজন্! সেই আর্যাত্রত মহাধমুর্জারীরা উভরেই বৈবাহিক-সম্বন্ধ ও বলবীর্য্য-সম্বন্ধ-হেতুক স্নেল্-বীর্য্যে আবদ্ধ আছেন। হে কুরুপুক্ষব! কারণ পাইয়া সমস্ত মহাভুক্ত মানবেরাই ছুর বা কাতর হইয়া থাকেন ; পরস্ত মরণৈক-পরায়ণ এই দৃচ্ধস্বা পার্থিব-ছয় প্রাণ বিসর্জন করিয়া পরম শক্তি-সহকারে বিমর্দ্ধ-কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবেন। হে পরস্তপ! এই মহাধমুর্জারী লোক-বীর সমর-দারুণ উভয় নরেন্দ্রই জীবিত-নির-পেক্ষ হইয়া সম্বন্ধিভাব ও বিশ্বাস-পরিরক্ষণ করত পৃথক্ পৃথক্ অক্টোহিণী সমভিব্যাহারে মহৎ কর্মা করিবেন।

পাণ্ডব-রধাতিরধসংখ্যার একোনসপ্রত্যধিক শততম অধ্যার সমাপ্ত 🛚 ১৬৯ 🗈

ভীয় কৰ্ছিলেন, হে ভারত ! আমার মতে পা-ঞালরাজ-পুত্র পরপুর-বিজয়ী শিখণ্ডী যুধিষ্ঠিরের একজন রথপ্রধান। এই ব্যক্তি পূর্বজন্ম-সিদ্ধ স্ত্রী-স্বভাবের সংহার করিয়া সংগ্রামে তোমার সেনা-গণ-মধ্যে পরম যশোরাশি বিস্তৃত করত যুদ্ধ করি-বেন। ইহাঁর পাঞ্চাল ও প্রভক্তর-প্রভৃতি বিশুর সেনা আছে; সেই রপ-সমূহ-সহকারে এই বীরবর মহৎ কর্ম করিবেন। হে রাজন্! পাণ্ডবদিগের সর্ব্ব সেনা-মধ্যে সেনানী, জেণ্ণ-শিষ্য, মহারথ ধৃষ্ট-ত্নামও অতিরথ বলিয়া আমার অভিমত। এই বীর যুগক্ষয়ে সম্যক্ কোধপরীত ভগবান্ পিনাকপাণির ন্যায় সমরে শত্রুদিগকে পীড়িত করত যুদ্ধ করি-বেন। রণ-প্রিয় যোধমুখ্যেরা, সংগ্রামে দেবগণের नााय रेशाँत मरे समर् तथ-मिनाटक वहाय श्रयुक সাগর-তুল্য বলিয়া বর্ণন করেন। হে রাজেন্দ্র! ধৃউছান-তনর ক্ষত্রধর্মা বালকত্ব-হেতুক অধিক পরি-অম করে নাই; একারণ তাহাকে আমি অর্করণ বলিয়া মনে করি। হে ভারত। মহাধনুকারী, মহা-तर्थ, निराम-शूक किताक वृक्तिक्यू गुरिकिटत्रत नवसी। এই लोर्यामानी क्रिलिंड मनुद्ध महा-

রথগণের স্কর মহৎ কর্ম করিবেন। হে রাজেন্ত!
পাওবগণ-মধ্যে ক্ষত্রধর্ম-রত, পরপুর-বিজয়ী, ক্ষত্রদেব রথোন্তম বলিয়া আমার অভিমত। পাঞালসন্তম জয়ন্ত, অমিভৌজা ও মহারথ সত্যজিৎ,
ইহারা সকলেই মহান্তা ও মহারথ। হে তাত!
সংগ্রামে ইহারা কুপিত-কুঞ্জর-পুঞ্জের ন্যায় যুদ্ধ
করিবেন। শান্তান্ত্র, শোর্যাশীলী, চিত্রযোধী, রুতী,
দূঢ়বিক্রম, মহাবল-পরাক্রান্ত অজ ও ভোজ এই
মহারথ-ত্বয় পাওবার্থে পরম শক্তি-সহকারে যুদ্ধ
করত শক্ত ক্ষয় করিবেন।

হে রাজেন্দ্র! যুদ্ধত্র্মদ কেকয়রাজ-পুত্র পঞ হিত-ধজ। হে নৃপতে! কাশিক, স্থকুমার, নীল, স্থাদত্ত, শব্ধ ও মদিরাশ্ব, ইহাঁরাও সকলেই রথ-প্রধান, সমর-কোবিদ, সর্বাস্ত্র-বিশারদ্ভও মহাত্মা বলিয়া আমার অভিমত। মহারাজ! বার্দ্ধকেমি-কেও আমি মহারথ বলিয়া মনে করি এবং চিত্রা-যুধকে রথোক্তম স্বীকার করি, যেহেতু ডিনি সমর-শোভী এবং কিরীটীর ভক্ত। চেকিতান ও সত্য-ধৃতি, ইহাঁরাও পাগুবদিগের মহারথ; এই পুরুষ-ব্যাছেরা উভয়েই রথজেন্ঠ বলিয়া আমার অভি-মত। হে ব্লাজেন্দ্র ! ব্যাঘদন্ত, চক্রদেন ও সেনাবিন্দু, ইহাঁরাও পাণ্ডবদিগের রথোন্তম বলিয়া পরিগণিত, সন্দেহ নাই। অপিচ'ক্রোধহস্তা-নামে যে বীরবর বাস্থদেব অথবা ভীমসেনের সমান, তিনিও সমরে অদীম বিক্রম প্রকাশ-পূর্বক তোমার সৈনিকদিগের সহিত যুদ্ধ করিবেন। হে বিভো! • ভূমি আমাকে, দ্রোণকে কি রূপকে যেৰূপ বিবেচনা কর, রুধ্সন্তম উক্ত বীরকেও সেইৰপ সমরপ্লাঘী জ্ঞান করিবে। পরপুর-বিজয়ী পরম শীঘ্রান্ত, শ্লাঘনীয়, নরোত্তম কাশিরাজ আমার নিকটে একগুণ রথ বলিয়া মন্তবা; অপিচ এই জ্ঞপদনন্দন যুদ্ধে বিক্রান্ত সমর-শ্লাদী যুৱা পুৰুষ সত্যজিৎ অউগুণ রথ বলিয়া স্থী-কার্যা, কেন না ধৃষ্টগুলের তুল্যকক্ষ হওয়ায় ভিনি অতিরথত্ব প্রাপ্ত হইরাছেন এবং বশোলিক্ট্ হইরা পাগুবদিগের মহৎ কর্মণ্ড নির্বাহ করিবেন। সহা-বীর্যা পাণ্ডারাজ পাণ্ডবগণের অপর এক মহান্ রথী; ইনি অমুরক্তও বটেন এবং সূরও বটেন, স্থতরাং তাঁহাদিগের ধুরন্ধর হইবেন। মহাধন্ধর্মারী দৃঢ়ধন্বাও পাণ্ডবদিগের আর এক মহারথ। হে পর-পুরঞ্জয়! কৌরবজ্ঞেষ্ঠ জ্ঞোনিমান্ ও পার্থিবেক্স বস্থ-দান, ইহারা উভয়েই অতিরথ বলিয়া পরিস্থিত। পাণ্ডব-রথাতিরথসংখ্যায় সপ্তভাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৭০॥

ভীয় কহিলেন, মহারাজ! পাগুরদিগের মহারথ রোচমান সমরে শক্র-সৈন্য-মধ্যে অম্বের ন্যায় যুদ্ধ করিবেন। ভীমসেনের মাতৃল মহাধমুর্দ্ধারী মহাবল কুন্তিভোজ পুরুজিৎ অতিরথ বলিয়া আমার অভিমত। এই রথ-পুরুব চিত্রঘোধী মহাধমুর্দ্ধারী বীরবরকে আমি বিলক্ষণ কৃতী, নিপুণ ও সমর্থ বিবেচনা করি। হে ভারত! ইক্র ষেমন দানবগণের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তিনি সেইবুপ বিক্রম প্রকাশ-পূর্বক যুদ্ধ করিবেন। তাঁহার যে সমস্ত বিখ্যাত যোধগণ আছে, তাহারাও যুদ্ধ বিশারদ; স্থতরাং পাণ্ডুপুত্রগণের প্রিয় ও হিতকার্যো নিরত ও অবস্থিত হইয়া সেই বীর ভাগিনেয়দিগের নিমিত্ত সংগ্রামে স্থমহৎ কর্ম করিবেন।

মহারাজ! ভীমনেন-পুত্র হিড়িয়া-গর্ত্তভাত রাক্ষ-সেন্দ্র ঘটোৎকচ বহু মায়াবী ও রথমূথপতির মুখ-পতি বলিয়া আমার অভিমত। সেই সমর-প্রিয় মায়াবী এবং তাহার বশবর্তী সহায়ভূত যে সমস্ত বীর্যাশালী রাক্ষ্য আছে, সকলেই সংগ্রামে ঘার-তর মুদ্ধ করিবে। এই সমস্ত ও অন্যান্য বহুল জন-পদেশ্বরণণ বাসুদেবকে অথ্যে করিয়া পাণ্ডব-কা-র্যার্থে সমত্রত হইয়াছেন। হে রাজন! মহাদ্ধা

রের যে সকল রথ, অতিরথ ও অর্দারথ আ-ছেন, তংসমুদারের মধ্যে ইহাঁরাই প্রধান। ইহার। মহেন্দ্র-তুলা-বীর্যালালী কিন্নীটি-কর্তৃক অভিরক্ষিতা
যুখিন্তিরের ভীষণ সেনাকে সমরে পরিচালিতা করিবেন। হে বীর! সেই মারাভিজ্ঞ, জরলিক্স যোধগণের সহিত আমি সংগ্রামে জর বা নিধন আকাল্ফা
করত যুদ্ধ করিব। চক্র ও পাণ্ডীবধারী রংগান্তম
ক্ষার্ক্ত্রন সন্ধ্যাপত চক্র স্থর্যোর ন্যায় সমাপত
হইলে আমি ভোমার নিমিত্তে তাঁহাদিগের প্রতিপক্ষেও পমন করিব এবং যুধিন্তিরের অন্যান্য যে
সমন্ত রণজ্ঞেঠ সেনাপতি আছেন, নিজ নিজ সৈন্যগণ-সহ তাঁহাদিগের অভিমুখেও পতিত হইব।

হে কৌরবেক্র ! প্রাধান্য অমুসারে পাগুবদিগের এই রখ, অতিরখ ও অর্দ্ধরণ সমস্ত তোমার নিকটে কীর্ত্তিত হইল। হে ভারত! আমি যে পর্যান্ত দেখি-তে পাইব, সে পর্যান্ত অর্জুন, বাস্থদেব কি অন্যান্য পার্থিবগণ, সকলকেই নিবারিত করিব; কিন্তু হে মহাবাহো! সমরে প্রতিযুদ্ধকারী উদ্যতান্ত্র পাঞ্চাল-পুত্র শিধগুীকে দেখিয়া আমি নিহত করিব না। পিতার প্রিয় করণে অভিলাষী হইয়া আমি যে প্রাপ্ত রাজ্যও পরিত্যাগ-পূর্বক ব্রহ্মচর্য্যে অবস্থিত হইয়া চিত্রাঙ্গদকে কৌরবগণের আধিপত্যে এবং শিশু বিচিত্ৰবীৰ্য্যকে যৌবব্লাজ্যে অভিষিক্ত করিয়া-ছিলাম, তাহা সকল লোকেরই বিদিত আছে। ভূমগুলে সকল রাজগণ-গোচরে দেবত্রতত্ব অর্থাৎ ব্রক্ষচারিত্ব বিজ্ঞাপন করিয়া আমি জ্রী কি জ্রীপূর্ব वां क्रिक्ट कथनरे विनचे क्रिक्ट भारत ना। एर রাজন্ ! শিখণ্ডী যে স্ত্রীপূর্ব্ব, বোধ হয় তাহা তোমার শ্রুত হইয়াছে ; দে পূর্বে কন্যা হইয়া সম্প্রতি পুত্র-ৰূপে ৰুণিয়াছে; অতএৰ হে ভারত! আমি তাহার ্রহিত যুদ্ধ করিব ন।। অপিচ সমরে অন্যান্য যে সমল্ভ পার্থিবপণের সহিত সমাগত হইব, তাঁহা-हिरभन्न नकनरकरे निरुष कतिन, किन्न कृतीशूख-मिन्नरक विनके कतिएक शांतिव ना।

পাণ্ডব-রথাভির্থসংখ্যার রথাভির্থসংখ্যান প্রকরণ ও একসপ্তত্যধিক শতভম অধ্যার সমাপ্ত॥ ১৭১॥ অহোপাধ্যান প্রকরণ। 💛 🗥 🕾

ছুর্যোধন কহিলেন, হে গঙ্গানন্দন ভরতভোঁঠ পিতামহ! হে মহাবাহো! "আমি নোমক-সহ পা-ফালদিগকে নিহত করিব স পূর্বে এবপ উক্তি করিয়া সম্প্রতি সমরে আততায়ী উদ্যতান্ত্র শিখণ্ডী-কে দেখিয়া কি নিমিক্ত বধ করিবেন না, তাহা ব্যক্ত করুন।

ভীম কহিলেন, হে ছুর্য্যোধন! আমি শিখণ্ডীকে मः धोटम निर्दोक्षण क्रिया य निर्मिष्ठ वंध क्रिय ना, এই ভূপালগণের সহিত সেই কথা শ্রবণ কর। হে ভরতর্বভ! আমার পিতা লোকবিখ্যাত ধর্মাদ্ধা মহারাজ শান্তমু যথা সময়ে লোকান্তর প্রাপ্ত হই-লেন। অনন্তর আমি প্রতিক্তা পরিপালন করত ভ্রাতা চিত্রাঙ্গদেক মহারাজ্যে অভিষিক্ত করিলাম। চিত্রাঙ্গদ দ্বিধন প্রাপ্ত হইলে সভাবভীর মতে অব-স্থিত হইয়া বিচিত্রবার্যাকে বিধি-পূর্বক রাজপদে প্রতিষ্ঠিত করিলাম। হে রাজেক্র ! কনিষ্ঠ হইলেও ধর্মানুসারে মৎকর্ভৃক অভিষিক্ত হইয়া ধর্মাত্মা বি-চিত্রবীর্যা কেবল আমারই প্রতীক্ষা করিতেন। হে তাত! আমিও অমুৰূপ কুল হইতে কন্যা আহরণ-পুর্বক তাঁহার দারক্রিয়া নির্বাহার্থে মন করিলাম। শুনিলাম, তৎকালে অপ্ৰতিম-ৰূপ-সম্পন্না অয়া, অশ্বিকা ও অম্বালিকা-নামে কাশীরাজের তিনটি কন্যা স্বর্যরা হইয়াছে এবং পৃথিবীস্থ সমস্ত ভূপা-লেরাও তদর্থে আহ্ত হইয়াছেন। হেরাজেন্দ্র! ঐ রাজকুমারীগণের মধ্যে অয়া জোষ্ঠা, অম্বিকা মধ্যমা আর ছায়ালিকা কনিষ্ঠা। হে মহাবাহো! আমি এক রথেই কাশিপতির নগরীতে গমন-পূর্বক ঐ সর্কালকারভূষিতা কন্যাদিগকে অবলোকন করি-লাম। অনন্তর বীর্যাই তাহাদিগের শুল্ক, এইৰূপ অবগত হইয়া সমাহুত সমরে স্থিত যাবতীয়পাথিব নরেন্দ্রগণকে সম্যক্রপ আহ্বান-পূর্ব্ক কন্যাগুলিকে রধারোপিত করিলাম। কুমারীগণকে রথে ভুলিয়া আমি সমৰেত পাৰ্থিৰ-বৰ্গকে পুনংপুন এই কথা

ৰলিলাম, যে, " হে পাৰ্থিৰগণ! শান্তনুনন্দন ভীয় | কন্যা সকলকে হরণ করিতেছে, অতএব তোমরা প্রম শক্তি-সহ্ফারে ইহাদিগের মোচনের নিমিত্ত ৰত্নকর। হে নর্বভগণ! তোমরা স্পর্কান্তিত হই-হরণ করিতেছি । অনস্তর সেই মহীপালেরা কো-श्रांविके हहेशा आञ्च्रश्नमञ् • छेश्राशन-शृद्वक मञ्रूर-পতিত হইলেন এবং সার্থিদিগকে " যোগ যোগ " অর্থাৎ রথসজ্জা কর, এইরূপ আদেশ করিলেন। হে বিশাম্পতে ! সেই ভূপালগণ-মধ্যে রথীরা মেঘ-मृन्न तथ-निकदत्र, शक-रशाधीता शक्र-ममूट्ट এবং অশ্ববারেরা হৃষ্টপুষ্ট অশ্ব সকলের উপরে আবঢ় হইয়া আয়ুধ-জাত উত্তোলন-পূর্বক সমুৎপতিত इरेलन जवः मकरल मिलिया स्विभूल द्रथ-मगुर-দ্বারা সর্বাদিকেই আমাকে পরিবেইন করিলেন। আমিও সর্বত্ত শর বর্ষণ-ছারা তাঁহাদিগকে পরি-বারিত করিলাম এবং দেবরাজ যেমন দানবদিগকে প্রাজিত করিয়াছিলেন, সেইৰূপ একাকীই সকল ভূপালগণকে জয় করিলাম। হে ভরতর্যভ! তাঁহারা আক্রমণে উদ্যত হইলে আমি হাসিতে হাসিতে প্রদীপ্ত শর-নিকর-দ্বারা তাঁহাদিগের ছেম-পরিদৃত ৰিচিত্ৰ-ধজ সমস্ত পাতিত করিয়া কেলিলাম এবং এক এক বাণেই অশ্ব, গজ ও সার্থি সকলকে ভূতল-শারী করিলাম। আমার সেই শীঘ্রান্ততা দৃটি করিয়া রাজগণ পরাজাুথ ও ভগ্ন হইরা পড়িলেন। হে মহা-ৰাছো! অনন্তর আমি ভ্রাতার নিমিন্ত সেই কন্যা সৰল আহরণ-পূৰ্বক সভাৰতীকে সমৰ্পণ করিলাম এবং যুদ্ধ-রুত্তান্তও ষথাবৎ নিবেদন করিলাম।

কাশিরাজ-কন্যাহরণে ছিসপ্রতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৭২॥

ভীয় কহিলেন, হে ভরতশ্রেষ্ঠ ! তদনস্কর আমি কৈবর্ত-কন্যা বীর-জননী জননীর সন্নিহিত হইয়া অভিবাদনাতে এই কথা বলিলাম, 'মাতঃ! আমি

পার্থিবগণকে জন্ম করিয়া বিচিত্রবীর্ষোর নিমিত কাশিপতির এই কনাা কয়েকটি আনরন করিয়াছি; देशता वीर्याक्षका, अरे निमाउ रे वाह्यल स्तर করিরা আনিরাছি থ হে নৃপতে ! অনন্তর সভাবডী হুফটিতা হুইয়া আমার মন্তকে আড্রাণ-পূর্বক বা-পাকুল-নয়নে কহিলেন, "বংস! ভাগ্যক্রমে তুমি জর লাভ করিয়াছ ^গ। পরে সত্যবতীর অনুমতি-ক্রমে বিবাহ উপস্থিত হইলে, কাশিপতির জ্যেষ্ঠা कना। मलब्का रुरेन्ना जामारक वरे कथा विल्लान, " হে ভীম ৷ আপনি সর্বাশাস্ত্র-বিশারদ ও ধর্মজ্ঞ ; অতএব আমার ধর্মামুগত বাক্য জ্ঞাবণ করিয়া তাহা রক্ষা করা আপনকার উচিত। পূর্ব্বে আমি শালুপতিকে মনে মনে বরণ করিয়াছিলাম এবং তিনিও আমার পিতার অগোচরে নির্দ্ধনে আমারে প্রার্থনা করিয়াছিলেন; অতএব হে রাজন্ ভীমা! আপনি কৃত্তকুলে উৎপন্ন হইয়া কি প্রকারে ধর্মের অতিক্রম করিয়া অন্যাভিলাবিণী এই কামিনীরে নিজ গৃহে বাস করাইতে পারেন? হে মহাবাহে৷! वुक्ति-काता व विषय विषय कर्ण मरन मरन िखा করিয়া যাহা উপযুক্ত হয়, তাহাই করুন। হে বি-শাম্পতে ৷ সেই শালুরাজ নিশ্চয়ই আমার প্রতীক্ষা করিয়া রহিয়াছেন; অতএব হে কুরুশ্রেষ্ঠ ! আমা-কে গমনে অমুক্তা প্রদান করুন। হে মহাবাছো! হে ধার্মিকবর ! আমার প্রতি রূপা করুন ; আমরা শুনিয়াছি, আপনি পৃথিবীতে সতাত্ৰত বলিয়া বি-খাত "

অহা-বাক্যে ত্রিসপ্তত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৭৩ ॥

তীয় কহিলেন, হে নরাধিপ! অনন্তর আমি গন্ধ-বতী কালীকে, মন্ত্রিগণকে, ঋতিক্ সকলকে এবং পুরোহিত-কাকে বিজ্ঞাপন-পূর্বক তাঁহাদিগের অক্সু-মতিক্রমে জোন্ঠা কন্যা অহাকে গমনে অক্সুক্রা দিলাম এবং তিনিও হন্ধ ছিজাতিগণ-কর্তৃক পরি- রক্ষিতা ও ধাত্রী-কর্ত্ত্ব অমূপতা হইয়া শালুরাজ-পুরে গমন করিলেন। কন্যা গমনমার্গ অভিক্রমা-নম্বর শালুরাজের সলিহিতা হইরা তাঁহাকে এই কথা ৰলিলেন, হে মহাবাহো! হে মহামতে! আমি অাপনকার উদ্দেশে আগমন করিলাম।

হে বিশাম্পতে! তথন শালুপতি ঈবং হাস্য করিয়া তাঁহারে কহিলেন, হে বরবর্ণিনি! তুমি অন্য-পূর্বা, একারণ আমি ভোমারে ভার্যা করিতে প্রার্থনা করি না। হে ভদ্রে! তুমি পুনরায় ভীয়-সমীপে গমন কর; ভীয় তোমাকে বল পূর্বক এহণ করিয়াছিলেন, স্থতরাং আমি আর তোমার পাণি-গ্রহণে ইচ্ছা করি না। ভীয়া যখন ভূপালগণকে পরা-ভূত করিয়া করে ধারণ-পূর্ব্বক তোমারে হরণ করিয়া লন, তৎকালে তুমি বিলক্ষণ প্রীতিমতী ছিলে; অতএব হে বরবর্ণিনি! অন্যপুর্বা ত্বাদৃশী রমণীতে আমি ভার্যার্থী নহি। বিজ্ঞানাভিজ্ঞ, অপ-রের ধর্মনির্দেশকারী মন্বিধ ভূপতি পরপূর্বা কামি-নীরে কি প্রকারে স্ব গৃহে প্রবেশ করাইতে পারে? অতএব হে ভয়ে! তুমি অবিলয়ে যথা ইচ্ছা গমন কর।

হে রাজন ! তথন অহা অনঙ্গ-শর-পীড়িতা হইয়া তাঁহাকে কহিলেন, "হে মহীপাল! এৰপ বলিবেন না; আপনি য়াহা বলিতেছেন, তাহা কোন প্রকা-রেই সতা নহে; ভীম্ব-কর্ত্বক অপকৃতা হইরা আমি কধনই প্রীতিযুক্তা হই নাই; ভীন্ন যখন ভূপাল-গাকে দুরীকৃত করিয়া বলপূর্বক আমারে গ্রহণ करत्रन, जश्कारण व्यामि त्त्रापन कत्रिरजिङ्णाम; অভএৰ হে শাল্পতে! এই ভক্তা নিরপরাধা বালা-কে ভজনা করুন! দেখুন, ভক্তগণের পরিত্যাগ ধর্মতঃ প্রশন্ত নহে। আমি সমরে অপরাজ্ব গঙ্গানন্দন ভীন্নকে পুনঃপুন আমত্রণ করিয়া তাঁহার অমুজ্ঞাক্রমেই আনিয়াছিঃ হে বিশাম্পতে ! শুনি-লাম, দেই মহাবাছ ভীয় স্বয়ং আমারে ইচ্ছা করেন না; ভাতার নিমিত্তেই তাঁহার সেইৰূপ প্রয়ত্ব হই- রাছিল। হে রাজন্! গঙ্গাতনর আমার আর বে ष्ट्रे खेतिनी खाँदका ও खद्यानिकाटक नरेसा योन, তাঁহাদিগকে তাঁহার ক্মিষ্ঠ জ্রাতা বিচিত্রবীর্ব্যে সম্প্র-দান করিয়াছেন। ছে পুরুষব্যাঘ্র শাল্পতে! আপনা ভিন্ন আমি যে অন্য বন্ন চিন্তা করি না, তৰিবনে মন্তক স্পর্ল-পূর্বক শপথ করিতেছি। হে রাজেন্দ্র! আমি অনাপূর্বা হই 🕻 আপনকার নিকটে উপ-স্থিতা হই নাই; হে শালু! আমি আত্মার শপধ-পূৰ্ব্বক ইহা সভাই বলিতেছি। অভএৰ হে বিশা-लाकः ! ভবদীয় প্রসাদাভিলাবিণী, অনন্যপূর্বা, স্বয়ং উপস্থিতা এই কুমারীকে ভঙ্গনা করুন '!

হে ভরতভাষ্ঠ! কাশিপতির ছুহিতা এইৰূপ সন্তা-ষণ করিলেও শালু জীর্ণনির্মোক-ত্যাগী ভুক্তকের ন্যায় ভাঁহারে পরিভ্যাগ করিলেন। কন্যা এইৰূপ বছবিধ বাকাু-দারা প্রার্থনা করিলেও শালুপতি ঠাঁহার প্রতি আদ্ধা করিলেন না। অনন্তর অয়া রোষাবিকী হইয়া অঞাপূর্ণ-নয়নে, বাষ্পাগদাদ-বচনে কহিলেন, রাজন্! ডোমা-কর্তৃক পরিত্যক্তা হইয়া আমি যেখানে যেখানে গমন করিব, সেই খানেই সাধুরা আমার রক্ষিতা হইবেন; কেন না সত্যের কখন বিধংস নাই।

হে কুরুনন্দন! তংকালে এইৰূপ সম্ভাষমাণা ও कब्रगञ्जदत्र পরিদেবনকারিণী সেই কাশিরাজ-কন্যা-কে শালু অনায়াসে পরিত্যাগ করিলেন এবং "যাও যাও " পুনঃপুন এইৰপ সম্ভাষণ করত কহিলেন, হে স্বশ্রোণি! আমি ভীয় হইতে ভয় করি; ভুমিও ভীমের পরিগৃহীতা; অতএব শীঘ্র গমন কর। অহা অদীৰ্ঘদৰ্শী শাল্-কৰ্তৃক এইৰপ সম্ভাবিতা হইয়া কাতরা কুররীর ন্যায় রোদন করিতে করিতে নগর হইতে নির্গতা হইলেন।

অম্বা-শাল্বসংবাদে চতুংসপ্তত্যধিক শততম 💮 অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৭৪॥

-

ভীয় কহিলেন, ছুঃধিতা কাশিরাজ-ছুহিতা নগর

रेट निक्रमण कत्र अरेक्श विद्या कत्रितन, य, পৃথিবীতে আমার মতবিষমন্থা যুবতি আর কুত্রাপি नाहे ; आमि वक्क्वर्स विक्षिका हहेगाहि अवः मानुक আমাকে পরিত্যাগ করিলেন। পুনরায় হন্তিন।পুরে গমন করাও আমার ছুংসাধা, বেহেতু শালেুর নিমিত্ত ভীয়ের নিকটে অনুমতি লইয়া আসিয়াছি; অতএব আপনাকেই নিন্দা বর্তরব, কি ছুরাসদ ভীম-কেই তিরস্কার করিব, না যিনি আমার স্বয়ন্থর করি-য়াছিলেন, সেই মৃঢ় পিতাকেই ভর্পনা করিব? অথবা এ আমার আপনারই দোষ, কেন না সেই দারুণ যুদ্ধ প্রবৃত্ত হইলে আমি ভীয়ের রথ হইতে শালুরে নিমিক্ত গমন করিলাম না কেন? হা! একণে মুড়ের নাায় আমি সেই ছুর্বুদ্ধিতার কল পাইলাম! যাঁহাদিগের দুর্নীতিক্রমে আমি এই স্থদারুণ আপদে পতিতা হইলাম, আঁহাদিগকে বিক্! ভীন্নকেও বিক্, যিনি বীর্যাপণ্যা করিয়া আ-মারে বেশ্যার নায় স্বয়ম্বর। করিয়াছিলেন, সেই নন্দমতি মূঢ়চিত্ত পিতাকেও ধিক্, আমাকেও ধিক্, শালুরাজকেও ধিক্ এবং বিধাতাকেও ধিক্। মনুষ্য चकीत्र ভाগरिया मर्काशाहे आश्व इहेत्रा शास्क तरहे, কিন্ত শান্তন্তনয় ভীমই আমার এই বিপদের প্রধান-দার ; অতএব সম্প্রতি তপস্যা-দারাই হউক বা যুদ্ধ-দ্বারাই হউক, তাহার প্রতি বৈর-নির্যাতন করা কর্ত্তবা বোধ হইতেছৈ; পরস্ত কোন্ মহীপতি যুদ্ধে ভীন্নকে পরাজিত করিতে উৎসাহাম্বিত হইতে পারেন ? হে ভারত ! এইৰূপ চিন্তা করিতে করিতে অন্বা নগরের বহির্জাগে পুণাশীল মহাত্মা তাপদ-গণের আশ্রমে গমন করিলেন, তথার তাপস-রুদ্দে পরিবারিতা হইরা সে রাত্রি বাস করিলেন এবং হরণ, মোচন ও শালু-কর্তৃক বিসর্জন প্রভৃতি আল্ল-গত সমুদায় র্ভান্ত বিভারিত ৰূপে তাঁহাদিগের নিকটে বর্ণন করিলেন।

হে মহাবাহো! তথায় তপোর্জ, শান্ত্রে ও আ-রণকে উপনিষদে আচার্যা, সংশিতত্রত, বহ্নিসাধা

ত্রৌত ও সার্ভ-কর্মে স্থানপুণ, শৈখাবত্য নামে এক জন মহান্ ব্ৰাহ্মণ ছিলেন। সেই মহাতপা শৈখা-বতামুনি অতিমাত্র কাতরা, শোক-ছুঃখ-পরারণা, ঘন ঘন নিশ্বাস-পরিত্যাগকারিণী, সাধী, বালা অস্থা-क् किरलन, हि उद्ध ! हि महाजारत ! এ बन प्यत-স্থায় আশ্রমস্থ তপোযুক্ত মহাত্মা তপন্ধীরা কি করিতে পারেন ? কিন্তু অহা দৃঢ়তা-সহকারে ভাঁহা-কে এই কথা বলিলেন, হে মহাভাগ ! আমার প্রতি অনুগ্রহ করুন। আমি প্রব্রজ্যাধর্ম ইচ্ছা করি-তেছি; দুশ্চর হইলেও তপস্যা করিব। আমি মোহ যুক্তা হইয়া পূর্বে জয়ে যে সমস্ত পাপ কর্ম করিয়া-ছিলাম, সেই সকলেরই এই ফল ভোগ করিতেছি, সন্দেহ নাই।—হে নিষ্পাপ তাপসগণ! পুনরায় স্বজনগণ-সমীপে গমন করিতে আমার উৎসাহ হয় না ; শালুও প্রত্যাখ্যান-পূব্বক আমারে দূর করিয়া দিয়াছেন; স্থতরাং সর্বা প্রকারে নিরানন্দা হইয়া সম্প্রতি তপস্যা-কর্মের উপদেশ ইচ্ছা করিতেছি; আপনারা দেব-তুলা, অতএব আমার প্রতি রূপা করুন। তথন সেই মুনিবর লৌকিক দৃষ্টান্ত, বেদ ও যুক্তি-দারা সাজ্না করত সেই কন্যাকে আশ্বাসিত। করিলেন এবং ব্রাহ্মণগণের সহিত তাঁহার কার্য্য সম্পাদনেও প্রতিক্রত হইলেন।

অয়া-শৈথাবত্য-সংবাদে পঞ্সপ্তত্যধিক শন্তত্ম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৭৫ ৷

ভীয় কহিলেন, অনন্তর সেই ধর্মপরায়ণ তাপসেরা তংকালে ঐ কন্যার প্রতি কিরপ করা কর্ত্ব্য,
এই চিন্তা করত সকলেই কার্যা-যুক্ত হইলেন। কেহ
কেহ কহিলেন, ইহাঁরে পিতৃগৃহে লইয়া যাও; কেহ
কেহ আমার ভংগনার্থে মভি করিলেন, কেহ কেহ
বা শাল্পতির নিকটে গমন করিয়া ভাঁহাকেই
নিয়োগ কর্ম বিধেয় বোধ করিলেন। পরস্ত ক্যেন
কোন তাপস কহিলেন, বে, না; তাঁহাকে মিয়োগ
করা উচিত নহে; কেন না ভিনি ইহাঁরে প্রভাগান

করিলাছেন। সংশিতত্তত ভাপসগণ এইৰপ বাদা-सूर्वाम कतिया श्रुनत्राय छाँशादक कश्रिकन, छट्छ! এৰপ অবস্থায় মনীবীরা কি করিতে পারেন? অত-এব প্রব্রেজ্যার প্রব্রোজন নাই; আমাদিগের হিত-বাক্য শ্রবণ কর ; এস্থান হইতে নির্ভা হইয়া পিতৃ-গৃহে যাও; তোমার পিতা কাশিরাক বেরপ কর্তব্য हन्न क्रिंदिन। छथात्र कम्याग-यूका ও नर्ख-छगा-দ্বিত। হইয়া তুমি পরম স্থাধে বাস করিবে। হে ভজে! ভূমি নারী. স্বতরাং সম্প্রতি পিতার নাায় ভোমার আর অন্য রক্ষক নাই। হে বরবর্ণিনি ! নারীর পিতা অথবা পতিই গতি হইয়া থাকেন; সমস্থার গতি পতি আর বিষমস্থার গতিই পিতা। হে ভাবিনি! ভূমি সহজে রাজপুল্রী তাহাতে স্থ-কুমারী কুমারী ; স্থতরাং প্রবজা তোমার সাতিশয় ছুঃধকরী হইবে; বিশেষত আশ্রমে বাস করিলে বিশুর দোষ আছে, পিতার গৃহে সে সকলের সম্ভা-বনা হইবে না।

অনস্তর অন্য কোন কোন তাপদেরা সেই তপ-त्रिनीएत्र कहिएलन, रह बत्रवर्गिनि! अहे निक्कन शहन কাননে তোমারে একাকিনী দেখিয়া ভূপালগণ প্রার্থনা করিবেন; অতএব তুমি কদাচ একপ মন করিও না।

অহা কহিলেন, হে তাপসগণ! আপনাদিগের মঙ্গল হউক, আমি কাশিনগরে পুনর্বার পিতৃ-ভবনে গমন করিতে পারিব না; তাহাতে বাস্কব-फि**रभन्न निःमत्मर ज्वारका** जोकन रहेव। वालाकात्ल ্চিরকাল পিতার গৃহে বাস করিয়াছিলাম, এক্ষণে ্ষার তথায় গমন করিব না ; সংপ্রতি তাপসগণ-কর্তৃক, পরিরক্ষিতা হইয়া তপশ্চরণের অভিলাষ করিছেছি। হে তাপনজেঠ মহাভাগগণ। প্রলো-কেও আমার আরু একপ মহাবিপদ্জনক দৌর্ভাগ্য না হয়, এই আশয়ে তপন্যা করিব।

ভীয় কহিলেন, সেই ব্রাক্তবেরা এইবপ কার্যা-

হোত্রবাহন সেই তপোরনে আসিয়া উপস্থিত হই-লেন। অনন্তর তাপদেরা স্বাগত প্রস্থাঞ্তি পূজা-বিধি আসন ও উদক-ছারা সেই নরপতির পু্জা क्तिरान । जिनि विष्योग्ध रहेशा छेशरवमन क्रिंति, বনবাসিগণ ভাঁছার আবণ-গোচরে পুনর্বার কন্যার প্রতি সম্ভাষণ করিতে লাগিলেন। হে ভারত ! অয়া ও কাশিরাজেরে সেই বৃজাস্ক শ্রবণ করিয়া ঐ মহাতেজা রাজর্ষি উদ্বিমনা হইলেন। মহাতপঃ মহাত্মা রাজ্ববি হোত্রবাহন অস্বার মাতামহ, স্বভরাং তাঁহাকে সেইৰূপ সম্ভাষণ করিতে শুনিয়া ও দেখিয়া অতিশয় কুপাবিউ হইলেন এবং কম্পমান-কলেবরে উপ্পিত হইয়া সেই কন্যাকে ক্রোড়ে ধারণ-পূর্ব্বক আশ্বাসিতা করিতে থাকিলেন। তিনি অহাকে তাঁহার বাসনোৎপত্তির আদি হইতে সমস্ত হৃতান্ত জিজ্ঞাসা কুরিলেন এবং তিনিও তাঁহাকে, যাহা याश इटेग्नाइल, ममुनाम विखातिष्ठ-कटन निद्वनन করিলেন। অনন্তর সেই স্থমহাতপা রাজর্ষি ছুংখ-শোক-সমন্বিত হইয়া মনে মনে কার্য্য নিশ্চয় করি-লেন এবং কম্পামান-শরীরে সেই স্বন্ধুগখতা কাডর: কন্যাকে কহিলেন, ভজে! পিতৃগৃহে গমন করিও না; আমি তোমার মাতামহ, অতএব আমিই ডুংখচ্ছেদন করিব। হে পুত্রিকে! তুমি আমারই অনুগতা ধাক। তুমি যে এৰপ পরিশুদ্ধা হইয়াছ, ইহাতে বোধ হইতেছে তোমার অন্তঃকরণ ছু:খ-ভারে পরিপূর্ণ হইয়াছে; অতএব আমার বাক্যে তুমি তপৰী জামদগ্য পরশুরামের নিকটে শমন কর। রাম তোমার স্থমহৎ ছুংখ ও শোক নিবারণ क्तिरवन ; जीव यपि ठाँशांत वाका तका ना करत्नन, তবে সমরে তাঁহারে নিহত করিবেন ; অতএব ভূমি तिरे कानाधि-मृष-एकची जार्गव ममीर्भ भ्रमम কর; সেই মহাতপা ভোমারে সমপুণে প্রতিষ্ঠাপিতা क्त्रिद्यन।

অনন্তর অয়া পুনঃপুন বাষ্প পরিত্যাগ করত কার্যা চিন্তা করিতেছেন, ইত্যুক্তরে তপস্থী রাজর্ষি । মাতামহ হোত্রবাহনকে মন্তক-ছারা অভিবাদন করি- রা মধুর স্বরে কহিলেন, আপনকার আদেশে আমি গমন করিব, কিছু সেই লোকবিখ্যাত মহাস্থা ভা-গৰকে কি দেখিতে পাইব? তিনি কি প্রকারে আ-মার তীত্র ছুঃখ নাশ করিবেন এবং কি প্রকারেই বা তাঁহার নিকটে যাইব, ইহা জানিতে ইচ্ছা করি।

হোত্রবাহন কহিলেন, ভব্তে! তুমি সত্যসন্ধ মহা-ৰল জামদ্যা রামকে মহাবনে উপ্রতর তপস্যায় বর্ত্তমান দেখিবে। রাম গিরিভোঠ মহেন্দ্র-শিখরে নিত্য অবস্থিতি করেন এবং বেদবিৎ ঋষি, গন্ধৰ্ক ও অপ্সব্লোগণও তথায় বিদামান থাকেন। তুমি সেই স্থানে গমন করিয়া সেই দৃঢ়ব্রত তপোর্দ্ধকে মন্তক-দ্বারা অভিবাদন-পূর্বেক আমার কথা বল এবং তোমার অভিপ্রেত কার্যাও বিজ্ঞাপন কর। ह् दर्भ । त्रहे नर्समञ्ज्ञधाति एक वीतवत क्रमहिन তনর আমার সধা ও প্রীতিযুক্ত স্থক্দ; অতএব আমার নাম করিলে, তিনি তোমার সঁকল কার্য্যই সম্পন্ন করিবেন। নরেন্দ্র হোত্রবাহন কন্যাকে এই কথা বলিতেছেন, ইতাবসরে রামের প্রিয় অনুচর ষক্তব্ৰণ তথায় প্ৰাত্ত্ত হইলেন। তথন সেই সহস্র সহস্র মুনিগণ ও বয়োর্দ্ধ রাজা হোতবাহন সকলেই গাত্রোপান করিলেন। হে ভরতভাষ্ঠ! অনন্তর সেই বনবাসিগণ পরস্পার মিলিত হইয়া তাঁহার আতিথা-সম্পাদনান্তে সকলে তাঁহাকে বে-উন করিয়া বসিলেন, পরে প্রীতিপ্রফুল ও ক্ষটিত্ত হইয়া বছতর দিবা, ধনা ও মনোরম কথার প্রসঙ্গ ক্রিতে লাগিলেন। অনন্তর কথাবসানে মহাত্মা রাজর্বি, হোত্রবাহন অক্তত্রণকে মহর্বিভােঠ রামের क्था जिब्छाना क्रिलिन; क्रिलिन, रह महावादश অক্তব্রণ! বেদজ্ঞতোঠ প্রতাপবান্ জামদগ্য সম্প্রতি কোধায় দৃষ্ট হইতে পারেন ?

অক্তরণ কহিলেন, হে প্রভাব-সম্পন্ন পার্থিব! রাম "রাজর্ষি হোত্রবাহন আমার প্রিয় মিত্র ² এই বলিয়া সততই আপনকার কীর্ত্তন করেন; আমার বোধ হয়, আপনার দর্শনাকাক্ষায় তিনি কলা প্রভাতে এই স্থানে উপস্থিত হইবেন; অতএব এই খানে আইলেই তাঁহাকে দেখিতে পাইবেন। হে রাজর্বে! এই কন্যাটি কি নিমিন্ত বনে আসিরাছেন, ইনি কাহার কন্যা, আপনকারই বা কে হন, ইহা জানিতে আমার ইচ্ছা হইতেছে।

হোত্রবাহন কহিলেন, হে বিভো! এটি আমার দৌহিত্রী, কাশিরাজের প্রিয় পুঞী; ইহার নাম অয়। ह् उप्पाधन! कामित्राद्यत्र এই खार्था कन्या, जिन् কা ও অমালিকা-নামী ছুইটিক্রনিষ্ঠা ভগিনীর সহিত স্বয়য়রে অবস্থিতা হইয়াছিল। তাহাতে পৃথিবীক সমস্ত ক্ষল্রিয়কুল কন্যা-লাভার্থে কাশিপুরীতে সমা-গত হইয়াছিলেন। হে বিপ্রর্ষে ! তৎকালে তৃথায় মহা উৎসব হইয়াছিল। অনন্তর মহাবীধ্য মহাতেজঃ শান্তমুনন্দন ভীম্ম রাজগণকে পরান্ত করিয়া ঐ ডিন-টি কন্যা হরণ করিয়াছিলেন। সেই বি**শুদ্ধা**ত্মা প্রভাবশালী ভীয় মহীপাল বর্গকে নিংশেষে জয় করিয়া কন্যাত্রয় সমভিব্যাহারে হস্তিনার আপমন করিলেন এবং সভাবভীকে নিবেদন করিয়া ভাভা विष्ठिववीर्यात विवाह निमिष्ठ प्राष्ट्रा पिरलन। एक দ্বিজর্মভ ! তখন এই কন্যা বিচিত্রবীর্যাকে বিবাহারেথ উদাত এবং মাঙ্গল্য-স্থুত্রবন্ধনাদি দ্বারা সংস্কৃত হইতে দেখিয়া মন্ত্রিগণ-মধ্যে ভীয়াকে কহিল, ছে বীর! আমি মনে মনে শালুপতিকে পতিত্বে বরণ করি-য়াছি, অতএব হে ধৰ্মজ্ঞ। অন্যাসক্তা এই কামি-নীরে ভাতৃ-হত্তে সমর্পণ করা অাপনকার উচিত নহে। ভীয়া সেই কথা শুনিয়া মন্ত্রিগণ-সহ মন্ত্রণা করিয়া এবং সভাবতীর সভস্থ হইয়া বিচার-পূর্ব্বক ইহাকে বিসর্জন করিলেন। তথন এই কন্যা ভীষের অনুজ্ঞা পাইয়া হুটচিত্তে সৌভপতি শালের সন্ধি-হিতা হইয়া কহিল, হে রাজেন্দ্র! আমি পুর্বেষ व्यापनादकरे मदन मदन वद्गा काव्रशाहिलाम, अक्तद्व ভীয় আমাকে পরিত্যাগ করিয়াছেন, অভ্এব আপনি আমার ধর্ম রক্ষা করন। পর্যন্তু শালু ইহার চরিত্র বিষয়ে শক্ষিত হইয়া প্রত্যাধ্যান করি- লেন, সেই নিমিত্তই এ তপ্সার সাতিশর অভিলাবিনী হইরা তপোবনে আসিরাছে এবং আমিও
বংশের কার্ডন-ছারা ইহাকে জানিতে পারিলাম।
হে তপোধন! ছুঃধের উৎপত্তি বিষয়ে এ তীয়কেই
কারণ বলিয়া মনে করিতেছে।

জ্বা করিলেন, হে ছিজসত্তম! আমার জননীর জনক এই রাজর্ষি সঞ্জয় হোত্রবাহন যাহা বলিতে-ছেন, তাহাই বটে। হে মহামুনে! কজা ও অপ-মান ভয়ে পুনরায় স্ব কারে গমন করিতে আমার উৎসাহ হয় না; অতএব হে ভগবন্! সম্প্রতি আমার এই মতি হইতেছে, বে, ভগবান্ পরশুরাম আমাকে যাহা বলিবেন, সেই কার্যাই আমার সর্বা-তোভাবে কর্ত্রয়।

অক্তরণ ও অহা-সংবাদে বট্সপ্তত্যাধিক শত-তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৭৬॥

অন্ধতন্ত্ৰণ কহিলেন, ভদ্ৰে ! তোমার এই ছংখ উচিত হইতেছে।

দ্বার উপস্থিত, ইহার মধ্যে তুমি কোন্টির প্রতিকার

ইচ্ছা কর, তাহা আমাকে যথার্থ করিয়া বল। হে

অবলে ! যদি সৌভপতিকে বিবাহার্থে নিয়োগ করা
তোমার অভিমত হয়, তাহা হইলে মহাত্মা রাম
তোমার হিতকামনায় অবশাই নিয়োগ করিবেন;
অথবা যদি গঙ্গাতনয় ভীয়কে ধীসম্পন্ন রাম-কর্তৃক
সমরে নিচ্ছিত দেখিতে ইচ্ছা কর, ভার্গব তাহাও
ভীয় কহিলেন,
করিতে পারেন; অতএব হে শুচিস্মিতে ! এই
রাজ্যবি স্প্রত্মের ও তোমার বাক্য শুনিয়া এ বিষয়ে

হেটামার যাহা একান্ত কর্তব্য হয়, তাহা অদ্যই
অতিবাহিতা হইল
বিশেষ কপে চিন্তিত হউক।

শানাকে হরণ করিয়াছিলেন। আমার মন যে শাল্পতির প্রতি অভিনিবিউ হইয়াছিল, ভীর ভাহা জানিতেন না; অতথ্য হে ব্রহ্মা । ইহা বিচার করিয়াথ বিবরে আপনি ন্যায়ায়ুসারে মনে মনে বেরপ কার্যানিশ্চয় অবধারণ করেন, তাহারই বিধান করন। কুর-শার্দুল ভীয়ে কি শালুরাজে স্থাবা উভয়ের প্রতিই বেরপ আচরণ করা উপ্রযুক্ত হয়, তাহাই করন। হে ভগবন্! আমার ছংথের মূল এই যথাবৎ নিবেদন করিলাম, এক্ষণে যুক্তি অনু-সারে তদ্বিয়ে যেরপ বিধান হয়, তাহা আপনিই করন।

অর্কতরণ কহিলেন, হে বরবর্ণিনি! তুমি ধর্মের প্রতি লক্ষ্য করিয়া এই যে কথা বলিভেছ, ইহা উপযুক্তই বটে; এ বিষয়ে আমার এই বাক্য প্রবণ কর। হে ভীরু! যদি ভীয় ভোমারে হস্তিনার লইয়া না যাইতেন, ভাহা হইলে শালু রামের আদেশে ভোমারে মস্তক-দারা গ্রহণ করিতেন। হে ভাবিনি! ভীয় ভোমারে জয়-পূর্বক হরণ করিয়াছিলেন, সেই নিমিন্তই ভোমার প্রতি শালুরাজের সংশয় হই-য়াছে। হে সুমধ্যমে! ভীয় পুরুষমানী ও জয়যুক্ত; অতএব তাঁহার প্রতি বৈরনির্যাতন করানই ভোমার উচিত হইতেছে।

অস্বা কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! আমারও অন্তঃকরণে এই নিত্য কামনা রহিয়াছে, যে কোনক্রমে ভীয়কে সমরে নিহত করাইতে পারি। হে মহাবাহো! যাহার নিমিত্তে আমি স্বড়ংখিতা হইয়াছি, সেই ভীয়ই হউক বা শালুই হউক, যাহাকে আপনি দোধী স্থির করেন, তাহারই শাসন করুন।

ভীয় কহিলেন, হে ভরতক্ষেষ্ঠ ! এই ৰপ কথোপকথন করিতে করিতে তাঁহাদিগের সেই দিবস গত
হইল এবং স্থাকর-দীতোক্ষ-বায়ুদেবিতা রজনীও
অতিবাহিতা হইল। অনস্তর জটাচীরধারী-তেজঃপ্রদীপ্ত পরশ্বনম মুনি শিষ্যবর্গে পরিবৃত হইয়া
প্রাপ্ত্রুত হইলেন। হে রাজশার্দ্দ্দ ! সেই পরশুবাহী, ধত্গধারী, ধনুজ্পাণি, পাপ-শূন্য, মহাত্মা,
ভূপাল হোত্রবাহনের উদ্দেশে আগমন করিলেন।
তাঁহাকে দৃষ্টি করিয়া তাপসগণ, সেই মহাতপা নরপতি ও তপত্মিনী কন্যা, সকলেই অঞ্জলি বন্ধানপূর্বাক দণ্ডায়য়ান হইলেন এবং অব্যথা হইয়া

মধুপর্ক-ছারা ভার্গবের পূজা করিলেন। তিনিও যথা-নাবে অচিত হইরা তাঁহাদিসের সহিত উপবিষ্ট হইলেন। হে ভারত! অনন্তর কামদগ্য ও হোত-বাহন উভরে বসিরা প্রথমে অভীতর্ত্তান্তের কথোপ-কধনু করিতে লাগিলেন ; পরে তৎপ্রসঙ্গের অব-সানে রাজর্ষি সঞ্জয় অবসর বুঝিয়। মহাবল ভৃগু-**अर्थर कर पर्युक मन्त्र** वाका कहिरलन, हि রাম! এই কন্যাটি কাশিরাজের ছুহিতা এবং আ-मात्र (मोहिजी; (इ कार्याविभात्रमः! ইहात এकि कार्या चाट्ह, তाहा यथावर ध्ववं कक्रन। ইहार्ड রাম সন্মত হইয়া সেই কন্যাকে বলিলেন, তোমার কি কথা আছে বল। তথন অহা খলন্ত-পাবক-সদৃশ পরশুরামের সমিহিতা হইয়া কমল-দল-তুল্য কর-যুপল-দারা তাঁহার চরণযুগল স্পর্শ-পূর্বক মন্তক-ছারা অভিবাদন করিয়া সম্মুখে দগুরিষ্কানা হইলেন এবং শোক-পরারণা ও বাষ্পাকুল-লোচনা হইয়া রোদন করিতে করিতে সেই শরণ্য ভৃগুনন্দনের শরণাপন্না হইলেন।

রাম কহিলেন, হে নৃপনন্দিনি ! তুমি এই ভূ-পতির যেকপ, আমারও সেইৰূপ ; অতএব তোমার যে মনোচুংখ আছে ব্যক্ত কর, আমি তোমার বাক্য রক্ষা করিব।

আয়া কহিলেন, হে ভগবন্! হে"মহাত্রত। আদ্য আমি আপনকার শর্ণীপন্না হইলাম, অতএব ঘোর-তর শোকপঙ্কার্ণবে নিমগ্রা এই ছুঃখিনীরে তাহা হইতে উদ্ধার করুন।

ভীয় কহিলেন, ভ্গুশ্রেষ্ঠ প্রশুরাম তাঁহার ৰপ, অভিনব দেহ ও পরম সৌকুমার্যা নিরীক্ষণ করিয়া চিন্তাপর হইলেন এবং এ কি বলিবে, এইৰপ আ-দোলন করত রূপাবিউ হইয়া বছ ক্ষণ ধ্যান করি-তে লাগিলেন; পরিশেষে কহিলেন, ভোমার কি কথা আছে বল। তথন সেই শুচিন্মিতা ভার্যবের এই কথার তাঁহারে যথাবৎ সমুদার র্ত্তান্ত নিরেদন করিলেন। ভামদয়া, রাজপুঞ্জীর সেই বাক্য প্রবণ

করিয়া কার্যানিশ্চয় অবধারণ-পূর্বক সেই বরারোহাকে কহিলেন, হে ভাবিনি! আমি কুরুলেন্ড ভীমের নিকটে সন্দেশ প্রেষণ করিব; সেই নরাধিপ
আমার বাকা শুনিয়া অবশ্যই রক্ষা করিবেন।
গঙ্গাতনয় যদি একান্ডই মছুক্ত বাক্য প্রতিপালন
না করেন, তাহা হইলে আমি শক্ত-ভেজ্বারা সমরে
তাহারে অমাত্যপণের সহিত দক্ষ করিব। অধবা
তাহা হইতে তোমার মন যদি নির্ভ হয়, তবে
শাল্পতিকে বিবাহার্থে নিষোজিত করি।

অয়া কহিলেন, হে ভৃগুনন্দন ! শালুপতির প্রতি আমার পূর্ব্ব সংকম্পিতা অভিরতি প্রবণ করিয়াই ভীয় আমাকে বিসর্জন করিরাছিলেন। আমি সৌভরাজের নিকটে আসিয়া সেই ছুর্বচ ৰচনের উল্লেখ করিলাম; কিন্তু তিনি চারিতে পরিশঙ্কিত হইয়া আমারে গ্রহণ করিলেন না। অভএব হে ভৃগুনন্দন! স্ববুদ্ধি-দ্বারা এই সমস্ত বিষয় বিনিশ্চিত করিয়া সম্প্রতি যে উপায় করা কর্ডব্য হয়, ভাহার চিন্তা করুন। মহাত্রত ভীমই আমার এই বিপদের মূল ; যেহেতু তিনি বলে উৎক্ষেপণ-পূর্বাক আমারে বশবর্ত্তিনী করিয়াছিলেন। অতএব হে মহাবাহে। ! যাঁহার নিমিত্ত আমি ঈদৃশ ছুংখ পাইলাম, সেই जीवादकरे विनके कक्रन। एर ज्ञानार्षमृतः रेरात দারাই আমি উত্তম অপ্রিয় অর্থাৎ বৈর-শোধনের অনুষ্ঠান করি। হে ভার্গব ! ভীয় অভিলুক্ক, নীচ ও জয়গর্বিত ; অতএব তাঁহার প্রতিহিংসা করা স্বাপন-কার উচিত হইতেছে। হে বিভো! যৎকালে ভীয় আমারে হরণ করেন, তথন আমার হৃদয়ে 'কোন প্রকারে সেই মহাত্রতকে নিহত করাইব' **এইৰপ সংক**ল্পই হইয়াছিল। অভএৰ হে রাম! অধুনা আমার সেই কামনা সম্পাদন করুন। ছে মহাবাহো ! পুরন্দর যেমন হতাস্থরের সংহার ব্দরি-য়াছিলেন, ব্যাপনিও ভীন্নকে সেই ৰূপ বিন্ত ক্লুন।

রাম ও অয়া-সংবাদে সপ্তসপ্তত্যিক শৃতভ্য অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৭৭ ॥ জীয় কহিলেন, তথ্ন রাম "ভীয়কে নিহত কর্মন" এইক্পই নির্ম করা হুরা পুনংপুনং প্রেরণকারিণী রোদন-পরারণা অহাকে বলিলেন, হে বরবর্গনি কালি-কর্মো! ব্রহ্মবাদিগণের প্রয়োজন-ব্যতিরেকে আমি আর শস্ত্র গ্রহণ করি না; অতএব তোমার আর কি করিতে হইবে বল। হে রাজ-নন্দিনি! ভীয় ও শালু উভয়েই আমার যথেই বশাস্ত্রভূষ্টি হইবেন, অতএব হে অনিন্দনীয়-সর্বাঙ্গি! তুমি শোক করিও না, আমি ভোমার কার্যোন্ধার করিব; কিন্তু হে ভাবিনি! বিপ্রস্থানের নিরোগ ভিন্ন আমি কোন ক্রমেই শস্ত্র গ্রহণ করিব না; কেন না আমার এইকপই নির্ম করা হইরাছে।

অমা কহিলেন, প্রভো! যে কোন প্রকারে হউক, আমার ছুঃখ-মোচন করা আপনকার কর্ত্তব্য; সেই তুঃখও ভীম হইতে উৎপন্ন হইরাছে, অতএব তাঁহা-কেই শীঘ্র বিনত করুন।

রাম কহিলেন, হে কাশি-কন্যে! তুমি যদি বল, তবে ভীম ভোমার বন্দনীয় হইয়াও আমার বাক্যে ভোমার চরণ-দ্বয় মন্তক-দারা গ্রহণ করিবেন।

শয়া কহিলেন, হে রাম! যদি আমার প্রিয় ইচ্ছা করেন, তবে সমরে সমাহত হইয়া, গর্জনকারী অস্থ-রের ন্যায় ভীয়কে নিহত করুন; যাহা প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, তাহা সভ্য করা আপনকার উচিত হইতেছে।

কহিলেন, হে রাজন ! রাম ও অয়ার এইকাপ বাদান্ত্রাদ হইতেছে, এমন সময়ে পরমধর্মাত্মা
সক্ষতত্রণ ঋবি এই কথা বলিলেন, হে মহাবাহো
ভ্রুমন্দন ! শরণাগতা কন্যাকে পরিত্যাগ করিবেন
না ক্রুমাপনা-কর্ত্ক সমরে সমাহত হইয়া ভীয় বদি
শাপরান্ত হইলাম ই বলেন, অথবা আপনকার বাক্য
রক্ষা করেন, ভাহা হইলে ইহারও কার্য্য নিম্পার
হইবে এবং আপনকার বাক্যও সত্য করা হইবে ।
হে মহামুনে ! পূর্বে সমন্ত ক্রুম্যাদিগকে জয়
করিয়া আপনি ব্রাক্ষণগণ-সমীপে এই প্রতিজ্ঞা করি-

রাছিলেন, যে, ব্রাদ্ধাণ, ক্ষজির, বৈশ্য কি শুল্ল, যে কোন ব্যক্তি ব্রক্ষদেন্টা হইবে, তাহাকে বিনন্ট করিব এবং ভরপ্রাপ্ত শরণার্থী লোকেরা শরণাপদ হইলে জীবিত থাকিতে কোন ক্রমেই ভাহাদিগকে পরি-ভ্যাগ করিতে পারিব না; অপিচ যে ব্যক্তি স্মরে সমাগত সমস্ত ক্ষজিয়-কুলকে পরাস্ত করিবে, সেই দীপ্তাত্মা মানবকেও নিহত করিব। হে ভৃপ্ত-নদ্দন! সেই কুরুকুল-ধুরদ্ধার ভীম্যও এইনপ বিজয়ী হইয়া-ছেন, অতএব সংগ্রামে সমাগত হইয়া ভাঁহার সহিত যুদ্ধ করুন।

রাম কহিলেন, হে ঋষি-সন্তম! আমি পূর্ব-কৃত প্রতিজ্ঞা স্মরণ করিতেছি, তথাপি সাম-দ্বারা যাহা লক্ষিত হয়, তাহাই করিব। হে ব্রহ্মনৃ! কাশি-কন্যার মনোগত এই কার্যাট অতি মহৎ; অতএব ইহাঁরে সম্ভিব্যাহারে লইয়া আমি স্বয়ং তাঁহার নিকটে গমন করিব। রণশ্লাঘী ভাম যদি আমার বাক্য রক্ষা না করেন, তাহা হইলে আমার এই নিশ্চয় সংকর্পে রহিল যে, সেই উদ্ধত-স্বভাব ক্ষজ্রির-কে বিনক্ট করিব। মদীয় কর-নির্মুক্ত সায়ক-সমস্ত মানব-শরীরে যে সংসক্ত হইয়া রহে না, তাহা পূর্কো ক্ষজ্রির সমরেই তোমার বিদিত হইয়াছে।

মহাতপা পরশুরাম এই কথা বলিয়া সেই ব্রহ্মবাদিগণের সহিত প্রস্থানার্থে সংকণ্প করিয়া গাক্রোপ্থান করিলেন। অনস্তর সেই তাপদেরা তথায়
সেই রাত্রি বাস করিয়া প্রভাতে হোম ও জপক্রিয়া
সমাধানান্তে আমার হিংসার্থে প্রস্থিত হইলেন।
হে ভারত! পরিশেবে রাম সেই ব্রহ্মবাদিগণ ও
কন্যার সমভিব্যাহারে কুরুক্তেব্র-সমীপে আগমন
করিলেন। অনস্তর সেই মহান্ধা ভাপসগণ ভ্গুল্রেন্ঠ
পরশুরামকে অথ্যে করিয়া সর্য্বতী তীরে নিবিষ্ঠ
হইলেন।

রামের কুরুক্তের গমনে অফসগুডাধিক শড-তম অধ্যায় সমাপ্ত ৷ ১৭৮ ৷

ভীয় কহিলেন, হে রাজন ! অনন্তর সেই মহাত্রত জামনগ্য তথার অবস্থিত হইয়া তৃতীয় দিবদে আ-मात्र मिकटि अहेक्श अटम्म ध्यातन क्तिरलम, रव, আমি আগত হইরাছি, আমার প্রিয়কার্য্য সম্পাদন কর। দেই প্রভাব-সম্পন্ন মহাবল তপোনিধি আ-মার বিষয়ান্তে আগত হইয়াছেন শুনিয়া আমি প্রীভচিত্তে দেবকপ্প ঋত্বিক্,প্রুরোহিত ও অন্যান্য ব্রাহ্মণসণে পরিবারিত হইয়া একটি গোধন লইয়া অতিবেগে শীঘ্র তাঁহার নিকটে পমন করিলাম। প্রতাপবান্ জামদগ্না আমাকে অভিগত দেখিয়া সেই পূজা গ্রহণ করিলেন এবং এই কথা বলিলেন, ভীয় ! তুমি কামহীন হইয়াও কি বুদ্ধি আত্রয় করি-য়া এই কাশিরাজ-ছুহিতাকে স্বয়ম্বর-সময়ে হরণ করিয়াছিলে এবং কি নিমিত্তই বা পুনরায় পরি-ত্যাগ করিয়াছ ? তোমার পরিত্যাগ ক্রুতেই এই যশস্থিনী ধর্ম হইতে পরিভ্রম্টা রহিয়াছেন, কেন না তুমি যখন স্পর্শ করিয়াছ, তথন আর কোন্ ব্যক্তি ইহাঁরে গ্রহণ করিতে পারে? হেভারত! তুমি হরণ করিয়াছিলে বলিয়া শালু ইহাঁরে প্রত্যাখ্যান করিয়াছেন; অত্তব আমার আদেশে তুমি ইহাঁকে প্রতিগ্রহ কর। হে পুরুষব্যাঘ্র । এই রাজ-পুত্রী স্বধর্ম লাভ করুন; হে অনঘ! ইহাঁর এৰূপ অব-মান করা ভোমার উচিত নহে।

অনস্তুর তাঁহাকে বিশ্না দেখিয়া আমি এই কথা বলিলাম, ব্হন্থ আমি কোন প্রকারেই ইহাঁরে পুনরায় ভাতৃহত্তে সম্প্রদান করিতে পারি না। হে 🕈 কোন প্রকারেই হইতে পারিবে না। হে জামদগ্না! ভাৰ্গৰ! পূৰ্বেইনি আমাকেই বলিয়াছিলেন "আমি শালের হইরাছি " এবং আমিই ইহাঁকে শালের নিকট যাইতে অনুমতি দিরাছিলাম। আমার অমুমতি ক্রমে ইনি সৌতনগরে গমন করিয়াছি-লেন; অতএব সম্প্রতি ভয়, দয়া, অর্থ-লোভ কি কামনা-ছারা আমি ক্ষত্রধর্ম পরিভাগ করিতে পারি না ; কেন না ইহাই আমার চিরব্রত।

িহে নরপুষ্ণৰ ৷ অনন্তর রাম রোব-পর্য্যাকুল-নয়নে

আমাকে বলিলেন, " তুমি বদি আমার বাকা রক্ষা না কর, ভাহা হইলে ভোমাকে অমাভ্যথণের সহিত অদ্যই নিহত করিব।^৯

হে অরিনদম! রাম ক্রোধে পর্যাকুল-নেত হইয়া সংরম্ভভরে বারম্বার আমাকে এই কথা বলিতে লাগিলেন। আমি বিনয়-গর্ত্ত-বচনাবলি-ছারা তাঁ-হাকে পুনঃপুনঃ প্রার্থনা করিলাম, তথাপি তিনি শান্ত হইলেন না। তথন আমি সেই ব্ৰাহ্মণসভ্তম ভৃগুনন্দনকে মন্তক-দ্বারা প্রণাম করিয়া পুনর্কার কহিলাম, হে মহাবাহো! আপনি যে আমার সহিত

ইচ্ছা করিতেছেন, তাহার কারণ কি? হে ভার্গব! আমার বাল্যকালে আপনিই আমাকে চতুর্বিধ ধরুর্বিদ্যার উপদেশ দিয়াছিলেন; আমি আপনকার শিষা।

অনন্তর রাম ক্রোধ-সংরক্ত-নয়নে আমাকে পুন-রায় কহিলেন, হে ভীম্ব! তুমি আমাকে গুরু বলিয়া জানিতেছ অথচ আমার প্রীতি নিমিত্তে এই কাশি-রাজ-ছহিতাকে এহণ করিতেছ না ; ছে কুরুনন্দম ! ইহা ব্যতিরেকে আর কিছুতেই আমার শাস্তি নাই; অতএব হে মহাবাহো! ইহাঁরে গ্রহণ করিয়া আপনার কুল রক্ষা কর; তোমা-কর্ত্তুক বিভ্রংশিতা হওরাতেই ইনি স্বামী প্রাপ্ত হইতেছেন না।

এইৰূপ উক্তিকারী সেই পরপুর-বিজয়ী পরশু-রামকে আমি পুনর্বার কহিলাম, হে ত্রন্ধে! আপনি অনর্থক শ্রম করিতেছেন কেন ? ইহা আর আপনি আমার পুরাতন গুরু, সেই প্রতীকাতেই আমি আপনাকে প্রসাদিত করিতেছি। হে ভগবনৃ! ইহাকে আমি পুর্বেই পরিত্যাগ করিয়াছি। জ্রী-দিগের দোষ মহা অনর্থের হেডু, ইহা অবগত থা-কিয়া কোন্ মানৰ সাক্ষাৎ সৰ্পিণীর ন্যায় অন্যাস্তর্ রমণীরে নিজ গৃহে বাদ করাইতে পারে? হে সহা-ব্ৰড! আমি বাসবের ভৱেও ধর্ম ত্যাগ করিতে পারি না; অতএব আপনি আমার প্রতি প্রসন্থ

হটন; অববা আপনকার যেৰপ কর্ত্তব্য হর, তাহা আচিরেই সম্পন্ন করন। হে বিভো! হে বিশুদ্ধাত্মন্! পুরাণে মহাত্মা মরুত্তের কীর্ত্তিত এই শ্লোকটিও অবশ করা যায়, যে,

🍟 " গুরোরপাবলিগুদা কার্য্যাকার্য্যমজানতঃ।

্ উৎপ**থপ্রতিপন্ন**স্য পরিত্যান্যো বিধীয়তে 💵

चर्वाः कार्याकार्यात चनिष्क, উৎপথে প্রধাবিত, পর্ব্ব-পরীত গুরুকেও পরিত্যাগ করা বিধেয়। আপ-নিও আমার গুরু, এই নিমিত্তই আমি প্রেম-বশত পুনঃপুন আপনাকে সম্মানিত করিলাম, কিন্তু আপনি গুরুর ধর্ম জানিতেছেন না, একারণ আমি আপনকার সহিত যুদ্ধ করিব। গুরু, বিশেষত ভপোর্শ্ব ব্রাহ্মণকে সমরে নিহত করিতে পারি না, এই মনে করিয়াই আমি আপনাকে ক্ষমা করিয়াছি। পরস্ত ধর্মশান্তে এই নিশ্চর আছে, যে, বে ব্যক্তি ব্রাহ্মণকে কুৎসিত ক্ষজিয়ের ন্যার উদা-তাক্ত্র, জুঁদ্ধ ও অপরাশ্বুথে যুদ্ধে প্রবন্ত দেখিয়া বি-নক্ট করে, তাহার ব্রহ্মহত্যা হয় না। হে তপোধন! আমি ক্ষভিরধর্মে অবস্থিত ক্ষভিয়। যে ব্যক্তি বাহার প্রতি যাদৃশ আচরণ করে, তাহার প্রতিও ভাদৃশ আচরণ করিলে সে অধর্মও প্রাপ্ত হয় না এবং অকল্যাণেও পতিত হয় না। ধর্মার্থ বিচারে नमर्थ, (मनकालक भूक्त यपि अर्थ विषय अर्थन ধর্ম বিষয়ে সংশয়াপত্ন হন, তবে অর্থে সংশয়াপত্ন হইরা অর্থাৎ অর্থের অমুষ্ঠান না করিয়া ধর্মে নিঃসংশর হইলে, অর্থাৎ ধর্মের অমুঠান করিলেই খেরো লাভ করেন। অতএব হে রাম! সংশয়িত খথেৰিও আপনি যথন অষধা-ন্যায়ে প্ৰবৃত্ত হইতে-ছেন, ভখন আপনকার সহিত আমি অবশাই মহা-সমরে যুক্ত করিব। হে ভৃগুনন্দন! আমার বাহ-वीर्या ७ व्यानोकिक विक्रम पर्मन कक्रम। धक्रम অবস্থার আমি বাহা করিতে পারি, ভাহা অবশ্যই করিব ; কুরুকেত্তে আপনকার সহিত যুক্তে প্রবৃত্ত ररेत ; जाक वर रह महाकारण ! वन्यमुकार्य रेकासू-

সারে সজীভূত হউন। হে রাম! যে ছলে আমার শত শত শরনিকরে পীড়িত হইয়া আপনি নিধন প্রাপ্ত হইবেন এবং মহারণে শস্ত্রপূত হইয়া নিক্ষিত লোক সমন্ত লাভ করিবেন, সেই কুরুক্তের পমন করুন। হে মহাবাহে।! হে তপোধন! তথার আমি যুদ্ধপ্রিয় আপনকার সহিত যুদ্ধার্থে সমাগত হইব। হেরাম! পূর্বেষে অংশে আপনি পিতার শুদ্ধি করিয়াছিলেন, আমিও সেই স্থলে আপনাকে বি-नचे क्रिय़ा क्रिक्तिन क्रूलि दित- क्रिक्ति क्रिति। ए বিপ্রাভিমানিন্ যুক্তর্মাদ! তথায় সহর প্রস্থান করুন, আমি আপনকার পুরাতন দর্পের অপনে:-দন করিব। হে ভার্গব! " আমি একাকীই পৃথি-বীস্থ সমস্ত ক্ষজিয়গণকে নিচ্ছিত করিয়াছি ^৯ বছ কাল পর্যান্ত আপনি এই যে গর্বে করিয়া থাকেন, তাহার হেুতু ভাবণ করুন; তৎকালে ভীয় অথবা ভীয়-সদৃশ কোন ক্ষজিয় পুরুষ জন্মগ্রহণ করেন নাই। হে তপোধন! আপনি কেবল তৃণরাশি⊦ মধ্যেই ত্বলিত হইয়াছিলেন, তেজংপুঞ্জ ক্ষজিয় সকল পশ্চাৎ জন্মিয়াছে। হে মহাবাহো! যে ব্যক্তি আ!-পনকার যুদ্ধময় দর্প ও অভিলাবের অপনোদন করিতে পারে, সেই পরপুর বিজয়ী ভীন্ন একণে জমগ্রহণ করিয়াছে। হে রাম! সমরে আমি অব-শ্যই আপনকার দর্পাপনোদন করিব, সন্দেহ নাই।

ভীয়-বাক্যে একোনাশীতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ৷৷ ১৭৯ ৷

ভীয় কহিছেন, হে ভারত! অনস্তর রাম কিঞ্চিৎ
হাস্য করিতে করিতে আমাকে বলিলেন, "ভীয়!
ভাগাক্রমে তুমি সংগ্রামে আমার সহিত যুদ্ধ ইছ্যা
করিতেছ। হে কৌরবা! এই আমি ভোমার সহিত
কুরুক্তেতে চলিলাম; হে পরস্তপ! তুমি ভথার
পমন কর, আমি ভোমার বাক্য প্রতিপালন করিব।
হে ভীয়! ভোমার মাতা জাহুবী ভোমাকে তথার
শরশত-সমন্থিত, নিহত এবং গুধু, কাকও বক সকলের

ভক্ষা হইতে দৃটি ক্রন। হে পার্থিব! যিনি ভোমার মত মনদমতি, যুদ্ধকামী, আতুর ব্যক্তিকে উৎপন্ন করিয়াছেন, সেই সিদ্ধচারণ-সেবিতা ভগী-तथ-खुळा महाजाता (पती महानषी तापरनत व्यापा-গ্যা হইলেও অদ্য ভোমাকে দীনভাবাপন্ন ও মং-কর্ত্তৃক বিনিহত দেখিয়া রোদন করিতে পাকুন। রে তুর্মাদ যুদ্ধকামুক! এস, আমার সহিত চল, তোমার तथामि याश किছू चाटह, ममूनाय धारन करा।" धारे ৰূপ উক্তিকারী সেই পরপুরঞ্জয় পরশুরামকে আমি মন্তক-ছারা প্রণাম করিয়া বলিলাম, ভাল, তাহাই হউক। হে মহাছাতে ! রাম আমারে ঐ কথা বলিয়া যুদ্ধ-বাসনায় কুরুকেতে গমন করিলেন এবং আমিও নগরে প্রবেশিয়া সত্যবতীকে ঐ র্তান্ত নিবেদন করিলাম। হে ভরতসত্তম। অনন্তর আমি ক্লত-স্বস্তারন ও জননী-কর্তৃক প্রতিনন্দিত হইরা এবং ব্রাহ্মণগণকে " পুন্যাহং স্বস্তি ^দইত্যাদি স্বস্তি-বাচন করাইয়া ধমুর্ফু পণ্ডের-বর্ণ কবচে শরীরা-ছাদন ও পাণ্ডুর-বর্ণ কার্শ্বুক গ্রহণ-পূর্ব্বক উত্তম স্থত-কুলে সমুত বীর অশ্বশাস্ত্র-বিশারদ বছল-সমর-দর্শী বিশিষ্ট সার্থি-কর্তৃক পরিচালিত, শোভন চক্র ও অঙ্গপ্রত্যঙ্গ-বিশিষ্ট, ব্যাঘ্রচর্মে পরির্ভ, মহা াস্ত্র-সমূহে পরিপূর্ণ, সর্ব্বোপকরণ-সমন্থিত, পাঙুর হর-চতুষ্টয়-যুক্ত, রজত-নির্মিত, মনোহর রথে আ-রোহণ করিয়া প্রস্থিত হইলাম। হে ভরতর্ষভ! মস্তকে পাণ্ডুর বর্ণ আতপত্র-ছারা বিরাজমান, শুক্ল-চামর-নিকরে বীজামান, শুভ্রবাসা, শ্বেতোফীষধারী, সকল-শুক্লাভরণে ভূষিত ও জয়াশীর্কানে স্থুয়মান হুইয়া আমি হস্তিনা হুইতে নিছুমণ-পূর্বক রণকেত্র কুরুকেতে যাতা করিলাম। হে রাজন্! মন ও প্ৰন-ভুল্য ৰেগশালী অশ্ব সকল সেই স্থনিপুণ স্ত-কর্ত্তক প্রেরিত হইরা আমাকে উত্তম রূপে বহন করত মহাসমরে উপনীত করিল। হে রাজন্! আমি ও প্রতাপবান রাম উভয়েই সেই কুরুকেত্রে গমন করিরা যুক্কার্থে পরস্পর সহসা পরাক্রান্ত হই- |

লাম। অনম্ভর আমি সেই অভিতপ্রী রামের দর্শন-পথে অবস্থিত হইয়া উত্তম শব্ধবন্ধ গ্রহণ-পূর্বেক প্রধ্যাত করিলাম। তথন বনবাসী তাপ্সগণ ও ইন্দ্র-সহ অমরহৃন্দ তথার দিব্য সমর সন্দর্শনে প্রবৃত্ত হইলেন। বছতের দিব্য মালা, দিব্য বাদিত ও জলধর-সমূহ ইতন্ততঃ প্রাচুর্ভূত হইল। অনন্তর ভার্গবের অমুযায়ী সেই তাপসগণ রণাঙ্গন পরিবে-ফন-পূর্বক দর্শক হইয়া রহিলেন। ছে রাজন্! তদনন্তর সর্ব্ব-ভূতহিতৈষিণী মদীয় জননী জাহুণী দেবী মূর্জিমতী হইয়া আমার নিকটে আগমন-পূর্বাক কহিলেন, বৎস! ভুমি এ কি করিতে ইচ্ছুক হইয়াছ? হে কুরুত্রেষ্ঠ! আমি জামদগ্যের নিকটে যাইয়া এই বলিয়া পুনঃপুন যাক্ত্রা করিব, যে, ভূমি নিজ শিষ্য ভীয়ের সহিত যুদ্ধ করিও না। হে পুক্র! जूमि कि जिय हरेश विश्व कामन त्यात निरु नमत्त्र যুদ্ধার্থে নির্বন্ধ করিও না। হর-তুল্য-পরাক্রমশালী পরশুরাম যে ক্ষজিয়কুল-সংহারকারী, ভাহা কি তোমার বিদিত নাই, যে তাঁহার সহিত যুদ্ধ ইচ্ছা করিতেছ ?

হে ভারত! মাতা এইবপ আমারে ভৎসনা করিতে লাগিলেন। তথন আমি ক্বতাঞ্চলি হইয়া সেই দেবীকে অভিবাদন-পূর্বক, স্বয়মরে যে বৃত্তাস্ত হইয়াছিল, তাহা সমুদয় নিবেদন করিলাম; অপিচ পূর্বের রামকে যেবপ নিয়োগ করিয়াছিলাম এবং কালিরাজ-কনাার যে পূর্বতন কর্ম্ম, তাহাও ব্যক্ত করিলাম। অনন্তর আমার সেই জননী দেবী মহানদী ক্ষবির ভাগবের সন্নিহিতা হইয়া "তুমি নিজ শিব্য ভীয়ের সহিত যুদ্ধ করিও না" এই বলিয়া আমার নিমিত্ত তাহাকে প্রসাদিত করিতে লাগিলেন। পরস্ক তিনি সেই প্রার্থনাকারিণী জার্হবীরে কহিলেন, আপনি ভীয়কেই নিবর্ভিত করুন, তিনি আমার অভিলাব পূর্ণ করিতেছেন না, এই নিমিত্তই আমি যুদ্ধার্থে তাঁহার নিকটে আগমন করিয়াছি। বৈশ্বসায়ন কহিলেন, অনন্তর গঙ্গার নিকটে আগমন করিয়াছি।

ক্ষীপে আগমন করিলেন, কিন্তু কুল-নেত্র হইয়া তাঁহার বাক্য

বর্দ্ধা । তদনন্তর দ্বিজনন্তম মহাতপা ধর্মাক্ষা ভৃগুজোঠ দৃই হইলেন এবং যুদ্ধার্থে আ-মারে আহ্বান করিলেন।

> গঙ্গা-বাক্যে অশীত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৮০॥

ভীয় কহিলেন, তথন আমি কিঞ্চিৎ হাস্য করিতে করিতে, সমরে ব্যবস্থিত জামদগ্যকে কহিলাম, হে বীর! আমি রথস্থ হইয়া ভূমিষ্ঠ আপনকার সহিত যুদ্ধ করিতে ইচ্ছা করি না; অতএব হে মহাভুজ! যদি সমরের অভিলাষ হয়, তবে রথারোহণ ও কবচ পরিধান করুন। তথন রাম হাস্য করিতে করিতে আমাকে কহিলেন, হে ভীয়! পৃথিবীই আমার রথ, বেদ সকলই সদশ্ব-সদৃশ বাহন, সমীরণই সার্থি এবং বেদ-মাতৃগণ অর্থাৎ গায়ত্রী, সাবিত্রী ও সরস্বতীই আমার কবচ। হে কুরুনন্দন! আমি তাঁহাদিগের দ্বারা স্থন্দর ৰূপে আচ্ছাদিত হইয়া যুদ্ধ করিব।

হে গান্ধারী-নন্দন! সত্যবিক্রম পরশুরাম এই
কথা বলিতে বলিতে বছল শর-সমূহ-দ্বারা সর্বব দিক্
আছাদিত করিলেন। হে মহাবাহো! অনহর
আমি জামদমাকে সহসা আবির্ভূত, অদুত-দর্শন,
মানস-বিনির্মিত, বিন্তীর্ণ-নগরোপম, দিব্যাশ্ব-যুক্ত,
সমন্ধ, কাঞ্চন-কবচ-ভূবিত, চক্ত-স্থ্যা-চিহ্লিত, সর্ব্বপ্রকার উৎকৃষ্ট আয়ুধ-সমন্বিত, পবিত্র, প্রিয়ুক্ত,
রগ্ধ-মধ্যে বাবন্থিত দেখিলাম। ঐ রথে ভাগবের
প্রিয়তম সখা বেদজ্ঞ অক্নতত্রণ গোধা, অঙ্গুলিত্র, তূণ
ও শরাসনধারী হইয়া সারথা কর্মা করিতেছিলেন।
ভাগব "আইন আইন শাহন শতানাশ-পূর্বক যুদ্ধার্থে
পুনঃপুন এইকপ আহ্বান করত আম্বাকে স্থাতিত
করিতে লাগিলেন। আমি সেই উত্থানশীল আদিত্তা-তুলা, অনাধ্বা, মহাবল, ক্ষাক্রমান্তকর, এক্ক

পরশুরামকে একাকী প্রাপ্ত ইইলাম। অন্তর্ম ব্যান তিন বার বাণ পাত হইল, তখন আমি অখ্য সকল নিরুদ্ধ ও শরাসন বিন্যন্ত করিয়া রথ হইতে অব-তরণ-পূর্বক পদত্রকে সেই ঋষিসভ্তম গুরুকে অর্চনা করিবার নিমিত্ত তৎসমীপে গমন করিলাম এবং তাঁহাকে যথাবিধি অভিবাদন করিয়া এই উভ্তম বাক্য বলিলাম, যে, ভেরাম! আপনি সদৃশই হউন বা অধিকই হউন, আপনকার সহিত আমি যুদ্ধ করিব; হে বিভো! আপনি গুরু ও ধর্মাশীল, অত-এব আমাকে জয়াশীর্বাদ করুন।

রাম কহিলেন, হে কুরুভোষ্ঠ! মঞ্চলেচ্চু পুরুষের এইৰপ করাই কর্ত্তবা বটে; কেন না যাহারা বিশিষ্ট লোকদিগের সহিত যুদ্ধ করে, ইহাই তাহাদিগের ধর্ম। হে মহাবাহো! তুমি যদি এৰপ করিয়া না আসিতে, তাহা হইলে আমি ভোমারে শাপ দিতাম। হে কৌরব! সম্প্রতি ধৈর্যাবলম্বন-পূর্বেক সাবধান হইয়া যুদ্ধ কর। হে রাজন্! আমি স্বয়ং তোমাকে জয় করিতে উদাত হইয়াছি, স্বতরাং তোমার জয়াশংসা করিতে পারি না; অভএব যাও, ধর্ম-সহকারে যুদ্ধ কর; আমি ভোমার চরিত্র দারা প্রতি হইলাম।

. অনন্তর আমি তাঁহাকে নমন্তার করিয়া সত্তর রথারোহণ-পূর্বক পুনর্বার হেমপরিস্কৃত শহ্মধনি করিলাম। হে ভারত! তদনন্তর তাঁহার ও আমার পরস্পার জয়াকাজ্মায় বছ দিন পর্যান্ত ঘোরতর যুক্ষ হইল। প্রথমে তিনি নয় শত ব্যিসংখ্যক নতপর্ব কঙ্কপত্র-যুক্ত শার-দ্বারা আমার রথোপরি প্রহার করিলেন এবং আমার অশ্ব-চতুই্টয় ও সার্থিকেও প্রতিকৃদ্ধ করিলেন, তথাপি আমি সেই রূপ দংশিত হইয়া সমরে নিশ্চেই রহিলাম। অনন্তর দেবগণ ও ব্রাহ্মণগণকে বিশেষ রূপে নমন্তার করিয়ো রণে ব্যবস্থিত সেই ঋষিবরকে ঈষৎ হাল্লা করিতে করিতে কহিলাম, হে ব্রহ্মন্! আপনি মর্যাদা-খুন্য হই-লেও আমি আপনকার গুরুত্বের সন্মান করিয়াছি

এবং ধর্মসংগ্রহ বিষয়ে আরও কিঞ্চিৎ কর্তব্যের নির্দেশ করিতেছি, অবণ করুন। আপনকার শরী-तक रा ममल राम ७ महर बाकाना चाह्य धरः তাহার দ্বারা আপনকার যে মহতী তপন্যা সঞ্চিত রহিয়াছে, তৎসমুদায়ের প্রতি আমি প্রহার করি-তেছি না। হে রাম ! আপনি যে ক্ষত্রিরধর্ম আত্রয় করিয়াছেন, আমি তাহারই প্রতি প্রহার করি-তেছি; যেহেতু শক্ত্রোদ্যম করিলেই ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়ত্ব প্রাপ্ত হন। হে বীর! আমার ধনুকের বীর্যা ও বাহুর বল দেখুন; আমি এই নিশিত শর-সহকারে আপনকার কার্ম্মুক ছেদন করি। হে ভরতর্ষত! এই বলিয়া আমি তাঁহার প্রতি নিশিত ভল নিক্ষেপ করিলাম এবং তদ্ধারা তাঁহার ধন্তুর অগ্রভাগ ছেদন করিয়া ভূতলে পাতিত করিলাম। তাঁহার রথের প্রতিও কঙ্কপত্র-যুক্ত শত শত নতপর্ব্ব শর-সমুহ নিক্ষিপ্ত করিলাম। হে রাজন্! অত্যে শরীর মধ্যে পৃথক্ পৃথক্ বিদ্ধ পশ্চাৎ বায়ু-কর্তৃক সমীরিত হইয়া সেই শর সকল যেন সর্প-সমূহের ন্যায় রুধির ক্ষরণ করত ইতন্তত সঞ্জবণ করিতে লাগিল। তৎকালে রাম রক্তাক্ত কলেবর হইয়া ধাতু-ক্ষরণকারী স্থমেরু ভূধরের ন্যায়, হেমস্থান্তে রক্ত-ন্তবক-মণ্ডিত অশো-কের ন্যায় অথবা প্রফুল কিংশুকের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর তিনি ক্রোধ-সমন্বিত হইয়া অপর শরাসন এহণ-পূর্বক হেমপুঋ-যুক্ত स्मानिक मत-मभूर वर्षन कतिरलन। त्मरे महारवन-नाली, नर्भ जनल ७ विष-मन्न, वह श्रकादत मर्म-ভেদী, ভীষণ বাণ-নিচয় আমাকে প্রাপ্ত হইয়া এক-কালে কম্পিত করিয়া তুলিল। তথন আমি কোন প্রকারে সমরে আপনাকে পুনরায় স্থিরীভূত করিয়া ক্রোধভরে শত-সংখ্য শর-ছারা রামকে সমাকীর্ণ করিলাম। তিনি সেই স্বর্যানল তুল্য আশীবিষ-সদৃশ নিশিত শত শরে সমর্দিত হইরা বেন সংজ্ঞা-খুনোর নাায় হইলেন। হে ভারত। তৎকালে আমি কুপাবিফ হইয়া আপনিই আপনাকে স্তডিত

করিরা বলিলাম, সর্বাধা যুদ্ধব্যাপারে ধিক্ এবং কজিরধর্মেও ধিক্! হার! আমি কজিরধর্মা হওন্যাতেই এই পাপ করিলাম! এই ধর্মাত্মা, রাক্ষণ, বিশেষত গুরুকে শর-নিকরে পীড়িত করিলাম! হেরাজন্! আমি শোকাবেগে ব্যাকৃলিত হইরা বার্যার এইরপ বিলাপ করিতে লাগিলাম, তাহার পর আর জামদগ্যাকে প্রহার করিলাম না। অমস্তর ভগবান ভালুমান্ প্রধর-কর-নিকরে ধরণীকে তাপতা করিয়া দিনাবসানে অন্ত গমন করিলেন এবং যুদ্ধও নিরন্ত হইলা।

রাম-ভীম-যুদ্ধে একাশীতাধিক শত্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৮১॥

ভীম কহিলেন, হে বিশাষ্পতে! অনস্তর আমার স্থনিপুণ সারথি আপনার, অশ্বগণের ও আমারও শল্য সমন্ত অপনীত করিল এবং পর দিন প্রভাতে স্র্যোদয় হইলে স্নাত, লুগিত, পীতোদক ও অমান-তেজোযুক্ত তুরঙ্গণ-দারা আমাকে রণস্থলে উপ-নীত করিল। তাহার পর যুদ্ধারম্ভ হইল। প্রতাপ-বান্ ভার্গব আমাকে রথ-স্থিত, কবচ-যুক্ত ও দ্রুত-বেগে সমাগত দেখিয়া নিরতিশয় রথসজ্জা করি-লেন। অনন্তর আমি সমরাকাজগী রামকে আগমন করিতে দেখিরা উংকৃষ্ট শরাসন পরিহার-পূর্বক সহসা রথ হইতে অবতীর্ণ হইলাম এবং পূর্ববং অভিবাদনান্তে পুনরায় রথারোহণ করিয়া যুদ্ধ-কাম-নায় তাঁহার সম্মুখে নির্ভয়ে অবস্থিত হইলাম। তদ-নন্তর স্থমহং শরবর্ষণ-সহকারে পরস্পার পরস্পারকে नमाकीर्ग कतिलाम। जामन्या नमाक् त्काथ-युक হইরা পুনর্বার আমার প্রতি স্থশাণিত, প্রদীপ্ত-মুখ-जुजनगर्गत नाम चात्रक्य मत-ममूह व्ययग कति-লেন। তথন আমি সহসাশত শত সহস্ৰ সহস্ৰ নিশিত-ভল্ল-নিচয়-শ্বারা অন্তরীকে পুনঃপুন তৎ-সমুদার ছেদন করিতে লাগিলাম। ভাইটি পর প্রতাপবান্ জামদগ্রা আমার প্রতি দিবা অস্ত্র সমস্ত

প্রহোগ করিলেন। আমিও উহার অপেকা অধিক নৈপুণ্য প্রকাশে অভিলাবী হইয়া শস্ত্র-পুঞ্জ-দারা তৎসমুদার প্রতিষিদ্ধ করিলাম। অনন্তর গগণমগুলে সকল দিক্ ইইতে মহানাদ প্রাছুভূত ইইল। হে ভারত। তদত্তে আমি জামদয়োর প্রতি বায়বা অক্ত প্রয়োগ করিলাম এবং তিনিও গুছকাক্ত-দারা তাহা প্রতিহত করিলেন। তদনন্তর আমি মন্ত্রপূত করিয়া আথেয়ান্ত প্রয়োগ করিলাম; রামও বারু-ণাক্স-ছারা ভাহা নিবারিত করিলেন। এইৰূপে আমিও রামের দিবাজি সমস্ত নিরস্ত করিতে লাগি-লাম এবং সেই দিব্যান্ত্র-বিশারদ, ভেজস্বী, অরিন্দম রামও আমার দিব্য শস্ত্র সকল নিবারিত করিতে লাগিলেন। হে রাজন্। অনন্তর অসীম-প্রতাপ-সম্পন্ন জামদগ্য সাতিশয় কুন্ধ হইয়া আমাকে বাম-ভাগন্থ করত বক্ষাস্থলে বিদ্ধা করিলেন। তাহাতে আমি রখোপরি অবসন্ন হইরা পড়িলাম। তথন দার্থি আমাকে মুর্জাবিফ দেখিয়া সত্তর রথ নির্ভ করিল। হে ভরতভোষ্ঠ। তৎকালে অত্নতত্ত্ব-প্রভৃতি রামের অনুচরগণ ও কাশিকন্যা আমাকে তদীয় বাণে প্রপীড়িত, অতিশর বিদ্ধ, প্লানিযুক্ত, বিচেতন ও পরাশ্ব খ হইতে দেখিয়া সকলেই হৃষ্টচিত্তে চীং-কার করিতে লাগিলেন। অনন্তর আমি চেতন ও জ্ঞান পাইয়া সার্থিকে বলিলাম, স্থত! আমি বেদনা-খূন্য ও দক্ষিত হইয়াছি; অতএব পুনরায় রাম-সমীপে চল। হে কৌরবা! তৎপরে সার্থি আমারে পরম শোভিত অখগণ-দারা বহন করিয়া চলিল এবং গমনে বারু-তুল্য তুরঙ্গমেরাও যেন নৃত্য করিতে করিতে ধাবিত হইল। অনন্তর আমি রামের নিকটে গমন করিয়া সমাক্-ক্রোধ-পরীত ও জিগীৰায় ব্যবসিত হইয়া তাঁহাকে বাণ-বৰ্ষ-দাঁৱা পরিকীর্ণ করিলাম। রামও তিন তিন বাণ-ছারা সরলভাবে আপতিত নদীর শর সমস্ত প্রথি-মধ্যেই এক এক করিরা ছেদন করিতে লাগিলেন। স্থতরাং আমার সেই শত শত সহক্র সহক্র কুদংশিত বাণ-

জাত রাম বাণে চুই ছুই খণ্ডে ছিল হইলা বিশ্বস্ত रहेता পড़िन। अनस्त आणि काममरभात वर्धकांत्र তাঁহার প্রতি সাক্ষাৎ কালকম্প অতিপ্রভাষিত একটি প্রদীপ্ত অন্ত নিক্ষিপ্ত করিলাম। তদ্বারা অভিহত হওয়ায় রাম সেই বাণবেগের বশবর্তী হইয়া মূৰ্চ্জিত ও ভূতলে নিপ্তিত হইলেন। হে ভারত! প্রভাকরের€পতন হইলে জগৎ যেৰূপ ব্যাকুলিত হইতে পারে, রাম ধরাশ্রয় করিলে সকলই সেইৰূপ হাহাকারময় হইল। সেই তপো-ধনগণ ও কাশিকন্যা সকলেই সাতিশয় উদ্বিগ্ন হইয়া সহসা তাঁহার নিকটে প্রধাবিত হইলেন এবং অস্পে অম্পে তাঁহাকে আধিঙ্গন করিয়া জলশীতল হস্ত ও জয়াশীর্কাদ-দারা আশ্বাসিত করিতে লাগিলেন। অনস্তর রাম উপিত হইয়া শরাসনে শর সন্ধান-পূर्वक विक्लन-वहरन आमारक विल्लान, " जीश! থাক, থাক, এই হত হইলে "। মহাসমরে সেই শর নির্মুক্ত হইয়া অতিবেগে আমার বামপার্শ্বেনি-পতিত হইল। তদ্ধারা আমি বায়ু-ঘূর্ণিত রক্কের ন্যায় অত্যন্ত উদ্বিগ্ন হইলাম। রাম শীঘ্রাক্র-সহ-কারে অশ্ব সমস্ত নিহত করিয়া বিশ্রক-চিত্তে লোম-যুক্ত বাণ-জালে আমাকে অবাকীর্ণ করিলেন। আমিও সমর প্রতিরোধী শীঘাক্র প্রয়োগ করি-লাম। হে মহাবাহো! রামের ও আমার সেই শর সমস্ত সহসা গগণতলে সমস্ততঃ ব্যাপ্ত হইয়া অন্তরেই অবস্থিত রহিল; স্থতরাং শরজালে সমারত হওরায় স্থাও কিরণ বিভরণে বিরত হইলেন এবং প্রনও यन धन-निक्षाकुत नाम निकल इहेरलन। अनस्रत সমীরণের প্রকম্পন, প্রভাকরের কিরণ ও অভি-ঘাতের প্রভাবে পাবকের উৎপত্তি হইল। তখন যাবতীয় শর-সমূহ স্বসমূষ্টিত হুতাশন-দারা প্রদীপ্ত **७ जनी** जुंठ रहेशा धता नग्न रहेन । ए कोत्रव ! অনন্তর রাম সমাক্ কোধ-যুক্ত হইরা আমার প্রতি भठ, महत्र, षयुठ, श्रयुठ, षर्युष, थर्य, निश्य-প্রভৃতি বহু-সংখ্যক শর-নিকর অতিবেগে বর্ষণ

ক্রিতে লাগিলেন। আমিও আশীবিষ-সদৃশ শর-কাল-সহকারে তৎসমুদার ছিম করিয়া থণ্ড থণ্ড ভুজন্ধ-নিচয়ের নাায়ু ভুতলে নিপাতিত করিতে থাকিলাম। হে ভরতসত্তম! তৎকালে এইৰূপ ঘোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল। পরে সন্ধ্যাকাল चजीठ इरेटन छक्न ७ मिया উভয়েই নির্ভ হই-नाम। •

রাম-ভীন্ম-যুদ্ধে ভাশীতাধিক শততম অধ্যায় ममाखा १ ४५२॥

ভীম কহিলেন, হে ভরতর্যভ! পর দিন আমি রামের সহিত সমাগত হইলে পুনর্বার অতিদারুণ ভুমুল যুদ্ধ হইল। সেই দিব্যাক্তবিৎ শূর ধর্মাত্মা বিভু জামদগ্না প্রতি দিন অনেকানেক দিব্যান্ত্র সমস্ত প্রয়োগ করিতে লাগিলেন এবং আমিও তৎপ্রতি-ঘাতক অস্ত্রপুঞ্জ-দারা তৎসমুদায় দগ্ধ করিতৈ লাগি-লাম। হে ভারত। আমি তুমুল সমরে স্বত্নজ্ঞ প্রাণ বিসহর্জন করিয়াই ঐ হ্বপ করিতে লাগিলাম। এইৰূপে বন্ধ-প্ৰকার অস্ত্ৰরাশি হত প্ৰতিহত হইলে সেই মহাতেজা পরশুরামও প্রাণ পণ করিয়া যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। অস্ত্র প্রতিরুদ্ধ হওয়ার সেই মহাত্মা প্রত্তলিত উক্ষা-সদৃশী, প্রদীপ্তমুখা, তেজে সকল লোক-ব্যাপিনী, সাক্ষাৎ কাল-প্রেরিতার ন্যায় ঘোর্কপ। শক্তি ক্ষেপগু করিলেন। আমিও শর-নিকর-সহকারে সেই পতনোমুখা প্রলয়-কালীন প্রভাকরের ন্যায় প্রদীপ্তা, দীপ্যমানা শক্তিকে তিন-ধণ্ডে ছেদন করিয়। ভূতলশায়িনী করিলাম। তথন পুণাগন্ধি বায়ু বহিতে লাগিল। হে ভারত! নেই শক্তিটি ছিন্না হইলে রাম ক্রোধে প্রদীপ্ত হইরা আর দানশ্টি ঘোরৰূপা শক্তি প্রেরণ করিলেন। তেজ-বিত্ব ও শীঘ্ৰত্ব-প্ৰযুক্ত ভাছাদিগের ৰূপ নিৰ্বাচন কর। ছুংমাধ্য। ৰূপ নিৰূপণ করিব কি, সর্বা দিক্ হইতে আপতিত, অগ্নির মহোক্ষা-তুল্য নানাৰপ-বিশিষ্ট, লোকাৰ-কালীন বাদশ আদিতেয়ে নার । প্রভাকর প্রকাশিত হইলে আমার বহিছ ভার্সবের

উপ্রতেকে প্রদীপ্ত সেই শক্তি-সমস্ত নিরীক্ষণ করি-तारे यामि विस्तृत रहेनाम। यनस्त्र महे या-পতিত বাণময় জাল সন্দর্শন-পূর্বক শরজাল-ছারা ভেদ করিয়া ছাদশ বাণ প্রেরণ করিলাম এবং তন্থারা দেই ঘোরক্পা শক্তি সমস্তও দগ্ধ করিয়া किलाम। (र ताकन्! ७९পत्र मराभा काममधा পুনরায় হেমদণ্ড-যুক্ত, বিচিত্রিত, কাঞ্চন-পট্টবন্ধ, প্রজ্বলিত উল্কার ন্যায় ভীষণ শক্তি-সমন্ত নিক্ষিপ্ত করিলেন। সে সকলও আমি চর্মা-ছারা নিবারিত ও খড়গ-দারা নিপাভিত করিয়া দিব্য-বাণরাজি-দারা তাঁহার সারথি-সম্বলিত দিবা তুরঙ্গ সকলকে অভি-রুফ করিলাম। তথন হৈহয়াধীশ্বর কার্ত্তবীর্যার্জ্জুনের অন্তকারী মহাত্মা জামদগ্রা কঞ্চুক-নির্দ্মুক্ত ভুজগ-রাজির ন্যায় সেই হেমচিত্রিত শক্তি সকল ছিল হইতে দেখিয়া সাতিশয় রোষাবেশে দিব্যাক্ত প্রাছ্ন-র্ভূত করিলেন। অনন্তর উগ্রতর প্রদীপ্ত বিশিখ:-বলি শলভ-ভোণির ন্যায় সুমাপতিত হইল এবং আমার অশ্বগণের ও রথ সহ সার্থির শ্রীরে অতি-भग्न मश्लभ रहेल। (र त्रांखन्। स्मरे भन्नकारल जा-মার রথ, বাহনগণ ও সার্রথি সর্বতঃ পরিকীর্ণ হইল এবং রথের যুগ, ঈশা, চক্র ও অক্ষ, সকলই শর-চ্ছিন্ন হইরাভগ্ন হইরা পড়িল। অনস্তর সেই শর-বৰণ অতীত হইলে আমিও তাঁহারে বিশিখ-সমুহে অভিরুষ্ট করিলাম। তথন সেই ব্রহ্মরাশি মার্গণসংগ ক্ষত বিক্ষত হইরা দেহ হইতে অজ্জ রক্ত মোচন করিতে লাগিলেন। আমার বাণজালে রাম যেমন অভিতপ্ত হইলেন, আমিও তাঁহার শর-নিকরে সেই ৰূপ সাতিশয় বিদ্ধ হইলাম। পরিশেষে অপরাফে पिराकत **অ**खांচल भगन क्रिल युक्क निरुख रहेत।

রাম-ভীম-যুদ্ধে ত্রাশীতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত। ১৮৩।

ভীয় কহিলেন, হে রাজেন্ত । অনন্তর এডাংতে

পুनर्कात युकात्रस स्टेन। श्रदातित्यके भत्रस्त्राम পরিভ্রমণদীল রখোপরি অবন্থিত হইয়া ভূধরোপরি क्रमध्यत्र ग्राप्त क्रामात उभरत्र मञ्जल वर्षन क्रि-তে লাগিলেন। তাহাতে আমার স্কুদ্ সার্থি শর-বর্ষে ভাড়িত হইয়া আমার অন্তঃকরণ বিবাদিত করত রখোপস্থ হইতে অপগত হইল। মহতী মুচ্চা ভাহাকে সহসা আক্রমণ করিল; স্থভরাং সে মোহ বুক্ত হইরা পৃথিবীতে পতিত হইল। হে রাজেন্দ্র! त्राय-वादन व्यनीष्ठि रहेशा व्यामात मात्रि मूर्ड মধ্যেই প্রাণ পরিত্যাগ করিল এবং আমিও তৎ-কালে ভয়াবিউ হইলাম। সার্ধি নিহত হইলে আমি প্রমন্ত-মানদে তাহার নিমিত্ত আক্ষেপ করিতেছি, এমন সময়ে রাম আমার প্রতি মৃত্যুকণ্প শর-সমস্ত নিক্ষিপ্ত করিলেন। আমি স্থতাভাবে বিপদ্মপ্ত হইরা বিলাপ করিভেছিলাম, তথাপি সেই ভার্যব বল-পূর্ব্বক শরাসন আকর্ষণ করিয়া শর-ছারা আ-মাকে প্রগাঢ় ৰূপে তাড়িত করিলেন। হে রাজন্! সেই রুধির-ভোজী বিশিখ আমার বক্ষংস্থলে নি-পতিত হইয়া আমার সঙ্গে সঙ্গেই ধরাতল প্রাপ্ত रुरेल। उथन दाम व्यामाद्र निरुष्ठ मदन कतिशा অভিশয় কৃষ্টচিত্তে উচ্চৈঃস্বরে মেঘের ন্যায় পুনঃপুন গর্জন করিতে লাগিলেন। হেরাজেন্দ্র আমি সেইৰূপ পতিত হইলে রাম হর্ষযুক্ত হইয়া অমুচর-গণের সহিত মহানাদে চীৎকার করিতে লাগিলেন। তথার আমার পার্শস্থিত যে সমস্ত কৌরবগণ ছিল এবং ঘাহারা যুদ্ধ দর্শনেচ্ছু হইয়া সমাগত হইয়াছিল, আমি পতিত হইলে ভাহারা সকলেই অত্যন্ত পীড়া व्याख रहेन।

েছে রাজসিংহ! জনন্তর আমি পতিত থাকিয়া দেখিলাম, সূর্যা ও অগ্নি-তুলা আটজন ব্রাহ্মণ রণ-হলে আমারে চতুর্দিকে পরিবেইন-পূর্বক নিজ নিজ বাহু-বারা ধারণ করিয়া রহিয়াছেন। সেই বিপ্রগণ-কর্তৃক রক্ষিত হওয়ার আমি আর ভূতল-ত্পার্শ করি নাই; আঁহারা বাহ্মবের নাার হইয়া

আমাকে অন্তরীকেই ধারণ করিয়াছিলেন। আমি মন মন নিশাস ত্যাগ করিডেছিলাম, তাঁহারা জল-বিক্স-ছারা আমাকে অভিব্রিক্ত করিতেছিলেন। হে রাজন্ ! তৎকালে সেই ব্রাঙ্গণেরা আমারে ধারণ ক্রিয়া সকলেই বারম্বার কহিতে লাগিলেন, " ভূমি ভয় করিও না, ভোমার কল্যাণ হউক।" তাঁহাদিগের এই কথায় আমি তুর্গিত ও আশস্ত হইয়া সহসা উপিত হইলাম এবং দেখিলাম, তরঙ্গিণীপ্রবরা আ-মার জননী জাহ্লবী রথস্থিত। রহিয়াছেন। হে কৌর-विद्यः। तरे महानती नमत्त्र जामात्र जम्म नकन्छ সংযমন করিয়াছিলেন। অনন্তর আমি জননীর ও পিতৃগণের চরণ বন্দন করিয়া রখারোহণ করিলাম। তথন সেই মাতা রথ, অশ্বগণ ও অন্যান্য সামগ্রী-সহ আমাকে রক্ষা করিতে লাগিলেন; কিন্তু আমি অঞ্চলি বন্ধন-পূর্বকে অনুনয় করিয়া তাঁহাকে বিদায় করিলাম আনন্তর আপনিই সেই বাতবেগী অশ্ব সকল সংব্যাত করিয়া দিনাবসান পর্যান্ত জামদ-থোর সহিত যুদ্ধ করিলাম। হে ভরত-শ্রেষ্ঠ ! তাঁহার প্রতি আমি একটি হৃদয়ছেদী মহাবলশালী বেগ-বান্ বাণ পরিত্যাগ করিলাম। আমার সেই বাণে প্রপীড়িত হওয়ায় রাম মোহের বশবর্তী হইয়া শরা-मन পরিহার-পূর্বক জানু-যুগল-ছারা ধরাবলয়ী হই-লেন। সেই বছ সহত্ৰ স্বৰ্ণপ্ৰদ জামদগ্ম নিপ্তিত रहेटन वहन कनमावनि छूति छुति ऋषित कत्र कत्र क গগণতল আচ্ছাদিত করিল; নির্ঘাত ও বিছ্যুদ্যুক্ত শত শত উল্কাপাত হইতে লাগিল ; স্বুর্চামু প্রদীপ্ত ভামুকে সহসা সমাহত করিল; কর্কশ বায়ু বহিতে লাগিল; অচলা চলিতা হইল; গুধু কাক বৰুপ্ৰভৃতি মাংসলোলুপ পক্ষি সকল হর্ষযুক্ত হইয়া পতিত **रहेरक थांक्नि; पिश्वश्रम गर्मा अमीश्र**ू हुहेन; শ্রাল সকল মুত্রুত দারণ শব্দ করিতে লাগিল এবং আহত না হইয়াও ছুম্মুভি সকল অভিশয় কৰ্ম-শব্দে নিনাদিত হইছে লাগিল। হে ভারত ! মহাত্মা পরশুরাম বিচেতন প্রায় হইয়া ধর্ণীগত

হইলে এই রপ ছোরতর তর্মর উৎপাত চিদ্ধ সমস্ত। মিজ দরীর। হে কৌরব্য! জামলায়া কোন ক্রমেন আছুর্ত হইল। অনন্তর মরীচিমালী দিবাকর তোমারে সমরে পরাজিত করিতে পারিখন না, ধূলিজালে আহুত হওরার মন্দমরীচি হইরা অন্তশিখরে বিলীন হইলেন এবং স্থখকর শীতল সমীরণ-যুক্তা যামিনীর আবির্ভাব হইল। তখন আমরাও সমরের প্রতিসংহার করিলাম। হে রাজন্! থেছেতু পূর্বে জন্মেও ইহা তোমার ফ্রানগোচর হইবে; যেছেতু পূর্বে জন্মেও ইহা তোমার বিদিত ছিল। এইরাকে সন্ধ্যাকালে প্রতিষ্ক্রংহার এবং প্রভাবে
পুনর্বার আরম্ভ হইতে লাগিল। এই রীতিক্রমে
কুপর্যাপরি ত্রয়োবিংশতি দিবস ছোরতর স্লদারণ
এবং দৃঢ়রূপে সন্ধানও কর। হে নরাধিপ! ঐ অন্তযুদ্ধ হইল

রাম-জীয়-যুদ্ধে চতুরশীতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত। ১৮৪॥

ভীয় কহিলেন, হে রাজেন্দ্র! অনন্তর নিশা সময়ে আমি ব্রাহ্মণগণ, পিতৃগণ, দেবগণ, রাত্রিচর ভূতগণ ও রাজনাগণকে মন্তক-দ্বারা প্রণাম করিয়া একাত্তে শ্যাগত হইয়া মনে মনে চিন্তা করিতে লাগিলাম, रि, अना वर्ष्ट मिन रहेल त्रारमत महिल आमात महा-নিউকর পরম দারুণ যুদ্ধ হইতেছে, তথাপি আমি সেই মহাবল সম্পন্ন মহাবীর্ঘ্য বিপ্রকে পরাজিত করিতে পারিতেছি না। প্রতাপশালী জামদগ্রাকে यमि नमदत প्रवाक्त कता चामात नाधा रत, उदव দেবতারা প্রসন্ন হইয়া অদ্য রক্তনীতে আমারে দর্শন প্রদান করুন। হে রাজন্! আমি শর-বিক্ষত হইয়া রাত্রিকালে এইৰূপ চিন্তা করত দক্ষিণ পাম্বে প্রস্থপ্ত আছি, এমন সময়ে প্রভাতের কিঞ্চিৎ পূর্বে, যে ব্রাহ্মণেরা পূর্বের আমাকে রথ হইতে পতিত হইবার দময়ে উর্মাপিত করিয়াছিলেন এবং ধারণ-পূর্বক ' ভোমার ভয় নাই ' এইৰপ সাব্না ক্রিয়াছিলেন, र्टाहातारे जीमारत चरत्र पर्णन श्रमान कतिरलन जदः मकरन 'পরিবেউন করিয়া যে কথা বলিলেন, ভাহা ভাবণ কর। তাঁহারা কহিলেন, "ভীম। গা-ত্রোপাদ বর ; তোমার কিছুমাত্র ভর নাই ; আমরা তোমারে রকা করিব ; বেহেডু তুমি আমাদিগেরই

তোমারে সমরে পরাজিত করিতে পারিখেন না, বরং ভূমিই তাঁহারে পরান্ত করিবে। হে ভরতর্বভ! বিশ্বকর্ম-বিনির্দ্মিত প্রস্থাপ নামে এই যে স্থাপ্রিয় প্রাকাপত্য অন্ত্র, ইহা তোমার জ্ঞানগোচর হইবে ; যেহেতু পূর্বে জন্মেও ইহা তোমার বিদিত ছিল। হে ভারত! রাম কি পৃথিবীন্থ অন্য কোন পুরুষ, কেহই আর কথন ইহার তত্ত্ব জানিতে পারেন নাই; অতএব হে মহাবাহো! তুমি ঐ অস্ত্র স্মরণ কর এবং দৃচৰূপে সন্ধানও কর। হে নরাধিপ। ঐ অন্ত-ছারা রাম বিনাশ প্রাপ্ত হইবেন না; স্থতরাং তো-মাকেও ব্ৰহ্মহত্যা পাপে ৰুদাচ লিপ্ত হইতে হইবে না। হে ভীম। তোমার বাণ বলে পীড়িত হইয়া রাম কেবল শয়ন করিবেন মাত্র; অনস্তর তাঁহাকে জয় করিয়া ভুমিই পুনরায় প্রিয়তম সংযাধনাস্ত্র-দ্বারা উপ্বাপিত করিবে। অতএব হে পার্থিব! প্রভাতে রথস্থিত হইয়া এইরূপ কর; প্রস্থুপ্র অথবা মৃত, উত্তয়ই আমরা তুল্যজ্ঞান করি। হে কৌরব। রামের কদাচ মৃত্যু হইবে না; অতএব সম্যক্ উৎ-পন্ন এই প্রস্থাপ **অন্তে**র যোজনা কর।

হে রাজন ! সেই ভাশ্বর-মূর্ত্তি, সমান-রূপ বিশিষ্ট অফ দ্বিজ্ঞান্ত এই কথা বলিয়া সকলেই অন্তর্জান করিলেন।

ভীয়-স্বপ্নোপদেশে পঞ্চাশীতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ৷ ১৮৫ ৷

ভীয় কহিলেন, হে ভারত। অনন্তর রজনী অতীতা হইলে আমি জাগরিত হইলাম এবং দেই স্বপ্ন-র্ভান্ত চিন্তা করিয়া যথেত হর্বলাভ করিলাম। পরে রামের ও আমার সর্বালোক-লোমাঞ্চকর পরমারুত তুমুল সংগ্রাম আরম্ভ হইল। হে ভারত: তৎকালে ভার্গব আমার উপরে বাণ্ময় র্ফিপাত করিলেন এবং আমিও শরজাল-ছারা ভাহা নিবারিত করিলাম। জনন্তর সেই মহাতপা ভৎকালের

ও পূর্ব দিনের কোপে দংকুল হইরা আমার প্রতি वामरवत वज जूका कठिना, माकाए यममख-ममृनी শক্তি নিদুক্ষপ করিলেন। হে ভরতর্বভ! সেই খোর-ৰূপী শক্তি, প্রস্থালিত হুডাশনের ন্যায় দীপ্তি-मञी एहेग्रा, राम ममद्राद्र मर्खिपिटक পরিলেহন क्रिंडिं नांगिन अवः श्रीतर्गरंच विद्यापित नाांत्र দ্রুতবেগে আসিয়া আমার ক্বল্লের সন্ধিন্থলে পতিতা হইল। হে লোহিতাক মহাবাহো! তথন রাম-কর্ম্ক বিক্ষত হওয়ায় গৈরিক ধাতু নিস্রবকারী ভূধ-রের ন্যার আমার অঙ্গত্র রক্তত্রাব হইতে লাগিল। স্থনন্তর আমি স্বতান্ত কোধান্তিত হইয়া জামদগোর প্রতি সর্পবিষোপম, মৃত্যু-সদৃশ বাণ নিক্ষেপ করি-লাম। মহারাজ! সেই বীর্বর দ্বিজ-সন্তম তদ্বারা ললাটে অভিহত হইয়া শৃঙ্গযুক্ত পর্বতের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর তিনি সংরম্ভ-পরবশ হইরা বল সহ্কারে শ্রাসন আকর্ষণ পূর্বক শক্রবিমর্দন কালান্তক-সদৃশ শর সন্ধান করিলেন। দেই **উগ্রশর গর্জনকা**রী সর্পের ন্যায় আমার বক্ষঃ-স্লে পতিত হইল। তাহাতে আমি রুধিরে কলুষিত হইয়া ধরাতলগামী হইলাম, কিন্তু পুনরায় চেতন লাভ করিয়া ধীদম্পন্ন জামদংগ্রের প্রতি জ্লন্থী স্থানীর ন্যায় দীপ্তিমতী শক্তি নিক্ষেপ করিলাম। হে রাজন্! ঐ শক্তি সেই দ্বিজবরের বক্ষঃস্থলে পতিতা হইল। তাহাতে তিনি বিহ্নল হইয়া কম্পিত হইতে লাগিলেন। তথন তাঁহার প্রিয়মিত্র মহাতপা অকৃতত্ত্রণ তাঁহাকে আলিঙ্গন-পূর্বক শুভ বাক্যাৰলি ছারা অনেক প্রকারে আশ্বাস দিতে থাকি-লেন। অনন্তর মহাত্রত রামসমাশ্বন্ত ও ক্রোধামর্থ-সমন্ত্রিত হইরা ব্রহ্মান্ত প্রাচুত্ত করিলেন। তথন তাহার প্রভিষাত নিমিত্ত আমিও পরম একাস্ত প্ররোগ করিলাম। মহারাজ! সেই মহান্ত যেন বুগান্ত अमर्भन कर्ब अचिनि इंटेंड नामिन। इह उद्रड-महम। त्रामरक कि यामारक श्रीक ना रहेशा यहतीक মধ্যে ই দেই উতন্ন অক্ষাত্রের সমাগম হইল। তখন

সমগ্র গগণতল তেজামর হইরা উঠিল এবং সমস্ত প্রাণিবর্গই সাতিশ্য় পীড়া প্রাপ্ত হইল। অন্ত তেজে সম্পীড়িত হইরা কি ঋবি, কি গন্ধর্ম কি দেবতা, সকলেই অতিমাত্র সন্তাপায়িত হইলেন। পর্যত, বন ও রক্ষ সকলের সহিত পৃথিবী বিচলিতা হইল এবং প্রাণি-মাত্রেই সম্ভপ্ত হইরা অত্যন্ত বিষাদ প্রাপ্ত হইল। নভোমগুল প্র্রুলিত হইল এবং দশদিকে প্রভূত ধূমরাশি সঞ্চরিত হইতে লাগিল; স্কুতরাং খেচরেরাও আকাশে অবস্থান করিতে পারিলেন না। অনন্তর দেবাস্থ্ররাক্ষস-গণ-সম্বলিত সমস্ত লোকে হাহাকার উৎপন্ন হইলে 'এই উভম অবসর' এইকপ চিন্তা করত আমি স্থরাম্বিত হইরা বেন্দ্রাদি-গণের বচন ক্রমে প্রস্থাপান্ত-প্রয়োগে অভিলাবী হইলাম। তৎকালে সেই বিচিত্র অন্তও আমার মনোমধ্যে প্রতিভাত হইল।

রাম-ভীয়যুদ্ধে বড়শীতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৮৬ ॥

-

ভীগ কহিলেন, হেরাজন! অনন্তর অন্তরীকে "হে কৌরব-নন্দন ভীগা! প্রস্থাপাস্ত্র পরিত্যাগ করিও না" এই রপ মহান্ হলহলা শব্দ উত্থিত হইল। তথাপি আমি ভৃগুনন্দনের প্রতি সেই অস্ত্র প্রয়োগ করিলাম। তথন নারদ আমাকে কহি-লেন, হে কৌরবা! দেখ আকাশে এই দেবগণ অবস্থিত রহিয়াছেন; ইহাঁরা সকলেই তোমারে নিবারণ করিতেছেন, অতএব ভূমি প্রস্থাপাস্ত্র প্রন্থান করিও না। হে ভারত! রাম তপন্থী ব্রহ্মনিষ্ঠ ব্রাহ্মণ, বিশেষত গুরু; অতএব কোন প্রকারে তাঁহার অবমান করিও না।

হে রাজেন্দ্র । অনন্তর আমি সেই আট জন বন্ধবাদী বালগকে আকাশস্থ দেখিলাম। তাঁহারা ঈবৎ হাস্য করত আমাকে কহিলেন, "হে ভরত-শ্রেষ্ঠ! নারদ যাহা বলিতেছেন, তাহাই কর; যে হেতু ইহা লোকের পরম হিতকর ম। অনন্তর আমি সেই মহৎ প্রস্থাপনাত্রের প্রতি-সংহার করিয়া বিধিপূর্ব্ধক ব্রহ্মান্ত্রই দীপিত করি-লাম। হে রাজ-সিংহ! তথন রোষাবিষ্ট পরশুরাম সেই প্রস্থাপনাত্র নিবর্ত্তিত হইল দেখিয়া সহসা এই কথা বলিলেন, ভীম আমাকে পরাজিত করিল; আমি অতিশর মন্দবৃদ্ধি

্তদনন্তর জামদগ্য মাননীয় বকীয় পিতৃপিতামহ-গণকে দেখিতে পাইলেন। তাঁহারা সেই হলে তাঁ-হারে পরিবেউন করিয়া অবস্থিত হইলেন এবং তৎকালে সাম্বনা-পূর্ব্বক এই কথা বলিলেন, " হে তাত! তুমি পুনৰ্বার কোন ক্রমেই এৰপ সাহস করিও না;—ভীগ্নের, বিশেষত ক্ষক্রিয়ের সহিত যুদ্ধ করিতে আর কথনই উৎসাহ করিও না। হে ভৃগু-नन्दन ! युक्त काकित्यत्रहे धर्म ; लाक्नर्गाप्तरात्र त्कवन স্বাধাায় ও ব্রত-চর্য্যাই পরম ধন। পূর্বের কোন কারণোপলক্ষে আমরা ভোমারে এই শস্ত্রধারণের কথা বলিয়াছিলাম এবং ভুমিও সেই অতি প্রচণ্ড অকার্যোর অনুষ্ঠান করিয়াছিলে। হে মহাবাহো! সমরে ভীমের সহিত তোমার এই যুদ্ধ এই পর্যান্তই পর্যাপ্ত হইল; অতএব হে বংস! সংপ্রতি এই রণস্থল হইতে অপগত হও। হে ভার্গব! তোমার **ध**सूक्षात्रगं ७ ० रे भर्याष्ठ भर्याश्व हरे**न ; च**रु ० र ह তুরাধর্ষ ! ইহা বিসর্জন-পূর্বকে তপস্যা কর। সমস্ত দেবগণ এই শান্তমুনন্দন ভীন্নকে ,, হে কুৰুজ্ৰেষ্ঠ ! এই সংগ্রাম হইতে নির্ত্ত হও; গুরু জামদংগার সহিত যুদ্ধ করিও না; ইহাঁরে সমরে প্রাজয় করা ভোমার উচিত নছে; হে গাঙ্গেষ 📍 রণাঙ্গনে এই ব্রাহ্মণের যথোচিত সম্মান কর ,, পুনু: পুন এই কথা বলিয়া নিবারিত ও প্রসাদিত করিয়াছেন। অতএব হে বৎস! আমরাও তোমার শুরু, একারণ তোমারে বারণ করিতেছি। হে পুত্রক। ভীম বস্থ-গণের মধ্যে একজন প্রধান; অতএব ভাগ্যক্রমে তুমি य जीविक त्रविहाह, देशरे यद्ये । ए जार्गत! শান্তমুর উন্নদে গঙ্গার গর্বে উৎপন্ন এই মহাযশা

বস্থকে, তুমি কি প্রকারে পরাজয় ক্রিতে পারিবে? অতএব সম্প্রতি নির্ভ হও! স্বয়ন্তু বিধাতা, পুর-ন্দর-পুত্র বলশালী পাণ্ডবশ্রেষ্ঠ অর্জুনকে ভীয়ের যথাকালে মৃত্যুরূপে নির্মিত করিয়াছেন।

ভীম কহিলেন, রাম নিজ পিতৃগণ কর্জ্ক এই ৰূপ উক্ত হইয়া তাঁহাদিগকে বলিলেন, আমি যুদ্ধে কখন নির্ভ হইব না, এইৰূপ ত্রত ধারণ করিয়াছি; এবং পূর্বেও আর কোন কালে সমরে নিবর্ভিত হইনাই, অতএব হে পিতামহগণ। ইচ্ছা হয়, আপনারা গঙ্গা-তনয়কেই যুদ্ধ হইতে নিব্ভিত ক্রন, আমি এই যুদ্ধ হইতে কোন প্রকারেই নির্ভ হইব না।

হে রাজন! অনন্তর সেই ঋচীক-প্রভৃতি মুনিগণ তৎকালে নারদের সহিত মিলিত হইয়া আমার নিকটে আগমন-পূর্বাক কহিলেন, হে তাত! সংআম হইতে নির্ভ হও; এই দিজোন্তমের সম্মান কর। তথন আমিও ক্ষত্রধর্মের প্রতীক্ষায় তাঁহাদিগকে এইকথা বলিলাম, লোকে আমার এই ব্রত
আছে, যে, আমি যুদ্ধ হইতে পরায়ুখ ও পশ্চান্তাগে
শর দারা অভিহত হইয়া কদাচ নির্ভ হইব না।
আমি না লোভ, না ক্রপণতা, না ভয়, না অর্থলিকা,
কিছুতেই চিরন্তন ধর্ম পরিত্যাগ করিতে পারিব না,
ইহাই আমার হির নিশ্রয়।

হে নরপতে! অনন্তর নারদ-প্রভৃতি সমস্ত মুনিগণ ও আমার মাতা ভাগীরথী রণমধ্যে আগমন
করিলেন, তথাপি আমি সেইৰূপ ধনুঃশরধারী ও
দৃঢ়নিশ্চর হইয়া যুদ্ধার্থে অবস্থিত রহিলাম। তথন
তাঁহারা সকলে মিলিত হইয়া পুনরায় ভৃগুনন্দনকে
কহিলেন, হে ভাগব ! বিপ্রগণের হৃদয় নবনীত-তুলা
কোমল; অতএব তুমিই শাস্ত হও। হে রাম ! হে
রাম ! হে দিজোন্তম ! এই যুদ্ধ হইতে নির্ভ হও!
হে ভৃগুনন্দন ! ভীয় তোমার অবধ্য এবং তুমিও ভীমের অবধ্য। সেই পিতৃগণ রণস্থল প্রতিরোধ করিয়া
সকলেই এই কথা বলিতে ক্লিতে রামকে শস্ত্র
পরিত্যাগ করাইলেন। অনন্তর আমি সেই সমুদিত

अश्रु क्षत्र नात ही शामान उक्तवाही चक सविदक পুনরার দেখিতে পাইলাম। তাঁহারা সমরে স্থিত षामारक व्यवप्र-मद्यालंड अहे वाका कहिरानन, रह মহাবাহো! লোকের হিতকার্য্য কর; বিনীতভাবে ভোমার গুরু পরশুরামের সন্নিহিত হও। তখন আমি রামকে সেই স্থক্তাকো নিবর্ত্তিত হইতে দেখিয়া লোকের হিত করণার্থে স্বীয় স্থল্ছাক্য গ্রহণ করিলাম। অনন্তর অত্যন্ত বিক্ষত হইয়াও রাম-नभीरा भगन-शृक्षक छै। हारत वन्तना कतिलाम। মহাতপা রামও প্রেমভরে ঈষৎ হাস্য করিতে করিতে षां मारक कहिरलन, जीय! এই পৃথিবী তলস্থ সমস্ত লোক মধো তোমার সমান ক্ষজ্রিয় পুরুষ আর কুত্রাপি বিদামান নাই; এই যুদ্ধে তুমি আমাকে অতিশয় সম্ভুট করিলে, সম্প্রতি গমন কর। আ-মারে এই কথা বলিয়া ভার্গব সেই মহাত্ম-গণ-মধ্যে আমার সমক্ষেই সেই কন্যাকে আহ্বান-পূর্ব্বক দীন বচনে পশ্চাছুক্ত ৰূপে সম্ভাষণ করিলেন।

> রাম-ভীয়-যুদ্ধ-নিবর্তনে সপ্তাশীত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥১৮৭॥

> > -3.6.€- .

রাম কহিলেন, হে ভাবিনি! আমি যে সামর্থা অমুসারে পরম পৌর্য প্রকাশ-পূর্বক যুক্ত করিলাম, ইহা সকল লোকেরই প্রভাক্ত হইল। নিরতিশয় উত্তমান্ত্র সমন্ত প্রদর্শন করিলাম, তথাপি শক্তধারি-শ্রেষ্ঠ ভীমকে পরান্ত করিতে পারিলাম না। আমার যত্রর শক্তি ও বল আছে, তাহা এই প্রকাশ করিলাম, অত্রব হে ভত্রে! একণে যথা ইচ্ছা গমন কর। তোমার অপর কার্যাই বা আমি কি করিব, সম্প্রাক্ত তুমি ভীমেরই শরণপ্রমা হও; এভত্তির তোমার আর অনা গতি নাই; দেখ, আমি পরমান্ত্র সমন্ত পরিত্যাগ করিরাও ভীম-কর্তৃক নির্দ্ধিত হইলাম। মহামনা পরশুরাম এইকপ উক্তি করিয়া নিখার পরিত্যাগ্ধ-পুর্কক নিত্তর হইলেন। অন্তর অহা ভাহারে কহিলেন, ভগবন্থ। আপনি যাহা

ৰলিভেছেন যথাৰ্থ ষটে; এই উদান্ন-বৃদ্ধি ভীয় সমরে অমরগণেরও অব্দের। আপনকার বাদুলী শক্তি ও বেৰপ উৎুসাহ, আপনি তদমুসারেই আ-মার কার্য্য করিয়াছেন, রণে অনিবার্য্য বীর্য্য ও বছ-विथ अञ्चलोछ धानर्गन कत्रितनन, छशाणि जीम अदूश-কা বিশিষ্ট হইতে পারিলেন না ; কিন্তু হে তপোঁ-ধন! আমিও ঐ ভারের নিকটে পুনর্বার আর क्लान करमरे भमन क्रिय ना ; मिरे इता यारेव, যেখানে আপনিই উহাকে সমরে পরান্ত করিতে পারিব ৷ এই কথা বলিয়া কন্যা রোবে ব্যাকুল-নয়ন৷ হইয়া পমন করিলেন এবং আমার বধ চিস্তা করত তপদাায় কৃতসংকশ্প। হইলেন। অনন্তর ভৃগু-नडम कामनद्या सिर्हे मूनिभरात महिल कामारक বিদায়-কাল-সমুচিত সম্ভাষণ করিয়া, যৈৰূপে আসি-য়াছিলেন, পেই ৰূপেই মহেজ্ৰ-শিখরে গমন করি-লেন। হে ভারত। তথন আমি রথারোহণ করিয়া ধিজগণ-কর্তৃক স্থুন্নমান হইয়া নগরে প্রবেশ-পূর্ব্বক জননী সভাবতীরে সমুদায় রুত্তান্ত নিবেদন করিলাম এবং তিনিও আমাকে প্রতিনন্দিত করিলেন। মহারাজ! তৎপরে আমি অমার হৃতাত পরিজ্ঞা-নার্থে প্রজ্ঞা-সম্পন্ন স্থানিপুণ পুরুষ সকলকে আদেশ করিলাম। সেই নিযুক্ত চারেরাও আমার প্রিয় ও হিত-কার্যো নিতা অবস্থিত থাকিয়া সেই কন্যার দৈনন্দিন গতি, ভাষিত ও চেষ্টিত সমস্ত প্র গ্রাহরণ করিতে লাগিল। হে তাত। অস্বা যখন তপস্যায় ক্বতসংকল্পা হইয়া বনে গমন করিলেন, তখনই আমি বাধিত, দীনভাবাপন্ন ও গত-চেতন হইলাম ; যে**হেতু ত্রন্ধুভের নিকটেই আমার** ভর হইয়া থাকে, তপদ্যায় সংশিতত্তত ত্ৰদ্মজ ব্যতিরেকে আরু কোন ক্ষজিয়ই বীৰ্যা-ছারা আমাকে যুক্তে জয় করিতে शाद्र नारे। ए ब्रावन्! यामि नावम् ७ वहादमञ्ज নিকটেও এই কার্যা নিবেদন করিলাব; ভাহাতে ভাহারা আমারে বলিলেন, ভীষা ভূমি কালি-क्मात्र अधि विकास क्तिश्व माः शूक्रवकात-दाता

কোন্ মানব দৈবকে অভিক্রম করিতে উৎসাহাদ্বিত হর?

মহারাজ! সেই কন্যা আত্রম-মণ্ডলে প্রবেশ-পুর্বাক যমুনার ভীর আঞার করিয়া অলৌকিক ভপুসা করিতে লাগিলেন। তিনি নিরাহারা, রুশা, क्रका, करिना, मलशहराहिनी ও স্থাণুর ন্যায় নিশ্চলা হইয়া ছয় মাদ কাল বায়ুমাত্ৰী ভক্ষণ করিয়া তপ-স্যায় অবস্থিতা রহিলেন, তাহার পর এক বংসর যমুন। জল আত্রয় করিয়া নিরাহারে উপবাস করত ব্রত ধারণ করিলেন, পরে একটিমাত্র গলিত পত্র ভোক্সন-দারা অপর এক বংসর অতিবাহিত করি-লেন। দেই ভীত্রকোপা তপোধনা পাদামুর্ছের অথ্র-ভাগ-ছারা অধিষ্ঠিতা হইয়া এইৰূপে ছাদশ বর্ষ কাল তপদাা-দ্বারা স্বর্গ ও ধরনীকে তাপিতা করিলেন। জ্ঞাতিগণ বিস্তর চেফী পাইলেও কিছুতেই আর তাঁহাকে নির্ভা করিতে পারিলেন না। অনন্তর অয়া পুণাশীল মহায়৷ তাপদগণের আশ্রমভূতা সিজ-চারণ-দেবিত। বংসভূমিতে গমন করিলেন। তথায় পু্যা-তার্থ সকুলে দিবানিশি অবগাধন করত যথেচ্ছ-বিচারি । ইইরা সর্বত পরিভ্রমণ করিতে লাগিলেন। মহারাজ! তিনি ক্রমে ক্রমে নন্দার্প্রমে উলুকার্প্রমে, চ্যবনের আশ্রমে, ব্রক্ষানে, প্রয়াপে, দেবযজনে, দেবারটো, ভোগবভীতে, বিশ্বানিতের আশ্রমে, মাও-त्व बाधारम, निनीत्भव बाधारम, ब्रामहत्न उ ঐলমার্গের আশ্রমে বিচরণ করিলেন। ছে বিশা-ম্পতে ! সেই কাশিরাজ-কনা ছুম্বর ব্তাব্লয়ন-ক তংকালে এই সমস্ত তার্ধে কলেবর বৌত

ক তংকালে এই সমস্ত তীর্ণে ক্লেবর ধৌত করিরাছিলেন।

হে কৌরবা! কোন দিন কলে অবস্থিত। আমার জননা তাঁহারে কহিলেন, ভড়ে! তুমি কি নিমিন্ত একপ ক্লেশ খাকার করিভেছ আমারে বথার্থ করিয়া বল। তাহাতে সেই অনিন্দিতা কাশিকনা। অঞ্জুলি-বন্ধন-পূর্বাক তাঁহাকে এই কথা বলিলেন, হে দেবি! হে চারবর্গাচনে। তীম রামকে সমরে নিম্মিত করিয়াছে; অন্য আর কোন্ মহীপতি সেই উদ্যু-তাত্র মহাবীরকে জয় করিতে পারে? অতএব আমি ভীমের বিনাশার্থে স্থদারুণ তপদ্যা করিব এই মনে করিয়াই পৃথিবী পরিজ্ঞমণ করিতেছি। হে দেবি! কোন ক্রমে সেই নৃপতিকে নিহত করিতে পারি, ইহাই আমার ব্রতের পরম ফল।

অনস্তর সাগরগামিনী জননী তাঁহারে কহিলেন, হে ভাবিনি! তুমি কুটিলতাচরণ করিতেছ, হে অবলে! তোমার এ অভিলাষ পূর্ণ হইবে না। হে কাশিকন্যে! যদি ভীয়ের বধার্থে তুমি এই ব্রতাচরণ কর, এবং ব্রতস্থা হইরা যদি শরীর বিসর্জন কর, তবে কুটিল-সঞ্চারিনী নদীরূপ প্রাপ্ত হইবে। কেবল বর্ষাকালেই তোমার জল হইবে, অন্য অই মাস তুমি শুদ্ধা হইয়া থাকিবে। অপিচ তোমার তীর্থ সকল কদর্য্য হইবে এবং কেহই তোমাকে জানিতে পারিবে না। তুমি ভীষণ-গ্রাহবতী ও ঘাররূপা হওয়ায় সর্বাভূতের ভয়য়রী হইবে।

ह् ताकन्! श्रामात्र माठा महाजाशा जाविनी जाशीतथी क्रेयर हामा क्रिए क्रिए

আয়া তপ্সায়ে অফাশীতাধিক শততম আধাায় সমাপ্ত॥১৮৮॥

ভীন্ন কহিলেন, অনন্তর বেই তাপুসেরা সকলে কাশিরাল-কন্যাকে তপস্যায় ধৃত সংক্ষণা দেখিয়া

নিবারিতা করিলেন এবং ভাঁহার কার্যা কি, ইহাও জিজাসা করিলেনা তথন অয়া সেই তপোর্জ अविशंगत्क कहित्त्रन, त्र ज्ञाधनशंगः। यामि जीय-'কর্কৃক নিরাক্লতা ও পতি-ধর্ম হইতে জংশিতা হই-য়াছি; অতএব তাহারই বধের নিমিত্ত আমার এই দীকা, স্বর্গাদি লোকপ্রাপ্তির নিমিত্তে নছে। ভীন্নকে নিহত করিয়া শান্তি লাভ করিব, ইহাই আমার স্থির নিশ্চয়। হে তাপদবর্গ! যাহার নিমিত্ত আমি এই চিরন্তনী ছুঃধবসতি প্রাপ্ত হইয়াছি এবং পতিলোক হইতে বিহীনা হইয়া না জ্রী, না পুরুষ হইরা রহিয়াছি, সেই গঙ্গাতনয়কে যুদ্ধে বিন্ট না করিয়া আর নির্ভা হইব না। আপনাদিগকে এই रय कथा विल्लाम, रेहारे जामात्र स्मग्निक मश्कल्य। আমি স্ত্ৰী ভাবে সৰ্বভোভাবে নিৰ্বেদ প্ৰাপ্তা হই-লাম, এক্ষণে পুরুষত্ব লাভে ক্নতনিশ্চয়া হইয়া ভী-গ্নের প্রতি বৈরনির্যাতন নিমিত্ত ইচ্ছা করিতেছি; অতএব আপনারা আর আমারে নিবারণ করি-বেন না।

হে ভারত ! অনম্ভর দেবদেব খূলপাণি উমাপতি त्रहे महर्षिशंग-मर्पा निकक्त थे जाशनीरत पर्मन দিলেন এবং তাঁহার কি অভীষ্ট আছে, প্রার্থনা করিতে বলিলেন। তখন বরপ্রার্থনা নিমিত্ত প্রে-রিতা হইয়া সেই মনস্থিনী আমার পরাজয়-কামনা করিলেন। তাহাতে মহাদেব "অবশ্য বধ করিবে" তাঁহারে এইৰূপ প্রত্যুত্তর করিলেন। অনন্তর অয়া পুনরায় রুড়কে কহিলেন, হে দেব! আমি জ্রী হইয়া যুদ্ধে জয় করিব, ইহা কিব্রপে উপপন্ন হইতে পারে? হে ভুতেশ্বর উমাপতে ! স্ত্রীভাব বিশেষত তপস্যা-ভারী ব্যামার মন প্রগাঢ় ৰূপে শান্ত ইইয়াছে; আপনিও ভীয়ের পরাজয় অঙ্গীকার করিলেন, অতএব হের্বধক! শান্তমু-তনয় ভীন্ন মাহাতে সামার বধা হয়, তাহা করুন। আমি ভাহার সহিত যুদ্ধে সমাগতা হইরা যাহাতে ভাহাকে নিহত করি-তে পারি, **ভাহার উপায় বিধান করুন**।

ज्थन महारम्य त्रव्यक त्रहे कन्यारक कहिरमन, **छट्छ! जामात्र वाका कथन मिथा। इत्र ना, हेहा** ব্দবশ্যই সভা হইবে। তুমি ভীন্নকে সমরে বিনফী করিবে, পুরুষত্বও লাভ করিবে এবং অন্য দেহে গমন করিয়া পূর্ব্ব-রুত্তান্ত সমন্তও স্মরণ করিবে ক্রপদের কুলে জন্মগ্রহণ করিরা তুমি মহারথ, শী-ভ্ৰান্ত, তীক্ষুযোধী ও ষ্ট্ৰসন্মত যোদ্ধা হইবে। হে কল্যাণি! আমি যাহা বলিলাম, সকলই সত্য হইবে; তুমি কিয়ৎ কাল পরে পুরুষ হইবে। র্যধ্জ কপর্দী মহাদেব এইৰূপ উক্তি করিয়া বিপ্রগণের সাক্ষাতেই অন্তর্জান করিলেন। অন্তর অনিন্দিতা বরবর্ণিনী অম্বা সেই মহর্ষিগণের গোচরে বন হইতে কাঠ আহরণ-পূর্বক বমুনা নদী সমীপে মহতী চিতা নির্মাণ করিয়া ভাহাতে হতাশন সংযোগ করিলেন। মহারাজ! (সেই অগ্নি প্রস্থালিত হইলে ঐ কাশি-রাঙ্গের জ্যেষ্ঠা কন্যা রোষ-প্রদীপ্ত-চিত্তে "ভীয়ের বধার্থে আমি এই অগ্নিতে প্ররেশ করি ^৯ এই বলিয়া তশ্বধ্যে প্রবেশ করিলেন।

অস্বা-ছতাশন-প্রবেশে একোননবত্যধিক শত-তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৮৯॥

ছুর্য্যোধন কহিলেন, হে যোধপ্রবর গঙ্গানদ্দন পিতামহ! শিখণ্ডী পূর্ব্বে কন্যা থাকিয়া পশ্চাৎ কিরূপে পুরুষ হইল, তাহা বর্ণন করুন।

ভীয় কহিলেন, হে রাজেন্দ্র! স্থবিখ্যাত মহীপতি
দ্রুপন্রাজের প্রিয়তমা মহিবী অপুলা ছিলেন।
মহারাজ! এই সময়ে দ্রুপদরাজ আমার বধার্থে
কৃতনিশ্চর হইরা ঘারতর তপ্যা অবলয়ন-পূর্বাক
আশুতোবকে তোবিত করিরাছিলেন। "হে ভগবন্! আমি ভীয়ের প্রতিহিংসা কামনার পুল ইছা
করিতেছি; অতএব হে শহর! কন্যা ব্যতিরেকে
আমার বেন একটি পুল হর ই তাঁহার এই প্রার্থনাবাক্রা প্রবণে দেব দেব কহিলেন, ভোমার ত্রী অধ্চ
পুরুষ এবপ এক মন্তান হইবে; হে মহীশাল! তুমি

নির্ভ হও, আমি যে কথা বলিলাম, কদাচ ইহার অন্যথা হইবেক না। দ্রুপদ মহাদেব-কর্তৃক এই-কপ উক্ত হইয়া নগরে গমনানস্তর ভার্যারে কহিলেন, হে মহাদেবি! আমি বিস্তর যত্ন করিয়া তপ্রায় শল্পকে প্রসাদিত করিয়াছি; তিনি বলিলেন, ভোমার কন্যা অথচ পুত্র একপ এক সস্তান হইবে। তাহাতে আমি পুনঞ্জুনং প্রার্থনা করিলেও শক্ষর কহিলেন, ইহা দৈব, কদাচ অন্যথা হইবার নহে। অতএব হে ভাবিনি! তাহার আর অন্যথা হইবে না; কেন না সেইক্পই ভবিতব্য।

অনন্তর মনস্থিনী ক্রপদ-রাজ-পত্নী ঋতু-কালে
নিয়মবদ্ধা হইয়া ক্রপদের সহিত সহবাস করিলেন
এবং শাস্ত্রদৃষ্ট কর্ম্ম-দারা যথা-কালে গর্ৱ লাভ করিলেন। মহারাজ! নারদ আমাকে শিখণ্ডীর যেকপ জন্ম-রন্তান্ত বলিয়াছিলেন, আমি ত্রাহাই বর্ণন
করিতেছি।

ह कुक्रनमन । त्मरे ताकीय-नश्ना महाराजी शई-ধারণ করিলে মহাবাছ দ্রুপদরাজ পুত্র-স্নেহ-ছেতুক সর্বতোভাবে ভার্যার স্থখ-পরিচর্যা করিলেন। হে রাজন্! দ্রুপদ় অপুত্র ছিলেন, স্বতরাং তাঁহার ভার্যা যে যে অভিলাষ করিলেন, সকলই প্রাপ্ত হইতে লাগিলেন। পরিশেষে সেই নূপ-মহিবী যথা कारन छे । क्रिके निमा क्रिके निमा क्षेत्र क्रिलिन। হে রাজেন্দ্র! দ্রুপদরাজের পুত্র না ধাকায় তাঁহার মনস্থিনী ভামিনী 'আমার এই পুত্র হইল 'বলিয়া প্রচার করিলেন। হে নরাধিপ। অনন্তর ক্রপনরাজা সেই প্রচ্ছন্না কন্যাকে পুত্রবৎ জ্ঞান করিয়া তাহার সমস্ত পুত্রকার্য্য করাইলেন এবং ভাঁহার মহিবীও পুত পুত विलया नर्व अयद्भ मञ्ज बका क्रिलन। নগর-মধ্যে একমাত্র দ্রুপদ ভিন্ন আর কোন পুরুষই महे कन्यादक कन्या विषय्ना कारन ना। इ ताकन्! क्रिशन अपूर्ण - एका महादमदात वादका आकालू हहे-য়াই সেই কন্যাকে প্রচ্ছন্ন করত পুরুষ বলিয়া প্রচার করিলেন এবং পুরুষবিধিধান-যুক্ত জাতকর্ম নির্বাহ

করাইলেন। লোকে ঐ কন্যাকে শিখণ্ডী বলিয়া জানে, কিন্তু আমিই একাকী চার-দারা এবং নার-দের বচন, দেব-বাকা ও অস্থার তপস্যা-দারা তাহার স্বৰূপ জানিতে পারিয়াছি।

> শিখণ্ডি-জন্মগ্রহণে নবত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৯০ ॥

ভীয় কহিলেন, হে রাজেন্দ্র ! পরত্বপ দ্রুপদরাজ কন্যার লেখা ও শিশ্প-প্রভৃতি সর্ব্ব কর্মে যত্ন করি-লেন। শিখণ্ডী বাণ ও অন্ত্র শিক্ষায় দ্যোণের শিষ্য হইল। তাহার বরবর্ণিনী জননী পুজের ন্যায় কন্যার দারপরিগ্রহ নিমিন্ত রাজাকে অনুরোধ করিলেন। মহারাজ ! তখন দ্রুপদরাজা কন্যাকে প্রাপ্ত-যৌবনঃ দেখিয়া এবং মনে মনে স্ত্রী জ্ঞান করিয়া ভার্যার সহিত চিন্তা করিতে লাগিলেন।

ক্রপদ কহিলেন, দেখ, আমার এই শোকবর্জ্না কন্যা যৌবন কাল প্রাপ্ত হইল; আমি খুলপাণির বচনক্রমে ইহারে প্রচ্ছনা করিয়া রাখিয়াছি।

ভার্যা। কহিলেন, মহারাজ! তাহা কথনই মিধ্যা হইবেনা; তৈলোকোর কর্ভা হইয়া মহাদেব কি প্রকারে মিধ্যা বলিবেন। হে রাজন! যদি আমার বাক্যে আপনকার আস্থা হয়, তবে যাহা বলিতেছি, শ্রেবণ করুন এবং শুনিয়া আপন মতামুসারে কার্যা করুন। যত্ন সহকারে বিধি-পূর্বেক ইহার দারসংগ্রহ করুন; আমার নিশ্চয় বোধ হইতেছে, শিব-বাক্য অবশাই সতা হইবে।

অনন্তর তাঁহারা দ্রী পুরুষে সেই কার্য্যে নিশ্চর করিয়া দশাণাধিপতির কন্যাকে নিজ কন্যার নিমিত্ত প্রার্থনা করিলেন। রাজসিংহ দ্রুপদরাজ কুলান্ত-সারে সমন্ত রাজগণের র্ত্তান্ত শুবণ করিয়া দশাণ ভূপতির ছুহিতাকেই শিখণ্ডীর দারার্থে বরণ করি-লেন। হিরুণ্যবর্মা নামে বিখ্যাত দশার্ণ মহীপতিও সেই শিখণ্ডীরে কন্যা প্রদান করিলেন। সেই মহা-মনা হিরণ্যবর্মা দশার্ণ-দেশে মহান, স্বন্ধুজ্জর, মহতী

নেনা বিশিষ্ট, ছুর্ম্মর্থ রাজা ছিলেন। হে রাজসভ্তম ! বিবাহ নিৰ্মাহ হইলে সেই কন্যা ও শিখণ্ডিনী উড-एवर कारम कारम नाम्पूर्ग यूवजी रुहेन । निर्था पात-পরিগ্রহ করিয়া কান্সিলা নগরে প্রত্যাগমন করিল। ক্রিছে কাল পরে সেই কনাা উহাকে জ্রী বলিয়া ক্রানিতে পারিল। হিরণাবর্মার কন্যা শিখণ্ডীকে শিथेखिनी जानिया लड्डा-नड-वर्गात थांबी ७ मथी-গণের নিকটে ঐ পাঞালরাজ-ছুহিতার স্বৰূপ র্ত্তান্ত নিবেদন করিল। হে রাজশার্দূল! তথন দশার্ণ-রাজের ধাত্রীগণ পরম ছুংখান্বিতা হইয়া প্রভু-সন্ধি-ধানে দুতী সমস্ত প্রেরণ করিল। সেই দুতীরাও म्मार्गाधिरभन्न निकटि अवश्वनात तृखास यथावर বিজ্ঞাপন করিল এবং রাজাও শুনিয়া কুদ্ধ হইলেন। এ দিকে শিখণ্ডীও নারীভাব গোপন করত আহ্লাদ-যুক্ত হইয়া পুরুষের ন্যায় রাজকুলে বিচরণ করিতে থাকিল।

হেরাজেন্দ্র! রাজা হিরণাবর্দ্দা কতিপর দিবসান্তরে ঐ রভান্ত শ্রবণ করিয়া রোঘে পীড়িত হইলেন, অনন্তর অতিশয় কোপান্থিত হইয়া দ্রুপদসদনে দৃত প্রেরণ করিলেন। হিরণাবর্দ্দার দৃত
দ্রুপদের সির্মাহত হইয়া একাকী তাঁহাকে একান্তে
লইয়া নিচ্ছানে এই কথা বলিল, হে রাজন্! আপনি
প্রতারণা করায় দশার্ণরাজ আকোশে প্রকুপিত
হইয়া আপনারে এই কথা বলিয়াছেন, য়ে, হে নরপতে! তুমি যে মোহ-প্রযুক্ত নিজ কন্যার্থে আমার
কন্যা প্রার্থনা করিয়াছিলে, সে ভোমার নিশ্রমই
ফুই্মন্ত্রণার কার্য্য। তুমি আমার অবমাননা করিতেছ বটে, কিন্তু রে ছুর্মতে! সম্প্রতি ভোমার সেই
প্রস্তারণার কল প্রাপ্ত হও। আমি এই ভোমাকে
অমাত্য-বন্ধুবাল্ধবগণের সহিত নিহত করি; হির

হিরণ্যবর্ম-দূতপ্রেষণে একনবভাধিক শভতম অধ্যার সমাপ্ত ॥ ১৯১॥

ভীয় কহিলেন, হে রাজন্! দৃত-কর্ত্ক এ ৰূপ উক্ত হইয়া গৃহীত-তক্ষরের ন্যায় ক্রপদের মুখে আর বাক্য সরিল না। তিনি মধুর-সম্ভাষী দৃতগণ-ছারা "এৰপ নহে" এই প্রকার সন্দেশ প্রেরণ করত বৈবাহিকের প্রসাদনার্থে অভ্যস্ত যত্ন করি-লেন। কিন্তু রাজা হিরণ্যবর্মা পুনরায় সন্ধান করিয়া জানিলেন, শিখণ্ডী পাঞ্চালের কন্যাই বটে; স্থভরাং ত্বরান্বিত হইরা যুদ্ধ-যাত্রার অভিসন্ধি করিলেন। অনন্তর তিনি ধাত্রীগণের বচন-ক্রমে ছুহিতার সেই প্রতারণা-র্ভাস্ত অমিত-তেজস্বী মিত্রগণের নিকটে প্রেরণ করিলেন। হে ভারত! সেই রাজ্বসন্তম হিরণ্যবর্মা স্থমহৎ বল সংগ্রহ করিয়া ক্রপদের প্রতি অভিযোগে মতি করিলেন এবং মন্ত্রিবর্গে মিলিত হইরা তদ্বিষয়ে মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। তাহাতে সেই মহাত্মা রাজগণের এইৰপ নিশ্চয় হইল, যে, শিখণ্ডী কন্যা, এ কথা যদি সত্য হয়, তাহা হইলে আমরা পাঞ্চালরাজ্ঞকে বন্ধন করিয়া এই স্থানে আনয়ন করিব এবং খন্য কোন নরেশ্বকে পাঞ্চালে রাজা করিয়া শিখণ্ডীর সহিত দ্রুপদকে নিহ্ত করিব। তথন নরাধিপ হিরণ্যবর্মা তাহাই নিশ্চয় জ্ঞান করিয়া "তোমাকে বধ করি, স্থির হও!" এই বলিয়া পুনর্বার ক্রপদের নিকটে দৃত প্রের। করিলেন।

ভীম কহিলেন, হে নরাধিপ! দ্রুপদরাক্ষা স্বভাবতই ভীত, ভাহাতে সেই পাপ-হেতুক অত্যন্ত ভয় প্রাপ্ত হইলেন। তিনি শোককর্ষিত হইয়া হিরণাবর্মার নিকটে দুত প্রেষণ-পূর্বক ভার্যার সহিত নিক্তনে সমাগত হইয়া ভয়াবিই ও শোকাভিছত-চিত্তে সেই শিখণ্ডিনী-জননী প্রেয়সী মহিনীকে কহিলেন, হে স্বজ্ঞোণি! আমাদিগের বৈবাহিক স্থমহাবল হিরণাবর্মা নরপতি সৈন্য সংগ্রহ-পূর্বক কোপভরে আমার প্রতি যুদ্ধাতা করিবেন। এক্ষণে এই কন্যার প্রতি আমরা কি করিব, কিছুই বুবিতে প্রিতিছিনা। শুনিলাম, ভোমার পুত্র শিখণ্ডী

কন্যা বলিরা পরিশক্তিত হইরাছে; এই নিমিডে হিরণাবর্মা 'জামি প্রবঞ্চিত হইয়াছি ' ইছা মনে করিরা যত্ন-সহকারে পরিচিন্তন-পূর্ব্বক মিত্র, বল ও অনুচরগণের সহিত মিলিয়া আমার উচ্ছেদসাধনে ইচ্ছা করিতেছেন। অতএব হে ভদ্রে! এ বিষয়ে সত্য মিধ্যা ব্যক্ত কর। তোমার বাক্য শুনিয়া আমি जमञ्चल विधान कतिव। ≰रु वत्रवर्गिन। प्रथं, আমিও সংশয় প্রাপ্ত হইয়াছি এবং এই বালা শিখণ্ডিনী ও তুমি, ভোমরাও উভয়ে মহাক্লেশগ্রন্থ হইয়াছ; অতএব আমি জিজ্ঞাসা করিতেছি, তুমি সকলের মোচনার্থে যথার্থ তত্ত্বল। হে শুচি-ন্মিতে! আমি শুনিয়া সেইৰূপ কাৰ্য্যেরই অমুষ্ঠান করি। হে বরারোছে! ভুমি যদিও আমাকে পুত্র-ধর্মে বঞ্চিত করিয়াছ, অর্থাৎ কন্যার প্রতি পুজের কার্য্য করাইয়াছ, তথাপি শিখণ্ডীর কি আপনার বিষয়ে ভয় করিও না; আমি রূপা করিয়া ভোমা-দিগের প্রতি যথাবং বিধান করিব। কিন্তু হে মহা-ভাগে! মহীপতি দশার্থরাজকে আমি যে প্রবঞ্চিত করিয়াছি, ভদ্বিয়ে কিৰূপ হিত বিধান করিব বল। পাঞ্চালরাজ জানিয়া শুনিয়াও কেবল অপরের নিকটে আপনার নির্দোষতা প্রচারার্থে এইৰূপ প্রকাশ্যভাবে মহিষীরে জিজ্ঞাসিলেন এবং তিনিও তাঁহাকে পশ্চাত্নক্ত-ৰূপে প্রত্যুত্তর দিলেন।

> ক্রপদ-প্রশ্নে দিনবতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৯২॥

ভীম কহিলেন, হে নরাধিপ! অনন্তর শিথণ্ডীর মাতা ভর্তাকে কন্যা শিথাণ্ডনীর বথার্থ বিবরণ বি-জ্ঞাপন করিলেন; বলিলেন, মহারাজ! আমার পুক্র না ধাকার সপত্মীগণের ভর-প্রযুক্তই, এই কন্যা শিখণ্ডিনী করিলে, ইহাকে পুরুষ বলিরা আপন-কার নিকটে নিবেদন করিরাছিলাম; আপনিও আমার প্রতি প্রতি-হেতুক সেই বাক্যের অমুমো-দন করিরাছিলেন এবং কন্যার পুক্রবং ভাতকর্মানি সম্পন্ন করিরাছিলেন। অপিচ আপনি দুশার্ণাধি-পের কন্যার সহিত ইহার বিবাহও দিয়াছিলেন এবং আমিও বাক্য-দারা তাহার প্রতি পোষকতা করিরাছিলাম। হে রাজন্! "কন্যা হইয়া পুরুষ হইবে" দেব-বাক্যের এইরপ অর্থ দুর্শন জন্যই আমি তাহার প্রতি উপেক্ষা করিয়াছিলাম।

হে ভারত! ইহা শ্রবণ করিয়া বছাসেন ক্রপদরাজ মন্ত্রজ্বিপকে সমস্ত তত্ত্ব বিজ্ঞাপন-পূর্বক প্রজারক্ষণ বিষয়ে যথাযুক্ত মন্ত্রণা করিয়াও " আমি
তিনি আপনি যথাবং প্রভারণা করিয়াও " আমি
দশার্গক নরপতির সহিত উপযুক্ত সম্বন্ধই করিয়াছি " এইরূপ উপপাদন-পূর্বক মন্ত্রণায় একাঞ্র
হইয়া কার্যানিশ্চয় অবধারণ করিলেন। হে য়াজেন্দ্র! তাঁহার নগর স্বভাবতই পরিরক্ষিত ছিল,
তথাপি আপৎ কাল উপস্থিত হওয়ায় তিনি সম্যক্
রূপে অলক্ষ্ত করিয়া সর্বতোভাবে তাহার রক্ষা
বিধান করিলেন।

হে ভরতর্ষভ! দশার্ণপতির সহিত বিরোধে পা-ঞালরাজ ভার্যার সহিত অতীব পীড়া প্রাপ্ত হই-লেন। বৈবাহিকের সহিত কি প্রকারে আমার এই মহান্ বিগ্ৰহ উপস্থিত না হয়, মনে মনে এইৰূপ চিম্তা করিয়া তৎকালে ভিনি দেবার্চনা করিতে লা-গিলেন। তথন নৃপ-মহিষী তাঁহাকে সেইৰূপ দেব-পরায়ণ ও পূজা-তৎপর দেখিয়া বলিলেন, মহা-রাজ! দেবগণের আরাধনা নিতাই কল্যাণ-সাধন বলিয়া সাধুলোকদিপের অভিমত; যে ব্যক্তি ছুংখা-র্ণবে নিমগ্ন হইয়াছেন, তাঁহার কথা আর কি আছে? অতএব আপনি দশার্ণের প্রতিষেধ নিমিত্ত দেবা-तार्थनार्थ जामाननगरक व्यक्ता कत्रन এवर वहन मिक्निना श्रामान-पूर्वक नमस एवका-वर्रात पूका ए व्यक्ति नकरनत ह्वन कक्रन। ए श्राटका ! योहारक বিনা যুদ্ধে শান্তি হয়, মনে মনে তাহাই চিস্তা कक्रन। (स्वर्गरक ध्वनामिष्ठ क्रिट्ल नक्लरे स्ट्रेट्न। হে বিশালাক ! পুরের অবিনাশ নিমিত আপনি

মন্ত্রিগণের সহিত যেৰূপ মন্ত্রণা করিয়াছেন, ভাছারও যথাবৎ অমুষ্ঠান করুন; কেন না পুরুবকার-যুক্ত हरेटलरे रेमब मण्पूर्न-कर्प भिक्क रहेआ थारक ; উख-য়ের পরস্পর বিরোধে সিদ্ধি হয় না। অভএব হে तारकलः ! महिदर्भागंत महिल नगत त्रकात विधान क्रिया कामनासूत्रादत रात्रवर्षत्त व्यात्राधना क्रून। তৎকালে তাঁহারা শোকপরারণ হইয়া এইরূপ সম্ভা-ষণ করিতেছেন দেখিয়া তাঁহাদিগের কন্যা তপস্থিনী শিপত্তিনী লজ্জিতার ন্যায় হইল। অনন্তর 'ইইারা আমার নিমিত্তই ছুঃখিত হইয়াছেন' এইৰূপ চিন্তা করিয়া সে প্রাণ-বিনাশের সংকণ্প করিল। হে রাজন্! শিখণ্ডিনী এইৰূপ নিশ্চয় করিয়া অভিশয় শোক-পরায়ণা হইয়া গৃহ-বিসর্জন-পূর্বক নির্জন গহন বনে গমন করিল। ঐ বন স্থাকণ-নামে এক জন সমৃদ্ধিশালী যক্ষের রক্ষিত। তাহার ভয়ে মমুব্য মাত্রই উহা পরিত্যাগ করে। তথায় স্থূণাকর্ণের একটি উন্নত প্রাকার ও তোরণ-যুক্ত, চূর্ণ-মৃত্তিকা-লেপিত, উশীর-পরিমলবাহি-ধূম-সমন্বিত আবাস ছিল। ক্রপদ-নন্দিনী শিথপ্তিনী ঐ আবাসে প্রবে-भिया वह रिम পर्यान जनगटन थाकिया भन्नोत एक করিতে লাগিল। তথন স্থূণাকর্ণ দয়ায়িত হইয়া তাহাকে দর্শন দিয়া কহিল, কি নিমিত্ত তোমার একপ উদাম হইয়াছে বল, আমি অচিরে তাহা মম্পন্ন করিব। তাহাতে শিখণ্ডিনী পুনঃপুন বলিতে লাগিল " দে অসাধ্য ব্যাপার, আপনি তাহা সম্পন্ন করিতে পারিবেন না।⁹ তাহাতে যক্ষ প্রভুত্তর করিল, আমি অবশাই করিব; হে নৃপ-নন্দিনি! আমি ধনেশ্বরের অমুচর, স্তরাং বরপ্রদানে সমর্থ; অতএব তোমার যাহা বলিতে ইচ্ছা হয় বল, আঁমি অদের হইলেও প্রদান করিব। হে ভারত। তখন निथंखी मरे यक-अधान कृषाकर्गक जाएगाभास সমস্ত র্জাস্ত নিবেদন করিল।

শিখণ্ডী কহিল, হে যক্ষ! আমার পুত্রহীন পিতা অচিরেই বিনাশ প্রাপ্ত হইবেন; কেন না দশার্ণা-

ধিপতি ক্রোধপূর্ণ হইয়া তাঁহার প্রতি যুদ্ধবাজা করিবেন। সেই হিরণ্যবর্মা নরপতি মহাবল ও মহোৎসাহ-সম্পন্ধ; অতএব হে যক্ষ! আমাকে ও আমার
জনক-জননীকে রক্ষা করুন। হে অনিন্দিত! আপনি
আমার ছংখ নিবারণের প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন, অতএব আপনকার প্রসাদে যাহাতে আমি পুরুষ হই,
তাহাই করুন। হে মহাযক্ষ! যে পর্যান্ত রাজা
হিরণাবর্মা আমার নগর হইতে অপগত না হন,
সেই পর্যান্তই আমারে এই প্রসাদ করুন।

শিখণ্ডি-স্থূণাকর্ণ-সংবাদে ত্রিনবত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৯৩ ॥

ভীম কহিলেন, হে ভরতর্ষভ! অনন্তর সেই যক্ষ শিখণ্ডীর বাক্য শ্রবণ করিয়া দৈবোপহত হইয়া মনে মনে চিন্তা করত প্রত্যুত্তর করিল, ভদ্রে! আমি অবঁশ্যই তোমার অভিলাষ পূর্ণ করিব, কিন্তু যেৰূপ' নিয়ম করিয়া দিতেছি, ভাবণ কর। কিয়ৎ কালের নিমিত্ত আমি আপনার এই পুংচিত্ন ডো-मारक श्रमान कतिव, शत्त निर्मिष्ठे ममरत्र जुमि আমার নিকটে আগমন করিবে, সত্য করিয়া বল। আমি সংকল্প সিদ্ধ কামচারী খেচর; যাহা মনে করি, তাহাই করিতে পারি ; অতএব তুমি আমার প্রসাদে নগরের ও বন্ধুবর্গের সম্পূর্ণ-ৰূপে পরিত্রাণ কর। হে নৃপনন্দিনি ! আর্থম তোমার এই স্ত্রী-চিহ্ন ধারণ করিব; ভুমি সভা করিয়া আমার নিকটে প্রতিজ্ঞা কর, আমি অবশ্যই তোমার প্রিয় সাধন করিব। হে কৌরব! যক এই যে কথা কহিল, আন-মার ছুংখ নিমিত্ত ইহাই ভবিতব্য ছিল। যাহা হউক, শিখণ্ডী ঐ কথা শুনিয়া বলিল, ভগবন্! আমি আপনকার পুংচিত্ন পুন: প্রদান করিব ; হে নিশাচর! আপনি কিয়ৎ কালের নিমিত্ত জীভাব ধারণ করুন। দশার্ণরাজ হ্রিণ্যবর্মা প্রতিগমন করিলে আমি কন্যাই হইব এবং আপনিও পুনর্কার পুরুষ হইবেন।

ि जीव करिएलम, एर द्वालम् । अरे कथा विनिन्ना ভাহারা উভয়েই ভাষিত্র শশ্ব করিল এবং পর-ন্দার লিক্স-সংক্রোমণ করিলা স্থূণাকর্ণ জীলিক ধারণ कतिन जर निच्छी तारे धानीश यक-नाम थाश हरेंन। (र পार्थित! अनस्तं भाकान-नमन मिथ्छी পুংস্তৃ আগু হইয়া ছফচিত্তে নগরে প্রবেশ-পূর্বক পিতার সন্নিহিত হইল এবং যাহা যাহা হইরাছিল, क्रश्रात्त निकटि मञ्जूषांत्र निर्देशन क्रिल। उथन দ্রুপদ তাহার সেই র্ত্তান্ত শ্রবণ করিয়া অতান্ত হ্রান্থিত ছ্ইলেন এবং ভার্যার সহিত মহেশ্বরের বাক্য স্মরণ করিলেন। অনন্তর তিনি দশার্ণাধিপ-সমীপে এই সংবাদ প্রেরণ করিলেন, যে, আমার এই পুত্র পুরুবই বটে, আপনি আমার কথায় বি-খাস করুন। তৎকালে রাজা হিরণাবর্মাও ছুংখ-শোক-সমন্বিত হইয়া সহসা পাঞ্চালরাজের অভি-মুখে আগমন করিলেন। অনস্তর সেই দশার্ণাধি-পতি কাম্পিল্য নগরের সন্নিহিত হইয়া একজন ব্রন্ধজভোষ্ঠ দুতকে সংকার-পূর্বক প্রেরণ করিলেন; কহিলেন, হে দূত! আপনি আমার বাক্যে সেই म्शाधम शाक्षानाटक अहे कथा वनिद्यन, त्य, त्र ছুর্মতে! ভুমি যে নিজ কন্যার নিমিত্ত আমার কন্যা বরণ করিয়াছিলে, সম্প্রতি সেই পর্কের ফল দর্শন कंद्रिद्व, म्रान्स्ट नारे।

হে রাজসন্তম। তাঁহার এই বাক্য শুনিয়া সেই
পুরোহিত ব্রাহ্মণ দশার্ণরাজ-প্রেরিত দূত-স্বরপে
নগরে গমন করিয়া ক্রপদ-পুরে উপনীত হইলেন।
তথন পাঞ্চালরাজ শিখণ্ডীর সহিত্ব তাঁহার নিমিত্ত
গো ও অর্থা-প্রভৃতি সমুচিত সংকার প্রদান করিলেন; কিন্তু তিনি তাহা গ্রহণ না করিয়া, বীরবর
নরপতি হিরণ্যবর্মা যে কথা বলিয়া দিয়াছিলেন,
তাহারই অমুবাদ করত কহিলেন, "রে অধ্যাচার!
তুমি যে কন্যা-দ্বারা আমারে প্রতারিত করিয়াছ,
ক্রেই পাপকর্মের কল প্রাপ্ত হও। রে ভ্রমতে! রণভূমিতে উপনীত হইয়া যুক্ক দান কর; আমি তো-

মাকে অমাজ্য, পুত্র ও বান্ধবগণের সহিত সদাই উচ্ছিন্ন করিব ?।

হে ভরতশ্রেষ্ঠ ! দ্রুপদরাজ মান্ত্রগণ-মধ্যে পুরোহিতের মুখে দশার্ণপতির উক্ত সেই তিরক্ষার-সংযুক্ত
বাক্য ভাবণ করিয়া প্রণয়াবনত হইয়া কহিলেন,
ব্রহ্মণ ! বৈবাহিকের বচন-ক্রমে আপনি আমাকে
যে বাক্য বলিলেন, আমার দৃত গিয়া রাজার নিকটে
ইহার উৎকৃষ্টতর উত্তর বাক্য কহিবেক। অনন্তর
ক্রপদও মহাত্মা হিরণ্যবর্মার নিকটে একজন বেদপারগ ব্রাহ্মণকে দৃত-স্থরূপে প্রেরণ করিলেন। ঐ
ব্রাহ্মণ তথন দশার্ণাধিপতির সমীপবর্তী হইয়া,ক্রপদ
যাহা বলিয়া দিয়াছিলেন, সেই বাক্যের উদ্দেশ
করত কহিলেন, "আপনি সাক্যাদি-দ্বারা পরীক্ষা
করুন, আমার এই পুত্র নিঃসন্দেহ কুমারই বটে;
আপনারে কে মিথাা করিয়া বলিয়াছিল, তাহা
ভাজেয় নহে গ।

অনন্তর রাজা হিরণাবর্মা ক্রপদের সেই বাক্য ভাবণে বিমর্থযুক্ত হইয়া, শিখণ্ডী জ্রী কি পুরুষ জানি-বার নিমিত্ত স্থচারু-ৰূপা উত্তমা যুবতী সমস্ত প্রেষণ করিলেন। তাহারাও তথা জানিরা শিখণ্ডী যে মহামুভব পুরুষ, তদ্বিয়ক সমুদয় বিবরণ দশার্ণ-ताक-मगी(भ निर्वातन कित्रन। उथन मही भिष्ठ সাক্ষিরভান্ত অবণ করিয়া শ্রীতিমান্ ইইলেন এবং বৈবাহিকের সহিত মিলিত হইয়া স্ফটিডে একত সহবাস করিলেন। হে কৌরবেক্স: জনেশ্বর হিরণ্য-বৰ্মা আহ্লাদ-যুক্ত হইয়া শিখণ্ডীকেও বছল অৰ্থ, रुखी, जन्म, भा ७ भिर मम्ख श्रामन क्रिलन वर् পরিশেষে পুজিত হইয়া স্বীয় কন্যারে ভর্সনঃ করিয়া স্থনগরে প্রতিগমন করিলেন। ছেরাজন্! ह्तिगावर्मा विनीष्ठ-त्ताव ७ म्राह्याव-श्राश्च स्ट्रेया দশার্ণে প্রতিগমন করিলে শিখণ্ডিনী অতিমাত্র হুফুৰুপা হইল।

কিন্নৎ কালের পর ধনেশ্বর ফকরাজ কুবের লোক-মধ্যে পরিভ্রমণ করিতে করিতে শ্বুমাকর্ণ-ভবনে

আগমন করিলেন। তিনি পূর্ণের গৃংহাপরিভাগে বৰ্তুনান হইয়া দেখিলৈন, উহা অতি বিশিষ্ট আ-বাস; বি চত্ৰ-মাল লাম-নিচয়ে অলফ্ত, চন্দ্ৰতেগ-পুঞ্জে উপদেবিত, উদীর ও অন্যান্য গদ্ধত্রবা দ্বরো স্থান্ধীয়ত, সক্ষরসধূপিত, ধজপতকো-নিকরে বি ভূষিত এবং মাংস ও অনানা ভক্ষাভোজা পেয় দ্রবা-সমু: হ সুসম্পন্ন। যক্ষপতি দেই মর্বতঃ সমত-ল্ভ, মাণ-র জ্লুক্ব রিজি-পরি পুরত, নান। বৃত্তম-शाहाता, भिक्त ७ मरमाज्ञिक् इन्द्रपाष्ट्रिक छ बन मन्त्र-র্শন করিয়া অমুচর যক্ষদিগকে কহিলেন, হে অমিত-বিক্রম-সম্পন্ন ফক্রগণ ! সূত্র এই সুংটি জন্মর অলঙ্ভ দেখিতেছি, কিন্তু সেই মনাবুদ্ধি সম্প্রতি আনার নিকটে আসিতেছে না কেন ? সেই মন্দাত্মা যধন জানিরা শুনিরাও আমার স'লহিত হইতেছে না, তথ্য ভাষার প্রতি মহাদণ্ড বিধান করা কর্ত্বা বোধ হইতেছে।

যকেরা কহিল, হে রাজন ! দ্রপদরাতের শিথ-তিনী নামে এক কনা জিম্মিছিল ; স্থাকর্ণ কোন কারণোপলফে ত হারে নিজ পুরুষ-লক্ষণ অর্পণ করিয়াছেন এবং স্বয়ং স্ত্রী-চিক্ল গ্রহণ-পূর্কক স্ত্রী হইরা পূহে রহিয়াছেন; স্বতরাং স্ত্রীভাবাপয় হওয়ায় লজ্জায় অগ্রসর হইতে পারিতেছেন না। হে রাজন্! তিনি এই নিমিত্তই আপনকার নিকটে আসিতে-ছেন না, ইহা শুনিয়া যাহা কর্ত্বা হয়, করুন; বি-মান এই স্থানেই থাকুক।

অনন্তর যক্ষাধির,জ পুনঃপুন কহিতে লাগিলেন,
স্থাকে শীঘ্র আনরন কর, আমি ভাহার সম্চিত
নিগ্রহ করিব। মহারাজ! সেই স্ত্রী-স্বরপ স্থাকর্ণ
যক্ষেদ্র-কর্তৃক আ্ত হইরা তৎস্মীপে আগমনপূর্বক লক্ষান্থিত হইরা রহিল। তথন মহাত্রা যক্ষপাত ধনেশ্বর সমাকৃ কোধযুক্ত হইরা "হে গুছকগা! এই পাপাত্রার এই রূপ স্ত্রীস্থই হউক " এই
বলিয়া ভাহারে শাপ প্রদান করিলেন; কহিলেন,
রে পাপবুদ্ধে! তুই যক্ষগণের অবমাননা করিয়া শি-

ধণীরে নিজ লকণ অর্পণ করিয়া ছাই এবং আপিনি তাদার জী লকণ লইয়াছিই; রে পার্পন করিয়া হিন্দ থকি করিয়া করিয়াছিই, এই অভ্তপুর্ব অযুক্ত কর্পের অনুষ্ঠান করিয়াছিই, এই নিমিত্ত অদ্য-প্রভৃতি তোর জীইই হাবেক এবং দে পুদ্ধ হটয় থাকিবেক।

হে তাত! অনন্তর য সরা "শাপান্ত করন" পুন:পুন এই কথা বলিয়া সূপীর নিমিত্ত কুবেরকে প্রসাদিত করিল। তথন মহাত্মা যক্ষর জ শাপান্ত বরণে
অভিলাষী হইয়া সেই অনুচরগণকে এভাতর করিলেন, হে যক্ষগা! শিখণ্ডী নিহত হইলে সূমাকর্ণ
পুনরায় স্বর্প প্রাপ্ত হইবে; অতএব এই মহামনা
যক্ষ নিয়বেগ হউক। এই কথা বলিয়া ভগবান্
যক্ষপতি সূপুজিত হইয়া সমুদায় অমুচরগতের সহিত
প্রসান করলেন। সূমাক্তি শাপ্রত হইয়া সেই
স্থলেই নিবসুতি করিতে লাগিল।

অনন্তর শিখন্তী যথা সময়ে সেই নিশাহের নিকটে সহর আগমন করিল এবং সমাপ্ত হই রা কহিল, ভগবন্! আমি আসেয়াছি। তথন লূণাকর্ণ "আমি প্রীত হইলাম ' পুনংপুন এই কথা বলিতে লাগিল। হে ভারত! সে রাজপুল্র শিখন্তীকে সরলভাবে আগত দেখিরা ভাহারে, যাহা যাহা হই য়াছল, সমত্ত রভান্ত বিজ্ঞাপন বরিল; কহিল, ছে নূপনন্দন! আমি ভোমার নিমিন্ত বুবের কর্তৃক অভিগপ্ত হইয়াছি; একণে যাও, ইচ্ছামুসারে বঁথা-স্থা লোক-মধ্যে বিচরণ কর; ভোমার এ হানে আগমন এবং কুবেরের দর্শন উভয়ই আমি গ্রাতন দৈব-নির্কল্পনে করিতেছি; কোন ক্রমে ইহা অভিক্রম করিবার সাধ্য নাই।

ভীয় কহিলেন, হে ভারত! শিষ্ঠী সূমক্ষ-কর্ত্ক এই রূপ উক্ত হইয়া মহাহর্ষভার নগরে এত্যা-গমন করিল এবং মহামূল্য বিবিধ গল্প-মাল্যাদি-দারা ব্রাহ্মণ, দেবতা, পূজনীয় রক্ষ ও চতুপাধ সক-লের পূজা করিল। হে কুরুনন্দন। দ্রুপদরাদ্ধা নিজ্ঞ পুত্র নিহার্য শিষ্ঠী ও বাহাবগণের সহিত নির্তি-

भग्न जानक जांड क तिर्वयः। जनस्त्र जिनि स्टि জীপুর্মী কুমার শিবগ্রীকে শিবা হইবার নিমিত্ত স্থোরে হত্তে সমর্পণ করিকেন। মহারাজ ! সেই নুপনাদন শিখণ্ডী ও ধৃউত্যে তোমাদিগের সহিত চতুষ্পান ধন্মধেদ শিক্ষা করিয়াছে। হে ভাত! আনি দ্রুপদের প্রতি জড়, অন্ধ ও বধিরাকার যে সমস্ত চর নিযুক্ত করিয়াছিলনে, তাহারাই আনারে ইহা যবাবং বিজ্ঞাপিত করিয়াছিল। হে কু.মুক্রেন্ঠ ! क्र भर-जनम त्रथम्बम मिथं ही वहेबाभ औ इहेश পু ফ্র হইয়াছে। অহা নামে বিখনতা কাশিরাছের জেষ্ঠা কনা ক্রপদের কুলে জ,ময়া শিশ্ব ভী হই-য়াছে। হে ভরতর্ব 🤊 । সে যুদ্ধ-কাননায় ধনুষ্পা, ৭ হইয়া সমুপঞ্জিত হইলে আমি ভাষারে মুহুর্ত-মাত্রঙ ষ্মবলোকন করিব না এবং গুহারও ধরিব না। পৃথিবা-মধ্যে আমার এই নিত্ত-বৃত্ত প্র্সিক্ষ রহি-য়াছে, যে, স্ত্ৰীতে কি স্ত্ৰীপূৰ্ব্বিক, স্ত্ৰা-স্বৰূপ অথবা जीनाम-युक्त श्रुक्तरव चामि वान ध्वरहान कति ना। অতএব হে কৌরব-নন্দন! আমি এই কারণে শি-থণ্ডীরে বধ করিব না। হে তাত ! আমি শিপ্ধভীর এই জমায়ন্তান্ত জানিতে পারিয়াছি, স্তরাং সমরে আততায়ী হইলেও ভাহারে নিহত করিব না। ভীয় যদি জ্রীহত্যা করে, তাহা হইলে সামূলোকেরা নিন্দা করিতে পারিবেন; অতএব আমি তাহাকে সমরে অবস্থিত দেখিয়াও বিনষ্ট করিব না।

বৈশম্পায়ন কহিলেন, তংকালে কুফুনন্দন রাজা চুর্যোধন এই কথা শ্রবণ করিয়া মু_{র্}র্ত্ত কাল চিন্তা-পূর্ব্ব দ ভীয়ের পক্ষে তাহা উপযুক্ত রোধ করিলেন। শিখণ্ডীর পুরুষত্-সাতে চতুর্নবত্যধিক শত-তন অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৯৪ ॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! রজনী প্রভাতা হইলে আপনকার পুত্র, সমত সৈন্যগণ-মধ্যে পুনরায় পিতা-মহকে ভিজ্ঞাসিলেন, হে গাঙ্গের! যুধিন্টিরের প্রভূত পদাতি হন্তী ও অহ-নিকরে পরিকীর্ণ, মহারথ- সমাকৃল, ধৃউ
রা-পুরোগম, ভীমার্ছ্রন-প্রভৃতি মহাধর্ম্বরি মহাবল-সম্পন্ন লোকপাল-তুলা মহারথগণকর্তৃক পরিরক্ষিত, অপ্রধৃষ্য, অনিবার্যা, উদ্দৃতদাগর-সদৃশ, মহারণে দেবগণেরও অক্ষোত নিয় এই
যে অসীম-সৈনা-সাগর উদাত হইয়াছে, আপনি
কত কালে ইহার ক্ষয় করিতে পারেন ? মহাধ্যকারী আচার্যা, স্থমহাবলর প, সমর্ম্লার্যা বর্ণ ও ছিজদত্তম অশ্বত্থানা, ইইারাই বা কত কালে পারেন ?
কেন না আমার সৈনা-মধ্যে আপনারা সকলেই
দিবাত্রে কোবিদ। হে মহাবাহো! আমি ইহা জানিত্রে ইক্ছা করি; এই পরম কৌতুহল আমার
ক্লয়ে নিহিত রহিয়াছে; অতএব আপনি ইহা
বাক্ত কর্মন।

ভীম কহিলেন, হে কুরশ্রেষ্ঠ ! ভুমি যে এক্ষৰে সেই অমিত্রগটের বলাবল কিজাসা করিতেছ, ইহা তোমার উপযুক্তই বটে। হে মহাভুক। সমরে আমার যত দূর শাক্তি, শস্ত্রবার্যাও বাছবল ২ইতে পারে, তাহা আবণ কর।ুহে রাজন্! সমর ধর্মের সিদ্ধান্ত এই যে, ইতর লোকের স**ঃ**হত সর**ঃ** - মূদ্ধে এবং মায়াৰীর সহিত মায়ায়ুদ্ধে যুদ্ধ বরাই বর্ধা। হে মহাভাগ! আমি প্রতি দিন পূর্বাহ্নে দশ সহস্র যোৰী ও এক সহস্ৰ রথী, এইৰূপ ভাগ কল্পনা করিয়া পাণ্ডৰ-সৈন্য বিন্ট করিতে পারি। হে ভারত! আমি সময়ত ১ তত উদাম-সম্ম হইয়া এইৰূপ অংশ ও কাল নিয়মে সেই মহং সৈনা ক্ষয় করিতে সমর্থ। অথবা সমরে অবস্থিত হুইয়া যদি শত-বাতী সহস্র ঘাতা-প্রভৃতি মহাস্ত্র-সমস্ত প্রয়োগ কর, তাহা হইলে এক মানেই সমুদায় সৈন্য নিঃ-শেষ করিতে পারি।

সঞ্চয় কহিলেন, হে রাজেন্দ্র ! রাজা ছুর্য্যোধন ভাষের সেই বাক্য আবণ করিয়া পশ্চাং ভরদ্বাত-শ্রেষ্ঠ ফ্রোনাচার্যাকে ভিজ্ঞা সলেন, গুরো ! আপান কত ক:লে যুখিষ্টিরের সৈনিকদিগকে নিহত করিতে পারেন ? তথ্য দ্রোণ ঈবং হাস্য কর্ত তাঁহাল্পে

এই প্রত্যুত্তর দিলেন, হে মহাবাহো! আমি বৃদ্ধ হইরাছি, স্বতরাং আমার তেজ ও চেফারও লাঘব হইয়াছে; তথাপি আমার বোধ হয়, শান্তমুতনয় ভীমের ন্যায় আমিও এক মানে শস্তানল-সহকারে পাগুৰ-সেনা নির্দ্দহন করিতে পারি; ইহাই আমার পরমাশক্তি, ইহাই আমার পরম বল। অনন্তর ক্লপাচার্যা ছুই মানে, অশ্বত্থামা দশ রাত্তে এবং মহাস্ত্ৰৰেক্তা কৰ্ণ পাঁচ দিবস মধ্যেই বল-ক্ষয়ের প্রতিজ্ঞা করিলেন। স্থতপুজের সেই কথা শুনিয়া গঙ্গানন্দন উচ্চৈঃস্বরে হাস্য করিলেন এবং এই কথা বুলিলেন, রাধেয়! তুমি যে পর্যান্ত সংগ্রামে শব্ধ-<u> भंद्रामनधात्री, वाञ्चरमव-महक्क्च, तथाद्राहरण चांछ-</u> ধাবিত ধনঞ্চয়ের সহিত সমরে সমাগত না হইতেছ, সেই পৰ্যান্তই এইৰূপ মনে করিতেছ। এইৰূপ কি, ছুমি ইচ্ছামুসারে এতদপেক্ষা অধিকও বলিতে পার।

ভীয়াদি-শব্জি-কথনে পঞ্চনবভাধিক শতভম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৯৫॥

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, হে ভরতভেন্ত ! যুখিইর
এই রুত্তান্ত শ্রবণ করিয়া সমস্ত শ্রাতৃগণকে নির্দ্ধনে
আহ্বান-পূর্বেক এই কথা বলিলেন, হে শ্রাতৃগণ !
আমি ছুর্য্যোধনের সৈন্য-মধ্যে যে সকল চার-পূরুষ
নিযুক্ত করিয়াছিলাম, তাহারা অদ্য প্রভাতে আন্
মারে এই সংবাদ প্রদান করিল যে, ছুর্য্যোধন মহাব্রত গঙ্গাতনয়কে জিজ্ঞাসা করিয়াছিল, আপনি
কত কালের মধ্যে পাগুর্বদিগের সৈন্য সকল বিনফী
করিতে পারেন ? তাহাতে তিনি সেই ছুর্মাতিকে
বলিয়াছেন "এক মাসের মধ্যে ত এবং ফ্রোণও সেই
সময়ের মধ্যে আমার সৈন্য ক্ষরের প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন। শুনিলাম ক্রপাচার্য্য ছুই মাসে এবং মহান্ত্রবিৎ অশ্বপামা দশ রাত্রে নিংশেষ করিব্রার প্রতিজ্ঞা
করিয়াছেন। অপিচ দিয়াক্রবেন্তা কর্ণও কুরুসভামধ্যে জিজ্ঞাসিত হইয়া পাঁচ দিনের মধ্যেই সৈনা-

বিনাশের প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন। অতথব হে আর্ন! আমিও তোমার কথা শুনিতে ইচ্ছা করিতেছি; হে কাল্কন! তুমি কত সময়ের মধ্যে শত্রুগণের সংহার করিতে পার বল।

धनक्षर नात्रल-कर्ज्क এই तथ উक्त इरेन्ना वासू-म्पार्वित मुक्षाविकान-पूर्विक धरे প্রভূতির করিলেন। মহারাজ! ইহাঁরা সক্ষুলই মহাত্মা, কুতান্ত্র ও চিত্র-ষোধী; স্থতরাং অবশ্যই বিনষ্ট করিতে পারেন, সন্দেহ নাই। পরস্ক আপনকার এ মনন্তাপ অপগত হউক, আমি সভাই বলিভেছি বাস্থদেবকে সহায় করিয়া এক রথে নিমেষ-মাত্রেই কি ভূত, কি ভবি-ষ্যৎ, কি বর্ত্তমান, স্থাবর-জঙ্গমাত্মক সমস্ত ভূতবর্গের এমন कि, अमत्रभन-मञ्चलि ज्वान-व्यात्रप्र मःश्रीत করিতে পারি। কিরাতীয় দেখযুদ্ধে ভগবান্ পশু-পতি আমাকে এই যে ঘোরতর মহাত্র প্রদান করিয়াছিলেন, ইহা আমার নিকটে বিদ্যমান রহি-য়াছে। হে পুরুষব্যান্ত! যুগান্ত সময়ে পশুপতি সর্বভূত সংহারার্থে যে অন্ত্র প্রয়োগ করিয়া থাকেন সেই এই মহান্ত্র আমার নিকটে বর্তমান রহিয়াছে। স্থতপুত্র তাহা জানিবে কি, ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ ও অশ্বত্থামাও জানেন না। কিন্তু দিব্যান্ত্র-দারা সা-মান্য লোককে সমরে নিহত করা উচিত নছে; একারণ আমি সরল-যুদ্ধেই শত্রুগণকে পরাজিত করিব। অপিচ এই যে পুরুষব্যান্ডেরা আপনকার সহায় রহিয়াছেন, ইহাঁরা সকলেই দিব্যাক্তকোবিদ **এবং সকলেই সমরকামী; দারপরিগ্রহের সঙ্গে** मद्र मक्टलरे युक्कन्नाञ रुरेन्नाह्न। (रुन्नाक्न्। এই অপরাজিত মহারথেরা সমরে অমর-সৈন্যও বিনফ করিতে পারেন। শিখণ্ডী, যুযুধান, ধৃউদ্ধান, ভীমসেন নকুল, সহদেব, যুধামন্ত্রা, উত্তমৌজা, ভীয় ক্লোণ-তুল্য বিরাট ও ক্রপদ, মহাবাছ শব্ধ, মহাবল ঘটোৎকচ, ইহাঁর পুত্র মহাবল-পরাক্রান্ত অঞ্নপৰ্বা, রণকোবিদ মহাবাছ সাত্যকি, বলবানু অভিমন্ত্য ও জৌপন্তীর <mark>পঞ্চ পুত্র, এই সমন্ত মহা-</mark> রখগণ আপনকার রহায়। হে পাগুব! আপনিও তৈলোকোর উৎসাদনে সমর্থ। হে বাসবকণপ! আমি নিশ্চয় জানি, আপনি ক্রোধভরে যে পুরুষের প্রতি দৃষ্টিপাত করেন, সে আর ক্রণমাত্রও জীবিত থাকে না।

অৰ্জুন-বাক্যে বগ্গবতাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত "১৯৬॥

বৈশক্ষায়ন কহিলেন, অনম্ভর স্থবিমল প্রভাত-কালে ছুর্যোধনের প্রেরিড রাজগণ স্নানান্তে শুচি হইয়া শুক্লবজ্র পরিধান, মাল্যধারণ ও শক্ত ধকাদি গ্রহণ করিয়া হোম ও স্বস্তিবাচন-পূর্বেক পাণ্ডব-मिरात्र थि श्रिक्षाजा क्रिलन। छाँशाता नकरलई ব্রহ্মজ্ঞ, সুচরিতত্তত ও শৌর্যাশালী; সকলেই অভীফ-मन्भापनकाती, मकरलहे ममत-एक। त्मरे महावल ক্ষত্রিয়গণ সকলেই পরস্পর অন্ধাযুক্ত ও একাগ্র-চিত্ত হইয়া সংগ্রামে পরম লোক-সমস্ত জয় করিবার অভিলাবে প্রস্থিত হইলেন। প্রথমত অবস্তিদেশীয় বিন্দ ও অনুবিন্দ এবং বাহ্মিক-সহ কেকয়গণ, ইহাঁরা সকলেই দ্রোণকে অগ্রসর করিয়া গমন করিলেন; পরে অশ্বত্থামা, ভীন্ন, জয়দ্রথ, গাল্ধাররাজ শকুনি, দাক্ষিণাত্য, প্রতীচ্য, প্রাচ্য, উদীচ্য ও পার্ব্বতীয় मद्रतन्त्रभेष धदः भक्, किंद्रांड, यदन, भिवि ও वर्गांडि भन, এই সমস্ত মহারথেরা নিজ নিজ সৈন্য-সমূহে পরিবারিত হইয়া দ্বিতীয় সৈন্য-শ্রেণীতে নির্গত হই-লেন। তাহার পর সদৈন্য ক্লভবর্মা, মহারথ তিগর্ভ, জাতৃগণে পরিবৃত নরপতি ছুর্যাাধন, শল, ভূরি-খ্রবা, শল্য ও কোশলরাজু রুহদ্রেখ, ইইারা ধার্তরাষ্ট্র-**पिश्रद्क चार्था क्रिया शक्तास्त्रारा हिल्लान। ह्** ভারত! সেই মহাবল ধার্ডরাষ্ট্রেরা যথা-ন্যায়ে মিলিত হইয়া কুরুকেতের পশ্চার্জভাগে ব্যবস্থিত হইয়া সুসক্ষিত রহিলেন। ^উহুর্য্যোধন নিজ শিবিরকে দিতীর হাতিনপুরের ন্যার সমলভূত করাইলেন। হে রাজেন্দ্র ! নগরবাসাঁ স্থানিপুণ মানবেরাও পুরের

ও শিবিরের কিছুমাত্র প্রভেদ করিতে পারেন নাই।
মহীপতি কৌরবরাজ অপর রাজগণেরও ভাদৃশ শ্ত
শত সহস্র সহস্র ছুর্গম শিবির নির্মাণ করাইলেন।
হে রাজন্! সেই রণক্ষেত্রের পঞ্চ-যোজন-পরিমিত-পরিধিযুক্ত স্থান ব্যাপ্ত করিয়া সহস্র সহস্র সেনা-নিবেশ সন্নিবিউ হইল। তথার সেই মহীপালগণ উৎসাহ ও বলামুসারে বছতর দ্রবাযুক্ত অসংখ্যা শিবির নিবিউ করিলেন। রাজা ছুর্যোধন সেই হন্তী, অশ্ব, পদাতি ও বাহকগণ-সম্বলিত সমৈন্য মহাস্থাণের অমুক্তম ভক্ষ্য ভোজ্যের ব্যবস্থা করিয়া দিলেন। তদ্তিম তথায় যে সমন্ত শিশ্প-জীবী, অম্ব-গত স্থত মাগধ স্ততিপাঠক, বণিক্, বেশ্যা, চার ও দর্শক লোক সকল আসিয়াছিল, কৌরবরাজ ভাহা-দিগেরও বিধি-পূর্বাক তত্ত্বাবধারণ করিতে লাগি-লেন।

কৌরব-সৈন্যনির্যাণে সপ্তনবত্যধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১৯৭ ॥

বৈশম্পায়ন কহিলেন, হে ভারত। ধর্মাপুত্র রজে যুধিষ্ঠিরও সেইৰূপ ধৃউদ্ধান প্রভৃতি বীরগণকে প্রেরণ করিলেন। চেদি কাশিও কর্ষগণের নেতা দুন্-বিক্রম শক্রসংহারক সেনাপতি ধৃষ্টকৈতু, বিরাট. फुलन, युयुधान, निश्व धी, महाधसूर्कात्री लाक्षालनन्तन যুধামসূয় ও উত্তমৌজা, সকলকেই আদেশ করি-লেন। সেই মহারথ শূর বীরেরা বিচিত্র কবচ ও স্বৰ্ণ-কুণ্ডলধারী হইয়া, অগ্নিস্থানবর্তী ঘৃতাবসিক্ত প্রজ্ঞালত হুডাশনের ন্যায় অথবা প্রদীপ্ত গ্রহ-পুঞ্জের নাার শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর নরশ্রেষ্ঠ মহীপতি যুধিষ্টির সমস্ত সৈন্যগণকে যথ -যোগ্য পূজা করিয়া প্রয়াণার্থে অনুমতি করিলেন এবং সেই অশ্ব গজ পদাতি ও বাহকগণ-সম্বলিভ সসৈন্য মহাত্মগণের এবং যাবতীয় শিপ্সের্জাবীদিগের অফুডম ভক্ষাভোজাের বাবস্থা করিয়া দিলেন, পাওনন্দন প্রথমে ধৃউত্বাহকে অগ্রসঙ্গ করিয়া অভি-

নন্মা, বৃহস্ত ও জৌপদীর পুত্র সকলকে প্রেরণ করি-লেন; পরে ভীম, যুযুধান ও ধনঞ্জয়কে দিতীয় সৈন্যবিভাগে নিযুক্ত কল্পিলেন। তথার অশ্বগণের ভূষণ সমারোপণে তৎপর, ইভন্তত বিচরণকারী, প্রধাবনকারী, ভ্রুটিভ যোধগণের কোলাহল শব্দ বেন গগগতল-স্পর্শ করিতে লাগিল। মহীপতি যুধিষ্ঠির পরিশেষে বিরাট, ক্রপদ ও অন্যান্য মহী-পালগণের সহিত শ্বয়ং প্রস্থিত হইলেন। অঞ্ নিশ্চলা থাকিয়া পশ্চাৎ স্যান্দমানা অর্থাৎ নিঃসরণে প্রবৃত্তা হইলে পরিপূর্ণা গঙ্গাকে ষেৰূপ দেখা যায়, খৃষ্টপ্লাম-পরিরক্ষিতা, ভীমধ্যা সৈনিকগণের প্রচার-যুক্তা, পাণ্ডব দেনাও সেইৰূপ দৃশামানা হইল। অনন্তর বুজিমান যুধিটির ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রগণের বুজি-खम ज्यारेवात निमिल्न शूनतात्र पना क्षकादत रेमना-যোজনা করিলেন। মহাধনুর্দ্ধারী দ্রৌপদী-পুত্রগণ অভিমন্তা, নকুল, সহদেব ও সমন্ত প্রভদ্রকণণ এবং দশ সহস্র অশ্ব, চুই সহস্র গজ, অযুত পদাতি ও পঞ্চ শত রথ, এই হুর্দ্ধর্য প্রথম সৈন্য ভীমদেনের রক্ষাধীন থাকিবে, এই ৰূপ আদেশ করিলেন; মধ্যম रेमरना विदारे, जग्नश्रमन ७ भना-कार्युक्धांती वीद्या-শালী মহারথ মহাত্ম। পাঞ্চালনন্দন যুধামনুগ ও উত্ত-भोजादक निर्मिष्ठे कित्रलन। उरकादन क्र्यार्ज्जून उ নধাভাগে অনুগত হইলেন। তথায় নির্তিশ্য উৎসাহ-সম্পন্ন কৃত্যুদ্ধ ফৈলিকগণ ছিলেন; ভাহা-দিগের শ্রনিকরে ভার্তিত বিংশতি সহত্র অশ্ব, পঞ্জ সহত্র হস্তা ও রথ-সমূহ ছিল এবং অন্তেও পশ্চাতে কাৰ্যুক খড়ুগ ও গলাধারী সহজ্ঞ সংজ্ঞ শৌর্যাশালী পদাতিগণ রহিল। যে দৈন্য-সাগরে যুধিষ্ঠির স্বরং বিদ্যমান ছিলেন, ডাহাতে বছল-মহীপালগণের অবস্থিতি হইয়াছিল। হে ভারত ! গুণায় বছ সহজ্র মাতঙ্গ, বছ অযুত তুরঙ্গ, বছ সহজ্ঞ র্থ ও পদাতিগণ ছিল। স্বকীয় বিপুল দ্বৈনাসহ ্চকিতান ও চেদিগণের প্রণেতা মহীপতি ধৃউকেতু त्रिलान । दक्षिणन मस्या अधान तथी, महाधसूर्काती ।

বলশালী সাভ্যকি শত সহজ্ঞ রবে পরির্ভ হইরা रिमना পরিচালন করিলেন এবং রথছিত পুরুষভাঠ কত্রদেব ও ব্রহ্মদেব পার্কিরকা করত পশাস্থাগে প্রস্থিত হইলেন। ভদ্তিন্ন শৃক্ট, আপণ, বেশ, यूष्कां परवाशी वाहन ও मामाना बाहन, मकनह পশ্চাতে চলিল। যুধিন্ঠির সহস্র সহস্র কুঞ্চর, অযুত অযুত অশ্ব, বাবতীয় ঝুলক, জ্রী, রুশ ও ছুর্বল সৈন্য, ধনসঞ্চয়বাহী অশ্বগণ ও শস্যাগার, গজ-সৈন্য দারা এই সমস্ত সংগ্রহ করিয়া ধীরে ধীরে প্রস্থান করিলেন। সত্যসংকপ্প যুদ্ধতুর্মদ সৌচিন্তি, ভোণি-মান্, বস্থদান ও কাশিরাজপুত্র বিভু এবং তাঁহা-দিগের অনুযায়ী বিংশতি সহস্র রথ, কিন্ধিণী-যুক্ত মহাপ্রমাণ দশ কোটি অশ্ব ও ঈষের নাার দন্তযুক্ত ক্লতযুদ্ধ, সংকুলজাত, ভিন্নগণ্ড, বিসর্পি-জলদপুঞ্জের ন্যায় বিংশতি সহস্ত মাতক তাঁহার পশ্চালামী হইল। তদ্ভিন্ন যুধিষ্ঠিরের সংগ্রামন্থিতা স**প্ত অক্টো**-হিণী সেনা-মধ্যে প্রভিন্ন-গণ্ডস্থল, বর্ষুক জীমূত-कम्राप्त नाम मम्यावी यात य अधान अधान সপ্ততি সহস্ৰ হন্তী ছিল, সে সফলও যেন সচল অচল-নিচয়ের ন্যায় তাঁহার পশ্চাতে চলিল। ছে ভারত ! সেই ধীসম্পন্ন যুধিষ্ঠিরের ভীষণ সৈন্য এই-ৰূপে যোজিত হইল; তাহা আশ্রম করিয়া তিনি স্বােধনের সহিত যুদ্ধ করিয়াছিলেন। উল্লিখিত হত্তিযূথ ভিন্ন শত শত, সহত্র সহত্র, অযুতাযুঁত মনুষ্য ও তাঁহাদিগের সহস্র সহস্র সৈন্যগণ গর্জন করিতে করিতে **পশ্চাতে প্রস্থিত হইল। মহারাজ**় সেই সহস্র সহস্র অ্যুতাযুত সৈনিকেরা সমাক্ হৃষ্ট চিত্ত হইয়া তথায় সহক্র সহক্র ভেরী ও অযুভাযুত শ্রথ সমস্ত নিনাদিত করিতে লাগিল

পাণ্ডব-সৈন্যনির্যাণে **অংহাপাখ্যান প্রকর**ণ ও অ**উনবভাধিক শতভম অধ্যার**

> नमाश्च । २३৮ । উদ্যোগপর্ক সম্পূর্ণ।

মহাভারত।

जीगागर्व।

ত্রীল এযুক্ত বর্দ্ধনাধিপতি মহারাজাধিরাজ মহতাব্চন্ বাহাছর

' কর্ত্তৃক

প্রশাস্তরণ তত্ত্বাগীশ বারা বঙ্গতাবার অসুবাদিত

এবং শোধিত হইরা

বৰ্দ্ধমান

স্বার সতাপ্রকাশ বত্তে মুদ্রিত হইল

শ্রীপুরুষোভনদের চউরাজ ধারা সুদ্রিত

মহাভারতীয় জীক্ষাবার স্থচীপত্র ।

| | | | | માં માં માર્ગ લાં કાર્યા છે. |
|---|--------------|-------------|------------|--|
| श्रक्तव | পৃষ্ঠ | 23 | শস্ত | Said |
| स्मिशास सम्बद्ध अकर्व। | ž. | | | |
| क्रभाखरीय युक्त विवद्रग-निविद्र महि- | | | | ধৃতরাই পক্ষীয় যোক্কাদিগের অবস্থান |
| दम ७ वृष्ट्तहर्नामि | > | > | ٩ | |
| वृष्क्षत्र निग्नम गः इश्वानामि | २ | > | २ 8 | All and the second seco |
| মহর্ষি ব্যাসের, ধৃতরাষ্ট্রের যুদ্ধ বিবরণ | • | • | | यू ि छि: तत्र विवास ७५ ५ ४ |
| रदशिक निगित्वै मञ्जारक रत्न क्षमानीम | ź | > | 59 | I was a second of the second o |
| ৰাদের ধৃতরাষ্ট্র নিকটে ছনিমিত্ত | | | | मञ्जितां कथन ७५ ५ ७५ |
| খন | ٤ | > | २७ | যুধিষ্টিরের স্ব সদৈনোর প্রতি উৎস হ |
| পৃত্রাস্থ্রের ব্যাস সমীপে মহার্যা বিনা- | | | | क्रनक छेन्। प्रमाण प्रभाव प्रभ |
| । इ देषबद्दञ्जा कथनामि · · · · · | 'P | > | હર | পাণ্ডৰ পক্ষীয় যৌদ্ধাগণ প্ৰত্যেকে |
| ব্যাসের, ধৃতরাজ্যে, প্রতি যুদ্ধ নিবা- | | | 1 | থিনি বে হানে রক্ষক রূপে অবস্থিত হই- |
| न छेश्राम्म · · · · · · · · · · | Ġ, | ₹ | 9 | লেন ভদ্বিরণ · · · · · · · · ৩২ ১ ৪ |
| পৃতরাষ্ট্র-কর্ত্তৃক ব্যাদের প্রসন্নভা প্র†- | | | 1 | অর্জুনের প্রতি কৃষ্ণের ভীম্মরক্ষিত |
| में | 9 | > | 3 | সৈন্য বিনাশ করণে ও ছুর্গা স্তব পঠনে |
| জয় পর্জয়ের লক্ষণ · · · · · · | 9 | > | 26 | উপদেশ ⋯ ⋯ ⋯ ⋯ ७ २ २ ७ |
| পৃথিবীর গুণ, নানা দেশ ও জীবের | | | | অৰ্জ্জুন কৰ্জ্জ ছৰ্ণা স্তোত কীৰ্স্তন ও |
| কৃতি প্রকৃতি · · · · · · · · · · · | b | २ | > | ছুর্গার অর্জুনের প্রতি বর প্রদান · · ৩২ ২ ২২ |
| নদী পর্বভাদি সমস্ত পদার্থের নাম ও | | | | পাণ্ডবদিনের বিজ্ঞাের হেতু কথনাদি ৩০ ২ ১০ |
| ब्रियोगामि · · · · · · · · · · | ৯ | > | २४ | দ্রোণাচার্য্য সমীপে ছর্ম্মোধনের উভয় |
| স্থদর্শন হীপ ও বর্য পর্বতাদির বি- | 3 | | | পক্ষীয় সেনাপতি বিষরণাদি \cdots 👓 ৩৪ ১ ১২ |
| . | \$ 6 | > | ا د | যুক্ষোদ্যত ব্যক্তিদিগকে দেখিবার নি- |
| নেরু গিরির উত্তর ও পূর্বর পার্ম্ব এবং | | | } | মিত্তে শৃষ্ণ সমীপে অর্জ্জুনের ইচ্ছা ৪- |
| ল,বান্পরভের বিধরণ · · · · · | \$3 | ર | 5 | কাশ প্রভৃতি 🕡 ৩৪ ২ ২২ |
| স্থদৰ্শন নামে জস্বৃক্ষাদির বিংরণ ··· | ٥: | > | 30 | স্থজন মাতুল দি দেখিয়া অর্জ্জুনের |
| চন্দ্র স্থাও রাহর বৃত্তান্ত \cdots \cdots | 53 | ą | २२ | वियाम ७ युएक निवृत्तित देका ७৫ ১ ৫ |
| मेश्राद्यास्य स्था | २ • | > | >• | কৃষ্ণাৰ্ক্তুনের কথোপকথন ··· · · ৷ ৩৫ [°] ২ ৩১ |
| ভগবন্দাীতা প্রকরণ | | | 1 | অ,য়তন্ত্ববিষয়ক প্ৰস্তাৰ \cdots ৬৬ ১ ২৭ |
| সঞ্জের ধৃতরাষ্ট্র সদীপে ভীত্মের যুদ্ধে 👚 | | | | নিজ্ঞাম কর্ম্মের প্রশংসা ও কান্যকর্ম্মের |
| डन मर्वो कथेन | २॰ | 5 | २১ | निनमा ५৮ ১ ৯ |
| | ३ ० | ર | २१ | সমাধিস্থ স্থিত প্ৰজ্ঞ ব্যক্তির লক্ষণ ··· ৩৯ ১ ১২ |
| সঞ্জয়ের ধৃতরাইটু সমীপে যুদ্ধ বিবরণ | | | | জ্ঞান ও কর্মা বিষয়ক প্রস্তাব · · · · · 6 · ১ ১৯ |
| ৰোৱস্তু ··· ··· ⁹ ··· ··· ·· | ર્8 | \$ | ₹• | পুরুষ, যদ্মারা পাপাচরণ করে ভদ্মিবরণ ৪২ ১ ৩১ |
| উভয় পক্ষের বাহরচনার পর ছঃশা:- | | | | কর্মবোগাদির পুরাতমত্ব · · · ৪৩ ১ ১ |
| নর প্রতি ছর্ম্যৌধনের ভীষ্ম রক্ষার | | | | ন্ধান, কর্মাও সন্মাস যোগ · · · ৪৩ ২ ২৫ |
| त्रशाक्शनामि · · · · · · · · · · | २९ | ş | 3.50 | नवः∤म योग ⋯ ⋯ ⋯ 8৫ ২ ১৯ |
| প্রথম দিবসের যুদ্ধ সজ্জা ও সেনাপতি ੵ | | |] | অভ্রিসংযম যোগ ৪৭ ১ ২৮ |
| दद्वन | २.८ | 5 | 30 | চিত্তসংয়ন থিষয়ক প্রস্তাব ও যোগ- |
| ব্যাসোক্ত ছুৰ্লকণ প্ৰভ্যক | 5.2 | \$ | 59 | ভ্রম্ভ ব্যক্তির গতি · · · · · · 8৯ ১ ৭ |
| ভীষ্ম দ্রোণের প্রভাহ পাণ্ডবদিণের | | | ţ | विक्कान त्वांभ \cdots \cdots 🕬 ५ ५ |
| তি জন্মশার্কাদ ও ছর্ব্যোধনের পক্ষে | | • | i | ব্ৰহ্ম, অধ্যান্ন, কৰ্ম, অধিভূত ও অধি- |
| ह कद्रव वृद्धांख | ર્ છ | > | २० | দৈব রূপ বিজ্ঞান বোগের বিস্তারিত বি- |
| রাজগণের প্রতি ভীত্মের উপদেশ \cdots | २७ | į | 3 | বরণ পূর্ব্বক ভারক ব্রহ্মযোগ কথন · · ৫১ ২ ং৮ |
| বে বে ব্যক্তি ভীম্মের পৃষ্ঠরক্ষক ও | | | • | মহয়, দৈৰ ও ব্ৰাহ্ম বৎসর,দি পরি |
| न्युशाभी इदेरलन छिष्दद्रव | ₹ b - | | | मान १२ २ २७ |
| বাহরচনার প্রকার ··· ··· ··· | २৮ | > | २२ | ব্রহ্মোপাসক ও কর্মাদিগের পরলোক |
| উভয় পক্ষীয় যোগ্ধাদিগের অবস্থাও | | | j | গমনের পথ ও সংসারে পুনরাবর্তনাদি 🕻 🔰 🗦 ২০ |
| | | | | |

স্কুচীপত্র।

| | | | C | tion to go to come a palament group in the total additional appropriate the control of the contr | | | |
|--|------------|----------|------------|--|------------|----------|-------------|
| द्धकार्थ ⋯ ⋯ ⋯ ⋯ ⋯ | প্ত | खम | পঙ্জি | हिंदूर्ग • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | शृष्ठ | ख 🗷 | শ হক্তি |
| পর্য গুঞ্তম ব্রহ্মবিদা৷ · · · · | 60 | २ | 2.00 | কথোপকথন · · · · · · · · | 98 | २ | . t |
| পর্যাত্ম অরূপ কৃষ্ণের সর্ব্ব কার্ণতা, | | | | ্থিষ্টিরের দ্রোণ সমীপে গমন ও | | | |
| শ্রাদি রাহিত্য ও তাঁহারই অমূগ্রহে | | | | য়ের কথোপকথন · · · · · · · · · | ৭৬ | 5 | >9 |
| कीदवब स्माह विनामाणि कथन | ŒŒ | • | ৬১ | যুধিষ্ঠিরের কৃপাচার্য্য নিকটে গমন ও | , • | • | • |
| • | | ર | | | | | |
| কৃষ্ণের পরনেশ্ব রূপে বিভূতি বর্ণন | ¢ 5 | ? | ৬ | উভয়ের কথোপকথন | 99 | > | \$ ₹ |
| অৰ্কুনকে কৃষ্ণের অলৌকিই রূপ প্র- | | | | যুথিষ্ঠিরের মন্তরাজ নিকটে গমন ও | • | | |
| मर्भन | e ъ | > | 9 | উভয়ের কথোপকখন · · · · · · | 49 | ₹ | ۵ |
| কৃষ্ণের অস্তৃত ভাষণ সূর্হি দেখিয়া | | | | যুধিষ্ঠিরের নির্গমন, কর্ণেরু,প্রতি পাণ্ডব | | | |
| আমার নির বিষয়ীও তদ্বিবরণ · · · | C | ર | 2 | ক বুদ্ধ করিবার নিমিত্ত কৃষ্ণের প্ররো- | | | |
| লোক সংহারে প্রবৃত্ত কৃষ্ণের অর্কুনের | | ` | ` | ও ডাহাতে কর্ণের প্রত্যাধ্যান · · · | 96 | | >9 |
| | | _ | 3 5 | যু জিরের পক্ষে যদি কেহ যুদ্ধ করিছে | 70 | | • 7 |
| প্রতি উপদেশ | 63 | २ | 30 | र्रा । अध्येत्र भारता वीच एक वैद्या कविए | | • | |
| ্ন কর্ভুক ক্ষেত্র তাব ও শাতমূর্ত্তি | | | | প্রবৃত্ত হন ভ্রমিতি তঁহার উচ্চেঃ স্বে | | | |
| मिथिवींद्र श्रीर्थना · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ¢> | ? | 35 | ट्यायना | 96 | 5 | ÷g. |
| অর্ক্নের প্রতিক্ষের সাজ্বনাক ও | | | | যুযুৎস্তর যুধি ঠিও পক্ষে আগমন ⋯ | 95 | २ | 8 |
| পূর্বা মুর্ত্তি প্রদর্শন এবং উভ য়র কথোপ- | | | | াথম দিবসের যুক্ষারস্ত্র · · · · · · | 92 | > | 5 R |
| कथन | ৬৩ | ₹ | 59 | ্রথ যুদ্ধ | ٥٠ | į | 8 |
| ঈশ্বরে কর্ণ সমর্পণ পূর্ম্মক তন্ত্রপাসক | | • | • | ऋल युक्त | | \$ | |
| | | | | ~ · | ৮৩ | , | ৬১ |
| আর নি র্পানেষ ব্রক্ষের উপাসক এ ছাই- | | | | ^ম ভিম্ ন্যার সহিত ভীদ্ম ও তাঁহার | | | |
| য়ের শ্রেপ্ত চাঙ্গেপ্ত তাদি কথন · · · · · | P > | > | 36 | क्शात्वत्र युक्त · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | PC | ₹ | 9 |
| প্ৰকৃতি পুরুষ যোগ \cdots \cdots | ৬২ | > | २२ | লোর সন্থিত যুদ্ধে বিরাট-পুশ্র উত্ত- | | | |
| তত্ত্ব, রক্ত ও তম গুণের স্থান্নপ ও কার্যা | ৬৪ | > | २৮ | নিপাত · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ৮৬ | ર | > 8 |
| উক্ত গুণ ত্রয়কে অতিক্রম করিবার | | | | বরাট-পুত্র শঙ্কের সহিত শলে র যুদ্ধ | ৮ 9 | Š | >> |
| উপায় | ৬৫ | ٠ | 53 | গীম কর্তৃক পাণ্ডব সৈন্য বিনাশ ও | • | • | • |
| পুরুষোত্ম যোগ · · · · · · | ৬৬ | • | b | | | _ | |
| | | | | भ निवस्त्रत युक्त भगांशन | ४१ | २ | 8 |
| দৈুও আভ্র সু স্প দ্যোগু⋯ ⋯ | ৬৭ | 3 | ৬ | ्धिष्ठितंत्र गांकात्ल हिट्ड कृष्ट मगी- | | | |
| সাত্ত্বিণী, রাজসী ও তানসী শ্রহ্মার | | | | থেদোক্তি পূর্বক জয় মন্ত্রণা জিজাসা | b b | > | ; |
| প্রকারওকার | ৬৮ | ٠ > | ₹8 | যু-িষ্টিরের প্রতি কৃষ্ণের শোকাপনো- | | | |
| সমাস ও ভ্যাগের প্রকারাদি · · · · · | 9. | > | २७ | मन छेलाम्ब | b b | ٠ | ર્ઝ |
| কর্মা ও তং পঞ্জির ছেতু 🔐 \cdots | 95 | 5 | ٠ | রু িষ্ঠির পৃষ্টক্রাশ্বের কথোপকথন 🕠 | ৮৯ | ` ` | ۵ |
| বুনি ধৃতি পভৃতির সাত্ত্বিকত্ত্বাদি ··· | 95 | ٠ | ۶۶ | বিতীয় দিবদৈ পাণ্ডৰ পক্ষীয় ক্ৰেঞ্ছ- | - | • | ~ |
| विधि अश्विष विवदः। · · · · · · | | `` | | নিৰ্মাণ ও তদবয়ৰ কথন · · · · | | _ | |
| | 45 | > | ۵ | | ኦ ৯ | 2 | C |
| ত্রাহ্মণাদি চ ুবর্ণের সাত্ত্বিদি গুণ | | | | বপক্ষ বৃহে দেখিয়া ছুর্যোধনের দ্রো- | | | |
| কার্য্য, তৎ শল ও ব্রহ্ম প্রান্তির উপায়াদি | १२ | > | २¢ | নর নিকট অভিপ্রায় প্রকাশ \cdots | ৯৽ | > | >• |
| পর্যেশ্রের শর্শপিল হইবার উপ- | | | | গীম্ম জোণাদি কর্তৃক ব্যুহ রচনাও | | | |
| ८ ष्णांकि | 90 | ર | ۵ | इयु र कथन ··· ··· ··· ··. · · · · · · · | ৯৽ | > | २৯ |
| গীত৷ পতিপান্য অৰ্থ পাত্ৰ বিশেষে | | • | | ভিয় পক্ষের যুক্ষোদ্যম · · · · | مه | | |
| ৰলিবার উদেশ ও ফল ঞ্জি · · · · | 90 | ર | ₹• | ীঘোর পর্কেম • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | | ર | ₹ ¢ |
| আর্জনেন মাছ বিনাশ ও সঞ্জের | , • | _ | , | | 92 | 2. | b |
| * | | | | ীত্ম বংধর নিশিত্ত অর্জ্জুনের বাক্যো- | | | |
| গীতা প্রবণাদি জনাহ প্রকাশ পুর্কক | | | | | 77 | ź | 8 |
| কৃষ্ণাৰ্জ্কন পক্ষীয় দিগের বিজয় মন্তাবনা | | | | ষ্ণ কর্ত্তিক ভীমা সম্মুখে রগানয়ন … | 72 | ? | 50 |
| কথন | 98 | > | C | ার্জ্জুনের সহিত ভীম জোণ প্রভৃতি | | | |
| ভীষ্মবধ প্রকরণ | | | | মহার্থ গণের যুক্ত · · 🔐 · · · · | ৯১ | ₹. | ; b |
| व्यर्कुत्नव युक्तामाम प्रिवेश स्थाप- | | | | ্র্জুনের সহিত ভীল্মের সংগ্রাম ··· | ৯২ | ` | |
| | • | | | | ₩ ₹ | | ₹● |
| গণের রণব দ ও যুদ্ধ দর্শনে দেবাদির | | , | | ভিয়ের যুৱ দেখিয়া দেবাদি গণের | | • | N. |
| ष्यां श्रम | 99 | > | २ ७ | াপকথন | 20 | 5 | ⇒• |
| যু ি ঠি রর ভীষ্ম সমীপে গমন ও উত্ত- | | | | দাণের সহিত ধৃষ্টলালের বুদ্ধ · · · | ৯৩ | ٠ ۶ | ৯ |
| | | | | • | | | |

সূচীপত্র।

| তীয় কৰ্ত্তক বিজন্ন লাক্ষ্যৰ শক্তি নিৰ্দান্ত কৰ্ত্তক বিজনান কৰিল নাক্ষ্যৰ প্ৰাধানৰ নিৰ্দান কৰিল কৰিল নাম কৰিল কৰিল নাম কৰিল কৰিলে নাম কৰিল নাম কৰিল কৰিলে নাম কৰিল নাম নাম কৰিল নাম নাম কৰিল নাম নাম কৰিল নাম নাম কৰিল নাম কৰিল নাম কৰিল নাম কৰিল নাম কৰিল নাম | श्रकद्रव | - | | পঙ্ক্তি | श्रकद्वन | পৃষ্ঠ | उड़ | পঙ্জি |
|---|---|-----|-----|-------------|--|---------|----------|----------|
| কলিক না নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশা | কলিঙ্গাধিপের সহিত ভীম্বের যুদ্ধ … | 98 | 2 | ২৮ | ভীমসেনের হস্তে মগধ দেশীয় গব্দ | | | |
| কলিক না নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল নিশাল নিশাল কৰিল কৰিল নিশাল কৰিল নিশাল কৰিল কৰিল নিশা | ভীম কর্ত্তুক কলিঙ্গরাজপুত্র শক্রদেবের | | | | দৈন্যের নিপাত ও অভিমন্থ্য কর্ত্তক | | · · · | |
| কলিক্ষরান্ধপুত্র ভান্তুমানুনের নিগান ও কলিক মেনা বিনাদ | নিপাত | Þ¢ | 3 | >5 | মগধরাজের প্রাণ সংহার · · · · · | >>8 | > | २४ |
| ভানি মেনা বিনাল | | | | | ভীম কর্ত্তক কুক্ল সৈন্য নিপাড \cdots | >>¢ | ર | . 9 |
| ভ্রন্তির সাহার্য ত্রুপ্তির সাহার্য ত্রুপ্ | • | 96 | 2 | ৩১ | | | | |
| প্রভৃতির বাহাবা প্রক্তিয়ন্তের সহিত ক্ষম্বাধান, জুল ও বংগর মুদ্ধা প্রক্রিয়ন্তের সহিত ক্ষম্বাধান, জুল ও বংগরের মুদ্ধা প্রক্রিয়ন্তের সহিত ক্ষম্বাধান, জুল ও বংলার মুদ্ধার কলক প্রক্রের বিক্রম প্রকাশ ও ছিতীয় বিব- সের মুদ্ধা সাথা শুক্তিয়া বিবানক মুদ্ধানম্ভত তীম্ম কর্ত্তক পাজক বছল বিশ্লাপ শুক্তিয়া বিবানক মুদ্ধানম্ভত তীম কর্ত্তক পাজক বছল বিশ্লাপ শুক্তিয়া বিবানক মুদ্ধানম্ভত তীম কর্ত্তক পালক পলীয় বাবাববের পরাক্রম শুক্তা বিলাপি শুক্তা বিলাপ শুক্তা বিলাপি শুক্তা বিলাপি শুক্তা বিলাপ শুক্তা বিলাপের বিলাপ শুক্তা বিলাপের বিলাপের শুক্তা বিলাপের বিলাপ শুক্তা বিলাপের বিলাপের শুক্তা বিলাপের বিলাপি শুক্তা বিলাপ শুক্তা বিলাপের বিলাপ শুক্তা বিলাপের বিলাপ শুক্তা বিলাপের | | | | | | >>0 | २ | २व |
| প্রত্ত্বাহেন্ত্র নহিত আব্ধানা, দুল ও কুলের যুদ্ধ ন ন ন ন ন ন ন ন ন | | 24 | 2 | >¢ | | | | |
| ক্ষুণ্ডিন যুদ্ধা | | | | | | 559 | > | • |
| অভিনন্ধান্ত্ৰন নহিত ছুট্বাধনপুত্ৰ লক- ধান্ত্ৰন্ত্ৰন ও জগান্ত্ৰ ছট্টে চিবলালন কৰন, কৰ্জুনের বিকাশ প্ৰকাশ ও ছিতীয় দিব- দের যুদ্ধা সমাপ্ত । | | ৯৯ | ą | \$ | | • | ` | • |
| প্রের্ বুদ্ধ ভাষার প্রচ্যাধনাদির পানন, আর্ক্র্নের বিক্রমণ প্রক্রমণ ও ছিতীয় দিব- সের যুদ্ধ সনাথ্য তিন্তুর সন্ধান্ত কাল প্রক্রমণ বিশেষ ভ্রমণ ত ভিন্ত কাল প্রক্রমণ বিশেষ ভ্রমণ বিশেষ ভ্রমণ বিশ্বন কাল প্রক্রমণ বিশ্বন কাল বিশ | | | | | | 5 3 b- | > | > |
| স্কৰ্জুনের বিক্রম প্রকাশ ও ষিতীয় দিব- সের যুক্ক সমাপ্ত | | | | | | • • • • | - | |
| প্রের বুজ সমাপ্ত ত্বের বুজ সমাপ্ত ত্বের বুজ সাপ্ত ত্বের বুজ সাপ্ত ত্বের বুজ বুল রিপ্তান ত্বের বুল রাজ প্রত তীম্ম কর্ত্বক কাশ পূর্বক বুল রাজনা ত্বের বুল রাজনা বাধবাবের পরাক্রন প্র- কাশ পূর্বক বুল রাজনা ত্বের নাম তারিক, অভিনয়া ও তীম- প্রের বুজ বাল বাল ত্বেরা বি তারিক ত্বের তীম্ম সহি- ত বুরর ত্বেরা বি তারিক ত্বের বি তার বুজ | | | | | | 115 | | >> |
| দ্বন্ধ দিবনের বুদ্ধারম্ভ ও তীয়া কর্ত্ত্ব পার্কড় বৃহহু নির্দাণ | | 55 | > | S IE | | 2110 | • | |
| গান্ধত্ব বৃদ্ধে নির্মাণ পাণ্ডৰ পক্ষে অর্ক্চন্তর বৃদ্ধ হচনা ভাতর পকার হারগণের পরাক্রন শ্র- কাশ পূর্বন মুদ্ধান তিত্র পকার হারগণের পরাক্রন তিত্র পরাক্রন তিত্র পরাক্রন তিত্র পরাক্রন তিত্র পরাক্রন তিত্র কাশ ভাতর তিত্র বিন্দ্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ তিত্র কাশ কিবিল কাশ কিবিল কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ কাশ | | ~~ | ` | •• | | | | 4 .44 |
| পাণ্ডৰ পক্ষে অৰ্ক্যন্ত বুল হাচনা তিত্ৰ পক্ষীয় বাধগণেৰ পৰাক্ষৰ প্ৰ- কাশ পূৰ্বাক যুদ্ধ তেত্ৰ পক্ষীয় বাধগণেৰ পৰাক্ষৰ প্ৰ- কাশ পূৰ্বাক যুদ্ধ তেত্ৰ পক্ষীয় বাধগণেৰ পৰাক্ষৰ প্ৰ- কাশ পূৰ্বাক যুদ্ধ তেত্ৰ তেত্ৰ তেত্ৰ পক্ষীয় বাধগণেৰ পৰাক্ষৰ প্ৰ- কাশ পূৰ্বাক যুদ্ধ তেত্ৰ ত | | | | | | | ٠, | 30 |
| পঞ্জন দিবদের যুক্তে মকর বৃহত্ব ও কাশ পূর্বক যুক্ত | | | ₹ | | | | • | 78 |
| কাশ পূর্বক যুদ্ধ ১০১ ২ ২৭ খোন বাছ রচনাদি ১২৫ ২ অর্জুন, মাতাকি, অভিনয়া ও ভীম- দেন কর্ত্বক সৌবলাদি কুক্ত নৈনোয় বি- দেন কর্ত্বক সৌবলাদি কুক্ত নৈনোয় বি- দ্বাৰণাদি ১০৬ ১ ৪ প্রন্নানন প্রাক্তন প্রকাশ আদি ১০৪ ১ ৪ প্রন্নানন প্রাক্তন প্রকাশ আদি ১০৪ ১ ৪ প্রন্নানন প্রাক্তন প্রকাশ আদি ১০৪ ১ ৪ প্রন্নানন প্রকাশ প | | 3.2 | > | 300 | • | 242 | > | 8 |
| অর্ক্রন, সাতানি, অভিনন্ধা ও ভীম- সেন কর্ত্ত্বক সৌবলাদি কুরু নৈনাের বি- সেন কর্ত্ত্বক সৌবলাদি কুরু নৈনাের বি- স্থাবাাদি ত্ত্বাাবন ভীম্মের করােলামি কুরু নিনাের বি- ত্ত্রাাবন ভীম্মের করােলামি কুরু নিনাের বি- ত্ত্রাম্বর করােলামি কুরু নিনা ত্ত্রাম্বর করােলামি কুরু নিনা ত্ত্রাম্বর করােলামি কুরু নিনা ত্ত্রাম্বর করােলামি কুরু নিনা ত্ত্রাম্বর করা ত্ত্রাম্বর করা ত্ত্রাম্বর করা ত্ত্রাম্বর করা ত্তরাম্বর করা ত্তরা | | | | _ | | | | |
| সেন কর্ত্ত্ব সৌবলাদি কুরু সৈন্যের বি- ন্তাবণাদি নান কর্ত্ত্ব সৌবলাদি কুরু সৈন্যের বি- নান কর্ত্ব্র স্বাধন ভীমের করেলিক করেল কুরোনর নান করিলের করেলিক করেল কুরোনর নান করিলের করেলিক করেল ভীমের পরাক্রন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভীমের পরাক্রন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভীমের পরাক্রন প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ ভীম- ক্ষের অন্তর্বালে মার্ক্রন প্রকাশ করেলের ভীমা মার্ক্রন প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ ভীমা ক্ষের অন্তর্বালে মার্ক্রন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভীমের পরাক্রন প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ ভীমা ক্ষের মা্তর মা্ক্রন প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ ভীমা ক্ষের মা্তর মা্ক্রন প্রকাশ ১০০ ২ ভুমের মা্ক্রন প্রক্রন কুরের প্রক্রিল প্রকাশ করেলের কুরিল ক্ষের মা্ক্রন কুরের প্রকাশ প্রকাশ স্বাল ক্ষের স্বাল করেল ক্ষের স্বাল করেলের কুরিল ক্ষের মা্ক্রন ১০০ ২ ১০০ ২ কুনের প্রক্রিল বারার কুরিল বারার প্রবাহানীদি ও অ- কুনের প্রক্রিল বারার কুরিল বারার প্রকাশ ১০০ ২ ১০০ ২ কুনের প্রক্রিল বারার কুরিল ক্ষের হল প্রক্রিল ১০০ ২ ১০০ ২ কুনের প্রক্রিল বারার কুরিল বিনার মা্ক্রন ১০০ ২ ১০০ ২ কুনের প্রক্রিল বারার কুরিল বারার কুরিল বিনার মা্ক্রন ১০০ ২ ১০০ ২ কুনের প্রক্রিল বারার কুরিলির র প্রক্রিল বারার কুরিলির র প্রক্রিল বারার মা্ক্রির র প্রির র বিনিম্ন মা্ক্রির র প্রির র বিনিম্ন মা্ক্রির র প্রির র ক্রিলম্য প্রভৃতি কুরের বিনার বান ১০০ ২ ১০০ ২ বিনার মা্ক্রন ১০০ ২ ১০০ ২ বিনার মা্ক্রির ১০০ ২ বিনার মা্কর ১০০ ২ বিনার মা্ক্রির ১০০ ২ বিনার মা্কর ১০০ | | >0> | ₹ | 39 | | | | ₹8 |
| দ্রাবণাদি ১০৩ ১ ৪ ও অন্যান্য পাশুরদিধের সহিত কুরু স্থর্বাধিন ভীম্মের কপোপকপন ১০৪ ১ ১৪ ভীম্মের পরাক্রন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভীম্মের পরাক্রন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভূম্মের অন্তর্গা অর্ক্রনের ভীম্ম সহি- ত মুন্দ ১০৬ ১ ১০ ভূম্মির পরাক্রন প্রকাশ প্রকাশ প্রকাশ পূর্বার ভূম্ম দেখিয়া কুম্পের স্বয়ং ভূম্মির পরাক্রন ও শ্রেষর স্বাত্তর স্বয়ং ভূম্মির পরাক্রন ও শ্রেষর স্বাত্তর স্বয়ং ভূম্মির পরাক্রন ও শ্রেষর সাতাকির প্রতি উক্তি ১০৭ ১ ৩ ত্রিম্রান্ধ বিনাশ নিনিত্ত কুম্পের চক্রন্ধ ভূম্মির পরি ভাম্মের ইভিন্ত ও অর্ক্রন কর্ত্তর স্বহুম্বর নিবারণ ১০৮ ১ ৯ নালাও পঞ্চম দিবদের মুদ্ধ প্রত্রাহ্মির প্রবার রথারোহণাদি ও অক্র্রেনর পরাক্রন পরাক্রন পরাক্রন ও ভূম্মির রথারোহণাদি ও অক্র্রেনর প্রকাশ ১০৮ ১ ৯ ব্রুষর নালাক প্রত্রাহ্মির রেণানিত্তর ক্রেম্বর প্রকাশ ১১৯ ১ ৩ ত্রিম্রান্ধ বিনার রথারোহণাদি ও অক্র্রেনর প্রকাশ ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের বিনার রথারোহণাদি ও অক্র্রেনর প্রকাশ ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের বিনার রথারোহ বিদ্দির ক্রিমের ব্রুষর ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের রাজ্য প্রকাশ প্রকাশ ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের বিনার রথারোহ কর্মির প্রকাশ প্রকাশ ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের বিনার রথারোহ কর্মির ক্রিমের হালাদি ও ক্রিম্বর ক্রিমের ব্রুষর ১১৯ ১ ৩ ত্রিমের ক্রিমের ব্রুষর ১১৯ ১ ১ ৩ ত্রিমের কর্মের ক্রিমের হালাদি ও ক্রিম্বর নির্নার ক্রিমের হালাদি ক্রিমের ভীম্মের র্ক্রম্বর প্রকাশ ১১৯ ১ ৩ ত্রিমের বিনার ক্রিমের ক্রিমের হালাদি ক্রিমের ভীমন্ম প্রকাশ ১১৯ ১ ৩ ত্রিমের নিরের ভীমন্তর ক্রিমের র্ক্রমির প্রকাশ প্রকাশ ১১৯ ১ ৩ ত্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের র্ক্রমির ক্রেমির ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রিমের ক্রমের ক্রমের ক্রমের প্রকাশ ১১৯ ১ ৩ ত্রিমের ক্রমের ক্রমে | | | | | | ১२१ | > | b |
| ছুর্নোধন ভীন্মের কণোপকণন ১০৪ ১ ১৪ পক্ষীয় রাজগণের যুদ্ধ ১২৮ ১ ভীন্মের পরাজন প্রকাশ আদি ১০৪ ২ ১৭ ভীন্মের পরাজন প্রকাশ ভীন্ম- কুষ্ণের অভ্যরোগে মর্চ্ছনের ভীন্ম সহি- ত মুদ্ধা ১০৬ ১ ১৭ আর্ক্রনের মৃছ্ যুদ্ধা দেখিয়া ক্ষরের হয়বং ভীন্মাণি বিনাশে চিন্তা ১০৭ ১ ৫ হুর্নোগণের মৃছিত ভীনমেনের ও অভি- ভান্মের শারাকান ও শ্বাফর চকা- হত্তে ব্রাগ হইতে অবরোহগাদি ১০৮ ১ ৯ নাভান্তির সহিত ভুরিশ্রধার যুদ্ধ ও ভুরিশ্রধা কর্ত্তক সাভান্তির দ্বদ্ধার হন্ধার ত্র্বজ্ব প্রাফ্র স্বিত্ত ভুরিশ্রধার রুদ্ধ ও ভুরিশ্রধা কর্ত্তক সাভান্তির মৃদ্ধা ও তুরিশ্রধা কর্ত্তক সাভান্তির দেশের মৃদ্ধারয় এবং পাণ্ডর পক্ষে কর্ত্তক ক্ষেত্রর নিবারন ১০৮ ১ ৯ নালা ও পঞ্চম দিননের মৃদ্ধারয় এবং পাণ্ডর পক্ষে ক্রেক্রর প্রাক্রন পরাক্রন ১০৮ ১ ৯ নালা ও পঞ্চম দিননের মৃদ্ধারয় এবং পাণ্ডর ক্ষে ক্রেক্রর প্রাক্রন পরাক্রন ১০৮ ১ ৯ ভ্রেনার ক্রাক্রের ক্রার্ড এবং পাণ্ডর ক্ষে ক্রেক্রর পরাক্রন ১০৮ ১ ৯ ভ্রেনার ক্রান্ত্র বিবারর প্রাক্র পরাক্রন পরাক্রন কর্ত্তক সংক্রান স্বান্ধা ও তিলা ক্রান্ধা ক্রিক্র স্বান্ধা ও ভীন্মানার মৃদ্ধা বিক্রক্র স্বান্ধা করের ভীন প্রাক্রন্ধানির হাছিত গুন্তলানের মৃদ্ধা ১১২ ২ ৭ প্রান্ধার বিলম্য প্রভৃতি ছান্ন ও আ ৮ জ্যার এবং মৃর্ন্ধানারারির হাছিত গুন্তানের মৃদ্ধা ১১২ ২ ব্র্নান্ধির বিলম্য প্রভৃতি ছান্ন ও আ ৮ জ্যার এবং মুর্নোগনানির | | 7 | | | | | | |
| ভীন্মের পরাক্রম প্রকাশ আদি ক্ষের অন্তর্গালে অর্জ্জনের ভীন্ম সহি- ত নুজা ক্ষের অন্তর্গালে অর্জ্জনের ভীন্ম সহি- ত নুজা ক্ষের অন্তর্গালে অর্জ্জনের ভীন্ম সহি- ত নুজা ক্ষের মন্তর্গাল দিখনা ক্ষের স্থার ভীন্মেন দির মহিত আম্বাধানার মুদ্ধ ও অর্জ্জনের মহিত ভীন্মনের ও অতি- মহা আদির সহিত ভারালার মুদ্ধ ও ভীন্মাদি বিনাম নিনিত্ত কুফের চক্র- হতে রম হইতে এবংরাহানাদি ক্ষের পতি ভারাব্র উন্তিও অর্জ্জন কর্ত্ব কুফের নিবারণ ক্ষের প্রারার্গ বিনার র্থারোহণাদি ও ক্ষের প্রারার্গ কর্তার প্রারার্গ বিশ্ব কর্তার স্থারা ক্ষের প্রারার্গ কর্তার স্থারাহাদি ক্ষের প্রারার্গ করার ও তৃতীর দিবসের মুদ্ধ সনাপন ক্ষের স্কাল্ম ও ত্তার দিবসের মুদ্ধ সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের স্কাল্ম ও ত্তার দিবসের মুদ্ধ সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাপন ক্ষের সনাকন পরাক্রম সক্ষের প্রাক্ত ক্ষের সনাকন সক্ষাক্রম সক্ষের প্রাক্ত ক্ষের সনাকন সক্ষাক্রম সক্ষাক্রম সক্ষাক্রম ক্ষের সনাকন সক্ষাক্রম সক্ষাক্রম সক্ষাক্রম ক্ষের সনাকন ক্ষের সনাকন ক্ষের সনাকন স্বিত্র স্ক্রম প্রারার স্বার ক্ষের সনাকন স্বিত্র স্কর স্বার ক্ষের সনাকন সক্ষাক্রম প্রারার স্বার ক্ষের সনাকন সক্ষাক্রম স্বিত্র স্কর স্বার ক্ষেরা সিল্ল বিলের স্বাহত ভালনার স্বার ক্ষেরা সিল্ল বিলের স্বার ক্ষেরা সিল্ল স্বার স্বার স্বার ক্ষেরা স্বার স্বার ক্রম স্বার আভিন্ম স্বার ক্ষেরা সিল্ল স্বার স্বার স্বার আভিন্ম স্বার ক্ষেরা সিল্ল স্বার স্বার ক্রম স্বার আভিন্ম স্বার ক্ষেরা সিল্ল স্বার স্বার স্বার স্বার আভিন্ম স্বার স্বার ক্ষেরা সিল্ল স্বার স্বার স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স্বার স্বার স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স্বার স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স্বার স্বার স্বার স্বার ক্যার স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স্বার স্বার স্বার ক্রম নাকর স | | | > | | | | | |
| ক্ষের অন্তরোল অর্জ্নের ভীস্ন সহি- ত যুক্ত | | _ | > | | | 752 | > | 8 |
| ত মুদ্ধ ত মুদ | | > 8 | 3 | ٩٤ | | | | |
| অর্জ্জনর মৃত্ যুদ্ধ দেখিয়া ক্ষেয় স্থাং তীন্মাদি বিনাদে চিন্তা ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত | কৃষ্ণের অন্মরোলে অর্জ্জুনের ভীন্ম সহি- | | | 3 | | >5% | ₹ | >> |
| ভীদ্মাণি বিনাদে চিন্তা ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত | ত যুক্স | ১৽৬ | > | 59 | | | | |
| ভীয়ের শরাক্রন ও শ্ফের সাভাকির শহা আদির সহিত লক্ষণাদির যুদ্ধ ১০১ ১ প্রতি উক্তি নাণা প্রথম সাহিত ভূরিশ্রবার বৃদ্ধ ও ভূরিশ্রবা কর্ত্তি ভূরিশ্রবার বৃদ্ধ ও ভূরিশ্রবা কর্ত্তি ভূরিশ্রবার বৃদ্ধ ও ভূরিশ্রবা কর্ত্তি ক্রারার বৃদ্ধ ও ভূরিশ্রবা কর্ত্তি সাভাকির দশ পুশ্র বি- নাণা ও পঞ্চব দিনদের যুদ্ধ সমাপ্ত ১০১ ১ ক্ষের পতি ভারের উক্তি ও অর্জুন কর্ত্তির ক্রারের পরারার্থাদি ও অ- ক্রের পরারার্ব নাণা ও পঞ্চব দিনদের যুদ্ধ বার রথারোহণাদি ও অ- ক্রের পরারার্ব নাণা ও পঞ্চব দিনদের বৃদ্ধ বার রথারোহণাদি ও অ- ক্রের পরারান্ব নাণা ও পঞ্চব দিনদের বৃদ্ধ বার রথারোহণাদি ও অ- ক্রের পরারান্ব নাণা ও তি লালাক্র স্বিল ১০০ ২ ক্রের পরারান্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম বিশান বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রবিশ্ব বিশ্ব ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম রুদ্ধ ভিলেম বিশ্ব ভিলম বিশ্ব ভিলেম বিশ্ব ভিলেম ১০১ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব ভিলেম বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০১ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০১ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০১ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০১ ১ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০২ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০২ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম ১০২ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিলেম বিশ্ব বিশ্ব ভিলম বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিলম বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ভিলম বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ১০২ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ১০২ ১ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ১০২ ১ বৃদ্ধ বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব ১০২ ১ বিশ্ব | | | | | | | ર | २२ |
| প্রতি উক্তি ১০৭ ২ ২৩ সাতাগির সহিত ভূরিশ্রবার যুদ্ধ ও ভিন্নাদি বিনাশ নিনিত্ত ক্ষের চক্ষ- হত্তের গ হইতে এবংরাহণাদি ১০৮ ১ ৯ নাশ ও পঞ্চন দিবদের যুদ্ধানয় এবং পাণ্ডব পক্ষে ক্ষের পতি ভাষোর উক্তি ও অর্জ্বন কর্ত্তিক ক্ষের নিবারণ ১০৮ ২ ১৪ মবর বাছ ও কৌরব পক্ষে ক্রেণ্ডব পক্ষে ক্ষের পুন ব্যার রখারোহণাদি ও অ- ক্ষ্রের প্রাক্তান ক্ষর ও তৃতীর দিবসের ব্যার পালার পালার প্রাক্তান ব্যাল চতুর্থ নিবসের যুদ্ধান ১১৯ ১ ১ থতরাইর খেদোজি ও সপ্তয়ের প্র- পাণ্ডব পক্ষের জন্মর ও তৃতীর দিবসের ব্যাহ নির্মাণ ও ভীষ্মার্জ্বনের যুদ্ধা ১১০ ২ ৩ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রানাদি বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে চতুর্থ নিবসের যুদ্ধা ও ভীষ্মার্জ্বনের যুদ্ধা ১১০ ২ ৩ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রানাদি বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রত্যাধনের আজ্ঞান্ত্রানাদি বিপক্ষ সেন্যমধ্যে প্রত্যাধনের অভ্যান্ত্রানাদি বিপক্ষ সেন্যমধ্যে প্রত্যাধনের আজ্ঞান্ত্রানাদি বিপক্ষ সেন্যমধ্যে প্রত্যাধনের কথান্ত্র আগ্রামন ১৬৬ ১ বৃষ্টেল্লানের পরাক্রম ও তংকর্ত্তিক সংখ- মনিপুল্লের নম্পক চ্বি ও সংখননির ক্রিতে পৃষ্টল্লানের বিদ্যাধনির ক্রির ভিন্ন প্রের অভিনন্ত্র প্রত্যাধনের রক্ষার্থ ক্রেমির রে প্রের ভীন ও ধৃইল্লানের রক্ষার্থ ক্রাম্বর রক্ষার্থ ক্রির রে প্রেরের তীন ও ধৃইল্লানের রক্ষার্থ ক্রাম্বর বিশ্বর | ভীন্মাদি বিনাশে চিন্তা \cdots \cdots | > 9 | > | œ | • | | | |
| ভীম্মাদি বিনাশ নিনিত্ত ক্ষের চক্র- হত্তের গ হইতে এববোহণাদি ক্ষের শতি ভাম্মের উক্তি ও অর্জুন কর্ষের শতি ভামের উক্তি ও অর্জুন কর্ষের প্রন্থির বিধারণ ক্ষের প্রন্থির রথাবোহণাদি ও অ- র্জুনের পরাক্রম ক্ষের প্রান্থির রথাবোহণাদি ও অ- র্জুনের পরাক্রম ক্ষের প্রত্তি ও অর্জুন ক্ষের প্রত্তি ও অর্জুন কর্ষের প্রন্থির রথাবোহণাদি ও অ- র্জুনের পরাক্রম ক্ষের প্রত্তি ও অর্জুন ক্ষের প্রান্থ কেরার প্রক্তে বাছি ব্যুক্তি করের করার ও তৃতীর দিবসের মুর্কা নাপন ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা নাপন ক্ষের করাক্রম ও করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও করাক্রম ও করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম ও করাক্রম ও তৃতীর দিবসের মুর্কা ক্ষের করাক্রম বিবার প্রক্তি ও অর্জ্র্কন কর্ষার করাক্রম ও করাক্রম | ভীম্মের পরাক্রনও সৃষ্ণের সাত্যকির | • | | | মন্ত্য আদির সহিত লক্ষণাদির যুদ্ধ \cdots | 202 | > | ₹8 |
| হত্তে রগ হইতে এবনোহণাদি ০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০ | প্রতি উজি \cdots \cdots 😶 😶 | >•9 | 2 | २७ | সাতাতির সহিত ভূরি:শ্রবার বুদ্ধ ও | | | |
| হত্তে রগ হইতে এবনোহণাদি ০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০ | ভীষ্মাদি বিনাশ নিমিত্ত কৃষ্ণের চক্র- | | | | ভূরিশ্রণা কর্ত্তক সাত্যকির দশ পুত্র বি- | | | |
| ক্ষের শতি ভাষের উল্ভি ও অর্জুন কর্ত্ব ক্ষের নিবারণ ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত | | 706 | > | ৯ | नीन ও পঞ্চ निन्दार युक्त मगः छ | ५७२ | > | २७ |
| কর্ত্ব ক্ষের নিবারণ | | | | | | | | |
| ক্ষের পুনর্ধার রথারোহণাদি ও অ- র্জুনের পরাক্রয় শেলা প্রকার্জ্য ক্ষের প্রাক্রয় শেলা প্রকার্জ্য ক্ষের পরাক্রয় শেলা প্রকার্জ্য ক্ষের পরাক্রয় ক্ষের পরাক্রয় ক্ষের পরাক্রয় শেলা প্রকার্জ্য ক্ষের পরাক্রয় ক্ষের ক্ষের ক্ষের্জি ক্ষের ক্ষের ক্রিক ক্ষের ক্ষের ক্রিক ক্ষের ক্রের ক্রিক ক্ষের ক্রিক ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রিক ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের ক্রের করের করের ক্রের ক্রের ক্রের করের ক্রের করের করের করের ক্রের করের করের করের ক্রের করের করের করের ক্রের করের করের করের ক্রের করের করের করের করের ক্রের করের করের করের করের ক্রের করের করের করের করের | • | 306 | ર | 28 | | | • | |
| র্জুনের পরাক্রন ত্যান্তির পেকের জন্ম ও তৃতীন্ন দিবসের ত্যান্তির পেকের জন্ম ও তৃতীন্ন দিবসের ত্যান্তির পেকের জন্ম ও তৃতীন্ন দিবসের ত্যান্তির পাশন ত্যান্তির প্রান্তির প্রান্তির প্রান্তির প্রান্তির প্রান্তির র প্রেল স্কান্তির প্রান্তির র প্রেল স্কান্তির প্রান্তির র প্রেল র সহিত প্রত্বান্তির স্কান্তির প্রান্তির র প্রেলি প্রান্তির র প্রেলি প্রান্তির র প্রেলি প্রান্তির র প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রিলি প্রিলি প্রিলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রিলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রিলি প্রেলি প্রিলি প্রিলিলি প্রিলিলিলিক প্রিলিলিলিক প্রিলিলিক প্রিলি | | | | | | ১৬৩ | ર | ५२ |
| পাওব পক্ষের জন্ন ও তৃতীন্ন দিবসের যুদ্ধ ন্যাপন চতুর্থ নিবসের যুদ্ধে উত্তন্ন সুদ্ধা চতুর্থ নিবসের যুদ্ধে উত্তন্ন যুদ্ধা ত্যুদ্ধি নির্মাণ ও তীল্লার্চ্জনের যুদ্ধা ত্যুদ্ধি নির্মাণ ও তৃত্যুদ্ধির বধ চেটা ত্যুদ্ধি নির্মাণ ও তৃত্যুদ্ধের বধ চেটা ত্যুদ্ধি বিসের আজ্ঞান্ত্র্যান্তর প্রান্তর ক্রিলার্চ্য ত্যুদ্ধির বধ চেটা ত্যুদ্ধি নির্মাণ বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রমাণ ও তৃত্যুদ্ধের ত্যুদ্ধান বধ চেটা ত্যুদ্ধি বিসের আজ্ঞান্ত্র্যান্তর বধ চেটা ত্যুদ্ধি বিসের আজ্ঞান্ত্র্যান্ত্র বধ চেটা ত্যুদ্ধি বিসের আজ্ঞান্ত্র বিসাহ্য প্রমাণ বিস্কান বিসাহা বিসা | • | 2.2 | , | , | | | • | ` |
| যুদ্ধ দ্বাপন তিত্ব দিবদের যুদ্ধে উত্তর পক্ষে ব্যাল তুর্ব দিবদের যুদ্ধে উত্তর পক্ষে ব্যাল কুহি নির্মাণ ও ভীম্মার্ক্রনের যুদ্ধ ত ১০ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রসারের প্রান্ত্র- অভিনন্তার পরাক্রম প্রকাশ ত ১০ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রসারের ব্য চেন্টা কুহি নির্মাণ ও ভীমার্ক্রনের যুদ্ধ ত ১০ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রসারের ব্য চেন্টা কুহি নির্মাণ ও ভীমার্ক্রনের যুদ্ধ আগমন ১০৬ ১ কুহে পরাক্রম পরাক্রম প্রকাশ ত ১০ হর্যোধনের আজ্ঞান্ত্রসারের ব্য চেন্টা কুহি নির্মাণ ও ভ্রান্ত্রসার ব্য চিন্তা কুহি নির্মাণ ও ভ্রান্ত্রসার ব্য ক্রমণ কুহি নির্মাণ বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রবেশ ও স্টান্তরের ব্যার সামন কুহি নির্মাণ বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রকাশ কর্ত্বসারের ব্য আজান্তরা কুহি নির্মাণ বিপক্ষ সৈন্যমধ্যে প্রকাশ কর্ত্রসার ব্য ব্য ভ্রান্তর ব্য ভ্র ভ্রান্তর ব্য ভ্র ব্য ভ্রান্তর ব্য ভ্রান | ^ | • | • | • | | 208 | | ৩৪ |
| চতুর্থ নিবসের যুদ্ধে উত্তর পক্ষে ব্যাল বুছ নির্মাণ ও ভীম্মার্ক্তনের যুদ্ধ ১১০ ২ ১৬ ছর্যোধনের আজ্ঞান্তনার ধৃতরান্ত্র- অভিনন্তার পরাক্রম প্রকাশ ১১০ ২ ১৬ ছর্যোধনের আজ্ঞান্তনার ধৃতরান্ত্র- অভিনন্তার পরাক্রম প্রকাশ ১১০ ২ ১৬ ছর্যোধনের আজ্ঞান্তনার ব্যাল ১৬০ ১ পৃত্তরামের পরাক্রম প্রকাশ ১৬০ ১ পৃত্রামের পরাক্রম প্রকাশ ১৬০ ১ পৃত্তরামের পরাক্রম বিভাগ ১৬০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৬০ ১ ১৬০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৮০ ১ ১৬০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৮০ ১ ১৬০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৮০ ১ ১৮০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৮০ ১ ১৮০ ১ ১৮০ ১ ১৮০ ১ পৃত্তরামের বিভাগ ১৮০ ১ | | | | | • | | • | • • |
| বৃাহ নির্মাণ ও ভীম্মার্ক্তনের যুদ্ধ · · › ১১ ২ ১৬ ছর্যোধনের আজ্ঞান্তনারে পৃতরাই- অভিন্তার পরাক্রম প্রকাশ · · · › ১১২ ১ প্রত্যান কর্ত্ক ধ্যান্তামের বধ চেটা · · › ১৬৭ ১ ধ্যান্তামের পরাক্রম ও তংকর্ত্ক সংয- মনিপুলের নফ্স চূর্ণ ও সংযান্তির ক্রিভি শ্যান্তামের যুদ্ধ · · · · · · · · ১১২ ২ ৭ পশম · · · · · · · · · · ১৬৭ ২ ধ্তরাইের ে দ ও শলের সহিত ধ্যা- দ্যাম ও অ ৬ ক্যার এবং ছর্যোধনাদির আদিশ বারের ভীন ও ধ্টাহামের রকার্থ | | | • | พ | | 31936 | | 8 |
| ভাষিক নিজ বিশ্ব কি কাশ নিজ নিজ কি কাশ নিজ নিজ কি কালি কাল | | | _ | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | , 00 | • | 8 |
| ধৃউছানের পরাক্রম ও তংকর্ত্ত্ব সংয- মনিপুত্রের নস্ক চূর্ব ও সংযদ্দির ক্রান্ত শৈছি পাপ্তি ও জোণাচার্য্য ইইডে ডছ- পৃউছানের যুদ্ধ | | | ۲. | | | \$100 | | |
| ননিপুত্তের নক্ত চ্ব ও সংখদনির ক্লাজিত শ্বীকুলানের যুদ্ধ শব্দ পালি ও জোণীচার্যা ইইডে তছ্- শ্বীকুলানের যুদ্ধ শ্বীকি রর পেরিড অভিনহ্য প্রভৃতি হাম ও অ ৬ কার এবং হর্যোধনাদির হাদশ বীরের ভীন ও ধৃউছাত্মের রকার্থ | • | 225 | > | 2.6 | | 767 | > | 5 @ |
| পৃষ্টিপ্লানের যুদ্ধ না না না ১১২ ২ ৭ পশম না না না ১৬৭ ২ পৃতরাষ্ট্রের দে ও শলের সহিত পৃষ্ট- যুদ্ধি রির পেরিড অভিনয়া প্রভৃতি প্লায় ও অ ৬ কার এবং প্র্যোধনাদির শাদশ বীরের ভীন ও গৃউত্থানের রকার্থ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | | | | | | |
| ধৃতরাষ্টের েদ ও শলের সহিত ধৃষ্ট- যুঁি ক্টি রর পেরিত অভিনহা প্রভৃতি ছাম ও অ ৬ কার এবং ছর্যোধনাদির ছাদশ বীরের ভীন ও ধৃউছামের রকার্থ | , | | | | | | _ | |
| ছামুও অ ৬ জার এবং দুর্যোধনাদির স্থাদল বারের ভীন ও ধৃউছামের রকার্থ | | 225 | . ? | 9 | भव्य | ४७८ | ₹ | Ъ |
| | | | | | | | | |
| | | | | | · | | | |
| সহিত ভীবনেনাদির যুদ্ধ প্রভৃতি … ১১১ ১ ৩• গমন ১৬৭ ২ | माहड ভा रत्मगाम्ब युक्त श्रक्षंड … | >>> | > | ٠. | গম্ন · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | : ७१ | २ | ও২ |

| Catalogical market sufferiors and the | শূ প | 48 | न संस् | अवत्। | | | |
|---|--------|-----------|--------|--|-------------|----|------------|
| দ্যোগাচার্যা কর্ত্তক ধৃতীল্পারের পরাজয় | | | | যুখিন্তির শিখন্তীর কথোপকথন ··· | >6> | २ | २ऽ |
| ७ পাশুৰ দৈনা বিজ্ঞাবন | 3 34 | , | . > > | ভীষ্ম, যুগিষ্টির, ভীমসেন ও চিত্রসেনের | | | |
| দুর্ব্যোধন ও ভাঁহার অন্যান্য কতিপয় | 6 101- | _ | | त्रमाश्रम | ३४२ | > | ₹\$ |
| ভাঙার সহিত ভীমের যুদ্ধ · · · · | ५७४ | • | 50 | সন্তুল যুদ্ধ ও সপ্তম দিবসের যুদ্ধ সমাপ্ত | > 65 | २ | ₹8 |
| অভিৰয়া প্ৰভৃতি বাদশ বীরের চ্- | | | | অ্যান দিবসীয় বুদ্ধারম্ভ ও কুরু পক্ষে | | | |
| বোধন প্রভৃতির সহিত যুদ্ধ এবং কর্ | 4 | | | সাগর বৃহ ৻চনা ⋯ ⋯ ⋯ | >68 | \$ | २७ |
| त्मत्र कूक्र टेमना विद्यावन | 302 | | ه | পাওব পক্ষে শৃঙ্গাটক বাৃহ রচনা ··· | 200 | > | >> |
| ছর্ষ্যোধনের প্রতি ভীগের উক্তি ও | | | | ভীম্ম ভীমের পরাক্রমান্ত ভীম কর্ত্ত্ক | | | |
| वहाँ | ১৩৯ | • | ૭ર | স্থনাভাদি কতিপয় ধৃতরাষ্ট্রপুত্রের বিনাশ | | > | 30 |
| অন্নত্তপাদির দহিত অভিনন্থা প্রভৃতির | | _ | | ছর্ব্যোধন ভীত্মের কথে প্রকথন ··· | > 4 9 | > | >>> |
| 1 | >8. | Ś | >> | ধৃতরাষ্ট্র সঞ্যের কথোপকথন 🕠 | > 6 9 | 2 | २७ |
| ছৰ্দ্ম প্ৰভৃতি পঞ্চ ভ্ৰাতার সহিত | | | | महून यूक्त | 306 | > | २৮ |
| কৈকের রাজ পঞ্চ জাতার যুদ্ধ ও ৰঠ | | _ | | শকুনির সহিত ইরাবানের যুদ্ধ ও ইরা- | | | _ |
| पिवरमञ्जूष्क मर्भाश्च | 282 | ર | 5@ | বানের পরিচয় · · · · · · · · · | 769 | > | > 9 |
| ছুৰ্য্যোধন ভীম্মের কথোপকখন ও সৈন্য | | | | ইরাবানের সহিত শকুনির ভাতৃগণের | | | _ |
| গণের সমর ধারা · · · · · · | >8२ | > | 30 | বুর ও পঞ্চ ভাতার মৃত্যু · · · · · | 700 | > | २ऽ |
| চুর্বোধনের প্রতি ভীম্মের আশাস | | | | রাক্ষস অলমুষের সহিত ইরাবানের | | | |
| বাকা কথন ও বিশলাকরণী ওৰ্ধি প্রদান | 280 | > | 5• | युक्त ७ हेर्तावात्मत्र मृष्ट्रा | 202 | 5 | ٥. |
| সপ্তম দিবসের যুদ্ধারম্ভ ও কৌরব- | | | | সকুল যুদ্ধ ও সাক্র্ন, ভীষা ও ডোণের | | | |
| দিগের মণ্ডল বাছ রচনা · · · · · | 580 | ₹ | | পরাক্রম ০.৪ | <i>५७</i> २ | > | >> |
| র পকৌ বজু ব্যহ নির্মাণাদি ··· | >80 | ? | २७ | ষটোৎকচের সহিত ছুর্য্যোধনের যুদ্ধ | | | |
| ভীম্মার্জ্কুনের সমাগম · · · · · · | >98 | 3 | 3.9 | ও ছুর্ব্যোধনের পরাজয় ··· ··· | ১৬২ | ź | > > |
| জোণের সহিত বিরাটের বুদ্ধ ও বি- | | | | ঘটোৎকচের সহিত দ্রোণাদির যুদ্ধ ও | | | |
| রাটপুত্র শন্মের বিনাশ | 33¢ | 2 | ۵ | ज्यांगांमित्र शत्रांक्यः | 7.98 | ک | ৩৩ |
| অশ্বাদার সহিত শিধতীর যুদ্ধ ও | | | | मृक्त युक्त ७ भृष्ठताकु टेमना कार्य | 3.54 | > | २१ |
| শিপণ্ডীর পরাজয় · · · · · · | >8¢ | ? | ٠ | ুভীমের সহিত ছর্বেগ্রাধনের যুদ্ধ ও | | | |
| সাত্যকির সহিত অলম্বরে যুদ্ধ ও | | | | ভীমের অবসাদ এবং ঘটোৎকচের বিজয় | | | 8 |
| ভাহাতে অলম্বের পরাজয় ··· ··· | 284 | ? | હ | ভীম্ম ছর্যোগনের কথোপক্থন ··· | 300 | 2 | ७२ |
| ধৃউছামের সহিত ছর্যোধনের যুদ্ধ ও | | | _ | ভূগদত্ত প্রভূতির সহিত ভীমসেন ও | | | |
| ভাহাতে দুর্যোধনের পরাত্য · · · · | 780 | > | ₹\$ | ঘটোংকচ গ্রভৃতির যুদ্ধ · · · · · | ১৬৯ | 2 | 20 |
| ভীমদেনের সহিত কৃতবর্মার যুক্ত ও | | | - 1 | ইরাবানের মৃত্যু শুনিরা অর্জুনের থেদ | | | |
| ভাহাতে কৃতবৰ্মার পরাজয় · · · · | 784 | २ | 0 | उ पूष्क श्रवृक्ति | >95 | > | ও২ |
| ধৃতরাষ্ট্র সঞ্জয়ের কথোপকথন ··· | 780 | २ | २७ | | | | |
| অবভিরাজ ছুই আতার সহিও ইরা- | | | | হতিপন্ন পুত্তের মৃত্যু ··· ··· ··· ··· | 265 | Ś | 78 |
| वादनत्र गूका | >89 | 5 | 5.6 | ু উভয় পক্ষীয় প্রধান যোদ্ধা ও দৈন্য- | | | |
| ভগদত্তের সহিত ঘটোৎকচের যুদ্ধ ও | | | | मिरशत सूरक कय व्यवश अधेम मिरशीय | | | |
| ভাহাতে ঘটোংকচের পরাজ য় ··· ·· | >89 | २ | 29 | क्षित्रमाश्रम | ५ १७ | > | २७ |
| নকুল সহদেবের সহিত মন্তরাক্তের যুদ্ধ | | | | পাণ্ডবদিগের বিনাশ নিমিত্ত ভূর্য্যো- | | | |
| ও ভাছাতে মন্তরাক্ষের পরাব্দর · · · · · | 781 | 2 | ₹ 🎝 | त्नामित्र मञ्जना | 398 | ? | 2.0 |
| বুখি ন্তিরের সহিত প্রকা য়ুর বু দ্ধে প্রকা- | | | | কর্ণের মন্ত্রণায় ছর্ব্যোধনের ভীষ্ম সমী- | | | |
| যুর পর্কিয় | 781 | २ | 62 | পে গমন · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | >9€ | > | 50 |
| কৃপাচার্য্যের সহিত চেকিডানের বুদ্ধ | >8% | ? | 8 | ভীম্মের বাক্যান্ত্রসারে ছর্ব্যোধনের রাজ | | | |
| ধৃউকেতুর সহিত ভুরিঞ্জৰার যুদ্ধ, … | >4• | ۶ | ٩ | গণ ও ছংশাসনের প্রতি আদেশ ও যুক্তে | | | • |
| অভিমহার সহিত ধৃত্রাট্রের তিন পু- | | | , , , | श्रमम ••• ••• ••• ••• ••• | >99 | > | 55 |
| ्यत्र युक्त ८४१ व र्क्नम, जीवा ও इर्द्याध न | | | | নৰম দিৰসে যুদ্ধারম্ভ ও উভয় পক্ষে | | | |
| প্রভৃতির সমাগম 🔐 🔐 \cdots \cdots | ¢. | > | 29 | ग्रह्त्रुवना · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 395 | > | २७ |
| | | | | | | | ` |

মহাভারত।

ভীম্মপর্ব ।

নারায়ণ, নরোজম নর ও সরস্বতী দেবীকে নমক্ষার করিয়া পুরাণাদি কীর্ত্তন করিবে।

জনমেজয় বৈশম্পায়নকে কহিলেন, হে ব্রহ্মন্!
স্মহাত্মা কুরু, পাগুব ও চক্সবংশীয় বীরগণ এবং
নানা দেশ-সমাগত পার্থিবগণ কি ৰূপ যুদ্ধ করিয়াছিলেন?

বৈশম্পায়ন কহিলেন, হে মহীপতে! কুরু, পাগুব ও সোম বংশীয় বীরগণ তপংক্ষেত্র কুরুক্তেতে যে প্রকার যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তাবণ করুন। বেদা-ধ্যয়ন-সম্পন্ন, সমর-প্রিয়, বিজয়কাঞ্জী, মহাবল পা-গুবেরা সকলে সৈন্যগণ ও সোমকদিগের সহিত কুরুকেত্রে অবতীর্ণ হইয়া কৌরবদিগের অভিমুখীন হইলেন। সেই ছুরাধর্ষ সদৈনিক সোমক ও পাওব গণ যুদ্ধে বিজয়াশংসা করত ছুর্য্যোধনের সৈনিক বর্গের সম্মুখ দিয়া গমন-পূর্বক পশ্চিম ভাগে পূর্বসুখ হইরা সল্লিবেশ করিলেন। কুন্তী-নন্দন যুধিন্তির সমস্তপঞ্জের বহিজাগে যুগেপিযুক্ত সহস্র সহস্র শিবির সংস্থাপন করাইলেন। হে পার্থিবসক্তম! उरकारन रात नमस स्माधन श्रूवन मृत्रा, निव्रम, वित्रथ ও क्शान-विविधिक रहेल। नर्वक रे वानक, বৃদ্ধ ও জ্রীপণ মাত্র অবশিষ্ট রহিল। জমুৰীপ-मल्टल रव श्वान शर्यास मिराकत कत्र श्रमात्र करतन, तिहे श्राप्तम हहेए नकता युक्तार्थ कूक्रकाता ।

আসিয়া সৈন্য ৰূপে সমবেত হইল। সর্ব জাতীয়
সমস্ত মানবগণ একত্র হইয়া বছ যোজন বিস্তীর্ণ
ভূমি পরিসরে অনেকানেক দেশ, নদী, পর্বত ও
বন সমূহ পরিব্যাপ্ত করিল। রাজা যুধিন্তির বল
বাহন-সমন্থিত সেই অসংখ্য যোধগণের উন্তম ৰূপে
ভক্ষ্য ভোজ্যের ব্যবস্থা আদেশ করিয়া দিলেন এবং
যুদ্ধ কালে বিশৃষ্ণলভা নিবারণ জন্য স্থ পক্ষ সৈন্যদিগের এক নাম নির্দিন্ত করিলেন যে, যে এই ৰূপ
নাম বলিবে, ভাহাকে পাগুর পক্ষ বলিয়া বোধ
করা যাইবে এবং ভাহাদিগের প্রভ্যেক দলের
অভিজ্ঞান স্থচক চিত্র-বিশেষ, সংজ্ঞা-বিশেষ ও ভাষাবিশেষ নির্দেশ করিয়া দিলেন।

ওদিকে মন্তকোপরি ধ্রিয়মাণ পাগুরবর্ণ আতপত্রে সুশোভিত, নাগ সহস্র মধ্যবর্ত্তী, জাতৃর্দেদ
পরির্ত, মহামানী ছুর্যোধন পাগুব পক্ষীয় মজাগ্রভাগ নিরীক্ষণ করত স্ব পক্ষীয় মহীপাল বর্গের
সহিত মিলিত হইয় পাগুব-প্রতিপক্ষে ব্যুহ রচনা
করিতে লাগিলেন। যুদ্ধ-প্রিয় পাঞ্চাল যোধগণ
ছুর্যোধনকে দেখিয়া হর্ষোৎফুল্ল মানসে মহারবে শক্ষাও মধুর স্থন ভেরী সমস্ত শক্ষিত করিতে
লাগিল। পাগুব গণ ও বীর্যাবান্ বাস্থদেব সেই
সৈন্য দলকে ভাদৃশ হর্ষ প্রাপ্ত দেখিয়া অতীব প্রীত
হইলেন। রথস্থিত পুরুষেক্র বস্থদেবস্থম্ম ও ধনজ্বর যোধগণের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়া স্ব স্থা দিবা

শব্ধ ধনি করিতে লাগিলেন। ইতন্তত যোধগণ তাঁ-क्रामिर्शत (मर्वे श्राक्षक्रमा ७ (म्यम्ख श्रास्त्र खरूत्र নির্ঘোষ ভাষণ করিয়া মূত্র পুরীষ পরিত্যাগ করিয়া किता। य श्रकात मकाय्यान महा निः रहत शर्कन শুনিরা অপরাপর পশুকুল ভর ব্যাকুল হয়, তক্রপ मिट्टे पिता चात्रिक नियन खदर्ग मिट्टे मकल रेमना मन व्यवसन रहेशा পिएन। ७९काल कृमि रहेए এতাদৃশ ধূলিপুঞ্জ উপ্থিত হইতে লাগিল, যে তন্দারা আচ্ছাদিত হইয়া দিবাকর ধেন অন্ত গমন করি-লেন; কিছুই আর দৃষ্টিগম্য রহিল না। অনন্তর পর্জন্য সেই হুলে সমস্ত সৈন্য গণের উপরে মাংস শোণিত বৰ্ষণ করিতে লাগিল। মরুত্বান্ প্রামুর্ভূত হইয়া ক্রমে ক্রমে শর্করাকর্ষণ পূর্ব্বক শত শত সহস্র সহস্র যোধগণকে আহত করিতে থাকিল। এই সকল যেন অদ্ভুতের ন্যায় প্রতীয়মান হইল। হে রাজেন্দ্র তথাপি সেই কুভিত সাগর তুল্য উভয় দৈন্য দল যুদ্ধার্থে অতিশয় আগ্রহান্বিত ও হৃষ্টচিত্ত হইয়া কুরুকেত্তে অবস্থিত রহিল। যুগান্তকালীন মহার্ণব যুগলের ন্যায় সেই ভারত সেনা ছয়ের সমাগম অভূতৰপ হইল। কুৰুপাগুবেরা দৈন্য সমূহ সংগ্রহ করাতে বস্থার খুন্যপ্রায় রহিল; क्वित वालक, इक्ष ७ जीइन्स माज नर्वज च च দেশে অবশিষ্ট ছিল।

হে ভরত প্রবর! কুরু, পাগুর ও সোমক গণ যুদ্ধের
এই রূপ প্রতিজ্ঞা ও ধর্ম সংস্থাপন করিলেন যে
সমযোগ্য ব্যক্তিরাই পরস্পর ন্যায় পূর্বক যুদ্ধ করিবেক; কেহই কোন প্রকারে ছল প্রয়োগ করিতে
পারিবেক না; ন্যায়ামুসারে যুদ্ধ করিয়া নির্ভ হইলে আমাদিগের উভয় পক্ষেরই পরস্পর প্রীতি হইবে। যাহারা বাগ্যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইবে, তাহাদি-গের সহিত বাক্য ছারাই প্রতিযুদ্ধ করিতে হইবেক।
যাহারা সৈন্য মধ্য হইতে নিজ্ঞান্ত হইবে, তাহাদি-গকে কোন প্রকারে আঘাত করা হইবেক না। রথী রথীর সহিত, গলারোহী গলারোহীর সহিত, অশ্বা- বার অশাবারের সহিত এবং পদাতিক পদাতিকের সহিত যুদ্ধ করিবেক। যোগ্যতা, অভিলাব, উৎসাহ ও পরাক্রম অসুসারে সম্ভাবণ করিয়া প্রহার করিতে হইবেক। বিশ্বস্ত অথবা বিহ্বল ব্যক্তির প্রতি আন্হাত করিবে না। অন্যের সহিত যুদ্ধ করিতে প্র-রম্ভ, শরণাপম, যুদ্ধ পরাজ্মুখ, ক্ষীণ-শস্ত্র অথবা বর্মান্থান করার করা হইবেক না, এবং সারথি, বাহন, শস্ত্র বাহক ও ভেরী-শশ্বাদি বাদ্যকরের প্রতি কোন প্রকারে আঘাত কর্তব্য হইবেক না। কুরু, পাশুব ও সোমক গণ এই কপ প্রতিজ্ঞা করিয়া পরস্পার সৈন্যাদল নিরী-ক্ষণ করত অতীব বিস্ময়ান্বিত হইলেন। এই কপে সেই পুরুষ-প্রধান মহাজ্মা গণ দৈনিকগণের সহিত স্কোন করিয়া পরম হুই চিতে যুদ্ধার্থে সমুৎ-স্কের হিলেন।

रिननामित्रम ७ क्षथम व्यथाय ममाक्ष >

→.6-

বৈশশ্পায়ন কহিলেন, অনন্তর ভূত তব্য তবিষাবিৎ, প্রত্যক্ষদর্শী, সর্ববেদজ্ঞ-শ্রেষ্ঠ, তরতবংশীয়
গণের পিতামহ সত্যবতী-নন্দন তগবান্ ব্যাস ঋষি
নিদারণ তাবি সংগ্রামে পূর্ব্ব পশ্চিম তাগে অবস্থিত
সেই সকল সৈন্য নিরীক্ষণ করিয়া পুজের ছুর্নীতি
চিন্তায় শোকাকুল বিচিত্রবীর্য্য-নন্দন ধৃতরাষ্ট্রকে
নির্জনে কহিলেন, হে রাজন্! তোমার পুজেরা
ও অপরাপর ভূপাল বর্গ কালপ্রাপ্ত হইয়াছে। তাহারা সংগ্রামে পরস্পর সমবেত হইয়া পরস্পারকে
নিহত করিবে, কালপরীত হইয়া সংহার দশায় উপনীত হইবে, তরিমিন্তে তুমি কালের পর্য্যায় বোধগম্য করিয়া শোকে চিন্তার্পণ করিও না। হে পুক্র!
যদি সংগ্রাম স্থলে ইহাদিগকে তোমার দেখিবার
অভিলাষ হয়, তাহা হইলে তোমাকে নয়ন প্রদান
করি, তন্থারা যুদ্ধ দর্শন করিতে পারিবে।

धृ**उत्रा**ष्ट्रे कहिरलन, रह उक्कर्षि नखम ! छा। जिद्य

সন্দর্শনে আমি অভিলাষ করি না, কিন্তু আপনকার তেজঃপ্রভাবে এই যুদ্ধের সমুদার র্ভান্ত শ্রবণ করি-ভে মানস করি।

रिवमच्यावन कहिरलन, धृखदाड्डे मःश्राप्त पर्मरन व्यक्तिका ও खरा। रेक्षा क्षराग कतिता रत्न क्षरा-নের ঈশ্বর ব্যাস সঞ্জাকে বর দিলেন এবং ধৃত-ता**ष्ट्रितक विलालन, এই मक्षत्र ভোমার নিকটে** এই यूटकत ममल द्रकाल विलट्न। मःथारमत ममल वा-পারই ইহাঁর পরোক থাকিবে না; ইনি দিব্যচকু:-সমল্পত হইবেন, ভাহাতেই সমস্ত জানিতে পারি-বেন ও যুদ্ধবিষয়ক যাবতীয় বৃত্তান্ত তোমার নিকট वर्गन कतिरवन। श्वकारण वा ज्यश्वकारण, मिवरम वा निमा नमरत य कान वाभादत घटना रहेत, ইনি মনে মনে চিন্তা করিবা মাত্র তংসমস্ত অবগত হইবেন। শস্ত্র সমস্ত ইহাঁকে ছিন্ন করিবতে পারিবে না এবং পরিশ্রমও ইহাঁকে ক্লাস্ত করিতে সমর্থ হইবে না। হে সৌম্য! এই গবল্পাস্থত সঞ্চয় এই সমর হইতে বিমুক্ত হইতে পারিবেন। হে ভরত-শ্রেষ্ঠ ! তুমি শোকাভিভূত হইও না, আমি এই কুরুপাগুর সকলের কীর্জি বিখ্যাত করিয়া দিব। হে নরেন্দ্র; এই উপস্থিত ব্যাপার দৈবায়ত্ত জা-নিবে। দৈব ক্বত বিষয়ে কথনই শোক করা উচিত নহে। বিশেষত ইহা নিবারণ করিবারও সাধ্য নাই, रिया विकास कि स्वाप्त थारक।

বৈশন্পারন কহিলেন, কৌরব ও পাগুবদিগের পিতামহ মহাভাগ ভগবান্ ব্যাস ধৃতরাইকে এই ৰূপ বলিয়া পুনর্বার বলিতে আরম্ভ করিলেন, মহা-রাজ! এই যুদ্ধে মহান্ ক্ষয় হইবে। তাহার অমু-মাপক বছবিধ ভরম্বর নিমিত্ত সমস্ত লক্ষিত হই-ভেছে। শ্যেন, গৃধু, কাক, কম্ব ও বক এই সকল পক্ষী বৃক্ষের উপরে আসিয়া পভিত হইভেছে এবং সকলে সমবেত হইয়া আনন্দ ভরে সমীপবর্জী যুদ্ধ-হল নিরীক্ষণ করিতেছে। মাংসভোজী শৃগাল কুকু-

त्रापि भग भवनाविभरागत माश्म खक्का कतिर् वर्षात्रा বিচরণ করিভেছে। বিকটাকার কলপকি সকল নির্দ্ধরভাবে শব্দ করিয়া ভয় প্রদর্শন করত দক্ষিণ দিক্ দিয়া মধ্যহুলে সঞ্চরণ করিতেছে। হে ভারত! পূর্বাপর উভয় সন্ধ্যাকালেই নিত্য নিত্য দৃষ্ট হই-তেছে य উদয়াস্ত কালে স্থাদেব যেন কবন্ধগণে আচ্ছাদিত হইয়া ধাকেন। উভয় প্রাপ্তভাগে শ্বেত ও লোহিত বৰ্ণ এবং মধ্যভাগে ক্লফবৰ্ণ এই ত্ৰিবৰ্ণ भ्य পরিবেষাকারে **সন্ধা কালে প্র**ভাকরকে পার-বেষ্টন করিয়া থাকে। আমি দেখিয়াছি, অমাবস্যার **मिवन চल्र-स्प्राकास नक्व পाপগ্रह नमाकास** হইয়াছে, আবার সেই অহোরাত্রেই ত্রাহস্পর্শ ঘটি-রাছে, তাহা ভয়ের নিমিত্তই হইতেছে। চন্দ্রমা কার্ত্তিকী পুর্ণিমাতে প্রভাহীন ও রক্তবর্ণ হইয়া অলক্য হইরাছেন। অতএব বহু সংখ্যক শৌর্যা-শালি, পরিঘ ৰাহ্ন, বীর রাজা ও রাজপুত্র গণ নিধন প্রাপ্ত হইয়া ধরা আচ্ছাদিত করিয়া শ্রন করিবেন। রাত্রি কালে যুদ্ধকারী বরাহ ও বিড়া-লের প্রচণ্ডতর ভয়ঙ্কর শব্দ অন্তর্নাক্ষ পথে ক্রান্ত হইতেছে। দেব-প্রতিমা সকল কখন কম্পিত হই-তেছে, कथन रात्रा कतिराहर, कथन वहन वाता क्षित वमन क्रिटिंग्ड, क्थन धर्मयुक्त इंटेटिंग्ड. কখন বা ধরাতলে পতিত হইতেছে। হে নরপলে ! ছুন্দুভি সকল আহত না হইয়াও শব্দ করিতেছে। ক্ষত্রির গণের প্রধান প্রধান রথ অশ্বযোজিত না হইয়াও চলিত হইতেছে। কোকিল, শতপত্র, চাস, ভাস, শুক, সারস, ময়ুর, এই সকল পাক্ষি-গণ কঠোর ধনি করিতেছে। স্থানে স্থানে অখা-বার গণ বর্মা পরিধান ও শস্ত্র ধারণ পূর্বক স্পর্কা করিতেছে। অরুণোদর কালে শত শত শলভ मन मृष्णे रहेरज्रह, अवर छेख्य मन्नाकारन मिश्नाह প্রকাশিত হুইতেছে। হে ভারত!মেঘ সকল ধূলি ও মাংস বর্ষণ করিতেছে। হে রাজন্! সাধুজন-পুরকৃতা, ত্রিলোক বিশ্রুতা, যে এই অরুক্সতা,

তিনি স্থাম বাদাঠকে পৃতে করিয়া রহিয়াছেন। শনিপ্রাহ রোহিণীর পীড়োৎপাদন করিতেছেন। চল্লের মৃগচিক্ত আর যথা স্থানে দৃষ্ট হয়
না। নজোমগুলে বিনা মেঘে ঘারতর স্বনধনি শ্রুত
হইতেছে, এবং বাহন গণ রোদন করিতেছে, তাহাদিগের অশ্রুবিন্তু নিপতিত হইতেছে। মহারাজ!
এই সমস্ত দেখিয়া প্রতীতি হইতেছে যে মহা ভয়াবহ ব্যাপার উপস্থিত হইবে।

ব্যানোজিপ্রকরণেদিতীয় অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ২ ।

া
া

व्यान कहिरलन, रह द्वार्ष्ट्र ! रहामात नगरत গো গর্বে গর্দভ প্রস্থুত হইতেছে। সন্তানেরা মা-তার সহিত কেলি করিতেছে। বন জাত বৃক্ষ সকল অকালোচিত পুষ্পকল প্রদর্শন করিতেছে। গরিণী গণ ভীষণ-মূর্ত্তি ক্ষজ্রিয় পুত্র উৎপাদন করিতেছে। মাংস ভোজী পশুপক্ষি গণ মিলিভ হইয়া একতা ভোজন করিতেছে। কাহারো তিন শৃঙ্গ, কাহারো চারি নেত্র, কাহারো পঞ্চ পদ, কাহারো ছুই শিশ্ন, কাহারে৷ তুই মন্তক, কাহারে৷ তুই লাদুল, কাহা-রে৷ বা বিশাল দম্ভ, এই ৰূপ অশিবমূর্ত্তি পশু সকল উৎপন্ন হইতেছে এবং তাহারা জাত মাত্রই মুখ ব্যাদান করিয়া অমঙ্গল ধনি করিতেছে। কাহারো তিন পদ, কাহারো চারি দস্ত, কোন টা শিখা-বিশিষ্ট, কোন টা বা শৃঙ্গ-যুক্ত এই ৰূপ বিক্নতাকার ঘোটক সকল উৎপন্ন হইডেছে, এবং কোন কোন ব্ৰহ্মবাদি-গণের সহধর্মিণীদিগকে গরুড় পক্ষী ও ময়ূর প্রস্ব कतिरा प्राथे वाहेर एक । एक मही भरत ! व्यापिकी रभावतम अवर कूक्ती अकन्यान त्रव काती मृभान, কুরুট, করত ও শুক পক্ষি প্রসব করিতেছে। কতক-গুলি জ্রীলোক চারি পাঁচ টি কন্যা প্রসব করিয়াছে; ঐ কন্যারা জন্মিবা মাত্র নৃত্য, গীত ও হাস্য করিয়া-ছে। চাগুলোদি ইতর জাতীয় কুক্ত লেচ্কেরা মৃত্য, গীতও হাস্য করিতেছে; ভাহাতেই তাহারা মহা ভয় বিজ্ঞাপন করিতেছে। শিশুগণ যেন কাল প্রে-

রিত হইয়া সশস্ত্র প্রতিমা লিখিতেছে, দণ্ড হস্তে করিয়া পরস্পর প্রহার নিমিত্ত ধাবিত হইতেছে. এবং যুদ্ধেচ্ছু হইয়া পরস্পার নির্দ্মিত ক্লতিম নগর नक्त ७ भ क्रिया क्लिटिए हि। क्रमत उर्भन कृत्रम कस्यात প্রভৃতি জলপুষ্প সকল রুক্ষে উৎপন্ন হই-তেছে। প্রচণ্ডতর বায়ু সর্ব্ব দিগে প্রবাহিত হইবায় ধূলিজাল উড্ডীন হইতেছে, উপশাস্ত হইতেছে না। বস্থন্ধরা মুহুর্দাৃছ কম্পিতা হইতেছেন। রাছ গ্রহ স্বর্থাকে অমুক্ষণ আক্রমণ করিতেছেন; এবং কেতু গ্রহ চিত্রা নক্ষত্র অভিক্রম করিয়া রহিয়া-ছেন; ইহাতে কুরুবংশ ধংসের বিশেষ লক্ষণ দৃষ্ট হইতেছে এবং মহাঘোর মহাগ্রহ ধুমকেতু পুষ্যা-কে আক্রমণ করিয়া অবস্থিতি করিতেছেন, তাহা-তেও সেনা-ছয়ের বিষমতর অনিষ্ট উৎপাদন করি-বেন ৷ মঙ্গল মঘাতে এবং বৃহস্পতি ভাবণায় বক্ত-ভাবে সঞ্চরণ করিতেছেন। শনি পূর্বকল্পণীকে আক্রমণ করিয়া পীড়া দিতেছেন। শুক্র পূর্বভাত্র-পদে আরোহণ করিয়া দীপ্তি পাইতেছেন এবং পরিঘ নামক উপগ্রহের সহিত মিলিত হইয়া পরি-ক্রম পূর্বক উত্তরভাত্রপদকে আক্রমণ করিবার উপক্রম করিতেছেন। কেতু নামক দ্বিতীয় উপগ্রহ ধুমমুক্ত পাবকের ন্যায় প্রস্থালিত হইয়া ইন্দ্র-দৈবত তেজ্পী জ্যেষ্ঠা নক্ষত্রকে আক্রমণ করিয়া রহিয়া-ছেন। ধুর নক্ষত্র ভয়ানক ৰূপে দেদীপ্যমান হইয়া দক্ষিণ দিকে প্রবৃত্ত হইতেছেন। শশী ও ভাক্ষর উত্ত-য়েই রোহিণীকে পীড়া দিতেছেন। পরুষগ্রহ রাছ চিত্রা ও স্বাতির অভ্যস্তরে অধিষ্ঠিত হইয়াছেন। পাৰক সদৃশ প্ৰভাশালী মঙ্গল ৰকান্ত্ৰকভাবে সঞ্চরণ করিয়া বৃহস্পতির অধিষ্ঠিত অবণা নক্ষত্রকে সম্পূর্ণ ৰূপে বেধ করিয়া অবস্থিতি করিতেছেন।

মহারাজ ! সময় বিশেষে বিশেষ বিশেষ শস্য-শালিনী যে ধরিত্রী, তিনি অধুনা সর্ব্ব প্রকার শস্য সমুহে যুগপৎ সমাকীর্ণ হইডেছেন। যব সকলের পাঁচ পাঁচ এবং ধান্য সকলের শত শত শীষ দৃষ্ট

হইতেছে। জগৎ রক্ষার কারণভূত, নর্বন লোক मर्था अधान ध्यमुन्नगटक वर्षात्र शानावनाटन ह्या-হন করিলে ভাহারা শোণিত ক্ষরণ করিয়া থাকে। শরাসন সকল হইতে সহসা তেজঃপুঞ্জ নির্গত হই-ভেছে; ধড়্গ সমস্ত অকন্মাৎ অতিমাত্র প্রভাযুক্ত হইতেছে; শস্ত্র সকল যেন উপস্থিত সমর কার্যাকে স্পান্ট ৰূপেই নিরীক্ষণ করিতেছে। হে ভারত! যথন মজ, কবচ, শস্ত্র ও জলের আভা অগ্নিবর্ণ হইয়াছে, তখন নিশ্যুই প্রতীতি হইতেছে যে, महान् इश्न हहेर्द,-- कूक़ পाखदगरगत প्रतम्भत হিংসা ব্যাপারে পৃথিবী ধলা ৰূপ ভেলা সমূহে সমাকুলা শোণিতাবর্ত্তময়ী নদী ৰূপে পরিণতা হই-বে । সর্বা দিকে মৃগ পক্ষিগণ প্রদীপ্ত মুখে নিরস্তর কর্কণ ধনি করিতেছে এবং অত্যাহিত প্রদর্শন করত মহাভর বার্ডা বিজ্ঞাপন করিচ্চেছে। এক পক্ষ, এক চক্ষু ও এক পদ বিশিষ্ট একটা শকুনি রাত্রি কালে সঞ্চরণ করত শস্ত্র সকলকে শোণিত বসন করাইবার নিমিত্তেই যেন অতীব ক্রুদ্ধ হইয়া ভয়ঙ্কর শব্দ করিতেছে। হে রাব্বেন্দ্র! সংপ্রতি সমু-দার শস্ত্রই যেন প্রজ্বলিত হইর। উঠিতেছে। উদার ভাবাপন্ন সপ্তর্ষি মণ্ডলের প্রভাপুঞ্জ সমাক্ ৰূপে আচ্ছাদিত হইতেছে। তেলোমর রহস্পতি ও শনৈ-শ্চর, এই ছুই টি গ্রহ বিশাখার সমীপবর্তী হইয়া সম্বৎসর কাল স্থায়ী হইরাছেন। এক পক্ষে ছুই দিন ত্রাহস্পর্শ হইলে প্রতিপদ্ অবধি গণনা মতে रय जरतामण दिवरम शूर्विमा वा व्यमावमा। इत्र, त्महे मिवरन পूर्विमा वा ज्यमावनगारक हक्क वा स्वर्ग द्राइ-প্রস্ত হইন্না যেন প্রস্তা করেই ইচ্ছা করিতেছেন। **मिक् नकन नर्कालाजार्य धूनि वर्षाय नमाकीर्ग स्हेन्रा** অশুভ স্কু হইয়াছে। উৎপাত-লক্ষণ ভীৰণা-কার মেঘ সমন্ত রাত্রি কালে শোণিত বর্ষণ করি-তেছে। কুরকর্মা রাছ কুছিকার পীড়োৎপাদন করত অবস্থিতি করিতেছে। বারু সমন্ত, উৎপাত-বিশেব লক্ষ্য করিয়া পুনঃপুন প্রবাত হইতেছে,

ইহাতে মহান্ আক্রন্দ জনন বৈর্যুদ্ধ উপস্থিত হইবে। রাজাদিগের অশ্বপতি, গলপতি ও ন্র-পতি, এই ত্রিবিধ ছত্র-চক্র ক্ষিত হইয়াছে; অশ্বিনা প্রভৃতি নয় টি নক্ষত্তের মধ্যে কোন কোন নক্ষতে পাপগ্রহের বেধ হইলে অশ্বপতির বিশ্ব হয়; মঘ্য-দি নব সংখ্যক নক্ষত্তের মধ্যে কোন কোন নক্ষত্তে পাপ্রহের বেধ হইলে গ্রুপতির অরিট হইয়া ধাকে; এবং মূলাদি নয় টি নক্ষত্রের অন্তর্গত কোন কোন নক্ষত্তে পাপগ্রহের বেধ হইলে নরপতির অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। হে নরপতে ! সংপ্রতি ঐ ত্রিবিধ ছত্র সম্বন্ধীয় প্রতি নৰ-সংখ্য নক্ষত্রের অস্ত-র্গত কোন কোন নক্ষত্রে শিরঃস্থানে পাপগ্রহ পতিত হইতেছে; ইহা অতীব ভয়োৎপাদনের কারণ হইয়াছে। কখন এক পক্ষের মধ্যে এক দিবস তিথি ক্ষয় হইলে প্রতিপদ্ অবধি পণনা মতে **ठजुर्फम फिर्ना, जाहा ना इहेटल शक्षमम फिर्ना,** এবং কখন বা এক দিবস তিথি বৃদ্ধি হইলে বোড়শ मिवरम ठळ वा स्था **পू**र्णिमा वा समावनागटा जाह-গ্রস্ত হইরা থাকেন, কিন্তু এক মাসের মধ্যে শুক্ল কৃষ্ণ উভয় পক্ষেই ছুই দিবস করিয়া তিথি ক্ষয় হইরা যে ত্রবোদশ ত্রয়োদশ দিবদে পূর্ণিমা ও অমাবস্যাতে **हम्म ७ सूर्या ताल्थास हन, हेहा कथन मिश्र नाहे,** অতএৰ ষথন এই চন্দ্ৰ সূৰ্য্য উভয় গ্ৰহ ঐ ৰূপ ত্রমোদশ দিবদে রাজ্থান্ত হইয়াছেন, তথন তাঁহারা य अना ममूर का कतिर्वन, जाशास्त्र कात्र मरम् নাই। রাক্ষ্য গণ তৎকালে বক্তু পুরণ করিয়া রক্ত পান করিয়াও পরিভৃপ্ত হইবে না। মহারাজ! মহানদীর প্রবাহ সমস্ত প্রতিকৃলগামী হইতেছে। ষাবতীয় সরিৎপুঞ্জের জল সকল শোণিত বর্ণ ধারণ করিতেছে। কৃপ সমুদায় কেন নিচয়ে পরিকীর্ণ হইয়া রুবভের ন্যায় শব্দ করিতেছে। গুদ্ধাশনি সদৃশ দেনীপামান সনির্ঘাত উল্কা সকল পতিত हरेट्डाइ, এবং अमा निर्मावनाति छेमत्र काता প্রভাকর, সর্বাদিক্ প্রজালিত বছ উল্কার সহিত

সঞ্চরণ করিয়াছেন। মহর্ষিগণ পরস্পর সমীপবস্তী হণ্যা কীৰ্ত্তন করিয়াছেন যে এইৰূপ উৎপাত উৎ-পত্তি হইলে পৃথিবী সহজ্ৰ সহজ্ৰ পৃথিবীপতির শোণিত পান করিবেন। অপিচ, হিমালয়, কৈলান ও मन्मत्रशितिनिकत्र स्ट्रेट अष्ठ छन्त महञ्ज महञ्ज শব্দ ও শিধর সমস্ত নিপতিত হইতেছে। এতাদুশ ভূমিকম্প হইতেছে বে ভাহাতে সাগর চতুইয় অতিমাত্র বর্জিত হইয়া যেন বস্থুজারাকে ক্যোভিত করত বীর বীর উপকূল অতিক্রম করিতেছে। कमत्रवाशी প্রচণ্ড বায়ুসমস্ত বৃক্ষসকল বিলোড়িত করিয়া বহন করিতেছে, গ্রাম ও নগর মধ্যে বৃক্ষ ও চৈত্য সকল উগ্রতর সমীরণে ভগ্ন ও বজুাহত হইয়া পতিত হইতেছে। ব্রাহ্মণেরা যে অগ্নিতে হোম করিতেছেন, সেই অগ্নি নীল, লোহিত বা পীতবর্ণ হইয়া ছুৰ্গন্ধ বিস্তার, কঠোর শব্দ নিঃসারণ ও বাম ভাগে শিখাनकालन-পূর্বক ছলিত হইতেছেন। স্পর্ম, গল্প, রস, এসকলই বিপরীত ভাব হইতেছে। ধলা সকল মুভ্রুছ কম্পমান হইরাধুম পরিভাগ করিতেছে। ভেরী পটহ বাদ্য সমস্ত অঙ্গার বর্ষণ করিতেছে। চভূর্দিগে বারস গণ মহোন্নত মহীরুহ পুঞ্জের উপরি ভাগে বামাবর্ত্তে মগুলাকারে সঞ্চ-রণ করত অভিমাত্র ভৈরব রবে 'পক্কা পক্কা ' শব্দ করিতেছে। অন্যান্য পক্ষি সকল পুনঃপুন ধনি করিতে করিতে রাজন্যগণের ধংস স্থান। করত ধঙ্গাগ্রে আদিয়া পড়িতেছে। ছুরস্ত দন্তী সকল কম্পিত কলেবর ও চিন্তা যুক্ত হইয়া মল মূত্র পরি-ত্যাগ করিতেছে, এবং অশ্ব হস্তী দীনভাবাপন্ন ও चर्माक रहेरछह। हि ভারত। তুমি এই সমস্ত বিষমতর ঘটনাপুঞ্জ আবণ করিলে; এক্ষণে যাহাতে লোকের সমুচ্ছেদ না হয়, তাহাতে যে ৰূপ বিধান করা উচিত বোধ হয়, তাহার অমুষ্ঠান কর।

देवभण्णात्रन कहित्तन, धृष्ठतांड्रे शिष्ठः व्यात त्म-त्वत अहे वाका श्रवन कतिता छेखन्न कतित्तन, मञ्चिष्ठि त्व, नतकत हहेत्व, हेहा अवभाहे तिव निर्वेश वित्रिष्ठ হইবে। যাহা হউক, রাজন্যগণ বদি ক্ষক্রির ধর্মাফুসারে যুদ্ধ করিরা নিহত হন, তবে বীর-লভ্য বর্গ
লোক প্রাপ্ত হইরা নিরবছির সুথ ভোগ করিতে
পারিবেন। পুরুষ প্রধান গণ মহা সমরে প্রাণ
পরিভ্যাগ করিয়া ইহ লোকে কীর্ত্তিও পর লোকে
দীর্ঘ কাল মহৎ সুথ লাভ করিবেন।

दिमण्यायन कहिर्लन, रह द्राक मस्त्र ! कवीश्वत ব্যাস দেবকে তাঁহার পুত্র ধৃতরাষ্ট্র এই ৰূপ কহিলে, ব্যাস পরম ধ্যানে চিত্ত নিবেশ করিলেন। তিনি मूर्ड काल िछ। कतिया शूनवीत करिएलन, ह त्रारकच ! कालरे क्राएउत श्रम विधान करतर्न वरः পুনব্বার উৎপত্তিরও প্রয়োজক হয়েন। ইহ লোকে কোন বস্তুই চিরস্থায়ী নহে, ইহাতে সংশয় নাই, उथानि कुक नाउव ७ बनाना स्क्रम् वाक्षव मिन्नरक ধর্ম্ম্য পথ প্রদর্শন করা ভোমার অভীব কর্ত্তব্য হই-তেছে; বেহেতু তুমিই তাহাদিগের প্রবৃত্তি নিরোধে সমর্থ। পণ্ডিতেরা জ্ঞাতিবধকে অতিশয় পহিত কর্ম বলিয়াছেন ; অতএব হে রাজন্! তুমি আমার অপ্রিয় কর্ম্মের অমুষ্ঠানে অমুমোদন করিও না। ছে নরপতে! সাক্ষাৎ কাল আসিয়া ভোমার পুক্র ৰূপে कम्बर्धारण कतिहारह्न। त्वरण हिश्मात क्षमश्मा नाहे; উহা কোন মতেই শুভ নহে। যে, স্বকীয় তমু স্বৰপ কুলধৰ্ম হনন করে, সেই কুলধৰ্মই ভাহাকে সংহার করে। তুমি সাধ্যতা সত্ত্বেও কাল হেতুই আপদ্যুত্তের ন্যার এই কুলের ও অপরাপর ক্ষজিয় বংশের সংহার নিমিত্তে উৎপথ গস্তা হইতেছ; রাক্য লোভ হেতুই ডোমার এই অনর্ধ উৎপন্ন হই-রাছে; ভোষার নিভান্তই ধর্ম লোপ হইতেছে; অতএব এখনও তুমি পুত্রদিগকে ধর্মপথ প্রদর্শন কর। হে ছুর্ম্বই যে রাজ্য নিমিত্তে ভোমাকে পাপাক্রান্ত হইতে হইবে, এতাদৃশ রাজ্যে ভোমার প্রয়োজন কি ? ভুমি যুশ, কীর্ত্তি ও ধর্মা রক্ষা কর, ভাহাতে স্বৰ্গ লাভ করিতে পারিবে। পাগুবেরা রাল্য লাভ করুক, কৌরবগণ শান্তি প্রাপ্ত হউক।

অছিকা নক্ষন ৰাগ্মী ধৃতরাই বাানের বাক্য শেষ
না হইতেই পুনরায় এই কথা কহিলেন, হে পিডঃ!
আপনি অভিজ্ঞান-সম্পন্ন আপনার বধার্য ভাষাভাষ বে ৰূপ বিদিত হইতেছে, আমারও তাহা
অবিদিত নাই, কিন্তু মনুষ্য, স্বার্থ বিষয়ে স্বভাৰতই
বিমুদ্ধ হইয়া থাকে; আমাকেও আপনি এক জন
সাধারণ মনুষ্য বলিয়া জানিবেন। হে অতুলপ্রভাব
মহর্ষি! আপনি ধীর, উপদেন্টা, এবং আমাদিগের
গতি; আমি আপনকার প্রসন্ধতা প্রার্থনা করিতেছি। আমার মতি অধর্ম করিতে চার না, পরস্ক
আমার সেই পুল্লেরা আমার বশহদ নহে। আপনি
ভরত বংশের কীর্তি, ধর্ম প্রবৃত্তি ও যশের নিদানভূত এবং কুরুপাণ্ডবদিগের মান্য পিতামহ।

ইহা শুনিয়া ব্যাদদেব কহিলেন, হে বিচিত্রবীর্য্যনন্দন মহারাজ! তোমার মনে বদি কোন সংশয়
থাকে ইচ্ছামুসারে ব্যক্ত কর, আমি ভাহা অপনোদন করি।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে ভগবন্! সংগ্রামে বিজয়ি-দিগের পক্ষে যে সমস্ত শুভ নিমিন্ত ঘটিয়া থাকে, তৎসমুদায় যথার্থ ৰূপে শ্রবণ করিতে আমার বাসনা হইতেছে।

তথন দৈপায়ন কহিতে লাগিলেন, আছ্ত পাবকের ধুম থাকে না, প্রভা নির্মাল হয়, দীপ্তি উর্জাকিক
ও লিখা দক্ষিণ-ভাগে সঞ্চারিত হইরা থাকে; এবং
আয়তে যে আছ্তি প্রদন্ত হয়, ভাহা চতুর্দিকে
পবিত্র গন্ধা বিস্তার করে; পণ্ডিতেরা ভাবি বিজয়ের লক্ষণ এই কপ বলিয়াছেন। ক্র্মান্থ ও মৃদক্ষের
শন্ধ গন্তীর অথচ বছ দুরে বিস্তৃত হয় এবং দিবাকর ও শন্ধর উভয়েই অভীব বিশুদ্ধ কিরণ প্রকাশ
করেন, পণ্ডিতেরা এই সকলকে ভাবি বিজয়ের
লক্ষণ কহিয়াছেন, এবং কি অবহিত, কি প্রহিত,
সকল বায়সেরই শুভ বনি প্রান্ত হইতে থাকে। যে
বায়সেরা পশ্চাৎভাগে থাকে, ভাহারা যোধগণকে
ত্রান্থিত করে, আর যাহারা অথ্যে অভিগমন করে,

তাহারা নিৰেধ করিতে থাকে। বে ছলে শকুনি, রাজহংস, শুক, বক ও শতপত্র বিহলেরা মাধুর্য্য क्रक ७७ मक कतिए बारक वर मिक् मिक् पित्रो मध्यत्र करत, तम ऋत्व **बाक्स ए**त्रा निष्यत्रे छा-হাকে যুজের জয় লক্ষণ বলিয়া কীর্ত্তন করিয়া থা-क्ता याशांक्रियत देना व्यवसात, वर्ष ७ ४का-ৰলি ৰারা অতিশর দীপ্তিশালী ও ছুর্নিরীক্ষ্য হয়, এবং বাহন গণ সূজাব্য ছেবা ব্লব করে, তাহারা শত্রু জর করিরা থাকে। হে ভারত! যাহাদিগের বোদ্ধারা উৎসাহ সহকারে হর্ষ ধনি করে এবং ৰাহাদিগের সন্তুও মাল্য স্লান হইয়া না যায়, তা-हात्रा ममत्र-माभत्र छेडीर्ग इहेशा थाटक। याध्याप পর সৈন্যে প্রবিষ্ট হইয়া 'মারিয়াছি মারিয়াছি ' এই ৰূপ যে অভীউ স্থচক বাক্য প্রয়োগ করে, পর সৈন্যে প্রবিষ্ট হইতে ইচ্ছা করিয়া 'ভোরা মরিলি মরিলি ' এইরূপ কৌশলক্রমে যে সকল বচন विनात्र करत, এवः चात्र 'यूक्त कतित्र ना मतिवि ' এবিষ্বধ অত্যে প্রতিবেধক বে সকল বাক্য প্রয়োগ করিতে থাকে, এই সকল বাক্য ভাবি বিজয়ের স্থুচক হয়। শব্দ, স্পর্শ, রূপ, রুস, গল্প, এ সকল অৰিক্লত হইলে শুভস্থচক হইয়া থাকে। যে সকল वाध्राण अञ्चलील रुत्र, जारामिरात्र र्वजाव नर्वमा প্রকাশিত হইতে থাকে। বায়ু, মেঘ ও পক্ষিগণ্ অমুকৃলগামী হয় এবং মেঘ ও ইন্দ্রধমু জলপ্লাবন করে। হে রাজন্! জয়শীলদিগের এই সমস্ত শুভ লকণ লক্ষিত হইয়া থাকে, আর পরাজয়ী মুমুর্-গণের পক্ষে ইহার সম্পূর্ণ বিপরীত হর।

নৈন্য অপথই হউক বা অধিকই হউক যোধ-গণের এক মাত্র হবই জয়ের লক্ষণ বলিয়া নিশ্চয় উক্ত হইয়ছে। নিরুৎসাহ প্রযুক্ত এক জন পলা-য়ন করিয়া স্থমহৎ সৈন্যকেও ছিল্ল ভিল্ল করিতে পারে। নৈনিক দিগকে ভগ্ন হইতে দেখিলে অতি শৌর্যাশালী বীর পুরুবেরাও ভল্ল দিয়া পলায়ন করে। সেই মহতী সেনা এক বার ছিল্ল ভিল্ল হইয়া পড়িলে, তথন প্রবলতর নদীবেগ অথবা ত্রাস-যুক্ত
মৃগযুথের ন্যায় তাহাদিগকে পুনরায় নির্ভ করা
ছংসাধ্য। রগ-কোবিদ পুরুষেরাও বিশৃষ্ধল মহাবৈন্য মধ্যে শৃষ্ধলা স্থাপন করিতে পারেন না,
প্রত্যুত, তাহাদিগকে পলায়মান দেখিয়া ভাঁহারা
আপনারাই নিরুৎসাহ হইয়া পড়েন। আবার,
তাহাদিগকে ভীত ওপ্রভয় দেখিয়া অবশিষ্ট সৈনিকদিগেরও অতিশয় ভয় হইতে থাকে; স্রতরাং
সমস্ত সেনাগণ ছিয় ভিয় হইয়া সহসা দিগ্ দিগন্তরে
পলায়ন করে। তথন শৌর্যাবস্ত সৈন্যাধ্যক্ষেরা
চতুরকিণী সেনায় সমবেত হইয়াও তাহাদিগকে
প্রতিনির্ভ করিতে অসমর্থ হন।

হে নরপতে! মেধাবী ব্যক্তি সততোত্থিত হইয়া नामामि উপার बाता कत्रमाटक यञ्ज कतिरवन। পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন, দামাদি উপায় দারা যে জয়, তাহাই শ্রেষ্ঠ; ভেদ খারা যে জয়, তাহা মধ্যম; আর যুদ্ধ ধারা যে জয় লব্ধ হয়, তাহা অতীব জঘন্য। ফলত সমর ব্যাপার অশেষ দোষের আকর, যে হেতু মমুষ্য ক্ষরই তাহার প্রধান ফল কথিত হইতেছে। পরস্পার পরস্পারকে অবগত, উৎসাহ-সম্পন্ন, স্ত্রীপুদ্রাদিতে অনাসক্ত চিন্ত, দৃঢ় অধ্যবসায়ী, विकास अकाम वीत्र श्रूकरवता विमान रेमना मनरक छ मनन कतिएक शादत । ज्याशिक, मृष् ज्यावनात्र जरु-কারে অর্থাৎ কোন ৰূপে পরাত্মুখ না হইলে পাঁচ, ছয় বা সাভ ব্যক্তিও বিজয় লাভে সমর্থ হয়। বিনতানন্দন স্থপর্ণ পরুড়, অসংখ্য স্বর্ণচুড় পক্ষীর একত্র সমবায় দৃটি করিলেও তাহাদিগকে পরাস্ত করিবার নিমিছে বছজনের সাহায্য প্রার্থনা করেন ना; चाउंधव महाजी त्मनांत्र वांह्ना हहेताहे या অৰশ্য জন্ন লাভ হর, এমত নহে। বিজন্নের কিছুই ব্যিরতা নাই; ভাহা দৈবের আয়ত্ত; বিজয়ী ব্যক্তি-রাও সংগ্রামে কর প্রাপ্ত হইরা থাকে গ

> জর পরাজর স্থচক নিমিত্ত কথনে তৃতীর জধ্যার সমাপ্ত। ৩।

বৈশন্পারন কহিলেন, ছে ভরতর্বভ! মহাত্মা ব্যাসদেব ধীসম্পন্ন ধৃতরাষ্ট্রকে এই ৰূপ কহিরা প্রস্থান করিলেন। ধৃতরাষ্ট্র তাঁহার সেই সমস্ত উপ-দেশ ৰাক্য ভাৰণ করিয়া চিস্তাপরায়ণ হইলেন। ভিনি মুহুর্ভ কাল চিন্তা করিরা মুক্তমু্ছ নিশাস পরি-ত্যাগ পূর্বক প্রশংসিতাত্মা সঞ্জয়কে ক্সিজ্ঞাসিলেন, হে সঞ্জঃ যথন এই সকল সমরপ্রিয় শৌর্যাশালী মহীপাল ক্ষদ্রের গণ ঐশ্বর্য্যের অভিলাষী হইয়া পৃথিবীর নিমিত্তে বছতর শস্ত্রনিকর সহকারে পর-স্পার পরস্পারকে আঘাত করিতে উদ্যত হইতে-ছেন, জীবিত নিরপেক্ষ হইয়া পরম্পর পরস্পরের প্রতি অসহিষ্ণু হইয়াছেন, সংহার দারা ক্লতান্ত ভবন সম্বর্জিত করিতে উদ্যত হইয়াছেন, তাহাতে নিরস্ত হইতেছেন না, তখন পৃথিবীর বছ প্রকার গুণ ধাকাই প্ৰতীত হইতেছে; অতএব তুমি আ-भात निकटि श्रिवीत छन विवतंन वर्गन कता এह কুৰুক্ষেত্ৰে বছ সহস্ৰ, বছ প্ৰযুত, বছ কোটি, বছ व्यर्कुन वीत श्रुक्रत्वत नमानम स्हेतारह, रेर्हे हा त्य त्य স্থান হইতে সমাগত হইয়াছেন, সেই সমস্ত দেশ ও নগর সমূহের প্রকৃত ৰূপ আকৃতি প্রকৃতি গুবণ করিতে আমার অভিলাষ হইতেছে। ভুমি সেই অমিত-তেজম্বী মহর্ষি ব্যাসদেবের প্রভাবে দিব্য বুদ্ধি-প্রদীপ জ্ঞান নেত্র প্রাপ্ত হইরাছ, অভএব কিছুই ভোমার অগোচর নাই।

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহাপ্রাজ্ঞ ভরতেন্ত্র ! আমি
আপনকাকে প্রণাম করিয়া পৃথিবীর গুণ সমস্ত যথা
মতি বর্ণন করি, আপনি শান্ত্র নয়নে তৎ সমূদায়
অবলোকন করুন। এই ভূমগুলে স্থাবর ও জলম,
এই ছিবিধজীব ; ভল্লধ্যে জলম-বোনি ভিনপ্রকার,
বেদজ, অগুল, ও লরায়ুল। যাবতীয় জলম লীবের
মধ্যে জয়ায়ুলই শ্রেষ্ঠ। জরায়ুলগণের মধ্যে মনুষ্য
ও নানারপ ধারী বজ্ঞ সাধন পশু সর্ব্ব শ্রেষ্ঠ। সেই
পশু চতুর্কশ প্রকার। ভল্লধ্যে সপ্ত আরণ্য ও সপ্ত

७ वानत, धरे लाक हि चारता लख र चातः क्रारे हाते. (तर्त, मधुबाट प्रथा, व्यवस्त ५ शर्म र, धारे नाफ हि आमा सकः हेरा नांध्यन् कवित्रारहन। दर तांचन्। वर्षे स्कूष्टमं विश्ववान्य व जात्रया शख त्रदार कथिए रहेबाट्ट, याशास्त्र तक नमत अधिक रहेबा श्रीहरू । श्रीमा १७ मध्य मञ्जूना अदर चात्रना भए मस्या निश्र ब्यार्थ। व्यापि मार्बेरे शत्रण्यत्र शत्रणात्त्रत्र ांहासिर्भन्न भक्ष क्षकान काणि ३ यथा, तृकः (अथ-थानि,) शुन्म (कून कामानि खद्र,) नहा (द्रकानिड আৰু শুভুচাদি) বল্পী (বৰ্ষ মাজ স্থানি কুলাওাদি) ও ছক্ নার ভূণ (বংশঞ্ছি)। স্থাবর লক্ষাত্মক বিক্লতিভূত এই উন বিংশতি প্রকার জীব, আর हेशामित्र अङ्गिष्ट्र भक्ष महाकुष, वहे प्रजूर्विश-শতি-নংখ্য কার্য্য কার্য্য সমস্তকে চজুর্বিঞ্গতি অক্ষ-व्राप्तक जिल्लाक विश्वाच उन्न क्ल शांत्रजी विनन्ना উদ্দিউ হইরাছে। হে ভরতঞ্চেষ্ঠ! যে ব্যক্তি জগতে এই সৰ্ব গুণান্বিতা পৰিত্ৰা পায়ত্ৰীকে প্ৰাকৃত ৰূপে জানিতে পারেন, তাঁহার আর বিনাশ হয় না। মহারাজ। ভূমি হইতে সক্ষের উৎপত্তি ও ভূমিতে নকলের লয় হইয়া পাকে, এবং ভূমিই মকাভূতের প্রতিষ্ঠা ও পরারণ ছইয়াছে। বে ব্যক্তি ভূমির पाधिकाती, चारत कन्माप्तक नम्छ विष्टे छाहात হত্তগত, এই নিমিতেই ভূপালগণ ভূমির অভি-नावी रुरेष्ठा शत्रन्यत्र शत्रन्भत्रत्क रूनन कतिए **छमाछ स्टेब्राट्स्न ।**

उत्रं वशाम गर्माश । ६,1

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে প্রমাণত সঞ্জর! বহুণিত সমন্ত্র বহুজ্বার এবং তত্ত্বতা মাবতীয় নদী, পর্বত, কানন, জনপদ প্র জন্যানা বে কিছু বন্ধ ভূমির আগ্রের অবস্থিতি করে, তৎসমূদারের নাম ও পরি-মাণ আমার দিকট অশেব বাপে কীর্তন কর। বঞ্জর ক্ষিকেন, সহারাজ! ক্রাতীক্ষ্ বন্ধ ব্সত্তে

भक्ष महाकृष्टकृत नश्यर चाट्यः, करे दशक्रु सनीवी গণ ৰগতীস্থ সমস্ত বস্তুকে পরস্পর ভূষ্য বলিয়া নির্দিট করিয়াছেব:৷ আকাশ,বারু,ডেক, জল ও ক্ষিতি, এই পঞ্চ মহাভূতের প্রত্যেক্তে ক্রয়ে শব্দ, न्यर्ग, बन, इन ७ गन्न, अहे चौठ वि श्रन साहर, वदर পর পর মহাভূতে ক্রমশ পূর্ব্ব মহাভূতের গুণও दिशामान चारह। धरे शक मराकृरजत मर्पा किंछि क्षधान ; त्यरक्षु उद्घरनते सन् अन अस, न्यर्ग, ৰূপ, রম ওগন্ধা, এই পাঁচ টি গুণই ক্ষিডিতে আছে विनिन्ना निर्देशन क्रिन्नार्ट्स । क्रुटन शक्त नाहे, व्यना চারিটি গুণ রহিয়াছে। তেকে শক্ষ্য, লার্শ ও রাণ, এই তিন টি গুণ, বায়ুতে শব্দ ও স্পর্দা, এই ছুই টি গুণ এবং আকাশে শব্দ মাত্র গুণ রহিছাছে। ছে রাজন্! এই অথিল ব্রন্ধাণ্ড মধ্যে দর্বে ভূতের আ-আরভূত পঞ্জ মহাভূতে উক্ত পঞ্ গুণ বিদ্যমান রহিয়াছে। ৰৎকালে ঐ পঞ্চ সহাভূতের ভূল্যতা হয়, তথন তৎসমন্ত মহাভূত পরকার অবলয়ন করিয়া থাকে না, অর্থাৎ তৎকালে যাবতীয় ভৌ-जिक शमार्थित लग्न रहेग्रा यात्र । यथन जारामिरशत्र পরস্পার বৈষম্য হয়, তথনই প্রাণীগণ দেহবিশিষ্ট हरेता चानिष्ठ रत, चर्षाय स्तर्भय वर्षमान बादक, हेरात जनाया रस सा । जासूश्रुकी जन्द्रस मकदनत बरम इत्र अवर आयूर्यों करनरे म्कलात एकि হইয়া থাকে ; অর্থ ভূমিতে জলের, জলে অগ্নির, অগ্নিতে বায়ুর ও বায়ুতে আকাশের লয়, এবং আ-কাশ হইতে বায়ুর, বায়ু হইতে অগ্নির, অগ্নি হইডে জলের, এবং জল হইতে ভূষির উৎপক্তি হয়। মহা-রাজ! কোন ভূতেরই পরিমাণ হইবার বিষয় নাই, मकनरे वाश्रीहरूत, मकनरे जेचहिक। প্राण्डिक প্রার্থেই পাঞ্জেডিক প্রকৃতি দেখিতে পাওয়া যার। মনুবোরা ভর্ক শক্তি পরিচালনা বারা এই পরিদৃশ্য बाक পঞ্- ভূতময় পদার্থপুঞ্জের প্রমাণ রুধ-নে উদ্যুক্ত হইয়া থাকেন, কিন্তু যে সকল ভাব চি-স্তার বিষয়ীভূত নহে, তাহা তর্ক দারা নিজ্ঞাণ করি-

তে উদ্দুক্ত হইবে না। যাহা প্রকৃতির অভিরিক্ত, ভাহাই অভিন্তনীয় ।

एक क्रम्बद्धन! स्वर्णन नाम अप् इक विर्णव, छनात्म विकाछ स्वर्णन बील जालनकात निकंछ क्षेप्पन कति, अवन कर्मन; छेरा शालाकात, ठरकत नाम महिए जवर नहीं, जलतालत जलानत, त्रय-मिए अर्थछ, विविधाकात नगत छ तमनीत जनलम ममूर महिए उप्तर्भ हिंदा कर ममूर लिए ममूर मिल कर्मन क्ष्मान क

लक्ष्म ज्याम नमाख। ८।

ধৃতরাষ্ট্র বলিলের, হে বৃদ্ধিমান্ সঞ্য ! তুমি
সর্কা বিষয়ের ষণাবিধানজনে তত্ত্তে, পরত্ত স্থান্দর্শন
ছীপের কথা বাহা সংক্ষেপ রূপে কহিলে, তাহা
বিস্তার জনে বল, এবং উহার শশস্থানে বাবতীর
ভূমি স্থান দৃষ্ট হইয়া থাকে, তাহার প্রমাণ কীর্তন
কর; পিপ্পলের বিষয় পরে কহিবে।

রাজা ধ্তরাই সঞ্চয়কে এই কপ জিজাসিলে,
সঞ্চর কহিতে আরম্ভ করিলেন, মহারাজ! পূর্ব্ব
পশ্চিমে আরত পূর্ব্ব ও পশ্চিম সমুদ্র পর্যান্ত পরিব্যান্ত হিম্মনান্, হেমকুট, নগোন্তম নিষ্ধ, বৈদূর্য্যমর নীল, শশিস্ত্রিভ শেত ও সর্ব্বধান্তুপিনক্স শৃক্ষবান্, এই ছর টি বর্ষ-পর্বান্ত রহিয়াছে; এই সকল
গিরি সিদ্ধ চারণগণের পরিবেবিত। ইহাদিগের
পরস্পার অন্তর স্থান সহক্রে সহক্র বোজন পরিমিত।

নেই সকল স্থান পুণ্য-দেশ ও বর্ষ বলিয়া কীর্ভিভ হইরাছে। নানাজাতি প্রাণীগণ সর্বভোষ্ঠাবে সেই नकन साति बान कदिया बाटक। अरे छात्रछ वर्ष, रेशात छेउदा रियरण वर्ष ७वश रियकृत्वेत छेउदा হরিবর্ষ বলিরা কীর্ডিভ হইরা থাকে। হে মহা-**छात्र ! नील भितित्र मक्किर्ण ७ निवर्धत्र छेखरत्र পूर्व** পশ্চিমে আরত মাল্যবান্নামে শৈল আছে। সেই ৰাল্যবানের পরে গল্পমাদন পর্বভ। সেই मानावान् ७ शक्तमात्रत्व मर्था शानाकात्र कनक-পর্বত মেরু রহিরাছে। ঐ মেরু পর্বতের প্রভা তরুণাদিতা ও ধুমরহিত পাবকের ন্যার প্রদীপ্ত। হে মহীপতে! উহার উচ্চতা চতুরশীতি সহস্র বোজন এবং নিমে চতুরশীতি বোজন ভূমিগর্ডে নি-বিউ আছে, এবং উৰ্ছ, অধ ও পাৰ্স্থ প্ৰদেশে লোক নমত নমাতৃত রহিরাছে। হে বিভো! তাহার চতু-ৰ্দিকে ডন্ত্ৰাৰ, কেতুমাল, কৰ্মীপ-প্ৰধান ভারত বৰ্ষ ও রুতপুণ্য ব্যক্তিদিগের আবাস ভূমি উত্তর কুরু, **এই চারি টি, বীপ-নদৃশ স্থান আছে। স্থমুখ নামে** গরুড়-পুত্র বিহলম মেরু গিরিডে পক্ষি মাত্রকৈ স্থ-বর্ণময় দেখিয়া চিন্তা করিয়াছিল বে ' এই মেক্লগি-রিতে উত্তম সধ্যম অধ্য পক্ষিদিগের কোন ইতর বিশেষ নাই, অতএব আমি এছান পুরিত্যাগ করি।' মহারাজ! মহা জ্যোতিত্বান্ আদিত্য, চন্দ্রমা, নক্ষত্রগণ ও প্রবন সেই পর্যাতকে নিরম্ভর এছক্ষিণ পূর্বক গমন করিয়া থাকেন। দিব্য পুশা ও কল নকল तिहे পर्वट विषामान चाट्ह, बदः सूर्वनम् ए छ ভবন সকল জ্ঞাহাকে পরিবেউন করিয়া রহিয়াছে। হে রাজন্! ঐ পর্বতে দেব, গল্প্র, অহুর ও রা-ক্ষন গণ অব্দরাগ্রণের সহিত সর্বাদা ক্রীড়া করিয়া থাকেন। তথার জন্ম, রুক্ত ও হুরেশ্বর ইন্দ্র সমবেড रहेतां जात्मक-मिक्तिश्व विविध वास्त्रतं चतुर्वान क-द्भन । जूनूस, नात्रम, विश्वविद्य बदर रारा हुई ध-ভৃতি গল্পপণ তথার বাইরা অসরগণকে নানা-विध छि वाटका छव कत्रित्रा चीटकन, अवश वशासा

সম্বর্ধিগণ ও প্রকাপতি কশ্যপ, প্রতি পর্কাহে তথার প্রন করেন। হে মহীপতে! ঐ পর্কতের শি-श्रंत अरम्भ कवि-अभान रेमछाश्रंक रेमछाभरगत्र সহিত সর্বাদা জীড়া করিয়া থাকেন। এই সকল ব্লত্ন পৰ্ববৈ ও স্থাবৰ্ণ প্ৰভৃতি যে কিছু ব্লত্ন, ভৎসন্তই সেই সুমের সম্বীর। ভগৰান্ কুবের মের হইতেই সেই রত্নের চতুর্যাংশ উপট্রভাগ করিয়া থাকেন, এবং তাহার বোড়শাংশ মর্ত্যগণকে প্রদান করেন। মেরুর উদ্ভর পার্ছে সর্ব্ব কালোৎপন্ন কুম্বম সমূহে পরিবাপ্ত, শিলা-জাল-সমুত রমণীয় দিব্য কর্ণিকার-বন আছে। ভূতভাবন ভগৰান্ পশুপতি বরং দিব্য ভূতগণে পরিবৃত হইয়া উমা সহ তথায় বি-হার করেন। তিনি আপাদ-লম্মানা কর্ণিকারময়ী भागा थात्रण कतिया थात्कन এবং উদিত सूर्याजय-সদৃশ নেত্র-তার ছারা দীগুি পাইরা থাক্তেন। উত্ত-তপা সভ্যবাদী, ব্রভপরায়ণ সিদ্ধাণই তাঁহার দর্শন লাভ করিতে পান; ছুর্বৃত্ত লোকেরা তাঁহাকে দেখিতে পার না। হে নরনাথ! পুণ্যাত্মা দিগের পরিবেবিতা শুভদারিনী বিশব্দপা পুণ্যা ভাগীরণী গঙ্গা সেই মেরু গিরির শিধর হইতে ক্ষীর-সদৃশ শুজ ধারা ৰূপে বিনিঃস্থতা হইয়া প্রবল বেগে ভীবণ নির্ঘাত নিম্বন সহকারে শুভ চল্ল-ত্রদে প্রব্যানা হইতেছেন। গঙ্গাঘারাই সেই সাগর সদৃশ এদ উৎপন্ন হইরাছে। যথন গঙ্গা নিঃস্ডা হইয়া প্রবল বেগে প্রবয়না হন, তথন পর্বতে সমূহ কর্তৃক ছুর্ধার-ণীরা সেই পঞ্চাকে পিনাকধারী মহেশ্বর শত সহস্র ৰংসর মন্তকে ধারণ করিয়াছিলেনু।

হে মহীপাল! জব্ধণ্ডে মেরর পিশ্চিম পার্শ্বে কেতুমাল বীপে মহান্ দেশ আছে। তত্রত্য মমুব্য দিপের বর্ণ স্থবর্ণ সদৃশ; স্ত্রীগণ অপ্সরা তুল্য এবং ভাহাদিদের আরু দশ সহস্র বৎসর। সেবানে মানব সকল তথ্য কাঞ্চন তুল্য কান্তিমান্, নিত্য প্রফুল্ল-চিন্ত, অনামর ও শোক রহিত হইরা থাকে।

শুৰ্কাধিপতি কুবের অপ্যরা গণে পরিবৃত হইরা

त्राक्रमशर्भत महिल शक्षमामन मृद्ध आरमाम कतित्रा वीर्कन। शक्षमामरामत्र शार्ष मिर्टम जनामा रव मक्स मृद्ध शर्वाल विद्यामान आरह, ज्वाला गार्क मिर्शत शत्रमाञ्चत मश्चा विकासमा महत्य वर्षमत् । रह त्रा-जन्! वे द्यारम् सञ्चात्रा झकेष्ठिक, राज्यो छ महावन-शत्राकास ; ज्वीरमाक मावह छर्शनश्व-वर्गाला छ श्वित्रमर्गना।

নীল পর্বতের উত্তরে খেত বর্ষ, খেতের উত্তরে रेरुत्रगुक वर्ष, এवर ভारांत्र छेख्टत नाना चनशराह्छ এরাবত বর্ষ; সর্বোন্তর দিকে অবস্থিত উক্ত এরা-বত বৰ্ষ ও সৰ্বা দক্ষিণ দিকে অবস্থিত পূৰ্বোক্ত ভা-রত বর্ষ, এই ছুই বর্ষের আক্রতি ধমুকের আকার। হে মহারাজ! উক্ত খেত ও হৈরণ্যক, অপর ইলা-ৰুত বৰ্ষ এবং পূৰ্বেৰাক্ত ছব্লিবৰ্ষ ও হৈমৰত বৰ্ষ, **এই পাঁচ টি বর্ষ মধ্যত্বলবর্তী, পরস্ক ইলাইত বর্ষ** नक्ष वर्षित्र मधा ऋत्म विमामान त्रवित्राष्ट्र। अहे ভারত বর্ষ প্রভৃতি সপ্ত বর্ষে উত্তরোত্তর ক্রমে ধর্ম, काम, व्यर्थ, व्याद्वागा ७ शत्रमाञ्च शत्रिमादगत्र व्या-धिका चाह्य। दर जात्रज! अहे नक्न वर्ष धारी-গণ পরস্পার মিত্রভাবে সমন্বিত থাকে। মহা-রাজ! এই রূপে সমত পৃথিবী পর্বত শ্রেণীতে ৰাাপ্ত রহিয়াছে। হে রাজন্! কৈলাস নামক অতি মহান্বে হেমকুট গিরি, ভাহাতে কুবের গুছক-গণের সহিত আমোদ প্রমোদ করিয়া থাকেন। रिक्नारमत्र छेखरत्र रेमनोक भव्यं छ निक्रि हित्रधात्र শৃক বিশিক দিব্য স্থমহান্ মণিময় শৈল আছে। ভাহার পার্শে স্থবর্ণ ৰাজুকা বিশিষ্ট, রমণীয়, মহৎ, **७७** पिरा विम्छूनदावत विमामान त्रस्त्रिहा थे স্থানে রাজা ভগীরথ পঙ্গার সাক্ষাৎ পাইয়া বছ বংসর বাস করিয়াছিলেন। ঐ স্থানে মণিমর যুপ ও হির্থার চৈত্য সমস্ত বিদ্যমান রহিয়াছে। এবং মহা-বশা সহজ্ঞাক ইন্দ্র তথার বজা করিরা নিছি লাভ करत्रन। औ शास्त ज्ञान गर्स-लाक-अधे। डिग्र-ভেজা সনাতন ভূতপভিকে সমন্তাৎ পরিবেটিত

हरेबा छेलानना कृतिया थाएक। धे खारनर नद्र, नात्रात्रण, बक्ता, मञ्जू अवः खानू वित्राक्ष कतिया था-क्त, अत्र जिल्लामिनी निया शका जन्मान হইতে নিষ্কুল্ডা হইয়া প্রথমে ঐ স্থানেই প্রতিষ্ঠিতা क्रेब्रा वर्ष्वाक्याता, निवनी, शिवजा महत्रकी, क्यू-নদী, সীতা, গঙ্গা এবং সিন্ধু, এই সপ্ত নামে সপ্তধা বি-ভক্তা হন। বিধাতা এই অচিন্তনীয়া দিব্যসঙ্কাশা সপ্ত-विधा शका विषयक विधान कतिशास्त्र । यूश-श्रनस्त्र পর এই স্থানে ঋষি ও দেবগণ যজ্ঞের অমুষ্ঠান করেন। জন্মধ্যে সরস্বতী কোন কোন স্থানে দৃশ্যা ও कान कान चारन अपृणा रहेशा थारकन। এই पिया সপ্ত গঙ্গা ত্রিলোক বিখ্যাতা হইয়াছেন। হিমালয়ে রাক্ষসগণ, ছেমকুটে গুছক গণ ও নিষধ গিরিতে নাগ দর্পগণ বাদ করিয়া থাকেন। গোকর্ণ পর্বাত ভপর্যীদিগের স্থান এবং স্বেত পর্বত সমস্ত দেব ও অসুর গণের আবাস ভূমি হইরাছে। গল্পর্ব গণ নিষধ গিরিতে এবং ব্রহ্মরিরা নীল শৈলে নিত্য অব-चि कित्रन। १ महात्राकः। भूकवान् श्रवाज् দেবগণ বিচরণ করিয়া থাকেন। মহারাজ। বিভাগ क्राय थरे मश्च वर्ष कथिल हरेल। थरे ममस वर्ष, স্থাবর জঙ্গম সকল ভূতেরই আবোস ভূমি; তাহা-**क्तित क्रियो ७ माञ्च्यो वह्निया ममृद्धि (क्था याह-**তেছে, তাহার সংখ্যা করা অসাধ্য; কল্যাণাকা-क्कीता जोहारज धाका कतिया थोरकन। महात्राकः! অপেনি যে শশ স্থানের দিব্য আফুডির বিষয় জি-জ্ঞাদা করিয়াছিলেন, তাহা এই উক্ত হইল, এবং তাহার দক্ষিণ পাখে ভারত বর্ষ ও উত্তর পাখে ঐরাবত বর্ষ, এই ছুই টি বর্ষ যে আছে, ভাহাও ক্ষিত হইল। অপর নাগদীপ ওকাশাপ দ্বীপ ঐ শশ স্থানের কর্ণ স্বরূপ হইয়াছে। হে রাজন্! তামুপত্র সদৃশ-শিলা সংযুক্ত স্থানোভিত যে মলয় পব্বত, তাহা এই জবুৰীপের শশস্থানের দ্বিতীয় **भवत्रव मृश्वे हहेत्रा शोदक ।** .

वर्ष ज्यात्र म्यास्त्र ।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! তুমি মেরুর উত্তর ও পূর্বে পার্ম এবং মাল্যবান্ পর্বতের র্ভাক্ত অশেষ ৰূপে আমার নিকট কীর্তন কর।

मक्षत्र किंदियन, नीम भितित्र मिक्ति। अत्र ध्यक् গিরির উত্তর পার্শে সিদ্ধাণ নিষেবিত প্রিত্র উত্তর কুরু আছে। এ স্থানের রক্ষে সধুমর কল ও নিত্য নিভ্য পুষ্প ফল হইয়া ধীকে। পুষ্প সকল স্থগন্ধি ও क्ल मक्ल त्रमाल। (इ नद्रनाथ! थे ज्ञातनद्र कान কোন রক্ষে ইচ্ছামত বস্তু প্রাপ্ত হওয়া যায়। অপর, कौती नार्य कठक छोल दृक्ष चाह्ह, जारात्रा नर्यमा অমৃতোপম ক্ষীর ও ছয় প্রকার রস ক্ষরণ করিয়া ধাকে, এবং বস্ত্র উৎপন্ন করে। ঐ রুক্দের কল হইডে আভরণ সকলও উৎপন্ন হর। ঐ স্থানের সমস্ত ভূমি মণিময়ী ও তথায় স্থান স্থান কাঞ্চনের বালুকা সকল পতিত থাকে। ঐ স্থান, সমস্ত ঋতুতেই স্থথস্পর্শ এবং তথায় कथन कर्षम इस ना। मानदश्य (एव-लोक रहेर७ क्षराठ रहेशा उपाय क्या अहम करतन। তাঁহারা বিশুদ্ধ আভিজাত্য সম্পন্ন ও সাতিশর প্রিয়দর্শন হন। তথায় এক কালে যুগা মনুষ্য-কন্যা পুত্র জন্মে। জীগণ অপ্সরা সদৃশী হয়। তা-হারা পূর্ব্বাক্ত ক্ষীরীরক্ষের অমৃতোপম ক্ষীর পান कतिया बारक। यूथा मञ्चा-कना। भूक वथाकारन জন্ম গ্রহণ করিয়া সমান ব্রপে বর্জিত হয়। তাহারা जूना क्य, जूना थ्वन ७ जूना दिन मन्यन वदः हक-वाक महूम व्यवप्र-विक रहा। एर विख्या। खाराह्या রোগবিহীন ও সদানন্দ। মহারাক ! তত্তত্য লোক-সকল একাদশ সহস্র বৎসর জীবিত থাকে ও পর-স্পর পরস্পরকে সৌহার্দ্দ বশত পরিত্যাগ করে না। তীক্ষু তুও বিশিষ্ট মহাবল, ভারুও নামে পক্ষী গণ ঐ স্থানের মৃত ৰ্যক্তিদিগকে গ্রহণ করিয়া পর্বত श्रुहात প্রক্ষেপ করে। মহারাজ। উত্তর কুরুর विषय এই नংকেপে कहिनाम।

এক্ষণে মেরুর পূর্বাপাশ্ব যথাবৎ কীর্তন করি। হে প্রজানাথ! মেরুর পূর্বাপার্শ্বের ভক্রাশ্ব স্থান প্রধান; যে স্থানে ভদ্রশাল বন ও কালামু নামে মহাক্রম আছে। মহারাজ! সেই কালামু রক্ষ এক যোজন উচ্চ, নিত্য পুসা কলে সমন্বিত, শুভ কর ও নিন্ধ চারণমণের পরিষেবিত। ঐ স্থানের পুরুষ সকল মহাবলিষ্ঠ, তেজস্বান্ ও শ্বেত কলেবর। জ্রী-গণ ক্ষুদবর্ণা, স্থানন পূর্ব চন্দ্রের ন্যায় এবং অক চন্দ্র-সদৃশ, আনন পূর্ব চন্দ্রের ন্যায় এবং অক চন্দ্র-সদৃশ শীতল, এবং তাহারা নৃত্যগীত বিষয়ে নিপুণা হইয়া থাকে। হে ভরত নন্দন! তত্রত্য লোক দিগের পরমায়ু দশ সহত্র বৎসর; তাহারা কালাম্রের রস পান করিয়া চির কাল স্থিরষ্ঠাবন হইয়া কালাতিপাত করে।

নীলের দক্ষিণে ও নিষ্ধের উদ্ভরে স্থদর্শন নামে महान् अवृत्क चाटह। थे तृक चावहमान कान বর্ত্তমান রহিরাছে। উহা সিদ্ধচারণগণের সেবিত। थे পবিত বৃক্ষে नर्स काम कल लक्ष इस। এই अधू-দীপ সেই জন্ম রক্ষের নামেই চিরকাল বিখ্যাত হইয়া আদিতেছে। হে ভরত-নন্দন মনুদেশ্র! এ বৃক্ষ একাদশ শত যোজন উচ্চ হইয়া অন্তরীক্ষ স্পর্শ করিয়াছে। উহার রসভেদী কলের পরিণাহ-পরিমাণ দার্দ্ধ দ্বিদহস্র অরত্নি। সেই কল ভূমিতে পতমান হইরা মহা শব্দ করিরা থাকে এবং রক্ষত বর্ণ রস রাশি নিঃসারিত করে। সেই জমুকলের রস নদী হইয়া মেরু প্রদক্ষিণ করত উত্তর কুরুতে গমন করে। সেই ফল-রস পান করিলে আন্তি দূর হয়, পিপাদা থাকে না, এবং জরাতে আক্রান্ত হই-তে হয় না। ঐস্থানে উচ্জুল কান্তি, ইন্দ্রগোপ-সদৃশ ব্দাৰ্নদ নামে দেব ভূষণ কনক উৎপন্ন হয়। তত্ৰত্য মানব জাতির অঙ্গ-কান্তি তরুণ সূর্য্যের ন্যায় হই-त्रा थीटक ।

হে ভরত নক্ষন! মাল্যবান্ পর্ব্বতের শিথরে সম্বর্জক নামে কালামি বঙ্লি সর্ব্বদা দৃষ্ট হয়; এই পর্বতের পরিমাণ একাদশ সহস্র যোজন। এবং উহার পূর্ব্ব শৃক্ষে কুদ্র পর্বতে সকল পূর্ব্ব দিক্ পরিব্যাপ্ত হইরা রহিরাছে। তৎপ্রদেশে কাঞ্চনসঙ্কাশ কান্তিমান্ মানবগণ জন্ম গ্রহণ করে; উহারা
সকলেই ব্রহ্মলোক-চ্যুত ও ব্রহ্মবাদী এবং উর্বরেতা
হইরা থাকেন, ও কঠোর তপস্যাচরণ করেন। সেই
বট্ বন্টি সহস্র সংখ্য পুরুষ দিবাকরকে বেইন
করিরা অরুণের অগ্রে অগ্রে গমন করেন। উঁহোরা
বট্ বন্টি সহস্র বৎসর আদিত্য তাপে তাপিত হইরা পরে শশিমগুলে প্রবেশ করেন।

মাল্যবান্ গিরি-প্রভৃতি বর্ণনে সপ্তম অধ্যায় সমাপ্ত । ৭ ।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্জয়! সমস্ত বর্ষ, পর্বত ও পর্বত-বাসীদিগের নাম আমার নিকট বথাবৎ কীর্ত্তন কর।

সঞ্চয় কহিলেন, শ্বেত গিরির দক্ষিণে নিষধ গিরির উভরে রমণক নামে বর্ষ আছে। সেখানে যে
সকল মনুষ্য জন্মেন, তাঁহারা সকলেই বিশুদ্ধ-আভিজাত্য-সম্পন্ন, প্রিয়দর্শন ও নিঃশক্র হইয়া থাকেন।
ভাঁহারা নিত্য ছুইচিন্ত হইয়া একাদশ সহস্র পঞ্চ
শত বৎসর জীবিত থাকেন। নীল পর্বতের দক্ষিণ
ও নিষধ শৈলের উত্তরে হিরগ্নয় নামে বর্ষ আছে,
যেখানে হিরণুতী নদী রহিয়াছে। মহারাজ! ঐ
স্থানে স্থপ্রসিদ্ধা পতগোভন পক্ষিরাজ গরুড় অবস্থিতি করেন। হে রাজন্! তত্রত্য লোক সকল
যক্ষের অনুগত, প্রেয় দর্শন, মহা বলবান্, ধনশালী
ও প্রফুল্ল চিন্ত। উহারা সার্দ্ধ ছাদশ সহস্র বর্ষ জীবিত থাকেন।

হে মমুজাধিপ! শৃক্ষবান্ পর্বভের তিন টি বিচিত্র শৃক্ষ আছে। এক টি মণিময়, এক টি অন্তুত
স্থবর্ণময় এবং অপর একটি সর্ব্রর্জময় ও ভবন
সমুহে উপশোভিত। সেধানে স্বয়ংপ্রভা শাণ্ডিলী
দেবী নিত্য বৃষ্ঠি করিয়া থাকেন। শৃক্ষবান্ গিরির
উত্তরে সমুক্ত পর্যন্ত ঐরাবত নামে বর্ষ। উহার
সমিহিত ভাদৃশ মহিমান্থিত শৃক্ষবান্ পর্বাত থাকা-

তেই উহা আঠ হইরাছে। তথার হুর্যা উদাপ প্রদান করেন না, মানব গণ জরাগ্রন্ত হয় না; নক্ষত্রগণের সহিত চন্দ্রমা জ্যোতিঃ বরণ হইরা বেন চতুর্দিগে আরত হইরা থাকেন। সেথানে পজ-পলাশলোচন, পজবর্ণ, পজ-প্রভাবন্ত ও পজ দল-তুল্য হুগন্ধ যুক্ত মনুষ্য সকল উৎপন্ন হন। তাঁহারা সকলেই দেবতুল্য, ইউপস্থান্থিত, জনাহারোপজীবী, জিতেন্দ্রিয়, নিজ্পাপ ও দেব লোক চ্যুত। হে ভরত সভম! তাঁহারা ত্রয়োদশ সহস্র বৎসর আয়ুমান্ হইয়া জীবিত থাকেন।

হে জনাধিপ! সেই ৰূপ ক্ষীরোদসাগরের উন্তরে কনকময় শকটে প্রভু বৈকুঠ হরি বাস করেন। সেই যান অউচক্র সংযুক্ত, ভূত সমুহান্তিত, মনের ন্যায় দ্রুতগামী, অগ্নিবর্গ, মহাতেজঃসম্পন্ন এবং উৎকৃষ্ট স্থবর্গ সূত্রিত। সেই বিভু হরি সর্বাভূতের প্রভু । তাঁহাতেই জগৎ উপসংহৃত হয় এবং তাঁহা হইতেই জগৎ প্রকাশিত হইয়া থাকে। তিনিই কর্ত্তাও প্রবর্ত্তন। তিনিই পৃথিবী, জল, আকাশ, বায়ুও তেজঃস্বরূপ। তিনিই সর্বাভূতের যজ্ঞান, এবং ভ্রাশন তাঁহারই মুখ।

বৈশন্দায়ন কহিলেন, সঞ্চয় মহামনা নরপতি
রাজাধৃতরাষ্ট্রকে এইরপ কহিলে, ধৃতরাষ্ট্র পুত্রদিগের বিষয়ে ধ্যানে মনোনিবেশ করিলেন। সেই
মহাতেজন্ত্রী কিয়ৎ কাল চিন্তা করিয়া পুনর্বার
সঞ্চয়কে কহিলেন, হে স্থতনন্দন! কালই জগৎ
সমস্ত সংহার করেন, পুনর্বার স্থিও করেন; এই
সংসারে চিরস্থায়ী বস্তু কিছুই নহে, ইহাতে সংশার দাই। মর্বজ্ঞ নর নারায়ণই সর্বাভূতের সংশার কর্তা। দেবতারা তাঁহাকে কৈরুও এবং মন্ত্রবারা ভাঁহাকে প্রভূ বিষ্ণু বলিয়া কীর্ত্তন করেন।

রমণক-প্রভৃতি বর্ষ বর্ণনে অফম অধ্যার কমাপ্ত॥ ৮॥

थ्छत्राङ्क कश्टिलन, अहे या छात्रछ वर्ष, यादात

নিবিত্তে এই সমন্ত নৈন্য মুধ্য, মংপুত্ত মুর্য্যোধন
অভিমাত্র লুব্ধ ও পাঞ্চনদানেরা লোলুপ হইরাছে,
এবং আমার মনও ময় হইরাছে, ভাহার বংগর্থ বিবরণ ভূমি আমার নিকট বিস্তার ক্রনে কীর্ত্তন কর,
বেহেভু আমি ভোষাকে এভদিবরে বিজ্ঞ জানি।

ৰঞ্জ কহিলেন, মহারাজ! আমার বাক্য শ্রবণ করুন, পাজুনন্দনগণের ভারতবর্ষে লোভ নাই। ष्ट्रर्याधन, श्रवननम्पन भकूनि এवং अन्याना नाना कनপरमधन कि जिन्न गरे थरे कात्र जवर्स मुक रहे-য়াছেন। ইহাঁরা তল্লিমিত্ত পরস্পার পরস্পারের প্রতি ক্ষমা করিতেছেন না। হে ভরতনন্দন! এই ভারতবর্ষের বিবরণ আপনার নিকট কীর্ভন করি, ভাবণ করুন। এই ভারতবর্ষ ইন্দ্র দেবের প্রিয়। এবং বৈবস্বত মন্ত্ৰ, পৃথু, বৈণু, মহাত্মা ইক্ষুাকু, ষযা-তি, অম্বরীষ, মাহ্মাতা, নছ্ব, মুচুকুন্দ, শিবি, ঋষভ, ঐল, নৃগ, কুশিক, মহাত্মা গাধি, সোমক, রাজর্ষি দিলীপ, এই সকল রাজা ও অন্যান্য সমস্ত বলিষ্ঠ মহাত্মা ক্ষজ্রিয়গণেরও প্রিয় হইয়াছে। হে অরিন্দম! আপনি যে এই ভারতবর্ষের রুত্তান্ত আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, তাহা যথাতথ ক্রমে বলিতেছি, ভাবণ করুন। হে রাজন্! এই ভারত-वर्ष भरहता, भनात, महा, ए जिमान, भ्राक्षवीन विकार ও পারিপাত্র, এই সপ্ত কুল-পর্বত আছে। এই সমস্ত পর্বতের সমীপে অপরিজ্ঞাত সহস্র সহস্র বিপুল, সারবান্, বিচিত্র সাল্লুমান্ পর্বত বিদ্যমান রহিয়াছে। ভদ্যতীতও নীচলোকাশ্রিত অন্যান্য অনেক কুদ্র কুদ্র পর্বাত পরিজ্ঞাত আছে। আর্য্যা, **मिक्ट ७ मिळाकों जि मकरन अहे मकन नही वादशा** করিয়া থাকে--বিপুলা গঙ্গা, সিন্ধু, সরস্বতী, গো-नावती, नर्माना, वाह्ना, भाजक, हक्कांशा, यमूना, দৃষদ্বতী, বিপাশা, বিপাপা, স্থূলবালুকা, বেত্রবতী, ক্ষবেগ্না, ইরাবতী, বিতস্তা, পল্লোফী, দেদ্রিকা, (बम चुणि, (बमनिता, जिमिया, हेकूला, क्रिम, करी-বিণী, চিত্ৰবহা, চিত্ৰসেনা, গোমতী, ধুতপ্ৰাপা,

চন্দ্রনা, কৌশিকী, ক্লড্যা, নিচিডা, লোহডারণী, রহস্যা, শতকুম্ভা, সরষ্টু, চর্ম্মণুতী, বেজবতী, হস্তি-त्माया, प्रिम्, भद्रावछी, त्ववृा, ভीमद्रशी, कारवद्री, চুলুকা, বাপী, শতবলী, নীবারা, মহিডা, স্থপ্ররোগা, পৰিত্রা, কুগুলা, রাজিনী, পুরমালিনী, পুর্বাভিরামা, बीता, कीमा, ওघवजी, शलामिनी, शाश्रहता, यटह-ह्मा, পाটनावडी, जिनकी, क्रांडी, श्रही, श्रवता, মেনা, হেমা, স্থতবতী, পুনাৰতী, অমুকা, সেব্যা, काशी, महानीता, व्यथ्या, कूमधाता, महाकाञ्चा, শিবা, বীরবতী, বস্তু, স্থবর্ণা, গৌরী, কিম্পুনা, সহি-রণুতী, বরা, বীরকরা, পঞ্চমী, রথচিত্রা, জ্যো-তিরখা, বিশ্বামিত্রা, কপিঞ্জলা, উপেন্দ্রা, বহুলা, कूबीबा, अच्वाहिनी, देवनमी, शिक्षना, जूकरविश, বিদিশা, ভামা, কপিলা, শলু, স্থবামা, বেদাশা, হরিশ্রাবা, মহাপগা, শীঘ্রা, পিচ্ছিলা, ভারদ্বাজী, लाना, ठक्कमा, छूर्तायखिननां, उक्तर्यसा, बृह-ছতী, যবকা, রোহী, জাবুনদী, স্থরুসা, দাসী, সা-মান্যা, বরণা, অসী, নীলা, ধৃতিকরী, পর্ণাসা, মা-नदी, द्रवडा, दमा, छामा, शेर मकल ও व्यनग्रा-ना व्यत्नक महानदी व्याटह—महानिद्रामशा, क्रका, मन्त्रना, मन्द्रवाहिनी, बन्तानी, महार्त्रोती, पूर्ता, চিত্রোপলা, চিত্ররথা, মঞ্জুলা, বাহিনী, মন্দা-किनी, देवज्रती, कांचा, प्रक्रियजी, व्यनका, त्य-সাহ্বরা, লোহিত্যা, করতোয়া, ব্যকাহ্বরা, কুমারী, श्रविक्ना, मादिया, मन्माकिनी, स्र्भूगा ও नर्का গলা, ইহারা সকলে জগতের মাতা স্বরূপ এবং महा कल मात्रिनी। अहे श्वकांत्र भना भना महत्य गरुख भेड भेड नहीं बनगरनत निक्रे प्रथकाणिड আছে। পরস্ত যেমন স্মরণ হইল, তদমুসারে এই नकल नहीं कीर्खन क्रिलाम।

মহারাজ! ইহার পর জনপদ সমূহের নাম বলি-ভেছি, আবণকরুন। কুরু পাঞ্চাল, শালু, মড্রজাঙ্গল, শুরদেন, পুলিন্দ, বোধ, মাল, মৎস্য, কুশন্ত, কৌশল্য, কুন্তি, কাশি, কোশল, চেদি, মৎস্য, কর্মা, ভোজ,

तिकू, नामार्ग, (यक्न, উৎक्म, भाक्षान, कामन, निक्शृष्ठं, यूशञ्चत्र, याः, क्लिक्, कामि, ज्लाद्रकामि, অঠর, দশার্ণ কুকুর, অবস্তি, কুন্ডি, অপরকুন্তি, গো-মন্ত, মল্লক, পাণ্ড্য, বিদর্ভ, অমূপবাহিক, অশ্বক, পাংশুরাষ্ট্র, গোপরাষ্ট্র, করীতি, অধিরাজ্য, মল-রাষ্ট্র, কেরল, বারবাশ্য, আপবাহ, বক্র, বক্রাতি, भंक, विराम्ह, मर्श्वास, खक्क, मलग्न, विषय, जाक, वक्र, किन, यक्तामा, यज्ञ, स्टान, धड़ान, याहिय, শশিক, বাহ্নীক, বাটধান, আভীর, কালভোয়ক, অপরান্ত, পরান্ত, পঙ্কল, চর্মচগুক, অটবীশিধর, মেরুভূত, উপারুজ, অমুপার্ভ, স্থরাষ্ট্র, কেকয়, কুউ, मोर्ट्स, कक, मात्रुक्तिष्ठूरे, दङ्बञ्च त्वम, ब्बन्ध-র্বির্য্য, বহির্বির্য্য, অঙ্গমলদ, মালবাজ্জাট, মহাজুরুর, প্রার্বেয়, ভার্গব, পুঞ্, ভার্গ, কিরাত, যামুন, নি-यान, निषध, व्यानर्ड, निर्माठ, पूर्तन, পृতिभएना, কুম্ভল, কুশল, তীরগ্রহ, শূরসেন, ঈজিক, কন্যকাগণ, তিলভার, মদীর, মধুমন্ত, স্থকক্তুক, কাশ্মীর, দিকু, त्रोवीत्र, भाक्षात्र, पर्भक, अजीमात्र, উलुज, रेगवाल, বাহ্লিক, দর্জীচর, নব, দর্বর, বাতজ্ঞ, আমর্থ, উরগ, বাছবট্ট, স্থদামা, স্থমল্লিক, বন্ধু, করীবক, কুলিন্দ, উপত্যক, বানায়ু, দশ, পার্ম্ব, রোমা, কুশ-विम्छू, कम्ह, श्रांभानकम्ह, बाक्रन, कूक्रवर्गक, कि-द्रांछ, वर्षात्र, त्रिक्ष, देवरमङ्, छामुनिश्वक, ७५, स्निष्ट्, সৈরিন্ধু ও পার্বতীয়।

(ह जत्रज-नम्मन! हेहात शत पिक्रण पिनीय कन शप नकन धारण कड़म। ज्ञितिष्, क्ततन, श्राष्ठा, मृश्यिक, दनवानिक, कर्णिक, माहियक, दिकल्ला, मृश्यक, विक्ला, क्यून, क्यून, क्यून, नमकानन, क्यून, क्यून, कान्य, नत्र, नमक, कनक, क्यून, धान, क्यून, धान, मानद, नत्र, नमक, कनक, क्यून, धान, मानद, व्याप्त, मानद, व्याप्त, मानद, व्याप्त, मानद, व्याप्त, भानद, व्याप्त, क्यून, धानद, व्याप्त, क्यून, क्यून,

স্তমপ, স্থনর, ঋষিক, বিদর্ভ, কাক, ভঙ্গন ও পর-ভঙ্গন।

মহারাজ! অপর উত্তর দেশ সকলের কথা প্রবণ করন। ঘবন, কাষোজ, সরুঘহ, কুলপ্ব, হুন, পার-সিক, রমণ, চীন ও দশমালিক, এই সকল দেশে দারণ মেছে জাতি বাস করে এবং ক্ষপ্রিয়, বৈশ্য ও শুদ্র জাতির বসতি প্রদেশ, আভীর, দরদ, কা-শ্মীর, পশু, খাশীক, অন্তচার, পহলব, গিরিগ-হরের, আত্রেয়, ভরঘাজ, স্তনপোষিক, জোষক, কলিজ, কিরাত জাতি দিগের বাস প্রদেশ, তোমর, হন্যমান ও করভঞ্জক। হে ভারত! পূর্বে ও উত্তর দিকের এই সকল ও অন্যান্য দেশের বিবরণ আমি উদ্দেশ মাত্রে কহিলাম।

কামছ্ঘ৷ ধেমু স্বৰূপ এই সমস্ত ভূমি, গুণ ও বল অনুসারে সম্যক্ প্রকারে অনুষ্ঠিত হইলে ইহা হুইতে ধর্মা, অর্থ ও কাম দোহন করিতে পারে। ধর্মার্থ কোবিদ খুর রাজ গণ এতাদৃশ ভূমির নিমি-ন্তে উৎস্থক হইয়াছেন। সেই তরস্বী ক্ষজিয় গণ ধন-সম্পত্তি লোলুপ হইয়া যুদ্ধে প্রাণ ত্যাগ করি-তে উদ্যত হইতেছেন। ভূমিই দেব ও মান্ব-গণের কামনানুৰপ পরম গতি হইয়াছে। যে প্রকার কুকুরগণ পরস্পার পরস্পারের নিকট হইতে আমিষ লাভের নিমিত্তে ব্যাকুল হয়, ক্ষত্রিয়গণ বস্ত্বরা ভোগাভিলাবে সেই ৰূপ হইরাছেন। কেহ কামনার শেষ করিয়া ভৃত্তির পর্য্যাপ্তি লাভ করিতে পারে না, স্থতরাং কুরু পাগুবেরা সাম, ভেদ, দান, বা দণ্ড ছারা ভূমি পরিগ্রহ করিতে ৰত্বান্হইরাছেন। ভূমির প্রতি সম্কৃ দৃটি রা-থিলে, ভূমিই মাতা, পিতা, পুত্র, সকলের অবল-হন আকাশ ও বর্গ ব্রুপ হয়।

> ভারতবর্ষীয়নদী-প্রভৃতি কথনে নব্ম অধ্যায় সমাপ্ত ৷ ৯ ৷

শৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হেন্দ্রত সঞ্জর! হৈমবত বর্ধ,

হরিবর্ষ ও এই তারত বর্ষ বাসীদিসের আরু পরি-মাণ, বল; শুভ ও অশুভ এবং অনাগত, অতিক্রান্ত ও বর্তমান বিষয় সকল আমার নিকট তুমি সবি-স্তার কীর্ত্তন কর।

मक्षत्र कहिरलन, रह उद्राउछ ! এই ভারত বর্ষে সত্য, ত্রেতা, দ্বাপর, ও কলি, এই চারি যুগ প্রবৃত্ত হইরা থাকে। প্রথম সত্য, তদনন্তর ত্বেতা, পরে ছাপর, নর্ব শেষে কলিযুগ। হে রাজ সভম। মনু-ব্যের আয়ু:সংখ্যা সভ্য যুগে চভু:সহস্র বৎসর, ত্রে-তাযুগে ত্রিক্স বংসর এবং দাপরে দি সহস্র বৎসর; পর্ত্ত কলি যুগে পরমায়ুর সংখ্যা নিরূপিত নাই; ঐ যুগে মনুষ্য, গর্ৱে থাকিরাও মৃত হয় এবং জাত মাত্রও মৃত্যু গ্রাসে পতিত হইয়া থাকে। ক্লত যুগে মানব সকল মহাবল পরাক্রাস্ত, মহাসত্ত্ব, বীর্যাৰন্ত, প্রিরদর্শন ও প্রজ্ঞাগুণ সমন্বিত হন। ঠাঁ-হারা শত শত সহস্র সহস্র সন্তান প্রজনন করেন, এবং মহোৎসাহ-সম্পন্ন, মহাত্মা, ধার্মিক, সত্য-বাদী ও তপোধন মুনি হইরা থাকেন। ক্ষল্রিয় সকল প্রিয়-দর্শন, প্রশস্ত শরীর-বিশিষ্ট, মহাবীর্য্য, ধন্তু-র্দ্ধর, মুদ্ধ-কুশল ও শূরসন্তম হইয়া থাকেন। ত্রেতা যুগে সমুদার ক্ষজ্রিরই স্ব স্ব চক্রে আধিপত্য করত স্বাধীন থাকেন। দাপর যুগে সকল বর্ণই সর্বাদা मटशंष्मार, महावीर्या-मण्यन ७ शत्रण्यत्र वटेशवी रन। এবং কলিযুগে লোক সকল অপ্প ভেজ্মী, ক্রোধপরায়ণ, লুক ও মিধ্যাবাদী হইয়া থাকে। এবং তাহাদিগের ঈ্ষা, অভিমান, ক্রোধ, মারা, অসুরা, রাগ ও লোভ, এসকলের আবির্ডাব হয়। হে নরাধিপ ! এক্ষণে এই দ্বাপর যুগের অণ্প অব-শিষ্ট আছে। এই ভারতবর্ষ অপেক্ষা হৈমবত বর্ষে গুণের আধিক্য ও তাহার পর হরিবর্ষের তদ-পেক্ষাও গুণাধিক্য আছে।

ভারতবর্ষ প্রভৃতির বিবরণ কথনে জব্ধগুনির্দ্যাণ ও দশম অধ্যার সমাপ্ত ৷ ১০ ৷

-1010

ভূমিপর্বা।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে গবল্পণ-স্ত সম্যগ্দশী সঞ্চয়! তুমি জন্থতের বিবরণ যথাবে কীর্ত্তনি করিলে, এক্ষণে উহার বিস্তৃতি ও পরিমাণ যথার্থত আমার নিকট বাক্ত কর এবং সমুদ্রের পরিমাণ, শাক্ষীপ, কুশ্দীপ, শালালি দ্বীপ, কৌঞ্জ দ্বীপ, রাহ্ছ, চক্র ও স্থর্যোর বিষ্যু স্থ্রপত সম্যক্ রূপে কীর্তন কর।

সঞ্চয় কহিলেন, মহারাজ! বছসংখ্য দ্বীপ আছে,
যদ্বারা এই জগৎ বিস্তৃত হইয়াছে। তল্মধ্যে সপ্ত
দ্বীপ এবং চন্দ্র, সূর্য্য ও রাছর বিবরণ আমি কীর্ত্তন করি, শ্রবণ করুন। হে নরাধিপ! জমু পর্বত সম্পূর্ণ অকীদশ সহস্র ষট্ শত যোজন বিস্তৃত; ইহার দ্বিগুণ বিস্তৃত লবণ সমুদ্র। এ লবণ সমুদ্র নানা জন-পদে সমাকীর্ণ, মণি বিদ্রুম-সমুহে বিচিইত্রত, অনেক ধাতু চিত্রিত পর্বত দ্বারা উপশোভিত, সিদ্ধ চারণ-গণে সংকীর্ণ এবং গোলাকার।

হে কুরুনন্দন পৃথীনাথ! এই ক্ষণে শাক বাপের বিষয় যথানায়ে অনুরূপ কীর্ত্তন করি, আপনি আ-মার নিকট তাহা শ্রবণ করুন। শাক বীপ বিস্তারে জর্বীপ অপেক্ষা বিশুণ পরিমিত। সেই শাক বাপ কীরোদ সাগরে পরিবেটিত। তাহার বি-স্তৃতি-পরিমাণ শাক্ষীপ অপেক্ষা বিশুণ। ঐ শাক বীপে যে সকল পূণ্য দেশ বিদামান রহিয়াছে, তত্রতা লোক সকল অপ্পায়ু হয় না, সকলেই ক্ষমা-শীল ও তেজস্বী; স্থতরাং সেখানে ছর্ভিক্ষ হইবার সম্ভাবনা নাই। হে ভরতশ্রেষ্ঠ মহারাজ! শাক বীপের এই সংক্ষেপ বিবরণ আপনার নিকট যথা-বং কীর্ত্তন করিলাম, অপর আর কি কহিব, আজ্ঞা করুন।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে মহাপ্রাক্ত সঞ্জয়! তুমি শাক ছীপের বিবরণ সংক্ষেপে কহিলে, বিস্তার জনমে যথার্থ ৰূপ বল।

मक्षत्र कहित्तन, महाद्राख! थे भाक चौरश मणि

বিভূষিত রত্নাকর সপ্ত পব্বত ও সরিৎ সকল বিদ্যা মান আছে; তাহাদিগের নাম আমার নিকট শ্রবণ করুন, আপনি ঐসকল পর্বতের সমস্ত বিষয়ই অতীব গুণবৎ জানিবেন। প্রথম মেরু গিরি; উহা দেব, ঋষি ও গহার্বগণের আলয়। তৎপরে মলয় নামে পর্বত পূর্বে দিকে আয়ত হইয়া রহিয়া-**ছে। তাহা হইতে মেঘ উৎপন্ন হইয়া চতুর্কি**গে ব্যাপ্ত হয়। তাহার পরে জলধার নামে মহাগিরি। ইন্দ্র ঐ গিরি হইতে উৎকুট জল নিত্য নিতা গ্রহণ করেন, তৎপরে বর্ষা কালে বর্ষণ করেন। তাছার পরে রৈবতক নামে উচ্চ গিরি, যেখানে আকাশে রেবতী নক্ষত্র নিত্য প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে; পিতাম চ ব্রহ্মারই এই স্থটি চির কাল বিহিত আছে। চে রাজেন্দ্র উহরে উত্তরে শ্যাম নামে মহাগিরি। উহা নব মেঘ সদৃশ প্রভা-সম্পন্ন, উচ্চ, স্থুনদর শেচ ভান্বিত ও উজ্জুল-বিগ্রহ। ঐ পর্বতের শ্যাম বণ হেতু তত্ততা প্রজাগণ শ্যাম বর্ণ হইয়া থাকে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয় ! তুমি যাহা কহিলে, তাহাতে এই ক্ষণে আমার এই অতীব সংশয় হইল যে তত্ততা প্রজাগণ কি ৰূপে শ্যাম বর্ণ হয় ?

সঞ্জয় কাহলেন, হে কুরুনন্দন! সকল দ্বাপেই
গৌর, রুফও ততুভ্রের মিশ্র বর্ণ হইয়া থাকে, কিন্তু
এই গিরি হইতে শ্যাম বর্ণ মাত্র হইয়া থাকে, এই
নিমিন্তই এই গিরি শ্যাম গিরি বলিয়া কথিত হইয়াছে। তাহার পর মহোদয় তুর্গ শৈল; এবং কেলরী পর্বত। বায়ু কেশরমুক্ত হইয়া ঐ কেশরা
গিরি হইতে প্রবাত হয়। উক্ত এই সমস্ত পর্বতের
বিস্তার-পরিমাণ ক্রমশ উক্তরোক্তর দিশুণ। এই
সাত টি পর্বতের সাত টি বর্ষ মনীয়া গণ কহিয়াছেন। মেরু পর্বতের মহাকাশ, জলদ মলয় পর্বতের কুমুদোক্তর, মহাগিরি জলধার শৈলের স্তক্মার, রৈষত পর্বতের কৌমার, শ্যাম গিরির মণিকারন, কেশর শৈলের মৌদাকী এবং তুর্গ শৈলের
মহাপুরুষ বর্ষ কীর্ভিত হইয়াছে। হে কুরুনন্দন!

(महे भाक बीरभुत **मर्स्सा भाक नार्य महाज्य आह**ई ভাহার দীর্ঘতা ও বিস্তার অস্থীপস্ অস্-র্কের সমান। প্রজা গণ সেই রক্ষের উপাসনামূবর্তী। সেই শাক ছাপের সমস্ত রাষ্ট্রই পবিত্র। সেখানে শঙ্কর দেব, সকলের পূজ্যমান হয়েন এবং সিদ্ধা চারণ ও দেব গণ সেখানে গমন করিয়া থাকেন। 🕫 ভারত রাজ! দেখানে চভুবিবধ প্রজাই অতীব ধা-শ্মিক এবং সকল বর্ণই স্ব স্ব বর্ণানুষায়ি কর্মে নিরভ शास्क । उथाय होश्यंत्रिख (मश्रा यात्र ना ; श्रका भग জরমেতাবিবজিতও দীর্ঘায়ু চইয়া প্রার্ট্কালীন নদীর ন্যায় বর্দ্ধিত হইতে থাকে এবং পুণ্যজ্ঞলা নদী সকল বিদ্যমনে আছে; গঙ্গা বছধা হইরা গমন করিয়াছেন, এবং মহানদী স্থকুমারী, কুমা-রা, শীতা, শাবেণিকা, মণিজলা, বংকু ও বর্জনিকা, এই সকল ও অন্যান্য লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ পুণ্যতোয়া নদী আছে। (प्रदेशक डेन्स् ये मकत नेपी इरेट कत গ্রহণ-পূব্দক বর্ষণ করিয়া থাকেন। ঐ সকল নদীর নাম ও পরিমাণ সংখ্যা করা অশক্য। তৎ সমস্ত নদীই প্ৰধানা ও পুণাক্ষনিকা।

মহারাজ । এ শাক দ্বীপে মগ্ন, মশক, মানস ও
মন্দগ্ন, লোক-সমত এই পুণা দেশ চতুই আছে।
মগ দেশে স্ব কর্মা নিরত বছল ব্রাহ্মণ বসতি করিয়া
থাকেন। মশক দেশে সর্বাকামপ্রদ ধার্ম্মিক ক্ষান্তিয়
গণ অবস্থিতি করেন। মহারাজ ! মানস জনপদে
সর্বাভিলাষ-সম্পান, ধর্মার্থনিষ্ঠ, স্বধর্মোপজীবী শূর
বৈশ্যগণ নিবসতি করিয়া থাকেন, এবং মন্দগ রাষ্ট্রে
ধর্মানীল পৌরুষ-সম্পন্ন শুদ্রজাতি সর্বাদা নিবাস
করে। হে রাজেন্দ্র! সেই শাকদ্বীপে রাজা নাই,
দণ্ড নাই এবং দণ্ডার্হ ব্যক্তিও নাই; সমন্ত প্রজা স্ব
স্বর্ধান্তুসারেই পরস্পারকে রক্ষা করিয়া থাকে।
সেই মহাপ্রভাব-সম্পন্ন শাক্ষ্ দ্বীপের র্ক্তান্ত এই
প্রান্ত বলিতে পারা যায় এবং ইহাই শ্রোতব্য।
শাকদ্বীপ বর্ণনে একাদশ অধ্যান্ত সমাপ্ত ॥ ১১॥

সঞ্জর কহিলেন, মহারাজ ! উত্তর প্রদেশীয় দ্বীপ मकरनत कथा रा क्रम खन्ड रुरेशार्ट, जारा निर्देषन করিতেছি, অবণ করুন। ঘৃতসমুদ্র, দধিসমুদ্র ও সুরাসমুদ্র, ঐ সকল দ্বীপে সন্নিৰেশিত আছে; ঐ সকল দ্বীপে ধর্ম্মের আবির্ভব হেতৃ তৎপ্রদেশীয় সেই সকল সমুদ্রকে ধর্ম্মাগর বলা যায়। হে নরা-ধিপ ! সেই সমস্ত দীপের পরিমাণ পর পর ছিগুণ. এবং পর্বত সকল সেই গেই সমুদ্রে পরিবেটিভ রহিরাছে। মধ্যম দ্বীপে মনংশিলাধাত্মর মহান্ গৌর গিরি ও পশ্চিম দ্বীপে নারায়ণস্থ রুঞ্চপর্কত রহিয়াছে। সেথানে স্বয়ং কেশব প্রজাগণের স্বথ বিধানার্থে প্রক্ষাপতির উপাসনা করত দিবা রত্ন সকল রক্ষা করিয়া থাকেন। কুশ দ্বীপে জনপদের मर्था कूमस्वर्यत्, मात्रालक हीर्प मात्राल कृक्तक এবং ক্রৌঞ্জীপে রত্ন সমূহের আকর মহাকৌঞ্ গিরিকে চাভুকার্য প্রজা পূজা করিয়াথাকে। তে রাজেন্দ্র কুশ দীপে সর্ব্ব ধাতুময়, অতি মহান্, গোমস্ত নামে এক পর্বত আছে, তাহাতে শ্রীমান্ প্রভু নারায়ণ কমললোচন হরি, মোক্ষ বিশিষ্ট ব্যক্তি দিগের সহিত নিত্য সঙ্গত হইয়া সর্বদা ব্যস করেন। দ্বিতীয়, বিক্রম-নিচিত স্থলামা নামে ছুর্দ্ধর্য ছ্যাতিমান্ হেম পর্বতঃ তৃতীয়, কুমুদ গিরি; চতুর্থ भूष्प्रवान् नात्म रेमलः भक्षम कूरममञ्जूष्ठ हति গিরি নামে পর্বত আছে। এই ছয়টি প্রবত্ই প্রধান; তাহাদিগের পরস্পার অন্তর স্থান পর পর ক্রমে দ্বিগুণ। প্রথম ঔদ্ভিদ বর্ষ, দ্বিতীয় বেণুমগুল বর্ষ, তৃতীয় স্থারণ বর্ষ, চতুর্থ লম্বন বর্ষ, পঞ্চম ধৃতি-মং বর্ষ, ষষ্ঠ প্রভাকর বর্ষ এবং সপ্তম কাপিল বর্ষ, এই সাত টি বর্ষ-লম্ভক পর্যবত আছে। হে পৃথিবী-শ্বর! দেব, গল্পবি ও অন্যান্য প্রজা সকল এই সকল বর্ষে বিহার ও ক্রীড়া করিয়া থাকেন। ভত্রভ্য कनभग विष्णाञ्च रहा ना। (र नृष्णः त्रिश्राटन क्षिक জাতি ও দস্তারুত্তি লোক নাই। সকল লোকই প্রায় গৌর বর্ণ ও স্থকুমার হয়।

হে মমুজেশ্বর! অবশিষ্ট সমস্ত দ্বীপের বিষয় যে ৰূপ শ্ৰুত হওয়া গিয়াছে, এক্ষণে তাহা আপনি অব্যগ্ৰ চিত্তে প্ৰবণ কৰুন। ক্ৰৌঞ্চ দ্বীপে ক্ৰৌঞ্চ নামে মহাগিরি আছে; ভাহার পর বামনক, বামনের পর অক্সকারক, অক্সকারের পর পর্বতোত্তম মৈ-লাক ; মৈনাকের পর উৎক্ষ্ট্রু গোবিন্দ গিরি ; এবং গোবিন্দের পর নিবিন্দ নামে পর্বত আছে। ইহা দিগের পরস্পার দূরতা, পূর্ব্ব পূর্ব্ব অপেক্ষা পর পর গিরির দ্বিশুণ। এক্ষণে তত্ততা দেশ সকল কীর্ত্তন করি, তাহা অবণ করুন। ক্রৌঞ্চ গিরির সন্নিহিত কুশল দেশ, বামন গিরির সলিহিত মনেক্সেগ রাষ্ট্র, मतासूरभत भत छेक (मन, छेकरमरनत भत श्रावतक (मग, श्रावत **(मर**गंत शत श्राक्तातक (मग, श्राक्ता-तित शत भूनि एमा, अवश्भूनि एए एन अत मिक्का त्र গণ-সংকীৰ্ণ ছুন্তুভিস্বন জনপদ কথিত ইইয়া থাকে। তত্তত্য লোক সকল প্রায় গৌরবর্ণ হয়; মহারাজ ! এই সকল দেশে দেব গন্ধর্বে গণ বিহার করিয়া থাকেন। পুঞ্চর দ্বীপে পুঞ্চর নামে মণিরত্ববান্ পর্বত আছে; **সেখানে স্বয়ং প্রজাপতি দেব নিত্য বাস করিয়া** থাকেন। হে নরাধিপ! সমস্ত দেব ও মহর্ষিগণ নিতা নিতা মনোনুকূল বাক্যে তাঁহার পূজা করত উপাসনা করিয়া থাকেন। জম্বীপোৎপন্ন নানা-বিধ রত্ন সকল এই সমৃত্ত দ্বীপত্ত প্রজাদিগের ব্যব-इन इस । এই সমস্ত ছীপের প্রজাদিগের ব্রহ্মচর্য্য, সত্য, দম, আরোগ্য ও পরমায়ুর পরিমাণ, পূর্ব্ব পূর্ব্ব দ্বীপ হইতে ক্রমশ পর পর দ্বীপস্থ লোকের দ্বিগুণ দ্বিগুণ হইয়া থাকে। হে রাজন্। এই সমস্ভাবিপ यञ दिन्न चार्ह, तिहे मक्त दिन्दिक धकहे दिन विनाटि हरेदि, यिरह्जू भे ममस एएएम अकरे धर्मा দৃষ্ট হইতেছে। নিমন্তা প্রজাপতি স্বয়ং দণ্ড উদ্যত করিরা সর্বদা সেই সমস্ত দেশ রক্ষা করত অবস্থান করিতেছেন। তিনিই রাজা, তিনিই শিব, ভিনিই পিতা এবং তিনিই পিতামহ; তিনিই সচেতন অচেতন সমস্ত প্রজাকে পালন করিতেছেন। তাঁহা

হইতেই চিরকাল প্রস্তুত অন্ন স্বর্থ উপস্থিত চয়, প্রজা সকল ভাহা ভোজন করিয়া থাকে।

মহারাজ! তাহার পর সমা নামে চতুক্ষাণ লো-কালয় আছে; সেই স্থান ত্রয়ন্তিংশৎ মণ্ডল বিশিষ্ট। সেধানে লোক-প্রসিদ্ধ বামন, ঐরাবন্ড ও প্রভিন্ন-করটা-মুখ স্প্রতীক প্রভৃতি ঢারি দিগ্গজ আছে. তাহাদিগের পরিমাণ সংখ্যা করিতে উৎসাহ করিতে পারি না, যেহেতু সেই গজ-চতুক্টয়ের উর্দ্ধ, অধ ও পার্ম চিরকাল অপরিমিত। সেখানে বায়ু বিশ্রুলা রূপে নানা দিক্ হইতে বহন করে, সেই সকল দিগ্গজ কর্ষণকারী, পদ্ম সদৃশ, মহাপ্রভ স্থ স্থ গুতা ছারা সেই সকল প্রবাত বায়ুকে গ্রহণ করে, এবং তৎক্ষণাৎ পুনর্কার তাহাদিগকে শতধা করিয়া নিত্য নিত্য মোচন করে। বায়ু সকল নিত্য নিত্য সেই সকল দিগ্হন্তীর নিশ্বাসে মুচ্যমান হইয়া আগমন করিয়া থাকে, তাহাতেই প্রজাগণ জীবিত রহিয়াছে।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয় ! তুমি দ্বীপের বিষয় সাতিশয় বিস্তার ক্রমে কীর্ত্তন করিলে এবং তাহার সংস্থানও প্রদর্শন করিলে; এই ক্ষণে পূর্বেভি পরের বৃত্তান্ত বল।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! দ্বীপ সকলের র্ভান্ত উক্ত হইল, এই ক্ষণে চক্র, স্থ্যা ও প্রভাবনে রাজ্ গ্রহের র্ভান্ত যথার্থ ৰূপে কীর্ত্তন করি, শ্রহণ করুন। মহারাজ! শ্রুত হওয়া গিয়াছে, রাছ গ্রহ গোলাকার, তাহার ব্যাস-পরিমাণ দ্বাদশ সহত্র যোজন, এবং বিপুলতা প্রযুক্ত পরিধি দ্বিচত্বারিংশং সহত্র যোজন; ইহা পুরাণবেতা বুধ গণ কহিয়াছেন। মহাত্মা চক্রের ব্যাস একাদশ সহত্র যোজন, এবং পরিধি ত্রয়্ত্রিংশং সহত্র একোন যতি শত যোজন। পরম উদার শীত্রগামী স্থর্যার ব্যাস দশ সহত্র যোজন এবং পরিধি পঞ্চত্রিংশং সহত্র অক শত যোজন শুনিতে পাওয়া যায়। হে ভারত! ইহ সংসারে স্থ্র্যার এই পরিমাণ নির্দ্দিক হইয়াছে। সেই রাছ

গ্রহ বৃহৎ প্রযুক্ত চক্ত সূর্যাকে যথা কালে আচ্ছাদিত করিয়া থাকে; ইহা সংক্ষেপ ৰূপে কহিলাম। মহারাজ! আপনি এই সকল বিবরণ যাহা জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, তাহা শাস্ত্র দৃষ্টি ছারা যথামুৰূপ সমুদায় আপনার নিকট কহিলাম, এক্ষণে আপনি শাস্তভাব অবলয়ন করুন। হে কুরুনন্দন! এই জগৎ বিনির্মাণ বিষয়ে উদ্দেশামুসারে আমি কীর্ত্তন করিলাম, অতএব আপনি আপনার পুত্র মূর্যোধনের প্রতি আশাস্ত হউন।

হে ভরতেক্র! এই মনোমুগত ভূমিপর্বা কোন ক্ষজ্রিয় আবণ করিলে শ্রীমান্, অর্থসিদ্ধ এবং সাধু-গণের সম্মানিত হন এবং উাহার আয়ু, বল, কীর্ত্তিও তেজ বৃদ্ধিত হয়। যে কোন রাজা যতত্রত হইয়া পর্বেতে ইহা আবণ করেন, তাঁহার পিতৃ পিতামহ গণ প্রীত হন। এই ভারত বর্ষ, যেখানে আমরা বর্ত্তমান রহিয়াছি, এখান হইতে যে পুণ্য প্রবৃদ্ধ চইয়া থাকে, তৎ সমস্ত আপনি শ্রবণ করিয়াছেন।

উত্তর কুরু প্রভৃতি নিরপণে দাদশ অধ্যায়

ममाश्व । >२ ।

ভগবদ্গীতা প্রকরণ 🛭 🗢 🗈

বৈশন্দায়ন কহিলেন, হে ভারত! অনস্তর রাজা
থৃতরাই চিন্তায় মনোনিবেশ করিয়া আছেন, এই
সমরে ভৃত ভব্য ভবিষ্য বেস্তা প্রত্যক্ষদর্শী গবল্গণপুত্র বিদ্যান্ সঞ্চয় যুদ্ধক্ষেত্র হইতে তাঁহার নিকটে
সহসা দ্রুত গমনে আগমন-পূর্বাক ভারতগণের
পিতামহ ভীয়ের যুদ্ধে-নিপতন সংবাদ কহিলেন,
হে মহারাজ ভরতপ্রবর! আপনাকে নমন্ধার করি,
আমি সঞ্চয়; ভারত পিতামহ ভীয় হত হইয়াছেন। সকল যোদ্ধার প্রধান ও সর্বা ধন্তুর্দ্ধারীর
তেজঃস্বরূপ সেই কুরু পিতামহ অদ্য শর শ্রায়
শরন করিয়াছেন। আপনার পুত্র যাঁহার বলবীর্ষ্য
আশ্রের করিয়া দ্যুতক্রীড়া করিয়াছিলেন, সেই ভীয়
যুদ্ধে শিপ্তী-কর্ত্ব নিহত হইয়া শরান হইয়া-

ছেন। যে মহারথ কাশিপুরীতে নমবেত সমস্ত পৃথিবীপাল দিগকে এক রথেই জয় করিয়াছিলেন, এবং यिनि कामसभा द्वारमतः महिष व्यमञ्जयितिष সংগ্রাম করিরাছিলেন, এবং যাঁহাকে জামদগ্যারাম নিহত করিতে পারেন নাই, দেই ভীয় অদ্য শিখ-গ্রীর হল্তে নিহত হইয়াছেন। যিনি শৌর্য্যে মহেন্দ্র নদৃশ, স্থৈর্যো হিমালয় তুল্যা গান্তীর্য্যে সমুদ্রের ন্যায় এবং সহিষ্ণুভায় পৃথিবীর সমান ছিলেন, এবং যাঁহার শর দ্র<u>ণ্</u>থী স্বৰূপ, ধমুক বক্ত্ৰ-স্বৰূপ, এবং ধড়্গ জিহ্বা স্বৰূপ ছিল, সেই ছুরাসদ নরৰূপ সিংহ আপনকার পিতা ভীম পাঞ্চালরাজ-পুত্র কর্তৃক নিপাতিত হইয়াছেন। যে প্রকার গো গণ সিংহকে দেখিয়া বেপমান হয়, সেইৰূপ উদ্যত মহৎ পাণ্ডব-रिमना त्रग ऋत्म याँशास्क प्रतिश्रा ভरशाविश हरेशा কম্পামান হইয়াছিল; তিনি দশ দিবস আপনকার **দৈন্য রক্ষা পূর্ব্বক পাণ্ডব দৈন্য নিপাভ করি**য়া —অতি ছুম্কর কর্ম্ম করিরা অন্তগত আদিতোর ন্যায় অদ্য অন্তগত হইয়াছেন। যিনি ইন্দ্রের ন্যায় ক্ষোভরহিত হইয়া সহস্র সহস্র বাণ বর্ষণ করত দশ দিবসে দশ সহত্র যোজাকে যুক্তে নিপাতিভ করিয়াছেন, তিনি বাতরুগ্ন রুক্ষের ন্যায় নিহত হই-য়া অদ্য ধরাশায়ী হইয়াছেন। মহারাজ! সেই ভরতকুলতিলক ভীম এই ঘট়নার অধোগ্য হইয়াও আপনকারই ছুর্মন্ত্রণাতে তাঁহার এই ৰূপ ছুর্ঘ টনা रहेल।

ভীষ্মৃত্যু আবণে ত্রেরাদশ অধ্যার সমাপ্ত ॥ ১৩ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, হে সঞ্চয় ! আমার পিতা ইস্ত্র সদৃশ কুরু পিতামহ ভীমকে শিখণ্ডী কি প্র-কারে নিহত করিল ? তিনি কি প্রকারে রথ হইতে নিপতিত হইলেন? যিনি পিতার নিমিতে ব্রেক্ষচর্য্য অবলয়ন করিয়াছিলেন, সেই দেব কণ্প বলশালী ভীম ব্যতিরেকে আমাদিগের যোদ্ধা গণ কি ৰূপ

रुरेन ? तरे मराधास मराधमूर्वत मरावन मरा-मजु नद्राक्षकं निरुष्ठ रहेला, उৎकारन मरशकीय-গণের মন কি ৰূপ হইল ? সঞ্চর! সেই অবিচলিত-চিত্ত কুরুবীর পুরুষপ্রবরকে নিহত প্রবণ করিয়া আমার মন সাতিশয় ব্যধিত হইতেছে। সঞ্জঃ! তাঁহার যুদ্ধ-গমন কালে কোন্ কোন্ ব্যক্তিরা অনু-গামী, কোন্ কোন্ ব্যক্তির খ্রাপামী, কোন্ কোন্ ব্যক্তিরা সমভিব্যাহারী, কোন্ কোন্ ব্যক্তিরা নির্ভ এবং কোন্ কোন্ ব্যক্তিরা অমুবর্তী হইরাছিল? সৈন্য গণের প্রতি আক্রম-কারী ক্ষজিয়-ভোষ্ঠ, অচ্যুত দেই মহারধ-পুরুষের পৃষ্ঠ রক্ষা কোন্ কোন্ খুরগণ করিয়াছিল? স্থ্য-সদৃশ তেজস্বী শক্রঘাতী বে পুরুষ, স্থর্য-কর্তৃক তমে৷ বিনাশের ন্যায়, সংগ্রামে পর সৈন্য বিনাশ করিয়া পরপক্ষের ভয়েৎপাদন করত পাণ্ডু পুক্রদিগের বিপক্ষে অতি ভুষ্কর কর্মা করিয়াছিলেন, সেই সৈন্য প্রাস-কারী পুরুষকে কোন্ ব্যক্তিরা নিবারণ করিয়াছিল? হে সুঞ্জয়! বাণ বর্ষণ কারী সেই ক্রতী ছুরাধর্ষ শা-স্তমু-নন্দনকে পণ্ডেবেরা সমীপস্থ হইয়া কি প্রকারে यूटक निवातन कतिशाहित्वन ? याहात नत, मरहे। অৰপ; শ্রাশন, কৃতব্যাদান মুখ স্বৰপ; খড়্গ, জিহ্বা স্থৰূপ; এবং যিনি কখন পরাজিত হয়েন নাই; এতাদৃশ ভীষণ ৰূপ, যুদ্ধে নিপাতিত হই-বার অযোগ্য, লজ্জাশীল, মহাত্তুভাব, ভীষণ ৰূপ দেই অভিত পুরুষব্যাত্রকে কৃত্তী পুত্র কি প্রকারে যুদ্ধে নিপাজিভ করিলেন ? ষিনি প্রধান রথে অব-ন্থিত হইয়া শর সমূহ দারা শতাদিগের মন্তক সমূহ চন্নন করিতেছিলেন, এবং পাশুবদিগের র্হৎ দৈন্য क्त जः थाम मर्था रव উতাধना উতা শরবান্ উদাম-भीन पूर्वर शूब्रवरक क्षिया गर्स कनरे का-লাগ্নি ভুল্য বোধ করত সচেষ্ট থাকিত; তিনি দশ দিবস পর সৈন্য পরি-কর্ষণ-পূর্বক বিনাশ করিয়া —অতি ছুঃসাধ্য কার্য্য করিয়া আদিত্যের ন্যায় অস্তগত হইর।ছেন। যিনি যু**দ্ধস্বলেই**ক্সের ন্যায়

অক্ষয় শরকাল বর্ষণ করিয়া দশ দিনে অর্কুদ সংখ্যক যোজা নিপাত করিয়াছেন; তিনি অদ্য রণে নিহত হইয়া বাতরুয় মহীরুহের ন্যায় শয়ন করিয়া আ-ছেন! সেই ভরতকুল-চূড়ামণির পক্ষে এই অমু-চিত ঘটনা কেবল আমারই ছুর্মন্ত্রণা-হেডু হই-য়াছে।

সঞ্জর! সেই শান্তমু-পুত্র ভীমপরাক্রম ভীয়কে দেখিয়া সে হলে পাশুবসেনা কি প্রকারে প্রহার क्तिए नक्कम रहेन ? পार्थू-नम्हरनताहे वा कि প্রকারে ভীমের সহিত সংগ্রাম করিলেন? আ-চাৰ্য্য দ্ৰোণ জীবিত থাকিতেই বা ভীন্ন কি হেভু জয়ী হইলেন না? তথায় জোণ পুত্ৰ ও ক্লপ সন্নি-হিত থাকিতেই বা প্রহারক-প্রধান ভীম কি হেতু নিধন প্রাপ্ত হইলেন? দেবগণেরও ছুরাসদ সেই অতিরধ ভীমকে পাঞ্চাল্য শিধণ্ডী কি প্রকারে যুদ্ধে নিহত করিল ? যিনি সংগ্রামে মহাবল জাম-দ্যা রামের প্রতি দর্বদা স্পর্দা করিতেন, জাম-দ্যা রামও ঘাঁহাকে জয় করিতে পারেন নাই, সেই মহারথ-কুলেৎেপন্ন শক্ত সম পরাক্তমশালী বীর-পুরুষের সমরে পরাজয় বিবরণ আমার নিকট বর্ণন কর; যেহেতু তাহা ভাবণ না করিয়া আমি স্বাস্থ্য লাভ করিতে পারিতেছিনা। সঞ্গা মৎপক্ষীয় কোন্ মহাধন্ত্ররা সেই অটল বীরকে পরিত্যাগ कतिया यात्र नाहे? कान् वीद्यवाहे वा छूर्याप्यतत আদেশমতে ওঁহোকে পরিবেউন করিয়া ছিল? সঞ্চয়! যথন সমস্ত পাণ্ডবেরা শিখণ্ডীকে অগ্রে করিয়া ভীমকে আক্রম করিয়াছিল, তখন সমস্ত কুরু গণ তো সেই অটল বীরকে পরিত্যাগ করিয়া यात्र नारे ? वाहात भोकी चाव शर्कन चक्र १ वान मकल, कलिंक्यू ममूह; এবং ধনুকের শব্দ, বজুধনি; এতাদৃশ উন্নত মহামেঘ স্বৰূপ যে বীর, বজুবারী ইন্দ্রের দানরু দল বিনাশের ন্যায়, পাঞ্চাল ও স্থ্রুয় গণের সহিত পাণ্ডবপক্ষীয় মহারথীদিগকে বাণ বর্ষন করিয়া নিহত করিয়াছিলেন, এবং যিনি সমরে

অজত্র গমনশীল অক্র সমূহের ভরানক সাগর স্বৰূপ হ্ইয়াছিলেন; মে সংগরে বাণ সকল হিংস্ত জল জন্ত ও কার্মুক সকল তরক হইয়াছিল; এবং যাহাতে আগ্রান্থনে দ্বীপ ও তরণি ছিল না; যাহা গদা ও অদি স্বৰূপ মকরের আলয়; যাহার আবর্ত चन मकल; याहा शक शत ममाकूल, भगां उ च्रक्भ মৎস্য সংঘে পরিপূর্ণ, ছুরাসদ ও অক্ষোভ্য; এবং যাহার শব্দ শব্ধ ও ছুন্ছুভিধনি স্বৰূপ হইরাছিল; এবং যে সাগর বছল হয়, গজ, পদাতি ও রথ স্বৰূপ বাড়বানলে দগ্ধ হইতেছিল; সেই বীর শত্রু-হস্তা শক্রতপেন ভীশ্ব ৰূপ অস্ত্র সাগরকে, বেলা-ভূমির সমুক্ত নিরোধের ন্যায়, কোন্কোন্যো-श्वाता व्यवद्वाध कतिशाहिल? मक्षरः! यथेन व्यति-হস্তা ভীশ্ম ছুর্যোধনের হিত নিমিত্তে সমর কার্য্য করিয়াছিলেন, তথন কে কে তাঁহার অগ্রবন্তী হই-রাছিল ? সেই অমিত তেজন্বা ভীমের দক্ষিণ চক্র কোন্কোন্ব্যক্তি রকা করিয়াছিল? কোন্কোন্ ব্যক্তিরা দৃঢ় অধ্যবসায় সহকারে তাঁহার পৃষ্ঠরক্ষক इहेशा श्रधान वीत निगटक निवातन कतिशाहिल? কোন্কোন্ব্যক্তি ভাঁহার সন্নিহিত হইয়া অগ্ৰ-ভাগ রক্ষার নিমিতে বর্তমান ছিল? কোন্বী-রেরা দেই যুধ্যমান বীরের উত্তর চক্র রক্ষা করিয়া-ছিল ? কোন্সকল যোজ। তাঁহার বাম ঢকে থা-কিয়া স্ঞায়গণকে প্রহার করিয়াছিল? কাহারা তাঁ-হার অগ্রবন্তী সৈন্যের ছুরাক্রীম্য অগ্রভাগ রক্ষা করিয়াছিল? কাহারা ছুর্গম গতি স্বীকার করিয়া তাঁহার পাশ্বিকা করিয়াছিল ? এবং তাঁহাকে রক্ষা क्रिवात निमित्क कारात्राहे वा नमवात्र यूक्क व्यथान বীরদিগের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিরাছিল? যদি বীর গণ্ধ তাঁহাকে রক্ষা করিয়াছিল, এবং তিনিও তাহা-षिशक ब्रका कवित्राहित्वन, एत्व (मरे. नक्व वीव्र গণ কি হেভু যুদ্ধে বল-পূর্বক ছুর্জন্ন পাণ্ডবদিগের সৈন্য জন্ন করিতে পারিল না?

मक्षरः! পাওবেরা, সর্ব লোকেশ্বর পরমেন্ঠী ত্র-দার সদৃশ সেই ভীয়ের প্রতি কি প্রকারে প্রহার ক্রিতে সমর্থ হইল? যিনি আতারভূত দীপ স্বৰূপ ছিলেন, বাঁহার অবলম্বনে আশাসিত হইরা কুরু গণ শত্রুদিগের সহিত যুদ্ধ করেতেছিল, সেই নর-সিংহ ভীয় ৰূপ দ্বীপের নিমজ্জন বৃত্তান্ত ভুমি ব্যক্ত করিতেছ! মহাবল মণীয় পুত্র বাঁহার বল ৰীষ্য षाव्यय कतिया भाखनिमारक भगनाई करत नाई, তিনি কি প্রকারে শত্ত-কর্ত্ক নিহত হইলেন? পুরা কালে সমস্ত দেব গণ, দানব গণ-ছনন-কালীন যে যুদ্ধ-ছুৰ্মদ মহাত্ৰত মংপিতা ভীন্নকৈ সাহায্য নিমিত্তে অক্তেজ্জা করিয়াছিলেন, এবং পুদ্র-লক্ষণ-সম্পন্ন মহাবীষ্য যে ভীন্ন জন্ম গ্রহণ করিলে লোক-বিখ্যাত রাজা শাস্তমুর শোক, ছুঃখ, দৈন্য দ্রীভূত হইয়াছিল; সেই বিখ্যাত পরমাশ্রয় প্রাজ্ঞ স্বধর্মানিরত শুচি বেদবেদাঙ্গ-তত্ত্বজ্ঞ ভীমকে কি প্রকারে আমার নিকট তুমি হত বলিয়া ব্যক্ত করিতেছ! সঞ্জয়! সর্বাস্ত্র কুশল বিনয়ী শাস্ত দাস্ত সেই মহানুভৰ শান্তমুনন্দনকে নিহত আৰণ করিয়া আমি অবশিউ সমস্ত সৈন্যকেই নিহত মনে করি-তেছি। সঞ্জর! আমার বিবেচনায় হইতেছে, ধর্ম অপেকা অধর্ম বলবান্ ৰূপে পরিব্যাপ্ত হইয়া থাকে, যেহেতু পাওবেরা রৃদ্ধ গুরু হত্যা করিয়া রাজ্যভোগ অভিলাব করিতেছে। পূর্ব কালে সর্বাস্ত্রবেক্তার অগ্রগণ্য জামদগ্ম রাম অস্থার নি-মিজে যে ভীয়ের সহিত যুজে প্রবৃত হইয়া পরাজিত हरेशोहिलन, त्रहे नर्स-ध्यूक्त्र-श्रधान हेन्स नम ক্ষতী ভীমকে নিহত বলিয়া যে আমার নিকট কীর্ত্তন করিলে, ইহার পর ছুংখ আর কি আছে! যিনি বারংবার ক্ষজিরবৃন্দকে যুদ্ধে পরাজিত করি-রাছিলেন, বীর শত্রুহন্তা জামদ্য্য রাম যে মহাবুদ্ধি-মান্ ভীমকে হনন করিতে পারেন নাই, তিনি অদ্য শিষভীর হস্তে হত হইলেন, অতএব ক্রপদ-পুত্র णिथे थी य पूक्क-कूर्णम भहावीर्यावान् ज्थ-नक्तन

পরশুরাম হইতে তেজ, বল ও বীর্ষ্যে অধিক, তাহা-তে আর সংশয় নাই; যে শিশ্বতী, যুদ্ধ নিপুণ সর্বা-শান্তবিশারদ পরমাক্রবেস্তা শূর বীর ভরতবংশ-প্রবর ভীয়কে হনন করিল।

সঞ্ব! কোন্ বীরগণ শত্রযুদ্ধ-ক্ষেত্রে সেই শত্রু-ঘাতী বীরের সহবর্তী হইয়াছিল, এবং পাগুব-দিগের সহিত ভীলের যে অকার যুদ্ধ হইল, তাহা আমার নিকট কীর্ত্তন কর। মৎ পুত্র ছুর্য্যোধনের সেনা এক্ষণে হতবীরা—পতি পুক্ত বিহীনা যোষার ন্যায় হইয়াছে! মৎ পক্ষীয় তৎ সমস্ত দৈন্যই গো-পাল রহিত গো যূথের ন্যায় উদ্ভান্ত হইয়া পড়ি-য়াছে! মহারণে ঘাঁহার সর্বে লোক অপেকায় পরম পৌরুষ প্রকাশ পাইত, সেই মহা পুরুষ যখন রণশায়ী হইলেন, তথন তোমাদিগের মন কি ৰূপ হইয়াছিল ? সঞ্চয় ! মৎ পিতা মহাবীয়া সেই ধা-র্মিক বরকে অদ্য নিপাতিত করিয়া আমাদিগের জীবনে আর কি সামর্থ্য রহিল ! সঞ্চয় ! আমার বোধ হইতেছে, যে প্রকার, পার গমনোদ্যত ব্য-ক্তিরা অগাধ সলিলে নিমগ্ন নৌকা দেখিয়া কাতর হয়, সেই প্রকার, ভীন্নকে নিহত দেখিয়া আমার পুজেরা ছুংখে নিতান্ত শোকার্ত হইয়াছে! সঞ্জয়! আমার হৃদর নিশ্চয়ই পাষাণময়, যেহেতু সেই পুরুষসিংহকে নিহত শুনিয়া আমার হৃদয় বিদীর্ণ হইল না। যে পুরুষ সিংহেতে অপ্রমেয় অন্ত্র, মেধা ও नीजि विरामान ছिल, এবং যিনি শক্তর ছুর্ধষ ছিলেন, এতাদৃশ পুৰুষ যুদ্ধে কি ৰূপে নিহত হই-লেন ? কোন ব্যক্তি কি অন্ত্ৰ, কি শৌ্ৰ্য্য, কি ভপস্যা, কি মেধা, কি ধৈৰ্যা, কি ত্যাগ, কিছুতেই মৃত্যু হইতে মুক্ত হইতে পারে না, মহাবীর্য্য কালই নি-শ্যু সমুদায় লোকের তুরতিক্রমা, সেই কাল হেতুই সঞ্জয়! তুমি ভীষের বিনাশ বৃত্তান্ত ব্যক্ত করিলে। আমি পুত্র শোকের আশঙ্কার কাতর হইয়া মহৎ ছুৰে চিন্তা করত ভীম হইতে পরিত্রণে প্রত্যাশা क्रिज़ाছिलाम। मञ्जूजः यथन ছूर्यग्राधन जीजादक ভূতল পতিত আদিত্যের ন্যায় দেখিলেন, তখন कि ज्यत्वाचन क्रिट्वन ? मक्ष्य ! जामि च शक् कि পর পক্ষ রাজাদিগের প্রভ্যেক দৈন্য বিষয়ে বুদ্ধি দারা চিন্তা করিয়া কিছুই শেষ বুঝিতে পারিতেছি ना। अवि श्रेष अरे क्षम्प्रभारक कि निमाझन कति-রাই প্রদর্শন করিয়াছেন, যাহা অবলম্বন করিয়া পাওবেরা ভীন্নকে নিহত করিয়া রাজ্যাভিলাবী হইয়াছেন। আমরা যে দেই মহাব্রত ভীন্নকৈ নিহত করাইয়া রাজ্য ইচ্ছা করিতেছি, এবং পাগুবেরাও যে তাঁহাকে নিহত করিয়া রাজ্যাভিলাষ করিতে-ছেন, ইহাতে আমাদিগের অপরাধ হইতে পারে না, যেহেতু আমরা উভয় পক্ষই ক্ষত্রগুর্মের আ-শ্ৰিত। কৃচ্ছু জনক আপেদ্ উপস্থিত হইলে এই ৰূপ निष्ठृंत कार्या आर्याभरनंत्र कर्डवा, रारह्यू मक्त्रत প্রতি আক্রমণ, পরম শক্তি প্রকাশ ও উক্ত প্রকার নিষ্ঠুরতাচরণ সেই ক্ষত্রধর্মেই প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

সঞ্জয়! অপরাজিত লজ্জাশীল শান্তমু-নদ্দন পিতা মহাশর সৈন্য বিনাশ করিতেছিলেন, তাঁহাকে পাণ্ডবেরা কি প্রকারে নিবারিত করিলেন? কি ৰূপে সৈন্য সকল নিযুক্ত ও কি প্ৰকারে মহাত্ম-দিগের সহিত তাঁহার যুদ্ধ হইয়াছিল? এবং কি প্রকারে মৎ পিতা ভীয় মহাশয় শক্ত গণ কর্ত্তৃক নি-হত হইলেন ? ছুর্য্যোধন, কর্ণ, স্থবল-পুদ্র ধুর্ত্ত শকুনি ও ছুংশাসন, ইহাঁরা তিনি হত হইলে কি বলিয়া-ছিলেন ? যে সভার শর, শক্তি, গদা, খড়্গ তোমর প্রভৃতি অন্ত শস্ত্র সর্বলৈ অক্ষ; নর, বারণ ও বাজি-গণের শরীর সমূহ আস্তরণ এবং প্রাণ প্রদান ৰূপ ভয়ন্তর পণ হইয়াছিল, এতাদৃশ দ্যুত সভায় কোন্ কোন্ যুদ্ধ বিশারেদ দ্যুতক্রীড়ক অপপুর্দ্ধি নর-শ্রেষ্টেরা প্রবেশ করিয়া দ্যুত ক্রীড়া করিয়াছিল, তাহাতে ভীম ব্যতীত কাহারা লয়ী এবং কাহো-রাই বা পরাজিত, কুতলক ও নিপাতিত হইয়া-ছিল, এ সমস্ত আমার নিকট বর্ণন কর। সঞ্জয়! একণে দেই যুদ্ধ-শোভী দেবত্ত ভীম-কর্মা পিতা

ভীন্নকে নিহত গুনিরা আমার স্বার শক্তি নাই। श्रुत्वत विनाम जना महा त्यांकानन जामात जनः-कत्रत्य पान्त्र हरेत्राहिन, जूमि यन प्रजाता यह व्यक्ति केन्द्रीशिक कित्री मिरन। नर्वरनाक नचक বিখ্যাত ভীন্নকে মহাভার গ্রহণ করিয়া নিহত হইতে দেখিরা আমার পুত্রেরা শোকগ্রন্ত হইরাছে বোধ হইতেছে। সঞ্জয়! আমার ছুর্য্যোধন ক্রত সেই সমস্ত ছুংখের কথা আৰণ করিবার মানস হই-রাছে, অতএব দেখানে যে যে ঘটনা ও যাহা যাহা रुरेब्राहिन, ७९ ममस आमात निकृषे कीर्डन कत । तिहे नःशामद्रल मन बदनत तुक्ति प्राप्त प किছू অপনীত বা স্থনীত হইয়াছিল, তাহা আমার সকাশে কীর্ত্তন কর। সেই রণক্ষেত্রে জয়েছু ক্কতান্ত্র ভীন্ন তেজ-সহকারে যেৰূপ কার্য্য করিয়াছিলেন, এবং সেই যুদ্ধ কুরুপাগুবদিগের যেৰূপ সৈন্যের, रिय व्यक्ति, रियक्ति क्टिंग रिय नमरिय, रिय व्यक्ति হইয়াছিল ও সেই যুদ্ধে যাহা যাহা হইয়াছিল, তৎসমুদায় অশেষ ৰূপে বর্ণন কর।

চতুর্দেশ অধ্যায় সমাপ্ত । ১৪।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! আপেনি যে প্রশ্ন করি-লেন, ইহা, আপেনি বেমন যোগ্য, ততুপযুক্তই হইয়াছে; কিন্তু আপেনি ছুর্য্যোধনের প্রতি এই দোষ
আরোপ করিবেন না, বেহেতু যে মনুষ্য আপনার
ছুশ্চরিত হইতে অমঙ্গল প্রাপ্ত হন, তিনি সেই
আত্মরুত অপরাধে অন্যের প্রতি আশস্কা করিতে
যোগ্য হন না। মহারাজ!যে, মনুষ্যদিগের প্রতি
সমুদায় নিন্দিত কর্ম আচরণ করে, সেই নিন্দিতামুষ্ঠায়ী ব্যক্তি সর্বা লোকের বধ্য হয়। সরলস্থভারী ব্যক্তি সর্বা আমাত্যগণের সহিত, আপেনকার
প্রতীক্ষায় বছ কাল অপকার অনুভব করিয়াছেন,
এবং বনবানী হইয়া সঞ্চ করিয়াছেন, অতে এব তাঁহাদিগের প্রতি দোষারোপ করা উপযুক্ত হয় না।

মহারাজ! অশ্ব, হস্তী ও অমিত তেল্পী রাজা

দিপের বিষয় বাহা আমি প্রত্যক্ষ নয়ন পোচর করিবছে;

রাছি, এবং যোগবলেও যাহা যাহা দর্শন করিরাছি;

তৎ সমস্ত প্রবণ করুন, শোকে চিন্ড নিবেশ করিবেন না; ইহা নিশ্চরই পূর্বা হইতে দৈব নির্বাদ্ধ

হইরা রহিয়াছে। বাঁহার প্রসাদে আমি অমুন্তম দিব্য জ্ঞান লাভ করিয়াছি, যে মহাদ্ধার বর

দানে এই যুদ্ধ বিষরে আমার অভীক্রির বিষয়ে

দৃষ্টি, দূর হইতে প্রবণ, পরচিত্তের বিজ্ঞান, অভীত
ও অনাগত বিষয়ে অবগতি, শাস্ত্রোল্লভ্রনকারীদিগের উৎপত্তির কারণ-জ্ঞান, আকাশে শুভগতি
ও অন্তর শত্রের বহিত অসঙ্গ, এই সমস্ত লাভ হইয়াছে; আপনার পিতা সেই ধীমান্ পরাশর-নন্দনকে নমস্কার করিয়া আমি এই লোম হর্ষণ জনক
কুরু পাণ্ডবীয় পরমান্তুত বিচিত্র যুদ্ধ বৃত্তান্ত বিস্তার
ক্রমে বলিত্তৈছি, প্রবণ করুন।

महाद्वाल ! त्मरे नकन रेमना यथाविधारन कुरह রচনাক্রমে অবস্থিত ও স্বত্ন হইলে, ছুর্য্যোধন ছুঃ-শাসনকে আদেশ করিলেন, ছুঃশাসন! তুমি ভীগ্নকে রক্ষা করিবার নিমিছে রধ সকল শীভ্র যোজনা कत्र, अवश्र नीख नमूनाम नियानितान कत्र। जामि বছ বৎসরাবধি যে যুদ্ধার্থ সদৈন্য কুরু পাগুবদিগের সমাগম চিন্তা করিয়াছি, তাহা আমার নিকট এই উপস্থিত হইয়াছে। এই রণে ভীম্মের রক্ষা ব্যতীত অন্য কোন কাৰ্য্য প্ৰধান কাৰ্য্য বলিয়া বোধ হই-তেছে না, যেহেতু ইনি রক্ষিত হইলে, পাওব, সো-মক ও স্ঞায়গণকে সংহার করিতে পারিবেন। বিশুদ্ধাত্ম। ভীমু মহাশর কহিরাছেন, "আমি শি-খণ্ডীকে হনন করিব না, বেহেডু পূর্ব্ব হইতে শুনা-ষাইছেছে, শিখণ্ডী স্ত্ৰীব্যাতি, অতএব যুদ্ধে শিখণ্ডী আমার পরিত্যাক্ষা " অতএব আমার বিবেচনা হইতেছে, ভীয়কে বিশেষ ৰূপে ব্লহা করা কর্ত্তব্য, এবং মৎপক্ষীয় সকলে শিখণ্ডীর বধে যত্নবস্ত হউক। অপর, দর্বে শক্ত বিশারদ বীরগণ পূর্বে, পশ্চিম, দক্ষিণ ও উত্তর দিকে অবস্থিত হইয়া পিতামহকে

রক্ষা করন। মহাবদ নিংহও বহি অরক্যমাণ হয়,
তবে বৃকও তাহাকে হনন করিতে পারে, অতএব
ছঃশাসন! শৃগাল-কর্তৃক সিংহ হননের ন্যায়, বেন
শিখণ্ডী দিয়া তীমকে হনন করাইও না। যুদ্ধ হলে
অর্জুন শিখণ্ডীকে রক্ষা করিতেছেন এবং অর্জুনের
বাম চক্রে যুধামন্ত্রাও দক্ষিণ চক্রে উন্তমৌজা রক্ষক
হইয়াছেন, অতএব অর্জুন এতাদৃশ কপে রক্ষিত
হইয়া যে শিখণ্ডীকে রক্ষা করিতেছেন, বিশেষত
পিতামহ মহাশয় যাহাকে আঘাত করিবেন না,
এমত হলে শিখণ্ডী যে কপে পিতামহ মহাশয়কে
নিহত করিতে না পারে, তাহার উপায় বিধান কর।
পঞ্চদশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ২৫ ॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! তদনন্তর রজনী প্রভাত হইলে, মহীপালগণ 'যোজনা কর, যোজনা কর,' এইরপ মহাশব্দ করিতে লাগিলেন। এবং সিংহনাদ সদৃশ শত্ম ছুন্তুভি নির্ঘোষ, অশ্বগণের হেষা রব, রথ সকলের নেমি স্থন, গজগণের রুংহিত ধনি এবং গর্জ্জনকারি যোধগণের ক্ষেড়িত, আক্ষোটিত ও উৎ-कुछ तर्र मर्सव जूमूल श्रेश छेठिल। एर तार्जिल ! স্থর্যোদর সময়ে কুরু ও পাণ্ডব উত্তর পক্ষীর মহা-সৈন্য উত্থিত ও সকলেই অশেষ ৰূপে উদ্মুক্ত হইল। তৎপরে প্রকাশ হইলে আপনকার পুত্রগণের ও পাওবদিগের ছুরাধর্ষ অন্ত্র, শস্ত্র ও কবচ সকল এবং আপনকার ও পর পক্ষের শস্ত্রবস্ত মহান্ সৈন্য দল সমন্ত দৃষ্টিপথে আবির্জুত হইল। স্থবর্ণ বিভূবিত রথ ও নাগ সকল সবিছাৎ মেছের ন্যার প্রদীপ্ত দৃষ্ট হইতে লাগিল, এবং ভূরি ভূরি রথের সহিত সৈন্য मञ्रूर यन नगरत्रत्र नगात्र अजीत्रमान रहेरा पाकिन। তমধ্যে আপনকার পিতা পূর্ণ চন্দ্রের ন্যায় অতীব শোভা পাইতে ছিলেন। দেখিলাম, যোধগণ ধমু, ইবু, খড়ুগ, গদা, শক্তি, তোমর প্রভৃতি শুভ শুভ শত্রের দারা স্ব স্থানীক মধ্যে স্বস্থিত রহিরাছেন। হে নরনাধ। শত শত সহস্র সহস্র গল, পদাতি, রুধী

ও তুরক সকল যেন শত্রু বন্ধনার্যে লাল রূপে অব-স্থিত রহিরা**ছে। স্থকী**র ও পরপক্ষীর সমৃ**দ্রিত দীক্তি**-মান্ সহস্ৰ সহস্ৰ বিবিধাকার ধন্দ সকল শোভা পাই-তেছে। রাজগণের সহত্র সহত্র, ত্লন্ত পাবক সদৃশ, মণি চিত্রিত কাঞ্চনময় উজ্জ্বল ধল সকল, অমরা-ৰতীর শুভ্র ইব্রশ্বজের ন্যায়, দীপ্তি পাইতেছে। বন্ধ-সন্নাহ সেই সকল বীর গণ যুদ্ধাকাজ্ঞা করত তাহা নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। র্যভ-লোচন প্রধান প্রধান মানবেক্তগণ বন্ধী, তুণীর ধারী ও জ্যাঘাত-ত্রাণ-বন্ধ হইয়া উদ্যত বিচিত্র আয়ুধ ধারণ পূর্বক চমু মুখে অবস্থিত হইয়া দীপ্তি পাইতেছেন। স্কুবল-পুত্র শকুনি, শলা, জয়দ্রথ, অবস্তি-রাজ বিনদ ও অনুবিন্দ, কৈকেয়গণ, কাম্বোজাধিপতি স্থদক্ষিণ, কলিঙ্গাধিপতি শ্রুতায়ুধ, রাজা জয়ৎসেন, কোশল-পতি রহদ্বল ও সাত্মত কৃতবর্ম্মা, এই দশ-সংখ্য ভূরি-দক্ষিণ যাগশীল পরিঘ-বাছ পুরুষ-প্রবর খুর ভূপতি, প্রত্যেকে এক এক অক্ষোহিণীপতি হই-शांट्या। धरे मन कारक ও এতভিন্ন বহু সংখ্য নীতিকুশল মহারথ রাজা ও রাজপুত্রগণকে ছুর্যোা-ধনের বশবর্ত্তী হইয়া বর্ম্ম পরিধান-পূর্ব্বক স্বস্থ সৈন্য মধ্যে অবস্থান করিতে দেখিলাম। তাঁহারা সকলেই क्ष्मी ७ मत्नारत माना थाती रहेशा क्रकांकिन वक्कन-পূৰ্বক হৃষ্ট চিত্তে ছুৰ্য্যোধনাৰ্থে ব্ৰহ্ম লোক গমনে দীক্ষিত হইয়া সমৃদ্ধি-সম্পন্ন দশ অক্ষোহিণী বাহিনী পরিগ্রন্থ করত অবস্থিত রহিয়াছেন। তদ্ভিন্ন কৌরব मन ज्याकोहिनी जिनात ज्यावर्डी ७ वकामन मःशात পূরণীভূত হইয়াছে, এবং শান্তমু-পুক্ত ভীয় মহা-শর উহার প্রধান সেনাপতি হইরাছেন। মহা-রাক। সেই অক্ষয় পুরুষ ভীয়ের খেত বর্ণ উকীব, অশ্ব ও বৰ্ম দারা ভাঁহাকে উদিত চক্রের ন্যার ্দেখিতে লাগিলাম। বাহার হেমময় তালয়ক শোভা পাইতেছিল, সেই রক্ষতময় রথে অবস্থিত ভীন্নকে কৌরব ও পাওবেরা শুভ্র মেঘ মধ্যস্থিত সুর্যোর নাার অবলোকন করিতে লাগিলেন। পুরোবর্তী

য়ৃষ্টয়ায় প্রভৃতি মহাধমুর্জর মঞ্চয় ও পাওবর্গন ভীয়কে চমুমুখে অবহিত দেখিয়া কম্পিত হইতে লাগিলেন। যে প্রকার জ্ঞানাণ মহাসিংহকে দেখিয়া ক্র

য়ুল গণ উদ্বিয় হয়, তজ্রপ য়ুষ্টয়ায় প্রভৃতি সকলেই
পুনঃপুন উদ্বেগাবিই হইলেন। হে রাজন্! যেমন
আপনকার এই একাদশ দল প্রসম্পন্ন বাহিনী, প্রধান
প্রধান পুরুষ কর্তৃক রক্ষিত হইতেছিল, সেই রূপ পাওবদিগেরও সপ্ত দল সেনা প্রধান প্রধান পুরুষেরা
রক্ষা করিতেছিলেন। এই উভয় পক্ষের ছই দল
সৈন্য যেন উন্ধন্ত মকর সমূহে আবর্তিত ও মহাগ্রাহ
য়েদে সমাকৃল মুগান্ত-কালীন সাগর ঘ্রের ন্যায়
দৃষ্ট হইতে লাগিল। মহারাজ! কৌরবদিগের এতাদৃশ সৈন্য সমাবেশ পূর্বে কখন দৃষ্টি করি নাই
এবং প্রবণ্ড করি নাই।

বোড়শ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৬॥

সঞ্চয় কহিলেন, মহারাজ! ভগবান্ কৃষ্ণ ছৈপায়ন ব্যাস যে প্রকার কহিয়াছিলেন, যে দিবস রাজ গণ যুদ্ধার্থে সমবেত হইয়া আগমন করিলেন, সেই দিবস সেই রূপই হইল। যুদ্ধে মৃত ব্যক্তি দিগের দিব্য দেহ প্রাপণ জন্য চক্রমণ্ডল পিতৃলোকের সনি-হিত হইল। রাছ কেতুর দীপামান সপ্ত উপগ্রহ রূপ মহাগ্রহ আকাশে পতিত হইলেন। ভামুমান্ আ-দিভাকে যেন উদয় কালে খলন্তী শিখা সংযুক্ত ও বিধাভূত হইয়া উদিত হইতে দেখা যাইতে লাগিল। মাংস শোণিত ভোজী শৃগাল ও কাক সকল মৃতদেহ লাভের লালসায় প্রদীপ্ত চতুর্দিক্ হইতে শব্দ করি-তে থাকিল।

অরিশম কুরু পিতামহ র্জ তীয় ও ভরজাজনন্দন ক্রোণ ইহারা উভয়ে প্রতাহ প্রাতে
সংবত হইয়া পার্থদিগের নিমিত্তে, পার্থ-পুত্রদিগের
জয় হউক, এই কথা বলিতেন এবং আপনকার
নিমিতে যে প্রকার অঙ্গীকার করিয়াছিলেন, তদ্মু-

বারে যুক্ত করিতেন। আপনকার পিতা কর্মধর্ম বিশেষজ্ঞ দেবত্রত, সমুদার রাজাদিগকে আনাইয়া এই কথা কহিলেন, হে ক্ষজ্রিয়গণ! ভোমাদিগের নিমিত্তে এই মহৎ স্বর্গ দার অনার্ভ রহিয়াছে, এই দার দিয়া ইন্দ্র ও ব্রহ্ম লোকে গমন কর। পূর্ব্ব পূর্ব্ব শ্বাবিগণ ভোমারদিগের নিমিত্তে এই সনাতন পথ বিধান করিয়া গিয়াছেন। অতএব ভোমরা অবাএচিত্ত হইয়া আপনাকে যুক্ষে নিযোজিত কর। নাভাগ, যযাতি, মান্ধাতা, নহুষ ও নৃগ, এই সকল রাজা ঈদৃশ কর্ম্ম দারা সংসিদ্ধ হইয়া পরম ধাম লাভ করিয়াছেন। ক্ষজ্রিয়দিগের পীড়া দারা গৃহেতে যে মরণ, তাহা তাঁহাদিগের পক্ষে অধর্ম এবং যুদ্ধে যে নিধন প্রাপ্তি, তাহাই তাঁহাদিগের পক্ষে সনাতন ধর্ম।

ए उत्र अवत ! मही भाग गंग के जी जा महा जा अहै ৰূপ কহিলে, তাঁহারা উত্তম উত্তম রুখে আরো-হণ করত শোভমান হইয়া স্ব স্ব সৈন্যাভিমুখে গমন করিলেন। হে ভারত! বিকর্ত্তন-নন্দন কর্ণ স্বীয় অমাত্য ও বন্ধুগণের সহিত, ভীন্ন নিমিত্ত অস্ত্র শস্ত্র পরিত্যাগ-পূর্বক সমরে নির্ত্ত হইয়াছিলেন; স্থ-তরাং তিনি-বাতীত ভবৎ পক্ষীয় রাজ্গণ ও আপন-কার পুত্রগণ, সিংহনাদ দ্বারা দশ দিক্ নিনাদিত করিয়া স্ব স্ব দৈন্য মধ্যে আগমন করিলেন। ভাঁহা-দিগের সেই সকল সৈন্য শ্বেড ছত্র, পতাকা, ধজ, বারণ, বাজি, রথ ও পদাতি সমুহে শোভা পাইতে লাগিল। ভেরী, পণব, ছুল্ছুভি ও রথ নেমির শব্দে পৃথিবী আকুলিতা হইরা উঠিল। মহারথ গণ কাঞ্ন-মর অঙ্গদ, কেয়ূর ও কার্ম্মুক ছারা যেন অনল-পর্ব্ধ-ভের ন্যায় দীপ্তি পাইতে লাগিলেন। কুরু পিতামহ ভীয় পঞ্চ তারক সংযুক্ত মহাতাল ধক দারা শোভিত रुरेश कुरू-रिनाभूरथ रान विभन सूर्यात नाह खब-স্থিতি করিতেছিলেন। বে সকল ক্লাজ গণ আপন-কার পক্, তাহারা ভীবের জাদেশ ক্রমে বধা-স্থানে রহিলেন। গোবাসন দেশাবিপতি শৈব্য, পতা-

কাশ্বিভ রাজ যোগ্য গলরাজ দারা সেই সকল রাজার সহিত গমন করিলেন। পানবর্গ অপ্রথামা, বাঁহার রথ হল সিংহ-লাদুলাকারে বিচিত্রিত, তিনি সকল रिमरनात्र व्यवस्थि ७ मराष्ट्र रहेत्रा शमन कतिरामन। ক্রডায়ুর্য, চিত্রদেন, পুরুমিত্র, বিবিংশতি, শল্য, ভূরি-আৰা ও মহারথ বিকর্ণ এই সাত জন উত্তম বর্ম-পরিধারী মহাধমুর্দ্ধর, রথে আঁরোহণ-পূর্ব্বক ভীমের शूरतावर्की ज़वर अवश्वामा हेराँ पिरावत शूरतां गामी रहेटनन। रेटाँत पिरात अठि छेक अर्गमत मीपा-मान शक मकन উৎकृष्ट तथ मकनारक स्टामां जिल कत्र विवासमान इहेट नांशिन। आर्गार्था-अर्थान দ্রোণের ধজে কমগুলু ও ধনুকের আকৃতি-বিভূষিত স্বর্ণময় বেদির আরুতি শোভা পাইতে লাগিল। অনেক শত সহস্র সৈন্য পরিচালনকারি ছুর্যোধনের ধকে মণিময় নাগ বিরাজিত হইতে থাকিল। পৌরব, কলিঙ্গাধিপতি, কাম্বোজ রাজ স্থদক্ষিণ, ক্ষেমধন্বা ও मना এই कम्न खन द्ववी, ছूर्य्याधरनत व्यथवर्खी हरेगा थाकित्वन। क्रभागिया महार्ह त्रत्थ चात्राहग-भूकिक বুষভাকৃতি চিত্ৰিত ধজে শোভিত হইয়া মাগধ সেনা পরিচালনা করত তদগ্রভাগে গমন করিলেন। শার-দীয় নিবিড় মেঘ সদৃশ সেই প্রাচ্য দেশীয় অতি মহৎ দৈন্য দল অঙ্গপতি কৰ্ণ-পুত্ৰ ও মনস্বী ক্লপ কৰ্ভৃক व्रक्किত हरेट जाशिल। महायमा अवस्थ वदाह-চিছ্লিত রক্তময় প্রধান ধ্বে স্থানাভিত হইয়া সৈন্য প্রমুধে অবস্থিত হইলেন। ছুর্যোধন-বশবর্তী জয়-দ্রখের লক্ষ রথ, অফ সহস্র নাগ ও ছর অযুত অশ্ব ছিল। অনন্ত রথ নাগ বাজি সন্মূল বজিনী-মুখ সেই মহৎ দৈন্য দল, সিদ্ধুপতি রাজা জয়দ্রথ কর্তৃক রক্ষিত र्रेट नाशिन। ममल कनिन परानत अधिभिन्, কেতুমানের সহিত হটি সহস্র রথ ও অযুত নাগ লইয়া গমন করিলেন। তাঁহার পর্বত সদৃশ মহাগজ সকল যান্ত, ভোমর, তুণীর ও পভাকা সমূহ দারা শো-किछ रहेक्का द्वाठमान रहेएछ गामिन। कनिक्द्राज অভিকুলা মুখ্যেক, খেত ছত্ত, কণ্ঠাতরণ ও চামর

বাজন দারা শোভমান হইলেন। কেতুমান্ও বিচিত্র পরম অকুশ যুক্ত মাতকে আরোহণ-পূর্বক ক্ষেত্র-হিত স্থর্যের ন্যার সমরে সমাগম করিলেন। তেজং-প্রদীপ্ত রাজা ভগদত্ত প্রধান মাতকে অবস্থিত হইরা বজুধর ইন্দ্রের ন্যার গমন করিলেন। ভগদত্ত সদৃশ অবস্তি দেশীর বিদ্দ ও অমুবিন্দ, কেতুমানের অমু-ত্রত হইরা গলকজে অবস্থিতি পূর্বক সমর দাত্রা করিলেন। মহারাজ! জোণাচার্য্য, নূপতি শান্তমুপুত্র, আচার্য্য-পূত্র, বাজ্ঞীক ও কুপাচার্য্য ইহারা যে ৰূপ রথের সহিত সৈন্য বৃহহ রচনা করিলেন, ঐব্যুহের অক হন্তী গণ, মন্তক রাজ গণ ও পক্ষ অম্ব গণ হইল; স্ক্রতোমুখ সদৃশ দারুণ বৃহহ টি বেন হাস্য করত উৎপতিত হইতে খাকিল।

मक्षामा व्यक्तांत्र ममाखा २१।

मध्य किर्लन, महाताल! उपनस्त मृह्र्ड कान পরে যুযুৎস্থ যোধগণের তৃষ্ণ হৃদয়-কম্পন শব্দ শ্রুতি বিবরে প্রবিষ্ট হইতে লাগিল। শব্ধ ছুক্সুতি নির্ঘোষ, গজগণের বৃংহিত ও রথ সকলের নেমি ধনি দারা যেন বস্ক্ষরা বিদীর্ণ হইল। তথন হয় গণের হেষা রব ও যোধগণের গর্জন রবে ভূমগুল ও নভো-মণ্ডল পরিপূরিত হইল! আপনকার পুত্রগণের ও পাগুবদিগের দৈন্য সমূহ, পরস্পর সমাগমে প্রকম্পিত रुरेट नाभिन। त्मरे त्र**ा ऋता ऋर्ग-**विভূষিত রুধ সকল ও নাগ দল, সবিচ্যুৎ মেছের ন্যায় দৃষ্ট হইতে থাকিল। হে নরাধিপ! আপনকার পক্ষের কাঞ্চনা-ঙ্গদ বিভূষিত বহু বিধাকার ধ্রু সকল প্রজ্বলিত विक्रित नाम अमीख इरेट नामिन। ऋ शक ७ शत পক্ষের পভাকা সকল মহেন্দ্র ভবনের শুভ্র মহেন্দ্র-क्ल्यूत नाम्न नम्नन शान्त्र रहेरा शक्तिन, वरः अमी-গু সুষ্য সম প্রভ কাঞ্চন কবচ ছারা সন্তব্ধ বীরগণকে প্রদীপ্ত ভান্ধর তুল্য প্রভাযুক্ত রোধ হইতে লাগিল। মহারাজ! ব্যভ-লোচন, মহাধনুর্থর, বিচিতায়ুধ কার্কধারী, তলবভ কুরু বোধের গণ প্রভাকা ও

উদ্যত বিচিত্ৰ অন্তৰ শক্ত্ৰ ছারা স্থশোভিভ হুইরা দৈনামুখে লোভা পাইতে লাগিলেন। হে নরাধিপ! আপনকার পুত্র ছংশাসন, ছবিবহ, ছুর্মাুধ, ছুংসহ, বিরিংশতি, চিত্রসেন, মহারথ বিবর্ণ, ইহাঁরা এবং সম্ভাত্তত, পুরুমিত্র, কর, ভূরিপ্রবাং ও শল ইহাঁরাও ভীমের পৃষ্ঠরক্ষক হইলেন। বিংশতি সহস্র রথী हेर्हे। निरुप्त अञ्चर्यामी इटेल, এবং अजीवार, भूत-দেন, শিবি, বদাতি, শালু, মংসা, অষষ্ঠ, তৈগৰ্জ, কৈক্য়, সৌবীর, কিতৰ ও প্রাচ্য, এই পশ্চিম ও উত্তর দিকের দাদশ জনপদের খুর সমস্ত তমুত্যাগে ক্তোৎসাহ হইয়া মহৎ রথ বর্গ ছারা কুরু পিতামহ ভীমকে রক্ষা করিতে লাগিলেন। মগধাধিপতি, দশ সহস্র কুঞ্জর সৈন্য লইয়া সেই রথ-সৈন্যের অমুগামী रुरेलन। वाहिनी मर्पा विष्टें लक्क वाङ्कि तथ मध-लের চক্রক্ষক ও দন্তি দলের পাদ রক্ষক হইল। নথর ও প্রাস অন্ত্র যোধী অনেক শত সহত্র পদাতি, স্পদি, চর্মা ও ধন্ম হত্তে লইরা অগ্রভাগে গমন করিল। মহারাজ! আপনার পুত্তের একাদশ অক্ষোহিণী সৈনা, গঙ্গার অন্তরে যমুনার সংগতি হইলে যে ৰূপ দুষ্ট হয়, তদ্ধপ দৃষ্ট হইতে লাগিল।

रिमना वर्गतन व्यक्तीमम व्यक्षात्र ममाश्व ॥ ३৮ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চর! পাণ্ডু-নন্দন যুধিন্তির একাদশ অক্ষোহিণী সেনা ব্যুহিত দেখিরা স্বকীর অণপ সৈনা দারা কি প্রকারে প্রতি পক্ষে ব্যুহ রচনা করিলেন? যিনি মানুষ, দৈব, গান্ধর্ব ও আমুর বুহি জ্ঞাত ছিলেন, তাঁহার বিপক্ষে পাণ্ডু-পুত্র কি প্রকারে প্রতি বুাহ করিলেন?

সঞ্জয় কৃছিলেন, ধর্মান্থা ধর্মারাজ যুথিজির, ধার্তরাফ্রীয় সৈন্য বুহুছ রচনা দেখিয়াধনঞ্জয়কে কছিলেন,
আর্জুনা মহর্ষি রহস্পতির বচন হেডু অনেকেই জানেন, বে, অণ্প সৈনাকে সংহত করিয়া এবং বহু সৈনাকে ইচ্ছাস্থ্রুলারে বিভারিত করিয়া যুক্ত করাইবে;
জত্তব বহু সৈনোর সহিত অণ্প সৈনোর যুক্ত

স্চীমুখ নৈনাবৃহে রচনা করাই বিধের। । পর পক অংশকা আমাদিগের দৈন্য অত্থা, অত্থাৰ ভূমি মহর্ষি রহস্পতির বচনানুসারে বুাহ রচনা কর। অর্জুন ধর্মরাজের এই বাকা শুনিরা প্রভূতির করিলেন, হে রাজসম্ভম ! বজুপাণি ইন্দ্র যে বজুগি নামে অচল বূাহের বিধান করেন, আমি আপনকার নিমিত্তে সেই ছুর্জন্ম বঁজাখ্য বৃাহ রচনা করি। যিনি উদ্ধৃত বায়ু সদৃশ, সমরে শত্রু ছঃসহ এবং প্রহার-কের অগ্রগণা, সেই ভীমসেন আমাদিগের অগ্র-ভাগে থাকিয়া যুদ্ধ করিবেন। যুদ্ধোপায়-বিচক্ষণ সেই পুরুষ-সম্ভম সেনাপতি হইয়া রিপু সৈন্যের তেজ মর্দন করত আমাদিগের অগ্রে গমন করি-त्वन। त्य व्यकात त्रिःहत्क तिथिया कूछ पृश्रवृथ সংত্রস্ত হইয়া পলায়ন করে, সেই প্রকার ছুর্য্যোধন প্রভৃতি সমুদায় পার্থিবগণ তাঁহাকে দেখিয়া নির্ত্ত হইবে। যে ৰূপ দেবগণ দেবরাজ ইন্দ্রের আশ্রয় গ্রহণ করেন, সেই ৰূপ আমরা সকলে অকুভোভয়ে সেই প্রহারক প্রধান ভীমকে প্রাকার স্বৰূপ করিয়া আ-শ্রের করিব। লোকে এতাদৃশ পুরুষ কেছ বিদ্যমান নাই যে, অত্যুগ্র কর্মা পুরুষ প্রবর হকোদরকে কুদ দেখিতে সমর্থ হয়।

মহাবাছ ধনঞ্জয় কান্তন ইহা বলিয়া সেই ৰপ করিলেন, সমস্ত সৈন্যকে লইয়া আশু বুাহ রচনা করিয়া প্রয়ান করিলেন। কুরু সৈন্যকে চলিত দেখি-য়া পাগুবদিগের মহতী সেনা, পরিপূর্ণা সংস্করা ও মদদগতি ক্রমে চলিতা গলার ন্যায় দৃষ্ট হইতে লাগিল। তীশসেন, বীর্যাবান্ ধ্যুত্ময়, নকুল, সহ-দেব, রালা ধৃষ্টকেতু ও বিরাট সেই সকল সেনার দাগুণী হইলেন। পরস্ক বিরাট নৃপতি এক অকোন হিণী সৈন্যে পরির্ভ হইয়া জাতা ও পুরুষণের সহিত ভাহাদিগের পশ্চাম্বর্তী হইয়া পৃষ্ঠরক্ষক হইলেন। মহাতেলখী নকুল ও সহদেব ভাষতেনের তক্রকার প্রস্কৃত্ব ভাষিলেনের পৃষ্ঠ রক্ষক হইলেন।
নির পুরুষ্কের ভাষতেনের প্রক্রিক হইলেন। পাঞ্চাল রাজ-বন্দন মহারখ হৃত্যুত্ব, নৈনাগণের
মধ্যে শৃত্র রাজ-বন্দন প্রস্তুত্বপাণের সহিত, তাঁহাদিগের রক্ষক হইলেন। তৎ পশ্চাৎ শিখণ্ডী, অর্জুন
কর্ত্ক রক্ষিত ও সবস্থ হইয়া ভীয় বিনাশের নিবিত্তে
প্রসান করিতে লাগিলেন। মহাবল যুযুধান অর্জুনের পৃষ্ঠ রক্ষার সবস্থ রহিলেন। পাঞ্চালা যুধামন্ত্রা
ও উত্তমোলা এবং কৈকের গণ, ধৃক্টকেতু ও বীর্যাবান্
চেকিভান তাঁহার চক্র রক্ষা করিতে লাগিলেন।

মহারাজ! ঐ সময়ে বীভৎস্থ, রাজা যুধিষ্টিরকে
মহাবল ভীমসেনকে দেখাইয়া দিয়া কহিলেন, হে
জনাধিপ! এই ভীমসেন বজুসার ময় দৃঢ় গদা ধারণ
করিয়া মহাবেগে বিচরণ করিলে সমুদ্রও শোষণ
করিতে পারেন, এবং সেই এই ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র সকলও
অমাত্যগণের সহিত, উহাঁকে অবলোকন করত অবহান করিতেছে। হে ভারত! রণক্ষেক্রে পার্থ ঐ
কপ বলিতেছেন, তথন তাঁহাকে সমস্ত সৈনোরা তদমুকুল বাক্য ছারা পূজা করিলেন।

পরস্ক কুন্তীপুত্র রাজা যুধিষ্ঠির অনীকের মধ্য ভাগে চলিত পর্বত সদৃশ রহৎ রহৎ মত্ত কুঞ্জরগণে পরি-বারিত হইয়া অবস্থিত রহিলেন। মহা মনস্বী পরা-ক্রমশালী পাঞ্চালরাজ যজ্ঞসেন পাওবদিগের নি-মিত্তে এক অকোহিণী সেনায় পরিবারিত হইয়া বিরাটের পশ্চাৎ অনুগামী হইলেন। এই সকল রাজাদিগের রথে আদিত্য ও চক্র তুল্য আভা বি-শিষ্ট উত্তম কনক ভূষণে বিভূষিত নানাবিধ চিহ্নযুক্ত মহাধ্জ সকল শোভা পাইতেছিল। মহারথ ধৃই-ছান্ন ঐ সকল রাজাদিগের পশ্চাৎ তীগ উৎসারিত ৰবিবা পুত্ৰগণ ও ভ্ৰাতাদিগকে সঙ্গে লইয়া যুধি-তিরের রক্ষার প্রবৃত্ত হইলেন। অর্জুনের রথইজে এক মাত্র মহাকৃপি জাপনকারদিগের ও বিপক্ষদিগের বিপুল ধজ সকলকে অভিতৰ করিরা অবস্থিত রহি-লের। অনেক শত সহস্র পদাঁভি ভীননেনের রকা-(बं अति, अकि ७ कि बाती रहेता मध्यवकी रहेता। শৌষা-নাশার, পলিত কম, হেনমর কালে দীগামান,

পদসন্ধী, বর্ষণকারী মেঘ সমান, বর্ষ পদাত সদৃশ, মহার্ছ দশ সহত্র হুঙ্গী স্থালা যুখিন্তিরের পদাত অকু-বর্জী হইল। মহামুতার ছুরাঘর্ষ ভীমদেন পরিষ্থি তুল্য ভীষণ গদা প্রকর্ষণ করত মহাসৈন্যদিগকে প্রকর্ষণ করিতে লাগিলেন। সেই সমুদার যোজাদিগের, অর্কভুল্য ও তপন্ত পাবক সদৃশ ছুস্পেকণীয় সেই ভীমদেনকে সমীপে প্রতিবীক্ষণ করিতে সাধ্য হইল না। গাগুরিধন্বা অর্জুন সর্ব্যতোমুধ, শত্রু-তর রহিত, শরাসন কপ বিদ্যাৎ ধল বিশিক্ত বলু নামে এই ঘার বৃহহ রক্ষা করিতে লাগিলেন। পাগুরেরা আপনকার বাহিনী বৃহহের প্রতিপক্ষে এই বলু বৃহহ রচনা করিয়া অবস্থিত রহিলেন; পাগুরগণ কর্তৃক রক্ষিত ঐ বৃহহ মর্ত্য লোকে অক্রের হইল।

মহারাজ! প্রাতঃসন্ধ্যাকালে সৈন্যগণ বুছে রচনা ক্রমে অবস্থিত হইলে, বিনা মেখে বিচ্যুৎ ও জল বিন্দুর সহিত বায়ু প্রবাত হইতে লাগিল ও নীচ স্থল हरेट कहताकर्षण शृंखंक मर्ख मिरक वहन क्रिंडि থাকিল। এবং ঘোর অন্ধকারে জগৎ আচ্ছাদিত করত ধূলিপটলী উদ্ধৃত হইতে থাকিল। হে ভরত-বর! মহতী উক্কা প্রাজুখী হইয়া পতিত হইতে লাগিল এবং উদিত সূর্যাকে আহত করিয়া মহা শব্দ করত বিকীর্ণ হইতে থাকিল। মহারাক্স! সৈন্য সকল সজ্জীয়মান হইলে তথন সূ্য্য নিষ্পুত হইয়া উদিত হইলেন। পৃথিবী স শব্দে কম্পমানা এবং নিনাদ সহকারে বিশীর্ণা হইতে লাগিল। মহারাজ! তথন সকল দিকেই বহু সংখ্য নিৰ্ঘাত হইতে থা-কিল। এমন রজোরাশি প্রাত্মভূত হইল যে, কিছুই দৃষ্টিগোচর রহিল না। কিকিণী জাল মণ্ডিড, কাঞ্চন মাল্যায়র শোভিত, আদিত্য সম দীপামান, সপ-তাক, মহৎ ধল সকল সহসা পৰন কৰ্তৃক কম্পমান হওয়াতে, ভাল বনের ন্যায় সর্বত্ত বাণকণীভূত ধনি र्हेश छेठिन।

হে ভরত প্রধান! পুরুষ ব্যাত্ত পাওবের আপন-কার পুতের দৈন্য বৃহত্তর বিপক্তে দৈন্য বৃহত্তরচনা করিয়া এবং গদাপাণি ভীমদেনকে অথ্যে অবস্থিত দেখিয়া যুক্ষোৎসাহী হইয়া যেন আমাদিগের যোধ-গণের মক্ষা গ্রাস করত অবস্থিত রহিলেন।

ংপাণ্ডব সৈন্য ব্যুহ রচনা কথনে ঊনবিংশ । অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১৯॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! স্থানাদয় হইলে ভীমনেতবা অস্মৎ পক্ষ ও ভীম-নেতবা পাগুব পক্ষ এই
উত্তর পক্ষের কোন্ পক্ষ প্রথমে হুই হইয়া সমীপে
যুযুৎস্থ হইল ? চন্দ্র, স্থা ও বায়ু কাহাদিগের প্রতি
অরিই কর হইল ? কাহাদিগের প্রতি শ্বাপদ গণ
অশুভ শব্দ করিল ? এবং কোন্ যুবাদিগেরই বা
মুখবর্ণ প্রসয় ছিল, এই সমস্ত ভুমি আমার নিকট
যখাবৎ কীর্ভন কর।

मक्षत्र कहित्वन, रह नातन्तः! উভন্ন দৈন্যই ভুল্য ভাবে উপক্ৰান্ত, উভয় পক্ষই ব্যুহিত হইয়া হুফ্টৰপ, উভন্ন দৈন্য দলই বনরাজির শোভা ধারণ করিয়া অদ্ভুত ৰূপ, উভয়েই হন্তী, রধ ও অশ্বে পরিপূর্ণ, উভয় পক্ষ দৈন্যই বৃহৎ ও ভীষণাক্ষতি, উভয়েই পরস্পরের ছঃসহু, উভয় বাৃহই স্বর্গ জয়ের নিমিত্তে निर्मिष्ठ, धवर উভग्नहे मर्शूक्ष कर्ज्क छेशबूके हरे-श्रोक्ति । श्रञतोष्ट्रे-शकीय कूक़ रेमना शूर्व पिटक थी-কিয়া পশ্চিমাভিমুখ এবং পাণ্ডব সৈন্য পশ্চিম দিকে পাকিয়া পুৰ্বাভিমুধ হইয়া যুদ্ধার্থে সমুৎস্ক হইল। কুরু সৈনা দৈতে জে সেনার ন্যায় এবং পাণ্ডৰ সেনা দেবেন্দ্র দেনার ন্যায় প্রতীয়মান হইল। বায়ু পাগুব-দিগের পশ্চাৎ হইতে পূর্বাভিমুখে প্রবাত হইতে मानिन। भागमणग कुरू मित्नात श्रिक भन्न क्रिएक লাগিল। পাণ্ডবদিগের গজেন্দ্রগণের তীত্র মদ গদ্ধ আপনকার পুজের নাগগণের অসম হইরা উঠিল।

ছুৰ্য্যাধন জালযুক্ত, স্থৰৰ্থ কক্ষা-বিভূষিত, পাছবৰ্ণ, গলিত-মদ গজে অবস্থিত হুইয়া কুদ্ধ সৈন্যের মধ্য তাগে রহিলেন। মাধ্য ও বনিলাগ তাঁহার স্তব করিতে লাগিল। ভাঁহার মন্তকোপরি স্বৰ্ণ জালা

বিভূষিত চন্দ্ৰপ্ৰত খেত হবা খৃত হইয়া দীবি পাইতে লাগিল। গান্ধার রাজ শকুনি তাঁহার চতুর্নিকে পর্বত প্রদেশীর গান্ধার দেশক নৈন্যগণের সহিত অনুগামী হইলেন। শ্বেভ ধনুক, শ্বেভ ঋড়গ ও শ্বেড উফীবধারী বৃদ্ধ ভীয় শ্বেড অশ্ব, শ্বেড ধ্বন্ধ ও মন্ত-কোপরি ধৃত খেত ছত্র দারা খেত শৈলের ন্যায় শোভমান হইয়া সর্ব সৈনোর অত্যে অবস্থিত হই-লেন। ধৃতরাষ্ট্র-পুক্র সকল, বাহ্লীক প্রদেশের এক দে-শাধিপতি শল, সিন্ধু দেশীয় ষে সকল অম্বর্চ ও ক্ষজ্রিয় গণ, সৌবীর এবং পঞ্চনদ দেশীয় শুরগণ ইহাঁরা সকলে তাঁহার সৈনা মধ্যে নিবিষ্ট রহিলেন। রক্ত বর্ণ ঘোটক সংযুক্ত ৰুকা রধে অবস্থিত অদীনসত্ত্ব মহাস্থা শুরু দোণ শরাসন-হত্তে প্রায় সমন্ত রাজার পশ্চাৎ ভাগে থাকিয়া ইন্দ্রের ন্যায় সৈন্য রক্ষা করিতে লা-গিলেন। স্বাৰ্জক্ষজি, ভূরিপ্রবাং, পুরুমিত্র, জয়, শালু ও মৎস্য দেশীয় এবং কেক্য় রাজ সমস্ত ভ্রাতা ইইারা मभूमात्र रेमना मर्था शब्द रेमना लहेन्ना यूकार्ट्य मभूमाज রহিলেন। যাঁহার যানের অগ্রভাগ উৎক্রফ, সেই মহাত্মা গোভম-বংশীর শরদ্ধ-পুত্র বিচিত্র-যোধী মহাধনুর্ধর রূপ শক্, কিরাত, যবন ও পহ্লব্দিগের সহিত, উত্তর ভাগে অভিগমন করিলেন। বিখ্যাত মহারথী আয়ুধধারী রুক্ষি ও ভোজগণ এবং স্থুরাট্র দেশীয় যোধগণ কর্তৃক রক্ষিত বে রুহৎ দৈন্যদল, যাহা ক্লতবর্দ্মা রক্ষা করিতেছিলেন, ঐ রুহতী সেনা আপনকার সৈন্যের দক্ষিণ ভাগে গমন করিল। হে রাজন্! অযুত-সংখ্য রথী যে সংশপ্তকগণ, তাহারা, षार्कुत्नत प्रज़ीरे रुपेक वा क्यरे रुपेक, यन त्नरे নিমিভেই স্ফ হইয়াছে; নেই হেডু ভাহারা বে-ধানে অৰ্কুন ছিলেন, কৃতাত্ৰ হইয়া নেই স্থানেই গমন করিল এবং শৌর্যা-সম্পন্ন শক্ত্রধারী ত্রিগর্ভেরাও **उथा**त्र थयां उरहेते।

হৈ ভারত। আপনকার সৈত্য সংখ্য এক সক্ষপ্রধান বজাবোহী বোদ্ধা আছে। ক্ষ্মবেশ ক্ষমগুলি হয়। বোহীর প্রক্রেক হত্যালোহীয় নিকট এক এক স্কু

র্ষী, প্রভোক র্মীর নিষ্ট এক এক শত অখাবার, अच्छाक जनादताहीत निक्षे एन जन कतिया शासक, এবং এক এক ধামুকের নিকট দশ জন করিরা চন্দ্রী অবস্থিত হইল। শান্তমূনদ্দন ভীয় প্রধান সেনাপতি হইয়া এই ৰূপে আপনকার সৈন্য ব্যুহ রচনা করি-লেন। তিনি কোন দিবলে মাুমুব বাুহ, কোন দিবসে देवन बुंह, कोन पिटन शांकर्क बुंह ७ कोन पिटन वा আফুর বৃাহ রচনা করেন। মহারথ সমূহে বিপুলী-ভূত, সমুদ্রের ন্যায় নির্ঘোষবান কুরু সৈন্য বৃহি যুক্ষে পশ্চিমমুখ হইয়া অবস্থিত রহিল। হে নরেন্দ্র! আ-পনকার সৈন্য অসীম-সংখ্য হইয়া ভীষণ ৰূপ হইল। যদিও পাগুবদিগের সে ৰূপ নহে; তথাপি ভাঁহা-দিনের সেনাকে রহতী ও ছুর্ধর্বণীয় বোধ হইতে লাগিল; কেননা কেশব ও অর্জুন তাহার নেতা হইয়াছিলেন।

> সৈনা বৰ্ণনে বিংশভিত্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ২০ ॥

-

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! কুন্তীপুত্র রাজা যুধি-ষ্ঠির ধার্ত্তরাষ্ট্রীয় সেনাকে রহতী ও উদ্যতা দেখিয়া বিষয় হইলেন। তিনি ভীম রচিত ব্যুহ অভেদ্য দেখিয়া যেন প্রকৃতই তাহা অভেদ্য বিবেচনা করত বিবর্ণ হইয়া অর্জুনকে কহিলেন, হে মহাবাছ ধন-**ঞ্জর! যাহাদিণের যোদ্ধা পিতামহ হইয়াছেন,** এতা-দৃশ ধার্ত্তরাধীর সৈনাদিগের সহিত সংগ্রামে আমরা কি প্রকারে যুদ্ধ করিতে সমর্থ হইব ? ভূরিতেজাঃ অমিত্রকর্ষণ ভীয় কর্তৃক শাস্ত্র দৃষ্ট বিধি স্বারা अक्काना ७ अक्ना वृाह क्रुक हहेन्नाटह। रह नेक-कर्वनः हेराट७ जामता रिम्सागन नर मर्गत थान रहेटजिह, धरे बूरि इरेटज आमासित्तत कि अकारत जब्र स्ट्रेंदर ?

ट्र दावन्। अभिज्ञा अर्जून अभिनकात अमी-विकी अनुसामित विवश यूपिछित्राक कहिरलन, रह

खेनेयुक वह नश्बा नमधिक भूत्रमिश्रदक[्]कत्र व्याद्य. তাহা ভাবণ করুন, আপনি অসুয়া-রহিড, জাপনা-কে ইহার কারণ বলিভেছি অবধান করুন। নারদ श्ववि हेहा कारनन ववर जीय, त्यांगंध हेहा कारनन। পূर्व्य कारण जन्ना এই ভাৎপর্যাই অবলয়ন করিয়া দেবাস্থরের যুক্ষে ইন্সাদি দেবগণকে কহিয়াছিলেন, " জয়ৈবি ব্যক্তিরা বল বীর্য্য দারা তাদৃশ বিজয়ী হয় না, যেরূপ সভ্য, আনৃশংস্য, ধর্ম ও উদ্যম দারা জ্য়ী হয়। অতএব তোমরা ধর্মাধর্ম ও লোভ অবগত, উদামের আশ্রিত ও অনহন্ধার হইরা যুদ্ধ কর, যে-হেতু যেখানে ধর্ম, সেখানেই জয়।" হে রাজন্! আপনিও এইৰূপ জামুন, রণে আমাদিগেরই জর হইবে। নারদ কহিয়াছেন যে, যেখানে রুঞ্জ, সে-খানেই জয়। জয় ক্লেডে গুণভূত হইয়া রহিয়াছে, স্তরাং তাহা ভাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করে। তাঁহার যেৰূপ এক গুণ বিজয়, সেই ৰূপ অপর এক গুণ নম্রতাও বিদ্যমান আছে। যে গোবিন্দ অনন্ত-তেজন্বী, সনাতনতম পুরুষ, শত্রু সমূহেও ব্যথা রহিত; সেই রুঞ্চ যে পক্ষে, সেই পক্ষেরই জয়। এই অপ্রতিহত-শস্ত্র বৈকুঠ হরি পূর্ব্ব কালে আবির্ভূত হইয়া দেবাস্থরদিগের প্রতি অতি গম্ভীর শ্বরে কহি-য়াছিলেন, 'কাহারা জয়ী হইবে ?' অনন্তর খাঁহারা তথন এইৰূপ কহিলেন, 'হে কুঞ্ছ! আমরা কি ৰূপে জন্নী হইতে পারি 🖓 তাঁহারাই জন্নী হইলেন। সেই कृटकत अमारम हेलामि स्विश्व के क्ष कहिया कर লাভ করত তৈলোক্য প্রাপ্ত হইলেন। অতএব হে ভারত ! বিশ্বভুক্ ত্রিদিবেশ্বর সেই ক্রি ষধন আপন-কার জয়াকাজ্কা করিতেছেন, তখন এই জয় বিষয়ে আপনকার কোন কন্ট দেখি না।

্ষুধিন্টিরার্জ্ন কথোপকথনে একবিংশ অধ্যায় नमाख । २১। × 200

নঞ্জ কহিলেন, হে ভরতর্বত! তদন্তর রাজা नद्वित । अन्मेख्त मृत्र मकन दृष्टि पात्री त्य अकादत । यूथिष्टित जीव-रेमदमात्र अखिनात्य वृद्धि त्रवनात्य

খকীর দেনার প্রতি আদেশ করিলেন, "হে বিশুদ্ধা-भवने ! भारतिका विभक्तित প্রতিপক্ষে यथिकि অনীক ব্যুহ রচনা করিলেন, তোমরা পরম স্বর্গের अखिनावी हहेता ऋयूक क्द्रा[®] नवानाठी, नरेनना नि-খণ্ডীকে মধ্য ভাগে রক্ষা করিতে লাগিলেন। ধৃই-ছান্ন অগ্রভাগে ভীমদেন কর্তৃক রক্ষিত হইতে লা-গিলেন ৷ সাত্মত বংশের প্রধান ধনুমান্ শ্রীমান্ যুযু-थान मचवारनत नामा प्रक्रिंग फ्रिक्ट व्यनीक्शर्पत রক্ষা কার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন। রাজা যুধিন্তির নাগ সমূহ মধ্যে মহেক্র-যান-সদৃশ শিপ্স-সক্ষিত স্বর্রত্ন-বিচিত্রিত কাঞ্চনময়-হয়ভূবণ-ভূবিত-যোজু-সংযুক্ত রথে অবস্থিত হইলেন। তাঁহার গজদন্ত শলাক যুক্ত স্থপাণ্ডর বর্ণ সমুদ্ধিত ছত্র অতীব প্রতিভাত হইতে লাগিল। মহর্ষিগণ তাঁহাকে প্রদক্ষিণ করত স্তুতি বচনে উপচর্য্যা করিতে লাগিলেন। তাঁহার চতুর্দিগে পুরে।হিত ও শ্রুতবন্ত ব্রন্ধর্ষি ও সিদ্ধ গণ জপ্য মন্ত্র ও ওবধী দ্বারা এবং স্বস্তায়ন বাক্য কথন দ্বারা শত্রুবধ বাক্ত করিতে লাগিলেন। অনন্তর কুৰত্তম মহাত্মা যুধিন্তির বস্ত্র, গো, ফল, পুষ্প ও নিষ্ক সমূহ ত্রাহ্নণ-সাৎ করিতে করিতে দেবরাজ ইন্দ্রের ন্যায় গমন করিতে লাগিলেন। অর্জুনের শ্বেতাশ্ব-যোজিত স্তক-যুক্ত শত কিঙ্কিণী-শোভিত সর্বোৎকৃষ্ট জাবু-না স্থবর্ণে বিচিত্রিত সহস্র স্থ্যপ্রভ রথখানি অর্চি-মালী অগ্নির ন্যায় প্রকাশ পাইতে লাগিল, যাহার সার্থি কেশব হইলেন। পৃথিবীতে থাঁহার সমান थमूर्कत्र नारे ভविषाटि थात कनाहिए रहेरवक ना, এবং ঘাঁহার রথ হজে কপিবর বিরাজমান, এতাদৃশ অৰ্জুন গাণ্ডীৰ ও বাণ করে গ্রহণ-পূর্বক সেই রথে অবস্থিত হইলেন। বে স্বভুজ জীমদেন অন্ত রহিত হইয়াও কেবল স্থান্তর দারা বসুষা, অশ্ব ও নাগ-দলকে যুক্ষে ভয়ৰ চুৰ্গ করিতে পারেন, তিনি ভব-नीत পुज्रु अ ताना चर्चन करितातन बनिता यन अजीव र्तोज क्ष भारत क्रिट्सन अन्द नकुस ७ नक्रम नम-विवाहादत वीत्र त्रवीत्राधीत त्रक्क स्ट्रेंट्वन। जन्

शकीत खायमन लाक मत्या मरहता कण्ण ७ अक-রাজের ন্যার দর্শবান নেই ভীমসেনকৈ তথার মন্ত निংহ-पद्भित्र त्येनन नम्म त्येननभीन, प्रत्रोत्रम ও नि-নাগ্রগত দেখিয়া ভরোদিগ চিত্ত হইয়া প্রমণ কুঞ্চর গণের ন্যায় প্রকৃষ্ট ৰূপে ব্যথিত হইতে লাগিলেন। एक अत्राच्छ । अनार्कृन क्रम अनीक मर्पा अविष्ठ তুরাসদ রাজপুত্র গুড়াকেশকে কহিলেন, হে পুরুষ-প্রবীর! যিনি ত্রিশত বাজিমেধ আহরণ করিয়া-ছিলেন, সেই কুরুবংশকেতু ঐ ভীন্ন বিক্রম সহ-কারে সৈন্য মধ্যে অবস্থিত হইয়া সৈন্যগণের রক্ষক হইয়াছেন ; উনি অক্ষৎ পক্ষীয় হইতে স্বকীয় সেনা-দিগকে সিংহের ন্যায় রক্ষা করিতেছেন। প্রকার মেঘমালা রশ্মিবান্ স্থাকে আচ্ছাদন করে, তাহার ন্যায় ঐ সমস্ত সৈন্য ঐ মহামুভাব ভীন্নকে আচ্ছাদন করিয়া রহিয়াছে। অতএব তুমি ঐ সকল সেনা বিনাশ করিয়া ঐ ভরতবরের সহিত যুদ্ধ করি-তে আকাজ্ঞা কর।

मक्षत्र करितनन, कृष्ण यूर्णामाञ्च धार्जनाष्ट्र रेमना দেখিয়া অর্জুনের হিত নিমিত্তে তাঁহাকে পুনর্বার কহিলেন, হে মহাবাছ! তুমি শত্রু পরাক্তর নিমিত্ত শুচি ও সংগ্রামাভিমুখ হইরা ছুর্গান্তোত কীর্ত্তন কর। मक्षत्र कशिरामन, शीमान वास्त्राप्त वास्त्राप्त युक्-স্থলে এই ৰূপ কহিলে, পাৰ্গ রথ হইতে রণ ক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইয়া ক্লতাঞ্জলি পূর্ব্বক তুর্গার স্তব করিতে वांत्रित्वन, रह पार्रिषः! रह निकारननानि ! रह मन्द्रत বাসিনি! হে কুমারি! হে কালি! হে কাপালি! হে কপিলে। হে ক্লমপঙ্গলে। ভোমাকে নমন্তার। হে ভদকালি! ভোমাকে নমকার। হে মহাকালি! ভো-मारक नमकात। रह हिंख! रह हरख! रह जाति। হে বরবর্গিনি ! ভোমাকে নমকার। হে কাডায়েনি ! विश्वास्त्र । एक क्यों नि । एक विश्वप्त । एक क्या । ्र निर्विभिक्षक्षातिनि । <u>द्र मनिकत्र</u>म्बिटि ! वि अप्रेम्न-श्रहताः । (६ वर्षे विके धार्ति। एक कार्या करना । दे कार्ष्ठ । द नम्मलान-

क्रांस्टित ! (इ मञ्ज महिस्स्थित व्यातः ! (इ की-শিকি! হে পীত্রাসিনি! হে অউহাসিনি! হে র্ক-মুখি! হে রণপ্রিরে! তোমাকে নমস্কার। হে উমে! হে শাকন্তরি ৷ হে খেতে ৷ হে ক্লেণ ৷ হে কৈটভ-নাশিনি! হে হিরণ্যাকি! হে বিৰূপাকি! হে স্তুধ্-দ্রাক্ষি! তোমাকে নমস্কার। হে বেদশ্রুতি-মহা-পুণ্যে! হে ব্ৰহ্মণ্যে! হে জাভবেদসি! জমুদ্বীপ ও দেবালয় ভোমার নিভা সন্নিহিত স্থান। তুমি বিদ্যা ममूनादात मरधा जन्मविमा थवश मिशीमरशत महा-নিক্রা। হে ক্ষন্দমাতঃ! হে ভগবতি! হে ছুর্ফো! হে ছুর্গম-পথ-বাসিনি! ভুমি স্বাহা, স্বধা, কলা, কাষ্ঠা, সরস্বতী, সাবিত্রী, বেদমাতা ও বেদাস্ত ৰূপে উক্ত হইতেছ। হে মহাদেবি! আমি বিশুদ্ধ চিত্তে তোমাকে স্তব করিতেছি, তোমার প্রসাদে রণ-চত্বরে আমার নিত্য জয় হউক। কাস্ত্রারে, ভয় স্থলে, দুর্গে, ভক্তদিগের আলয়ে এবং পাতালে তুমি নিত্য বাস করিয়া থাক, এবং যুচ্ছে দানব-দিগকে পরাজিত কর। তুমি জ্ঞণী, মোহিনী, মায়া, नब्जा, बी, मीश्व, हन्त्र-स्र्या-वर्षिनी वदः ভূতি-भानी पिरान पुंजि इरेटाइ अवर मिक ठांत्र भरात তত্ত্বজ্ঞানে জ্ঞানগম্যা হইয়া থাক।

সঞ্জয় কহিলেন, তদনন্তর মানব-বৎসলা তুর্গা অর্জুন্নর ভক্তি দেখিয়া অন্তরীক্ষে আবির্ভূতা ও গোবিন্দের অত্যে অবস্থিতা ইইয়া কহিলেন, হে পাণ্ডব!
ভূমি অপ্প কাল মধ্যেই শক্রদিগকে জয় করিবে।
হে তুর্ধর্য! ভূমি নারায়ণ-সহায়বান্ নর; ভূমি রণে
শক্রদিগের অজ্যের, ভোমাকে বজুধারী ইক্রও স্বয়ং
জয় করিতে সমর্থ নহেন।

বরদাত্রী দেবী অর্জুনকে এই ৰূপ কহিয়া তৎক্ষণাৎ অন্তর্হিতা হইলেন। কুন্তীনন্দন অর্জুন বর
লাভ করিয়া মনে মনে আত্ম বিজয় বিবেচনা করিলেন, অনন্তর পরম সন্মত রূপে আরোহণ করিলেন।
ক্ষণ ও অর্জুন এক রূপে অবস্থিত হইরা দিব্য শন্ত্য
ধনি করিতে লাগিলেন। যে মানব প্রভ্যুবে উপিত

হইরা এই স্তোত্ত পাঠ করেন, তাঁহার কথন যক্ষ, রাক্ষম ও পিশাচ হইতে ভয় থাকে না, রিপু থাকে না এবং দংগ্রী ও সর্প প্রভৃতি যে সকল হিংস্র জীব, তাহাদিগ হইতে ও রাজ কুল হইতে ভয় থাকে না। তিনি অবশাই বিবাদে জয় লাভ করেন, বন্ধান হইতে মুক্ত হন, দুর্গ হইতে উদ্ভীর্ণ হন, সংগ্রামে নিত্য বিজয় লাভ করেন, তাঁহার চৌর্য্য ভয় থাকে না, অচলা লক্ষ্মী তাঁহাকে আশ্রয় করেন এবং তিনি আরোগ্য ও বলসম্পন্ন হইয়া শত বর্ষ জীবিত থাকেন।

হে ভারত! আমি ধীমান্ ব্যাসের প্রসাদে ইহা জানিয়াছি, কিন্তু ভোমার ছুরাশয় পুল্র সকল ক্রোধ-বশানুগ ও কাল পাশে শুঠিত হইয়া এই নর নারায়ণ শ্বিকে মোহ প্রযুক্ত জানিতে পারিতেছে না এবং এই রাজ্য যে কাল প্রাপ্ত হইতেছে, তাহাও জানিতেছে না। দ্বৈপায়ন, নারদ, কণু, রাম, নভ, ইহাঁরা আপনকার পুল্রকে নিবারণ করিয়াছিলেন, তাহা আপনকার পুল্র গ্রাহ্থ করিলেন না। যেখানে ধর্ম, ছ্যুতি ও কান্তি, বেখানে লক্ষ্ণা, প্রী ও মতি, এবং যেখানে ধর্ম, সেখানেই কৃষ্ণ; এবং যেখানে কৃষ্ণ সেখানেই জয়।

ছুর্গাস্তোত্র কথনে দ্বাবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ২২॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! সেই রণে কোন্ পক্ষের যোধ গণ অত্যে প্রহুক হইয়া যুদ্ধ করিয়াছিল ? কা-হারা উৎসাহিত চিত্ত, কাহারাই বা দীন চিত্ত হইয়া-ছিল ? সেই হৃৎকম্প সংগ্রাহে অন্মৎ পক্ষীয় অথবা পাণ্ডব পক্ষীয়, কোন্ পক্ষীয় যোধ গণ অত্যে প্রহার করিয়াছিল ? কোন্ পর্কের সেনা সকলের গন্ধ ও মালোর প্রান্তর্ভাব ইইয়াছিল ? এবং কোন্ পক্ষের অভিগক্তনকারী যোদ্ধা গণ কর্তৃক অমুকূল বাক্য ব্যক্ত হইয়াছিল ? এ সমুদায় আমার নিক্ট ব্যক্ত কর!

मक्षत्र कहिरमन, रह छत्रछ-कुरमञ्जू ! साहे मध्यारम

তথন উতর পক্ষ সেনারই যোজা গণ হর্ষান্থিত হইরাহিল; উতর পক্ষেরই মালা ও স্থগজের সমান
প্রাত্তাব হইরাছিল। মহারাজ! সমুন্নত বন্ধবর্মা
বৃহিত সমস্ত সৈন্যের পরস্পার সংসর্গে স্থমহান্ বিমর্দ্দ
সংঘটিত হইল। শন্ধ ভেরী বিমিশ্রিত বাদিত্র শন্দ
ও রণদক্ষ শ্রগণের পরস্পার গর্জন ধনি তুমুল হইয়া
উঠিল। মহারাজ! পরস্পার বীক্ষণ কারী হাইটিও
ও নিনাদকারী উত্তর পক্ষীর সৈন্য, যোধগণ ও কুঞ্জর
বৃহহের মহান্ ব্যতিকর হইল।

ধৃতরাষ্ট্র সঞ্জয় কথোপকথনে ত্রয়োবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥২৩॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! অস্মৎ পক্ষীয় যোধ গণ ও পাগুবগণ ধর্মাক্ষেত্র কুরুক্তেত্রে সমবেত ও যুযুৎস্থ হইয়া কি ৰূপ করিয়াছিল ?

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! রাজা ছুর্যোধন তথন পাণ্ডৰ সৈন্যকে ব্যুহ্ত দেখিয়া আচাৰ্য্য সমীপে গমন-পূর্বক কহিলেন, হে আচার্য্য ! ঐ দেখুন, আ-পনকার শিষ্য ধীমান্ ক্রপদ-পুত্র পাগুবদিগের মহতী সেন। ব্যুহিত করিয়াছেন। ঐ পক্ষের খ্র সকল মহাধন্তর্জর ও যুদ্ধে ভীমার্জ্জুন সদৃশ—যুযুধান, বি-রাট, মহারথ ক্রপদ, ধৃফকেতু, চেকিতান, বীর্যাবান্ কাশিরাজ, পুরুজিৎ, কুন্তিভোজ, নরশ্রেষ্ঠ শৈবা, বি-ক্রান্ত যুধামন্ত্রা, বীর্যাবান্ উত্তমৌজাঃ, স্বভদ্রা-ন-দন এবং দ্রৌপদী-পুত্রগণ, ইহার। সকলেই মহারথ। পরস্ত হে দ্বিজোত্তম ্ আমারদিগের পকে যে সকল প্রধান যোদ্ধা, তাহা অবণ করুন, যাঁহার৷ মদীয় সৈ-নোর নায়ক হইয়াছেন, আপনকাকে জানাইবার নিমিত্তে তাহা কীর্ত্তন করি ি আপনি, ভীয়া, কর্ণ, যুদ্ধ-বিজয়ী রূপ, অশ্বত্থামা, বিকর্ণ, সোমদন্ত-পুত্র ভূরি-শ্রবাঃ, জয়দ্রথ ও অন্যান্য বছ শূর আমার নিমিত্তে জীবনাশা পরিত্যাগী হইয়া যুক্ষার্থে ক্রতসঙ্কণ্প হইয়া-ছেন ; मकेंदलरे नाना भञ्ज প্রহরণ-সমর্থ ও যুদ্ধ-বিশা-तम। आमामिरभत এই रिमना वह-मन्द्रा ও ভীয় कर्जुक

রক্ষিত হওরাতেও অসমর্থ এবং ঐ পাশুবদিনের অত্প সৈন্যও ভীম রক্ষিত হওরাতে সমর্থ বোধ হইতেছে, অতএব আপনারা সকলেই রণ ভূমির পূর্বাপরাদি যথা যোগ্য স্থ দিগ্ বিভাগ স্থলে অবস্থিত হইরা ভীয়কে রক্ষা করুন।

প্রতাপবান্ কুরু পিতামহ র্দ্ধ ভীন্ন, রাজা ছুর্য্যো-ধনের হর্ষোৎপাদন ধরত উচ্চৈঃ শব্দে শক্ষ ধনি করিলেন। অনন্তর রণ স্থলের সর্বতে সহসা শব্ধ, ভেরী, পণব, পটহ ও গোমুখ বাদিত হইরা ভুমুল শব্দ উঠিল। পরে শ্বেতাশ্ব-যোজিত মহান্ রথে অবস্থিত माधव ও व्यर्क्न উভয়েই দিব্য শব্ध क्ष्ति कतिरामन। ক্ষীকেশ পাঞ্চজন্য এবং ধনঞ্জয় দেবদন্ত শব্ধ বাদিত করিলেন। ভীমকর্মা রকোদর পৌণ্ডু নামক মহা-শক্ষ ধনি করিলেন। যুধিন্তির অনন্তবিজয় নামে শক্ষ, নকুল স্বয়োষ শব্দ ও সহদেব মণিপুষ্পক শব্দ বা-জাইলেন। হে ধরণীপতে! মহাধনুর্দ্ধর কাশিরাজ, মহারথ শিখণ্ডী, ধৃষ্টত্নান্ন, বিরাট, অপরাজিত সাত্য-कि, क्रथम, जोशमीत श्रूटबता नकत्व ७ महावाछ স্বভদ্রানন্দন অভিমন্ত্য, ইহাঁর৷ প্রত্যেকে পৃথক্ ৰূপে শঙ্খ ধনি করিয়া উঠিলেন। সেই তুমুল শঙ্খ ধনি ভূমগুল ও নভোমগুল অনুনাদিত করিয়া ভবং-পক্ষীয় গণের হৃদয় বিদারণ করিল। হে মহীপাল! তদনন্তর অন্ত্র শস্ত্র, প্রয়োগাভিমুখ হইলে তথন কপি-ধজ অৰ্জুন ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীয় বোদ্ধাগণকে যুদ্ধোদেঘাগে অবস্থিত দেখিয়া শরাসন উদ্যত করত হৃষীকেশকে এই কথা কহিলেন, হে অচ্যুত! যাঁহারা যুদ্ধেষ্ণু হইয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তাঁহাদিগকে আমি যা-হাতে অবলোকন করিতে পারি, ভূমি এৰূপ করিয়। উভয় পক্ষীয় সেনার মধ্য ছলে রথ রক্ষা কর। এই রণ সমুদ্যমে আমারে কাহার দিগের সহিত যুক্ कतिएक रहेरत, काराता यूटक हुर्सूक हुर्रशाधरनत প্রিয়চিকীর্ হইয়া এখানে সমাগত হইয়াছেন, সেই সকল যুদ্ধোদ্যতদিগকে আমি নিরীক্ষণ করিব।

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! গুড়াকেশ, হ্বীকেশ

ক্ষককে এই ৰূপ কহিলে, ছ্বীকেশ উভয় সেনার মধ্যে ভীয়, দ্রোণ ও সমন্ত রাজাদিগের সম্মুখে রথ-বর স্থাপন করিয়া কহিলেন, হে পার্থ! এই সকল সমবেত কুরু পক্ষীয়দিগকে অবলোকন কর

পার্থ সেই স্থানে দেখিলেন ষে, পিতৃব্য গণ, পিতা-মহ গণ, আচার্য্য গণ, মাতুল গণ, ভাতৃ গণ, পুত্র গণ, পৌত্র গণ, শ্বশুর গণ, শ্বন্হদ্ গণ ও স্থা গণ, সকলেই উভয় সেনার মধ্যে বিদ্যমান রহিয়াছেন। কুন্তীপুত্ৰ অৰ্জুন সেই সমন্ত বন্ধু বান্ধবদিগকে যুদ্ধা-র্থে অবস্থিত দেখিয়া পর্ম ক্পাপরায়ণ ও বিষয় हरेया कहित्वन, रह क्रकः। এर मकल यूयू श्व श्वकन গণকে সমবস্থিত দেখিয়া আমার গাত্র অবসন্ধ, মুখ শুদ্ধ, শরীর কম্প, লোমহর্ষ, হস্ত হইতে গাণ্ডীব অন্ত, ত্বক্ উত্তপ্ত এবং মন যেন বিষ্ণিত হইতেছে; আমি আর দাঁড়াইতে পারিতেছি না। আমি অনিষ্ট স্থাচক নিমিত্ত সকল উপলব্ধি করিতেছি। আমি সংগ্রামে স্বজন হনন করিয়া শ্রেয় দেখিতেছি না। আমি বিজয়াকাজ্ফা করি না এবং আমার রাজ্য বা স্থােরও প্রার্থনা নাই। হে গোবিনদ! আমাদিগের রাজ্য বা ভোগ অথবা জীবনে প্রয়োজন কি ? যাঁহা-দিগের নিমিত্তে আমাদিগের রাজ্য, ভোগ বা সুখ অভিলবিত, এই তাঁহারাই ধন প্রাণ পরিতারে উদ্যত হইয়া যুদ্ধে অবস্থিত হইয়াছেন। আচার্যা, পিতৃব্য, পুত্র, পিতামহ, মাতুর্ল, শ্বশুর, পৌত্র, শ্যালক ও অন্যান্য স্ব সম্পর্কীয় সকলেই এই বর্ত্তমান রহিয়া-ছেন। হে মধুস্থদন! ইহাঁর। আমাদিগকে হনন করি-**लि** इंहाँ पिशदक এই **शू**थियी निमि**द्ध कि दे**वलाका রাজ্য লাভের নিমিত্তেও হনন করিতে আমার ইচ্ছা रुट्रेट्डिस ना। दरं अनार्फन! ४७ त्रोड्डे-शूक्रिंगट्र হনন করিয়া আমাদিগের কি প্রীতি জন্মিবে? ইহারা আততায়ী—অগ্নিদাতা, বিষদাতা, শস্ত্র হত্তে হননো-माज, ज्यापशाती ও मातापशाती श्रेरमा स्राप्त হনন ক্রিলে আমাদিগকে পাপই আতার ক্রিবে; অতএব হে মাধব! সবান্ধব ছুর্য্যোধনাদিকে বিনাশ

করা আমাদিগের উচিত নহে। আমরা স্থ জন বি-নাশ করিয়া কি প্রকারে স্থুখী হইতে পারিব ? যদিও ইহারা রাজ্য লোভে অবিবেক-চিত্ত হইয়া মিত্রদ্রোহ জন্য পাতক ও কুলক্ষয় জনিত দোষ দেখিতে পাই-তেছে না, তাহা হইলেও আমরা কি হেতু কুলক্ষয়-জনিত দোয দর্শন করিয়া সেই পাপ হইতে নির্ভ হইতে বিবেচনা না করিব ? কুলক্ষয় হইলে সনাতন कूलधर्म विनष्टे इयः; धर्म नष्टे इहेटल अधर्म कृष्य কুল আক্রান্ত হয়, এবং অধর্মের সঞ্চার হইলে কুল-ন্ত্ৰী সকল দূষিত হয়। হে কৃষ্ণ! ন্ত্ৰী দোষান্বিভা रुरेल वर्गम्हत উৎপন্ন रुरेश थारक, मरे महतरमाय সেই কুল ঘাতীদিগের কুলের নরক নিমিত্তেই হয়, এবং বংশ লোপ হওয়াতে তাহাদিগের পিতৃ-লোকও পিণ্ডোদক ক্রিয়া-বঙ্জিত হইয়া নরকে পতিত इय़। कुलक्षम्रकाती मिरगत के वर्गमस्तत स्नारव शत-রুগত জাতিধর্ম, কুলধর্ম ও আশ্রমধর্ম উৎসন্ন হইরা যায়। জনার্দন। আমরা শুনিয়াছি, যে মনুষ্য দিগের কুলধর্ম উৎসন্ন হয়, তাহাদিগের নরকে নিয়ত বাস হইয়া থাকে। হা কটা আমরা মহৎ

হইরা যায়। জনার্দন! আমরা শুনিয়াছি, যে মনুষ্য দিগের কুলধর্ম উৎসন্ন হয়, তাহাদিগের নরকে নিয়ত বাস হইয়া থাকে। হা কফ ! আমরা মহৎ পাপ করিতে বাবসিত হইতেছি! রাজ্য স্থখ লাভের নিমিত্ত স্বজনগণকে হনন করিতে সমুদাত হইয়াছি! অতএব যদি আমি শস্ত্রহীন ও প্রতীকার চেফা রহিত হই, আর ধৃতরাষ্ট্র-পুল্রেরা শস্ত্র হস্ত হইয়া রণস্থলে আমাকে বিনাশ করে, তাহা হইলেও আমার পক্ষে কল্যাণত্র হয়।

সঞ্জয় কহিলেন, অর্জুন এইৰূপ কহিয়া রণক্ষেত্রে শর শরাসন পরিত্যাগ করিয়া শোক সম্বস্তুচিত্তে রখ-ক্রোড়ে উপবেশন করিলেন।

় অর্জুন বিষাদ প্রকরণ চতুর্বিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ২৪॥

সঞ্জয় কহিলেন, মধুস্থদন তথাবিধ ক্লপাবিষ্ট অগ্রুপূর্ণাকৃলিত-লোচন বিষয় অর্জুনকে কহিলেন, অর্জুন! এই সম্কট সময়ে কি হেতু তোমার আর্য্যা-

উপস্থিত হইল ? হে পরস্তুপ কৌন্তেয়! ভুমি কাতর হইও না, কাতর হওয়া তোমার উপযুক্ত হয় না; ভুচ্ছ হৃদয়-ছুর্বলতা পরিত্যাগ করিয়া উত্থান কর।

व्यर्क्नन कहित्तन, रह भंकविमर्फन मधुस्रमन! व्यामि পূজনীয় ভীয় ও দ্রোণের সহিত সংগ্রামে অস্ত্র দ্বারা কি ৰূপে প্ৰতিযুদ্ধ করিব? মহানুভাব গুরুদিগকে হ্নন না করিয়া ইহ লোকে ভিক্ষান্ন ভোজন করাও শ্রেয়; যেহেতু এই গুরু লোকদিগকে হনন করিয়া ইহ লোকেই রুধির-লিগু অর্থ কাম উপভোগ করিতে হইবে। যদি আমরা বিপক্ষদিগকে জয় করি, কিয়া বিপক্ষের৷ আমাদিগকে জয় করে, এ উভয় পক্ষের কোন পক্ষই শ্রেয় বোধ করিতেছি না, যেহেতু যাঁহা-দিগকে বিনাশ করিয়া জীবিত থাকিতে ইচ্ছা করি না, সেই ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীয় সকলেই সম্মুখে রহিয়া-ছেন। ইহাঁদিগকে সংহার করিয়া কি প্রকারে জ্বীবন ধারণ করিব এই ভাবনাৰূপ দৈন্যভাবে ও কুলক্ষয় জন্য দোষ ভাবনায় আমার স্বভাব অভিভূত ও চিত্ত ধর্ম বিষয়ে কিং-কর্ত্তব্যতা-মূঢ় হইয়াছে। আমি তোমার বশবন্তী ও শরণাপন্ন, অতএব তোমাকে জিজ্ঞাসা করিতেছি, যাহা ভোয় হয়, তাহা তুমি নিশ্চিত ৰূপে আদেশ কর। আমার পৃথিবী মধ্যে নিদ্ধণ্টক রাজ্য এবং স্থর লোকের আধিপত্য লাভ হইলেও এমত কর্ম আমি দেখি-তেছি না যে তাহা আমার ইন্দ্রিয়শোষক শো-কের অপনোদন করিতে পারে।

সঞ্জয় কহিলেন, অনন্তর শত্রতাপন গুড়াকেশ হুণীকেশ গোবিন্দকে 'আ্রমি যুদ্ধ করিব না ' ইহা বলিয়া তুফী অবলয়ন করিলেন। হে ভারত ! তদ-নম্ভর হ্রবীকেশ সহাস্য বদনে উভয় সেনার মধ্যে বিষাদ-ভাবাপন্ন অর্জুনকে কহিলেন, তুমি, শেন্টকর অবিষয় যে বন্ধু গণ, তাহাদিগের নিশিতে শোক করিতেছ, আবার পণ্ডিতের বাকা সকলও কহিতেছ; বিবৈকী ব্যক্তিরা, জীবিত-বন্ধু ব্যক্তিরা বন্ধুবিহীন

গ্নণের অসেবিত, অস্বর্গ-সাধন ও অকীর্ত্তিকর মোহ | হইরা কি ক্রপে জীবন ধারণ করিবে, এই ভাবিয়া তাহাদিগের নিমিত্তে বা মৃত-বন্ধু ব্যক্তিদিগের নি-মিত্তে অনুশোচন করেন না। যেহেতু আমি যে ক্খনই ছিলাম না এমন নহে, ভূমি যে কখন ছিলে না এমনও নহে, এই সকল রাজারাও যে কখন ছি-লেন না তাহাও নহে, এবং ইহার পরেও যে আমরা পাকিব না এমনও নটে। দেহাভিমানী জীবের যে প্রকার এই স্থূল দেহে কৌমার, যৌবন ও বার্কক্যা-বস্থা হইয়া থাকে এবং কৌমারাদি পূর্ব্ব পূর্ব্ব অব-স্থার বিনাশে পর পর অবস্থা হইলেও তাহার স্বত কোন অবস্থান্তর হয় না, সে সমভাবেই থাকে, সেই প্রকার এই দেহ বিনাশ হইলে লিঙ্গ দেহের অবলম্বনে তাহার দেহান্তর প্রাপ্তি হয় কিন্তু স্বত কোন অবস্থান্তর বা হানি হয় না। অতএব ধীর বাক্তি দেহের উৎপত্তি বা বিনাশে বিমুগ্ধ হন না। হে কুন্তী-পুত্র ! ইন্দ্রিয়ের সহিত বিষয়ের যে সংযোগ, তাহাই কথন শীত, কখন উষ্ণ, কখন সুখ ও কখন চুঃখ প্রদান করে। ঐ বিষয়েক্রিয় সংযোগ কখন উৎ-পন্ন, কখন বা বিলয় প্রাপ্ত হইয়া থাকে স্থতরাং তাহা অনিতা; অতএব তাহাতে হর্ষ বা বিষাদ না করাই তোমার উচিত হয়; তাহা হইলে বন্ধুবিয়োগ জনিত ছংখ তোমাকে অভিভূত করিতে পারিবে না। **হে পুরুষবর** ! উক্ত শীতোঞ্চাদি, যে **সূখ-চু**ঃখ-সমজ্ঞানী ধীর পুরুষকে ব্যাথিত করিতে না পারে, সেই পুরুষ মোক্ষ সাধনে সমর্থ হয়। এবং অনাত্ম স্বভাব প্রযুক্ত অবিদ্যমান পদার্থ যে শীতোঞ্চাদি তাহা আত্মাতে বিদ্যমান থাকে না; সেইৰূপ সং-স্বভাব যে আত্মা, তাহারও অভাব কখন সম্ভবে না। বস্তু **তত্ত্বদর্শী প**ণ্ডিতেরা সৰ্জ্ব ও অসৎ এই উভয় পদাৰ্থের এইৰূপ নিৰ্ণয় জ্ঞাতা হইয়াছেন। অতএৰ ছুঃসহ শীতোক্ষাদি দ্বন্দ সহ্য করিলে কদাচিৎ তো-মার বিনাশ সম্ভাবনা নাই। যিনি, উৎপত্তি বিনাশ শালী এই সমস্ত দেহাদিতে সাক্ষীৰূপে ব্যাপ্ত রহি-রাছেন, সেই আত্মাকে অবিনাশী জানিবে; যেহেভূ

कारात व्यवस्थ ना शाकास दुस्रामित नाम कम रस না, অতএব কেহ তাঁহাকে বিনাশ করিতে সমর্থ হয় না। হে ভারত। এই নশ্ব দেহ, সর্বদা এক-ৰূপ অবিনাশী অপরিক্ষি দেহ-ছিত আত্মারই, ইহা বিবেকী ব্যক্তিরা কহিয়াছেন, অতএব ভূমি মোহ-জনিত শোক পরিত্যাগ করিয়া যুদ্ধ কর, স্ব ধর্ম ত্যাগ করিও না। যে ব্যক্তি নেই আত্মাকে হনন-কর্তা জানে, এবং যে ব্যক্তি সেই আত্মাকে হত মনে করে, তাহারা উভরেই তাঁহাকে জানে না, কেননা তিনি हनन करतन ना थवर इंड इरायन ना। जिनि क्थन জ্ঞানে না, মরেন না এবং অন্যান্য জাত বস্তুর ন্যায় জন্মিয়া বিদ্যমানও থাকেন না, ষেহেভু তিনি স্বভাবতই জন্ম-রহিত হইয়া চির কাল বর্ত্তমান আ-ছেন। এবং তিনি নিত্য—সর্বাদা এক ৰূপ; তিনি শাশ্বত-ক্ষয়-বিহীন; তিনি পুরাণ-পূর্ব হইতেই মূতন আছেন, তিনি পরিণাম ছারা ৰূপান্তর প্রাপ্ত হইয়া মূতন হন না; এবং তিনি শরীর হন্যমান হই-লেও হত হন না। হে পার্থ! যে পুরুষ সেই আত্মাকে ক্ষয় ও জন্ম রহিত এবং অবিনাশী জানেন, তিনি কা-शांदक रुनन कतिरवन, कि श्रकारतरे वा रुनन कतिरवन, এবং काहाटक मिन्नाई वा इनन कन्नाई दनन ? य প্রকার মন্ত্র্যা জীর্ণ বস্ত্র পরিত্যাগ করিয়া অপর নব বস্ত্র গ্রহণ করে, সেই প্রকার জীব জীর্ণ শরীর পরিত্যাগ করিয়া অন্য মূতন শরীর প্রাপ্ত হয়। সেই আত্মাকে শস্ত্র সকল ছেদন করিতে, অগ্নি দগ্ধ করিতে, জল দ্রবীস্থৃত করিতে এবং বায়ু শুষ্ক করিতে পারে না, যেহেতু তিনি অবরব রহিত; স্থতরাং चटक्स, चत्रक्, चटक्स ७ चाटनाय। त्रहे चाचा অবিনাশী, সর্বগত, ৰপান্তর অপ্রাপ্ত, পূর্ব্ব ৰপের অপরিত্যাগী, অনানি, চকুরাদি আনেন্দ্রিরের সতীত, মন ও হতাদি কর্মেন্ডিয়ের শক্তিম বলিয়া সভি-হিত হইরাছেন, অতএব আত্মাকে এই প্রকার জা-নিয়া ভোমার শোক করা উচিত হয় না।

হে মহাবাছ! যদাপি সেই আত্মাকে চির কালই

্দেহ কৰিলে কাতও দেহ বিনক হইলে মূত বলিয়া বোধ কর, তাহা হইলেও তোমার এই রূপ শোক করা উচিত নহে; কেননা জাত বস্তুর অবশ্যই মৃত্যু হয় এবং মরিলে অবশাই জন্ম হইয়া থাকে, অতএব অবশ্যম্ভাবী বিষয়ে ভোমার শোকের বিষয় কি? ভূত সকল উৎপদ্ধির পূর্বের অদর্শন এবং নিধনের পরেও অদর্শন হয়, কেবল মধ্যে—উৎপত্তির পরে ও নিধনের পূর্বে দৃশ্য হয়, অতএব এতাদৃশ ভূত সকলের নিমিত্তে আর শোক বিলাপ কি? শাস্ত্র ও আচার্য্যের উপদেশ দ্বারা এই আত্মাকে উপলব্ধি করিয়া কেহ আক্রয়ের ন্যায় দর্শন করেন, কেহ আশ্রুর্যাের ন্যায় কীর্ত্তন করেন, কেহ আশ্রুর্যাের न्यात्र व्यवन करत्रन; क्र्इ वा मर्गन, व्यवन वा कीर्डन করিয়াও বিপরীত ভাবনায় অভিভূত হইয়া জা-নিতে পারেন না; স্থতরাং বিদ্বান্ হইয়াও আত্ম-জ্ঞানের অভাবে অনেকে শোক করিয়া থাকেন। হে ভারত! সকলের দেহেতে সকল অবস্থাতেই এই আত্মা অবধ্য, অতএব কোন প্রাণীর নিমিত্তে তোমার শোক করা উচিত হয় না। এবং স্বকীয় ক্ষভ্রধর্মের প্রতি দৃষ্টি করিয়াও তোমার কম্পিত रु अत्रा नमू कि उरहा ना ; क्लिक दिश्व धर्मा युक्त रु रेट उ আর অন্য কিছুই শ্রেয় নাই। হে পার্থ! বিনা প্রার্থনায় উদ্ঘাটিত স্বর্গ দার উপস্থিত হইয়াছে, যে ক্ষক্রিয়দিগের ঈদৃশ যুদ্ধ লাভ হয়, তাহারা স্থা হইরা থাকে। প্রত্যুত, যদি ভূমি এই ধর্ম্ম্য যুদ্ধে নির্ভ হও, তাহা হইলে তোমাকে স্বধর্ম ও কীর্ভি বিহীন হইয়া পাপ ভোগ করিতে হইবে এবং লোকে ভোমার অক্ষয় অকীর্ডি ঘোষণা করিবে; ধর্মনিষ্ঠ ও त्नोर्यापि थ्रन-त्रन्त्रित वाक्ति पिरशत अकीर्कि, मत्रव অপেকাও অধিক। মহারথ সকল ভোমাকে ভয়-প্রযুক্ত সংগ্রাম হইতে নির্ভ মনে করিবে, তাহা हरेटन, जूमिजोहानिरात निक्षे शूर्व्स थ्रेग्वान् विन्ता নন্দানিত থাকিয়া একণে লাঘৰ প্ৰাপ্ত হইবে। অপ্র তোমার শক্তরা তোমার সামর্থাকে নিকা করত

জনেক অবক্তবা বাক্যওরলিবে, তাহা অপেক্ষা আর কু:খতর কি আছে? হে কৌন্তের! যদি তুমি যুদ্ধে হত হও, তাহা হইলে স্বর্গ লাভ করিবে, যদি জয়ী হও, তাহা হইলে পৃথিবী ভোগ করিবে; অতএব যুদ্ধে কৃতনিশ্বর হইয়া উপিত হও। স্থপ কু:খ, লাভা-লাভ ও জয়াজয় সমান জ্ঞান করিয়া যুদ্ধে নিযুক্ত হও; তাহা হইলে তোমাকে পাপ, স্পর্শ করিতে-পারিবে না।

হে পার্থ! আত্মতত্ত্ব বিষয়ে যে ৰূপ বুদ্ধি কর্তব্য, তাহা তোমাকে বলিলাম, ইহাতেও যদি তোমার তাহা প্রত্যক্ষ না হইয়া থাকে, তবে অন্তঃকরণু-শুদ্ধি দ্বারা আত্মতত্ত্ব প্রত্যক্ষ নিমিত্ত কর্ম যোগ বিষয়ক এই বুদ্ধি শ্রবণ কর, যে বুদ্ধিতে যুক্ত হইলে পরমে-শ্বরার্পিত কর্ম যোগ ভারা শুদ্ধ-চিত্ত হইয়া তাঁহার প্রসাদে লক্ক—প্রত্যক্ষীভূত আত্মতত্ত্ব দারা কর্ম বন্ধ পরিত্যাগ করিতে পারিবে। এই নিষ্কাম কর্ম-যো-গের প্রারম্ভ নিম্ফল হয় না, ঈশ্বরোদ্দেশ নিবন্ধন বিশ্ব বৈশুণোর অসম্ভব হেতু ইহাতে কোন প্রত্যবায়ও জন্মে না এবং ঈশ্বরারাধনার্থ এই ধর্মা স্বন্স ক্লত হই-লেও মহৎ ভয় হইতে রক্ষা করে। কুরুনন্দন! ঈশ্ব-রারাধন ৰূপ কর্ম-যোগে নিশ্চরাত্মক সেই বৃদ্ধি, ঈশ্বরের প্রত্যি ভক্তি হেতুই একনিষ্ঠ হইয়া থাকে। আর ঈশ্বরারাধন-বহিন্মুখ স্বার্থ-কাম ব্যক্তি দিগের বুদ্ধি, অসংখ্য কামনা হেতু অনস্ত ও বিবিধ ফলের প্রকার ভেদে বছ শাখা বিশিষ্ট হইয়া থাকে। হে পার্থ! যাঁহারা অবিবেকী—কামনায় আরুলিত চিত্ত হয়েন, স্থতরাং স্বর্গকেই পুরুষার্থ বোধ করেন, তাঁ-হারা চাতুর্মাষ্য ব্রতে অক্ষর কল ও সোম পান করিলে অমৃতত্ব লাভ হয় ইত্যাদি প্রকার বেদের ফল-অতি বাকোতে প্রীত ও ইহা হইতে স্বার স্বন্য প্রাপ্য পদার্থ ঈশ্বরতত্ত্ব নাই এই ৰূপ কণ্ডনশীল হইয়া ভো-গৈৰ্যা প্ৰাপ্তির সাধনভূত ক্রিয়া বিশ্বেরে বোধক, क्य कर्म इश कन्धार, श्रृत्भिक विष नका महम भागाण्य तमगीत, विद्यास भागाम करा भागाणि कन-

আছতি বাক্যকেই প্রমার্থ সাধন বলিয়া থাকে-তাঁহাদিগের চিত্ত আপাতত রমণীয় উক্ত বেদ বচন দারা অপহত হুইয়া থাকে; এতাদৃশ ভোগেশ্বর্যাস্ক্র ব্যক্তি দিগের নিশ্চয়াত্মক বৃদ্ধি ঈশার-ভত্ত্বের প্রতি অভিমুখ হয় না। হে অর্জুন! বেদের বছল অংশ সকাম ব্যক্তি দিগের কর্মা কল প্রতিপাদক, কিন্তু ভূমি নিক্ষাম হও, সুখ ছুঃৠ শীতোঞ্চাদি ছন্দ সহু কর, সর্বাদা সন্ত্রগুণের আত্রিত হও, অলক বস্তুর লাভ ও লক্ষ বস্তুর রক্ষা করিতে নির্ত্ত ও প্রমাদ রহিত হও। যে প্রকার বাপী কুপ তড়াগাদি কৃদ্র কৃদ্র জলাশয়ে ভ্রমণ করিয়া বিভাগক্রমে স্নান পানাদি বে প্রয়োজন সিদ্ধ হয়, তাহা এক মাত্র মহাত্রদেই হইয়া পাকে, সেই প্রকার সমস্ত বেদেতে তত্তৎ বেদোক্ত যাবতীয় কৰ্ম কল ৰূপ যে প্ৰব্লোজন সিদ্ধ হয়, তৎ ममखरे निम्मन्नाञ्चक-दूषि-विभिष्ठे दक्षनिष्ठं वाक्तिव হইয়া থাকে। তুমি তত্ত্বজ্ঞানের প্রার্থী, অতএব তোমার কর্মেতে কামনা হউক, কিন্তু সংসার বন্ধের হেতু যে কৰ্ম কল, তাহাতে যেন কামনা না পাকে; অর্থাৎ কলের নিমিন্তে যেন তোমার কর্মে প্রবৃত্তি না হয় এবং কর্ম্ম না করিতেও যেন তোমার নিষ্ঠা না হয়। হে ধনঞ্জয়! তুমি আসক্তি পরিত্যাগ-পূর্বাক বোগস্থ হইয়া কর্মা করিবে, সিদ্ধি হউক কিয়া না रुषेक উভয়েতেই সমদর্শী হইয়া রুশ্ম রুরিবে, বে-হেতু সমভাবই যোগ বলিয়া কথিত হয়। ধনঞ্ব। সমভাবাপন্ন রুদ্ধি ধারা ক্লত যে কর্ম, তাহা হইতে কাম্য কর্ম অত্যন্ত অপক্ষয়, অতএব তুমি বুদ্ধিতে, পরিত্রাতা ঈশ্বরের আতার প্রার্থনা কর; কেননা কল-কাম ব্যক্তিরা দীনভাবাপন্ন হইয়া থাকে। সম-ভারাপন্ন-বুদ্ধি-যুক্ত ব্যক্তি স্বর্গাদি সাধন স্থক্ত ও নরকাদি বাধন ছন্ত এই উভয়কেই পরিজাগ করেন, স্বতএব তুমি যোগে নিযুক্ত হও। ঈশবে চিন্তাৰ্পণ নিবন্ধন কৰ্ম্মেতে নিদ্ধি বা অনিদ্ধি বিষয়ে সমুত্র বুদ্ধি ৰূপ বে কৌশল, ভাহাই বোগ শব্দে কথিত एत। नमज-वृक्षि-पूजः वाजिता जिसताताथन माज

নিমিত্ত কর্মানুষ্ঠারীর। ইন্টামিন্ট দেহ প্রাপ্তি ৰপ কর্ম কল পরিত্যাগ করিরা জ্ঞানযুক্ত ও জম বল-বিমুক্ত হইরা সর্বোপদ্রব রহিত পরম পদে গমন করেন। এই রূপে ঈশ্বরারাধনার প্রবৃত্ত থাকিলে যখন তাঁহার প্রসাদে তোমার বুদ্ধি মোহময় হুর্গ গহন হইতে বিশেষ রূপে উত্তীর্ণ হইবে, তথন তুমি শ্রোতব্য বা প্রত্ত অর্থের প্রতি বৈরাগ্য লাভ করি-বে। তোমার নানাবিধ লৌকিক ও বৈদিক বিষয় জ্ঞাবণে বিক্ষিপ্ত বৃদ্ধি যখন বিষয়ান্তরে অনাকৃষ্ট ও হির হইরা পরমেশ্বরে অবস্থিতি করিবে, তখন তুমি যোগ কল তত্ত্বজ্ঞান লাভ করিবে।

অর্জুন কহিলেন, হে কেশব! সমাধিস্থ স্থিতপ্রজ্ঞ ব্যক্তির লক্ষণ কি? এবং তিনি কি প্রকার কথন, উপবেশন বা গমন করেন?

ভগবান্ কহিলেন, পার্থ! যখন সাধকু মনোগত কামনা সকল পরিত্যাগ করেন, পরমানন্দ্রূপ আ-ত্মাতেই আত্মা-ছারা সম্ভুট্ট থাকেন, তথন তাঁহাকে স্থিতপ্রজ্ঞ বলা যায়। জুঃখ উপস্থিত হইলে যাঁহার মন উদিয় না হয়, সুখেতে স্পৃহা না থাকে, এবং রাগ, ভয় ও ক্রোধ যাঁহার নিকট হইতে বিদুরিত হয়, তাঁহাকে হিতপ্ৰজ মুনি বলাবায়। যিনি পুত্ৰ-মিত্রাদিতে স্নেহ শূন্য হন, শুভ বিষয় প্রাপ্ত হইয়া আনন্দিত না হন এবং অশুভ প্ৰাপ্ত হইয়াও দ্বেষী না হন, অর্থাৎ এসমস্ত বিষর্ট্যে ঔদাস্য ভাব করেন, তাঁহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা হুইয়া থাকে অর্থাৎ তাঁহাকে স্থিত-था वनायात्र। कूर्य त्यमन कत हत्रशामि अत्र ममस সর্ব্ব প্রকারে আকর্ষণ করিয়া সঙ্কুচিত্ত করে, সেইৰূপ যোগী ব্যক্তি বধন শ্রোতাদি ইন্দ্রিয় সকলকে ভাহা-**मिट्टात विषय भक्तामि श्रेट्ड প্র**ভ্যাহরণ-পূর্বক সঙ্কু-চিত করেন, তখন ভাঁহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা হয়। কড়, আতুর বা উপবাস-পরারণ ব্যক্তির সামর্থ্য না ধাকার ভাহারা বিষয় গ্রহণ করে না, স্বভরাং ভাহা-पिरमञ्ज निक्रे रहेंटछ विषय नक्न निज्ञ इत वर्ण, क्षि जाशामिश्रदक विजया वनायात्र ना,

व्यट्कु जाशांक्रिशत विषया वाजना निर्देख इत ना ; পরম্ভ স্থিতপ্রস্ক ব্যক্তির তাহাও নির্ভ হইরা থাকে। কুন্তীপুত্র! বিবেকী পুরুষ, সমত্ন হইলেও তাঁহার मनत्क ध्रमधनकांत्री रेक्तिय नकन वन-शूर्वक रतन करत्र, এই निमिख मেই ममछ रेक्सिय़रक मश्यछ করিয়া পরমেশ্বর-পরায়ণ ও সমাহিত হইয়া উপ-বিষ্ট হইবেন; কেন না ইক্রিয় সকল খাঁহার বশে থাকে, তাঁহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা হয়। বিষয় চিন্তা করিতে করিতে পুরুষের তদ্বিষয়ে আসক্তি জন্ম; चांत्रक्ति कवितन चिनाय रहा; त्रहे चिनाय কোন কারণে প্রতিহত হইলে ক্রোধ আসিয়া আ-ক্রম করে; ক্রোধ হইতে মোহ অর্থাৎ কার্য্যাকার্য্য বিবেকে সামর্থা খুনা হয়; মোহ হইতে স্থৃতিভ্রম জন্মে; স্মৃতিভ্রংশ হইলে বুদ্ধি নাশ হইয়া থাকে. এবং বুদ্ধি বিনাশ হইলে আপনাকে বিন্ট হইতে-হয়। খাঁহার মন বশীভূত হয়, সেই পুরুষ মনের বশয়দ রাগদ্বেম-রহিত ইন্দ্রিয় দ্বারা বিষয় উপভোগ করিলেও শান্তি—চিত্তপ্রসাদ লাভ করিতে পারেন। শান্তি লাভ হইলে ঐ প্রসন্নচিত্ত ব্যক্তির সর্ববহুঃখ নাশ এবং বুদ্ধি প্রতিষ্ঠিতা হইয়া খাকে। যাহার ইন্দ্রিয় অবশীক্ত, তাহার বুদ্ধি আত্ম বিষয়ে প্রবৃত্ত হয় না; স্ত্রাং তাহার আত্ম বিষয়ক চিস্তার সম্ভাবনা থাকে না; আত্মচিস্তানা হইলে ভাহার শান্তিরও উদয় হয় না; শান্তি খুন্য ব্যক্তির কি **(ह्जू ऋथ इहेर्द ? यन यपि विवास-विवत्न कार्ती** ইন্দ্রিয় গণের অমুগামী হয়, তবে বায়ু বে প্রকার প্রমাদবান কর্ণধারের নৌকাকে জলে ভ্রমণ করায়, সেই প্রকার ঐ যোগী ব্যক্তির বৃদ্ধিকে বিষয়ে বিকিপ্ত করে। অতএব হে মহাবাছ! বাহার ইন্দ্রির সকল তত্তৎ বিষয় শক্ষাদি হইতে সর্বপ্রকারে নিগৃহীত হর, তাহার প্রজ্ঞা প্রতিষ্ঠিতা হইরা থাকে। সা-भारत थानी अकटनत शत्क आश्वनिष्ठी, निमा श्वरूश হইরা থাকে। এ আত্মনিষ্ঠা-নিশাতে ইন্দ্রির নিগ্রহ-কারী বোগী ব্যক্তি জাগরণ করেন। অপর সাধারণ

প্রাণী, যে বিষয় নিষ্ঠাতে জাগরণ করেন, তাহা আত্ম-দৰ্শী সুনির পক্ষে নিশা স্বৰূপ হইয়া থাকে, তাহাতে তিনি জাগরিত থাকেন না। জলরাশি-পূর্ণ অচল-ভাবে অবস্থিত সমুদ্রে বেমন জল প্রবেশ করিয়া লীন হয়, সেইৰূপ যে যোগী পুৰুষে কামনা সকল প্রবেশ করিয়া লীন হইয়া যায়, তিনিই শান্তি লাভ করেন ; অপর—বিষয়কাম ব্যক্তি তাহা লাভ করিতে পারে না। যে পুরুষ প্রাপ্ত-সকল বিষয়ে উপেক্ষা-কারী, অপ্রাপ্ত বিষয়ে স্পৃহা রহিত ও নিরহন্ধার, স্থ-তরাং ভোগসাধন বস্তুতে মমতা-পুন্য হইয়া প্রারক্ষ কর্ম বশত ভোগ্য বস্তুর উপভোগ করেন, তিনিই শান্তি লাভ করেন। হে পার্থ। ব্রহ্মনিষ্ঠা এই প্রকার हरा। श्रुक्तव हेरा नाज कतितन त्यार श्राश्च रून ना। যদি মৃত্যু সময়েও ইহাতে অবস্থান হয়, তাহা · হইলেও ব্ৰহ্মেতে লয় প্ৰাপ্তি হয়; তবে যাবজ্জীবন ইহাতে স্থিতি করিলে তাহার আর বক্তব্য কি ?

সাংখ্যবোগ কথন পঞ্চবিংশতিতম অধাায় সমাপ্ত॥২৫॥

অর্জুন কহিলেন, হে জনার্দন! যদি জ্ঞানই কর্মা
অপেকা শ্রেষ্ঠ বলিয়া তোমার অভিপ্রেড, তবে হে
কেশব! হিংসাত্মক কর্মে আমাকে কি হেতু নিয়োগ
করিতেছ? কোথাও কর্মের প্রশংসা, কোথাও বা
জ্ঞানের প্রশংসা করিয়া মিশ্রিত বাক্য-দ্বারা যেন
আমার বৃদ্ধিকে বিমোহিত করিতেছ, তাহা না
করিয়া ঐ উভয়ের মধ্যে এক বিষয় নিশ্চয় করিয়া
বল, যে তাহার অমুষ্ঠান করিয়া আমি শ্রেয় লাভ
করিতে পারি।

ভগবান কহিলেন, হে অনহ! জ্ঞানভূমিতে আকঢ় শুক্ষচিত্ত ব্যক্তিদিগের প্রতি ধ্যানাদি-ছারা ব্রহ্মনিষ্ঠা আর জ্ঞানভূমিতে অনাকঢ় কর্ম-যোগাধিকারি ব্যক্তিদিগের জ্ঞানভূমিতে আরোহণের উপায়
ভূত চিত্তশুদ্ধি সাধন কর্মযোগ-ছারা ব্রহ্মনিষ্ঠা এই
ছই প্রকার নিষ্ঠা পূর্ব্বাধ্যারে আমি বলিরাছি।

चामि कर्चायां ७ खानयांत्र धरे घरे विवस्त পরস্পর নিরপেক ভাবে পৃথক্ রূপে মোক্ষ সাধন विन नारे त्य के छेलत्र विवस्त्रत मत्था अरू विवत्र नि-শ্চর করিয়া বলিবার নিমিত্তে আমাকে ভোমার প্রশ্ন করা সঙ্গত হইতে পারে। পুরুষ কর্মামুষ্ঠান ব্য-তিরেকে জ্ঞান উপভোগ করিতে পারে না এবং বিনা কর্মজনিত চিক্ত জিতে কেবল সংন্যাস মাত্র-षाता भाक लाज यशिकाती रहा ना। कि छानी कि ष्ण्ञानी কেহই কোন অবস্থাতে ক্ষণমাত্রও কর্ম না করিয়া থাকিতে পারে না, যেহেভূ সকলেই স্বভাব-জাত রাগ দ্বোদি গুণের পরতন্ত্র হইয়া কর্মে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে; অতএব এম্বলে কর্মেতে যে আসক্তি না থাকা, তাহাকেই সংন্যাস বলিয়া জ্ঞাত হইবে। যে ব্যক্তি বাক্য পাণি প্রভৃতি কর্মেন্দ্রিয় সকল সংযত করিয়া অ্ব্যুংকরণে বিষয় স্মরণ করত অবস্থিতি করে, সেই বিষুঢ়চিত্ত ব্যক্তিকে মিথ্যাচার বলা যায়। পরম্ভ যে ব্যক্তি মন দ্বারা শ্রোতাদি জ্ঞানেন্দ্রিয় সকল সংযত করিয়া কলাভিলাব রহিত হইয়া কর্মেন্দ্রিয় দারা কর্মৰূপ উপায় অনুষ্ঠান করেন, তাঁহাকে জ্ঞান-বান্বলাযায়। অতএব হেকৌন্তেয়! তুমি নিয়-মিত কর্ম নির্বাহ কর, বেহেতু কর্ম না করা অপে-কা কর্ম করা শ্রেষ্ঠ; প্রত্যুত কর্মে নির্ভ হইলে তোমার শরীর নির্বাহই হইবে না। কিন্তু ঈশ্বরারা-ধনার্থক ভিন্ন কর্ম মাত্রই লোকের বন্ধন কারণ হয়, অতএব তুমি নিছাম হইয়া ঈশ্বরারাধনার্থে কর্মা-চরণ কর। প্রজাপতি পুরাকালে যজ্ঞাধিকার সহ-কারে ত্রাহ্মণান্দি প্রজা স্থটি করিয়া তাঁহাদিগকে কহিয়াছিলেন, "ভোমরা এই যক্ত কার্য্যদারা উত্ত-রোত্তর বর্দ্ধিত হও, এই যক্ত তোমাদিগের অভীফ ভোগপ্রদ হইবেক। তোমরা এই যজ্জনারা দেবতা-দিপকে বর্জিত করিবে, এবং দেবতারাও বৃষ্ট্যাদি-ছারা অন্ন উৎপন্ন করিয়া তোমাদিগকে বন্ধিত করি-বেন। এই ৰূপে দেবভারা ও ভোমরা পরস্পর সং-বর্জিত হইয়া পরম জের লাভ করিতে থাকিবে।

দেবগণ যজে বৰ্জিত হইয়া ইটি আদি-ছারা তোমা-দিগকে অভিলবিত ভোগদ্ৰবা প্ৰদান করিবেন, অত-এব যে ব্যক্তি সেই দেবগণের দত্ত অলাদি তাঁহা-দিগকে না দিয়া ভোগ করিবে, তাহাকে তক্ষর विनया कानित्व। याँश्रांता तेष्यतम्वापि यटछत्र व्यव-শিষ্ট অন্ন ভোজন করেন, সেই সাধুরা পঞ্চস্থনা জনিত পাপ হইতে মুক্ত হন। আর যাহারা কেবল আপনার নিমিত্তে অন্ন পাক ক্রে, সেই ছুরাচারেরা কেবল পাপই ভোগ করিতে থাকে।" অন্ন ছইতে ष्ट्र नमस्, शर्द्धना रहेट अन्न, युद्ध रहेट शर्द्धना, যজমানাদির ব্যাপার ছইতে যজ্ঞ, বেদ হইতে যজ-মানাদির ব্যাপার এবং অক্ষর ব্রহ্ম হইতে বেদ উৎ-পন্ন জানিবে। অতএব যখন কর্মাই জগৎরকার মূল, তখন জগৎকর্তার বাক্য ৰূপ বেদ সর্বার্থ গত হইলেও তাহার তাৎপর্য্য সর্ব্বদা যজ্ঞেই প্রতিষ্ঠিত বাধ করি-তে इट्रेंट । ঈশ्বর-বাক্য-বেদ इट्रेंट পুরুষের কর্মে প্রবৃত্তি হয়, কর্মা নিষ্পন্ন হইলে তদ্ধারা পর্জ্জন্য, পৰ্জন্য দারা অন্ন, অন্ন দারা ভূত সকল পালিত হইয়া থাকে, এই ৰূপে প্ৰবৰ্ত্তিত যে জগৎচক্ৰ, তা-হার প্রতি ইহ লোকে যে ব্যক্তি অনুবর্ত্তী না হয় অথাৎ কৰ্মামুঠান না করে, তাহার আয়ু পাপ স্বৰূপ হয়। হে পার্থ! এতাদৃশ ব্যক্তি ইন্দ্রিয় উপভোগেই আরাম করিয়া থাকে, স্থতরাং সে র্থা জীবন ধারণ করে। কিন্তু যে মনুষ্য আত্মাতেই প্রীতিযুক্ত, আ-ত্মানন্দ উপভোগেই চরিতার্থ, স্থতরাং আত্মাতেই সম্ভ্রুট, তাঁহার কর্ত্তব্য কর্ম্ম নাই; যেহেতু তাঁহার কর্ম্ম করা জন্য পুণ্য বা না করা জন্য প্রত্যবার জন্মে না, এবং মোক্ষ নিমিত্তে ব্রহ্মাদি স্থাবর পর্যান্ত কোন স্থুতের মধ্যে কাহাকেও আত্রয় করিতে হয় না। রখন এতাদৃশ জ্ঞানী পুরুষের পক্ষে কর্ম্মের অপেকা করে না, অপরের পক্ষে অপেকা করে, তখন তুমি স্তত কলাসক্তি রহিত হইয়া অবশ্য-বিধেয় কর্মের আচরণ কর, কেননা পুরুষ কলাসক্তি রহিত হইয়া কর্মাচরণ করিবে ভক্ষনা চিত্ত শুদ্ধি দারা মোক

লাভ করিতে পারে। জনক প্রভৃতি মহাজারা কর্ম দারাই সমাক্ জ্ঞান লাভ করেন। বদ্যপি ভূমি আপ-নাকে সমাক্ জ্ঞানী বিবেচনা করিয়া থাক, তথাপি লোক রক্ষার প্রতি দৃটি রাখিয়া অর্থাৎ "আমি কর্ম করিলে লোকে কর্ম্মে প্রবৃত্ত হইবে, নতুবা আমার দৃফীন্তে অজ্ঞানীরাও স্ব স্ব ধর্মা নিত্য কর্মা পরিত্যাগ করিয়া পতিত হইতে পারে," এরপ বিবেচনা করি-রাও তোমার কর্ম করা উচিত। শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি যে যে কর্ম করেন, ইতর ব্যক্তিরা সেই সেই কর্মাই করিয়া খাকে, শ্ৰেষ্ঠ জন কৰ্ম প্ৰবৰ্ত্তক বা কৰ্ম নিবৰ্ত্তক যে শা-স্ত্রকে প্রমাণ বলিয়া চলেন, লোকে তাহারই অমুবর্জী হয়। হে পার্থ! ত্রিলোক মধ্যে আমার কোন কর্মই করিবার প্রয়োজন নাই, যেহেতু আমার অপ্রাপ্ত বা প্রাপ্তব্য কিছুই নাই; তথাপি আমি কর্ম করিয়া থাকি। হে পার্থ! যদি আমি নিরলস হইয়া কদাচিৎ কর্মানুষ্ঠান না করি, তবে মনুষ্যেরা সর্ব্ব প্রকারে আমারই পথে অমুবর্তী হইতে পারে। যদি আমি কর্মা না করি, তবে এই সমস্ত লোক কর্মা না করিয়া ধর্মা লোপ দ্বারা উৎসন্ন হইতে পারে, এবং আমা হইতে বর্ণসঙ্করও উৎপন্ন হইতে পারে, তাহা হইলে আমার প্রজা সকলকে মলিনভাবাপন্ন করা হয়। অতএব হে ভারত! অজ্ঞ ব্যক্তিরা কর্মে আসক্ত হই-त्रा रायन कर्म करत, कानी वाकिও लाक तका b-কীৰ্বু হইয়া আসক্তি ত্যাগ-পূৰ্ব্বক সেই ৰূপ কৰ্ম করিয়া থাকেন। কর্মেতে আসক্ত অজ্ঞদিগের প্রতি আত্মোপদেশ করিয়া কর্ম বিষয়ক বুদ্ধির অন্যথা ভাব জন্মাইয়া দেওয়া বিদ্বান্ ব্যক্তির উচিত নয়। প্রভ্যুত, অবহিত হইয়া স্বয়ং কর্মাচরণ করত ভাহাদিগকে কর্মে প্রবৃত্ত করাই উচিত। ইন্দ্রিয়াদিতে আত্ম জ্ঞান নিৰন্ধন যাহার বুদ্ধি বিষ্ণু হয়, সেই ব্যক্তি সন্তু, রজ ও তম গুণের সাম্যাবস্থাৰপ প্রকৃতির কার্য্য-हेलिय कर्ड्क गर्व थाकात कियमान त्य कर्य मकल, ভাহা আমি করিতেছি বলিরা মনে করে। হে মহা-বাছ! ইন্সিয় ও কর্মের বিভাগতত্ত্বিৎ পুরুষ, ইন্সিয়

সকলই বিষয়ে প্রবৃত্ত হইরা থাকে, আমি প্রবৃত্ত হই না, এই ৰূপ বিবেচনা করিয়া তাহাতে আসক্ত হন না। যাহারা প্রকৃতির সন্ত্রাদি গুণে সম্যক্ মোহিত हरेया हेन्द्रिय ७ उ९कार्या जानक रूप्त, नर्सक स्नानी ব্যক্তি সেই অপ্সজ্ঞ মন্দমতি দিগের বুদ্ধিকে বিচ-লিত করিয়া দিবেন না। অতএব যথন তত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তিরও কর্ম কর্ত্তব্য নিশ্চয় হইতেছে এবং ভূমিও অদাপি তত্ত্বজ্ঞ হও নাই, তথন তুমি অধ্যাত্মজ্ঞান দারা অর্থাৎ ' আমি অন্তর্যামী ঈশ্বরের অধীন হইয়া কর্ম করি ' এই ৰূপ বুদ্ধি দ্বারা আমার প্রতি সমস্ত কর্ম অর্পণ করিয়া নিষ্কাম হইয়া—' এই কর্ম আ-মার ফল সাধন ' এৰপ মমতা জ্ঞান ও শোক রহিত হইয়া যুদ্ধ কর। যে মানবেরা আমার প্রতি অন্থয়া রহিত ও শ্রদ্ধাবন্ত হইয়া আমার এই মতের নিত্য অমুষ্ঠান করেন, তাঁহারা শনৈ শনৈ কর্ম করিতে कतिए मण्पूर्ग कानीत नाम कर्म इरेए विमुक्त হন। আর যাহারা আমার এই মতকে নিন্দা করত ইহার অনুষ্ঠান না করে, সেই সর্বজ্ঞান-বিমৃঢ় অবি-दिकी वाक्ति मिश्रदक विनाम श्रीक्ष विनाम जानित्व। গুণ দোষজ্ঞ ব্যক্তিও স্বকীয় প্রাক্তন কর্ম জন্য প্রক্ল-তির –স্বভাবের অন্ত্রূপ কর্মেরই চেফা করিয়া ধাকেন, বেহেতু প্রাণী মাত্রই প্রকৃতির অনুবর্তী হয়, এমত স্থলে আমার বা অন্যের নিষেধ তাহাদিগের কি করিবে? প্রত্যুত, প্রত্যেক ইন্দ্রিয়ের স্ব'স্থ বিষয় অমুকুল হইলে তাহাতে অনুরাগ ও প্রতিকুল হইলে তাহাতে দ্বেষ অবশ্যই হইয়া থাকে বটে, কিন্তু তাহা হইলেও ঐ রাগদ্বেষের বশতাপন্ন হওয়া কর্ত্তব্য নয়, যেহেতু উহা মোক্ষাকাঙ্গনী ব্যক্তির বিরোধী হয়। আর সম্পূর্ণ ৰূপে অনুষ্ঠিত প্রধর্ম অপেকা অঙ্গহীন व्यक्त्रं ७ त्वात, त्कनना व्यवत्य निधन ७ वर्ग माधन हत्र, **এবং পরধর্ম নিবিদ্ধ, এজনা নরক জনক হয়।**

অর্জুন কহিলেন, হে র্ফি-নন্দন! পুরুষ ইচ্ছা না করিলেও যেন কেহ তাহাকে বল-পূর্বাক পাপ কর্ম করিতে নিযুক্ত করে, অতএব পুরুষ কাহা কর্তৃক প্রযুক্ত হইয়া পাপাচরণ করে?

जनवान कहिलान, जर्ज्जून! जूमि शूकरवेत्र शीना-চরণে বে হেতু জিজাসা করিলে, উহা কাম; উহা কোন কারণে প্রতিহত হইলে ক্রোধ ৰূপে পরিণত रत्र। थे कामरक स्माक পথের বৈরী জানিবে; উহাকে দান ৰারা পরিতৃপ্ত বা সাম ৰারা ক্ষান্ত করা যায় না। উহা রজ গুণু হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে, অতএব সন্তুর্দ্ধি দারা রজ্ঞ গুণকে ক্ষরিত করিতে পারিলে উহার উৎপত্তি হইতে পারে না। ষেপ্রকার, धूम बाता वड़ि, मल बाता जामर्भ এवং कताबू बाता গর্ভ আর্ত হয়, সেই প্রকার কাম দ্বারা বিবেক জ্ঞান আরত হইয়া থাকে। হে কুন্তীনন্দন। ফু:সম্ভোষণীয়, অনল তুলা সম্ভাপপ্রদ এবং জ্ঞানীগণের নিত্য বৈরী স্বৰূপ যে কাম, তাহা বিবেক জ্ঞানকে আবরণ করিয়া রাথে। বিষয় দর্শনাদি, সংকল্প ও অধ্যবসায় দ্বারা কামের আবির্ভাব হইয়া থাকে, এই হেতু চকুঃ প্রভৃতি ইন্দ্রিয়, মন ও বুদ্ধিকে ঐ কামের অধিষ্ঠান-ভূত বলা যায়। ঐ কাম দর্শনাদি ব্যাপার বিশিষ্ট ঐ সকল ইন্দ্রিয়াদি দ্বারা বিবেক জ্ঞানকে আর্ত করিয়া দেহীকে বিমোহিত করে। অতএব হে ভরতকুলেক্র! তোমাকে বিমোহিত করণের পূর্কেই ভূমি ইন্দ্রি-য়াদি সংযত করিয়া জ্ঞান বিজ্ঞান বিনাশক পাপৰূপ কাম পরিত্যাগ কর। ইন্দ্রিয় সকল দেহাদিকে গ্রহণ করে, স্বতরাং দেহাদি হইতে ইন্দ্রিয় সকল সুক্ষা ও তাহাদিগের প্রকাশক হয়, এজন্য ইন্দ্রিয় সকলকে দেহ হইতে শ্রেষ্ঠ বলিয়া পণ্ডিতেরা কহিয়াছেন। মন ইন্দ্রিয়গণকে প্রবৃত্ত করে, এ নিমিত্তে মন ইন্দ্রিয় সকল হইতে ভ্রেষ্ঠ হয়। বুদ্ধির নিশ্চয়াত্মকত্ব শক্তি আছে, এই হেতু সংকণ্পাত্মক মন অপেক্ষা নিশ্চয়া-মক বুন্ধি ত্রেষ্ঠ হয়। এবং সেই বুন্ধির সাক্ষীরূপে যিনি অবস্থান করেন, তিনি বুদ্ধি হইতে শ্রেষ্ঠ হন, তিনিই আত্মা শব্দে ৰাচ্য। হে মহাবাছ! এই ৰূপে সেই আন্থাকে বৃদ্ধির অতীত জানিয়া বৃদ্ধি দারা মনকে নিশ্চল করিয়া ছ্রাসদ কাম ৰূপ শত্তকে বিনাশ কর। कर्मारवाभ नाटम वक्षिश्न अशात नुमाश । २७।

ভগবান কহিলেন, হে শক্তাপন! প্ৰায় কল নাখন এই বোগ আমি পূৰ্বে আদিত্য বিবস্থান্কে কহিয়াছিলান, বিবস্থান স্থীয় পূক্ত মমুকে বলেন, এবং মমু ইক্ষাকুকে কহেন; এই ৰূপে পরম্পরাগত এই যোগ রাজর্ষি গণ অবগত হন; দীর্ঘ কাল বশত এক্ষণে এ যোগ বিনই হইয়া গিয়াছে। তুমি আমার ভক্ত ও সথা এবং এই যোগও উৎকৃষ্ট, এই হেতু অদ্য তোমাকে এই পুরাতন যোগ বলিলাম।

অর্জুন কহিলেন, বিবস্থানের জন্ম পূর্বে এবং তোমার জন্ম পরে হয়, অতএব তুমি যে পূর্বে বিব-স্থান্কে এই যোগ কহিয়াছিলে, ইহা কি প্রকারে আমি বোধ করিতে পারি ?

ভগবান কহিলেন, হে শত্রুতাপন অর্জুন! আমার এবং তোমার বহু জন্ম অতীত হইয়া গিয়াছে, কিন্তু আমার জ্ঞান শক্তি বিলোপ না হওয়ায় এসেই সমস্ত জানিতেছি; তুমি অজ্ঞানার্ত, এজন্য জানিতে পারি-তেছ না। আমি জন্ম রহিত, অনশ্বর স্বভাব এবং সমন্ত প্রাণীর নিয়ন্তা হইয়াও স্বেচ্ছা-পূর্বেক বিশুদ্ধ-সন্ত্রাত্মক প্রকৃতিকে অবলম্বন করিয়া জন্ম পরিগ্রহ করিয়া থাকি। হে ভারত। যখন যখন ধর্ম্মের হানি ও অধর্মের আধিক্য হয়, তথন তথন আমি আপ-নার শরীর স্থাটি করিয়া সাধুদিগের পরিত্রাণ ও তুষ্ণমীদিগের বিনাশ করিয়া ধর্ম সংস্থাপন করিবার নিমিত্তে যুগে যুগে অবতীর্ণ হই। হে অর্জুন! ষিনি আমার এই ৰূপ অলৌকিক জন্ম কর্ম্ম পরামু-এহ নিমিত্ত বলিয়া জানেন, তাঁহাকে দেহ ত্যাগ করিয়া আর জন্ম গ্রহণ করিতে হয় না, প্রত্যুত, তিনি আমাকে প্রাপ্ত হন। অনেকে রাগ, ভয় ও ক্রোধ বিহীন, আমার প্রতি একনিষ্ঠ এবং আমারই আত্রিত হইয়া আজ্ঞান ও স্বধর্মামুঠান দারা অজ্ঞান মলা হইতে পুত হইরা মদীর ভাব লাভ করিরাছে। হে পার্থ। বাহারা যে প্রকারে আমাকে ভলনা করে, আমি তাহাদিগকৈ তদমুৰূপ ফল প্রদানে অমুগ্রহ করিয়া থাকি, থেহেতু ভাহারা

বে কোন প্রকারে হউক, আমারই বল্পে অমুবর্তী হইরা থাকে। এই মর্ত্য লোকে প্রায় মমুবোরা কর্ম কল আকাজ্কা করিয়াই ইন্সাদি দেবতা দিগকে যঞ্জন করে, দাক্ষাৎ আমার উপাসনা করে না, কেননা ৰুৰ্মজ কল শীঘ্ৰই কলিত হুইয়া থাকে, এবং চুৰ্লভ क्कान कल रेक्वला भीख लाख रहा ना। बाक्सामिएशत मञ्जूश्चन व्यथान, जाँशामिटशत कर्कमम मर्गाम; कल्या দিগের সত্ত্ব ও রজগুণ প্রধান, তাহাদিগের কর্ম শৌর্যা যুদ্ধাদি; বৈশ্যদিগের রক্ত ও তম গুণ প্রধান, তাহাদিগের কর্মা ক্লবি বাণিজ্যাদি এবং পুত্রদিগের তম গুণ প্রধান, তাহাদিগের কর্মা ত্রিবর্ণ শুক্রাবাদি; এই ৰূপে গুণ কর্মের বিভাগ ক্রমে আমিই চাতু-র্ববণ্য স্থাটি করিয়াছি। আমি এই কার্য্যের কর্জা হই-লেও তুমি আমাকে অকর্তা বলিয়া জানিবে, যেহেতু এই কর্মে আমার আসজি রাহিত্য নিবন্ধন শ্রমের প্রসক্তি নাই। বিশ্বস্থি আদি কর্ম সকল আমাতে लिश्व रहेए পाद्र ना, खरहजू कर्म करल जामात्र স্পৃহা নাই; যে ব্যক্তি আমাকে এই ৰূপ জানিতে পারে, সে কর্মে আবন্ধ হয় না। অহঙ্কার ব্যতি-রেকে ক্রত যে কর্মা, তাহা বন্ধের কারণ হয় না, এই ৰূপ জানিয়া জনকাদি পূৰ্বতন মহাত্মারা মুমুক্ হইয়া সত্ত্রশুদ্ধি নিমিত্তে কর্মা করিয়াছিলেন, অতএব তুমিও সেই পূর্বতন পুরুষদিগের সেবিত বেদাক্ত কর্ম্ম সত্ত্বশুদ্ধি নিমিত্তে আচরণ কর।

কীদৃশ কর্ম কর্ত্ব্য এবং কীদৃশ কর্মই বা অকর্ত্ব্য এ বিষয়ে বিবেকী ব্যক্তিরাও মোহিত হই রা থাকেন, অতএব যে ৰূপ কর্ম করিলে সংসার হইতে বিমৃক্ত হইবে, তাহা তোমাকে বলিতেছি শ্রুবণ কর। শাস্ত্র বিহিত কর্ম, শাস্ত্র নিষিদ্ধ কর্ম ও সংন্যাস এহণ-পূর্বক শাস্ত্রোক্ত কর্ম ত্যাগ এই ত্রিবিধ কর্ম্মেরই মর্ম্ম জানা কর্ত্ব্য, কেননা এই ত্রিবিধ কর্ম্মের গতি অভি তুর্ত্তের। যিনি দেহ ও ইন্দ্রিরাদি ব্যাপার বর্ত্ত্যান ধাকিতেও আ্লার দেহাদি ব্যতিরেক ভাবের অক্ষুত্রব দারা স্বাভাবিক নিক্ষম ভাব দৃষ্টি করেন, এবং ক্লান

রহিত যে কাম্য কর্ম, তাহা ছুঃখ জনক বোধ করিরা তাহার পরিত্যাপকে কর্ম বলিয়া বোধ করেন, তিনি মানৰ গাণের মধ্যে বুজিমান্ এবং তাঁহার যদৃচ্ছা প্রাপ্ত আহারাদি সমুদায় কার্যাসত্ত্বেও কর্তৃত্ব ভাব রহিত আত্ম জ্ঞান দ্বারা সমাধিতাবে অবস্থান করা হয়। খাঁহার কর্ম সকল কল কামনা রহিত হয়, তাঁ-हात महे निकाम कर्ष बाता ठिख एक हिरान छान জ্ঞানে, তথন কর্ম্মে আর প্রবৃত্তি না থাকায় কর্ম্ম করি-বার প্রয়োজন থাকে না, স্থতরাং জ্ঞানাগ্নি দারা কর্মা সকল দগ্ধ হইয়া যায় অর্থাৎ অকর্ম ভাব প্রাপ্ত হয়; এমত ব্যক্তিকেই পণ্ডিতেরা পণ্ডিত বলিয়াছেন। যিনি কর্ম ও তৎকলে আসক্তি পরিত্যাগ করিয়া নিতা-নিজানন্দে পরিতৃপ্ত এবং অপ্রাপ্ত বিষয়ের চেন্টা ও প্রাপ্ত বিষয়ের রক্ষা করণে আত্ময়ণীয় রহিত হন, তিনি শাস্ত্র বিহিত বা স্বাভাবিক কর্ম্মে সর্ব্ব-তোভাবে প্রবৃত্ত থাকিলেও কিছু মাত্র কর্ম্ম করেন না অর্থাৎ তাঁহার কর্ম সকল অকর্ম ভাব প্রাপ্ত হয়। খাঁহার কামনা নাই, চিন্ত ও দেহ বশীভূত এবং বিষয় পরিগ্রহ ত্যাগ হইয়াছে, কেবল শরীর মাত্র নির্বাহ যোগ্য কর্ম্ম করিয়া থাকেন, তিনি বিহিত कर्म ना कता जना लाटिय लायी इन ना। यिनि ज्ञान ৰ্খিত লাভে সম্ভফ, শীত উষণদি দ্বন্দ সহিষ্ণু, শত্ৰুতা ভাব রহিত এবং অপ্রার্থিত লাভের সিদ্ধি হউক বা অসিদ্ধিই হউক, তাহাতে হর্ষ বিষাদ রহিত, তিনি বিহিত বা স্বাভাবিক কর্মা করিয়াও সংসারে বন্ধ হন না। যিনি রাগ ছেবাদি হইতে বিমুক্ত, যাঁহার কামনা নাই এবং জ্ঞান ৰূপ পরমেশ্বরে চিত্ত অবস্থান করে, অমত ব্যক্তি পরমেশ্বরারাধনার্থ কর্মাচরণ করিলে, ভাঁহার সকাম কর্মও বিলীন হইয়া যায়, অর্থাৎ অকর্ম ভাব প্রাপ্ত হয়। জ্ঞানী ব্যক্তি কর্ম ও তদ-ক্ষেতে ব্রহ্মকেই অনুস্থাত দেখেন ;—যদ্ধারা ঘৃতাদি অগ্নিতে অর্পণ করা যায়, সেই শ্রুবাদি পাত্র ব্রহ্ম; মৃত্যাদি যাহা অর্পণ করা যার, তাহাও ব্রহ্ম; যে অগ্নি-তে হবন করা যায়, সেই অগ্নিও ব্রহ্ম ; ভাহাতে যিনি

হোম করেন, সেই কর্ডাও ব্রুল; ব্রুলই হবন করিয়া থাকেন ; অতএব এতাদৃশ কন্মাত্মক ত্রন্ধেতে বাঁহার চিত্তের একাথতা, তাঁহার প্রাপ্য কল ব্রহ্মই, অন্য किছू नटि। कर्ष-यांशीता, बाहार्ट हेन्स वक्नमानि দেবতার যজন করিতে হয়, এতাদৃশ দৈব যজের অমু-ষ্ঠান শ্রন্ধা সহকারে করিয়া থাকেন। জ্ঞান যোগীরা কর্ম্মে ব্রহ্ম অনুস্থাত বৌধে পূর্ব্বোক্ত প্রকারে কর্মা-ত্মক ব্ৰহ্ম-যজ্ঞ ৰূপ উপায় দায়া ব্ৰহ্ম ৰূপ অগ্নিতেই यक्ष निर्याह करतन। निष्ठिक खन्नानीता त्यावानि ইন্দ্ৰিরগণকে তত্তৎ ইন্দ্ৰিয় সংযম ৰূপ অগ্নিতে হবন করেন। গৃহস্থেরা শব্দাদি বিষয় সকলকে তত্তৎ ইন্দ্রিয় ৰূপ অগ্নিতে হোম কৰ্ম নিৰ্ব্বাহ করিয়া থাকেন। ধ্যান-নিষ্ঠ যোগীরা, শ্রোত্রত্বক্-প্রভৃতি জ্ঞানেন্দ্রিয়ের কর্ম যে ভাবণ স্পর্শনাদি, বাক্পাণি-প্রভৃতি কর্মেন্দ্রিয়ের কর্ম যে ৰুচন গ্রহণাদি ও প্রাণ অপান-প্রভৃতি বায়ু সকলের কর্ম যে শ্বাস প্রশ্বাসাদি, তাহাদিগকে জ্ঞান প্রজ্বলিত যে আত্ম সংযম—আত্মাতে ধ্যানের একা-গ্ৰতা—যোগৰপ অগ্নি, তাহাতে হবন করেন, অর্থাৎ ধ্যেয় ব্ৰহ্মকে সমাকৃ জানিয়া ভাঁছাতে মনঃসংষ্ম করিয়া সমস্ত কর্মা উপরত করিয়া থাকেন। কোন কোন প্রযন্ত্রশীল তীত্রতথারী মন্ত্রেরা দ্রব্যদান-ৰূপ যজ্ঞ নিৰ্ব্বাহ করেন ; কোন কোন যত্নশীল তীক্ষ্ণ-ত্রত মনুষ্যেরা কৃচ্ছু চান্দ্রারণাদি তপস্যা ৰূপ যচ্ছের অনুষ্ঠান করেন; কোন কোন যত্নবান্ তীব্রব্রত মমূ-বোরা চিত্তর্ত্তি নিরোধ-ছারা সমাধিৰূপ যত করেন; কোন কোন প্রযত্নশীল তীক্ষ্বত মানবেরা বেদাধ্যয়ন ৰূপ যজ্ঞ করিয়া থাকেন এবং কোন কোন প্রযন্ত্রশীল কঠোরত্রত মমুব্যেরা বেদার্থজ্ঞানৰূপ যজ্ঞ নির্বাহ করিয়া থাকেন। কেহ কেহ বা প্রাণবায়ুকে অপান বায়ুতে হবন করিয়া পুরক নামক প্রাণায়াম করেন, অপান বায়ুকে প্রাণবায়ুতে হবন করিয়া রেচক না-मक প्राणाप्ताम करतन ज्वर श्वान ७ व्यान वासूत পতি রোধ করিয়া কুন্তক নামক প্রাণায়াম করিয়া ধাকেন। কেহ কেহ বা পরিমিতাহারী হইয়া প্রাণ-

প্ৰভৃতি বালু বিশেষেতে প্ৰাণ-প্ৰভৃতি ৰাষু বিশেষকেই হ্বন করিরা খাকেন অর্থাৎ তাঁহারা প্রাণ অপান व्यामित्र मरथा एवं बाह्यरक निसन्त करतन, जना वाह् छा-হাতে দীনপার হইরা থাকে। তাঁহারা সকলেই यक्कदरखा, डांश्निरभद्र উक्जक्षकात्र ममख यक्कदाता পাপক্ষর হইয়া থাকে, ভাঁহারা যজ্ঞ নির্বাহ করিয়া যক্স শেষে অমৃতৰূপ অনিবিদ্ধ অন্ন ভোজন করিয়া থাকেন, এতাদৃশ জ্ঞানীরা জ্ঞান-দারা সনাতন ব্রহ্ম প্রাপ্ত হন। হে কুরুসন্তম! যিনি এই সমস্ত যজের কোন এক বজ্ঞেরও অনুষ্ঠান না করেন, তাঁহার পক্ষে এই অত্প সুখবিশিষ্ট মনুষ্য লোকই থাকে না, অন্য বছস্থজনক স্বৰ্গ লোকের বিষয় কি ? এইৰূপ বছ প্রকার ষজ্ঞ যে, সাক্ষাৎ বেদে বিহিত হইয়াছে, সেই সমস্তকে বাচিক, মানসিক ও কায়িক কর্ম জনিত বলি-য়াই জানিবে, আত্মার সহিত তাহাদিগের কোন সম্পর্ক নাই; এই ৰূপ জানিলে তুমি সংসার হইতে বিমুক্ত रुरेदा। द পরস্তপ পার্থ! फ्रवामस देमवामि यञ्ज रहे-তে জ্ঞান যজ্ঞ শ্রেষ্ঠ হয়, কেননা কলের সহিত সমস্ত কর্মাই জ্ঞানে পরিসমাপ্ত হইয়া থাকে। তুমি, সমাগ্-मर्भी क्वांनी आंठार्रापिरगंत्र मसीर्थ गंसन-श्रृंबंक जिंक শ্রদ্ধা সহকারে নমস্কার, সেবা ও প্রশ্ন করিয়া জ্ঞান লাভ কর ; তাঁহারা তোমার ভক্তি শ্রদ্ধাদিতে অনু-কুল হইরা জ্ঞানোপদেশ, করিবেন। হে পাণ্ডুনন্দন! সেই জ্ঞান লাভ করিলে তুমি আর এৰপ মোহ প্রাপ্ত হইবে না, সমস্ত ভূতগণ আত্মাতেই দেখিতে পাইবে; অনন্তর, পরমাত্মা স্বৰূপ যে আমি, আমাতে আপনাকে অভেদ ৰূপে দেখিতে পাইবে। ভূমি যদি সমুদয় পাপকারী হইতেও অধিক পাপী হও, তথা-পি জ্ঞান পোত বারাই সেই পাপ সমুদ্র হইতে উত্তীর্ণ हरेरत। अर्ज्जून! स्व श्वकात जनस अभि कार्यर ভশ্মসাৎ করে, সেই প্রকার আত্ম জ্ঞান ৰূপ অগ্নি, প্রারন্ধ কর্ম ব্যতীত সমুদায় কর্মকে ভন্মীভূত করে। ইং সংসারে আত্মজ্ঞান সদৃশ পবিত্রকর বস্তু জার किष्रे नार । तर आयुकान कर्म वाश ७ नमाथि

र्यारभ नः निक्ष शुक्रव कोल कर्म अन्त्रहारन जाभ-নাতেই লাভ করিয়া থাকে। সংযতেন্দ্রিয় শ্রহ্মাবান্ তদেকনিষ্ঠ ব্যক্তিই সেই জ্ঞান লাভ করেন, জ্ঞান লাভ করিয়া অচির কালে পরম শাস্তি প্রাপ্ত হন। অনাত্মজ্ঞ, শ্রদ্ধাহীন ও সংশয়াত্মা, ইহারা সকলেই বি-नके इत्र, विल्विक मश्मत्राचा वाक्तित ना हेर लाक, ना পর লোক, না স্থখ, কিছুই থাকে না। হে ধনঞ্জয়! যাঁহার কর্ম সকল পরমেশ্বরের আরাধন ৰূপ যোগ ছারা পরমেশ্বরেতে সমর্পিত হয়, তাঁহাকে সেই কর্ম मकल कल बाता आवक्ष करत ना এवश याहात आजा বোধ দারা দেহাদি বিষয়ক অভিমান ছিল্ল হয়, সেই প্রমাদ রহিত পুরুষকে স্বাভাবিক কর্ম সকল বন্ধ করে না। অতএব হে ভারত! তুমি আপনার অজ্ঞান-সম্ভূত হৃদয়স্থ শোকাদি জনক এই সংশয়কে দেহাত্ম বিবেক জ্ঞান ৰূপ ঋড়্গ দ্বারা ছেদন করিয়া কর্ম্ম যোগ আশ্রয় কর, উত্থান কর।

জ্ঞান কর্মসন্ধ্যাস যোগনামক সপ্তবিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ২৭॥

অর্জুন কহিলেন, হে কৃষ্ণ! ভূমি শান্ত্রীয় কর্ম্মের পরিত্যাগ করিতেও কহিতেছ, আবার অমুষ্ঠান করি-তেও কহিতেছ, পরস্তু এই উভয়ের মধ্যে একটি যাহা শ্রেয় হয়, তাহাই নিশ্চয় করিয়া আমাকে বল।

ভগবান্ কহিলেন, কর্মের পরিত্যাগ ও অমুষ্ঠান
উভরই মোক্ষ সাধন, কিন্তু ঐ উভরের মধ্যে কর্মের
পরিত্যাগ অপেক্ষা অমুষ্ঠান, বিশিক্ট হয়। হে মহাবাছ! যিনি ছু:খ, স্থুখ ও তৎ সাধনে দ্বেষ বা আকাক্ষা না করেন, তিনি পরমেশ্বর-প্রীতি নিমিত্তে
কর্মামুষ্ঠারী হইলেও তাঁহাকে নিভ্য সন্মাসী বলিয়া
জানিবে, ষেহেতু সেই নির্দ্দ পুরুষ নিজাম কর্মা
জন্য চিন্ত শুদ্দি দারা অনারাসেই সংসার হইতে
মুক্ত হইতে পাঁরেন। অজ্ঞ ব্যক্তিরাই কর্মা সন্মাস্ত প্র
কর্মামুষ্ঠান এই ছইয়ের পৃথক কল বলিয়া পাতে,
প্রিতেরা তাহা বলেন না, যেহেতু ঐ উভরের মধ্যে

একের সম্যক্ অমুষ্ঠান করিলেও উভয়ের বে একই মোক কল, তাহাই লাভ হইয়া থাকে। জ্ঞান নিষ্ঠ বাক্তিরা যে শাক্ষাৎ মোক্ষ পদ প্রাপ্ত হন, স্বার্থকলা-ভিসন্ধি রহিত হইয়া যাঁহরা কর্মামুষ্ঠান করেন, তাঁ-হারাও জ্ঞান দারা তাহাই প্রাপ্ত হইয়া থাকেন, ষ্মতএব কর্ম সন্ন্যাস ও কর্মামুষ্ঠান উভয়কে এক कल জनक विलया यिनि এकहे (मर्थन, जिनिहे यथार्थ-দশী হন। হে মহাবাছ! কর্ম যোগ ব্যতিরেকে যে সন্মাস, তাহা ফুংখের নিমিত্তেই হর, থেহেতু নিদ্ধাম কর্মা জনিত চিত্ত জি ব্যতীত জ্ঞাননিষ্ঠার সম্ভাবনা নাই, পরস্ত কর্ম-যোগ-যুক্ত ব্যক্তি চিত্তশুদ্ধি দারা সন্ন্যাসী হইয়া অচির কালেই ত্রন্ধকে প্রত্যক্ষ করেন। তিনি বিশুদ্ধ-চিত্ত হইয়া শরীর ও ইন্দ্রির বশতাপন্ন করিয়া আত্মাকে দর্বভূতের আত্মা স্বৰূপ বোধ করেন, স্বাভাবিক বা লোক সংগ্রহার্থে কর্ম্ম করিয়াও ভাহাতে আবদ্ধ হন না। ক্রমে তত্ত্বজ্ঞ হইয়া দর্শন, আবণ, স্পর্শন, আত্রাণ, ভোজন, গমন, শয়ন, নিশ্বাস, প্রশাস, কখন, মল মূত্রাদি পরিত্যাগ, কোন বস্তুর গ্রহণ, উন্মীলন ও নিমীলন, এই সকল কর্ম্ম করিয়াও, ইন্সিয় সকল স্ব স্ব বিষয়ে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে, এই প্রকার বোধে 'আমি কিছুই করি না' এই ৰূপ নিশ্চয় করেন। যিনি তত্ত্বজ্ঞ না হন, এবং কর্ম-বোধে প্রবৃত্ত, এমত ব্যক্তি যদি কলাসক্তি পরিত্যাগ-

क ज्ञा कर्ज्क श्रज्य कर्य करागंत नार्रा, कर्य कल श्रद्धान दित श्रम्थ करागं करा करा करा करा रहेल जिति श्रम्थ करागंत नार्रा, कराय लिश्च रुन ना। कर्य-योगीता विश्व कि निमार कला मिल श्रिश्चाण करिया कांत्र बाता स्नानािम, मन बाता धान नामि, दुक्ति बाता ज्ञानिक्यािम व्यर कर्यााजिनियम तिरु हिम्बानकण बाता व्यव कीर्जनािम कर्य करिया। धारकन। श्रद्धान्य करिया क्यां कर्या कर्या करात्र श्राम-श्र्यक कर्या करिया स्वाम वांच रुत्त, जात्र श्रद्धान-श्र्यक कर्या करिया स्वाम वांच रुत्त, जात्र श्रद्धान-श्र्यक कर्या करिया स्वाम वांच श्रद्धा रुप्ता

वरक वक स्टेट स्य। . अक्षिति एमरी मा जम्र एकान কর্ম করেন, না অন্যকে কোন কর্ম্মে প্রবৃদ্ধ করেন। তিনি বিবেক বুদ্ধি দারা সমস্ত কর্ম পরিত্যাগ করিয়া নবদার যুক্ত দেহে অবহিতি মাত্র করেন। প্রভূ नेयत कीटवत कर्जुष, कर्म वा कल मश्रयात्र स्छि করেন না, জীবের অবিদ্যা প্রকৃতিই কর্ম্বে প্রকৃত হই-য়া থাকে। পরিপূর্ণ আঁপ্রকাম ঈশ্বর কাছারও পাপ পুণ্য গ্রহণ করেন না, 'ঈশ্বর সকলের পক্ষেই সমান' এই ৰূপ জ্ঞান, 'ঈশ্বরের নিগ্রহৰূপ দণ্ডই তাঁহার অমু-গ্ৰহ' এইৰূপ অজ্ঞানে আহত হয়, তদ্বারা জীব সকল ঈশ্বরের প্রতি বৈষম্য জ্ঞান করিয়া থাকে। খাঁহা-দিগের ঈশ্বর জ্ঞান দ্বারা সেই বৈষম্য বোধক অজ্ঞান বিনাশিত হয়, তাঁহাদিগের সেই জ্ঞান, যে প্রকার আ-দিত্য, বস্তুজাতকে প্রকাশ করে, সেই প্রকার-পরিপূর্ণ ঈশ্বর স্বৰূপকে প্রকাশ করিয়া দেয়। যাঁহা দিগের ঈশ্বর বিষয়েই বুদ্ধি, প্রযত্ন ও নিষ্ঠা, এবং তাঁহাকেই পরমাশ্রম জ্ঞান, ভাঁহাদিগের তৎপ্রসাদে লক্ক আত্ম-জ্ঞান দারা সংসার-কারণ দোষ সকল নির্গৃত হইয়া যায়, তংপ্রযুক্ত তাঁহারা মোক্ষ্ লাভ করেন। সেই জ্ঞানীরা বিদ্যা-বিনয়-সম্পন্ন ব্রাহ্মণে আর চাণ্ডালে এবং গো, হতী ও কুরুরে সমদর্শী হইয়া থাকেন। যাঁহাদিগের মন সমভাবে স্থিত হয়, তাঁহারা ইহ জীবনেই সংসারকে পরাজিত করেন, যেহেতু ব্রহ্ম সমভাবাপন্ন নির্দোষ, স্থতরাং সেই সমদর্শী জ্ঞানীরা ব্ৰহ্ম ভাৰাপন্নই হইয়া থাকেন। যিনি ব্ৰহ্মজ্ঞ হইয়া ব্ৰন্ধেতেই অবস্থিত হন, তিনি কোন প্ৰিন্ন বস্তু প্ৰাপ্ত হইয়া সম্ভট বা কোন অপ্রিয় বস্তু প্রাপ্ত হইয়া উদ্বিগ হন না, ষেহেভু তাঁহার মোহ নির্ভ হওয়াভে বুজি স্থির হইয়াছে ; কারণ, তিনি বাস্থ বিষয়ে অনা-সক্ত চিন্ত হইয়া, অন্তঃকরণে যে উপশমাত্মক সান্ত্রিক स्थ, जारारे नाज करतन ; नमाधि बाहा ठीराह আত্মা ব্ৰন্ধের সহিত ঐক্যভাৰ প্ৰাপ্ত হওয়াতে ভিনি শক্ষয় স্থথ ভোগ করিছে থাকেন। হে

कर्ष करन जानक रहेता कर्ष कतितन रूजतार मरनात विषय जानकतिक हा मकन सूथ, जारा दूरशबर का

র্ণ হয় এবং ভাহার স্বামি এ সভ স্বাহে, এজন্য बिटबकी बाक्ति द्या अकन ेसूरथ ब्रख इन मा। विनि বাৰক্ষীৰন কাল কাম কোধোৎপন্ন ৰেগ সহু করিতে नमर्थ इन, (महे नमाहिङ वाक्तिरे स्वधी। अस्टातरे थाँ-হার স্থা, অন্তরেই ঘাঁহার ক্রীড়া, এবং অন্তরেই ঘাঁ-হার দুটি, সেই যোগী ব্রন্ধেতে অবস্থিত হইয়া ব্রন্ধেতে লয় প্রাপ্ত হন। খাঁইাদিগের চিত্ত সংযত, সংশর ছিন্ন এবং পাপাদি দোব ক্ষয়িত হইয়াছে, সেই সর্বভূত হিতকারী সম্যগ্দশী পুরুষ মোক্ষ লাভ করিয়া থাকেন। কাম ক্রোধ হইতে বিমুক্ত সন্ন্যাস-বিশিষ্ট সংযত-চিত্ত আত্ম-তত্ত্বজ্ঞ ব্যক্তিদিগের জী-বিত ও মরণোত্তর উভয় কালেই মোক্ষ বর্ত্তমান। यिनि मन्नाम-विभिष्ठे ও মোক্ষ-পরায়ণ হইয়া ইচ্ছা, ভয় ও ক্রোধ পরিত্যাগ এবং ইন্দ্রিয়, মন ও বুদ্ধিকে সংবমন-পূৰ্ব্বক ৰূপরসান্দি বাহ্য বিষয় সকলকে বহিঃস্থ করিয়া অর্থাৎ তাহারা অন্তরে প্রবেশ করিতে না পারে এজন্য তদ্বিষয়ক চিন্তা পরিত্যাগ করিয়া, চকুকে क मध्य व्यर्थां व्यर्क निमीलन काता क मरधा पृष्टि নিকেপ করত এবং প্রাণ ও অপান বায়ুকে, যে প্র-কারে ঐ বায়ু দ্বর নাসিকার অভ্যন্তরেই বিচরণ করে, অর্থাৎ মনদ মনদ উচ্ছাস নিশাস দ্বারা সমভাবাপন্ন হয়, এৰূপ করিয়া সর্বাদা অবস্থান করেন, তিনি মোক্ষ প্রাপ্ত হন। যুক্ত ও তপদ্যার পালক, দর্বন লোকের মহেশ্বর এবং সর্ব্ব ভূতের নিরপেক্ষ উপ-कात्री य जामि, जामारक कानिरल माक लाख रहा। र्यात्र भाटक क्रकार्क्न मःवादि महाम रयात्र নামে অফাবিংশ অধ্যায় সমণ্প্ত । ২৮।

ভগবাদ্ কহিলেন, পাগুব! বিনি কর্ম কলে নির-পেক হইয়া অবশ্য-কর্ত্ব্য বিহিত কর্মের অর্থ-ঠান করেন, তিনিই সম্যাসী ও যোগী, অবচ তাঁহাকে অধি সাধ্য ইউ কর্মের ও অধ্যি সাধ্য আরামা-দি ক্রিরার পরিত্যাগী বলা যার না আনতি ভৃতি বিদ্ ক্রিরা কর্ম কল ত্যাগ কণ্যে সম্যাসকে

শ্ৰেষ্ঠ বলিয়াছেন, সেই সন্ন্যাসকেই কৰ্মাসুষ্ঠান ৰূপ रवांभ वित्रा जानित्व, त्यत्हजू कर्मनिष्ठेई हर्जन वा জ্ঞান নিষ্ঠই হউন, যিনি ফল সঙ্কণ্প পরিত্যাগ করেন নাই, এমত কোন ব্যক্তি যোগী হইতে পারেন না। জ্ঞান যোগে আরোহণ করণেচ্ছু ব্যক্তির কর্মাই তদা-রোহণে কারণ বলিয়া কথিত হয় এবং সেই ব্যক্তি জ্ঞান যোগে আৰু হইলে সেই জ্ঞান নিষ্ঠ ব্যক্তির সর্ব্ব কর্ম্ম নির্ভিই জ্ঞান পরিপাকে কারণ বলিয়া কথিত হইয়া থাকে। যথন পুরুষ আসক্তির মূলীভূত সমুদায় বিষয় ভোগ ও কর্মা বিষয়ক সঙ্কল্পের পরি-ত্যাগী হইয়া ইন্দ্রিয় ভোগ্য বিষয় ও তৎ সাধন কর্মে আসক্তি না করেন, তথন তাঁহাকে যোগাৰ্ঢ বলা যায়। আত্মাই আত্মার বন্ধু এবং আত্মাই আত্মার রিপু, অতএব আপনিই আপনাকে উদ্ধৃত করিবে, অবসন্ন করিবে না। যে আত্মা কর্তৃক আত্মা বশীক্ত অর্থাৎ ইন্দ্রিয় সকল বশতাপন্ন হইয়াছে, তথাবিধ আত্মার আত্মাই বন্ধু; আর যে আত্মার ইন্দ্রিয় সকল বশতাপন্ন হয় নাই, সে আত্মার আত্মাই শক্রর ন্যায় অপকারী হয়। যিনি আত্মাকে জয় অর্থাৎ ইন্দ্রিয়-গণকে বশতাপন্ন করিয়াছেন, সেই প্রশান্ত চিত্ত রাগা-দি রহিত ব্যক্তির হৃদয়ে শীত, উষ্ণ, স্থুখ, ছুংখ, মান ও অপমান সত্ত্বেও পরমাত্মা অবস্থিত হয়েন। শা-স্ত্রোক্ত পদার্থের পরিজ্ঞান ও শাস্ত্রত জ্ঞাত পদা-র্থের স্ববৃদ্ধি দারা অমুভৰ এই উভয় ৰূপ জ্ঞান বি-জ্ঞান দারা থাঁহার অন্তঃকরণ পরিতৃপ্ত হইয়াছে, স্ত্রাং তিনি নির্বিকার ও জিতেন্দ্রিয় হয়েন এবং তাঁহার লোফ, প্রস্তর ও কাঞ্চনে সম জ্ঞান হইয়া খাকে; ঈদৃশ যোগী ব্যক্তিকে যোগাৰত বলা যায়। স্থহৃৎ, মিত্র, শব্রু, উদাসীন, মধ্যস্থ, দ্বেষ্য, বন্ধু, সদা-চার ও ছুরাচার, এই সকল ব্যক্তিতে খাঁহার সম वृक्ति, जिनि नर्स्वारशका विभिष्ठे इन। याश्रीकः বাজি নির্ম্তর একাতে হিত, নক শ্না, সংযত চিছ, अश्वक एरह, निवाकारक ७ शविध**र भूना** हरेया। মনঃ সমাধান করিবেন। পবিত্র স্থানে অভি উদ্ভিত

ও অতি নিম্ন না হয় এৰপ করিয়া কুশোপন্ধি অভিন ও তচুপরি বস্ত্র আন্তরণ-পূর্বেক অচঞ্চল আসন স্থা-পন করিরা সেই আসনে উপবেশন করত মনের একাঞ্চভা সহকারে চিত্ত ও ইন্দ্রিয়গণের ক্রিয়াকে সংবত করণ পূর্বক মনের বিশুদ্ধি নিমিত্তে যোগা-মুষ্ঠান করিবেক। দেহের মধ্যভাগ, মন্তক ও গ্রীবা-কে অবক্র ও অচল ভাবে ধারণ করত ইতন্তত দৃষ্টিপাঁত পরিত্যাগ পূর্বক নাসিকার অগ্রভাগ অবলোকন ও মনকে তাহার রুত্তি সকল হইতে উপসংহৃত করিয়া দৃঢ় প্রযত্ন সহকারে প্রশাস্ত চিত্ত, বীত ভয়, ব্রহ্মচর্য্যে স্থিত, আমার প্রতি নিবিষ্ট চিত্ত ও অহং-পরায়ণ হওত সমাহিত হ্ইয়া উপবেশন করিবেন। যোগী ব্যক্তি দর্বদা উক্ত প্রকারে সংযত-চিত্ত হইয়া আত্মাকে সমাহিত করিলে নির্বাণ প্রা-প্তির সাধন ভূত, মৎ স্বৰূপে অবস্থিতি স্বৰূপ শাস্তি প্রাপ্ত হন। অর্জুন! যিনি অধিক ভোজন করেন, কিয়া যিনি কিছু মাত্র ভোজন না করেন এবং যিনি অতিশয় নিজাশীল, কিয়া যিনি অতিশয় জাগনণ-শীল হন, ইহাদিগের মধ্যে কাহারে। যোগামুষ্ঠানের সম্ভাবনা হয় না। যিনি আহার, গতি, কার্যা-চেক্টা, নিদ্রা ও জাগরণ নিয়মিত ৰূপে করেন, তাঁহার সংসার-ক্ষরকর যোগ সিদ্ধ হয়। যখন সাধকের চিত্ত বাহ্য চিম্ভা হইতে নিরুদ্ধ হইরা আত্মাতেই স্থিত হয়, ज्यन त्रहे नर्स काम निन्शृह नाधक, यांशी विनन्ना কথিত হন। চিত্ত প্রচারদর্শী যোগজ্ঞ ব্যক্তিরা যোগী ব্যক্তির চিত্তের দৃষ্টান্ত এই ৰূপ কহিয়াছেন যে, যে প্রকার বায়ু খুন্য স্থানে দীপ অকম্পিত থাকে, সেই প্রকার আত্ম বিষয়ক যোগাভ্যাসকারী সংযত চিত্ত ষোগী বাক্তির চিত্ত অকম্পিত হইরা থাকে। যে অবস্থার জানীর চিত্ত যোগামুষ্ঠান দ্বারা কোন বিবয়ে প্রচারিত না হইয়া উপরত হয়, যে অবস্থায় জ্ঞানীব্যক্তি সমাধি-বিশুদ্ধ অস্তঃকরণ দারা সর্বতো-ন্যোতিঃ স্বৰূপ পর চৈতন্য আত্মাকে উপলব্ধি করত খীয় আত্মাতেই সম্ভক্ত থাকেন, বে অবস্থায়

বিবরেন্দ্রির সমব্বের অতীত কেবল আমাকার বুক্ রই আছ যে নিভা সুখ, তাহা অমুভৰ করেন, তা-হাতে অবস্থিত হইয়া আত্ম ত্মৰূপ হইতে বিচ্-লিত হন না যেহেজু তিনি সেই নির্তিশয় সুখ আছা স্বৰূপ লাভ করিয়া তাহা অপেক্ষা অপর লাভকে অধিক মনে করেন না, যাহাতে অবস্থিত হইলে শীতোঞাদি মহৎ ছুঃথৈও অভিভূত হইতে হয় না, এবং বৈষয়িক স্থুখ ফুংখের সংস্পর্শ দ্বারা যে অবস্থার বিয়োগ হয়, সেই অবস্থা-বিশেষের নাম যোগ বলিয়া জানিবেক। সঙ্কম্প জনিত কামনা ও সমুদায় কাম্য-বস্তু পরিত্যাগ-পূর্বক সর্বত্র বিচরণশীল ইন্দ্রিয় গ্রাম-কে বিষয় দোষ দশী মন ছারা সংযত করত এবং যদিই শীঘ্র সিদ্ধানা হয়, তথাপি ক্লেশ কর বলিয়া প্রযত্ন শৈথিল্য না করিয়া শাস্ত্র ও আচার্য্যের উপ-দেশ জনিত নিশ্চয় দ্বারা উক্ত যোগের অনুষ্ঠান কর্ত্তব্য। ধারণাবতী বুদ্ধি দ্বারা মনকে আত্মাতে সমাক্ স্থিত করিয়া শনৈঃশনৈ অভ্যাস ক্রমে উপ-রত হইবে, কিছু মাত্র চিস্তা করিবে না অর্থাৎ আপ-নিই প্রকাশমান প্রমানন্দ-নির্বৃত হইয়া আত্মধ্যান হইতে নির্ভ হইবে না। মনকে ধারণা করিলেও মন স্বাভাবিক চাঞ্চল্য বশত অন্থির হইয়া যে যে বিষয়ে গমন করে, সেই সেই বিষয় হইতে তাহাকে প্রত্যাহরণ করিয়া আত্মাতেই স্থিরীভূত করিবেক। এই ৰূপ করিলে তাঁহার রক্ত গুণ ক্ষয়, মন শাস্ত ও সংসার জনক দোষ বিনফ হুইয়া যায়, স্থতরাং তিনি ব্রহ্মভাব প্রাপ্ত হন, এতাদৃশ যোগীর নিকট নির্নতি-শর স্থ স্বরংই আসিয়া উপনীত হয়। এই প্রকারে সর্বাদা মনকে বশীভূত করিলে সেই বীত-পাপ যোগী অনারাদে ব্রহ্ম সাক্ষাৎকার সর্ব্বোন্তম স্থুখ ভোগ করেন। সেই বোগ-সমাহিত-চিত্ত ব্যক্তি সর্বত্ত সম-দশী হইরা বর্ব ভূতে আত্মাকে এবং বর্বা ভূতকে আত্মাতেই দর্শন করেন। সমুদায়ের আত্মা স্বৰূপ (कृष्णामि, जामारक विनि गर्याव पूर्णन करतन **ध**दः मञ्जूनात वस्तरक जानात्करे स्वर्थन, जामि छाहात অদৃশা হই না এবং তিনিও আনার অদৃশা হন না। বে একডাবলটা বোগী আমাকে সর্বাভূত স্থিত বলিয়া ভকনা করেন, তিনি কর্ম পরিত্যাগ করিয়া থাকি-লেও আমাতেই বর্ডমান থাকেন। অর্জুন! বিনি মুখ ফুল্খকে সর্বা প্রাণীতে আদ্ম তুলা সমান দেখেন, সেই ব্যক্তিই আমার মতে শ্রেষ্ঠ যোগী।

অর্জুন কহিলেন, হে মঁধুস্থদন! লয়-বিক্ষেপখূনা মন দ্বারা আত্মাকারে অবস্থান ৰূপ যে এই
যোগ ভূমি কহিলে, মনের চাঞ্চল্য হেতু সেই যোগের দীর্ঘ কাল স্থিতির সম্ভাবনা আমি বোধ করিতে
পারিতেছি না। কৃষ্ণ! মন স্থভাবতই চঞ্চল, দেহেব্রুরের ক্ষোভকর, বিচার দ্বারা অজের এবং বিষয়
বাসনামুবন্ধ হেতু দুর্ভেদ্য; অতএব যে প্রকার আকাশে দোধুয়মান বায়ুকে কুম্ভাদিতে নিরোধ করা
অতি দুয়র, সেই প্রকার মনকে নিগ্রন্থ করা অতি
দুয়র বোধ করিতেছি।

ভগবান্ কহিলেন, হে মহাবাছ কুন্তীপুত্র। তুমি যে চঞ্চল মনকে নিগ্রহ করা ছুঃসাধ্য বলিতেছ, তা-হাতে সংশয় নাই, কিন্তু অভ্যাস ও বিষয়-বিভৃষণ ছারা মনকে নিগৃহীত করিতে পারা যায়। যাঁহার চিত্ত অভ্যাস ও বৈরাগ্য ছারা সংযত হয় নাই, তিনি এই যোগ আয়ন্ত করিতে পারেন না, ইহা আমার নিশ্চয় বোধ আছে। য়াঁহার চিত্ত অভ্যাস ও বৈরাগ্য ছারা বশবর্তী হইরাছে, সেই প্রযক্তশীল পুরুষ উক্ত প্রকার উপায়ে এই যোগ লাভ করিতে পারেন

আর্জুন কহিলেন, কৃষ্ণ! যিনি প্রথমত শ্রজা বশত বোগে প্রবৃত্ত হইরা পরে অভ্যাস শৈথিলা হেতু চিত্ত বিচলিত হওরাতে বোগ সিন্ধি লাভ করিতে না পারেন, তাঁহার কি ৰূপ গতি প্রাপ্তি হর? হে মহা-বাহ! ইম্বারের প্রতি কর্ম কল অর্পণ কিংবা কর্ম্মের অনুষ্ঠান না ক্রা হেতু স্বর্গাদি কল প্রাপ্ত না হন অবং বোগ নিন্ধি না হওরাতেও ব্রন্ধ প্রাপ্তির উপার পরে বিশুদ ইইরা মোক লাভ করিতে না পারেন, এতাদুদ উভর অন্ত নিরাপ্তার ব্যক্তি ছিল্ল দেবের

ল্যান্ন বিনষ্ট হন কি না? হে কৃষণ। আসান্ধ এই সংশয় অন্যেষ ৰূপে অপনরন করিতে তুমিই যোগ্য; তোম। ব্যতীত অন্য কেহই এই সংশব্যের অপনয়কারী নাই।

ভগবান কহিলেন, হে তাত পার্থ! তাঁহার ইহ লোকে পাতিত্য, বা পর লোকে নরক প্রাপ্তি হয় না ; বেহেতু কোন শুভকারী ব্যক্তি ছুর্গতি প্রাপ্ত হন না। সেই যোগান্ত্ৰ ই পুৰুষ, আন্ধনেধ যজ্ঞাদি পুণ্য কৰ্ম। কারী ব্যক্তিদিগের প্রাপ্য স্বর্গ লোকে গমন-পূর্বক তথায় বহু সংবৎসর বাস করিয়া পরে সদাচার ধনী-দিগের গৃহে জন্ম পরিগ্রহ করেন। বদি চিরাভ্যস্ত यांग रहेरा खर्चे हन, जर्स यांगनिष्ठ छानीपि-গের কুলে জন্ম গ্রহণ করেন; এতাদৃশ কুলে জন্ম গ্রহণ, লোকমধ্যে ছুর্লভতর। হে কুরুনন্দন! সেই বোগত্রট পুরুষ, সদাচার ধনীর গৃছে বা যোগনিষ্ঠ জ্ঞানীর কুলে জন্ম পরিগ্রহ করিয়া পূর্বদেহ জনিত ব্রহ্ম বিবয়ক বুদ্ধিযোগ লাভ করেন, পরে মোক লাভে অধিকৰূপে প্ৰযত্নবান্ হন। সেই যোগভ্ৰফ ব্যক্তির কোন বিশ্ব বশত ইচ্ছা না থাকিলেও পূর্ব দেহ ক্বত অভ্যাসই ষ্ঠাহাকে বিষয় হইতে পরার্ভ করিয়া ত্রন্ধনিষ্ঠ করে। বিনি বোগে প্রবৃত্ত মাত্র হ্ইয়াও যদি পাপ বশত যোগভ্ৰফ হন, তথাপি তিনি ক্রমে মুক্ত হন ; অতএব যে যোগী উন্তরোন্তর অধিক ৰূপে যত্নবান হইয়া অনুষ্ঠিত যোগ দ্বারা বিধৃত পাপ হন, তিনি বে জন্ম জন্মান্তরের উপচিত যোগ ছারা সমাক্ জ্ঞান লাভ করিরা পরম গভি লাভ করিবেন, ডাহাতে আর বক্তব্য কি ?াহে অর্জুন ! আমার মতে রুচ্ছ চাক্রারণাদি তপোনিষ্ঠ, भाजकानी ও रेकेश्रिकंति कर्मकाती वास्ति रहेए०७ বোগী ব্যক্তি শ্ৰেষ্ঠ; অন্তএৰ তুমি যোগী হও। ষিনি আন্ত্রান্ হইয়া মদ্গত অন্তঃকরণ দারা আমা-কে ভজনা করেন, আমার মতে তিনি সমুদার যো-भीत्र मर्था (धर्छ। d" .

क्षणार्क्न गराटम जान गश्यम वाश नादम्बादकान-जिल्लास्य जागात्र गमाश्च ॥ २३ ॥

ভগবান কহিলেন, হে পার্ব! তুমি আমার প্রতি আসক্ত-চিত্ত ও আমারই শরণাপর হইয়া মনঃ সমা-ধান করত, বিভূতি বল শক্তি এখর্যাদি গুণসম্পন্ন যে আৰি, আমাকে যে প্ৰকারে নিঃসংশয় ৰূপে জানিতে পারিবে, তাহা বলিভেছি, শ্রবণ কর। আমি তোমা-কে মদিবয়ক শান্ত্ৰীয় জ্ঞান ও স্বকীয় অমুভব অশেষ-ৰূপে বলিভেছি, ইহু সংসারে যাহা জানিলে অন্য আর জ্ঞাতব্য কিছুই অবশিক থাকে না। সহস্র মনু-ষ্যের মধ্যে কেহু আত্মজ্ঞান লাভের নিমিত্তে যতু করেন, সহস্র যত্নকারীর মধ্যে কেহ আত্মজ্ঞান লাভ করেন এবং সহস্র আত্মজ্ঞানীর মধ্যে কেহ, পরমাত্মা বে আমি, আমাকে স্বৰূপত জানিতে পারেন। আ-মার প্রকৃতি—মায়া—জড়ৰপ শক্তি, ভূমি জল অগ্নি বায়ু আকাশ মন বুদ্ধি ও অহঙ্কার এই অফ প্রকারে বিভিন্ন হইরাছে। এই অফ প্রকার প্রকৃতি যাহা উক্ত হইল, ইহা নিরুফ, যেহেতু ইহা সংসার বন্ধন স্বৰপ। হে মহাবাছ! ইহা বাতীত জীব স্বৰপ षामात ष्यभन्न श्रक्तिक उँ क्ष्ये वित्रा कानित्त, সেই চেতন ৰূপ প্ৰকৃতি কৰ্তৃকই স্বকৰ্ম দারা এই **জগৎ সংসার চলিতেছে। এই ছুই প্রকৃতিকে স্থা**বর জঙ্গম সমুদায়ের কারণ বোধ কর। জড় প্রকৃতি, দেহ ৰূপে পরিণত হয় এবং চেতন প্রকৃতি, মদীয় অংশে সম্ভূত ও ভোক্তা ৰূপে দেহে প্ৰবিষ্ট হইয়া স্বৰূপ্ত ছার। স্থাবর জঙ্গমাত্মক ভূত সকলকে ধারণ করিয়া থাকে। হে ধনপ্রয়! এই ছুইটি প্রকৃতি আমা হইতে উৎপন্ন হইয়াছে, অতএব আমিই সমস্ত জগ-তের পরম কারণ ও সংহারক ; স্থতরাং আমা হই-তে শ্রেষ্ঠ অর্থাৎ জগতের সৃষ্টি সংহারের স্বতন্ত্র কা-त्र बात बमा किहूरे नारे। य श्रकांत्र ऋरत मनि নিচয় প্রথিত থাকে, তজ্ঞপ আমাতে এই সমস্ত জগৎ গ্রাথিত রহিয়াছে। হে কুন্টাপুত্র! আমি জল मर्सा तम, जामि हता सर्वात अछा, जामि नर्व रवन मत्था क्षान्त, जानि जाकाण वत्था लक्ष, जानि शूक्र- छंडल इरेता बादकन, वर्दर जानि छोरात जडारी বের পৌরুষ, আমি পৃথিবীতে সৰিক্ষত গল্প, আমি জিলা, তিনিও আমাল জভাত জিলা হন, অভাব

महिट्ड ट्डन, मात्रि गर्स प्रकृत मेरन वर्ग मान তপৰীর তপন্যা; হে পার্ব! ভূমি আমানে সমুনীয় जुर्**छत ममाछन दीव विनया (वीप कर्न**िट्ह **उन्नै**के कुल পारन! जामि बुक्तिमान् मिरशत बुक्ति, जामि **जिन्दी नकरणत एक, जामि कार्यान् मिरंगन्न कार्या** রাগ বর্জিত বল অর্থাৎ সাত্ত্বিক ভাবে স্বধর্মামুঠানে मामर्था, এবং প্রাণী দির্দৈর ধর্মের অবিরুদ্ধ যে কাম, তাহাও আমি। य नकल भम समाप्ति माख्ति, इर्ब দর্পাদি রাজনিক ও শোক মোহাদি তামনিক ভাব প্রাণীদিগের স্বকর্ম বশত হইয়া থাকে, সে সমস্ত আমা হইতেই উৎপন্ন জানিবে; অর্থাৎ সে সকল আমারই প্রকৃতির কার্য্য। পরস্কু জীবের ন্যায় আমি তাহাদিগের অধীন নহি, তাহারাই আমার অধীন হইয়া আমাতে বর্তমান থাকে। পূর্ব্বোক্ত সাদ্ভিক, রাজসিক ওতামসিক এই ত্রিবিধ শুণময় ভাব কর্তৃক এই সমস্ত প্রাণিজাত মোহিত হইয়া থাকে, এই হেডু আমাকে জানিতে পারে না। যেহেতু আমি ঐ তি-বিধ গুণের অস্পৃষ্ট ও উহাদিগের নিয়ন্তা, স্বতরাং আমার কোন বিকার সম্ভাবনাই নাই। আমার ঐ **ष्यानिक को अन्यती यात्रा क्रम मिक प्रस्त्रनीता**; পরস্ত যাহারা আমার শরণাপদ হয়, তাহারা ঐ মায়া হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারে। যে নরাধমের। বিবেক খুন্য ও পাপশীল, যাহাদিগের শান্ত্র ও আ-চার্য্যের উপদেশ দারা জ্ঞান ক্ষান্তেও মারা দারা তাহা নিরন্ত হইয়া যায়, স্কুতরাং দন্ত, দর্প, অভি-মান, ক্রোধ ও নিষ্ঠুরতাদি আসুরিক ভাবের আ-ভিত হয়, তাহার। আমাকে ভজনা করে ন। হে ভরতর্যভ অর্জুন! আর্ড, আন্ধ জ্ঞানেন্দু, এইিক ও পারত্রিক ভোগ সাধন অর্থের অভিলাবী ও আছ-कानी धरे ठजूरिय राजि यमि शूर्य जान क्रज-পুণ্য হন, তবে আমাকে ভঙ্গনা করিয়া বাকেন। ख्क वाश्वकानी वाकि नर्समा भरमकाने ७ मरमक-

ভিনি পূর্বোক্ত চত্রিধ বাজির সংখ্য গোঠ। औ চত্-विंध वाक्ति वहर, किंद्ध क्रवरण आञ्चकानी वाक्ति আত্মার হাতে আত্মার স্বৰূপ, যেহেতু তিনি মদেক-চিত্ত হইরা, যাহার পর নাই উত্তম গতি যে আমি, আসাকেই আশ্রের করিয়া থাকেন। অনেক ক্ষের পুণ্য সঞ্ম স্থারা চরম জন্মে জ্ঞানবান্ হইয়া, সমস্ত চরাচর অগৎই এক মাত্র বাইদেব, এই ৰূপ সর্বাত্ম দৃতি স্বারা আমাকে জন্সনা করেন, এতাদৃশ মহাত্মা অতি ফুর্লভ। যাহারাপুত্র, কীর্তিও শত্রু জয়াদি কামনা স্বারা হতবিবেক ও স্বকীর প্রকৃতির বশয়দ হইরা আমা বাতীত অন্যান্য দেবতাকে সেই সেই দেবতার আরাধনা-প্রকরণোক্ত উপবাসাদি নিয়ম স্বীকার করিয়া ভজনা করেন, তাঁহাদিগের মধ্যে যে যে ভক্ত, যে যে দেবতা ৰূপ মদীয় মূৰ্ভি অৰ্চ্চনা করি-তে প্রবৃত্ত হন, সেই সেই ভক্ত দিগের সেই সেই মুর্ডি বিষয়ক শ্রদ্ধাকে অন্তর্যামী আমি দৃঢ় করিয়া দিই। তিনি সেই দৃঢ় আছা বশত সেই মূর্তির আরাধনা করিয়া থাকেন, ভাহাতে সেই আরাধিত দেব মূর্ভি হ্ইতে মদ্বিহিত কাম্য বিষয় সকল লাভ করেন। সেই অপ্প বৃদ্ধি-পরিচ্ছিন্নদর্শী দিগকে আমি সেই কল প্রদান করিলেও তাহা অস্তবৎ হইয়া থাকে, দেব-যাজকের। অন্তবৎ দেব লোক প্রাপ্ত হন এবং মদ্-ভক্তেরা, অনাদ্যনন্ত পরুমানন্দ যে আমি, আমাকে লাভ করেন। অম্পর্কি ব্যক্তিরা, অব্যক্ত—প্রপঞ্চা-ভীত বে আমি, আমাকে মনুব্য মৎস্য কুর্মাদি ভাব প্রাপ্ত বলিরা মনে করে, বেহেতু তাহারা আমার যাহার পর নাই উত্তম স্বৰূপ নিত্য তাব জানে না। আমি লোক সকলের নিকট প্রকাশ হই না, বে-হেতু আমি যোগ মায়া ছারা অর্থাৎ গুণ ত্রের রোগ স্বৰণ মারা হারা সংহর; অভএব এই সমস্ত লোক মনীর ক্ষুপ্র ক্লানে বিষ্ণু হইরা, অক ও অবার ৰূপ विकामि, सामादक कानिएक शास्त्र ना। दर पार्क्ना! चक्रीक वर्षमान ଓ छनिवार इतित क्लम नमुगात

পরবাপ ভারত! দেহ উৎপন্ন হইলে তাইীর অমুকূল বিষয়ে ইচ্ছা ৬ প্রতিকুল বিষয়ে ছেব এই উভয় ৰারা উৎপন্ন যে ৰন্দমোহ কাৰ্যাৎ শীত উক্ত কুৰ ছুংখাদি দ্বন্দ জনিত মোহ—বিবেক জংশ, তদারা সমস্ত প্রাণী মোহ প্রাপ্ত হয় অর্থাৎ আমি স্থা আমি ছংখী এই ৰূপে গাঢ়তর অভিনিবেশ প্রাপ্ত হইরা থাকে, স্থতরাং আমাকে ভক্ষনা করে না। যে সকল পুণ্যকর্মী জনের প্রতিবন্ধক পাপ সমস্ত বিনফ হয়, সেই দ্বন্দ মোহ-বিমুক্ত ব্যক্তিরাই দৃঢ়ত্রত হইরা আমাকে ডজনা করেন। বাঁছারা জরা মরণ হইতে বিমৃত্তি নিমিত্তে আমাকে আঞ্র করিয়া আমাতে সমাহিত চিত্ত হইয়া যত্ন পরায়ণ হন, তাঁ-হারা পরব্রহ্মকে জানিতে পারেন এবং সমস্ত অধ্যাত্ম ও নিখিল কর্মাও জ্ঞাত হইয়া থাকেন। ঘাঁহারা অধিভূত, অধিদৈব ও অধিযজ্ঞের সহিত আমাকে জানিতে পারেন, মৎ প্রতি আসক্ত-চিত্ত সেই মহা-ত্মারা মৃত্যুকালেও আমাকে জানেন, অর্থাৎ তৎ কালেও ব্যাকুল হইয়া আমাকে বিশ্বৃত হন না। क्रकार्क्न मः तार विख्वान योग नारम जिल्ला

व्यक्षात्र ममाश्च ॥ ७०.॥ — । ।

অর্জুন কহিলেন, হে পুরুষোন্তম রুষণ! ব্রহ্ম,
অধ্যাত্ম, কর্মা, অধিভূত ও অধিলৈব যাহা ভূমি কহিলে, সে সকল কি প্রকার এবং অধিষক্ত অর্থাৎ কর্মের
প্রযোজক ও কল দাতাই বা কে? কি প্রকারেই বা
তিনি এই দেহে অবস্থিতি করেন? হে মধুস্থদন!
নিয়ত-চিত্ত পুরুষেরাই বা অন্তকালে কি প্রকারে

ত্ত্বানি যোগ মারা দারা অর্থাৎ গুণ ত্রের রোগ

ত্বানি বানি পরিম অক্ষর তিনি বক্ষ।

ব্রুপ মারা দারা সংহর; অভএব এই সমন্ত লোক

নেই পর ব্রুজ্মের যে জীব ভাব, যাহা দেহকে অধিমারীর অক্স জ্ঞানে বিষ্ণু হইরা, অল ও অবার কপ

কার ক্রিরা থাকে, তাহাকে অধান্ম বলা যায়।

বে আমি, মানাকে জানিতে পারে না। হে অর্জুন!

করারুলানি প্রাণিজাতের উৎপদ্ধি ও বৃদ্ধির যে

অধীক, বর্ষনান ও ভবিবাৎ হারর কলম সমুদার

দেবোকেশাক ত্রবা ত্যাগ কপ যজাদি, তাহার নাম

কানি কানি; ক্রিড আনাকে কেই জানে মা। হে কর্মণ। হে দেহধারি প্রেট। নশ্ব যে নেইটি পদার্থ

তোমাকে জ্ঞানগোচর করেন ?

यांश व्यागी मार्काटक अधिकांत कतिता इत्र, छाशोंटक অধিভূত বলা যায়। বিনি সর্ব্ব প্রাণীর ইন্দ্রিকাতের প্রবর্ত্তক, সর্ব্ব দেবভার অধিপতি, হিরণ্যগর্ম্ভ নামে পুরুষ অর্থাৎ দেহ স্বৰূপ পুরেশয়নকারী, তিনি অধি দৈবত শব্দের বাচ্য। আর এই দেহে আমি যজ্ঞাদি সমস্ত কর্মের প্রবর্ত্তক ও তাহার ফল দাতা ৰূপে বৰ্ত্তমান থাকি, এই হেভু আমাকেই অধিযক্ত ৰলিয়া জানিবে। এই ৰূপ অন্তৰ্যামী প্রমেশ্বর যে আমি, আমাকে যিনি অন্তকালে শারণ করত কলে-বর পরিত্যাগ করিয়া উত্তরায়ণ পথে গমন করেন; তিনি মদীয় স্বৰূপ লাভ করেন, তাহাতে সংশয় নাই। হে কুন্তীস্থত! যিনি অন্তকালে দেবতান্তর বা অপর যে যে ভাব স্মরণ করত কলেবর ত্যাগ করেন, তিনি সর্বাদা সেই সেই ভাবে ভাবিত হও-ন্নাতে সেই সেই ভাবকেই প্রাপ্ত হন। যেহেতু পূর্ব वामनारे अग्रकारन मातरात रुकूं रह वर ७९ कारन विवन हरेशा পড़िल चत्रत्वत महावना शांक ना, সেই হেতু তুমি আমাকে সর্বাদা অমুচিন্তন কর; किन्त विञ्ज एक वाजित्तरक मर्वमा मात्रग मञ्चवेन हर ना, এজন্য চিত্ত জ निमित्त चर्मा यूकापित ७ অমুষ্ঠান কর ; এই ৰূপে আমার প্রতি চিত্ত ও বুদ্ধি অর্পণ করিলে অবশ্যই আমাকে প্রাপ্ত হইবে, ইহা-তে সংশয় নাই। হে পার্থ! যিনি অভ্যাস ৰূপ উপায়-युक ও विषयास्टरत अभयनगील চিত बाता मिहे দোতিনাত্মক পরম পুরুষ পরমেশ্বকে অমুচিন্তন করেন, তিনি তাঁহাকেই লাভ করেন। তিনি সর্ব্বজ্ঞ, চিরন্তন, জগতের নিরন্তা, আকাশ ও কাল প্রভৃতি স্থান পদার্থ হইতেও স্থানতম, সকলের ধাতা, মলিন মন ও বৃদ্ধির অচিন্ত্যরূপ, আদিত্যের ন্যায় স্বৰূপ প্রকাশক এবং সজ্ঞান ৰূপ মোহান্ধকারের অতীত; এবছুত পরমেশরকে বিনি অন্তকালে ভক্তিযুক্ত ও প্রমাদ-খুনা হইরা বোগ বলে স্থাৎ সমাধি জনিত **मश्कात ममुरमन ठिख रेक्या वटन क बरसन मरधा** व्यान बाह् नः चानन करेंच विस्कृत है हैंच मन बाहा

অমুসরণ করেন, তিনি দোভিনাত্মক নেই পরম शूक्रवरक व्याश्च रन। त्वरक वार्किता वैशिदक वक्त বলেন; বিগতরাপ যত্নবস্ত বাজিনা যাঁহাতে অভি-নিবেশ করেন এবং অনেকে যাঁহাকে জানিতে ইচ্ছা করিয়া শুরু কুলে ত্রন্দার্য্য আচরণ করেন, তৎ প্রা-প্তির উপায় ভোমাকে সংক্ষেপে বলিভেছি। চকু-तानि नमछ टेन्सिय बार्त मश्यक, इनस्तरक मनस्क नि-রুজ ও আপনার প্রাণ বায়ুকে জ্র মধ্যে স্থাপিত করিরা যোগ ধারণা অবলয়ন পূর্ব্বক ত্রন্ধের অভি-ধান স্বৰূপ ওঁ এই এক টি অক্ষর উচ্চারণ এবং তাহার বাচ্য যে আমি, আমাকে অফুম্মরণ করত যিনি দেহ ত্যাগ করিয়া প্রয়াণ করেন, তিনি প্রকৃষ্ট গতি লাভ করেন। হে পার্থ! যিনি অনন্যচিত্ত হইয়া প্রতিদিন নিরন্তর আমাকে শ্বরণ করেন, আমি সেই ममाहिত ← योगी वाङ्गित स्वव इहे। सिर्हे महा-ত্মারা আমাকে পাইয়া ছুঃখালয় অনিত্য জন্ম আর প্রাপ্ত হন না, যেহেভু তাঁহারা মোক্ষ লাভ করেন। হে অর্জুন! ব্রহ্ম লোক বাসী পর্যান্ত যাবতীয় লো-কেরই বিনাশ আছে, সকলকেই জন্ম গ্রহণ করিয়া পুনরাবর্ত্তন করিতে হয়, কিন্তু হে কুন্তীনন্দন! আ-মাকে প্রাপ্ত হইলে তাঁহার আর জন্ম গ্রহণ করিতে रुय़ ना।

মনুষা লোক দিগের এক বংসরে দেব লোক দিগের এক অহোরাত্র হয়; তাঁদৃশ অহোরাত্র হার। পক্ষমাসাদি গণনা ক্রমে যে এক বংসর হয়; তাদৃশ হাদশ সহস্র বংসরে চতুর্গুগ হয়, তাদৃশ সহস্র চতু-র্গুগে ব্রহ্মার এক দিন এবং ঐ রূপ অপর সহস্র চতু-র্গুগে ব্রহ্মার এক দিন এবং ঐ রূপ অপর সহস্র চতু-র্গুগে ব্রহ্মার এক রাত্রি হইয়া থাকে। এই রূপ অহোরাত্র হারা পক্ষ মাসাদি গণনা ক্রমে বে বংসর হয়, তাদৃশ এক শত বংসর ব্রহ্মার পরমারু। প্রসিদ্ধ অহোরাত্র-বিং ব্যক্তিরা তথাবিষ সহস্র চতুর্গকে ব্রহ্মার এক দিন ও ঐ রূপ অপর সহস্র চতুর্গকে ব্রহ্মার এক বাত্রি বলিয়া ক্লানেন; তাদৃশ দিনের আগসনে করাচর ক্ষুত্র স্কল ক্রিণায়ক অব্যক্ত হইতে প্রান্তর্ভ এবং ভাতৃত্ব রাজির আসমনে চরা-চর ভূত সকল সেই কারণাত্মক অব্যক্তেতেই লীন হইরা থাকে। হে পার্থ! চরাচর ছুত সমূহ পূর্ব্বোক্ত वुक्तितरमञ्ज ज्ञागरम छेरशम रहेशा शूनवीत शूर्वीङ ব্ৰহ্মরাত্রির আগমে কারণ ৰূপ অব্যক্তেতে লয় প্রাপ্ত হয় এবং তাহারাই পুনর্কার উক্ত দিবসের আগমে প্রাক্তন কর্মের বশষদ হইয়া জন্মিয়া থাকে। সমস্ত চরাচরের কারণ-ভূত যে অব্যক্ত, সেই অব্যক্তের কা-রণ এবং তাহা হইতে ভিন্ন যে অব্যক্ত অর্থাৎ চকু-রাদির অগোচর অনাদি ভাব, তাহা সমস্ত ভূত विनक इहेल विनक इय ना। मिट खवाक है जकत অৰ্থাৎ উৎপত্তি নাশ খুন্য বলিয়া উক্ত হইয়াছে, পণ্ডি-তেরা তাহাকেই পরম গম্য স্থান পুরুষার্থ কহিয়াছেন, যাহাকে প্রাপ্ত হইলে আর সংসারে পুনরাগমন করিতে হয়না, সেই পরম ধামই আমার স্বৰপ। হে পার্থ! বাহার মধ্যে সমস্ত ভূত অবস্থিতি করে এবং যিনি এই সমুদায় জগতে ব্যাপ্ত আছেন, সেই পর্ম পুরুষ আমি একান্ত ভক্তি দারা লভ্য হইয়া থাকি।

হে ভরতকুলবর! উপাসকেরা যে কালাভিমানী দেবতার পথে গমন করিয়া সংসারে আহন্ত না হন এবং কর্মীরা যে কালাভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া সংসারে আহন্ত হন, তাহা আমি তোমার নিকট কীর্ভন করিতেছি প্রবণ কর। যাঁহারা রক্ষোপাসক, তাঁহারা অর্চিরভিমানী, দিবসাভিমানী, শুরুপকাভিমানী ও যথাস রূপ উত্তরায়ণাভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া বন্ধ প্রাঞ্জিমানী রায়াভিমানী, কৃষ্ণপকাভিমানী, ব্যয়াসরূপ দক্ষিণারনাভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া চান্তার কর্মী, তাঁহারা ধুমাভিমানী রায়াভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া চান্তারনাভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া চান্তারনাভিমানী দেবতার পথে প্রয়াণ করিয়া চান্তারনাভ্যানী কর্মাত অর্থাৎ তত্ত্বপলক্ষিত স্বর্গ লোক প্রাপ্ত হর্মা তথায় ইতাপুর্ব কর্মের কল ভোগ করণাত্তে স্বর্মার রংসারে আহন্ত হন। ক্রমতের অনাদি করেমার ক্রমারে আর্ক্ত হন। ক্রমতের অনাদি করেমার ক্রমারে আর্ক্ত হন। ক্রমতের অনাদি

উভর বিধ গতি হইরা আসিতেছে। এই দিবিধ গতির মধ্যে শুক্লা গতি দ্বারা সংসারে আনার্থি আর ক্ষণ গতি দ্বারা পুনরার সংসারে আর্ছি লাভ হইরা থাকে। হে পার্থ! এই উভর বিধ পথ জানিতে পারিরা কোন যোগীই মুদ্ধ হন না, অর্থাৎ স্থাদি কল কামনা না করিরা পরমেশ্বর নিষ্ঠ হন; অতএব তুমি সর্বাদা যোগ যুক্ত হও। অর্জুন! এই অধ্যায়োক্ত প্রশ্ননির্বার্থ জ্ঞাত হইলে, বেদাধ্যরন, যজাত্মন্থান, শরীর শোষণাদি তপস্যা ও দানে যে পুণা ফল উপদিউ হইরাছে, তৎ সমুদার ও তাহা হইতে শ্রেষ্ঠ যে অধিল-মূলীভূত বিষ্পদ, তাহা লাভ হয়।

ব্রন্ধবিদ্যা যোগ শাস্ত্রে ক্রফার্জুন সংবাদে তারক ব্রন্ধ যোগ নামে একত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩১॥

ভগবান কহিলেন, হে পার্থ! আমি পুনঃপুন স্বীয় মাহাত্ম্য উপদেশ করিতেছি, কিন্তু আমি পরম কারুণিক বলিয়া সেজন্য আমার প্রতি তোমার দোষ দৃষ্টি নাই এই হেডু পুনর্বার তোমাকে উপাসনা সহিত এই গুছতম ঈশ্বর বিষয়ক জ্ঞান বলিব, যাহা জানিয়া তুমি সংসার বন্ধন হইতে মুক্ত হইবে। উক্ত জ্ঞান বিদ্যার রাজা, অত্যন্ত পবিত্র, জ্ঞানীদিগের প্রত্যক্ষ গম্য, ধর্ম্ম্য, গোপনীয় যত বিদ্যা আছে তদ-পেকা অতি রহ্সা, সুখ সাধা এবং অক্ষয় ফল-জনক। হে শক্রতাপন! যে পুরুষেরা এই ধর্মের প্রতি আদাহীন, তাহারা আমাকে না পাইয়া মৃত্যু ব্যাপ্ত সংসার বর্জ্মেই পরিভ্রমণ করিয়া থাকে। অতীক্ৰিয়-মূৰ্ত্তি আমি এই সমস্ত জগতে ব্যাপ্ত আছি, সমস্ত জগৎও আমাতে অবস্থিত আছে, কিন্তু আকা-শের নাার আমি এই সকল জগতে লিগু নহি। আমার আশ্চর্যা অসাধারণ ঐশিক শক্তি দেখা এই দকল চরাচর আমাতে স্থিতি করে অথচ আমি নি-लिख बाकात्र देशा जामाटि विग्रामान बादक ना।

जात्र जान्वर्श (तथ, जात्रि धरे नकन वताव्र भात्र ও পালন করিয়া খাকি, অখচ আমার স্বৰূপ এই मकल्लाट शास्त्र ना जवीर य श्रकात जीव, त्मरूटक ধার্ণ ও পালন করত অহ্নার বশত তাহাতে সং-ক্লিক্ট থাকে, সেইৰূপ আমি ভূত সকলকে ধারণ ও পালন করিতে থাকিয়াও ঐ ভূত সকলেতে সংশ্লিফ থাকিনা, কেননা আমি নিরহঙ্কার। যে প্রকার মহান্ ও সর্বাগ বায়ু সর্বাদ। আকাশস্থ হইরাও আকাশে সংশ্লিষ্ট হয় না, সেই প্রকার সমস্ত চরাচর আ-মাতে অবস্থিত অথচ আমাতে অসংশ্লিফ জানিবে। কৃতীপুত্র! সমস্ত চরাচর কম্পক্ষরে প্রলয় কালে মদীয় প্রকৃতি ত্রিগুণাত্মক মায়াতে লীন হইয়া থাকে এবং পুনর্ব্বার কল্পের আদিতে স্টিকালে দেই সমুদায় চরাচর আমি বিশেষ ৰূপে স্টি করিয়া থাকি। আমি প্রকৃতি অবলয়ন করিয়া এই সকল চতুর্বিধ অস্বতন্ত্র ভূত গ্রামকে তাহাদিগের প্রাক্তন কর্ম বশত পুনঃপুন বিশেষ ৰূপে স্থটি করিয়া থাকি। ধনঞ্য়! সেই বিশ্বস্ট্যাদি কর্ম সকল আমাকে বন্ধন করিতে পারে না, যেহেতু আমি সেই সকল কর্মেতে আসক্তি রহিত হইয়া উদাসীনের ন্যায় আ-সীন থাকি। অবিকার ভাবাপন্ন জ্ঞান স্বৰূপ যে আমি, আমার অধিষ্ঠান দারা আমার ত্রিগুণাত্মক व्यविमा तथ श्रक्ति महत्राहत क्रभए छएभन्न करत । হে কৌন্তের! আমার অধিষ্ঠান মাত্র হেতুতেই সমস্ত জগৎ পুন:পুন উৎপন্ন হইয়া থাকে। বাহারা আ-মার সর্বাভূত-মহেশ্বর ৰূপ পরম তত্ত্ব জানে না, সেই মূঢ় জনেরা, আমার শুদ্ধবস্ত্বময় দেহ হইলেও ভক্ত-मिटशत देव्हाधीन मानवरम्ह धाती त्य ज्यामि, ज्यामा-কে অবজ্ঞা করিয়া থাকে। তাহারা আমাব্যতীত দেবতান্তর শীভ্র কল প্রদ বলিয়া আশা করে, কিন্ত তাহাদিগের দে আশা বার্থ হয়, যেহেতু তাহারা আ-मात्र श्रेष्ठि विमूध रश्रितार कार्रामिरगर कर्म नकत कल कनक रस ना अवर छाराजिएमत नाजकान नाना কুতর্কের আত্রিত হওরাতে তাহাদিদের চিত্ত বি-

ক্ষিপ্ত হইরা থাকে, কেননা ভাহারা হিংসাদি প্রচুর তামসী, কাম দর্পাদি বছলা রাজসীও বৃদ্ধি ভংগ করী প্রকৃতির আঞ্চিত হইরা পড়ে সুভরাং আমা-কে অবজ্ঞা করে।

হে পার্থ! যাঁহাদিগের চিত্ত কামাদিতে অভি-ভূত না হয়, তাঁহারা শম দম দয়া শ্রহ্মাদি-লক্ষণী দৈবী প্রকৃতির আভিজ ও অনন্যমনা হইয়া আমা-কে জগৎ কারণ ও নিতা জানিয়া ভজনা করেন। তাঁহারা সর্বাদা দৃঢ় নিয়ম, অবহিত ও যত্নৰম্ভ হইর। ভক্তি পূর্বক আমাকে ভোত্র মন্ত্রাদি দারা কীর্ত্তন ও প্রণাম করত উপাসনা করেন। অনেকে আমাকে, সকলই সেই এক মাত্ৰ বিষ্ণু, এই ৰূপ সৰ্ববাদ্ম দর্শন-জ্ঞান-যজ্ঞ দারা পূজা করত উপাসনা করেন। তন্মধ্যে কেহ কেহ অভেদ ভাবনা ছারা, কেহ কেহ, আমি দাস, এই ৰূপ পৃথক্ ভাবনা দারা, কেহ কেহ বা, বিশ্বতোমুখ—সর্বাত্মক যে আমি, আমাকে ব্রহ্মা রুদ্র ইত্যাদি বছধা ভাৰনা দারা উপাসনা করিয়া থাকেন। আমি শ্রুণতি-বিহিত অগ্নিকৌমাদি যজ্ঞ, আমি স্থৃতি বিহিত পঞ্চ বক্ষাদি, আমি পিতৃলোক निमिन्दक आकारि, जामि उपध, जामि यकमान পুরোধার বাক্যাদি, আমি হোমাদি সাধন আজ্ঞা, আমি অহেবনীয় অগ্নি, আমি হোমস্বৰূপ, আমি এই জগতের পিতা, মাতা, ও পিতামহ, আমি কর্ম কলের বিধাতা, আমি জ্ঞের, পাবন ও ওঙ্কার, আমি ঋক্, সাম ও যজুর্বেদ, আমি প্রাণীগণের গতি, পো-বণ কর্ডা, নিয়ন্তা, শুভাশুভ দ্রুফা, ভোগস্থান, রক্ষক, হিতকারী, স্রফ্বা, সংহর্তা, আধার, লয়স্থান ও কা-রণ এবং অবিনাশী। আমি আদিভারতে নিদাঘ कारन क्रगरं जान व्यनान कति, व्याइष्ट्रिनगरत वर्षन করি, এবং কদাচিৎ বর্ষণ আকর্ষণও করিয়া থাকি 🕆 হে অৰ্জুন! আমি সমর গণের অমৃত, আমি মঠী भरतत प्रजा, जामि हमा दृत वस वादः जामिरे जहमा रुका वह, धरे बार्श वहशा जानमा बाहा जानाहरू সংনকে উপাৰ্ক। করিয়া বাকে। বেদত্তর বিহিত কর্ম

প্রায়ণ বে সকল কাকিল। আনারই নগ বে ইতারি (इरक्र) कामा निर्माद का कविक देखानि (हरका नत्त्र जामारक त्रम विकित जिपिएक मारि वस पात পুৰা করিয়া যজ্ঞ শেষ সোম পান করত তন্ধারা বি-ধুক লাপ হইয়া স্বৰ্গতি প্ৰাৰ্থনা করে, তাহারা পুণা कन सद्वास्ताक चर्च भवन भूक्त उथात प्रय ভোগ্য উত্তম ভোগ উপভোগ করিতে থাকে। তা-হারা প্রার্থিভ বিশাল স্বর্গস্থ ভোগ করিয়া তাহাদি-গের ক্লুত পুণ্য কর্ম কল ক্ষর হইলে মর্জ লোকে পুনর্বার প্রবেশ করে এবং পুনর্বার তথার ভোগ কাম ও বেদৰিছিত ধর্মের অমুগত হইয়া যাতায়াত লাভ করিতে থাকে। আর যাহারা অনন্য কাম হইয়া আমাকে চিন্তা করত উপাসনা করে, সেই मर्ख्या मरमकनिष्ठे मिरशत ज्ञाश्च विषयत्त्रत आखि उ প্রাপ্ত বিষয়ের রক্ষা আমিই নির্ব্বাহ করিয়া দিই। হে কুন্তীনন্দন! অন্ধান্থিত হইরা যাহারা আমাবাতীত অন্য ইন্দ্রাদি দেবতাকে ভক্তি পূর্বক যজন করে, তাহাদিগেরও আমারই উপাসনা করা হয়, কিন্তু তা-হারা মোক্ষ প্রাপক বিধি অনুসারে উপাসনা করে না; আমি যে, সমন্ত যজের তত্তৎ দেবতা ৰূপে ভোক্তা এবং সমুদার যজের কল দাতা, এনপে আ-মাকে যাধাৰ্থ ৰূপে তাহারা জানে না, এই নিমিত্তেই সংসারে যাতায়াত করিয়া থাকে। দেব পুৰুকেরা দেবলোক, আদাদি কিয়াপরায়ণ বাজিরা পিতৃ-লোক, বিনারক ও মাতৃগণ প্রভৃতি ভূত যাজকেরা ভূত লোক এবং আমার উপাসকের। আমাকে প্রাপ্ত হইন্ন থাকে৷ যে কাজি ভক্তি পূৰ্বক পত্ৰ, পূকা, ফল वा जब माज जामादक धनान करत, तारे एकिएड ব্যক্তির জান্তি করণক সমর্গিত সেই পত্র পুষ্পাদি আমি জীতির সহিত গ্রহণ করি। হে কৃতীপুত্র। जुबि क्लिक्न, हरन, प्रम रा जनगा रा किहू कर আর্থ পাল্লেড বা প্রভাবত বে কোন কর্ম কর, তৎসম-वर्षे भाषांग्रह जात्राएं नमनिष्ठ वस, अवश वस् वक्ष क्रांकिन क्रांक कर्य निकान एकाएक यह

হইতে বিস্তুত হইবে; ভাহা হইলে আমার প্রতি কর্মা नमर्गं क्य नज्ञान-त्याद्य यूक्किक रहेता क्यादिक वास रहेट्द। ममस वाणीत अफिर जामात ममसाह এই হেতু আমার কেছ ছেবা বা প্রিয় নাই, ভৱে যে, বাহারা আমাকে ভক্তি পূর্বক ভঙ্কনা করে, তা-হারা আমাতে বর্তমান থাকে এবং আমিও দেই সকল ব্যক্তিতে বৰ্তমান থাকি, ইহা কেবল মৰিবরক ভক্তিরই মাহাত্ম। অত্যন্ত ছুরাচার ব্যক্তিও যদি অনন্য ভক্ত হইয়া আমার উপাসনা করে, সে ব্যক্তিও সাধু বলিয়া মন্তবা, কেন না ভাহার অধ্যবসায় উভম। স্তুরাচার হইলেও আমাকে ভঙ্গনা করাতে সে শীড্রা ধর্মাত্মা হয়, অনন্তর স্থতরাং তাহার চিত্তোপপ্লবের উপরম স্বৰূপ প্রমেশ্বর-নিষ্ঠা প্রাপ্তি হয়। হে কৌ-ন্তের! আমার ভক্ত যে বিনক্ট হয় না, অপিচ ক্লভার্থ হয়, ইহা তুমি প্রতিজ্ঞা করিয়া বলিতে পার। হে পার্থ! যাহারা অন্তাক কুলে জন্ম গ্রহণ করে, যাহারা কেবল কৃষি বাণিজ্যাদিতেই নিরত, এবং যাহারা অধা-রনাদি রহিত জী পুজাদি, তাহারাও বখন আমার নেবা করিলে পরম গতি লাভ ক্রিতে পারে, তথন ভক্তিসম্পন্ন পুণাবংশীয় বান্ধণ ও রাজর্ষিরা যে পরম গতি লাভ করিবেন, তাহাতে আর বক্তব্য কি? অত-এব তুমি এই স্থখ রহিত অনিতা মর্তা লোকে আসিয়া তুর্লভ পুরুষার্থ সাধন মন্ত্রাত্ত লাভ করিরা আমাকে ভঙ্গনা কর, আমার প্রতি এক চিত্ত হও, আমার উপাসক হও, আমার পূজা কর, এবং আমাকে নম-কার কর; এই প্রকারে আমাকে আত্ময় করিয়া আমাতে মনঃ সমর্পণ করিলে, পরমানক রূপ যে षानि, षामादक श्राश्च रहेदन 🖂 🦠 💮

কৃষণাৰ্জুন সংবাদে রাজ গুঞ্ যোগ নামে ছাত্রিংশ অখ্যায় সমাস্ত । ৩২ ॥

অগবাদ কহিলেন, হে মহাবাছ! তুমি আমার্র বচন হারা প্রীতি লাভ করিডেছ, তোমার ছিছাভি-লাবে আমি পুনর্কার প্রমান্তনিত বাকা বাহা বলি

क्रिके. टावन समा समित्र नाना विस्कृष्टि साहा ष्याविकीय (सर्व शर्व १७ महर्षिश्य प्यवशक महरून, व्यटक्जू: व्यक्ति कैंग्शिमित्मत्र केंग्लिक क बुक्तामि প্রবৃত্তির কারণ; ক্তরাং আমার অর্থহ বাডীত स्वर्षे भागादक बानिएड लाइन नः। विमि बाबादक ক্ষম খুনা, ক্ষমানি ও লোক সংক্ষের কানেন, তিনি মর্তাপথের মধ্যে মেহি রহিত হইয়া সর্ব পাপ क्षेट्र विश्वक रम। वृक्ति नातानात विदयक देन-नुग, जान-याच कान, यनश्टमार- वदााकृतछा, क्या-त्रहिक्छा, त्रहा-वर्षार्थ छावन, नम- वारह-क्षित्र भरवम, भग-अस्वत्यक्त भरवम, स्थ, कृत्थ, উত্তব, অনুত্তব, ভয়, অভয়, অহিংনা-পর পীড়া-নি-বৃত্তি, সমতা— রাগ দেবাদি ব্লাহিত্য, তৃতি—দৈবাধীন লাভে সংস্থাৰ, তপদ্যা—ইক্সিয় সংঘম-পূৰ্বক শরীর-भीष्त्र, नाम-नाशिक्कि धनोत्ति भारत अर्थन, यम-সৎকীৰ্ত্তি, অয়শ – ছুকীৰ্ত্তি, এই সকল নানা বিধ ভাব व्यागीमिरगद्गे भागा रहेराज्हे इत । भृष्ठ व्यक्ति मक्ष महर्सि, छारामितात्र शृंस्य जन मनक अञ्चि महर्सि চতুটার এবং স্বারস্থুব প্রভৃতি মন্থু গণ আমারই প্রভাব ও সংকশ্প মাত্রে উৎপদ্ধ হইয়াছেন, যাঁহা-দিগের পুত্র পৌত্রাদি সন্তান ওশিবা প্রশিবাদি ৰূপে এই সকল প্ৰজা, লোকে বিদ্যমান রছিয়াছে। বেবাজি সামার ভৃগু প্রভৃতি এই বিভৃতি ও সর্বজ্ঞ-चामि अवर्धा याचार्थ छाटन काटनन, जिनि निजरभन्न-সমাক দশী হন, ইহাতে সন্দেহ নাই। আমিই সমস্ত वनइर्पाचेत रहकू, भाग स्टेट्डर तुक्कि, कान उ चनःदमार रेजापि अर्ख रहेशा शास्त्र, वरे बल जा-নিয়া বিবেকী ব্যক্তিয়া আমার প্রতি প্রীতিমুক্ত হইরা আমার উপাসনা করেন। ভাঁহারা মন্সত চিত্ত ও সন্দাতে ক্রির হইরা পর্স্পর ন্যারোপেড অন্তি প্রভৃতি অমাণ দারা খারং বৈশিষ্যা করিরা ও অন্যকে বোধ-পমা করাইগা, সুনীয় তত্ত্ব বভাত কীৰ্তৰ করত সভাত थाटकन ७ विक्रिक गाफ क्टब्रम् । अहे कर्न मलाक-विष ७ व्याञ्चलक जिल्लामक निर्वेशिक निर्मित

শোৰি, বে উপায়ে ভাষায়া লামানে প্ৰাথ হয়, এমন বৃদ্ধি বোপ আদান করি। অনস্তঃ ফার্থনিয়েক নিছি শক্তাহ কেন্ট্ আমি ভাষাদিলের বৃদ্ধিগুরিখন ক্ষব-হিত হইরা ভাষা আন দীপ দারা অক্সাদ-ক্ষান্ত তম কল সংসার বিকাশ করিয়া থাকি

অৰ্কুন কহিলেন, হে কেশৰ। ভূমিই পান্ন পৰিত্ৰ পরমাভার পরম বেক্ত বেহেতু ভৃত প্রভৃতি সমত चिवि ग्रेन, दमवर्षि नातम, अभिन्त, दमवन च बाम, हेर्ही-রা তোমাকে নিভা পুরুষ, দ্যোতনাম্মক, আমি দেব, লম রহিত ও ব্যাপক বলিয়া কীর্ত্তন করেন এবং ভূমিও স্বরং আমাকে তাহা বলিভেছ। হে ভদবন্! বাহা আমাকে বলিভেছে, এ সমন্তই আমি সভ্য জ্ঞান করিতেছি। হে পুরুবোন্তম।তোমার জাবি-র্ভাব যে দেবভাদিগের অমুগ্রহার্থে এবং দানবদিগের নিপ্রহার্থে, তাহা না দেবগণই জানেন, না দানবেরাই জানে। হে ভূতভাবন! হে ভূতনিয়ন্তা! হে দেবদেব! হে বিশ্ব পালক! তুমি আপনিই আপনাকে আপনা দারাই জান, অতএব ভোমার বে অন্তত আজু-विज्ि नकन, यद्याता धरे ममुनाम लाएक वार्थ इहे-রা তুমি অবস্থান কর, তাহা অশেষ ৰূপে ৰলিতে ज्मिरे योगा। दर योगिन्। जामि नर्समा कि बन्दित পরিচিন্তা করিয়া ভোমাকে জানিতে পারিব, কোন্ কোন পদার্থেতে ভোমাকে চিন্তা করিব ? হে জগ-वन् ! दर क्रनार्कन-एक्वाद्विशीएन । दश्याद्व वकीत সর্বজ্ঞত্ব ও সর্বা শক্তিবাদি ৰূপ বোৰ ও বিভৃতি शूनकात विखात करम कीर्यन क्य, व्यट्ड ट्रंडा-দার বচনায়ত, অবণ করিরা আমার ভৃত্তির লেঘ ेर्रेएउट्ट ना।

ভগবাদ কহিলেন, হে কুক্তুল প্রবন্ধ। আনার দিব্য বিভূতি বিভন্ন, ভাহার অব নাই, ভয়ত্যা প্রা-বান্য ক্রমে ভোষার নিকট কীর্তন করি। ইছ উর্তা-বিশা- ভিভনিত্র। আমিসকা ভূতের অবস্থানি করি-ক্রমিনি ভাগ বারা নিয়ন্ত্র করে ক্রমিনি স্ক্রমিনি। ভীম্মপর্ব ৷

আমি দ্বাদশ আদিত্যের মধ্যে বিষ্ণু নামে আদিত্য; আমি জ্যোতিয়ান্ দিগের মধ্যে বিশ্ববাপী রশ্মি যুক্ত স্থ্যা; আমি সপ্ত মরুৎ গণের মধ্যে মরীচি নামে মরুৎ; আমি নক্ষত্রগণের মধ্যে শশী; আমি ममल विद्यालय माम विष्यः, जामि क्रिकां कि यावर मिवशरांत्र मर्था हेन्सः; यामि এकामम हेन्सिस মধ্যে মন; আমি ভূতগণেব্ধ চেতনা; আমি একা-**एम क्रांक्त मर्द्या मह्मत ; आमि यक त्रोकम पिरंगत** মধ্যে কুবের; আমি অফ বস্থুর মধ্যে অগ্নি এবং যাবৎ পর্বতের মধ্যে মেরু গিরি। হে পার্থ! তুমি আমাকে পুরোহিতগণের মধ্যে প্রধান র্হস্পতি জানিবে। আমি সেনাপতি গণের মধ্যে কার্ত্তিকেয়; আমি তাবৎ জলাশয় মধ্যে সাগর; আমি মহর্ষি গণের মধ্যে ভৃগু; আমি বাক্য সকলের মধ্যে প্রণব; আমি যজ্ঞ সকলের মধ্যে জপ যজ্ঞ; আমি স্থাবর সকলের মধ্যে হিমালয়; আমি র্ক সমুদায়ের মধ্যে অশ্বস্থ ; আমি দেবর্ষিগণের মধ্যে নারদ ; আমি গন্ধর্বগণের মধ্যে চিত্ররথ এবং সিদ্ধগণের মধ্যে কপিল মুনি। ছে পার্থ! অমৃত নিমিত্তক ক্ষীরোদ সাগর মন্থনে উৎপন্ন যে উচ্চৈঃশ্রবা নামে অশ্ব ও এরাবত নামে হস্তী, তাহাও আমারই বিভৃতি এবং আমাকে মনুষ্যগণের মধ্যে নৃপতি জানিবে। আমি আয়ুধ সকলের মধ্যে বক্স; আমি ধেনু সকলের মধ্যে কাম ধেনু। আমি প্রজা উৎ-পত্তির কারণ কন্দর্প; আমি বিষ বিশিষ্ট সর্পগণের মধ্যে বাস্কৃকি; আমি নির্বিষ দর্প গণের মধ্যে অনম্ভ; আমি যাদোগণের মধ্যে বরুণ; আমি পিতৃ গণের মধ্যে অর্থামা; আমি নির্মমকারী সকলের মধ্যে ষম ; আমি দৈতাগণের মধ্যে প্রহ্লাদ ; আমি গণনাকারীগণের মধ্যে কাল; আমি পশুগণের মধ্যে মূগেক্র; আমি পক্ষিগণের মধ্যে গরুড়; আমি বেগবানের মধ্যে পবন; আমি শস্ত্রধারী সকলের मर्था लामत्रथि द्राम ; चामि मश्माभर्गत मर्था मकत এবং শ্রোভম্বতীর মধ্যে জাহ্নবী। হে অর্জুন! স্থি,

স্থিতি ও প্রলয় আমারই বিভৃতি বলিয়া জানিবে। আমি বিদ্যা সকলের মধ্যে অধ্যাত্ম বিদ্যা; আমি বাদিগণের তত্ত্ব নিৰূপণাৰ্থ কথন ৰূপ বাদ, অৰ্থাৎ তাহাও আমার বিভৃতি; আমি অক্ষর সকলের মধ্যে অকার; আমি সমাস সকলের মধ্যে ছন্দ ममाम ; जामि अवार क्रम जक्क कान ; जामि कर्म কল বিধাতার মধ্যে বিশ্বতোমুখ বিধাতা; আমি সংহারক সকলের মধ্যে সর্বহর মৃত্যু; আমি উং-কর্ষ-প্রাপ্তি-যোগ্য দিগের তৎ প্রাপ্তির হেতু; আমি नात्रीमिर्गत मर्था कीर्डि, औ, वांगी, म्यृजि, भिया, ধৃতি ও ক্ষমা, অর্থাৎ এ সকলও আমার বিভূতি; আমি সাম বেদের মধ্যে রুহৎ সাম—মোক্ষপ্রতি-পাদক সামবেদ বিশেষ; আমি ছন্দোযুক্ত মন্ত্রের মধ্যে গায়ন্ত্রী; আমি মাসের মধ্যে মার্গশীর্ষ; আমি ঋতুর মধ্যে বসন্ত; আমি ছলকারীদিগের দৃতে; আমি তেজস্বীদিগের তেজ; আমি জয়শীল দিগের জয়; আমি উদ্যমশালীদিগের উদ্যম; আমি সা-ज्ञिक फिरागत मञ्ज ; ज्यामि वृष्टि-वर्श्मीयगर्गत मरधा বাস্থদেব; আমি পাণ্ডবদিগের মধ্যে ধনঞ্জয় অর্থাৎ ভুমিও আমার বিভূতি; আমি বেদার্থ মননশীল— मूनिनिरंशेत मद्या वाामरनव ; जामि कविशर्वत मर्या শুক্রাচার্য্য; আমি দমনকর্ত্তাদিগের দণ্ড অর্থাৎ ষদ্ধার। অসংযত ব্যক্তির। সংযত হয়, সেই দণ্ডও আমার বিভৃতি; আমি জিগীরু দিগের সামাদি উপায় ৰূপ নীতি ; আমি গোপনীয় বিষয়ের গোপনের হেতু মৌন এবং তত্ত্বজানীদিগের জ্ঞান। হে অর্জুন! সমু-দায় ভূতের যে বীজ, তাহাও আমি। আমা ব্যতীত যে, কোন চরাচর বস্তু উৎপন্ন হইতে পারে, এমত বস্তুই নাই। হে পরন্তপ! আমার দিবা বিভূতির অন্ত নাই, স্বতরাং তৎসমুদায় বলিতে শকা হয় না, অতএব ঐ বিভূতি-বিস্তার সংক্ষেপে কহিলাম। ঐশ্বর্য্য-সমৃদ্বিত, শ্রীযুক্ত ও প্রভাব বলাদি দ্বারা অতি-শন্নিত যে কোন বস্তু, তৎ সমস্তই মদীয় তেজের অংশ-সম্ভূত জানিবে। হে অর্জুন! আমার এই

সকল বিভৃতি তোমার পৃথক্ পৃথক্ জানিবার প্রয়োজনই বা কি ? যেহেতু এই সমুদায় জগতেই আমি স্বকীয় এক ংশ মাত্রে ব্যাপিয়া আছি, আমা ব্যতি-রিক্ত কোন বস্তুই নাই।

ক্লফার্জুন সংবাদে বিভৃতি যোগ নামে তায়-স্ত্রিংশন্তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৩৩ ॥

অর্জুন কহিলেন, হে পত্মপলাশ-লোচন! আমার শোক নির্ত্তি নিমিত্তে তুমি যে পরমাত্মনিষ্ঠ গোপনীয় আত্মানাত্ম বিবেক বিষয়ক বাক্য বলিলে, তদ্ধারা 'আমি হস্তা ও আমা কর্তৃক ইহাঁর। হত হইতেছেন' ইত্যাদি কপ ভ্রমজ্ঞান আমার বিনফ হইল। তোমা হইতেই যে ভূতগণের স্থাটি সংহার হয়, তাহা এবং তোমার অক্যয় মাহাত্ম্য আমি বিস্তার ক্রমে প্রবণ করিলাম। হে পরমেশ্বর! তুমি যে কপ কহিলে, তাহা যথার্থই বটে, তাহাতে আমার অবিশ্বাস নাই, তথাপি হে পুরুষোত্তম! আমি তোমার জ্ঞান ঐশ্বর্যা শক্তি বীর্যাদি সম্পন্ন কপ প্রত্যক্ষ করিতে ইচ্ছা করিতেছি; হে প্রভো! হে যোগিগণের ঈশ্বর! তুমি যদি এমন বোধ কর যে, আমি ত্বদীয় কপ দর্শন করিতে সমর্থ হইব, তাহা হইলে তোমার অব্যয় পরমাত্ম কপ আমাত্মে দর্শন করাও।

ভগবান কহিলেন, হে পার্থ! আমার শুক্ল ক্ষণাদি
নানা বর্ণাকৃতি অপরিমিত অলৌকিক নানা প্রকার
ৰপ দর্শন কর। হে ভারত! আমার দেহ মধ্যে
আদিত্যগণ, বস্থগণ, রুদ্রগণ, অশ্বিনী-কুমার দ্বর ও
মরুংগণকে দর্শন কর; বছবিধ অদ্ভুত ৰূপ, যাহা ভূমি
বা অন্য কেহ কথন পূর্বের দর্শন করে নাই, তাহা
নিরীক্ষণ কর। হে গুড়াকেশ! আমার এই দেহ
মধ্যে একত্র স্থিত সচরাচর সমুদায় জগৎ ও তদ্বাতিরিক্ত যাহা কিছু দেখিতে ইচ্ছা কর, অধুনা দর্শন
কর। প্রস্কু ভূমি এই চর্মা চক্ষু দ্বারা আমাকে
দেখিতে সমর্থ হইবে না, অতএব তোমাকে অলৌকিক জ্ঞান চক্ষু দিতেছি, ভূমি তন্ধারা আমার অঘ-

টন-ঘটন-সামর্থ্য ৰূপ ঐশ্বরিক যোগ দর্শন কর।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! মহাযোগেশ্বর হরি

এই ৰূপ কহিয়া তৎ পরে অনেক মুখ বিশিষ্ট,
অনেক নয়ন যুক্ত, অনেক প্রকার অদ্ভত-দর্শন,
অনেক দিব্যাভারণ সমন্বিত, উদ্যত অনেক দিব্যায়ুধ ধারী, দিব্য মাল্য ও অয়র পরিধায়ী, দিব্য গন্ধায়ুলেপন চর্চিত, সর্ব্ব প্রকার আশ্চর্য্য ময়, সর্ব্বতোমুখ—সর্ব্বভৃতাত্মা, অপরিচ্ছিয়, দ্যোতনাত্মক, পরম
ঐশ্বর ৰূপ দর্শন করাইলেন। যদি আকাশে সহস্র
স্থারে প্রভা এক কালে উন্থিত হয়, সেই প্রভা সেই
বিশ্ব ৰূপ মহাত্মার ৰূপের কথঞ্চিৎ সদৃশী হইতে
পারে। পাণ্ডুনন্দন অর্জ্জন তথন সেই দেবদেবের
শরীরে একত্র স্থিত দেব পিতৃ মনুষ্যাদি ভেদে
অনেকধা বিভক্ত ক্রৎস্ম জগৎ দর্শন করিলেন।

অনন্তর ধনঞ্জয় বিশায়াপন্ন, লোমাঞ্চিত কলেবর ও নত মন্তর্ক হইয়া সেই দেবকে প্রণাম পূর্ব্বক ক্কতাঞ্জলিপুটে বলিতে লাগিলেন, হে দেব! তোমার দেহে আদিত্যাদি দেবতা, জরায়ুজ অগুজ প্রভৃতি সমস্ত প্রাণিগণ, দিব্য ঋষিগণ, দিব্য উর্গগণ ও তাহাদিগের নিয়ন্তা পত্মাসনস্থ ব্রহ্মাকে দেখিতেছি।-হে বিশ্বৰূপ বিশ্বেশ্বর! আমি তোমাকে অনেক বাহু, উদর, বক্তু ও নেত্র বিশিফ দেখিতেছি, তোমার আদি, মধ্য ও অন্ত দেখিতে পাইতেছি না, সর্বত্র অনম্ভ ৰূপ দেখিতেছি; তোমাকে কিব্নীটা, গদাধারী, চক্রধারী, সর্বত্র দীপ্তিমান্, তেজোরাশি, প্রদীপ্ত অনল ও স্থ্য সদৃশ ছাতিমান্, ছুর্নিরীক্ষ্য, অনিশ্চেয়-ৰূপ চতুৰ্দ্দিকে দেখিতেছি; তোমাকে অক্ষর পরব্রহ্ম, মুমুকুদিগের জ্ঞতিব্য, এই জগতের পরম নিধান, নিত্য, নিত্য ধর্মের পালক ও সনাতন পুরুষ মনে করিতেছি এবং তোমাকে উৎপত্তি, স্থিতি ও লয় রহিত, অনন্ত প্রভাব, অনন্ত বাছ, চক্র সূর্যা ব্রুপ নেত্র ঘয়ে সমন্বিত, দীপ্তায়ি সদৃশ মুখ বিশিষ্ট ও স্বকীয় তেজ দারা এই জগতে সম্ভাপকারী দেখি-তেছি। তুমি একাকী ছ্যালে ক ও মর্ত্যলোকের

অন্তৰ্বৰ্ত্তী অন্তন্ত্ৰীক ও সৰ্ব্ব দিক্ ব্যাপ্ত হইয়াছ। হে মহাত্মন্! তোমার এই অদ্ভুত উগ্রৰপ দেখিয়া ত্রিভু-বন ভীত হইরাছে। এই সমস্ত দেবগণ, যাঁহারা ভূতার অবতরণের নিমিত্তে পৃথিবীতে মমুষ্য ৰূপে অবতীৰ্ণ হইয়া যোদ্ধা ৰূপে অবস্থিত রহিয়াছেন, তাঁহাদিগকে ভোমাতে প্রবেশ করিতে দেখিতেছি। তাঁহাদিগের মধ্যে কেহ কেহ,ভীত হইয়া ক্লতাঞ্চলি-পুটে তোমাকে ন্তব করিতেছেন। মহর্ষি ও সিদ্ধাণ, জগতের স্বত্তি হউক, এই ৰূপ বলিয়া সম্পূর্ণ স্তুতি বাক্য দ্বারা তোমাকে স্তব করিতেছেন। রুদ্রগণ, আদিত্যগণ, বস্থগণ, সাধ্যগণ, বিশ্ব দেবগণ, অশ্বিনী-কুমার দ্বয়, মরুৎগণ, পিতৃগণ, গন্ধর্বগণ, যক্ষগণ, বিরোচনাদি অস্থরগণ ও সিদ্ধাণ, ইহাঁরা সকলেই বিশ্বিত হইয়া ভোমাকে নিরীক্ষণ করিতেছেন। হে মহাবাছ! তোমার বহু মুখ, নেত্র, বাছ, উদর, ঊরু ও পদ বিশিষ্ট এবং বহু দংখ্রী দ্বারা বিকৃত মহৎ ৰূপ দেখিয়া লোক সকলে যেমন অতিভীত হইয়াছে, আমিও সেই ৰূপ অতি ভীত হইয়াছি। হে বিষ্ণু! তোমাকে অন্তরীক্ষ-ব্যাপী, তেজ্ঞ:-পুঞ্জ, নানা-বর্ণ, ব্যান্তানন ও প্রদীপ্ত-বিশাল-নেত্র দেখিয়া আমার অন্তঃকরণ অতি ভীত হইয়াছে, আমি ধৈর্য্য ও উপ-শম লাভ করিতে পারিতেছি না। হে দেবেশ্বর! ভোমার প্রলয়াগ্নি-সদৃশ দংট্রা-করাল বছ মুখ দে-খিয়া আমার দিগ্ভদ হইয়াছে, আমি স্থ লাভ করিতে পারিতেছি না ; হে জগন্নিবাস ! তুমি প্রসন্ন হও। দেখিতেছি, জয়দ্রথ প্রভৃতি রাজগণের সহিত ছুর্য্যোধন প্রভৃতি ঐ সকল ধৃতরাষ্ট্র-পুলেরা, ভীষ্ম, দ্রোণ, কর্ণ ও অস্মৎ পক্ষীর প্রধান যোদ্ধা শিখণ্ডী ধৃষ্টছান্ন প্রভৃতি সকলেই স্বরমাণ হইরা, তোমার অনেক দংট্রা দ্বারা যে বিক্লত ভরক্কর মুখ সকল, তশ্বধ্যে প্রবিষ্ট হইতেছেন। ইহাঁদিগের মধ্যে কেহ কেহ চুর্ণিত-মন্তক হইরা তোমার দন্ত-সন্ধি-স্থল মধ্যে विनध हरेएउएइन। य थकात नहीं नकत्नत वहन জল বেগ সমুদ্রে অভিমুখ হইয়া তাহাতে প্রবেশ

করে, সেই ৰূপ এই নরবীর লোক সকল তোমার সর্ব্বতোভাবে প্রদীপ্যমান মুখ সকলের মধ্যে প্রবিফ হইতেছেন। পতঙ্গণ যে ৰূপ জ্ঞান পূৰ্বক সমৃদ্ধ-বেগ হইয়া মরণের নিমিত্ত খলন্ত অগিতে প্রবেশ করে, ইহাঁরাও সেই ৰূপ জ্ঞান পূর্ব্বক ক্লতোৎসাহ হই-য়া মৃত্যু নিমিত্তেই তোমার মুখ সকলের মধ্যে প্রবেশ করিতেছেন। হে বিষ্ণু! তুমি প্রজ্বলিত বদন সকল দারা চতুর্দিকে সমগ্র লোককে গ্রাস করত অভি-শয় ৰূপে ভক্ষণ করিতেছ। তোমার দীপ্তি, বিস্ফুরণ দারা সমগ্র জগতে পরিব্যাপ্ত ও তীত্র হইয়া সন্তাপ প্রদান করিতেছে, অতএব উগ্রব্ধপ তুমি কে, আমার নিকট ব্যক্ত কর। হে দেববর! তোমাকে আমার নমস্কার; তুমি আমার নিকট প্রসন্ন হও। কি নি-মিত্তই বা তোমার এৰপ কাৰ্য্যে প্ৰবৃত্তি, তাহা আমি জানিতে পারিতেছি না; ভুমি আদি পুরুষ হইবে, তোমাকে বিশেষ ৰূপে আমার জানিতে ইচ্ছা হইয়াছে।

ভগবান্ কহিলেন, আমি লোক ক্ষয়কর প্রবৃদ্ধ কাল, লোক সংহার নিমিত্তে অধুনা প্রবৃত্ত হইয়াছি; যে সকল যোদ্ধা পৃথক্ পৃথক্ অনীক মধ্যে অবস্থিত হইয়াছেন, তোমা ব্যতিরেকে তাঁহাদিগের কেহ জীবিত থাকিবেন না, অতএব হে সব্যসাচী! তুমি উঠ; যশ লাভ কর; শক্র জয় করিয়া সমৃদ্ধ রাজ্য উপভোগ কর; আমি পূর্কেই এই সকল লোককে নিহতপ্রায় করিয়া রাখিয়াছি, এক্ষণে তুমি নিমিত্ত মাত্র হও। দ্রোণ, ভীয়, জয়দ্রথ, কর্ণ ও অন্যান্য বীর যোদ্ধারা যখন আমা কর্তৃক নিহতপ্রায় হইয়াছেন, তখন তুমি ইহাদিগকে হনন করিতে সন্তাপিত হইও না, হনন কর; যুদ্ধে প্রবৃত্ত হও, শক্র জয়ী হইবে।

সঞ্জয় কহিলেন, কিরীটা, কেশবের এই বাক্য ভাবণ করিয়া কম্পমান, সাতিশয় ভীত, অবনত ও ক্তাঞ্জলি হইয়া নমকার পূর্বক গদাদ বাক্যে কৃষ্ণকে পুনর্বার কহিতে লাগিলেন, হে হুণীকেশ! তোমার মাহাত্মা কীর্তনে জগৎ যে প্রকৃষ্ট ও অমুরাগ প্রাপ্ত হয়, রাক্ষস সকল যে ভীত হইয়া দিগ্ দিগন্তর পলা-য়ন করে এবং যোগ, তপস্যা ও মন্ত্রাদি সিদ্ধ ব্যক্তি সকল যে প্রণত হন, তাহা উপযুক্তই বটে। হে মহাত্মনৃ! হে অনস্ত! হে দেবেশ! হে জগল্পিবাস! পূর্ব্বোক্ত সিদ্ধগণ কি হেতু তোমাকে নমস্বার না করিবেন, যেহেতু তুমি ব্রহ্মারও আদিকর্তা, স্বতরাং তাঁহা হইতেও গুরুতর। তুমি, সং—ব্যক্ত, তুমি অসং—অব্যক্ত এবং এ উভয়ের মূল কারণ যে ব্রহ্ম তাহাও তুমি। হে অনন্ত ৰূপ! তুমি আদি দেব, পুরুষ—দেহশায়ী ও চিরস্তন; তুমি এই বিশ্বের পিরম নিধান, বিশ্ব জ্ঞাতা এবং যে কোন বেদা বস্তু, তৎ সমুদায়ও তুমি; পরম ধাম যে বিষ্ণুপদ, তাহাও তুমি এবং তোমা কর্ভৃকই এই বিশ্ব পরিব্যাপ্ত রহি-য়াছ। বায়ু, যম, অগ্নি, বৰুণ, শশাঙ্ক ও পিতামহ প্রজাপতি, এ সকলই তুমি; তুমি পিতামহ ব্রদা এবং তাঁহারও জনক, অতএব তুমি প্রপিতামহ; ভোমাকে সহস্র নমস্কার, ভোমাকে পুনঃ পুন সহস্র নমস্কার। হে সর্বাত্মন্! তোমাকে পূর্বে দিগে নম-ক্ষার, তোমাকে পশ্চাং দিগে নমস্কার, তোমাকে সর্ব্ব দিকেই নমস্কার। তোমার অনন্ত সামর্থা ও অপরিমিত পরাক্রম; তুমি জগতের অন্তর্বাছে ব্যাপ্ত রহিয়াছ, অতএব তুমি সমুদার পদার্থ স্বৰূপ। হে অচ্যুত! আমি তোমার এই মহিমা না জানিয়া প্রমাদ বা প্রণয় হেতু তোমাকে সখা মনে করিয়া অভিভব করত "হে কৃষণ! হে যাদব! হে সখা!" এই ৰূপ বাক্য যে কহিয়াছি, এবং তুমি অচিন্তা প্রভাব, ভোমাকে স্থাগণের সমক্ষে বা অসমক্ষে যে পরিভব করিয়াছি, তন্নিমিত্ত তোমার নিক্ট ক্ষমা প্রার্থনা করিতেছি। হে অমুপম প্রভাব। ভূমি এই চরাচর লোকের পিতা, পূকা, গুরু ও শুরু অপেক্ষাও গুরুতর, অতএব ত্রিভুবন মধ্যে তোমার ভুল্য কেহই নাই, তবে আরু তোমা অপেক্ষা মহান্

কেহ থাকিবার সম্ভাবনা কি ? ভুমি জগভের নিরস্তা ও স্তবনীয়, অতএব হে দেব! আমি শরীরকে দণ্ড-বৎ নিপাতিত করিয়া প্রণাম পূর্ব্বক তোমার প্রস-ন্নতা প্রার্থনা করিতেছি, যে প্রকার পুলের অপরাধ পিতা, সখার অপরাধ সখা এবং প্রিয় জনের অপ-রাধ প্রিয় ব্যক্তি ক্ষমা করে, সেই ৰূপ ভূমি আমার অপরাধ ক্ষমা করিতে যোগ্য হও। হে দেবেশ। হে জগতের নিবাস ভূমি ! তোমার এই অদৃষ্ট-পূর্ব্ব ৰূপ দেখিয়া আমি হৃষ্ট হইয়াছি এবং ভয়েতে ও আমার মন বিচলিত হইয়াছে, অতএব হে দেব! তুমি আমার প্রতি প্রসন্ন হও; তোমার সেই পূর্ব্ব ৰূপ আমাকে দর্শন করাও। আমি তোমাকে পূর্ব্ববৎ কিরীট-যুক্ত গদা ও চক্র ধারী দেখিতে ইচ্ছা করি-তেছি ; হে সহস্ৰ বাছ ! হে বিশ্বমূৰ্ণ্ডি ! ভূমি এই বিশ্ব ৰপ উপসংহার করিয়া সেই চতুতু জ ৰূপে আবি ৰ্ভুত হও।

ভগবান কহিলেন, হে অৰ্জুন! ভুমি কি নিমিত্তে ভয় পাইতেছ ? আমি প্রসন্ন হইয়া আপনার ঐশ্বর্যা সামর্থ্য হেতু এই আদিভূত বিশ্বাত্মক অনম্ভ তেজো-ময় ৰূপ তোমাকে দর্শন করাইলাম, যাহা তোমা ব্যতীত অপর কেহ কখন দর্শন করে নাই। হে কুরু-প্রবীর! বেদ ও যজ্ঞ বিদ্যার অধ্যয়ন, দান, অগ্নিহোত্রাদি ক্রিয়া ও চান্দ্রগাদি উগ্র তপস্যা দ্বারাও মর্ত্য লোক মধ্যে ভোমা ধ্যতীত অন্য কাহারও আমার এই ৰূপ দর্শন করিতে সামর্থ্য হয় না। আমার ঈদৃশ ঘোর ৰূপ দেখিয়া তোমার ভয় ও মোহ ভাব হই্তেছে, অতএব যাহাতে তাহা না হয়, এই নিমিত্তে ভোমাকে সেই ৰূপ দেখাইভেছি, ক্রীড়া, শয়ন, উপবেশন বা ভোজনে পরিহাস নিমিত্ত | তুমিবীত-ভন্ন ও প্রীতচিত্ত হইয়া তাহাই দর্শন কর। मञ्जूत कहित्वन, महाचा वाञ्चत्वत, व्यर्क्नुनत्क जीज দেখিয়া ঐ ৰূপ বলিয়া প্ৰসন্ন মূৰ্ডি ধারণ-পূৰ্ব্বক যে ৰূপে পূৰ্ব্বে ছিলেন, সেই স্বকীয় ৰূপ পুনৰ্ব্বার দেখাইলেন এবং আশাস প্রদান করিলেন। পরে অর্জুন কহিলেন, হে জনার্দন! এই ক্লণে আমি

তোমার এই সৌম্য মামুষ-ৰূপ দেখিরা স্বাস্থ্য প্রাপ্ত হইলাম, আমার চিত্ত প্রসন্ন হইল।

ভগবান কহিলেন, অর্জুন! আমার সেই বিশ্বৰূপ যাহা তুমি দেখিয়াছ, তাহা নিতান্তই দৃতি করিতে অশক্য, দেবতারাও সর্বাদা সেই ৰূপের দর্শনাকাজ্জী। হে পরস্তপ! তুমি যেৰূপ আমাকে দেখিয়াছ, এবিষধ ৰূপ বেদাধায়ন, তপদ্যা, দান ও যজ্ঞ করিয়াও কেহ দেখিতে পায় না। কিন্তু মদেক-নিষ্ঠ ভক্তি দারা আমার সেই বিশ্বৰূপ প্রমার্থত জ্ঞাত হইতে, শাস্ত্রত প্রত্যক্ষ করিতে এবং তাদাল্যা ভাবে তাহাতে প্রবেশ করিতে শক্য হয়। হে পাণ্ডব! যিনি আমার নিমিত্রই কর্মা করেন ও আমারই আজিত এবং যাঁহার আমাতেই পুরুষার্থ জ্ঞান, পুল্রাদিতে আসক্তি রাহিতা ও সর্বা ভূতে নির্বৈর ভাব, তিনিই আমাকে প্রাপ্ত হন।

বিশ্বৰূপ দৰ্শন নামে চতুক্তিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৪॥

অর্জুন কহিলেন, এই ৰূপে তোমাতে কর্ম সমপ্রণাদি দারা ত্বনিষ্ঠ হইয়া যে ভক্তেরা, বিশ্ব স্থৰপ,
সর্ব্বজ্ঞ ও সর্বশক্তিমান যে তুমি, তোমাকে উপাসনা করে, আর যাহারা অক্ষর অব্যক্ত নির্বিশেষ
ব্রহ্মকে উপাসনা করে, এই উভয় গণের মধ্যে কাহারা অতি শ্রেষ্ঠ যোগজ্ঞ ?

ভগবান্ কহিলেন, যাহারা বিশ্ব শ্বৰপ, সর্বজ্ঞ ও
সর্ব্ব শক্তিমান্ যে আমি, আমাতে মনঃ সমাবেশ
করিয়া আমার নিমিত্তে কর্মান্তুল্লাদি দ্বারা মন্নিষ্ঠ
ও পরম শুদ্ধান্তিত হইয়া আমাকে উপাসনা করে,
ভাহাদিগকেই আমার মতে যুক্ততম জানিবে। আর
যাহারা সর্ব্ব প্রাণি হিতে রত ও সর্ব্বত্র সমর্দ্ধি
হইয়া ইক্তির গ্রাম সংযম পূর্বক দ্রুব স্পান্দন-রহিত
মায়া-প্রপঞ্চে অধিষ্ঠাতা অভিন্তনীর সর্ব্বত্র-ব্যাপী
অনির্দেশ্য অব্যক্ত অক্ষরকে ধ্যান করে, ভাহারাও
আমাকেই প্রাপ্ত হয়। কিন্তু বিশেষ এই যে সেই

অব্যক্তাসক্ত-চিন্ত ব্যক্তিদিণের অধিকতর ক্লেশ হইয়া থাকে, কেননা দেহাভিমানী দিণের অব্যক্তে নিষ্ঠা অতি ককে সংঘটিত হয়। আর যাহারা মৎ-পরায়ণ হইয়া আমাতে সর্ব্ধ কর্ম সমর্পণ পূর্বক অনন্য যোগ অর্থাৎ আমার প্রতি একান্ত ভক্তি-যোগ দ্বারা আমাকে ধ্যান করত উপাসনা করে, হে পার্থ! সেই আমার প্রতি আবেশিত-চিন্ত ব্যক্তি দিগকে মৃত্যুযুক্ত সংসার সাগর হইতে আমি অচির কালেই উদ্ধার করিয়া থাকি, অতএব তুমি আমাতে মনঃ হির কর ও আমাতে বৃদ্ধি নিবেশিত কর; তাহা হইলে তুমি এই দেহান্তে আমাতে নিবাস করিতে পারিবে, ইহাতে সংশয় নাই।

হে ধনঞ্জয়! যদি ভূমি আমাতে চিক্ত স্থির করিতে না পার, তবে আমার অনুস্মরণ ৰূপ অভ্যাস-যোগ দারা আমাকে প্রাপ্ত হইবার নিমিত্তে ইচ্ছা কর। যদি অভ্যানেও অশক্ত হও, তবে আমার প্রীতি निभित्य य नकल कर्म, उम्सूकीन-পরায়ণ হও; ঐ ৰূপ কৰ্ম্ম সকল আমার নিমিত্তে করিলে মোক্ষ লাভ করিতে পারিবে। যদি তাহাতেও অসমর্থ হও, তবে আমার শরণাপন্ন ও যত-চিত্ত হইয়া অগ্নিহোতাদি কর্ম সকলের ফল ত্যাগ কর। সম্যক্ জ্ঞান রহিত অভ্যাদ অপেকা যুক্তি দহিত উপদেশ পূর্বক জ্ঞান শ্রেষ্ঠ ; সেই জ্ঞান অপেক্ষা জ্ঞান পূর্বেক ধ্যান শ্রেষ্ঠ, এবং তাহা অপেক্ষাও যথোক্ত রীতি পূর্বক কর্ম কল ত্যাগ শ্ৰেষ্ঠ হয়; এই ৰূপ ৰূপ্ম কলে আসক্তি নিরুত্তি হইলে পর সংসার শান্তি হয়। উত্তম ব্যক্তির প্রতি দ্বেষ-পুন্য, সমান ব্যক্তির প্রতি মিত্রভাবাপন্ন ও হীন বাক্তির প্রতি হ্নপালু, এমন কি সকল প্রাণীরই অদ্বেফী, নির্ম্ম, নিরহঙ্কার, স্থুখ ছুংখে সমভাবাপন্ন, ক্ষমাশীল, লাভ কি অলাভে স্থসন্নচিত্ত, প্রমাদ-শূন্য, সংযত স্বভাব এবং মদ্বিষয়ে দুঢ়নিশ্চয় ও যাহার মন ও বুদ্ধি আমাতে অৰ্পিত হইয়াছে, এই ৰূপ মন্তক্ত যে ব্যক্তি, সেই আমার প্রিয়। খাঁহা ইইতে লোকে উषिध ना इश, यिनि लाक इरेट्ड छिषिध ना इन

এবং যিনি স্বকীয় ইফ লাভে উৎসাহ, অনোর ইফ লাভে অসহিষ্ণুতা, ত্রাস ও ভয়াদি নিমিত্তক চিত্ত ক্ষোভ, এ সকল হইতে বিমুক্ত, তিনিই আমার প্রিয়। যদৃচ্ছাক্রমে উপস্থিত বিষয়ে নিষ্পৃহ, অন্তর্বাহে শৌচ-সম্পন্ন, নির্লস, পক্ষপাত রহিত, আধি খূন্য এবং দৃষ্টাদৃষ্ট বিষয়ের উদাম-ত্যাগী, এই ৰূপ মন্তক্ত যে ব্যক্তি, সেই আমার প্রিয়। প্রিয় বস্তু প্রাপ্ত इरेश इस्ये ना इन, এবং অপ্রিয় বস্তু প্রাপ্ত इरेल ভাহাতে দ্বেম, ইফ বিষয় বিনাশে শোক ও অপ্রাপ্ত বিষয় প্রাপ্তির আকাজ্ঞা না করেন, এই ৰূপ মন্তক্ত যিনি, তিনিই আমার প্রিয়। এবং শক্র, মিত্র, মান, অপমান, শীত, উষ্ণ, স্থুপ ও ছুংখে সমভাবাপন্ন, কিছুতেই আসক্ত না হন, স্তুতি নিন্দায় তুল্য-ভাব, সংযত বাক্, যে কোন ৰূপে যথা লাভে সম্ভুফ, নিয়ত বাদ খূন্য ও ব্যবস্থিত চিত্ত, এই ৰূপ ভক্তিমান্ যে মনুষা, সেই আমার প্রিয়। যাঁহারা অদ্ধান্বিত ও মংপরায়ণ হইয়া এই যথোক্ত ধর্ম ৰূপ অমৃতের অনুষ্ঠান করেন, সেই ভক্তেরা আমার অতীব প্রিয় र्न।

ভক্তি বোগ নামে পঞ্চত্রিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৫॥

ভগবান্ কহিলেন, হে কুন্তীপুত্র ! এই ভোগায়তন
শরীর ক্ষেত্র বলিয়া অভিহিত হয়, কেননা এই
শরীর সংসারের প্ররোহ ভূমি স্বরূপ। এই শরীরকে
বিনি জানেন অর্থাৎ 'আমি ও আমার ' এই রূপ
বাঁহার জ্ঞান হয়, ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ এই উভয় তত্ত্ববেত্তা ব্যক্তিরা ভাঁহাকে ক্ষেত্রজ্ঞ বলিয়াছেন। হে
ভারত ! আমাকেই সকল ক্ষেত্রে ক্ষেত্রজ্ঞ বলিয়া
জানিবে, ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রজ্ঞ বিষয়ক বে জ্ঞান, আমার
মতে সেই জ্ঞানই জ্ঞান, কেননা ভাহাই মোক্ষের
হেজু। সেই ক্ষেত্র বেরূপ জড় চৈতন্যদি-স্বভাবক,
বেরূপ ইচ্ছাদি বিশিষ্ট, বেরূপ ইল্রিয়াদি বিকার
যুক্ত, বেরূপ প্রকৃতি পুরুষ সংযোগাধীন উৎপন্ন

এবং यেक्य ज्ञावत अक्रमानि প্রভেদে বিভিন্ন; আর সেই ক্ষেত্ৰজ্ঞও যেৰূপ ও অচিন্ত্য ঐশ্বৰ্য্য যোগ দ্বারা যেৰপ প্ৰভাব-সম্পন্ন, তাহা তুমি সংক্ষেপে আমার নিকট শ্রবণ কর। সেই ক্ষেত্র ও ক্ষেত্র**ভের স্বৰূপ**, বশিষ্ঠাদি ঋষিগণ কর্ত্তৃক ঋক্ প্রভৃতি বেদে বিবিধ ছন্দ, মন্ত্র ও সংশয় রহিত যুক্তিযুক্ত ব্রহ্মস্থচক পদ দারা বিবিক্ত ৰূপে বহুধা নিৰূপিত হইয়াছে। ভূমি প্রভৃতি পঞ্চ মহাভূত, তৎ কারণভূত অহঙ্কার, জ্ঞা-नाषाक मरुखेषु, मूल श्रक्तिं, एम रेक्सिंग, मन ७ শব্দাদি পঞ্চ বিষয়, এই চতুৰ্বিংশতি তত্ত্ব ক্ষেত্ৰ এবং ইচ্ছা, দ্বেষ, স্থুখ, দুঃখ, দেহেন্দ্রিয়ের সংহতি, মনো-বৃত্তি চেতনা ও ধৈর্যা, এই কএক টি ক্ষেত্রের ধর্মা সংক্রেপে তোমাকে কহিলাম। স্বগুণ-শ্লাঘা রাহিতা, দম্ভ খূন্যতা, পরপীড়া বর্জ্জন, সহিষ্কৃতা, অকুটিলত্ব, मल्यूक-त्मवन, वाहित्त मृखिका खलापि हाता श्राका-লন ও অন্তরে রাগাদি মল ত্যাগ ৰূপ শৌচ, সৎপথ প্রবৃত্তিতে এক নিষ্ঠতা, শরীর সংযম, ইহু পর লোকে ইন্দ্রিয় বিষয় ভোগে বৈরাগ্য, নিরহক্কার, জন্ম মৃত্যু জরা ব্যাধি জন্য ছুংখ ৰূপ দোষ দর্শন, পুক্র দার। গৃহাদিতে আদক্তি ত্যাগ, অনভিম্বন্ধ অর্থাৎ উহা-দিগের স্থাথ স্থামুভব ও চ্বংখে চুংখামুভব ইত্যাদি ৰূপ অধ্যাস রাহিতা, ইন্টানিন্ট প্রাপ্তিতে সর্বাদা সম-ভাব, আমাতে দৰ্বাত্ম দৃষ্টি পূৰ্বক একান্ত ভক্তি, চিত্ত-প্রসাদকর স্থানে অবস্থিতি, প্রাকৃত জন সমাজে বিরতি, অধ্যাত্ম জ্ঞানে নিত্য নিষ্ঠা এবং তত্ত্বজ্ঞান নিমিত্তক মোক্ষের আলোচন, এ সকল জ্ঞানসাধন এবং ইহার বিপরীত স্বগুণ-শ্লাঘা ও দান্তিকতা ইত্যাদি সকল, জ্ঞান-বিরোধী বলিয়া কথিত হই-য়াছে।

উক্ত জ্ঞানসাধন সকল দ্বারা যিনি জ্ঞেয়, তাহা বলিতেছি, তাঁহাকে জানিলে মোক্ষ লাভ হইরা থাকে। তাঁহার আদি নাই, সেই ব্রহ্ম আমার নির্কি-শেষ ৰূপ। তাঁহাকে, প্রমাণের বিষয় বে সংবস্তু, এবং নিষেধের বিষয় বে অসৎ বস্তু, এ উভয় হইতে

অতিরিক্ত বল। যায়। তাঁহার হস্ত দর্বতে, তাঁহার চরণ সর্বাত্র, ভাঁহার চকু সর্বাত্র, ভাঁহার মুখ সর্বাত্র এবং তাঁহার কর্ণও সর্বত্ত বিদ্যমান রহিয়াছে; তিনি লোকে সৰ্ব্বত্ৰ ব্যাপিয়া অবস্থিত আছেন অৰ্থাৎ সৰ্ব্ব প্রাণি-রুত্তি হস্ত পদাদি উপাধি দ্বারা সর্ব্ব ব্যবহারের আস্পদ ৰূপে অবস্থিত আছেন। তিনি সমস্ত ইন্দ্রিয় ও তাহাদিগের বিষয় সকলের প্রকাশক এবং সমস্ত ইন্দ্রির বিবজ্জিত। তিনি সঙ্গ খূন্য অথচ সকলের আধার। তিনি সন্ত্রাদি গুণ রহিত ও তাহাদিগের উপল্কা। তিনি স্বকার্য্য চরাচর সকলের বাহিরে ও অন্তরে অবস্থান করেন। তিনি স্থাবর ও জঙ্গম, যেহেতু তিনি স্থবর্ণ নির্মিত কুগুলাদির উপাদান কারণ স্থবর্ণের ন্যায় স্থাবর ও জঙ্গদের উপাদান কারণ। তাঁহার ৰূপাদি না থাকাতে স্থন্ধতা হেতু তিনি অবিজ্ঞেয়। তিনি অবিদ্বানের দূর্স্থ ও বিদ্বা-নের নিত্য সন্নিহিত। তিনি স্থাবর জঙ্গমে কারণ ৰূপে অভিন্ন থাকিয়াও কাৰ্যা ভেদে বিভিন্ন ৰূপে স্থিতি করেন। তাঁহাকে ভূত গণের স্থিতি কালে পোষণকারী, প্রলয় কালে গ্রাসকারী ও স্থটি কালে नाना कार्या (ভেদে উৎপত্তিশীল জানিবে। তিনি সূর্য্যাদি জ্যোতিঃ পদার্থের জ্যোতি অর্থাৎ প্রকাশক। তিনি অজ্ঞানের অতীত অর্থাৎ অসংস্পৃষ্ট বলিয়া কথিত হন। তিনি বুদ্ধিবৃত্তিতে অভিব্যক্ত। তিনি ৰূপ রুসাদি বিষয়াকারে জ্ঞেয়। তিনি পূর্ব্বোক্ত স্বস্থাণ-শ্লাঘা-রাহিত্যাদি জ্ঞান-সাধন গুণ-সকল দারা প্রাপ্য, এবং তিনিই প্রাণি মাত্রের হৃদরে অপ্রচ্যুত ও নিয়ন্তা ৰূপে অধিষ্ঠিত হয়েন। এই তোমাকে ক্ষেত্র, জ্ঞান ও জ্ঞেয় সংক্ষেপে কহিলাম। পূর্ব্বোক্ত মন্তক্ত ব্যক্তি ইহা জানিয়া মদীয় ভাব ব্ৰহ্মত্ব প্ৰাপ্ত रहेवात्र योभा रन।

প্রকৃতি ও পুরুষ এই ছুইটি অনাদি জানিবে, এবং দেহেন্দ্রিয়াদি ও সুখ ছুংখ মোহাদিকে প্রকৃতি-সমূত জানিবে। কপিলাদি মুনিরা প্রকৃতিকে শরীর ও ইন্দ্রিয় ক্রিয়া নির্বাহক এবং পুরুষকে অর্থাৎ ক্ষে-

ত্রজ্ঞকে সুখ ছুঃখ ভোক্তা বলিয়া নির্দ্দেশ করেন। পুরুষ প্রকৃতি-কার্য্য দেহে তাদান্ম্য ভাবে থাকেন, এই হেতু তিনি প্রকৃতি জনিত হুখ ছুংখাদি উপ-ভোগ করেন। সেই পুরুষের শুভাশুভ কর্মকারী ইন্দ্রিয়ের সংসর্গই দেব তির্য্যকৃ প্রভৃতি সৎ ও অসৎ জন্মের প্রতি কারণ। তিনি প্রকৃতি কার্যা দেহে বর্ত্তমান থাকিয়াও তাহা হইতে পৃথক্ থাকেন, যে হেতু শ্রুতিতে তিনি উপদ্রুষ্টা, অমুমন্তা, ভর্ত্তা, ভোক্তা, মহেশ্বর ও পরমাত্মা বলিয়া উক্ত হইয়া-ছেন। यिनि এই ৰূপে পুৰুষকে ও স্থুখ চুঃখাদি ৰূপ পরিণামের সহিত প্রকৃতিকে জানেন, তিনি বিধি উল্লঙ্খন করিয়া থাকিলেও তাঁহাকে পুনর্বার জন্ম গ্রহণ করিতে হয় না। কেহ কেহ মনে আত্মাকার প্রত্যয় দ্বারা দেহ মধ্যেই সেই আত্মাকে দেখেন; তাঁ-হারা উত্তম অধিকারী। কেহ কেহ প্রকৃতি পুরুষের বৈলক্ষণ্য আলোচন ৰূপ যোগ দ্বারা তাঁহাকে দে-খেন, তাঁহারা মধ্যম অধিকারী। কেহ কেহ ঈশ্বরার্পণ নিমিত্তক অনুষ্ঠীয়মান কৰ্ম্ম ৰূপ যোগ দ্বারা তাঁহাকে দেখেন, তাঁহারা অধম অধিকারী। অপর কেহ কেহ পূর্ব্বোক্ত সাধন না জানিয়া অন্যান্য আচার্যোর উপ-দেশ অবণ করিয়া তদমুসারে চিশ্তন করে, তাহারা অত্যধম অধিকারী। তাহারাও শ্রদ্ধা পূর্বেক উপ-দেশ অবণ-পরায়ণ হইয়া ক্রমে সংসার হইতে উত্তীর্ণ হয়। হে ভরতেন্দ্র ! স্থাবর জঙ্গম যে কোন বস্তু উৎ-পন্ন হয়, তৎ সমস্তই ক্ষেত্রও ক্ষেত্রজ্ঞের সংযোগাধীন অবিবেক ক্বত আত্মাধ্যাসে হইয়া থাকে জানিবে, কিন্তু যিনি স্থাবর জঙ্গম সমস্ত ভূতে পরমান্তাকে সমান ভাবে অবস্থিত ও সেই সমস্ত স্থাবর জঙ্গম বিনফ হইলে তাঁহাকে অবিনফ দেখেন, তিনিই সমাগ্দশী। তিনি পরমাত্মাকে সর্বাত্র অপ্রচ্যুত ৰূপে অবস্থিত দেখিয়া আত্মা ৰাবা সচ্চিদানন্দ ৰূপ আত্মাকে ভিরন্ধার করিয়া বিনাশ করেন না, সেই ट्रकूरे स्माक थाथ रन। विनि, म्हर्स्**छक्न।**काद्र পরিণত প্রকৃতিই দকল কর্ম দর্বে থকারে করেন,

এবং আত্মার দেহাভিমান দারাই কর্ভুত্ব, কিন্তু স্থ-ৰূপত অকৰ্ত্ত্ব দেখেন, তিনিই সমাগ্দশী। যথন স্থাবর জঙ্গম সমুদায়ের পৃথক্ ভাব এক আত্মাতেই প্রলয় কালে অবস্থিত এবং সৃষ্টি কালে তাঁহা হই-তেই উহাদিগের উৎপত্তি দেখেন, তথনই তিনি ব্রহ্ম স্বৰূপ হন। হে কুন্তীনন্দন! যাহার উৎপত্তি আছে, তাহার আদি আছে; যাহার গুণ আছে, সেই গুণের বিনাশ হইলে তাহারও বায় হইয়া থাকে; কিন্ত এই পরমাত্মার উৎপত্তি নাই, একারণ ইনি অনাদি; এবং ইহাঁর কোন গুণও নাই যে তাহার কখন বি-নাশ হইবেক, অতএব ইনি অব্যয় অর্থাৎ অবি-কারী; স্থতরাং ইনি শরীরে স্থিত হইয়াও কিছু মাত্র कर्मा करत्रन ना ७ कोन कर्मा करल लिखे ७ इन ना। যে প্রকার আকাশ স্থক্ষতা প্রযুক্ত প্রস্তর ও পঙ্ক প্রভৃতি সর্বত্র অবস্থিত হইলেও তাহাতে লিপ্ত হয় না, তদ্ধপ আত্মা উত্তম, মধ্যম বা অধম, সর্ব্ব প্রকার দেহে অবস্থিত হইয়াও দৈহিক গুণ দোষে লিগু হন না। হে ভারত। যে ৰূপ এক রবি এই সমস্ত লোক-কে প্রকাশ করেন, সেই ৰূপ ক্ষেত্রী এক পরমাত্মা সমুদায় জগৎকে প্রকাশ করেন, অথচ কিছুতেই लिश्च इन ना। याँशात्रा विदवक उद्यान हक्कू बात्रा এই পূর্ব্বোক্ত প্রকারে ক্ষেত্র ও ক্ষেত্রভের প্রভেদ এবং যাহা ভূত-প্রকৃতি পূর্বে কথিত হইল, তাহা হইতে মোক্ষোপায় ধ্যানাদি জানেন, তাঁহারা পরমার্থ তত্ত্ব ব্রহ্ম লাভ করেন।

প্রকৃতি পুরুষ যোগ নামে ষট্তিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৬॥

ভগবান কহিলেন, অর্জুন! পুনর্বার তোমাকে তপং কর্মাদি জ্ঞান বিষয়ক উপদেশ সকলের মধ্যে উদ্ভম উপদেশ বলিতেছি, যাহা জানিরা সমুদার মুনিরা এই দেহ বন্ধন হইতে মোক্ষ প্রাপ্ত হইরা-হেন। এই উপদেশ আশ্রয় করিলে শ্রোকে মং বর্ষণ লাভ করত স্থি কালেও জ্বে না এবং প্রলয়

কালেও ছঃধামুভব করে না অর্থাৎ তাহাদিগের পুনরার্ত্তি হয় না। হে ভারত ! দেশ ও কালে অপ-রিচ্ছিন, স্বকার্য্য র্জির হেডুও গর্ৱাধান স্থান যে আমার প্রকৃতি, ভাহাতে প্রমেশ্বর রূপ আমি জগৎ বিস্তারের হেভু চিদাভাস নিহিত করিয়া থাকি অৰ্থাৎ প্ৰলয় কালে আমাতে লীন যে সকল অবিদ্যা-কাম-কর্মানুশায়ী ক্ষেত্রজ্ঞ, তাহাদিগকে হৃষ্টি কালে ভোগোপযোগ্য ক্ষেত্রের সহিত সংযুক্ত করি; এই ৰূপ গৰ্ৱাধান হইতে ব্ৰহ্মাদি সৰ্বৰ ভূতের উৎপত্তি হইয়া থাকে। হে কুন্ডীনন্দন! মনুষ্য প্রভৃতি সমস্ত যোনিতে যে সমস্ত স্থাবর জঙ্গম মূর্ত্তি উৎপন্ন হয়, সেই সকল মূর্ত্তির সেই প্রকৃতিই গর্ৱাধান স্থান, আমিই তাহাতে সেই সকল মূর্ভির পিতা ৰূপে বীজ প্রদান করিয়া থাকি। হে মহাবাছ। প্রকৃতি জন্য দেহে আসক্ত যে চিদংশ জীব, তিনি স্বৰূপত অবিকারী হইলেও প্রকৃতি জনিত সত্ত্ব, রজ ও তম গুণ, তাঁহাকে সুখ ছুংখ মোহাদিতে সংযুক্ত করে। হে নিষ্পাপ! উক্ত গুণ ত্রয়ের মধ্যে সত্ত্ব গুণ নির্মালত্ব প্রযুক্ত ক্ষটিক মণির ন্যায় প্রকাশক ও শান্ত ভাবাপন্ন, এই হেতু সেই সত্ত্বগুণ তাহার স্ব কার্য্য সূখ সঙ্গ ও জ্ঞান সঙ্গে জীবকে আবদ্ধ করে অর্থাৎ সত্ত্ব গুণ হই-তে দেহাভিমানী জীব, ' আমি স্থখী, আমি জ্ঞানী,' এই ৰূপ মনোধৰ্মে সংযুক্ত হয়। হে কুন্তীনন্দন! রজ গুণকে অনুরাগ ৰূপ জানিবে; উহা হইতে অপ্রাপ্ত বিষয়ে অভিলাষ ও প্রাপ্ত বিষয়ে আসক্তি উৎপন্ন হইয়া থাকে; স্বতরাং উহা দেহী জীবকে স্বৰ্গাদি কল জ্নক কৰ্মাসক্তিতে আবদ্ধ করে। হে ভারত! তম গুণকে আবরণ শক্তি বিশিষ্ট প্রকৃতির অংশ হইতে উৎপন্ন জানিবে; স্থতরাং উহা জীব माज्जित्रहे जीखि कनक रहेशा शास्त्र; पाछ वर छेहा ব্দনবধান, আলস্য ও নিদ্রাতে জীবকে আবদ্ধ করে। হে ভারত ! পুরুষকে সত্ত্বগুণ স্থাধে অভিমুখ, রজগুণ কর্মে অভিমুখ এবং তম গুণ সচুপদেশ জন্য জ্ঞান-কে पाष्ट्रापन कतिया पानगामिए मश्यूक करत।

হে ভরত-নন্দন ! সম্ভ্র গুণ অদৃষ্ট বশত রন্ধ ও তমকে অভিভূত করিরা উৎপন্ন হর, এই হেতু উহা স্বকীর কার্যা-সুখাদিতে পুরুষকে সংশ্লিউ করে; রজ গুণ অদৃষ্ট বশত-সন্ত্ব ও তমকে অভিভূত করিয়া উৎপন্ন হয়, এই হেতু উহা স্বকীয় কাৰ্য্য-তৃষ্ণা-সঙ্গাদিতে পুরুষকৈ সংযুক্ত করে, এবং তম গুণও অদৃষ্ট বশত সত্ত্ব ও রজকে অভিভূত কীরিয়া ক্লেম, এই হেভু উহা স্বকীয় কার্য্য-প্রমাদ আলস্যাদিতে পুরুষকে সংশ্লিষ্ট করে। বথন এই ভোগারতন দেহে আে-जानि हेल्टिय भक्तानि अकाम क्ष छान रस, उथन সত্ত্ব গুণের হৃদ্ধি জানিবে, এবং স্থাদি লক্ষণ দারাও সত্ত্ব গুণকে বর্দ্ধিত বোধ করিবে। হে ভরত-কুল-পাৰন! রঙ্গ গুণ বর্দ্ধিত হইলে লোভ, প্রার্হন্তি, কর্ম্মের উদাম, অমুপশম অর্থাৎ ইহা করিয়া উহা করিব ইত্যাদি সংকশ্প বিকশ্পের অমুপরম ও শ্রহা, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়। হে কুরু-নন্দন! তম श्वन विद्धिं रहेता वित्वक खश्म, असूराम, कर्डवा বিষয়ের অনুসন্ধানাভাব ও মিধ্যাভিনিবেশ, এই সকল লক্ষণ উৎপন্ন হইয়া থাকে। যদি সৰ্বী গুণ বর্দ্ধিত হইলে জীব মরে, তবে হিরণ্যগর্ত্তাদির উপা-সক দিগের ভোগ্য যে প্রকাশময় লোক, তাহা প্রাপ্ত হয়। বর্দ্ধিত রজ গুণে জীব মৃত হইলে, কর্মাসক্ত মৰ্জ্য লোক প্ৰাপ্ত হইয়া থাকে, এবং বৰ্দ্ধিত তম গুণে জীব মরিলে, পশু প্রভৃতি মুঢ় যোনিতে জন্ম গ্রহণ करता किनामि अविशेष माज्जिक कर्णात कल निर्मल यूथ, त्रांक्रम कर्टमात्र कन छुःथ ও जामनिक कर्टमात्र कन चळान करिय़ाहिन। मजु रहेट छान करण, এই হেডু তাহার ফল নির্মল স্থা; রজ হইতে লোভ नत्म, जरे रहेजू छोरात कन कम्म कमा प्रःथ जरः তম হইতে প্রমাদ, মোহ ও অজ্ঞান করে, এই **(रुक्ट्र जीरांत कर्न अस्त्रात्मत कार्या रहे**ता थारक। সম্ভূঞাশীল পুরুবেরা সজ্বেৎকর্ষ ভারতমাানুসারে ময়ুষ্য গল্পবাদি লোক অৰ্থি উভরেছির সভ্য লোক श्री खेल इन। तक छगारनहीं शुक्रदेता ज्या-

দিতে সমাকুল হইরা মনুষ্য লোকে গমন করে এবং জঘন্য তম গুণাভাত প্রমাদ-মোহাদি বিশিষ্ট ব্যক্তিরা তমো-রৃদ্ধির তারতম্যানুসারে তামিশ্রাদি নিরম প্রাপ্ত হইয়া থাকে। যখন যিনি বিবেক পূর্বেক বৃদ্ধি প্রভৃতি গুণ ব্যতিরিক্ত জন্য কাহাকেও কর্তা বলিয়া না দেখেন এবং তঘাতিরিক্ত তৎ সাক্ষী রূপ আত্মাকে জবগত হন, তখন তিনি মদীয় ভাব ব্রহ্মত্ব লাভ করেন। দেহাদি রূপে পরিণত উক্ত গুণ ত্রয়কে অতিক্রম করিলে, সেই গুণ ত্রয় জনিত জন্ম মৃত্যু জরা তুংধ হইতে বিমুক্ত হইয়া পরমানন্দ প্রাপ্ত হন।

অর্জুন কহিলেন, হে প্রভো! কি রূপ লক্ষণ সকল দারা এবং কি আচার ও কি উপায়েই বা উক্ত গুণ ত্রয়কে অভিক্রম করিতে পারা যায় ?

ভগবান্ কহিলেন, হে পাণ্ডব! যিনি সস্ত্ব গুণের কাৰ্য্য-প্ৰকাশ ৰূপ জ্ঞান, রুজ গুণের কাৰ্য্য-প্ৰবৃত্তি, তম গুণের কার্য্য-মোহ ও তত্তিল্ল অন্যান্য সাজ্বিক, রাজসিক ও তামসিক কার্য্য উপস্থিত হইলে, ভাহা-তে ছুংখ জ্ঞান করিয়া ছেব না করেন; ঐ সকল সাত্ত্বিক, রাজসিক ও তামসিক কার্য্য নির্ভত হইলে তাহাতে আকাক্ষা না করেন; উদাসীনের ন্যায় স্থিত হইয়া সত্ত্ব, রজ ও তম গুণের কার্য্য স্থুখ ছুংখাদি ছারা স্বৰূপ হইতে বিচলিত না হন; 'গুণ সকলই স্ব স্ব কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতেছে, ইহাদিগের সহিত আমার কোন সম্বন্ধ নাই' এই ৰূপ বিবেক জ্ঞান পূর্বক অবস্থিতি করেন, কিছুতেই টলেন না ; স্থ-ৰূপে অবস্থান করেন ; স্থতরাং যাঁহার স্থথ ও ছুঃখে সমভাব; লোফ, প্রস্তর ও কাঞ্চনে সমান জ্ঞান; প্রিয় ও অপ্রিয় বস্তুতে ভূল্য বোধ ; অপিনার স্তুতি ও নিন্দার তুল্য দৃষ্টি; মান ও অপমানে সম-চিন্ততা; মিত্র-পক্ষ ও শত্র-পক্ষে অভিন্ন ভাব এবং যিনি সমু-मात्र मृक्षामृक्षे कल जनक कर्य विषयक छमाम भौत-ত্যাগী; এতাদৃশ আচার-সম্পন্ন ধীর বাজিকে সত্ত্ব, রজ ও তম গুণের অতীত বলা যার। বিনি একান্ড

ভক্তি যোগ দারা আমাকে সেবা করেন, তিনি ঐ সকল গুণ অভিক্রম করিয়া ব্রহ্মভাব মোক্ষের যোগ্য হন; যেহেতু আমি অবিনাশী, অবিকারী, নিভ্য, জ্ঞান-যোগ-প্রাপ্য ও আনন্দ-স্বরূপ অব্যভিচারী ব্রহ্মের স্থান।

শুণ-ত্রয়ের বিভাগ যোগ নামে সপ্ততিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৭॥

--

ভগবান্ কহিলেন, শ্বঃ এই শন্দের অর্থ প্রভাত কাল, এই শ্বঃ শন্ধের সহিত স্থিতি অর্থ বোধক স্থা ধাতুর যোগে 'শ্বপ' এই শব্দ নিষ্পন্ন হইয়া, প্রভাত পর্যান্ত থাকিবেক, এই অর্থ বুঝার, অতএব যাহার প্রভাত পর্যান্তও থাকিবার নিশ্চর নাই, তাহাকে অশ্বপ্য বলা যায় ; সংসারকে প্রভাত পর্যান্তও স্থায়ী वना बाग्न ना, এই निमित्त्व त्वत्त हेशांक अध्यक्ष রক্ষ বলেন। ইহার মূল ঊর্ক অর্থাৎ পরম পুরুষ পুরমান্তা; ইহার শাখা হিরণ্যগর্ত্ত ত্রজাদি জীব; ইহার পত্র সকল জীবের আত্রয়-ছায়া ৰূপ কর্ম্ম-কল-প্রতিপাদক বেদ অর্থাৎ বেদোক্ত কর্ম দারা ইহা দেবনীয়; ইছা প্ৰবাহ ৰূপে চির কাল চলিয়া আসি-তেছে, এই হেতু ইহাকে অব্যয়ও বলা যায় ; যিনি সংসারকে এই ৰূপ অশ্বর্থ রুক্ষ বলিয়া জানেন, তিনি दिमार्थ कारनन। श्रुगावान् कीव मकल प्रवापि या-নিতে বিস্তারিত হন, তাঁহারা এই সংসার রক্ষের উৰ্দগত শাখা এবং চুদ্ধ্তবান জীব সকল পশাদি যোনিতে বিভারিত হইয়া থাকে, তাহারা অধঃস্থ শार्था। ये भार्था मकन कन-त्महन क्रम मञ्जापि श्वन-রুত্তি বারা বর্জিত ও শাখাগ্রন্থানীর ইন্দ্রির রুত্তি नःबुक कश तनापि विषय बाता श्रव्यविक हरेग्राटह। ঈশ্বর ইহার প্রধান মূল, ভোগ বাসনা সকল ইহার अन्तरान मून कर्ण अन्यविक । ये अन्तरान मून সকল হইভেই মৰ্দ্য লোকে জীবের কৰ্ম্মে প্রবৃত্তি হইরা থাকে। এই সংসার-ছিত প্রাণীরা সংসার বৃক্ষের উক্ত প্রকার উর্বস্থ উপলব্ধি করিতে পারে

না, ইহার অন্ত বা আদিও বোধগমা করিতে পারে না এবং ইহা কি প্রকারে স্থিতি করে, ভাহাও বুকিতে পারে না। এই সংসার রক্তের অবচ্ছেদ নাই এবং ইহা অনর্থকর, এই হেতু এই বন্ধমূল রুক কে অসঙ্গ করিয়া অর্থাৎ মমতা ত্যাগ ও সম্যক্ বিচার ৰূপ দৃঢ় শস্ত্ৰ দারা ছেদন করিয়া অর্থাৎ পৃথকৃ করিয়া "খাঁছা হইতে এই চিরস্তনী সংসার প্রবৃত্তি বিস্তৃত হইরাছে, আমি সেই আদ্য পুরুষের শরণাপন্ন হই" এই প্রকারে এই সংসার রুক্ষের মূলীভূত সেই विक्षानिक व्यवस्य कतित्व, वाँशांक श्राश इरेल আর পুনরাগমন করিতে হয়না। মনুষ্যেরা অহঙ্কার ও मोर विशेन, পूछांनि मक्रातं विषयी, आंच्छान নিষ্ঠ, নির্ভ কাম ও সুখ ছুংখ জনক শীতোকাদি দ্বস্থ বিমুক্ত, স্থতরাং অবিদ্যা নির্ভ হইলে সেই অব্যয় পদ প্রাপ্ত হন। যে পদে গমন করিলে আর পুনরাগমন করিতে হয় না, সেই পরম ধাম অব্যয় পদ, আমি যে বিষ্ণু, আমার পদ; সে ধামকে স্থ্যা, চক্র বা অগ্নি প্রকাশ করিতে পারে না।

चौमातरे चश्म चितिहा वग्र मर्त्वहा मश्माती उ জীব ৰূপে প্রাসিক্ষ; সেই জীবের শ্রোত্র, ত্বক্, চক্ষ্, জিহ্বা, ঘ্রাণ, মন ও অন্যান্য কর্ম্বেক্সিয় প্রভৃতি, স্থবুপ্তি ও প্রলয় কালে আমার প্রকৃতিতে লীন হইয়া অব-স্থান করে, সেই জীব পুনর্বার জীব লোকে সংসার উপভোগ নিমিত্তে উহাদিগকে আঁকর্ষণ করেন। যথন কর্মা বশত শরীরান্তর প্রাপ্ত হন, তখন যে শরীর হইতে উৎক্রান্ত হন, সেই দেহাদি-স্বামী জীব সেই শরীর হইতে, বারুর কুস্মাদি হইতে গ্র এহণের ন্যায়, উক্ত জ্বোত্রেন্তির প্রভৃতিকে এহণ করিরা শরীরান্তরে গমন করেন। তিনি অন্তঃকরণ ७ (ब्याजानि वास्कृतित्रारक माध्येत्र कत्रित्रा मन्त्रानि विवन छेशरणांश करतन। विदृष्ट वास्त्रिता अके तक रहेटक जना स्माटर भवनकाती वा स्माहे स्माटर जन-ছিত বা বিষয় ভোগকাল্পী বা ইন্সিয়াদি যুক্ত জীবকে त्विराज शोह ना, कि**ड का**न क्क् वाख्यिकोरे प्रथिएक

পান। ধ্যানাদি ছারা বতুবন্ত কোন কোন যোগীরা। এই প্রকারে অতি রহস্য এই শাস্ত্র ভোমাকে আমি সেই আত্মাকে দেহে অবস্থিত দেখেন; পরম্ভ অশুদ্ধ চিত্ত মন্দ্রমতি বাক্তিরা শান্তাভ্যাসাদি ছারা যত্নবন্ত रहेरलं औरांदर पिथिए भात्र ना। य श्रामिका-গত তেব্দ, সমস্ত ব্দগৎ প্রকাশ করিতেছে, এবং চন্দ্র ও অগ্নিতে যে তেজ বিদামান রহিয়াছে, তাহা আমারই তেজ জানিবে; জীমি পৃথিবীতে প্রবেশ করিরা বল ছারা চরাচর ভূত সকল ধারণ করি; আমি রসময় সোম হইয়া ত্রীহি যবাদি ওবধি সকল পোষণ করি; আমি প্রাণীদিগের দেহ মধ্যে জঠ-ताधि कर्प थरवम-पूर्वक थान ७ ष्मान वाशुत्र সহিত সংযুক্ত হইয়া তাহাদিগের ভুক্ত চর্ব্ব্য চো-ব্যাদি চতুর্বিধ অন্ন পরিপাক করিয়া থাকি; আমি ममल প্রাণীর হৃদয়ে অন্তর্যামী ৰূপে প্রবিষ্ট থাকি, এই হেতু আমা হইতেই তাহাদিগের স্মন্ত্রণ, ইক্তিয়-সংযোগ জন্য জ্ঞান ও উহাদিণের অপায়ও হইয়া थांक, এবং আমিই সমস্ত বেদ ছারা বেদা, বেদান্ত কর্ত্তৃ সম্প্রদায়ের প্রবর্ত্তক ও বেদার্থ বেক্তা।

ক্ষর ও অক্ষর এই ছুই পুরুষ লোকে প্রসিদ্ধ; তন্মধ্যে ব্রহ্মাদি স্থাবরাস্ত তাবৎ শরীরকে ক্ষর ও एम्ह विनक्षे इहेरले शिनि व्यवस्थिन करत्रन, विनक्षे হন না; তাঁহাকে অক্ষর বলিয়া বিবেকীরা কহিয়া-ছেন। ঐ ক্ষর ও অক্ষর হইতে বিলক্ষণ অনা এক উত্তম পুরুষ আছেন, তিনি পরমাত্মা বলিয়া শ্রুতিতে উক্ত হইয়াছেন; যিনি নির্বিকার ও নিয়ন্তা ৰূপে जिल्लाटक चाविक रहेश मञ्जूनात शानन कतिएछ-ছেন। যেহেতু আমি নিতা মুক্ত ক্বতাব হেতু জড় অগৎ হইতে অতিক্রান্ত এবং নিরমকারিত্ব হেতু চেতদ বৰ্গ হইতে শ্ৰেষ্ঠ, সেই হেডু আমি লোকে ও বেদে পুরুবোভ্তম বলিয়া প্রখ্যাত হইতেছি। ह ভারত! বিনি এই ৰূপ উক্ত প্রকারে নিশ্চিত-মতি হইরা, আমি বে পুরুবোরম, আমাকে জানেন, তিনি সর্বা প্রকারে আমাকেই জানেন ; সেই হেতুই তিনি দৰ্মক হন। হে বাসন-খুনা ভরত-নদ্দন!

কহিলাম, মমুব্য ইহা জানিলে সম্যগ্ জ্ঞানী ও কৃতকৃত্য হয়

পুরুবোক্তম যোগ নামে অফক্রিংশ অধ্যায় नमश्चि॥ ७৮॥

ভগবান্ কহিলেন, হে ভারত! অভয়, চিন্ত প্রস-क्रजा, जाञ्चळात्नाशास्त्र निष्ठा, मान, मम, मर्मारशोर्ग-मानाप्ति यळ, बन्न यळापि, भंतीत नश्यमापि, व्यक्षि-লতা, অহিংসা, সত্য, অক্রোধ, ঔদাস্য, চিন্তোপ-রভি, পরোক্ষে পরদোষের অপ্রকাশ, দীনের প্রতি দয়া, অলোভ, মৃদুতা, অকার্য্য প্রবৃত্তিতে লোক লজ্জা, ব্যর্থ কর্ম্মের অনমুষ্ঠান, প্রাগল্ভ্য, ক্ষমা, ধৈর্য্য, বাহ্য ও অভ্যন্তরে শুচিতা, অবিদ্রোহ্ ও আপনাকে অতি পূজ্য বলিয়া অভিমান না করা, এ সকল, দৈবী--সাত্ত্বিকী-সম্পদ্-অভিমুখে জাত পুরুবের হই-নিমিত্তক চিত্তৌৎস্থক্য, অভিমান—আপনাকে পুজা বলিয়া বোধ করা, ক্রোধ, নিষ্ঠুরতা ও অবিবেক, এ সকল, আস্করী-সম্পদ্-অভিমুখে জাত পুরুষের হইরা थाटक। ए शार्थ! रेपवी मन्भ्रम् स्माटकत्र निमिट्ड এবং আস্থরী সম্পদ্ সংসারের নিমিত্তে হইয়া থাকে। হে পাণ্ডব! তুমি দৈবী সম্পদ্-অভিমুখে জন্মিয়াছ, ষ্মতএৰ তুমি শোক করিও না।

হে পার্থ! এই সংসারে দৈব ও আমুর এই ছুই প্রকার মনুষ্য সৃষ্টি হইয়া থাকে। তল্পধ্যে দৈব বিষয় বিস্তার ক্রমে কহিয়াছি, এক্ষণে আসুর বিষয় প্রবণ কর। আহুর মহুব্যেরা যে, পুরুষার্থ সাধন বিবয়ে श्रद्ध रहेर७ रम्न ७ व्यन्थ वनक विवस रहेर७ নিরুত্ত হইতে হর, তাহা জানে না। তাহাদিগের শৌচ নাই, আচার নাই, সত্যও নাই। তাহারা करह, कशरजंत (वन शूत्रागीनि श्रमण नारे, धर्मामुन कुष প্রতিষ্ঠা নাই ও ঈশর—নিরস্তা নাই; এই জগং ত্ৰীপুত্ৰৰ সকাধীনই সমুৎপন্ন; ইহার উৎপত্তির

অন্য কারণ আর কি আছে? জ্রীপুরুবের অভিলাব বিশেষই ইহার প্রবাহ ৰূপে চলিয়া আসিবার হেডু হুইয়াছে; তাহারা এই ৰূপ নান্তিক মত অবলয়ন করিয়া মলিন চিত্ত, দৃষ্ট পদার্থ মাত্র দর্শী, জগতের বৈরী ও হিংস্রকর্মশীল হইয়া জগতের ক্ষয় নিমিত্তে উৎপন্ন হইয়া থাকে। তাহারা ছুষ্পূরণীয় কামনা আত্রয় করিয়া দান্তিক, মানী, মদান্বিত ও অশুচি মদ্য মাংসাদিতে ব্ৰতী হইয়া মোহ প্ৰযুক্ত ' আমি এই মন্ত্র দ্বারা এই দেবতার আরাধনা করিয়া প্রচুর ধন সাধন করিব' ইত্যাদি ৰূপ ছুরাগ্রহ স্বীকার করত কুদ্র দেবতার আরাধনাদিতে প্রবৃত্ত হয়। কামোপ-ভোগে তৎপর, কাম কোধের বশীভূত, শত শত আশাপাশে আবদ্ধও 'কাম ভোগই পরম পুরুবার্থ' এই ৰূপ নিশ্চয় করত আমরণ অপরিমেয় চিন্তায় সমাক্রান্ত হইয়া কাম ভোগ নিমিত্ত অন্যায় পূর্বেক অর্থ সঞ্চয় করিতে চেফা করে। অদ্য এই ধন আমার লক্ষ হইল, অপর মনোরথ পরে লাভ হইবে, একণে এই ধন আমার আছে, পরে আমার এত ধন হইবে, এই শত্রুকে আমি নিহত করিলাম, অপর শত্রুদিগকে পরে বিনাশ করিব, আমি প্রভু, আমি সর্ব্ব প্রকারে ভোগবান্, আমি পুত্র পৌত্র নপ্তৃ প্রভৃতিতে সম্পন্ন, আমি বলবান্, আমি স্থী, আমি কুলীন, আমার সদৃশ অন্য আর কে আছে! আমি যাগাদি ক্রিয়া কাণ্ডের অমুষ্ঠান করিয়া অন্যান্য সকলকে পরাভব করিব, আমি তাবক দিগকে দান করিব ও হর্ব লাভ করিব, ইত্যাদি প্রকার অজ্ঞানে বিমোহিত হইয়া অনেক বিধ মনোরথ বিষয়ে চিত্ত বিক্লেপ দারা মোহময় জালে সমার্ত ও কাম ভোগে অভিনিবিফ হইরা কশ্মল নরকে পতিত হয়। তা-্হারা আপনার ছারা আপনি পুঞ্জিত, অনন্ত, ধন षाता मान मान महिष्ठ, व्यश्कात वन पर्न काम छ ক্রোধের আজিত ও সংপথবর্তীদিগের প্রতি অন্তরা-পর্বশূ হুইয়া, তাহাদিগের স্ব স্থ অপরাপর দেহে স্বাহিত যে আমি, আমাকে ছেব করত দত্ত-পূর্বক

নাম মাত্র বজ্ঞ ছারা অবিধি-পূর্বক বজন করে। त्मरे कृत, षशुक्रक्या, विश्व विद्यती नत्नाधमिनगदक কুর ব্যাঘ্র সর্পাদি আস্থরী বোনিতে আমি অনবরত নিক্ষেপ করি। হে কৌন্তের! সেই মূঢ়েরা আস্থরী বোনি প্রাপ্ত হইয়া প্রতি জন্মেই আমাকে পাওয়া দূরে থাকুক, পাইবার উপায়ও না পাইয়া সেই সেই অধম জন্ম হইতেও অতি অধম ক্রমি কীটাদি যোনি প্রাপ্ত হয়। কাম, ক্রোধ ও লোভ, এই তিন টি আত্ম-নাশক নরক দ্বার, এই হেতু এ তিনকে পরিত্যাগ করা কর্তব্য। হে কুন্তীনন্দন! মমুষ্য, নরকের দ্বারভূত ঐ কাম, ক্রোধ ও লোভ হইতে বিমুক্ত হইলে আপ-নার শ্রেয় সাধন তপোযোগাদি আচরণ করিয়া থাকে, সেই হেডু তাহার মোক্ষ লাভ হয়। যে, বেদ বিহিত ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া যথেফীচারবর্তী হয়, সে তত্ত্বভান প্রাপ্ত হয় না, উপশম লাভ করিতে পারে না, মোক্ষ প্রাপ্ত হইতেও সমর্থ হয় না। কার্য্যাকার্য্য ব্যবস্থা বিষয়ে গ্রুডি স্মৃতি পুরাণাদি শাস্ত্রই তোমার পক্ষে প্রমাণ, অতএব তুমি শাস্ত্র বিধি বিহিত কর্ম অবগত হইয়া তদাচরণে যোগ্য इ७।

দৈবাস্থর সম্পদ্ বিভাগ যোগ নামে উনচত্থারিংশক্তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৩৯॥

অর্জুন কহিলেন, কৃষণ! যাহারা ছু:খ জ্ঞান বা আলস্য হেতু কেবল আচার পরস্পরা প্রমাণে শ্রদ্ধা-দ্বিত হইয়া অজন করে, তাহাদিগের দ্বিতি বা আশ্রম কি ৰূপ, তাহাদিগের দেব পূজাদি প্রবৃত্তি সাঞ্জিকী কি রাজসী কিয়া তামসী?

ভগবান কহিলেন, হে ভরতকুল-ভূষণ ! শাস্ত্র তত্ত্ব জ্ঞান বারা প্রবৃত্ত দেহীদিগের শ্রাক্তা সাত্ত্বিকীই হইয়া থাকে; আর লোকাচার মাত্র হেতুপ্রবৃত্ত দেহীদিগের শ্রাক্তা সংক্ষার নিবল্পন সাত্ত্বিনী, রাজসী ও তামসী এই ত্রিবিধা হইয়া থাকে, তাহা শ্রাবণ

कत्र । कि विदेशकी कि अविदर्शनी, नकल लादकत्रहे भूक नरकात्रास्मादत खका जत्य। अरे नरनाती পুৰুষ সকল, ত্ৰিবিষ আছা কৰ্তৃক বিত্নতি-ভাৰাপৰ हता (व शूक्रव शूर्व जत्य बाह्मी वाका यूक बादक, সে সেই ৰূপ আজাতে সমন্বিত হয়। সান্ত্ৰিকী আজা যুক্ত পুরুষ সত্ত্পক্তি দুবগণের বদন করে; ताक्त्री खना यूक श्रूक्ष तकः-श्रक्ति यक ताक्त्र-पिरात्र जाताथना करते; जामनी खंका यूक शूक्रव ভূত প্রেড গণের উপাসনা করে, এবং বে অবি-विकीता काम, ब्राप्त ও वन ममन्त्रिक रहेन्रा पछ ७ অহঙ্কার প্রযুক্ত র্থা উপবাসাদি দারা শরীরস্থ পূথি-ব্যাদি ভূতগ্রাম আকর্ষণ করত অর্থাৎ শরীর রুশ করত, দেহ মধ্যে অবস্থিত যে আমি, আমার আজ্ঞা লঙ্কন করিয়া আমাকে কর্ষণ করত অশাস্ত্র-বিহিত ভয়স্কর তপস্যার আচরণ করে, তাহাদিগকে অতি নিষ্ঠুরাশয় জানিবে।

হে অর্জুন! লোকের ত্রিবিধ আহার প্রিয়, এবং
যজ, তপস্যা ও দানও ত্রিবিধ হয়; তাহার প্রভেদ
প্রবণ কর। যাহা আয়ু, উৎসাহ, শক্তি, আরোগ্যা,
চিন্তু-প্রসম্মতা ও প্রীতি, এ সকলের রিদ্ধি-কর, রসসংযুক্ত, স্নেহ-যুক্ত, সারাংশ দ্বারা দীর্ঘ কাল স্থায়ী ও
দৃটি মাত্রেই হাদমক্রম হয়, এতাদৃশ আহার সাত্তিক
দিগের প্রিয়। যাহা অতি কটু, অতি অয়, অতি
লবণাক্ত, অতি উষ্ণ, অতি তীক্ষ্ব, অতি ক্রম ও অতি
বিদ্বাহী সর্বপাদি, এতাদৃশ আহার ছংখ, শোক ও
রোগ-প্রদ হয়, ইহা রাজ্য দিগের প্রিয়। যাহা প্রস্তুত
হইবার পরে প্রহর কাল গত হইয়াছে, অর্থাৎ শীতল,
বাহার সার নিক্ষীভিত হয়, ছুর্গন্ধ, দিনান্তরে পর্ক
অর্থাৎ পর্যুবিত, অনাভুক্তাবিশিক ও অভক্র্য অর্থাৎ
কলঞ্জাদি, এতাদৃশ আহার তামন দিগের প্রিয়।

ধনপ্লর! ফলাকাজ্ঞা রহিত হইয়া যজ্ঞানুষ্ঠান কর্তব্য-জ্ঞানে, মনের একাগ্রতা পূর্বক বিধি মনাদিউ বে কর্ম অনুষ্ঠিত হর, সেই যজ্ঞ সান্ত্রিক। হৈ ভরত-শ্রেষ্ঠ। কলাভিসন্ধান করিয়া মন্তের নিমিত্তে বে যজের অনুষ্ঠান হয়, সেই যজেকে রাজস মৃত্যু জানি-বে। যে যজ শাজোক বিধি পূর্বক নিশাস করা না হয় ও বাহাতে ব্রাজাগদি নিমিত্তে অন্ন নিশাদিত না হয়, এবং বাহা মন্ত্রহীন, দক্ষিণা-রহিত ও অজা-শুনা, সেই যজেকে শিক্ষগণ তামস যজ কহিয়া থাকেন।

म्बर, खिन, श्रुक्त ७ उज्ब्ब मिर्गित श्रुका, श्रुठिका, मात्रला, जन्महर्या ७ चहिश्मा, ध नकल मात्रीतिक তপদ্যা। পরিণামে স্থকর, প্রির, সত্য ও অভয়-कनक वीका धवर विमान्ताम, ध मकुन वीविक তপস্যা, এবং মনের স্বাচ্ছন্দা, অফুরতা, মনন, বিষয় হইতে মনের প্রত্যাহার ও ব্যবহারে ছল-রাহিত্য, **এ नदल মানসিক তপ্রা। বলিয়া কথিত হইয়াছে।** কায়িক, বাচনিক ও মানসিক, এই ত্রিবিধ তপসা৷ যদি মনুবোরা কলাকাজ্ঞা রহিত হইয়া পরম শ্রহ্মা পূর্ব্বক একাঞ্ডিভে অমুষ্ঠান করেন, ভাহা হইলে সেই তপদ্যাকে দান্ত্বিকী তপদ্যা বলা বায়। লোকে माध् वा जानम विनादन, दिश्यान वा অভিবাদন করিবে অথবা অর্থ প্রদান করিয়া সন্মান রক্ষা করিবে, এই নিমিত্তে দম্ভ পূর্বক যে তপস্যা করা হয়, সেই তপস্যা অনিয়ত ও ক্ষণিক, তাহা त्राक्रम विविद्या উক্ত रहेन्नाटह। এবং অবিবেক জন্য ক্ট সাধ্য ব্যাপার দারা আত্ম পীড়াকর বা অন্যের উৎসাদনার্থ যাহা কৃত হয়, তাদুশ তপ্রা তামসী বলিয়া অভিহিত **হইয়াছে**।

দান কর্ত্তর এই ৰূপ বোধে খাঁহা হইতে উপকার পাইবার সন্তাবনা নাই, এবং যিনি শাল্লজ্ঞ ও সভারত হন, এমত পাত্রে দেশ বিশেষে বা কাল বিশেষে যাহা দেওরা হর, সেই দান সাজিক বলিরা উদাহত হই-রাছে। প্রভাগকার প্রভ্যালার বা স্বর্গাদি শুভ কল উদ্দেশে ক্লো পূর্বক যাহা দেওরা হয়, সেই দান রাজস বলিয়া ক্থিত হইরাছে। এবং অশুনি স্থানি বা অপ্রভা পূর্বক মাহা দেওরা হয়, সেই দানকৈ পতিতেরা তামস দান কহিরাছেন।

वकारवाता विमारक उँ, छर, मर, जरकात धरे जिविथ नाम निर्द्शन कत्रिशाट्य ; त्ररे जिविथ नि-र्फिण क्रांसे शृद्ध बाद्मण, त्वन ७ यक्क विहिष्ठ इरे-রাছে, এই হেতৃ সর্ব কালে 'ওঁ' উচ্চারণ করিয়া ব্রনাবাদী দিগের যজ্ঞ, দান ও তপস্যা, এই সকল শান্ত্র-বিহিত ক্রিয়া প্রবৃত্ত হইতেছে। মোক্ষাভি-লাবীরা 'তং 'উচ্চারণ করিয়া ফলাভিসন্ধি পরি-ত্যাগ পূর্বক যজ্ঞ, তপদ্যা, দান ও অন্যান্য বিবিধ ক্রিয়া ক্লাপ করিয়া থাকেন। হে পার্থ! অন্তিত্ব ভাবে ও সাধু ভাবে 'সং' এই শব্দ প্রয়োগ হয়; विवाहाणि माञ्चलिक कर्त्मा ७ 'नर' गफ अयूक हहेग्रा থাকে; যজ্ঞ, দান ও তপস্যাতে যে নিষ্ঠা, তাহাও 'সং' বলিয়া উক্ত হয়, এবং যে কর্মের ফল সেই পর-মাত্মা, সেই কর্ম সিদ্ধির নিমিত্ত তৎ সম্পর্কীয় উদ্যান-নির্মাণ ও ধনোপার্জনাদি যে কোন কার্যা, তং-সমস্তই 'সং ' এই শব্দে কথিত হয়, অতএব উল্লি-খিত কর্ম সকলের সাকল্য নিমিত্ত 'সং' শব্দ কীৰ্ডন কৰ্ত্তব্য। হে পাৰ্থ! হবন, দান বা তপস্যা ও তদ্ভিন্ন যে কোন কৰ্ম অশ্ৰহ্ণা পূৰ্বক কৃত হয়, তং সমস্তই অসৎ বলিয়া অভিহিত হয়, যেহেতু সেই कर्मा विश्वन इल्याट्ड लोकांस्ट्र कल भ्रमान करत ना এবং अयमकत रहकू हेर लाटक छन मात्रक হয় না।

> আন্ধাত্রর বিভাগ যোগ নামে চত্বারিংশ অধ্যার সমাপ্ত॥ ৪০॥

অৰ্জুন কহিলেন, হে মহাবাছ কেশি-নিস্থান স্বীক্ষেণা আমি সন্মাস ও জাগের যাথার্থা ভাব পূথক ৰূপে জানিতে ইছা করি।

ভগৰাৰ কহিলেন, পণ্ডিতেরা কাম্য কর্মের পরি-ভাগিকে সন্নাম বলিরা জানেন, আর সমস্ত কর্মের কল্মান্ত্রীরিভ্যাগকে ভ্যাগ বলেন। কোন কোন মনীবী গ্রাকর্মে হিংসাদি দোব আছে বলিয়া কর্ম

ত্যান্তা বলিয়াছেন; কোন কোন মনীৰীপণ যজ্ঞ, দান ও তপদ্যা কর্ম অত্যাক্তা বলিয়াছেন; হৈ ভরত সভম পুরুষেক্ত ! ইহার সিদ্ধান্ত আমান্ন নিকট অবণ কর। তত্ত্বজ্ঞ গণ তিন প্রকার ত্যাগ কহিয়াছেন। যজ্ঞ, দান ও তপস্যা কর্ম ত্যাগ করা উচিত নয়, তাহা व्यवनारे कर्बरा, रारहिज् के नकन कम विस्कृतिराजन চিত্তশুদ্ধি জনক হয়। হে পার্থ! সঙ্গ অর্থাৎ কর্তৃত্বা-ভিমান ও ফলাভিসন্ধি পরিত্যাগ করিয়া ঐ সকল কর্ম কর্ত্তব্য, ইহা আমার নিশ্চিত মত; ইহাই উৎকৃষ্ট মত। নিত্য কর্মের পরিত্যাগ স্কুসংগত হয় না, যে-হেতু উহা সত্ত্রশুদ্ধি দ্বারা মোক্ষের হেতু হয়; অতএব উহার যে পরিত্যাগ, তাহা মোহ প্রযুক্তই হইয়া থাকে, স্থতরাং ঐ ত্যাগ তামদ ভ্যাগ বলিয়া উক্ত হইয়াছে। কর্ম আয়াস সাধ্য, কেবল ছুংখেরই কারণ, ইহাঁ মনে করিয়া কায় ক্লেশ ভয়ে যে কর্ম পরিত্যাগ করা হয়, সেই ত্যাগকে রাজ্স ত্যাগ বলা যায়, যিনি এই ৰূপে কৰ্ম ত্যাগ করেন, তিনি জ্ঞান নিষ্ঠা ৰূপ তৎ ফল প্ৰাপ্ত হন না। হে অৰ্জ্জুন! অবশ্য কর্ত্তব্য বোধে যে, সঙ্গ ও ফল পরিত্যাগ করিয়া বিহিত কর্মের অনুষ্ঠান করা হয়, তাদৃশ ত্যাগ সাত্ত্বিক বলিয়া অভিমত। সত্ত্ব-সমাবিষ্ট অর্থাৎ সাত্ত্বিক ত্যাগী ব্যক্তি স্থিরবুদ্ধি হন অর্থাৎ পর কর্ত্তৃক পরাভবাদি সহাও স্বর্গাদি তথে পরিত্যাগ ক্রিয়া থাকেন, তিনি এই সাংসারিক সুখ স্থান্থ স্বণ্ডা কালের নিমিত্ত বিবেচনা করেন, তাঁহার দৈহিক স্থুপ ছাৰ এহণা এহণেক্ছা ছিলা হইলা যার; এতা-**मृग शूक्रव, छः थावह कर्म्य (दव करत्रन मा ७ ऋथकत्र** क्ट्मिं अपूत्रक रन ना। (पराधियानी वाकि দিগের কর্তৃক নিংশেবত দর্ম কর্মা পরিত্যাগ করি-बात क्रमण रह नी, अञ्चव विक्रि कर्मात्र अधुकान क्रबंध कन जाभी इन, डांशादकरे श्रव्य जाभी वना यात्र। देखे, जानके ७ देखे। निके, कर्त्यात शह जिन धकात कृत सारा अतिष भारह, ७९ मन्छ ष्यकाती मिटनत वर्षार मनाम कची मिटनतर शत

लाटक हरेता थाटक ; महानि पर्थाए कर्या कन जानी निरमन कथन्ट हन ना।

হে মহাবাহো ! সর্ব্ব কর্ম সিন্ধির প্রতি কারণ এই পাঁচটি যাহা ভত্ত্ব-নিৰ্ণায়ক সাংখ্য শাত্ৰে কথিত হই-রাছে, ভাহা আমার নিকট অবগত হও। শরীর, কর্ত্তা অর্থাৎ উপাধি লক্ষণান্ত্বিত আত্মা, পৃথক্ প্রকার ইন্দ্রিয়, প্রাণাদি বায়ুর পৃথক্ প্রকার ব্যাপার ও চকুঃ প্রভৃতি ইন্দ্রিরে অমুগ্রাহক স্থ্যাদি, এই পাঁচটি, মমুষ্য শরীর, বাকা ও মন ছারা ধর্ম্মা বা অধর্মা যে কর্মা করেন, সেই সকল কর্ম্মেরই হেতু হয়; অতএব যে ব্যক্তি শাস্ত্র ও আচার্য্যের উপদেশের অভাবে অসংস্কৃত বুদ্ধি প্রযুক্ত উপাধি রহিত অসঙ্গ আত্মাকে কর্মের হেতু কর্ডা বলিয়া বোধ করে, সে সমাগ্দশী নছে। যাঁহার অহঙ্কার-ভাব নাই, অতএব যাঁহার বুদ্ধি ইফানিফ জ্ঞান দারা কর্মেতে লিপ্ত না হয়, সেই দেহাদি বাতিরিক্ত আত্মদর্শী বীক্তি এই ममञ्ज श्रांगीमिशतक लाक-मृष्टि करम हनन कतिया ७ হনন করেন না, স্থুতরাং তৎ কলেও আবদ্ধ হন না।

'ইহা ইফ সাধন' এই ৰূপ জ্ঞান, জেয় ইফ সাধন কর্মাও ঐ জ্ঞানের আশ্রয় জ্ঞাতা আত্মা, এই তিন টি কর্ম প্রবৃত্তির হেতু হইতেছে; এবং শ্রোত্রাদি ইন্দ্রির, অভীপিত কর্ম ও ইন্দ্রির কার্য্য নির্বাহক কর্ত্তা, এই তিন টি, কার্ক্সার আত্রর। সাংখ্য শাত্রে জ্ঞান, কর্ম ও কর্ত্তা, এই তিনটি সন্ত্রাদি গুণ-ভেদে ক্ষিত হইয়াছে, ভাহা যথাবৎ প্রবণ কর। যে জ্ঞান ৰায়া ত্ৰন্ধাদি স্থাৰর পৰ্যান্ত সৰ্বৰ ভূতে অবিভক্ত এক মির্কিকার পরমান্তত্ত্তকে দর্শন করে, সেই ক্তান সান্ত্রিক জানিবে। যে জ্ঞান দারা আত্মারক সৰ্ব প্ৰাণিতে স্থী ফুখী ইত্যাদি ৰূপে পৃথক্ প্ৰকার व्यानक-कार्वाशम कारन, त्मरे कान द्रामम कान कानित्व। अवर स्कान अक स्मेट्ट वा श्राक्तिमानिएड शक्रियूर्व क्रेयंत्र (बार क्रियेत क्रियेत क्रियेत अना मात मन्त्र कर नारे अरे बन माजित्सन-वृक्त रिष्ट्र मुना अवशार्थ है अल्ल कान, कीरा जामन

विनन्ना छेक रहेन्नाहा। जानकि, कनकेनिन्ना, तान ও দ্বের রহিত হইয়া অবশ্য কর্ত্তর বোধে নিয়মিত যে কর্মা করা হয়, সেই কর্মা সাত্ত্বিক বলিয়া উক্ত হইয়াছে। কাম্য বিষয়ের অভিলাবে বা 'আমার ভুল্য আর শ্রোত্রিয় কে আছে' ইত্যাদি প্রকার অহ-ক্লার বশত বহুল আয়াস পূর্বকে যে কর্মা করা হয়, তাহা রাজসিক বলিয়া অভিহিত হইয়াছে। পশ্চা-স্তাবি শুভ বা অশুভ, অর্থ ক্ষয়, পরপীড়া ও আত্ম সমের্থ্য-পর্যালোচনা না করিয়া মোহ বশত যে কর্ম করা হয়, সেই কর্মকে পণ্ডিতেরা তামসিক বলেন। আসক্তি ত্যাগী, গর্ব্বোক্তি রহিত, ধৈর্য্য ও উদ্যম সম-ন্বিত ও কর্মের সিদ্ধি বা অসিদ্ধিতে হর্ষ বিষাদ খূন্য, এবস্থুত কর্তাকে পণ্ডিতেরা সাত্ত্বিক বলিয়া থাকেন। পুত্রাদিতে প্রীতি বিশিষ্ট, কর্ম্ম কলের লাভাকাজ্জী; পরবিক্তাভিলাষী, হিংসা-স্বভাব, বিহিত শৌচ বি-বৰ্জিত ও লাভালাভে হর্ষ শোকান্বিত, ঈদুশ কর্তা রাজস বলিয়া পরিকীর্ভিত হইয়াছে। অসমাহিত, বিবেক-খূন্য, অনন্ত্র, শঠ, পরাবমানকারী, অনুদ্যম-শীল, শোকশীল ও দীর্যস্থতী, এতাদৃশ কর্তা তামস বলিয়া উক্ত হয়।

হে ধনপ্রয়! বৃদ্ধি ও ধৃতির সন্তাদি গুণ ভেদে তিন প্রকার প্রভেদ পৃথক ও অশেষ ৰূপে বলিতেছি, শ্রবণ কর। হে পার্থ! ধর্মা বিষয়ে প্রবৃত্ত ও অধর্মা বিষয়ে নির্ভ হইতে হয়, যে স্থানে ও যে সময়ে যাহা কর্ত্তরা বা অকর্ত্তরা, যে কার্য্যা নিমিন্ত ভয় ও যে কার্য্যা নিমিন্ত ভয় ও যে কার্য্যা নিমিন্ত ভয় ও যে কার্য্যা নিমিন্ত অভয় লাভ হয় এবং কি প্রকারে বয় ও কি প্রকারে মোক্ষ হয়, এ সকল বিষয় যে বৃদ্ধি জানিতে পারে, সেই বৃদ্ধি সাভিকী। হে পার্থ! যে বৃদ্ধি জারা ধর্মাধর্ম্ম ও কার্য্যাকার্য্যা সকলকে অষ্থাবৎ জানে, সেই বৃদ্ধি রাজসী। হে পার্থ! যে ক্রের্ডানে অর্ড হইয়া অধর্মাকে ধর্মা কলিয়া জানে এবং সকল ভ্রেয় পদার্যকে বিপরীত বোধ করে, সেই বৃদ্ধি ভামসী। হে পার্থ! যে ধৃতি, বিষয়ান্তর ধারণ না করিয়া চিতৈজকারাতা হেতু মন, প্রাণ ও

ইন্দ্রিরগণের ক্রিয়াকে নিয়মিত করিয়া রাখে, সেই ধৃতি সাজিকী। হে পৃথানদ্দন অর্জুন! যে ধৃতি ধারা মন্ত্রা ধর্মা, অর্থ ও কামকে ধারণ করিয়া থাকে কথন পরিত্যাগ করে না, এবং তৎপ্রসঙ্গাধীন কলা-কাজনী হয়, সেই ধৃতি রাজসী। যাহা ধারা বছবিধ অবিবেক-বৃদ্ধি-যুক্ত পুরুষ স্বপ্ন, ভয়, শোক, বিষাদ ও মদ পরিত্যাগ না করে, সেই ধৃতি তামসী বলিয়া অভিমতা হইয়াছে।

হে ভরত-কুলরত্ন! তুমি সংপ্রতি আমার নিকট ত্রিবিধ হুখ অবণ কর। পুরুষ অভ্যাস নিবন্ধন যে স্থে রত হইয়া থাকে, ও ছুংথের উপশম লাভ করে, যে স্থর্থ প্রথমে বিষের ন্যায় ছুঃখাবহ ও পরি-ণামে অমৃত সদৃশ এবং যাহা, আত্মবিষয়ক বুদ্ধির প্রসাদে রক্ত ওম পরিত্যাগ করত স্বচ্চদতা পূর্বক य व्यवद्यान, कामृत्र व्यवद्या इटेट्ड ममूर्शन इटेग्ना থাকে, সেই স্থকে যোগীরা সান্ত্রিক স্থুখ বলিয়া-ছেন। বিষয়েক্সিয়-সংযোগাধীন উৎপন্ন, প্রথমে অমৃত তুল্য পরিণামে বিষবৎ যে স্থখ, তাহা রাজস বলিয়া কথিত হইয়াছে। যাহা প্রথমে ও পরিশে-বেও আছ-মোহকর, এবং নিদ্রা, আলস্য ও প্রমা-দাধীন সমুপিত হয়, সেই স্থুখ তামস বলিয়া উদা-হৃত হইরাছে। কোন প্রাণিজাতই পৃথিবীতে মনু-ব্যাদি লোকে বা স্বর্গে দেব লোকে এই প্রকৃতি-সম্ভূত-সত্ত্বাদি গুণ অয় হইতে বিমুক্ত নাই।

হে শত্রতাপন! ব্রাহ্মণ, কজিয়, বৈশা ও শূদ্রদিগের পূর্বে জয় সংকারাধীন সমুৎপন্ন সন্তাদি গুণ
ত্রর ছারা কর্ম সকল বিভাগ ক্রমে পৃথক্ পৃথক্
বিহিত হইরাছে। ব্রাহ্মণিদিগের স্বভাব কেবল সন্ত্গুণান্দক; কজিয়িদিগের স্বভাব কিঞ্ছিৎ সন্ত্রমিশ্রিত
রজোগুণান্দক; বৈশ্বানিগের স্বভাব কিঞ্ছিৎ তমোমিশ্রিত রজোগুণান্দক; অবং শুদ্রাদিগের স্বভাব
কিঞ্ছিৎ রজোগুণান্দক; অবং শুদ্রাদিগের স্বভাব
কিঞ্ছিৎ রজোগুণান্দক; অবং শুদ্রাদিগের স্বভাব
কিঞ্ছিৎ রজোগুণান্দক। শন্ত, দন,
তপন্যা, গুলুক্তিয়, এ সকল কর্ম ব্রাহ্মণের স্বভাব-

काछ। त्नीया, व्यागन्डा, रेपका, नक्का, सूरक वर्ग-नात्रन, मान ও नियमन-गर्कि, ध नक्न कर्य किछा रिटमर्त चंछाव-मञ्जूष । कृषि, शंखशानम खे वार्गिका कर्म दिनामिरभन्न चलाद्वां थ्या । अवर खानामि ত্রিবর্ণের পরিচর্যা সুদ্রের স্বভাব-সংজ্ঞাত হইয়া शांदक। मञ्चरमात्रा च च कर्म शतिनिष्ठिक इरेटन জ্ঞানযোগ্যতা লাভ করিতে পারে; স্ব স্ব কর্মে नित्रक श्रेल स्व श्रकारत जब्दकान लोख करत, जारा व्यवन कता याँहा रहेरा व्यानी प्रितन करें। रहेनी बार्क, विनि এই বিশ্বে পরিব্যাপ্ত হইয়া আছেন, মনুষ্য সেই অন্তর্যামী ঈশ্বরকে স্ব জাত্যুক্ত কর্ম দ্বারা অর্চনা করিয়া তত্ত্বজ্ঞান লাভ করিতে পারে। স্বধর্ম व्यक्रहीन ७ প्रत्रधर्म ममाक् व्यस्त्रिङ हरेटल७ व्यध्म পর-ধর্ম হইতে শ্রেষ্ঠ হয়, কেন না, পূর্ব্বোক্ত স্বভা-বত নিয়মিত কর্ম করিলে মন্ত্ব্য পাপএন্ত হয় না। হে কুন্তীনন্দন! স্বজাত্যুক্ত কর্মে দোষ থাকিলেও তাহা পরিত্যাগ করিবে না, যেহেডু ধুমার্ত অগ্নির ন্যার সকল কৰ্মই কোন না কোন দোবে সমায়ত; যে প্রকার অগ্নির ধূম-দোষ পরিত্যাগ করিয়া অন্ধকার বিনাশ ও শীতাদি নির্জি নিমিত্তে তাহার উত্তাপের সেবা করিতে হয়, সেই ৰূপ ভোমার স্বজাত্যুক্ত कर्ण्य हिश्नामि माय थाकिरले छेरात मायाश्य পরিত্যাগ করিয়া চিত্তশুদ্ধি নিমিত্তে গুণাংশই গ্রহণ করিতে হইবে। যাঁহার বুদ্ধি সকল বিষয়ে সঙ্গপুন্যা এবং বিনি নিরহ্লার ও কল-স্থা-রহিত, ভিনি সন্ন্যাস থারা সুর্ব্ধ কর্ম্ম নির্ভ্তি ক্রপ পরম সিদ্ধি লাভ করেন। হে কুৱীপুক্ত। সেই নিন্ধি প্রাপ্ত বাঁজি, জ্ঞানের পরা নিষ্ঠা ৰাহাতে হর, ভট্টিশ ব্রহ্মকে বে थकारत थांख रन, छारा नरएकरें। बायात निकरें অবগত হও। তিনি বাত্ত্বিক বৃদ্ধিযুক্ত, বংগক্ত শুটি স্থানে অবস্থিত, পরিমিত-ভোজী, সংবত-বাকা, नर्वक-त्नर, नरवक-विक, शान-श्रुक्तक विकासन-পরায়ণ, সভত বৈয়াগালিত ও মনতা-খুনা হইয়া निविशे रृष्टि बाता हिमार नश्यक, भवावि दिस्त

সকল পরিত্যাগ ও রাগ ছেবে উদাস্য ভাব করত (स्ट्लिक्स्क्रिक्ट अस्क्राव, मामर्था, मर्भ, काम, क्रांथ ও পরিঞ্ছ বিমোচন পূর্বক পরমা শান্তি লাভ কুরিয়া ব্রক্ষেতে নিশ্চল ভাবে অবস্থান করিতে যোগ্য হন। ব্ৰহ্মে অবস্থিত পুৰুষ প্ৰসন্নচিত্ত হইয়া নফ বস্তুর নিমিত্তে শোক ও অপ্রাপ্ত বস্তুতে আকা-জ্ঞা করেন না, তাঁহার রাগ ছেবাদিনা থাকায় তিনি ममुख्यानी श्रेया मर्ख भूटि मन्दिययक धान-क्रि भरम ভক্তি লাভ করেন; সেই পরম ভক্তি দারা, আমিই যে উপাধি কৃত বিস্তর ভেদ বিশিষ্ট অথচ উপাধি-থাৰ্থ্য ৰূপে অভিজ্ঞাত হন। আমাকে যাথাৰ্থ্য ৰূপে অভিজ্ঞাতা হইলে পর সেই জ্ঞানের উপরম হইলে আমাতে প্রবেশ করেন অর্থাৎ পরমানন্দ-ৰূপ হন। আমাকেই আশ্রয়ণীয় জ্ঞান করিয়া শিত্য নৈমি-ত্তিক সমস্ত ক্রিয়া কলাপ পূর্ব্বোক্ত ক্রমে নির্বাহ করত মৎ প্রসাদে শাশ্বত অব্যয় পদ প্রাপ্ত হন। ভুমি মৎপরায়ণ হইয়া চিত্ত দারা আমাতে সকল কর্ম সমর্পণ করিয়া বুদ্ধি দারা যোগাশ্রয় করত मर्समा अभन कि, कर्माञ्चेशन कात्मे शूर्रवाङ श्वकाद्व मभूमात्र वञ्च जन्म त्वाद्य भएमकिछ २७। আমার প্রতি একাগ্রচিত্ত হইয়া আমার প্রসাদে সাংসারিক সমস্ত ছুল্কুর ছুর্গ হইতে তরিবে। যদি অহস্কার প্রযুক্ত আমার এবম্বিধ বাক্য না শুনিবে, ভাহা হইলে পুরুষার্থ হইতে পরিভ্রফ হইবে। তুমি অহলার-প্রযুক্ত 'আমি যুদ্ধ করিব না' এই ৰূপ অধ্যবসায় করিতেছ, কিন্তু এ অধ্যবসায় তোমার মিধাা, যেহেভু তোমার প্রকৃতি তোমাকে যুদ্ধে প্রার্কিত করিবে। হে কুন্তী-পুত্র। তুমি মোহ প্রযুক্তই যুদ্ধ করিতে ইছা করিতেছ না, পরস্ত তোমার পূর্ব-কর্ম-সংস্থার জনা লৌহ্যাদিতে ভূমি আবদ্ধ সাহ, ইহাতে উহার বশবর্তী হইয়া তোমাকে এই যুক্ক ক্রিরা প্রশাই করিতে ইইবে। হে অর্জুন! ज्ञास्त्री केन्द्र नमुलात कृटलत क्लत मध्या काट्टन

এবং মারা ছারা সমন্ত প্রাণীকে যুক্ত-রূপ শুরীরে আরোপণ পূর্বক পরিভ্রমণ করাইতেছেন। ৄহে ভারত ! ভূমি সর্বতোভাবে তাঁহারই শরণাপন্ত হও, ভাঁহারই প্রসাদে পরম শান্তিও শান্তত স্থান প্রাপ্ত হইবে। গোপনীয় হইতেও গোপনীয়তম এই জ্ঞান আমি ভোমাকে কহিলাম, ভূমি ইহা অশেষ রূপে পর্যালোচনা করিয়া যেমন তোমার ইচ্ছা হয়, সেই ৰূপ কর।

হে পার্থ! সকল গুছ হইতে গুছতম আমার পরম বাক্য পুনর্বার অবণ কর; ভূমি আমার ষত্যন্ত প্রিয়, এই নিমিত্ত তোমার হিত বলিতেছি। তুমি আমার প্রতি মন অর্পণ কর, আমাকে ভজনা कत, আমার यक्षन कत, আমাকে নম্কার কর; তাহা হইলে আমাকেই প্রাপ্ত হইবে, ইহাতে সংশর করিও না। তুমি আমার প্রিয়, এই হেতু তোমার নিকট সত্য প্রতিজ্ঞা করিয়া কহিতেছি, তুমি সকল ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া এক আমারই শরণাপন্ন হও, আমি তোমাকে দকল পাপ হইতে মুক্ত করিব, শোক করিও না।

এই গীতার্থ-তত্ত্ব তুমি কদাচিৎও তপ্রস্যা-হীন, ভক্তি-भूना वा खळाषा-शैन वाङ्गितक विनाद ना, जवः य আমার প্রতি অস্থ্য়া করে, তাহাকেও কদাচ বলিবে না। যিনি আমার প্রতি পরম ভক্তি করিয়া এই পরম রহস্য আমার ভক্তকে বলিবেন্ন, তিনি আমা-কেই প্রাপ্ত হইবেন, সংশয় নাই। যিনি মদীয় ভক্ত-সমীপে গীতা শাস্ত্র ব্যাখ্যা করেন, তাঁহা-ব্যতিরেকে অন্য কেহ ভূমগুলে মনুষাগণ মধ্যে আমার প্রিয়-তম নাই, এবং কালান্তরেও তাঁহা হইতে অপর প্রিয়তর কেই ইইবে না। আমার মত এই যে वाक्ति व्यामानिरात्र উভয়ের এই ধর্ম্মা সংবাদ পাঠ ক্রিবে, সে জ্ঞান যজ্ঞ ছারা আমাকে যজন ক্রিবে, আমি তাহার সেই যজ্ঞের ভোক্তা হইব। যে মুমুষ্য व्यक्तावान् ७ अस्त्रा-त्रहिष्ठ श्रेत्रा रेश व्यवग्रास्त्रन्, নেই ব্যক্তি সমন্ত পাপ হুইতে মুক্ত হইয়া পূৰ্য-

কর্মী দিগের প্রাপ্য শুভ লোক-সকলে গমন করেন। হে পৃথা-নাদন ধনপ্লয়! তুমি একাগ্র মনে ইহা শুনিলে তো? ভোমার অজ্ঞান সংমোহ বিনফ হই-য়াছে তো?

অর্জুন কহিলেন, হে অচ্যুত! আমার মোহ বিন্
নট হইরাছে, আমি ভোমার প্রসাদে স্বরূপানুসন্ধান-রূপ স্থৃতি লাভ করিরাছি, আমি অধর্ম বিষয়ে গত-সন্দেহ হইয়া অবস্থান করিতেছি, অত-এব ভোমার আজ্ঞা পালন করিব।

সঞ্জয় কহিলেন, আমি মহাত্মা পার্থ ও বাস্থদেবের এই অদ্ভূত ও লোমহর্ষণ সংবাদ শ্রবণ করিয়াছি। হে রাজন্! সাক্ষাৎ যোগেশ্বর ক্ষক শ্বয়ং এই পরম শুহু যোগ কহিলেন, আমি ব্যাসের প্রসাদে ইহা শ্রবণ করিয়াছি। আমি কেশব ও অর্জুনের এই পুণা অদুত সংবাদ মুছর্মুছ শ্বরণ করিয়া পুনঃ পুন হর্ষ প্রাপ্ত হইতেছি। হে রাজন্! হরির সেই অদুত কামার মহান্ বিশ্বয় জ্মিতেছে এবং বারংবার আমি হর্ষ লাভ করিতেছি। যে পক্ষে যোগেশ্বর ক্ষণ্ণ এবং যে পক্ষে ধনুর্জর পার্থ, সেই পক্ষেই শ্রী, বিজয়, ঐশ্ব্যা ও অবাভিচারিণী নীতি, ইহা আমার বিবেচনা হইতেছে।

ব্রন্ধবিদ্যা যোগ শাস্ত্রে একচত্বারিংশ অখ্যায় ও ভগবদ্গীতা সমাপ্ত॥ ১১॥

ারবধ প্রকরণ।

সঞ্চয় কহিলেন, অনন্তর ধনপ্রশ্নকে পুনর্বার বাণ ও প্রাণ্ডীবধারী দেখিয়া মহারথ সকল মহানাদ করিয়া উঠিলেন। পাশুব ও সঞ্চয়গণ এবং যে সকল বীর তাঁহাদিগের অনুষ্ঠত, তাঁহারাও সকলে সাগর-লাত শব্দ ধনি ক্রিক্রিউঠিলেন, এবং ভেরী, পেলী, ক্রকচ ও গোশৃক্স সকল সহসা ব্যক্তিয়া উঠিল, তা-হাতে তুমুল ক্রম্ম হইতে লাগিল। হে জনেশর! অনহর ক্রেক্রা, গল্পব্রণ, পিতৃগণ, সিদ্ধাণ ও চারণগণ দর্শনাভিলাবে আগমন করিলেন। মহা-ভাগ ঋষিগণ মিলিত হইয়া শতক্রেক অত্যে করি-য়া সেই মহা হত্যাকাণ্ড দেখিবার মানকে তথার সমাগত হইলেন।

পরে যুদ্ধে হৈর্যাশীল ধর্মরাজ বীর যুধিষ্ঠির, সেই সাগর সদৃশ উভয় পক্ষীয় সেনাকে যুদ্ধ নিমিত্ত সমুদ্যত ও পুনঃপুন প্রচলিত দেখিয়া কবচ পরি-ত্যাগ ও আয়ুধ-বর নিক্ষেপ পূর্বক রথ হইতে দত্ত্বর অবরোহণ করিয়া পিতামহ ভীমের প্রতি দৃষ্টিপাত করত বাগ্যত ও ক্তাঞ্চলি হইয়া শত্রু-সৈন্যের প্রতি পূর্বাভিমুথে পদত্তজে গমন করিতে লাগিলেন। কুন্তীপুত্র ধনঞ্জর, মহারাজ যুধিন্তিরকে গমন করিতে দেখিয়া রখ হইতে শীঘ্র অবতরণ পূর্বক মহারাজ যুধিন্তির যে পথে গমন করিতেছিলেন সেই পথে জাতৃগণের শহিত তাঁহার পশ্চাদ্ গামী হইলেন। হে রাজন! বাস্থদেবও তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলি-লেন। পার্থিব গণও উৎস্কুক স্ইয়া রাজার অমু-भागी रहेटलन। अर्ज्जून त्राकाटक मटहाधन कतिया কহিলেন, হে রাজন্! আপনি এ কি কার্য্য করি-তেছেন! আপনি আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া तिপুবাহিনীর দিকে পূর্বাভিমুখ হইয়া পদত্রজেই গমন করিতেছেন! ভীমদেন কছিলেন, হে পার্থিব রাজেন্দ্র! আপনি কবচারুধ নিক্ষেপ পূর্বক ভাতৃ-গণকে পরিত্যাগ করিয়া যুক্ষোদাত অরি সৈনোর দিকে কোথায় গমন করিবেন? নকুল কছিলেন, ছে ভরত-নন্দন! আপনি আমার দিমের জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা, আপনি একণে এ প্রকার ভাবে গমন করাতে আ-্মার হৃদয় ভয়ে সন্তাপিত হইতেছে, আপনি বলুন্ किथाय भगन कविदन ? नर्दान किलान, द নৃপ! এই যোজবা মহাভরানক রণ সমূহ বর্তমান मगरत जार्थिन भक्तिरभन्न जिन्द्र अन्ति भन The state of the s করিতেছেন ?

সঞ্জর কহিলেন, কে কুদ্রনাদন । বাগ্যত যুখিতির আতৃগণ কর্তৃক এই বল ক্যাদান হইয়াও কিছুই

উত্তর করিলেন না, গমন করিতেই লাগিলেন। মহাপ্রাক্ষ মহামনা বাস্থদের বেন হান্য করত সাক্র প্রভৃতি সকলকে কহিলেন, ইহাঁর অভিপার আমার বিদিত হইরাছে। ইনি ভীয়, দ্রোণ, রূপ ও শল্য প্রভৃতি সমস্ত শুরু জনের নিকট অমুমতি এহণ করিয়া শত্রুদিগের সহিত যুদ্ধ করিবেন। সামি পুরা-কর্ণেশ অবণ করিয়াছি, যে ব্যক্তি শান্তারুসারে গুরু, রৃদ্ধ ও বাদ্ধবদিগের অনুমতি লইয়া মহত্তর ব্যক্তিদিগের সহিত যুদ্ধ করে, যুদ্ধে তাহার নিশ্বরই জন্ন হর, ইহা আমার বিবেচনা হইতেছে। রুক্ষ এই প্রকার উক্তি করাতে ধার্করাষ্ট্র সৈন্য মধ্যে মহান্ हाहाकांत्र अप हहें । अन्याना अपनय्क निः अप হইয়া থাকিল। ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীয় নিষ্ঠুর সৈনিক পুরু-ষেরা যুখিষ্ঠিরকে দেখিয়া পরস্পার বলাবলি করিতে লাগিল, এই কুলপাংশন যুধিষ্ঠির স্পাইই ভীত হইয়া ভীন্ন সমীপে আগমন করিতেছে। এই রাজা সহো-দরগণের সহিত শরণাধী ও যাচক হইয়াছে। পাণ্ডু-পুज धनश्चत्र, त्रकोम्त्र, नकून ও সহদেব সহায় সত্ত্বে যুধিষ্ঠির কি হেডু ভীত হইয়া আগমন করি-তেছে! এই জম্প-সত্ত্ব যুধিন্তিরের অন্তঃকরণ যখন যুদ্ধ জন্য ভন্নাকুল হইন্নাছে, তখন পৃথিবী-খ্যাত এই যুধিষ্ঠির নিশ্চরই ক্ষত্রির কুলে জন্ম গ্রহণ করে नारे। छम्नस्तत्र, मञ्जूषात्र मिनित्कता शृथक् शृथक् কৌরবদিগকে প্রশংসা করিতে লাগিল এবং হৃষ্ট হইরা স্বচ্ছক মনে উত্তরীয় বসন কম্পিত করিল। হে নরনাথ! তৎ পরে সমস্ত যোধগণ কেশব ও সহোদরগণের সহিত যুধিন্ঠিরকে নিক্ষা করিতে नाभिन। ' (इ नत्रभान! 'व्यमस्त्र मिर्के कुरू मिनाभन यूरिकिंत्रक रिकात कतिता भीछ निःभक श्रेम, ख-হেতু এই রাজা যুখিছির ভীন্নকে কি বলিবেন, ভীন্ন কি প্রভাগের করিবেন, সমর স্লাঘী ভীম কি বলিবেন, ক্ষ ও चर्क्नूनरे वा कि करिएतन, अवर अरे यूधिछिएतत विन-वात्र विकार वादि आहर, यूपिकित्रत्र निविद्ध उठत शक रिराज़रे धरे क्ले अठाउ मर्भन्न स्रेज़ोहिन।

মহারাজ যুখিতির আত্পণে পরিষ্ঠ হাইয়া শর শক্তি সমাকুল শক্ত সৈন্য অবগাহন পূর্বক শীপ্র ভীম সমীপে উপনীত হইলেন, এবং যুদ্ধ নিমিছ সমুপছিত শান্তমুনন্দন ভীমের চরণ-বর কর-বর বারা দৃঢ় ধারণ পূর্বক তাঁহাকে বলিলেন, হে মুর্ধর ! আমি আপনকাকে নিবেদন করিতেছি, আপনকার সহিত আমরা যে যুদ্ধ করিব, তাহাতে আপনি আমাকে অনুমতি করুন এবং আশীর্বাদ প্রয়োগ করুন।

ভীয় কহিলেন, হে পৃথীপতি ভারত! যদি তুমি আমার নিকট এই ৰূপে না আসিতে, তাহা হইলে আমি তোমার পরাভব নিমিন্ত অভিশাপ দিতাম। হে বৎস! আমি তোমার প্রতি প্রীত হইলাম, তুমি যুদ্ধ কর, যুদ্ধে জয় লাভ কর এবং অন্য যাহা তোমার অভিলাষ থাকে, ভাহাও প্রাপ্ত হইবে; তুমি আমার নিকট কি বর প্রার্থনা করিবে, তাহা বাক্ত কর, এরূপ হইলে তোমার পরাজ্ঞারের সম্ভাবনা নাই। মহারাজ! পুরুষ অর্থের দাস, অর্থ কাহারও দাস নহে, ইহাই সত্য; আমি অর্থ দারা কৌরবা দিগের নিকট বন্ধ রহিয়াছি, অতএব তোমার নিকট আমার এই নিরর্থক বাক্য বলা হইতেছে যে "আমি কৌরবদিগের নিকট অর্থের বশতাপন্ন হইয়া ভৃতি-ভুক্ হইয়াছি, তুমি যুদ্ধ ব্যতীত অন্য কি ইক্ছা কর, প্রকাশ করিয়া বল।"

যুধিন্ঠির কহিলেন, হে মহাপ্রাজ্ঞ! আপনিও ইহা বিবেচনা করুন, আমার সতত প্রার্থনা এই যে, আপনি নিত্য নিত্য আমার হিতার্থী হইরা কৌরব-দিগের নিমিত্ত যুক্ত করেন।

ভীয় কহিলেন, হে নৃপ কুরু-নন্দন! পর পক্ষের নিমিত্তে আমি ইচ্ছামুসারেই যুদ্ধ করিব, অতএব ভৌমার কি সাহায্য করিব, যুদ্ধ ব্যতীত যাহা তো-মার বলিবার ইচ্ছা হয়, তাহা ব্যক্ত কর।

্যুধিন্তির কহিলেন, আপনি সংগ্রামে অপরাজের, আমি আপনার নিকট কি প্রকারে যুক্তে জরী

গারি, তদ্বিনার সাগনি শ্রের ওাইতকর মনি সাগনি যুদ্ধ করুন, সর লাভ করুন, ম ेकिह राधिक भान, छोड़ा विस्तृतना क्रिया राजुन।

্ৰীয় কৰিলেন, হে কুৰীনমূল ! স্বামি কংগ্ৰামে ্যুদ্ধ ক্রিলে, কোন পুরুষ বে আমাকে পরাজয় ক্রিতে পারে, এমত কাহাকেও আমি দেখিতেছি না; সাক্ষাৎ শতকতুও আমাকে সংগ্রামে পরাজয় করিতে সমর্থ নহেম।

যুধিন্তির কহিলেন, হে পিতামহ! আপনকাকে প্রণাম করি, আমি ঐ নিমিত্তই আপনকাকে জি-জ্ঞাসা করিতেছি যে, আপনি সমরে শত্রু-কর্তৃক আপনার পরাব্ধয়ের উপায় বলুন।

ভীম কহিলেন, হে তাত! সমরে আমাকে যে কেহ জর করিতে পারে, তাহা আমি দেখিতেছি না, এবং একণে আমার মৃত্যু কালও উপস্থিত হর নাই, অতএব তুমি পুনর্বান্ন এক বার আমার নিকট আ-গমন করিও।

मञ्जर कहित्वन, एर कूरूनन्यन । जननत्तर महावाह ার ভীয়ের সেই ৰাক্য শিরোধৃত করিলেন, এবং পুনর্বার তাঁহাকে অভিবাদন করিয়া ভাতৃ-গণের সহিত, সর্ব সৈনাদিগের সাক্ষাতে ভাহা-াদিগের মধ্য দিয়া পুনর্বার জোণাচার্য্যের রথাভি-भूरथ शमन कतिरामन। त्रहे प्रक्षि त्राका जातित নিকট গিয়া তাঁছাকে প্রদক্ষিণ ও অভিবাদন পূর্বক षाच (धारकत धरे कथा वितालन, एर जनवन् विक! আমি কি প্রকারে নির্দোষ অন্তঃকরণে যুদ্ধ করিতে পারি এবং কি প্রকারেই বা সকল রিপুকে জয় করিতে পারি, তদ্বিষয়ে আপনাকে আমন্ত্রণ করি-তে ি আপনি অমুক্তা করুন।

েলোগ কহিলেন, মহারাজ! আপনি যদি যুজের নিমিত ক্ত নিশ্চয়, হুইয়া আমার নিকট না আসি-তেন, তবে আমি আপনাকে সর্ব্ব প্রকৃত্রে পরাতব নিমিত অভিশাপ দিভাম, সভেএই হৈ নিজাপ যুধি-खित । **यामि वार्यना कर्ज्**क श्रृतिक हरेता याश्व-কার প্রতি সম্ভাই ইইনটেছ, আমি অমুজ্ঞাকরিতেছি, আপনি আপনার ব্যোগায় বাক্ত করুন

भागनात कारा बलिबाद बाउना बादक बजून, सामि আপনার অভিনয়ৰ পূর্ণ করিব ; এই উপস্থিত স্ব-স্থার যুদ্ধ ব্যতীত আপনি কি ইচ্ছা করেন ? পুরুষ षर्धित नाम, वर्ध काराज्ञ नाम नरह, हेराहे मछा; আমি কৌরবদিগের নিকট অর্থ বশত বন্ধ হইয়াছি, অতএব আপনাকে এই নির্থক বাক্য বলিতেছি যে " আপনি যুদ্ধ বাজীত কি অভিলাব করেন " আমি কৌরবদিগের পক্ষ হইয়া যুদ্ধ করিব বটে, কিন্তু আপনকার জন্ন আমার প্রার্থনীয়।

যুধিতির কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! আপনকার নিকট আমার ইহা প্রার্থনীয় যে, আপনি কৌর্কুলিগের পক্ষ হইয়া যুদ্ধ করেন, পরস্কু আমার প্রতি জয় আশীর্কাদও মদীয় হিত-সাধন কার্য্য মন্ত্রণা করেন। দ্রোণ কহিলেন, হে রাজন্: যখন হরি আপনার মন্ত্রী রহিয়াছেন, তথন আপনার অবশাই জয় হইবে; আমিও আপনাকে আশীর্কাদ করিতেছি, আপুনি শক্র বিজয়ী হইবেন। হে কৌন্তেয়! যেখানে धर्मा, (मथारन कृष्ण ; राथारन कृष्ण, रमधारनट्टे क्य ; অতএব গমন কৰুন, যুদ্ধে প্ৰবৃত্ত হউন. এক্ষণে আমাকে কিছু যদি জিজ্ঞাসা করেন, কয়ন, আমি তাহা বলিতেছি।

যুধিন্তির কহিলেন, হে দ্বিক্ল প্রধান ! আমার যাহা বলিবার ইচ্ছা হইয়াছে, তাহা জিজ্ঞানা করিতেছি, অবণ করুন; আপনি সংগ্রামে অপরাজিত, আপ-নাকে কি প্রকারে পরাজিত করি ?

त्यां करिंदनन, द्र ब्रांकन्! यात्रि यादे कान রণে যুদ্ধ করিব, ভাবং অপিনকার বিজন্মের সম্ভা-বনা নাই, অতএব আপনি সোদরগণের সহিত সত্ত্র হইরা আমার নিধনে যত্ন করিবেন।

ুৰ্থিতির কহিলেন, হে মহাবাহ আচাৰ্যা! তৎ অযুক্তই আমি প্রণিপাত পূর্বক আপনাকৈ নমনার ক্রিতেছি এবং অতি ফুংবং নহকারে জিজাসিতেছি,

ব্রেণ কহিলেন, হে ভাত। আমি রণে অবস্থিত
হইরা উৎসাহ সহকারে শর সমূহ বর্ষণ পূর্বক যুদ্ধ
করিতে বাকিলে, আমাকে বে বধ করিতে পারে,
এতাদৃশ শক্র আমি দেখি না; তদ্বাতীত আমি রণ
হলে শক্র-ত্যাদী যোগাসক্ত ও মরণ নিমিন্ত নিষত
হইলে বে আমাকে তাদৃশ অবস্থাতে বধ করিবে, সেই
বধ করিতে পারিবে, ইহা আমি সত্যই বলিলাম।
যাহার বাক্যে শুদ্ধা করা বার, তাদৃশ পূর্ববের মুধে
অত্যন্ত অপ্রিয় কথা শুনিয়া রণ মধ্যে আমি অত্র
শক্র পরিত্যাগ করিতেও পারি, ইহাও আমি সত্যই
ব্যক্ত করিলাম।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! রাজা যুথিন্ঠির ধীমান্
দ্রোণাচার্য্যের এই বারুয় শ্রুবণ করিয়া তাঁহার অন্থমত হইয়া শার্ঘত রূপাচার্য্যের নিকট গমন করিলেন। বাক্য-বিশারদ রাজা, ছুর্জ্ম্বতর রূপাচার্য্যকে
প্রদক্ষিণ ও অভিবাদন করিয়া এই বাক্য বলিলেন,
হে বিশুজ্জাত্মন্ গুরো! আমি আপনার নিকট অন্থমতি প্রার্থনা করিতেছি, যাহাতে নির্দ্ধোষ অস্থঃকরণে যুদ্ধ করিতে পারি এবং সমস্ত শত্রু জয় করিতে পারি, এমত অনুজ্ঞা করুন।

কুপ কহিলেন, মহারাজ! যদি আপনি যুদ্ধে কৃতনিশ্চয় হইয়া আমার নিকট না আসিতেন, তবে
আমি আপনার সর্ব্ব প্লকারে পরাতব নিমিত্ত আপনকাকে অভিশাপ দিতাম। মহারাজ! পূরুব
অর্থের দাস, অর্থ কাহারও দাস নহে, ইহা যথার্থই;
আমি অর্থ দারা কৌরবদিগের বর্ণীভূত হইয়াছি।
মহারাজ! আমার ইহা নিশ্চয় আহৈ, আমি কৌরবদিগের পক্ষে যুদ্ধ করিব, অতএব আপনকাকে
এই নির্থক বাক্য বলিতে হইল যে, আপনি যুদ্ধ
ব্যতিরেকে অন্য কি অভিলাব করেন।

যুধিন্তির কহিলেন, হে আচার্য্য! আমি সেই হেডুই অতি ছুঃখিতান্তঃকরণে আপনার নিকট জিজ্ঞানা করিতেছি, আমার বাক্য অবণ করুন।

সঞ্জয় কছিলেন, এ ৰূপ কহিয়া রাজা ব্যধিত ও

গত-চেত্ন হইরা আর কিছুই বলিতে পারিলেন না। ক্লপাচার্য তাঁহার বক্তব্য অভিপ্রার জানিতে পারিলার রা তাঁহাকে প্রভুত্তর করিলেন, মহারাজ! আমি অবধ্য, পরস্ত আপনি যুদ্ধ করুন, জরী হইবেন। হে নরাধিপ! আপনি আমার সকাশে আগমন করাতে আমি প্রীত হইরাছি, আমি নিত্য নিত্য গাত্রোপান করিয়া আপনকার জয় প্রার্থনা করিব, ইহা আমি সত্যই বলিতেছি।

মহারাজ! রাজা তখন গোতম-নদ্দন রূপের এই কথা ভাবণ করিয়া তাঁহার নিকট অনুমত হইয়া, যেখানে মদ্ররাজ শল্য ছিলেন, সেই পথে গমন করিলেন। তিনি হুর্জর্ষ শল্যের নিকট উপনীত হইয়া তাঁহাকে প্রদক্ষিণ ও অভিবাদন করিয়া আত্ম-জ্মের এই বাক্য বলিলেন, হে হুর্জর্ষ মহীপাল! আমি আপনকার সকাশে অনুমতি গ্রহণ করিতে অভিলাধী হইয়াছি, আমি ঘাহাতে নির্দ্ধোষ চিত্তে যুজ করিতে পারি এবং যুক্ক প্রবাদ রিপু সকলকে পরাজিত করিতে পারি, আপনি এমত অনুজ্ঞা করুন।

শল্য কহিলেন, মহারাজ! যদি তুমি যুদ্ধে রুত-নিশ্চয় হইয়া আমার নিকট অভিগমন না করিতে, তাহা হইলে, রণে তোমার পরাভব নিমিত্তে আমি তোমাকে অভিশাপ দিতাম। ভূমি আমাকে সন্মা-নিত করিলে, তাহাতে আমি প্রীত হইলাম, ভুমি যাহা আকাঙ্গা কর, তাহা সিদ্ধ হউক; আমি তোমাকে অনুমতি করিতেছি, তুমি যুদ্ধে প্রবৃত্ত হও, জয় লাভ কর। হে বীর! তোমার কি বিষয় প্রয়োজন, আমি ভোমাকে কি প্রদান করিব, এই উপস্থিত অবস্থায় তুমি যুদ্ধ ব্যতীত কি ইচ্ছা কর, বল। হে বৎস ভাগিনেয়! পুরুষ অর্থের দাস, অর্থ কাহারও দাস নহে, ইহা যথার্থই ; আমি অর্থ বশত কৌরবদিপের নিকট বন্ধ হইরাছি। অতএব তোমাকে এই নির্থক বাক্য বলিতেছি বে, আমি তোমার যথাভিল্যিত কামনা পূর্ণ করিব ও হুমি যুদ্ধ ব্যতীত কি অভিলাব কর।

বুধিন্তির কহিলেন, মহারাজ! আপনি শ্লেক্টামু-সারে পর-পক্ষ হইরা যুদ্ধ করুন, পরস্ত আমি এই বর প্রার্থনা করি, আমার যাহাতে সাতিশয় হিত হয়, তদ্বিরে মন্ত্রণা করেন।

শল্য কহিলেন, হে নৃপদন্তম! আমি কৌরব-দিগের অর্থে ভূত হইরাছি, অতএব আমি অভিলা-যানুসারেই তোমার বিপক্ষে যুদ্ধ করিব, এমত স্থলে তোমার কি সহায়তা করিব, তাহা বল।

যুধিন্ঠির কহিলেন, হে মাতুল! আপনি যুদ্ধের উদ্যোগ কালে স্বীকার করিয়াছিলেন যে, আপনি সংগ্রাম স্থলে কর্ণের তেজো-বিনাশ করিবেন, সেই বরই আপনকার নিকট আমার প্রার্থনীয়।

শল্য কহিলেন, হে কুন্তী-পুত্র যুধিষ্ঠির! তোমার এ অভিলাষ সম্পন্ন হইবে, ভুমি গমন কর, ইচ্ছামু-সারে যুদ্ধ কর, তোমার জয়ের উপায় করিতে অঙ্গী-কার করিলাম।

সঞ্চয় কহিলেন, রাক্সা যুধিন্তির তদনন্তর মাতৃল
মদ্রাধিপতির অনুমত ও জ্রাতৃগণে পরিবারিত হইয়া
মহা সৈন্য মধ্য হইতে নির্গত হইলেন। গদাগ্রক্ত
বাস্থদেব রণস্থলে রাধা-নন্দন কর্ণের নিকট গমন
করিলেন। অনন্তর তিনি পাণ্ডবদিগের প্রয়োজন
সিদ্ধি নিমিন্তে কর্ণকে এই কথা বলিলেন, কর্ণ!
আমার ক্রন্ত হইয়াছে, তুমি ভীয়ের দ্বেষ প্রযুক্ত
যুদ্ধ করিবে না, অতএব যে পর্যান্ত ভীয় নিহত না
হইবেন, সেই পর্যান্ত তুমি আমাদিগকে বরণ কর।
যদি তুমি উভয় পক্ষই সমান বেধে কর, তাহা হইলে
ভীমের নিধনান্তে পুনর্কার মুর্যোধনের সাহায্য
নিমিন্তে তৎপক্ষীয় যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইবে।

কর্ণ কহিলেন, হে কেশব ! আমি ছুর্য্যোধনের অপ্রির কার্য্য করিতে পারিব না, ভূমি আমাকে ছুর্য্যোধনের হিতৈবী ও তাঁহার নিমিত্তে ভ্যক্ত-প্রাণ বোধ কর। হে ভারত ! কৃক্ত ক্রেণ্ড এই কথা অবণ করিরা নির্ভ হইলেন, পরে যুধিন্তির প্রভৃতি পাণ্ডব গণের সহিত এক ত্রিভ হইলেন। অনন্তর রাজা

নৈন্য মধ্যে উচ্চস্বরে এই কথা বলিজেন, বিনি এই রণে আমাদিগের সাহাব্য নিমিছে আমাদিগের সাহাব্য নিমিছে আমাদিগকে বর্ণ করিব। তদনত্তর যুযুৎস্থ তাঁহাদিগকে এই কণা কলিলেন, হে বি-শুদ্ধাশয় মহারাজ! যদি আমাকে আপনি বরণ করেন, তাহা হইলে আমি স্পর্দ্ধাকারী ধৃতরাপ্ত্র-পুত্রদিগের সহিত সংগ্রামে আপনকার নিমিত্ত যুদ্ধ

যুধিন্তির কহিলেন, যুযুৎস্থ! আইস আইস, আমরা সকলে তোমার মূর্ধ ভ্রাতৃ গণের সহিত যুদ্ধ
করিব। বাস্থদেব ও আমরা সকলেই তোমাকে বলিতেছি, হে মহাবাছ! তোমাকে যুদ্ধ কার্য্যে বরণ
করিতেছি, তুমি আমার নিমিন্তে যুদ্ধ কর; ধৃতরাষ্ট্রের পিশু ও বংশ-রক্ষা তোমাতেই দেখা যাইতেছে। হে মহোজ্জ্ল-ৰূপ-সম্পন্ন রাজ-পুত্র! তোমাকে আমরা গ্রহণ করিতে অভিলাষী হইয়াছি,
তুমিও আমাদিগকে গ্রহণ কর, অতি কুদ্ধ ছুর্বুদ্ধি
ছুর্য্যোধন আর থাকিবে না।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! তদনন্তর, যুযুৎস্থ আ-পনকার পুত্র কোরব দিগকে পরিত্যাগ করিয়া ছল্ছভি বাদ্য-ধনি করাইয়া পাগুবদিগের সেনা মধ্যে গমন করিলেন। তৎ পরে মহাভুক্ত রাজা যুথিন্ঠির সাতিশয় হুই হইয়া স্থবর্ণাজ্ঞল দীপ্তিযুক্ত কবচ পুনর্বার পরিগান করিলেন। দেই সমস্ত পুরুষ-সিংহেরা সকলে স্ব স্ব রেখে আরোহণ করিলেন। অনম্ভর তাঁহারা পূর্ব্ব সজ্জিত বুহু পূর্ব্ববৎ প্রতি-বৃহ্হিত করিলেন, এবং শত শত ছুক্তুজি ও পুত্রল বাদ্য এবং নানা বিধ সিংহ্নাদ করিতে লাগিলেন। ধৃই-ছান্ন প্রভৃতি সমুদর পার্থিবগণ তথন পুরুষ সিংহ পাগুবদিগকে রথস্থ দেখিয়া পুনর্বার হুই-চিন্ত হই-লেন। সেই সকল মানী ব্যক্তিদিগের সন্ধান রক্ষা-কারী পাগুব দিগের গৌরব দেখিয়া রাজগণ তথার তাঁহাদিগকে অত্যন্ত প্রশংসা করিলেন এবং মহান্ধা

পার্থদিশের যথা সময়ে স্থান্তবি ও ক্লপা-স্থভাব, বিশেষত জ্ঞাতিগনের প্রতিশারম দরার কথা বলাবলি করিতে লাগিলেন। সেই কীর্তিমান্ পুরুষ-দিগের প্রতি সর্বা দিক্ হইতে 'সাধু সাধু,' এই কথা এবং স্থতি সংযুক্ত পুণ্য বাক্য সকল প্রচারিত হইতে লাগিল, তাহাতে তত্তত্ব জুনগণের মন ও হৃদয় আক্রত হইতে থাকিল। দলেছ বা আর্যাগণ, যাহারা তথায় পাগুবদিশের চরিত্র দর্শন বা প্রবণ করিলেন, তাহারা গদগদ ভাবে রোদন করিতে লাগিলেন। তদনস্তর সেই মনস্বীগণ হৃদ্ট হইয়া শত শত মহা ভেরী, পুছল ও গোছগ্ধ সদৃশাত শত্ম সকল বাদ্য করিতে লাগিলেন।

যুধিষ্ঠিরের জীমাদি সমীপে গমন প্রকরণ দ্বিচত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥৪২॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, মদীয় ও পর পক্ষীয় সৈন্যের ঐ প্রকারে বৃাহ রচিত হইলে কোন্ পক্ষীয় যোধগণ প্রথমে প্রহার আরম্ভ করিল ?

সঞ্জয় কহিলেন, আপনকার পুত্র ছুংশাসন জাতা ছুর্যোধনের পুর্ব্বাক্ত কথা অবণ করিয়া ভীমকে অত্যে করিয়া সেনার সহিত সমরাভিমুখে গমন করিলেন। সেই প্রকার পাগুবেরাও সকলে হুফ্টিছ হুইয়া ভীমসেনকে পুরোবর্জী করিয়া ভীমের সহিত যুক্ষাভিলাবে অগ্রসর হুইলেন। হে রাজন্! তদনন্তর গোবিষাণ, ভেরী, মূদক ও মুরজের বাদ্য ধনি, ক্রকচের শব্দ, অথ হন্তীর রব, যোধগর্ণের সিংহনাদ ও কিল কিলা শব্দ উক্তর সৈন্য মধ্যেই হুইতে লাগিল। পাগুবেরা সিংহনাদাদি শব্দ সহকারে আমাদিগের প্রতি ধাবমান হুইলেন, আমরাও ভাঁহাদিগের প্রতি তর্ক্তন পর্ক্তন করত ধাবিত হুইলাম, এই উভয় দলের বিবিধ শব্দ মহা তুমুল হুইয়া উঠিল। পাগুব ও ধার্তরাষ্ট্র উভয় পক্ষের মহৎ সৈন্য দল সেই মহা সমুক্রিত সমাধ্যম ও শব্দ মুদ্দাদি শব্দে, বায়ু

ষারা কম্পিত বনরাজির ন্যার, কম্পিত হইতে লাগিল। সেই অশুভ মুহুর্ছে সমাগত রাজগণ, হতী, অশু ও রথ সমূহে সমাকুল সৈন্য সমন্তের তুমুল নির্বোধ, প্রনোজত সাগর সমূহের ন্যায় হইরা উঠিল।

তাদৃশ তুমুল লোমাঞ্চকর শব্দ উপিত হইলে মহাবাছ ভীমসেন গোর্বের ন্যায় নিনাদ করিয়া উঠিলেন। ভীমসেনের সেই নিনাদ শব্দ ছুল্ছভির নির্ঘোষ, হস্তীগণের বৃংহিত, হয়গণের হেষারব ও সহস্র সহস্র সৈন্যদিগের সিংহনাদকে অতিক্রম क्रिया উঠिल। মেঘ সদৃশ গক্ষনকারী ভীমসেনের সেই শক্রাশনি ভুল্য শব্দ ভাবণ করিয়া আপনকার সৈনোরা ত্রাসান্থিত হইল। যে প্রকার সিংহের রব শুনিরা অপরাপর পশুগণ মল মৃত্র পরিত্যাগ করে, তক্ৰপ সমুদায় বাহন অশ্ব হন্তী প্ৰভৃতি সেই ৰীরের শব্দে মল মূত্র পরিত্যাগ করিয়া কেলিল। সেই বীর ঘনতর ঘন রুদ্দের ন্যায় নিনাদ করিয়া আপনাকে ভয়ঙ্কর ৰূপ প্রদর্শন পূর্ব্বক ভবদীয় পুত্র দিগের ভরোৎপাদন করত তাঁহাদিগের প্রতি আপতিত হইলেন। মহাধমুর্দ্ধর ভীমদেনকে সমাগত দেখিয়া আপনকার পুত্র ছর্য্যোধন, ছুর্মুধ, ছুঃসহ, সহ, অতি-রথ ছংশাসন, জুর্মধণ, বিবিংশতি, চিত্রসেন, মহারথ বিকর্ণ, পুরুমিত্র ও জয় এই সকল সহোদরগণ এবং ভোজ-বংশীয় ক্লতবর্মা ও বীর্য্যবান্ লোমদন্ত-পুত্র, ইহাঁরা মেঘ কর্তৃক কম্পিত বিদ্যাতের ন্যায় মহা-ধমুক বিধূনন করত মোক-বিমুক্ত সর্প সদৃশ নারাচ সমূহ গ্রহণ করিরা, যে প্রকার মেঘ সকল দিবা-করকে আচ্ছাদন করে, লেই ৰূপ ভাঁহাকে শর সমূহ ধারা আচ্ছাদন পূর্বক পরিবেটিত করিলেন। পরে দ্রৌপদীর পুত্রেরা ও মহারথ স্বভদ্রানন্দন, नकूल, महरतव ও शृक्केक्षात्र, शर्बक निश्वत ममूरहत्र উপর মহাবেগ-বিশিষ্ট বজ্ঞ নিক্ষেপের ন্যায়, শাণিত শর সমূহ দারা ধৃতরাষ্ট্র-পুজাদিশকে অন্দিত করত তাঁহাদিগের প্রতি আপতিত হইলেন। ভীষণ ধমু-র্ভাণ ও করতলের ধনি বিশিষ্ট সেই প্রথম সংগ্রামে

আপনকার পক্ষের বা পর পক্ষের মধ্যে কেছ পরা-জুখ হইলেন না। হে ভরত-সিংহ মহারাজ! দ্রোণ-निया निगदकरे रख-लाचव मरुकादत श्रूनःश्रून नत সমূহ নিক্ষেপ করিতে ও লক্ষ্য বেধ করিতে দেখিলাম। তৎকালে শব্দায়মান ধমুক সকলের নির্ঘোষ বিশ্রান্ত হইল না, গগণতল হইতে বিচলিত জ্যোতিঃ-পদা-র্থের ন্যায় প্রদীপ্ত শর সকল চলিত হইতে লাগিল। हि जातु । जनाना महीशालाता नकत्न ज्थन मर्ग-কের ন্যায় ছইয়া সেই দর্শনীয় ভয়ানক জ্ঞাতি-সমা-গম দর্শন করিতে লাগিলেন। তদনন্তর সেই মহা-রথেরা পরস্পর জাতকোধ ও ববৈধী হইয়া স্পর্জা পূর্বক বাারাম করিতে লাগিলেন। হস্তী, অশ্ব ও রথ সমূহে সঙ্কুল সেই কুরু পাওব সৈন্য দ্বয় চি-ত্রিত পটের নাায় রণ স্থলে অতীব শোভা পাইতে লাগিল। অনন্তর সেই সকল রাজগণ, আপনকার পুজের আদেশামুসারে ধনুগ্রহণ পূর্বক স্ব স্ব সৈন্য সমভিব্যাহারে আপভিত হইলেন। সেই সকল वाकाम्रिशंत रेममा मह तम इत्न व्यापाठन कात्न रखी ভেরীর বাদ্য ধনি একত মিশ্রিত হওয়াতে বাত কম্পিত কুৰু সমুদ্ৰের শব্দ সদৃশ হইয়া উঠিল ; এই ক্ৰ সমুদ্ৰের কুম্ভীর, বাণ সকল ; সর্প, ধমুক সকল ; কচ্ছপ, খড়্গ সকল, এবং পবন প্রবাহ, অগ্রভাগে याध्यापत उद्धन भद्धन शृद्धक लन्छनापि।

ও দিকেও সেই সকল সহস্র সহস্র মহীপাল রাজা
যুধিন্ঠিরের আদেশক্রমে সিংহনাদ করত আপনকার সৈন্যের প্রতি আপতিত হইলেন। সৈন্য সমাগম উভয় পক্ষীয় সৈন্যেরই ঘোর রূপ হইল। সেই
সকল সৈন্যের সমাগমে দিবাকর গুলি পটলীতে সমাছেল হইয়া অন্তর্ভিত হইলেন। কি স্ব পক্ষীয়, কি পর
পক্ষীয়, কাহার কিলেন্তর যুদ্ধ করিতে, ভয় হইতে
বা পুনর্বার যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতে কোন বিশেষ দেখিলাম না। সেই মহাভয়য়য় য়তুমুল যুদ্ধ স্বেল্লাপনকার পিতাভীয় তাদৃশ অতি বছক সৈন্য সক্ল-

কে অতিক্রম করিরা প্রকাশ পাইতে লাগিলেন। যুদ্ধারত্তে তিচড়ারিংশ অধ্যার সমাপ্ত । ৪৩ ।

मञ्जर कहिएलन, एर नत्रभाम ! त्मरे जन्नकत्र पिव-সের পূর্বাক্ল সময়ে রাজাদিগের দেহ-কর্তনকর মহা घात युक्त चात्र इंटेल। ∙ शतम्भद्र करत्रकू कृद्ध उ স্ঞ্জয়গণের সিংহনাদে পৃথিবী ও অন্তরীক্ষ নিনাদিত **रहेल। जल धनि ७ मन्ध द्रादंद महिज किल किला** শব্দ হইতে লাগিল, তাহাতে আবার মনুষাদিগের তব্জন গর্জনে সিংহনাদ হইয়া উঠিল। হে ভরত-সিংহ! ধনুর্প্তণ ও তলতাণের শব্দ, পদাতিদিগের পদ শব্দ, অশ্বগণের মহা হেবা রব, তোজ্র ও অঙ্কু-শের নিপাত, আয়ুধ সকলের ধনি, পরস্পরের প্রতি ধাবিত হস্তিগণের ঘন্টারব, তাহাতে আবার মেঘ-গম্ভীর রথনির্যোষ, ইহাতে তুমুল লোমাঞ্চকর শব্দ উত্থিত হইল। কৌরবেরা সকলেই জীবন পরিত্যাগে ক্ত-নিশ্চয় ও ক্রুরমনা হইয়া ধ্রজ উচ্ছিত করণ পূর্বক পাণ্ডব দিগের প্রতি আপতিত হইলেন। শান্তনু-পুত্ৰ স্বয়ং কালদণ্ড সদৃশ ভয়ানক কাৰ্ম্মুক গ্রহণ করিয়া ধনঞ্জয়ের প্রতি ধাবিত হইলেন। তেজস্বী ধনঞ্জয়ও লোক বিখ্যাত গাণ্ডীব লইয়া রণ-मूर्य भावन कतिलान; मारे छेखम कुक्रभार्फ्लरे পরস্পর ববৈধী হইলেন। বলশালী গঙ্গা-পুত্র রণে পার্থকে বিদ্ধ করিয়া বিকম্পিত করিতে পারিলেন না এবং সেই ৰূপ অৰ্জুনও ভীয়কে যুদ্ধে বিচলিত করিতে সমর্থ হৈইলেন না। মহাধ**মুর্জ**র সাত্যকি ক্রতবর্মার প্রতি অভিগত হইলেন; তাঁহাদিগের উভয়ের লোমহর্ষণ ভুমুল যুদ্ধ আরম্ভ হইল। সাত্য-কি কৃতবর্মাকে কৃতবর্মাও সাত্যকিকে পরস্পার অন্ত্র প্রহার করত তজ্জন গর্জন পূর্বক আক্রমণ করি-লেন। সেই সাত্ত্ত-বংশীয় **ছুই পুরুবের সর্বাঙ্গ** শর ভূষিত হইয়া শোভা পাইতে লাগিল; ভাঁহারা উভয়ে বস্ত কালের পুলিত ও পুলা বারা বিচিত্র

भा दिन्छ क्रियक कुक्द बाह्य प्रस्टान । महो- | कहिता दहरन कदिलान । क्रहे नामन क्रिकेंद्र तारे धक्षत्र व्यक्तिका कानगातिलाचि इरल्पलादक भाक-मन् क्रविद्रान । बुरम्बल नवद्व प्रश्चिमश्चात इक हमन করিয়া কেলিলেন ও ভাঁহার নার্থিকে নিপাতিত করিলেন। নার্থি নিপাতিত হইলে পর অরিমর্জন क्रका-मन्त्रम क्रूक एरेस् नत्र वाग बात्रा हरातवारक বিন্ধ করিলেন, পরে শাণিত উৎকৃষ্ট এক ভল বারা वृह्द्र्रहरात वन ७ जाना धक मानिक छेरक्के जल দারা জাহার পার্কি-রক্ষককে ছেদন করিয়া কেলি लान। व इरे अतिसम् जीन्त नत्र मञ्ह दात्रा পরুম্পার প্রহার করিতে লাগিলেন। মহারাজ! ভীমদেন সমরে প্রদীপ্ত, মহারথ, মানী ও শত্রুতা-হজনকারী আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধনকে আক্রমণ করিলেন। সেই নরসিংহ মহারথ কুরু প্রধান-দম রণাঙ্গনে পরস্পার শর হৃষ্টি দারা বর্ষণ কলিতে লাগি-লেন। হে ভারত! সেই ফুডী মহাত্মা ছুই পুরুষকে বিচিত্র যুক্ত করিতে দেখিরা সর্বর প্রাণীর বিস্ময় ক্ষিল। ছংশাসন মহারথ নকুলকে আক্রমণ করিয়া यर्चए जी नानिक मन वान बाद्रा विक क्रिटनन। माजीशूक नकून रामा शूर्सक माणिত वाग मकन দারা: তাঁহার শরের সহিত শরাসন ও ধ্রু ছেদন করিয়া কেলিলেন, অনন্তর পঞ্চ বিংশতি কুত্রক भन्न निरक्ष क्रिस्तन्। शदत प्रक्षि क्रःमानन त्नरे महा तर्ग नुकूरत्र त्रस्य अप नकत ६ ४व निशा-**ভিভ क्रिलन। कुर्क्श सह। द्रश्य वस्त्रान सहावन** वान् नरदरदात्र अञ्चल भावन शृद्धक भन्न वर्षण बाजा তাঁহাকে বিদ্ধ করিতে আমিলেন ৷ তদনত্তর বীর ক্ষদেব ক্ষুণ বুল্কে অভি তীক্ষ্ণ পর স্থার। প্রকৃত্বের नामभिएक निशासिक अतिएतन। काशांत्रा केन्द्रारे বুল-চুর্মান, ক্রতরাই পরস্থার পরস্থারকে আক্রমণ पूर्वक अग्रजनक्ष्य कार्यक्षिक क्षेत्र एक जन्म तपुर पाता जानिक रविध्यक्षात्रीयका । प्रवर ताना वृत्तिकेत्र वाकामानामानात थाकि जानामा स्वीत्रताना। प्रवास केंग्सिक समय दर्शामां करें केंग्सिक श्राम विश्वेष

হিন্ন ধন্তক পরিকাশ করিবা বেগ-নহন-শীল বুচ অপর ধনুক এছৰ করিলেন। অনন্তর সাভিপার क्ष रहेन्रा महत्रभक्ष भद्र ममूर बाह्रा महत्रसहरू আছম করিয়া কেলিলেন এবং 'ডিষ্ঠ ছিষ্ঠ বলিতে লাগিলেন। পরে ধ্রুত্বার জোণের অভিমুখে আ-পতিত হইলেন। মহারথ জোণ অতি কুদ্ধ হইয়া এক বাণ ছারা পাঞ্চালরাল-পুঞ্ এইছালের মারণ-সাধন দৃঢ় ধনুক কর্তন করিয়া কেলিছেন, এবং কাল-দভোপন মহাযোর অপর এক বাণ টাহার প্রতি নিক্ষেপ করিলেন ; সেই বাণ ধৃউছালের শরীরে নি-मध रुरेल। जन्म-भूज जना भनामन लहेश हर्जुमन বাণ দারা ক্রোণকে প্রতিবিদ্ধ করিলেন। তাঁহারা তুই জন পরস্পার জাতকোধ হইয়া ভুমুল সংগ্রাম করিতে লাগিলেন। বেগশীল বিরাট-পুত্র শব্দ বেগ-वान् लामस्ख-नन्तनरक चाकम् कतिरलन धवः 'তিষ্ঠ ভিষ্ঠ' বলিতে লাগিলেন। সেই বীর বাণ দারা তাঁহার দক্ষিণ ভুজ ভেদ করিলেন। অনন্তর সোম-দত্ত-পুত্র, শব্দের জক্ত,দেশ আহত ক্রিলেন। হে নরনাথ! সেই দর্শলীল উভয় বীরের যুদ্ধ সম্বরই प्ति मानत्वत्र नाात्र अञ्चलत क्रेन्स अञ्चल । अप्य-য়াস্থা মহারথ ধৃউকেতু কুল হইয়া কুল-কপ বাহনী-কের প্রতি অভিক্রত হইলেন। তৎপরে বাহ্মীক, অমর্বণ ধৃউকেভূকে বছ শর ছারা মোহিত করি-लन, अनुस्त निश्रनाम क्रिता छेठिएक। क्रिताक ধৃষ্টকেভু ক্ষতিকোধ-পরবশ হইয়া মন্ত হন্তীর প্রতি मक रखीत नाम चाक्रमश क्रक खुदा श्रूबंक नद-नचा नत बादा काक्षीकरक विक्र क्रांतरमन। डाहाता **উज्ञात कृष रहेना शुन्धश्र्य उपर्यंत श्रम्भन करा**ठ पछि कृषः परेत्रा सक्य १०५५ बास्त्र नात्र शतत्रात भूतिक श्रुष क्षित्रक वाक्षित्रमा कृतकर्ष। पार्कित्रक कृताचा ताचन न्यान्यतः रेट्यत स्ता-करता वाष्ट्रियाकाराका स्वाक्षाक्षाक्षाक्षाक्षा विश्वता त नश्कुक रहेता मरावन जनवृत्ता वास्ति मना श्रीव

বাৰ বারা কত বিক্ষম করিব। পলবুনত সহাৰত **छीमानन-नम्बद्धः वक् अकात्र नम्छण्यः नम् वा**ना কড বিক্তা করিল। বে একার দেবাস্থরের যুক্ত मर्वाह्म हेळ ७ वनास्त्र मीखि পाहेत्राहित्नन, तहे প্রকার ভাহারা উভরে সংগ্রাম ক্ষেত্রে শর বারা ক্ষত বিক্ষত হইয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল। হে রাজন্! বলশালী শিষ্তী দ্যোগ-পুত্র অশ্বধামার প্রতি সমর নিমিত্ত অভিক্রত হইলেন। তদনস্তর অৰ্থামা কুৰু হইয়া যুদ্ধোদ্যত শিখণ্ডীকে স্থতীক্ষ নারাচ খার। অতি বিশ্ব করিয়া বিকম্পিত করি-লেন। পরে শিখণ্ডীও স্থতীক্ষ্ম শাণিত স্থপীত, (উত্তম ৰূপে পানান) শায়ক ছাব্লা দ্ৰোণ-পুত্ৰকে প্রহার করিলেন। তথন তাঁহারা পরস্পর বছ বিধ শর সমূহ দারা হনন করিতে লাগিলেন। বাহিনী-পতি বিরাট সম্বর হইয়া শৌর্যা-সম্পন্ন ভগদভের व्यक्ति भाविक रहेरलन ; পরে তাঁহাদিগের উভয়ের বুৰ প্রবৃত্ত হইল। হে ভারত! মেঘ যেমন পর্বতে বর্ষণ করে, তাহার ন্যায়, বিরাট সংক্রুদ্ধ হইয়া শর বর্ষণ দারা ভর্মদত্তকে আচ্ছন করিলেন। ভগদত্তও स्य कर्ड्क छेनिछ स्र्या जाकानत्त्र नाम ताका ৰিব্লাটকে সত্ত্ব সমাচ্ছাদিত করিলেন। শার্থত ক্বপ কৈকেয়াধিপতি বৃহৎক্ষদ্রের প্রতি গমন করি-লেন, এবং শর বর্ষণ ছারা ভাঁহাকে সমার্ভ করি-লেন। কৈকেররাজও অতি কুদ্ধ হইয়া শর র্থি দারা গোড়ম সন্তানকে পরিপুরিত করিলেন। হে ভারত! তদনন্তর ভাঁহার৷ পরস্পার পরস্পারের অখ ও ৰমুক ছেদন করিয়া উভরে বিরধ হইয়া ক্রোধা-কুলিত চিত্তে খড়গ যুদ্ধ করিতে মিলিত হইলেন। ভাঁহানিপ্ৰের উভয়ের ঘোর ৰপ ছুরাসদ সংগ্রাম रहेट्ड मानिन। ब्राह्मा क्रमा क्राथ क्रा प्राथत হর্মা নিজুপতি ক্উব্লু লয়মধকে আক্রমণ করি-लन। ७९ शाद निष्ठां किन नांग बोहा क्रमस्टक তাড়িত করিলেন; জন্মান্ত তাঁহাকে প্রতিপ্রহার বরিতে আরম্ভ করিবেন। ওক ও মঙ্গল এত্রের

ন্যার তাঁহাবিনের উভরের স্থারণ বোরভা বুল ररेटक शाक्ति ; छारा प्राचित्रा कर्नकविद्यात वीतिक অমিতে বাসিল। আগনকার পুত্র বিরুপ বেগলীক भन्न बाजा बरावन क्लंटनाटबज्र व्यक्ति धाविक हरे-लिन; जनस्त्र छैदिनित्मन यूक् जानुस स्टेन। विकर्न স্তুত্যোমকে বাণ বিদ্ধ করিয়া কম্পিত করিতে পারিলেন না এবং স্থৃতসোমও বিকর্ণকে বিচলিত করিতে সমর্থ হইলেন না, তাহা অদ্ভুতের ন্যার হইরা উঠিল। পরাক্রমশীল মহারধ চেকিভান সমুৎস্থক হইয়া পাণ্ডবদিগের নিষিত্তে স্থশর্মার প্রতি অভি-ক্রত হইলেন। স্থশর্মাও মহারথ চেকিতানকে মহৎ শর বর্ষণ করিয়া নিবাব্লিত করিতে লাগিলেন। চেকি-তান সেই মহাসংগ্রামে ক্রোধ-সত্তর হইয়া পর্বতের উপর মেঘ মগুলীর ন্যায় স্থশর্মার উপর শর বর্ষণ করিতে কাগিলেন। পরাক্রমী শকুনি পরাক্রান্ত প্রতিবিন্ধোর প্রতি, মন্ত হস্তীর উপর সিংহের নাার, षांक्रिक रहेराना। य बार्श हेला मसू-मञ्जानरक करा বিক্ষত করিয়াছিলেন, তজপ যুধিন্তির-নন্দন প্রতি-বিন্ধা সাতিশর ক্রোধ-পরতন্ত্র হইয়া শাণিত বছ শর দারা স্বল-পুত্রকে ক্ষত বিক্ষত করিলেন। পরা-ক্রমশীল শকুনিও সংগ্রামে মহাপ্রাক্ত পরাক্রান্ত প্ৰতিবিদ্যাকে সন্নত-পৰ্ব্ব বহু বাণ ৰাবা ক্ষত বিক্ষত করিতে লাগিলেন। শ্রুতকর্মা কাৰোক দেশীর মহা-রথ মহাবল পরাক্রান্ত স্থদক্ষিণের প্রতি ধাবিত **इरे**रजन। ऋपकिश महरएव-नक्न महात्रथ आप्छ-কর্মাকে বাণ বিদ্ধ করিতে লাগিলেন, কিন্তু ইন্দ্র যে প্রকার মৈনাক পর্বতকে কম্পিত করিতে পারেন নাই, তদ্ৰপ তাঁহাকে কল্পিত করিছে পারিলেন না। পরে ক্রতকর্মা কুক্ক হইরা কাহোক দেনীর महात्रथं स्पाक्तिगरक वर्ष मञ्जू बाजा गर्वा क्षकादत करू বিক্ষত করত বেন মোছিত করিলেন। ক্রমন্তর লৰ্জ্-পুত্ৰ শক্তাপন ইয়াৰাৰ কংকুৰ ও নৱস্থ হইয়া বছৰাৰ অৰ্থণ ক্ৰতাৰুক ক্ৰতি অভ্যুদ্ধত হই-त्मन । पर्याप्त-श्रुक करातम् वनवाक् देत्राचान् अन्छा-

ह्र प्राप्टेन प्रकातस्थातः क्षित्रः निरम्पत्रं कतित्र। केंद्रियन । देवरमात्रा केंद्रांत तारे कार्या (मधित्रा প্রসংখ্যা করিব। প্রতাহুও অতি কোধাণর হইরা ইয়াবানের ঘোটক সকল প্রবল গদা দারা নিহত করিবেন, পরে ভাঁহাদিগের উভরের সংগ্রাম হইতে नाबिन। व्यविष्ठ (सभीत्र विष्म ७ व्यञ्जविष्म नरेनना সপুত্র মহারথ বীর কুবিডোজের সহিত যুজে সংসক্ত হইবেন। ভাঁছাদিগের উভয়ের আশ্র্যা ছোর পরাক্রম দেখিতে লাগিলাম। তাঁহারা মহতী সেনার সহিত খির হইয়া যুক্ক করিতে লাগিলেন। অন্ত্রিক গদা ছারা কুন্তিভোকের প্রতি প্রহার क्तिलन, शत्रह कृहिए। क नष्रपुर भत्र मञ्र দারা ভাঁহাকে সমাকীর্ণ করিতে থাকিলেন। কুন্তি-ভোজ-স্থৃত শায়ক সমুহ দারা বিন্দকে বেধ করিতে লাগিলেন। বিন্দুও তাঁহাকে প্রতিবিন্ধ, করিতে আরম্ভ করিলেন। তাঁহার দিগের উভরের যুদ্ধ যেন অদ্ধুতের ন্যায় হইতে লাগিল। কৈকেয় রাজ পঞ্চ ভ্রাভা সমৈন্যে সৈন্য সহ পঞ্চ গান্ধার রাজের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। আপনকার পুদ্র বীরবাছ, রখিশ্রেষ্ঠ বিরাট-পুত্র উত্তরের সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন এবং তাঁহার প্রতি শাণিত শর সমূহ ক্ষেপণ ক্রিলেন। উত্তরও সেই বীরকে স্থশাণিত বাণ-নিচয় দারা প্রহার করিতে ধাকিলেন। চেদিরাজ, উলূ-কের প্রতি অভিক্রত হইলেন এবং শর বর্ষণ দ্বারা উলুককে প্রহার করিতে লাগিলেন। উলুকও ঠাঁ-হার প্রতি লোমবাহী শাণিত বাণ সকল নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। তাঁহার। উভরেই অপরাজিত ও ক্রোধাপর হইয়া উভয়কেই পরস্পার ক্ষত বিক্ষত করিজে লাগিলেন; তাঁহাদিগের ভরত্বর যুদ্ধ হইতে नाशिन । 😘 🖰 🐇

दः त्राजन् ! जाननकात्र । जारातिरात शकीत त्रवी, रखादतारी, जारादारी जाराजितरगत धरे धर्मादा महस्य महत्य महत्त प्रमुख रहेटच जातिन। दिनिद्या महस्य महत्त्र भूम प्रमुख स्ट्रेंट जातिन। নাম হইরাছিল। পরে উপজের নার বহুরা উঠিল, কিছুই আর বোধনার রছিলনা। গল গলের নছিত, রখী রখির সহিত, অখাবার অখাবারের সহিত পদাতি পদাতির সহিত সমবেত হইরা যুদ্ধ করিছে লাগিল। তৎ পরে পরস্পর মিলিত হইরা খুর-গণের ফুর্ম্বর্ধ ব্যাকুল যুদ্ধ হইরা উঠিল। দেবর্ধি, সিদ্ধ ও চারণ গণ তথার সমাগত হইরা পৃথিবী মধ্যে দেবাস্থর সংখ্যাম-সম সেই ঘোর সংখ্যাম দর্শন করিতে লাগিলেন। তদনস্তর পুরুষ সমূহ, অশ্ব সমূহ, সহত্র সহত্র রখ ও গল বিপরীত ক্রমে যুদ্ধ করিতে লাগিল। রখী, হস্ত্যারোহী, সাদী ও পদাতি সকলকে ছানে স্থানে পুনংপুন যুদ্ধ করিতে দেখা গেল

চতুশ্চত্ত্বারিংশক্তম অধ্যার সমাপ্ত॥ ৪৪॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! সহজ্ঞ সহজ্ঞ পদাতি-দিনের যেথানে সেথানে মর্য্যাদাতিক্রম পূর্বাক প্রকৃষ্ট ৰূপে যে যুদ্ধ হইয়াছিল, তাহা আপনার নিকট বলিভেছি। কৌরব ও পাগুৰ পক্ষ সকলে যেন ভূতাবিউ হইয়া সংগ্রাম করিছে লাগিলেন। তৎকালে পুত্র পিতাকে, পিতা ঔরস পুত্রকে, জ্রান্তা ভ্রাতাকে, ভাগিনেয় মাতুলকে, মাতুল ভাগিনেয়কে ও সধা সথাকে জানিতে পারিলেননা। কোন কোন নরসিংহেরা রথ সমূহের সহিত রথ সৈনাের উপর আপতিত হইলেন। রধের যুগ কাঠ সকলের দারা त्रथ-यूग नकल, त्रथ-ए७ नकल्लत्र बाता त्रथ-ए७ नकल এবং রথ-কূবর সকল ভারা রথ-কূবর সকল ভগ্ন হইতে লাগিল। কোন কোন যোগগণ পরস্পর জি-ঘাংসু হইয়া মিলিভ বছ যোধগণের সহিত মিলিভ হইল। কোন কোন রখী গণ বছ রখের সহিত মিলিত হইয়া আর চলিতে সমর্থ হইল না। গলিত-मन त्र्र त्र्र भक्त मरन त्रमाकात भक्त मकरमञ् সহিত মিলিত ও পরস্পর কুৰ হইয়া দ্যাঘাতে বছধা কড বিকড করিছে লাগিল। হস্তী সকল তোষর ও পতাকা বুক্ত বেশনীল মহাবল বড় বড়

ভাই নকলের অভিমুখে পিরা তাহাদিনের দ্রালাতে অভিহত ও অভি বাখিত হইরা চিৎকার শক্ত করিতে লাগিল। শিক্ষা দারা অভিনীত অপ্রভিন্ন নদ গক্ত সকল ভোর ও অকুশে আহত হইরাও নিবারিত না হইরা গলিত-মদ প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড পক্ষা সকলের সকলেও গলিত-মদ মহাগক্ত সকলের সহিত সংযুক্ত হইরা ক্রোঞ্চ পক্ষার ন্যায় শক্ত করিতে করিতে ছালে হানে ধাবমান হইল। এবং সমাক্-শিক্ষিত প্রভিন্ন-করটামুখ প্রকাণ্ড-কার গলগণ ঋটি, ভোমর ও নারাচ দারা নির্বিদ্ধ হইতে লাগিল; তাহারা মর্মা হানে নিহত হইরা চিৎকার করিরা প্রাণ ভাগে পূর্বক নিপতিত হইতে লাগিল, এবং কোন কোন মাতক্ত পণ ভরানক রব করিতে করিতে দিগ্ দিগতরে ধাবিত হইতে থাকিল।

🗸 মহারাজ! দেখিলাম, গজগণের পাদ রক্ষক বি-भान-वका भूत्रव मकन भवन्भव मश्कूष ७ कियांश्य हरेया अखि, शब्दूक, विमन পরস্থধ, भरा, मूयन, जिन्सि-পাল, ভোমর, লৌহ্মর পরিঘ ও শাণিত বিমল ব্দ্ধিলারণ পূর্বক প্রহার করত ইতন্তত ধাবন করিতে লাগিল। পরস্পরের উপর ধাবিত পর-শার খুরগণের খড়্গ সকল মমুব্য রক্তে সংসিক্ত रूरेता मीखि भारेटा नाभिन। बीत्रभटनत वाह बाता चर्बाकक्ष, কম্পিত ও পর মর্বো পতনোমুখ অসি সকলের তুমুল শব্দ উৎপন্ন হইতে লাগিল। সম-ताक्रात कात्र कात्र भना ७ पूर्वात्र जावारक ऋध, পরতর খড়গে ছিন্ন, গলগণ কর্তৃক মর্দ্ধিত ও তাহা-দিলের দক্তাযাতে অবভিন্ন মনুব্য সমূহের পরস্পর कक्दनेत्र महिला नका स्वन नातकी जीदवह बादकात जात अप बहुएक बाकिन। व्यवहरता ही शन इश्टनत आहि कांसत कृषिक सराद्यभनीन अध्यक्ष দারা পরক্ষরের প্রতি ক্ষতিক্রত হইন। তাহাদিসের कर्क विवृक्त वर्ग कृतिक चालक जीक विसन नर्ग সদৃশ মহাপ্রাণ শক্ষপাড়িত হইতে লাগিল। কতক

শুরি বীর স্থারোহী শতি রেগ্দীল লখ বারা ক্রফ व्यक्तान शूर्वक भगन कतिया गर्९ वर्ष स्ट्रेट्ड क्षक श्री त्रित मछक नरेट नामिन। कान कान রথী বছল অস্বানোহীদিগকে বাণ গোচরে সমাগত পাইয়া সমত পর্ক ভলাত্র সকলের দারা নিহত করিতে লাগিল। কনক ভূষণালছ্ত নব মেল সদৃশ কোন কোন মন্ত গৰুগণ অশ্বদিগকে স্বীয় প্ৰদত্তলে निटक्रिश शूर्वक मर्फन क्वछ अश्रत माहिशन कर्ड्क প্রাসাত্তে প্রম্পিত ও পর্ম বাধিত হইয়া নিনাদ করিতে লাগিল। কোন কোন প্রকাণ্ডকায় হস্তী সেই সন্ধুল ভীষণ রণ সময়ে আরোহীর সহিত অশ্বদিগকৈ বল দারা উন্মধিত করিয়া নিক্ষেপ করিতে থাকিল। কোন কোন দম্ভীগণ দম্ভের জঞ্জ-ভাগ দ্বারা আরোহীর সহিত অশ্বদিগকে উৎক্ষে-পণ করিয়া ধজ সংযুক্ত রথ সমূহ মর্দন করিতে করিতে ভ্রমণ করিতে লাগিল। কোন কোন মহা প্রকাও পুরুষ-হত্তীগণ পুরুষত্ব ও গলিত মদ প্রযুক্ত শুণ্ড ওপদ দ্বারা আরোহীর সহিত অশ্বসকল নিহত করিতে প্রবৃত্ত হইল। বারণগণের ললাট, পাশ্ব ও অন্যান্য অঙ্কে সর্পোপম বিমল তীক্ষ্ণ বাণ সকল নিপতিত হইতে থাকিল।

মহারাজ! ইতন্তত বীরগণের বাছ নিজিপ্ত মহোলা দল স্মাজিত তরানক শাক্তি সকল লোহ কবচ ভেদ করিয়া মনুব্য ও অথ শরীরে নিপতিত হইতে থাকিল। বোধগণ ব্যাঘ্র চর্মাবনক নির্মাল থড়গ সকল কোশ মুক্ত করিয়া শত্রুদিগকে হনন করিতে লাগিল। অনেকে আপনাকে ক্রোথ দারা দত্তে ওঠপুট দংশন পূর্বক ভর শ্রা হইরা সমুখে অভিধাবিত ও বাম পক্ষাবলমনে অভিগত প্রকর্মন করত থড়গ, চর্ম ও পরস্বধের সহিত্ত আর্থিতিত হইতে লাগিল। কোন কোন গল্পণ প্রক্ত ভারা আন্ধাণের সহিত রথ সকল আকর্ষণ শুর্মক জাক্তেপণ করিরা ক্রম্বকারী সক্তেনর শক্ষাব্রুদারে চতুত্তিকে প্রবাদ্ধ হুইতে খাকিল।

न्यराहाक। दर्गन त्मान मसूद्याता नक्-बाहा विधा-क्रिक, त्कान क्यान अमुखाक शत्रवर बाक्र गरहित, কৌন কোন মন্ত্ৰারা হতী কর্তৃক সর্দিত, কোন কোন মমুবোরা ভুরসমাণ কর্তৃক সুগ্ন, কেহ কেহ বা ক্লডক ৰাবা কৰিত হইরা স্ব বাহ্মবদিগকে আ-ব্যান করত ক্রন্সন করিতে লাগিল। তাহাদিগের মধ্যে অনেকে পুদ্রদিগকে, অনৈকে পিতাকে, অনে-क् खाठांतिगरक व्यानक मधानिगरक, व्यानक बांख्यास्थित्क, व्यानादक खांशियनम्भित्क, व्यानादक ব্দপরাপরকেও আহ্বান করিতে আরম্ভ করিল। वह अञ्चलात অञ्च विकीर्ग, खेक्टनम अभ, वाह हिन्न ও পার্থদেশ বিদারিত হওয়া প্রযুক্ত তাহাদিগকে ৰীবিডাভিলাবে ক্রন্দন করিতে দৃষ্ট হইল। কোন কোন অপ্সত্ত্ব মমুষোরা তৃষ্ণার্ভ ও ভূমিতে পতিত হ্ইয়া জল প্রার্থনা করিতে লাগিল। অনেকে রুধির সমূহে পরিক্লিম ও ক্লিশ্যমান হইয়া অতিশয় আত্ম নিন্দা ও আপনকার পুত্রদিগকেও সাভিশয় নিন্দা করিতে লাগিল। পরস্পর ক্ত-বৈর কোন কোন শৌর্যা-সম্পন্ন ক্ষজিয়েরা শস্ত্র পরিত্যাগ বা রোদন করিল না; প্রভাত সংস্কট হইয়া তজ্জন করিতে माजिम এবং मस बाता अर्थभू हे मश्मन भूर्यक ज्कु है। কুটিল বব্দুখারা পরস্পর নিরীক্ষণ করিতে লাগিল। অপর কঠোর চিত্ত মহাবল কোন কোন যোধগণ শর দ্বারা আর্ত্ত, ত্রণ পীড়িত ও ক্লিশ্যমান হইয়াও নীরব হইরা রহিল। কোন কোন শূর প্রকাওকার হত্তীগণ কর্তৃক বিরধ, সংক্রম ও নিপতিত হইয়া অন্যের রখ প্রার্থনা করিতে থাবিল। অনেকে পুষ্পিত কিংশুক বৃক্ষের নাায় শোভমান হইল। আলৈকে একনীক মধ্যে ভীৰণ রব করিতে থাকিল। নেই মহাবীর কর জনক ভীষণ সংগ্রামে পিতা পুরুকে, পুরু পিভাকে, জানিবের মাতৃলকে, মাতৃল क्राव्यात्रक्रकः नवा नवादम, बाक्य बाक्यरक निर्छ निवास क्षानिक अने बरल कुल शांखनीत रेनना कर शहर का विकास हर विकास है। एक प्रयोग

শ্বী দারণ মহা সংগ্রামে পাশুবারদের বৈনিক্ষাণ জীয় সমীপে কম্পিত হইতে লাগিল। যে স্বাপ্তন্য মা মেরু গিরি ধারা শোভমান হর, সেই রপ মহাবাহ তীয় তখন মহারধে সমৃত্যুক্ত রকত ময় পঞ্চারা-বিত তাল ধক ধারা শোভা পাইতে লাগিলেন। পঞ্চ চত্বারিংশ অধ্যার সমাপ্ত ৪ ৪৫ ৪

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত-কুলভূষণ ! সেই অতি **जन्नामक मिर्वार शृद्धारङ्ग रङ्ग जर्म भेड हरे** हा नत्र बीत्र कत्रकाती त्महे जीवन मरकारम कुर्जूब, ऋष-বর্মা, রূপ, শল্য ও বিবিংশতি, ইহারা ছুর্ঘ্যোখনের আদেশামুসারে ভীয়ের সমীপে থাকিয়া তাঁহাকে রকা করিতে লাগিলেন। মহারথী ভীম এই পঞ অতিরথ কর্তৃক রক্ষিত হইয়া পাওবদিপের সৈন্য মথিত করিতে থাকিলেন। ভীয়ের ভালধন চেদি, कानि, कबर ७ शाकान प्रभीत रेमना घर्ट्या वर्ड्या বিচলিত হইতে দৃষ্ট হইল। সেই বীর নতপর্ব মহা-বেগশীল ভল সমূহ ছারা যুগ ও ধজের সহিত রখ সকল ও যোধগণের মন্তক ছেদন করিতে লাগিলেন; তথন তিনি যেন রথবদ্ধে নৃত্য করিতে থাকিলেন্দ্র কতক গুলি নাগ ভীয় কর্জুক মর্ম্মে ব্যাথিত হইরা আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল। তাহা দেখিরা অভি-মন্ত্রা অতি ক্রোধান্থিত হইরা পিঙ্গলবর্ণ উল্লেম ভুরগ যুক্ত স্থবর্ণ-বিচিত্রিত কর্ণিকার খল-শোভিত রথে ভীয়ের রথ সমীপে প্রসাণ করিলেন, এবং ভীয় ও তাঁহার রক্ষক সেই পঞ্চ রথি প্রধানের প্রভি শর বর্ষণ করিলেন। সেই বীর ভীত্মের বল তীক্ষ্ম শর ষারা আহত করিয়া জীয় ও তাঁহার পঞ্চ রক্ষকের **শহিত যুক্ষারন্ত করিলেন**া কু**তবর্গাকে এক** বাণ ও শহ্যকে পঞ্চ বাণ প্রহার করিয়া প্রাপিতামহের প্রতি অপ্রতাপ শাণিত নম বাব নিকেশ করিলেন। শর্ডে चार्क चार्क्क पूर्वक निविध नमार धायुक विक বাৰ দারা স্থাপুৰের কা বিভূষিত বল পাছত করি-लगा जनवत नसंस्ति। त्रा नडगा वर्ष का

বারা তাঁহার সারবির মন্তক হেদন করিবেল। তথ পরে অগ্রভাগ শাণিত এক তর বারা রূপাচার্ত্তের বর্ণ ভূবিত ধরুক হেদন করিয়া কেলিলেন, এবং নেই সহারধ সাতিশার কুক হইয়া বেন নৃত্য করিতে করিতে তীক্ষ্ণ-মুখ শর সমূহ বারা তাঁহাদিগের সকল-কে হনন করিতে লাগিলেন। তাঁহার হন্ত লাঘব দে-বিয়া দেবতারাও সন্তুই হইলেন। তীয় প্রভৃতি সমন্ত রধী ধনঞ্জয়-পুক্রের লক্ষ্যবেধ-নৈপুণ্য হেতৃ তাঁহাকে সাক্ষাৎ ধনঞ্জয়ের ন্যার সন্তুবান্ বোধ করি-লেন। তাঁহার শরাসন তৎকালে লাঘব পথে অবন্থিত ও গাণ্ডীব সদৃশ শন্ধায়মান হইয়া অলাত চক্রের ন্যায় প্রভা ধারণ পূর্বক চতুর্দিকে ভ্রমণ করিতে লাগিল।

বীর শত্রুহন্তা যতন্ত্রত ভীয় সত্মর অভিমন্ত্র্যুর সন্মু-খহ হইয়া বেগ পূর্বক নব-সংখ্য বাণ দারা অভি-মন্ত্রুকে ভাত্তিত করিলেন এবং তিন ভল্ল দারা পরম তেজন্বী অভিমন্ত্র্যর ধর্জ ছেদন ও তিন বাণ দারা ভাঁহার সার্রাধকে আহত করিলেন। সেই ৰূপ ক্ত-বর্মা, রূপ ও শল্য অভিমন্মকে শর প্রহার করিরাও **শ্বৰূম্পিত মৈনাক পৰ্ব্বতে**র নাায় কম্পিত করিতে পারিলেন না। শৌর্যা-সম্পন্ন অর্জুন-নন্দন ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীর মহারথগণে পরিবৃত হইরাও তাঁহাদিণের 🕰 তি শর সমূহ বঁষণ করিতে ধাকিলেন। অনন্তর শর বৃত্তি ছারা তাঁহাদিগের মহাজ্র সকল নিবারিত করিয়া বলবৎ নিদাদ পূর্বক ভীয়ের প্রতি শর সমূহ বিস-र्जन क्रिएंड चाकित्वन। ए ताकन्। यथ कात्व তিনি সমরে যত্ন সহকারে শর সমূহ দারা ভীয়কে শীড়া দিতেছিলেন; ডৎ কালে তাঁহার বাছ ছয়ের সুমহৎ ৰূপ দৃষ্ট হইতে লাগিল। এবম্বিধ পরাক্রম-শাল সেই বীরের প্রতি ভীছও অনবরত শর কেপ করিতে লাগিলেন এবং তিনিও ভীয়া শরাসন চ্যুত সেই সকল বাণ ছেমন করিছে লাগিলেন। তৎ পরে অব্যৰ্থবাণ সেই বীর নর বাণ ধারা ভীলের ধল ছেদন क्रिया क्लिएनन ; किश् एक्शिया क्रम नकन हिर-

করে শব্দে সাধুবার করিরা উঠিবা রক্ত নিবিট নহাক্ষ-বিশিক বৰ্গ-বিভূবিত নেই ভালৱক বুককা-নন্দনের বাবে হিন্ন হইরা ভূতলে পতিত হইল। ভীমের তালৰক স্বভন্তা-পুজের বাণ বারা পভিত হইতে দেখিয়া ভরতভোগ ভীম ক্ট হইয়া স্ভল নন্দনের হর্ষোৎপাদন করত শব্দ করিয়া উঠিলেন। অনন্তর অমেরাক্সা মহাবল ভীন্ন সেই মহা রৌদ্র রণ স্থলে বহুল দিব্য মহাজ্রের প্রাত্মুর্তব করিলেন ; পরে নতপর্ব শত সহস্র শর অভিমন্ত্রার উপর নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। তদনন্তর পাগুব পক্ষীয় মহা-ধন্তুর্জর মহারধী সপুত্র বিরাট, ধৃউছ্যান্ন, ভীম, কেকর-রাজ পঞ্চ ভ্রাতা ও সাত্যকি এই দশ জন মহার্থী রথের সহিত সত্ত্র হইয়া অভিমন্ত্যুর রক্ষার্থে ধাবিত হইলেন। তাঁহাদিগের বেগে আপতিত হইবার সময়ে শান্তমু-পুত্ৰ ভীম ধৃউন্নায়কে তিন বাণ ও সাত্যকিকে নয় বাণ দারা প্রহার করিলেন এবং আকর্ণ সন্ধান পূর্বাক পরিত্যক্ত শাণিত পক্ষযুক্ত এক মাত্র ক্ষুরান্ত্র দ্বারা ভীমসেনের ধক ছেদন করিয়া क्लिलिन। ए नतुत्रख्य। जीयरत्रस्त वर्गयत्र सिःह ধক ভীম কর্তৃক মথিত হইরা রথ হইতে পতিত হইল। তথন ভীমসেন সেই রণ স্থলে ভীন্নকে তিন বাণ দারা বিদ্ধ করিয়া রূপাচার্যাকে এক, রুত-বর্মাকে আট বাণে বিদ্ধ করিলেন।

বিরাট-পুত্র উদ্ভর মদ্রাধিপতি রাজা শল্যের প্রতি
কুণ্ডলীক্ত-শুণ্ড এক হন্তী আরোহণে থাবিত হইলেন। বখন সেই হন্তিরাজ শল্যের রথে বেগে
আপতিত হইতে লাগিল, তখন শল্য ভাহার অন্তপম বেগ নিবারণ করিতে আরম্ভ করিলেন, পরস্ক
সেই নাগরাজ কুল হইরা শল্যের রখ যুগের উপর
আরোহণ করিরা পদ দারা ভাহার নাধ্বাহী হৃহৎ
চারি অখকে নিহত করিল। রাজা শল্য হজাশ
রথে অবস্থিত হইরা নর্প সমূল লোহরর এক লাজি
উত্তরকে বিনাশ করিবার নিক্তিত নিক্তেপ করিন
লেন। সেই নিক্তিত নিক্তেপ করিন
লেন। সেই নিক্তিত নিক্তেপ করিন

করিয়া শরীরে প্রবিক্ত হইল প্রবিদ্ধান হন্ত হইতে

শঙ্গ ও তোমর তাত হইলা গোল। তিনি বাতিশর মোহে সমাছল হইরা গলকল হইতে পতিত

হইলেন। তথন শলা খড়গ গ্রহণ পূর্বেক বিক্রম
সক্রালের রখ বর হইতে লক্ষ প্রদান করত সেই
গলরাজের রহৎ শুও ছেনন করিয়া কেলিলেন।
নেই হন্তীর পূর্বে শর সমূহ দারা মর্মা ভেদ হইয়াছিল, পরে ছিল শুও ইইয়া ভয়ানক আর্তনাদ
করিয়া পড়িলও মরিল। রাজা ম্যাধিপতি এতাদৃশ
ভীবণ মহৎ কার্যা করিয়া সত্বর হইয়া ক্রতবর্মার
উক্ষল রথে আরোহণ করিলেন।

তদনস্তর ভ্রাতা উত্তরকে হত ও শল্যকে ক্রতবর্মার সহিত অবস্থিত দেখিয়া বিরাটের অন্য পুত্র শব্ধ ক্রোধে ঘৃত ছত অগ্নির ন্যায় ছালিয়া উঠিলেন। সেই वनमानी रेज्यथसूः अनुम प्रदेश मद्राजन विकादन করিয়া মক্রাধিপতিকে যুদ্ধে হনন করিবার ইচ্ছায় অভিধাবিত হইলেন, চতুর্দিকে মহৎুরথ সমুহে পরি-বেটিত হইয়াও বাণ বর্ষণ করিতে করিতে শল্যের রথের সমীপে প্রয়াণ করিতে লাগিলেন। সেই মন্ত হস্তি-সদৃশ বিক্রমশীল শম্বকে আপতিত হইতে দেখিরা মৃত্যুর করাল দন্তের অন্তর্গত মদ্র রাজকে রক্ষা করিতে অভিলাষী হইয়া আপনকার পক্ষীয় मश्च तथी, मञ्चल ठजुर्कित পরিবেই क्रितलन। তৎ পরে মহাবাছ ভীয় মেঘ গর্জনের ন্যায় নিনাদ করিয়া তাল পরিমিত ধনুক গ্রাহণ-পূর্বেক শক্ষের প্রতি ধাবিত হইলেন। মহাধন্ত্র্ধর মহারল ভীয়কে উদ্যত দেখিয়া পাগুবী সেনা বাতবেগাহত নৌকার ন্যায় সংত্রস্ত হইল। এক্ষণে শশ্বকে ভীয়ের হস্ত श्रदेख बच्चा कड़ा कर्डवा बिना वर्ष्ट्रन, एता शूर्सक শব্দের অগ্রবর্তী হইলেন, তথন যুদ্ধ আরক হইল। তথ্য যুদ্ধারী বোধগণের মহান হাহাকার শব্দ হইতে কাৰিব, এক তেক জনা তেকে মিলিত হইল विका मक्टल्ड विकासाशम रहेता। ७ पिर्श भना शपा रू अस्ति व्हेटक नामित्रा भरवात्र तथ-वाकिङ চারি টি অশ্ব সংহার করিয়া কেলিলেন। অশ্ব হত

स्हेरन मच नष्ठ अष्त श्रह्भ श्रृक्षक श्रीह त्रव रहेरठ विक्रष्ठ रहेता व्यर्क्टनत त्रदथ चारताहत कतित्रा भाषि गांच कत्रिराम ।

পরে ভীয়ের রখ হইতে ক্রভগামী পভত্তি সকল শবরীক ও ভূমিতলে সর্বত বিস্তৃত হইরা উৎপতিত रहेट नांगिन। अरावक अधान जीवा तरहे मकन শর সমূহ ছারা পাঞ্চাল, মৎস্য, কেরল ও প্রভদ্রক গণকে নিপাতিত করিতে লাগিলেন। হে রাজন্! তিনি পাণ্ডৰ স্বাসাচীকে পরিত্যাগ করিয়া বছল শর বিকিরণ করিতে করিতে পাঞ্চালাধিপতি সেনা-র্ভ প্রের বান্ধব দ্রুপদের অভিমুখে ধাবমান হই-লেন। রাজা ক্রপদের সৈন্য সকলকে শিশিরাত্তে व्यक्षिमक्ष वत्नत्र नगत्र भत्रमक्ष मृक्षे रहेर्छ न। तिन। ভীম তৎ কালে ধুম-খুন্য পাৰক সদৃশ হইয়া অব-স্থিত রহিলেন। যে প্রকার মধ্যাহ্ল সময়ে তপস্ত তেজস্বান্ সূর্য্যকে সহু করা যায় না, ভক্রপ পাণ্ডব পক্ষীয় যোধগণ ভীয়কে নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ হইল না, ভয়ার্ভ হইয়া শীতার্দিত গো যুথের ন্যায় চতুর্দিকে নিরীক্ষণ করিয়া কাহাকেও আপনার দিগের পরিতাতা প্রাপ্ত হইল না ু সৈন্য সকল হত, বিমর্কিত, নিরুৎদাহ ও বিদ্রুত হইলে তাহা-দিপের মধ্যে মহান হাহাকার শব্দ উঠিল। শান্তস্থু-নন্দন অনবরত আশীবিষ ভুজক মদৃশ দীপ্তাঞ্জ ৰাণ্ সমূহ মোচন করিতে লাগিলেন। ডৎ কালে ভাঁছার ধমুক মণ্ডলাকার দৃষ্ট হইতে লাগিল। তিনি ৰত-ব্রত হইয়া শর দারা সমস্ত দিকৃ এক মাত্র পথ করত পাণ্ডব পক্ষীর রথিদিগকে বলিয়া বলিয়া নি-হত করিতে থাকিলেন; তাহাতে সৈন্য সকল মথিত ও ভগ্ন হইরা গেল। অনন্তর দিবাকর অন্তগত হইল, क्ष्रिके बाब मृष्टि भाग्य ब्रह्मि ना। छ९ कार्ल পাৰ্যমণ ভীমকে সেই মহাসংগ্ৰামে উঞ্জাৱৰ উদ্বাৰ্থ মাণ দেখিয়া সৈনাগণের অবহার করিলেন 🎉 🚕

> थ्यभा मिन यूक थ्यूक्त ७ वहेठजातिश्य व्यथात्र नवाश्व । ८७ ।

नश्चत करिरमा, दर छात्रछ। अध्य निवस्त्रत सूर् নৈনাবহার করিলে পর রাজা ধর্মাল বুমিটির जीत्बद्ध अञ्चाद ७ भन्नाकम अवर कृत्याभ्यतन हर्व দেখ্রিরা সাতিশর শোকান্বিত হইরা আপনার পুরা-ব্যুর চিন্তা করত আতৃগণ ও সমস্ত আত্মীর রাবগণের সহিত সত্তর বৃষ্ণিকুলতিলক ক্ষেত্র সমীপে গমন করিয়া কহিলেন, ক্ষণ ! দেখ ! ভীম যে ৰূপ ভীষণ-পরাক্রম ও মহাধমুর্ধর ! উনি গ্রীয়কালে অনল-কর্তৃক শুষ্ক তৃণ দহনের ন্যায় শরদারা দৈন্য দগ্ধ করিতেছেন; স্তযুক্ত অগ্নির নাায় মদীর সৈনা लहुन क्रिट्रिट्र । जे महावन প्रताकान्त शूक्तवरक त्रभञ्चल कि व्यकादा नित्रीक्षण कति ? महावनभानी ঐ পুরুষব্যাত্রকে কার্মুক-হন্ত দেখিয়া শরাহত আমা-पिरान्त रेमना मकन भनामिक श्हेरक नामिन। कूक-यम, बक्करख हेन्स, भामभाती बक्सन ও भागरख कूरवत हेर्हें। रिभटक्ख त्रत्। अब क्रा यात्र, किस्त महावल মহাতেজা জীয়কে কোন প্রকারেই পরাজিত করি-তে পারা যাইবে না। এই ৰূপ অবস্থায় আমি ভীয় স্বৰূপ অসাধ জলে ময় হইয়া আঞ্ভ হইয়াছি, স্থতরাং আপনার বৃদ্ধি দৌর্বল্য প্রযুক্ত সংগ্রামে ভীয়কে প্রাপ্ত হইয়া আমার বনেই জীবিত ধাকা শ্রের, অতএব আমি বনে বাই। এই রাজগণকে জীবৰপ যমের হতে দেওয়া উচিত নহে; মহাস্ত্রবিৎ ভীন্ন আমার সেনা ক্ষর অবশ্য করিবেন। যে প্রকার প্তক্ষণ আত্ম বিনাশের নিমিত্তই ধাবিত হইরা প্রস্থানত বহ্লিতে পড়িতে বায়, আমার সৈনিক জনে-র। দেই ৰূপই জীলের সমীপে গমন করিভেছে। क्षा भागि ब्राटमात्र निमिट्ड शत्राक्रमी स्ट्रा क्रव প্রাপ্ত হুইলান, স্থানার বীর জাতারাও জাতৃ সৌহার্দ श्रयुक जामात्र निविद्य तामा ४ स्थ रहेट जरे रहे-त्रा संदर्शीप्रिक एक्स्ट्रच आक्रके रहेतारहन। अहेक्ट्रव कीरनरे कुछल, कीरिक शाकारे वह करिया मानि-ভেছি। **योगात्र ५**रे **यदानिक कीनान कुक**त छशना।-**চরণ कतित, अरे विवासिनाटक त्राटा विनाम कतारेत मा**।

बरातन जीव मामाद वर तरख व्यथन अराजक बनी দিগকে দিবাজে ছারা অনবর্ত নিহত ক্রিভেছেন। হে মাধব! একণে আমার কি করিলে ভাল হয়, তাহা তুমিই অবিলয়ে বল। স্বাসাচীকে তো রুণে মধ্যত্বের ন্যার দেখিতেছি; এই এক মহাবাছ জীমই ক্ষত্রধর্ম স্মরণ করত কেবল বাছ বলে শুক্র সহ যথা শক্তি যুদ্ধ করিতেছেন। এই মহামনা, স্বীর উৎসাহামুসারে -বীর-ঘাতিনী গদা দ্বারা রখী, সাদী, গন্ধারোহী ও পদাতিদিগের প্রতি অতি ছুম্কর ক্রার্য্য করিতেছেন। কিন্তু ইনি একাকী কোন ক্রমেই পর সৈন্য ক্ষয় করিতে সমর্থ হইবেন না এবং আর্ক্সৰ ভাবে যুদ্ধ করিলে শত বংসরেও শত্ত সৈন্য ক্ষয় করিতে পারা যাইবে না। তোমার সখাঐ অর্জুনই এক আমাদিগের মধ্যে অন্তর্যুদ্ধে রুতী, উনি আমা-দিগকে মহাত্মা ভীম ও জোণ কর্তৃক দহুমান দেখি-য়াও উপেকা করিতেছেন। ঐ ছুই মহাত্মারই দি-ব্যান্ত্র সকল প্রযুক্ত হইয়া পুনঃপুন ক্ষক্রিয় সকলকে দগ্ধ করিবে। রুষণ ভীমই কুদ্ধ ও সর্বব পার্থিবের সহিত একত্রিত হইরা স্বীর পরাক্রমানুসারে নিশ্চরই আমাদিগকৈ ক্ষয় করিবেন। হে মহাভাগ! হে যোগেশ্ব: যে প্রকার জলদপটলী দাবাগ্নি শমতা করে, সেই প্রকার সংগ্রামে ভীন্নকে শমতা করে, ্এমত কোন মহারথী দেখ। হে গোবিন্দ! তাহা হইলে বান্ধব গণের সহিত পাওবেরা তোমার व्यमारि रूज-मक रूरेया च त्राका माज क्रव सूची হইতে পারিবে। মহামনা যুধিন্তির এই ৰূপ বলিয়া শোকাহত-চেওঁন ও অন্তৰ্মনা হইয়া দীৰ্ঘ কাল চিন্তা-মথ হইয়া রহিলেন।

কৃষ্ণ যুথিতিরকে ছংখারত-চিত্ত ও শোকার্ড দেখি-য়া তাঁহাকে সরোধন পূর্বক সমস্ত পাওব পক্ষীর দিগকে আনন্দিত করত বলিলেন, হে ভরত-প্রবর ! ভূমি- শোক করিও না, শোক করা ভোমার উচিত নর,এতোমার এই সমুদ্ধার আতারা শুর ও লোক মধ্যে ধনুদ্ধান; আনি, মহারকী ব্যাভাকি বিরাট, দ্রুপদ ও ইউছার তোমার প্রিরকারী। হে রাজসন্তম! স্থ সৈনাগণ সহিত এই সমস্ত রাজারা
তোমার প্রসাদ প্রতীক্ষা করিতেছেন, বিশেষত
ইহারা তোমারই ভক্ত। হে মহাবাহো! এই পৃষতনন্দন মহারথ ধৃউছার সর্বাদাই তোমার হিতৈবী ও
প্রের কার্য্য-রত হইয়া সেনাপতির কার্য্যে প্রবৃত্ত
হইয়াছেন; ভীয়ের মৃত্যু স্বরূপ শিখণ্ডীও তোমার
হিতৈবী ও প্রিয় কার্যারত।

তেমনন্তর রাজা যুধিন্তির, কৃষ্ণের এই কথা শুনিয়া
সেই সভাতেই কৃষ্ণের সাক্ষাতে মহারথ ধৃউচ্যুদ্ধকে
বলিলেন, ধৃউচ্যুদ্ধ! আমি যাহা তোমাকে বলি,
তাহা তুমি শুবণ কর, আমার বাক্য অতিক্রম না
হয়। বাস্তদেবের সম্মতিক্রমে তুমি আমার সেনাপতি পদ গ্রহণ করিয়াছ। যে প্রকার পূর্ব্ব কালে
কার্ত্তিকেয় সর্ব্বদাই দেবগণের সেনাপতি ছিলেন,
হে পুরুষ্বর্ষভ! সেই প্রকার তুমিও পাগুবদিগের
সেনাপতি হইয়াছ। অতএব হে পুরুষ্বসিংহ! তুমি
বিক্রম শুকাশ করিয়া কৌরবদিগকে বিনাশ কর।
ভীমসেন, কৃষ্ণ, নকুল, সহদেব, দ্রুপদের দায়াদগণ
ও অন্যান্য প্রধান প্রধান যে সকল মহীপালেরা
যুদ্ধার্থে বদ্ধসন্ধাহ হইয়াছেন, ইহারা সকলে এবং
আমি তোমার পশ্চাদ্বর্ভী হইব

পরে ধৃউত্যুত্ম তত্রত্ব সকলকে হর্ষিত করত কহিতে লাগিলেন, হে পার্থ! ভগবান শস্তু পূর্বেই আমাকে দ্রোণ বিনাশের নিমিছে স্থাটি করিয়াছেন। আজি আমি বন্ধসন্নাহ হইয়া রণে দর্গিত ভীয়, দ্রোণ, রুপ, শল্য ও জয়দ্রথ, সকলের সহিতই প্রতিযুদ্ধ করিব। শত্রুতাপন পার্থিবেন্দ্র ধৃউত্যুত্ম উদ্যম সহকারে এই প্রকার ব্যক্ত করিলে মহাধমুর্জর যুদ্ধারে পাণ্ডব পক্ষীয়েরা হর্ষ, দর্প ও উৎসাহ সহকারে চিৎকার করিয়া উঠিলেন। পরে পার্থ যুধিভারে চিৎকার করিয়া উঠিলেন। পরে পার্থ যুধিভারে, কেনাপতি ধৃউত্যুদ্ধকে পুনর্বার বলিলেন, ধৃইভারে! প্রেক্ষারণ নামে সর্বা শ্রুত্মকন একটি ব্যুহ
ভারে! বের্মিকারণ নামে সর্বা শ্রুত্মকাতি ইন্দ্রকে

কহিয়াছিলেন; বিপক্ষ দৈন্য বিনাশক নেই ক্রেট্ঞারুণ বৃহহ ধরাবিধানে প্রতিবৃহ্ছিত কর, কৌরব ও
অন্যান্য রাজগণ যাহা পুর্বেকখন দেখেন নাই,
তাহা দেখুন।

य थकात रावतांक विकृत्क वरणन, रमहेबल, धर्म-রাজ নরদেব ধৃষ্টছামকে বলিলে, ধৃষ্টছাম প্রভাষ কালে ধনঞ্জয়কে দর্ব্ব সৈন্যের অগ্রবর্ত্তী করিলেন। ধনঞ্জয়ের রথধজ, যাহা দেবরাজের শাসনামুসারে বিশ্বকর্মা নির্মাণ করিয়াছিলেন, সেই কেভু সূর্যা-পথগামী হইয়া অদ্ভুত মনোরম হইল। ইক্রায়ুধ-সবৰ্ণ পতাকা সকলে অলঙ্ক্ত সেই কেতু, আকাশ-গত গন্ধৰ্ক নগরের ন্যায় রথ-চর্য্যাতে আকাশ মধ্যে यन नृजामान इरेश मीखि পार्रे वाशिन। सिर् রত্ন যুক্ত কেতু, গাণ্ডীবধন্বা অর্জুন দ্বারা ও গাণ্ডীব-ধন্বা অর্চ্জুন সেই রত্ন ভূষিত কেতু দ্বারা পরস্পর, যেন স্থ্য সন্নিহিত ব্রহ্মার ন্যায়, পরমশোভিত ইইল। মহতী সেনাতে সমারত পাঞ্চালরাজ সেই ক্রৌঞ্চা-ৰুণ বৃাহের মন্তক হইলেন। কুন্তিভোজ ও চেদিপতি এই তুই রাজা উহার চকু হইলেন। দাশেরকগণের সহিত প্রয়াগ, দশার্ণ, অমূপ ও কিরাত দেশীয় রাজ গণ উহার গ্রীবা হইলেন। পটচ্চর, হুগু, কৌরবক ও নিষাদ প্রদেশীয় গণের সহিত রাজা যুবিটির উহার পৃষ্ঠ হইলেন। ভীমসেন, ধৃউছ্যুন্ন, দৌপদীর পঞ্চ পুত্র, মহারথ অভিমন্ধ্য ও সাত্যকি, ইইারা উহার উভয় পক্ষের মধ্যবর্ত্তী হইজেন। পিশাচ, দরদ, পৌঞ্জ, কুণ্ডীর্ষ, মারুড, ধেমুক, তঙ্গণ, প্রবঙ্গণ, বাছ্মীক, তিভির, চোল ও পাণ্ডা, এই দকল দেশীর যোদ্ধা शन रिका शक, जात जिल्ला, शक्कुछ, मनम, मानकाति, नवत्र, कुरुन, व**्म**ेश नांकून मिनीय साध গণের সহিত নকুল পুলছদেব বাম পক্ষ আত্ররকরি-লেন। পক্ষাগে অযুত, শিরোভাগে নিযুত, পুর-ভাগে এক অৰ্কুদ বিংশতি নহস্ত এবং গ্ৰীৰাজ্বলৈ এক নিৰুত সপ্ততি সহজ্ঞ রুখ থাকিল। পক্ষ কোটি, व्यथक ও शकारक व्यक्त शक्रांक नाम बाजुनंतन

পরিরত হইরা রহিল। কেকরগণের সহিত বিরাটি এবং তিন অর্ত রবের সহিত কালিরাক ও লৈবা উহার ক্ষন দেশ রক্ষা করিতে লাগিলেন। ভারত-সক্ষম পাশুরগণ এই রূপ সহাব্যুহ ব্যুহিত করিরা বক্ষসন্নাহ হইরা স্থর্যোদ্যের অপেক্ষার যুক্ষের নিমিত্তে অবস্থিত রহিলেন। তথন তাঁহাদিগের রথ ও হত্তীতে মহৎ খেত ছত্র সকল বিমল অরুণবর্ণ দৃষ্ট হইতে লাগিল।

🌝 সপ্তচত্ত্বারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত। ৪৭।

সঞ্জর কহিলেন, মহারাজ! অমিভভেজা পাণ্ডু-নন্দন যুধিষ্ঠির কর্ত্তৃক স্থরচিত সেই ক্রৌঞ্চ নামক মহাঘোর অভেদ্য মহা ব্যুহ দেখিয়া আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন আচার্য্য দ্রোণ, রূপ, শল্য, সৌমদন্তি, বিকর্ণ, অশ্বস্থামা, ছুংশাসনাদি সমস্ত ভ্রাভৃগণ ও যুদ্ধার্থ সমাগত অন্যান্য বছল প্রগণকে আহ্বান পূর্বক হর্বোৎপাদন করত তৎ কালোচিত এই বাক্য বলিলেন, ভোমরা সকলেই মহারথ, শাস্তার্থ-কো-বিদ এবং নানা শস্ত্র প্রহারে সমর্থ; তোমরা প্রত্যে-কেই পাণ্ডু-পুত্রদিগকে নিহত করিতে পার, তবে সকলে সংহত ও সৈন্য সহ একত্রিত হইয়া যে, নি-হত করিবে, তাহার আর বক্তব্য কি! অপিচ আমা-দিসের সৈন্য অপর্যাপ্ত এবং ভীমের রক্ষিত; এবং উহাদিগের সৈন্য পর্যাপ্ত ও ভীমের রক্ষিত। শক্ত-ঞ্জর, স্থবীর ফুংশাসন, বিকর্ণ, নন্দ, উপনন্দ, চিত্রসেন ও মণিভক্তকের সহিত সংস্থান, প্রসেন, বিকর্ণ, कुकूत, त्रठक, विभर्ड, मजक ও यवन मिनीय वीत्रभग मर्तिना, भूद्धांगामी हरेशा जीश्रांक तका करूक।

মহারাক। তৎ পরে ভীম, জোন ও আপনকার
পুজেরা পার্থদিনের ব্যুহের প্রতি পক্ষে এক মহা
বৃহ সঞ্জিত করিলেন। সহতী সেনার চতুর্দিকে
পরিবারিত হইয়া ভীয়, মহাসৈন্য দল প্রকর্ষণ করত
দেবরাজের ন্যার অগ্রনার হইলেন। প্রতাপশালী
মহাধন্ত্র্র জোন কুন্তুল, দশার্ণ, মাসধ, বিদর্ভ,

নেকল ও কর্ণ প্রাবরণসংগর সহিত ভীয়ের অকুসামী ररेजन । अवर नर्स नितात नरिक भाषात, निक्, সৌৰীর, শিবি ও বলাতি দেশীর বোধগণ মুক্ শোভী ভীমের পশ্চাদ্রামী হইবেন। শকুনি चर्कीत रेनात महिल, खत्रबाजनम्बदक त्रका क्रिएल প্রবৃত্ত হইলেন। সমৃত্ত লোদরগণে সমবেত রাজা ছুর্ব্যোধন হর্ষান্থিত হইয়া অস্থাতক, বিকর্ণ, চামল, কোশল, দরদ, শক, স্কুদ্রক ও মালবগণের সহিত পাণ্ডব বাহিনীর উপর অভিক্রত হইলেন। ভূরি-खेवा, मन, मना, छभरख, खविह्यसभीय विका छ অমুবিন্দ বাম পার্শ্ব রক্ষা করিতে লাগিলেন। সৌম-দন্তি, স্থলন্দা, কাৰোজাধিপতি স্থদক্ষিণ, প্রুতায়ু ও অচ্যুতায়ু দক্ষিণ পার্শ্ব রক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। অশ্বতামা, রূপ, সাত্ত্বত রুতবর্ন্মা, নানা দেশীয় রাজ গণ, কেতুমান, বস্থদান এবং বিভু কাশীরাজ-পুত্র মহতী সেনার সহিত, সেনা-পৃষ্ঠে অবস্থিত হইলেন। তদনস্তর ভবৎপক্ষীয় সকলেই হুফ হুইয়া যুদ্ধ নি-মিত্ত উৎসাহ সহকারে শব্ধ ধনি ও সিংহনাদ করি-লেন। তাঁহাদিগের হর্ষস্থাক সেই সিংহ্নাদ ও **শব্ধ ধ**ণি শ্রবণ করিয়া প্রতাপবান্ কুরুর্**ছ** পিতামহ ভীয়ও সিংহনাদ করিয়া শব্ধ বাদ্য করিলেন। তৎ পরে অপরাপর 🗫 লেই শব্ধ, ভেরী, নানাবিধ পেশী ও আনক বযুহ বাদ্য করিতে লাগিল, ভাহাতে তুমুল শব্দ হইয়া উঠিল।

খনন্তর, শেতাখ সংবোজিত মহৎরথে অবস্থিত হানীকেশ রুফ ও ধনপ্লয় হেমরত্ন বিভূষিত হাল শ্রেষ্ঠ শব্দ বাদ্য করিতে লাগিলেন, হানীকেশ পাঞ্চলনা ও ধনপ্লয় দেবদত্ত শব্দ বাজাইলেন। ভীমকর্মা রকোদর পৌঞ্জ নামক মহা শব্দ, রাজা

অনন্ত বিজয় নামে শব্ধ, নকুল সুযোষ নামে ও সহ-দেব মণিপুস্পক নামে শব্ধ বাজাইরা উঠিজেন। কালি-রাজ, শৈবা, মহারখ শিব্ধতী, হুউছুলে, বিরাট, মহারখ সাত্যকি, পায়ণলাধিপতি, মহাবহুখন ফোপনীর প্রভ পুত্র, ইহারা সকলে স্ব স্থ মহাশব্ধ রাজ্য করিলেন, এবং সিংহ্নার করিতে লাগিলেন। সেই সমন্ত বীর গণের সমুদীরিত অতি মহাদ নির্ঘোদ, নভোমগুল ও ভুমগুল অমুনামিত করত ভুমুল হইয়া উঠিল। মহারাজ। কুরু ও পাশুব পক্ষীয় ঐ সকল ঘোধগণ হঠে হইয়া উক্ত কপে পরস্পার আসোৎপাদন করত পুন্যুক্ক নিমিত্ত সক্ষিত্ত হইয়া রহিলেন।

অফ চত্তারিংশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৪৮॥

ইডরাই কহিলেন, সঞ্চয়! উভয় পক্ষের সৈনাবূাহ ঐ ৰূপ সক্ষিত হইলে প্রধান প্রহারকেরা কি প্রকারে প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! ঐ কপ রচিত সৈন্য বৃহ মধ্যে যোধগণ বন্ধসন্ধাহ হইরা রহিল, তাহা-দিগের মনোহর ধল সকল দীপ্তি পাইতে লাগিল। আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন অপার সাগরোপম সেই সকল সৈন্য অবলোকন পূর্বক তন্ধ্যে অবস্থিত হইরা তাবকীর সমুদার যোধগণকে কহিলেন, তোম-রা সকলেই সংগ্রামোদ্যত ও বন্ধ-সন্ধাহ হইরা প্রস্তুত হইরাছ, এক্ষণে সংগ্রামারস্ত কর।

তখন তাঁহারা সকলেই নিছুর চিন্ত হইয়া জীবিতাশা পরিত্যাগ পূর্বক পাণ্ডবদিগের অভিমুখে
ধাবিত হইলেন, তাঁহাদিগের হল সকল উদ্পুত হইয়া শোভা পাইতে লাগিল। অনস্তর আপনকার স্থ
পক্ষ ও পর পক্ষের রথী ও হন্ত্যারোহীতে লোমহর্ষণ
তুমুল যুদ্ধ হইতে লাগিল। স্বর্ণপুঝ, স্থতেজিত ও
অগ্রভাগ অকুভিত বাণ সকল রথীগণ কর্তৃক উৎস্ট
হইয়া নাগ ও অখগণের উপর পতিত হইতেলাগিল।
তথাবিধ সংগ্রাম আরক্ষ হইলে পরিহিত-বর্মা ভীমপরাক্ষম কৃষ্ক পিতামহ মহাবাহ্ছ বিভূ ভীয় মহারথ
অভিমন্তা, ভীষসেন, অর্জুন, কৈকেয়, বিরাট, য়্টছায়, চেদি ও মৎসারাল, এই সকল নর বীরের সমীশেক্ষম পূর্বক শর বর্ষণ করিতে লাগিলেন। সেই
ভীষ্ক বীরের সমান্তরে লাগিলেন। সেই
ভীষ্ক বীরের সমান্তরিক সহা বৃহহ কল্পিত
হতে লাগিল, পাণ্ডবিদ্নোর সমুদার সৈনোরই মহা

ব্যতিক্রম সঞ্চিত হইল; সাদী, রখী ও প্রবর বাজি সকল হত হইতে লাগিল। রখ-সেনা সকল বিপ্রবাত হইতে থাকিল।

তথন নর সিংহ অর্জুন মহারথ ভীয়কে দেখিরা ক্রোধপরতক্র হইরা ক্রফকে বলিলেন, ক্রফ! বেখানে পিতামহ আছেন, সেধানে রথ লইরা চল। স্পাইই প্রকাশ পাইতেছে, ছুর্য্যোধন-হিতৈবী ঐ ভীয় সংক্রুদ্ধ হইরা আমাদিপের সেনা ক্ষর করিবেন। দ্রোণ, ক্রপ, শল্য, বিকর্ণ ও ছুর্য্যোধন প্রভৃতি ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র-গণ ইহাঁরা দৃত্ধস্বা ভীয়ের রক্ষিত হইরা পাঞ্চাল-দিগকে সংহার করিবেন, অতএব আমি সৈন্য রক্ষা নিমিন্ত ভীয়কে বধ করিব।

বাস্থদেব তাঁহাকে কহিলেন, ধনঞ্চয়! ভুমি সযত্ন হও, এই আমি ভোমাকে পিতামহ রথ সমীপে লইয়া যাই।

মহারাজ! ফ্রন্থ ধনপ্লয়কে এই বলিয়া সেই লোকবিশ্রুত রথ ভীয়ের রথ সমীপে লইয়া গেলেন।
ধনপ্লয় চঞ্চল বছ পতাকান্বিত, বকল্রেণী সবর্ণ বাজি
সংযোজিত, মহা ভীষণ নিনাদকারী বানরাধিন্তিত
সমুদ্দ্রিত কেতু বিরাজিত, আদিত্য কান্তি বিশিক্ত
মহৎ রথ দারা মেঘ গঞ্জীর শব্দে শ্রমেন ও অন্যান্য
কৌরব সেনা ধংস করিতে করিতে আগমন করিতে
লাগিলেন। সিন্ধু, প্রাচ্য, সৌবীর ও কৈকয়গণে
স্থরক্ষিত শান্তমু-নন্দন ভীয়, রণহলে শ্রগণকে ত্রাসিত ও নিপাতিত করিতে করিতে বেগ-সহকারে
আগমনশীল প্রভিন্ন বারণের ন্যায় দ্রুতবেগে আগক্ষের সেই স্কুল্গণের হর্ষবর্জন ধনপ্লয়ের সন্মুখে
সহসা প্রত্যুক্ষত হইলেন। মহারাজ! কুরু পিতামহ
ভীয়, লোণ বা কর্ণ ব্যতিরেকে অন্য কোন্ রথী
গাণ্ডীবধন্বার সহিত মুক্ষে মিলিত হইতে পারে?

পরে তীম লগু সগুঁতি নারাচ, ফ্রোণ পঞ্চবিংশতি, রূপ পঞ্চাশৎ, মুর্য্যোধন চতুংষতি, শল্য নব, সিছু-রাজও নব এবং শকুনি শক্ত শর ও বিকর্ণ দশ ভল্ল ভারা অর্জুনকে বিক্ষ করিলেন। মহাধনুর্কর মহা- বাহু অর্জুন, চতুর্দ্দিক্ ছইতে শাণিত শর সমূহ দারা বিদ্ধ হইয়াও ভিদ্যমান অচলের ন্যায় ব্যথিত হই-লেন না। সেই অমেয়ালা কিরীটা ভীন্নকে পঞ্চ-বিংশতি, ক্লপকে নব, দ্রোণকে যটি, বিকর্ণকে তিন, শল্যকেও তিন এবং রাজা চুর্য্যোধনকে পঞ্চ বাণ দ্বারা প্রতিবিদ্ধ করিলেন। তথন সাত্যকি, বিরাট, ধৃঊ-দ্বান্ন, দ্রৌপদীর পঞ্চ পুত্র ও অভিমন্ত্রা, ইহাঁরা ধন-ঞ্জয়ের নিকট পরির্ত হইলেন। তদনস্তর ধৃঊছাম সোমকগণের সহিত, গঙ্গা-পুত্র ভীন্মের প্রিয় কার্য্য-রত মহাধমুর্দ্ধর দ্রোণের নিকট সমাগত হইলেন। পরস্কু রধি-প্রধান ভীম সত্ত্র হইয়া অশীতি সংখ্য শাণিত বাণ ধনঞ্জয়ের প্রতি পরিত্যাগ করিলেন, তাহা দেখিয়া আপনকার পক্ষীয়গণ হর্ষ সহকারে চিৎকার করিয়া উঠিল। পরে রখিসিংহ প্রতাপবান্ धनक्षत्र, त्मरे रूप्तां एकूल त्याधिशत्वेत निनाम श्वनित्रा ভাহাদিগের মধ্যে প্রহৃত্তের নাায় প্রবিষ্ট হইলেন। পরে সেই সকল রথিপ্রবরদিগের মধ্যগত হইয়া তাহাদিগকে লক্ষ করিয়া ধনুকের দ্বারা ক্রীড়া করি-ভে লাগিলেন।

মহারাজ! তথন রাজা ছুর্য্যোধন, সংগ্রামে স্থাসন্য দিগকে পার্থ ছারা পীড়ামান দেখিয়া ভীন্নকে কহিলেন, পিতামহ! আপনি এবং দ্রোণ রথী গণের প্রধান, আপনারা উভয়ে জীবিত থাকিতে ঐ বলী অর্জুন ক্লেফর সহিত, আমাদিগের সৈন্য সমস্ত নিপাতিত করত আমাদিগের মূল ক্লন্তন করিতে লাগিলেন। কর্ণ আমার দিগের হিতৈবী, উনি আপনকার নিমিত্তই অন্ত শস্ত্র পরিত্যাগ করিয়া রণে ক্লান্ত হইয়াছেন। অত্ঞব বাহাতে কাল্কন হত হয়, আপনি এমত উপায় কয়ন।

বহারাজ! আপনার পিতা দেবত্রত এই রপে কুরোমিনের আদিই হইয়া, 'কজির ধর্মে ধিক্' বলিয়া পার্থের রথের নিকট গদন করিলেন। উভয় খেতাখবান্কে যুদ্ধে সংসক্ত দেখিয়া ভূপাল গণ অভান্ত সিংহন্দ ও শব্দ ধনি করিলেন। দ্রোণপুদ্ধ,

আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন ও বিকর্ণ ভীয়কে পরি-বেন্টন করিয়া যুদ্ধ নিমিন্ত অবস্থিত হইলেন। সেই ৰপ পাণ্ডৰ পক্ষীরেরাও সকলে ধনঞ্চয়কে পরি-বেফন করিয়া মহাযুদ্ধার্থ প্রবৃত্ত রহিলেন। তদনভর যুদ্ধারন্ত হইল। গঙ্গানন্দন নয় শর পার্থের প্রতি, পার্থও মর্মভেদী দশু বাণ গঙ্গানন্দনের প্রতি নি-ক্ষেপ করিলেন। অনন্তর সমর-প্লাঘী অর্জুন সহত্র শর প্রয়োগ করিয়া ভীমের চতুর্দিক্ আচ্ছন্ন করি-লেন। ভীন্নও তথন শর জাল দ্বারা অর্জ্জুনের সেই শরজালকে নিবারণ করিলেন। উহাঁরা উভয়েই যুদ্ধানন্দিত, উভয়েই পরম হর্ষ সহকারে পরস্পর ক্নত প্ৰতীকারাধী হইয়া নিৰ্ব্বিশেষ ৰূপে রণ করিতে लांशित्नन । य मकल भंत्र काल जीग्र भंतामन रहेरज প্রমুক্ত হইতে থাকিল, তাহা অর্জুন বাণে ছিন্ন ও শীর্যামাণ দৃষ্ট হইতে লাগিল। সেই প্রকার যে সকল শরজাল অর্জুনের গাণ্ডীব হইতে প্রযুক্ত হই-তে লাগিল, তাহা ভাগ ভাগ হইয়া ভীন্মের শরে ছিন্ন হইরা মহীতলে পতিত হইতে দৃষ্ট হইল। অর্জুন পঞ্বিংশতি শরে ভীম্বকে প্রহার করিলেন, ভীন্নও নৰ সংখ্য বাণে পাৰ্থকে প্ৰহার করিলেন। পরস্পারের অশ্ব, ধজ, রধের ঈশা ও চক্র বেধ করত ক্রীড়া করিতে লাগিলেন। তদনস্তর যোধবর ভীয় কুন্ধ হইয়া অর্জুন সারখি বাস্থদেবের স্তন ধয়ের মধ্য স্থলে তিন বাণ দারা আঘাত করিলেন। সধু-স্থদন ভীয় শূরাসন চ্যুত বাণ জেটা বিদ্ধ হইয়া সেই রণ স্থলে সপুষ্প কিংশুক রক্ষের ন্যার শো-ভিত হইলেন। অৰ্জুন মাধবকে নিৰ্বিদ্ধ দেখিয়া সাতিশর কোধ-পরতন্ত্র হইরা ভীরের সার্থিকৈ তিন বাণ ছারা বিদ্ধ করিলেন। ডৎ কালে নেই **घ्टे वीत नवज्र हटेना ७ नवन्त्रत तथ यथा हटेए**ड পরস্পরকে লক্ষিত করিতে সমর্থ হইলেন না, কেন না উভরেই সারখির নৈপুণা সমিধ্য বস্ত লাঘৰ প্রযুক্ত রবের বিচিত্র মণ্ডলকারিভ গতি প্রভাগতি

अवर्गम् कृतिहरू जानिराम । क्रिज्यारे अशत कृति-बाद प्रदेशन वर्ष प्रमुख्यात शूनःशून प्रदेश-नुबंध सहेदछ नाबिद्यान, अवर निश्र द्वव महरूदित পরা লক্ষ্য প্রাসন নির্ঘোষ করিতে থাকিলেন केंक्क्षिरभद्र भवा इति ७ तथरनिम भरक शृथिवी সহসা দারিতা, কম্পিতা ও অমুনাদিতা হইল। তাঁহারা উভয়েই উভয়ের সদৃশ, শুর ও বলবান্, উভ-ন্নের মধ্যে কেহই কিছু মাত্র অবকাশ দেখিতে পাই-লেন না। কৌরব পক্ষীয়েরা তাদৃশ যুক্ক সময়ে যে ভীম্মের রক্ষার্থে সমীপে গমন করিলেন, তাহা কেবল ভীমের চিহ্ন মাত্র দ্বারা; সেই ৰূপ পাণ্ডব পক্ষী-য়েরাও পার্থের চিহ্ন মাত্র দার।ই তাঁহার রক্ষার্থে সমীপস্থ হইলেন। মহারাজ! সেই নরসিংহ ঘয়ের সংগ্রামে তাদৃশ পরাক্রম দেখিয়া সকল প্রাণীই বিশারাপন্ন হইল। যে প্রকার ধর্মনিষ্ঠ ব্যক্তির কদা-পি কেহ পাপ দেখিতে পায় না, সেই প্রকার কেহই मारे ब्रा इता छोशांमिरागत ब्रक्त मर्भात मार्थ इरेल ना। উভয়েই कथन শরজালে অদৃশ্য, कथन वा অতি শীঘ্ৰ প্ৰকাশিত হন।

উভয়ের পরাক্রম দেখিয়া তত্ত্বস্থ দর্শক দেব, মহর্ষি, গল্পবি ও চারণগণ, পরস্পর বলাবলি করিতে লাগিলেন, এই ছুই সংরক্ত মহারথকে সমস্ত লোক দেব, অফুর ও গন্ধর্বগঞার সহিত সমবেত হইয়াও যুদ্ধে পরাজয় করিতে কোন প্রকারে সমর্থ নছে। লোক মধ্যে এই যুদ্ধ আশ্চর্যাভূত অতি অন্তব্যা-পার, এতাদৃশ বুদ্ধ কথনই আর হইবার সম্ভাবনা নাই। ভীয় অশ সংযুক্ত রথের সহিত চাপহত্তে রণ चुटक वाब ध्रवशन क्रिएंड धाक्रिक, धीमान शार्थ উইনৈ যুক্তে কোন কমেই কয় করিতে পারিবেন मा। तारे बन जीवा एक्सरावि ब्रुवामन ये प्रकृत শার্মের সহিত রণে করী হুইতে উৎসাহ করিতে পাৰেৰ না ৷ ইইাৱা ৰদি অন্তৰ কাল পৰ্যাৱও যুক करान, क्रमान कर यूक नमान कराई रहेटल शांकि-(दे । क्रिकेट अप क्रिकेट के क्रिकेट প্রচারিত হইতে শ্রুত হইল।

নহারাক। উর্থাবিষের উত্তের পরাক্তম প্রকাশ সময়ে আপনার ও পাণ্ডবদিনের পক্ষ গ্রোধগণ পরস্পার হতাহত হইতে লাগিল। উত্তর পক্ষীর শুর-গণই শাণিত-ধার ধতুল, পরস্থা, বছরিধ বাণ ও আন্যান্য শত্র সমূহ দারা পরস্পার কাটার্নাটি করিতে লাগিল। সেই স্থদারুণ ঘোর সংগ্রামে ক্রোণ ও ধৃউচ্যুসেরও মহান্ সমর ব্যাপার হইতে থাকিল।

উনপঞ্চাশ অধ্যায় সমাপ্ত। ৪৯।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! মহেশাস দ্রোণ ও পাকালা ধৃউছায় কি প্রকারে সমত্র হইয়া রণে সমবেত
হইয়াছিলেন, তাহা আমার নিকট বল। সঞ্জয়!
যথন ভীম পাণ্ডবগণ হইতে যুদ্ধে পরিত্রাণ পাইলেন
না, তখন পৌরুষ অপেক্ষা অদৃষ্টকেই প্রধান মানিতে হইবে, নতুবা ভীম সমরে ক্রুদ্ধ হইলে সমস্ত
চরাচর সংহার করিতে পারেন, তিনি যুদ্ধে পাশুব
সাগর হইতে কেন উত্তীর্ণ হইতে পারিলেন না?

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! ইন্দ্রের সহিত দেবগণে-রও পাগুবদিগকে রীণে জয় করা অসাধ্য। সম্প্রতি এই মহাভয়ানক যুদ্ধের কথা স্থির হইরা অবণ করুন। আচার্য্য দ্রোণ বিবিধ বাণ দ্বারা ধৃষ্টম্ন্যুন্নকে বিদ্ধ করি-লেন এবং ভল্ল ছারা তাঁহার সার্থিকে রথ নীড় হই-তে নিপাতিত করিলেন, তৎ পরে অতি কুল্ব হইয়া চারিটা উত্তম শায়ক দারা তাঁহার অশ্ব চতুষ্টয়কে পীড়িত করিলেন। তদনস্তর বীর ধৃউচ্চায় হাস্য বদনে 'ডিষ্ঠ ডিষ্ঠ ' বলিয়া নবতি সন্ধ্যু শাণিভ শুর ছারা জোণকে বিদ্ধ করিলেন। পরে, অপরিমেরাজা প্রতাপশালী ভরম্বাজ-নন্দন জুদ্ধ ধৃউদ্যুদ্ধকে শর সমূহ ছারা আছ্ম করিলেন, এবং ইন্দের অশ্নি-সম্পূৰ্ণ ও দিতীয় যম দণ্ড প্ৰৰূপ একটি ছোৱ শর ध्**केक्ट्राट्यत दूध निमिष्ठ धार्ग कतित्वन। धारास्त्र** त्वरे वाव बच्चान (विश्वा , बम्बड रेमना मध्या महत्त्व राह्यकात अन उठिम । अहातान ! तरे वृद्ध श्री-शास्त्रक महरू सम्बा विश्वास ता तारे हैं। **এकाकी, शितित नाम, घटन हरेसा त्रहिटनन अवर**्

আপনার হৃত্যু শ্বৰণ আসম্যামান সেই এলীও মহা ঘোর বাণ ছেদন করিয়া কেলিলেন, এবং জোণের প্রতি শর বর্ষণ করিতে লাগিলেন। তাঁহার এই ৰূপ অভি ছুল্লর কার্য্য দেখিরা পাঞ্চাল ও পাগুবগণ হর্ষ সহকারে চিৎকার ধনি করিয়া উঠিলেন। পরে সেই পরক্রেমশীল মহাবীর, জোণের নিধনাকাক্ষী হইয়া वर्ग-देवपूर्या-कृषिक महोदिशमीन अक मेकि जाएनत প্রতি ক্ষেপণ করিলেন। ভরদ্বাজ-নন্দন যেন হাসিতে হাসিতে সেই কনক ভূষিত পতন্ত শক্তি তিন খণ্ডে ছেদন করিয়া ফেলিলেন। প্রতাপশালী ধৃষ্টগ্নুত্র দেই শক্তি নিহত দেখিয়া দ্রোণাচার্য্যের উপর শর বর্ষণ করিতে আরম্ভ করিলেন। মহাযশা দ্রোণ তাঁহার শর বর্ষণ নিবারণ করিয়া শরাসনের মধ্য चान ছেদন করিয়া কেলিলেন। মহা यশস্বী বলবান্ ধৃষ্টপ্রান্নের ধন্ত্বক ছিল্ল হইলে, তিনি গিরিসারময় ভার বিশিষ্ট এক গদা দ্রোণের প্রতি নিক্ষেপ করি-লেন। সেই গদা তাঁহার করমুক্ত হইয়া দ্রোণ বিনা-শের নিমিত্তে চলিল; কিন্তু এই স্থলে দ্রোণের অদ্ভুত विक्रम रिविनाम, जिनि त्रथं गानना कार्र्या नाचव নৈপুণা হেডু সেই স্থবৰ্ণ ভূষিত গদা বিফল করি-লেন। গদা বিফল করিয়াই শিলাশাণিত স্থশাণিত স্থাত স্বৰ্ণপুষ্ম কতক গুলি ভল্ল ধৃষ্টচ্বামের উপর নিক্ষেপ করিলেন। সেই সকল ভল্ল ভাঁহার কবচ ভেদ করিয়া শোণিত পান করিল। পরে মহামনা ধৃউত্থান্ন সেই যুদ্ধে পরাক্রম-পূর্বক অন্য এক ধনুক গ্রহণ করিয়া পাঁচটি বাণ দারা চোণকে বিদ্ধ করি-বেন। অনন্তর উভয় নর বীরই রুধিরাক্ত কলেবর হৰুৱা ব্যন্ত কালের পুষ্পিত বিচিত্র বর্ণ বিশিষ্ট কিংশুক জরুর নাম শোভা পাইতে লাগিলেন। মহরোক। তৎ পরে জোণ কোষ পরবল হইরা চমু-भूरव नेताक म महकारत क्रशान-भूरकत प्रस्क भूनव्वात ছেয়ন করিছা কেলিলেন। পাত্রে তাঁহার ধমুক ছিন্ন হইলে সামারামা দোশ, প্রবহতের উপর মেবের কল বৰ্ণের মান্ত্র, সমতপর্ক সর সমূহ তীহার উপর বর্ষণ

করিলেন। তথ পরে ভল বারা তাহার সার্থিকে ক্র-নীত হইতে নিপাতিভ করিলেন। ভৎ পরেই চারিটি শাণিত বাণে ভাঁহার রথের চারিটি অর সংহার করিলেন, এবং সিংহনাদ করিয়া উঠিলেন। তাহার পরেই আবার অপর এক ভল্ল দারা তাঁহার হস্তাবাপ ছিন্ন করিয়া কেলিলেন। ধৃষ্টত্যুদ্মের ধমুক ছিন্ন এবং সারথি ও অশ্ব হত হইলে তিনি মহৎপৌরুব প্রকাশ क्रबं भारा रुख वर्षा वर्ष रुरेष व्यवसार्य क्रि-তে প্রবৃত্ত হইলেন। কিন্তু রথ হইতে অবরোহণ না করিতে করিতেই দ্রোণ সত্মর হইয়া কতকগুলি শর দারা তাঁহার গদা বিনাশিত করিলেন, তাহা अदुर्टेत नाम रहेत। उपनस्त वलमानी स्पूज ধৃউছান, শত চক্র যুক্ত মনোরম স্থবিপুল চর্ম ও বিপুল দিব্য ধড়্গ লইয়া, মন্ত হন্তীর প্রতি মাংসার্থা সিংহের নাীয়, দ্রোণের বধাভিলাবে বেগে অভিক্রত **रुरेलन। उथन छत्रधाङ-मन्मरनत वाह् धरम्रत वल,** অন্ত্ৰ প্ৰয়োগ লাঘৰ ও পৌৰুষ আশ্চৰ্য্য অবলোকন করিলাম, তিনি একাকীই বাণ বর্ষণ করিয়া ধৃষ্টছ্যুদ্ধ-কে নিবারিত করিলেন। তাহাতে ধৃউছুান্ন ভাদৃশ বলবান্ হইয়াও জোণ সমীপে যাইতে পারিলেন ना, पिथिलांम, मिहे महात्रथं मिहे शिथ मर्पाहे खर-স্থিত হইয়া হস্ত লাঘৰ সহকারে চর্ম্ম দ্বারা সেই বাণ বর্ষণ নিবারণ করিতে লাগিলেন। অনস্তর মহাবল মহাকাছ ভীমদেন মহাত্মা দ্রুপদ-পুজের সাহায্য নিমিত্ত তথায় আপতিত হইলেন। তিনি শাণিত সপ্ত সংখ্য বাণ দারা দ্রোণকে বিদ্ধ করিলেন, ভৎ পরেই সত্তর হইয়া ধৃউছ্যায়কে অন্য রুখে আরোহণ করাইলেন। তদনন্তর রাজা ছুর্যোধন রুহ্ৎ এক সৈন্য দল যুক্ত কলিঙ্গরাজকে দ্রোণাচার্য্যের রক্ষার্থে चारमम कतिरणन। कलिक्तारकत खतानक बहुकी সেনা আপনকার পুতজর আদেশাসুসারে ভীমসেনের প্রতি থাবিত হইল। বুখি প্রথান লোগ তথন বুক-ছামকে পরিত্যাপ করিয়া সমবেত বৃদ্ধ বির্টিও ক্রপদের পহিত যুক্তারত্ত করিলেন। ধৃষ্ঠজ্ঞানত সমরে ধর্মরাজের সমীশে গমন করিলেন তিৎ পরে মহা-ছা-ভীমের সহিত কলিজ সৈন্যদিপের তুমুল, লোম-হর্ম, ভয়ানক, জগৎ ক্ষয়কর ঘোর-রূপ রূণ প্রবৃত্ত হুইল

দ্রোণ ধৃষ্টভূত্ম যুদ্ধে পঞ্চাশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫০॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! বাহিনীপতি কলিকরাজ সেনা দল সহিত, তুর্ব্যোধনের সমাদিই হইয়া, দণ্ড হস্ত অন্তকের ন্যায় গদা হস্তে সমরে বিচরণকারী অন্তকর্মা মহাবল ভীমসেনের সহিত কি প্রকার যুদ্ধ করিলেন?

मञ्ज्ञ करिलन, एर त्रांटकतः । महावन कनिक्रताक আপনকার পুজের নিকট তাদৃশ আদিই হইয়া মহতী সেনা লইয়া ভীমের রথ সমীপে প্রয়াণ করি-লেন। ভীমসেন চেদিগণের সহিত, রধাশ্ব-নাগ-क्लिल भृशेष-महाञ्च-ममूह क्लिक प्रभीत महर मिना দল ও নিবাদ-তনয় কেতুমান্কে আপতিত হইতে দেখিয়া তাঁহাদিগের প্রতি অভিগত হইলেন। রাজা কেতুমানের সহিত শ্রুতায়ুও ক্রুদ্ধ ও বন্ধসন্নাহ হইয়া ব্যুহিত সৈন্য সমভিব্যাহারে রণে ভীম সমীপে আ-পমন করিলেন। কলিঙ্গাধিপতি অনেক সহস্র রধীর সহিত এবং নিষাদ গণ ও অযুত গজের সহিত কেতু-মান্, ভীমসেনের চতুর্দিকে পরিবেইটন করিলেন। চেদি, মৎস্য, করব ও ব্লাজগণের সহিত ভীমসেন সহসা নিষাদগণের উপর ধাবিত হইদেন। তদনস্তর বোশগণ পরস্পর হননেচ্ছায় ধাবিত হইলেন, তাঁহা-দ্রিগের ভয়ানক ঘোর ৰূপ যুদ্ধারত্ত হইল। মহারাজ! বে প্রকার দৈত্য দেনা সহ ইন্দ্রের যুদ্ধ হয়, তজপ রিপক্ষ দলের সহিত ভীমনেনের সহসা ঘোর সং-প্রাম উপস্থিত হইল। সেই মূহৎ সৈনোর সংগ্রাম সমূহে গুৰুতি সাগরের ন্যায় মহান শব্দ হইতে লারিল। মহারাজ! যোধগণ পরক্ষার কাটাকাটি क्रिया क्रम्ब श्रुविन स्वतं माध्य त्यांनिएकत क्रिका

করিয়া তুলিল, জিমাংসা বশত সমর ছুর্লের শ্রথণের অপক্ষ পরপক্ষ জ্ঞান থাকিল না, তাহারা
অপক হইয়া অপক্ষমিগকেই প্রহার করিতে আক্রম
করিল। বহু সংখ্য নিষাদ ও কলিলগণের সহিত্ত
অম্প সংখ্য চেদি যোধগণের অতি মহান বিমর্দ
হইতে লাগিল। মহাবল চেদিগণ যথা শক্তি পৌরুষ
প্রকাশানন্তর তীমসেনকে পরিত্যাগ করিয়া নির্ত্ত
হইল। পরস্ত চেদিগণ নির্ত্ত হইলে মহাবল তীমসেন সমুদায় কলিলগণে সমার্ত ও আক্রান্ত হইয়াও
নির্ত্ত হইলেন না, স্বকীয় বাহুবলকেই আল্রয় করিয়া রণ ময় থাকিলেন।

মহারাজ! মহাবাছ রকোদর স্বকীয় রবোপস্থ रहेटक विव्वालक ना रहेशा स्नुमाणिक वाग ममूर बाता কলিঙ্গ বৰ্ৰবিনী সমাকীৰ্ণ করিতে লাগিলেন। এবং মহাধমুর্দ্ধর মহারথী কলিঙ্গরাজ ও শক্রদেব নামে বিখ্যাত তাঁহার পুত্র, ইহাঁরা উভয়েই ভীমের প্রতি শরাঘাত করিতে লাগিলেন। তদনস্তর ভীম স্বীয় বাহুবলের আশ্রয়ে মনোহর ধমুক বিকম্পিত করত শক্রদেবের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হই**লেন। শক্রদেব**ও সমরে বছ সায়ক নিক্ষেপ করত ভীমদেনের অশ্ব চতুষ্টর বিনাশ করিলেন। তথন অরিন্দম ভীম-সেনকে বিরথ দেখিয়া শত্রুদেব শাণিত বাণ বিক্ষি-রণ করিতে করিতে তাঁহার অভিমুখে ধাবিত হই-লেন। যে প্রকার মেছমগুলী গ্রীক্ষান্তে জল বর্ষণ করে, সেই ৰূপ মহাবল শক্রদেব তাঁহার উপর বাণ বর্ষণ করিতে লাগিলেন। মহাবল ভীমদেন ছোটক-विहीन त्रत्थ व्यवस्थि हरेग्रारे मर्क्तरेमकगाग्नमी भ्रमा भक्त (मरवत छेभन्न निरक्षभ कतिरमन। महाताङ! সেই নিক্ষিপ্ত গদা ছারা কলিঙ্গরাজ-পুত্র হজ ও সার-ৰিব্ন সহিত নিহত হইয়া ধর্ণীতলে পতিত হইলেন 🕆 सराद्राज !, क्लिकाविशिष्ठि, चाज शूक्रां के स्तित्रा मरुख मरुख तथी बात्रा जीमरमत्मत्र म्जूबिक् পরিবেউন করিলেন। পরে মহাবল পরাক্রান্ত মহা-वाष्ट्र इंटकामत जीवन कार्या कतिवात पालनाटकाना

পরিতাপ করিয়া হেসময় পর্যচক্র ও বছল নকতে নিচিত অনুসাস এক আৰ্ড চৰ্ম ও বড়ুগ এছণ ক্রিব্রেম ক্রিং পরে কলিঙ্গরাজ ক্রোধ-পর্তন্ত ্ৰইয়া ভীখের বধাভিলাবে ধরুগুণ মার্চ্চন পূর্বক ্রপর্ণ বিষ সদৃশ এক ভয়ানক শর গ্রহণ করিয়া ভীম-ামেনের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। সেই প্রেরিত শা-ণিড শর বেগে আগত হইতেছে দেখিয়া ভীমসেন দেই বিপুল ধড়্গ ছারাই তাহা ছুই থতে ছেদন ক্রিয়া কেলিলেন, এবং আপনকার সৈন্যদিগকে ত্রাসিত করত হর্ষ সহকারে সিংহনাদ করিয়া উঠি-েলেন। তদনস্তর কলিঙ্গরাজও ক্রন্ধ হইয়া ত্বরা-পূর্বক শিলা শাণিত চতুর্দশ তোমর ভীমের উদ্দেশে নিকেপ করিলেন। মহাবাছ পাগুব সূন্যপথস্থ সেই ভোমর সকল গাত্র-সংলগ্ন না হইতে হইতেই অব-লীলা ক্রমে শ্রেষ্ঠ ঋড়্গ দ্বারা সহসা ছেদন করিয়া किनिटनन । त्रन मर्पा मिरे ठेजूमिन वान हिमन क्रिया क्रिक्ताक-शूख ভाমুমান্কে लका क्रुड ধাৰিত হইলেন, ভামুমান্ও বাণ বর্ষণ করিয়া ভীম-সেনকে আছ্ম করত নভন্তল নিনাদিত করিয়া बलदर निःइनाम कतिए नाशितन। शतुस मरे মহারণে ভীম ভামুমানের সিংহনাদ সহ্থ না করিয়া শহোচ্চ স্বরে মহাশব্দ করিতে থাকিলেন, সেই শব্দে ক্ষালক সেনা আসাম্বিতা হইল এবং সমরে ভীমকে মানুষ বলিয়া মনে করিল না। মহারাজ! তৎপরেই অনিধারী ভীমসেন বিপুল শব্দ করত বেগ সহকারে লক্ষ্ প্রদান করিরা ভারুমানের নাগরাব্দের দন্ত ধর ংশ্বলয়ন-পূর্বকে সেই গলরাজের মধ্যন্থলে আ-্রিক্শ করিলেন, এবং তৎক্ষণাৎ সেই মহাধতুগ ভারা ভালুমানের দেহের মধাভাগ ছেদন করিয়া কেরিবেম। অরিশরে বুকোদর তাঁহার স্থাভাগ ्रहेक्स कतिमारे पार्ट अक्रकात नर **चे**ज्य निक्छे-্বর্তী পদ্ধবাদ্ধ পাতিত করিবেন ৷ পদ্মবৃধপতি क्षिक्ष अवस्थि क्रेस निवाम क्रिएंड क्रिएंड, नाक्तान अवस्था निकृतिक वाहा अवस्था नाह,

প্ৰতিত বুইল। হন্তী পতিত বা বুইতে বুইতেই নাজ-नवार अहीन-नवु छत्रछ-नम्बन छीत्र अपूर्व इद्राह शक रहेरछ गमा अमान कतिता पुछरत अनस्त्रन করিলেন, এবং নির্ভীক হইয়া গল মকল নিপাছিত করিতে করিতে রণ ছলে বছল পথ করিয়া বি-চরণ করিতে লাগিলেন; তৎকালে তাঁহাকে, ভ্রমন্ত व्यक्षि एटक्र नाम, नैस्तक प्रथा साईटल नामिन। कथन घारिक वृन्त, कथन वहन रुखी, कथन व्रथरिनमु. কখন বা পদাতি সঙ্গ নিহত করত শোণিত সিক্ত रहेशा मर्व इटलरे समा क्रिएक शांकित्वत। त्रा कारन উৎकृष वनमानी ও মহাবেগবান इहेश स्थ, পদাতি, तथी ও গৃজ যোধীদিগের দেহ ও মস্তক শিত ধার খড়ুগ ছারা ছেদন করিতে করিতে যেন শোন পক্ষীর ন্যায় রণ মধ্যে বিচরণ করিতে লাগি-লেন। ভিনি সহায় বিহীন ও পদচারী হইরাও ক্রোধভরে কালান্তক যম সদৃশ হইয়া শত্রুগণের ভয় বর্জন করত সেই সকল শূর্দিগকে মোহিত ক্রিতে থাকিলেন। যথন তিনি মহা রণে অতি বেপ সহকারে ধর্গ হত্তে বিচরণ করেন, তখন মূঢ়েরাই নিনাদ করত তাঁহার সম্মুখে যুদ্ধার্থে ধাবিত হইতে লাগিল। শক्তমर्फन महावीत इटकामत त्रथी शटनत त्रद्धत मेवा ও যুগ ছেদন क्रिया तथी मिश्राक ছেদন ক্রিডে লাগিলেন। ভাঁহাকে সংগ্রামক্ষেত্রে বছল বর্দ্ধে বি-চরণ করিতে দেখা গেল,—তিনি জমণ, উদ্জমণ, আবেধ, আপ্লবন, প্রসরণ, প্রবন, সম্পাত ও উদীয়াণ, **এই সকল গতি বিশেব রণছলে श्रीप्तर्भन क्रिन्छ** লাগিলেন। মহাত্মা ভীমনেনের ধড়ুপে ছিল্ল হুইরা কোন কোন হন্তী আর্ডনাদ করিতে লাগিল; কোন কোন হক্তী মৰ্ম্ম স্থানে ভিন্ন হইয়া প্ৰাণ পরিত্যাগ পূৰ্বক ধরাতলে পতিত হইতে বাগিল; কোন কোন হতীর দৰ ও ওওাঞ্জ ভাগ ছিন্ন, কোন কোন নাগের कुछ विद्योग रहेला, छेराता स्वाध विरीम रहेला अ-পক্ষীয় সনীক্ষাকেই হুনর করিতে বাসিক পুরং সহারবে নিনাদ করিছে করিছে ভুততে বিশক্তিক

হইল। মহারাজা তোমর দক্ষা, হস্তীপকের মন্তক
সকল, বিচিত্র পরিস্তোম, কনকোজ্বল কক্ষা, গজ
কওড়্বণ, শক্তি, পতাকা, কুণপ, তুণীর, যন্ত্র, বিচিত্র
ধনুক, শুভ্র অগ্নি দণ্ড, তোত্র, অঙ্কুশ, বিবিধাকার
ঘন্টা, হেমগর্র খড়গমুখি ও সাদিগণকে রণ ক্ষেত্রে
পতিত ও পতিত হইতে দেখিলাম। নিহত হস্তীগণ এবং হস্তীগণের ছিন্ন গাঁতের পূর্ব্বভাগ ও ছিন্ন
শুপ্ত দ্বারা যেন পতিত পর্বত সমূহে সেই রণ ভূমি
পরিবাাপ্তা হইল।

মহারাজ! নরসিংহ ভীমদেন, এই ৰূপে মহাগজ সকল মর্দ্দন করিয়া অশ্ব ও প্রধান প্রধান অশ্বা-রোহী নিপাতিত করিতে লাগিলেন, এই যুদ্ধ উভয় পক্ষেরই ঘোরতর হইল। সেই মহারণে বিচিত্র বল্গা, কনকোজ্জুল কক্ষা, পরিস্তোম, প্রাস, মহামূল্য ঋষ্টি, কবচ, চর্মা ও বিচিত্র আন্তরণ ছিন্ন ও পতিত দেখা যাইতে লাগিল। সেই বীর বিচিত্র প্রোথ যন্ত্র ও বিমল শস্ত্র সমূহে পৃথিবীতল সমাকীর্ণ করি-লেন, তাহাতে পৃথীতল যেন কুমুদ নিচয়ে শবল वर्ग इहेल। মहावल ভीমদেন लक्क श्रामन क्रिया খড়্গাঘাতে কোন কোন রথীদিগকে ধজের সহিত পাতিত করিতে লাগিলেন। যশস্বী র্কোদর রণ ক্ষেত্রে চতুর্দিকে পুনঃপুন উৎপতন, ধাবন এবং বিচিত্র পথ স্ক্রন পূর্বকে বিচরণ করিয়া জনগণকে বিশ্ময়াপন্ন করিতে থাকিলেন। কোন কোন যোধ-গণকে পদাঘাতে নিহত, কোন কোন যোধগণকে আক্ষেপণ করিয়া প্রোধিত, অপর কতক গুলিকে ধড়্গ দ্বারা ছিন্ন, অন্যান্য কতক লোকদিগকে গর্জন শব্দে ভয়ার্স্ত ও কতক যোধদিগকে উরুবেগে ভূ-তলে পাতিত করিতে লাগিলেন। অনেকে উহাঁকে मिथियारे ज्या भनायन क्रिएं नागिन, এবং वहन বলবান্ কলিঙ্গ সেনা চতুর্দ্দিক্ পরিবেউন করিয়া ভীৰণমুর্কি ভীমদেনের প্রতি ধার্মান হইল।

সহায়াত । ভীষদেন শ্রুতায়ুকে কলিঙ্গ সেনার অক্রতাদে দৈখিরা ভাঁহার উপর ধাৰমান হইলেন।

অমেরাত্মা কলিকাধিপতি, ভীমসেনকে ধাৰমান দেখিয়া তাঁহার তান ব্যের মধ্যভাগে নব সংখ্য শর বিদ্ধ করিলেন। ভীমনেন কালিঙ্গ বাণে অভি-হত হওয়াতে তোত্র পীড়িত হস্তী সদৃশ হইর। ক্রোধে ইন্ধন প্রদীপ্ত অগ্নির ন্যায় জ্বলিয়া উঠিলেন। ঐ সময়ে সারথি অশোক, হেম পরিষ্কৃত রথ আনিয়া রথী প্রধান ভীমসেনের নিকট উপস্থিত করিল। শক্রন্থাপুত্র ত্বরা সহকারে রথারোহণ করিয়া 'তিষ্ঠ তিষ্ঠ' বলিতে বলিতে কালিঙ্গের সম্মুখে ধাবমান হইলেন। তদনস্তর বলবান শ্রুতায়ু সংকুদ্ধ হইয়া হস্ত লাঘৰ প্রদর্শন করত শাণিত বাণ সমূহ ভীমের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। মহারাজ! মহা-বল ভীমদেন কলিঙ্গরাজের চাপবর বিনির্গুক্ত শা-ণিত নব সংখ্য বাণে অত্যন্ত সমাহত হইয়া দণ্ডাহত সর্পের ন্যায় সাতিশয় কোপিত হইলেন। বলি-প্রধান ভীম, ক্রোধ বশত এক বলবৎ শরাসন আ-য়ত করিয়া লৌহময় সপ্ত সংখ্য শর দ্বারা কালিঞ্চকে হনন করিলেন, এবং তাঁহার সত্যদেব ও সত্য নামে ष्ट्रे कन वलवान् ठक-त्रक्रक**रक ध्रुरे कृताञ्च पा**ता যমালয়ে প্রেরণ করিলেন। তদনন্তর অমেরাত্মা রুকোদর, শাণিত তিন নারাচ দ্বারা কেতুমান্কে বম-সদনে প্রেরণ করিলেন। তাহা দেখিয়া কালিঞ্চ ক্ষজিয়গণ ক্রোধ পরবশ হইয়া বছ সহস্র সৈন্য লইয়া অমর্ষণ ভীমের সহিত সংগ্রামারম্ভ করিলেন। শত শত কালিঙ্গণ শক্তি, গদা, ঋড়গ, তোমর, ঋটি ও পরশ্বধ সমূহে ভীমসেনকে আছল্ল করি-লেন। মহাবল ভীম সমুথিত শর র্ফি নিবারণ क्रिया दिश महकाद्ध लम्फ व्यमान-शृक्वक शना छह। করিয়া সপ্ত শত বীরকে যম ভবনে পাঠাইলেন এবং পুনব্বার তৎক্ষণাৎ দুই সহস্র কালিঙ্গকে মৃত্যু লোকে প্রেরণ করিলেন, তাহা অদুতের ন্যার হইল। জীম-পরাক্রম ভীম এই ৰূপে পুনঃপুন বছল কলিক নৈয়া নিপাত করিতে লাগিলেনা মাতকগণ ভীক কর্তৃক হতারোহী ও শরার্ড হইয়া, বাত নিহত বেবের

নায়ে, অনীক মধ্যে নিনাদ করিতে করিতে স্থকীয় সৈন্য সকল মর্দ্দন করিয়া ইতন্তত বিচরণ করিতে লাগিল। তদনন্তর বলশালী প্রত্যাধারী মহাবাহু ভাম হর্ষ সহকারে মহা নির্দোষ শক্ষ ধনি করি-লেন। তাহাতে সমস্ত কালিক্সদিগের চিন্ত কম্পিত ও মোহ উপস্থিত হইল। সর্বা স্থলেই গজেল্র সদৃশ ভামসেন দ্বারা সৈন্য গণ কম্পিত হইতে লাগিল, এবং বাহন গণ মল মূত্র পরিত্যাগ করিল। তিনি রগস্থলে বছল পথে ইতন্তত ধাবন ও উৎপতন-পূর্বাক বিচরণ করিয়া বিপক্ষ দলের মোহ জন্মাইতে লাগিলেন। যে প্রকার রহৎ সরোবর গ্রাহ দ্বারা আলোড়িত হয়, তক্রপ কালিক্স সৈন্য ভীমসেন ভয়ে গ্রাসান্থিত ও বাধা-শূন্য হইয়া ছিন্ন ভিন্ন হইয়া পড়িল।

সমস্ত কালিঙ্গ বীর যোধগণ, অদ্ভুতকর্মা ভীম-সেন কর্ত্তক আদিত হইয়া ইতন্তত বিদ্রবণ করিতে**।** করিতে পুনর্বার আবর্ত্তিত হইলে পাণ্ডবদিগের সেনাপতি ধৃষ্টচ্নার 'যুদ্ধ কর ' বলিয়া স্থীয় সৈন্য-দিগকে সংগ্রাম করিতে আদেশ করিলেন। শিখণ্ডী প্রভৃতি বীরগণ সেনাপতির বাক্য শুনিয়া প্রহার-পটু রুধি সৈন্যের সহিত, ভীমের সমীপে আগমন করিলেন। ধর্মরাজও মেঘবর্ণ মহানাগ সৈন্যের সহিত, তাঁহাদিগের পশ্চাৎ ভাগে উপস্থিত হই-लान। शृक्के हात्र स्व शक्क ममल स्माटक आदिमा করিয়া বীর পুরুষগণে সমার্ত হইয়া ভীমসেনের পাশ ভাগ রক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। পাঞাল রাজ-পুত্র ধৃউছ্যুরের ভীম ও সাত্যকি প্রাণ অপে-কাও প্রির, তদ্ভিন্ন অপর কেহ জগতে প্রিরকারী ানাই। বীর শত্রুহন্তা ধৃউছার মহাবাহ অরিস্থদন ভীমদেনকে কলিক সেনা মধ্যে বিচরণ করিতে দেখিরা হর্ষ সহকারে তজ্ঞান পূর্জাক শব্দ ধনি ও जिश्ह्नाम क्रिएक नाभिर्मिक जीमरमन, शृके-ছাবের পারাবড নদৃশ ঘোটক ঘোজিত হেম পরি-ভূত রবের রক্ত কাঞ্চন ইজ দেখিতে পাইয়া আখন্ত হইলেন। অমেরাত্মা ধৃষ্ট ছারও ভীমদেনকে কালিজ্ব গণ কর্তৃক আক্রান্ত দেখিরা তাঁহার রক্ষার্থে অগ্রসর হইলেন। জরলীলগণের শ্রেষ্ঠ লিনি-পৌত্র পুরুষ-প্রবর সাত্যকি, দূর হইতে মনস্বী বীর ধৃষ্টছার ও রকোদরকে কালিজ বোধগণের সহিত যুক্তে প্রয়ন্ত দেখিরা বেগে তথার গমন-পূর্বাক উভয়ের পার্ম্ম প্রয়ন্ত হইলেন। তিনি চিন্ত ক্রুরতা অবলয়ন ও শরাসন গ্রহণ পূর্বাক যুক্ত করিরা শত্রু বিনাশ করি-তে লাগিলেন। তথন ভীমও কালিজদিগের মাংস শোণিত দ্বারা কর্দমময়ী ও রুধির দ্বারা প্রোভস্বতী নদী প্রাবর্ত্তিতা করিলেন। পাগুবদিগের মধ্যে মহাবল ভীমসেনই উপযুক্ত অবসর প্রান্থে ছন্তরণীয় কলিঙ্ক সেনা মধ্যে সন্তরণ করিতে লাগিলেন।

মহারাজ! ভীমসেনকে তথাবিধ দেখিয়া আপন-কার পক্ষীর যোধগণ উচ্চ শব্দে এই -ৰূপ বলিতে লাগিলেন, 'সাক্ষাৎ কাল ভীম ৰূপে কালিঞ্গণের সহিত সংগ্রাম করিতেছেন।' তদনস্তর শাস্তমু-পুত্র ভীয় রণ মধ্যে ঐ শব্দ শ্রবণ করিয়া চতুর্দ্দিকে ব্যাহত সৈন্যে সমার্ত ও সত্তর হইয়া ভীমের নিকট আগত হইলেন। তথন সাত্যকি, ভীমসেন ও ধৃষ্টল্ল্যুন্ন ভীয়ের হেমপরিস্কৃত রথ সমীপে ধাবমান হইলেন। তাঁহারা সকলে গঙ্গা-পুত্রকে বেগ সহকারে পরি-বেফ্টন করিয়া প্রত্যেকে ফ্রিন তিন বাণে সহসা ভীমকে প্রহার করিলেন। আপনকার পিতা দেব-ব্রতও সেই বত্নবান মহাধমুর্দ্ধরদিগের প্রত্যেকের প্রতি তিন তিন বাণ নিক্ষেপ করিলেন। পরে সহস্র শর ছারা মহারথীদিগকে নিবারিত করিয়া ভীমের কাঞ্চনবর্ম্মিত অশ্বদিগকে শর দারা নিহত করি-লেন। প্রতাপবান ভীমদেন হতাশ্ব রবেই অবস্থিত হইয়া গঙ্গা-নন্দনের রখের উপর বেগ সহকারে শক্তি নিক্ষেপ করিলেন। আপনকার পিভা দেবব্রভ সেই শক্তি আগত না হইতে হইতেই তিন বডে ছেদন করিয়া কেলিলেন, স্থতিয়াং তাহা ভূতলে পভিত হইদা বিশীৰ্ণ হইল। সমুব্যসিংহ ভীমনেন,

ত্ৎ পরে শৈক্য-লৌহময়ী মহতী গদা গ্রহণ করিয়া पुत्रा श्रृक्षक तथ श्रेष्ठ लक्क श्राम कतित्वन। तथि-প্রধান ধৃষ্টছ্যুদ্ধ বশস্থী ভীমসেনকে তৎক্ষণাৎ স্থ রুখে উঠাইয়া লইয়া সকল সৈন্যের সাক্ষাতেই রথ প্রত্যাবর্ত্তন করিলেন। সাত্যকিও তৎক্ষণাৎ ভী-মের প্রিয় কার্য্যাভিলাবে বাণ সমূহ দারা কুরুর্দ্ধের সার্থিকে নিপাতিত করিলেন। তাঁহার সার্থি নিহত হইলে রথের অশ্ব সকল বাত বেগে রণ ভূমি হইতে তাঁহাকে অপনীত করিল। মহারাজ! মহারধী ভীম্ম রণ স্থল হইতে অপনীত হইলে ভীম-সেন, কক্ষ দহনকারী উল্বণ বহ্নির ন্যায়, প্রজ্বলিত হইরা উঠিলেন—দেনা মধ্যে অবস্থিত হইরা সমস্ত কালিঞ্চদিগকে হনন করিতে লাগিলেন। আপনকার পক্ষীয় কোন যোধগণই ভীমসেনের সহিত যুদ্ধ করি-তে উৎসাহ করিতে পারিল না। তিনি পাঞ্চাল ও মৎস্যগণ কর্ত্বক পূজ্যমান হইয়া ধৃউদ্বায়কে আ-লিঙ্গন করণ পূর্ব্বক সাত্যকির সমীপবর্ত্তী হইলেন। যদ্রবংশসিংহ অব্যর্থ-বিক্রম সাত্যকি ধৃউদ্ব্যুদ্মের হর্ষ বর্জন করত তাঁহার সাক্ষাতে ভীমসেনকে কহি-লেন, কলিঙ্গরাজ, তৎ পুত্র কেতুমান্ এবং শক্রদেব ও অন্যান্য কালিঞ্গণকে তুমি সৌভাগ্য ক্রমেই যুদ্ধে বিনাশ করিয়াছ। গজ, ঘোটক ও রথ সমূহে সমুল, বহুল মহাপুরুষ ও যোধগুণ-নিষেবিত কালিঞ্চ সৈন্য ব্যুহ ভূমি একাকীই বাছ বল বীর্ঘ্য দারা মর্দিত করিয়াছ। অরিন্দম দীর্ঘ বাহু শিনি-পৌত্র এই ৰূপ বলিয়া রথস্থ ভীমসেনকে স্বীয় রথ হইতে লক্ষ প্রদানে তাঁহার রথে গিয়া আলিঙ্গন প্রদান করিলেন। সেই মহারথ পুনর্বার স্ব রখে আসিয়া ভীলের বলাধান করিবার নিমিত্ত ক্রোধ সহকারে আপনকার পক্ষীয় যোধগণকে হনন করিতে লাগি-(बन ।

্করিজয়াক বধ প্রকরণ ও এক পঞ্চাপ্ত সংগ্রহণ ক্ষার সমাপ্ত । ৫১ ॥

াজার কহিলেন, মহারাজ! নেই দিবনের পূর্বাফ্ সমর গত হইলে রখ, অশ্ব, হন্তী ও সাদিগণের সাতি-শর ক্ষয় হইলে ধৃউদ্ধান্ন দ্রোণ-পুত্র, শল্য, রূপ, এই তিন মহারথ মহাত্মাদিগের সহিত সংগ্রামে সংসক্ত হইলেন। পাঞ্চালরাজ-পুক্ত মহাবল ধৃষ্টপ্রায় অশ্ব-প্রামার লোক বিদিত অশ্ব কয়েকটি শাণিত দশ বাণে নিহত করিলেন। বাহন হত হইলে অশ্বপামা সত্তর হইয়া শল্যের রথে আরোহণ পূর্বক ধৃষ্ট-ছান্নের প্রতি শর সমূহ বর্ষণ করিতে লাগিলেন। স্থভদ্রানন্দন, ধৃউছায়কে অশ্বপামার সহিত যুদ্ধে মিলিত দেখিয়া শাণিত বাণ সকল বিকিরণ করিতে করিতে তথায় আপতিত হইলেন। এবং শলোর উপর পঞ্চ বিংশতি, ক্নপের প্রতি নব সংখ্য এবং অশ্বত্থামার উদ্দেশে অফ বাণ নিক্ষেপ করিলেন। তং পরে অশ্বত্থামা সত্ত্বর হইয়া অভিমন্ত্যুকে বাণ विक क्तिएं नाशिलन अवर मना काम्म ଓ क्रुश তিন বাণ দারা অভিমন্ত্রাকে বিদ্ধ করিলেন।

মহারাজ ! আপনকার পৌত্র লক্ষণ, অভিমন্তাকে যুদ্ধে প্রবৃত্ত দেখিয়া ক্রোধ সহকারে তাঁহার প্রতি অভিক্রত হইলেন, পরে তাঁহাদিগের যুদ্ধ হইতে লাগিল। লক্ষণ অতি কুদ্ধ হইয়া শাণিত বাণে অভিমন্থাকে বিদ্ধ করিলেন, তাহা অদ্ভুতের ন্যায় হইল। অভিমন্মও কুদ্ধ হইরা স্বরা-পূর্বক লবুহস্তে পঞ্চ শত শরে ভাতা লক্ষণকে বিদ্ধ করিলেন। তদনস্তর লক্ষণ শর ছারা অভিমন্ত্যুর ধনুকের মুক্তি দেশ ছেদন করিলেন, তাহা দেখিয়া জন সকল চিৎকার শব্দ করিয়া উঠিল। বীর শত্রুহন্তা অভি-মন্ত্যু সেই ছিন্ন শরাসন পরিত্যাগ করিয়া জন্য এক বেগবান্ বিচিত্র চাপ গ্রহণ করিলেন। সেই পুরুষ-প্রধান দ্বর যুক্ত ও পরস্পর ক্বত প্রতীকারেবী হইরা শাশিত তীক্ষ্ণ বাণ সমূহ দারা পরস্পার হনন করিতে বালিবেন। রাজা ছুর্ফ্যোখন আপনকার পৌত্র অঞ্জি মন্থ্য কর্তৃক মহাবল স্বীয় পুত্রকে প্রীড়িড দেখিয়া তাহার সমীপে গমন করিলেন। ক্রর্থ্যেশন প্রাকৃত

হইলে সমস্ত রাজারাই অভিমন্তাকে রশ সমূহ দারা **हर्जुर्कित्क शत्रिदब्छैन क्त्रिलन। क्**ष्य-चूला शत्राक्रम-শীল যুদ্ধ-ছুৰ্জ্জন শৌৰ্যা-সম্পন্ন অভিমন্ত্য সেই শূর-গবে পরিবৃত হইরাও লান হইলেন না। ধনঞ্জর, স্বীর আত্মজ স্বভদ্রা-পুত্রকে তাদৃশ রথিগণ সংযুক্ত দে-ধিয়া কুন্ধ হইয়া তাঁহার পরিতাণ কামনায় সেই দিকে অভিদ্রুত হইলেন। তৎ পরে ভীন্ন দ্রোণ্ প্রমুখ রাজগণ রথী, গজারোহী ও সাদীগণের সহিত, সহসা সব্যসাচীর প্রতি ধাবমান হইলেন। নাগ, স্বাস্থ্য, রথ ও সাদিগণের তীত্র পদধূলি সহসা উদ্ধৃত হইয়া স্থৰ্য্য-পথগত দৃঊ হইতে লাগিল। সহস্ৰ সহস্ৰ গজারোহী ও শত শত মহীপালেরা কোন প্রকারেই তাঁহার বাণ পথ নিরাক্ত করিয়া সমীপবন্তী হইতে পात्रित्वन ना। मकल व्यागीर निनाम क्रिट नागिन; मिक् नकल जिमित्रमয় इहेल; कूळ्शात्वत निमाळ्ल অনীতি প্রকাশ পাইতে লাগিল। কিরীটীর শর ममूरह कि अखतीका, कि पिक्, कि विपिक्, कि ভूমि-তল, কি ভাস্কর, কিছুই দৃষ্টিগম্য রহিল না। অনেক হন্তীর ধক্ত অবসাদিত, অনেক রথির অশ্ব হত এবং অনেক রথযুথপতির রথ সকল সাতিশয় ধ্বেমান দৃই इहेट मात्रिम। क्यान क्यान तथीरियरक तथ विहीन হইয়া বলয়-হন্তে আয়ুধ ধারণ পূর্ব্বক ইতন্তত ধাব-मान इटेंट एक्षा शिल। अर्ब्ब्स्न ज्या शकादाही গঞ্জ এবং হয়ারোহী হয় পরিত্যাগ করিয়া চতুর্দ্দিকে বিক্রত হইতে লাগিল। অর্জুন বাণে রাজগণকে র্থ হইতে, গজ হইতে ও অশ্ব হইতে পাতিত ও পাত্যমান দেখিতে লাগিলাম। অর্জুন রৌদ্র মুর্জি ধারণ পূর্বক রণ স্থলে ইতন্তত যোধগণের গদা, ধড়গ প্রাম, ভূণীর, শর, শরামন, অঙ্কুশ ও পতাকার সহিত উদ্যাত ৰা**ছ সকল ছে**দ্ন করিতে লাগিলেন। পরিষ, মুদার, প্রাস, ভিন্দিপাল, নিজিংশ, তীক্ষ্ পরশার, তোমর, চর্মা, কবচ, এজ, সর্বাত নিক্ষিপ্ত चनाना श्रेष्ठ, इत, रमस्थ, बङ्गम, अराजान,कमा ७ व्याद्युत् ताला ताला निर्माण । इस्तिम रहेना

রণ ভূমিতে ইতন্তত বিকীর্ণ দৃষ্ট হইল। সহারাক্ষ!

আপনকার সৈন্য মধ্যে এতাদৃশ পুরুষ কেহাছিল
না, যে সমরে অর্জুনের সম্মুখ যুদ্ধে কোন প্রকারে

অগ্রসর হয়। যে যে ব্যক্তি সমরে অর্জুনের সম্মুখ

যাইতে লাগিল, সেই সেই ব্যক্তিই অর্জুনের তীক্ষ্

শরে পরলোক প্রাপ্ত হইতে থাকিল। আপনকার

যোধগণ সর্ব্ব প্রকারে পলারিত হইলে বাস্তুদেব ও

অর্জুন মহা শহা ধনি করিতে লাগিলেন।

আপনকার পিতা দেবব্রত সৈন্যগণকে ভগ্ন হইতে দেখিয়া সমর মধ্যে জোণাচার্যাকে হাস্যমুখে কহি-লেন, রুক্ষের সহিত এই পাওুপুত্র বলবান বীর অর্জুন সৈন্যদিগের প্রতি যে প্রকার করিতে সমর্থ, তদ্রপই করিতেছেন। ইহাঁর যে প্রকার কালাস্তক যম সদৃশ মুর্ত্তি দেখিতেছি, ইহাতে আজি কোন প্রকারেই সমরে ইহাঁকে জয় করিতে পারা যাইবে না। দেখ, এই মহতী অনীকিনী পরস্পর ঈক্ষণ-পূর্বক বিদ্রুত হইতেছে, এক্ষণে ইহাদিগকে প্রত্যা-বর্ত্তিত করিয়া যুদ্ধে নিযুক্ত করাও অসাধ্য। এবং ভানুমান্ও সমুদায় লোকের সর্ব্ব প্রকারে দৃষ্টি অপ-হরণ করত অন্তাচল অবলম্বন করিতেছেন। হে পুরুষ-প্রবর! যোধগণ ভীত ও আন্ত হইয়াছে, ইহা-রাও কোন প্রকারে আর সংগ্রাম করিতে পারিবে না, অতএব সৈন্যগণের অবহার করাই বিবেচনা করিতেছি।

মহারাজ! মহারথ ভীয়া, আচার্যাসম্ভম দ্যোণকে এই ৰূপ কহিয়া আপনকার পৃক্ষীয় সৈন্যগণের অব-হার করিলেন। তদনস্তর স্থ্যা অন্তগত হইলে সায়ং সময়ে উভয় পক্ষেরই সৈন্যাবহার হইল।

দ্বিতীয় দিবসীর যুদ্ধ ও দিপঞ্চাশ অধ্যায় 👵 সমাপ্ত॥ ৫২॥

The state of the s

্ সঞ্চয় কহিলেন, মহারাজ। শর্কারী প্রভান্ধা হইলে শত্রুতাপন শাস্তমু-নন্দন জীয়, বৈনাগণকে যুদ্ধার্থ সক্ষিত হইতে স্থাদেশ করিলেন। কুরুপিয়ারহ

ৰুদ্ধ আপৰকার পুত্রদিনের জন্মকাতকী হইরা সেই দিন গায়ত নামক মহাবাহ করিলেন। সেই গায়ত বৃহহের ভূগুন্থলে দেবত্রত স্বরং থাকিলেন। চকুর্বরে দ্রোণ ও সাত্মত ক্লতবর্মা রহিলেন। সমবেত ত্রিগর্ভ, মৎস্য, কৈকের ও বাটধান দেশীরগণের সহিত অশ্ব-খামা ও কপাচার্য্য এই ছুই যুশস্বী উহার শিরংস্থলে चवच्छि स्टेलन। ভূরিশ্রবা, শল, শল্য, ভগদত্ত ও कत्रज्ञथ, ইহাঁরা মদ্রক, সিন্ধু, সৌবীর ও পঞ্চনদ रमणीय्रभर्ग मगरवे रहेशा छेरात थीवा अरमर् সন্নিবেশিত হইলেন। রাজা ছুর্য্যোধন অনুগত ও সহোদরগণে পরিবৃত হইয়া উহার পৃষ্ঠ দেশ আশ্রয় করিলেন। অবস্তি দেশীয় বিন্দ ও অনুবিন্দ, কায়োজ, শক ও শ্রসেন দেশীয় যোধগণ উহার পুচ্ছ দেশে অবস্থিত হইলেন। মাগধ, কালিক ও দাসেরকগণ উহার দক্ষিণ পক্ষ অবলম্বন করিয়া রহিলেন। কা-ৰাৰ, বিকুঞ্জ, মুগু ও কুণ্ডীর্ষগণ র্হদ্বলের সহিত উহার বাম পক্ষ আশ্রয় করিলেন।

মহারাজ! পরস্তপ সব্যসাচী বিপক্ষগণের সেই ৰূপ ব্যুহ সক্ষিত দেখিয়া ধৃষ্টছান্নের সমভিব্যাহারে ৰ্যুছ রচনা করিলেন। পাগুবেরা ভবৎ পক্ষীয় গারুড় ৰ্যুহের প্রতিপক্ষে অর্জচন্ত্র নামে অতি দারুণ ব্যুহ রচনা করিলেন। উহার দক্ষিণ অগ্রভাগে নানা শব্র সমূহ সম্পন্ন নানা দেশীয় নৃপগণে পরির্ত হইরা ভীমসেন বিরাজমান হইলেন। তাঁহার পশ্চাৎ মহারধ বিস্নাট ও ক্রপদ, তাঁহাদিগের পরেই নীলা-যুধ-সম্পন্ন নীল রাজা, নীলের পর চেদি, কাশি, করুব ও পৌরবগণে সমার্ভ মহার্থ ধৃইতকৈছু অবস্থিত হইলেন। ধৃউচ্চান্ন, শিখণ্ডী, পাঞ্চাল ও প্রভদ্রকগণ মহৎ সৈনাদলের সহিত উহার মধ্যস্থলে অবস্থিত হইয়া যুদ্ধ নিমিত প্রতীকাকরিতে লাগিলেন। রাজা ৰুখিন্ঠিরও গল-বাহিনীতে পরির্ভ হইরা নেই স্লেই বিরাজিত রহিলেন। তাঁহার পরেই নাতাকি, ভৌপ-দীর পঞ্চ পুত্র ভাষাভিষয়। সুহিলের। তাঁহাদিগের भारतरे रेक्कावान, ७९ भारत बर्धाएका, ७६ भारत कहा-

রব কৈকেরগণ স্থ্যা সহকারে যুদ্ধার্থ সাজিত হইরা রহিলেন। তাঁহাদিগের পরেই বাম অপ্রভাগে, সকল জগতের রক্ষক জনার্দ্ধন যাঁহার রক্ষক,সেই মানবেজ্র ধনঞ্জর অবস্থিত হইলেন। এই বপে পাণ্ডবেরা এবং তৎপক্ষীয় রাজগণ আপনকার পু্জাদিগের বধ নিমিন্ত মহাবাহ প্রতিবাহিত করিলেন।

মহারাজ! তদনন্তর উজর পক্ষেরই রখী ও গজারোহীগণের সহিত পরস্পার যুদ্ধ হইতে লাগিল;
তাঁহারা পরস্পার হাতাহত করিতে লাগিলেন। স্থানে
স্থানে রখী ও গজারোহীদিগকে যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়া
পরস্পার হনন করিতে দেখা গেল। সেই তুমুল যুদ্ধে
আপনকার ও তাঁহাদিগের পক্ষের যুদ্ধে-প্রবৃত্ত ধাবমান ও পৃথক্ পৃথক্ পরস্পার হননকারী রখী নরবীরদিগের তুমুল শব্দ, ছুন্ডুভি ধনিতে বিমিশ্র হইয়া
নভোমগুল স্পর্শ করিতে লাগিল।

ত্রিপঞ্চাশ অধ্যার সমাপ্ত॥ ৫৩॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! উভয় পক্ষের ব্যুহিত অনীক মধ্যে অতিরথ ধনঞ্জর বাগ সমূহ ছারা আপ-নার রথ যুথপ সকলকে নিপাতিত করত রথসৈন্য বধ করিতে লাগিলেন। ধার্ভরাই দল প্রলয় কালীন কাল সদৃশ ধনঞ্জয় কর্তৃক হন্যমান হইয়াও অতি যতু সহকারে পাগুবদিগের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিতে লাগি-লেন। হে রাজন্! তাঁহারা নির্মাল যশঃ প্রার্থী হইয়া মৃত্যুই যুক্ষের নিবর্ত্তক মনে করিয়া একাগ্র মানসে বছ প্রকারে পাণ্ডব-বর্ঝধিনী ভগ্ন করিতে লাগিলেন; তাহাতে পাণ্ডব পক্ষীয়েরা ভগ্ন হইতে লাগিল। তথন कि পांखन, कि क्लोबन शकीब, मञ्चलाब रिनारे खन्न, পলারিত ও পরিবর্ত্তিত হইতে লাগিল, কিছুই আর (वायभागा ब्रिह्मि ना। श्रीमार्थिनी व्रवस्थि উজ্ত হইরা দিবাকরকে আছল করিরা কৌলল, र्कान थकारतरे रक्ष मिक् विषिक् स्थान केंद्रिएड পারিল না; রণ ক্ষেত্রে ইভতত নংজা, নাম ও সোৱা

केट्सार बहुबान बाजारे करन शक्रमात्र मरकाम रहेट नामिन। देनीवर्गातमा वृार नजानका दान কর্ত্ত রক্তিত হওরাতে পাওবেরা ভেদ করিতে পারিলেন না; সেই ৰূপ পাওবদিগের মহাবৃহও সবাসাচী ও ভীমদেন কর্তৃক রক্ষিত হওয়াতে কৌ-রবেরা ভেদ করিতে সমর্থ হইলেন না। উভর সে-নারই রথী ও গজারোহী মানবেরা ব্যুহের অগ্রভাগ হইতে আপতিত হইয়া যুদ্ধ করিতে লাগিল। অশা-রোহীগণ অস্বারোহীদিগকে বিমলাগ্রভাগ বিশিষ্ট ঋষ্টি ও প্রাসাত্র দারা নিপাতিত করিতে থাকিল। বেই অতিভয়ন্ধর রণে রখী রখীদিগের সন্নিহিত হুইরা কনক-ভূষিত বাণ সমূহ দারা সংহার করিতে লাগিল। আপনার ও পাগুব পক্ষীর ভূরি ভূরি গজা-রোহী ভূরি ভূরি সংযুক্ত গজারোহীদিগকে নারাচ, শরও তোমর দারা পাতিত করিতে লাগিল। সমূহ সমূহ পদাতিগণ পরস্পর জাতকোধ ও উৎসাহ-সম-विक रहेता जिम्मिशान ७ शतस्य ममूरह ज्ति जूति পত্তিগণকে বধ করিতে লাগিল। রখীগণ গজ-যোধী-দিগকে সম্মুখে পাইয়া গজের সহিত তাহাদিগকে এবং গল্প-যোধীগণও রখীদিগকে সন্মুখে পাইয়া তা-হাদিগকে নিপাতিত করিতে লাগিল। অশ্বারোহী-গণ রথীদিগকৈ, রথীগণও হয়ারোহীদিগকে প্রাসাক্ত দারা নিহত করিতে লাগিল। উভয় পক্ষের সেনা মধ্যে পদাতিগণ রথীদিগকে, রধীগণও পদাতিদিগকে শার্ণিত শস্ত্র ছারা পাতিত করিতে লাগিল। গজা-রোহীগণ হয়ারোহীদিগকে, হয়ারোহীগণও গজা-রোহীদিগকে পাতিত করিতে থাকিল, তাহা অদ্ভুতের नगात्र बहेल। हात्न हात्न व्यथान व्यथान शकाद्याही গণ कर्जुक भागाजिशन, धवर भागाजिशन कर्जुकछ शका-রোহীগণ নিপাতিত ক্টতে দেখা গেল। শত শত বহুতা সহতা পদাতিস্কু নাদিমণ কর্তৃক, এবং শভ শত সহত্র সহত্র সাদিসজা পদাভিদ্যা কর্তৃক নিপা-खरान पृषे रहेंदेंछ नातिन। बर्बिना इक, कार्चुक, **ट्यायत, द्याम, महा, भहिय, कम्भव, भक्ति, हिक्कि**

কৰচ, কুণণ, অনুশ, বিমল অমি, বৰ্ণ পুৰা শর, পরি-ভোম, কুণা, মহামূল্য করল ও মাল্যদাম, এই সকল পতিত বস্তুতে রণভূমি চিত্রিত হইরা দীন্তি পাইতে লাগিল। পাতিত হন্তী, অশ্ব ও মনুষ্য শরীরে এবং মাংস শোণিত কর্দমে রণহল অগম্য হইল। তথন মনুষ্য রক্তে ক্ষিতিত্ব সিক্ত হওরাতে ধূলি সকল শমতা পাইল, স্থুতরাং সমস্ত দিক্ই নির্মান হইল। হে ভরত-প্রবর! জগৎ বিনাশের চিত্র স্বৰূপ রণ হলে চতুর্দিকে অগণ্য কবন্ধ সকল উপিত হইতে লাগিল।

মহারাজ! সেই স্থদারুণ মহাভয়ন্কর যুক্তে রুধী দিগকে চভুৰ্দিকে ধাৰমান হইতে দেখা গেল। তদনন্তর ভীয়, দ্রোণ, সিন্ধুপতি জয়দ্রখ, পুরুমিত্র, বিকর্ণ, স্থবল-পুত্র শকুনি, এই সকল ছুর্দ্ধর্ব সিংহ-जूना পর किमनीन বীর পুরুষেরা সমরাসক্ত হইয়া পাগুবদিগের সৈন্য ভগ্ন করিতে লাগিলেন। এবং সকল রাজগণের সহিত ভীমসেন, রাক্ষস ঘটোৎকচ, সাত্যকি, চেকিতান ও জৌপদীর পঞ্চ তনয়, সমরস্থ আপনার পুত্রগণ ও আপনার পক্ষের অন্যান্য याधगगटक, रमवभग कर्ज्क मानविमभटक विक्राविक করণের ন্যায়, বিদ্রাবিত করিতে লাগিলেন। स्वर ক্ষজ্রির প্রধানেরা সমরে পরস্পর হনন করত রক্ত-সিক্ত হইয়া দানবগণের ন্যায় ভীষণ ৰূপে বিরাজ-মান হইলেন। উভয় পক্ষেরই প্রধান বীরগণ বিপক্ষ বীরদিগকে জয় করিয়া নভন্তলে রুহৎ গ্রহণণের ন্যায় দৃষ্ট হইতে থাকিলেন। তৎপরে আপনার পুত্র ছুর্যোধন সহস্র রখির সহিত সমবেত হইয়া পাণ্ডবগণ ও ব্লাক্ষস ঘটোৎকচকে আক্ৰমণ করি-লেন। সমস্ত পাওবেরাও মহতী নেলায় সমবেত হইরা অরিন্দম ভীম ও দ্রোণকে আক্রম করি-লেন। কিরীটিও সংকুদ্ধ হইয়া ইতন্তভঃছিত এধান প্রধান পার্ধিবগণের প্রতি বুলে বঞ্চ ইইলেন। बर्जूम-शूक ७ गांछाकि, खर्गनाम-रातान महिख युकार्थ अञ्चल कत्रिलम । उपमस्त्र शत्राचन जिलीक्

ally to the second of the first

আপনকার ও পর পক্ষীরন্তার পুনর্কার গোষ-হর্মণ ভুমুল সংগ্রাম গ্রহত হইল। চভুঃপঞ্চাশ অধ্যার সমাপ্ত । ৫৪।

া সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! তৎ পরে সেই সকল পার্থিবগণ রণে কাজ্কনকে দেখিরা কোধ-পরতক্ত হইয়া সহস্র সহস্র রধীর সহিত তাঁহাকে পরিবেইন ক্রিলেন। অনন্তর তাঁহাকে রথ দিচয়ে বেফন করিয়া বছল সহত্র শরে সমাকীর্ণ করিলেন। বিমল তীক্ষ্ শক্তি, গদা, পরিঘ, প্রাস, পরশ্বধ, মুদার ও মুবল সকল কাল্গনের রথের প্রতি নিক্ষেপ করিতে লাগি-লেন। পার্থও সর্বাদিগের পুঞ্জ পুঞ্জ শলভ দলের ন্যায় সেই বাণ বর্ষণ কনক-ভূষণ শর সমূহ দারা অবরোধ করিলেন। সেই স্থলে বীভৎস্থর অলৌ-কিক হস্তলাঘৰ দেখিয়া দেব, দানব, গন্ধৰ্বা, পিশাচ, উরগ ও রাক্ষসগণ 'সাধু সাধু' বলিয়া তাঁহার প্রশংসা করিতে লাগিলেন। সাত্যকি ও অভিমন্ত্য মহতী সেনায় সমবেত হইয়া সৌবল ও তদীয় শৌর্য্য-সম্পন্ন সৈনাগণকৈ রোধ করিতে প্রবৃত্ত হইচেন। অনন্তর সৌবল খ্রগণ ক্রোধান্বিত হইয়া নানাবিধ শন্ত্র দ্বারা সাত্যকির উত্তম রথ তিল তিল করিয়া ছে-দন করিল। শত্রুতাপন সাত্যকি রণ কালে ছিন্ন রুধ পরিত্যাগ করিয়া ত্রা-পূর্বক অভিমন্থ্যর রথে আ-ব্লোহণ করিলেন। ভাঁহারা উভয়ে এক রথে আৰুঢ় হুইয়া সন্নতপর্বে শাণিত শর সমূহ দারা স্বরা-সহ-কারে সৌবল দৈন্য হনন করিছে লাগিলেন। ভীয় ও জোণ রণে সংযত হইয়া কম্বপত্র-পরিচ্ছদ তীক্ষ্ শব্ৰ সমূহ ছারা ধর্মরাজের বাহিনী বিনাশ করিতে লাগিলেন। ভদনন্তর ধর্মপুত্র রাজা যুখিন্তির, নকুল ७ वहराव मार्क रेगरनाज्ञ माक्कारण द्यांग रेगरनाज अच्छ উপক্রভ इरेलम । तः अकात পূর্ব काल দেহাজ্যুগণের জ্লারণ যুগ হইয়াছিল, সেই প্রকার केराविकार का वर्ष पूर्व पछि महा वश्याप **文字 1997年** 1997年 1997年

প্রাক্তা তুর্বেরাধন ভীমনেন ও ঘটোংক্রাক্তে লংথামে মহৎ কার্য্য করিতে দেখিরা তাঁহানিনের
সম্পুর্থে অভিগমন-পূর্ব্ধক তাঁহানিলের উতর্কেই
নিবারিত করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। মহারাক্ত! সেই
হলে আমরা হিড়িয়া-পুত্রের অভূত পরাক্রম দেখিলাম, যে, সে পিতা ভীমসেনকেও অতিক্রম করিয়া
যুক্ষে বিক্রম করিতে লাগিল। ভীমসেনও সংকুক্ত
হইয়া যেন হাসিতে হাসিতে অমর্থণ তুর্য্যোধনের
হলরে এক শর বিদ্ধা করিলেন। তদনন্তর রাজা
তুর্য্যোধন ভীমসেনের সেই কঠিন শর প্রহারে বিমোহিত ও মূর্জাপন্ন হইয়া রঝোপত্তে বসিয়া পড়িলেন। তাঁহার সারথি তাঁহাকে সংজ্ঞা-শূন্য দেখিয়া
সত্তর হইয়া রণহল হইতে তাঁহাকে অপনীত করিল,
তাহাতে তাঁহার সৈন্য সকল ভয় হইতে লাগিল।

তৎ পরে ভীমসেন সেই কৌরব সৈন্যকে ইতস্তত ভগ হইয়া ধাবিত হইতে দেখিয়া তীক্ষ্ণর সমূহ দারা তাহাদিগকে প্রহার করিতে করিতে তাহা-দিগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ অমুগমন করিতে লাগিলেন। রথিত্রেষ্ঠ ধৃউছান্ন ও ধর্মপুত্র রাজা যুধিষ্ঠির ভীন্ন ও प्जारनंत्र मोक्कारङ **काँ**शिमिरनंत्र रेमनारक भक्क-रेमना-বিনাশক তীক্ষ্ণ শর সমূহ দারা নিহত করিতে লাগি-লেন। মহারথ ভীয় ও দ্রোণ আপনকার পুজের পলায়মান সৈনাদিগকে নিবারণ করিতে সমর্থ হই-লেন না। সেই সকল সৈন্য মহান্থা ভীয় ও জোণ কর্তৃক বার্যামাণ হইরাও তাঁহাদিগের উভয়ের সা-कार्टि भनावन क्रिट्ड नाजिन। उपनस्त्र महञ्ज সহস্র রথ ইতন্তত ধাবমান হইলে এক-রথস্থ শিনি-কুল-ভূষণ সাত্যকি ও স্বভক্রা-পুত্র অভিমন্যু সমরে চতুর্দ্দিক্ হইতে সৌবলী সেনা বিনাশ করিতে লাগি-লেন। তথন ভাঁছালা ছুই জন বেন নভন্তলে অমা-বাসাগ্রন্থত চন্দ্র স্থাের নাার শোভা পাইতে লাগ্রিল লেন। আর্কুনও কুক হইয়া স্থাপনকার নৈন্যক্ষেত্র **উপর, মেঘ্রগুলীর কর্মারা বর্ষণের ন্যায়, শত্র বর্ষ** করিছত লাগিলেন। সেই কৌরব লৈন্য সকল পা

ধের শর বর্ষণে বধাসান হওয়াতে বিকাম ও অরে কিশিত হইয়া সমর হল হইতে ধাৰমান হইছে লাগিল। ভাহাদিগকে পলারমান দেখিয়া ছুর্য্যোধন-হিউরী মহাবল ভীয় ও জোণ সংকুদ্ধ হইয়া নিবারণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। তৎ পরে রাজা ছুর্য্যোধন চতুর্দ্ধিকে জৰমাণ সেই সৈন্যদিগকে আশ্বাস প্রদান করিয়া নিবর্ডিত করিলেন। মহারণী ক্ষজিলয়েরা যে যেখানে আপনকার পুত্রকে দেখিল, সে সেই স্থানেই নির্ভ হইল। তাহাদিগকে নির্ভ দেখিয়াই ইতর ব্যক্তি সকল পরস্পার স্পর্কা দারা এবং জনেকে লক্ষা প্রযুক্তও নির্ভ হইল। সেই সকল সৈন্যদিগের পুনরাবর্ডন সময়ে চক্রোদরে পূর্যামাণ সাগর বেগের ন্যায় বেগ হইয়া উঠিল।

রাজা স্থযোধন তাহাদিগকে নির্ত্ত দেখিয়া স্বরা-পূর্ব্বক ভীত্মের নিকট গমন পূর্ব্বক বলিতে লাগি-লেন, পিতামহ! আমি যাহা আপনাকে বলি, তাহা আবণ করুন। আপনি, পুত্র ও সুহৃদ্ভন সহিত অন্ত্রজ্ঞ প্রধান জ্রোণ এবং মহাধমুর্ণর রূপাচার্য্য বর্ত্তমান থাকিতে যে, সৈন্য সকল পলায়মান হয়, ইহা আপনাদিগের যে অমুরূপ কার্য্য হইতেছে, তাহা বিরেচনার হর না। সংগ্রামে কোন প্রকারেই পাগুব্দিগকে কি আপনার, কি আচার্য্য জোণের, কি অশ্বত্থামার, কি ক্লপাচার্য্যের প্রতিযোগী মনে कत्रिना। यथन रेननामिशरक वधामान मिथेशांध আপনি ক্ষমা করিতেছেন, তখন নিশ্চয়ই আপনি পাশুবদিগকে অমুগ্রহ ক্রিভেছেন। অভএব পূর্বে সমাগম কালে আমাকে আপনার বলা কর্তব্য ছিল বে, " আমি পাওবগণ, সাত্যকি বা ধৃউচ্যুৱের সহিত সুদ্ধ করিব না," তাহা হইলে আপনকার ও जाहार्या मरानासम्बद्ध ये कथा छनिया छचनरे সান্ধি কর্থের সহিত কর্তব্য বিষয় চিস্তা করিয়া একটা নিক্স করিছাম। বে বাহা হউক, একণে यकि धरे छेशक्कि मरबूकि जानि जाशनकात छ भागमा अक्षेत्रपद्भव পरिकामा ना हरे, जारा स्रेज

আপনারা উভরে দ দ বিজ্ঞান্ত্রক ব্যান্ত করত।

করত কোথে চক্ বিবৃণিত করণ পূর্বক তাঁহাকে
করত কোথে চক্ বিবৃণিত করণ পূর্বক তাঁহাকে
কহিলেন, রাজন। আমি বছবার আপনাকে এই
হিতকর ও পথা বাকা বিলয়াছিলাম যে পাওবেরা
যুক্তে স্বাস্ব দ্বেগণেরও অজেয়। সে যাহা হউক,
একণে এই সংগ্রামে এই র্জের যত দূর সাধ্য, ভাহা
সামর্থান্ত্রসারে করিতেছি, আপনি বান্ত্রসারণর সহিত
দেখুন। আজি সর্ব্ব লোকের সাক্ষাতে বান্ত্রব ও
সৈন্য গণের সহিত বীর পাওব দিগকে নিবারণ
করিব।

জনাধিপতি আপনকার পুত্র, ভীয়কর্তৃক এৰপ অভিহিত হইয়া হর্ষ সহকারে শব্দধনি ও ভেরী বাদ্য করিলেন। সেই মহৎ নিনাদ শুনিয়া পাগুবেরাও শব্দ, ভেরী, ও মুরজ বাদ্য করিতে লাগিলেন।

পঞ্চ পঞ্চাল অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৫৫ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! সেই স্থদারুণ যুদ্ধে আমার পুদ্রের বাক্যে বিশেষ ৰূপে ক্রোধিত হইয়া ভীয় প্রতিজ্ঞা করিয়া পাগুবদিগের প্রতি কি ৰূপ করিলেন, এবং পাগুবগণ ও পাঞ্চালেরাই বা তাঁহার প্রতি কিৰূপ যুদ্ধ করিলেন, তাহা আমার নিকট কীর্ত্তন কর।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! সেই দিবসের পূর্বারের ভূমিত কাল গতে, দিবাকর কিঞিৎ পশ্চিমদিগবলমী এবং মহাত্মা পাওবেরা জয় প্রাপ্ত ও ছাত
হইলে, সর্বাধর্ম বিশেষজ্ঞ আপনকার পিতা দেবক্রত
আপনকার সমস্ত পূত্রগণ ও মহতী সেনা সমতিব্যাহারে বেগবান অশ্ব হারা পাওব সৈনাদিগের উপর
ধাবমান হইলেন। হে ভারত। তদনকর পাওববিশের সহিত আমাদিগের লোমহর্ষণ ভূমুল মুদ্ধ
প্রকৃত্ত হল। এই স্থান্তান ক্রেক্ত আপানকার
অনুভ্ত হইল। এই স্থান্তান ক্রেক্ত আপানকার
ক্রিনারণানির নার ক্রেক্ত হার ও তলামানের ভূমুল
ক্রিনারণানির নার ক্রেক্ত হার ও তলামানের ভূমুল

नक क्रेंट्ड काविन, अवर विन, नाहि, देशदक काव হও, নিয়ক হও, ছিল হও, রহিনাহি, প্রহার কর, এই वन भक् नक्षव बण्ड-इरेट्ड नानिन। काक्न-छसू-बाग, कित्री छ बच्च नकरणत পछन बनि, रेनरण निकाभण्डानत्र नम् नम्भ रहेर्छ नातिन। न्छ न्छ সহঅ সহজ্ঞ মন্তক ও ভূবণ-শোভিত বাছ সকল ভূতলে পড়িয়া বিচেইমান হইতে লাগিল। কোন কোন পুরুষ প্রবন্ধ গৃহীতান্ত্র, কেহ কেহ বা উদ্যত-भद्राजन बरेबारे हिब-मखक वरेबा छम्दच बहिन। রণ ক্ষেত্রে মন্ত্রা, অশ্ব ও নাগ শরীর হইতে সমূৎ-পन्ना, शृधु ७ গোমায়ুর হর্ষবর্জিনী রুধিরবাহিনী মহা স্রোতস্থতী ঘোরা নদী উৎপন্না হইল। মাতঙ্গের षक मकन थे नंदीत मिना, माश्म मानिष्ठ छेरात কৰ্দম, এবং উহা পরলোক ৰূপ সাগরাভিমুখে বহ-माना रहेएछ लाभिन। महाद्राख! व्यापनकातः श्रुक দিগের সহিত পাগুবদিগের যে ৰূপ যুদ্ধ দেখিলাম, এই প্রকার যুদ্ধ কধন দৃষ্ট বা শ্রুত হয় নাই। সেই রণ স্থলে নিপাভিত যোধগণের শরীরে রথ গমনের পথ থাকিল না, পতিত গজ শরীর ছারা সেই রণ-ক্ষেত্র যেন নীলবর্ণ গিরি শৃঙ্গে সমার্ভ হইরা উঠিল। পরিকীর্ণ বিচিত্র কবচ ও শিরস্তাণ সমূহ দারা রণ স্থল, শরৎ কালের নভত্তল সদৃশ শোভমান হইল। কোন কোন মনুষ্যেরা আঘাত প্রাপ্ত হইয়া অদীন ভাবে দর্প সহকারে দস্তাঘাতে পীড়ন দারা প্রকর্ষণ করিতে সমরে শত্রু পক্ষের উপর ধাবমান হইতে লাগিল। অনেকে সমর ভূমিতে পতিত হইরা, পিত! ভাত! সধা! বন্ধু! বয়স্য! মাতৃল! আমা-কে পরিত্যাগ করিও না বলিয়া ক্রন্সন করিছত नांभिना व्यत्नदक, चारेन, निकटि चारेन, कि **डीड स्ट्रेट्ड**? काषात्र वाटेक ? चामि नगरत আছি, ভূমি ভর করিও না বলিরা চিৎকার করিতে লামিল এভাচুল সংগ্রাম ক্ষেত্রে লাভ্যু-পুত্র ভীর विश्वका बोधनाकात धमुक रूख जानीवियं नर्न मनुन में क्षेत्र कार्य अस्ति क्षित्र क्षित्र क्षित्र । अस्

রাজ। সংবছত্তভাষি সহালয়, লর বারা লম্ভ দিক্ এক-পথ করত পাওব পক্ষীর রথীদিগকে বলিয়া বলিয়া নিহত করিভেছিলেন। মহারাজ। তাঁহাকে नर्स एटनरे रुखनायन धार्ममा कन्नछ जानाउ ठक সমূপ হইরা যেন রথ বজে নৃত্য করিতে দেখা যাই-ভে লাগিল। ভাঁহার লাম্ব নৈপুণা হেভু পাওব ও স্ঞায়গণ সমর স্থলে সেই এক বীরকে বছ শত সহস্র দেখিতে লাগিলেন। তাঁহার আত্মাত্তক এন্দ্রজালক বলিয়া তত্ত্বসকলে মনে করিতে লাগিল। তাঁহা-কে পূর্বা দিকে দেখে আবার ক্ষণ মাত্রেই পশ্চিম **पिटक (पटर्थ; जावाद क्या माट्यहे छेल्द पिटक** নিরীক্ষণ করে, এবং তৎক্ষণাৎ পশ্চিম দিকে অব-লোকন করে। পাগুর্বদিগের মধ্যে কেহই তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ হইলেন না ; কেবল তাঁহার কাৰ্মুক-নিৰ্মুক্ত বাণ সমূহই দেখিতে লাগিলেন। বীরগণ তাঁহাকে সমরে সৈন্য বিনাশ ও স্থদারূণ কর্ম করিতে দেখিয়া বছবিধ বছল আর্ডনাদ করিতে লাগিল। সহস্ৰ সহস্ৰ কলিয় গণ, অমাসূষ ৰূপে বিচরণকারী আপনকার পিতা সেই সংকুদ্ধ ভীন্ন-ৰূপ অগ্নিতে শলভের ন্যায় প্রমোহিত হইয়া আত্ম বিনাশার্থ পতিত হইতে লাগিল। সেই লমুহন্তে যুক্জ-শীল বীরের বছত্ব হেভুও সমরে কোন একটা শর নর, নাগ বা অখ শরীরে বার্থ হইল না। একটি বিমুক্ত বাণেই বৰ্ম্ম-সংনক্ষ হন্তীকে যেন বজ দারা পর্বত ভেদের ন্যায় ভেদ করিয়া কেলেন। স্থতীক্ষ্ এক নারাচ খারা একত্রিত বর্মিত চুই ভিন গঞা-রোহী সংহার করেন। যুদ্ধে বে কেহ সেই নরব্যা-ক্ষেত্র সমীপত্ত হয়, সে মুহুর্ড কাল মাত্র দৃষ্ট হইয়াই ভূজনে পতিত দৃষ্ট হয়। যুধিন্তিরের মহাসৈন্য দল पाकृत-वीद्य जीव कर्जुक वधामान श्रेता नरव्यका विभीर्ग हरेनः वहाचा वास्ट्रान्य ७ शार्थंत्र कांच्य ভেই শার বর্ষণে পীড়িত হইয়া প্রকল্পিত হাইতে লা এল। পাশুৰ পক্ষ মহারবগণ ভীম বাণে প্রীভিক্ত इंदेश श्लातन शत्र क्रेटक नाशिन ; जनस्थिक

গণ यप्नवान स्रेपा । ভাষানিগতে नियाप्न क्रिए পারিলেন না মহারাজ! প্রধান সৈনা সমস্তও মহেন্দ্র লম বীর্যাবান্ ভীয় কর্তৃক আহত হইয়া রণ স্ক হইতে ভয় হইতে লাগিল। তুই জন একতে ধাৰিত হইল না অৰ্থাৎ ধাৰিত হইতে কেহ কাহার चर्लका क्रिन न।। পাগুৰ্দিগের দৈন্য সকল হা-হাভূত ও সংজ্ঞা-খূন্য হইয়া পড়িল, এবং তাহা-দিপের রধ, নাগ, অশ্ব, ধক্স ও কুবর পতিত হইতে লাগিল। এই রণে যেন দৈব প্রেরিত হইয়া পিতা পুদ্রকে, পুদ্র পিতাকে সংহার এবং সখা প্রিয় নথাকে যুদ্ধে আহ্বান করিতে লাগিল। পাগুব পক্ষীয় অনেক যোদ্ধাকে কৰচ পরিত্যাগ ও কেশ আলুলারিত করিয়া ধাবিত হইতে দেখা গেল। পাওবী সেনাকে গো যুথের ন্যায় উদ্ভান্ত হইয়া আর্ত্তনাদ করিতেও ভাহাদিগের রথ যূথপ সকলকে উদ্ভ্রান্ত হইতে দেখা গেল।

ষত্বংশ-নন্দন কৃষ্ণ সৈন্যগণ ভগ্ন দেখিয়া রথবর
নির্ত্ত করণ পূর্বক পার্থকে কহিতে লাগিলেন, হে
নরসিংহ পার্থ! তুমি যে সময় প্রার্থনা করিয়াছিলে,
সেই সময় এই উপস্থিত হইয়াছে, এই সময়ে ঐ
ভীষ্ণের প্রতি প্রহার কর, নচেৎ মোহ প্রাপ্ত হইবে।
হে বীর! তুমি পূর্বের রাজগণের সমাগম কালে বলিয়াছিলে যে, ভীন্না দ্রোণ প্রভৃতি গৃতরাষ্ট্র সৈনিক
মধ্যে যে আমার সহিত যুদ্ধ করিবে, তাহাকে অমুচরগণের সহিত যুদ্ধে বিনাশ করিব; এই ক্ষণে
মেই বাক্য সত্য কর। ঐ দেখ, স্থপক্ষ সৈন্য সকল
ইতন্তত ভগ্ন হইতেছে। ঐ দেখ, যুধিনির পক্ষ
রাজ্যণ রণ হইতে পলায়ন করিতেছেন। উইরো
সমরে ভীন্নকে কৃত-ব্যাদান-মুখ খ্যা প্রবণ বোধ
করিয়া সিংহ দর্শনে কৃত্র স্থেমর ন্যায় ভয়ার্ড হইরা
প্রাক্ট হইতেছেন।

আৰ্জুন এই বাপে অভিহিত হইয়া ৰাস্থ্যেৰকে গাঁত বিশ্ব করিবেন। সেই উল্লেখন বিশ্ব করিবেন। সেই উল্লেখন বিশ্ব করিবেন। সেই উল্লেখনে বিশ্ব হুইয়া, শৃঞ্চামাতে অভিত গাঁত এবই নি-হয়নে তুমি এই রণ সাগম অবপাহন করিয়া আৰু আলকারী গোহবের নায়, শোভমান ইইকেন তিনি

চালনা কর; জামি ছুর্থর কুরুলিভানহ রুজ নিপাভিত করিব।

महाताल! जननत्त्र त्य द्वारन क्र्र्सात्र नाम प्रति-রীক্ষ্য ভীয়ের রথ ছিল, ক্রফ সেই স্থানে রজভঞ্জ অশ্ব চালনা করিলেন। অনস্তর বৌধিতির মহা সৈনা সকল, মহাবাছ অর্জুনকে ভীমের প্রতি যুক্তে উদ্যত দেখিয়া পুনরাবৃত্ত হইল। তৎ পরে কুরুশ্রেষ্ঠ ুমুছমু ছি সিংহনাদ করত সত্তর হইরা শর বর্ষণ দারা ধনঞ্জরের রথ পরিব্যাপ্ত করিলেন। সেই त्रथं कर्ण काल मर्था जीत्मत्र महर भंत वर्षा शक ও সার্থির সহিত সমাচ্ছন্ন হইয়া অপ্রকাশিত रहेन। मजुरान् कृष चमजान्त চिट्ड रेपर्यादनश्च করিয়া ভীন্ন বাণে ব্যথিত অশ্ব সকল চালনা করিতে লাগিলেন। তদনম্ভর পার্থ মেঘ ধনি বিশিষ্ট দিব্য ধমুক গ্রহণ করিয়া শাণিত শর সমূহ দারা ভীমের ধমুক ছেদন করিয়া পাতিত করিলেন। ধমুক ছিন্ন হইলে আপনকার পিতা নিমিষ মাত্রে অন্য ধমুক ष्णा यूङ कतिलान। ७९ भति व्यर्जून क्रूक रहेग्रा चकीं अलाप निचन धसूक छूरे हत्छ विकर्षण कविसा ভীমের ধন্ত্রক পুনর্কার ছেদন করিলেন। শান্তমু-নন্দন অর্জুনের হস্ত লাঘবের প্রতি প্রশংসা করিয়া কহিলেন, হে মহাবাছ পাণ্ডু-নন্দন! সাধু, সাধু! এই ৰূপ মহৎ কৰ্ম তোমার উপযুক্তই বটে। বংস! তোমার প্রতি আমি প্রীত হইয়াছি; তুমি আমার সহিত দৃঢ় যুদ্ধ কর। তিনি পার্থকে এই ৰূপে প্রশংসা করিয়া অন্য এক মহাধমূক গ্রহণ পূর্বক পার্থের রথের উপর শর সমূহ পরিভাগ করিলেন। ভর্ষন ৰাস্থ্যদেব লাঘ্ব ক্রমে মণ্ডলাকারে রথ চালনা করিরা সেই সকল নিক্ষিপ্ত বাণ বিফল কর্ড অস্থ চালনায় পরম নৈপুণা প্রকাশ করিলেন। পরস্ত ভীন্ন পুনর্কার শাণিত বাণ সমূহ ছারা কৃষ্ণার্জুনের স্ক ৰাত্ৰ বিন্ধ করিলেন। সেই উল্লয় নর্মানংই ভীয় বাত্ৰ ক্ষত বিক্ত হইয়া, শূকাৰাতে কৰিত গাঁত এবং নি- অভিনয় কুৰ হইয়া পুনংপুন শত শত সহত্ৰ সহত্ৰ नत्र बाता क्रकार्क्त्तत्र ठजूर्किक् नमात्र्छ कतितनन, এবং রোষ-পর্বশ হইরা সশব্দে হাস্য করত বিশ্বর উৎপাদন করত ক্রফকে কৃষ্পিত করিতে লাগিলেন। তদনত্তর বীর শত্রুহতা মহাবাহু অমেরাল্লা ভগ-ৰাষ্ কেশৰ সমরে ভীমের পরাক্রম ও অর্ক্নের মৃদ্ধু যুদ্ধ দেখিয়া, ভীয় যে উভয় সেনার মধ্যে উত্তাপ-এক প্রভাকর সদৃশ হইয়া রণ স্থলে নিরস্তর শর বর্ষণ স্থায়ী করিতেছেন, যৌধিষ্ঠির সৈন্যের পক্ষে প্রলয় কাল উপস্থিত করিতেছেন, সেই সকল সেনা मर्सा अधान अधान रिमनिक शूक्रविकारक निशा-তিত করিভেছেন, তাহ। অসহমান হইয়া চিস্তা করিতে লাগিলেন, যুধিন্তির পক্ষ সেনা আর থাকে না। ভীর এক দিবসেই সমরে দৈত্য দানবদিগকে বিনাশ করিতে পারেন, ইহাতে সদৈনা সপদামুগ পাগুবদিগকে যে বিনাশ করিবেন, তাহার আর কথা কি আছে! মহাত্মা যুধিষ্ঠিরের সেনা পলায়ন পরা-রণ হইতেছে ; ঐ সকল কৌরবেরাও সোমকদিগকে রুণে ভগ্ন দেখিয়া আনন্দিত হইয়া ভীয়ের হর্ষোৎ-পাদন করত যুদ্ধাভিমুখে সত্তর অভিক্রত হইতেছে। অতএব আমি আজি মহাত্মা পাগুবদিগের নিমিত্তে বন্ধসন্নাহ হইয়া ভীয়কে বিনাশ করি। আমি এই কার্য্য করিয়া মহাত্মা পাগুবদিগের ভার অপনয়ন করি; কেন না অর্জুন সংগ্রামে তীক্ষ্ণ বাণ সমূহে ৰধ্যমান হইয়াও পিতামহের গৌরবে বাধ্য হইয়া কর্ত্তব্য কার্যা বুঝিতে পারিতেছেন না।

ক্ষ এই প্রকার চিন্তা করিতেছেন, ও দিকে ভীম সংকুদা হইয়া অর্জুন রখের প্রতি শর সমূহ কিছেপ করিতেছেন। ভীম নিক্ষিপ্ত শর সমূহের শ্রিতান্ত বাছলা হেডু সকল দিক্ই আছ্ম হইয়া শেল; কি অন্তরীক্ষ, কি দিক্ সমন্ত, কি ভূমিক্ষান্ত কি রিখামালী দিবাকর, কিছুই আর দৃতিগমা রিছিল না বাহু সমূম হইয়া ভূমুল কপে বহুমান ও কিছুই বসক কৃষ্টিত হুইতে লাগিল। জোশ, বিকর্ণ,

লর্মণ, ভূরিবারা, ক্নতবর্দ্মা, ক্লপ, প্রাজ্ঞার বিদ্ধান অমুবিন্দা, মদকিণ, পূর্বা দেশীর গণ, সেমন্ত বণাতি, ক্ষুদ্রক ও মালবর্ধণা, ইং ারা ভীয়ের নিদেশামুসারে ত্বমাণ হইয়া অর্ক্তুনরে সমীপে যুক্কার্থ সমাগত হইলেন। শিনি-পৌত সাত্যকি অর্ক্তুনকে শত শত সহত্র সহত্র গল যুর্থপ, অর্থা, পদাতি ও রথ জালে সম্যক্ প্রকারে সমার্ত দেখিতে পাইলেন। তিনি, শস্ত্রধারি-প্রবর্গ ক্ষণার্জ্জানকে চতুর্দিকে রথ, অন্ধা, নাগ ও পদাতিগণে পরিসমাক্রান্ত দেখিয়া ত্বা-পূর্বক সমীপত্ব হইলেন। যে প্রকার বিষ্ণু র্তাহ্মর নিহুদনে ইল্পের সাহায্য করেন, সেই প্রকার ধমুর্জার প্রধান শিনি বীর সাত্যকি, সহসা সেই সকল অনীক মধ্য দিয়া গমন-পূর্বক অর্জুনের সাহায্য করিতে প্রবৃত্ত হইলেন।

শিনিপ্রবীর, যুধিন্ঠির পক্ষ অনীক্ষ মধ্যে নাগা, অশ্ব, রথ ও ধক্ষ সমূহ বিশীর্ণ, এবং সর্ব্ধ যোধগণকে ভীয়া ভয়ে বিত্রাসিত হইয়া পলায়ন করিতে দেখিয়া বলিতে লাগিলেন। ক্ষজ্রিয়গণ! তোমরা কোথায় যাইতে লাগিলেন। ক্ষজ্রিয়গণ! তোমরা কোথায় যাইতে হ? প্রাচীন ঋষিগণ বলিয়াছেন রণ হইতে পলায়ন করা সাধুদিগের ধর্ম নহে। হে বীরগণ! ভোমরা স্থ প্রতিজ্ঞা পরিত্যাগ করিও না, আপনাদিগের বীর ধর্ম প্রতিপালন কর।

সমস্ত দশার্হগণের প্রভু ষশন্তী মহাত্মা ইন্দ্র-কনিষ্ঠ ক্ষণ অর্জ্জনকে মৃত্ব যুদ্ধ করিতে, চতুর্দিকে প্রধান প্রধান ক্ষান্ত্রগণকে পলায়মান, ভীমকে সংগ্রামে সমুদীর্যামাণ এবং কুরু যোধগণকে চতুর্দিকে আলপতিত হইতে দেখিয়া সংকুদ্ধ হইয়া সাত্যকিকে প্রশংসা করত কহিতে লাগিলেন, হে শিনি-প্রবীর সাত্মত! যাহারা যাইতেছে যাউক, আর যাহারা আহে তাহারাও যাউক, তাহাদিগেরও থাকিবার প্রয়োজন নাই। দেখ, আজি আমি ভীমাও লোগকে উহাদিগের সমতিব্যাহারী গণের সহিত নিপান্তিত করিতেছি। আজি কুরু নৈনাদিগের মধ্যে কেইই ক্ষামার ক্রোধে রপ-মুক্ত হইতে পারিকেনা; ক্ষান্ত্রত

আরি তীবণ চক্র গ্রহণ করিয়া তীমের গ্রাণ নংহার করিব। মহারখ তীম ও ফোণকে উহার মিগের গণের সহিত মুক্তে নিহত করিয়া রাজা বুধিনির, ধনঞ্জয়, তীমসেন, নকুল ও সহদেবের গ্রীতি সম্পান্দম করিব। নমন্ত গ্তরাই-পুক্রদিগকে ও বে সকল গ্রধান নরেম্রেশণ ভাহাদিগের পক্ষে আছেন, তাঁহাদিগেও আজি আমি সংহার করিয়া অভাতশক্র রাজাকে হর্ষ সহকারে রাজাধিপতি করিব।

वञ्चरत-পूख महाञ्चा कृष्ण এই ৰূপ বলিরা অশ্ব রশ্মি পরিত্যাগ-পূর্বক সহস্র বজতুলা ক্রধারান্বিত স্থাপ্রত চক্র হত্তে উদ্ভাষণ ও বেগ সহকারে রখ হইতে লক্ষ্ম প্রদান করিয়া পদ দারা ভূতল কম্প-মান করত ভীন্ন সমীপে গমন করিতে লাগিলেন। যে প্রকার অতি দর্গিত মদান্ধ গলরালকে হনন করিবান্ন অভিলাবে সিংহ ধাবমান হয়, সেই প্রকার भक्कथमां शा रेख-रुनिष्ठं क्रक कुक रहेन्रा जीन्नात्क বিনাশ করিবার মানসে তাঁহার সৈন্য মধ্যে অভি-ক্রত হইলেন। বে প্রকার আকাশে বিচ্যুৎপ্রভা-পিনদ্ধ মেঘ প্রকাশ পায়, ক্লফের পীতবর্ণ বসন ব্যালম্বিত হুইয়া পতিত হওয়াতে তিনি সেই ৰূপ প্রকাশ পাইতে লাগিলেন। যে প্রকার তরুণ স্থর্য্য-বর্ণ আদি পন্ধ, নারায়ণের নাভি হইতে উৎপন্ন रहेता मीश পारेताहिल, जिरे बेश कृत्यत स्पर्नन চক্রে পত্ম, জাঁহার মনোহর বিশাল ভুক্ত মৃনালে অব-স্থিত হইরা দীপ্তি পাইতে লাগিল। সেই চক্রপন্ত কুৰেব্ল ক্ৰোধ ৰূপ সূৰ্ব্যোদয়ে প্ৰফুল ও কুরান্ত সদৃশ তীক্ষ্ণ অগ্ৰভাগ উহার দল স্বৰূপ প্ৰকাশ পাইতে बाक्जि, धवर कृत्यत्र विभागः एक खन मारे जूज-ষ্ণালের সল্পোৰর ৰূপে বিরাজিত হইতে লাগিল। क्रमारक क्र्म, व्यवसाती ७ क्रिकाचात्र निनासकात्री क्लिका नमछ ब्यानी, धारे कुम कूल कुत्र रहेल मत्त ক্রিয়া সাজিশর শব্দ করিতে লাগিল। বে **একার** श्वरकष्ट्र आवतः जनमन्त्रभ वक्ष्य अतीश एतः उद्यान লোকভান বছবেৰ-পূত্ৰ কল এহণ-পূৰ্বক জীবলোক-

দহনকারী প্রালয় কালীন সমর্ত অগ্নির ন্যায় জীলাভি-মুখে গমন করত প্রদীপ্ত হইতে লাগিলেন।

ধন্ত্বাণধারী রথত্ব শান্তমূ-নক্ষন মানবপ্রবন্ধ ক্ষক দেবকে চক্রহন্তে আগত হইতে দেখিয়া অক্সড় চিত্তে বলিলেন, এন এন, হে দেবেশ। হে জগনিবাস! তোমাকে নমকার; হে শার্ক ধর! হে গাদাধর! হে অনিধর! হে লোকনাথ! হে প্রাণিগণের শরণ্য! তুমি রণে আমাকে রথ হইতে বল-পূর্বক নিপান্ তিত কর। হে ক্ষক! আজি তুমি আমাকে নিহত করিলে আমার ইহ পর লোকে শ্রের হইবে। হে অক্সক র্ফিনাথ! আমি তোমা কর্জ্ক নিহত হইলে মঙ্গল-সম্পন্ন হইব, আমার প্রভাব ত্রিলোকে বি-ধ্যাত হইবে।

ভীন্ন ঐ ৰূপ বলিতেছেন, ক্লফণ্ড বেগ সহকারে বাইতেছেদ দেখিয়া আয়ত-বিশাল-বাছ অৰ্জুন সত্ত্র হইয়া রধ হইতে অবরোহণ ও তদনস্তর বছু-প্রবীর ক্লফের পশ্চাৎ ক্রড গমন-পূর্বক ভাঁহার লয়-মান বিশাল উৎকৃষ্ট বাছ ছয় ধারণ করিলেন। পরস্ক আদিদেব যোগী কৃষ্ণ সাতিশয় রোষান্থিত ছিলেন, তৎপ্রযুক্ত তিনি অর্জুন কর্তৃক গৃহ্নমাণ হইয়াও, যে প্রকার প্রবল বায়ু একটি বৃক্ষকে বেগে चाकर्यं। कतिया वहेता यात्र, त्रहे क्षेत्र दिश क्रिकृ-কে আকর্ষণ করিয়াই ভীন্ন,সমীপে দ্রুত বেগে নর পদ গমন করিলেন; দশম পাদে মহাক্সা পার্থ তাঁছার চরণ হয় বল পূর্বক ধারণ করিয়া শনৈঃ শনৈ বল দারা কোন প্রকারে গ্রহণ করিয়া রাখি-লেন। ক্লক অবস্থিত হইলে বিচিত্র কাঞ্চনমানী **শর্জুন প্রীত হইরা তাঁহাকে প্রণিপাত করত কহি-**লেন, হে কেশব! ভূমি পাওবদিগের গভি, অভঞ্জ ক্রোধ প্রতিসংহার কর। হে ইন্স কনিষ্ঠা আর্থি পুত ও गर्गाम्त्रभरमंत्र मंश्रमं क्रिएकहि, क्षिक्तासू-বারি কর্ম পরিভাগে করিব না, ছোমার নিয়োগায়-गांदा कुमलिलात विनास सामन दा श्रकादा का

তৎপরে জনার্দন, কৌরবসক্তম অর্জুনের প্রতিজ্ঞা ও শপথ শুনিরা চক্রহন্তে প্রীভ চিত্তে প্রির ভাবে ক্ষণ কাল অবস্থিত হইরা পুনর্বার রথারোহণ করি-লেন; এবং অশ্ব রশ্মি গ্রহণ পূর্বেক পাঞ্চলন্য শব্ম লইয়া ভাহার শব্দে চতুর্দিক্ ও নভোমগুল পরি-পুরিত করিলেন। কুরু বীরগুণ চঞ্চল নিষ্ক, অঙ্গদ ও কুগুল-ভূবিত, ধূলি ছারা বিকীৰ্ণ অঞ্চিত-পক্ষাযুক্ত নেজ বিশিষ্ট ও বিশুদ্ধ দন্ত শোভিত রুক্ষকে পুনর্বার यूकार्थ नव्यधाती प्रतिशा উटिकः चरत निःरनाम कति-তে नागितन। এবং তাঁহাদিণের সৈন্য মধ্যেও মৃদক, ভেরী, পটহ, নেমি ও ছুম্জুভির শব্দ উপ্থিত হইল ; সেই শব্দে কুরুবীরগণের সিংহনাদ মিশ্রিত হইরা তুমুল শব্দ হইয়া উঠিল। তদনন্তর অর্জুনের মেঘ নিৰ্যোষ সদৃশ গাণ্ডীব ধনি চতুৰ্দ্দিক্ ও নভোমণ্ডলে পরিব্যাপ্ত হইল এবং তাঁহার গাণ্ডিব-নির্শ্মুক্ত বিমল वाग नकल नमस्र पिटक गमन शूर्वक विकीर्ग इंटेंटिं লাগিল। কৌরবাধিপতি ছুর্য্যোধন উদ্যত বাণ হস্তে কক্ষদাহকারী ধূমকেতু সদৃশ হইয়া ভীন্ন, ভূরি-শ্রবা ও সৈন্য সমভিব্যাহারে অর্জুনের অভি-মুখে গমন করিলেন। অনন্তর আর্জুনের উপর ভূরিশ্রবা স্থবর্ণ পুস্থ সপ্ত ভল্ল, ছুর্য্যোধন উগ্রবেগ তোমর, শল্য গদাও ভীম শক্তি নিক্ষেপ করি-লেন। মহাধমুশান্ মহাত্মা কিরীটমালী বীর অর্জুন ভূরিআবা-প্রক্রিপ্ত সপ্ত ভল্ল সপ্ত শর দারা ও ছুর্যোা-ধন ভুজ বিমুক্ত তোমর শাণিত কুক্লাক্ত ছারা উত্ত-ধিত করিয়া ভীয় নিক্ষিপ্ত আগতিতা বিস্থাৎ প্রভা শক্তি এবং শলাৰাছ বিমুক্ত গদা ছুই বাণ ছারা কর্ডিভ করিরা ফেলিলেন। তৎপরে অপ্রমেয় বল-ৰৎ বিচিত্ৰ গাণ্ডিৰ ধমুক ভুজ ছয়ে বিকৰ্ষণ করিয়া অতি ভীষণ মাহেন্দ্র অত্র বিধিপূর্বক অন্তরীকে প্রামুর্ভূত করিলেন। সেই প্রবল অন্ত্রের আবির্ভবে मधुर मधुर व्यक्षि वर्ग विमन नेत्र कान वाता ममछ শৈল্য নিমারণ করিতে লাগিলেন। তাঁহার পরাসন-বিষ্ণুক্ত বাণ সকল বিপক্ষের রখ, বলাঞ্জ, ধমুক ও

ৰাছ সকল কৰ্ডন করিরা নরেক্র, নাগেক্রাও ভুরদ-গণের দেহ মধ্যে প্রবেশ করিতে লাগিল 🗠 সার্জ্জু-নের শাণিত সুধার শঙ্গু-সমূহ ৰারা দিক্ ৰিক্ষিক্ বিস্তৃত এবং গাণ্ডীব শব্দে বিপক্ষপণের স্বস্তুকরণ ৰাণিত হইতে লাগিল। সেই ঘোরতম অক্ত বুকে গাণ্ডিব রবে শব্ধ ধনি, ছুন্ডুভি শব্দ ও উগ্রার্থ-নিনাদ অন্তৰ্হিত হইরা গেল। সেই গাণ্ডীব শব্দ শুনিতে পাইয়া বিরাটরাজ প্রভৃতি নরবীরগণ ও পাঞ্চালরাজ বীর ক্রপদ অদীন সম্ভূ ভাবে সেই স্থলে আগমন করিলেন। আপনকার পক্ষীয় দৈন্য মধ্যে যে যে স্থানে গাণ্ডীবের শব্দ শুনিতে পাইল, সে সেই স্থানেই নতিভাবাপন্ন হইল, তাঁহার প্রতি-কুল হইয়া কেহই অভিমুখীন হইতে পারিল না। সেই নৃপ-সংহারক স্কঘোর যুদ্ধে রথ, অশ্ব ও সার-থির সহিত বীরগণ ও উত্তম হেমককা যুক্ত মহা-পতাকান্বিত গজগণ কিরীটি কর্ভৃক সহসা নারাচ দারা হত, পীড়িত, বিভিন্নকায় ও গতসত্ত্ব হইয়া ভূতলে নিপতিত হইতে লাগিল। সেনামুখে নূপ-গণের ধজ সকল পার্থের উত্তবেগ শাণিতাগ্রভাগ স্থাণিত ভল সকলের দ্বারা দৃঢ় ৰূপে আহত হও-ग्राट्ड *(महे नक्न ६८७३ यञ्च ७ हेस्नुकान नक्न* নিহত হইতে লাগিল। হে রাজন্। নেই মহারণে ধনঞ্জয়ের প্রবল ঐক্রান্ত প্রভাবে পদাতি, রুধ, জন্ম ও নাগ সমূহ শরাঘাতে সমাহত হওয়াতে ভেদিত-কৰচ ও ভেদিত-দেহ হইয়া প্ৰাণ ত্যাগ করত শক্ত হত্তেই রণ স্থলে শীঘ্র শীঘ্র পতিত স্ইতে লাগিল। তদনন্তর সেই রণাঙ্গনে অতি ঘোরা নদী উৎপন্না হইয়া অতীব বেগে বিপুল প্ৰবাহে বহিতে লাগিল। কিরীটীর স্থশাণিত শক্ত সমূহে ক্ষত বিক্ষত नक्रातरहत्र क्रियत छहात क्रम ; नक्रशत्यत सम छहात्र কেনা ; সৃত নাগ ও অধের শরীর সকল উহার জীর ; মন্ত্রাগণের অন্ত্র, মজা ও মাংস উহার পঞ্চ ক্রিয় শির কপাল সমাকুল কেশ সকল উহার লাখল; মেহ ममूर উराর मरका भागाः; विखीर्ग समाविक स्वयंत

সকল উহার ভরক; মর, অশ্ব ও নাগগণের নিরুত্ত
অন্থি সকল উহার শর্কর, এবং উহা প্রভৃত রাক্ষসাদি ভৃতগণের সেবিতা হইল। গোমারু, শালারক,
গুধু ও তরকু প্রভৃতি মাংসাশী জীব সকল উহার
কৃলে বিচরণ করিতে লাগিল। মনুব্য সকল, অর্জুন
বাণ সঙ্গের প্রবর্তিতা মেদ বসা রুধির প্রবাহশীলা
অতি ভীষণা এ রূপ কুরা নদীকে বৈতরণী সদৃশী
অবলোকন করিতে লাগিল।

মহারাজ! চেদি, পাঞ্চাল, কর্ম্বন, মৎস্য ও পাগুব, এই সমস্ত বীরগণ কুরুদেনার বীরগণকে ফাল্গুন কর্ত্ত্বক নিহত দেখিয়া সহসা নিনাদ করিয়া উঠিলেন। সেই বীর পুরুষেরা কিরীটীকে শত্রু পক্ষের ভয়াবহ হইয়া বিপক্ষ সৈন্যের বীর সকলকে নিহত করিতে দেখিরা জয় প্রতিভা-সমন্বিত হইয়া কুরু বীর যোধ-গণকে আসিত করিবার নিমিত্তেই আপনাদিগের জয়-স্থাচক শব্দ করিলেন। গাণ্ডীবধন্বা এবং জনা-র্দনও অতি হর্ষ যুক্ত হইয়া, সিংহের মৃগযুথকে তা-সিত করণের ন্যায়, সেনাপতিদিগের সেনা সকলকে ত্রাসিত করত নিনাদ করিতে লাগিলেন। তৎ পরে সাতিশয় ক্ষত বিক্ষতাঙ্গ ভীন্ন, দ্রোণ, চুর্য্যোধন ও বা-হ্লিক প্রভৃতি কৌরব পক্ষগণ দিবাকরকে কিরণজাল সংর্ত করিতে এবং অর্জুনের বিস্তৃত যুগাস্তকণ্প चात्र अञ्चाञ्च व्यमञ् एतिशा रेमनानिएशत व्यवशत क्तिरंजन। धनक्षत्र भक्क विभक्षन शूर्वक मभाश्वकचा হইয়া কীর্ত্তি ও ষশ লাভ করত প্রভাকরের রক্তিম প্রভাষ্থিত সন্ধিগত নিশা দেখিয়া নরেন্দ্র ও সোদর গণের সহিত নিশামুখে শিবিরে গমন করিলেন। ভদনত্তর সেই রজনীমুধ সময়ে কুরুদিগের ঘোর-তম ভুমুল শব্দ উঠিল বে, অদ্য অর্জুন রণে অযুত রধ নিহত করিয়া সপ্ত শত গজ সংহার করিয়াছেন। এবং প্রাচ্য, সৌৰীর কুত্ত ও মালব দেশীয়গণ সমু-मात्राक निर्माणिक कत्रित्राष्ट्रन । वनक्षत्र जानि महर कार्या कतिकारहन, छारा जनक कारायता नाथा मरह। হে ভারত রাজ। ভারতপতি আভারু, পুমর্বণ্য চিত্র-

লেন, জ্রোন, ক্লপ, সিন্ধুপতি, বাহ্মিক, ভূরিকারা, লল্যা,
লল ও অন্যান্য লত লত যোধগণ ভীল্নের সহিত
যুদ্ধার্থ সমবেত হইলেও, উহাদিগকে মহারবী এক
অর্জুনই কুদ্ধ হইয়া স্ব বাছ বীর্য্য দ্বারা রণ মধ্যে
পরাজিত করিয়াছেন, এই কথা বলাবলি করিতে
করিতে আপনকার পক্ষ গণ স্ব স্থ শিবিরে গমন
করিল। কুরু সৈন্যের সমুদায় ঘোধগণই ধনপ্লেয়
কর্তৃক বিত্তাসিত হইয়া সহন্র সহন্র উল্কা ও প্রক্রালত প্রদীপের আলোকে অবলোকন পূর্ব্যক শিবিরে প্রবেশ করিলেন।

তৃতীয় দিবস যুদ্ধ ও ষট্ পঞ্চাশ অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৫৬॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! মহাত্মা ভীয় জাত-ক্রোধ ছিলেন; তিনি, রাত্রি প্রভাতা হইলে সমগ্র সৈন্য সমভিব্যাহারে বিপক্ষ ভারতী সেনা প্রমুখে युकार्य याजा कांत्रलम। त्जानानार्या, कूर्यााधन, বাহ্লিক, ছুর্মর্বণ,চিত্রসেন, মহাবল জয়দ্রথ ও অন্যান্য নৃপগণ চতুর্দ্ধিকে তাঁহার সহিত গমন করিলেন। যে প্রকার দেবরাজ দেবগণের মধ্যে শোভা প্রাপ্ত হন, সেইৰপ তিনি বীৰ্য্যবস্ত তেজম্বী মহৎ মহৎ প্রধান রাজগণ মধ্যে বিরাজমান হই**লে**ন। সেই সমুহ সৈন্য মধ্যে মহাগজ সকলের ক্ষন্ধ-বিন্যন্ত রক্ত, পীত, রুষ্ণ ও পাওর বর্ণ মহাপতাকা সকল দোধুয়মান इरेश मी शामा महरेट जा शिल। सिर्हे मकल सिना মহারথ ভীম ও বারণ বাজি গণ দ্বারা প্রার্ট্ কালীন মেঘ সংযুক্ত আকাশের ন্যায় ও বিছ্যুৎ সমন্বিত জলদপটলীর সমান প্রতিভাত হইতে থাকিল। তদ-নন্তর শান্তমুনন্দনের অভিরক্ষিতা কুরু সেনা সহসা অর্জুনের প্রতি যুদ্ধার্থ অভিমুখী হইরা ভীষণ নদী ৰেগের ন্যার গমন করিতে লাগিল।

কপিরাজকৈতু নর-প্রধান সহাধীর সহাত্মা অর্জুন ব্যাল অর্থাৎ গল প্রভৃতি নানাবিধ গৃঢ় সার বিভিত্ত, গল অর্থ পদাতি রখ সমূহ ত্বকপ পক্ষ সংমুক্ত নেই वालिबृहरक चून हरेटल महाटम्ब नमृत व्यवलाकन ক্রিলেন। তিনি স্ব পক্ষ সেনায় পরির্ত হইয়া অত্যে অত্যে শ্বেত বাজি সংযোজিত কপিঃজ রথা-রোহণে সমস্ত শত্রু সেনার প্রতি অভিগমন করি-লেন। আপনকার পুত্রগণের সহিত সমস্ত কৌরবের। অর্জুনের সোপকরণ ও উত্তম বন্ধুর ঈশা সম্পন্ন রধ এবং ভাঁহার সার্থি ক্লুক্তকে অবলোকন করিয়া বিষয় হইলেন। পাণ্ডবদিগের যে ব্যুহ নির্মিত হইল, তাহার উভয় কর্ণ প্রদেশে চারি সহস্র করিয়া গঙ্গ ছিল। এতাদৃশ ব্যালবূাহ লোক বিখ্যাত মহারথ কিরীটী উদ্যতায়ুধ হইয়া দৈন্য প্রকর্ষণ করত রক্ষা করিতেছিলেন। ভবৎ পক্ষীয় সকলে সেই ব্যুহশ্রেষ্ঠ নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। ধর্মারাজ যুধিন্ঠির পূর্ব দিবসে যে প্রকার বাৃহ নিশাণ করিয়াছিলেন, তাহা যে প্রকার পূর্বে কখন পৃথিবীতে মনুষ্যদিগের দৃষ্ট বা শ্রুত হয় নাই, এই ব্যুহও সেই প্রকার মনুষা দিগের কখন দৃষ্টপূর্ব্ব বা শ্রুতপূর্ব্ব হয় নাই।

তদনস্তর রণ স্থলে সমুদায় সৈন্য মধ্যেই সহস্র সহস্র ভেরী মহাবেগে সমাহত হওয়াতে মহাশব্দ উৎপন্ন এবং শব্ধ ধনি, ভূষ্য রব ও সিংহনাদ হইতে লাগিল। তংপরে ক্ষণ কাল মধ্যে বীরগণের সশর শরাসনের বিক্ষারণে উৎপন্ন মহারব এবং শব্ধ **इतिएक (खद्री भगवामित्र, मक अल्लाईक इहेल।** सिहे नश इनि विभिक्ते जसुतीक, छेक्नुछ धूनि काटन ममा-রুত হওয়াতে বীরগণ মহা চক্রাতপ-বিস্তীর্ণ-প্রায় আকাশ মণ্ডল অবলোকন করিয়া সহসা আপতিত र्हेट्ड माधिम। व्यनस्त मात्रिभ, व्यन्, तथ ७ धटकत সহিত রখী রখী দারা, গজ গজ-দারা এবং পদাতি পদাতি ভারা সমাহত হইয়া ভূতলে পতিত হইল। আবর্তমান উত্তম উত্তম অশ্বারোহির্দ আবর্তমান সদশারোহির্দ কর্তৃক প্রাস ও থড়গ ছারা সমাহত रखनारक चहुक-मर्नन जीवनमूर्कि रहेन्ना कृतित शिक्ष वर्षेट्ठ नाशित। यूर्ग-नक्ववृत्त विवृतिष প্রাঞ্জার কর্ম সকল পর্যাধ, প্রাস ও অভ্নের । কর্মা কপিরাজ-ক্তেন মহাসা বিরীউকালী, হান্য

আখাতে বিদার্যামাণ হইয়া রণ ক্ষেত্রে বিপতিত হইতে থাকিল। অনেক রথি সার্থির সহিত, अन গণ কর্ত্তক দক্ত ও শুগু দারা পীড়িত এবং রুহৎ মুহৎ **হতী সকল রথি-প্রধান দিগের বাণ সমূহে নিহত হই**য়া ধরাশায়ী হইল। অনেক সাদী ও পদাতি, গজ সমূহের বেগোদ্ধতিতে বিষয় ও গজগণের গা-ত্রের পূর্ব্ব ও অপর ভাগ ও দন্তের আঘাতে তাড়িত হইয়া বছধা আর্জনাদ করিতে লাগিল; মনুষোরা তাহা শুনিয়া অবসন্ন হইয়া পড়িল।

এই প্রকারে যথন সাদী ও পদাতি গণ অত্যন্ত ক্ষয় পাইতেছিল এবং নাগ, অশ্ব ও রথী সকল ভয়-জনিত ত্বরান্থিত হইতেছিল, সেই মুহুর্ত্তে মহার্থী গণে পরিবার্য্যমাণ ভীন্ন, কপিরাজ-কেতু অর্জ্জুনকে দেখিতে পাইলেন। বিশাল তাল পরিমিত উচ্ছিত তালকেতু শান্তন্ত্র-পুত্র, অর্জ্জুনের রথ উত্তম ঘোট-কের বেগে অদ্ভুত বীর্য্য-সম্পন্ন হইয়াছে এবং তাঁহার মহান্ত্র বেগে অশনি সম প্রভা প্রকাশ পাইতেছে, দেখিয়া তাঁহার অভিমুখে ধাবমান হইলেন। সেই ইন্দ্র-পুত্র ইন্দ্রকণ্প অর্জ্জুনের সম্মুখে রূপ, শল্য, বিবিংশতি, ছুর্যোধন ও সোমদত্ত-তনয়, ইহাঁরা দ্রোণাচার্যাকে অত্যে করিয়া গমন করিলেন। তদন-স্তর কাঞ্চনময় বিচিত্র বর্ম্ম পরিধায়ী শৌর্যা-সম্পন্ন সর্বাক্ত পারদর্শী অর্জুন-পুত্র অভিমন্যু রঞ্ব সৈন্য-মুথ হইতে অপগত হইয়া বেগ পূর্ব্বক তাঁহাদিগের সকলের সমীপে যুদ্ধার্থ সমাগত হইলেন। অসভ্-কর্মা অভিমন্তা, রূপাচার্যা প্রভৃতি সেই সমুদায় মহাবলদিগের মহাজ্র সকল বিশেষ ৰূপে নিহত করিয়া মহামন্ত্রাছত-শিখামালী বেদিগত ভগবান্ चिधित्र नाम्न প্রতিভাত হইলেন। তৎ পরে অদীন-मञ्जू जीत्रा, ममद्र मक्कितरात्र क्रियद्वान रकना नहीं शक्कि করিয়া ত্তরা সুহকারে অভিমন্থাকে অভিক্রম করুত মহারথ পার্থের সমীপে গ্রুল করত তাঁহার উপার भद्रकान त्यांक्र क्षित्र काशिरनना व्यवस्था व्यवस्थ

শ্বাক অদুত দর্শন গাণ্ডীর-মহানির্বোষ সহকারে শর
ভাল হারা সর্বা হলুর্ধরাগ্রগণ্য ভীমের মহান্ত ভাল
বিনাশ করিরা কেলিলেন, এবং পুনর্বার তাঁহার
উপর স্থতীক্ষ্ বিমল ভল শর পুঞ্জ বর্ষণ করিলেন।
ভাবকীন পক্ষীর সকলে, যে প্রকার দিবাকর হারা তম
অভিভূত হয়, সেই কপ অর্জুনের সেই মহান্ত ভাল
অন্তরীক্ষে ভীয়াত্র হারা আহত ও বিশীর্ণ অবলোকন করিলেন। কৌরব, স্প্রেয় ও অন্যান্য লোক
সকল, প্রধান সংপুরুষ ভীয় ও ধনঞ্জয়ের ঐপ্রকার
প্রবল কার্মুক ভীম নিনাদ সহকারে হৈরথ যুদ্ধ অবলোকন করিতে লাগিলেন।

সপ্ত পঞ্চাশ অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৫৭ ॥

সঞ্জর কহিলেন, হে মহারাজ! অশ্বথামা, ভূরি-শ্রবা, শল্যা, চিত্রসেন ও সাংযমনির পুল্র, অভি-মমুার সহিত সংগ্রাম করিতে লাগিলেন। জন সকল সেই এক তেজন্বী বালককে পঞ্চ মনুজ ব্যাঘ্রের নিকট বেন এক সিংহ শিশু দেখিতে লাগিল। কি লক্ষাবেধে, কি শৌর্যো, কি পরাক্রমে, কি অক্রে, কি লাঘবে কিছুতেই কেহ অর্জুন-পুজের সদৃশ ছইল না। পার্থ, অরিন্দম আত্মজ্পকে যুদ্ধে বিক্রম প্রকাশ করিতে দেখিয়া যতু সহকারে সিংহনাদ করিলেন। ভাবকীন পক্ষ গণ আপনকার পৌত্র অভিমন্ত্রাকে সৈন্য পীড়ন করিতে দেখিরা চভুদিকে পরিবেউন করিলেন। সেই শত্রুপ্রভাব-বিনাশী অভিমন্থ্য অদীন ভাবে তেজ ও বল-সহকারে তাঁহা-দিসের প্রতি প্রত্যুদাত হইলেন। তাঁহার শক্র সহ যুক্ক কালীন মহৎ শরাসন আদিতা সম প্রভা-দশ্যর ও লাঘৰ পথস্থ হইয়া কাহারও নয়ন গোচর হইল না। তিনি অশ্বামাকে এক ও শল্যকে পঞ্ वाटन विश्व कतिता नाश्यमनित शूटळत्र तथ रक अर्थ ৰাবে নিপাভিভ করিলেন। সোমস্তপুত্র, সূবর্ণ দণ্ড नरवूक नर्न महंभी अरू बहामिक छै। हात्र छेनत् नि-কেণ করিলেন্ট্র জীহা জিনি এক নাবিত পত্তি হার

ছেদন করিয়া কেলিলেন। শল্য শত শত মহাবোর
শর সকল তাঁহার উপর নিক্ষেপ করিলেন, তাহা
তিনি নিবারণ করিয়া শল্যের চারি টি অশ্ব বিনক্তী
করিলেন। ভূরিশ্রবা, শল্য, অশ্বত্থামা, সাংযমনির
পুত্র ও শল, ইহারা ভর-জনিত ত্রন্ত হইরা অভিমন্ত্যুর বাছবলে অবস্থিতি করিতে পারিলেন না।

হে রাজেন্দ্র ! তৎ পরে ধমুর্বেদপারদর্শী শক্রযুক্ত অজেয় অস্ত্রজ্ঞ-প্রবর ত্রিগর্ভ, মদ্রওকেকয় দেশীয় পঞ্চ বিংশতি সহস্র যোজা আপনকার পুক্ত ছুর্য্যো-ধনের নিদেশামুসারে হনবেচ্ছু সপুত্র অর্জুনকে পরিবেঊন করিলেন। হে রাজন্! অমিত্রজিৎ সেনা-পতি পাঞ্চাল্য ধৃউছান্ন, সেই মহারথ পিতা পুত্রকে পরিবেটিত দেখিয়া সংকুদ্ধ হইয়া বছ সহ্স্র গঙ্ক ও রথরন্দ ও শত শত সহস্র সহস্র পদাতি ও সাদিগণে পরির্ত হইয়া সেনাদিগকে আদেশ পূর্বক শরাসন বিক্ষারণ করত সেই মদ্র বাহিনী ও কেকয়গণের অভি-মুখে বাত্রা করিলেন। রথ, নাগ ও অশ্ব সঙ্কুল সেই সৈনা, কীর্জিমান্ দৃঢ়ধম্বা ধৃউছ্যুন্ন কর্তৃক রক্ষিত ও যুকার্থ চালিত হইয়া শোভমান হইল। রূপাচার্য্যকে অর্জুন-সম্মুখে গমন করিতে দেখিরা পাঞ্চাল কুল বর্দ্ধন ধৃষ্টগ্রুত্ম তাঁহার জক্রদেশে তিন বাণ বিহ্ধ করি-লেন। তদনন্তর তিনি মদ্রকদিগকে শাণিত দশ বাণে বিদ্ধ করিয়া ত্বরা সহকারে ক্তবর্মার পৃষ্ঠরক্ষককে ভল দারা নিহত করিলেন ; তৎ পরেই মহাত্মা পৌর-বের দায়াদ দমনকে বিশালাগ্রভাগ নারাচ দ্বারা হনন করিলেন। তদনন্তর সাংবমনির পুত্র যুধ-क्टर्मन ध्रुके क्टाइटक मन वाटन विक कतिया छैराँ नात-थिटक अमा वादन विक कतिरलन्। महाधसूर्कत श्क-ছান্ন তন্ত্রারা অতি বিন্ধ হইয়া ক্রোধে হয়কণী লেহন করত অতি তীক্ষ্ণ এক ভল্লে তাঁহার ধমুক ছেদন করিলেন, এবং অতি শীঘ্র তাঁহার উপর পঞ্চবিংশভি ৰাণ প্ৰহার করিলেন ; তৎ পরেই ভাঁহার অশ্ব সকল ওপার্কি বৃক্তক এবং সার্থিতে বধ করিলেন। তেওা-त्रेष ! नारवधित शूख रुणाच त्रेटवरे जदन्ति द्रेश

যুদ্ধী ক্রপদের আত্মল ধৃউদ্ধানের প্রতি দৃটিপতি করিয়া সত্তর মহাভয়ানক লোহমর খড়্গ গ্রহণ পूर्वक त्रवंक ध्येष्ट्रारमत नमील शमजरक धावमान হইলেন। পাওবগণ ও ধৃউছাম তাঁহাকে মত হস্তি मृह्म विक्रमनील, मीशामान चारिका मृहम, काल প্রেরিত অন্তক সমান ও খুন্য হইতে আপতিত মহা-দর্প ভুল্য হইয়া খড়্গ উদ্ভার্মণ করিতে করিতে মহা ৰেগে আসিতে দেখিতে লাগিলেন। শাণিত খড়গ ও চর্ম্ম হন্তে ধাবমান প্রতিপক্ষ সেই সাংষমনি-পুত্র বাণ বেগের পথ অতিক্রম পূর্ব্বক রথ সমীপবর্তী হই-বা মাত্র, সেনাপতি পাঞ্চাল-পুত্র ধৃউছায় কুদ্ধ ও সত্তর হইয়া গদাঘাতে তাঁহার মন্তক চুর্ণ করিয়া কেলিলেন। হেরাজন্! তিনি হত হইবা মাত্র তাঁহার স্থপ্রভাষিত চন্মও ঋড়্গ হস্ত হইতে অস্ত হইল, এবং তাঁহার দেহও ভূতলে পড়িয়া গেল। ভীম-বিক্রন্ম মহাস্মা পাঞ্চালরাজ-পুত্র তাঁহাকে গদাঘাতে বধ করিয়া পরম যশ লাভ করিলেন। সেই মহাধনুর্দ্ধর মহারথ রাজ-পুত্র হত হইলে আপনকার সৈন্য মধ্যে মহান্ হাহা-কার হইয়া উঠিল। তদনন্তর সাংধ্যনি, পুত্রকে নিহত দেখিয়া কুদ্ধ হইয়া যুদ্ধত্বসদধ্উদ্ভানের সমীপে বেগে অভিক্ৰত হইলেন, এবং কুরু ও পাণ্ডৰ পক সমস্ত রাজগণের সাক্ষাতে সেই রথিশ্রেষ্ঠ ছুই বীর ষুদ্ধে মিলিত হইলেন। প্রথমত বীর শক্রহস্তা সাংয-মনি কুদ্ধ হইরা, তোত্র দারা মহাগজ হননের ন্যায়, ধৃষ্টপুলেকে তিন বাণে আঘাত করিলেন, এবং সভা-শোভন শলাও জুদ্ধ হইয়া পূর ধৃউছালের বক্ষঃস্থলে আলাভ করিলেন, পরে তাঁহাদিগের ভুষুল যুদ্ধ इरेट नागिन।

সুক পঞ্চাশ অধ্যায় সমাপ্ত। ৫৮।

্তরাই কহিলেন, সঞ্জ। পুরুষকার অপেকা কৈনেই জেও মনে করিডেছি, কেন না প্রাপ্তব নৈ-নোরাই ক্রমাগত মংপুজের সৈনা বস্ত করিছেছে। হে বংর। ক্রমি নিভাই মদীর পক্ষের বিনাশ ও পাওব পক্ষ দিগকে অত্যুগ্র ও ছাই বুলিছেছ।
তুমি একণে মৎপক্ষীয় দিগকেই পৌরুর-ছীন,
পতিত, পাত্যমান ও হত বলিয়া কীর্তন করিতেছার
তাহার। কর চেফার যুধ্যমান হইলেও পাওবেরা
তাহাদিগকে পরাজিত করিতেছে, এবং ভাহারা
হীন হইতেছে; অতএব হে বংস! ছুর্য্যোধন হইতে
আমাকে অনবরতই ছুঃসহ তীব্র বহু ছুঃথের বিষয়
শুনিতে হইল। সঞ্লয়! যে উপায়ে পাওবেরা হীন
ও মৎপক্ষীয় গণ জন্মী হয়, তাহা দেখিতেছি না।

সঞ্জ কহিলেন, হে রাজন্! এই মহান্ অপনয় **ভাপনা হইতেই হইতেছে ; সে ষাহা হউক, এক্ষণে** আপনি স্থির হইয়া গজ, বাজি, রথ ও মনুষ্য ক্ষয় বৃত্তান্ত অবণ করুন। ধৃষ্টছ্নান্ন মন্ত্রাধিপতি শলোর বাণে বাধিত হইয়া কুন্ধ চিত্তে তাহাকে নয় শরে পীড়িত করিলেন। তথন ধৃষ্টচ্যুদ্নের অদ্ভুত পরাক্রম দেখিতে লাগিলাম, ভিনি ত্বা সহকারে শল্যকে নিবারিত করিতে লাগিলেন। তাঁহাদিগের উভয়ের এই युक्त मूहर्ख काल माज रहेल। উভয়েই এতাদৃশ সংরক্ত হইয়া সমর কাষ্য করিতে লাগিলেন, যে কেহ তাঁহাদিগের নিমেষ মাত্র অবকাশ দেখিতে পাইল না। হে মহারাজ! শল্য শাণিত স্থপীত এক ভল্লান্তে ধৃউছামের ধনুক ছিল্ল করিলেন; তৎপরে বর্ষাকালে জলদগণের পর্বতোপরি জল বর্ষণের ন্যায় শর্বর্ষণে তাঁহাকে আচ্ছাদিত করিলেন। ধৃউচুান্ন তাহাতে পীড়িত হইলে অমেয়াল্বা অভিমন্যু শলোর রথ সমীপে বেগে আগমন করিলেন। পরে তিনি আর্ডা-য়নি শলোর রথ সমীপে উপনীত ও কোপারিষ্ট হইয়া তিন বাণে ভাঁহাকে বিদ্ধ করিলেন। তাহা দেখিয়া সাপর্নকার পক্ষ যোধ গণ অভিমন্ত্রার প্রতিকূলবর্ত্তী হইরা মন্তরাজের রথ সত্তর পরিবেউন করিয়া অব-विक हरेला । इत्याधन, बराबध विकर्ष, कृश्ली त्रम, विविश्मकि, इर्मर्यन, इश्मर, क्रिक्टनम, इस्सूर, ৰভাৱত ও পুৰুষিত, এই সপজন মন্ত্ৰাধিপতিত্ব বুধ शका कतिवाद विकित्त अपूर्व वर्षेत्राम् । हे दिना

দিপ। ভীমদেন, ধৃউছান্ন, দৌপদীর পঞ্চ পুজ্ঞ, অভি-मञ्जा, तकुल ७ महदस्य, ७३ मण जन नाना विध णञ्ज নিক্ষেপ্র করিয়া ধৃতরাধীয় পক্ষের উক্ত দশ জনকে নিরারিত করিতে লাগিলেন। হে রাজন্! আপন-কার ছর্মান্ত্রণা প্রযুক্তই উহাঁরা সংক্রুদ্ধ হইয়া পরস্পর वंशां जिलादि मध्यादम ममदिक इट्टेन । जालन-করে ও পর পক্ষের রথিগণ, পরস্পর বধাভিলাযী সেই দশ মহারথীর দর্শক হইলেন। তাঁহারা সিংহ-নাদ করত অনেক বিধ শস্ত্র বিমোচন করিয়া পর-স্পার প্রছার করিতে লাগিলেন। সকলেই জাতক্রোধ ও অমর্বণ হইয়া পরস্পর জ্ঞাতি হনন কামনায় न्मका ও সিংহনাদ সহকারে মহান্ত সকল নিফেপ করত সংগ্রাম করিতে লাগিলেন। ছুর্য্যোধন ক্রোধা-বিষ্ট হইয়া ত্বরা সহকারে চারি, তুর্মর্ষণ বিংশতি, চিত্রদেন দপ্ত, ছুর্মুখ দশ, ছুঃসহ দপ্ত, বিবিংশতি পঞ্চ ও ছুংশাসন তিন শাণিত বাণ দ্বারা ধৃউছ্যুত্রকে প্রহার করিলেন। হে রাজেন্দ্র! শত্রুতাপন পৃষত-কুমার ধৃষ্টপুরে হস্তলাঘৰ প্রদর্শন করত তাঁহাদিগের প্রত্যেককে পঞ্চ বিংশতি বাণ প্রহার করিলেন। অভিমন্ত্র্য সতাত্রত ও পুরুমিত্রকে দশ দশ শরে विक क्रिलिन। क्रन्नीत्र यानम्बर्कन नकुल ७ मह-দেব মাতুল শল্যকে তীক্ষ্ণ শর সমূহ দারা সমাচ্ছাদিত করিলেন; তাহা অদ্ভুতের ন্যায় হইল। তৎপরে শল্য র্থিপ্রধান ভাগিনেয় ছয়ের উপর বছ বাণ নিক্লেপ ক্রিলেন। তাঁহার। উভরে শলোর শর সমূহে আছাল্যান হইয়াও তাহার প্রতীকার মানসে বিচ-निक रहेरलन ना।

মহারাজ! মহাবল ভীমসেন মুর্যোধনকে দেখিরা বিবাদের শেব করিবার মানসে গদা গ্রহণ করি-লেন। গদাহস্ত মহাবাছ ভীমসেনকে শৃক্তযুক্ত কৈ-লাস প্রতের নামে দেখিরা আপন্কার অন্যান্য পুরু ভয়ে প্লায়ন করিলেন। পরস্ত মুর্যোধন কুজ হইয়া মুর্যা দেখির দল সহত্য প্রত স্বৈন্যকে আদেশ পুরুক ক্লাহাদিপের সহিত মগধরাজকে জ্যো করি

या जीमरमान्त्र चित्रभीन स्टेरनन्। श्रेमाङ्ख्य **द्रास्त**्र দর সেই গজ সৈনাকে আপতিত হইতে দেখিয়া निश्हव फेक निनाम कत्र त्रथ हहेट व्यवद्रा-হণ করিলেন। তিনি ক্লত-মুখ-ব্যাদান অন্তক্ সদৃশ हरेशा अफिनातमशी छस्ती महली नना এहन शूर्सक ধাবমান হইলেন। যে প্রকার রক্তহা ইন্দ্র দানব-গণের রণে বিচরণ করেন, তদ্রপ সেই বলী মহাবাছ গদা দারা গজগণ হনন করত সমর স্থলে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। চিত্ত ও হৃৎকম্পকারী তাঁছার মহা তৰ্জ্জন গৰ্জ্জনে গজ সকল সংহত হইয়া অতিচে-ফমান হইল। তদনন্তর দ্রৌপদী-পুজেরা, মহারধ স্থভদ্রা-পুত্র, নকুল, সহদেব ও ধৃষ্টদ্পান্ন ভীমসেনের পৃষ্ঠ রক্ষায় প্রবৃত্ত হইয়া মেঘ মণ্ডলীর গিরি নিচয়ের উপর জলধারা বর্ষণের ন্যায় গচ্চ দলের উপর শর বর্ষণ করত ধাবিত হইলেন। অনন্তর শাণিত স্থূপীত কুর, কুরপ্র, ভল্ল ও অঞ্জলিকান্ত দারা গজযোধী দিগের মন্তক ছেদন করিতে লাগিলেন। গজযোধি গণের পতমান মন্তক, বিভূষিত বাছ ও অঙ্কুশ महिल इस ममूट्य यन व्यस्त वर्षण इसेटल शांकिल। গজযোধিগণ গজক্ষেই ছিন্ন-মস্তক হইয়া যেন গিরি-শিখরে ভগ্নশাথ তরু সকল দৃষ্ট হইতে লাগিল। মহাত্মা ধৃষ্টত্বায়কেও রুহৎ রুহৎ মাতঞ্চ সকল নিপা-তিত ও নিপাত্যমান করিতে দেখা গেল। মাগধ মহীপাল এরাবত সদৃশ এক মহা হন্তী অভিমন্ত্রার রথ সমীপে চালন করিলেন। বীর শত্রুহন্তা মহাবীর অভিমন্ত্রা মগধরাজের মহাগজকে আসিতে দেখিয়া এক বাণে তাহাঁর প্রাণ সংহার করিলেন। মগধরাজ হস্তি-হীন হইলে তিনি রজতপুষ্থ এক ভল্ল দারা মগ্র রাজের শিরশেছ্দ করিয়া কেলিলেন। এ দিকে ভীম-সেন গজ সৈন্য অবগাহন করিয়া গজ সকল মর্দ্দন কুরুত ইলের গিরি বিচরণের নায়ে বিচরণ ক্রিতে লাগি-লেন। তিনি এক এক প্রহারেই দক্ষিগণ হনন করিতে ল্লাগিলেন | বাংকতে সেই সকল নিহত মাতসক यन वज्ञ एउ शर्वाज्य तात्र ज्ञवालाक्न कतिए

লাগিলাম। কোন কোন মাডকের দম্ভ, কোন কোন গাঁলের কট, কোন হন্তীর সক্থি, ও কাহার দিগের

क जग्न रहेन। পर्वरजाशम ज्ञानक रखी उद्धर विषक्ष रहेल । कान परिवर्ग नमत-विमूथ रहेसा পলায়ন করিল। কোন কোন হস্তী ভয়োদ্বিগ্ন হইয়া মূত্র পরিত্যাগ, ও কোন কোন নাগ পুরীবোৎসর্গ করিতে লাগিল। কোন কোন গিরি তুল্য গজ ভীম-**সেনের বিচরণ পথেই গতাস্থ হইল। কোন** কোন ; নাগ চিৎকার শব্দে আর্ডনাদ করিতে লাগিল। কোন কোন মহাগজ ভিন্নকুম্ভ হইয়া রুধির বমন করিতে করিতে বিহ্বল হইয়া পতিত শৈলের ন্যায় ধরা-भाशी हरेल। जीयरमन स्मल, ऋधित, तमा ও मञ्जा-তে সিক্তাঙ্গ হইয়া দণ্ডহন্ত যমের ন্যায় সমরভূমিতে বিচরণ করিতে লাগিলেন। তিনি গজগণের রুধি-ताक गमा धात्र कित्रा यन शिनाकशाती ऋएजत ন্যায় ঘোর ৰূপে ভয়াবহ হইলেন। গজগণ কুদ্ধ ভীম কর্তৃক নির্মধ্যমান ও ক্লিফ হইয়া সহসা আপন-কার দৈন্য মর্দ্দন করিতে করিতে ধাবমান হইল। যেমন অমরগণ বজ্ঞধারী ইন্দ্রকে রক্ষা করেন, সেই ৰূপ অভিমন্ত্র প্রভৃতি মহাধনুর্দ্ধর রথীগণ যুধান্ত সেই বীরকে সর্বতোভাবে রক্ষা করিতে লাগি-লেন। ভীমাত্মা ভীমসেন গজ-শোণিতাক্ত গদাধারী **হইয়া রণস্থলে ভ্রমণ কুরাতে ক্তান্তের ন্যা**য় দৃই रहेट नाशितन। नर्स मिटक शना हटल व्यासाय করাতে তাঁহাকে নৃত্যন্ত শঙ্করের ন্যায়, এবং দারুণ ইন্দ্রের বজাশনি সম রবকারী তাঁহার শত্রুঘাতিনী स्त्रोजी खर्की गमारक यममख मनुम मिथिए लागि-नाम। कुक रूप्राप्तदत्र পশু रनन काल शिनाक বেমন দৃষ্ট হয়, তদ্রপ কেশ মজ্জা মিল্রিত রুধির-দিশ্ব গদা দৃষ্ট হইতে লাগিল। যে প্রকার পশুপালক ৰক্ষি ৰারাপশু সংখাতকে ভাড়িত করে, তাহার ন্যায় ভীৰসেন গদা দারা গলানীক তাড়িত করিতে লাগি-विने। छर्द्शकीय कृश्वत मकल जीमामान्त्र भागान्त **इक्ष्मिक विकास क्षा मार्व बाजा वधामान**

হইরা স্ব পক্ষ অনীক দিগকেই মর্কন করিছে করি তে প্রদ্রুত হইতে লাগিল। ভীমসেন, মহাবাত কর্তৃক মেঘ মগুলী নিরাকরণের ন্যায়, বারণ গণ নিরাক্ত করিয়া, শাশানস্থ শিবের ন্যায়, সমরে অবস্থিত রহিলেন।

একোন বফিতম অধ্যায় সমাপ্ত । ৫৯।

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! সেই সমস্ত গজ সৈনঃ হত হইলে আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন, ভীমসেনকে বিধ কর, বলিয়া সর্বব সৈন্যের প্রতি আদেশ করি-লেন। সমর স্থলে ভৈরব রব কারী ভবৎ পক্ষ সমুদায় সৈন্য আপনকার পুত্তের শাসনামুসারে ভামসেনের সমীপে ধাবিত হইল। ভীমসেন দেব গণেরও স্বছঃসহ, পর্বে কালে স্বছুষ্পার সমুদ্র সদৃশ. অনম্ভ রথ পদাতি সঙ্কুল, রথ নাগ ঘোটক কলিল. শশ্ব তুন্তুভি নিম্বন সংযুক্ত, সর্ববত্র ধূলি সমাকীণ, অকোভা দিতীয় মহোদধির নাায় আপতন্ত সেই অপর্যান্ত সৈন্য সমূহ, বেলা ভূমির সাগর নিবা-রণের ন্যায়, নিবারিত করিতে লাগিলেন। মহা-রাজ! পাণ্ডপুত্র মহাত্মা ভীমসেনের সমরে অলৌ-কিক আশ্চর্যা কর্মা অবলোকন করিলাম। তিনি অশ্ব হন্তীর সহিত সেই সমন্ত সমুদীর্ণ পার্থিব-গণকে অসম্ভ্রান্ত চিত্তে গদা দ্বারা নিবারিত করিতে नाशिरनन। वनिव्यवत त्र्रकानत शना बाता महे সমস্ত সৈন্য নিবারিত করিয়া মেরু গিরির ন্যায় অচল রহিলেন। সেই পরম দারুণ ভুমুল ভীষণ রণে ভাতৃগণ, পুত্রগণ, ধৃষ্টত্বান্ন, জৌপদীপুত্রগণ, অভিমন্ত্র ও অপরাজিত শিথগু মহাবল ভীম-সেনকে ভয়প্রযুক্ত পরিত্যাগ করিয়া গেলেন না। বিভু ভীমসেন ঐ সকল বীরগণের রক্ষিত হইয়। रेनकारती प्रहर्जी श्रकी भना वरेसा मधरूख व्यक्तक সদৃশ হইয়া আপনকার যো**ধ্যণকে বঁধ করিতে লা**জি लनं ; तर्वत्रम ७ वाकित्म त्थाविष कन्न यूत्रास কলোন পাবকের ন্যায় সমরে পরিজমণ ক্রিতিত

शंकितनः : शनतः कात्नतः चलक पूना स्ट्रेता উদ্লবেশে রথজাল প্রকর্ষণ করিয়া বোধগণকে হনন क्तिए नाशित्नन ; य ध्यकात रखी नन वन जग जाशनकांत्र रेमना मध्या तथ नकन रहेएउ तथी नकन, शक शृष्ठ हरेए अकारताही मकन, जम शृष्ठ हरेए माप्ति मक्न वदः ভূতলে পদাতি मक्नक्, वाशूद्वरभ वृक्ष इनदनत्र नाम्य, भना दात्रा इनन क्रिंडि नाभि-লেন। ভাঁহার গদা তথন নাগ অশ্ব হনন করিয়া তাহা-मिटभे**त प्रका**, वना, माश्म ७ मानिटङ व्यक्तिको इरेसी মহাভরানক ৰূপে দৃষ্ট হইতে লাগিল। ইতন্তত নিহত মন্ত্রা, হস্তী ও সাদি সমূহে রণাঙ্গন, যমের সাঘাতস্থল-দল্লিভ হইল। ভীমসেনের অরাতি-चार्जिनी, जीमा, यमनद्यांशमा ७ हेट्सन रखनम-প্ৰভা সেই গদাকে লোক সকল, পশুঘাতী কুদ রুদ্রের পিনাকের ন্যায় দেখিতে লাগিল। যে প্রকার धनम कारन क्ञास्त्रत महारवात क्ष रहेमा छेट्टे, নেই মহাত্ম৷ কুৱীপুজের গদা ভাষণ কালে ভজপ মূর্ত্তি প্রতিভাত হইতে লাগিল। ভাঁহাকে মহতী নেনা প্রুনঃপুন বিজাবিত করিতে করিতে আগত হইতে দেখিরা সকলেই আগত বমের ন্যায় বোধ করত বিমনায়মান হইল। হে ভরত-কুলপ্রবর! जिन भरा छेराछ कतिया रिम्ना मर्था यथन य पिरक দৃষ্টিপাত করেন, তথন সেই মিকের সৈন্য সকল (यन विषीर्थ इरें जातिन।

মহারাজ! কুরু পিতামহ তীয় তীমকর্মা অপরাজিল র্কোদরকে দৈনা সমূহ কর্তৃক অপরাজিত এবং
তাঁহাকে মহাপদা গ্রহণ পূর্বাক দৈনা সকলকে বিজ্ঞাবিত করিতে ও ব্যাদিতাস্য ক্তাত্তের ন্যার তাহাদিপকে দেন গ্রাস করিতে দেখিরা আদিত্য সদৃশ
প্রতা-সক্ষর মহৎ রথে মেদ গরীর শব্দে বর্ষণকারী
প্রতান্যর ন্যার শ্রর বর্ষণ করিতে করিতে তাঁহার
স্বীপ্রে মাধিত হর্তিক । মহাবাহ ভীমনেনও ভীয়কে
ব্যাদিতানন ক্রভাত্তের নাগর আদিতে ব্যথিকা জর্মর

ভাবে তাঁহার প্রতি অভিষুখীন হইরা গমন করি-লেন। তথন সভাসন্ধ শিনি বীর সাভ্যকি আপন-কার পুজের সেনাকে কম্পমানা করত দৃড় শরাসনে শক্ত হত্যা করিতে করিতে পিতামহ ভীমের সমীপে আপতিত হইতে লাগিলেন। স্থপুশ্ব স্থশাণিত শর সমূহ বপন করিতে করিতে রক্তত প্রভা-সম্পন্ন বাজি-যোজিত রথে সাতাকির গমন কালে ভবং পক্ষ সমুদায় যোধগণ তাঁছাকে নিবারণ করিতে পারিলেন না। তথন রাক্ষস অলম্ব দশ বাণে তাঁ-হাকে বিদ্ধ করিলেন; পরম্ভ তিনি অলম্বকে চারি বাণে বিদ্ধ করিয়া গমন করিলেন। ভবৎ পক ষোধগণ, সেই র্ফিকুল বীর সাত্যকিকে কুরুপুঙ্গব-দিগকে প্রাবর্ডিত করত অরাতিগণ মধ্যে প্রবৃত্ত হইয়া আসিতে দেখিয়া, যে প্রকার মেঘ মণ্ডল পর্ববতে ঐলধারা বর্ষণ করে, তজ্রপ জাঁহার উপর শর বর্ষণ করিয়াও মধ্যাহ্ন কালীন আতপন্ত স্থ্যা সদৃশ তেজস্বী সেই বরিষ্ঠ বীরকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইলেন না। হে রাজন্। সেই সকল যোধগণ মধ্যে সোমদত্ত-পুত্ৰ ভূরিশ্রবা ব্যতীত কেহই অবিষণ্ণ হন নাই। তিনি স্ব পক্ষ রথিদিগকে সাত্যকি কর্তৃক অপনীয়মান দেখিয়া উত্তবেগ শরাসন গ্রহণ পূর্বক সাত্যকির সহিত যুদ্ধ করিবার মানদে প্রভ্যুদ্গমন করিলেন।

বটিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৬০।

সঞ্জয় কহিলেন, হে রাজন ! তৎ পরে ভ্রিশ্রনা নাতিশয় ক্রোধাবিউ হইয়া, মহাগজের প্রতি তোত্র প্রহারের ন্যায়, নাত্যকিও নকল লোকের নাজা-লেন । অমেয়ায়া নাত্যকিও নকল লোকের নাজা-তে সমতপর্ম বছল শর দারা কৌরব ভ্রিশ্রনাকে নিবারিত করিতে লাগিলেন ৷ তদমন্তর রাজা ভূর্মো-ধন সোমরগণে পরিবৃত হইয়া ভূরিশ্রনার রক্ষার্থে চতুর্কিক্ প্ররিবেউন করিলেন ৷ এবং ক্রাবল-সম্পদ্ধ পাণ্ডব প্রক্রনাক্রিক নাজাকির রক্ষার্থে চতুর্কিক্

পরিবারিত হইলেন। ভীমনেন সংক্রম হইয়া গদা উদ্যত করত আপনকার সমুদার পুত্রদিগকে পরি-বেউন করিলেন। অনেক সহস্র রথি-সমবেত আ-পনকার পুত্র নন্দক ক্রোধামর্য-সমন্থিত হইয়া শিলা-শাণিত কলপত্রযুক্ত তীক্ষ্ বিশিধ সমূহ দারা মহা-বল ভীমসেনকে প্রহার করিলেন। তথন ছুর্য্যো-ধনও সেই মহারণে কুদ্ধ চিত্তে নয় বাণে ভীমসেনের ৰক্ষঃস্থলে প্রহার করিলেন। তদনন্তর অতিমহাবল মহাবাহু ভীম স্বকীয় রথবরে সমারোহণ করিয়া मात्रिथ विरमाकरक कहिरलन, मात्रिथ! थे मकल মহারথ মহাবল ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র অতি ক্রোধান্বিত হইয়া যুদ্ধে আমাকে বধ করিতে উদ্যত হইয়াছে, আজি আমি উহাদিগকে তোমার সাক্ষাতে যমা-লয়ে প্রেরণ করিব, অতএব তুমি এই সংগ্রামে আ-মার অশ্বদিগকে সযত্ন হইয়া নিয়মিত করঁ। হে নরা-धिপ ! त्रकापत्र, मात्रथिद्र हेश विवास कनक ভूषिত তীক্ষ্ম বছল শর দারা ছুর্য্যোধনকে বিদ্ধা করিলেন; তৎ পরেই নন্দকের স্তন দ্বয়ের মধ্য স্থলে তিন বাণ প্রহার করিলেন। পরে ছুর্য্যোধন মহাবল ভীমকে ষষ্টি বাণে বিদ্ধ করিয়া অন্য স্থশাণিত তিন বাণে তাঁহার সার্থি বিশোককে বিদ্ধ করিলেন, এবং যেন হাসিতে হাসিতে তীক্ষ্ণ তিন শরে ভীমের কার্ন্মকের মুফি দেশ ছেন্দন করিয়া ফেলিলেন। ভীম তথন সারধি বিশোককে ধন্তর্জর ছর্ব্যোধনের স্থ-তীক্ষ্ণ বানে পীড়িত দেখিয়া অসহমান ও কুদ্ধ হইয়া আপনকার পুজের বধার্থ দিবা ধন্তুকুও লোমবাহী কুরপ্র অন্ত্র গ্রহণ পূর্ব্বক রাজা ছুর্য্যোধনের ধন্তুকের

দেশ ছেদন করিয়া ফেলিলেন। তিনি জোধমুর্চ্ছিত হইয়া তারা সহকারে ছিন্ন ধরুক পরিত্যাগ
ও অন্য এক বেগবন্তর ধরুক গ্রহণ করিয়া কালান্তক সদৃশ এক বাণ সন্ধান পূর্বকে ভীমসেনের স্তন
ভারের মধ্যস্থলে বিদ্ধ করিলেন। ভীমসেন তাহাতে
গাঢ় বিদ্ধ, সর্বগাত্র-বিবোজিত, বাধিত ও মুর্চ্ছাপন্ন
হইয়া রখোপাই উপবিষ্ঠ হইলেন। ভীমসেনকে
প্রায়ন করিলেন।
কিন্তু হাসিতে হাসিতে হম ভবনে উপস্থিত করিলেন; এবং স্থলোচনকৈ ক্রপ্রান্ত হারা সর্ব সৈনোর
সাক্ষাতেই মৃত্যু-মুখে নিঃসারিত করিলেন। তদভার আপনকার বে সকল পুত্র তথার অবশিষ্ট
হিলেন, তাহারা তথন ভীমসেনের পরাক্রম দেখিরা
সাচ্চ বিদ্ধ, সর্বগাত্র-বিবোজিত, বাধিত ও মুর্চ্ছাপন্ন
হইয়া রখোপাই উপবিষ্ঠ হইলেন। ভীমসেনকে
স্বায়ন করিলেন।

কাতর দেখিরা অভিমন্ত্য-প্রমুখ পাণ্ডব প্রক্র মহাভাগ মহারথগণের তাহা অসহ হইরা উঠিল। তাঁহারা অব্যথ্য চিন্তে ছুর্য্যোধনের মন্তকোপরি উগ্রতেজ বাণ সকল ভুমুল রূপে বর্ষণ করিতে লাগিলেন। মহাবল ভীমসেনও ক্ষণ পরে সংজ্ঞা লাভ
করিরা ছুর্য্যোধনকে প্রথমত তিন বাণে বিদ্ধ করিরা
পরে পঞ্চ বাণে বিদ্ধ করিলেন। তৎ পরেই শল্যকে রুক্মপুশ্ব পঞ্চ বিংশতি বাণে বিদ্ধ করিলেন।
শল্য বাণ বিদ্ধ হইরা রণ হইতে অপস্তত হইলেন।

মহারাজ! তৎ পরে সেনাপতি, স্থবেণ, জলসন্ধ. ञ्चलाहन, উত্র, ভীমরথ, ভীম, বীরবাছ, অলোলুপ. ছুর্মুখ, ছুম্পুধর্ষ, বিবিৎস্থ, বিকট ও সম, আপনকার এই চতুর্দশ পুত্র সমবেত ও ক্রোধ-সংরক্ত-লোচন হইয়া ভীমদেনের সমীপে ধাবন পূর্বকে তুঁাহার উপর বছল বাণ বিসজ্জন করত তাঁহাকে দৃঢ় বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। মহাবাছ মহাবল ভীমসেন আপনকার পুত্রদিগকে ভাদৃশ বাণ নিক্ষেপ করিতে मिथिय़ा, পশু मध्य इंदिन नागिय, एक लिइन क्वंड গরুড় তুল্য বেগে তাঁহাদিগের মধ্যে আপতিত হই-য়া ক্রপ্র দারা দেনাপতির শিরশ্ছেদ করিলেন; সহাস্য-মুখে তিন বাণে জলসন্ধকে সংহার করিয়া यमनाम्रत्न উপनीज क्रिलन ; स्रुट्यन्र्क वर्ध क्रिसा মৃত্যু সমীপে প্রেরণ করিলেন; উত্তের শির জ্রাণের সহিত কুওল দ্বর শোভিত চক্রোপম মন্তক ভল্লাব্রে ভূতলে প।তিত করিলেন; অশ্ব, কেতু ও সারধির সহিত বীরবাহুকে সপ্ততি বাণে পর লোকে প্রেরণ করিলেন; বেগশীল ভীমর্থ ও ভীম, উভয় ভাতা-কে যেন হাসিতে হাসিতে ষম ভৰনে উপস্থিত করি-लन; अवर स्रोताहनत्क क्रथां व हाता मर्स मिरनात শাক্ষাতেই মৃত্যু-মুধে নিংসারিত করিলেন। ভদ-ভিন্ন আপনকার যে সকল পুত্র তথার অবশিষ্ট ছিলেন, তাঁহারা তথন ভীমনেনের পরাক্রম দেখিয়া পলায়ন করিলেন।

তদনন্তর শান্তমুনন্দন সমস্ত মহারথদিগকে কহি-লেন, হে মহারথগণ! উত্থধস্বা ঐ ভীমসেন রণে কুন্ধ হ্ইরা মহারথদিগের মধ্যে যিনি যেমন প্রধান, रयमन बीत, रयमन भूत रूछन ना रून, छारापिशरू নিপাতিত করিতেছেন, অতএব তাঁহাকে তোমরা প্রমণিত কর, বিলম্ব করিও না। ধার্তরাষ্ট্র সমুদায় দৈনা, ভীন কৰ্ত্ক এই ৰূপ উক্ত হইয়া মহাবল ভীমদেনের অভিমুখে ক্রোধাবিষ্ট চিত্তে ধাবমান र्रेल। ভগদত, গলিত-মদ কুঞ্জরারোহণে ভীমের সমীপে আপতিত হইলেন। তিনি তাঁহার সমুখে আপতিত হইয়াই তাঁহাকে বাণ সমূহ ছারা, মেঘ কর্তৃক অদৃশ্য সূর্যোর ন্যায়, অদৃশ্য করিলেন। স্ব স্ব বাহ্বলের আশ্রিত অভিমন্যু প্রভৃতি মহার্থগণ যুদ্ধে ভীমের শরাচ্ছাদিত হওয়া সম্ভ করিতে না পারিয়া চতুর্দিকে শর বর্ষণ দ্বারা ভগদত্ত ও তাঁহার হত্তীকে সমার্ভ করিলেন। সেই প্রাগ্জােতিব হন্তী, সেই সকল মহারথের নানাবিধ অতি তেজন শস্ত্র বর্ষণে অভিহত হইয়া রুধির-ক্লিন্ন কলেবর হওয়াতে, বে প্রকার মহামেঘ মণ্ডলী সূর্য্য কিরণে সংস্থাত হইয়া দর্শনীয় হয়, তদ্রেপ দর্শনীয় হইল। দেই মদস্রাবী রুধিরাক্ত বারণ ভগদত্ত কর্ভৃক চা-লিভ হইয়া দিগুণ বেগাবলম্বনে পদভরে পৃথিবী-কে কম্পমানা করত, কাল প্রেরিত ক্রতান্তের ন্যায়, সেই সকল যোজাগণের প্রতি ধাবমান হইল। সমু-দায় মহারথ সেই মহাগজের মহাভয়ানক ৰূপ দেখি-त्र। व्यत्रक्ष विद्युष्टना कत्निया विभना रुटेलन । त्राका ভগদত্ত ক্রুদ্ধ হইয়া নতপর্ব্ব শর দ্বারা ভীমসেনের ন্তন হয়ের মধ্য স্থলে আঘাত করিলেন। মহা-ধমুর্দ্ধর মহারথ ভীমদেন রাজা ভগদত্ত কর্তৃক অতি-বিন্ধ ও সুচ্ছিত হইয়া রথের ধক্ত যফি আতায় করিয়া व्यवस्थि रहेराना । প্রতাপবান্ ভগদত সেই সকল रवायुश्रगदक कीं छ कीमरमनदक मूर्किक प्रविशा वनवर क्रिकेंस कतिया छेठिएन। ए ताकन्। छन-নন্তর ভশ্ননক রাক্ষস ঘটোৎকচ ভীমকে ভদবস্থা-

পদ দেখিয়া সংকুদ হইয়া সেই স্থলেই অন্তৰ্হিত **रहेन, এবং নিমেষার্দ্ধকাল পরেই ভীরুদিগের ভয়-**বর্দ্ধিনী দারুণ মায়া স্থায়ী করত স্বরুত মায়াময় ঐরাবতে আরোহণ করিয়া ভীষণ মূর্ভি ধারণ-পূর্ব্বক লোকের দৃষ্টি পথে আবির্ভুত হইল। তেজ, বীর্যা, বল, মহাবেগ ও পরাক্রম বিশিষ্ট রাক্ষসগণে অধি-ষ্ঠিত, বছল মদ্রাবকারী, মহাকায়, স্থপ্রভাষিত ও চতুর্দন্ত সম্পন্ন অঞ্জন, বামন ও মহাপত্ম এই তিন দিগ্ হন্তী তাহার অনুগামী হইল। ঘটোৎকচ ভগদত্তকে তাঁহার গজের সহিত বিনাশ করিবার মানসে স্বীয় নাগ চালনা করিল। এবং অন্য তিন নাগও অতি মহাবলাক্রান্ত রাক্ষসদিগের চালিত ও অতি ক্রোধাবিফ হইয়া ভগদত্ত-হস্তীর চতুর্দিগে ধাবন পূর্বক তাহাকে দন্ত দারা পীড়ন করিতে লাগিল। "সেই নাগ একে অভিমন্ত্য প্রভৃতি মহা-রথগণ কর্ত্ব শরাহত, তাহাতে আবার দিগ্ হন্তী দিগের দন্তাহত হইয়া অতিশয় পীডামান হইল; সে ইন্দ্রের অশনি সম অতি মহা নিনাদ করিতে नाशिन।

হে ভারত রাজ! ভীয়, সেই ভগদন্ত-গড়ের স্থঘোর নিনাদ শ্রবণ করিয়া রাজা দুর্যোধন ও দ্রোণকে
কহিলেন, মহাধন্তর্জর রাজা ভগদন্ত সংগ্রামে মহাকায় হিড়িয়া-স্থতের সহিত য়ুদ্ধ করিতেছেন; তিনি
ছংসাধ্য ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। রাক্ষস ঘটোৎকচ মহাকায়, রাজা ভগদন্তও অতি কোপন স্বভাব,
ইহাঁরা ছই জুন নিশ্চয়ই সমরে পরস্পরের মৃত্যু
স্বৰূপ। ঐ পাণ্ডবদিগের হর্ষ-স্তুচক মহাধনি এবং
ভয়ার্জ ভগদন্ত নাগের অতি মহান্ আর্ত্তনাদ প্রতু
হইতেছে; অভএব ভোমাদিগের মঙ্গল হউক, চল
আমরা রাজা ভগদন্তকে রক্ষা করিতে ঘাই; এক্ষণে
তাঁহাকে রক্ষা না করিলে, ভিনি শীঘ্রই সমরে প্রাণ
ভ্যাগ করিবেন। হে মহাবীর্যা বিশুদ্ধাম্মা গণ!
ভোমরা মুরা কর, বিলম্ব করিও না; উহাদিগের
নিদারূণ মহা রোমহর্ষণ সংগ্রাম হইতেছেন হে

অক্রসত্ত্বণ ! রাজা ভগদত্ত সংকূল-সন্তান, শ্র এবং সেনাপতি ; উহাঁকে পরিত্রাণ করা আমা-দিগের নিতান্ত উচিত।

ভীম্মের এই কথা শুনিয়া দ্রোণ-প্রমুখ সমুদায় রাজ গণ ভগদত্তকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত ত্রমাণ হইয়া অতিবৈগে ভগদত্তের সমীপে গমন করিতে লাগি-লেন। যুধিন্ঠির-প্রমুখ পাগুর ও পাঞ্চালগণ সেই বিপক্ষদিগকে প্রযাত দেখিয়া তাঁছাদিগের অমু-গামী হইলেন। প্রতাপবান্ রাক্ষসেন্দ্র ঘটোৎকচ **শেই সকল সৈন্য অবলোকন করিয়া অতি মহা নি-**নাদ করত নভোমগুল অমুনাদিত করিল। শাস্তমু-নন্দন ভীয় তাহার নিনাদ শুনিয়া এবং সেই দিগ্-হস্তীদিগকে যুদ্ধ করিতে দেখিয়া দ্রোণাচার্য্যকে পুন-র্বার বলিলেন, ছুরাত্মা ঘটোৎকচের সহিত সংগ্রাম করিতে আমার রুচি হয় না। ঐ ছুরাত্মা সংপ্রতি উত্তম সহায় সম্পন্ন ও বল বীর্য্য সমন্বিত হইরাছে। ও স্বভাবতই লক্ধ-লক্ষ এবং প্রহারে সমর্থ; এক্ষণে উহাকে স্বয়ং ইন্দ্রও যুদ্ধে জয় করিতে সমর্থ হই-বেন না; বিশেষত আমাদিগের বাহন গণ এক্ষণে শ্রান্ত হইয়াছে; আমরাও পাঞ্চাল ও পাণ্ডবর্গণ কর্ত্তক অদ্য সমস্ত দিবস ক্ষত বিক্ষত হইয়াছি। এক্ষণে পাগুবেরা জয়ী হইয়াছে, উহাদিগের সহিত আর যুদ্ধ করিতে[.] আমার প্রবৃত্তি হইতেছে না। অতএব অদ্য সেনাগণের অবহার করিতে ঘোষণা কর, পর দিন বিপক্ষ সহ সংগ্রাম করা যাইবে।

ঘটোৎকচ ভরে পরিপীড়িত কৌরুবগণ পিতামহের এ বাক্য শুনিয়া রাত্রি উপস্থিত এই এক
উপায় অবলয়ন পূর্বক হর্ষ প্রকাশ করত সৈন্যদিগকে অবহার করিতে ঘোষণা করিলেন। কৌরবগণ নির্ভ হইলে লক্ষ-জয় পাওবেরা শহ্ম-বেণু-স্থন
সহকারে সিংহনাদ করিয়া উঠিলেন। হে ভারতপ্ররাহ্মী পাওবদিগের এই রূপ যুদ্ধ হইয়াছিল।
কৌরবেরা পাওবদগের কর্ম্ক পরাজিত এবং লক্ষা-

ষিত চিত্তে সত্ত্ব হইয়া স্ব স্থানিরে প্রবিশ করিলেন। ক্ষত বিক্ষতাঙ্গ মহারথ পাওবেরা ভীমদেন
ও ঘটোৎকচকে প্রশংসা করিতে করিতে তাঁহাদিগকে অগ্রে অগ্রে লইয়া স্কুলান্তঃকরণে শিবিরে
গমন করিতে লাগিলেন। তাঁহারা পরমাহলাদিত
হইয়া আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধনের মর্ম্ম-ভেদক
তুর্য্য ও শহ্ব স্থন মিশ্রিত বিবিধ নিনাদ সহকারে
সিংহনাদ করত মেদিনী কম্পমানা করিয়া নিশা
কালে শিবিরে প্রবিষ্ট হইলেন। নৃপতি ছুর্য্যোধন
ভাত্বধ প্রযুক্ত দীন মনে বাস্প-শোক-সমাকৃল হইয়া মুহুর্জ কাল চিন্তা করিলেন। তদনন্তর শিবিরবিহিত যথাবিধি কার্য্য বিধানানন্তর ভাতৃ শোকে
কর্ষিত হইয়া চিন্তা করিতে লাগিলেন।

চতুর্থ দিবস যুদ্ধ ও একষ**ন্টিতম অ**ধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৬১ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! পাণ্ডু-কুমারদিগের দেব-ছুঃসাধ্য কর্মা শুনিয়া আমার অতি মহাভয়ও বিশ্বয় জিমিরাছে। হে সঞ্জয়! পুত্রদিগের সর্বব প্রকারে পরাভব শুনিয়া ইহার পর কি ৰূপ হইবে এই মহতী চিন্তা আমার চিত্তকে ব্যাকুল করিতেছে। হে সঞ্জয়! যে সমস্ত ব্যাপার দৈবাধীন দেখিতেছি, ইহাতে নিশ্চয়ই বিছুরের বাক্য আমাকে অনুতা-পিত করিবে; কেন না পাগুব-সৈন্মের যোদ্ধাগণ. যোধসত্তম অন্তক্ত শূর ভীয় প্রভৃতির সহিত যুদ্ধ করিয়া তাঁহাদিগকে প্রহার করিতেছে। ছেবৎস। মহাত্মা মহাবল পাণ্ডবেরা কি হেডু অবধ্য হইল? যখন তাহারা আকাশগত তারাগণের ন্যায় ক্ষয় প্রাপ্ত হইতেছে না, তখন তাহাদিগকে কেহ বর দিয়া থাকিবেক অথবা তাহারা কোন মন্ত্র অৰ-গত থাকিবেক। পাগুবেরা যে পুনঃ পুন সৈন্য বি-নাশ করিতেছে, ইহা আমি সম্থ করিতে পারি না। পরম দারুণ দণ্ড, দৈব কঁৰ্ড্ক আমার প্রতিই পতিত হইয়াছে। হে সঞ্জয়! পাওবেরী যে কারণে অবধ্য र्धेवर जामात्र शूरकात त्व कीत्रत्व वेधा, ठारा जूमि যথা তত্ত্বামুসারে আমাকে বল। আমি, মমুবোর ভুজ ছয়ে মহাসাগর উত্তীর্ণ হইবার ন্যায়, কোন প্রকারে এই ছুঃখ সাগর হইতে উত্তীর্ণ হইবার উপার দেখিতেছি না। আমি নিশ্চরই পুত্রদিগের স্থদারুণ বাসন উপস্থিত মনে করিতেছি। ভীম আমার সমুদায় পুত্রকেই সংহার করিবে, তাহাতে সংশয় নাই। হে সঞ্জয়! আমি এমত বার কাহা-কেও দেখিতেছি না, যে, সংগ্রামে আমার পুত্র-দিগকে রক্ষা করিতে পারে ; অতএব আমার পুত্র-দিগের নিঃসংশয়ই বিনাশ হইবে। হে সঞ্জয়! আমি ভোমার নিকট জিজ্ঞাসা করিতেছি, পাণ্ডবদিগের জয় ও আমার পুত্রদিগের বিনাশ বিষয়ে যুক্তিযুক্ত কারণ কি, তাহা তুমি আমার নিকট যথাতত্ত্ব ক্রমে বিশেষ ৰূপে কীৰ্ত্তন কর, এবং ছুর্যোধন, ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ, শকুনি, জয়ত্রথ, অশ্বত্থামা ও বিকর্ণ, এই সকল মহাবল মহাধনুর্ধরগণ, স্ব পক্ষেরা রণ-বিমুখ হইলে কি করিলেন ? এবং আমার পুজেরা বিমুখ হইলে, তং কালে সেই মহাত্মাদিগের কি নিশ্চয় হইল ?

সঞ্চয় কহিলেন, হে রাজন্! অবধান পূর্বক প্রবণ করিয়া অবধারণ কর। পাওবেরা কোন মন্ত্র-প্রেরাগও করেন না, তথাবিধ মায়া কার্যাও কিছু জানেন না, এবং কোন বিভীষিকাও হটি করেন না। তাঁহারা শক্তিমন্ত, যথা ন্যায়ে যুদ্ধই করিয়া থাকেন। হে ভারত! পাওবেরা সর্বাদাই মহং যশ কামনায় ধর্ম জারাই জীবিকাদি সমস্ত কার্যা নির্বাহ করিয়া থাকেন। সেই মহাবল শীল পরম প্রীযুক্ত পাপুনক্রেরা স্বর্ধানে বর্মা, সেখানেই জয়; এই হেতু তাঁহারা ক্রিলা পানকার পুত্রেরা ছরাত্মা, নিষ্ঠুর, হীনকর্মা এবং সর্বাক্রিত হইডেছেন। তাঁহারা পাওবদিনের

व्यक्ति नीव लाकपिरभन्न नाम परनक नृत्रश्त कर्य, আচরণ করিয়াছিলেন, কিন্তু পাগুবেরা আপনকার পুত্রদিগের অমুষ্ঠিত সেই সমস্ত নৃশংস কর্ম উপেকা করিতেন, এবং গোপন করিয়া রাখিতেন। হে নরা-ধিপ! আপনকার পুজেরা তাঁহাদিগকে যে অবমা-নিত করিয়াছিলেন, সংপ্রতি সেই সতত ক্রত পাপ কর্মের মহাকাল ফল সদৃশ স্থদারুণ ফল উপস্থিত হইয়াছে, তাহা আপনি স্থৃহৃদ্ও পুত্রগণের সহিত ভোগ করুন। মহাত্মা বিচুর, ভীন্ম ও দ্রোণাচার্য্য আপনাকে নিবারিত করিলেও আপনি বুঝিতে পা-রেন নাই। আমিও আপনাকে যথার্থ হিত বাক্য দারা নিবারণ করিয়াছিলাম, কিন্তু মন্দ ব্যক্তি যেমন পথা ও ঔষধ গ্রহণ করে না, তদ্ধপ আপনি আমার সেই হিত বাক্য গ্রহণ করেন নাই, পুক্রদিগের মভাবলয়ী হইয়াই পাগুবদিগকে পরাজিত মনে করিয়াছিলেন।

হে ভরতশ্রেষ্ঠ! আপনি আমাকে পাগুবদিগের জমের প্রতি প্রকৃত কারণ যাহা জিজ্ঞাসা করিলেন. তাহা পুনর্বার আপনাকে বলিতেছি, প্রবণ করুন। এই বিষয় চুর্য্যোধন পিতামহ ভীন্নকে জিজ্ঞাসা করিলে, তিনি ছুর্যোধনকে যাহা কহিয়াছিলেন, তাহা আমি যেৰপ শ্ৰবণ করিয়াছি, আপনার নিকট বলিতেছি। হে জনাধিপ! 'নিশাকালে আপনকার পুজ্র ছুর্য্যোধন অতিমহারথ সমুদায় ভাতাকে রণে পরাস্ত দেখিয়া শোকাকুল চিত্তে মহাপ্রাক্ত পিতামহ সমীপে গমন প্রুৰ্কক সবিনয়ে কহিলেন, পিতামহ! আপনি, বীর্যাবান্ জোণ, শলা, ক্লপ, অশ্বর্থামা, रार्किका क्रजबन्धा, कारबाक बाक स्राक्तिन, जूतियाना, विकर्ग ७ जनमने, जाभनाता मकरलहे महात्रथ ७ मध-কুল সম্ভূত এবং যুদ্ধে তমুত্যাগে ও ক্লভোৎসাহ বলিয়া বিখ্যাত; আমার মতে ত্রিলোক মধ্যে আপ-नामित्रात्र जूला शाका (कर नारे, ममस शास्त्र शक যোজাও আপনাদিগের পরাক্রম সম্থ করিতে পারে পাওবেরা কাহাকেও আঞার করিয়া পদে পদে জয়যুক্ত হইতেছে; যাহাকে আঞার করিয়া তাহারা
জয় লাভ করিতেছে, তাহা আপনি আমার নিকট
কীর্তন করুন।

কহিলেন, হে কৌরব রাজ! আমি যাহা ভোমাকে বলি, ভাহা শ্রবণ কর; আমি বছবার ভোমাকে বলিয়াছিলাম, কিঁম্ভ তুমি আমার বাক্য আছ কর নাই। এখনও বলিতেছি, তুমি পাণ্ডব-দিপের সহিত সন্ধি কর; আমার মতে সন্ধি করাই ভোমার এবং সমস্ত পৃথিবীর মঙ্গল জনক। তুমি পাওবদিগের সহিত সন্ধি স্থাপন করিয়া ভাতা-গণের সহিত স্থী হইয়া সকল স্কৃদ্ও বান্ধাৰ-গণকে আনন্দিত করত এই পৃথিবী উপভোগ কর। হে বৎস! তুমি পুর্বের পাগুবদিগকে অবমানিত করিরাছিলে; আমি তোমাকে মুক্তকৃষ্ঠে নিবারণ করিলেও যে তুমি তাহা শুন নাই, তাহারই কল একণে লক হইতেছে। হে মহারাজ। সেই অক্লিউ-কর্ম। পাগুবেরা যে অবধ্য, তাহার কারণ কীর্তন করি-তেছি ভাবণ কর। রুষ্ণ-রক্ষিত পাণ্ডবদিগকে যে কেহ রণে পরাজিত করে, এতাদৃশ প্রাণী লোক মধ্যে क्ह नारे, शूर्व्व इम्र नारे, এবং ভবিষ্যতেও হইবে না। হে বংস ধর্মজ্ঞ! ভাবিতাত্মা মুনিগণ পুরাণগীত যে কথা আমাকে পূর্বে কহিয়াছিলেন, ভাহা আমুপুর্ব্বিক ভোমার সকাশে কীর্ত্তন করি, व्यवन कत्र । शूर्वकारण ममछ अवि ও দেবগণ পদ্ধমা-দন পর্বতে গমন পূর্বক ব্রহ্মার সমীপে সমুপবিষ্ট হইলেন। তাঁহাদিগের মধ্যে সমাসীন প্রজাপতি শন্তরীকে দীপ্তি সম্পন্ন উচ্চ্বুল এক উন্তম বিমান দেখিতে পাইলেন। তিনি চিন্তা করিয়া তত্তত্ব পর-মেশ্বরকে জানিতে পারিয়া হৃষ্টান্তঃকরণে গাজো-थान श्र्विक मश्ये ଓ कृषाक्षति रहेन्ना नमकात किन-ल्न। सवि ও দেবগণ সকলেই সেই মহাত্তুত ব্যা-পার ও বন্ধাকে উপিত দেখিয়া প্রাঞ্চলি ও দণ্ডায়-नान इहेरलन। नगम्तियां जा शत्रम यम्बद्ध वक्क थावत

बका मिरे भन्न प्रवास करिया द्वार किन्न লাগিলেন। হে দেব! ভুমি বিশ্বাবস্থ, বিশ্বযুর্তি, विष्यंग, विश्वकृत्मन, विश्वकर्षा, निष्ठश, विष्यंश्वन, বাস্থদেব এবং ধোগাত্মা, অতএব আমি ভোমার শরণাপন্ন হইলাম। হে অখিল ব্রহ্মাণ্ডের মহাদেব! ভূমি জয় যুক্ত হও—তোমার স্বাভাবিক নিত্য উৎ-কর্ষ আবিক্ষার কর। হে লোক হিতরত। ভূমি জয় যুক্ত হও। হে বিভু যোগীশ্বর! ভুমি জয় যুক্ত হও হে যোগ পরাবর! ভূমি জয় যুক্ত হও। হে পঞ্ नाछ ! हर विमानाक ! हर लाकि श्रद्धात वेश्वत ! जूमि জয় যুক্ত হও। হে ভূত ভবিষ্য বর্ত্তমানের নাথ! ह् रहे भारत है । इस स्वाप्त कर कि स्वाप्त कर है । হে অসম্বোয় গুণাধার! হে সর্ব্ব পরায়ণ! ভূমি জয় যুক্ত হও। হে নারায়ণ! হে অসীম মহিম! হে শাঙ্গ ধন্মৰ্কার! ভূমি জয় যুক্ত হও। হে সর্বব গুণ সম্পন্ন! হে বিশ্বসূর্ত্তি! হে নিরামর! তুমি জায় যুক্ত হও। হে বিশ্বেশ্বর! হে মহাবাছ! হে লোক-হিতৈষিন্! ভূমি জয় যুক্ত হও। হে মহানাগ!হে বরাহ মূর্তি! হে আদি কারণ! হে পিঙ্গল কেশ! হে বিভূ! হে পীতবাস ! হে দিগীশ্বর ! হে বিশ্ববাস ! হে অমিন্ত ! হে অবার। তুমি জর যুক্ত হও। হে ব্যক্ত। হে অব্যক্ত! হে অমিতাধার! হে নিয়তেন্দ্রির! হে সং-ক্রির! হে অসম্বোর! হে আত্ম-ভাবজ্ঞ। হে গন্তীর! হে কামদ! ভুমি জয় যুক্ত হও। হে অনন্ত! হে বিদিত! হে ব্ৰহ্মন্! হে নিত্য! হে ভূতপ্ৰভাবন! হে কৃতকার্যা ৷ হে কৃতপ্রজ্ঞা হে ধর্মজ্ঞ ৷ হে জয়পরাজয় বিহীন! হে গুছাত্মনৃ! হে দৰ্কবোগাত্মনৃ! হে কুট-সমুত সম্ভব! হে ভূতান্মতন্ত্ৰ! হে লোকেশ! হে ভূত-বিভাবন! তুমি জয় যুক্ত হও। হে আত্মযোনে! হে মহাভাগ! হে কম্প সংক্ষেপ তৎপর! হে মনো-ভাবোদ্ভাবন । হে ব্রাহ্মণ প্রিয় ! তুমি কর যুক্ত হও। हि तेनिर्शिक रुखि निव्रष्ठ ! हि कारमन ! हि श्रवरम-শ্বর! হে অমৃতোৎপাৰ্কক! হে মন্তাব! হে মুক্তা-ন্মন্! হে বিজয়প্রদ! হে প্রজাপতি পতি। হে দেব !

ह् भवनाज! हि यहाँवन! हि चाज्र जुठ! हि महा-ভূত! হে কর্মান্সন্! হে সর্বপ্রেদ! তুমি জয় যুক্ত হও। **ধরাদেবী ভো**মার চরণ দ্বর, দিক্ সমস্ত তো-মার বাছ, অন্তরীক্ষ তোমার মন্তক, আমি তোমার মূর্ত্তি, দেবতা সকল তোমার কার, চক্র স্থ্যা তোমার **ঢকু, সংক্রপ ও ধর্ম-ক্র্য-মূল সত্য তো**মার বল। অগ্নি তোমার তেজ, বায়ু তোমার খাস, জল তো-মা**র স্বেদ, অস্থিনী-কুমার দ্বয় তোমার** কর্ণ ছয়, সর-স্বতী দেবী তোমার জিহ্বা, বেদ তোমার সংস্কার-নিষ্ঠ এবং এই সমস্ত জগং তোমাতে আগ্রিত হইয়া আছে। হে যোগেশ! হে যোগীশ! আমরা ভোমার সংখ্যা, কি পরিমাণ, কি তেজ, কি পরক্রেম, কি বল, কি আবির্ভাব, কিছুই জানিতে পারি না। হে বিষ্ণে! ছে দেব! ভুমি মহেশ্বর ও পরমেশ, তো-মার প্রতি ভক্তি-নিরত ও তোমার আগ্রিত হইয়। আমর। দর্বদা নিয়ম-পূর্বেক তোমার পূজা করিয়। थाकि। ए भवना छ। ए विभानाकः। ए कृषः। ए **छुःश-श्रामन** । श्रीष, (प्रव, शक्तर्स, यक्क, ताकन, পন্নগ, পিশাচ, মানুষ, মৃগ, পক্ষী ও সরীস্পর্গাকে ভোমার প্রসাদে বিশ্ব মধ্যে আমি হুটি করি-য়াছি। হে দেবেশ। তুমি সকল প্রাণীর গতি, তুনি সকল প্রাণীর নেতা, তুমিই জগতের আদি; দেব-ভারা চিরকাল ভোমারই প্রসাদে স্থা হইয়া থা-কেন। পৃথিবী তোমার প্রসাদে সদা নিভীকা হইয়া থাকেন, এই নিমিত্ত, হে বিশালাক্ষ! তুমি যচুবংশ-বৰ্দ্ধন হও। হে বিভু! ভুমি ধর্ম সংস্থাপন, দৈত্য বধ ও বিশ্ব ধারণ নিমিত্ত আমার নিবেদিত এই কার্য্য সম্পন্ন কর। হে বাস্কুদেব। হে বিভু! তোমার প্রসাদে আমি এই পরম গুছ বিষয় যাথাতথাক্রমে উদ্গীত করিয়াছি বে ভূমি স্বয়ং আত্মা দারা আত্মাকে বল-দেব ৰূপ স্টি করিয়া পুনর্ফার আন্থাকে রুঞ্চ ৰূপ সৃষ্টি করিয়াছ, তৎ পরে আত্মা হইতে প্রভুমেকে উৎপন্ন করিয়াছ। থাঁহাকে লোকে অবায় বিফু

পাদন করিয়াছ এবং প্রচ্নার আমাকে লোকধারী ব্ৰহ্মা ৰূপে হুটি ক্রিয়াছেন ; স্বতরাং বাস্ক্দেবাস্থক আমি তোমা কর্ত্ব বিনির্মিত হইয়াছি, অতএব তুমি আপনাকে ভাগ ক্রমে বিভাগ করিয়া মমুবাত্ব প্রাপ্ত হও। তুমি মর্ত্তা লোকে সর্ব্ব লোকের স্থ নিমিত্ত অস্তুর বধ নির্বাহ করিয়া ধর্ম সংস্থাপন করত লক্ধ-যশা হইয়া তত্ত্বান্দ্রসারে যোগ লাভ কর। হে অমিত বিক্রম! ভুবন মধ্যে ব্রন্ধর্যিও দেবগণ স্ব স্ব নামে বিভক্ত হইয়া ভোনাকে প্রমাত্মা ৰূপে গান করেন। হে স্থবাছ! বিপ্রগণ ও যাবতীয় প্রাণী সমূহ তোমাতে অবস্থিত হইয়া তোমাকেই আশ্রয় করত তোমাকে বরপ্রদ, আদিমধ্যাস্ত-রহিত, অপার যোগ বিশিষ্ট ও অথিল জগতের সেতু বলিয়া কীর্ত্তন করিয়া থাকেন।

দ্বিষ্ঠিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৬২॥

ভীয় কহিলেন, হে বংস ছুর্যোধন! তদনম্ভর লোকেশ্বরের ঈশ্বর দেব দেব ভগবান্ শ্লিঞ্চ গম্ভীর वार्का बकारक विलियन, एव वश्म! ভোমার এই অভিল্যিত বিষয় আমি যোগ দ্বারা অবগত হই-য়াছি, তাহা নিপান্ন হইবে, ইহা বলিয়া সেই স্থানেই অন্তর্হিত হইলেন। পরে দেব, ঋষি ও গদ্ধার্বেগণ সকলে পরম বিশায়াপল ও কৌতুহলপর হইয়া পিতামহকে কহিলেন, হে বিভো! আপনি খাঁহাকে প্রশাম করিয়া সবিনয় বব্লিষ্ঠ বাক্যে স্তুতি করিলেন, তিনিকে, আনাদিগের ভাবণ করিতে ইচ্ছা হই-য়াছে। পিতামহ ত্রন্ধা দেব, দেবর্ষি ও গদ্ধার্বগণ কর্তৃক ঐ রূপে অভিহিত হইয়া তাঁহাদিগকে মধুর বাকো প্রত্যুক্তর করিলেন, হে দেব-প্রবর গণ্! যিনি তৎ পদ বাচ্য, यिनि উৎकृष्ठे, यिनि এই ऋता वर्डमान আছেন এবং ভবিষাতেও থাকিবেন, যিনি ভূত-মাত্রের আত্মা ও প্রভু; যিনি প্রম পদ ব্রহ্ম; তিনি প্রসন্ন হইয়া আমাকে সম্ভাবণ করিতেছিলেন, আমিও বলিয়া জানে, সেই অনিরুদ্ধকে প্রত্যুদ্ধ হইতে উৎ- সেই জগুংশিতির নিক্ট জগতের প্রতি জারুপ্রহ

নিমিত্ত এইৰূপ প্ৰাৰ্থনা করিলাম যে হে প্ৰভু! ভুমি दश्रु(ए(दद्र आश्रुष काश्र मानद क्य श्रह्म क्द्र, অস্থ্রগণের বধ নিমিত্ত মহীতলে অবতীর্ণ হও। যে সকল দৈত্য, দানব ও রাক্ষদেরা সংগ্রামে নিহত হইয়াছিল, সেই ঘোরৰপ মহাবল গণ মর্ত্তা লোকে সমুৎপন্ন হইয়াছে। হে ভগবন্! তাহাদিগের বধ নিমিত্ত তুমি বলবান্ ৰূপে নরের সহিত মানুয জন্ম অবলম্বন করিয়া ভূতলে বিচরণ কর। ঋষিসভ্তম পুরাণ পুরুষ নর ও নারায়ণকে সমস্ত অমরগণ যত্ন-পর হইলেও রণে জয় করিতে পারেন না। সেই অমিত ছ্যুতি নর ও নারায়ণ উভয় ঋষি মত্য লোকে জন্ম গ্রহণ করিলে মূঢ়েরা তাঁহাদিগকে জানিতে পারিবে না। আমি খাঁহার আত্মজ হইরা সমস্ত জগ-তের পতি হইয়াছি, সেই সর্ব্ব লোক মহেশ্বর বাস্থদেব তোমাদিগের সকলের অর্চনীয়। হে স্থয়সভ্মগণ! **म्हि महावौर्या मञ्च एक शनाधाती एक मलूबा विला**रा কদাচিৎ অবজ্ঞা করা কর্ত্তব্য নয়। তিনি পরম গুহু, পরম পদ, পরম ব্রহ্ম, পরম যশ, অব্যক্ত ও শাশ্বত ; তাঁহাকেই পুরুষ বলিয়া সকলে জ্ঞান করে ও গান করিয়া থাকে। বিশ্বকর্ম। তাঁহাকেই পরম তেজ, পরম স্থ্রখ ও পরম সত্য বলিয়া কীর্ত্তন করেন। সেই অমিত-বিক্রম প্রভু বাস্ত্রদেবকে ইন্দ্র প্রভৃতি স্থর-গণের, সমুদার অস্তরগণের বা অন্য কাহারে৷ মানুয বলিয়া অবজ্ঞা করা কর্ত্তব্য নয়। যে মন্দ্রুদ্ধি ব্যক্তি দেই ক্ৰাকেশকে মামুৰ বলিয়া বিবেচনা করে, তাহাকে পণ্ডিতের। পুরুষাধম বলেন। যে, সেই মহাত্মা যোগীকে মানুষ শরীরে প্রবিষ্ট বলিয়া অব-মানিত করে, লোকে তাহাকে পাপী বলিয়া থাকে। সেই চরাচরের আত্ম। জীবৎসাঙ্ক স্থবর্চা পত্মনাভকে य कानिएक ना भारत, जाशास्क लाएक भाभी विलया কীর্ত্তন করে। কেছ সেই কিরীট কৌস্তুভধারী, মিত্র-গণের অভয়প্রদ মহাত্মাকে অবজ্ঞা করিলে ঘোর পাপে মগ্ন হয়। হে ভ্রপ্রবরগণ। সমন্ত লোক সেই विद्याक मरर्भत वाष्ट्रप्रवरक धर बार कानिया

নমকার করিবে ভগবান ব্রহ্মা পূর্বে কালে খাব ও দেবগণকে ইহা বলিয়া তাঁহাদিগের নিকট হইতে স্বলীয়ালয়ে গমন করিলেন। তদনন্তর দেব, গল্পর্বে, অপ্ররা ও মুনিগণ ব্রহ্মার সকাশে ঐ সকল কথা শ্রবণ করিয়া প্রীত হইয়া স্বর্গে গমন করিলেন। হে বংস তুর্য্যোধন! বাস্থদেবের এই রূপ পুরা-তন কথা আমি পূজিতাত্মা খ্যবিগণ সকাশে শ্রবণ করিয়াছি। হে শাস্ত্রার্থতন্তুক্ত! জামদগ্ল্য রাম, ধীমান্ মার্কণ্ডেয়, ব্যাস ও নারদের নিকটেও এই কথা শুনিয়াছি।

হে বংস ছুর্য্যোধন! সকল জগতের পিতা ব্রহ্ম থাঁহার আত্মজ, সেই বিভু লোকেশ্বর অবায় মহাত্ম বাস্তুদেবের এই বিষয় শ্রবণ করিয়া জানিয়া শুনিয়া কোন্ মানবেরা তাঁহাকে যজনার্চন না করিবে ? পুর্বে তোমাকে ভাবিতাত্মা মুনি গণ নিবারণ করিরাছিলেন, অতএব ভুমি ধনুর্দ্ধর বাস্তদেব ও পাওবদিগের সহিত যুক্তে আর গমন করিও না। তুমি যে মোহ প্রযুক্ত প্রকৃতার্থ জানিতে পারিতেছ না, ইহাতে আমি তোমাকে নিষ্ঠুর রাক্ষস মনে করিতেছি এবং তোমার মন ডমোর্ড বোধ করি-তেছি; কেন ন। তুমি গোবিন্দ, পাণ্ডব ও ধনঞ্জয়ের দ্বেষ করিতেছ। অন্য কোন্ মনুষ্য নর নারায়ণ ঋষির প্রতি দ্বেষ করিতে পারে? তুমি কৃষ্ণকে শাশ্বত, অবায়, সর্বলোকময়, নিত্য, শাস্তা, ধাতা, বিশ্বাধার ও ধ্রুব বলিয়া অবগত হইবে। উনি ত্রিলোক ধারণ করিয়া থাকেন, উনি চরচেরের শুরু, প্রভু, যোদ্ধা, জয়, জেতা, সকলের প্রকৃতি ও ঈশ্বর। হে রাজন্! উনি সত্ত্বপ্রথাময়; তম ও রজগুণ উহাতে नाहे। य পक्ति कृष, भिरं भक्ति धर्म: य भक्ति धर्मा, मেই পকেই अत्र। উহার আভাময় যোগ মাহাত্ম যোগে, পাগুৰদিগকে ধারণ করিয়া আছে, অতএৰ পাণ্ডৰদিগেরই জন্ন হ**ইবেক।** যিনি পাণ্ডব-मिशटक (अंशर्मी दुष्कि **गर्वस**्था श्वामा करत्रन, जिनि तर्ग তাঁহাদিগকে বল প্রদান ও তয় হইতে রক্ষা ক্রিয়াং

শাকেন। হে ভারত! ভূমি আমাকে যাহা জিজাসা করিয়াছিলে, ভাষার কারণ এই আমি কহিলাম। বিনি পাগুৰদিগের সহায় ও বস্থদেবের পুত্র বলিয়া বিখ্যাভ, ভিনি সর্ব্ধ ভূতময়, শাশভ দেব ও মঙ্গল সম্পন্ন। স্থলকণ ত্রাহ্মণ, ক্ষজ্রেয়, বৈশ্য ও শুভেরা স্থ কর্ম ঘারা নিয়ভ সমাহিত হইয়া তাঁহার সেবা ও আর্চনা করিয়া থাকেন। সম্বর্ধণ বলদেব ঘাপর যুগ শেষে কলি যুগের প্রথমে শাস্কৃতবিধি অবলয়ন পূর্বাক যাঁহার গান করেন, সেই বিশ্বকর্মা বাস্থদেব যুগে যুগে দেব লোক, মর্ভা লোক, মর্ভাগণের আন্বাস স্থল এবং সমুদ্র কক্ষান্তরিত পুরী সৃষ্টি করিয়া থাকেন।

ত্রিবটিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৬৩।

ষ্ঠুৰ্বোধন কহিলেন, হে পিতামহ! সৰ্ব্ব লোক মধ্যে যে বাস্থাদেব মহাপ্ৰাণী বলিয়া কথিত হন, তাঁহার আবিষ্ঠাৰ ও অবস্থিতি কানিতে আমার অভিলাৰ হইয়াছে।

जीय कहिरमन, रह छत्रज्ञावतः। वास्ट्रप्त महर সন্তু ও সমন্ত দেবতার দেবতা। সেই পুগুরীকাক্ষ হইতে শ্রেষ্ঠ জার কাহাকেও দেখা যায় না। মহা-মুনি মার্কণ্ডের ভাঁহার অদুত মহিমা কীর্ত্তন করিয়া ধাকেন। সমুদার ভূতের আত্মা মহাত্মা সেই অবায় পুরুষ জল, বারু, তেজ ও সমস্ত স্থাবর জঙ্গম, হৃটি করেন। সর্ব্ধ লোকেশ্বর সেই সহাত্মা প্রভূ পুরুষো-खम प्रव करन भन्न कतिन्ना शृथिवी शक्ति करत्न। तिहे नर्स एड कामन एक स्वाधानकहरन कन्नानी হইরা থাকেন। সেই মহামনা বাস্থদেব মুখ হইতে व्यक्ति ও ब्यान हरेटल बाहू, बाबी ७ दबन नकन शृक्ति करतन। अरे करण जिनि चापि कारन स्वन्तर्ग, क्षविभग, अ**बर क्षकामिरभन्न खेर**शिक्ष, मृज्यू, मृज्यून উপায় ও মৃত্যুর **অবোজক বম কটি** করিয়া ধা-रकन। जिनिहे धर्मा, धर्माचा, बन्नश्रम ७ मर्स काम-माछा ; जिनिरे कर्जा ७ कार्या ; जिनिरे चुत्रः जाति

त्मव ७ अजू। तम् जनार्यनरे शूर्व्स ज्रूक, जिवहा ও বর্জমান এই তিন কাল, উভয় সন্ধ্যা, দিকু, জা-কাশ ও নিয়ম হৃষ্টি করেন। সেই অব্যন্ন বরদ প্রভু গোবিন্দ ঋষি গণ, তপদ্যা ও বিধাতা প্রজাপতিকে श्रुषि करवन अवः नकन धानीनरनंत्र अन्तरास्त्रव বলদেবকে উৎপন্ন করেন। বাঁছাকে অনস্ত বলিয়া लाटक काटन, विनि मैंबल थानी ও ध्वाधव मह वह ধ্রা ধারণ করিয়া থাকেন, সেই শেষ নাগকে প্রাছ্ন-ৰ্ভূত করেন। মহাতেজা বিপ্রগণ সেই বাস্থদেবকে ধানি বোগে জানিতে পারেন। সেই পুরুষোভ্তম কৰ্ণ-সম্ভূত, মহাতেজন্বী, উগ্ৰ, উগ্ৰকৰ্মা, উগ্ৰ ধী-সম্পন্ন, বিরিঞ্চি-বধোদ্যত মধু নামক অস্থরকে বি-নাশ করেন। তিনি সেই মধু নামক **অন্তরের** বধ সাধন করাতে দেব, দানব, মনুষ্য ও ঋষিগণ তাঁহাকে मध्रुपन पनिया थार्कन। जिनिहे ब्लाह, जिश्ह, ত্রিবিক্রম-গতি ও সকলের প্রভু। সেই হরিই সক-লের মাতা ও পিতা। সেই পুওরীকাক হইতে শ্রেষ্ঠ, স্থার কেই হয় নাই ও হইবেক না। তিনি মুখ হইতে বিপ্র, বাছ দ্বয় হইতে ক্ষজ্রিয়, উক্ল হইতে বৈশ্য ও পাদ দ্বর হইতে শুদ্র হৃটি করেন। অমাবদ্যা ও পূর্ণিমাতে তপোনিরত হইরা পরি-চর্য্যা করিলে সর্ব্ব দেহীর বিধাতা সেই যোগান্ধা কেশবকে প্রাপ্ত হওয়া যায়। সেই কেশব পরম তেজ ও ৰমন্ত স্থাবর জক্ষাত্মক জগতের পতি। মুনি भग छाँशास्त्र स्वीरकन विनया थारकन। छाँशास्त्रहे षागर्या, भिजा ও शुक्र विनन्ना कानित्व। तारे क्रक বাঁহার এতি প্রসন্ম হন, তাঁহার অক্ষন্ন লোক সকল লক হয়। যে মানব ভয়াপন হইয়া ভাঁহার শরণা-পন্ন হন, এবং দর্জনা তাঁহার এই উপাধ্যান পাঠ করেন, তিনি মঙ্গল সম্পন্ন ও স্থা হন ৷ ্ৰে মান-বেরা রুক্টের শরণাপল হন, তাঁহারা মোই আগু হন नाः तरे जनार्कन महाजत-मध्यम् मह्यानिगरेक शति-जान करतन। एर तासन्। यूनिवित तनरे मराजान जगरीयत (यारमध्य अच्चू क्लेबरक श्रहे बन ब्लेनिज्ञा

সর্ববেডাভাবে সর্ব্ব প্রবড্রে ভাঁহার শরণাপর হই-য়াছেন

চতুংঘটিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৬উ

ভীয় কহিলেন, মহারাজ! ব্রহ্মধি ও দেবগণ পূর্ব্ব কালে পৃথিবীতে ৰাস্থদেবকে যেৰূপ কীৰ্ত্তন করিয়া-ছেন, সেই বেদ স্বৰূপ এই স্তবঁ আমার নিকট তুমি শ্রবণ কর। নারদ ঋষি তোমাকে লোক-ভাবন ভাবজ্ঞ, সাধ্য ও দেবগণের প্রভু ও দেব দেবেশ্বর বলিয়াছেন। মার্কণ্ডেয় তোমাকে যজ্ঞের যজ্ঞ, তপদ্যার তপদ্যা, এবং ভূত, ভবিষ্য ও বর্জমান বলিয়াছেন। ভগবান্ ভৃগু তোমাকে দেবের দেব, এবং তোমার ৰূপকে বিষ্ণুর পুরাতন পরম ৰূপ বলি-য়াছেন। মহর্ষি দ্বৈপায়ন তোমাকে ইন্দ্রের স্থাপ-য়িতা ও বস্থগণের মধ্যে বাস্থদেব এবং • দেবগণের দেব দেব বলিয়া कीर्जन করিয়াছেন। অঙ্গিরা কহি-য়াছেন, প্রাচীন গণ প্রজাপতিগণের হৃষ্টি কালে তোমাকে সমস্ত জগতের অফা দক্ষ-প্রকাপতি বলি-য়াছেন। অসিত দেবল বলিয়াছেন, অব্যক্ত তোমার শরীরে ও ব্যক্ত তোমার মনে অবস্থিতি করে, তুমি দেবগণের উৎপত্তি স্থান। তপস্যা দ্বারা বিশুদ্ধাস্থা যে সকল নরগণ, তাঁহারা তোমাকে এই ৰূপ জানেন যে তোমার মন্তকে অন্তরীক ব্যাপ্ত, বাছ ছয়ে পৃথিবী ধৃত এবং তোমার জঠর তিলোক হইয়াছে, তুমি সনাতন পুরুষ। সনৎকুমার প্রভৃতি যোগজ্ঞ **ঋষিরা** সেই পুরুষোক্তম ভগবান হরিকে চির কাল অর্চন করিয়া পাকেন এবং এই বলিয়া স্তব[®]করেন বে হে मध्रुतन! जाज पर्नात পরিতৃপ্ত রে সকল ঋষি, এবং সংগ্রামে স্থানির্ভ উদার-স্বভাব যে সকল রাজর্ষি, তাঁহাদিগের এবং সমুদায় ধর্মজ্ঞ প্রবর-দিগের ভূমিই পতি এবং ভূমিই নিজ। হে বংস! তোমাকে কেশবের কথা সংক্ষেপ ও বিস্তার ক্রমে এই কছিলাম, ভূমি স্থতীত হইয়া কেশবের শরণা-পন্ন হও।

সঞ্জর কহিলেন, মহারাজ! আপনকার পুত্র এই পুণ্যাখ্যান শুনিয়া কেশব ও মহারথ পাওবদিগকে শ্রেষ্ঠ মনে করিলেন। মহারাজ! শান্তমুপুত্র ভীয় ছুর্য্যোধনকে পুনর্বার কহিলেন, হে বৎস! ভুমি মহাত্মা কেশবের মাহাত্মা ভাবণ করিলে, এবং যে নরের বিষয় ভুমি আমাকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলে, যে নিমিত্তে নর ও নারায়ণ উভয় ঋষি মর্তা লোকে উৎপন্ন হইয়াছেন, এবং যে কারণে সেই ছুই বীর সংগ্রামে অপরাঙ্গিত ও পাগুবেরা কাহারো কর্তৃক বধ্য **নহেন, তৎ সমু**দায়ও তোমার শ্রুত হইল। হে রাজেন্দ্র : কুফ সেই যশস্বী পাওবদিগের প্রতি গাঢ় প্রীতিমান্ আছেন, এই হেতু আমি বলিতেছি, তুমি পাগুবদিগের সহিত সন্ধি কর। তুমি বলবান্ ভাতাগণের সহিত প্রজাশাসন করত পৃথিবী উপ-ভোগ কর। নর নারায়ণ দেবকে অবজ্ঞা করিলে ভাতাগণের সহিত বিনাশ প্রাপ্ত হইবে। হে নরাধি-পতে! আপনকার পিতা এই ৰূপ বলিয়া মৌনাব-লয়ন করিলেন, পরে ভাঁহার নিকট হইতে গমন পূর্বক শয়ন করিলেন। রাজা ছুর্য্যোধনও মহাত্মা-দিগকে প্রণাম করিয়া শিবিরে অভিনিবেশ পূর্ব্বক দিবা শয়ায় শয়ন করত সেই রাত্রি অতিবাহিত করিলেন।

পঞ্চষ্টিতম অধ্যায় সমাগু॥ ১৫॥

সঞ্চয় কহিলেন, মহারাজ! রাত্রি প্রভাতা ও দিবাকর উদিত হইলে উভয় পক্ষ সেনা যুদ্ধ যাত্রা
করিতে লাগিল। তাহারা সকলে একত্রিত ও পরস্পরকে অবলোকন পূর্বাক পরস্পার জিগীবা পরবশ
হইয়া ক্রোধাবিই চিত্তে যুদ্ধার্থ ধাবিত হইল। আপনকার তুর্মন্ত্রণা প্রযুক্তই পাগুব ও ধার্ভরাষ্ট্রগণ পরস্পার স্ব স্থাই রচনা করিয়া বদ্ধ-সন্ধাহ ও হাই
হইয়া প্রহারে প্রয়ন্ত হইলেন। ভীয় মহর বুংহ
নির্মিত করিয়া চতুর্দিশে রক্ষা করিতে লাগিলেন।
পাগুবেরাও আপনাদিপের বুংহ রচনা করিয়া রক্ষা

করিতে প্রয়ন্ত হইলেন। আপনকার পিতা দেবত্রত 🕆 র্থিপ্রবর ভীন্ন রুধি সমূচে সমার্ত হইয়া মহৎ র্থি দৈন্য সমভিব্যাহারে যুদ্ধার্থ নিঃস্ত হইলেন। बनाना त्रथी, मानी, भक्षादतारी ও পদাতি গণ সক-लहे यथा छाटन व्यवस्थि हहेसा काँहात व्यक्तभागी হুইল। যশস্বী পাণ্ডবর্গণ তাহাদিগকে দেখিয়া শত্রু-গণের অজেয় আপনাদিগের মহৎ শোন বাুহে অব-স্থিত হইয়। যুদ্ধার্থ সমুদ্যত হইলেন। সেই শোন বুটেহর মুখে মহাবল ভীমসেন, নেত্রে ছুর্জর্ষ শিখণ্ডী ও ধৃউদ্ধান্ন এবং শিরঃ প্রদেশে সভাবিক্রম বীর সাত্যকি ধাকিলেন। পার্থ, গাণ্ডীব প্রকম্পন করত উহার গ্রীবা স্থলে রহিলেন। মহাত্মা পাঞ্চাল-রাজ শ্রীমান্ দ্রুপদ, পুজ্রগণ ও এক অক্টোহিণী সেনা সহ উহার বাম পক্ষে অবস্থিত হইলেন। অক্ষৌ-হিনাপতি কৈকেয়রাজ উহার দক্ষিণ পক্ষে অবস্থিত রহিলেন। দ্রৌপদী-পুজেরা ও বীর্যাবান্ অভিমন্ত্রা উহার পৃষ্ঠ রক্ষক হইলেন, এবং চারু বিক্রম বীর রাজা যুধিষ্ঠির স্বয়ং যমজ ছুই ভাতার সহিত তাঁহা-দিগের পশ্চাং স্থিতি করিলেন। ভীমসেন তথন বিপক্ষের মকর বূহে মুখে প্রবেশ করিয়া ভীয় সমীপে গমন পূর্বক শায়ক সমূহে তাঁহাকে সমা-ক্যাদিত করিলেন। বীর্যাবান ভীন্ন, পাণ্ডু-পুত্রদিপের বু৷হিত সেনাকে বিমোহিত করত মহাস্ত্র সকল নি-ফপ করিতে লাগিলেন। তখন সৈনাগণ ভীয়া শরে মোহ প্রাপ্ত হইলে ধনঞ্জয় স্বরমাণ হইয়া রণ মূথে ভী**ন্মকে সহস্র শরে প্রহার করিলেন, এবং** ভায় প্রমুক্ত অস্ত্র সকল নিবারিত করিয়া স্বীয় সৈন্য-দিগকে হর্ষিত করত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন।

তদনন্তর বলি-প্রধান মহারথ রাজা ছুর্য্যোধন পূর্বেক কভিপর ভাতা ও সৈনাদিগের ভয়ানক বিনাশ

থিয়াছিলেন, তংপ্রযুক্ত তিনি ত্রমাণ হইয়া ভরছাজ-পুত্রকে কহিলেন, হে বিশুক্ষচিত্ত আচার্যা!
আপনি সতত আমার হিত কামনা করিয়া থাকেন,
আমরা আপনাকে ও পিতামহ ভীয়কে আশ্রয়

করিয়া দেবগণকেও রণে পরাজিত করিতে প্রার্থনা করিতে পারি, ভাহাতে সংশন্ন নাই। ইহাতে যে হীন-বীর্যা হীন-পরাক্রম পাগুবদিগকে পরাজিত করিব, তাহার আর কথা কি ? অতএব আপনার শুভ হউক, যে প্রকারে পাগুবদিগের বধ হয়, তাহ। আপনি করুন। দ্রোণ রণ স্থলে, আপনকার পুত্র কর্তৃক এই ৰূপ অভিহিত হইয়া সাত্যকির সাক্ষাতে পাণ্ডব সৈনাদিগকে অস্ত্র প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন। তৎ পরে সাত্যকিও দ্রোণকে নিবারণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। তাঁহাদিগের উভয়ের ঘোর-তর ভয়ানক যুদ্ধ আরম্ভ হইল। প্রতাপবান্ ভর দাজ-নন্দন ক্ৰোণ কুদ্ধ হইয়া যেন হাসিতে হাসিতে দশ বাণে সাত্যকির জক্র দেশ বিদ্ধ করিলেন। অন ন্তর ভীমসেন ক্রোধাকুলিত চিত্তে শস্ত্রধারি-প্রবর দ্রোণ হইতে সাভাকিকে রক্ষা করিবার নিমিত্তে দ্রোণকে শর বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। তৎ পরে দ্রোণ, ভীন্ন ও শল্য কুন্ধ হইয়া ভীমদেনকে শর সমূহে সমাচ্চাদিত করিলেন। পরে অভিমন্যু ৫ ক্রোপদী-পুত্রেরা সংক্রুদ্ধ হইরা উদ্যতায়ুধ দ্রোণ প্রভৃতিকে শাণিত শরে বিন্ধ করিতে লাগিলেন। মহাধমুর্দ্ধর শিখণ্ডীও দোণ ও ভীমকে সংকুদ্ধ ও আপতিত দেখিয়া তাঁহাদিগের অভিমুখে প্রভ্যাদাত इहेरलन, এবং जलम मम निम्नन वलवंद धसूक धाइन পূর্ব্বক ত্বরা সহকারে শর বর্ষণ করিয়া দিবাকরকে আচ্ছন করিলেন। ভরতকুল পিতামহ ভীম সংগ্রামে শিখণ্ডীর জ্রীত্ব মনে করিয়া তাঁহাকে যুদ্ধে প্রাপ্ত হইয়াও তাঁহার প্রতি অস্ত্র নিকেপ করিলেন না। তদনন্তর আচার্যা জোণ আপনকার পুজের আদে-শামুসারে ভীমকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত শিখণ্ডীর সমীপে অভিক্ৰত হইলেন। শিখণ্ডী, যুগান্তকালীন উল্বণ অগ্নি সদৃশ শস্ত্রধারি প্রবর দ্রোণকে সমাগত দেখিয়া সন্ত্ৰন্ত হইয়া তাঁহাকে পরিত্যাগ পূর্বক গমন করিলেন। তৎ পরে সহাযশঃপ্রার্থী জাপন-কার পুত্র ছুর্ব্যোধন মহৎ নৈনাদলের সহিত সমীপে গমন পূর্বক ভীয়কে রক্ষা করিতে প্রয়ন্ত হইলেন।
এবং পাগুবেরাও ধনঞ্জরকে অত্যে করিয়া বিজয়ার্থে
দূদমতি হইয়া ভীয় সমীপে অভিদ্রুত হইলেন।
মহা অদ্ভূত যশ ও বিজয় প্রার্থী সেই উভয় পক্ষ
বীরদিগের, দানবগণের সহিত দেবগণের যুদ্ধ সদৃশ
ঘোরতর যুদ্ধ আরক্ষ হইল।

वर् विष्ठिम व्यशास नमाश्च ॥ ७७॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! শান্তস্থ-পুত্র ভীম, অপেনকার পুত্রদিগকে ভীমসেন হইতে পরিতাণ করিবার অভিলাবে তুমুল সংগ্রাম করিতে লাগি-লেন। দিবসের পূর্ববাহ্ন কালে কুরু পাগুবদিগের ও উভয় পক্ষীয় রাজগণের অতি দারুণ যুদ্ধ হইতে লাগিল, তাহাতে প্রধান প্রধান শুরশ্বণের প্রাণ সংহার হইল। সেই মহাভয়াবহ আকুল সংগ্রামে তুমুল মহৎ শব্দ গগণ স্পর্শ করিতে লাগিল। মহা-नाग मकरमत दृश्हिक धनि ও वाक्रिशायत रहवातव এবং ভেরী ও শব্ধ নিনাদে ভুমুল শব্দ হইয়া উঠিল। যুদ্ধেচ্ছু মহাবল বিক্রাস্ত বীরগণ বিজয়াথী হইয়া গেষ্ঠিত্ব ব্যন্ত দলের ন্যায় পরস্পার তত্ত্বন গত্ত্বন করিতে লাগিল। শাণিত বাণে যোধগণের মন্তক সকল সমর স্থলে পাত্যমান হওয়াতে যেন আকাশ হইতে শিলা বৃতি হইতে লাগিল। কুগুল ও উঞ্চীশ শোভিত স্থবর্ণোজ্ঞল নর শির সকল রণক্ষেত্রে পতিত দেখিতে লাগিলাম। শর মধিত কুওল ভূষিত মন্তকে ও হন্তাভরণ ও অন্যান্যাভরণ যুক্ত শরীরে পৃথিবী আচ্ছাদিতা হইল। কবচোপছিত দেহ, অলম্বত হন্ত, রক্তান্ত নয়ন সংযুক্ত চন্দ্র-সন্মিত वनन ও शक्त वांकि मसूरवात ममल व्यवशस्य पूर्क कौन मध्य ममस्त त्र एव ममाकीर्ग इहेल। विश्रूल রজো ৰূপ মেঘ, শস্ত্র ৰূপ বিচ্যুৎ ও অন্ত্র শত্ত্রের নি-र्पादेव रचन मिष्ठ शर्कन मक्स रवाथ रहेरक नाजिन। হে ভারত। কুরু পাওবদিগের সেই ভুষুল কটু

যুদ্ধে শোণিতের জলাশর উৎপন্ন হইল। যুদ্ধ-চুশ্মদ ক্ষান্তিরগণ, সেই মহাভয়াবহ লোমহর্ষণ ছোরতর जूमून युष्क भत्रकान वर्षे । कतिए नागितन । उछा পক্ষের কুঞ্চরগণ শর পীড়িত হইয়া চিৎকার শব্দ করিতে লাগিল, সেই শব্দে এবং অমিত তেজা সংরক্ষ বীরগণের ধনুর্গুণ বিক্ষারণ রব ও তল ধনিতে কিছুই আর বোধগম্য রহিল না। সর্বত রুধির जनागरः कवन्न मकन উषिठ हरेर७ नाशिन, এতাদৃশ রণ স্থলে নৃপগণ শত্রুবধে উদ্যত হইয়া **ইতন্তত ধাবমান হইলেন। অমিত-তেজা** পরিঘ-বাছ শূরগণ শর, শক্তি, গদা ও থড়্গ ছার। সমরে পরস্পরকে বধ করিতে লাগিলেন। কুঞ্জর ও অশ্ব গণ শর বিহ্ব ও আরোহি-বিহীন হইয়া দিগ্ বিদিগ্ ধাবিত হইতে লাগিল। উভয় পক্ষের যোদ্ধাদিগের মধ্যে অনেকে শরাঘাতে প্রপীড়িত ও উৎপতিত হইয়া নিপতিত হইতে লাগিল। এই ভীম ও ভীমের যুদ্ধে বাছ, মন্তক, কার্ম্মুক, গদা, পরিঘ, হন্ত, উরু, পদ ও কেয়ুর প্রভৃতি ভূষণের রাশি রাশি সর্বত্র অবলোকিত হইতে লাগিল। স্থানে স্থানে অনিহত্ত অশ্ব, কুঞ্জর ও রথ সকলের একত সংঘা নিরীক্ষিত হইতে লাগিল। ক্ষক্রিয়েরা কাল প্রেরিত হইয়া পরস্পরকে গদা, অসি, প্রাস ও নতপর্বে বাণ সমুহে হনন করিতে লাগিলেন। অনেক বাছ-যুদ্ধ কুশল বীর লোহময় পরিঘ সদৃশ বাছ দারা বছক যুদ্ধাসক্ত হইল। উভয় পক্ষের অনেক বীর মুক্তি, জানু, করতল ও কফোনি দ্বারা পরস্পরকে হনন করিতে লাগিল। অনেক যোদ্ধা স্থানে স্থানে ভূতলে পতিত, পাত্যমান ও বিচেইটমান হইয়াও ঘোরতর যুদ্ধ করিতে লাগিল। অনেক রথী রথ-বিহীন হইয়া উত্তম খড়্গ ধারণ পূর্বক পরস্পর ববৈধী হইয়া ধাবমান হ্ইল। তদনন্তর রাজা ছুর্য্যোধন, বছ কলিঙ্গ দেশীয় যোধগণে পরির্ত হইয়া ভীয়কে পুরোবর্ত্তী করিয়া পাগুবদিগের প্রতি গমন করি-लन। পাওবেরাও नकल कुक रहेश इंटकामद्रक

অত্যে করিয়া বেগশীল বাহনে ভীয়ের উপর আ-পতিত হইলেন।

সপ্তৰ্ফিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৬৭॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ। ধনপ্রস্ক, ভাতা ও অন্যান্য রাজগণকে ভীম্মের সহিত যুদ্ধে সংযুক্ত দেখিয়া উদ্যতান্ত্র হইয়া ভীত্মের প্রতি ধাবমান হই-লেন। পাঞ্চজন্য শস্থধনি ও ধনঞ্জয়ের গাঙীব নি-র্ঘোষ আরণ এবং রথ ধজ নিরীক্ষণ করিয়া আমরা मकरल ভয়াবিফ হইলাম। গাণ্ডীবধন্বা অর্জুনের আকাশে অলম্ভ পর্বত সদৃশ দিব্য চিত্রিত বানর-লা-ঞ্চিত সিংহ-লাদুলাক্কতি বছ-বর্ণ ও উপিত ধুমরাশির नाां इत्क जनश्मध तथ-धक जनतांकन क्रिलाम। সেই মহাসংগ্রামে যোধ গণ ভাঁহার স্বর্ণ-পৃষ্ঠ গা-ভাবকে আকাশে প্রদীপ্ত মেঘ-মধাগত বিছাতের ন্যায় অবলোকন করিতে লাগিল। আপনকার সৈন্য হনন করিবার সময়ে তিনি ইন্দ্রের ন্যায় অতি-শয় গর্জন করিতে লাগিলেন; তাঁহার তল ছয়ের অতি ঘোরতর শব্দ শুনিতে লাগিলাম। যে প্রকার প্রচণ্ড বায়ু সহকারে শব্দায়মান সবিদ্যাৎ মেঘ সর্ব্বত্ত क्ल क्षावन करत्न, जज्जन जिनि मंत्र वर्षर्ग ठजूर्किक् সমাকীর্ণ করিতে লাগিলেন। তিনি ভীবণাস্ত্র বর্ষণ করিতে করিতে ভীমের প্রতি ধাবমান হইলেন, তাঁহার বিক্লিপ্ত অত্রে মোহিত হইয়া আমরা কোন্ দিক্ পূর্বন, কোন্ দিক্ পশ্চিম, তাহা বোধ করিতে পারিলাম না। হে ভারত প্রবর! সেই সকল যোধ-গণের মধ্যে কোন যোধগণের বাহন আন্ত, কোন যোধগণের বাহন হত হইলে তাহারা ভগচিত্ত, পর-স্পার সংহত ও দিগ্ বিদিক্ জ্ঞান খুনা হইয়া আপন-কার সমুদার পুরুদিনের সহিত ভীরের শরণাগত हहेटलन। त्महे तर्व भाखसूनम्मन जीवहे छ।हापिरशत পরিত্রাতা হইলেন। তখন তাসান্তিত হইয়া রখিগণ त्रथ रहेटज, जानित्रक जाय शृष्ठ रहेटज ও পদাভিগণ ভূতলে মিপভিত হইতে লাগিল। হে ভারত!

আশনি নিশ্বন সম গাণ্ডীব নির্ঘেষ শ্রবণ করিরা সমুদার সৈন্য ভীত হইরা কোন ব্যবহিত দেশের আশ্রের
লইল। হে নরপাল! তথন মদ্র, সৌবীর, গান্ধার,
কৈগর্ভ ও সর্বা কালিক দেশীয় প্রধান যোধগণের
সহিত কাষোজ দেশীর মহৎ শীঘ্রগামী অশ্বগণ এবং
বহু সহস্র গোপ ও গোপারন সৈন্যে পরির্ত কলিক্রাধিপতি, নানাবিধ নরগণ সমূহ সমেত সমস্ত
রাজগণের সহিত ছুঃশাসন প্রমুখ নৃপতি জয়দ্রথ,
এবং চতুর্দশ সহস্র প্রধান প্রধান অশ্বারোহী আপনকার পুত্রের আদিই হইরা স্কবল-পুত্র শকুনিকে
পরিবেইটন করিয়া অবস্থিত হইলেন।

হে ভারত প্রবর! তদনন্তর পাগুবেরা সকলে এক-ত্রিত ও ভিন্ন ভিন্ন রথ ও অন্য বাহনে অধিকঢ় হইয়া আপনকার পক্ষ যোধগণকৈ হনন করিতে আরম্ভ করিলেন। সেই রণ স্থলে রথী, বারণ, অশ্ব ও পদাতিগণ কর্তৃক ধূলি সমূহ সমীরিত হইরা ঘোর-তর মহামেঘ সদৃশ হইয়া উঠিল। ভীম তোমর, व्याम, नातार, भक, ष्यश्व ও तथ राधीभर। ममाकूल মহৎ সৈন্য সমজিব্যাহারে কিরীটীর সহিত যুদ্ধে সংসক্ত হইলেন এবং অবন্তিরাক্ত কাশিরাজের সহিত, সিন্ধুনাথ ভীমসেনের সহিত, পুত্র ও অমাত্য সহিত অজাতশক্র রাজা যুধিন্তির মক্রাধিপতি যশস্বী শলোর সহিত, বিকর্ণ সহদেবের সহিত এবং চিত্র-সেন শিখণ্ডীর সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। হে নর-পাল! মৎসাগণ ছুর্যোধন ও নকুনির প্রতি যুক্তা-সক্ত হইলেন। ক্রপদ, চেকিডান ও মহারথ সাত্যকি সপুত্র মহাত্মাণরে সহিত রগ-প্রবৃত্ত হইলেন, এবং রূপ ও রুতবর্মা উভরে ধৃক্টকেভুর উপর অভি-क्र इहेरनन। अहे क्र शांदन शांदन हर्जुर्फिटक एन मल अभागील नाग, त्रथं ७ तिमनील अध शत्रन्शत्र সংগ্রামাসক হইল। হে মহারাজ। তথন বিনী মেৰে তীত্ৰ বিছাৎ ও নিৰ্বাতের সহিত মহোক্ষা প্রাছুত্ত হইতে লাগিল। দিক নকল ধূলি নমার্ত হইল। মহা ৰাত্যা প্ৰাছ্ট্ত ও পাংশ রুটি পাত হইতে লাগিল। সুর্যা দৈনাগণের খুলিতে সমার্ত হইয়া নভভবে অভাহিত হইলেন। যোধগণের অস্ত্রজাল দ্বারা সমীরিত ধূলি পটলী, সমস্ত প্রাণীকে অভিভূত করিয়া তাহাদিগের অতীব মোহ উৎ-शासन कतिन। वीतशरात वाह विश्वक नर्यावत्।-(कमी भंत्रजात्मत अजीव भक्त हहेर्ड नािशन। নক্ষত্ৰ সদৃশ বিমল প্ৰভা যুক্ত শস্ত্ৰ সকল বীরগণের ভুজবর হইতে উচ্ছিত হইয়া আকাশ মণ্ডল প্রকা-শিত করিতে লাগিল। স্থবর্ণ-জালার্ত বিচিত্র আ-র্ষভ চর্ম সকল রণ স্থলের সকল দিকে পতিত হইতে লাগিল। যোধগণের শরীর ও মস্তক সকল সুর্যা-বর্ণ খড়্গ দারা পাতামান হইয়া সর্বতে সমস্ত मिटक मृष्ठे हहेटड नांशिन। মहात्रशीनिरंगत त्ररथत চক্র, অক্ষ ও নীড় সকল ভগ্ন, মহাধ্রু সকল পতিত ও আশ্ব সকল নিহত হওয়াতে সেই সকলে মহার্থী স্থানে স্থানে ভূতল-গত হইলেন। অনেক রথ-যোধী হত হওয়াতে তাহাদিগের অশ্ব সকল শস্ত্র-ক্ষত-দেহ হইয়া রথ আকর্ষণ করিতে করিতে ভূতলে পতিত হইতে লাগিল। স্থানে স্থানে যোত্রবন্ধ অনেক উক্তম অশ্ব শরাহত ও ভিন্ন-দেহ হইয়া রথযুগ আ-कर्षन क्रिंडि नाशिन। सिर्दे द्वा ऋल वनवान् धक হস্তী কর্ক্ত সারখি, অশ্ব ও রধীর সহিত বছল রধ निर्व नित्रीकिक रहेएक वाशिन। युक्त मञ्जूमाक रिमना ममूर मरधा राष्ट्रंत रुखी यना रुखीत मम्यार পদ্ধ আত্রাণ করিয়া ঘন ঘন বায়ু গ্রহণ করিতে লাগিল। তোরণ ও মহামাত্রের সহিত অনেক হন্তী নারাচাত্রে অভিহত হইয়া মৃত ও শক্তিত হওয়াতে ভদারা রণ কেত্র সংছন্ন হইল। নিয়ন্তা কর্তৃক চালিত উদ্ভম উদ্ভম অনেক হন্তী, যোদ্ধা ওংধজের সহিত নিহত হইর। যুদ্ধ কেত্রে নিপতিত হইতে লাগিল। হে মহারাজ! হতীগণ নাগরাজ সদৃশ শুণু দারা त्रवीमित्रात्र त्रथ कृततं जकन ज्यात्क्रभग भूर्वक छध क्तिएक नाभिन। यत्नर एकी तथीमिटभन्न तथ हुर्ग করিয়া তাহাদিপের কেশ কলাপ এহণ পূর্বক তাহা-

पिशंदक चाटकार्य क्रबं (श्वम क्रिड नाशिक, विदः वृह्द हडी नकन चनाना त्र पं नरनध तथं नक्त तक्षी क्रिका क्रिका

অই ষ্টিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৬৮।

मक्षत्र कहिरलन, रह महीशान! भिष्ठी मश्मा-দেশাধিপতি বিরাটের সহিত, অতি ছুচ্জের মহা-ধনুর্দ্ধর ভীলের সম পে আশু গমন করিলেন। ধন-ঞ্জয় দ্রোণ, রূপ, বিকর্ণ, অমাত্য ও বান্ধব পরিবৃত মহাধনুর্দ্ধর সিন্ধুরাজ, পূর্ব্ব দেশীয় পশ্চিম দেশীয় ও দাকিণাতা ভূমিপ গণ এবং অন্যান্য বছল মহা-ধমুর্দ্ধর মহাবলাক্রান্ত শূর ক্ষক্রিয়দিগের প্রতি অভি-দ্রুত হইলেন। ভীমদেন, আপনকার পুত্র মহা-ধনুর্দ্ধর অমর্যা-স্বভাব ছুর্যোধন ও ছু:সংহর প্রতি यूरक थाइख रहेरलन। महरमव, महाधहू ई त छूरऋ त মহারথ শকুনি ও তাঁহার পুত্র উলুবের সহিত যুদ্ধা-সক্ত হইলেন। আপনকার পুত্র বর্ত্তক ছল নিগৃহীত মহারথ যুধিইর গজ সৈনে র প্রতি গমন করিলেন। যুদ্ধে বিপক্ষের ক্রন্দন-জনক মাড়ী-পুক্র নকুল তিগর্ড দেশীয় মহারথগণের সহিত সংসক্ত হইলেন। রণ-ছুর্দ্ধ মহাবল সাতাকি, চেকিডান্ ও অভিমন্ত্য শালু ও কেকর যোধগণের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত हरेलन। ध्रुकेत्कपू ७ ब्राक्कम घटिंग्टिक प्रापनकात পুত্রদিগের রথ বাহিনীর সহিত হুছার্থ এত্যাদাত হইলেন। সেনাপতি অমেয়াত্মা মহারথ ধৃউছ্যুত্র উগ্রকর্মা জোের সহিত সমর সঙ্গত হইলেন। এই ৰূপে উভয় পক্ষ মহাধমুর্জর শূরগণ পরস্পর সমবেত হ্ইয়া প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন। **তথ**ন দিবা- কর মধ্যাহ্রগত হওয়াতে অন্তরীক স্থাকিরণে আকৃ-লিত হইল, এ সময় কুরু পাওবগণ পরস্পার পর-স্পরকে হনন করিতে লাগিলেন। ধজ পতাকান্বিত হেমচিত্রাক্র ব্যাঘ্রচর্মার্ড রথ সকল রাাক্রণে বিচরণ क्द्रड क्षरीख इरेटड लाजिल এवर जिश्ह मनृन গর্জনশীল পরস্পর জিগীযু সমরাসক্ত শ্রগণের ভুমু**ল শব্দ সমুৎপন্ন** হইতে থাকিল। কুরু ও সঞ্জয় বীরগণের স্থদারুণ অন্তুত যুদ্ধ অবলোকন করিতে লাগিলাম. চতুর্দিকে নিক্ষিপ্ত শর সমূহ দ্বারা না चाकाम, ना सूर्या, ना पिक्, ना विपिक्, किछूरे चात অবলোকন করিতে পারিলাম না। বীরগণের নি-ক্ষিপ্ত বিমলাগ্র শক্তি, তোমর ও স্থপীত নিস্ত্রিংশের নীলোৎপল সদৃশ প্ৰভা এবং বিচিত্ৰ কবচ ও ভূব-ণের প্রভা সকল তেজ ছারা দিক্ বিদিক্ ও আকাশ-মগুল উদ্ভাষিত করিতে লাগিল। তথন নরেন্দ্র-গণের চন্দ্র স্থা সম প্রভ শরীর দার। রণাঙ্গনের নানা স্থান দীপ্তি পাইতে লাগিল। নরব্যাত্র রথি-**जिःश्विरात्र बाङ्गिल मक्न नम्खल গ्रह्मात्र ना**ग्न প্রকাশিত হইল।

হে ভারত! রথিশ্রেষ্ঠ ভীয় সংকুদ্ধ হইয়া সকল সৈন্যের সাক্ষাতে মহাবল ভীমসেনকে নিবারিত করিতে লাগিলেন। ভীয় বিনির্গুক্ত রুক্মপুশ্ব শিলা। শাণিত তৈল-ধৌত বাণ সকল ভীমকে আহত করিতে লাগিল। মহাবল ভীমসেন তাঁহার উপর কুদ্ধ সর্প সদৃশ মহাবেগশীল শক্তি নিক্ষেপ করিলেন। সেই রুক্মনেও যুক্ত মুরাসদ শক্তি তাঁহার উপর আপতিত হইতেছে, এমন সময়ে তিনি সম্নত পর্বা শর সমূহ বারা তাহা ছেদন করিয়া ফেলিলেন, এবং তৎপরেই শাণিত পাণিত অপর এক ভল হারা ভীমসেনের কার্যুক মুই পতে কর্তন করিয়া ফেলিলেন। তদনন্তর সাত্যকি আপনকার পিতার সমীপে আশু গমন করিয়া আকর্ণ আরুক্ট তীক্ষ্ম শাণিত তীত্র তেজন্বী বহুল শর ঘার। তাঁহাকে বিদ্ধা করিলেন। তদনন্তর

সাত্যকির সার্রাধকে রথ হইতে নিপাতিত করিলেন। সভোকির সার্থি হত হইলে মনোমারুত সদৃশ বেগশীল অশ্ব সকল দ্রুতবেগে ইতন্তত ধাৰমান হইল। তাহা দেখিয়া মহাত্মা পাগুবদিগের সমুদার দৈনা মধো হাহাকার ও ভুমুল শব্দ উত্থিত হইল। **এবং " ধাবন কর, গ্রহণ কর, অশ্বদিগকে নিয়মিত** কর, অভিদ্রুত হও,' এই ৰূপ শব্দ হইতে লাগিল। ইতাবসরে শান্তমু-পুত্র ভীয়া, ইন্দ্র কর্তৃক আস্তরী সেনা হননের ন্যায়, পাগুৰী সেনা হনন করিতে আরম্ভ করিলেন। পাঞ্চাল ও সোমকগণ ভীন্ন কর্তৃক হন্যমান হইয়াও যুদ্ধে দৃঢ়মতি স্থাপন পূর্বক ভীয়ের প্রতি অভিক্রত হইল। ধৃউছ্যুদ্ধ-প্রমুখ পাগুবগণ আপনকার পুত্তের সেনা-জিঘাংস্থ হইয়া ভীয়ের প্রতি ধাবমান হইলেন। আপনার প্রক ভীন্ন ও দ্রোণপ্রমুখ, বীরগণও পাণ্ডবগণের উপর বেগ পূর্বক ধাবিত হইলেন, তাহার পর যুদ্ধ হইতে লাগিল।

ঊন সপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৬৯

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! তদনন্তর মহারথ বিরাট ভীমকে তিন বাণে বিদ্ধ করিয়া তাঁহার ভুরগ দিগকেও তিন বাণে বিদ্ধ করিলেন। মহাবল মহা-ধমুর্দ্ধর শান্তমুপুত্র লঘুহন্ততা সহকারে রুক্স পুত্র দশ শরে বিরাটকে বিদ্ধ করিলেন। ভীষণধন্বা মহাবল দ্রোণ-পুদ্র দৃঢ় হস্ত হইয়া গাঁগুবিধন্বা অর্জুনের স্তন দ্বয়ের অভ্যন্তরে ছয় বাণ বিদ্ধ করিলেন। বীর শক্রহন্তা শক্রঘাতী কান্তুন স্থতীক্ষ্ণ বাণ সৰুল দ্বারা অশ্বত্থামার ধন্তুক ছিন্ন ও তাঁহাকে গাঢ় বিদ্ধ করি-লেন। তিনি কান্তুন রুত কার্ম্মুক-ছেদ সন্থ না করিয়া ক্রোধ-মৃদ্ধিত *হইয়া বেগশীল অনা কার্ম্মুক এহণ পূর্বক শাণিত নবতি শরে কাল্গুনকে বিদ্ধ করত वाञ्चरनवरक नर्संडि मःश्रा ध्ववन होन ममूरह विक করিলেন। তদনম্ভর শক্রঘাতী অতি বলবান্গাণ্ডীব-ধন্বা কাল্কন ক্ষের সহিত ক্রোধে তাত্রবর্ণ-লোচন হইয়া দীর্ঘ ও উষ্ণ নিশাস পরিত্যাগ ও মুত্রুত

চিন্তা করিয়া বাম করে শরাসন নিপীড়ন করত শীবনান্তকর অতি ভন্নানক সমত পর্বে শর সকল সক্ষান পূর্বক দ্রোণ-পুত্রকে সত্তর বিদ্ধ করিলেন। সেই সকল শর অশ্বর্থামার কবচ ভেদ করিয়া শোণিত পান করিতে লাগিল। পরস্ক তিনি গাঙীব-ধ্বার শরে নির্ভিন্ন হইয়া ব্যথিত হইলেন না, প্রত্যুত মহাত্রত ভীয়কে পরিত্রাণ করিবার অভিলাবে বিহ্নল ना रुरेशा ममत्त्र अविद्युष्ठि कत्रुष्ठ भार्थत প্राठ সেই ৰূপ শর নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। তিনি रा, त्र श्रह्म क्रमार्ज्जूत्मत महिल ममत्वल इहेशा ঐ ৰূপে যুদ্ধপ্রবৃত্ত ছিলেন, কুরুসত্তমগণ তাঁহার তাদৃশ মহৎ কর্ম দেখিয়া প্রশংসা করিলেন। তিনি পিতা দ্রোণের সমীপে স্বত্বর্গত অন্ত্রগ্রাম প্রয়োগ ও উপসংহারের সহিত লাভ করিয়াছিলেন, এই হেতু সর্বদাই নির্ভীত চিত্তে সৈন্য মধ্যে যুদ্ধ করি-তেন। পরাক্রমশীল শ্বেতবাহন মহারথ মহাবীর শক্রতাপন বীভৎস্থ মনে করিলেন, ইনি আমার আচার্য্য-স্থত, আচার্য্য জোণের প্রিন্ন পুত্র, বিশেষত আমার পুজনীয় ত্রাহ্মণ, ইহা বিবেচনা করিয়া ভার-ছাঙ্গ-স্থতের প্রতি ক্লপা প্রকাশ করিলেন। তিনি তাঁহাকে পরিত্যাগ পূর্বক ত্বরমাণ হইয়া গমন করত আপনকার সৈন্য হননে প্রবন্ত হইয়া যুদ্ধ করিতে नाशिटनन।

এ দিকে ছুর্যোধন মহাধমুর্জর ভীমদেনকে শিলা শাণিত রুক্মপুশ্ব গুধুপত্র সংযুক্ত শর নিকর দ্বারা বিদ্ধা করিলেন। ভীমদেন কুদ্ধ হইরা অব্যগ্র চিন্তে শক্র প্রাণ সংহারক দৃঢ় এক চিত্র কার্ম্মুক ও বেগ-বান্ তীক্ষ্ণ অজিন্ধা স্থাণিত দশ সন্থ্য শর গ্রহণ করিয়া সত্তর আকর্ণ আকর্ষণ পূর্বক কুরুরাজের প্রশন্ত বক্ষংস্থলে নিক্ষেপ করিলেন। ছুর্যোধনের বক্ষংস্থ কাঞ্চন ক্রেত্র-গ্রথিত রত্ন ক্রেই শর-সকলে পরিষ্ঠত হইরা আকাশে গ্রহণ্ণ-সমান্ত স্থ্যোর নাার শোভা পাইতে লারিকা। সর্প বে প্রকার মনুষ্ঠিত তুল শক্ষ সহু করে না, তক্রপ তেজন্মী

আপনকার পুত্র, ভীমদেনের আঘাত বছ করিলেন না; তিনি সংকুদ্ধ হইয়া সৈন্যদিগকে আসিত করিয়া স্বর্ণপুত্র শিলা শাণিত শর সমূহ দারা ভীমসেনকে বিদ্ধ করিলেন। আপনার দেবতুল্য সেই মহাবল তুই পুত্র যুধামান ও পরস্পার কর্তৃক সাতিশয় ক্ষত বিক্ষত হইয়া রণ স্থলে শোভমান হইলেন।

বীর শত্রুহন্তা মহাবীর স্বভদ্রা-পুক্র, নরব্যাঘ্র চিত্র-সেন ও পুরুমিত্রকে সপ্ত শাণিত বাণে বিদ্ধ ও সতা-ব্রতকে সপ্ততি শরে তাড়িত করিয়া রণে ইন্দ্র সম হইয়া যেন নৃত্য করিতে করিতে আমাদিগের পীড়া উৎপাদন করিতে লাগিলেন। পরস্ক চিত্রদেন দশ, সত্যত্রত নয় ও পুরুমিত্র সপ্ত শরে তাঁহাকে প্রতি বিন্ধ করিলেন। তাঁহার শর-বিদ্ধ শরীর হইতে রুধির ক্ষরিত হইতেছে, সেই অবস্থাতেই তিনি চিত্রসেনের শত্র-নিবারণ বিচিত্র ধয়ুক ছেদম ও তনুত্রাণ ভেদ করিয়া বক্ষঃস্থলে শর।ঘাত করিলেন। ভদনম্ভর আপনকার পক্ষীয় মহারথ বীর রাজপুত্র-গণ সংরক্ত ও সমবেত হইয়া স্থশাণিত শ্রসমূহ দারা তাঁহাকে বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। প্রমান্ত্র-বিশারদ অভিমন্ত্রা তাঁহাদিগের সকলকে তীক্ষু শর সমুহে হনন করিতে লাগিলেন। আপনকার পুক্র-গণ, তাঁহার তাদৃশ কর্ম দেখিয়া তাঁহাকে পরিবেইন করিলেন। যে প্রকার শিশির কালাভায়ে উদ্ধৃত জ্বলম্ভ অগ্নি ভূণ কাষ্ঠ দহন করে, দেই প্রকার তিনি व्यापनकात याध्रापक एक कतिएक मानितन। তিনি ভরৎ পক্ষ সৈন্য সংহারে প্রবৃত্ত হইয়া অভি প্রদীপ্ত হইয়া উঠিলেন। হে নরপাল। স্বভদ্রা-পুত্র অভিমন্ত্রার তাদৃশ কার্যা দেখিয়া আপনকার পৌত্র লক্ষণ সত্তর তাঁহার সমীপে যুদ্ধার্থ সমকেত হইলেন। অভিমন্ত্রা সংকুদ্ধ হইয়া ছয় শর দার। শুভ-লক্ষণ লক্ষণকে এবং তিন শর ছারা তাঁহার: मात्रिक विक कतित्वन। नक्मा ७ अजिमसूद्ध স্শাণিত শরু সমূহ ছারা বিন্ধ করিতে লাগিলেন, তাহা অমুতের ন্যায় হইল ৷ মহারও অভিমন্ত্র

সুশানিত শর নিকর ছারা লক্ষণের অশ্ব চতুকীর ও সারবিরে সংহার করিয়া তাঁহার প্রতি অভিক্রত হইলেন ৷ বীর শত্রুহন্তা লক্ষণ হতাশ্ব রথেই অব-ছিত হুইরা কোধাবিট চিত্তে অভিমন্তার রথের উপর শক্তি নিকেপ করিলেন। অভিমন্ত্রা সেই ঘোর ৰূপ **ভূৰগোপৰ শক্তি সহ**সা আপতিত হইতেছে দেখিয়া ভীক্ষ পর নিচর ছারা ভাষা ছেদন করিয়া क्लिक्नि। छम्नडत क्रुपाठाचा नक्सनक च द्राप चारतार्व कतारेला मकन मिटनात माकार्ट्य त्र স্থল হইতে অপুসারিত করিলেন। সেই মহাভয়াবহ **अकूल यूट्स वीद्रभंग श्रदम्शद्र वर्टे**श्वी ७ क्विचारमा श्रद বশ হইয়া অভিক্রত হইতে লাগিলেন। প্রাণপ্রদানে সমুদতে আপনকার ও পাগুবদিগের পক্ষীয় মহা-র্থ মহাধ্যুর্জরগণ পরস্পরের প্রাণ সংহার করিতে नाभित्नन। एक्षप्रभेष मुङ्क्तिभ, कव् विश्नेन, तथ বিহীন ও ছিন্ন-কার্মুক হইয়া কুরুগণের সহিত বাছ যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল। মহাবল মহাবাহ্ছ ভীয় সংক্রুদ্ধ হইরা দিবাজে দারা মহাত্মা পাওবদিগের সেনা বিনাশ করিতে লাগিলেন। তথন মেদিনী নিপাতিত সাদী, রখী, অশ্ব, হত নিয়ন্তা গজ ও यसूरा बाद्रा नमाकीर्ग रहेन।

ৰপ্ৰতিতম অধ্যার সমাপ্ত। १०।

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ। যুদ্ধর্মণ মহাবাহ সাতাকি, সেই সমর ছলে ভারসাধন এক উত্তম ধনুক বিকর্ষণ পূর্বক প্রকাশা কপে অহুত হত্তলাঘব প্রদর্শন কর্ত পূজ্যুক্ত আশীবিষ সম শর সকল নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। রণে শত্রু হনন কালে ভিনি এমন লমুহত্তা সহকারে ঘরা পূর্বক ধনু-বিক্ষেপ ও পূঞ্জ পূঞ্জ শর গ্রহণ, সন্ধান, মোচন ও নিক্ষেপ কর্ত বিশক্ষ হনন করিতে লাগিলেন যে, ভাহার মূর্তি তৎকালে অতি বর্ষণনীল মেঘের সমান দূর্ত হইতে লাগিল। হে ভারত। তথন রাজা ছর্মোধন তাঁহাকে ভাদুশ সমুধীর্ণ দেখিরা অমুত त्रथ काहात मभीरा त्यात्र कतिराम । महायस्त्र বীর্যাব্যন্ সভাবিক্রম সাভাকি দিব্যান্ত দারা সেই সমত মহাধমুর্কর রুণীদিগকে নিহত করিলেন। গৃহ ত-শরাসন সেই বীর তাদৃশ নিদারণ কর্মা করি-য়া ভূরিশ্রবার সহিত যুদ্ধে সমবেত হইলেন। কুরু-কুলকীর্ভি-বর্দ্ধন ছুর্যোধন সেনাদিগকে যুযুধান-কর্তৃক নিপীড়িত দেখিয়া ধাবমান হইলেন, এবং ইন্দ্রায়ুধ-সবর্ণ মহৎ ধমুক বিক্ষারণ করিয়া পাণি লাঘৰ প্ৰদৰ্শন পূৰ্ধক বজ্ঞ সন্নিভ আশীবিষ সদৃশ সহস্র সহস্র শর ভাঁহার প্রতি বিসর্জন করিতে লাগিলেন। সাত্যকির পদামুগগণ কাল সদৃশ সেই সকল শর সহু না করিয়া যুদ্ধপুর্মাদ সাত্যকিরে পরিতাাগ পূর্বক চতুর্দিকে বিদ্রুত হইল। ভূরি-আবারে দেখিরা যুযুধানের মহাবল, মহারথ, বিচিত্ত বৰ্ম, আয়ুধ্ব ও ধন্স বিশিউ, বিধাতে দশ পুত্ৰ সংবন্ধ হইয়া যূপকেতু ভূরিশ্রবার সমীপে গমন পূর্বক मकटल हे कहिएलन, च्याह को द्वर माद्राम महावल! षाहैम, जूनि यानामिरभन्न मकरणन्न अथेवी श्रार्छा-কের সহিত যুদ্ধ কর। তুনিই আমাদিগকে পরাঞ্জিত করিয়া যশ লাভ কর, কিয়া আমরাই ভোমাকে পরাঞ্চিত করিয়া পিতার প্রীতি সম্পাদন করি। বীর্যাল্লাঘী মহাবল নরজেও যুপকেতু তথন সেই সকল খুর কর্তৃক ঐ ৰূপ অভিহিত হইয়া তাঁহাদিগকে যুকার্থ সমবস্থিত দেখিয়া কহিলেন, বীরগণ! ভোমরা উত্তম বলিয়াছ, যদি তোমানিগের এবপে মতি হইয়া থাকে, ভোমরা সকলে সমবেত হইয়া আমার महिल यूट्य व्यव्य २७, जामि लामानिरंगत नकनरक यूष्क्र मश्हात्र कत्रिव। महे कि श्रायां महापसूर्वत অরিন্দম বীরদিগকে এই ৰূপ কহিলে, তাঁহারা মহৎ শর বর্ষণ আরম্ভ করিলেন। মহারাজ। অপরাত্ন সময়ে এক ভূরিশ্রবার সহিত সমবৈত উক্ত দশ ব্দনের তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল। তাঁহারা রুধি व्यश्न अक कृतिज्ञवादक, व्यावृष् कारन त्मन कर्वक रमक्र भर्वाकाभित्र जन वर्षात्र नगात्र, भन्न वर्षात्र

সমাকীর্ণ করিলেন। মহারথ যুপকেতু তাঁহাদিগের विभूक यमम् ७ वक मन्निज मन्न मक्न ममीशङ् ना रहेट इहेट इब विनाकत्म पा ए एमन क्रिया কেলিলেন। দৌমদন্তির এই অন্তুত পরাক্রম দেখি-লাম যেতিনি একাকী নির্ভয় চিত্তে অনেকের সহিত युक्तामक हरेलन। छक सम महात्रथी मत इंग्डि করিয়া সেই মহাবাছকে পরিবেউন পূর্বক সংহার করিতে উপক্রম করিলেন। মহারথ সোমদত্ত-नन्मन कुक इरेश निटमय मत्था मन वाटन ठाँदा-দিগের কার্ম্মক ছেদন করিয়া ফেলিলেন। তাঁহা-দিগের ধনুক ছিল হইলে নতপর্ব ভল দারা তাঁহা-দিগের শিরশ্ছেদন করিয়া নিপাতিত করিলেন। তাঁহারা বক্রভগ্ন রক্ষের ন্যায় হত হইয়া ধরা পতিত হইলেন। রফিবংশীয় সাত্যকি মহাবলাুক্রান্ত বীর পুত্রদিগকে নিহত দেখিয়া গর্জন পূর্বক ভূরিশ্রবার অভিমুখে ধাবমান হইলেন। উভয় মহারথ মহাবল পরস্পারের রথ রথ ছারা পীড়ন করিয়া রথবাজি বিনাশ পূর্ব্বক খড়্গ চর্ম্ম ধারণ ও লক্ষ প্রদান করত বির্থী ও যুদ্ধার্থ দণ্ডায়মান হইয়া শোভমান হই-লেন। তথন ভীমসেন অসিধারী সাত্যকির সমীপে আসিয়া ত্বরা পূর্ব্বক তাঁহাকে রথে আরোপিত করিলেন। আপনকার পুত্রও সমুদায় ধরির সা-ক্ষাতে সত্বর ভূরিশ্রবাকৈ রবে উঠাইয়া লইলেন। সেই রণে পাগুবেরা সংরক্ষ হইয়া মহারথ ভীমের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। প্রভাকর লোহিত ৰূপ ধারণ করিলে ধনপ্রয় স্বরমাণ, হইয়া পঞ্চ-বিংশতি সহস্র মহারথী বিনাশ করিলেন। তাহারা পার্থকে বিনাশ করিতে ছুর্য্যোধন কর্ভৃক আদিষ্ট **इहेग़, य क्रा मनड मन वङ्गिदक ध्वाश्व ना हहेग्रां** अ নিকটস্থ হইবামাত্র বিনক্ত হয়, সেই ৰূপ ধনপ্লয়কে यूक्कथाश्च ना रहेरा रहेरा दिनाम थाश्च रहेल। তদনম্ভর ধমুর্বেদ বিশারদ মৎস্য ও কেকরগণ সপুত্র মহারথ পার্থকে পরিবেফন করিলেন। তখন আ্-দিতা, সমুখিত ধূলি জাত মেখে আচ্ছাদিত হইলেন,

তাহাতে সমুদায় সৈনাদিগের মোহ সমুৎপন্ন হইল।
তথন আপনার পিতা দেবত্রতের বাহনও আন্ত হইয়াছিল, এবং সন্ধ্যা সময়ও সমুপস্থিত হইল, স্বতরাং
তিনি সৈনাদিগের অবহার করিতে আদেশ করিলেন। পাগুব ও কৌরব উভয় পক্ষ সেনাই পরস্পর
সমাগমে সাতিশয় উদ্বিগ্ন হইয়া স্ব স্ব বিশ্রামালয়ে
গমন করিল। অনন্তর পাগুব, স্প্রেয় ও কৌরবগণ
স্ব স্ব শিবিরে গমন পূর্বাক তথায় নিবিষ্ট ও যথাবিধি ক্লম-নিবারণে প্রবৃত্ত হইলেন।

এক সপ্ততিতম অধ্যায় ও পঞ্চম দিবস-যুদ্ধ সমাপ্ত॥ ৭১॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ! তৎ পরে কুরু পাণ্ডবেরা নিশা সমুচিত কার্য্যে রাত্রি যাপন করিয়া প্রভাতে পুনর্কার যুদ্ধার্থ নির্গত হইলেন। উভয় পক্ষ যুদ্ধোদ্যত রথী ও সজ্জিত দক্ষীগণের মহাশব্দ উথিত হইল। পদাতি ও অশ্বগণের যুদ্ধ মঙ্জা সময়ে তুমুল শম্ব ছুন্তুভি শব্দ সর্ব্ব দিকে পরিব্যাপ্ত হইল। তথন রাজা যুধিষ্ঠির ধৃষ্টগ্লুয়েকে কহি-লেন, হে মহাবাছ! শত্রুতাপপ্রদ মকর বাহ নির্মাণ কর। রথি প্রধান ধৃষ্টগ্রান্ন রাজা যুধিষ্টিন্নের এই রূপ আদেশানুসারে সমস্ত র্থীদিগকে ২বর চূহ্ নি-র্মাণে অমুমতি করিলেন। ধনঞ্চয় ও দ্রুপদ তাহার मखक, नकूल ७ महत्त्व छाहात छुट्टे एकू, महावल ভীমদেন তাহার তুও, স্বভদা ও দ্রৌপদীর পুছেরা, রাক্ষস ঘটোৎকঢ, সাতাঞ্চি ও ধর্মরাজ তাহার এীবা, বাহিনীপতি বিরাট মহতী সেনা সমবেত ধৃষ্টচু:মের সহিত তাহার পৃষ্ঠ, কৈকেয় দেশীয় ভূপাত পঞ্চ ভাতা তাহার ৰাম পক্ষ, নরব্যাঘ্র ধৃউকে তু ও বীর্য্য-বান চেকিতান তাহার দক্ষিণ পক্ষ, মহারথ শ্রীমান্ কুন্তিভোজ ওপতানীক মহতী সেনায় সমাহত হইয়া তাহার পদ ধর এবং দোমকগণ সংহত মহাধহুরি বলবান শিখণ্ডী ও রাজা ইয়াবান তাহার পুক্ প্রদেশে অবস্থিত হইলেন। হে ভারত ! পাওটেরা

স্থােদর সময়ে এই ৰূপ মহাবাহ সজ্জিত করিয়া যুদ্ধার্থ বার্মাত হইয়া সমুচ্ছ্রিত ধল, ছত্র, বিমল শাণিত শস্ত্র, হস্তী, অশ্ব, রথ ও পত্তিগণের সহিত কৌরব-দিগের অভিমুখে গমন করিতে লাগিলেন।

আপনকার পিতা দেবত্রত সেই মকর বূাহ দেখিয়া সৈনাগণের মহৎ ক্রৌঞ্চ বূাহ প্রতিসক্ষিত করি-লেন। মহাধমুর্ধার ভরদাজ-নন্দন উহার তুগু, অশ্ব-খামা ও রূপ উহার চকু, সর্বব ধমুর্দ্ধরাগ্রগণ্য নরবর শ্রেষ্ঠ কৃতবর্ম। কাম্বোজ দেশীয় নৃপতি ও বাহ্লিকের সহিত উহার শিরংস্থল, বহু রাজগণে পরির্ত আ-পনকার পুত্র মহারাজ তুর্যোধন ও খ্রসেন উহার গ্রীবা, মদ্র, সৌবীর ও কেকয়গণের সহিত প্রাগ্-জ্যোতিধ নাথ মহতী সেনার সমারত হইয়া উহার উর্ফুল, প্রস্থলাধিপতি স্থশর্মা স্ব সেনার পরির্ত ও বর্ম্মিত হইয়া উহার বাম পক্ষ, তুথার, যবন, শক ও চুলিকগণ বন্ধ সন্নাহ হইয়া উদার দক্ষিণ পক্ষ এবং শ্রুতায়ু, শতায়ু, সৌমদক্তি, ইহাঁরা পরস্পর কর্তৃক রক্ষিত হইয়। উহার জ্বন দেশে অবস্থান করিতে লাগিলেন। সূর্য্যোদয় কালে উভয় পক যোধগণ এই ৰূপে বৃহ্হ সক্ষা করিয়া পরস্পরের সহিত সমবেত হইলেন, তাহার পর মহৎ যুদ্ধ হই-তে লাগিল। রথীগণ নাগারোহীগণের, নাগারোহী-গণ तथी भरात, असारताही भग असारताही भरात, त्रश्रेत्रां अव्यादत्राही गरनत, अवादत्राही गरन तथि ও क्ष्मत भरात अवर त्रवीभा भजारताही, त्रवी ७ অশ্বারোহী গণের সহিত শ্বুদ্ধে অভিক্রত হইলেন। এবং রধী পণ প্রাতি গণের সহিত ও প্রাতিগণ সাদী গণও পদাতি গণের সহিত সমবেত হইয়া व्यवर्ष शृक्षक शतन्त्रत्र भावमान रहेल। य श्वकात्र নক্ষত্র সমূহ দারা শর্করী শোভা পায়, সেই ৰূপ পাওবী দেবা ভীমদেন, অর্জুন, নকুকণ্ড সহদেবের द्रिकडा रहेंब्र मांडा পारेटड वाशिव। এবং षात्रनकात्र रमनांख, धारमंग मरद्र व्यक्तिका नाम, জীয়, রূপ, ডোণ, শলা ওঁ ছর্ষোধন।দি কর্তৃক রক্ষি-

তা হইরা শোভমানা হইল। পরাক্রমী ভীমনেন জোণকে দেখিয়া বেগবান্ অশ্ব দ্বারা তাঁহার ফেনা-जियूटच गमन क्तिलान। वीर्यावान कान क्ष रहेशा ভীমসেনের মর্ম্ম ভেদ করিবার উদ্দেশে নয় লোহ-শর দারা তাঁহারে বিদ্ধ করিলেন। ভীমসেন দ্রোণের শরে দৃঢ়াহত হইয়া কাঁহার সার্থিরে অন্তাঘাতে যম ভবনে প্রেরণ করিলেন। যে প্রকার অগ্নি ভূল রাশি দহন করেন, সেই ৰূপ প্রতাপশালী ভরম্বাজ-নন্দন স্বয়ং অশ্ব রশ্মি এইণ পূর্বক পাওনী সেনা দাহ করিতে লাগিলেন। হঞ্জয়গণ কৈকেয়গরের সহিত, জোণ ও ভীয় কর্তৃক সমাহত হইয়া পলায়ন পরায়ণ হইল। আপনকার পক্ষ সৈন্যও ভীমার্ক্সন কর্তৃক ক্ষত বিক্ষত হইয়া মদগর্বিতা বরাঙ্গনার ন্যায় স্বাস্থানে বিমোহিত হইয়া পড়িল। সেই বীর-ক্ষয় জনক সংগ্রামে আপনকার ও পাত্তব পক্ষীয়-দিগের ছোরতর বিপর্যায় সমুপস্থিত হইল, উভয় পক্ষের বৃহেই ভগ্ন হইতে লাগিল। উভয় পক সকলেই যে একায়ন গত হইয়া বিপক্ষ সহ রুণ করিতে লাগিল, তাহা অদ্ভুত অবলোকন করিলাম। কৌরব ও পাওব বীরগণ সেই মহাযুদ্ধে পরস্পরের অক্র সকল প্রতি সন্ধান করিয়া প্রহার করিতে লাগিলেন

দ্বিসপ্ততিতম অধ্যাত্ম সমাপ্ত ॥ ৭২ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! আমাদিগের বছবিধ দৈনিক লোক সকল উৎরুফী ও বছগুণাহিত; তাহা-দিগের বাহও যথা শাস্ত্র নির্মিত হইরা অমোঘ হইরা থাকে। তাহারা আমাদিগের প্রতি সম্ভফী, অভ্যম্ভ অমুরক্ত, প্রণত এবং ব্যসন বিহীন; পূর্বে তাহাদিগকে বল বিক্রম পরীক্ষা করিয়া নিযুক্ত করা হইরাছে। তাহারা না অতি রুদ্ধ, না বালক, না ক্লশ, না খুল; এবং শীঘ্রচারী, আরত কলেবর, দৃঢ়কার, অরোগী, গৃহীত সন্নাহ সম্পন্ন এবং বছ শাস্ত্র বোধী; অসি হুদ্ধে, বাহু যুদ্ধে ও গদা মুদ্ধে

অভিজ্ঞ; প্রাস, ঋটি, ভোমর, লৌহময় পরিঘ, जिन्मि शाल, मंखि, हेर्, मूयल, लक्षेष्, मंत्रामन, कर्पश लाड्डापि এবং বিচিত মুখ্টি মুদ্ধে সমর্থ; , ধমুর্বেদে প্রত্যক্ষ প্রদর্শী; ব্যায়ামে কৃতশ্রম; সমুদায় শস্ত্র গ্রহণ বিদ্যায় পরিনিষ্টিত; হস্ত্যাদিতে আরোহণ ও অবতরণে, বহিঃসরণে, ন্মুধ্যে অপসরণে, অগ্রে গমনে, পশ্চাৎ অপ্যরণে ও সম্ক প্রাইরণে নিপুণ; এবং নাগ, অশ্ব ও রথ যানে উত্তম ৰূপে পরীক্ষিত; তাহাদিগকে পরীক্ষা করিয়া যথোচিত বেতন প্রদা-নে রক্ষা করা হইয়াছে। তাহাদিগকে কোন সামা-জিক সম্বন্ধ বা সৌহার্দ্দ বশত, অথবা আভিজাত্য কি चना (कान मञ्जूक निवन्नन नियुक्त दाथा इस नारे। তাহারা মানী, যশস্বী ও আর্ঘা-ভাবাপন্ন; আমা-দিগের দারা তাহাদিগের স্বজনগণ সমৃদ্ধি সম্পন্ন ও বান্ধবগণ সম্ভুষ্ট ও সংকৃত হইয়া পাকৈ; তাহা-দিগের বহু প্রকার উপকার করা হইয়াছে। হে বংস! ভুবন বিখ্যাত লোকপাল সদৃশ মুখ্যকর্মা वलगानी व्यथान व्यथान लाट्वता जाशामिशव्य পালন করিয়া থাকেন। যে সকল ক্ষজিয়েরা বল-বান্ ও স্বেচ্ছাধীন আমাদিগের অনুরক্ত এবং ভু-मखन मत्था लाटक याहा फिरभन्न मन्यान कत्रिया थाटक, তাঁহার। অনেকে অনুগত জনগণের সহিত তাহা-**मिश्राक त्रका कित्रााधारकन। शक विशेन अथ**ह পক্ষি সদৃশ ক্রত গতি রথ ও নাগ সমূহ ৰূপ স্রোত-चुकी नमी नकरल পर्तिशूर्न, नाना खांध्रान बुश करल জলময়, বিপুল তরঞ্জপ বাহনে ভয়ানক, গদা শক্তি শর ও প্রাসাদি অন্ত্র ৰূপ ক্ষেপনী সমূহে नमाकून, श्रज ७ ज्यरगद मश्वाध ममश्विज, द्रष्ट्रभाष्टि স্থনিচিত, ৰাষুবেগ বিকম্পিত, ধাৰমান বাজিগণে স্থুসম্পন্ন সেই সৈন্য সকল সমবেত হইয়া মহাসাগর **নদৃশ হইয়াছে। অপার সাগরোপম গঞ্জনিশীল** ভाष्ट्रण महर रेमना जान, जीय, कुछवर्त्या, कुन, छू:-শাসন, জন্মতথ, ভগদন্ত, বিকর্ণ, অশ্বত্থামা, শকুনি ও বাহ্লিক, এই সকল সারবান্ লোক এবীর মহাদ্মা

গণ কর্তৃক রক্ষিত হইয়াও যে সংগ্রামে নিহত হই-তে লাগিল, ভাহার কারণ কেবল প্রাক্তন ভাগাই বলিতে হইবেক। হে সঞ্জয়! মহাভাগ প্রাচীন মানব বা ঋষিগণও এৰপ যুদ্ধ ব্যাশার কদাপি দর্শন করেন নাই। এতাদৃশ বল সমূহ শাস্ত্র বিধান, অর্থ ও সম্পত্তিতে সংযুক্ত হইলেও যে বিপক্ষের বধ্য হইল, ইহার কারণ ভাগ্য বাডীত আর কি বলা যাইতে পারে? এই ৰূপ ঘোরতর সৈন্যও যে পাওব গণ হইতে অবতরণ করিতে পারিল না, ইহাতে আমার নিকট সকলই বিপরীত ৰূপে প্রকাশ পাই-তেছে। সঞ্জয়। আমার বোধ হয়, দেবগণ পাণ্ডব-দিগের হিতনিমিত রণ হলে সমাগত হইয়া, যে প্রকারে আমার সৈন্য সকল বিন্ট হয়, এতাদুশ ৰূপে যুদ্ধ করিয়া থাকেন। পূর্বের বিছুর হিতকুর ও পথ্য বাক্য বারংবার কহিয়াছিলেন, আসার মন্দ-বুদ্ধি পুত্র ছর্যোধন তাহা গ্রহণ করিল না। এই ক্ষণে যাহা সংঘটিত হইতেছে, ইহাতে আমি বোধ कति (य, मिष्टे महाजा नर्कछ विछ्व देहा शूर्व्वहे দর্শন করিয়াছিলেন, ঐ নিমিন্তই তাঁহার এই ৰূপ বিবেচনা হইয়াছিল। হে সঞ্জয়। এই ভবিতব্য ব্যাপার পূর্বে বিধাতাই হটি করিয়া রাধিয়াছেন, তাহা অবশ্যই হইবে, অন্যথা হইবার নহে।

ত্রিসপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৭৩॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে রাজন্! আপনি আপনার দোষেই এতাদৃশ বাসনে বিপন্ন হই লেন। হে ভারত-প্রবর! ধর্ম-বিপর্যায়-জনিত যে দোষ, তাহা ছুর্যোধন দেখিতে পান নাই, পরস্ক আপনি তাহা জ্ঞাত ছিলেন। মহারাজ! আপনকার দোষেই পূর্বে দাতকীড়ার অমুঞ্চাম হয় এবং আপনকার দোষেই একণে পাওবদিগের সহিত যুদ্ধ হই তেছে, হুতরাং আপনিই একণে আমুক্ত পাপের কল ভোগ করন। আমুক্ত কর্মের কল তোগ আপনারই করিতে হয়, অতএব আপনিই ইছ বা পর জীকে

এই সামক্ত দোবের কল লাভ করিবেন। সে ষাহ। হউক সংপ্রতি আমি যথাবৎ যুদ্ধ র্ত্তান্ত কীর্ত্তন করি, আপনি উপস্থিত ব্যসন জন্য শোকে অভিভূত হইয়াও স্থির চিত্তে তাহা আবণ করুন। বীর ভীম-সেন, স্থশাণিত বাণ সমূহ দার। মহাসৈন্য ভেদ করিয়া ष्ट्र्याध्याव मञ्जूषात्र अञ्चलिशयक आक्रम क्रि-लन । महादल जीमरमन क्रुः भामन, क्रित्वर, क्रूर्यप्र, ष्टुःगर, अत्र, अत्रतमन, विकर्ग, विज्ञतमन, स्रूमर्भन, চারুচিত্র, স্থার্মা, ছুম্কর্ণ ও কর্ণ, এই সকল মহারথ ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র ও তৎপক্ষীয় অন্যান্য বহুল মহারথীকে সংকুদ্ধ ও সমীপস্থ দেখিয়া ভীন্ম-রক্ষিত মহৎ সৈন্য মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। ভীমসেনকে চমু মধ্যে প্রবেশ করিতে দেখিয়া উক্ত ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রেরা সকলে পরস্পার বলাবলি করিলেন, হে ক্ষল্রিয়গণ ! আইস আমরা ঐ ভীমদেনের প্রাণ সংহার করি। সেই সমন্ত ভাতাগণ এই ৰূপে কৃত নিশ্চর হইয়া ভীম-সেনকে পরিবেউন করিলেন। যে প্রকার সূর্য্য প্রজা সংহার কালে ক্রুর মহাগ্রহগণে পরিবেটিত হন, সেই প্রকার ভীমদেন সেই সকল ভাতাগণে পরিবেটিত হইলেন। যে ৰূপ দেবাস্থর যুদ্ধে দানবদিগের মধ্য স্থিত ইন্দ্রে চিত্তে ভয় সঞ্চার হয় নাই, তদ্ধপ বিপক্ষ বুাহ মধ্যে প্রবিষ্ট ভীমসেনের চিত্তে কিছু মাত্র ভয় সঞ্চার হুইল না। শত শত সহস্র সহস্র সর্কাশস্ত্র-ধারী রথী সমুদ্যত হইয়া শর সমূহ দারা ভাঁহাকে সমাচ্ছন্ন করিলেন। শৌর্য্য-সম্পন্ন মহাবল ভীমসেন তাঁহাদিগের প্রধান যোজা হন্তী, অশ্ব ও রথাবঢ় ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রদিগকে কোন চিস্তা না করিয়াই হনন করিতে আরম্ভ করিলেন। তাঁহার নিগ্রহ করণে সমুদাত সেই ভাতাদিগের অভিপ্রেড জ্ঞাত হইয়া তাঁহাদিগের সকলকে বধ করিছে মানস করিলেন। তদনন্তর তিনি গদা গ্রহণ পূর্বক রথক্ইতে অব-রোহণ করিয়া ধৃতরাষ্ট্র-পুত্রন্তিগের দৈন্য সাগারে প্রবেশ করত প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন। जीवरनन विशक रेमना मर्था श्रविके इहेरल,

পূৰত-নন্দন ধৃষ্টপ্ৰাত্ম সহসা জোণকে পরিত্যাগ করি-য়া, যেখানে স্থবল-পুত্র ছিলেন, তথায় গমন করিতে লাগিলেন-। তিনি আপনকার মহতী সেনা নিবারণ পূর্ব্বক গমন করিতে করিতে ভীমসেনের শূন্য রথের मभी পস্হ रहेरलन। जिनि सिर्हे ममत्र ऋरल जीरमत সারথি বিশোককে দেখিয়া ছুংখিত, হতচেতন, ष्ट्रर्भना ও वाण्य मध्त्रक हरेशा निश्वाम महकारत वाका প্রয়োগ করত জিজ্ঞাসা করিলেন, বিশোক! আ-মার প্রাণসম প্রিয়তম ভীমসেন কোধায় ? বিশোক ক্তাঞ্জলি হইয়া ধৃউত্যামকে কহিলেন, মহাবল পাণ্ডব আমাকে এই স্থানে রাখিয়া একাকী ধার্বরাষ্ট্র বল সাগরে প্রবেশ করিয়াছেন। তিনি আমাকে এই প্রিয় বাকা বলিয়াছেন, " সার্থি! যাহারা আমার সংহারে উ্দ্যুত হইয়াছে, আমি যে পর্যান্ত তাহা-দিগকে নিপাতিত করিয়া না আসিব, তাবৎ কাল অর্থাৎ মুহুর্ত্ত মাত্র তুমি এই স্থানে অশ্বদিগকে নিয়-মিত করিয়া আমার অপেকা করিবে।° তদনত্তর সেই মহাবল ভীমসেনকে গদাহত্তে ধাৰমান দেখিয়া সমুদায় সৈন্যদিগের হর্ষ জন্মিল। সেই মহাভয়াবহ তুমুল যুদ্ধে আপনকার সধা মহাবল হুকোদর বি-পক্ষদিপের মহাবাহ ভেদ করিয়া তথাে প্রবেশ করিলেন। মহাবলাক্রান্ত ধৃউছ্যুয় রণ মধ্যে বি-শোকের ঐ কথা শ্রবণ করিয়া তাঁহাকে পুনর্বার কহিলেন, অদা রণে আমি পাগুবদিগের হৈ ই উপে-का शूर्वक जीमरमन विशीन इहरत जामात जीवरन প্রয়োজন কি ? আমি রণ স্থলে অবস্থিত থাকিতে ভীমদেন একাকী দৈন্য ব্যুহ্ মধ্যে এক মাত্র পথ করিয়া গমন করাতে যদি ভাঁহাকে পরিভাগে করিয়া গমন করি, ভাহা হইলে ক্ষজ্রিয়গণ আমাকে কি বলিবেন ? যে ব্যক্তি সহায়দিগকে পব্নিত্যাগ করিয়া রণ হইতে গৃহে প্রত্যাগত হয়, ইন্দ্র প্রমুখ দেবতারা তাহার অকল্যাণ করিয়া থাকেন। ভীমসেন আমার স্থা, সম্বন্ধী এবং ভক্ত; আমিও সেই শত্রুনিস্থদনের প্রতি ভক্তি করিয়া থাকি, অতএব যে হানে তিনি

পমন করিরাছেন, আমিও তথার যাই; আমার তথার গমন কালে তুমি আমাকে, দেবরাজ কর্তৃক দানবগণ হননের ন্যায়, শত্রু হনন করিতে দেখিতে পাইবে।

বীর ধৃউছান্ন বিশোককে ইহা বলিরা ভীমসে-নের গদা প্রমধিত গজগণে পরিচিছ্লিত পথে সৈন্য মধ্য দিয়া গমন করিলেন। ভিনি দেখিলেন,ভীম-দেন তথন রিপু বাহিনী দগ্ধ ও বছ ভূপালকে পবন-ভগ্ন রক্ষের ন্যায় নিহত করিতেছেন। রথী, সাদী, দন্ত্ৰী ও পদাতিগণ ভীমসেন কৰ্তৃক হন্যমান হইয়া সাতিশয় আর্জনাদ করিতেছিল। বিচিত্র-যোধী কৃতী ভীমসেন কর্ত্তক আহত আপনকার পক্ষীয় সৈন্য-গণের হাহাকার শব্দ সমুৎপন্ন হইতেছিল। তদনন্তর সেই অস্ত্রবিদ্যা বিশারদ যোদ্ধাগণ নিভীক চিত্তে রুকোদরকে পরিবেষ্টন করিয়া চতুর্বিক শস্ত্র হৃষ্টি করিতে লাগিলেন। পৃষত-সম্ভান বলবাদ্ ধৃষ্টছান্ন শস্ত্রধারি শ্রেষ্ঠ, লোক মধ্যে বীরাগ্রগণ্য, স্থসংহত ঘোরতর সৈন্য কর্তৃক সমাক্রান্ত, অন্ত কালে দণ্ডহন্ত যমের ন্যায় গদাহস্ত, শরাঘাতে ক্ষত বিক্ষতাঙ্গ, কোধ ৰূপ বিষ ব্যনকারী ও পদচারে গ্যনশীল ভীমসেনকে দেখিয়া আশ্বাস প্রদান করত তাঁহার সমীপস্থ হইলেন। সেই মহাত্মা শক্তমগুলী মধ্যে ভীমসেনকে আশ্বন্ত করিয়া গাঢ় আলিক্সন পূর্ব্বক অতি শীঘ্র আত্ম রথে আরোপিত ও তাঁহার শল্যা-পনোদন করিলেন। আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধনও সেই বিমর্ফ ছলে সহসা ভাতৃগণের সমীপে গমন করিয়া বলিলেন, ঐ ছুরাস্থা ক্রপদ-পুঞ ভীমসেনের সহিত্তসমাগত হইয়াছে, এক্ষণে ঐ রিপু আমাদিগের रिमनामिश्रदक युष्क आस्तान ना क्रिंग्रेंड क्रिंग्डिंड আইস আমরা সকলে একত ছইয়া উহাকে সংহার করিতে গমন করি। ধৃতরাষ্ট্র-পুজেরা জ্যেতের আজ্ঞা-ক্রমে উর্বোধিত, ধৃউছামের প্রতি অমুষামাণ ও উদ্য-তারুধ হইরা, যে প্রকার যুগ ক্ষরে ভরানক কেতৃ নিপতিত হয়, তক্ৰপ ধৃউছ্যুদের ৰধ নিমিত্ত আ-

পতিত হইলেন। সেই বীর সকলে চিত্র ধয়ুক গ্রহণ পূর্বক ধন্তুর্গুণ ও ব্লধ নেমির শব্দে পৃথিবী বিকম্পিড করত, অবৃদ মগুলের পর্বতোপরি বারি বর্ষণের ন্যায়, ক্রপদ পুজের উপর শর বর্ষণ করিতে লাগি-লেন। চিত্রযোধী মহারথ যুবা পুরুষ দ্রুপদ-হুত আপনকার পুত্রদিগকে সম্মুখ রণে অবস্থিত ও সমু-দীর্ণ দেখিরা ভাঁহাদিগের স্থতীক্ষ্ণ শর সমূহে আহত হইয়াও বাথিত হইলেন না। তিনি অতি ক্ৰুদ্ধ হইয়া, দৈতাগণের প্রতি দেবরাজ মহেত্দ্রের ন্যায়, জাপন-কার পুত্রদিগকে সংহার করিবার মানসে অভ্যুগ্র थारमाञ्च थारमाश क्रिलन। त्रहे वीत-भन, ধৃউত্তানের প্রমোহনাত্রে চেতনাশক্তি বিহীন হইয়া मुक्ष इट्टलन। उथन ममल कुक्रूरेमना जापनकात्र মোহগ্রস্ত পুত্রদিগকে কাল প্রাপ্তের ন্যায় দেখিয়া বাজি, নাগ ও রথের সহিত চতুর্দ্দিকে পলায়ন করিতে লাগিল। ঐ সময়ে শস্ত্রধারি প্রধান জোণ त्र कि अमरक स्माक्त जिन भरत विक क्रिक्टन, তিনি জোণ শরে অতি বিদ্ধ হুইয়া পূর্ব্ব বৈর শ্বরণ করত রণ হইতে অবস্থত হইলেন। প্রতাপবাদ্ দ্রোণাচার্যা, দ্রুপদকে পরাজিত করিয়া শ্র বাদ্য করিলেন, তাহা শুনিয়া সোমকগণ ত্রাসাগ্রিত হইল। তদনন্তর রাজহিতৈষী অন্ত্রজ্ঞ প্রধান তেজ্পী মহা-ধমুর্দ্ধর প্রতাপশালী দ্রোণাচার্য্য আপনকার পুত্র-দিগকে প্রমোহনাত্তে বিমোহিত শুনিয়া ত্রা সহ-কারে রণ হইতে তথায় গমন করিয়া দেখিলেন, ধৃউছান্ন ও ভীমসেন বিচরণ করিতেছেন এবং আপ-নকার পুজের। মোহাবিষ্ট হইয়া রহিয়াছেন। অন-ন্তর তিনি প্রজান্ত প্রয়োগ করিয়া মোহনান্ত নিরা-ক্বত করিলেন। পরে আপনকার মহারথ পুত্রেরা সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইষ্য়া পুনব্বার ভীম ও ধৃউচ্চাংকর नेहिछ युद्धार्थ नःगंछ इहेटनन।

তৎ পরে রাজা যুধিন্তির স্ব সৈন্যদিগতে আজ্বান করিয়া কহিলেন, ভীমসেন ও ধৃউছ্যুমের নিমিন্ত আমার চিত্ত ব্যাকুল হইয়াছে, অভএব অভিনয়

अकृष्ठि बारम महातथी वर्षिष्ठ हरेत्रा यूक ऋल यथा भक्ति पत्राक्रम क्षकाम पूर्वक छै।शांतिरभन्न निक्षे গমন করুন এবং তাঁহাদিগের সংবাদ অবগত হউন। পুরুষ।ভিমানী বিক্রমশীল যোদ্ধা অভিমন্ত্রা, কৈকেয়-রাজেরা পঞ্চ ভ্রাতা, জৌপদীর পঞ্চপুত্র ও বীর্যাবান্ ধৃফীকেতু এই দাদশ বীর যে আজ্ঞা বলিয়া রাজার षासूक्षासूमादत महर रेमना पन ममजिवाहादत महे মধ্যাহ্ন সময়ে তথার গমন করিলেন। তাঁহারা স্থচীমুখ বুছে সক্ষিত করিয়া কুরুদিগের রথ দৈন্য ভেদ করিতে লাগিলেন। যে প্রকার মদমুর্চ্ছিতা প্রমদা আপ-নাকে নিবারণ করিতে সমর্থা হয় না, তদ্ধেপ ভীম-সেন ভয়ে ভীতা ও ধৃষ্টছাম কর্তৃক বিমোহিতা কুরু-দেন। অভিমন্ত্র প্রমুখ সেই সকল মহাধনুর্জর-দিগকে নিবারণ করিতে সমর্থা হইল না। স্বর্ণধ্রক শোর্তিত মহাধমুর্জারী পাণ্ডব পক্ষ সেই বীরগণ ধৃষ্ট-ছ্যুন্ন ও রুকে। দর সমীপে গমনেচ্ছু হইয়। ধারমান হই-ব্যেক্ত্র্যুম্ব ও ভীমসেন আপনকার সৈন্যবিনাশ করিতে করিতে অভিমন্যু প্রভৃতি কেই সকল মহা-ধনুর্দ্ধরদিগকে দেখিয়া প্রমোদান্তিত হইলেন। ধৃষ্ট-ছার আপনার গুরু দ্রোণকে সহসা আসিতে দেখিয়া আপনকার পুত্রদিগকে নিহত করিতে আর মানস क्तिटलन ना, এवर इंटकाम्बटक रेकटक्य ब्राटब्ब রথে আরোপিত করিয়া সাতিশয় ক্রোধাবিউ চিত্তে ধমুর্বেদ পার্থ দোরে প্রতি ধাবিত হইলেন। শক্রহদন প্রতাপবান্ ভারদাজ ধৃষ্টগুলাকে আপ-তিত হইতে দেখিয়া কুদ্ধ হইয়া তাঁহার ধনুক ভলাত্র দার ছেদন করিয়া ফেলিলেন, এবং প্রভু ছুর্বোধনের অন শরণ করিয়া তাঁহার হিভার্থে অন্যান্য শত শত বাণ ধৃউতু ের উপর নিক্ষেপ করিলেন। তৎ পরে বীর শতহন্তা ধৃষ্ট ছাত্র জন্য ধনুক গ্রহণ করিয়া সপ্ততি সংখ্য শিলা শাণিত স্বর্ণ-পুৰ শরে দ্রোগকে বিদ্ধ করিলেন। শতকর্ষণ পুনকার তাঁহার ধনুক ছেদন করিয়া চারি শরে চারি অং ক্লিটিত করিলেন এবং ভরাত্রে উচ্ছার

সারধিকে মৃত্যু নিকটে প্রেরণ করিলেন। মহাবাছ
মহারথ ধৃউত্থান্ন হতাশ্ব রথ হইতে লক্ষ্ণ প্রদান
করিয়া অভিমন্থার মহারথে আরোহণ করিলেন।
তদনন্তর পাশুব সৈন্য রথ, নাগ ও অশ্বগণের সহিত,
ভীম ও ধৃউত্থানের সাক্ষাতেই কম্পিত হইতে লাগিল। সেই সমস্ত মহারথ, সৈন্যদিগকে অমিত
ভেজা দোণ কর্ত্বক প্রভিগ্ন দেখিয়া নিবারণ করিতে
সমর্থ হইলেননা। তাহারা দোণের স্থশানিত শর
সমূহে সমাহত হইয়া কৃক্র সাগরের নাায় উদ্ভাস্ত
হইল। আপনার সমুদায় বল তাহাদিগকে তথাবিধ
ও দোণাচার্যাকে বিপক্ষ সেনা দগ্ধ করিতে দেখিয়া
আহ্লাদিত হইল, এবং সমস্ত যোজা তাঁহারে সাধু
সাধু বলিয়া চীৎকার শব্দ করিতে লাগিল।

চতুঃ সপ্ততি তম অধ্যায়সমাপ্ত॥ ৭৪॥

• 5°

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভার ত! তদন দ্তর রাজ। ছুর্যো-ধন মোহ প্রমুক্ত হইয়া অক্ষয় বীর রুকোদরকে পুনব্বার শরবর্ষণ দ্বারা নিবারিত করিতে লাগিলেন, এবং অপেনকার মহারথ পুত্রগণও পুনর্ফার ঐকমত্য অবলম্বন পূৰ্ব্বক সমবেত ও সমুদ্যুত হইয়া ভীম-সেনের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। ভীমসেনও পুনর্কার সমরে স্বকীয় রথ প্রাপ্ত হইয়া ভাহাতে সমারোহণ পূর্বক আপনকার আত্মজের সমীপে গমন করিলেন এবং শক্তর প্রাণ বিনাশক মহাবেগ-শীল দৃঢ় চিত্র শরাসন গ্রহণ করিয়া আপনকার পুক্ত-কে শর বিদ্ধ করিলেন। তদনস্তর রাজা ছুর্যোধনও মহাবল ভীমদৈনের মর্মান্থানে দৃঢ় ৰূপে স্থতীক্ষ্ণ নারাচ নিক্ষেপ করিলেন। মহাধয়ুর্জর ভীমদেন তাহাতে অতি বিহ্ন ও ক্রোধে রক্ত-লোচন হইয়া বেগে কার্স্থ্র আকর্ষণ পূর্বক তিন বাণে ভূর্যোধনের বাছ দ্বর ও বক্ষঃস্থল বিদ্ধ করিলেন, তিনি ভাহাতে আহত হইয়াও গিরিরাজের নাায় বিচলিত হইলেন না। সেই কুদ্ধ হুই বীয়কে পরস্পর সমাহত হইতে प्रिशि प्रयाम्यम् मृत चमूजगर शूक मञ्जर मत्र

করত জীবিতাশা পরিত্যাগ পূর্বক ভীমকর্মা ভীমের निश्रदर हुए निष्ठस कतिया छारात वर गांधरन मयञ्ज হইলেন। ভিনি তাঁহাদিগকে আপতিত হইতে দে-ধিয়া, ষেমন একটা হন্তী অনেক হন্তীর প্রতি ধাবমান হয়, তদ্রপ তাঁহাদিগের প্রতি ধাবমান হইলেন। সেই মহাযশা তেজন্বী পুরুষ নারাচান্তে আপনকার পুত্র চিত্রসেনকে বিদ্ধ করিষ্টা বছ বিধ স্থবর্ণ পুষ অতি বেগবান্ শর সমূহে আপনকার অন্যান্য পুত্রকে তাড়িত করিলেন। তথন ধর্মরাজ প্রেরিত, ভীম-সেন পৰামুগ অভিমন্যু প্ৰভৃতি সেই দ্বাদশ জন মহা-इथ वाश्रनामिरगंत्र वाहिनी मर्ख ध्वकारत्र वावचाश्रन পূর্বক আপনকার মহারথ পুত্রদিগের নিকট প্রত্যু-দাত হইলেন। তথন আপনকার মহাবল পরাক্রান্ত পুল্রগণ রথস্থ, স্র্য্যাগ্নি সম তেজস্বী, মহাধমুর্দ্ধর, धरोध, जीमल्भन्न, महाममद्र दिनीश्रम्यान, सूर्वा মুকুট দ্বারা সমুজ্জল অভিমন্ত্য প্রভৃতি শ্রুদিগকে সমাগত অবলোকন করিয়া ভীমসেনকে পরিত্যাগ পূর্বেক গমন করিতে লাগিলেন। আপনকার সকল পুজের৷ যে জীবিভাবস্থায় গমন করিলেন, ইহা কৃন্ডী-নন্দন সহু করিতে না পারিয়া পুনর্কার অনুসরণ পূর্বক তাঁহাদিগকে পীড়িত করিতে লাগিলেন। তখন গৃহীত শরাসন ছুর্যোধন প্রভৃতি আপনকার মহারথ পুত্রগণ আপন্কার সৈন্য মধ্যে ভীমসেন ও ধৃউত্বামের সহিত সমবেত অভিমন্তাকে দেখিয়া বেগশীল অশ্ব দ্বারা, যেখানে সেই অভিমন্যু প্রভৃতি রুখীগণ ছিলেন, তথায় গমন করিলেন। তদনস্তর অপরাহু সময়ে আপনকার ও শত্রুপকৈর মহারণ र्रेट नातिन।

হে ভারত! অভিমন্তা দেই মহাসংগ্রামে বিকর্ণের অক্সকল নিহত করিয়। তাঁহার প্রতি পঞ্চবিংশতি কুদুকান্ত্র নিকেপ করিলেন। মহারথ বিকর্ণ হতাশ্ব রথপরিত্যাগ করিয়া চিত্রসেনের ভাশ্বর রথে আ-রোহণ করিলেন। বিকর্ণ ও চিত্রসেন ছুই ভাতা এক রথে আবঢ় হইলে অভিমন্ত্রা হাদিগত্ত শ্ব

বর্ষণে আচ্চন্ন করিলেন। অনন্তর চুর্জ্বার ও বিকর্ণ অভিমন্ত্রাকে পঞ্চ শরে বিদ্ধ করিলেন, তাহাতে তিনি বিচলিত না হইরা মেরুগিরির ন্যার হির হইরা রহিলেন। ছুঃশাসন কৈকেররাজ পঞ্চ ভ্রাতার সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন, তাহা অন্তুতের ন্যায় হইল। দৌপদীর পঞ্চ পুক্রেরা প্রত্যেকে ক্রোধা-কুল চিত্তে ছুর্যোধনকে নিবারণ করত তিন তিন বাণে বিদ্ধ করিলেন। আপনকার ছুর্দ্ধর্য পুত্র ছুর্য্যো-ধনও তাঁহাদিগের প্রত্যেককে স্থুশাণিত শর নিকরে আহত করিতে লাগিলেন। তিনি তাঁহাদিগের শর-বেধে রুধিরাক্ত-দেহ হইয়া গৈরিক ধাতু বিমিশ্রিত প্রত্রবণযুক্ত গিরির ন্যায় শোভা প্রাপ্ত ইইলেন। বলবান্ ভীন্ন তথন পশুপাল কর্তৃক পশুসূথ তাড়-নের ন্যায় পাগুব দৈনা তাড়িত করিতে লাগিলেন। তংকালে অর্জুন সৈন্য মধ্যে শক্ত হনন করিতেছি-লেন, দক্ষিণদিক্ হইতে তাঁহার গাণ্ডীব নির্ঘোষ ঞ্তিগোচর হইল। সমর স্থলে কুরু ও পাণ্ডব**্রে**ন্ডা মধ্যে সহস্র সহস্র কবন্ধ উপ্পিত হইতে লাগিল। রণাঙ্গণে শোটিতের সাগর সমুৎপন্ন হইল; উহার শ্র সকল আবর্ত্ত, গত্র সকল দ্বীপ এবং অশ্ব সকল ভ্রুক হইল; নরব্যান্ডেরা রথ ৰূপ নৌকা সমূহ দারা সেই সাগর হইতে উণ্ডার্ণ হইতে লাগিলেন। সহস্র সহস্র नत ट्यार्थ मिगदक ছिन्नहरु, विशठकवह, ও विकल-দেহ হইয়া পতিত হইতে দেখা গেল। শোণিত প্ৰত নিহত মত্ত মাতক্ষে ভূতল যেন পৰ্বতাকীৰ্ণ হইল। তথার এই আশ্রুষ্য দেখিলাম, কি আপনকার, কি তাঁহাদিগের, কোন পক্ষে এমন কোন পুরুষ ছিল না, যে যুদ্ধাকাক্ষা করে নাই। এইৰূপে আপনকার পক্ষীয় বোধগণ জন্ন ও মহৎ বলের আকাজ্জী হইয়া পাওবদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন।

পঞ্ মুপ্ততিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৭৫॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারজে! তদনহর দিবাকর লোহিত প্রভ হইলে সংগ্রামোৎত্রক রাজা ছুর্যার্থন

जीभाक गःशत कतिवात मानाम धारमान रहेलन। ভামসেন দেই দৃঢ়বৈরী নরবীর ছর্ষ্যোধনকে আগত तिथित्र। क्यांशिविकेतित्वः कित्तिन, चरह शासात्री পুত্র! আমার বহু বংসরের আকাজ্জিত সময় আজি উপস্থিত হইল; যদি ভুমি রণ পরিত্যাগ না কর, তাহা হইলে আমি তোমাকে আজি নিপাতিত করিব। আজি আমি তোমাকে সংহার করিয়া জননী कुडीब क्रिम, आमानिरात वनवाम क्रनिक ममस करे এবং ক্রৌপদীর মনস্তাপ অপনোদন করিব। তুমি পূর্বে মাৎসর্ঘা প্রযুক্ত পাগুবদিগকে যে অবমানিত করিয়া-ছিলে, সেই পাপের ফল এই বাসন উপস্থিত হই-या**टि। कर्न ७ मोरालत प्रस्तान्य**मार्य प्राञ्च कर्मा প্রতি কিছুনা ভাবিয়াই যে যথেফীচার করিয়াছিলে, কুঞ্চ সন্ধি-প্রার্থী হইয়া ভোমাদিগের নিকট গমন করিলৈ ভাঁহার যে অবমান করিয়াছিলে এবং তুমি হৃত হইয়া উলুকের ছারা আমাদিগের প্রতি যে দ্বাক্ত কটুক্তি প্রয়োগ করিয়াছিলে, আজি আমি ভোষীকে ভোষার বন্ধুবান্ধ্ব ও অনুগত জনের সহিত বিনাশ করিয়া তোমার সেই পূর্বাকৃত পাপের नाम्ब कतिय। इंटकानत हेश विलया क्रांथ महकादत ষোর ধনুক বিকর্ষণ ও বারংবার উদ্ভামণ করিয়া মহাবক্সম নিশ্বন যুক্ত ভন্নানক, বজ্ৰ কণ্পে, ছালিত অগ্নিশিখাকার বড়বিংশতি অজিলগ শর তাঁহার প্রতি আশু পরিভ্যাগ করিলেন। পরে ছুই শরে তাঁহার কার্মুক ও ছই শরে তাঁহার সারথিকে বিদ্ধ করিয়। চারি শরে ভাঁহার বেগিত চারি অশ্বকে यमानदा পाठाहरान । जर्भदाहर छूहे भन्न ममा-ক্লফ ক্রিরা তথারা ভাঁহার উৎক্লফ রথ হইতে ছত্র ছেদন করিয়া কেলিলেন এবং তিন শঙ্কে তাঁহার উৎकृष छञ्जून तथ्यक ছেদন করিয়া তাঁহার দৃষ্টি-গোচরেই উচ্চৈঃস্বরে নিনাদ করিতে লাগিলেন। বে প্রকার মেঘ হইতে বিছ্যাৎ নিপতিত হয়, তক্রপ তাঁহার রথ হইতে নানা রত্ন বিভূবিত জীসম্পদ্ন ্ধজছিল হইয়া পড়িল। সমস্ত পার্থিবেরা কুরুরাজের

স্থাসলিভ মণিময় শোভমানউজ্জ্ব সেই ছিলু নাগধ্ত অবলোকন করিতে লাগিলেন। অনন্তর মহারথ ভীম সেন যেন হাসিতে হাসিতে, ভোত্রছারা মহাগজ হন-নের নাায়, দশ বাণে কুরুরাজকে আছত করিলেন। পরে রথি-প্রধান মহাবল সিন্ধুদেশাধিপতি প্রধান বীরগণের সহিত, ছুর্যোধনের পার্ফি রক্ষা করিতে প্রায়ন্ত হইলেন। মহারথ ক্লপাচার্যা অমিত তেজ। অমর্বণ কুরুরাজ ছুর্যোধনকেরথে আরোপিত করি-লেন। তথনরাজা ছুর্য্যোধন সংগ্রামে ভীমের শরে গাঢ় বিদ্ধ ও ব্যথিত হইয়া রুখোপক্তে নিষ্ণ্ণ হুইলেন সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ ভীমের বিনাশ মানসে সহস্র সহস্র রথী যোদ্ধা দারা তাঁহার চতুর্দ্দিক্ পরিবেইটন পূর্বক তাঁহাকে সমার্ত করিলেন। তৎপরে ধৃষ্টকেতু, বীর্যাবান্ অভিমন্ত্রা, কৈকেয় রাজেরা, এবং দ্রৌপদীর পঞ্চ পুত্র আপনকার পুত্রদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। চিত্রসেন, স্কৃচিত্র, চিত্রাঙ্গ, চিত্র-पर्भन, ऋठाङ्ग, ठाङ्गठिक, नक्त ७ छेशनक्त, এই आहे कर्न यमत्री स्रक्रमात जाशनकात शूख, मश्यस्क्रत অভিমন্ত্রাকে চতুর্দ্দিকে পরিবেফীন করিলেন। অনস্তর মহামনা অভিমন্থ্য বিচিত্র-কার্যুক্ বিনিমুক্ত, বজ্ঞ ও মৃত্যু সঙ্কাশ সন্নত-পৰ্বে স্থশানিত পাঁচ পাঁচ বাণে তাঁহাদিগের প্রত্যেককে বিদ্ধ করিলেন। তাঁ-হারা সকলে অসহিষ্ণু হইরা, মেঘের পর্বতোপরি বারি বর্ষণের ন্যায়, রধি সন্তম অভিমন্ত্রার উপর তীক্ষ বাণ বর্ষণ করিতে লাগিলেন। অন্ত্র কুশল যুদ্ধ-ছুর্ম্মদ অভিমন্ত্য তাঁহাদিগের শরবর্ষণে পীভ্যমান হইয়া, যে প্রকার দেবীস্থর যুদ্ধে দেবরাজ মহা অস্তর গণকে কম্পিত করিরাছিলেন, তদ্রপ তাঁহাদিগকে কম্পিত করিতে লাগিগেন। রখি প্রধান বীর্যাবান্ অভিস্কুর ষেন নৃত্য করিতে করিতে বিকর্ণের প্রতি আশীবিষ-তুল্য ভয়ানক চতুর্দশ ভল্ল নিক্ষেপ করিয়া তাঁহার র্থ-যজ, সার্থি ও অশ্বদিগকে নিপাতিত করিলেন। তৎপরেই শুনর্বার অকুঠিতাগ্র পীত সরল বাণ সকল ভাঁহার প্রতি মোচন করিলেন। সেই সকল কল্প ও

मबूद भक्त मध्युक वान विकर्तद सर एक कतिया थमील गर्गंत नात्र जूमिएड थविक रहेत। ७९-কালে হেম পুৰাতা নেই সকল বাণ বিকর্ণের রুধিরে লিপ্ত হইর। মহীতলে রুধির বমন করিতে লাগিল। বিকর্ণের সহোদরগণ তাঁহাকে শত্র-ক্ষত দেখিয়া **শতিমন্ত্রাপ্রমুখ রখী দিগের, প্রতি অভিক্রত হই-**লেন। তাঁহারা ত্রা সহকারে হুর্যাসম তেজন্বী অভিময়্য প্রভৃতির সমীপন্থ হইলে যুদ্ধ-ছুর্মান উভয় পক্ষই সংরক্ত হইয়া পরস্পরকে হনন করিতে লাগি-লেন। ছুমুখ সপ্ত শরে শ্রুতকর্মাকে বিদ্ধ করিয়া এক শরে তাঁহার রথধজ ছেদন করিলেন, এবং তাঁহার স্বৰ্ণজাল-প্ৰচ্ছন্ন বায়ু-বেগগামী অশ্ব সকল ছয় বাণে নিহত করিয়া সপ্ত শরে তাঁহার সার্থিকে নিপাতিত করিলেন। মহাবল গ্রুভকর্মা সংকুদ্ধ হইয়া হতাশ্ব রধ হইতেই প্রজ্জুলিত মহোক্ষাতুল্য এক শক্তি ছুর্মুখের উপর নিক্ষেপ করিলেন। সেই তেজঃ-প্রদীপ্ত শক্তি যশস্বী ছুর্মুখের বিপুল বর্ম ভেদ করিয়া ভূমি বিদারণ-পূর্বক প্রবিফ হইল। শ্রুত-কর্মাকে বিরথ দেখিয়া মহাবল স্থৃতসোম সকল সোনোর সাক্ষাতেই তাঁহাকে স্বকীয় রথে আরো-পিত করিলেন। বীর প্রত্তকীর্ত্তি আপনকার পুত্র यमची क्यार्टमनटक विनाम कविवाद मानटम छाहात উপর স্থাপতিত হইলেন। হে ভারত। জয়ৎসেন মহাত্মা প্রতকীর্ত্তিকে ধমুর্বিক্ষেপ করিতে দেখিয়া বেন হানিতে হানিতে স্থতীক্ষু কুরপ্র ছারা তাঁহার ধয়ুক ছেদন করিয়া কেলিলেন। তেজন্বী শতানীক স্বীর সহোদর প্রাতকীর্ত্তির ধনুক্ ছিল দেখিয়া মুছ-ৰুছ নিংহের ন্যায় গর্জন করিতে করিতে জয়ং-সেনের প্রতি অভিক্রত হইলেন, এবং অতি শীঘ্র দৃদ কাৰ্মুক বিক্ষারণ করিয়া দশ বাণে তাঁহাকে विक क्तित्वन; उ९भरत्रहे गर्स्वावत्रग एक्सी अन्। এक ক্ত্রীকু বাথ তাঁহার হৃদরে গাঢ় বিক্ত করিলেন। তথাবিধ সংগ্রামে ছুত্র্ণ ক্রোধ-সুচ্ছিত হইরা ভ্রাতা জয়ৎসেনের সমীপেই নকুল-পুত্র শতানীকের শরের

সহিত ধয়ুক ছেদন করিয়া কেলিলের । মহাবল
শতানীক অন্য এক ভারসাধন কার্যুক গ্রহণ করিয়া
বহুল ভীষণ শর সন্ধান করিলেন, এবং ছুছ্ণকে
ভাহার আতার অথ্যে থাকু থাকু বলিয়া আমন্ত্রণ
পূর্বক পম্বা সম প্রক্ষালিত সেই সকল বাণ তাঁহার
উপর নিক্ষেপ করিলেন। তৎপরে এক শরে তাঁহার
ধয়ুক ও ছুই শরে তাঁহার সার্থিকে ছেদন করিয়া
তাঁহাকে সপ্ত শরে বিদ্ধ করিলেন, এবং তাঁহার
মনোবেগগামী চিত্রবর্ণ পরিছ্ত অশ্ব সকল স্থশাণিত
ছাদশ শরে নিহত করিলেন; তদনস্তর ক্রোধাবিইচিত্তে অপর এক নর্যাতী পত্র-সংযুক্ত ভল
ছারা তাঁহাকে বিদ্ধ করিলেন। তাহাতেই তিনি
বজ্ঞভগ্র রক্ষের ন্যায় নিহত হইয়া ভূতলে নিপ্তিত
ছইলেন।

ং মহারাজ! ছন্ধর্ণকে নিহত দেখিয়া ছুর্নুখ, ष्ट्रज्ञ त, क्रुर्यर्थन, गळक्षत्र ७ गळगर, जाननकात्र गरा-রথ এই পঞ্চ পুত্র শতানীকের বিনাশ মানসে ভাঁহার চতুর্দ্দিক্ পরিবেইটন করিয়া তাঁহাকে শরসমূহে সমা-ष्ट्रम क्रिट्ड लाशिटलन। रेक्ट्क्यूब्राख शक्ष मरहाम्ब যশসী শতানীককে শরনিকরে আচ্ছাদ্যমান দেখিয়া ক্রোধাবিফ চিত্তে তাঁহাদিগের প্রতি ধাবমান হই-লেন। মহারাজ! আপনকার মহারথ পুজেরা তাঁহা দিগকে আপতিত হইতে অবলোকন করিয়া, বে প্রকার গজ সকল মহাগলগণের উপর ধাবমান হর, তজ্ঞপ তাঁহাদিপের সম্মুখে গমন করিলেন। প্রবল ध्यूकांती विठित कवठ ७ शक विभिष्ठ मरे पूर्यूष প্ৰভৃতি যশস্বী পঞ্চ ভ্ৰাতা নানাৰণ বিচিত্ৰিত পতা-কায় অলম্ভুত ও মনোবেগগামী হয়গণ যোজিত নগ্র সদৃশ রথ দারা কৈকেয়রাজ পঞ্চ ভাতার অভি-मूर्य भमनार्थ, त्य ध्यकात निःर एल वन रहेरछ दमाखन गमन करन, ठक्कण विशक रेमना मर्द्या व्यद्भन क्रिलन। उथन डाइफिरगत वसताहै वर्कन महाज्यानक चांक जूमूल युक्त चात्रक रहेता। द्वी अ গজারোহীগণ পরস্পর ক্তাপরাধ হইয়া পরস্পর্ক

সাবাত করিতে লাগিল। স্থাতি সমরে সুহর্ত মাত্র সহস্র রখী ও সাদীপণ অতি ভীবণ যুক্ত করিয়া রণস্থলে বিকীর্ণ হইল। তদনন্তর শান্তস্থ-পুত্র ভীম কুক্ত হইয়া সমতপর্ক শর সমূহ দারা মহাল্লা পাঞ্চালদিপের সেনা বিনাশ করিতে লাগি-লেন। মহাধমুর্ক্তর ভীয়, এইকপে পাণ্ডব সৈন্য ছিল্ল ভিল্ল করিয়া সৈন্য দিগের অবহার করণে আ-দেশ পূর্বাক স্থ শিবিরে গমন করিলেন। ধর্ম্মরাজ যুখিন্তিরও ধৃউত্বাস ও র্কোদরকে দেখিয়া তাঁহা-দিগের মন্তকান্ত্রাণ পূর্বাক ক্ষতিত্তে শিবিরে প্রস্থান করিলেন।

সঞ্জর কহিলেন, হে ভূপাল! রক্তসিক্ত-কলেবর পরস্পর পরস্পরের প্রতি কৃতাপকার উভয় পক্ষ শ্র গণ স্ব স্থানিবিরে প্রবেশ করিলেন। তাঁহারা শিবিরে বিজ্ঞাম করিয়া যথান্যায়ে পরস্পার পরস্পা-त्रक् नश्कात भूर्यक भूनस्तात यूकाण्डिनात वक्र कवर হইরা দৃষ্ট হইলেন। তৎপরে ক্ষরিত-ক্লধিরাক্ত-কলেবর আপনকার পুত্র ছুর্যোধন চিন্তাকুল হইরা পিতামহকে জিজাসা করিলেন, হে সতাসন্ধ পিতা-মহ! পাওবপক মহারথ শ্রগণ বেগ পূর্বক সকলকে বিমোহিত করিরা আমাদিগের বহুলয়ক বিশিষ্ট সমাক্ বাৃহিত ঘােরতর ভরানক সৈন্য বিদীর্ণ, নিহত ও নিপীড়িত করিরা কীর্তিলাভ করিরাছে। ভীমসেন **जामृग वक्षकण्य मकत्र वृद्ध अविके हरे**त्रा वमम्ख সদৃশ ভরানক শর সমূহ দারা আমাকে নিগৃহীত করিরাছে। ভাহাকে কুছ দেখিরা আমি ভর মৃচ্ছিত হইরাছি, জন্যাপি শান্তি লাভ করিতে পারিতেছি ন। সে বাহা হউক, একণে আমি আপনকার প্রসাদে পাওবদিগকে বিনাশ করিরা অক্সতাত করিতে বানস করিতেছি। শত্রধারি-বরিষ্ঠ মনস্বী মহাস্থা গঙ্গাপুত্র ছুৰ্ব্যোধনের ঐ কথা শুনিয়া ভাঁহাকে ছুংখিত বােধ क्रिज़। अविविधि विश्व शाना शूर्वक करिस्तन, रह

রাজপুত্র! আমি পরম বত্ন সহকারে সর্বতোভাবে পাওব্দিগের সেনা আলোড়ন করিয়া ভোমারে বিজয় ও সুধ প্রদান করিতে ইচ্ছা করি, ভোমার নিমিত্তে আমি আপনার ক্ষমতা অপ্রকাশিত রাখি না। কিন্তু যাহারা পাওবদিগের সহায় হইয়াছে, তাহারাও বছসংখ্য, মুহারথ, ভরানক বোদ্ধা, যশস্বী, অত্রকুশলও শ্রতম; তাহারা বেন সমরে ক্রোধ বিষ বমন করিতে থাকে এবং সমরে প্রান্ত হয় না। বিশেষত তাহারা ৰল বীর্য্যে উন্নত এবং তুমি তাহা-দিপের প্রতি শক্রতাচরণও করিয়াছ, স্থতরাং তা-হারা সহসা পরাজিত হইবার নহে। সে যাহা হউক, আমি জীবিত নিরপেক হইয়া সর্ব্ব প্রয়াত্ত্ব তাহা-দিগের সহিত যুদ্ধ করিব। হে মহামূভাব! আজি আমি তোমার নিমিত্তে যুদ্ধ করিয়া জীবন পরি-ত্যাগ করিতেও উৎসাহ করিতেছি। আমি তোমার নিমিন্ত, তোমার শত্রুগণের কথা কি, দেব ও দানৰ গণের সহিত সমুদার লোকও দগ্ধ করিতে পারি। আজি আমি পাণ্ডবদিপের সহিত যুদ্ধ করিয়া তো-মার প্রিরাচরণ করিব। ছুর্য্যোধন পিতামহের এই কথা শুনিরা শান্তচিত্ত ও পরম প্রীত হইলেন। তদ-नखत रूके विद्र नमूनाच राना ७ ताकानिशहक কহিলেন, তোৰরা যুদ্ধে পমন কর। সৈন্যগণ ভাঁহার আজা প্রাপ্ত ও বরাবান হইয়া যুদার্থ নির্মত হইল। त्रवं, भन, जम ७ भगिष्ठि मश्यूङ, नानाविधं भञ्जवस्र, महर रिमा पन हर्वयुक । ममत कृमिए व्यवन्छ হইরা বিরাভ্যান হইল। ভাহাদিগের সৈন্য মধ্যে সমূহ সমূহ যোধগণ কর্তৃক নিয়মিত দন্তীগণ অব-चिछ रहेन्ना धाकान भारेरछ नाभिन धरः युक् বিশারদ অন্ত শত্রক রাজগণ সৈন্য মধ্যে অধিষ্ঠান করিতে লাগিলেন। বিধিবং ব্যবন্থিত রখ পদাতি शक राजित्र शमान छत्रन स्वादर्ग त्राकातानि ममू-ছত হইরা হর্মা রশিল্প আচ্ছাদিত করিয়া প্রতি-ভাত হইল। বে প্রকার আকালে দেবমধ্যে বিস্থাৎ শোভদান হর, তজাপ রখ ও হতীতে অবস্থিত

নানাবর্ণ পতাকা সকল প্রনেরিত ও চতুর্দিকে আমামাণ হইরা প্রতিভা বিশিক হইল। বেপ্রকার সত্যযুগে দেবাস্থর কর্তৃক মধ্যমান সমুদ্রের শব্দ হইরাছিল, সেই প্রকার রাজগণের ধ্যুর্কিকারণের অতি ঘোরতর শব্দ হইতে লাগিল। আপনকার আম্বাদ্রগের রিপু-সৈন্য-বিরাশক সমৃদীর্ণ-বর্ণ উগ্র-নাদ বিশিক বছ-বর্ণকপ-সমন্বিত সৈন্য সকল তথন যুগান্ত কালীন মেঘ সমুহের তুলা হইল।

🦥 সপ্ত সপ্ততিভয়, অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৭৭ ॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারতপ্রবর! গঙ্গাপুত্র আপন-কার আত্মজকে চিদ্তাপরায়ণ দেখিয়া পুনর্ব্বার ভাঁহার े र्घकनक धर्रे वाका कश्लिन, त्यान, नवा, माजुङ ক্তবৰ্মা, অশ্বশ্বামা, বিকৰ্ণ, ভগদত্ত, সৌবল, অবস্থি-দেশীয় বিন্দ ও অমুবিন্দ, সমস্ত বাহ্নীকর্মনের সহিত বাহ্নীকরাজ, বলী ত্রিগর্ভরাজ, স্বত্নুক্তর মগধরাজ, কোশলাধিপতি বৃহদ্ৰল, চিত্ৰসেন, বিবিংশতি, শো-ज्यान वह गर्ख महायक तथी, रामक हत्राद्वाही, প্রভিন্ন করটামুধ মদোক্ষত গজেন্দ্র-যোক্ষা সকল, নানাদেশীয় নানা শস্ত্র বিশারদ খুর পদাতিগণ এবং আমি, আমরা সকলে তোমার নিমিতে বুদ্ধার্থ সমু-দাত হইল্লাছি, এবং জন্যান্য অনেকে তোমার নিমিত্তে জীবিত নির্পৈক হইরাছে, আমার মতে रेराता तर्ग (एराभारक अन्न कतिएक ममर्थ। किंद् তোঁমাকে নিতান্ত হিতকর এই কথা আমার বক্তব্য বে সহেন্দ্ৰ ভুলা বিক্ৰমশীল ক্লম্প-সহাত্ৰ পাণ্ডবদিগকে (प्रविश्वात मुश्कि हेन्स् अ अब क्रिक्टि मुमर्थ नरहन । ্রে বাহা হউক, আমি দর্ম প্রকারে তোমার বাক্য প্রতিপালন করিব; হর আমি পাওবদিগতে কর করিব, বা হয় পাঞ্চেরের। আয়াকে জর করিবে। াত্র পুত্র আপনকার পুত্রকে এই কথা বলিরা बीर्वा सन्त्रम छेख्य विश्वनाकृत्रकी छेवय छै।शादक क्षान कविद्रम, किनि तारे केन्य तारान कनिया छ९-্ৰুণাৎ প্ৰাকৃত কৰা ৰাখা হইতে বিমুক্ত হইলেন।

হে ভারত অধান! অভাতে ব্যুহবিশারদ বীর্ঘা-वान् वीत्र जीव चत्रः ध्यमान ध्यमान त्यापनारः পরি-পূর্ণ, নানা শস্ত্র সমাকুল, প্রান ও তোমরধারী বৃহৎ इहर नानी, मसी, भनाजि ७ महत्व महत्व द्रशी गरन **ठजूर्किएक शेत्रियांत्रिक चकीत्र रेगना बाता मधन** वृाक् সক্ষিত করিলেন। প্রতি নাগের নিকট সাত সাত রধী, প্রত্যেক রধীর নিরুট সাত সাত সাদী, প্রত্যেক দাদীর নিকট মাত সাত চন্দী এবং প্রত্যেক চন্দীর নিকট সাত সাত ধামুক অবস্থিত হইল। মহারাজ! এই ৰূপে মহারথ গণের সহিত ভীন্ন, মহৎ যুদ্ধার্থ আপনকার সৈন্য বৃাহ্ ব্লকা করিতে লাগিলেন। দশ मह्य मानी, मम मह्य भनादाही, मम महँय द्रवी এবং আপনকার চিত্রসেনাদি খুর পুত্র গণ বর্মিত হইরা পিতামহকে রক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। সেই বীরগণ ভীমকে রক্ষা করিতে লাগিলেন এবং সেই সকল মহাবল বন্ধ-সন্নাহ বীর রাজগণও ভীন্ন क्कृंक द्रक्षिত मृखे श्रेट्ड मानित्मन । 🕮 वृद्धे द्राका ছুৰ্যোধন যুদ্ধাৰ্থ বৰ্ষিত ও রুণস্থ হইয়া স্থৰ্গন্থ দেব-রাব্দের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন। তদনন্তর विश्वन तथ निर्धाय, वारिजशनि ও जाशनकात शूक-দিগের সিংহনাদ শ্রুত হইতে লাগিল। শত্রহাতী-দিগের মুর্ভেদ্য ভীন্ন-রচিত অভি মহান সেই মণ্ডল ৰুাহ্ পশ্চিমাভিমুৰে গমন করিতে লাগিল। হে ब्रोकन्! भक-छूदानम स्नर्टे यथन वृष्ट गयन काल সর্বভোভাবে শেভি। বিস্তার করিল।

শব্দ রাজা মুখিজির বিপক্ষদিগের পরম নিদারণ মণ্ডল বৃহ দেখিয়া বক্স বৃহত্ত নির্মাণ করিলেন। ভাহাতে রথীও সাদীগণ নেই বজ্ঞানীকের বথাতানে আবৃত্তিত হইরা সিংহ্নাদ পরিত্যাগ করিতে লা-লিল। সেনা-সমরেত প্রহার-পাই উভর পক্ষ পূরণণ প্রেরপার বৃহীকালনী ইইরা পরস্থারের বৃহতেদ করি-বার মান্তে গমন করিতে লাগিল। জ্ঞানাল্যনা লোগ বিরাটের প্রতি, সম্বামা শিখ্যীর প্রতি, ক্রিং রাজা ভূর্মোধন ধ্কীছাবের প্রতি, নকুল ও সহদেব মজরাজের প্রতি, অবন্ধিদেশীয় রাজা বিদ্দ ও অমুবিদ্দ যুধাময়ার প্রতি, অন্যান্য রাজা ধনঞ্জয়ের
প্রতি, ভীমনেন সংঘত হইয়া ক্রতবর্মার প্রতি এবং
অভিমন্ত্রা চিত্রসেন, বিকর্ণ ও ছুর্মার্বণ আপনকার
এই তিন পুজের প্রতি যুদ্ধার্ব অভিক্রত হইলেন।
হিড়িয়ানন্দন রাক্ষসপ্রবের ঘটোৎকচ, যে প্রকার এক
মত্ত হুটী অন্য মত্ত হুতীর প্রতি অভিক্রত হয়, তক্রপ
প্রাণ্ডেলাভিষপতি ভগদত্তের প্রতি বেগে ধাবমান
হইল। রাক্ষস অলম্ব কুক্ হইয়া যুদ্ধ-ছুর্মাদ সমৈন্য
সাত্যকির অভিমুখে ধাবিত হইল। ভূরিপ্রবা সমত্র
হইয়া য়্উকেতুর সমীপে, ধর্মপুক্র যুধিন্তির প্রভারার
সমীপে এবং চেকিভান ক্রপাচার্যের সম্মুখে যুদ্ধার্থ
ধাবন করিলেন। অবশিষ্ট যোধগণ মহারথ ভীয়কে
আক্রমণ করিলেন।

তদনন্তর সহস্র সহস্র রাজা শক্তি, তোমর, নারাচ

ও গদা इट्ड लहेग्रा धनक्षत्रदक পরিবেঊन করিলে, তিনি অতি কুল্ক হইয়া কৃষ্ণকে কহিলেন, হে মাধব! ঐ দেখ, বৃহে রচনাভিজ্ঞ মহাদ্মা গাঙ্গের ধৃতরাষ্ট্রীর সৈন্তের বৃহে প্রস্তুত করিয়াছেন। শৌর্যা সম্পন্ন রাজ-গণ বৰ্ষিত হইয়া আমার সহিত যুজাৰী হইয়াছেন; ত্রিগর্ভাধিপতি ভাতাদিগের সহিত সমবেত হইয়া আমার সহিত সংগ্রামাভিলাবে অবস্থিত হইয়াছেন। হে জনার্দ্ধন ! এই রণভূমিতে আমার সহিত যুক্কাম হ্ইরা যাঁহারা আগমন করিয়াছেন, আজি তোমার সংক্রাতে আমি তাঁহাদিগকে সংহার করিব नक्तन এই कथा दिनशा ध्यूटकत का अवगोर्कन পূর্বক সেই সকল রাজাদিগের উপর শরবর্ষণ করিতে नाशिरनन। य अकात वर्षाकारन याच मकन वाति ধারা ছারা জড়াগ পরিপূর্ণ করে, তাহার ন্যায় সেই সকল মহাধুর্জর রাজগণও তাঁহাকে শর বর্ষণে পরি-পূৰ্ণ কৰিলেন। হে মহাবাল! ক্লশৰ্জ্নকে শরাছা-मिछ क्या भागनकात देवना मध्या महान हाहा-क्र भक्त ममुखिछ इहेन। त्यन, त्यन्यि, शक्तर्य छ মহে।রগ গণ কৃষণার্জুনকে তথাবিধ শরাচ্ছন দেখিয়া

পরম বিশ্বরাপর হইলেন। তৎপরে শর্মুন কুর্
হইয়া এন্দ্র শর্মের শাবির্ভাব করিলেন। এ নমর
শর্ম্ম্বরের এই পদুত পরাক্রম দেখিলাম বে তিনি
শক্র নিক্ষিপ্ত ফাদৃশ শর বর্ষণও শর সমূহ দারা
নিবারণ করিলেন এবং শব্দ, হতী, সহস্র সহস্র
রাজা এবং অনান্য ঘোলা দিগের প্রত্যেককে ছুই
তিন শরে বিদ্ধ করিলেন। তাঁহারা ধনঞ্জর শরে
আহত হইয়া শান্তমুনন্দন তীয়ের সকাশে গমন
করিলেন। তথন অগাধ জল-নিম্ম্ম মন্ত্র্যাপণের
পরিত্রাণ কর্তার নাায় তীয়ই তাঁহাদিগের পরিত্রাতা
হইলেন। মহারাজ। যে প্রকার প্রবল প্রনপ্রতিতে
মহাসাগর কুল্ব হয়, তক্রেপ আপনকার পক্ষ সেই সকল
সৈন্য ভয় হইয়া ভবংপক্ষ তীয়্ব সৈন্য মধ্যে আপতিত
হওয়াতে তাহারা কুল্ক হইয়া পড়িল।

অফ সপ্ততি অধ্যায় সমাপ্ত। ৭৮।

-

সঞ্জর কহিলেন, হেরাজেন্দ্র: তাদৃশ সংগ্রাম ममत्त्र स्मान्त्रा यूट्स निवृत्त, वीत्रशंग महाचा व्यर्क्त्न কর্তৃক প্রভয়, আপনকার সাগর প্রতিম বল কুরু এবং ভীয় অর্জুনের অভিমুখে প্রভাূদাত হইলে, রাজা ছুর্যোধন পার্থের বিক্রম দেখিয়া ত্বরা সহকারে দেই রাজগণের সকাশে আগমন পূর্বক তাঁহাদিগের সম্মুখে সমুদার সৈন্য মধ্যে সকলকে হর্ষিত করত মহাৰল স্বশ্মতে কহিলেন, এই কুক্ল প্ৰধান শান্ত-মুপুত্র ভীয় আপনার জীবন-নিরপেক্ষ হইরা সঁক্ প্রযন্তে ধনপ্রমের সহিত যুক্ষাভিলামী হইয়াছেন। ভোমরা সকলে সর্ব্ব সৈন্য সমভিব্যাহারে বিপক্ষ বীর গণের সহিত যুদার্থ গমনকারী পিতামহকে সমাক্ প্রকারে বদ্ধ পূর্বক রক্ষা কর। নরেন্দ্র গণের নৈন্য সকল বে আজ্ঞা বলিয়া ভীনের অনুগামী হইল। যুদ্ধে প্রয়াত শান্তনৰ ভীন্ন, সহয়া অবর্ত্নকে মহামেতাশযুক্ত ভীষণ বানর্থক শোভিত মহা মেছ গন্তীর সূদৃশ শব্দায়মান প্রদীপ্ত রংগ আসিতে দেখিছা ठाँरात मगीभन् रहेलन। किन्नीविधानी व्यक्तिक

ভাষ্ণ ভাবে সমাগত দেখিয়া সমুদ্বার সৈন্য, ভারে
ভূমুল শব্দ করিতে লাগিল, মধ্যার কালের দিভীর
ভূমা ভূলা আন রশ্মিধারী রুক্ষকে নিরীক্ষণ করিতে
সমর্ব হইল না। এবং পাণ্ডব পক্ষীয়েরাও খেত
কার্দ্মকধারী শেতাশ যুক্ত রধারোহী ভীমকে উচ্ছিত
শ্বেত গ্রহের নাার অবলোকন করিতে পারিল না।
ভিনি সমন্ত ত্রিগর্ভ দেশীর মহাসত্ত্বোদ্ধা, আপনকার
পুত্রগণ ও অন্যান্য মহারথগণে পরিবৃত ছিলেন।

এ দিকে ভরত্বাজ-নন্দন দ্রোণ শর তারা মৎস্যরাজ বিরাটকে বিদ্ধা করিলেন, এবং এক এক শরে তাঁহার শরাসন ও রথ ধজ ছেদন করিয়া কেলিলেন। বাহিনী-পতি বিরাট ছিম্ন ধন্তুক পরিত্যাগ করিয়া বেগ-পূর্বক অন্য এক দৃঢ় ভারসহ ধমুক ও পন্নগ সদৃশ প্রেজ্ব-লিত আশীবিষাকার কতক গুলি শর গ্রহণ পুর্বাক তিন শরে জোণকে, চারি শরে তাঁহার ৽চারি অখ্, এক শরে তাঁহার রথ ধজ, পঞ্চ শরে তাঁহার সার্থি ও এক শরে তাঁহার শরাসন বিদ্ধ করিলেন। তাহাতে দ্বিজ্বর জোণ ক্রুদ্ধ হইয়া সন্নতপর্ব্ব অফ শরে বিরা-টের অশ্ব সকল ও এক শরে তাঁহার সারখিকে সংহার করিলেন। রখিপ্রধান বিরাটের সার্থি হত হইলে তিনি সত্ত্র হইয়া হতাখ রথ হইতে লক্ষ প্রদান পূর্বক পুজের রথে আরোহণ করিলেন। তদনন্তর তাঁহারা পিতা পুত্রে এক রথস্থ ইয়া বল পুর্বক প্রচুর শর বর্ষণে ভারদাক্তকে নিবারিত করিতে লাগিলেন। তৎ পরে দ্রোণাচার্য্য কুন্ধ হইয়া আশীবিবোপন এক শর বিরাট-পুক্র শব্ধের প্রতি শীঘ্র নিক্ষেপ করিলেন। সেই বাণ শক্ষের হৃদর ভেদ করিয়া শোণিত পান পূৰ্বক লোহিতাত হইয়া ধরণীগত হইল। শব্দ, পিতার নিকটেই ভারদাকের শরে নিহত হইয়া আশু ধমুর্বাণ পরিত্যাগ পূর্বক রথ হইতে নিপতিত হইলেন। বিরাট নৃপতি স্থ পুত্র भेषारक निरुष्ठ मिर्विता छत्रथायुक्त वामिष्ठ-यूथ वम ভুলা ছোণ্ডক পরিত্যাগ পুর্বক প্রায়ন করি-ब्रिन। তদৰভার ক্রোণাচার্য্য সত্তর হইরা পাণ্ডৰ পক

শত শত সহজ্ঞ মহজ্ঞ সৈন্য নিবারণ ক্রীয়কে লাগি-লেন।

गरात्राच ! निर्वाली तरन ज्यायां मात्र मुमीरण शमन পূর্বক আশুগ তিন নারতে তাঁহার ভু ছয়ের মধ্য एन विक कतिराम । नत्रभाष्ट्रम प्राथमा नना छ-বিদ্ধ সেই তিন নারাচ দারা কাঞ্চনময় উদ্ভিত শিখর তার বিশিষ্ট মেরু গিরির ন্যায় শোভা প্রাপ্ত হই-লেন। তৎ পরে তিনি কুক হইরা নিমেবার্ক মধ্যে শিখণ্ডীর সার্থি, ধজ, জার চতুইন ও শ্রাসন ছেদন করিয়া কেলিলেন। শত্রুতাপন রধি প্রবর শিখণ্ডী, কুৰ হইরা স্থাণিত বিমল খড়্গ ও চর্ম গ্রহণ পূৰ্বক হতাখ রথ হইতে লক্ষ প্রদান করিয়া শ্যেন পক্ষীর ন্যায় বিচরণ করিতে লাগিলেন। হে মহা-রাজ! খড়গধারী শিখণ্ডীর রণ স্বলে বিচরণ সময়ে কেহ তাঁহার রক্ত্র নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ হইল না, তাহা অদ্ভুতের ন্যায় হইল। দ্রোণ-পুত্র অতি ক্রো-ধাবিষ্ট চিত্তে তাঁহার উপর সহ<u>স্র সুহ</u>ক্স শর ক্ষেপ-করিতে লাগিলেন। বলিপ্রধান শিধ্ঞীও সেই স্থদা-রুণ শর বর্ষণ তীক্ষ্ম খড়্গধারে ছেদন করিতে লাগি-লেন। তৎ পরে জোণ-পুত্র বছ বাণে ভাঁহার অতি নির্মান মনোরম শত চক্র শোভিত চর্মাও অসি ছেদন করিয়া তাঁহাকে বিদ্ধ করিলেন। শিথতী, অবশামার শারক সমূহে থণ্ডিত সেই অসির বেভাগ তাঁহার হন্ত-ধৃত ছিল, তাহা ধুর্ণায়মান করিয়া অশ্ব-খামার প্রতি ত্বলম্ভ দর্প নিক্ষেপের ন্যায় আশু নিক্ষেপ করিলেন। অশ্বথামা বজ্ঞ সদৃশ প্রভা যুক্ত দেই খণ্ডিত অসি সহসা আপতিত হইতেছে দেখিয়া হস্ত-লাঘৰ প্রদর্শন করত তাহা ছেদন করিয়া কেলিলেন এবং শিখণ্ডীকেও লৌহময় বছ শরে বিদ্ধ করিলেন। তথন শিখণ্ডী শাণিত শরে তাডামান হইরা মধু-বংশ-বর্জন মহান্মা সাজ্যকির রথে সত্তর चारत्रार्ग कत्रिरणन।

হে ভারত। বলশীলাগ্রহণা সাত্যকি সংকৃত্য হইয়া কুর রাজস অলম্বকে লর সমূহে বিদ্যাকরিলেন।

त्रकाता चनत्र पर्यक्त वात् धारांत समूक ८६-पन कतिया बाध नयुर् बाता छाराक विक कतिन, পরে রাক্ষী শারা হাট করিয়া শর বর্ষণ পূর্বাক তাঁহাত্তক আছম করিল। সেই যুদ্ধে শিনি-পৌত্তের এই অদ্ভুত পরাক্রম দেখিলাম বে তিনি শাণিত বছ শরে সমাহত হুইরাও অভিনু হুইলেন না, প্রত্যুত অর্কুনের নিক্ট হইতে যে এক্ত অন্ত লাভ করিয়া-ছिলেন, তাহা শরাসনে যোজনা করিলেন। এ अक्टांज द्राक्नी मात्रादक खन्मगार कतिया, वर्षा-কালীন মেঘ যেমন বারিধারা ছারা ধরাধর সমা-কীৰ্ণ করে, ভাহার ন্যায় শব্র বর্ষণে অলম্বকে সর্বা প্রকারে সমাকীর্ণ করিলেন। সেই রাক্ষস যশস্বী মাধৰ কৰ্তৃক এই ৰূপে পীড়িত হইয়া ভয় প্ৰযুক্ত রণে তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করিল। সভাৰিক্ৰম সাভাকি সংগ্ৰামে ইন্দ্ৰেরও অভেয় নেই রাক্ষ্য প্রধানকে আপনকার পক্ষ যোধগণের -সাক্ষাতে পরাজিত করিয়া সিংহনাদ করিয়া উঠি-लन, ७दः जाननकात नक खायगनक स्नाविड বছ বাণে নিহত করিতে লাগিলেন; তাহারা ভয়া-র্দ্ধিত হইয়া পলারন করিতে লাগিল।

ঐ সময়ে ক্রপদ-পুত্র বলবান্ ধৃউত্থান্ন আপনকার
পুত্র জনাধিপতি তুর্যোধনকে নতপর্ব বাণ সমূহ
দারা সমাক্ষাদিত করিলেন। হে রাজেন্দ্র আপনকার পুত্র রাজা তুর্যোধন ধৃউত্যুদ্ধের বাণ সমূহে
আক্ষাদামান হইয়াও বাধিত না হইয়া নবতি সংখ্য
শরে ধৃউত্যুদ্ধকে সত্তর বিদ্ধ করিলেন, তাহা অদুতের ন্যায় হইল। সেনাপতি মহাবল ধৃউত্যুম কুদ্ধ
হইয়া তাঁহার ধমুক ছেদন পুর্বাক অতি শীঘ্র চারি
অশ্ব নিহত করিয়া ক্রিপ্রহন্তে তাঁহাকে ফুশাণিত
সপ্ত শরে বিদ্ধা করিলেন। তথান মহাবাহ্য বলবান্
রাজা তুর্যোধন রথ হইতে লক্ষ্ণ প্রদান পূর্বাক
থড়াও উদ্যাত করিয়া পদত্রক্রে ধৃউত্যুদ্ধের নিকট
ধারমান হইলে, রাজহিতৈকী মহাবল শকুনি মর্ম্ব
লোকের সাক্ষাতে তাঁহাকে অন্তর্কে ধৃত্যুদ্ধিত করি-

लिन। दीव-भक्तरका श्रेयठ-सम्बन श्रुकेशक वाकारक धरे वार्थ भवाक्य कतिया, वक्षशांवि वेटा कर्वक भव्यत रनानत गांव, भागनकात रेत्रव स्वयन श्रेयक ररेरान।

্কতবৰ্মা মহারথ ভীমনেনকে মহামেলাকাদিত স্থার নাম শরাছাদিত করিলেন। শত্রভাপন ভীমদেন সংকুদ্ধ হইয়া হাস্য পুর্বাক ক্লভবর্মার উপর বাণ সকল নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। শত্র-কোবিদ অভিরধ ক্তবর্ম। ভীমের শর সমূহে হন্য-মান হইরাও কম্পিড না হুইয়া ভীমের উপর শাণিত मंत्र मकल निष्क्रभ कत्निएछ लाभिएलन। महावल ভীমসেন তাঁহার চারি অশ্ব সংহার করিয়া সার্থিকে বিনাশ পূর্বাক স্থপবিষ্কৃত রথ ধন্ধ নিপাতিত করি-লেন, এবং তাঁহাকে বছবিধ বাণে বিশ্ব করিলেন তিনি শর বেধে ক্ষত বিক্ষতাঙ্গ হইয়া শজারুর ন্যায় দৃষ্ট হইলেন, অনম্ভর সত্তর হইয়া হতাশ্ব রূপ হইতে আপনকার শ্যালক র্যকের রুধে আপনকার পুজের সাক্ষাতেই আরোহণ করিলেন। ভীমসেনও সংকুদ্ধ হ্ইয়া আপনকার সৈনোর উপর ধাব্মান হ্ইয়া দওহত্ত যমের ন্যায় তাহাদিগকে বিনাশ করিতে লাগিলেন।

একোনাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত। ৭৯।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! আমাদিগের সহিত পাওবদিগের বছল বিচিত্র দৈরথ যুদ্ধ তোমার মুখে শুনিলাম; তুমি আমাদিগের পক্ষের কাহাকেও হুফ বলিয়া প্রশংসা করিতেছ না; সর্ব্যাই পাওব পক্ষীয় যোধগণকে হুফ ও অভয় বলিয়া প্রশংসা ও আমাদিগের পক্ষীয় ঘোধগণকে হত-তেজা, বি-মনা ও হীয়মান কীর্ত্তন করিতেছ, ইহার কারণ দৈবই বলিতে হইবে, তাহাতে সংশয় নাই।

সঞ্জয় কহিলেন, হে রাজেন্দ্র। আমাহিণের সমু-দার যোধগণই পুরুষ প্রধান, জীহারা শক্তি ও উৎ-সাহ অমুসারে ধবা সাধ্য প্রম পৌরুষ করিয়া খাকেন, কিন্তু বে প্রকার স্থানদী-গলার
স্বাস্থ্য জল সমুদ্রের সংসর্কে লবণাক্ত হয়, কেই
প্রকার আপনকার পক্ষীর মহাত্মাদিগের পৌরুষ হীর
পাওবিদিগের সকাশে নিক্ষল হইয়া যায়। আপনকার পক্ষ যোধগণ বধা শক্তি চেউমান হইয়া অতি
ছয়র কর্ম্বের অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন, অতএব আপনি ভাঁহাদিগের প্রতি দোবারোপা করিবেন না।
হে মহারাজ! আপনকার ও আপনকার পুল্রের
দোবেই যমরাজ্য-বর্জন এই ঘোরতর অতি মহান্
লোক-ক্ষয় উপস্থিত হইয়াছে; ইহা আপনকার
আত্মহত দোবে সমুৎপন্ন হওয়াতে এ জন্য শোক
করা আপনকার উচিত নহে। ক্ষক্রিয়ণ সমুদায়
অর্থ ও জীবন রক্ষায় উপেক্ষা করিয়া স্থর্গ পরায়ণ
হইয়া যুজ্ব ঘারা পুণ্য লোক গমনের মাননে সৈন্যালোড়ন করত নিতা নিতা যুজ্ব করিতেইেন।

হে মহারাজ! সেই দিবস পূর্ব্বাহ্নে দেবাস্থর যুগ্ধ সদৃশ জন-ক্ষম জনক যে যুদ্ধ হইতে লাগিল, তাহা আপনি এক চিত্ত হইয়া আমার নিকট শ্রবণ করুন। রণ-ছুঃসহ মহাধন্বী মহাছ্যুতি অবস্থিরাজ ছুই ভ্রাতা ইরাবান্কে দেখিয়া ভাঁহার সহিত যুদ্ধে সমবেত र्रेलन, डाँशिं पिरात जुमूल लामर्यं। युक चात्रक হইল। ইরাবান অতি কুজ হইয়া নতপর্বে স্থশাণিত শর সকল দারা দেব-রূপী উক্ত চুই ভ্রাতাকে শীঘ্র শীঘ্র বিশ্ব করিতে লাগিলেন। সেই বিচিত্র যোদ্ধা ছুই ভ্রাতাও ভাঁহাকে শর বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা শত্রু নাশ নিমিত্ত পরস্পর ক্বত প্রতীকারা-ভিলাবে যুদ্ধে যে ৰূপ যত্ন করিতে লাগিলেন, ভাহাতে ভৎকালে তাঁহাদিগের মধ্যে কাহাত্রো কাহা অপে-का विरमय मृखे इरेन ना। रेत्रावान् ठात्रिवार्ण असू-বিন্দের চারি অশ্ব যম ভবনে প্রেরণ করিয়া স্থতীকু ছুৰু শরে তাঁহার ধযুক ও রখকেতু ছেদন করিয়া কেলিলেন। তদনন্তর অমুবিন্দ স্ব রথ পরিত্যাগ ক্রিয়া বিদ্যের রখে আরোহণ পূর্বক ভারসহ এক विका हुए रेक्ट्रेस महेरतन। उथन रिजायनत वर्गास-

রাজেরা ছুই জাড়া এক রুখে অবস্থিত হুইয়া মহাসা ইরাবানের প্রতি শীঘ্র শীঘ্র শর নিকেপ করিতে লাগিলেন। তাঁহাদিগের নিক্ষিপ্ত কণক-ভূষিত মহা বেপশীল বাণ সকল স্থ্য্য পথে গিয়া অন্বর মণ্ডল আচ্ছাদন করিতে লাগিল। ইরাবাব্ও ক্রোধাৰিউ চিত্তে সেই মহারথ ছুই ভাতার উপর শরকাল বর্ষণ করিয়া তাঁহাদিগের সার্থিকে নিপাডিত করিলেন। সার্থি গত প্রাণ হইয়া নিপতিত হইলে অশ্ব সকল खेम्खांख इरेमा द्वथ नरेमा ठजूर्कित अक्र उरहेत। নাগরাজ-দৌহিত্র মহারাজ ইরাবান অবভিরাজ দয়কে এই ৰূপে পরাজিত করিয়া পৌরুষ প্রকাশ করত সত্ত্র হইয়া আপনকার সৈন্য দগ্ধ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। আপনকার পক্ষীয় সৈন্য বধ্যমান হইয়া, মলুষ্য ষেমন বিষ পান করিয়া উদ্ভান্ত হয়, সেই ৰপ চতুৰ্দিকে বিবিধ বেগ পূৰ্বক উদ্জান্ত रहेरा नाभिन।

व फिर्क महावन श्रद्धाकां इत्रांकरमंख घरणे १ कर সূৰ্য্যবৰ্ণ ও ধল শোভিত রুখে সমাৰ্চ হইয়া ভগ-দত্তের প্রতি ধাবমান হইল। যেপ্রকার পূর্বা কালে বজ্ঞধারী ইক্র তারকাময় সংগ্রামে ঐরাবতে অবস্থিত হইয়াছিলেন, সেই প্রকার প্রাগ্জ্যোতিষে-শ্বর ভগদত্ত নাগরাজে আরোহণ করিয়া ঘটোৎ-কচের সহিত সংগ্রাম করিতে লাগিলেন। যুদ্ধদর্শী সমাগত দেব, গল্পক্ত ও ঋষিগণ ঘটোৎকচের সহিত ভগদত্তের যুদ্ধে কাহারো কাহা অপেক্ষা কিছু মাত্র বিশেষ দেখিতে পাইলেন না। যেপ্রকার মেবরাজ ইন্দ্র দানবদিগকে ত্রাসিত করিয়াছিলেন, তজ্ঞপ রাজা ভগদ**ভ পাণ্ডব পক্ষগণকে** ত্রাসিত করিয়া ৰিদ্ৰাবিত করিতে লাগিলেন। পাণ্ডব পক্ষগণ সক্ল দিগে বিজাবিত হুইয়া স্বীয় অনীক মধ্যে কাহাকেও ব্ৰকাৰ্ডা দেখিতে পাইল না, আমরা কেবল মাত্র ঘটোৎকচকে দেখিতে পাইলাম, অবশিষ্ট মহা-রবেরা বিম্না হইয়া পলায়ন করিলেন। পাওৰ **शकीत रिनागर भूननिवृद्ध स्ट्रान रिना प्रदेश महीन्**

ह्यानारन रहेन। छानसङ्ग प्रक्रिश्का, त्मच कर्ज्क খেল পর্বতোপরি জল বর্ষণের ন্যায়, শর বর্ষণে তগদত্তকে সমাচ্চন করিল। রাজা ভগদত রাজ্য ঘটোংকচের চাপ বিষুক্ত বাণ সকল ছেদন করিয়া नम्ह मर्म इन विक क्त्रिलन। य श्रकांत्र शर्वाञ ভিদাসান হইয়াও বিচলিত হয় না, সেই ৰূপ রাক্ষ-সেব্ৰ ঘটোৎকচ নতপৰ্বে বহু শব্নে তাড্যমান হই-রাও ব্যবিত হইল না। প্রাগ্রোতিবরাক কুজ হইরা ঘটোৎকচের উপর চতুর্দ্দশ ডোমর নিক্ষেপ করিলে, রাক্ষন ঘটোৎকচ তাহা ছেদন করিয়া ফেলিল। সেই মহাবাছ স্থশাণিত শর সকল-ঘারা সেই ভোমর সকল ছেদন করিয়া ক্রপত্র-সংযুক্ত সপ্ততি শরে ভগদত্তকে বিদ্ধ করিল। পরে ভগদত্ত হাসিতে হাসিতে শর বারা তাহার চারি অখ নি-পাতিত করিলেন। সে, হতাশ্ব রথেই অবস্থিত হইয়া ভগদভের হত্তীর উপর এক শক্তি বেগ পূর্বক নিক্ষেপ করিল। প্রাপ্জ্যোভিবরাক্ত সেই বেগ-বিশিষ্ট সূৰ্বৰ্ণ দপ্ত শোভিত শক্তিকে আপভিত হই-তে দেখিয়া ডিন খণ্ডে ছেদন করিয়া কেলিলেন, তাহাতে সেই শক্তি বিশীৰ্ণ হইয়া ভূতনে পডিড र्रेन। हिज़िया-जनम्, निकिश्च मंख्यि विकल (पश्चिम **उत्र क्षयुक्त, भूर्स काणीन हेट्छन्न यूट्स रेमछानद्यय** नमूर्वित नाम्न भनामन कतिन। खन्नमाखन हरी, যম ও বৰুণ কৰ্তৃকও অজের খ্যাত পৌক্লব বিক্রম-শীল শত্রু ঘটোৎকচকে পরাজয় করিয়া, যে প্রকার বনহন্তী পদ্মবন মর্দ্দন করিয়া বিচরণ করে, তাহার ন্যায় পাণ্ডৰী সেনা মৰ্দন করিয়া বিচরণ করিতে वाशिव।

এ দিকে মন্তরাজ শল্য ভাগিনের নকুল সহদে-বের সহিত যুদ্ধে সংগত হইর। তাঁহাদিগকে শর সমূহ দারা আচ্ছাদিত করিলেন। সহদেব মাতৃল মদ্ররাজকে সমর-সংগত দেখিরা মেন্ন কর্তৃক আচ্ছা-দিত সূর্যোর নারে তাঁহাকে শর সমূহে সমার্ত করি-লেন। মদ্রাক্ত ভাগিনের্দিগের শরে আচ্ছাদিত্র

ररेता अधिकछत्र आस्तातिक ररेटकत अवर नकूत नर्रारदेत् ७ माञ्जवस्य निरसन सञ्ज बीकि समित। পরে মহারথ শল্য হান্য বয়নে নকুলের হারি অখকে চারি উত্তম বাণে বমালরে প্রেরণ করিলেন। মহা-র্থ নকুল হতাশ্বর্থ হইতে লক্ষ্ণ প্রদান করিয়া যশৰী ভ্রাতা সহকেবের রুখে আরোছ্র করিলেন। উভয় ভ্ৰাতা এক রধে অবস্থিত ও কুন্ধ হইরা স্ব স্ব দৃঢ় ধমুর্বিকেপ পুর্বক ক্ষণ কাল মধ্যে শর দারা মজরাজের রথ সমাক্ষাদিত করিলেন। নরব্যাত্র শল্য ভাগিনের বয়ের নত পর্বা বছ শরে সমার্ত হইয়া পর্বতের ন্যায় অবিচলিত থাকিয়া হাসিতে হাসিতে সেই শর বর্ষণ নিবারিত করিলেন। তদ-নম্ভর সহদেব ক্রোধাবিষ্ট চিত্তে এক বীর্যাবান্ শর এহণ পূর্বক মন্তরাজ্যে প্রতি অভিসন্ধান করিয়া ক্ষেপণ করিলেন। সেই নিক্ষিপ্ত শর গরুড়ের ন্যায় বেগবান হইয়া মন্তরাজকে ভেদ করিয়া মহীতলে নিপতিত হইল। মহারথ মদ্রবাজ ভাহাতে গাঢ় বিন্ধ ও বাধিত হইরা রধোপত্তে নিষণ্ণ ও মুক্ষাপন্ন হইলেন। তাঁহার সার্ধি তাঁহাকে ষমক ভাতৃত্বর কর্তৃক পীড়িত, সংজ্ঞাখন্য ও নিপতিত দেখিয়া রখ লইর। রণস্থল হইতে অপসারিত করিল্। তখন ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীর সকলে মডেখরের রথকে রণ পরা-সুধ দেধিয়া ইনি আরু নাই ভাবিয়া বিমনা হইল। মহারথ মাজীনক্ষন হয় মাতুলকে রণে পরাজয় করিয়া হর্ষোৎফুল চিত্তে শব্দ বাদন ও সিংহনাদ করিতে লাগিলেন। হে নরাধিপ। যে প্রকার ইন্ত ও উপেন্দ্র ছুই দেবতা দৈতা সৈন্য বিজ্ঞাবিত করিয়া-हिलान, उक्तभ नकुल नहराव पूरे जांछ। इस्ये इहेश ষ্ণাপনকার সৈন্য বিজ্ঞাবণ করিতে লাগিলেন।

জ্লীতিত্ব অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮০ ॥

সঞ্জয় কহিলেন, তদনন্তর রাজা যুখিন্তির সেই মধাহে কাজে সংগ্রামে শ্রুতানুকে দেখিয়া তাঁহার প্রতি অশ্ব চালিত করিলেন, অনন্তর নত পর্বে তীক্ষ

নয় বাণ নিক্ষেপ করিয়া অরিন্দম শ্রুতায়ুকে হনন করিতে করিতে ধাবমান হইলেন। মহাধন্ত্র্র্কর শ্রুতায়ু ধর্মপুজের নিক্ষিপ্ত বাণ নিবারিত করিয়া তাঁহার প্রতি সপ্ত শর পরিত্যাগ করিলেন। সেই সকল বাণ মহাত্মা যুধিষ্ঠিরের কবচ ভেদ করিয়া দেহ মধ্য হইতে যেন প্রাণ নিঃসারিত করত শোণিত পান করিতে লাগিল। রথিভোঠ পাগুব, মহাত্মা মহীপাল শ্রুতায়ুর বাণে গাঢ় বিদ্ধ হইয়া বরাহকর্ণ वार्ष तांका अञ्जायूत ऋषय अटपम विश्व ववश वक ভল্ল দারা সেই মহাত্মার ধজ রথ হইতে শীঘ্র ভূতলে পাতিত করিলেন। রাজা শ্রুতায়ু স্বীয় রথ-ধজ নিপাতিত দেখিয়া সপ্ত সন্থ্য তীক্ষ্ণ বাণে রাজা যুধি-ষ্ঠিরকে বিদ্ধ করিলেন। তদনন্তর ধর্মপুত্র যুধি-ষ্ঠির, যে প্রকার যুগান্ত কালে ছতাশন ভূত সকল দগ্ধ করিয়া প্রজ্বলিত হয়, তদ্ধপ ক্রোধে প্রজ্বলিত হইয়া উঠিলেন। হে মহারাজ! দেব, গন্ধর্ব ও রাক্ষসগণ ধর্মপুত্রকে ক্রন্ধ দেখিয়া ব্যথিত এবং জগৎ ব্যাকূল হইল। তথন সমন্ত প্রাণী মনে করিল যে অদ্য এই রাজা ধর্ম-পুত্র কুন্ধ হইয়া जिल्लाक पश्च कतिर्देश । श्विष ও प्रविश्व लाक-শান্তির নিমিত্তে মহৎ কল্যাণ প্রার্থনা করিতে লাগি-লেন। ধর্মারাজ ক্রোধাবিষ্ট হইয়া স্বন্ধ লেহন করত প্রলয় কালের স্থা দলিত মূর্তি ধারণ করিলেন। व्याभनकात भक्क रेमना ममूनाय च कीवटन निताम হইলেন। কিন্তু ধর্মারাজ ধৈর্যা দারা সেই ক্রোধ সম্বরণ করিয়া শ্রুতায়ুর মহৎ ধ্রুক্তের মুক্তি দেশ ছেদন পূর্বাক ভাঁহাকে কার্ম্মুক-হীন করিয়া সকল দৈন্যের সাক্ষাতে তাঁহার স্তন ছয়ের অভ্যস্তরে না-রাচ বিদ্ধ করিলেন, এবং সত্তর হইয়া তাঁহার অশ্ব চতুষ্টয় ও সার্থিকে বিনাশ করিলেন। তথন প্রুতায়ু রাজা যুধিষ্ঠিরের পৌরুষ দেখিয়া হতাশ্ব রথ পরি-ত্যাগ পূর্ব্বক সমর হইতে বেগে পলায়ন করিলেন। সেই মহা ধনুর্বার ক্রতায়ু ধর্মারাজ কর্তৃক পরাজিত হইলে, ছর্ব্যোধনের সমুদার সৈন্য রণ পরাজার হইল।

হে মহারাজ! ধর্মপুত্র যুধিষ্ঠির এই মহৎ কার্যা করিয়া ব্যাদিতানন ক্কতান্তের ন্যায় আপনকার সৈন্য বিনাশ করিতে লাগিলেন।

বৃষ্ণিবংশীয় চেকিতান র্থিপ্রধান রূপাচার্যাকে সমুদায় সৈন্যের সাক্ষাতে শরাচ্ছাদিত করিলেন। করিয়া শর সমূহ দ্বারা রণতৎপর চেকিতানকে বিদ্ধ করিলেন, পরে এক ভল্ল দারা তাঁহার ধনুক ছিল ও অপর এক ভল্ল দ্বারা তাঁহার সার্থিকে নিপাতিত করিলেন; তৎপরেই তাঁহার অশ্ব সংহার করিয়া পার্ফি রক্ষকের ছুই সার্রথিকে সংহার করিয়া কেলি-লেন। তথন চেকিতান রথ হইতে শীঘ্র লক্ষ্ণ প্রদান করিয়া গদা গ্রহণ করিলেন। পরে সেই বীর-ঘাতিনী গদা দারা অশ্বশামার অশ্ব চতুষ্টয় সংহার কুরিয়া সার্থিকে নিপাতিত করিলেন। অশ্বপামা ভূমিতে অবস্থিত হইয়া তাঁহার উপর বোড়শ শর নিক্ষেপ করিলে, সেই সকল শর সাত্ত্বত চেকিভানকে ভেদ করিয়া ধরাতলে প্রবেশ করিল। যে প্রকার দেব-রাজ রুত্রাস্থরের উপর বজ্র নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, সেইৰূপ চেকিতান ক্ৰুদ্ধ হইয়া অশ্বৰ্থামার বধ নানদে পুনর্বার সেই গদা তাঁহার উপরে নিক্ষেপ করি-লেন। গোতম-নন্দন রূপাচার্য্য প্রস্তরগর্ত্তা সেই বিপুলা মহাগদা আপতন্তী দেখিয়া তাহা বছ সহস্ৰ শরে নিবারণ করিলেন। হে ভারত! তদনন্তর চেকিতান কোষ হইতে ধড়গ বহিষ্কৃত করিয়া অতি লাঘৰ অবলয়ন পূৰ্ব্বক ক্লপের নিকট ধাৰমান হই-লেন। রূপও স্থান্থত হইয়া ধনুক পরিত্যাগ করিয়া অসি গ্রহণ পূর্বকে চেকিভানের অভিমুখে বেগে অভিদ্রুত হই**লেন। বলসম্পন্ন** ও খড়্গ ধারী উভয়ে অতি তীক্ষ্ণ খড়গ দ্বারা পরস্পরকে প্রহার করিতে লাগিলেন। • সর্ব্ব প্রাণির নিবেবিত-ধরণীতলে অব-স্থিত পুরুষ-প্রবর সেই ছুই জনই খড়গবেগে অভি-হত, ব্যায়ামে বিমোহিত ও মূর্ছা দারা বিকলাক हरेटनन । उपनस्त्रत क्यूकर्य नाटम थक वास्ति ममत

দুর্মদ চেকিতানের স্থক্ৎ, তাঁহাকে তথাবিধ দেখিয়া সৌহার্দ্দ প্রযুক্ত বেগ সহকারে ধাবিত হইয়া আ-গমন পূর্বেক সমস্ত সৈন্যের সাক্ষাতে রথে আরো-পিত করিলেন। সেই প্রকার আপনকার শ্যালক শৌর্যা-সম্পন্ন শকুনিও রথি প্রধান ক্রপাচার্য্যকে সত্তর রথে আরোপিত করিলেন।

হে রাজেন্দ্র! মহাবলশালী ধৃউকেতু রণে কুজ হইয়া সোমদন্ত-পুত্রের বক্ষংস্থলে নবতি শর বিদ্ধা করিলেন। যে প্রকার দিবাকর মধ্যাহ্ন কালে রশ্মি জালে শোভিত হন, সেই প্রকার সোমদন্ত-পুত্র বক্ষংস্থল-বিদ্ধা সেই সমস্ত বাণে অতি শোভিত হই-লেন। সোমদন্ত-নন্দন মহারথ ভূরিভাবাও উত্তম উত্তম বাণ নিক্ষেপ পূর্বক ধৃউকেতুর সারধি ও অশ্ব বিনাশ করিশ্বা তাঁহাকে রথ বিহীন করিলেন; পরে তাঁহাকে হতাশ্ব ও হত সারধি স্কতরাং রথ বিহীন দেখিয়া মহৎ শর বর্ষণে সমাচ্চাদিত করিলেন। মহামনা ধৃউকেতু সেই রথ পরিত্যাগ করিয়া শতানীকের রথে আরোহণ করিলেন।

रह नद्रभान ! हिजरमन, विकर्ग ଓ हुर्मार्यन, खूवर्ग বর্মধারী রধী আপনকার এই তিন পুত্র স্বভজা-পুজের প্রতি যুদ্ধাসক্ত হইলেন। যে প্রকার বাত, পিত ও কফ এই তিনের সহিত শরীরের যুদ্ধ হয়, সেইৰূপ অভিমন্ত্ৰার সহিত তাঁহাদিগের তিন জনের ঘোর যুদ্ধ হইতে লাগিল। সেই মহা সংগ্রামে আপনকার সেই পুত্র ত্রয়কে রথ হীন করিয়া, নর-ব্যাঘ্র অভিমন্থ্যুর ভীমদেন কৃত প্রতিজ্ঞা বাক্য স্মরণ হইল, এ জন্য আর ডিনি তাঁহাদিগকে সংহার করিলেন না। তদনন্তর খেতবাহন অর্জুন গজা-রোহী, হন্নারোহী ও রথারোহী রাজগণে পরিবৃত দেবগণেরও, ছুক্সের ভীন্নকে আপনকার পুত্রদিগকে এক মাত্র বালক মহারথ অভিমন্ত্রার হত হইতে রক্ষা করিবার মানদে সত্ত্র গমন করিতে দেখিয়া वाञ्चलक्टक अरे कथा कहिलान, एर स्वीटकम ! य च्राल थे बहन तथी तरिवाद्ध से चारन अधिनित्र

চালনা কর; উহারা বহু সংখ্য, শূর, অন্ত্রবিদ্যায় অভিচ্ন ও যুদ্ধ ছুর্মদ; উহারা বাহাতে আমাদিপের সেনা বিনাশ করিতে না পারে, তুমি সেইৰূপ করিয়া অশ্ব চালনা কর। অমিত-বিক্রম অর্জ্জুন বাস্তু-দেবকে এইৰূপ কহিলে, তিনি শ্বেতাশ্ব-যুক্ত রখ সেই দিকে চালিত कृतिलान। चर्क्न स कुक হইয়া আপনকার সেনাভিমুখে গমন করিতে লাগি-লেন, তাহাতে আপনকার দৈন্য মধ্যে মহান কো-लारल रहेल। क्छीनन्मन जीय-तक्कक मारे मक्ल वाक्षभार्यं निक्रे भमन कवित्रा स्मर्माटक विनातन, जूमि यूष्क এक कन क्षश्रान अवः चामानिरगत शूक বৈরী; তোমাকে আমি বিশেষ ৰূপে জানি; তো-মার সেই অনীতির স্থদারুণ ফল আজি তুমি অমু-ভাব করিবে; আজি আমি তোমাকে তোমার মৃত পিতাঁমহ প্রভৃতির সহিত সাক্ষাৎ করাইব। রথীগণের নায়ক স্থশর্মা শত্রুঘাতী বীভৎস্থর ঐৰপ পৰুষ বাক্য শুনিয়া ভাল মন্দ কিছুই উত্তর করি-লেন না। তিনি আপনকার পুত্রগণ ও বছমহীপালে পরিরত হইয়া অর্জুনের সমীপে গমন পূর্বক্, মেঘ যেমন দিবাকরকে সমাচ্ছাদিত করে, সেইৰূপ, ঠাঁ-হাকে অত্রে, পশ্চাতে ও পার্ষে, মর্কা দিকেই পরি-বেক্টন করিয়া শর সমূহে আচ্ছন্ন করিলেন। পরে উভয় পক্ষের ছোরতর রুধির-প্লাবন সংগ্রাম আরম্ভ रुरेन।

একাশীতি তম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮১ ।

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভূপাল! রাজগণ শর সমূহ
ভারা বলবান ধনঞ্জয়কে পীড়ন করিলে তিনি পদাহত সর্পের ন্যায় দীর্ঘ নিশাস পরিত্যাগ করিতে
করিতে বাণে বাণে সেই সকল মহারথী দিগের
ধরুক সকল সহসা ছেদন করিলেন। ক্ষণকাল মধ্যে
সেই সকল বীর্যাবান রাজাদিগের ধরুক ছেদন করিয়া তাঁহাদিগকে নিঃশেষ করিবার সানসে এককালে

वान ममूर बाद्रा विक कतिलन । रेख्ये युक्त मरे मरा-तथ मिर्गटक अहेक्टल खेहात केतिल छै।हामिटमत মধ্যে কাহারো কাহারো গাত্র ক্ষত বিক্ষত ও রূষির-ক্লিল্ল এবং বৰ্ম চ্ছিল্ল হইয়া গেল। কাহারো কাহারো মন্তক ছিল হইরা পাতিত হইল। কেহ কেহ পার্থ বলে অভিভূত, মৃত ও বিদিত্র-ৰূপ হইয়া বিন্ফী হইলেন। তাঁহারা এক কালেই কালের করাল থাসে পজিত হইলেন। সেই রাজপুত্রদিগকে যুদ্ধে নিহত দেখিরা তাঁহাদিগের পৃষ্ঠ রক্ষক ছাত্রিংশৎ ঘোদা ও ত্রিগর্ত্তরাজ রথারোহণে পার্থের অভিমুখে আপতিত **इहेरलन। य अकात जनधत त्रम পर्वर**ाभित्र जन-রাশি বর্ষণ করে, ভদ্রপ তাঁহারা পার্থকে পরিবেউন পূর্ব্বক মহাশব্দান্থিত শরাসন বিক্ষারণ করিয়া পা-র্থের উপর বাণ সমূহ বর্ষণ করিতে লাগিলেন। यभत्री धनक्षत्र कांशांक्रितत्र भतकात्म मंश्रीकामान ও জাতকোধ হইয়া সেই পৃষ্ঠ রক্ষকদিগকে তৈল-ধৌত ষ্টি শরে নিহত করিলেন। তিনি ব্টি সংখ্য রখীকে যুদ্ধে পরাজিত করিয়া প্রীত মনে রাজ-গণের সৈন্য বিনাশ করত ভীম বধের মিমিন্ড সত্তর হইলেন। ত্রিগর্ভরাজ বন্ধুবর্গকে মহাত্মা অর্জুন কর্তৃক নিহত দেখিয়া পূর্ব্ব পরাজিত সেই সকল রথী নরাধিপতিকে অত্যে করিয়া ত্বরা সহকারে অর্জুন বধের নিমিত্ত গমন কঁরিলেন। শিখণ্ডী প্রভৃতি বীরগণ অস্ত্রজ্ঞ প্রবর অর্জ্জুনকে ত্রিগর্ভরাঞ্চ প্রভৃতি কর্তৃক আক্রান্ত দেখিয়া ভাঁহার রথ রক্ষা করিবার অভিলাবে শানিত অস্ত্র হস্তে প্রভুক্লাত হইলেন। ভীন্ন সমীপে গমনেচ্চু মহাধনুন্বাৰ অনস্তবীৰ্য্য সম্পন্ন মহাতেলা ভীষণ বলবান মনস্বী অর্জুন, ত্রিগর্জ-রাজের সহিত সেই নরবীর দিগকে তাঁহার প্রতি আপতিত দেখিয়া গাণ্ডীব বিমুক্ত স্থশানিত শর-নিকরে তাঁহাদিগকে চ্ছিন্ন ভিন্ন করিয়া গমন করি-লেন; পরে রাজা ছুর্যোধন ও সিদ্ধুপতি জয়দ্রথ প্রভৃতি রাজগণকে নিবার্য্যিকু দেখিয়া তাঁহাদিগের সহিতও মুহুর্ড মাত্র যুদ্ধ করিয়া তাঁইাদিগকে পরি-

ত্যাগ পূর্বক ধনুর্বাণ হতে ভীমের নিকট প্রয়াণ করিলেন।

অনন্ত কীর্ত্তিমান্ উগ্রবল সম্পন্ন মহাত্মা যুধিন্তির জাতকোধ ও ত্রাবান্ হইয়া যুক্তে আপনার ভাগ প্রাপ্ত মদ্রাধিপতি শল্যকে পরিত্যাগ পূর্বক ভীম-त्मन, नकून ७ महत्त्व ममिख्याहात्व मास्त्रेय-भूक ভীমের নিকট সংগ্রাম নিমিত্ত গমন করিলেন। বিচিত্ৰ যোদ্ধা মহাত্মা গঙ্গাপুত্ৰ সমাগত সেই সমন্ত মহারথাঞ্গণ্য পাণ্ডুপুত্র কর্তৃক সমাক্রান্ত হইয়াও বাধিত হইলেন না। উত্ৰবলশালী মনস্বী সভাসন্ধ রাজা জয়দ্রথ বিপুল ধয়ুক ধারণ পূর্বক যুদ্ধে সেই মহারথ দিগের সমীপে গমন পূর্বেক সহসা তাঁহা-দিপের ধনুক ছেদন করিয়া কেলিলেন। মহাত্মা ছুৰ্যোধন জাতকোধ ও কোধ বিবে পরিপূর্ণ হুইয়া यूधिकित, जीमारमन, नकुल ও সহদেবকে অনল-मङ्गान শর নিকরে হনন করিতে লাগিলেন। হে বিভো! যে প্রকার দৈত্যগণ মিলিত হইয়া দেবগণকে শর-বিদ্ধ করিয়াছিল, সেইৰূপ কুপ, শল্য, শল ও চিত্ৰ-নেন অতি ক্রুদ্ধ হইয়া পাগুবদিগকে শর বিদ্ধ করি-তে লাগিলেন।

হে মহারাজ! অজাতশক্র রাজা যুধিন্তির ভীয়
কর্তৃক শিখন্তীর ধনুক ছিন্ন ও তাঁহাকে পলায়মান
দেখিয়া জাতকোধ হইয়া শিখন্তীকে কহিলেন, হে
মহাবীর ক্রপদনন্দন! তুমি তোমার পিতার সাক্ষাতে আমাকে এই কথা বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলে
যে "আমি সতা বলিতেছি, স্থার্বর্ণ বিমল শর
সমূহ দ্বারা মহাত্রত ভীয়কে সংহার করিব " একণে
তাঁহাকে যুদ্ধে বিনাশ না করাতে তোমার ঐ
প্রতিজ্ঞা সকল হইতেছে না, অতএব ষাহাতে তোমার প্রতিজ্ঞা মিথ্যা না হয়, একপ কর; স্বকীয়
প্রতিজ্ঞা সকলা করিয়া ধর্ম, যশ ও কুল রক্ষা কর।
দেখ, ভীষণ বেগশীল ভীয় কালান্তক যমের নাায়
কণমাত্রে আমার সমুদ্র সৈন্যসংঘ ভীয়েতেজ শরজাল দ্বারা দল্ধ করিতেছেন। তুমি রণে ভীয়া কর্তৃক

ছিন্ন-চাপ ও পরাজিত হইয়া বন্ধুগণ ও সোদরদিগকে পরিত্যাণ পূর্বক কাহারো অপেকা না করিয়া কো-ধায় বাইতেছ? এইৰূপ কাৰ্য্য তোমার উপযুক্ত হই-তেছে না। হে ক্রপদনন্দন! তুমি ভীয়কে অপরিমিত বীৰ্যাবান এবং সৈন্যদিগকে তৎকৰ্ত্তৃক ভগ্ন ও দ্ৰব-মাণ দেখিয়া নিশ্চয়ই ভীত হইয়াছ, কেননা তোমার মুখ বৰ্ণ লান হইয়াছে! কিন্তু ঐ দেখ, ধনঞ্জয় ভীয়ের সঁহিত যুদ্ধার্থ মিলিত হইয়াছেন, তাহা তুমি জানিতে পার নাই। বিশেষত তুমি গৃথিবী বিখ্যাত বীর হইয়া কি জনা আজি ভীন্ন হইতে ভয় করিতেছ? হে নরপাল! মহাত্মা শিখণ্ডী ধর্মারাজের এৰূপ রুক্ষাক্ষর যুক্ত সার্থক বাক্য শ্রবণ করিয়া তাহা উপ-দেশ জ্ঞান করিয়া ভীয়া বধে ত্রাবান্ হইলেন। রাজা শল্য শিখণ্ডীকে ভীন্মের প্রতি মহাবেগে গমন করি-তে দেখিয়া স্থত্মুক্তরে ঘোরতর শস্ত্র দারা নিবারণ করিতে লাগিলেন। মহাধনুমান্ মহেন্দ্রভুল্য প্রভাব সম্পন্ন শিখণ্ডী, যুগান্তকালীন বহিতুল্য সেই নিক্ষিপ্ত প্রবল অস্ত্র দেখিয়া মুগ্ধ হইলেন না, প্রত্যুত শর সমূহ দ্বারা সেই প্রদীপ্তাস্ত্র প্রতিবাধিত করত সেই স্থানেই স্থির হইয়া রহিলেন; পরে তাহার প্রতি-ঘাতক উগ্র বারুণাক্ত সন্ধান করিয়া তাহা নিবারণ করিলেন। পৃথিবীস্থ নরগণ ও নভঃস্থ দেবগণ সেই আগ্নেয়াস্ত্ৰকে বাৰুণাস্ত্ৰ দ্বারা নিৰাৰ্য্যমাণ অবলোকন 'করিতে লাগিলেন।

হে রাজন! মহাস্থা বীর ভীম পাণ্ডুনন্দন রাজা

যুধিন্ঠিরের অতি বিচিত্র রথ ধজ ও ধমুক ছেদন

করিয়া সিংহনাদ পরিত্যাগ করিলেন। তদনন্তর

যুধিন্ঠিরকে ভয়াভিভূত দেখিয়া রকোদর ধমুর্বাণ
পরিত্যাগ পূর্বক গদা গ্রহণ করিয়া জয়দ্রথের অভিমুথে পদত্রজে ধারমান হইলেন! সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ,
ভীমসেনকে গদাহক্তে মহাবেগে আসিতে দেখিয়া
তাহাকে চতুর্দিকে যমদণ্ড কম্প ভয়ানক সুশানিত

নয় শর দারা বিদ্ধার্থীকেন। অতি বেগদীল রকো
দর ক্রোধাবিষ্টি ইইয়া কিছু চিন্তা না করিয়াই

নিমুরাজের পারাবত সদৃশ অশ্ব সর্কল নিহত করিলেন। তৎপরে অমুপম প্রভাব সম্পন্ন স্থররাজ
সদৃশ আপনকার তনয় চিত্রসেন ভীমসেনকে দেখিয়া
উদ্যতাক্র ও ত্বরমাণ হইয়া তাঁহাকে সংহার করিবার নিমিত্ত রথারোহণে তাঁহার নিকট গমন করিলেন। ভীমসেনও তক্কন গর্জন পূর্বাক তাঁহার প্রতি
প্রত্যালাত হইয়া গদা নিক্ষেপ করিলেন। সেই মোহ
জনক তুমুল বিমর্দ্দ সংগ্রামে ভীমের সমুদ্যত যমদশুকম্প উগ্র গদা দেখিয়া সমস্ত কুরুরণ তাহা হইতে
পরিত্রাণ পাইবার ইচ্ছায় তথা হইতে অপক্রাস্ত
হইলেন। কিন্তু চিত্রসেন আপতন্তী সেই মহাগদা
দেখিয়া বিমুশ্ধচেতা না হইয়া বিপুল খড়গ চর্মা গ্রহণ

ক, যে প্রকার পর্বতাগ্র হইতে সিংহ লক্ষ্
প্রদান করত গমন করে, তাহার নাায়, রথ হইতে
লক্ষ্ প্রদান করিয়া ভূতলে গমন করিলেন। ওদিকে
সেই নিক্ষিপ্ত গদা চিত্রসেনের অশ্ব ও সার্রথির সহিত
স্থাচিত্র রথ নিহত করিয়া আকাশচ্যুত প্রজ্ঞ্বলিত
মহোক্ষার ন্যায় ভূতল-গত হইল। আপনকার
পক্ষ সৈন্যগণ ও অন্যান্য সকলেই মিলিত হইয়া
সেই মহৎ আশ্চর্য্য ব্যাপার দেখিয়া ক্ষটিডিভে নিনাদ
করিয়া উঠিল এবং আপনকার পুজের প্রশংসা
করিল।

দ্বাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৮২॥ → ৩৩ ←

সঞ্জয় কহিলেন, আপনার পুদ্র বিকর্ণ মনস্থী
চিত্রসেনকে ব্রিরণী দেখিয়া রথে আরোপিত করিলেন। তাদৃশ সন্ধুল অতিশয় তুমুল যুদ্ধ সময়ে
শান্তমুপুদ্র সত্তর হইয়া যুধিষ্ঠিরের প্রতি উপদ্রুত
হইলে রথী, গজী ও সাদিগণের সহিত হঞ্জয়গণ
কম্পিত হইতে লাগিল; মনে করিল যুধিষ্ঠির ক্তান্তের আস্য মধ্যে নিবিট হইলেন। পরস্ত যমক তুই
ভাতার সহিত যুধিষ্ঠিরও মহাধমুর্জর নরব্যাদ্র শান্তমু
পুত্রের অভিমুখে গমন করিলেন। যে প্রকার মেঘ
দিবাকরকে সমাক্ষর করে, তক্রপ তিনি ভীয়কে

সহস্র সহস্র শর নিক্ষেপ করত আছম করিলেন। গঙ্গাপুত্র যুধিষ্ঠির-নিক্ষিপ্ত শত শত সহস্র সহস্র শর জাল ভাগ ভাগ করিয়া গ্রহণ পূর্বক শত শত সহস্র সহস্র শরে ভাগক্রমে অন্তমিত করিলেন। সেই সকল শরজাল আকাশে শলভ বৃন্দের ন্যায় অব-लाकिত रहेरा नाशिन। जिनि वर्क निरमय मर्या ভাগ ভাগ শর জালে যুধিন্ঠিরকে সমরে অদৃশ্য করিয়া কেলিলেন। অনন্তর রাজা যুখিন্ঠির কুরুকুল ভূষণ মহাত্মা ভাষ্যের প্রতি কুদ্ধ হইয়া আশীবিষ সদৃশ এক নারাচ নিক্ষেপ করিলেন। হে মহারাজ! মহারথ ভীম তাঁহার চাপ নির্মৃক্ত সেই নারাচ নিক-টস্থ না হইতে হইতেই ক্ষুরপ্র অন্তর দার। ছেদন করিয়া ফেলিলেন, তৎপরে তাঁহার কাঞ্চন ভূষিত অশ্ব সকল সংহার করিলেন। রাজা যুধিন্ঠির, তৎ-ক্ষণাৎ হতাশ্ব রথ পরিত্যাগ করিয়া মহান্মা নকুলের রথে আরোহণ করিলেন। তথন শত্রু পুরজয়ী ভীম यि कुष रहेश यमक नकुन ७ महत्तरवत ममील গমন পূর্বাক তাঁহাদিগকে শরজালে আচ্ছন্ন করিতে नागित्वन ।

মহারাজ! রাজা যুধিন্ঠির, নকুল ও সহদেবকৈ ভীমবাণে প্রপীড়িত দেখিরা ভীমের বধ নিমিন্ত পরম
চিন্তান্থিত হইলেন; তদনন্তর অনুগত রাজা ও স্কুল্
গণকে কহিলেন, 'তোমরা যুদ্ধে ভীমকে নিহত
কর'। তৎপরে তাঁহারা যুধিন্ঠিরের ঐ কথা শুনিরা
বছ সংখ্য রথ দ্বারা কুরু পিতামহকে পরিবেইন
করিলেন। আপনার পিতা দেবত্রত চতুর্দ্দিকে রথী
সমুহে পরির্ত হইয়া মহারথীদিগকে নিপাতিত করিতে করিতে শরাসন লইয়া যেন ক্রাড়া করিতে লাগিলেন। পাওবেরা, মহারণ্যে মৃগযুধ মধ্যে প্রবিই
সিংহের ন্যায় তাঁহাকে রণ মধ্যে বিচরণ করিতে
দেখিতে লাগিলেন। হে মহারাজ! ক্ষত্রিয়গণ,
তাঁহাকে ক্রান্সত করিতে দেখিয়া, যে প্রকার সিংহকে
দেখিয়া মৃগ্রণ জাসিত করিতে দেখিয়া, যে প্রকার সিংহকে

रहेलन, अवर ज्भ परतम्त्रु वाश्चमहात्र व्यक्षित्र नात्र সেই ভরত সিংহের তে**জঃপ্রভা**ব দর্শন করিলেন। যে ৰূপ নিপুণ মমুষ্য তালর্ক্ষ হইতে পক্ষ তাল কল পাতিত করে, সেইৰূপ তিনি র্থীদিগের মন্তক পাতিত করিতে লাগিলেন। সেই সকল ছিন্ন মন্তক ধরণী তলে পতিত প্রস্তর খণ্ডের ন্যায় তুমুল শব্দ করিয়া পতিত হইতে লাগিল। সেই অতি ভুমুল ভয়ানক যুদ্ধে সমুদায় সৈন্যের অতি অবাবস্থা হইয়া উঠিল। ব্যুহ সকল ছিন্ন ভিন্ন হইয়া গেল, ক্ষক্রিয়গণ পরস্পর এক এক জনকে আহ্বান করিয়া যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। শিখণ্ডী ভীন্মের সমীপে গমন পূর্বক তিষ্ঠ তিষ্ঠ বলিয়া বেগ সহকারে ভাঁহাকে আক্রমণ করি-লেন। তদনন্তর ভীম শিখণ্ডীর স্ত্রীত্ব মনে করিয়া তাঁহাকে রণে উপেক্ষা করত ক্রোধাবিফ চিত্তে স্ঞ্লয়দিগের দিকে গমন ক্রিলেন। স্ঞ্য়গণও মহা-রথ ভীন্নকে দেখিয়া হৃষ্ট হইয়া শস্কাধনি মিঞাড বছবিধ সিংহনাদ করিতে লাগিল। তথন সূর্য্য পশ্চিম দিক্ অবলম্বন করিয়াছিলেন; ঐ সময়ে রথী ও গজারোহীদিগের যুদ্ধারম্ভ হইল। পাঞ্চাল রাজ-পুত্র ধৃউছান্নও মহারথ সাতাকি শক্তি ও তোমর বর্ষণ এবং বছবিধ শস্ত্র দ্বারা আপনকার পক্ষ দৈন্য-দিগকে আহত করিতে লাগিলেন। হে পুরুষর্বভ! আপনকার পক্ষ মহারথ গণ হন্যমান হইয়াও যুদ্ধে দৃঢ় মতি করিয়া যুদ্ধ ত্যাগ করিলেন না; প্রত্যুত যথা উৎসাহ ক্রমে যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। আপন-কার মহাবল সৈন্য সকলও মহাত্মা ধৃউছাত্ম কর্জৃক বধামান হইয়া ভুমুল আর্ডনাদ করিতে লাগিল।

সেই ঘোর নিনাদ শ্রবণ করিয়া আপনকার পক্ষ রাজগণের মধ্যে অবস্থি দেশীয় ভূপাল মহারথ বিদদ ও অমুবিন্দ উভয়েই ধৃউদ্ধানের নিক্ট উপস্থিত হইয়া সত্তর ঠোহার অশ্ব সকল বিনাশ করিয়া শর বর্ষণে তাঁহাকে সমাজ্ল করিলেন। মহাবল পাঞ্চাল নন্দন ঝটিতি রথ হইতে লক্ষ প্রদান করিয়া মহাস্থা সাভ্যকির রথে শীঘ্র আরোহণ করিলেন। তদনশুর

রাজ। যুধিতির মহতী দেনায় সমার্ত ও কুক হইয়া শক্রতার্পন অবস্থিরাজ দ্বয়ের প্রতি ধাবমান হই-लन। जाभनकात्र भूज्ञ भर्त्वात्म्याभ महकादत বিন্দ অন্ত্রবিন্দকে পরিবেউন করিয়া অবস্থিত হই-लन। चर्कुन मरकूक रहेशा, वज्रभागि हेस यमन অস্থ্র দিগের মহিত যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তজপ ক্ষজিরগণের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। আপন-कात भूट्यत हिटेंज्यी ट्यांग कुक रहेता, य थकात অগ্নি তুলরাশি দহন করে, তাহার ন্যায়, সমুদায় পাঞ্চালদিগকে দক্ষ করিতে লাগিলেন। হে নরপাল! তুর্য্যোধন-পুরোবর্ত্তী আপনকার পুত্র সকল ভীয়কে পরিবেফন করিয়া পাগুবদিগের সহিত যুদ্ধাসক্ত হইলেন। ভাস্কর লোহিত বর্ণ হইলে রাজা ছুর্যো। ধন আপনার পক্ষ সকলকে কহিলেন, 'ভোমরা সকলেই সত্ত্রর হও '। ভাক্ষর অন্তগিরি আরোহণ ক্রিয়া অপ্রকাশিত হইলে সেই প্রদোষ সময়ে রাজা ভূর্য্যোধনের আদিউ সেই সকল যোধগণ যুদ্ধে অতি ছুম্বর কার্য্য করিতে লাগিল। ক্ষণকাল মধ্যে তাহা-দিনের শোণিত সমুহের তরঙ্গ যুক্তা ও গোমায়ুগণে সমাকীণা ঘোরা নদী সমুৎপন্না হইল। যুদ্ধ হলভুত সমূহে সমাকুল হইয়া ঘোরৰূপ হইয়া উঠিল। চতু-**ক্রিকে শিবা সকল অশিবভাবে রব করিতে লা**গিল। শত শত সহস্র সহস্র রাক্ষ্য, পিশাচ ও মাংসাশী অন্যান্য জন্তু সকল উহার চতুর্দ্দিকে নিরীক্ষিত হইতে লাগিল।

হে রাজেন্দ্র! অনন্তর অর্জুন সৈন্য মধ্যে স্থশশ্বাদি রাজ গণকে তাঁহাদিগের অনুগানী যোধগণের
সহিত পরাজিত করিয়া স্থ শিবিরে প্রস্থান করিলেন।
কুরুকুল প্রদীপ যুধিষ্ঠির সেই নিশাকালে যমজ
ছুই ভ্রাতার সহিত, সেনাগণে সমার্ত হইয়া স্থ শিবিরে যাত্রা করিলেন। ভীম্মেন ছুর্যোধন-প্রমুখ
রথীদিগকে যুজে পরাজিত করিয়া স্থ শিবিরোদেশে
গমন করিলেন। নূপতি ছুর্যোধন শাস্তমু-নন্দন
ভীমকে সত্তর মহারথগণ ছারা পরিবেন্টিত করিয়া

স্বকীয় শিবিরের প্রতি প্রয়াণ করিলেন। দ্রোণ, ক্লপ, অশ্বশামা, শল্য ও সাত্ত ক্তবৰ্মা, ইহাঁরা नकटल रेननाभरंग नमात्रक रहेशा य च निविद्राणिसूरश গমন করিলেন। সাত্যকি ও পার্যত-স্থত ধৃষ্টদ্বান্ন, ইহাঁরাও উভয়ে যোধগণে পরির্ত হইয়া স্ব শিবিরে প্রয়াণ করিলেন। মহারাজ! এইৰূপ আ-পনকার পক্ষীয় ও পাগুব পক্ষ সকলে নিশাকালে রণ-নিরস্ত হইয়া প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। তদনস্তর পাওব ও কৌরবপক্ষ শূরগণ স্ব স্ব শিবির সমীপে গমন করিয়া পরস্পরকে পূজা করত শিবির প্রবেশ করি-लन, अवर यथाविधि च च रेमनामिशक मर्मन शूर्वक আত্ম-রক্ষার বিধান করিয়া শরীর হইতে শল্যাপনয়ন ও বিবিধ জলে স্থান করিলেন। সেই সমস্ত যশস্থী মহারথগণ ব্রাহ্মণ দ্বারা কৃতস্বস্তায়ন ও বন্দিগণ কর্তৃক স্থুয়মান হইয়া গীত বাদিত্র শব্দে মুহূর্তকাল ক্রীড়া করিলেন। সেই মুহূর্ত্তকাল তাঁহাদিগের সক-লই স্বৰ্গ ভুলা হইল, তথন তাঁহাদিগের যুদ্ধ সম্বন্ধীয় কোন কথা বার্তা হইল না। হে নৃপ! উভয় পর্ফায় বহুল অশ্ব, হস্তী ও মনুষ্য সম্পন্ন সৈণ্যগণ পরিশ্রান্ত ছিল, উহারা নিদ্রিত হইয়া মনোহর দশ্নীয় হইলঃ সপ্তম দিবস যুদ্ধ ও ত্রাশীতিতম অধ্যায়

। पूषा ७ का ना। ७७२ समारक्षा ५०॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে কুরুরাজ! নরাধিপতি কুরু ও পাণ্ডবগণ স্থা-স্থপ্ত হইয়া সেই নিশা অতিবাহিত করিয়া পুনর্বার যুদ্ধ নিমিন্ত নির্গত হইলেন। উভয় সেনার নির্গমন সময়ে তাহাদিগের সাগর শব্দ সদৃশ নহান শব্দ হইতে লাগিল। তদনস্তর রাজা ছুর্যোধন, চিত্রসেন, বিবিংশতি, রথিজ্ঞেন্ঠ ভীম ও বিপ্রাভর্মান্তর্নার ও বর্ম্মিত হইয়া পাণ্ডবছিগের সহিত যুদ্ধার্থ বৃহে বিধান করিলেন। হে নরাধিপ। আপনকার পিতা শান্তরপুত্র ভীমা বাহন কপাতরক্ত যুক্ত সান্তর্নার পিতা শান্তরপুত্র ভীমা বাহন কপাতরক্ত যুক্ত সান্তর্নার বিহান হিন্তা করিয়া স্থা কৈন্যমন্ত্র করি সদৃশ হোকে স্থাহ রচনা করিয়া স্থা কৈন্যমন্ত্র সহ

ব্যুহের অত্যে মালব, দাক্ষিণাত্য ও আবস্তা গণে সম-শ্বিত হইরা গমন করিলেন। তাঁহার পশ্চাৎ প্রতাপ-শালী দ্রোণ পুলিন্দ, পারদ, কুদ্রক ও মালবগণের সহিত যাত্রা করিলেন। ভাঁহার পশ্চাৎ প্রবলপ্রতাপ ভগদন্ত যত্নপরায়ণ হইয়া মাগধ, কালিঞ্জ ও পিশাচ গণে পরির্ভ হইয়া যুদ্ধে গমুন করিলেন। তাঁহার পশ্চাৎ কোশলাধিপতি রুহদ্বল মেকল, ত্রৈপুর ও চিলুকগণে সমশ্বিত হইয়া যুদ্ধার্থ প্রস্থান করিলেন। বৃহদ্বলের পশ্চাৎ প্রস্থলাধিপতি ত্রিগর্ত্ত কাষ্ট্রোজ ও সহস্র সহস্র প্রবর গণের সহিত প্রস্থিত হইলেন। তাঁহার পশ্চাৎ দ্রোণপুত্র বেগশীল শূর অশ্বত্থামা সিংহ্নাদে ধরাতল নিনাদিত করত প্রয়াণ করিলেন। ঠাঁহার পশ্চাৎ রাজা ছুর্যোধন সোদরগণে পরির্ত হইয়া সমুদায় সৈন্যের সহিত যুদ্ধ যাত্রা করিলেন। এবং তাঁহার পশ্চাৎ শার্ত্তত রূপ যুদ্ধে প্রবাত হই-লেন। হে বিভো! সাগর সদৃশ সেই মহাবূাহের গমন সময়ে শ্বেত ছত্ত, পতাকা, মহার্ছ বিচিত্র অঙ্গদ ও শরাসন সকল দীপ্তিমান্ হইল।

মহারথ যুধিষ্ঠির আপনকার পক্ষীয় তাদৃশ মহা-বূাহ দেখিয়া সেনাপতি ধৃউছুঃমকে কহিলেন, হে মহাধমুর্দ্ধর ধৃউচ্চাম! ঐ দেখ, বিপক্ষপণ সাগরোপম বাহ নির্মাণ করিয়াছে; তুমিও উহার প্রতিপক্ষে সত্তর বুছে নির্মাণ কর'। মহারাজ! তদনভর শুর ধৃউচ্যুদ্ধ বিপক্ষ বূহে-বিনাশন স্থদারুণ শৃঙ্গাটক বূহে রচনা করিলেন। মহারথ ভীমদেন ও সাত্যকি অনেক সহস্র রখী, সাদী ও পদাতি, গণের সহিত ঐ ুরুহের উভয় শৃঙ্গ স্থলে রহিলেন। নর প্রধান শেতবাহন কৃষ্ণ-সার্থি অর্জুন উহার নাভি প্রদেশে অবস্থিত হইলেন। রাজা যুধিষ্ঠির ও মাজীপুত্র দ্বয় উহার মধ্য ছলে অবস্থান করিলেন। বুাহ শাস্ত্র বিশারদ অন্যান্য মহাধমুর্জর মহারথ গণ ঐ শৃঙ্গা-টক ব্যুহের যথা স্থানে অবস্থিত হইয়া উহা পরিপূর্ণ করিলেন। তংপশ্চাৎ মহারথ অভিময়া, বিরাট, ा अराज्य का अन्य का का अराज्य का अ

লেন। হে ভারত। শৌর্যসম্পন্ন পাগুবেরা এই ৰপ মহাবাহ সক্তিত করিয়া জয়াভিলাবে যোজুকাম হইয়া সমরে প্রবৃত্ত হইলেন। শব্ধধনি মিশ্রিত ভুমুল ভেরীশব্দ বীরগণের ক্ষেড়িত, আক্ষোটিত ও উৎক্রুফ শব্দের সহিত একত্রিত হইয়া অতি ভয়া-নক ৰূপে সর্বাদিক্ পরিপূর্ণ করিল। খুরগণ পরস্পর সকাশে গমন পূর্বাক নিমেষ রহিত নেত্রে পরস্পর-কে অবলোকন করিল। হৈ মানব প্রবর! যোধগণ প্রথমত পরস্পরকে নাম নির্দেশ পূর্বক আহ্বান করিয়া যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। তদনন্তর্ তাহাদিগের ঘোরতর ভয়ানক যুদ্ধ আরক্ষ হইল; উভয় পক্ষ যোধগণ পরস্পর হতাহত হইতে থাকিল ; স্থশানিত নারাচ সকল ব্যাদিতমুখ ভয়ানক সর্পের ন্যায় রণ-স্থলে সর্বত্র পতিত হইতে লাগিল; তৈল ুধৌত বিমল শক্তি সকল, যেমন মেঘ হইতে দীপামান বিছ্যুৎ সকল পতিত হয়, তদ্ধপ রণ স্থলে চতুর্দিকে পতিত হইতে থাকিল ; স্থবৰ্ণ-যুক্ত বিমল পট্টে বি-ভূষিত গিরিশৃঙ্গ সদৃশ উত্তম গদা ও বিমলায়র সদৃশ নিস্ত্রিংশ সকল রণ ভূমিতে পতিত হইতে দেখা গেল, এবং শত চক্র ভূষিত আর্যভ চর্ম্ম সকল সমর ক্ষেত্রে সর্বাত শোভমান হইয়া পতিত হইতে লা-গিল। হে নরাধিপ। উভয় পক্ষীয় সেনা সমুদাত পরস্পর যুধ্যমান হইয়া দেব সেনা ও দৈত্য সেনার ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। যোধগণ রণক্ষেত্রে চতুর্দিকে পরস্পর পরস্পরের প্রতি অভিদ্রুত হুইল। সেই তুমুল সংগ্রামে ক্ষত্রিয় শ্রেষ্ঠ রথীগণ পরস্পর কর্তৃক প্রেষিত হইয়া রথ যুগ দ্বারা বিপক্ষ রথীর तथ-यूग मः स्थाय शृक्षक युक्त कतिए नागितन। স্কাত য়ুধামান দন্তিগণের দন্ত সংঘর্বে সধ্ম অগ্নি সমুৎপন্ন হইতে লাগিল। কোন কোন গজবোধী প্রাসাত্তে অভিহত্ঃক্টয়া গিরিশৃঙ্গ হইতে পতিত বৃহৎ প্রস্তর খণ্ডের ন্যায় পতিত দৃষ্ট হইতে লাগিল। শূর পদাতিগণ্ধু নথর ও প্রাস অত্তে যুদ্ধ করিয়া পরস্পর নিহত 🗳 🚯 চিত্র মূর্ত্তি-ধারী দৃষ্ট হইতে

লাগিল। কুরু পাগুরদিগের সৈনিক পুরুষেরা পরস্পরের নিকট গমন পূর্বাক নানাবিধ ঘারতর শস্ত্র
দারা পরস্পরকে যমালয়ে উপনীত করিতে লাগিল।
তদনন্তর শাস্তমুপুত্র ভীয় রথ ঘোবে পৃথিবীকে নিনাদিত এবং ধমুঃশব্দে সকলকে মোহিত করিয়া
পাগুরদিগের প্রতি অভি গমন করিলেন। ধৃইতাম
প্রভৃতি পাগুর পক্ষ রথীগণও সযত্র হইয়া ভীষণ রব
করিয়া তাঁহার অভিমুখে অভিদ্রুত হইলেন। তদনন্তর আপনকার ও তাঁহাদিগের পক্ষ নর, অশ্ব, রথ
ও নাগগণের পরস্পর ভুমুল যুদ্ধ হইতে লাগিল।
অইম দিবস যুদ্ধারেন্তে চতুরশীতিতম অধ্যায়
সমাপ্ত ॥ ৮৪ ॥

-1010-

সঞ্জুর কহিলেন, মহারাজ! যখন ভীয়া সমরে কুন্ধ হইয়া সৈন্য দগ্ধ করিতে লাগিলেন, তথন পাগুবেরা ভাষ্করের ন্যায় তপস্ত ভীন্নকে নিরীক্ষণ করিতে मभर्थ रहेटलन ना। जननस्तत পाखरिनरभत मभूमास সৈন্য ধর্মপুজের শাসনামুসারে স্থশাণিত শর সমূহ দারা শৈন্য মর্দ্দন কারী ভীম্মের প্রতি ধাবমান হইল। রণ শ্লাঘী ভীন্ন মহাধনুর্দ্ধর সোমক, স্ঞয় ও পাঞ্চালদিগকে শায়ক সমূহ ছারা এক কালেই নি-পাতিত করিতে লাগিলেন। সোমক গণের সহিত পাঞ্চালগণ ভীম কর্তৃক বধ্যমান হইয়াও মৃত্যু-ভয় পরিত্যাগ করিয়া ভাঁহারই অভিমুখে শীঘ্র শীঘ্র গমন করিতে লাগিল। বীর্যাবান্ শান্তমুপুত্র ভীয় वष्टन तथीत मस्रक ছেদন এবং त्रशीमित्रक वित्रशी করিতে লাগিলেন। হে মহারাজ! ভীম্মের অস্ত্র দারা সাদী গণের মন্তক সকল অশ্ব হইতে পতিত এবং মাভঙ্গগণকে রক্ষ রহিত পর্বতের ন্যায় মনুষ্য রহিত ও প্রমোহিত দেখিতে লাগিলাম। হে নরা-ধিপ! রবি শ্রেষ্ঠ মহাবল ভীমনেন বংতীত পাগুব-দিগের পক্ষ এমন কোন পুরুষ ছিল না যে ভীয়কে নিবারণ করে; তিনিই ভীয়ের নিকুট গমন করিয়া নিবারণ করিতে লাগিলেন 🎼 জীম-ভীমসেনের সং-

আম দেখিয়া সর্ব সৈন্য মধ্যে ঘোরতর ভয়ানক কোলাহল হইতে লাগিল, এবং পাগুবেরা হৃষ্ট হইয়া সিংহনাদ করিতে লাগিলেন। সেই মহা 🖏 ।-জনক সংগ্রামে রাজা ছুর্য্যোধন সহোদর গণে পরি-রুত হইয়া ভীমকে রক্ষা করিতেছিলেন ; রথিবর ভীম-সেন ভীমের সারধিকে সংহার করিলেন, তাহাতে ভীয়ের রথ-ঘোটক চতুর্দিকে লম্ফ প্রদান পূর্ব্বক প্র-দ্রুত হইলে ভীমসেন কুরপ্রাস্ত্র আকর্ণ সন্ধান পূর্ব্বক নিক্ষেপ করিয়া স্থনাভের মস্তক ছেদন করিয়া ফেলি-লেন। তাহাতে স্থনাভ প্রাণত্যাগ পূর্ব্বক ধরাতলে নিপতিত হইলেন। মহারাজ! আপনকার পুত্র মহারথ স্থনাভ নিহত হইলে আদিত্যকেতু, বহ্বাশী, কুণ্ডধার, মহোদর, অপরাজিত, পণ্ডিতক ও চুর্জ্ঞর विभानाक, विठित कवठ ७ बायूय धाती भक्रमर्फन এই সাত ভাতা অসহিষ্ণু হইয়া যুদ্ধাভিলাবে বিচিত্ৰ ক্রত ধারী ভীমসেনের অভিমুখে গমন করিলেন। হে মহারাজ! যে প্রকার ইন্দ্র নমুচিকে প্রহার করেন, সেই প্রকার মহোদর, বক্স সদৃশ নয় বাণে ভীমকে বিদ্ধ করিলেন। এবং আদিত্যকেতু সপ্ততি, বহ্বাশী পঞ্চ, কুগুধার নবতি, বিশালাক্ষ সপ্ত এবং শক্র-বিজয়ী মহারথ অপরাজিত বন্ধ সংখ্য বাণে মহাবল ভীমকে বিদ্ধ করিলেন। তৎপরে পণ্ডি-তকও তিন বাণে ভীমসেনকে তাড়িত করিলেন। অমিত্রকর্ষণ ভীমসেন রণ মধ্যে শক্ত কর্ভৃক প্রহার আর সহু করিলেন না—তিনি বাম করে ধনুক অবনত করিয়া আনত-পর্ব্ব শর দারা আপনকার পুত্র অপরাজিতের স্থন্দর নাশিকা শোভিত মন্তুক ছেদন করিয়া ফেলিলেন। অপরাজিত, ভীমের হস্তে প্রাজিত হইলে, তাঁহার ছিন্ন মন্তক মহীতলে পতিত হইল। তৎপরে রকোদর সর্ব সৈন্যের দাক্ষাতেই এক ভল্ল দারা মহারণ কুগুধারকে যমা-লয়ে প্রেরণ করিলেন। তদনম্ভর অপরিমিত বল-বান ভীম এক শর সন্ধান পূর্বক পণ্ডিতকের উপর নিক্ষেপ্ করিলেন। বেপ্রকার কাল প্রেরিভ ভুজঙ্গম

মমুষাকে নিহত করিয়া ধরণীতলে প্রবেশ করে, জ্জ্ঞপ ভীম-নিক্ষিপ্ত সেই শর পণ্ডিতককে সংহার কঞ্জি ভূতলে প্রবেশ করিল। তৎপরে অদী-নাকা রকোদর পুর্বতন ক্লেশ অরণ করত তিন বাণে বিশালাক্ষের শিরশেছদন করিয়া ভূতলে নিপা-তিত করিলেন। অনন্তর তিনি মহাধমুর্ধর মহো-দরের স্তন হয়ের অভ্যন্তরে এক নারাচ বিদ্ধ করি-লেনু। তাহাতেই মহোদর নিহত হইয়া ভূপতিত হ্ইলেন। পরে এক বাণে আদিত্যকেতুর ছত্র ছেদন করিয়া অতি তীক্ষ্ণ এক ভলাস্ত্র ছারা তাঁহার শির-শ্ছেদন করিলেন। তদনস্তর সংক্রুজ হইয়া আনত পর্ব্ব এক শরে বছবাশীকে ষম সদনে প্রেরণ করি-লেন। হে নরপাল! আপনকার অন্যান্য পুত্রেরা, ভীমদেন পূর্বে সভা মধ্যে যাহা বলিয়াছিলেন, তাহা সত্য বিবেচনা করিয়া পলায়ন -করিলেন। তদনস্তর রাজা ছুর্য্যোধন ভাতৃব্যসনে কর্ষিত হইয়া আপনকার সমুদায় সৈন্য দিগকে কহিলেন, ভোমরা ঐ ভীমকে যুদ্ধে বিনাশ কর।

হে নরপাল! আপনকার মহাধমুর্দ্ধর পুত্রগণ এই ৰূপে জাতাদিগকে নিহত দেখিয়া, সভ্যবাদী মহা-প্রাজ্ঞ বিছুর পূর্বের অনাময় ও হিত বাক্য যাহা বলিয়াছিলেন, ভাহা তাঁহাদিগের স্মরণ হইল। হে জনাধিপ ! পুর্বের বিছুরের সেই হিতকর ও তথ্য বাক্য বাহা আপনি পুত্ৰ শ্নেহ, লোভ ও মোহে সমাবিষ্ট হইয়া বুঝিতে পারেন নাই, এক্ষণে তাহা প্রত্যক হইতৈছে। মহাবাছ ভীমসেন যে প্রকার কৌরব দিগকে সংহার করিতেছেন, ইহাতে নিশ্চয় বোধ হইটেতছে যে এ বলবান্ মহাবাছ আপনকার পুত্র-দিগের বধ নিমিত্তই জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। তদ-নম্তর রাজা হুর্যোধন মহাশোকাবিষ্ট ও অতি ছুঃখিত হইয়া ভীমের সকাশে গমন পূর্বক সাঞ লোচ-নে এইৰপ বিলাপ করিতে লাগিলেন, পিতামহ! আমার শুর ভাতারা ভীমদেন কর্তৃক যুদ্ধে নিহত रहेबार्ड वर अनाना ममूनाय मिनक भूक्रदबता

আমাদিগের জয় নিমিত্ত সয়ত্ব হইলেও জীমসেন
কর্তৃক বিনই হইতেছে। আপনি সর্বাদা বেন মধ্যক্ত
ভাবে আমাদিগকে উপেক্ষা করিতেছেন, অতএব
আমার এই চুদৈব দেখুন, যে আমি সমরে প্রবৃত্ত
হইয়া কুপথে আরোহণ করিয়াছি।

মহারাজ! আপনকার পিতা দেবত্রত ছুর্য্যো-ধনের ঐৰপ নিষ্ঠুর বাক্য শুনিয়া সাঞ্চ নেত্রে ठाँहारक विनातन, वर्म! त्यान, विश्वत, यनियनी গান্ধারী ও আমি, আমরা পূর্বেই তোমাকে বলি-য়াছি, কিন্তু তুমি আমাদিগের বাক্যগ্রাছ কর নাই। হে শত্রুস্থদন! আমি তোমার নিমিত্তে পূর্ব্বেই সি-দ্ধান্ত করিয়া রাখিয়াছি যে, আমি কি জোণাচার্য্য, আমরা কোন প্রকারেই যুদ্ধে মুক্ত হইতে পারিব না। আমি ইহা সতা বলিতেছি যে, ভীম ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীয় দিগের মধ্যে যাহার যাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিবে, তাহাকেই সংহার করিবে। অত্এব তুমি স্বর্গের প্রতি নিষ্ঠা পূর্ব্বক যুদ্ধে দৃঢ় মতি করিয়া স্থৈর্যাবলম্বন করত পাগুবদিগের সহিত যুদ্ধ কর দেবগণ ইন্দ্রের সহিত একত হইলেও পাগুবদিগকে যুদ্ধে পরাজিত করিতে সমর্থ নছেন, অতএব ভুমি যুদ্ধে স্থির বুদ্ধি করিয়া যুদ্ধ কর।

পঞ্চাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৫ ॥

ध्वता है कहितन, रह मक्षत्र ! जीत्र, जान उ द्वन, धक माज जी मरमन कर्ज् क जा मात वह भूजरक निरुष्ठ ति माज जी मरमन कर्ज् क जा मात वह भूजरक निरुष्ठ ति स्वा कि किति ति है रह स्व ! यथन जा मात भूरज्ञ तो श्रिक निरुष्ठ यूरक क्षत्र श्रीक रहेर उर्द्ध, जथन जा मि मर्स श्रीक ति वित्व कर्ज् के अभू क रहे ता दि । य स्व क जा मात भूरज्ञता मकत्व है स्व कर्ज् के अभू क रहे ता दि । य स्व क जा मात भूरज्ञता मकत्व है भत्र कर रहे ता है । य स्व क जा मात भूरज्ञता मकत्व है भत्र कर रहे ता है जि मान क्षत्र कर रहे ता स्व क जा मात है मकन स्व महाचा चृत्र अ जा मात गृत्र गर्म का स्व अ जा मात ग्रीक का स्व का

কি বলা যায়? বংল! আমি, ভীয় ও বিছুর মনদৰুক্ষি তুর্যোধনকে পুর্বে নিবারণ করিলেও সেআমাদিগের বাক্য গ্রাছ করে নাই, এবং পান্ধারীও তুর্বৃদ্ধি তুর্ব্যোধনের হিত-কামনায় পুর্বে নিরন্তর নিবারণ করিয়াছিলেন, কিন্তু সে মোহ প্রযুক্ত তাহাও বুঝিতে পারে নাই, তাহারই কল এই উপস্থিত হইয়াছে—ভীমনেন সংকুদ্ধ হইয়া বিশেষ কপে আমার পুশ্রদিগকেই প্রতি দিবস যুমালয়ে উপনীত করিতেছে।

সঞ্জয় কহিলেন, হে বিভো! আপনি যে তথন বিস্তুরের কথিত হিতকর যথার্থ বাক্য প্রবণ করেন নাই, তাহারই ফল এই উপস্থিত হইয়াছে, বিছুর তখন কহিয়াছিলেন " আপনকার পুত্রদিগকে দ্যুত हरेट निवाद्र करून, পाखवित्र व्यनिक हिन्छ। করিবেন না "। ছে নরনাথ! কাল প্রাপ্ত মনুষ্য যেমন পথা ঔষধ গ্ৰহণ করে না, সেইরপ আপনি হিতৈঘী স্ভদ্পণের ভাদৃশ হিতকর বাক্য যে অবণ করেন নাই, সেই সাধু বাকোর বিষয় এক্ষণে আপনকার নিকট উপনীত হইয়াছে। বিছুর, দ্রোণ, ভীম ও অন্যান্য হিইত্থী ব্যক্তির হিত্কর বাক্য না শুনি-য়াই কৌরবের। ক্ষয় প্রাপ্ত হইতেছেন। মহারাজ! আপনি পুর্বেষখন সেই স্বন্ধাক্য গ্রহণ করেন নাই, তথনই ইহা উপস্থিত হইয়াছে; দে যাহা হউক, এক্ষণে যে প্রকার যুদ্ধ হইয়াছে, তাহা আমার निकरे जासूर्युकीं करम खरा कब्रन। मधाङ्क काला যে প্রকার লোক-ক্ষয়কর মহা ভয়ানক সংগ্রাম হই-য়াছিল, তাহা আমি কীর্ত্তন করিতেছি, অবধান করুন।

তৎপরে সমুদায় সৈনা ধর্মপুজের আদেশানুসারে সংরক্ত হইরা ভীমকে সংহার করিবার মানদে ধাব-মান হইল। মহারথ ধৃউজ্বান, শিখণ্ডী ও সাত্যকি সৈনাযুক্ত হইরা ভীমের প্রতি অভিক্রত হইলেন। বিরাট ও ক্রপদ সমন্ত সোমকর্গণ সমভিব্যাহারে ভীমের অভিমুখে প্রয়াণ করিলেন। কৈকেয় রাজে-রা, ধৃউকেতু ও কুন্তিভোজ সৈনাগণের সহিত বর্মিত

रुरेशः जीरमत गरिषं यूकार्थं निःगत्रग क्रित्लन। অর্চ্চুন, ক্রৌপদীপুজেরা ও বীর্যাবাদ চেকিডান ফুর্য্যো-ধনের আদিউ সমস্ত রাজাদিগের সমীপেগমন বুর্বর-লেন। বীৰ্যাবান অভিমন্ত্ৰা, মহারথ হিড়িয়াপুত্র ও ভীমসেন, ইহাঁরা সংক্র্ছ হইয়া কৌরব গণের উপর আপতিত হইলেন। পাণ্ডৰ পক্ষীয় বোদ্ধাগণ ত্ৰিধা বিভক্ত হইয়া কৌরবদিগকে হনন করিতে লাগি-লেন, এবং কৌরবেরাও ত্রিধা বিভক্ত হইয়া পাণ্ডব পক্ষ দিগকে প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন। রথি শ্রেষ্ঠ দ্রোণ সংক্রুদ্ধ হইয়া সোমক ও সঞ্জয় গণকে যমালয়ে প্রেষণ করিবেন বলিয়া অভিক্রত হইলেন। মহান্সা স্ঞ্লন্নগণ ধন্তুজারী দ্রোণ কর্তৃক বধ্যমান হইলে, তাহাদিগের মহান্ আর্ডনাদ উপিত হইল। দ্রোণ-নিহত বছ ক্ষজ্রিয়কে রোপার্ড মমুষ্যের ন্যায় বিচেফীমান হইতে দেখাগেল। কুধাক্লিফী মমুষ্য-**पिरांत नात्र द्रांटका अप्तरकंद्र शकि-ध्रां** कृष्म, अत्नर्कत द्वापन धदः अत्नर्कत स्मानिर्धाष সদৃশ গৰ্জন ধনি শ্ৰুত হইতে লাগিল। মহাবল ভীমদেন কুন্ধ ও যেন দ্বিতীয় ক্বতান্ত হইয়া কৌরব সৈন্যদিপকে দারুণ মর্দ্দন করিতে লাগিলেন। সমু-**मात्र रेमना পরস্পর কর্তৃক পরস্পর বধামান হইলে,** তাহাদিগের শোণিত তরক্ষ বিশিষ্টা ঘোরা নদী সমুৎপন্না হইল। হে মহারাজ! কুরু পাওবদিগের সেই সংগ্রাম অতি ভুমুল হইরা যমরাষ্ট্র বৃদ্ধির কারণ হইয়া উঠিল। তদনন্তর ভীমসেন রণে ক্রুদ্ধ হইয়া বিশেষ ৰূপে বেগ সহকারে গজ সৈন্যের উপর আঁপ-তিত হইয়া ভাহাদিগকে যমালয়ে প্রেরণ করিতে লাগিলেন। গজ সকল ভীমের নারাচে অভিহত হইয়া কোন কোন টা বিষয় ও কোন কোন টা পতিত হইতে লাগিল, কোন কোন টা শব্দ করিতে লাগিল, এবং কোন কোন টা চতুর্দিকে জমণ করিতে থাকিল। বড় বড় নাগ সকল ছিন্ন-শুগু ও ছিন্ন-গাত্র হইয়া ক্রৌঞ্চ পক্ষীর ন্যায় নিনাদ করিতে করিতে ধরা-শात्री रहेएक नाशिन।

নকুল ও নহদের অশ্ব নৈচন্যর প্রতি অভিক্রত হইলেন ৷ কাঞ্চন শিরোভূষণ ভূষিত ও স্বর্ণালছ্ড-প্রক্রিছেদ সম্বিত প্রত প্রত সহস্র অপ্রকে नकून ७ महरमय कर्जुक निरुष हरेएछ मिथा शिन । পতিত আদে মেদিনীতল সমাকীৰ্ণ ছইল। ছে নর শ্রেষ্ঠ ! কোন কোন অব্বের জিহবা বিচ্ছিল হইল, কোন কোন অশ্ব ঘন ঘন নিশাস ত্যাগ করিতে वर्गानन, क्लान क्लान अप शकीपिरभन्न भरकृत नाम ধনি করিতে লাগিল, কোন কোন অস্থ প্রাণ পরি-ত্যাগ করিল, এবং অনেক অশ্ব নিহত হইয়া নানা বিধ মূর্ত্তি ধারণ করিল ; ধরাতল এতাদৃশ অশ্ব সমূহে প্রতিভাত হইতে লাগিল। হে ভারত। রণক্ষেত্রের নানা স্থান অৰ্জুন কৰ্ত্ত্ব নিহত রাজগণে বিকীণ হইয়া ভয়ানক ৰূপে প্ৰকাশ পাইতে লাগিল.। যেমন वमछ कारण व्यवना कुन्नम निष्ठात व्याष्ट्रम रवा, मिर ৰূপ পতিত ভগ্ন রথ, ছিন্ন ধক ও নিক্কুত্ত মহাক্র, চামর, ব্যক্তন, অতি মহাপ্রভা বিশিষ্ট ছত্র, হার, নিষ্ক, কেয়ুর, কুগুল শোভিত শীর্ষ, উঞ্চীষ, পতাকা, রথ নিমন্থ শোভন কাষ্ঠ ওরশ্মি সহিত বোক্তু, এই সকল বস্তুতে বস্থাতল সমাচ্ছন্ন হইয়া গেল। হে ভারত। শান্ত-নব ভীন্ন, রথি প্রধান জোণ, ক্ষম্বথামা, রূপ ও রুত-বৰ্মা, কুন্ধ হওয়াতে পাগুৰ পক্ষীয় দিগের ঐ ৰূপে ক্ষয় হইতে লাগিল, এবং পাণ্ডব পক্ষ সকল কুদ্ধ হওয়াতে আপনকার পক্ষেরাও ঐ ৰূপ ক্ষয় প্রাপ্ত হইতে লাগিল।

বড়শীতিতম অধ্যার সমাপ্ত । ৮৬।

সঞ্চয় কহিলেন, হেরাজেন্ড! সেই বীর-ক্ষয়্ত্রনক ভয়ানক যুদ্ধ উপস্থিত হইলে, প্রীমান স্থবলনদন শকুনি পাণ্ডবদিগের প্রতি অভিক্রত হইলেন। বীর শক্রহন্তা সাত্তবংশ হুদিকানন্দন কৃতবর্মাণ্ড পাণ্ডবদৈনের উপর উপক্রত হইলেন। এবং ভবংপক্ষবহু বোদ্ধা কামোল দেশীয়, নদীল, আরম্ভ দেশীয়, হলল, সিদ্ধু দেশোদ্ভব, বানায়ু দেশোৎপয়, ভিত্তিরি

দেশীর পরনবেগ ও পর্বাত বারী শুজবর্গ বছ সংখ্য অথে সমারত হইয়া চতুর্দিক্ পরিবারিত করিল। স্থবর্গালছ্ত-গাত্র বর্মাবিশিক্ট স্থশিক্ষিত বাতবেগ-গামী মুখ্য মুখ্য অথের সহিত শক্রতাপন বীর্যাবান্ শীমান অর্জুন-নন্দন ইরাবান্ হৃষ্টরূপ হইয়া সেই সকল সৈন্যের প্রতি আপতিত হইলেন।

हि महाताक ! हेतावान शीमान चर्च्यू त्नत्र उत्तरम নাগরাজ ঐরাবতের সুষার গর্ম্ভে জন্ম গ্রহণ করেন। পক্ষিরাজ গরুড়, মহাস্মা ঐরাবতের পুত্রকে হরণ क्तित्व अत्रावक कारात शूखवश्रक मस्रान-रीमा मीन-চিক্তা ও ছুঃখিতা দেখিয়া অর্জুনকে দান করেন। व्यर्क्तृन अविवास विरमय वमवर्षिनी सारे नागद्राक ছুহিতাকে ভার্যার্থ পরিগ্রহ করেন। এইকপে ইরা-বান্ পরক্ষেত্রে অর্জুনের ঔরসে সমুৎপন্ন হয়েন উনি নাগলোকে জননীর পরিপালিত হইয়া বির্দ্ধিত হইয়াছিলেন। উহাঁর ছুরাত্মা পিভৃবা পার্থের প্রতি ছেষ বশত উহাঁকে পরিত্যাগ করেন। ইরাবান্ সত্য-विक्रम, क्रवान्, वलमण्यम व्यवः श्वाना हरेया उठि-लन। यथन व्यर्क्न हेल्स्टलाट्क भनन क्रियाहित्नन, তথন ইরাবান্ তাহা শুনিয়া ইন্দ্রলোকে সত্তম গমন করিলেন। সত্যবিক্রম মহাবাছ ইরাবান্ পিতা অর্জু-নেরনিকট্রামন করিয়া অবাঞ্চিত্তে তাঁহাকে অভি-বাদন করিয়া ক্নতাঞ্জলি হইয়া বিনয় পূর্বক এইৰূপ আত্ম পরিচয় নিবেদন করিলেন, হে প্রভো! আপন-কার মঙ্গল হউক, আমি ইরাবান্ নামে আপনকার পুক্ত। এবং যে ৰূপে উহার জননীরে অর্জুনকে প্রদান করা হয়, সে সমস্তও ইরাবান্ ব্যক্ত করিলেন। অর্জুনের তথন পূর্বতন র্ত্তান্ত আমুপূর্বিক শর। হইল। পরে জিনি দেবরাজ ভবনে আত্ম সদৃশ গুণসম্পন্ন ইরাবান পুত্রকে আলিঙ্গন পূর্বক প্রীতি-মানু হইলেন। হে নৃপ! তিনি দেবলোকে তথন महावाह हेवावान्दक ब्लीजि शूर्वक, चकार्या निमित्र चारम कृतिरानन, " जूमि युक्त कारण जामामिरशत সাহায্য করিৰে"। ইরাবান বে আজ্ঞা ৰলিয়া স্বীকার

क्तिराम। रह महात्राच! धकरा युक् ममन् छेन-স্থিত হওয়াতে ভিনি কমনীয় বৰ্ণ ও কমনীয় বেগ-नील व्यथ नमूटर नमात्र रहेन्ना नमाश्र रहेटलन। কাঞ্চন ভূষিত নানাব্ৰ বিশিক্ত মনোবেগগামী তাঁ-राज ज्ञान नकन नर्ना, नानंत्र मदशा रूश्न भएनज्ञ নাায়, সংগ্রাম স্কুমিতে উৎপত্তিত হইল। ঐ সকল अध व्याप्तनकांत्र महारवधनील व्यथं इन्ह मरधाः धमन করিয়া পরস্পরের নাসিকা দারা নাসিকা ও ক্রোড় দার। ক্রোড় প্রেদেশ সমাহত করত স্বকীয় বেগে অভিহত হইয়া পতিত হইতে লাগিল। যেমন গরুড় পক্ষীগণের পতনে দারুণ শব্দ হয়, সেইৰূপ অশ্ব সমূহের পরস্পর পতনে স্থদারুণ শব্দ ব্রুত হইতে লাগিল। হে মহারাজ! সেই সকল অশ্বের আরোহী ব্যক্তিরা প্রস্পর আক্রমণ পূর্বক ঘোরতর হনন করিতে আরম্ভ করিল। সেই অতিশয় তুমুল नकून महात्वात नःथात्म हर्जुर्कत्क উভয় शक्त्रत्रहे অশ্ব সমূহ ভরজনিত স্বরায় সমাকুল হইল। প্রগণ পরস্পরের শরে ছিদ্যমান, শ্রমার্ডও ভূতলে বিলীন হইতে লাগিল। তাহাদিগের অশ্ব সকলও নিহত र्रेया পড़िन।

তদনন্তর সেই অশ্ব সৈন্য ক্ষয় প্রাপ্ত ও কিঞ্ছিৎ
অবশিষ্ট থাকিলে শকুনির অমুক্ত শৌর্য-সম্পন্ন যুদ্ধবিশারদ ভীষণাকৃতি বদ্ধ-সন্নাহ গজ, গবাক্ষ, র্যভ,
ঢর্মবান্, আর্ক্সব ও শুক নামে মহা বলবান্ এই ছয়
ভ্রাতা শকুনির সহিত স্বকীয় মহাবল যোধ গণে
পরিবার্যামাণ হইয়া বায়ুবেগ সমস্পর্শ বায়ুবেগসম
বেগরান্ শীল-সম্পন্ন বয়ংস্থ উত্তম উত্তম তুরগে
আরোহণ পূর্বক মহৎ সৈন্যমগুলী হইতে নির্গমন
করত রণ মুখে অভিদ্রুত হইলেন। হে মহাবাছ!
যুদ্ধ ছুর্মদ গাল্লার দেশীয় উক্ত ছয় ভ্রাতা স্বর্গার্থ ছ্য্ট
ও বিজ্পরৈবী হইয়া মহৎ সৈন্য সম্ভিব্যাহারে অতি
ছুর্জের সেই সাদি সৈন্য ভেদ করিয়া প্রবেশ করিলেন। বীর্যাবান ইরাবান তথন ভাহাদিগকে স্বসৈন্য
মধ্যে যুদ্ধে প্রবিষ্ট দেখিয়া বিচিত্র আভ্রণ ও আয়ুধ্-

थात्री चलक त्यायगगरक बनिरणन, त्यायगम्। औ नकन श्रुकाडे शक याबाता असूनामी अ नाइन গণের বহিত যে নীতি ক্রমে নিহছ হয়, ভাহা ভোমরা বিধান কর। ইরাবানের সমুদার বোদা যে আজা বলিরা ভাঁহাদিথের শত্রু ছুক্তের সেই সকল সৈন্য নিহত করিল। স্কুবল নন্দনের। সকলে षाभनामिरभन्न रेमनारकं हैन्नावारमन्न रेमनाः कर्ज्क নিপাতিত দেখিয়া ক্রোধাকুল হইয়া ইরাবাবের সমীপে ধাৰন পূৰ্ব্বক চতুৰ্দ্ধিকে পরিবেইটন করি-লেন, এবং পরস্পার সকলেই সকলকে প্রহার করিতে আদেশ করত শাণিত প্রাসাস্ত্র দ্বারা তাড়ন করিতে করিতে রণস্থল মহাকুলিত করিয়া ধাৰমান হইলেন। হে রাজন্! ইরাবান ভোত্র বিদ্ধ হন্তীর ন্যায় সেই महाचामिरगत स्डीकः थानात्व निर्दिक रहेशा गनिङ क्रियात्रोर मिख-करनवत्र स्ट्रेलन। जकाकी देत्रा-বান্ তাঁহাদিগের বহু ক্রনের অস্ত্র প্রহারে বক্ষঃ স্থল, পৃষ্ঠ ও পাশ্ব ছয়ে সাজিশয় সমাহত হইয়াও নিরতিশয় ধৈর্যাবলম্বন হেতু ব্যথিত হইলেন না। প্রভাত শক্র পুরঞ্জর ইরাবান্ সংক্রন্ধ হইয়া স্থশা-ণিত শর নিকর ছারা তাঁহাদিগের সকলকে বিদ্ধ করিয়া মোহিত করিলেন এবং স্থশরীর-বিদ্ধ প্রাস সকল উৎকর্ষণ পূর্বক নিঃসারিত করিয়া তত্ত্বারাই স্থবলপুত্রদিগকে প্রহার করিতে লাগিলেন। ডৎ-পরে স্থবল-পুত্রদিগকে বিনাশ করিবার মানদে কোৰ হইতে ধড়ুগ নিজৰ্ষণ ও চৰ্মা এহণ করিয়া ত্বরা সহকারে পদত্রজে প্রক্রত হুইলেন। ভদনস্কর স্থবলস্থত সমুদীয়ের মোহ বিন্ফ হইলে ভাঁছারা পুনর্বার ক্রোধাবিউ হইয়া ইয়াবান্কে লক্ষ্ করিয়া ধাৰমান হইলেন। বল-দাপিত ইরাবান্ও ধড়্গ লইয়া হস্ত লাঘব প্রদর্শন করত তাঁহাদিগের সক্-লের অভিমুখে গমন করিতে লাগিলেন। সুবল-পুরেরা সকলেই ক্রতগামী অশ ছারা লয়ু বিচরণ ক্রিয়াও লমু বিচরণকারী ইরাবানের রক্ষু প্রাপ্ত ररेए भावित्वन ना। जारात्रा नकत्व देवादान्त्य

ভূতলন্থ দেখিরা সমাকৃপরিবেইন পূর্বক গ্রহণ করিবার উপক্রম করিলেন। অনন্তর তাঁহারা সমীপাগত
হইলে শক্রকর্ষণ ইরাবান ছুই হন্তেই খড্গ ছারা
তাঁহাদিগের দেহ, আয়ুধ ও অলঙ্কার-শোভিত বাছ
কর্ত্তন করিতে লাগিলেন। তাঁহাদিগের মধ্যে র্যভ ব্যতীত সকলেই নির্বন্তাক হইরা প্রাণ পরিত্যাগ পূর্বক ভূমিতে পতিত হইলেন। র্যভ বছধা ক্ষত বিক্ষত হইরাও দেই মহাভীবণ বীর-কর্ত্তন সংগ্রাম হইতে কোন প্রকারে মুক্ত হইলেন।

মহারাজ! ঋষাশৃক্ষের পুত্র রাক্ষস অলম্ব মহা-धतुर्फत, भारावी अवर शृद्ध जीमरमन कर्ज्क वक রাক্ষদের সংহার করণ হেতু তাঁহার প্রতি তাহার বৈরিতা ছিল; আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন স্থবল-পুজ্রদিগকে মৃত ওপতিত দেখিয়া ক্রোধাবিষ্ট চিত্তে সেই ঘোর-দর্শন অরিন্দম রাক্ষস অলপুষকে কহি-লেন, হে বীর! ঐ দেখ, কাল্কনের পুক্র মায়াবী বল-বান্ ইরাবান্ আমার সৈন্য বিনাশ করিয়া দারুণ অপ্রিয় কার্য্য করিল। হে বংস! ভূমি স্বেচ্ছাগামী, সায়ান্ত্রে দক্ষ এবং ভীমসেনের সহিত তোমার বৈ-রিতা আছে, অতএব ভুমি ঐ ইরাবান্কে বিনাশ কর। ভীষণাক্ষতি রাক্ষস অলম্য যে আজ্ঞা ৰলিয়া সিংহনাদ করত অর্জ্জ্ন-পুত্র ইরাবানের নিকট গমন করিল। অলমুয় স্ব স্ব বাহনে সমাৰ্চ সমর-নিপুণ নির্মাল প্রাস যোধী প্রহারপটু বীরগণ-সম্পন্ন স্বকীয় অনীকে সমাত্বত হইয়া হতাবশিষ্ট চুই সহস্ৰ অশ্বারোহীতে পরির্ত মহাবল ইরাবান্কে সংহার করিবার মানসে অভিক্রত হইল। পরাক্রমশীল व्यक्रिब-रहा रेत्रावीन् मध्कुष ও वृत्रमाग रहेश रह-কাম ব্লাক্ষসকে নিবারিত করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। অতিমহাৰল রাক্ষমও ভাঁহাকে আপতিত হইতে দেখিয়া সত্তর হইয়া মায়া বিস্তার করিতে উপক্রম कतिन। পরে সৈন্য সকল নিহত হইলে যুদ্ধ-ছুর্মাদ উভয়ে বৃত্ত বাসবের ন্যায় সংগ্রামে অবস্থিত হই-लन। यूक-कूर्यम महावल हेतावान् यूक-कूर्यम त्राक्तन-

কে সন্মুখে অভিক্রত দেখিয়া ক্রোধ-জনিত ত্বরাপর হইয়া তাহার প্রতি ধাবিত হইলেন; পরে রাক্ষস সমীপগত হইলে খড়গ দারা তাহার উচ্ছ্রল ধরুক ও বাণ সকল পঞ্চধা **করিরা ছে**দন করিলেন। রাক্ষস অলম্ব ধনুক ছিন্ন দেখিয়া বেগ পূর্ব্বক অন্ত-রীকে প্রবিষ্ট হইল, এবং অতিকুদ্ধ ইরাবান্কে মায়া ছারা বিমোহিত করিল। সর্ব্ব মর্শ্মজ্ঞ ছুর্জেয় ইরাবান্ও মায়া বিদ্যা **অবগত ছিলেন; এবং স্বেচ্ছা**-মত ৰূপ ধারণ করিতে পারিতেন। রাক্ষস অল-ষ্য অন্তরীক্ষে প্রবিষ্ট হইলে, তিনিও আকাশে উৎ-পতিত হইয়া মায়া দ্বারা রাক্ষসকে মুগ্ধ করিয়া তা-হার দেহ কর্ত্তন করিতে লাগিলেন। রাক্ষস-প্রধান অলম্ব পুনঃপুন ছেদিত হইয়াও যৌবন ৰূপ লাভ করিয়া সমগ্র অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সম্পন্ন হইতে লাগিল। হে রাজেন্দ্র! রাক্ষসদিগের মায়া ব্যাপার সহজ, এবং বয়ংক্রম ও নানাবিধ মুর্জি ধারণও ইচ্ছামুযায়ী হইয়া থাকে, এই কারণেই তাহার দেহ বারংবার ছিন্ন হইরা পূর্ব্ববৎ হইতে লাগিল। ইরাবান সেই মহাবল রাক্ষসকে তীক্ষ্ণ পরশ্বধ অত্ত্রে পুনঃপুন ছেদন করিতে লাগিলেন। সেই রাক্ষস বীর, বল-শালী ইরাবান কর্তৃক রক্ষের ন্যায় ছিদ্যমান হইয়া ভয়ানক শব্দ করিতে লাগিল, তাহার শব্দ অতি তুমুল হইয়া শ্রুতি বিবরে প্রবিষ্ট হইল। বলশীল রাক্ষস পরশ্বধাস্তে ক্ষত-কলেবর হইয়া বছ রুধির স্রাব করত ক্রোধ পূর্ব্বক বেগ প্রকাশ করিতে লাগিল, এবং রণ মধ্যে সকলের সাক্ষাতে অর্জ্জুন-পুত্র বীর যশস্বী প্রতিপক্ষ ইরাবান্কে প্রবল দেখিয়া ভয়ানক ৰূপ ধারণ পূর্বক তাঁহাকে গ্রহণ করিবার উপক্রম করিল। ইরাবান্ও ছুরাত্মা রাক্ষদের তাদৃশী মারা দেখিয়া ক্রোধাবিষ্ট চিন্তে মায়া সৃষ্টি করিতে উপক্রম করিলেন। তিনি সমরে অনিবর্তী হইয়া ক্রোধাভিভূত হইলে ভাঁহার মাতৃ-বংশীয় নাগ তাঁ-হার সমীপাগত হইয়া সমস্ত দিকে বছল নাগে পরির্ত কণা-মণ্ডল-বিশিষ্ট অনম্ভ সদৃশ ৰূপ ধা-

রণ করিলেন, এবং রাক্ষস অলম্বকে নানা প্রকার নাগে আচ্ছাদিত করিলেন। রাক্ষস-পুরুব অলম্ব বছ নাগে আচ্ছাদ্যমান হইয়া ক্ষণ কাল চিন্তা পূর্বক গরুড় রূপ অবলম্বন করত সেই সকল সর্পদিগকে ভক্ষণ করিয়া কেলিল। তাঁহার মাতৃবংশীর নাগকে অলম্ব মারা দ্বারা ভক্ষণ করিলে তিনি মোহিত হইলেন। অলম্ব ইরাবান্কে মোহিত দেখিয়া তৎক্ষণাৎ থড়গ দ্বারা নিহত করিয়া তাঁহার কুগুল ও মুকুট-বিভৃষিত প্রেম্পু সদৃশ মন্তক ভূতলে নি-পাতিত করিল।

কর্ত্তক সংহৃত হইলে ধৃতরাষ্ট্র পক্ষ সৈন্য সকল রাজ-গণের সহিত শোক রহিত হইল। সেই ভীষণ মহা সংগ্রামে উভয় সেনারই ঘোরতর মহান্ সঙ্কুল যুদ্ধ উপস্থিত হইল। সেই মহাসঙ্গুল রণে গজ, অশ্ব ও পদাতিগণ একত্রিত হইয়া গজগণ কর্ত্ত্ক, রথ, অশ্ব ও গঙ্গণ পদাতি সমূহ কর্তৃক, এবং পত্তি, অশ্ব ও রুধ ममूह त्रिशिश कर्ज़्क विनक्षे हरेटा लोशिल। अर्ज्जून স্বকীয় ঔরস পুত্র ইরাবানের বিনাশ সংবাদ জ্ঞাত হন নাই; তিনি সমরে ভীয়-রক্ষক খুর ক্ষজ্ঞিয়-গণকে বিনাশ করিতে ছিলেন। হে নরপাল! সহস্র সহস্র সঞ্জয় ও আপনকার পক্ষীয় যোধগণ সমরানলে প্রাণাছতি প্রদান করত পরস্পারকে সং-হার করিতে লাগিল। অনেকে মুক্ত কেশ, কবচ-বিহীন, বিরধ, ছিন্ন-কার্ম্মুক ও সমবেত হইয়া বাছ দ্বারা পরস্পরের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। শক্ত-ভাপন ভীন্নপাণ্ডব সেনাকে কম্পিত করত মর্ম্মভেদী বাণ সমূহ ছারা মহারথদিগকে নিহত করিতে লাগি-লেন। তিনি যুধিষ্ঠির-সৈন্যের বছল মনুষা, দন্তী, সাদী, রধী ও অশ্ব বিনাশ করিলেন। হে ভারত! সমরে ইন্দ্রের পরাক্রমের ন্যায়, তাঁহার,অদ্ভুত পরা-ক্রম দেখিলাম। এবং ভীমসেন, ধৃষ্টপ্লাম ও ধনুর্দ্ধর সাত্যকিরও অতি ভীষণ পরাক্রম প্রকাশ পাইতে লাগিল। পরস্ক জোণের বিক্রম দেখিয়া পাঞ্চবেরা

ভয়াবিউ হইলেন। তাঁহারা দ্রোণ কর্ত্ব পীড়িত হইয়া বলিতে লাগিলেন, "দ্রোণাচার্য্য একাকীই আমাদিগকে সৈন্যের সহিত নিহত করিতে পারেন, তাহাতে আবার উনি পৃথিবী-খাত খুর যোধগণে সংযুক্ত হইয়াছেন, ইহাতে কি না করিতে পারেন ?" তাদৃশ ভীষণ সংগ্রামে উভয় পক্ষ বীরগণই পরস্পরক্ত প্রহার সহু করিল না; সকলেই সংরক্ত হইয়া যেন রাক্ষস বা ভূতগণে আবিউ হইয়া যুদ্ধ করিতে লাগিল। দৈত্য-সংগ্রাম সদৃশ সেই বীর-ক্ষয়-জনক সংগ্রামে কাহাকেও আপনার প্রাণ রক্ষায় যত্ন করিতে দেখিলাম না।

সপ্তাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৮৭॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! মহারথ পাওবেরা ইরাবান্কে সংগ্রামে নিহত দেখিয়া কি করিলেন, তাহা আমার নিকটে কীর্ত্তন কর। সঞ্জয় কহি-लन, रह ज्रुभरा ! जीमरमन-श्रुख त्राक्रम घटि। १ कि ইরাবান্কে সংগ্রামে নিহত দেখিয়া অতিভয়ানক নিনাদ করিতে লাগিল। তৎকালে তাহার শব্দে পর্বত ও কাননের সহিত সাগর-বসনা পৃথিবী, **अख**तीक, ममस मिक् ও বিদিক্ कम्পिত हहेरु লাগিল। অতি মহান্ সেই শব্দ শুনিয়া আপনকার সৈন্যদিগের ঊরুস্তম্ভ, কম্পন 🛭 স্বেদ নিংস্ত হইল। হে রাব্দেন্দ্র! আপনকার পক্ষ সকলেই সিংহ-ভীত रखीत नाात्र मीनिष्ड रहेता मर्ख मिटक विटिक-মান হইল। রাক্ষম ঘটোৎকচ নির্ঘাত সদৃশ অতি মহাশব্দ করিয়া ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ পূর্ব্বক উচ্জ্বলিত এক খূল উদাত করণানস্তর নানাবিধ অস্ত্র শস্ত্র ধারী রাক্ষস-পুক্ষবগণে পরিরত ও অতি কুদ্ধ হইয়া কা-लाखक यत्मत्र नाात्र ममाभे इहेल। ताका छूर्यााधन ভীম-দর্শন সংকুদ্ধ ঘটোৎকচকে আপতিত এবং স্বকীয় সৈন্য সকলকে তাহার ভয়ে বিমুখীক্কত দেখিয়া মুছমুছ সিংহনাদ করিয়া বিপুল ধলুক গ্রহণ-পূর্বক ঘটোৎকঢ়ের প্রতি উপক্রত হইলেন। বঙ্গাধিপতি

স্বয়ং মদ্রাবী পর্বতোপম দশ সহস্র কুঞ্জর সৈন্যের সহিত, ছুর্য্যোধনের অমুগামী হইলেন। রাক্ষস ঘটোৎকচ আপনকার পুত্রকে গজ-সৈন্যে সমার্ত হইরা আসিতে দেখিয়া তাঁহার প্রতি কোপান্বিত হইল। তং পরে রাক্ষসগণের সহিত ছুর্য্যোধন-সৈ-तात जुमूल लाम-रुर्ग युक्त जातक रहेल। मञ्ज-रुख त्राक्रमभग त्यच्रतम्बत्र नाम् मयूमाञ भक्षरमना प्रिशा ক্রোধ-সহকারে সবিছ্যাৎ মেখের ন্যায় বিবিধ নিনাদ করিরা শর, শক্তি, ঋষ্টি ও নারাচ দ্বারা গজ-যোধি-গণকে প্রহার করিতে করিতে ধাবমান হইল, এবং ভিন্দিপাল, খুল, মুদার, পরশ্বধ, পর্বত-শৃক্ত ও রক্ষ দ্বারা রুহৎ রুহৎ হস্তীকে প্রহার করিতে লাগিল। হে মহারাজ! দেখিলাম, নিশাচরগণ হস্তীগণকে হনন করাতে তাহাদিগের মধ্যে কোন কোন হস্তীর কুম্ভ বিদীর্ণ, কোন কোন হস্তীর গাত্র হইতে রুধির নির্গত এবং কোন কোন হন্তীর গাত্র ক্ষত বিক্ষত হইয়া গেল। এই কপে গজযোধীগণ ক্ষয় প্রাপ্ত ভগ্ন হইলে ছুর্য্যোধন রাক্ষসদিগের প্রতি উপদ্রুত হই-লেন। শত্রুতাপন ছুর্য্যোধন ক্রোধের বশতাপন্ন ও জীবন ত্যাগে ক্তনিশ্চয় হইয়া রাক্ষসদিগের প্রতি শাণিত বাণ সকল নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। মহাধনুর্দ্ধর আপনকার পুত্র সংক্রুদ্ধ হইয়া তাহা-मिर्गित अधान अधान ज्ञाकमिर्गित इनन कतिरलन। মহাবল ছুর্যোধন বেগবান্, মহারৌজ, বিছ্যাজ্জিহ্ব ও প্রমাধী, এই চারি রাক্ষসকে চারি বাণে নিহত করিলেন। তদনন্তর অনেয়াত্মা ভরতৃ-প্রবর চুর্য্যো-ধন রাক্ষস-সৈন্যের উপর পুনংপুন ছঃমহ শর বর্ষণ করিতে লাগিলেন। মহাবল ভৈমসেনি আপনকার পুজের সেই মহৎ কর্ম দেখিয়া ক্রোধে ছলিয়া উঠিল। সে অশনি-স্বন সদৃশ নিস্বনবান মহৎ শরা-সন বিক্ষারণ করিয়া অরিন্দম ছুর্যোধনের প্রতি বেশ পূর্বক্র অভিদ্রুত হইল। হে মহারাজ! আপন-কার পুত্র ছুর্যোধন তাহাকে কালস্ট অন্তকের নায় আপডিত হইতে দেখিয়াও ব্যথিত হইলেন

না। পরে কুরভাবাপন্ন ভৈমসেনি ঘটোৎকচ ক্রোধে সংরক্ত-লোচন হইয়া আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধনকে विनन, त्र पूर्विकि कि खित्र! जांकि जांगि जागात পিতা মাতার ঋণ পরিশোধ করিব, তুই অতি নৃশংস হইয়া আমার পিতা পিতৃব্য দিগকে যে ছল দ্যুতে পরাজিত করিয়া দীর্ঘ কাল প্রবাসিত করি-शाहिलि, त्रज्ञचला এक तञ्च-भत्नीथाना क्रभूम-निम्मनी ক্ষণাকে যে সভায় আনিয়া বছধা ক্লেশ প্রদান করি-য়াছিলি, এবং আমার পিতা পিতৃব্যগণের অরণ্যে বাস কালে দ্রৌপদী যখন আশ্রমে অবস্থান করেন, তথন যে ছুরাত্মা সিন্ধুরাজ তোর প্রি'য় কার্য্য করিবার মানদে আমার পিতা পিতৃব্যদিগকে পরিভব করিয়া দ্রৌপদীকে দারুণ কফ দিয়াছিল, যদি ভুই রণ পরি-ত্যাগ করিয়া পলায়ন না করিন্, তাহা হইলে আজি আমি তোকে ঐ সকল অপমান ও তদ্বাতীত অন্যান্য ছুষ্কর্মের প্রতিফল প্রদান করিব। হিড়িয়া-স্থৃত এই ৰূপ বলিয়া দন্ত দারা ওঠ দংশন ও হক্ লেহন করত মহাধনুক বিক্ষারণ পূর্বক, যে প্রকার প্রার্ট্ কালে ধারাধর বারিধারা দারা ধরাধর অব-কীৰ্ণ করে, সেই ৰূপ মহৎ শর বৰ্ষণে ভূৰ্য্যোধনকে অবকীর্ণ করিল

অফাশীতিতম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ৮৮

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভরত-প্রবর! তদনন্তর রাজেন্দ্র তুর্য্যোধন সমরে দানবগণেরও তুঃসহ সেই বাণ বর্ষণ মহাহত্তীর জল বর্ষণ ধারণের ন্যায় ধারণ করি-লেন। তিনি ক্রোধাবিই হইয়া সর্পের ন্যায় দীর্ঘ-নিশ্বাস পরিত্যাগ করত পরম সংশয়াপয় হইলেন, পরে পঞ্চ বিংশতি সংখ্যক স্থতীক্ষ্ণ শাণিত নারাচ তাহার উপর পরিত্যাগ করিলেন। সেই সকল নারাচ গল্পছাদন পর্বতোপরি কুদ্ধ সর্প পতনের ন্যায় সহসা সেই রাক্ষসবরের উপর পতিত হইলে, রাক্ষস-প্রবর ঘটোৎকচ তাহাতে বিদ্ধ হইয়া গলিত-মদ কুঞ্গরের ন্যায় রক্তস্রাব করিতে করিতে রাজা

ছুর্য্যোধনকে বিনাশ করিতে মতি করিয়া, প্রস্তর-কেও বিদারণ করিতে পারে, এমত এক মহাশক্তি গ্রহণ করিল। মহাবাছ ঘটোৎকচ আপনকার পুজের বধ বাসনায় প্রজলিত-অশনি সদৃশ মহো-ক্ষাভা-সম্পন্ন স্থানীপ্ত দেই মহাশক্তি সমুদ্যত করিলে, বলশালী বঙ্গাধিপতি সেই শক্তিকে সমুদ্যত দেখিয়া পর্বত-সন্নিভ এক কুঞ্জর তাহার প্রতি চা-লিত করিলেন। তিনি শীঘ্রগামী সেই হস্তি-প্রবর চালিত করিয়া তদারোহণে ছুর্য্যোধনের রথের সক্ষুধ মার্গে সত্তর উপনীত হইয়া হস্তী দারা সেই ্রথ সমার্ত করিলেন। হে মহারাজ! ক্রোধ-রক্তিম-लावन चट्ठां ९कव कूर्या। धटनत तथ-मार्ग थीमान् বঙ্গরাজ কর্ত্তৃক আর্ত দেখিয়া সেই উদ্যত মহাশক্তি বঙ্গরাজের সেই হস্তীর উপরেই নিক্ষেপ করিল। হত্তী সেই ঘটোৎকচ বাছ নিক্ষিপ্ত শক্তি দারা অভি-হত হইয়া রুধির বমন করত পতিত হইল ও প্রাণ ত্যাগ করিল। সেই গজ পতিত হইবার সময়ে বল-भानी वदक्षंत्र दिश शूर्वक नम्ह अमान कत्रिया ध्रती-তলে অবতীর্ণ হইলেন। রাজা ছুর্য্যোধন সেই প্রধান হস্তীকে পতিত এবং সৈন্য সকলকে প্রভগ্ন দেখিয়া পরম ছুঃখিত হইয়া স্থপক্ষ সৈন্য পলায়নে পরাজয় ভাব লাভ করিয়াও আপনার অভিমানিতা ও ক্ষত্রিয় थर्म व्यवज्ञान भूर्वक भितित नाम व्यवज्ञ रहेश तहि-লেন। পরে পরম ক্রুদ্ধ হইয়া কালাগ্নি-সম তেজঃ-সম্পন্ন শাণিত এক বাণ সন্ধান পূৰ্ব্বক সেই ভীষণ নিশাচরের প্রতি পরিত্যাগ করিলেন। মহামায়াবী चটোৎকচ ইন্দ্রের অশনি সম প্রভা সম্পন্ন সেই বাণকে আপতিত হইতে দেখিয়া লাঘ্ব বিচরণে তাহা বিফল করিয়া ফেলিল। এবং ক্রোধে রক্তিম-লোচন হইয়া সমুদায় সৈন্যকে ত্রাসিত করত যুগান্ত-कानीन जनएमत्र नाम शूनस्तात घाएउत निनाम क्त्रिंग।

শান্তমু-নন্দন ভীম সেই ভীষণ রাক্ষসের স্থারিক শব্দ ভাষণ করিরা আচার্যোর সমীপে গমন পূর্বক কহিলেন, ঐ হিড়িয়া-নন্দন রাক্ষসের বেরপ যোরতর শব্দ প্রণত হইতেছে, ইহাতে নিক্ষরই বোধ হইতেছে, যে সেই রাক্ষস রাজা ছুর্য্যোধনের সহিত
যুদ্ধ করিতেছে। কোন প্রাণীই তাহাকে সংগ্রামে
জয় করিতে সমর্থ নহে। অতএব তোমাদিগের
মঙ্গল হউক, ভোমরা সেখানে গমন করিয়া রাজাকে
রক্ষা কর। যখন মহাভাগ ছুর্য্যোধনের প্রতি মহাসত্ত্ব রাক্ষস অভিদ্রুত হইয়াছে, তখন হে পরস্তপগণ! রাজাকে রক্ষা করাই আমাদিগের সকলের
পরম কার্য্য হইতেছে।

মহারথগণ পিতামহের বাক্য শ্রবণ করিয়া ত্বরা-পূর্বকু বেগ-সহকারে কুরুরাজের নিকটে প্রস্থান করিলেন। দ্রোণ, সোমদন্ত, বাহ্লিক, জয়দ্রথ, রূপ, ভূরিঅবাঃ, শল্য, আৰম্ভ্য, রুহদ্বল, অশ্বত্থামা, বিকর্ণ, চিত্রসেন ও বিবিংশতি, এই সকল মহারথ এবং ইহাঁদিগের অমুগত বহু সহস্র রধী আপনকার পুত্র ष्ट्रर्रिगंधतनत निक्षे भगतम्बू रहेशा मञ्जत हरेलान। শূল, মুদ্দার ও নানাবিধ শস্ত্র ধারী জ্ঞাতিগণে পরি-র্ত মহাবাছ রাক্ষ্স সম্ভম ঘটোৎকচ সেই মহার্থ-দিগের রক্ষিত অধর্বণীয় সৈন্যকে আততায়ী হইয়া সমাগত হইতে দেখিয়া বিপুল শরাসন গ্রহণ পূর্ব্বক মৈনাক পর্বতের ন্যায় অচল রহিল। তৎপরে ছুর্য্যোধনের সেই সকল সৈন্যের সহিত ঘটোৎকচের जूमून लामहर्यं। युक्त हरेटि नाशिन। রণ স্থলে সর্বত্ত তুমুল ধমুফকার শব্দ, দহুমান বংশ-বনের শব্দের न्यात्र व्यन्तिकाहत रहेक नाशिन। परही-গণের কবচোপরি অন্ত সকলের পতন ধনি, গিরি বিদারণ ধনির ন্যায় শ্রুত হইতে থাকিল। বীরগণের বাছ বিমুক্ত আকাশগত তোমর সকল গমনকারী সর্পের ন্যায় দৃষ্ট হইতে লাগিল। মহাবাছ রাক্ষ-সেন্দ্র পরম ক্রুদ্ধ হইয়া ভৈরব রব করত মহাধন্ত্রক বিক্ষারণ পূর্বক অর্কচন্দ্র বাণে আচার্যেল্ল কার্ম্মুক ছেদন ও এক ভল দারা সোমদভের ধল উন্মধিত করিয়া সিংহ্নাদ করিয়া উঠিল। পরে তিন বাণে

বাহ্লিকের স্তন ছবের মধ্য স্থল, এক বাণে ক্লপকে ও তিন বাণে চিত্রসেনকে বিদ্ধ করিল। পরে এক বাণ আৰুৰ্ণ সন্ধান পূৰ্বক সমাকৃ প্ৰয়োগ করিয়া বিকর্ণের জক্র দেশ তাড়িত করিল। বিকর্ণ তাহাতে ऋधित-পরিশ্বত হইয়া রখনীড়ে উপবিষ্ট হইলেন। হে ভরত-প্রবর! তদনস্তর প্রকাণ্ড কায় রাক্ষসবর সংকুদ্ধ হইয়া পঞ্চদশ নারাট ভূরিআবার প্রতি নি-ক্ষেপ করিল। সেই সকল নারাচ আশু ভূরিশ্রবার বর্দ্ম ভেদ করিয়া ধরণীতলে প্রবিফ হইল। তৎপরে সে, বিবিংশতি ও অশ্বত্থামা এই ছুই জনের ছুই সার্থি-কেশর দ্বারা তাড়িত করিলে, তাহারা উভয়েই অশ্ব-রশ্মি পরিত্যাগ করিয়া রথোপত্তে নিপতিত হইল। অনম্ভর অর্জচন্দ্র বাণে সিম্বুরাজ জয়দ্রথের স্বর্ণ-ভূষিত বরাহ-চিহ্নিত ধব্দ উন্মধিত করিয়া দিতীয় বাণে তাঁ-হার ধনুক ছেদন করিল, এবং ক্রোধে সংব্রক্ত-লোচন হইয়া চারি নারাচে মহাত্মা অবন্থিরাজের চারি অশ্ব নিহত করিয়া পূর্ণ সন্ধান পূর্ব্বক নিক্ষিপ্ত এক স্থশা-নিত সুপীত বাণে রাজপুত্র বৃহদ্বলের দেহ ভেদ করিল। বৃহদ্বল ভাহাতে গাঢ় বিদ্ধ ও ব্যথিত হইয়া রথোপত্থে উপবিষ্ট হইলেন। পরে রথস্থ সেই ব্লাক্ষসনাথ সাভিশয় কোধাবিষ্ট হইয়া আশীবিষ সদৃশ সুশানিত কতক গুলি বাণ যুদ্ধ-বিশারদ শলোর উপর নিক্ষেপ করিলে, সেই সকল বাণ শল্যকে বিদ্ধ করিল।

একোন নবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৮৯॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভরত-কুল-তিলক! রাক্ষস
ঘটোৎকচ আপনকার পক্ষ সেই সকল মহারথদিগকে রণবিমুখ করিয়া ছুর্যোধনের বিনাশ নানসে
উপদ্রুত হইল। আপনকার পক্ষ সেই সকল যুদ্ধবিশারদ মহারথগণ হননেকু ঘটোৎকচকে বেগিত
হইয়া রাজার প্রতি আপতিত হইতে দেখিয়া ধাবমান হইলেন। ভাঁহারা সিংহগণের ন্যায় নিনাদ

করত তাল প্রমাণ চাপ সকল বিকর্ষণ করিতে করিতে সেই এক রাক্ষসের প্রতি অভিক্রত হই-লেন। যে প্রকার শরৎ কালে ধারাধর-মণ্ডল বারি-ধারা ছারা ধরাধরকে অবকীর্ণ করে, সেই কপ্রতাহারা তাহাকে চতুর্দিকে শর-নিকর বর্ষণে সমাক্ষর করিলেন। তাহাতে সে, তোত্রপীড়িত হন্তীর ন্যায় গাঢ় বিক্ষ ও ব্যথিত হইয়া বিনতানন্দনের ন্যায় আকালে উৎপতিত হইল। ভীষণ নিম্ননোৎপাদনে সামর্থাবান রাক্ষর-প্রধান ঘটোৎকচ আকাশ ও দিগ্ বিদিগ্ নিনাদিত করত শারদীয় ঘনরন্দের ন্যায় অতি মহা নিনাদ করিল।

ভরত-বংশাবতংশ রাজা যুধিছির তাহার সেই
শব্দ শ্রবণ করিয়া অরিন্দ্ম ভীমসেনকে বলিলেন,
হে মহাবাহো! রাক্ষস ঘটোৎকচের যে ৰূপ ভৈরব
রব শুভি বিবরে প্রবিষ্ট হইতেছে, ইহাতে নিক্ষরই
বোধ হইতেছে, ধৃতরাষ্ট্রীয় মহা সৈনোর সহিত উহার
যুদ্ধ হইতেছে। বোধ হয় ঐ যুদ্ধ রাক্ষসের পক্ষে
অতি ভারাবহ হইয়াছে। আবার ওদিকে পিতামহ সংকুদ্ধ হইয়া পাঞ্চালদিগকে সংহার করিতে
সমুদাত হইয়াছেন, সেই সকল পাঞ্চালদিগকে রক্ষা
করিবার নিমিত্ত কাল্কন বিপক্ষদিগের সহিত যুদ্ধে
প্রবৃত্ত হইয়াছেন। হে ল্রাতং! এক্ষণে এই ছুই
কার্য্য উপস্থিত হইয়াছে, ইহা জ্ঞাত হইয়াও পরম
সংশ্রাপর হিড়িয়া-নন্দনকৈ রক্ষা করিবার নিমিত্ত
তুমি গমন কর।

ব্কোদর জ্যেতের আজ্ঞা শ্রবণ করিয়া স্বরাবান্
হইয়া সিংহনাদে সমুদায় পার্থিব দিগকে তাসিত
করত পর্বকালীন মহাসাগর-বেগের ন্যায় মহাবেগে প্রয়াণ করিলেন। সভাগৃতি, যুদ্ধ-ছুর্মদ সৌচিন্ধি, শ্রেণিমান, বস্থদান, বিভু কাশিরাজ-পুশ্র,
মহারথ অভিমন্ত্য-প্রমুখ দৌপদী-কুমারগণ, কর্জদেব, বিক্রমনীল ক্রমর্মা ও স্থ সৈন্য সমভিব্যাহারী
অনুপ-দেশাধিপতি নীল, ইহারা র্কোদরের অনুস্থানী
হইলেন। তাঁহারা বাই সহস্র রদামন্ত কুঞ্জর-

বোধগণ ও মহৎ রথবংশে সমবেত হইরা মহৎ
সিংহনাদ, নেমি নির্মোধ ও অশ্বপুর শব্দে বস্থারা
কম্পিত করত গমন পূর্বক রাক্ষসেক্র ঘটোৎকচকে
পরিবেউন করিয়া রক্ষা করিতে অবস্থিত হইলেন।
হে মহারাজ! আপনকার পক্ষ সৈন্য তাঁহাদিগের
আপতন কালীন বিবিধ শব্দ অবণ করিয়া তীমসেনের ভয়ে উদ্বিধ ও বিবর্ণ-মুখ হইয়া ঘটোৎকচকে
পরিত্যাগ পূর্বক প্রত্যার্ভ হইল।

কোন পক্ষেরই যোদ্ধা সংগ্রামে নির্ভ হইবার নহে, স্থতরাং তৎপরে উভয় পক্ষেরই অতি তুমুল যুদ্ধ আরক্ষ হইল। মহারথগণ পরস্পরের প্রতি ধাব-মান হইয়া নানাবিধ শত্র নিক্ষেপ পূর্বক প্রহার করিতে লাগিল। এই যুদ্ধে ভীরু ব্যক্তি সকলেও ভয়া-নক হইয়। উঠিল। সাদীগণ গজারোহীগণের সহিত এবং পিদাতিগণ রথীগণের সহিত পরস্পর সমরে আহ্বান করত যুদ্ধাবিষ্ট হইল। রথ, অশ্ব, গজ ও পদাতির সন্নিপাতে তাহাদিপের পদ নিক্ষেপ ও নেমি শারা ধূমারুণ বর্ণ তীত্র ধূলিপটলী উদ্ধৃত হইয়া রণভূমি সমাচ্ছ করিল। কাহারো স্ব পক্ষ বা পর পক জ্ঞান রহিল না। মহৎ হত্যাজনক লোম-हर्सन जानून निर्मर्यगाम मः आदम शिका शूक्रदक उ পুত্র পিতাকে জানিতে পারিল না। গর্জনকারী মমুষ্য ও নিক্ষিপ্ত শত্ত্বের অতি মহান্ শব্দ যেন প্রেত লোকের শব্দ সদৃশ হইতে লাগিল। গজ-বাজি-মমুষ্য-শোণিত ৰূপ জলের তরঙ্গ-বিশিষ্টা এবং কেশ-क्लांश क्श रेमवाल ও माइटल ममन्त्रिं नहीं. ममूर-পদ্মা হইল। যে প্রকার প্রস্তর খণ্ড পতিত হইলে শব্দ হয়, সেই ৰূপ মনুষ্যদিগের দেহ হইতে মস্তক প্রতনের ধনি শ্রুত হইতে লাগিল। মস্তক রহিত মনুষ্য, ছিন্নগাত্র বারণ ও ভিন্ন দেহ অশ্বে বস্ত্রনারা সন্ধীর্ণ। হইল। মহারথগণ পরুম্পর পরুম্পরের প্রতি শব্র মোচন করত প্রহার করিতে সমুদ্যত হইয়া ধাবমান হইলেন। অশ্ব সকল অশ্বারোহীদিগের ে কর্তৃক চালিত হইয়া অশ্বদিগের নিকট গমন পুর্বক

পরস্পার কর্তৃক সমাহত ও গত-জীবিত হইয়া নি-পতিত হইতে লাগিল। মন্তুবোরা ক্রোধে রক্ত-লোচন হইয়া মনুষ্যদিগের সমীপে গমন পূর্বক বক্ষংস্থল দ্বারা পরস্পারের বক্ষংপ্রদেশ সমাল্লিফ করিয়া নিহত করিতে লাগিল। হন্তী গণ বিপক্ষ-নিবারক মহামাত্র গণ কর্ভৃক চালিত হইয়া দম্ভাগ্র-ভাগ দার। হন্তীগণর্কে নিহত করিতে থাকিল। পতাকা দারা সমলক্ষৃত সেই সকল সমাহত হন্তী রুধিরসিক্ত হইয়া সবিছ্যুৎ মেঘের ন্যায় পরস্পর मः मुख्य हुक हुक वाशिल। क्यांन क्यांन हुकी, বিষাণের অগ্রভাগে নির্জিন্ন-কায় ও কোন কোন হস্তী তোমরাত্রে ছিল্লকুম্ভ হইয়া গর্জ্জমান মেঘরুদের ন্যায় নিনাদ করত ধাবমান হইল। কোন কোন হন্তীর শুণ্ড দ্বিধা ছিন্ন হইল, কোন কোন হন্তীর গাত্র ছিন্ন হইয়া গেল, তাহারা সেই ভুমুল রণ স্থলে ছিন্নপক্ষ পর্বতের ন্যায় নিপতিত হইল। বৃহৎ র্হৎ হস্তী সকলের পার্শ্ব প্রেদেশ অপরাপর হস্তী কর্ত্ত্ব বিদারিত হওয়াতে, যে প্রকার পর্বত হইতে গৈরিকাদি ধাতু বিগলিত হয়, সেই প্রকার তাহা-দিপের গাত্র হইতে শোণিত বিগলিত হইতে লা-গিল। কত কত হস্তী নারাচ-নিহন্ত ও তোমর-বিদ্ধ এবং তাহাদিগের আরোহী নিহত হওয়াতে, তাহা-िक्षा क्षा क्षा कि स्था का के कि का कि कि का গিল। কত কত মদমত্ত হন্তী নিরকুশ হইয়া শত শত রথ, অশ্ব ও পদাতিদিগকে পরিমর্দ্দন করিতে लाभिता। ज्यानक जम्म य य य जमादाही कर्ड्क প্রাস ও তোমর দারা তাড়িত হইল,সেই সেই অখা-রোহীর অভিমুখেই দিক্ সকল ব্যাকুলিত করিয়া অভিমুখীন হইতে লাগিল। বীর-কুলোদ্ভব রখী সকল তমুত্যাগে ক্লত-নিশ্চর হইয়া স্বকীয় শক্তির পরাকাষ্ঠা অবলম্বন পূর্ব্বক রথিগণের সহিত নির্ভী-কের ন্যায় সমর কার্য্য করিতে লাগিলেন। যোধ গণ সেই অবমর্দ সংগ্রামে স্বরম্বর স্থলের ন্যার যশ বা স্বুর্কের প্রার্থী হইয়া পরস্পর প্রহার করিতে

লাগিল। এতাদৃশ লোমহর্ষণ সংগ্রামে ধার্তরাষ্ট্রীর মহং সৈন্য প্রায় বিষুখীক্ষত হইল। ন্বতি তম অধ্যার সমাপ্ত ॥ ৯০ ॥

সঞ্চয় কহিলেন, মহারাজ! স্বয়ং রাজা ছুর্যোধন
স্থানীয় সৈন্যদিগকে নিহত দেখিয়া ক্রোধাবিই-চিত্তে
আরন্দম ভীমসেনের অভিশুখে ধাবমান হইলেন,
ইন্দ্রের অশনি সম নিস্থন বিশিষ্ট মহাশরাসন গ্রহণ
পূর্বক অতিশয় শর বর্ষণে ভীমসেনকে, সমাকীর্ণ
করিলেন, এবং ক্রোধ-সমন্থিত হইয়া লোম-বাহী
স্থতীক্ষ্ম এক অর্জচন্দ্র বাণ সন্ধান পূর্বক ভীমসেনের
ধরুক ছেদন করিয়া কেলিলেন। মহারাজ! মহারথ
ছুর্যোধন ভীমসেনের মর্মা স্থল দৃঢ় বিদ্ধা করিয়া স্থরমাণ হইয়া গিরি বিদারণ ক্ষম এক স্থশাণিত বাণ
সন্ধান পূর্বক তদ্ধারা ভীমসেনের বক্ষঃস্থল বিদ্ধা
করিলেন। তেজস্বী রুকোদর তাহাতে গাঢ় বিদ্ধা ও
ব্যথিত হইয়া স্ক্র পরিলেহন করত স্থবর্ণ-বিভূষিত
রথ ধ্বজ অবলম্বন করিয়া রহিলেন।

ঘটোৎকচ ভীমসেঁনকে বিমনা দেখিয়া ক্রোধা-নলে, দহনেকু পাবকের ন্যায়, ছলিয়া উঠিল, এবং পাত্তব পক্ষীয় অভিমন্ত্রা প্রমুখ মহারথ গণ সম্ভ্রমা-দ্বিত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে শব্দ করিতে করিতে রাজা ছুর্য্যোধনের প্রতি ধাবমান হইলেন। ভরদ্বাজ-পুত্র দোণ অভিমন্য প্রভৃতিকে সংকুদ্ধ ও সম্ভ্রমান্থিত হইয়া আসিতে দেখিয়া আপনকার পক্ষ মহারথ দিগকে বলিলেন, ঐ পাগুব পক্ষীয় মহাধনুর্দ্ধর মহা-রুধগণ ক্রোধাবিষ্ট ও জয়-নিষ্ঠ হইয়া ভীমকে অগ্র-বৰ্ক্তী ও ভীম নিনাদ করিয়া ক্ষল্রিয়গণকে ত্রাসিত করত নানাবিধ শস্ত্র নিক্ষেপ করিতে করিতে রাজা ছুর্য্যোধনের প্রতি উপক্রত হইতেছেন, রাজাও ব্যস-নাৰ্ণবে নিমগ্ন হইয়া সংশয়াপ্ত্ৰ হইয়াছেন; অতএব হে মহারথ গণ! তোমাদিগের কল্যাণ হউক, তো-মরা ত্রমাণ হইয়া গমন পূর্বক রাজাকে রক্ষা কর। সোমদত্ত প্রভৃতি আপনকার পক্ষ রাজগণ আচার্য্যের

সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া পাগুব সৈন্য সমীপে গমন করিলেন। রূপ, ভূরিশ্রবা, শল্য, জোণপুত্র, বিবিং-শতি, চিত্রসেন, বিকর্ণ, জয়ক্রথ, রুহদ্বল ও মহাধমুর্জ্র অবন্তিরাজেরা কুরুরাজকে পরিবারিত করিলেন। ভাঁহারা বিংশতি পদ গমন করিয়াই প্রহার করিতে আরম্ভ করিলেন। পরে পরস্পর জিঘাংস্থ পাগুব ও ধার্ত্তরাষ্ট্র উভয় পক্ষই প্রহার করিতে লাগিলেন। महावाह जानावाद्या कुक्र शक तमहे महात्रथीनगरक পূর্ব্বোক্ত বাক্য বলিয়া মহৎ কার্দ্মক বিক্ষারণ পূর্ব্বক ষড় বিংশতি বাণে ভীমকে বিদ্ধ করিলেন, এবং পুনর্বার সত্তর হইয়া, শরৎ কালীন মেঘ কর্তৃক পর্বতোপরি বারি ধারা বর্ষণের ন্যায়, শর বর্ষণে সমাকীর্ণ করিলেন। মহাবল মহাধমুর্দ্ধর ভীমসেনও সত্তর হইয়া দশ বাণে আচার্য্যের বাষ পার্ম বিদ্ধ করিলেন। বয়োর্জ আচার্য্য তাহাতে সহসী গাঢ় বিন্ধ, বাধিত ও সংজ্ঞাহীন হইয়া রথ ক্রোড়ে উপ-बिके इहेटलन।

স্বয়ং রাজা ছুর্য্যোধন ও দ্রোণনন্দন, গুরুকে কাতর দেখিয়া সংকুদ্ধ হইয়া ভীমসেনের সমীপে অভিক্রত **इरेलन। महावाछ जीमरमन छाँहामिरभेत पूरेबनरक** কালান্তক যমের ন্যায় আপতিত হইতে দেখিয়া युता महकारत भना लहेशा तथ हहेरा मयुत लन्छ প্রদান পূর্বেক সেই যমদণ্ড সদৃশ গুর্বী গদা সমুদ্যত করিয়া অচল গিরির ন্যায় ভূতলে অবস্থিত হই-লেন। কুরুরাজ ছুর্যোধন ও অশ্বত্থামা ভীমসেনকে শৃঙ্গযুক্ত কৈলাস পর্বতের ন্যায় উদ্যত-গদ দেখিয়া উভয়ে মিলিত হইয়া তাঁহার প্রতি ধাবিত হইলেন। व्रक्तामत्र अस् विल-व्यवत क्रूरेक्न एक द्वावान् ए একত্রিত হইয়া আপতিত হইতে দেখিয়া ত্রুমাণ হইরা বেগ পূর্ব্বক জাঁহাদিগের অভিমুথে ধাবিত হইলেন। দ্বোণাচার্য্য প্রভৃতি সমস্ত কৌরব মহারথ ভীমদর্শন ভীমসেনকে সংকুদ্ধ হইয়া আপতিত হইতে দেখিয়া তাঁহাকে নিহত করিবার মানসে ত্বব্রিড হইয়া তাঁহার সমীপে ধাবিত হইলেন, এবং সকলে একত্রিত হইরা চতুর্দ্দিগ্ হইতে ভাঁহার বক্ষঃ-হলে নানাবিধ অন্ত্র পাতিত করত পীড়া প্রদান করিতে লাগিলেন।

অভিমন্যু প্রভৃতি পাণ্ডৰ পক্ষ মহারথ গণ মহা-র্থ ভীমসেনকে পীডামান ও সংশয় প্রাপ্ত দেখিয়া রক্ষা করিবার মানসে ছুস্তাঙ্গ্য প্রাণ পরিত্যাগে ক্বত নিশ্চয় হইয়া ধাৰমান হইলেন। ভীমের প্রিয় স্থা শৌর্য্য সম্পন্ন অমুপাধিপতি নীল-মেহবর্ণাভ রাজা नील मःकुक रुरेया अवश्वामात्र উপत्र धावमान रुरे-লেন। মহাধন্ত্র্র্নর নীল রাজা সর্বন্ধাই অশ্বর্থামার প্রতি স্পর্দা করিতেন, তিনি মহাশরাসন বিক্ষারণ করিয়া এক শরে অশ্বামাকে বিদ্ধ করিলেন। হে মহারাজ! পূর্বে কালে দেবগণেরও ছুরাধর্ষ ভয়ন্কর বিপ্রচিত্তি নামক যে এক দানব ছিল, যে ক্রোধ-প্রযুক্ত স্বকীয় তেকে ত্রিভূবন ত্রাসিত করিয়াছিল, বেমন দেবরাজ ইন্দ্র তাহাকে বাণ বিদ্ধ করিয়াছি-লেন, সেই ৰূপ নীল রাজা অশ্বত্থামার প্রতি এক বাণ নিক্ষেপ করিলেন। স্থমতিমান্ অশ্বস্থামা তাহাতে নির্ভিন্ন হইয়া রুধির পীড়িত ও ক্রোধ-সমন্বিত हरेशा रेखाणीन मृग नित्रनयुक विठिब ध्यूक वि-कांत्र भूर्वक नील त्राकारक विनाम कतिवात नि-মিছে নিশ্বর করিলেন। তদনন্তর তিনি কর্মার-মার্ক্সিড সপ্ত ভল সন্ধান করিয়া চারি ভলে নীল ব্লাজার চারি অশ্ব, এক ভল্লে তাঁহার সারখি, এক ভল্লে ভাঁহার রথ ধব্দ ও এক ভল্লে ভাঁহার বক্ষঃস্থল বিদ্ধ করিলেন। ভাহাতে তিনি গাঢ় বিদ্ধ হইয়া ब्रत्थां भट्ड छे भविके रहे एन ।

মেষ্চরোপম নীল রাজাকে মোহিত দেখিয়া রাক্ষম ঘটোৎকচ সংকুদ্ধ ও জ্ঞাতিগণে পরিবারিত হইয়া বেগ পূর্বাক সমর শোভন অশ্বথামার সমীপে অভিক্রত হইল, এবং মুদ্ধ-ছুর্মাদ অন্য রাক্ষসেরাও ধাবমান হইল। তেজ্বী দ্রোণ-পুত্র ভীম-দর্শন রাক্ষম ঘটোৎকচকে আপতিত হইতে দেখিয়া মরা সহকারে ভাহার সমীপে ধাবিত হইলেন, এবং

বে রাক্ষসেরা কুন্ধ হইরা ঘটোৎকচের পুরোগামী रुरेयाहिन, त्ररे नकन त्यात-पूर्वि द्राक्रमिशक নিহত করিলেন। মহাকার ভীম-নন্দন, সেই রাক্ষ্য দিগকৈ অশ্বত্থামার ধন্তুমুক্তি বাণ সকল ছারা পরা-জুখ দেখিয়া ক্রোধান্বিত হইল। রাক্ষসাধিপতি মা-য়াবী ঘটোৎকচ অশ্বপামাকে মোহিত করিবার নিমিত্তে ঘোরৰপ স্থারুণ মায়ার প্রাছুর্ভাব করিল। তদনন্তর আপনকার পক্ষ সকলেই ঘটোৎকচের মায়া দ্বারো বিমুখীক্লত ও ছেদিত হইয়া পরস্পরকে नित्रीक्रेश क्रिटिंड माशिन, धदः प्रिथेन द्यो। ধন, শল্য, অশ্বস্থামা এবং অন্য অন্য কৌরব পক্ষীয় মহাধন্তর্করে রথী রাজগণ সকলেই রণ ক্ষেত্রে দীন-ভাবে বিচেফমান, শোণিতসিক্ত ও নিপাতিত হই-য়াছেন। সহস্ৰ সহস্ৰ অশ্ব ও অশ্বারোহী ছিন্ন হইয়া পত্তিত রহিয়াছে, ইহা দেখিয়া আপনকার পক সৈন্যের। শিবির উদ্দেশে বিক্রত হইল। হে মহারাজ! তাহাদিগকে পলায়মান দেখিয়া দেবব্রত ও আমি আমর। ছুইজন তাহাদিগকে উচ্চৈঃশ্বরে বলিলাম, ভোমরা যুদ্ধ কর, পলায়ন করিও না, তোমরা রণ ক্ষেত্রে যাহা দেখিরা ভীত হইরাছ, উহা প্রকৃত নহে, উহা রাক্ষসী মায়ার কার্য্য। তা-হারা বিমোহিত হইয়া আমাদিগের উভয়ের এই ৰূপ বাক্যে শ্ৰন্ধা না করিয়া ভীত চিত্তে পলায়ন করিতেই লাগিল, দাঁড়াইল না। ঘটোৎকচ ও পাণ্ডবগণ তাহাদিগকে বিজাবিত হইতে দেখিয়া জ্য়ী হইয়া সিংহনাদ করিতে লাগিলেন, এবং শস্থ ছুন্ছুভি নির্দ্বোবে চভুর্দ্দিক্ নিনাদিত করিলেন। মহারাজ! আপনকার সমুদার সৈন্য ছুরাত্মা হিড়িয়া-नन्तन रहेटा स्र्याखि नमस्त्र थाख्यः हरेत्रा पिश्-पिशसुत्र প्रवातमान रूरेन।

এক নবতি তম অধ্যার সমাপ্ত। ১১।

সঞ্জয় কৃহিলেন, হে মহারাক! সেই মহৎ সংগ্রামে রাজা ছুর্য্যোধন পিতামহের নিকট গমন পূর্বক

অভিবাদন করিয়া বিনর সহকারে আমুপুর্বীক্রমে जाभनात भेताकत ७ घटि १ कटित विकास त्रांख विनट উপক্ৰম করিলেন। ছুর্দ্ধর রাজা ছুর্য্যোধন পুনঃপুন নিশ্বাস পরিত্যাগ পূর্বেক ঐ কথা বলিয়া পুনর্বার বলিলেন, হে প্রভু পিতামহ! যেমন বিপক্ষ পাওবেরা বাস্থদেবকে আশ্রয় করিয়া বিগ্রহ আরক করিয়াছে, সেই ৰূপ আমিও আপনাকে আশ্রয় করিয়া যুদ্ধারম্ভ করিয়াছি। হে পরস্তপ। আমি এই বিখ্যাত একাদশ অক্ষোহিণী সেনার সহিত আপ-নার নিদেশবর্ত্তী রহিয়াছি, তথাপি ভীমসেন প্রভৃতি পাগুবেরা ঘটোৎকচকে আত্রয় করিয়া যে আমাকে পরাজিত করিল, ইহা, যেমন অগ্নি শুদ্ধ রুক্ষকে দক্ষ করে, তাহার ন্যায় আমার গাত্র দগ্ধ করিতেছে, অতএব হে মহাভাগ পরস্তপ পিতামহ! যাহাতে আমি আপনকার প্রসাদে আপনাকে আশ্রয় করিয়া ঐ রাক্ষসাধমকে বধ করিতে পারি, তাহা আপনি করুন।

ভরতপ্রধান শাস্তমু-পুজ, রাজার ঐ ৰূপ বাক্য শুনিয়া তাঁহাকে কহিলেন, হে রাজন্! এই রণে তোমার বাহা কর্ত্তব্য, তাহা আমি বলিতেছি, শ্রবণ কর। হে বংস! সংগ্রামে তোমার সমুদায় অবস্থাতেই আপনাকে রক্ষা করা কর্ত্তব্য। ধর্মারাজ যুধিন্ঠির, जीयरनन, जर्जून, नकून वा महरनव, हेशां मिराजन মধ্যে কাহারো সহিত তোমার যুদ্ধ করা কর্ত্তবা, কেননা রাজারা রাজধর্মের অনুগামী হইয়া রাজার সহিতই যুদ্ধ করিয়া থাকেন। বংসূ! যদি সেই ভীষণ রাক্ষসাধিপতির নিমিত্তে তোমার অমুতাপ হইনা থাকে, তাহা হইলে, দ্রোণ, রূপ, অশ্বত্থামা, সাত্মত ক্লডবর্মা, শল্য, সোমদত্ত-পুক্র, মহারথ বিকর্ণ, তোমার ছংশাসন প্রভৃতি প্রধান প্রধান ভাতাগণ এবং আমি, আমরা সকলে তোমার নিমিত্তে সেই মহাবল রাক্ষসের সহিত যুক্ত করিব; অথবা যুক্তে পুরন্দর সম ঐ রাজা ভগদত্ত তুর্মতি রাজনের সহিত यूक क्रिटिंश भगन क्रमन।

বাক্য-বিশারদ ভীন্ত পার্ধিবেক্ত ছুর্ব্যোধনকে ইহা বলিয়া ভাঁহার সমক্ষে রাজা ভগদন্তকে বলিলেন, হে মহারাজ! আপনি যুক্তর্মদ হিড়িয়া-নক্ষমের নিকট শীঘ্র গমন কর্মন। যে প্রকার পূর্বে কালে ইক্র ভারকাস্থরকে নিবারণ করিয়াছিলেন, সেই প্রকার আপনি সমুদার ধর্মুর্নরের সাক্ষাতে সযত্ন হইয়া ক্রুর-কর্মা সেই রাক্ষসকে রণে নিবারিত কর্মন। হে শক্র-তাপন! দিব্য অন্ত্র ও বিক্রম আপনাতেই বিদ্যমান আছে এবং পূর্বের বছ দেবতার সহিত আপনকার যুদ্ধ হইয়াছিল, অতএব আপনিই সেই রাক্ষস-পূক্ষ-বের মহাযুদ্ধে প্রতিযোদ্ধা, আপনি স্বকীয় বলে সমুদ্ধিত হইয়া তাহাকে সংহার ক্রুন।

রাজা ভগদন্ত সেনাপতি ভীম্মের ঐ কথা শ্রবণ করিয়া পর পক্ষে অভিমুখ হইয়া সিংহনাদ করত গমন করিলেন। পাওবদিগের মহারথ ভীমদেন, অভিমন্ত্রা, ঘটোৎকচ, দ্রৌপদীর পঞ্চ পুদ্র, সত্য-धृष्ठि, क्वंत्रत्व, किपिशिष्ठ, वस्त्रान ও प्रभागीधिशिष्ठ, हेराँद्रा जगम्ख्रात्र गर्द्धनकाती स्मरधत नाम गर्द्धन পূর্বক সমাগত হইতে দেখিয়া সংকুদ্ধ হইয়া তাঁহার অভিমুখে গমন করিলেন। রাজা তগদত্তও স্থপ্রতীক নামক হস্তীর সহিত তাঁহাদিগের উপর উপদ্রুত হই-লেন। তদনন্তর ভগদত্তের সহিত পাগুবদিগের ঘোরতর ভয়ানক যম-রাষ্ট্র-বর্দ্ধন সংগ্রাম হইতে লাগিল। হে মহারাজ! ভীষণ বেগ-বিশিফ অতি তেজন বাণ সকল রুধিগণ কর্তৃক নিক্ষিপ্ত হইয়া রুখ ও হস্তী সকলের উপর নিপতিত হইতে লাগিল। গলিত-মদ মহা হন্তী সকল আরোহী কর্তৃক চালিত হইয়া নির্ভয়ে পরস্পরের নিকট গমন পূর্বক যুদ্ধা मक हरेल। यमान्न रखी मकल त्राय मध्यक हरेगा পরস্পরকে মুবল ৰূপ দন্ত ছারা আক্রমণ পূর্বক দন্তের অগ্রভাগ দারা ক্ষত বিক্ষত করিতে লাগিল। চামর-ভূষিত অশ্ব সকল প্রাসহস্ত সাদিগণ কর্তৃক চালিত হইয়া ক্রতবেগে পরস্পর সমর কার্য্য করিতে লাগিল। শত শত সহত্র সহত্র পদাতি, পদাতি

সমূহ কর্তৃক শক্তি ও ভোমর দারা তাড়িত হইরা ভূপতিত হইতে লাগিল। রথী সকল রথারোহণে কর্ণি, নালীক ও শর দারা বীরগণকে নিহত করিরা সিংহনাদ করিতে লাগিল।

ভাদৃশ লোমহর্ষণ সংগ্রামে মহাধমুর্দ্ধর ভগদভ গলিত মদ স্থপ্রতীক গজে আরোহণ পূর্বক ভীম-সেনের সমীপে অভিদ্রুত হইলেন। যে প্রকার পর্বা-তের নানা স্থান হইতে জলস্রাব হয়, সেই ৰূপ ভগ-मरखत स्थाञीक रखीत रमर्र गश्च बत्त, जिक्क बत्त, কৰ্ণ হয় ও মন্তক, এই সপ্ত স্থান হইতে মদস্ৰাব হইতেছিল। হে নিষ্পাপ মহীপাল! রাজা ভগদত্ত স্থপ্রতীক শীর্ষে সমারোহী হইয়া ঐরাবতস্থ ইন্দ্রের বারিধারা বর্ষণের ন্যায় শর বর্ষণ পূর্ব্বক গমন করত, মেঘ বেমন গ্রীয়ান্তে বারিধারায় পর্বত সমাচ্ছন্ন করে, তদ্ধপ ভীমদেনকে শর নিকর ধারায় তাড়ন করিতে লাগিলেন। মহাধমুর্দ্ধর ভীমদেনও সংকুদ্ধ श्रेत्रा अभारत्वत भेजाधिक भागत्रक्रक मिशत्क भेत র্টি দারা নিহত করিলেন। প্রতাপবান্ ভগদত্ত তাহাদিগকে নিহত দেখিয়া স্থপ্রতীক হন্তীকে ভী-মের রথের প্রতি চালিত করিলেন। সেই নাগ ভগ-দত্তের প্রেষিত হইয়া ধমুর্গুণ বিমুক্ত বাণের ন্যায় (वर्षा चित्रक्तम जीटमत छेशत धावमान इहेल। देक-क्त्र त्रांटकता, अजिमका, त्रोशटनत्रभा, मनार्गाध-পতি শুর ক্ষত্রদেব, চেদিপতি ও টিত্রকৈতু, এই সকল পাণ্ডব পক্ষ মহাবল মহারথ সেই হন্তীকে আপতিত হুইতে দেখিয়া ভীমসেনকে অগ্রে করিয়া সকলেই সংরক্ত হইরা দিবা উত্তমান্ত্র সকল প্রদর্শন করত সেই এক হস্তীকে চতুর্দিক হইতে পরিবেইটন করি-লেন। সেই সহাহন্তী উল্লিখিত মহারথদিগের বছ বাবে বিষ্ণু ও রুধির পীড়িত হইয়া গৈরিকাদি ধাতু-বিচিত্রিত হিমালয় পিরির ন্যায় প্রকাশ পাইতে লাগিল। এবং দশার্ণাধপতিও পর্বতোপম এক গজে আরোহণ করিয়া ভগদত্তের গজ সমীপে অভি-ক্ষেত **হইলেন। যে প্রকার বেল**া ভূমি সমুদ্রের

বেগ ধারণ পূর্বক নিবারিত করে, তদ্রেপ গজপতি স্থপ্রতীক দশার্ণরাজের হন্তীর বেগ ধারণ করিয়া নিবারিত করিল, তাহা দেখিয়া পাওব সৈন্য সকলে সাধু সাধু বলিয়া প্রশংসা করিল। হে নৃপসন্তম! তদনন্তর প্রাগ্রেজ্যাতিব রাজ ভগদন্ত ক্রুদ্ধ হইয়া সেই নাগের উপর চতুর্দশ তোমর নিক্ষেপ করিলা। সেই সকল তোমর নাগের স্থবর্ণ-ভূষিত উত্তম তমুত্রাণ বিদারণ করিয়া সর্পের বল্লীক প্রবেশের ন্যায় দেহ মধ্যে আশু প্রবেশ করিল। হে ভরতস্তম! সেই নাগ তাহাতে গাঢ় বিদ্ধা ও ব্যথিত হইয়া সত্তর মন্ততা-বিহীন হইল, এবং বায়ু যেমন বল দারা রক্ষ মর্দন করে, তাহার ন্যায় বেগ পূর্বক ভৈরব রব করত স্থাপক্ষ সৈন্য মর্দন করিতে করিতে প্রক্রত হইল।

এই ৰূপে সেই হন্তী পরাজিত হইলে পাণ্ডব পক্ষ মহারধ গণ ভীমসেনকে অত্যে করিয়া সিংহনাদ করত যুদ্ধে ক্তনিশ্চয় হইয়া বিবিধ বাণ ও বিবিধ শস্ত্র বিকিরণ করিতে করিতে ভগদত্তের প্রতি উপ-দ্রুত হইলেন। হে ভূপাল! মহাধমুর্দ্ধর ভগদন্ত সেই সকল সংকুদ্ধ ও অমর্ঘ-বিশিষ্ট মহারথ দিগের আপতন কালে তাহাদিগের ঘোরতর নিনাদ শ্রবণ করিয়া অমর্য প্রযুক্ত নির্ভীক চিত্তে স্বকীয় নাগ চালিত করিলেন। গজ-প্রবর মুপ্রতীক ভগদন্তের অঙ্কুশ ও অঙ্গুষ্ঠ দ্বারা চালিত হইয়া ক্ষণ মাত্রে প্রলয় কালীন সম্বৰ্জক বহ্নিব্ন ন্যায় হইল, এমন কি, অতি-শয় সংকুদ্ধ ও ইতন্তত ধাৰমান হইয়া আরোহীর সহিত রথ, হন্তী ও অশ্ব সমূহকে এবং শত শত সহস্র সহত্র পদাতিদিগকে মর্দন করিতে লাগিল। হে মহারাজ! বিপুল পাণ্ডৰ দৈন্য দেই গজ কর্ত্তক মর্দ্দিত হইরা অগ্নি-তপ্ত চর্মের ন্যার সক্ষুচিত হইল। রাক্ষ্য घटिं। १ वा भना मिरात रेमना धीमान् छना छ कर्ड्क প্রভগ্ন দেখিয়া অতি কোধাকুল হইয়া ভগদভের निक्षे উপদ্ৰুত হইল। সেই মহাবল বিৰুটাক্কৃতি প্রদীপ্ত বাদন প্রদীপ্ত-লোচন পুরুষ অতি ভীষণ মূর্ডি

ধারণ পূর্বক রোবানলে প্রজ্বলিত হইয়া চতুর্দিকে বিক্ষুলিক মালায় পরিবেটিত গিরি বিদারণ ক্ষম এক বিমল খূল গ্রহণ পূর্বক নিক্ষেপ করিল। রাজা প্রাগ্জ্যোতিষ সহসা সেই শক্তি সমাগত দেখিয়া স্থদারুণ তীক্ষ্ণ মনোহর এক অর্দ্ধচন্দ্র বাণ মোচন পূর্ব্বক সেই বেগ-বিশিষ্ট মহৎ শূল ছেদন করিলেন। ষেমন ইন্দ্ৰ নিক্ষিপ্ত মহা অশুনি আকাশে উৎপতিত হয়, সেই ৰূপ হেম-ভূষিত সেই খূল চুই খণ্ডে ছিন্ন হইয়া উৎপতিত হইল। হে ভূপাল! রাজা ভগ-দত্ত রাক্ষস-নিক্ষিপ্ত শূল দিধা ছিন্ন ও নিপতিত দেখিয়া থাক্ থাক্ বলিয়া অগ্নি শিখা সদৃশ স্বৰ্ণত যুক্ত এক মহা শক্তি গ্রহণ পূর্বক রাক্ষসের উপর নিক্ষেপ করিলেন। ঘটোৎকচ আকাশস্থ অশনির ন্যায় সেই শক্তিকে আপতিত হইতে দেখিয়া শীঘ্ৰ লক্ষ্য প্রদান পূর্বেক তাহা গ্রহণ করিল, প্রবং নিনাদ করিয়া উঠিল। হে ভারত!সে ঐ শক্তি সত্তর গ্রহণ করিয়া জানুতে আরোপণ পূর্বকে রাজেন্দ্র ভগদন্তের সাক্ষাতেই ভগ্ন করিয়া ফেলিল, তাহা অদ্ভুতের ন্যায় হইল। আকাশস্থ দেব, গন্ধর্বে ও মুনিগণ বলীয়ান্ রাক্ষসের তাদৃশ কর্ম দেখিয়া বিস্মিত হইলেন। ভীমসেন প্রভৃতি পাগুবেরা তাহা দেখিরা সাধু সাধু শব্দে পৃথিবী অমুনাদিত করিলেন। মহাধমুর্ধর প্রতাপবান্ জগদন্ত মহাত্মা পাণ্ডবদিগের হর্ষস্থাক সেই মহাধনি অবণ করিয়া ক্রোধে পরিপূর্ণ হই-লেন। এবং তিনি ইন্দ্রের অশনি সম প্রভা সম্পন্ন মহৎ শরাসন বিক্ষারণ পূর্বক পাওব পক্ষ মহারথ-দিগের প্রতি বিমল প্রভা-বিশিষ্ট বিমল তীক্ষ্ণ না-রাচ সকল বেগ পূর্বকে বিমোচন করত ভর্জন গর্জন করিতে লাগিলেন। তিনি এক শরে ভীমকে, নয় াশরে রাক্ষসকে, তিন শরে অতিমন্থাকে এবং পঞ্চ ্পরে কৈকেয়-রাজ পঞ্চ ভাতাকে বি**দ্ধ ক**রিলেন। পরে আনতপর্ব্ব এক শর পূর্ণ সন্ধান পূর্ব্বক নিক্ষেপ করিয়া ক্রেনেবের দক্ষিণ বাছ ভেদ করিলেন।

সহসা পতিত হইল। তদনন্তর ভগদন্ত টোপদীর পঞ্চ পুত্রকে পঞ্চ বাণে তাড়িত করিয়া ক্রোধারিই চিত্তে তীমসেনের অশ্ব সকল নিহত করিলেন, পরে তিন শরে তাঁহার সিংহ ধল এবং অপর তিন শরে তাঁহার সার্থিকে বিদ্ধা করিলেন। তীমের সার্থি বিশোক ভগদন্তের যুদ্ধা গাঢ় বিদ্ধা হইয়া রথোপত্তে উপবিই ইইল। তদনন্তর রথিপ্রবর মহাবাছ তীমসেন বেগ সহকারে গদা গ্রহণ পূর্বক রথ ইইতে অবরোহণ করিয়া বিরথী ইইলেন। হে ভারত! তাঁহাকে সমৃঙ্গ পর্বতের ন্যায় উদাত-গদ দেখিয়া আপনকার পক্ষ দিগের ঘোরতর ভয় সমুৎপন্ন ইইল।

হে মহারাজ! ঐ সময়ে ক্লম্ম সার্থি পাণ্ডৰ চতু-র্দ্দিকে শত্রু হত্যা করিতে করিতে যে স্থানে মহাবল পরাক্রান্ত পুরুষব্যান্ত পিতা পুত্র ভীমসেন ঘটোৎ-कि ज्ञानराखेत महिल यूर्या मश्मक ছिलान, सिहे ञ्चल ञाগমন क्रिलन। ह् ७५७८७७! ञर्जून, মহারথ ভাতাদিগকে আহত দেখিয়া সত্তর হইরা শর নিক্ষেপ করত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। তদনস্তর মহারথ রাজা ছুর্যোধন স্বরুমাণ হইয়া নর নাগ সমা-কুল স্বকীয় সৈনাদিগকে অর্জুন সমীপে প্রেরণ করিলেন। পাণ্ডু-নন্দন শ্বেতবাহন সহসা কুরুদিগের মহা সৈন্যকে আপতিত হইতে দেখিয়া বেগে তাহা-দিগের প্রতি অভিক্রত হইলেন। হে ভারত ! ভগ-দত্তও স্বকীয় নাগ দারা পাণ্ডব সৈন্য মর্দ্দন করত যুষিষ্ঠিরের প্রতি উপক্রত হইলেন। তথন পাঞ্চাল, পাগুব ও উদ্যতায়ুধ কেকয়গণের সহিত রাজা ভগ-দত্তের অতি ছুহান্ যুদ্ধ হইতে লাগিল। ভীমসেন তথন সমর স্থলে কেশব ও অর্জুনকে ইরাবানের সংগ্রাম-মৃত্যু বৃত্তান্ত আমুপূর্বী অবণ করাইলেন।

দ্বিবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত। ৯২।

করিয়া ক্ষতদেবের দক্ষিণ বাছ ভেদ করিলেন। সঞ্চয় কহিলেন, হে নরনাথ! ধনপ্রয়, পুত্র ইরা-ভাহাতে ক্ষতদেবের শরের সহিত উত্তম ধমুক বাদ্কে নিহত ভাবণ করিয়া মহাছুংখে সমাবিউ

হইয়া পন্নের ন্যায় দীর্ঘ নিশ্বাস পরিত্যাগ করত वाञ्चरमवरक कहिरलन, रह मधूञ्चमन! शूर्रक महामिष्ठ মহাপ্রাজ্ঞ বিছুর নিশ্চয়ই এই কুরু পাণ্ডবদিগের ঘোরতর ক্ষয় জানিতে পারিয়া জনপতি ধৃতরাষ্ট্রকে নিবারণ করিয়াছিলেন। কৌরবদিগের অবধ্য আমা-দিগের পক্ষ বছ বীরকে কৌরবেরা নিহত করি-তেছেন এবং আমাদিগের অবধ্য কৌরবদিগকেও আমরা নিহত করিতেছি। হে নরোত্তম। আমরা ্র্মর্থ নিমিত্তই এতাদৃশ কুৎসিত কর্ম্ম করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি, এক অর্থ নিমিত্তই আমরা এতাদৃশ জ্ঞাতি ক্ষয় কার্য্য করিতেছি; অতএব অর্থে ধিকৃ! হে কৃষ্ণ! নির্ধন ব্যক্তির বরং মৃত্যুই শ্রের, তথাপি জ্ঞাতি বধ করিয়া ধন উপাক্ষিত করা শ্রেয় নহে। হে মহাবাছ! আমরা সংগ্রামে জ্ঞাতি হত্যা করি-য়াই বা কি লাভ করিব? স্থবল-পুত্র শকুনি ও কর্ণের কুমন্ত্রণান্ত্রসারে ছুর্য্যোধনের অপরাধেই ক্ষজ্রিয় গণ নিধন প্রাপ্ত হইতেছেন। হে মধুস্থদন! একণে আমি জানিতে পারিলাম যে রাজা যুধিন্ঠির চুর্য্যো-धरनत निकटि व्यक्त ताका वा शांत्रशानि व्याम याद्धा করিয়া উত্তম করিয়াছিলেন, কিন্তু ছুর্ম্মতি ছুর্যোধন তাহা প্রদান করিল না! পরস্ত এক্ষণে শূর ক্ষজ্রিয় দিগকে ধরণীতলে শয়ান দেখিয়া আমি আপনাকে নিন্দিত বোধ করিভেছি; ক্ষজ্রিয় জীবিকায় ধিকৃ! অশক্ত বোধ করিবে, এই নিমিত্তই আমার জ্ঞাতি গণের সহিত এই মহৎ যুদ্ধে অভিরুচি হইতেছে; অতএব হে মাধব! এক্ষণে তুমি শীঘ্ৰ অশ্বদিগকে ধৃতরাষ্ট্র সৈন্যের প্রতি চালনা কর, আমি ভুজ দ্বয়ের সাহায্যে এই ছম্ভর সমর সাগরের পারে উত্তীর্ণ হুইব, আর নির্থ সময় যাপন করা উচিত নয়।

বীর শক্রহন্তা কেশব পার্থ কর্তৃক এই রূপ অভি-হিত হইয়া প্রন-বেগ পাগুরবর্ণ অশ্বদিগকে চালিত করিলেন। হে ভারত! অনন্তর যে প্রকার পর্বা কালে প্রনোদ্ধৃত রেগ-বিশিষ্ট সাগ্রের মহা শব্দ হয়, সেই রপ আপনকার পক্ষ সৈন্য মধ্যে মহান্
শব্দ হইতে লাগিল। হে মহারাজ! সেই দিবস
অপরাত্নে পণ্ডেবদিগের সহিত ভীমের পক্ষন্য শব্দ
সদৃশ শব্দ যুক্ত সংগ্রাম হইতে লাগিল। আপনকার
পুক্রগণ, যে প্রকার বস্থাণ বাসবকে পরিবেইন
করিয়াছিলেন, সেই রপ দোণাচার্য্যকে পরিবেইন
করিয়া ভীমসেনের প্রতি উপদ্রুত হইলেন। তৎপরে
রথি প্রধান ভীয়, রুপ, ভগদন্ত ও স্থার্ম্মা ধনপ্রয়ের
প্রতি উপদ্রুত হইলেন। রুতবর্মা ও বাহ্লিক সাত্যকরির প্রতি ও রাজা অষষ্ঠ অভিমন্তার প্রতি উপদ্রুত
হইলেন। হে মহারাজ! অবশিক্ত মহারথগণ অবশিক্ত মহারথদিগকে আক্রমণ করিলেন। তাহার
পর ঘোররপ ভয়াবহ সংগ্রাম সমারক্র হইল।

হে জনেশ্বর! ভীমসেন সমরে আপনকার পুত্র দিগকে দেখিয়া, যে প্রকার হব্যবাহন হবির্দ্ধারা প্রস্থ-লিত হয়, সেই ৰূপ ক্রোধানলে জ্বলিয়া উঠিলেন। আপনকার পুত্রেরাও যে প্রকার বর্ষা কালে জলদ-গণ পর্বতোপরি বারি বর্ষণ করে, সেই ৰূপ ভীম-সেনের উপর শর বর্ষণ করিয়া তাঁহাকে আচ্ছন্ন করিলেন। বীর ভীমসেন আপনকার পুদ্রুদিগের শরে বছধা আচ্ছান্যমান হইয়া দর্পিত শার্দূলের ন্যায় স্ক্রণী লেহন করত স্থতীক্ষ্ণ ক্ষুরপ্র ছারা ব্যুড়ো-রস্ককে নিহত করিলেন; ড়াহাতেই ব্যুঢ়োরক্ষের প্রাণ ত্যাগ হইল। পরে সিংহ যেমন কুদ্র মৃগকে নিপাতিত করে, তাহার ন্যায় শাণিত পীত এক ভল্ল দারা কুওলীকে নিপাত করিলেন। পরে ডত্রস্থ আপনকার সমস্ত পুত্রকে রণে প্রাপ্ত হইয়া ত্বরাযুক্ত হইয়া কতক গুলি স্থশাণিত পীত বাণ সন্ধান পূৰ্ব্বক পরিত্যাগ করিলেন। দৃঢ়ধন্বী ভীমসেনের নিক্ষিপ্ত সেই সকল বাণ অনাধৃষ্টি, কুগুভেদী, বৈরাটি, দীর্ঘ-লোচন, দীর্ঘবাছ, স্থবাছ ও কনক ধন্ত, আপনকার এই সকল অতি মহারথ বীর পুত্রদিগকে রথ হই-তে নিপাতিত করিল। ইহারা রথ হইতে পতন কালে বসম্ভ কালীন প্ৰতিত পুষ্পাশবল আত্ৰ ব্ৰক্ষের নাায় প্রকাশ পাইলেন। আপনকার অবশিষ্ট পুজেরা দেই মহাসংগ্রামে মহাবল ভীমসেনকে কাল স্বৰূপ মনে করিয়া পলায়ন করিলেন। দ্রো-ণাচার্য্য ভীমদেনকে আপনকার পুত্রদিগকে দগ্ধ করিতে দেখিয়া, পর্বতের প্রতি মেঘের বারিধারা বর্ষণের ন্যায়, তাঁহাকে চতুর্দিকে শর বর্ষণে সমা-কীর্ণ করিলেন। কুন্তী-পুত্র ভীমের এই অদ্ভূত পরা-ক্রম দেখিলাম যে, ভাঁহাকে দ্রোণাচার্য্য নিবারণ করিতে থাকিলেও তিনি আপনকার পুত্রদিগকে নিহ্ত করিতে লাগিলেন। যে প্রকার গোর্য আ-কাশে পতিত জল বর্ষণ ধারণ করে, তদ্ধপ র্কোদর দ্রোণ-মুক্ত শর বর্ষণ ধারণ করিতে লাগিলেন। মহারাজ! রুকোদর সেই রণে এই আশ্রুর্যা কার্য্য করিলেন যে, তিনি দ্রোণকেও নিবারিত করিলেন এবং আপনকার পুত্রদিগকেও সংহার[®] করিলেন। ব্যাঘ্র যেমন মৃগ মধ্যে বিচরণ করত ক্রীড়া করে, অर्জ्जून-शृद्धक महादल जीम, मिट क्रि, वापनकात বীর পুজ্রদিগের মধ্যে বিচরণ করত ক্রীড়া করিতে লাগিলেন। যে প্রকার এক র্ক মৃগ মধ্যে অবস্থিত হইয়া তাহাদিগকে বিদ্রাবিত করে, সেই ৰূপ রুকো-দর আপনকার পুত্রদিগের মধ্যে অবস্থিত হইরা ভাহাদিগকে বিদ্রাবিত করিলেন।

ভীয়, ভগদত্ত ও মহারথ ক্রপাচার্যা, পাণ্ডু-নন্দন
বেগ-শীল অর্জুনকে নিবারিত করিতে লাগিলেন।
পরস্ত অতিরথ অর্জুন আপনকার সৈন্য মধ্যে প্রধান
প্রধান বীর দিগের অস্ত্র সকল অস্ত্রুদারা নিবারিত
করিয়া তাহাদিগকে মৃত্যু সমীপে প্রেরণ করিলেন।
এবং অভিমন্যু লোক বিখ্যাত রথিশ্রেষ্ঠ রাজা
অয়্রঠকে শর সমূহ দারা বিরথি করিলেন। রাজা
অয়্রঠ যশ্রী মহাত্মা স্বভ্রা-পুজের হস্তে বধ্যমান ও
বিরধী হইয়া লজ্জান্থিত চিত্তে রথ হইতে লক্ষ্
প্রদান করত তাঁহার উপর অসি নিক্ষেপ করিয়া
নহাত্মা ক্রতবর্শার রথে আরোহণ করিলেন। রণ-প্রধি বিশারদ বীর-শক্রহন্তা অভিমন্ত্রা সেই নিক্ষিপ্ত

খড়গকে আপতিত হইতে দেখিয়া লমুবিচরণে তাহা বিফল করিলেন। অভিমন্ত্য কর্তৃক খড়গ ব্যংসিত দেখিয়া সৈন্যেরা তাঁহাকে সাধু সাধু বলিরা শব্দ করিয়া উঠিল।

ে হে নরাধিপ! এদিকে ধৃষ্টত্বান্ন প্রস্তৃতি যোধগণ আপনকার সৈন্যদিগের সহিত এবং আপনকার সমস্ত সৈন্যও পাণ্ডব সৈন্যের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। তৎকালে উভয় পক্ষের দারুণ যুদ্ধ আরম্ভ হইল। উভয় পক্ষই পরস্পর ছুম্বর কার্য্য করত হনন করিতে লাগিল। উভয় পক্ষীয় মানী শুরগণ পরস্পর কেশাকর্ষণ করিয়া নখ, দন্ত, মুন্টি, জানু, অসি, শোভমান বাছ ও তল দ্বারা প্রহার পূর্বক যুদ্ধ করিতে লাগিল এবং বিপক্ষের রন্ধ্র প্রাপ্ত ছইবা-মাত্র তাহাদিগকে যম সাদনে প্রেরণ করিতে থ্রাকিল। পিতা পুত্রকে, পুত্র পিতাকে প্রহার করিতে লাগিল। মন্তুব্যেরা সর্বাঙ্গ ব্যাকুলিত করিয়া সমর কার্য্য নি-ষ্পাদন করিতে লাগিল। হত ব্যক্তি দিগের হেমপৃষ্ঠ মনোহর ধনুক ও মহার্হ অলঙ্কার রণক্ষেত্রে পতিত হইয়া শোভমান হইল, এবং স্কুবর্ণ ও রক্ষতময় পুঞ্-সংযুক্ত তৈল ধৌত স্থশাণিত বাণ সকল নিৰ্মোক সুক্ত সর্পের ন্যায় রণ ক্ষেত্রে পতিত হইয়া দীপ্তি পাইতে লাগিল। গব্দস্ত-নির্মিত ঋড়্গ মুটি, হেম-বিভূষিত **বড়্গ, চর্মা, প্রাস, পট্টিশ, ঋটি ও শক্তি সকল, উত্তম** কবচ, গুরুতর মুষল, পরিঘ, পট্টিশ, ভিন্দিপাল, বিচিত্র হেম-পরিচ্চৃত বিবিধ শরাসন, নানাবিধার্কৃতি কুথা, চামর, ব্যক্তন ও অন্যান্য নানাবিধ শক্ত রণ-ভূমিতে পতিত হইল। মহারথ মনুষ্য সকল ঐ সকল বস্তু গ্রহণ করিয়াই নিপতিত হইলেন। তাঁ-**राता मृज रहेन्ना ७ कीवट उत्त ना**गन्न मृष्टे रहेट जाणि-লেন। হে নৃপতে! অনেক যোধগণের গাত্র গদা দারা বিমথিত, অনেক যোধগণের মন্তক মুবল দার। ভন্ন হওয়াতে তাহারা এবং অনৈকৈ হন্তী, অশ্ব ও রথ দারা কুল হইয়া ভূতলে শরান হইতে লা-शिन। त्र क्टिज़ नर्स द्यान गर्क, वाकि ও मनुष्-

শরীরে সংছন্ন হইয়া যেন পর্বাতারত হইল। পতিত শক্তি, ঋটি, শর, ভোমর, ধড়্গ, পট্টিশ, প্রাস, লৌহকুন্ত, পরশ্বধ, পরিঘ, ভিন্দিপাল ও শতমী, এই সকল অন্ত্র শত্রে ও শত্র-নির্জিন্ন প্রাণি শরীরে (मिमिनी नमाकीर्गा इहेल। (ह मेळच महाद्राख! শোণিত সিক্ত দেহে পতিত হইয়া অনেকে নিঃশব্দ হইল, এবং অনেকে মৃতু শব্দ করিতে লাগিল; এতা-দৃশ মৃত দেহে ভূমিতল সমার্ত হইল। হে ভারত! বলশীল যোধগণের নিপাতিত তলত্র ও কেয়ূর ভূষিত চন্দন-চর্চ্চিত বাহু, হস্তি শুগু সদৃশ উরু সমূহ, এবং চুড়ামণি ও কুগুল ভূষিত ব্যভনয়ন শোভিত মন্তকে পৃথিবী সমাকীণা হইল। পৃথিবীতে অনলের শিখা শান্তি হইলে যে ৰূপ শোভা হয়, কাঞ্চনময় কবচ সকল শোণিড-সিক্ত ও পরিকীর্ণ হওয়াতে ভূমিতল সেই ৰূপ শোভমান হইল। ইতস্তত নিপতিত অলঙ্কার, শরাসন, চতুর্দিকে পরিকীর্ণ স্থুর্ণপুঞ্জ শর, সর্বতো-ভাবে প্রভগ্ন কিঙ্কিণীকাল-বিভূষিত রথ, বাণ নিহত খলিত-জিহ্ব রক্তাক্ত-দেহ অশ্ব, রথ-নিমন্থ কাঠ, পতাকা, ভূণীর, ধজ, বীরগণের পরিকীর্ণ পাওরবর্ণ মহাশস্থ ও অত্তত্ত শয়ান মাতক দারা পৃথিবী, নানাবিধ অলঙ্কারে অলঙ্কৃতা প্রমদার ন্যায়, শোভা ধারণ 💗রিল। প্রাস-সংযুক্ত, গাঢ় বেদনাগ্রন্ত, শুগু দারী সুত্যু ছ শীৎকার শব্দকারী ও স্যান্দমান পর্বত मनृग वहल रखी दाता त्रवहल পরিকীর্ণ হইল। দন্তী-গণের নানা বর্ণ কম্বল, পরিস্তোম, বৈদূর্য্য মণি দণ্ড সমন্বিত স্থশোভিত অঙ্কুশ, ঘন্টা, পরিচ্ছিন্ন বিচিত্র কুণা, অনলম্বত অকুশ, চিত্রৰূপ কণ্ঠভূষণ, স্বর্ণ-কক্ষা, বছধা ছিন্ন যন্ত্র, কাঞ্চনময় তোমর, ধুলি ছারা কপিল বর্ণ স্থরণাচ্ছাদিত অশ্ব দিগের উরশ্ছদ, সাদীগণের অঙ্গদ সংযুক্ত ছিন্ন ভুজ, বিমল তীক্ষু প্রাস, বিমল ঋটি, চিত্রিত উষ্ণীয়, স্থবর্ণ পরিষ্কৃত বিচিত্র বাণ সমূহ, রাহ্বময় মর্দিত অশ্বান্তর, পরিস্তোম, রাজগণের মহা মূল্য বিচিত্র চূড়ামণি, ছত্র, চামর, ব্যঞ্জন, বীরগণের মনোহর কুগুল যুক্ত, পদ্ম ও চক্র সদৃশ,

শাশ্র-বিশিষ্ট, উত্তমরপে অলঙ্ক, কান্তিমান্বদন ও স্বর্ণোজ্জ্বল কুণ্ডল সকল রণ স্থলে ইতন্তত পতিত হওয়াতে পৃথিবী গ্রহ নক্ষত্র-শবল আকাশ মণ্ডলের নাায় প্রকাশ পাইতে লাগিল। উভয় পক্ষ দেনাই পরস্পর কর্ভ্ক এই রূপে মর্দিত হইল। হে ভারত! যোধগণ আন্ত, ভয় ও মর্দিত হইলে রাত্রি উপস্থিত হইল ; রণব্যাপার আর কিছুই দৃষ্টিগম্য রহিল না। মহাভয়-জনক স্থদারুণ ঘোর নিশামুখে কুরু ও পাণ্ডব উভয় পক্ষই সৈন্যদিগের অবহার করিলেন। অবহারানন্তর সকলে মিলিত হইয়া স্ব স্থ শিবিরে গমন পূর্ব্বক শিবির নিবেশ করিলেন।

ত্রিনবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৩॥

~~

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! তদনন্তর রাজা ছুর্যোন-ধন, স্থবল-পুত্র শকুনি, আপনকার পুত্র ছুংশাসন, ছুর্জের স্থতপুত্র কর্ণ, ইহাঁরা একত্র হইয়া, সগণ পাণ্ডব দিগকে কি ৰূপে জয় করা যায়, ইহার মন্ত্রণা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। পরে রাজা ভূর্য্যোধন মহাবল কর্ণ ও শকুনিকে সম্বোধন করিয়া সেই সকল মন্ত্রী দিগকে বলিলেন, দ্রোণ, ভীয়, রূপ, শল্য ও সোমদন্ত-পুজ্র, ইহাঁরা পাণ্ডব দিগকে যে কি কারণে যুদ্ধে নিবারিত করেন না, তাহা বুঝিতে পারিতেছি না। তাহারা ইহাঁদিগের কর্তৃক অবধামান হইয়া আমার সৈন্য ক্ষয় করিতেছে, অতএব হে কর্ণ! যুদ্ধে আমার সৈনাও ক্ষয় প্রাপ্ত হইল এবং অস্ত্র শক্রেরও ক্ষয়, হইতে লাগিল। কর্ণ! দেবগণেরও অবধ্য শূর পাণ্ডব দিগের কর্তৃক আমি প্রবঞ্চিত হইলাম; তাহাদিগকে কি প্রকারে রণে প্রহার করিব, তদ্বিষয়ে আমার সংশয় হইতেছে।

কর্ণ কহিলেন, হে মহারাজ তরত-নন্দন ! আপনি শোক করিবেন না, শাস্তমুনন্দন এই মহা রণ হইতে শীঘ্র অবস্থত হউন, তাহা হইলেই আমি আপন-কার প্রিয় কার্য্য করিব। আমি আপনকার সমীপে এই সত্য প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে ভীয় ন্যস্ত-শস্ত্র

হইয়া যুদ্ধে নির্ভ হইলে তাঁহার সাক্ষাতেই আমি সমুদায় দোমকগণের সহিত পাণ্ডব দিগকে সংহার করিব। ভীম সর্বাদা পাণ্ডব দিগের প্রতি স্নেহ করিয়া থাকেন, তিনি ম্হারথ পাণ্ডব দিগকে রণে পরাজয় করিতে পারিবেন না। এবং তিনি রণ বিষয়ে অভিমানী, সর্বাদা রণ করিতে ভাল বাসেন, অতএব যুদ্ধ-সঙ্গত পাণ্ডব দিগকৈ কি জন্য পরাজিত করিয়া যুদ্ধ শেষ করিবেন? হে ভরত-কুলপাল! আপনি শীঘ্র ভীন্ন শিবিরে গমন পূর্বক রন্ধ গুরু ভীন্নকে সন্মত করিয়া তাঁহাকে অন্ত্র শস্ত্র পরিত্যাগ করিতে অনুরোধ করুন। তিনি অস্ত্র পরিত্যাগ করিলে আপনি দেখিতে পাইবেন যে, আমিই একাকী পাণ্ডব দিগকে তাহাদিগের স্থহদ্ বান্ধব গণের সহিত নিহত করিয়াছি।

মহারাজ! কর্ণ আপনকার পুত্র দুর্ঘ্যোধনকে ঐ क्रि विलित, जिनि खोजा कुः भोजनरक विलितन, ছুঃশাসন! ভুমি আমার আমুযাত্রিক গণ যে ৰূপে সর্ব্ব প্রকারে সজ্জীভূত হয়, শীঘ্র তাহার বিধান क्ता बाका छूट्याधन छुः नामनटक हेरा विलया कर्न-क कहिरानन, रह खित्रन्तम! आमि जीवारक छेळा বিষয়ে সম্মত করিয়া শীঘ্র তোমার নিকট আসি-তেছি, ভীয় যুদ্ধ হইতে অবহত হইলে তুমি যুদ্ধ করিবে। হে নরপাল! তদনন্তর আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন সেই সকল ভাতাগণে সমভিব্যাহারিত হইয়া, দেবগণ সহ দেবরাজের ন্যায়, সত্ত্র প্রয়াণ করিলেন। তথন ভ্রাতা ছুংশাসন শার্দ্দূলসম বিক্রম-भीन नृश-भार्कृत इर्र्याधनरक बता शृक्वक व्यत्थ वा-রোহণ করাইলেন। রাজা ছুর্য্যোধন অঙ্গদ, মুকুট ও হস্তাভরণে ভূষিত হইরা পথি মধ্যে গমন করত শোভা পাইতে লাগিলেন। মঞ্জি পুষ্প-সঙ্কাশ স্বৰ্ণ-সৰ্বৰ্ণ উক্তম স্থাপন্ধি চন্দনে অমুলিপ্ত নির্ম্মলাম্বর পরীধান সিংহ থৈলন গতির ন্যায় গমন भील द्राकाः भ्रमन काटल अश्रद्वञ्च निर्माण किंद्रगमाली স্থ্যের ন্যায় শোভমান হইলেন। নরব্যান্ত রাজা । অনম্ভর উত্তম আন্তরণ সংর্ত কাঞ্চনময় সর্বতে।ভদ্র

ছুর্য্যোধনকে ভীছের শিবিরোদ্দেশে গমন করিতে দেখিয়া সর্বব লোক মধ্যে মহাধমুর্জর ধন্থিগণ এবং মহাধমুর্দ্ধর ভ্রাভৃগণ, যে প্রকার দেবগণ ইন্দ্রের অমু-গ্মন করেন, সেই ৰূপ তাঁহার অনুগামী হইলেন। **ष्यानारक प्राप्त, प्राप्तारक शास्त्र अवश्यानारक त्रथ**ि রোহণে রাজাকে চতুর্দিকে পরিবেইটন করিয়া চলি-লেন। ষেমন স্বর্গে দেবগণ ইক্রকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত অনুগামী হন, সেই ৰূপ রাজার স্কৃদ্গণ গৃহীত-শস্ত্র হইয়া সৌহার্দভাব প্রকাশ করত রাজার রক্ষার্থে অনুগামী হইলেন। কৌরবদিগের মহাবল রাজা ছুর্য্যোধন কুরুগণ কর্তৃক পূজ্যমান হুইয়া বশস্থী গঙ্গা-নন্দনের সদনে গমন করিতে লাগিলেন। তিনি অনুগামী সোদরগণে নিয়ত পরিরত হইয়া গমন করিতেছিলেন, চতুর্দ্দিক্ হইতে নানা দেশ-বাসী মনুষ্যেরা অঞ্জলি উদ্যত করিয়া মধুর বাক্যে তাঁহাকে বিনয় করিতে লাগিল, তিনি অমুকুল ভাবে সর্ব্ব শত্রু-বিনাশন হস্তিশুণ্ডোপম অস্ত্র শিক্ষা সম্পন্ন স্বকীয় দক্ষিণ ভুজ উদ্ধৃত করিয়া তাহাদিগের উদ্যত অঞ্চলি গ্রহণ করিতে করিতে মধুর বাক্য শ্রবণ করিতে লাগিলেন। স্থৃত ও মাগধগণ মহাযশা রাজাধিরাজ তুর্যোধনকে স্তব করিতে লাগিল। তিনিও তাহাদিগকে সম্ভাষণ করিতে লাগিলেন। মহাত্মা রাজ-পুরুষেরা স্থান্তি তৈল-দেচিত কাঞ্চন-প্রদীপ্ সমূহ দারা চতুর্দিকে তাঁহাকে পরিবেইন করিয়া গমন করিতে লাগিল। রাজা ছুর্যোধন সেই সকল কাঞ্চন প্রদীপে পরিরত হইয়া প্রদীপ্ত মহা-গ্রহগণে পরিরত চক্রমার ন্যায় প্রভা-সম্পন্ন হইয়া শোভমান হইলেন। কাঞ্চনোঞ্চীষ ধারী বেত্র ও ঝর্মর হস্ত রাজ পুরুষেরা সমস্ত দিকে জন সকলকে শনৈঃ শনৈ উৎসারিত করিতে লাগিল। এই ৰূপে রাজা গমন করিয়া ভীয়ের শোভন শিবির সমীপে গমনানন্তর অশ্ব হইতে অবতরণ পূর্বক ভীয়ের নিকট উপনীত হইয়া ভাঁছাকে অভিবাদন করিলেন।

পরমাসনে আসীন ও ক্নডাঞ্চলি হইয়া বাষ্পাকুলিত-কণ্ঠে অঞপূর্ণ লোচনে ভীন্নকে কহিলেন, হে শত্রু-স্থান ৷ আমরা সংগ্রামে আপনাকে আত্রয় করিয়া স্থরপতির সহিত স্থরাস্থরগণকেও পরাজয় করিতে উৎসাহ করি, তাহাতে যে স্থহাদ্ ও বান্ধবগণের সহিত বীর পাণ্ডব দিগকে জয় করিব, তাহার আর কথা কি? অতএব হে প্রভু গঙ্গানন্দন! আপনি আমার প্রতি রূপা করুন, হে মহারাজ! যে প্রকার ইন্দ্র দানবগণকে বিনাশ করিয়াছিলেন, সেই ৰূপ আপনি পাণ্ডব দিগকে নিহত করুন। হে ভরত-সোমক, পাঞ্চাল, কৈকয় ও কৰব দিগকে সংহার করিব " আপনার সেই বাক্য সত্য হউক; আপনি সমাগৃত পার্থ ও সোমক দিগকে নিহত করিয়া সত্য-ৰাদী হউন। হে প্ৰভো! যদি পাণ্ডৰ দিগের প্ৰতি আপনার দয়া বা আমার মন্দভাগ্য বশত আমার প্রতি আপনার ছেব প্রযুক্ত আপনি পাণ্ডব দিগকে রক্ষা করেন, তাহা হইলে যুদ্ধ-শোভী কর্ণকে যুদ্ধ করিতে অমুমতি করুন, তিনিই পাণ্ডব দিগকে ভাহাদিগের স্থান্ধ বান্ধব গণের সহিত পরাজিত করিবেন। আপনার পুত্র রাজা ছুর্য্যোধন সভ্য-পরাক্রম ভীয়কে এই ৰূপ বলিয়া ভূফী অবলম্বন ় করিলেন।

চতুর্বতি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৪॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! লোক-স্বভাবজ্ঞদিগের অগ্রগণ্য মহামনা ভীয় আপনকার পুজ্রের বাক্য ৰূপ শল্যে অভিবিদ্ধ ও তৎপ্রযুক্ত মহাত্যুংখ সমাবিই হইয়া অণু মাত্রও অপ্রিয় বাক্য বলিলেন না। তিনি ছুর্যোখনের বচন শলাকায় স্থয় ও তৎপ্রযুক্ত ছুংখ ও রোবে সমস্থিত হইয়া সর্পের ন্যায় নিশ্বাস পরিত্যাগ করত অনেক ক্ষণ পর্যান্ত চিন্তা করিলেন, পরে কোপানলে চক্র্ছয় উন্তোলন করিয়া যেন দেবাস্কর গন্ধর্ম লোক দক্ষ করত আপনকার পুজ্রকে এই

क्ष माम वांका विलालन, हूर्यांभन ! चांमि वेथानिक ভোমার প্রিন্ন কার্য্যের চেন্টা করিভেছি, এবং অমু-ষ্ঠানও করিভেছি, তোমার প্রিয় কামনায় সমরানলে প্রাণ আহতি দিতে উদ্যত হইয়াছি, অতএব তুমি কি জন্য আমাকে বাক্য শল্যে বিদ্ধ করিতেছ? অর্জুন প্রভৃতি পাণ্ডুপুজেরা যে রণে অক্সের, তদ্-विषय चात्र चिथकें कि विषव ! मोर्या-मन्भन्न चर्ड्यून যখন খাণ্ডবে ইন্দ্রকে রণে পন্নাজয় করিয়া অগ্নির তৃপ্তি সাধন করিয়াছেন, তাহাই উহার যথেই নিদ-র্শন। হে মহাবাহো! যখন গন্ধার্বেরা ভোমাকে বল পূর্ব্বক হরণ করিলে অর্জুন তাহাদিগের হস্ত হইতে মুক্ত করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেফ নিদর্শন। হে প্রভু! তখন তোমার খুর ভ্রাতাগণ ও স্থতপুত্র কর্ণ যে পলায়ন করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেই নিদর্শন। বিরাট নগরে গো গৃহে আমরা সকলে মিলিত হইলেও আমাদিগকে যে এক মাত্র অর্জুন আক্রমণ করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেষ্ট নিদর্শন। অৰ্জুন তখন সংব্ৰহ্ম দ্ৰোণ ও আমাকে যুদ্ধে যে পরাজিত করিয়া বসন গ্রহণ করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেষ্ট নিদর্শন। সেই যুদ্ধে মহাধমুর্দ্ধর অশ্ব-পামা ও রূপাচার্য্যকে অর্জুন যে পরাজিত করিয়া-ছিল, তাহাই উহার যথেউ নিদর্শন। সেই যুদ্ধে অর্জ্জুন পুরুষাভিমানী কর্বকে যে পরাজয় করিয়া বস্ত্র গ্রহণ পূর্ব্বক উত্তরাকে প্রদান করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেষ্ট নিদর্শন, এবং দেবরাক্ত ইন্ত্রও যাহা-দিগকে জয় কৃরিতে পারেন নাই, সেই সকল নিবাত-কবচ দিগকে অর্চ্জুন যে পরাস্ত করিয়াছিল, তাহাই উহার যথেষ্ট নিদর্শন। হে নরপাল। যে অর্জুনের রক্ষক শব্দ চক্র গদাধারী বিশ্ব-রক্ষক বাস্থদেব, নার-मामि মহর্ষি গণ যাঁহাকে মহাশক্তিমান্ সৃষ্টি সংহার-কারী সকলের ঈশ্বর দেব-দেব পরমাত্মা ও সনাতন বলিয়া বছ প্রকারে উক্ত করিয়া থাকেন, সেই বেগবান অর্জুনকে রণে পরাজিত করিতে কে সমর্থ हरेदः : इर्द्याधन ! जूमि मार श्रयुक्त कार्याकार्या

বুঝিতে পার না। মুর্যুর ব্যক্তি যেমন সমুদার বৃক্ষকে কাঞ্চন ময় দর্শন করে, ভূমিও সেই প্রকার বিপরীত দর্শন করিতেছ। তুমি স্বয়ংই পূর্ব্বে পাণ্ডব ও হঞ্জয় গণের সহিত মহৎ বৈর ভাব উৎপাদন করিয়াছ, একণে তুমি তাহাদিগের সহিত যুগ্ধ করিয়া পৌরুষ প্রকাশ কর, আমরা অবলোকুন করি। আমি শিখণ্ডী ব্যতীত সমন্ত সমাগত সোমক ও পাঞ্চালদিগকে নিহত করিব। হয় তাহাঁদিগের হস্তে নিহত হইয়া यगमानत्न नेमन कतित, ना इस जाहानिभटक मश्हात করিয়া তোমার প্রীতি উৎপাদন করিব। পূর্বেব শিখণ্ডী রাজ-ভবনে দ্রী হইয়া উৎপন্ন হয়, পরে বরপ্রভাবে পুরুষ হইয়াছে। বাস্তবিক সে স্ত্রীজাতি শিখণ্ডিনী। হে ভারত! প্রাণ ত্যাগ করিতে হইলেও আমি তাহা-কে নিহত করিব না, কেননা বিধাতা ভাহাকে পূর্বে ত্রী ৰূপ নির্মাণ করিয়াছিলেন। পরস্ক হৈ গান্ধারী-নক্ষ! ভূমি স্থথে নিদ্রা যাও, আমি কল্য মহা-সংগ্রাম করিব। যাবৎ কাল পৃথিবী থাকিবে, তাবৎ কাল পৃথিবীতে আমার এই বিষয়ে খ্যাতি থাকিবে। হে জনেশ্বর! ভীন্ন আপনকার পুত্র দুর্য্যোধনকে

হে জনেশ্বর! ভাষ আপনকার পুত্র দুযোগনকৈ এই ৰূপ বলিলে, তিনি গুরু ভীষকে মন্তক দারা অভিবাদন করিয়া স্বকীয় শিবিরে প্রস্থান করিলেন। শক্রক্ষরকারী রাজা ছুর্যোধন স্থ নিবেশনে আগন্মন পূর্বক সমভিব্যাহারী আমুযাত্রিক লোকদিগকে পরিত্যাগ করিয়া শিবিরে প্রবেশ করত সেই যামিনী অভিবাহিত করিলেন। রাত্রি প্রভাতা হইলে প্রাতে গাত্রোপান পূর্বক সমন্ত রাজাদিগকে আজ্ঞা করিলেন, তোমরা সেনা যোজনা কর, আজি ভীষ কুদ্ধ হইয়া সোমক দিগকে রণে নিহত করিবেন। হে ভূপতে! শান্তরূপুত্র রাত্রিতে ছুর্যোধনের সেই বিলাপ বাক্য শুনিয়া তাহাই আপনার প্রতি বছু আদেশ স্বরূপ মনে করিয়া স্বীয় অবমান বোধ করত পরাধীনতার প্রতি নিন্দা পূর্বক অর্জুনের সহিত যুক্ষার্থী হইয়া যে দীর্ঘ কাল চিন্তা করিয়াছিলেন, ছুর্যোধন ভাইার যেই চিন্তিত বিষয় ভারগভিক্রমে

বুঝিতে পারিয়া ছু:শাসনকে আদেশ করিলেন, তুঃশাসন! তুমি ভীয়ের রক্ষার্থে রধী সকল ও অব-শিফ সমুদায় দ্বাবিংশতি শ্রেণীভুক্ত দেনা নিয়োগ করিবে। সসৈনা পাগুব দিগকে বধ করিয়া রাজ্য প্ৰাপ্ত হইব বলিয়া যে বহু বৰ্ষ হইতে চিস্তা করিয়া আসিতেছি, তাহার সময় এই সমুপস্থিত হইয়াছে। তাহাতে একণে ভীয়কে রক্ষা করাই আমাদিগের প্রকৃত কার্যা মনে করিতেছি, কেন না তিনিই আ-মার দিগের সহায়, তিনি রক্ষিত হইলে যুদ্ধে পাণ্ডব পক্ষ দিগকে বিনাশ করিবেন। সেই বিশুদ্ধাত্মা বলি-য়াছেন, "আমি শিখণ্ডীকে প্রহার করিব না, সে প্রথমে ক্রীক্রাতি ছিল, এই নিমিন্তে সে রণে আমার ত্যাজ্য। হে মহাবাহে। আমি পূর্ব্বে পিতার প্রিয়-চিকীর্ষা হেতু বিপুল রাজ্য ওস্ত্রীপরিত্যাগ করিয়াছি, তাহা লোকের অবিদিত নাই। আমি তোমার নিক্ট সত্য বলিতেছি, স্ত্ৰীজাতি বা পূৰ্বে যে স্ত্ৰী ছিল তাহাকে কদাপি হনন করিব না। যুদ্ধারন্তের পূর্ব্বে তোমাকে বলিয়াছিলাম, তুমি তাহা শুনিয়াছ যে শিখণ্ডী পূৰ্ব্বে স্ত্ৰী ৰূপে জন্ম গ্ৰহণ করিয়া শিখণ্ডিনী নামে কথিত হইরাছিল। সে প্রথমত কন্যা থাকিয়া পরে পুরুষ হইয়াছে. সে আমার সহিত যুক্ক করিলে তাহার প্রতি আমি কোন প্রকারে বাণ পরিত্যাগ করিব না। শিশ্বগুী ব্যতীত যে সকল ক্ষজ্রিয় পাণ্ডব দিগের জরৈষী, ভাহাদিগকে বাণ গোচরে প্রাপ্ত হইলেই নিহত করিব।" হে ভারত। শাস্ত্রজ্ঞ গঙ্গা-নন্দন আমাকে এই ৰূপ বলিয়াছেন, অভএব তাঁ-হাকে সর্বা প্রযম্ভে রক্ষা করাই জ্বেয় মনে করি-তেছি। মহাবনে সিংহ যদি অরক্ষামাণ হয়, তাহা হইলে বৃক্ত ভাহাকে সংহার করিতে পারে, অত-এব সিংহ স্বৰূপ ভীন্নকে বৃক স্বৰূপ শিথগু ছারা সংহার করীন উচিত নহে। মাতুল শকুনি, শল্য, ক্লপ, ক্লোণ ও বিবিংশতি, ইহাঁরা ষত্মবন্ত হইয়া ভীয়কে রকা করিবেন, তাঁহাকে রকা করিলেই जामापिरभन्न निक्त कर स्ट्रिय

শকুনি প্রভৃতি উক্ত কএক জন ছুর্য্যোধনের এ ৰূপ বাক্য শুনিয়া রূপ সমূহ ছারা ভীন্নকে পরি-বেন্টন করিলেন। আপনকার পুজেরাও হর্ষান্থিত হইয়া পৃথিবী ও অন্তরীক্ষ কম্পিত ও পাগুর্বাদগকে ক্ষোভিত করিয়া ভীন্মকে পরিবৃত করিয়া গমন করি-लान। वक्त-मन्नार महातथनन स्मारक तथी ७ मखी গণের সহিত ভীগ্যকে পরিবেষ্টন করিয়া সমরে অব-স্থিত হইলেন। যে প্রকার দেবাস্থর যুদ্ধে দেবগণ দেবরাজ ইন্দ্রকে রক্ষা করেন, সেই ৰূপ তাঁহারা সকলে মহারথ ভীয়াকে রক্ষা করিতে লাগিলেন। ছুর্য্যোধন পুনর্বার ছুংশাসনকে বলিলেন, ছুংশাসন! युधामञ्जा ও উত্তমোজা, অর্জ্জুনের বাম ও দক্ষিণ চক্র রক্ষা করিয়া থাকেন, অর্জ্জুন উক্ত ছুই জনের রক্ষিত, হইয়া শিখণ্ডীকে রক্ষা করিবেন, আমরা व्यामापिरभन्न जीवारक त्रका ना कतिरत निथली वर्ष्कु-নের রক্ষিত হইয়া তাঁহাকে সংহার করিবে, অতএব যেৰূপে তাহা না করিতে পারে, তাহা তুমি করিবে। আপনকার পুত্র ছুংশাসন ভাতা ছুর্যোধনের ঐ কথা শুনিয়া ভীন্নকে অগ্রে করিয়া সেনা সহিত সমরে গমন করিলেন।

রথিশ্রেষ্ঠ অর্জুনভীয়কেরখি সমূহে পরির্ত দেখিরা ধৃউছাসকে কহিলেন, হে সেনানায়ক পাঞ্চালরাজ! নরবাদ্র শিখণ্ডীকে ভীয়ের অগ্রে. অবস্থিত কর, আজি আমি ভাঁহার রক্ষক হইব।

পঞ্চ নবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৫॥

....

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! তদনন্তর শান্তয়-পুত্র ভীয় সৈনা সহ নির্গত হইলেন, এবং যত্ন পূর্বক সর্বতোভদ্র নামে মহৎ রাহ রচিত করিলেন। রূপ, রুত্বর্মা, মহারথ শৈবা, শকুনি, সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ ও কাষোজরাজ সুম্কিণ, ইহারা সকলে ভীয় ও আ-প্রকার পুত্রের সহিত সমস্ত সৈনোর অপ্রে সেই বাহ-মুখে অবস্থিত ইইলেন। জোণ, ভূরিভারা, শলা, ও ভগদত্ত, ইহারা বর্মিত ইইরা উহার দক্ষিণ প্রেক্ট অবস্থিত হইলেন। অশ্বামা, সোমদন্ত ও মহারথ
অবন্ধিরাজ ছুই ভ্রাতা, মহতী সেনার সমন্থিত হইরা
উহার বাম পক্ষ রক্ষা করিতে লাগিলেন। রাজা
ছুর্য্যোধন ত্রিগর্ভ দেশীর সমস্ত যোদ্ধাগণে পরির্ভ
হইরা পাণ্ডব দিগের প্রতিপক্ষে উহার মধ্য স্থলে
অবস্থান করিলেন। রুথিশ্রেষ্ঠ অলম্ব ও মহারথ
শ্রুতায়ু, ইহারা ছুই জন বর্ণ্মিত হইরা সকল সৈনোর
সহিত ঐ রুহের পৃষ্ঠ দেশ আত্রয় করিলেন। হে
ভরতবংশাবতংক! আপনকার পক্ষীয় সকলে বদ্ধসমাহ হইয়া এই কপে বুয়হ রচনা করিয়া তপন্ত
অগ্রির ন্যায় অবলোকিত হইতে লাগিলেন।

তদনন্তর পাণ্ডু-পুত্র রাজা যুধিষ্ঠির, ভীমদেন, এবং মাদ্রীপুত্র নকুল ও সহদেব সমস্ত সৈন্যের ম্বত্রজ্ঞার ব্যুহ রচনা করিয়া অগ্রে অবস্থিত হই-লেন। তহ'পরে ধৃষ্টছ্যুন্ন, বিরাটও মহারথ সাত্যকি, পর-সৈন্য বিনাশক এই মহাত্মারা মহা সৈন্যের সহিত যুদ্ধার্থ অবস্থিত হইলেন। তৎ পরে শিখণ্ডী, অর্জুন, রাক্ষস ঘটোৎকচ, মহাবাহ্ন চেকিতান ও বীর্য্যবান্ কুন্তিভোজ, ইহাঁরা মহতী সেনায় সংর্ত হইরা যুদ্ধ নিমিত্ত অবস্থিত হইলেন। তৎপরে মহাধমুর্দ্ধর অভিমন্ত্রা, মহাবল ক্রপদ ও কৈকেয়-রাজ পঞ্চ ভ্রাতা, ইহাঁরা বর্দ্মিত হইয়া যুদ্ধার্থ অব-স্থান করিতে লাগিলেন। **শৌ**র্যা-সম্পন্ন পাগুবগণ, বৰ্মধারী হইয়া এই ৰূপ স্তত্ত্ব্যু মহা বৃাহ আ-পনকার বাৃহের প্রতিপক্ষে রচনা করিয়া যুদ্ধোদাত হইলেন। হে, নৃপ! আপনকার পক্ষ রাজগণ যতু-বান্ হইয়া ভীয়কে অগ্রবর্ত্তী করিয়া মহতী সেনার সহিত পাণ্ডব দিগের প্রতি অভ্যুদ্গত ইইলেন। পাওবেরাও সকলে সংগ্রামে বিজয়ৈষী হইয়া ভীম-সেনকে পুরোবর্ডী করিয়া ভীমের প্রতি অভ্যুদ্গত रुटेलन। পाওবেরা সিংহ্নাদ ও কিল किला भटकत সহিত ক্রকচ, গোবিষাণিকা, ভেরী, মৃদক্ষ ও পণবের वानावनि अजियन तक जनः कुश्चत्रभारक निर्मानिज क्रक मध्यारम खन्न हरेरान । जामना महना

অতি সংক্রমাও স্রাহিত হইয়া ভেরী, মৃদঙ্গ, শব্ধ ও ছুम्छूडि अस, উৎकूछ जिश्हनाम ७ शृथक् श्रकात অশ্ব নিপ্নের বিদ্ধিত শব্দে তাহা প্রতিনাদিত করিয়া সমাগত হইলাম, তাহাতে তুমূল অতি মহৎ শব্দ হইতে লাগিল। ভাহার পর যোজাগণ পরস্পার ধাবমান হইয়া পরস্পরকে প্রহার করিতে লাগিল। সেই মহৎ শব্দে বস্তুন্ধরা কন্সিত হইল। পক্ষীগণ মহাঘোর শব্দ করিয়া ভ্রমণ করিতে লাগিল। সূর্য্য সপ্রভ হইয়া উদিত হইয়াছিলেন, ঐ সময়ে প্রভা-হীন হইলেন। বায়ু ভুমুল হইয়া অতিভয়ানক ৰূপে বহিতে লাগিল। শিবাগণ মহৎ হত্যা-স্থচক ঘোর-তর ৰূপে ভয়ানক শব্দ করিতে লাগিল। দিক্ সকল প্রজ্বলিত, ধূলি বর্ষণ ও রুধির মিশ্রিত অন্থি র্টি হইতে লাগিল। বাহন সকল রোদন করাতে তাহা-দিগের চকু হইতে অশ্রুপাত হইতে থাকিল। তাহারা চিস্তান্থিত হইয়া বিষ্ঠা মূত্র পরিত্যাগ করিতে লাগিল। নর-ভক্ষক রাক্ষসদিগের ভৈরব রবে পূর্ব্বোক্ত অতি ভীষণ শব্দ অন্তর্হিত হইরা গেল। গোমায়ু, শকুনি, বায়স ও কুকুরগণ নানাবিধ শব্দ করিয়া এবং প্রেক্ লিত মহোল্কা সকল স্থাকে সমাহত করিয়া মহা-ভয় লক্ষণ প্রকাশ করত সহসা ভূতলে পতিত হইতে লাগিল। যে প্রকার বায়ু দ্বারা বন প্রকম্পিত হয়, সেই ৰপ কুৰু পাণ্ডৰ লেনা সেই মহা সমুজুয়ে শৰ্ম मृत्रक्रांति भटक कन्शिउ इटेट्ड लाशिल। अमझल-স্থান-প্রবৃত্ত সংগ্রাম-প্রবৃত্ত নরেন্দ্র, হস্তী ও অশ্ব সমৃত্তে সমাকুল সেই সৈন্যদিগ্নের বাতোক্ষত সাগরের ন্যায় ভুমুল নির্ঘোষ শ্রুতি বিবরে প্রবিষ্ট रहेट नागिन।

্ৰাম্বাভি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৬॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে কুঁরুনন্দন! উদার স্বভাব তেজস্বী অভিমন্ত্র পিলল বর্ণ অশ্ব যুক্ত রথে আ-রোহণ পূর্বক, মেহের জলধারী বর্ষণের ন্যায়, শর বর্ষণ করিতে করিতে মুর্যোধনের মহৎ নৈলোর

প্রতি অভিক্রত হইলেন। **আপনকার পক্ষ** যোদ্ধা গণ আপনকার অক্ষয় সেনা সাগরে অবগাহমান শস্ত্র সমূহ বিশিষ্ট শত্রু স্থান সৌভদ্রের সহিত যুদ্ধ বা তাঁহাকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইল না। তিনি শক্ত-বিনাশক যেসকল বাণ পরিত্যাগ করিতে লাগি-লেন, তাহা শৌর্যা সম্পন্ন ক্ষজ্রির দিগকে প্রেতরাজ সদনে প্রেরণ করিতে লাগিল। তিনি কুদ্ধ হইয়া যমদণ্ড সদৃশ ভয়ানক প্রজ্বলিত আশীবিষ তুল্য বাণ সকল নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। সেই সকল নি-ক্ষিপ্ত বাণ দারা রখের সহিত রথী, অত্থের সহিত অশ্বারোহী ও গজের সহিত গজারোহী দিগকে শীঘ্র শীঘ্র বিদারিত করিতে লাগিলেন। রাজগণ যুদ্ধে তাঁহার মহৎ অদ্ভুত কর্ম দেখিয়া আহ্লাদিত হইয়া পূজা ও প্রশংসা করিলেন। বারু যেমন ভূল রাুশিকে আকাশে সর্ব্ব দিকে বিস্তারিত করে, তাহার নাায় স্তুত্রা-নন্দন সেই সকল সৈন্যদিগকে বিজ্ঞাবিত করিতে লাগিলেন। হে ভারত। আপনকার সৈন্য त्रकल विज्ञावामान रहेश शक्क-निमध शक्कशरणंत्र नाम्न কাহাকেও আপনাদিগের পরিত্রাতা পাইল না ৷ অভিমন্ত্র্য আপনকার পক্ষ সমুদায় সৈন্যকে বিজ্ঞা-বিত করিয়া ধুমরহিত অগ্নির ন্যায় প্রদীপ্ত হইয়া অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। যেমন পতঙ্গণ কাল প্রেরিত হইয়া জ্বন্ত অগ্নিকে সক্ষ করিতে পারে না তাহার ন্যায় আপনকার পক্ষীয় সকলে অরিঘাডী অভিমন্ত্রাকে সহা করিতে পারিল না। মহাধন্তর্ধার মহারথ অভিমন্যু পাওব দিগের সমস্ত শক্রকে প্রহার করিয়া সবজ্ঞ বাসবের ন্যায় নিরীক্ষিত হইতে লাগিলেন। তাঁহার হেম পৃষ্ঠ ধনুক একপে সকল দিকে বিচরণ করিল যে, তাহা মেঘ মধ্যে দীপামান বিছ্যুতের ন্যায় দৃই হইতে লাগিল। ভাঁহার নিক্ষিপ্ত শাণিত স্থপীত বাণ সকল, পুঞ্চিত রক্ষের বন হইতে বিচরিত অমর শ্রেণীর ন্যায়, বিচরণ করিতে লাগিল। মনুষোরা দেই মহাস্থার কাঞ্চন-মণ্ডিত রথারো-হবে বিচরণ কালীন রন্ধু দেখিতে পাইল না। মহা

ধমুর্দ্ধর অভিমন্থ্য রূপ, দ্রোণ, অশ্বর্থামা, রহদ্বল ও সিন্ধুরাজ জয়ক্রথকে মোহিত করিয়া রণ স্থলে স্থলর ৰূপে লঘু বিচরণ করিতে লাগিলেন। আপনকার দৈনা স্থল করিবার সময়ে তাঁহার ধরুক মণ্ডলী-कुछ रुरेशा सूर्या मधन जन्म मृखे रुरेएं नाशिन। শূর কজিরগণ ভাঁহাকে তাদৃশ বেগদীল হইয়া ममत्र कार्या कतिएक मिथिया हेर लाटक छूरे पार्क्-নের অবন্থিতি মনে করিল। মহারাজ! সেই ভারতী মহা দেনা অভিমন্ত্রা কর্তৃক অর্দিত হইয়া মদ-বিহ্বলা যোষিতের ন্যায় ইতন্তত ভ্রমণ করিতে লাগিল। যেমন ইন্দ্র ময় দানবকে পরাজিত করিয়া দেবগণের আনন্দোৎপাদন করিয়াছিলেন, সেই ৰূপ অভিনম্য তাদৃশ মহা সৈন্যকে উদ্ভাস্ত ও কম্পিত করিয়া স্থল্পণকে আনন্দিত করিলেন। আপন-কার সৈন্যের। তাঁহা কর্তৃক বিদ্রাব্যমাণ হইয়া রণ স্থলে পর্জন্য শব্দ সদৃশ ঘোর আর্জনাদ করিতে ' नाशिन।

্হে ভারত! রাজা সুর্য্যোধন তথন সৈন্যদিগের. পর্বে কালীন প্রনোজ্ত বেগবান্ সাগরের ন্যায়, ভীষণ শব্দ আৰণ করিয়া ঋষাশৃঙ্গ পুত্ৰ অলম্বকে ৰলিলেন, হৈ মহাবাছ রাক্ষ্য শ্রেষ্ঠ অলম্ব ! ছিতীয় **অর্চ্চুনের** ন্যায়, ঐ অভিমন্ত্রা ক্রোধ পরায়ণ হইয়া, ষে অকার র্তান্থর দেব সেনা বিজাবিত করিয়া-ছিল, সেই ৰূপ আমার সৈন্য বিজ্ঞাবণ করিতেছে। তুমি যুদ্ধ বিষয়ক সর্ব্ব বিদ্যায় পারগ, সংগ্রামে তোমা ব্যতীত উহার মহৌষধ আর দেখি না, অত-এব ভূমি দত্তর গমন করিয়া বীর অভিমন্তাকে নিহত কর, আমরা জীয় দ্রোণকে পুরোবন্তী করিয়া অর্জুনের বিনাশ করি। প্রতাশবান্ বলবান্ রাক্ষসেন্ত, রাজা দুৰ্ব্যোধন কৰ্তৃক এই ৰূপ অভিহিত হইয়া তাঁহার শাসনাজুমারে বর্মা কালীন মেল গার্জনের নাায় মহা নিনাদ করিরা সত্তর সমরে প্রয়াণ করিব। তাুহার সেই মহা নিনাদ শুনিয়া পাশুব দিগের মহৎ দৈন্য

रहेन। महाद्रोज! यह मसूबा छोहोद्र मदक जीछ হইরা প্রিয় প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া ধরণীতলে নি-পতিত হইতে লাগিল। অর্জুন-পুত্র হর্ষায়িত হইরা সশর শরাসন গ্রহণ করিরা রখোপছে যেন নৃত্য করিতে করিতে সেই রাক্ষসের উপর অভিক্রত হই-লেন। তদনস্তর রাক্ষন অভিমন্ত্রাকে আসিতে দেখিয়া ক্ৰোধাকুল-চিত্তে তাঁহার অৰতি দূরে অবস্থিত হইয়া তাঁহার সৈন্যের প্রতি উপদ্রুত হইল। সেই সকল পাওবী মহা সেনা রাক্ষস অলখুষ কর্তৃক বধ্যমান হইয়াও, যেমন দেব সেনা বলাস্থরের প্রতি আক্রমণ করিয়াছিল, তাহার ন্যায় তাহার প্রতি অভ্যুদ্গত হইল। সেই ভয়ানক রাক্ষ্য যথন সেই সকল সৈন্যের প্রতি উপদ্রব করিল, তথন তাহাদিগের অতি মহান্ বিমর্দ হইল। সে স্বীয় পরাক্রম প্রকাশ করিয়া সহস্র সহস্র শরে তাহাদিগকে বিদ্রাবিত করিল। পরিশেষে তাহারা ভয় প্রযুক্ত পলায়ন করিতে লাগিল।

हि जुनान ! य ध्वकात रखी नच वन मर्फन करत, সেই ৰূপ অলম্ব পাগুৰী সেনা মাৰ্দিত করিয়া পরে মহারথ দৌপদী-পুত্র দিগকে আক্রমণ করিল। यमन शक्ष धर अरु सूर्यात्क श्रादिखेन करत, सरे প্রকার প্রহারপটু মহাধনুর্দ্ধর দ্রৌপদের পৃঞ্চ ভ্রাতা এক অলম্বকে পরিহৃত করিয়া আক্রমণ করিলেন। যেমন স্থদারুণ যুগ কর কালে পঞ্চ গ্রহ এক চন্দ্রকে পীড়িত করে; সেই প্রকার তাঁহারা পঞ্চ জনে রাক্ষস প্রবরকে পীড়া প্রদান করিতে লাগিলেন। মহাবল প্রতিবিক্সা সর্ব্ব বিধ পরশু সদৃশ স্থশাণিত শর-নিকরে রাক্ষসকে বিদ্ধ করিলেন। রাক্ষসবর তাহা-তে নির্ভিন্ন-বর্মা হইরা স্থ্যাকিরণ সংস্থাত মহা-মেঘের ন্যায় শোভমান হইল, এবং স্থবর্ণ পরিচ্ছদ সেই সকল কাণ তাহার গাতে বিদ্ধ হওয়াতে, সে, উজ্জুল শৃঙ্গ যুক্ত পর্বতের ন্যার দীপ্তি পাইডে লা-পিল। প্ররে তাঁহার। পাঁচ জনেই বর্ণ বিভূষিত লা-সকল বাতোজুত সমুজের ন্যায় লব্দ দিকে বিচলিত পিত কাশ সমূহ বারা তাছাকে বিদ্ধ করিলেন । কে,

কোপিত ভুজগ সদৃশ ভয়ানক সেই সকল বাণে নি-র্জিল হইয়া সর্পরাজের ন্যায় অতিশয় কুর্জ হইল। পরে মহারথ পঞ্চ ভ্রাতা কর্ভৃক মুহুর্ভ কাল অতি বিদ্ধ ও পীড়িত হইয়া বহু ক্ষণ মোহাবিফ রহিল, অনন্তর সংজ্ঞা-লাভ করিয়া ক্রোধে দ্বিগুণিত হইয়া শর সমূহে তাঁহাদিগের ধজ্ও ধনুক ছেদন করিল, এবং হাস্য মুখে রথোপত্তে যেন নৃত্য করিতে করিতে ভাঁছাদিগের প্রভোককে পাঁচ পাঁচ বাণে বিদ্ধ করিল, তৎ পরেই ক্রুদ্ধ, ত্বরাযুক্ত ও সংরক্ষ হইয়া স্বেই মহাত্মাদিগের অশ্ব ও সার্থি দিগকে নিহত করিল এবং পুনর্বার অতি শাণিত বহু বিধা-কার শত শত সহস্র সহস্র শরে তাঁহাদিগকে বিদ্ধ করিতে লাগিল। নিশাচর অলম্ব সেই মহাধনুর্দ্ধর দিগকে বিরথী করিয়া বিনাশ করিবার মানসে বেগে অভিদ্ৰুত হইল। অৰ্জুন-পুত্ৰ অভিমন্যু ঠাঁ-হাদিগকে ছুরাত্মা রাক্ষম কর্তৃক পীড়িত দেখিয়া তাহার প্রতি উপদ্রুত হইলেন। আপনকার পক ও পাণ্ডব পক্ষ সকলে বৃত্র বাসবের যুদ্ধ সদৃশ তাঁহা-দিগের উভয়ের যুদ্ধ দর্শন করিতে লাগিল। মহাবল অভিমন্তা ও অলম্ব পরস্পার যুদ্ধে মিলিত, ক্রোধ-প্রদীপ্ত ও ক্রোধরক্ত-লোচন হইয়া পরস্পরকে কা-नाभि जूना प्रिथिए नागितन। य अकात शूर्व কালে দেবাস্থর যুদ্ধে 'ইন্দ্র ও সম্বরাস্থরের উৎকট যুদ্ধ হইয়াছিল, সেই প্রকার তাঁহাদিগের উভয়ের ঘোরতর সংগ্রাম হইতে লাগিল।

সপ্তনবতি তম অধ্যার সমাপ্ত॥ ৯৭

ধৃতরাপ্র বলিলেন, সঞ্জয়! অলম্ব সমরে মহা-রথ দিগের নিহন্ত৷ শূর অভিমন্তার সহিত কি কপ যুদ্ধ করিল, এবং বীর শক্রহন্ত৷ অভিমন্তাই বা কি প্রকার অলমুবের সহিত সংগ্রাম কার্য্য করিল, তাহা আমুপুর্বী ক্রমে আমার নিকট কীর্ত্তন কর, এবং আমার সৈন্যদিগের সহিত ধনঞ্জয়, বলিশ্রেষ্ঠ ভীম, রাক্ষস ঘটোৎকচ, নকুল, সহদেব ও মহারথ সাত্যকি,

ইহারাই বা কি প্রকার যুদ্ধ করিল ? সঞ্জয়! তুমি বাক্পটু, অতএব তাহা যাথার্থ্য ক্রমে আমার নিকট অভিধান কর।

সঞ্জয় কহিলেন, হে নরপাল! রাক্ষসেক্র অলমু-বের সহিত অভিমন্ত্রার যে প্রকার লোমহর্ষণ যুদ্ধ হই-शांष्ट्रिन, अवः व्यर्क्तुन, जीयरमन, नकून ও महरमव, अवः আপনকার পক্ষ ভীম দ্রোণ প্রভৃতি সকলে নির্ভীক হইয়া যে ৰূপ পরাক্রম প্রকাশ ও অদ্ভুত বিচিত্র কর্ম করিয়াছিলেন, তৎ সমস্ত আমি আপনকার সমীপে কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ করুন। অলযুষ মুত্রমুহ্ অতি মহাশব্দে তজ্জন গর্জন করিয়া থাক্ থাক্ বলিয়া বেগ পূর্বকে মহারথ অভিমন্তাকে আ-ক্রমণ করিল, এবং অভিমন্ত্রাও পুনঃপুন সিংহনাদ করিয়া পিতার অত্যন্ত বৈরি মহাধনুর্ধর অ্লুছ্যকে আক্রমণ করিলেন। তদনন্তর দেব দানব সদৃশ রবি শ্রেষ্ঠ নর রাক্ষস উভয়ে ত্বরিত হইয়া রথ দারা সম-(त्ठ इहेटलन। त्रांकम क्षथान चलपुर मायादी, অর্জুন-পুত্র অভিমন্থাও দিবাাস্ত্রবিৎ; প্রথমত অভি-মন্ত্রা শাণিত তিন শরে অলম্বকে বিদ্ধ করিয়া তৎ পরেই পাঁচ শরে বিদ্ধ করিলেন। অলমূবও সংক্রুদ্ধ হইয়া বেগ সহকারে, যে প্রকার তোত্র দারা মহাগজকে বিদ্ধা করে, তাহার ন্যায় নয় শরে অভি-মন্মার হৃদয় বিদ্ধ করিল, তং পরেই ক্ষিপ্রহস্তে সহস্র শর দ্বারা অভিমন্ত্যুকে পীড়িত করিল। তদ-নন্তর অভিমন্যু কুদ্ধ হইরা স্থশাণিত নতপর্ব নয় वार्ष अलघुरुषत विभाल वकः इल विक क्रिल, मरे সকল বাণ শীঘ্র তাহার শরীর ভেদ করিয়া মর্শ্ম श्रुटल প্রবেশ করিল; তাহাতে সে, নির্ভিন্ন-সর্বাঙ্গ হইয়া পুষ্পিত কিংশুক রকে সমাকীণ পর্বতের ন্যায় শোভান্বিত হইল, এবং হেম পুঞ্জ সমন্বিত সেই সকল বাঁণ ধারণ করিয়া অগ্নি প্রজ্বলিত গিরির ন্যায় প্রকাশ পাইতে লাগিল। মহারাজ! তৎপরে অলযুষ ক্রোধান্থিত হইয়া মহেক্র তুল্য অভিমন্যুকে শর সমূহে সমাচ্ছাদিত করিল। রাক্ষস বিমুক্ত যম-

দণ্ডোপম সেই সকল শাণিত বাণ অভিমন্যুকে ভেদ করিয়া ধরাতলে প্রবিষ্ট হইল, এবং অভিমন্যু বি-মুক্ত স্থবৰ্ণ-মণ্ডিত বাণ সকলও অলম্বকে ভেদ করিয়া মহীতলে প্রবেশ করিল। তৎপরে, শক্র যেমন ময়দানবকে রণ বিমুখ করিয়াছিলেন, সেই রূপ অভিমন্থ্য <mark>সন্নতপর্বর শর নিকরে অলস্</mark>বকে বিমুখ করিলেন। শত্রুতাপন রাক্ষ্স, রণে শত্রু কর্তৃক বধানান ও বিমুখ হইয়া তামদী মহামায়া প্রাত্ত্রাব করিল। তং পরে সকলেই রণস্থলে অন্ধকারে আর্ত হইয়া না অভিমন্ত্যু, না স্ব পক্ষ, না পর পক্ষ, কাহাকেও দেখিতে পাইল না। কুরুনন্দন অভিমন্যু সেই ঘোর ৰূপ মহা অন্ধকার দেখিয়া অত্যুগ্র ভাস্ক-রাক্ত প্রাছর্ভূত করিলেন। হে মহাপতে। তিনি সেই ভাকরাত্রের প্রভাবে ছুরাত্মা রাক্ষ্যের মায়া বিনাশ ক্রিলেন, স্বতরাং সমস্ত জগং প্রকাশিত হইল। রখিপ্রধান মহাবীয়া অভিমন্ত্রা সংকুদ্ধ হইয়া তথন সমতপর্ব শর-নিকরে অলম্বকে আচ্ছাদিত করি-লেন। রাক্ষস অলম্ব সেই প্রকার অন্যান্য বছবিধ মায়ার প্রাত্ত্র্ভাব করিল, সর্ববাক্ত্রবিৎ অমেয়াত্মা কাদ্ধন-পুত্র তাহা দিব্যাস্ত্র দারানিবারিত করিলেন। পরিশেষে রাক্ষদের মায়া সকল নিহত হইলে, সে, অভিমন্ত্যুর বাণ সমূহে বধামান হইয়া মহাভয় প্রযুক্ত সেই স্থলে রথ পরিত্যাগ করিয়া পলায়ন করিল। অভিমন্থ্য সেই কূটযোধী রাক্ষসকে সত্তর পরা-ক্ষিত করিয়া, যে প্রকার গন্ধবান্ মদান্ধ গজেন্দ্র পত্ম-সমন্বিত সরোবর আলোড়ন করে, তাহার নাায়, আপনকার সৈন্য মর্দ্দন করিতে লাগিলেন।

হে মহারাজ! তদনন্তর শান্তনু-নন্দন ভীশ্ব আপনকার দৈনাদিগকে অভিমন্ত্রা কর্ভৃক বিদ্রাবিত দেখিয়া
ভাঁহাকে রথবংশ দ্বারা পরির্ত করিলেন। ধার্তরাজীয় বছল মহারথ একত্র হইয়া সেই এক বীরকে
পরিবেউন করিয়া বাণ সমূহ দ্বারা বিদ্ধ করিতে
লাগিলেন। রথিগণের মধ্যে বীরাগ্রগণা সর্ক্ব শস্ত্রধারি-এবর পরাক্রমে পিতৃ তুলা, বল বিক্রমে ক্রফ

ভুল্য অভিমন্ত্র সংগ্রামে পিতা অর্জুনের ও মাতুল ক্ষের সদৃশ বছবিধ কার্য্য করিতে লাগিলেন।

তৎ পরে ধনঞ্জয় পুজের রক্ষা মানসে, ক্রোধান্বিত হইয়া সৈনিক বীর পুরুষ দিগকে নিহত করিতে করিতে ভীন্নসমীপে উপনীত হইলেন। আপনকার পিতা দেবত্রতও সূর্য্য সন্ধিধানে রাচ্ছ গ্রহের ন্যায়, পার্থের প্রতি অভ্যুদাত হইলেন। তদনস্তর, আপন-কার পুজেরা রথ নাগ অশ্বের সহিত, ভীন্মকে পরি-রুত করিয়া রক্ষা করিতে লাগিলেন। পাগুবেরাও মহারণে নিযুক্ত ও বর্মিত হইয়া ধনঞ্জয়কে পরিবেইন করিয়া রক্ষা করিতে লাগিলেন। পরে রুপাচার্য্য ভীন্ন-সন্মুখস্থ অৰ্জুনকে পঞ্চ বিংশতি বাণে বিদ্ধ করিলেন। শার্দূল যেমন হস্তীকে আক্রমণ করে, তাহার ন্যায়, পাণ্ডব-হিতৈষী সাত্যকি রূপাচার্য্যকে আক্রমণ করিয়া নিশিত শর সমূহে বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। রূপও কুন্ধ ও সত্তর হইয়া সাত্যকির হৃদয়ে কম্পত্র যুক্ত নয় শর বিদ্ধ করিলেন। তথন শিনি-নন্দন বেগবান্ ও ক্রুদ্ধ হইয়া শরাসন আনমন পূর্ব্বক ক্লপাচার্য্যের বিনাশ ক্ষম এক শিলীমুখ শীঘ্র সন্ধান করিয়া ক্ষেপণ করিলেন। দ্রোণ-পুত্র অশ্বর্থামা ইন্দ্রের অশনি তুল্য সেই শিলীমুখ বেগে আপতিত হ্ইতেছে দেখিয়া পরম ক্রুদ্ধ হইয়া তাহা দ্বি খণ্ড করিয়া ছেদন করিলেন। রখিপ্রবর সাত্যকি তখন ক্লপাচার্য্যকে পরিত্যাগ করিয়া, যেমন আকাশে রাছ গ্রহ চন্দ্রের প্রতি ধাবমান হয়, তাহার ন্যায় অশ্বপামার প্রতি ধাবমান হইলেন। অশ্বপামা সাত্যকির ধনুক দ্বিখণ্ডে ছেদন করিয়া তাঁহাকে শর সমূহে তাড়িত করিলেন। সাত্যকি অন্য এক শক্রঘাতী ভারসাধন ধনুক গ্রহণ করিয়া ষটি শরে অশ্বত্থামার বাহু ও বক্ষঃস্থল বিদ্ধ করিলেন। অশ্ব-পামা তাহাতে ব্যথিত ও মূর্চ্চাপন্ন হইরা ধক যটি व्यवनश्चन कतिशा पूर्ट्ड कान त्राथाशास्त्र উপविखे রহিলেন। অনন্তর প্রতাপবান দ্রোণ-নন্দন সংজ্ঞা লাভ করিয়া জোধাবিষ্ট চিন্তে সাত্যকিকে এক না-

রাচে বিদ্ধ করিলেন। সেই নারাচ স্কুজিকিকে ভেদ করিয়া, বসস্ত কালে বলবান সর্প শিশুর বিল প্রবে-শের ন্যায়, ধরণীতলে প্রবেশ করিল। অশ্বত্থামা অপর এক ভল্ল দ্বারা সাত্যকির উৎক্রই ধৃত্ত ছেদন করিয়া সিংহ্নাদ করিলেন, এবং নিদাঘাত্তে মেঘ যেমন দিবাকরকে আচ্ছাদিত করে, তাহার ন্যায় পুনর্বার সাত্যকিকে শর সমূহ দারা আচ্ছাদিত করি-লেন। হে মহারাজ! সাত্যকিও সেই শরজাল বি-নাশ করিয়া অনেক বিধ শর জালে অশ্বর্থামাকে সত্ত্র সমাকীর্ণ করিলেন, এবং স্থ্র্যা যেমন মেঘ হইতে মুক্ত হইয়া তাপ প্রদান করে, তাহার ন্যায় বীর শত্রুহম্ভা শিনি-নন্দন সাত্যকি অশ্বপামার শর জাল হইতে মুক্ত হইয়া অশ্বত্থামাকে তাপিত করি-তে লাগিলেন। মহাবল পরাক্রান্ত সাত্যকি সমুদ্যত হইয়া পুনর্বার সহস্র সহস্র শর দ্বারা অব্ধর্থামাকে আচ্ছাদিত করিলেন।

প্রতাপশালী দ্রোণাচার্য্য, পুল্ল অশ্বপামাকে রাছগ্রস্ত নিশাকরের ন্যায় দেখিয়া সাত্যকির প্রতি অভিদ্রুত হইলেন, এবং সাত্যকিপীড়িত অশ্বপামাকে
রক্ষা করিবার অভিলাবে স্থতীক্ষ্ণ বাণে তাঁহাকে বিদ্ধা
করিলেন। সাত্যকি তথন রণে মহারথ গুরুপুল্র
অশ্বপামাকে পরিত্যাগ করিয়া লৌহময় বিংশতি
শরে দ্রোণকে বিদ্ধা ক্লিলেন। তদনস্তর অমেয়াত্মা
মহারথ শ্বেতবাহন অর্জ্জন কুদ্ধা হইয়া দ্রোণের প্রতি
অভিদ্রুত হইলেন। মহারাজ! অদনস্তর দ্রোণ ও
আর্জুন উভয়ে, নভস্তলে রহস্পতি ও শুক্র গ্রহের
ন্যায়, সংগ্রামে সমবেত হইলেন।

অফনবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ৯৮॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্জয়! মহাধমুর্দ্ধর দোণ ও ধনঞ্জয় এই পুরুষ প্রধান ছুই বীর রণে মিলিত হইয়া কি প্রকার যুদ্ধ করিলেন? পাণ্ডু-পুক্ত অর্চ্জুন ধীমান্ দোণের সর্বাদা প্রিয়, আচার্য্য দোণও পার্থের চির প্রিয়, উহারা উভয়েই রথী ও সিংহের নাায় উৎকট বলশালী, উহাঁরা কি প্রকারে যত্নবান্ হইয়া সমর কার্য্য করিলেন ?

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! দ্রোণাচার্য্য অর্জুনকে যুদ্ধ স্থলে আপনার প্রিয় বলিয়া জানেন না; অর্জুনও ক্ষত্রধর্ম আশ্রয় করিয়া গুরু দ্রোণকে প্রিয় জ্ঞান করেন না। সমস্ত ক্ষজ্রিয়েরাই কেহ কাহাকে পরস্পর রণে পরিত্যাগ করেন না, ভাতা ও পিতা পিতৃব্যাদির সহিতও নির্মায়্যাদ ভাবে যুদ্ধ করিয়া পাকেন। হে ভারত! দ্রোণাচার্য্য অর্চ্জুনের তিন বাণে বিদ্ধ হইয়া তাহা অৰ্জুন-চাপ-মুক্ত বাণ বলিয়া চিন্তা করিলেন না। অর্জুন পুনর্বার শর বর্ষণে দ্রোণকে সমাচ্ছাদিত করিলে, দ্রোণ, যে প্রকার বন-দহনকারী অগ্নি প্রস্থালিত হইয়া উঠে, সেই প্রকার রোধানলে জ্বলিয়া উঠিলেন। তদনম্ভর জ্বিলছে সন্নতপর্বে শর সমূহে অর্জুনকে সমার্ত করিলেন। তৎ পরে রাজা ছুর্য্যোধন, দ্রোণের পার্ফি রক্ষার निभित्क विभर्जताक स्मर्गातक पारमम कतिरान। সপুত্র ত্রিগর্ভরাব্দ কুদ্ধ হইয়া শরাসন আয়ত করিয়া লৌহমুখ বাণ সমূহে অর্জুনকে সমাচ্ছাদিত করি-লেন। তাঁহাদিগের উভয়ের বিমুক্ত বাণ সকল, যে-মন হংসঞ্জো শরৎ কালে নভস্তলে গমন করত শোভা প্রাপ্ত হয়, সেই প্রকার অন্তরীক্ষে প্রদীপ্ত হইল, এবং যে প্রকার পক্ষীগণ চতুর্দ্দিকৃ হইতে আসিয়া ফলভারে অবনত স্বাত্ন ফল যুক্ত হৃক্ষে নিবিঊ হয়, সেই প্রকার চতুর্দিক্ হইতে আসিয়া অর্জুনের শরীরে নিবিষ্ট হইতে লাগিল। পরস্ক রিধ প্রধান অর্জুন নিনাদ পূর্বেক সপুত্র ত্রিগর্ভরাজকে শর্নিকরে বিদ্ধ করিলেন। তাঁহার।ও প্রলয় কালীন কাল স্বৰূপ অৰ্জুন কৰ্ভৃক বধ্যমান হইয়াও মরণে ক্তনিশ্চয় হইয়া তাঁহার অভিমুখেই প্রবৃত্ত থাকিয়া তাঁহার রথের প্রতি শর বর্ষণ করিতে লাগিলেন। ষেমন পর্বাত জল বর্ষণ প্রতিগ্রাহ করে, সেই প্রকার वीज्ञ क्लू फिल्मात वर्षण कतिया कांशामिरगत महे শর রুটি প্রতিগ্রহ করিলেন। তাঁহার আশ্চর্যা হস্ত-

লাঘব দর্শন করিলাম, তিনি একাকী বহু যোদ্ধা ক্বত ছুঃসহ বাণ রৃষ্টি, পবন কর্ত্তৃক মেঘ মণ্ডল নিবা-রণের ন্যায় নিবারণ করিলেন; তাঁহার তাদুশ কর্ম্ম पिथिया पिर मानव श्रेग महारो इहेटलन।

হে মহারাজ ভরত-নন্দন! তদনন্তর পার্থ ত্রিগর্ভ সৈন্য দিগের প্রতি ক্রুন্ধ হইয়া বায়ব্যাক্র পরিত্যাগ করিলেন। তাহাতে বায়ু নভত্তল ক্ষোভিত, তরু-গণ নিপাতিত ও সৈনিক দিগকে বিনিহ্ত করত প্রাত্নপুত হইল। হে মহারাজ! দ্রোণাচার্য্য সেই স্থদারুণ বায়ব্যাস্ত্র অবলোকন করিয়া ভয়ানক শৈ-লাস্ত্র প্রয়োগ করিলেন। সেই শৈলাস্ত্র দ্রোণ কর্তৃক त्रा विनिर्मुक रहेल, वाश् अमान्त उ मन पिक् প্রসন্ন হইল। তদনন্তর পাণ্ডু-স্থত বীরাগ্রগণ্য অর্জুন जिগर्खद्रारखद्र दशी मधूहरक निद्गंৎमाह, পदाक्रमहीन ও বিমুখ করিলেন।

পরে ছুর্যোধন, রথিপ্রবর রূপ, অশ্বত্থামা, শল্য, कार्याकताक स्रमिक्न, अवस्तिताक विनम् ও अञ्चविनम् ও বাহ্লিকগণের সহিত বাহ্লিকরাজ, মহৎ রথবংশে পার্থের চতুর্দিক্ পরিবেষ্টন করিলেন। ভগদত্ত ও মহাবল পরাক্রান্ত শ্রুতায়ু, ইহাঁরা তুই জন গজ সৈন্য দ্বারা ভীমসেনের চতুর্দ্দিক্ পরিবেউন করি-লেন। ভূরিশ্রবা, শল ও স্থবল পুদ্র বিমল তাক্ষু, শর নিকর দারা মাজী-পুক্ত দমকে পরিবারিত করিলেন। ভীগ্ন সদৈনিক ধৃতরাষ্ট্র-পুত্র দিগের সহিত সমবেত হইয়া যুধিষ্ঠিরের নিকট গমন পূর্ধক তাঁহাকে দর্বা-তোভাবে পরিবেউন করিলেন। হে নরনাথ। মহা-বলপরাক্রান্ত পৃথা-নন্দন রুকোদর গজ সৈন্য আপ-তিত দেখিয়া, কাননে মৃগরাজের ন্যায় স্ক্র লেহ্ন করত গদা গ্রহণ পূর্ব্বক সত্তর রথ হইতে লক্ষ প্রদান করিয়া আপনকার সৈন্যদিগকে ভয়ার্ভ করিলেন। গজারোহী যোদ্ধা গণ তাঁহাকে গদা হস্ত দেখিয়া मयज्ञ रहेश। ठ्जूफिंटक श्रतिदय्येन क्तिलन। य প্রকার মহামেঘ মণ্ডলের মধ্যে রবি বিরাজিত হন, সেই প্রকার পাণ্ডু-পুত্র ভীম গজ সৈন্যের । তিন বাণে ধৃষ্টছামও বিরাটকে বিদ্ধা করিয়া দ্রুপদের

মধ্যে বিরাজিত হইলেন। তিনি প্রন সদৃশ হইয়া অনুপম বিস্তৃত মেঘ জাল তুল্য সেই গজ সৈন্যকে গদা দারা বিজাবিত করিতে লাগিলেন। দস্তি সকল বলবান ভীমসেন কর্তৃক বধ্যমান হইয়া মেঘের ন্যায় গর্জ্জন করত আর্ডনাদ করিতে লাগিল। ভীম-দেনও রণ মধ্যে দন্<mark>তী</mark>গণের দন্তে বছধা বিদারিত হইয়া প্রফুল পুষ্পিত অশোক রক্ষের ন্যায় শোভা ধারণ করিলেন, এবং দগুহস্ত অন্তক সদৃশ হইয়া কোন কোন হস্তীর দম্ভ উৎপাটন করিয়া তাহা-मिशक मछ्हीन क्रिलन, **এবং সেই** मुख लहे-য়াই তদ্বারা তাহাদিগের কুম্ভ প্রদেশ সমাহত করিয়া তাহাদিগকে সমরে পাতিত করিতে লাগি-লেন। তিনি হস্তীগণের মেদ ও মজ্জায় নিধিক্ত হইরা রুধিরাক্ত দেহে শোণিত সিক্তা গদা ধারণ করিয়া রুদ্রৈর ন্যায় অবলোকিত হইতে লাগি-লেন। হে ভূপাল! হন্তী সকল এই ৰূপে নিহত হইতে লাগিল, এবং হতাবশিক বৃহৎ বৃহৎ হস্তী সকল আহত হইয়া স্ব পক্ষ সেনাদিণকেই বিমর্দন করিয়া চতুর্দ্দিকে ধাবমান হইল। ছুর্য্যোধনের সমু-**मात्र रिमना ठजूर्फिएक श्रमात्र मान रमर्थ अकल हरू** । হন্তীর বিমর্দ্দন শঙ্কায় পুনরায় পরাজুখ হইল।

নব নবতি তম অধ্যায় সমাপ্ত । ১৯ ।

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! ঐ দিবস মধ্যাহ্ল সময়ে সোমকগণের সহিত ভীম্মের ভয়ানক লোক-ক্ষয়কর সংগ্রাম হইল। রথিশ্রেষ্ঠ গঙ্গা-নন্দন শত শত সহস্ৰ সহস্ৰ পাণ্ডৰ সৈন্য দিগকে শাণিত বাণ নিচয়ে দক্ষ করিতে লাগিলেন। যে প্রকার গোগণ ছিল্ল ধানা রাশি মর্দ্দন করে, সেই প্রকার আপনকার পিতা দেবত্রত পাণ্ডব সৈন্য মর্দ্দন করিতে লাগি-লেন। ধৃষ্টত্যুন্ন, শিখণ্ডী, বিরাট ও দ্রুপদ মহারথ ভীমের নিকট গমন পূর্ব্বক তাঁহাকে শর নিকরে নিহত করিতে লাগিলেন। শত্রুকর্ষণ ভীমুও তিন

প্রতি এক নারাচ নিক্ষেপ করিলেন। হে নরপাল! ধৃউদ্ধান্ন প্রভৃতি সেই মহাধন্ত্র্র্জরেরা ভীন্নান্ত্রে বিচ্চ হইয়া পাদস্ট সর্পের ন্যায় কুদ্ধ হইলেন। শিখণ্ডী ভারত পিতামহভীয়কে বাণ বিদ্ধ করিতে লাগিলেন, কিন্তু অক্ষয় বীর ভীম তাঁহার স্ত্রীত্ব মনে করিয়া তাঁহাকে অন্ত্র প্রহার করিলেন না। ধৃষ্টছ্যন্ন ক্রোধে প্রজ্বলিত অগ্নি সমান হইয়া তিন বাণে ভীয়ের বাছ ত্বর ও বক্ষাস্থল বিদ্ধ করিলেন। দ্রুপদ পঞ্চ বিংশতি, বিরাট দশ এবং শিখণ্ডীও পঞ্চ বিংশতি বাণে ভীন্ন-কে বিদ্ধ করিলেন। মহারাজ! ভীয় তাহাতে অতি বিদ্ধ ও রুধির সমূহে পরিপ্রত হইয়া বসন্ত কালীন পুষ্পাসবর্ণ রক্তাশোক বৃক্ষের ন্যায় প্রভান্বিত হই-লেন, এবং তাঁহাদিগের শিখণ্ডী ব্যতীত প্রত্যেককে তিন তিন বাণে বিশ্ব করিয়া এক ভল্ল ছারা ক্রপ-দের ধনুক ছেদন করিয়া কেলিলেন। রাজা দ্রুপদ অন্য ধনুক লইয়া শাণিত পঞ্চ বাণে ভীন্মকে বিদ্ধ করিয়া তিন বাণে তাঁহার সার্থিকে বিদ্ধ করিলেন। যুধিষ্ঠির-হিতৈষী ভীমদেন, দ্রৌপদী-নন্দনেরা পঞ্চ ভাতা, কৈকেররাজেরা পঞ্চ ভাতা ও সাত্বত সাত্যকি ধৃউচ্চান্নকে পুরোবর্তী করিয়া পাঞ্চালরাজ ক্রপদকে রক্ষা করিবার অভিলাবে ভীম্বের প্রতি অভিদ্রুত হইলেন। হে নরাধিপ! আপনকার পক্ষ সকলেই সৈন্যদিগের সহিত, ভীন্মকে রক্ষা করিতে সমুদ্যত হইরা পাণ্ডব সেনার প্রতি উপদ্রুত হইলেন। তথন উভর পক্ষের মনুষা, অশ্ব, হস্তী ও রথির যমরাজ্য-বৰ্জন অতি মহৎ সঙ্কুল সংগ্ৰাম হৃইতে লাগিল। রথী র্থিকে আক্রম করিয়া যমালয়ে প্রেরণ করিতে লাগিল। মনুষ্য, হন্তী, অশ্ব ও সাদী অন্যান্য মনুষ্য, হন্তী, অশ্ব ও সাদীকে আক্রমণ পূর্বক সন্নত পর্বব শর নিচয় দারা পর লোকে উপনীত করিতে লা-গিল। হে নরপতে! স্থানে স্থানে রথ সকল নানা विश्र चुनाक्रण वारण रूजमात्रथि ও तथि विरीम रूरेशा রণ ক্লেব্রের চতুর্জিকে ধাবমান হইরা প্রমন করিতে লাগিল। দেখিলাম, ঐসকল রথ ৰায়ু সদৃশ ও গল্পব

নগরোপম হইয়া বহুল মসুষ্য অশ্ব মর্দন করিয়া বায়ু বেগে ধাৰমান হইতে লাগিল। হে নরপাল! নীতিতে বৃহস্পতিকে ও সম্পত্তিতে কুবেরকে অতিক্রম করি-য়াছেন, এবং শৌর্যো ইন্দ্রের উপমা ধারণ করেন, এতাদৃশ দেবপুত্র সম বর্মা, কুণ্ডল ও উফীবধারী তেজন্বী কাঞ্চনাঙ্গদ-বিভূষিত সমুদয় শূর রখী রাজ গণ রথ-বিহীন হইয়া প্রাক্কত মানব গণের ন্যায় ইত-ন্তত ধাৰমান হইলেন। সমুদর দন্তীগণ আরোহি বিহীন হইয়া স্ব পক্ষ সেনাদিগকে মর্দ্দন করিয়া শব্দ পূৰ্ব্বক পতিত হইতে লাগিল। নৰ মেঘ সদৃশ হন্তী গণ মেঘ গর্জ্জনের ন্যায় শব্দ করিয়া ধাৰমান হইল। তাহাদিগের বিচিত্র বর্মা, চামর, পতাকা, হেমদগু ছত্র ও শাণিত তোমর সকল ইতন্তত বিশীর্ণ হইয়া গেল। তাহাদিগের আরোহীগণও গব্ধ বিহীন হইয়া সেই উভয় পক্ষের সঙ্গুল রণ ক্ষেত্রে ধাৰমান হইল। নানা দেশীয় শত শত সহস্র সহস্র হেম বিভূবিত অশ্বগণকে বায়ুবেগে প্রক্রত হইতে দেখাগেল। অশ্ব সকল হত হইলে তাহাদিগের আরোহীগণ অসি গ্রহণ করিয়া স্বয়ং দ্রব্যাণও অনেকে অন্য কর্ত্ত্ক বিদ্রাব্য-মাণ হইল। এক একটা হন্তীধাৰমানপদাতি সকল ও অশ্ব সকলকে বিমর্দিত করিয়া অন্য হন্তীর সহিত মিলিত হইয়া গমন করিল, এবং অনেক রথও মর্দ্দন করিতে লাগিল। রথ সকল ভূ-পতিত অশ্বদিগকে এবং অনেক অশ্বও মনুষ্যদিগকে বিমৰ্দিত করিতে লাগিল। এই ৰূপ বছ প্রকারে পরস্পর মর্দ্ধিত হইতে লাগিল। তাদৃশ ভরাবহ স্থদারুণ সংগ্রামে শোণিত ও অন্ত্র সমূহের তরঙ্গ-বিশিষ্টা ছোরা ছুর্গম্যা নদী সমুৎপন্না হইল। অন্থি রাশি উহার সংবাধ, কেশ কলাপ উহাুর শৈৰাল, ভগ্ন রথ সকল উহার হ্রদ, বাণ সকল উহার আবর্ত্ত, অশ্ব সকল উহাতে মীন, মন্তক সকল ১ উহাতে উপল খণ্ড, হন্তী সকল উহাতে গ্রাহ, করচ ও উঞ্চীব সকল উহার ফেণ, ধয়ুক উহার বেলা ভূমি, অনি সকল উহার কচ্ছপ, এবং পতাকা ও ধল সকল উহার তীরস্থ রক্ষ স্বৰূপ হইল। এ নিদী

মত্মুষ্য ৰূপ তীর ক্ষয় করিতে লাগিল, মাংসাশী आगीतन উহার হংস खानी हरेल। जलत ननी সকল সাগর বর্দ্ধিনী হইয়া থাকে, ঐ নদী যমরাজ্য বর্দ্ধিনী হইয়া উঠিল। শৌর্যা-সম্পন্ন মহারথ বহু ক্ষল্রিয়গণ ভয় পরিত্যাগ করিয়া অশ্ব, হস্তী ও রথ স্বৰূপ ভেলা म्नाता के नमी रहेटल উजीर्ग रहेटल माशित्मन। रामन देवजब्री नमी मृज वाक्तिक यम ब्राब्स वहेशा यार, সেই ৰূপ ঐ শোণিত নদী মৃক্চান্থিত ভীৰু বাক্তি मिगरक व्यथवाहिक कतिया नहेया याहेरक नांशिन। ক্ষজ্যিগণ তাদৃশ মহা হত্যাকাণ্ড দেখিয়া চিৎকার শব্দে বলিতে লাগিলেন, ছুর্য্যোধনের দোবেই ক্ষজিয় গণ ক্ষয় প্রাপ্ত হইতে লাগিল। জনেশ্বর ধৃতরাষ্ট্রই বা কি হেতু লোভে মোহিত ও পাপমতি হইয়া গুণ-বান্ পাণ্ডু-পুক্র দিগের প্রতি ছেব করিলেন? তাঁহা-দিগ্রের পরস্পর কথিত, পাগুবদিগের প্রশংসা ও আপনকার পুত্রদিগের নিন্দা স্থচক এই ৰূপ বছ-বিধ বাক্য শ্রুত হইতে লাগিল। সমস্ত লোকের নিকট অপরাধী আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন সমস্ত যোদ্ধাদিগের কথিত ঐৰপ বাক্য অবৃণ করিয়াও ভীন্ন, দ্রোণ, রূপ ও শল্যকে কহিলেন, ভোমরা নিরহন্কার হইয়া যুদ্ধ কর, কি জন্য বিলম্ব করিতেছ? হে মহী-नाथ ! उपनस्तत, कूझ পাগুবদিগের সেই অক্ষ ক্রীড়া হেতু অতি ভয়ানক মহৎ হত্যাজনক যুদ্ধ হইতে লাগিল। হে বিচীত্রবীর্য্য-নন্দন! অনেক মহাত্মা পূর্বে আপনাকে নিবারণ করাতেও যে আপনি তাহা গ্রাহ্য করেন নাই, তাহার স্থদারুণ এই ফল এক্ষণে আপনি প্রত্যক্ষ করুন। সমরে কি পাওবেরা কি কৌরবেরা কি তাঁহাদিগের সৈন্যেরা বা অনুগত ব্যক্তিরা, কেহই প্রাণ রক্ষায় চেফা করিতেছেন না। আপনি যে পূর্বে কাহারো নিবারণ বাক্য প্রবণ করেন নাই, সেই কারণেই হউক, কি দৈব প্রযুক্তই হউক কিয়া আপনকারই অনীতি প্রযুক্তই হউক, এই ভরানক স্বন্ধন ক্ষয় উপস্থিত হইয়াছে।

্শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০০॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! নরব্যাদ্র অর্জুন স্থ-শর্মার অনুচর ক্ষজ্রিয়দিগকে শাণিত বাণে প্রেত রা-জের আলয়ে প্রেরণ করিতে লাগিলেন। স্থশর্মাও অর্জুনকে শর সমূহে বিশ্ব করিতে লাগিলেন। তিনি সপ্ততি বাণে ক্লফকে বিদ্ধ করিয়া নয় বাণে অর্জুনকে বিদ্ধা করিলেন। মহারথ ইন্দ্র-তনয় স্থশর্মাকে শর নিকরে নিবারিত করিয়া ভাঁহার যোধগণকে যম ভবনে প্রেরণ করিতে লাগিলেন। স্থশর্মার অবশিষ্ট মহারথ যোধগণ প্রলয় কালীন কাল সদৃশ অর্জুন কর্তৃক বধামান হইয়া ভয়ে পলায়ন করিল। কেহ কেহ অশ্ব, কেহ কেহ রখ, কেহ কেহ গব্দ পরিত্যাগ করিয়া দিগ্ রিদিগ্ পলায়ন করিল। অনেকে অশ্ব, হস্তী ও রথ লইয়াই অতি ত্বরান্বিত হইয়া ধাবমান হইল। অনেক পদাতি সেই মহা রণে শস্ত্র পরি-ত্যাগ করিয়া কাহারো অপেক্ষা না করিয়া ইতন্তত পলায়ন করিল। ভাহাদিগকে ত্রিগর্জরাজ স্থশর্মা ও অন্যান্য প্রধান রাজা বছ বার নিবারণ করিলেও তাহারা পলায়নে নির্প্ত হইল না।

হে নরনাথ! আপনকার পুত্র ছুর্য্যোধন সেই সমস্ত সৈন্যকে পলায়মান দেখিয়া সর্ব্ব সৈন্যের অগ্রবর্ত্তী হইয়া ভীন্নকে অগ্রে করিয়া ত্রিগর্ভাধিপতি স্থশর্মার জীবিতার্থে সর্ব্ব প্রকার মহা উদ্যোগ সহ-কারে অর্জুনের প্রতি উপক্রত হইলেন। একাকী ছুর্য্যোধন সমস্ত ভ্রাতার সহিত বছবিধ বাণ বিকি-রণ করত সেই অর্জ্জুনের সমরে অবস্থিত হইলেন, অন্যান্য মনুষ্যেরা পলায়ন করিল। পাগুবেরাও সর্বব প্রকার উদ্বোগে যুদ্ধোদ্যত হইয়া ফাল্গুনের রক্ষার্থে ভীন্ন সমীপে গমন করিলেন। তাঁহারা গাণ্ডীবধস্বার ভয়ানক বল বিক্রম জানিয়াও উৎসাহ সহকারে হাহাকার শব্দে তাঁহাকে চতুর্দ্দিকে পরি-বেফ্টন করিয়া ভীম্মের সমীপে পমন করিলেন। তদ-নম্ভর তালধন্দ শূর ভীম সমত পর্বে শর নিকরে পাগুবদিগের সৈন্য সমাচ্ছন্ন করিলেন। হে মহা-রাজ! তদুনন্তর দিবাকর আকাশের মধ্যগত হইলে,

কৌরবেরা সকলে একত্রীভূত হইয়া পাণ্ডব দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। সাত্যকি পঞ্চ বাণে ক্লভবৰ্মাকে বিদ্ধ করিয়া সহস্র সহস্র বাণ বিকীর্ণ করত সমরে অবস্থিত হইলেন। রাজা ক্রপদ দ্রোণা-চার্য্যকে প্রথমত শাণিত বহু শরে বিন্ধ করিয়া পুন-র্বার সপ্ততি সংখ্য শরে বিদ্ধ করিলেন। তৎপরে তাঁহার সারধিকে পঞ্চ বাণে বিদ্ধ করিলেন। ভীম-সেন প্রপিতামহ রাজা বাহ্লিককে বাণ বিদ্ধ করিয়া কাননস্থ শার্দ্দুলের ন্যায় মহা নিনাদ করিয়া উঠি-लन। अर्ज्जून-शूज, विज्ञासन कर्ज्क वह वार्ष विक्र रहेशा जिन वार्ण विजयमानत इनस आरम्भ भाग विका করিলেন। যে প্রকার আকাশে বুধ ও শনি গ্রহ দীপ্তি পায়, দেই প্রকার তাঁহারা উভয় মহাসত্ত্ব মিলিত रुरेशा महाजीयन करन मीखि नारेट नानितन। বীর শত্রুহস্তা অভিমন্ত্য নয় শরে চিত্রন্সেনের অশ্ব চতুষ্টয় ও তাঁহার সারধিকে নিহত করিয়া বলবৎ নিনাদ করিলেন। হে নরপাল। মহারথ চিত্রসেন হতাশ্ব রথ হইতে শীঘ্র লক্ষ্ণ প্রদান করিয়া ছুর্ন্মু-থের রথে সত্তর আরোহণ করিলেন। পরাক্রমী জোণ নত পর্বে শর সমূহ দারা ক্রপদকে বিদ্ধ করিয়া সত্ত্র তাঁহার সার্থিকে বিদ্ধ করিলেন। রাজা দ্রুপদ সৈন্যদিগের সাক্ষাতে দ্রোণ কর্ভৃক পীডামান হইয়া পূর্বে বৈরিতা মন্বে করিয়া বেগবান্ অশ্বে রণ **इहेर्ड अंश्रेड इहेरलन। जीमरमन मक्ल रेमरना**त দাক্ষাতে মুহূর্ত্ত মধ্যে বাহ্লিককে অশ্ব, দার্রথি ও রথ বিহীন করিলেন। হে মহারাজ! পুরুষ-প্রবর বা-হ্লিক মহা সংশ্য়াপন্ন, ভয়-জনিত ত্বরান্বিত ও সত্ত্বর हरेशा लच्छ প্রদান পূর্বেক মহাত্মা লক্ষাণের রথে আরোহণ করিলেন। সাত্যকি বছবিধ শরে ক্ত-वर्षात्क निवातिष कतिश जीत्यत निक्षेष्ट श्रेटलन, এবং ষষ্টিসংখ্য স্থশাণিত লোমবাহী বাণে ভরতকুল-পাৰন ভীয়কে বিদ্ধ করিয়া মহাধনুক কম্পমান করত রখোপতে যেন নৃত্য করিতে লাগিলেন। তদ-নম্ভর পিতামহ ভীয় হেমচিত্র মহাবেগশীল নাগকন্যা

তুলা উত্তম লৌহমায় মহাশক্তি সাতাকির প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। র্ফিবংশীয় মহাযশা সাভাকি যৃত্যুক^০প অতি ছুর্জেয় সেই মহাশ্**ক্তিকে সহ**সা আপতিত হইতে দেখিয়া লাঘৰ বিচরণে তাহা বি-ফল করিলেন। মহাপ্রভা-সম্পন্ন মহাভয়ানক সেই শক্তি সাত্যকিকে প্রাপ্ত না হইয়া মহোল্কার ন্যায় ধরণী পৃষ্ঠে নিপতিত হইল। তৎ পরে রুফ্টি-নন্দন, কনক প্রভা-সম্পন্ন বেগশীল স্বীয় শক্তি গ্রহণ করিয়া পিতামহের রথের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। সাতা-কির ভুজ বেগ নিক্ষিপ্ত সেই শক্তি, মনুষ্যের প্রতি ধাবমান কালরাত্রির ন্যায়, বেগে ভীয়ের প্রতি ধাব-মান হইল। গঙ্গা-নন্দন, সেই শক্তিকে সহসা আ-পতিত হইতে দেখিয়া স্থতীক্ষু তুই কুরপ্র অন্ত দারা ছুই খণ্ডে ছেদন করিলেন, তাহাতে সেই শক্তি ভূ-তলে বিশীর্ণ হইয়া পড়িল। শত্রুকর্ষণ ভীন্ন কুদ্ধ হইয়া সেই শক্তি ছেদন করিয়াই হাস্য পূর্বকে নয় শরে সাত্যকির বক্ষঃস্থল আহত করিলেন। হে পাণ্ডপূর্বজ মহারাজ! তৎ পরে পাণ্ডবেরা ভীয় হইতে সাত্যকির পরিত্রাণ নিমিত্ত রথ, হস্তী ও অখের সহিত, ভীন্নকে পরিবেষ্টন করিলেন। তদনন্তর বি-জয়ৈষী কৌরব পাণ্ডব দিগের লোমহর্ষণ ভুমুল যুদ্ধ সমারক হইল।

একাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০১॥

সঞ্জয় কছিলেন, মহারাজ! রাজা ছুর্য্যোধন ভীয়কে কুদ্ধ ও গ্রীয়কালান্তে আকাশে মেঘারত সূর্য্যের
ন্যায় পাগুরগণে আরত দেখিরা ছুঃশাসনকে বলিলেন, হে ভারত প্রধান! শক্রনিস্থদন মহাধন্ত্র্দ্ধর
বীর ঐ ভীয় শ্র পাগুরগণে সমারত হইয়াছেন,
হে ধীর! ভোমার এই ক্ষণে অতি মহাল্লা ঐ ভীয়ের
রক্ষা করা কর্ত্রর। আমরা পিতামহকে রক্ষা করিলে
উনি পাগুর্বদিগের সহিত স্যত্ন পাঞ্চালদিগকে নিহত করিতে পারিবেন। অতএব উহাঁকে রক্ষা
করাই মহৎ কার্য্য মনে করিতেছি। ঐ মহাব্রত

মহাধসুর্দর সমরে ছুছর কর্ম করিয়া থাকেন, এবং উনি আমাদিগের রক্ষক, অতএব ভুমি উহাঁকে সর্ব সৈন্যে পরির্ত হইয়া রক্ষা কর।

আপনকার পুত্র ছুঃশাসন সমর স্থলে ছুর্য্যোধন কৰ্তৃক এই ৰূপ আদিউ,ও মহা সৈন্যে সমারত হইরা ভীন্নকে পরিবেইন পূর্ব্বক অবস্থিত হইলেন। তদন-ন্তর রখিপ্রধান স্থবল-নন্দন শকুনি স্থশিকিত, যুদ্ধ কুশল, প্রধান প্রধান মন্ত্রব্যে সমন্বিত, সৈন্য মধ্যে অবস্থিত, অতি বেগশীল, দর্পিত, পতাকা-শোভিত, নির্ম্মল প্রাস, ঋটি ও তোমর ধারী বছ শত সহস্র সাদী গণের সহিত একত্রিত হইয়া পাণ্ডু-পুক্র ধর্মরাজ, নকুল ও সহদেবকে পরিবেফীন করিয়া নিবারণ করিতে লাগিলেন। তৎ পরে রাজা ছুর্য্যোধন পা-खविष्रितक निवाद्रेश कदिवाद्र निभिष्ठ लोया-मण्यन অযুত অশ্বারোহী প্রেরণ করিলেন। তাহারা গরুড় পক্ষীর ন্যায় মহাবেগে যুদ্ধে প্রবিষ্ট হওয়াতে, পৃথিবী তাহাদিগের খুরাহতা হইয়া কম্পিতা ও নিনাদিতা रुरेल। य श्वकात পर्वज्य मस्मान वश्म वरनत मक হয়, সেই প্রকার তথন অশ্বগণের অতি মহান্ খুর শব্দ ঞাতি কুহরে প্রবিষ্ট হইতে লাগিল। সেই সকল অখের উৎপতন কালে ধূলিপটলী সমুদ্ভত হইয়া স্থ্যা পথে গমন পূর্বক স্থাতে সমার্ত क्रिल। इहर मदाविद्य हश्मावलीत পতनেत नाप्त, বেগবন্ত সেই সকল অশ্বের মহাবেগে পতন কালে পাগুরী সেনা ক্ষোভ প্রাপ্তা হইল। তাহাদিগের হেষা রবে আর কিছুই শ্রুতিগম্য রহিল না। মহা-রাজ! যেমন বর্ষা কালীন পরিপূর্ণ মহাসাগর পৌর্ণ-মাসীতে উচ্ছলিত হইলে, বেলাভূমি তাহার অৰু বেগ প্রতিহত করে, সেই প্রকার রাজা যুধিন্তির, नकून ७ महरास्य वन भूर्खक मिर मकन अशास्त्राहीत বেগ প্রতিহত করিলেন। তদনন্তর দ্বেই তিন জন রখীই নতপর্ব শর নিকরে সেই সকল অশ্বারোহীর মন্তক ছেদন করিতে লাগিলেন। হে মহারাজ। বেমন মহানাগ সকল নাগ গণ কর্তৃক গিরি গহরে । আহত কুরিলেন। ভদনন্তর অমিত্রজিৎ মহাবাছ

পতিত হয়, সেই ৰূপ সেই সকল অস্বারোহী, দৃঢ়ধন্বা যুধিষ্টিরাদি কর্তৃক রণ ক্ষেত্রে যথোচিত নিপাতিত হইতে লাগিল। তাঁহারা দশ দিকে বিচরণ করিয়া স্থশাণিত নত পর্ব প্রাসাস্ত্র দারা তাহাদিগের শির-শ্ছেদন করিতে লাগিলেন। সেই সকল অস্বারোহী গণ ঋটি অন্ত্রেও অভিহত হইরা মহা রক্ষের ফল পরিত্যাগের ন্যায়, মন্তক পরিত্যাগ করিতে লাগিল। সর্বত্ত স্থানে স্থানে আরোহীর সহিত অশ্ব সকল নিস্থদিত হইয়া পতিত ও পাত্যমান দৃষ্ট হইল। পরিশেষে অবশিষ্ট সাদীগণ আহত হইয়া, যেরূপ মৃগগণ সিংহকে দেখিয়া প্রাণ-পরায়ণ হইয়া পলায়ন করে, সেই ৰূপ ভয়ার্ভ হইয়া পলায়ন করিতে লা-গিল। তথন পাগুবেরা সেই মহা রুণে শক্র জয় করিয়া শৰ্ম ধনি ও ভেরী বাদন করিতে লাগিলেন।

जननस्क दाका पूर्त्याधन मानी रेमनारक পदाक्रिङ प्रिया मीन ভाবে अक्रतांक मनारक रेरा वनिरमन, হে প্রভু ! ঐ দেখ, জ্যেষ্ঠ পাওব যমজ অমুজ ছয়ের সহিত, আমাদিগের সাক্ষাতেই আমাদিগের সৈন্য বিদ্রাবণ করিতেছে। হে মহাবাহু! আপনার অসম্ভ বল বিক্রম লোকে বিশ্রুত আছে, অতএব বেপ্রকার বেলাভূমি সমুদ্রকে প্রতিহত করে, তদ্ধপ আপনি জ্যেষ্ঠ পাণ্ডবকে নিবারণ করুন।

প্রতাপবান্ শল্য আপন্কার পুজের সেই বাক্য অবণ করিয়া রথ সমূহ লইয়া, রাজা যুধিটির যে স্থানে ছিলেন, সেই স্থানে গমন করিলেন। তথন শল্যের অতি মহান্ সৈন্যকে মহাবেগে সহসা আ-পতিত হইতে দেখিয়া পাণ্ডুনন্দন ধর্মরাজ নিবারণ করিতে লাগিলেন, অতি শীঘ্র দশ বাণে মদ্ররাজের ন্তন ধরের অভ্যন্তরে আঘাত করিলেন, এবং নকুল ও সহদেব মদ্রবাজকে সরলগামী সপ্ত শরে বিদ্ধ করিলেন। মদ্ররাজও তাঁহাদিগের তিন জনকে তিন ভিন বাণে আহত করিয়া পুনর্কার যুধিন্তিরকে শা-विक विकि मृद्धि जवर नकून महस्मवद्य पूरे पूरे मृद्ध

ভীমদেন রাজা যুধিন্তিরকে মৃত্যুমুথ প্রবিটের ন্যায় মদ্রাজের বশবর্জী দেখিয়া যুধিন্তিরের সমীপবর্জী হইলেন। তথন দিবাকর পশ্চিম দিগবলয়ী হইয়া উভাপ প্রদান করিতে লাগিলেন, ঐ সময়ে তাঁহা-দিগের ঘোরতর অতি স্থদারুণ যুক্ষ হইতে লাগিল। দ্যধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত। ১০২।

সঞ্জ কহিলেন, হে মহারাজ! তৎ পরে অতি মহাবলাক্রান্ত আপনকার পিতৃব্য ভীম কুদ্ধ হইয়া **हर्जुर्फिक् इरेट** स्थानिक भन्न निकदन रेमना महिंक পাণ্ডব দিগকে নিহত করিতে লাগিলেন। ভীমকে षाष्म, मार्जाकरक नय़, नकुलरक जिन ও महरम्वरक माञ वारन विक्ष कतिया क्षापण वारन यूपिछिरतत वाह-**ष्ट्र ७ वक्षः इल विक्ष कतित्लन, भरत धृष्ठे छा प्रदर्भ वान-**বিদ্ধা করিয়া সিংহ্নাদ করিয়া উঠিলেন ্ব তৎপরে নকুল দ্বাদশ, সাতাকি তিন, সহদেব সগুতি, অর্জ্জুন নর, ধৃউছার সপ্ততি, ভীমসেন সপ্ত ও যুধিষ্ঠির দাদশ বাণে পিতামহকে বিদ্ধ করিলেন। জোণাচার্যা সা-তাকিকে যমদভোপম পঞ্চ বাণে বিদ্ধ করিয়া ভীম-সেনকেও তাদৃশ পঞ্চ বাণে বিদ্ধ করিলেন। যেমন মহা-গজকে তোত্র দারা বিদ্ধ করে, তাহার ন্যায় তাঁহারা ছুই জন প্রত্যেকে তিন তিন বাণে ব্রাহ্মণ-পুঙ্গব জোণকে বিদ্ধ করিলেন। সৌবার, কিতব, প্র। চ্য, প্রতীচা, উদীচা, মালব, অভীষাহ, শুরুসেন, শিবি ও বশাতি দেশীয় বোদ্ধা সকল ভীমের শাণিত শরে বধা-মান হইয়াও ভীন্নকে পরিত্যাগ করিয়া প্রস্থান করিল ন। সেই ৰূপ নানা দেশীয় সমাগত মহীপালগণও বিবিধ শস্ত্র হস্তে পাগুবদিগের অভিমুখীন হইলেন। পাগুবেরা পিতামহকে চতুর্দিগে পরিবেউন করিলে, অপরাজিত ভীম, রথি মণ্ডলীতে চতুর্দিকে পরি-বৃত হইয়া, অরণ্যে প্রদত্ত জ্বান্ত অগ্নির ন্যায়, পর পক্ষ দহন করত প্রজ্বলিত হইয়া উঠিলেন। তাঁহার আগার, রখ; শিখা, ধরুক; ইন্ধন, অসি শক্তি ও গদা এবং ক্লিক্স, শর হইল। এতাদূশ ভীম স্বৰূপ

অথি, ক্ষজ্রিয়-পুঞ্চর দিগকে দগ্ধ করিতে লাগিলেন। তিনি গৃদ্ধপত্ৰ সংযুক্ত স্থৰ্ণ-পুষ্থ অভিতেজন বাণ, কর্ণি, নালীক ও নারাচ সমুহে পাগুব সৈন্য সমাচ্ছা-দিত করিলেন। তিনি রখী দিগের রথ ধক সকল শাণিত শরে ছেদন করিয়া সমুদায় রথকে মুগুতাল বনের নাায় করিলেন। সর্ব্ব শস্ত্রধারি-প্রধান মহাবাছ ভার রথ, গঙ্গ ও অশ্ব সকল মমুষ্য-বিহীন করিলেন। হে ভরত কুল দীপ! তাঁহার অশনি ধনির ন্যায় क्यानिर्दाय ७ उन धनि व्यवन क्रिया म्यूमाय व्यानी প্রকম্পিত হইল। মহারাজ! আপনকার পিতৃবা-নিক্ষিপ্ত বাণ সকল অমোঘ হইয়া পতিত হইতে लांशिन, क्वन विशक्तित वर्ष माटक मश्नध इहेशा থাকিল না। দেখিলাম, বেগবান্ ঘোটক সংযুক্ত রথ সকল হত বীর হইয়া রণাঙ্গনে ভ্রমণ করিতে লাগিল। চেদি, কাশি ও কৰাৰ দেশীয় মহাবংশসমূত সংগ্ৰামে অপরাত্মথ বিখ্যাত চতুর্দশ সহস্র মহারথ, স্থবর্ণ নির্শ্মিত ধজে শোভমান ও তনুত্যাগে কৃত নিশ্চয় হইয়া ব্যাদিতাস্য অন্তক সদৃশ ভীন্নকে রণে প্রাপ্ত হইয়া রথ বাজি কুঞ্জরের সহিত পরলোক প্রাপ্ত হইলেন। হে মহারাজ! দেখিলাম, শত শত সহস্র সহস্র রথের চক্র ও অন্যান্য অবয়ব এবং উপকরণ সকল ভগ্ন হইতে লাগিল। বৰ্তথের সহিত ভগ্ন রথ, নিপাতিত রথী, শর, বিচিত্র কবচ, পট্টিশ, গদা, ভিন্দিপাল, শাণিত শিলীমুখ, রথনিমন্থ কাঠ, ভুণ, ভগ্ন চক্র, বাছ, কার্ম্মুক, খড়্গ, সকুগুল মস্তক, তলত্র, अमृतिज, ध्रम ७ वष्ट्या ছिन्न हात्य त्यापिनी ममाकीना হইল। হে নরপাল! শত শত সহস্র সহস্র গজ ও ঘোটক আরোহি-বিহীন ও গত-প্রাণ হইয়া পতিত হইতে লাগিল। পাগুব পক্ষ মহারথ সকলে ভীয় वार्व अभीष्ठि इहेशा भनासन कतिए नागिरनन; বীর পাওবেরা যত্নবান হইয়াও তাঁহাদিগকে নিবা-র্ণ করিতে পারিলেন না। সৈন্য সকল মহেন্দ্র সদৃশ বীৰ্য্যবাৰ ভীয়া বাণে বধ্যমান হইয়া এৰূপ সত্ত্বৰু रहेशा शनायन कतिएक नाशिन, त्य, क्रू अपन अकव

ধারমান হইল না। পাগুরী সেনার নাগ, অশ্ব ও
ধল সকল পতিত হইয়া গেল, তাহারা অচেতন
হইয়া হাহাকার করিতে লাগিল। দৈব প্রেরিড
হইয়া পিতা পুত্রকে, পুত্র পিতাকে ও প্রিয় স্থা
প্রিয় স্থাকে বধ করিতে লাগিল। দেখিলাম, পাগুর
সৈন্যদিগের অনেকে কর্চ পরিত্যাগ ও কেশ আলুলায়িত করিয়া পলায়ন করিতে লাগিল। তখন তাহাদিগের রধ-কুবর উদ্ভান্ত হইল, তাহারা গো মুথের
নায়ে উদ্ভান্ত হইয়া আর্ত্রনাদ করিতে লাগিল।

হে মহারাজ! বছুকুল-নন্দন কৃষ্ণ পাণ্ডব সৈন্য প্রভগ্ন দেখিয়া রথ প্রবর স্থগিত করিয়া পৃথা-নন্দন বীভৎস্থকে বলিলেন, হে নরসিংহ পার্থ! তুমি যাহা আকাজ্ফা করিয়াছিলে, তাহার সময় এই উপ-স্থিত হইয়াছে। এই সময়ে ভীম্মকে বিনাশ কর, নচেৎ ভোমাকে মোহ প্রাপ্ত হইতে হইবে। হে বীর! তুমি বিরাট নগরে রাজাদিগের সমাগম কালে সপ্রয়ের সমীপে বলিয়াছিলে, যে, " ছুর্য্যো-ধনের ভীম্ম দ্রোণ প্রভৃতি সৈনিক বর্গ ও অন্যান্য যে সকল ব্যক্তি তাহার নিমিত্তে আমার সহিত যুদ্ধ করিবে, তাহাদিগকে অমুচর বর্গের সহিত আমি নিহত করিব হ ছে অরিন্দম কুন্তী-নন্দন! তুমি ক্ষিত্রিয় ধর্ম্ম স্মরণ করিয়া চিন্তা রহিত হইয়া তোমার সেই বাক্য সত্য কর।

বীভৎস্থ, বাস্থদেব কর্তৃক এই রূপ অভিহিত হইয়া অধ্যেমুখে ক্লফের প্রতি তির্যাক্ ভাবে অবলোকন করিয়া যেন অনিচ্ছু হইয়া এই কথা কহিলেন, অবধ্য দিগের বধ করিয়া নরক জনক রাজ্য লাভ করা, আর বনবাস জনিত ছুংখ ভোগ করা, এ ছুই কণ্পই সমান; এক্লণে কোন্ কণ্প কর্ত্তবা; সে যাহা হউক, আমি তোমার বাক্য পালন করিব; বেখানে ভীয় আছেন, সেখানে অশ্ব চালনা করু ছুর্ব্বর্থ কুরু পিতামহকে নিপাতিত করিব।

হে নৃপ! তদনস্তর মাধব, স্থর্য্যের ন্যায় ছুর্নিরীক্ষা তীয় সমীপে রক্ষতবর্ণ রথ-যোটক চালিত ক্রিলেন। তৎপরে যুধিন্তির পক্ষ মহৎ সৈন্য মহাবান্ত পার্থকে ভীমের প্রতি রণোদ্যত দেখিয়া পুনরার্ভ হইল। পরে কুরু প্রধান ভীম সত্তর হইয়া মুছ্মু ছ সিংহ-নাদ সহকারে শর বর্ষণে ধনঞ্জয়ের রথ সমাকীর্ণ করিলেন। তাঁহার অধিক শর বর্ষণে ক্ষণ কাল মধ্যে অশ্ব ও সারধির সহিত সেই রথ দৃষ্টি পথের অতীত **हरेत । रस्ट्राप्त - नम्द्र न्य अन्य जीव वाद्य क्रज विक्रज** অশ্বদিগকে অব্যগ্ৰ চিত্তে ধৈৰ্যাবিলয়ন পূৰ্বক চালনা कतिलान। তৎ পরে পার্থ জলদ তুল্য শব্দকারী ধনুক গ্রহণ পূর্বক শাণিত শর সমূহে ভীয়েয় ধনুক ছেদন করিয়া ফেলিলেন। কুরুপ্রবর আপন-কার পিতার ধনুক ছিন্ন হইলে তিনি পুনর্কার অন্য এक जलम जूना मक्कांती महर ठान निरम्य मर्था জা৷ যুক্ত করিয়া ছুই হত্তে প্রকর্ষণ করিতে লাগি-লেন, কিন্তু অৰ্জ্জুন ক্ৰুদ্ধ হইয়া তাহাও ছেদন করি-লেন, তাহা দেখিয়া শান্তনু-স্থত, "হে মহাবাছ! माधू! माधू! एक कुकौञ्चल! माधू!" এই ৰূপ বাকো অর্জুনের হন্ত লাঘবের প্রশংসা করিলেন। তিনি অর্জ্জুনকে ঐৰূপে সম্ভাষণ করিয়া অপর এক মনোহর শরাসন গ্রহণ পূর্বক অর্জুনের রধোপরি শর সমূহ মোচন করিলেন। বাস্তুদেব মণ্ডলাকারে রথ চালনা করিয়া ভীম নিক্ষিপ্ত সেই শর সমূহ ব্যর্থ করত অশ্ব যানে পরম ক্ষমতা প্রদর্শন করিলেন। তথন রুক্ষ ও অর্জুন উভয়ে ভীম্ম শরে ক্ষত বিক্ষত হইয়া শৃঙ্গো-ল্লিখিত, অঙ্কিত ও ভয় জনিত ত্বরান্বিত গোর্ষ হুয়ের ন্যায় প্রকাশ পাইলেন।

মহারাজ! অর্জুন মৃতু যুদ্ধ করিতেছেন, আর ভীয়
সংগ্রামে নিরন্তর শর বর্ষণ করিতেছেন। তিনি উভয়
সেনার মধ্যে তপস্ত আদিতা তুলা হইয়া পাগুর
সৈনোর প্রধান প্রধান বীরদিগকে নিহত করিতেছেন,
এমন কি, যুধিন্তির সৈনিক দিপের প্রতি যেন যুগ প্রলয়
করিতেছেন দেখিয়া মধুকুল-ভিলক বীর-শক্রহন্তা
সর্ব্ব-কার্যাক্ষম মহাবাহু বাস্থদেব আর সহ্ত করিতে
পারিলেন না; রক্ত সবর্গ ঘোটক পরিত্যাগ করিয়া

রখোত্তম হইতে অবতরণ করিলেন। অপরিমিত-ত্যুতিমান্ জগৎ প্রভু তেজস্বী বল-সম্পন্ন রুফকোধে তাত্রবর্ণ-লোচন ও হননেচ্ছু হইয়া পদভরে যেন পৃথিবী বিদারণ করত মুছমুছি সিংহনাদ করিয়া ভুজ ৰূপ আয়ুধের অবলয়নে প্রতোদ হত্তে ভীয়ের অভিমুখে ধাবমান হইলেন। মহারাজ! সমরে মাধবকে ভীম্মের সমীপে সমুদাত দেখিয়া আপন-কার পক্ষীয় মনুষ্য দিগের চিত্ত একেবারে ভ্রন্ত इरेब्रा (भन। ७९ काटन वाञ्चरम् दित्र ज्या मञ्चा গণের কথিত "ভীম হত হইলেন, ভীম হত হইলেন" এই ৰূপ উচ্চ বাক্য স্থানে স্থানে প্ৰুত হইতে লাগিল। যেমন মেঘ বিচ্যুৎ মালায় শোভমান হয়, সেই ৰূপ শ্যামল মণি বৰ্ণ জনাৰ্দ্দন পীত কৌশেয় বসন পরিধানে ধাবমান হইয়া শোভিত হইলেন। যেৰূপ যূথপতি সিংহ নিনাদ্ভ সহকারে শ্রেষ্ঠ মাতঙ্গের প্রতি ধাবমান হয়, সেই ৰূপ যতু-কুলপতি বাস্থদেবনিনাদ করিতে করিতে কুরুপ্রধান ভীম্মের প্রতি বেগে অভিদ্রুত হইলেন।

শান্তরু-পুত্র ভীম পুগুরীকাক্ষ গোবিন্দকে অসদ্রান্ত হইরা আপতিত হইতে দেখিয়া বিপুল ধনুক
বিকর্ষণ করত অসদ্রান্ত চিত্তে তাঁহাকে কহিলেন,
হে পুগুরীকাক্ষ! আইস, আইস; হে দেবদেব!
তোমাকে আমার নমস্কার। হে সাত্বতশ্রেষ্ঠ! আন্
মাকে তুমি এই মহারণে নিপাতিত কর। হে বিশুদ্ধাত্মন্! হে কৃষ্ণ! হে গোবিন্দ! তুমি আমাকে
সংগ্রামে নিহত করিলে, লোকে আমার সর্ব্ব প্রকারে
শ্রেম হইবে, আমি আজি তৈলোক্যে সম্মানিত
হইব। হে বিশুদ্ধাত্মন্! আমি তোমার দাস, আন
মাকে তুমি স্বেচ্ছানুসারে প্রহার কর।

তৎ পরেই মহাবাছ অর্জুন সত্ত্বর হইয়া কেশবের পশ্চাৎ দ্রুত বেগে গমন পূর্বক বাছ দ্বয়ে তাঁহাকে গ্রহণ করিলেন। রাজীব-লোচন পুরুষোদ্ধম ক্লফ অর্জুন কর্ভুক গৃহীত হইয়াও অর্জুনকে লইয়াই বেগ পূর্বক গমন করিতে লাগিলেন। পরম্ভ ক্লুকের

नवम পদ গমনের পর দশম পদ গমন সময়ে বীর-শক্রহন্তা পার্থ বল পূর্বক তাঁহার চরণ দ্বয় গ্রহণ কুট্রিয়া কোন প্রকারে ধরিয়া রাখিলেন। অন-ক্রিবা অর্জুন কাতর হইয়া ক্রোধাকুল-লোচন ও সর্প সদৃশ নিশ্বসন্ত ক্লফকে প্রণয় পূর্বক কহি-লেন, হে মহাবাছ কেশব! নির্ত্ত হও। তুমি পূর্বে বলিয়াছিলে 'আমি যুদ্ধ করিব না' সেই বাক্য মিথা। করিও না। ভুমি যুদ্ধ করিলে লোকে তো-মাকে মিথ্যাবাদী বলিবে। হে মাধব! আমার প্রতি সমস্ত ভার আছে, আমিই পিতামহকে নি-পাতিত করিব। হে শত্রুকর্ষণ! আমি শস্ত্র, সত্য ও স্থকৃত দ্বারা তোমার নিকট শপথ করিতেছি যে, শত্রুপক্ষ যে প্রকারে বিনাশ প্রাপ্ত হয়, তাহা আমি করিব। তোমার, অদাই মহারথ চুর্জেয় ভীয়কে প্রলয় কালে অপূর্ণ তারাপতির ন্যায় আমা কর্তৃক যদৃচ্ছা ক্রমে পাত্যমান দেখিবার সম্ভাবনা।

ক্রোধাবিক মাধব মহাত্মা অর্জ্জুনের ঐ বাক্য শুনিয়া কিছু মাত্র না বলিয়া পুনর্বার রথারোহণ করিলেন। তাঁহারা উভয়ে রথস্থ হইলে, শাস্তমুপুক্র, যেমন মেঘ ছুই পর্বতে জল বর্ষণ করে, তাহার ন্যায়, তাঁহাদিগের ছুই জনের প্রতি শর বর্ষণ করিতে লাগিলেন। যে প্রকার শিশির কালান্তে স্থা, কিরণ দারা যাবতীয় পদার্থের তেজ *গা*ইণ করেন, সেইৰূপ আপনকার পিতা দেবত্রত, শর দারা যোধগণের প্রাণ হরণ করিতে লাগিলেন। পাণ্ডবেরাযে প্রকার কুরু সৈন্য ভগ্ন করিতেছিলেন, আপনকার পিতাও সেই প্রকার পাণ্ডব দৈন্য প্রভগ্ন করিতে লাগিলেন। পাগুব দিগের সৈন্য হত ও পলায়মান হইলে ভাঁহার। নিরুৎসাহ ও বিক্বত চিত্ত হইয়া অতুলাবীর ভীমকে রণে নিরীক্ষণ করিতেও সমর্থ হইলেন না, ভীয়া কর্তৃক শত শতু সহস্র সহস্র বার বধ্যমান ও ভয়ার্ত্ত হইয়া তাঁহাকে মধ্যাহ্ন কালীন স্থর্যোর ন্যায় স্বতেজঃ-প্রতপ্ত দেখিতে লাগিলেন। হে ভারত। পাওব সৈন্য সকল ভীম কর্তৃক বিজাবিত হইয়া, পঞ্চনিমুপ্ত

গোয়থের নাায় ও বলবান্ বাক্তি কর্ভ্ক ক্ষণ্ণ ছর্বল পিপালিকার নাায়, কাহাকেও আপনাদিগের পরিত্রাতা
পাইল না। শর সমূহ সংযুক্ত ছফক্সনীয় মহারথ কীয়া
কপ অগ্নি, শর শিখা দ্বারা স্থর্যার নাায় আর্ত্রাদ
হইয়া নরেন্দ্র দিগকে দগ্ধ করিতে লাগিলেন; কেহ
ভাহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিতেও সমর্থ হইলেন না।
এই ক্রপে যথন তিনি পাণ্ডব সেনা মর্দ্দন করিতেছিলেন, তখন সহস্র রশ্মি আদিতা অস্তগত হইলেন, অনন্তর শ্রমার্ভ সৈন্যগণের চিত্ত অবহারের
প্রতি প্রবৃত্ত হইল।

ত্রাধিক শত তম অধ্যায় ও নবম দিবস ় যুদ্ধ সমাপ্ত॥ ১০৩॥

্সঐয় কহিলেন, হে ভারত! তাঁহারা যুদ্ধ করিতে করিতে ভাষ্কর অন্তগত হইলে নিদারুণ সন্ধ্যা কাল উপস্থিত হইল, আর যুদ্ধ ব্যাপার দৃষ্টিগোচর হ্ইল না। রাজা যুধিন্তির, সন্ধ্যা কালে স্ব পক रिमनामिशदक जीम कर्ज्क वधामान, जम्र-विख्वल ও রণ পরাজুখ হইয়া অস্ত্র পরিত্যাগ পূর্বক পলায়ন ক্রিতে ও মহার্থ ভীম্মকে সংরক্ষ হট্য়া সৈন্য পীড়ন ফ্রিতে এবং মহারথ সোমক দিগকে প্রাজিত ও নিরুৎসাছ দেখিয়া চিন্তা পূর্বক সৈন্য দিগের অব-इः इ क्रिंड चारिन क्रिंडिन। ताका युधिष्टित অবহার করিলে, আপনকার পক্ষ সৈনাদিগেরও অবহার হইল। হে কুরুপ্রবর! মহারথগণ সংগ্রামে ক্ষত বিক্ষত হইয়। সৈন্যদিগের অবহার করিয়া শিবিরে প্রবেশ করিলেন। পাগুবের। সমরে ভীয় বাণে প্রপীড়িত হইয়া ভীম্মের রণ কার্য্য চিন্তা করিয়া তথন শান্তি লাভ করিতে পারিলেন না। হে ভরত-নন্দন! ভীমাও সমরে সঞ্জয়গণের সহিত পাণ্ডবদিগকে পরাজয় করিয়া আপুনকার পুত্রগণ কর্তৃক বন্দামান ও পূজামান ছুইয়া চতুর্দিকে হৃষ্ট ৰূপ কুৰুগণের সহিত শিবিত্ব নিবেশ করিলেন। তদনন্তর সর্বা-প্রাণি-মোহকুরী বাঁতি উপুস্থিত হইল।

म्बर्ध स्थात तकनी-मूथ नमस्त्र छुत्राधर्य शाख्य छ সঞ্জয়গণ রফিবংশীয় দিগের সহিত মন্ত্রণা করিতে উপবিফ হইলেন। মন্ত্রণাভিজ্ঞ সেই সকল মহাবল গণ অব্যথ্য চিত্ত হইয়া আপনাদিগের সময়োচিত শ্রের নিমিত্ত মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। পরে রাজ্য যুধিষ্ঠির অনেক ক্ষণ মন্ত্রণা করিয়া বাস্থদেবের প্রতি অবলোকন পূর্বক এই বাক্যবলিলেন, কৃষ্ণ! **प्रिंटल, जीम পরাক্রম जीয় হস্তীর নল বন মর্দ্ধনের** ন্যায় আমার সৈন্য মর্দ্দন করিতেছেন। উনি প্রবৃদ্ধ পার্কের ন্যায় আমার সৈন্য লেহন করিতেছেন, ঐ মহাত্মাকে নিরীক্ষণ করিতেও আমরা উৎসাহ করিতে পারি না। রণ স্থলে প্রতাপবান্ তীক্ষ্ণ শস্ত্র-ধারী ভীম, কুন্ধ ও বিষপূর্ণ ভয়ানক মহানাগ তক্ষক সদৃশ হইয়া শরাসন গ্রহণ পূর্বেক শাণিত শর সমূহ মোচন করিতে থাকেন। কুদ্ধ যম, বজ্ঞহস্ত ইন্দ্র-পাশধারী বরুণ ও গদাপাণি কুবেরকেও জয় করিতে পারা যায়, কিন্তু মহারণে কুন্ধ ভীমকে পরাজিত করিতে পারা যায় না, অতএব হে ক্লফণ আমি আত্ম বুদ্ধি দৌৰ্বলা হেতু সংগ্ৰামে ভীম নিমিত্ত শোক সাগরে নিমগ্ন হইলাম। ভীয়া সর্বাদাই আমা-দিগকে হনন করিতেছেন, অতএব আমার আর যুদ্ধে অভিরুচি হয় না, আমি বনে গমন করি, আ-মার অরণ্যৈ গমনই শ্রেয়। যেমন পতঞ্স প্রজলিত বহ্লিতে ধাৰমান হইয়া কেবল মৃত্যুকেই প্ৰাপ্ত হয়, সেই ৰূপ আমি ভীয়কে সমরে প্রাপ্ত হইয়াছি। হে বৃক্ষিকুল-পাবন! আমি রাজ্য হেতু পরাক্রমের कार्या अरू वर्षेत्रा विनाम आश्व रुरेलाम । आमात শুর ভাতৃগণও শর নিকরে নিতান্ত পীড়িত হইয়া-ছেন। উহাঁরা ভাতৃ সৌহার্দ প্রযুক্ত আমার নিমি-ত্তেই রাজ্যভ্রফ হইয়া বন গমন করিয়াছিলেন। হে মধুস্থদন! कृष्ण अयात्रहे निर्मिष्ड क्रम পाইতে-ছেন। সংপ্রতি জীবনকে বহু ও ছুর্ল্লভ বলিয়া মানি-তেছি; এক্ষণে অবশিষ্ট জীবিত কালে অনুত্তম ধর্মাচারণ করিব। হে মাধব। আমার ভাতারা ও আমি যদি তোমার অমুগ্রাহ্য হই, তাহা হইলে যাহাতে স্বধর্মের বিরোধ না হয়, এমন হিত কর কর্মা বল, যে তাহার অমুষ্ঠান করি।

ক্লম্ম যুধিষ্ঠিরের এই প্রকার বছ বাক্য বিস্তার ক্রমে ভাবণ করিয়া কারুণা প্রযুক্ত তাঁহাকে সাস্ত্রনা করত প্রত্যুত্তর করিলেন, হে সত্য-প্রতিজ্ঞ ধর্ম-নন্দন! আপনি বিষয় হইবেন না, আপনকার ভ্রাতৃ গণ শৌর্যা-সম্পন্ন, শত্রুন্থদন ও ছুর্জেয়; অর্জুন ও ভীমদেন বায়ু ও অগ্নিতুল্য তেজন্বী, মাদ্রী-পুত্র নকুল ও সহদেব এতাদৃশ বল বিক্রান্ত, যে, উহাঁরা প্রায় দেবগণের উপরও প্রভুত্ব করিতে পারেন। হে পাণ্ডুস্থত! আমার সহিত আপনকার যে সৌহার্দ্দ আছে, তৎপ্রযুক্ত আপনি আমাকে যুদ্ধে নিযুক্ত করুন, তাহা হইলে আমি ভীমের সহিত যুদ্ধ করিব। মহারাজ! আপনি আমাকে নিযুক্ত করিলে আমি তুমুল সংগ্রামে কি না করিতে পারি/? যদি অর্জ্জুন ভীয়কে বধ করিতে ইচ্ছানা করেন, তবে আমি ধৃতরাধীূর পক্ষদিগের সাক্ষাতে পুরুষপ্রধান ভীন্নকে আহ্বান করিয়া নিপাতিত করিব। হে পাণ্ডু-পুত্র। যদি বীর ভীম নিহত হইলেই আপনি জয় লাভ করেন, তাহা হইলে আজি আমি কুরু রৃদ্ধ ভীয়কে এক রথেই নিহত করিব। হে নরনাথ। যুদ্ধে আমার মহেন্দ্র সম বিক্রম দেখিবে—আমি মহান্ত্র সকল মোচন কারী ভীমকে রথ হইতে নিপাভিত করিব। যে ব্যক্তি পাণ্ডব দিগের শক্র, সে আমারও শক্র; যাহারা আমার শক্র, তাহারা আপুনারও শক্ত। হে মহীপতে! আপনকার ভ্রাতা অর্জুনের সহিত আমার সম্বন্ধ আছে, বিশেষত উনি আমার সধা ও শিষ্য, আমি উহাঁর নিমিত্ত আমার দেহ হইতে মাংস কর্ত্তন করিয়া দিতে পারি ; ঐ নরসিংহও আ-মার নিমিত্তে জীবন ত্যাগ করিতে পারেন। আমা-দিগের পরস্পর এই ৰূপ প্রতিজ্ঞা আছে যে, আমরা উভয়ে পরস্পরের পরিতাণ করিব। **অ**ভএব, *হে* রাজেন্দ্রী বে প্রকারে আমি যুদ্ধ করিতে পারি, তদ্-

বিষয়ে আপনি আমাকে নিযুক্ত করুন। কিন্তু পার্থ উপপ্লব্য নগরে লোকের নিকট প্রতিজ্ঞা করিয়াছি-লেন যে, 'আমি ভীন্নকৈ নিহত করিব ধীমান্ পার্থের ঐ বাক্য রক্ষা করা কন্তব্যহেতু উনি আ-মাকে অনুজ্ঞা করিলে আমি তাহা অবশাই করিব, সন্দেহ নাই। অথবা পার্থই শত্র-পুরঞ্জর ভীন্নকে সংগ্রামে নিহত করুন, উহাঁর পক্ষে এই ভার অপরিমিত নহে, বেহেতু উনি রণে সমুদ্যত হইলে অন্যের অসাধ্য কর্মাও করিতে পারেন। উনি দৈত্য দানবগণের সহিত সমুদ্দুক্ত দেবগণকেও রণে বিন্ট করিতে পারেন, ইহাতে ভীন্নকে যে বিনাশ করি-বেন, তাহার আর কথা কি? মহাবীর্য্য ভীম যে আপনকার অনিফাচরণ করিতেছেন, তিনি বিপ-রীত-ভাবাপন্ন, গতসত্ত্ব ও অপেবৃদ্ধি হইয়াছেন, এই নিমিত্ত তিনি কর্ত্তব্য কর্ম্ম বুঝিতে পারিতেছেন না, সন্দেহ নাই।

কহিলেন, হে মহাবাহো! হে মাধব!
তুমি বাহা বলিতেছ, তাহা যথার্থই বটে, ইহারা
সকলে একত্রিত হইয়াও তোমার বল বেগ সহ্
করিতে সমর্থ নহে। তুমি পুরুষ-সিংহ, তুমি যথন
আমার পক্ষে আছ, তথন সমন্ত যথাভিলবিত বিষয়
নিয়তই আমার লাভ হইবে। হে জয়শীল-প্রবর মোবিন্দ! আমি যথন তোমাকে সহায় পাইয়াছি, তথন
ইল্রের সহিত দেবগণকেও জয় করিতে পারি, তাহাতে মহারথ ভীয় কোন্ তুচ্ছ? কিয়ৢ, হে মাধব!
তুমি বলিয়াছিলে, 'যুদ্ধ করিব না,' এক্ষণে আমি
স্বার্থ গৌরব-নিবন্ধন তোমারে যুদ্ধে নিযুক্ত করিয়া
মিথ্যাবাদী করিতে উৎসাহ করি না; অতএব তুমি

না করিয়া আমাদিগকে উচিত মত সাহায্য কর। তীয় আমার সকাশে যুদ্ধ বিষয়ক এক প্রকার অঙ্গীকার করিয়াছেন যে "তোমার হিত নিমিত্তে আমি স্থমন্ত্রণা প্রদান করিব, কোন প্রকারেই যুদ্ধ করিব না; অপিচ, ছুর্যোধন নিমিত্ত যুদ্ধ করিব, ইহা সত্য জানিবে," অতএব হে প্রভু মাধব! তিনি আমাকে স্থমন্ত্রণা প্রদান করিয়া রাজ্য প্রদান করিবেন। হে মধুস্থদন! তাঁহার বধের উপার নিমন্ত
চল আমরা সকলে তোমার সহিত তাঁহার নিকট
পুনর্বার গমন করি। হে সর্ব্বময়! হে র্ফিনন্দন!
আমরা সকলে মিলিত হইয়া অবিলয়ে নরোত্তম
কুরুবর তীয়ের নিকট গমন করিয়া পরামর্শ জিজ্ঞাসা করি। তিনি আমাদিগকে হিতকর ও তথ্য
বাক্য বলিবেন, তিনি যেরূপ বলিবেন, সেই রূপ
করিব। হে মাধব! আমরা বাল্য কালে পিতৃহীন
হইলে তিনিই আমাদিগকে লালন পালন করিয়া
সম্বর্ধিত করিয়াছেন, সেই দৃঢ়ত্রত দেবত্রত পিতামহ
অবশাই আমাদিগকে স্থমন্ত্রণা প্রদান করিয়া জয়
প্রদান করিবেন। যথন পিতার পিতা বর্ষিষ্ঠ প্রিয়তম
সেই পিতামহকে নিপাতিত করিতে ইচ্ছা করিলাম,
তথন আমাদিগের ক্ষজ্রিয় জীবিকায় ধিক্ থাকুক।

সঞ্জয় কহিলেন, ছে মহারাজ! তদনন্তর বৃষ্ণি-नम्मन कृष्य क्रूक्रनम्मन यूधिकित्रक बिलालन, एर यहा-প্রাক্তরাজেন্ত ! আপনি ধাহা বলিলেন, ইহা আ-মারও মনোগত। গঙ্গাস্থত কৃতী দেবব্রত বিপক্ষকে রণে অবলোকন করিয়াই দক্ষ করিতে পারেন, অত-এব তাঁহার স্বধোপায় জিজ্ঞাসা করিবার নিমিত্ত তাঁ-হার নিকট আপনি গমন করুন। আপনি তাঁহাকে जिज्जामा कतिरल, जिनि यथार्थरे विरूप कार्प विन-বেন, অতএব চলুন, আমরা তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিতে গমন করি। আমরাও সেই শান্তনু-স্তুত রুদ্ধের সমীপে গিয়া মন্ত্রণা জিজ্ঞাসা করিব। তাহাতে তিনি আমাদিগকে যে মন্ত্রণা দিবেন, তদমুসারেই আমরা বিপক্ষ সহ যুদ্ধ করিব। হে পাণ্ডুপূর্বজঃ বীর পাশুবগণ ও বীর্য্যবান বাস্কদেব ঐ ৰূপ পরামর্শ করিয়া আয়ুধ ও কবচ পরিত্যাগ পূর্বক সকলে একত্রিত হইয়া ভীম-শিবিরের প্রতি গমন করিলেন। তথায় উপনীত হইয়া শিবিরে প্রবেশ,পূর্বক মন্ত-কাবনতি দারা ভীমকে প্রণাম করিলেন। হে মহা-রাজ! পাণ্ডবেরা ভরতজ্ঞেষ্ঠ ভীন্নকে মন্তক ছারা

প্রণতি করিয়া পূজা করত তাঁহার শরণাপন্ন হইলেন।
কুরুপিতামহ মহাবাছ ভীয় তাঁহাদিগের প্রত্যেককে স্বাগত জিজ্ঞাসাবাদ করিয়া কহিলেন, ভোমার
দিগের প্রীতিবর্জন কি কার্য্য আমাকে করিতে হইবেক, তাহা বল, সেই কার্য্য যদি অতি চুষ্করও হয়,
তথাপি সর্ব্ব প্রযন্তে আমি করিব।

গঙ্গা-নন্দন পুনঃপুন ঐ ৰূপ প্ৰীতিযুক্ত বাক্য কহিলে, রাজা যুধিষ্ঠির দীনচিত্তে প্রীতি পূর্ব্বক এই কথা বলিলেন, হে ধর্মজ্ঞ প্রভু পিতামহ! আমরা কি প্রকারে যুদ্ধে জয় লাভ করি? কি প্রকারেই বা রাজ্য প্রাপ্ত হই? এবং কি ৰূপেই বা প্রজা ক্ষয় না হয়, আপনি ইহার উপায় বলুন। হে বীর! আমরা আপনাকে সমরে কোন প্রকারে সহ্থ করিতে পারি না, অতএব আপনি স্বয়ংই আপনার বধো-পায় ব্যক্ত করুন। পিতামহ! সংগ্রামে আপনকার শরাসন সর্বাদাই মণ্ডলাকার দৃষ্ট হইয়া থাকে, রণ স্থলে আপনার অণু প্রমাণও রক্ষু দেখিতে পাওয়া ষায় না। হে মহাবাহো! আপনি স্থর্য্যের ন্যায় রথে অবস্থিত হইয়া যে কথন্ শর গ্রহণ, কথন্ শরসন্ধান এবং কথন্ই বা শরাসন বিকর্ষণ করেন, তাহা আমরা দেখিতে পাই না। হে ভরত-প্রধান! হে পরবীর-হন্! আপনি যখন রথ অশ্ব নর নাগ হনন করিতে থাকেন, তথন আপনাকে জয় করিতে কোন্ পুরুষ উৎসাহ করিতে পারে? হে পিতামহ! আপনি সমরে শর বর্ষণ করিয়া অনেক প্রাণি হত্যা করিয়াছেন, আমার মহতী সেনা ক্ষয় প্রাপ্ত করিয়াছেন। সে যাহা হউক, এক্ষণে যে প্রকারে আপনাকে আমরা রণে পরাজিত করিতে পারি, যে প্রকারে আমার রাজ্য লাভ হয়, এবং যে ৰূপে আমার সৈন্যদিগের মঙ্গল হয়, তাহা আপনি আমার নিকট ব্যক্ত করুন। হে পাণ্ডু-পূর্বজ। তদনন্তর শান্তমু-পুত্র ভীন্ন, পাণ্ডবদিগকে বলিলেন, হে ধর্মজ্ঞ কুন্তী-স্বত! সং-গ্রামে আমি জীবিত থাকিতে ভোমার কোন প্রকারে

জর হইবার সম্ভাবনা নাই, ইহা আমি সত্য বলি-

লাম। আমি যুদ্ধে পরাজিত হইলে তোমরা জয়ী হইতে পারিবে। অতএব যদি তোমরা রণে জয় লাভের ইচ্ছা কর, তাহা হইলে আমারে শীঘ্র প্রহার করিবে। হে পার্থগণ! আমি তোমাদিগের প্রতি অনুমতি করিতেছি, তোমরা যথা স্থথে আমাকে প্রহার করিবে। আমি যে এই রূপে তোমাদিগের বিদিত হইলাম, ইহা স্বক্ত বলিয়া মানিলাম। আমি নিহত হইলেই কুরু পক্ষ সমস্ত নিহত হইবে, অতএব আমি যেরপ বলিলাম, তোমরা সেই রপ কর।

যুধিন্ঠির কহিলেন, সমরে আপনি দণ্ডহন্ত যমের ।
ন্যায় হয়েন, আপনাকে কি প্রকারে যুদ্ধে পরাজিত করিব, তাহার উপায় বলুন। ইন্দ্র, বরুণ
ও যমকেও যুদ্ধে পরাজয় করিতে পারা যায়, কিন্তু
আপনাকে সমরে পরাজিত করিতে পারা যায় না।
অপিচ ইন্দ্রের সহিত স্থ্রাস্থরও আপনাকে রণে
জয় করিতে সমর্থ নহেন।

ভীম কহিলেন, হে পাণ্ডব! তুমি যাহা বলিতেছ, তাহা যথার্থ, আমি রণে সম্ভ হইয়া কার্যুকবর গ্রহণ পূর্বক শস্ত্রধারী হইলে, ইন্দ্রের সহিত স্থরা-স্থরও আমাকে জয় করিতে সমর্থ হন না। আমি ন্যস্ত শস্ত্র হইলে, এই মহারথেরাই আমাকে নিহত করিতে পারেন। শস্ত্র,ত্যাগী, পতিত, বিমুক্ত কবচ, বিমুক্ত ধজ, পলায়মান, ভীত, তোমারই আমি এই ৰূপ বলিয়া শরণাপন্ন, ক্রীজাতি, ক্রীজাতীয় নাম ধারী, বিকল, একপুত্রক, নিঃসন্তান ও পাপী ব্যক্তির সহিত যুদ্ধে আমার অভিরুচি হয় না। হে রাজেন্দ্র! আমার পূর্ব-কৃত সংকণ্প শ্রবণ কর, কাছারো অমঙ্গল্য হজ দেখিলে, আমি কোন প্রকারে তাহার সহিত যুদ্ধ করিব না। দ্রুপদরাজার পুত্র যুদ্ধ-জরী, শূর, সমর ক্রোধী, মহারথ শিথগুী, যিনি তোমার নৈন্য মধ্যে অবহিত, তিনি পূর্বেক ক্রী ছিলেন, পশ্চাৎ পুরুষ হইয়াছেন, ইহার বিবরণ ভোমরাও সমুদার আমুপুর্বিক অবগত আছ। অর্জুন বর্মিত হইয়া

সেই শিখণ্ডীকে অগ্রবর্তী করিয়া তীক্ষ্ণ বাণ সমূহ দারা আমাকে নিহত করিবেন। সেই শিখণ্ডীর রথ ধক অমঙ্গল্য, বিশেষত উনি পূর্বের স্ত্রী ৰূপ ছিলেন, স্থতরাং আমি শস্ত্রধারী হইয়া উহাঁকে কোন প্রকারে প্রহার করিতে অভিলাষ করি না। হে ভরত-প্রবর! পাণ্ডু-পুত্র ধনঞ্জয় ঐ শিখন্তীর অন্তরালে থাকিয়া চতুর্দ্দিকৃ হইতে শর নিকরে সত্বর আমাকে আঘাত করিবেন। আমি রণে সমু-দাত হইলে, মহাভাগ কৃষ্ণ ও ধনপ্লয় বাতীত যে কেহ আমাকে নিহত করে, জগতে এমন কাহাকেও আমি দেখিতে পাই না। অতএব ঐ ধনঞ্চয় আত্ত-শস্ত্র গৃহীত-গাণ্ডীব ও যত্নবান্ হইয়া সেই পাঞ্চাল-রাজ-পুত্র শিখণ্ডীকে আমার সন্মুখন্থ করিয়া আ-মাকে নিপাতিত করিবেন, তাহা হইলেই নিশ্চয় তোমার জয় লাভ হইবে। হে কুন্তী-নন্দন। আমি যেৰূপ বলিলাম, ভুমি তদমুযায়ী কর্ম করিবে, তাহা হইলে সংগ্রামে সমাগত ধার্ত্তরাষ্ট্র দিগকে পরাজিত করিতে পারিবে।

সঞ্জয় কহিলেন, তদনন্তর পৃথা-নন্দনেরা কুরু পিতামহ মহাত্মা ভীমকে অভিবাদন করিয়া তাঁহার অনুজ্ঞা গ্রহণ পূর্বক স্ব স্ব শিবিরোদ্দেশে গমন क्रिंडि नागितन। शक्ना-शूळ পর লোক গমনে দীক্ষিত হইয়া সেই ৰূপ বলাতে অৰ্জ্জুন চুঃখ-সন্তপ্ত হইয়া লজ্জা সহকারে কৃষ্ণকে সম্বোধন করিয়া এই কথা বলিলেন, ছে মাধব! কুরু-রৃদ্ধ প্রজ্ঞা-সম্পন্ন ধীমান্ গুরু পিতামহের সহিত সংগ্রামে আমি কি প্রকারে যুদ্ধ করিব? হে বাস্থদেব! আমি বাল্য কালে ক্রীড়া করিতে করিতে ধুলি-ধূবরিত-গাত্র হইরা ঐ মহামনা মহাক্সার ক্রোড়ে উঠিয়া ধূলি দারা উহাঁর অঙ্গ মলিন করিয়াছি। হে গদাগ্রক। উনি আমার পিতা পাণ্ডুর পিতা; আমি বাল্যাবস্থায় উহাঁর অঙ্কে অধিরোহণ করিয়া উহাঁকে 🙌তা বলিয়া সম্বোধন করিয়াছিলাম, তাহাতে উপি খা-মাকে বলিয়াছিলেন, 'হে ভরতকুল-প্রদীপ! আইম ভোমার পিতা নহি, আমি ভোমার পিতার পিতা?

এমত স্থলে আমি উহাঁকে কি ৰূপে বধ করিব?

আমার সৈন্য সকল ইচ্ছাক্রমে উহাঁকে প্রহার করুক,

আমি ঐ মহাত্মার সহিত সংগ্রাম করিবনা; ইহাতে

আমার জয়ই হউক, বা বিনাশই হউক। ক্লফ!

আমি এই বিবেচনা করি, ইহাতে ভোমার মত কি?

বাস্থদেব কহিলেন, হে জিঞো! ভুমি ক্ষজ্রধর্মাব-লম্বী হইয়া 'ভীম্মকে সমরে বধ করিব' বলিয়া পূর্বে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলে, এক্ষণে কি ৰূপে উহাঁ-কে বধ না করিয়া ক্ষান্ত থাকিতে পার? হে পার্থ! ज्ञि यूक्षव्यम किखा शकानकनरक युक्त तथ रहेरछ পাতিত কর ; উহাঁকে বধ না করিলে তোমার যুদ্ধে জয় হইবে না। উহাঁর এই ৰূপ মৃত্যু হইবার বিষয় পূর্বে দেবতারা নিশ্চয় করিয়াছেন; পূর্বে কালে যে প্রকার নিশ্চয় হইয়াছে, অ্বশাই সেই প্রকার হইবে, তাহার অন্যথা হইবে না। যুদ্ধে ব্যাদিতানন যম সদৃশ ছুরাধর্ষ ঐ ভীন্নকে নিহত করিতে তোমা ব্যতীত অনা কেহই সমর্থ হইবে না, অপিচ স্বয়ং বক্সধর ইন্দ্রও উহাঁকে বধ করিতে পারিবেন না। ভুমি ভীন্নকে নিপাতিত কর, ইহাতে অন্তঃকরণে দ্বৈধ ভাব করিও না, এই বিষয়ে মহাবুদ্ধিমান রহ-স্পতি পূর্বে কালে যাহা বলিয়াছেন, তাহা এই স্বামার নিকট অবণ কর, "নানা সদ্গুণান্বিত অষ্ঠ র্দ্ধ ব্যক্তিও আততায়ী হইলে অথবা অন্য কেহ প্রাণের হন্তা হইলে তাহাকে নিহত করা বিধেয়।" হে ধনঞ্জয়! ক্ষজিয়দিগের এই সনাতন ধর্মা নিশ্চিত আছে যে, অস্থয়া-রহিত ক্ষজ্রিয়েরা শত সহ যুদ্ধ করিবে, প্রজা রক্ষা করিবে এবং যজ্ঞ করিবে।

অর্জুন কহিলেন, রুক্ষ! শিখণ্ডীই ভীমের নিশ্চর
নিহস্তা হইবেন, কেন না ভীম শিখণ্ডীকে দেখিরাই
সর্বাদা তাঁহার প্রতি অস্ত্র প্রহার করিতে নির্ভ
হইয়া থাকেন। অতএব আমি এই বিবেচনা করি
যে, আমরা ভীমের সম্মুখে শিখণ্ডীকে পুরোবর্তী
করিয়া তাঁহাকে প্রহার করিব, এই উপায়েই তাঁহা-

কে নিপাতিত করিব। আমি অন্যান্য মহাধমুর্জর দিগকে শর নিকরে নিবারণ করিব, আর শিখণ্ডী যোধপ্রধান ভীন্নকেই প্রহার করিবেন। কুরুপ্রধান ভীন্নের নিকট শুনিয়াছি, তিনি কহিয়াছেন "শিখণ্ডী পূর্ব্বে কন্যা হইয়া পরে পুরুষ হইয়াছেন, এই হেতু আমি শিখণ্ডীকে নিহত করিব না।"

মাধব সহ পাগুবগঁণ মহাত্মা ভীয়ের অনুমতি ক্রমে ঐ ৰূপ নিশ্চয় করিয়া আনন্দিত চিত্তে শিবিরে গমন করিলেন।

চতুরধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৪॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! শিখণ্ডী সমরে গঙ্গাপুজের প্রতি কি প্রকারে অভিমুখীন হইলেন, এবং
ভীমই বা কি ৰূপে পাণ্ডবদিগের প্রতি অভিমুখীন
হইলেন, ভাহা আমার নিকট কীর্ত্তন কর।

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ! তদনস্তর পাওবেরা मकत्न स्र्र्याम्य कात्न जित्री, मृत्रम, आनक उ प्रिवर्ग मञ्च प्रजूर्कित्व वाषिष्ठ इटेट्ड थाकित्न, मर्स শত্রুনিবর্হণ ব্যুহ সজ্জিত করিয়া শিখণ্ডীকে অগ্রে লইয়া সমর যাতা করিলেন। হে নরপাল! শিখণ্ডী সেই সর্বব সৈন্য সজ্জিত ব্যুহের অত্যে রহিলেন। ভীমদেন ও ধনঞ্জর তাহার চক্র রক্ষক, ফৌশুদী-পুজেরা ও বীর্যাবান স্বভদ্রা-নুন্দন তাহার পৃষ্ঠ রক্ষক এবং মহাদ্নপু সাত্যকি ও চেকিতান তাঁহাদিগের রক্ষক হইলেন। পাঞ্চাল্যগণে অভিরক্ষিত হইয়া ধৃউচ্চান্ন, তৎ পৃশ্চাৎ অবস্থিত হইলেন। হে ভরত-প্রবর! তৎ পশ্চাৎ প্রভু রাজা যুধিষ্ঠির, নকুল সহ-দেবের সহিত একত্রিত হইয়া সিংহনাদ করত গমন করিতে লাগিলেন। তৎ পশ্চাৎ বিরাট নৃপতি স্ব সৈন্যে সমার্ত হইয়া প্রয়াণ করিতে লাগিলেন। তাঁহার পশ্চাৎ রাজা দ্রুপদ অভিদ্রুত হইলেন। কৈকেয় রাজেরা পঞ্চ ভ্রাতা ও বীর্যাবান ধৃফকেতু সেই পাণ্ডব সৈন্য ব্যুহের জ্বন প্রদেশ রক্ষা করিতে नाशित्नन्। (६ महावाद्धाः भाउत्वता वह नभ

মহাবাহ সজ্জিত করিয়া স্থ স্থারন তাাগে রুড-নিশ্চয় হইয়া সংগ্রামে আপনকার সৈনোর অভি-মুখে ধাবমান হইলেন।

হে নরপাল! কৌরবেরাও মহারথ ভীয়কে রর্ম সৈনোর অগ্রবর্জী করিয়া পাশুব দিগের অভিমুখে গমন করিলেন। আপনকার অতি মহাবল ছুর্জেয় পুল্রেরা ভীয়কে রক্ষা করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। তৎপরে মহাধমুর্জর জোণ ও তাঁহার মহাবল পুল্র অশ্বশামা এবং তৎ পশ্চাৎ গজ সৈনো পরির্ত ভগদন্ত গমন করিলেন। রুপাচার্যা ও রুতবর্মা ভগদন্তের অমুগামী হইলেন। তৎ পশ্চাৎ বলবান্ কামোজ-রাজ স্থদক্ষিণ প্রয়াণ করিলেন। মগধরাজ জয়ৎসেন, স্থবলপুল্র, রহদ্বল ও স্থশর্মা প্রভৃতি অন্যান্য মহাধ্যুর্জর নৃপর্গণ আপনকার সৈনোর জঘন স্থান রক্ষা করত গমন করিলেন। শান্তমুপুল্র ভীয় আম্বর, পেশাচ ও রাক্ষস ব্যুহের মধ্যে অন্যতর ব্যুহ এক এক দিবসে সজ্জিত করিতেন।

হে ভারত। তদনন্তর উভয় পক্ষ যোদ্ধার যুদ্ধারন্ত হইল ৷ উভয় পক্ষ পরস্পরকে নিহত করিয়া ষম রাজ্য রন্ধি করিতে লাগিল। অর্জুন-প্রমুখ পাও-বেরা শিখণ্ডীকে অত্যে করিয়া বিবিধ শর বিকিরণ করিতে করিতে ভীমের অভিমুখীন হইলেন। ভীম-সেন আপনকার সৈন্দদিগকে শর নিকরে তাড়িত করিলে, তাহারা রুধিরৌছে পরিক্লিম্ন হইয়া পর লোকে গমন করিতে লাগিল। নকুল, সহদেব ও মহারধ সাত্যকি, আপনকার সৈন্যু সমীপে গমন করিরা ভাহাদিগকে বল পূর্বক পীড়ন করিতে লাগিলেন। আপনকার পক্ষীর গণ পাণ্ডব পক্ষ কর্তৃক ব্যাসান হইয়া পাগুবদিসের মহা সৈনাকে নিবারণ করিতে সমর্থ হইল না। ভাহারা মহারথ গণ কৰ্ত্ব চতুৰ্দিকে বধামান ও ভাডামান হইয়া দশ দিকে প্লারন করিতে লাগিল। ভাহারা পাণ্ড**ব ও** एक्सप्रभग कर्जुक गाणिज वाग नमुरह वद्यामान हहेसा কাহাকেও আপনাদিপের পরিক্রাতা প্রাপ্ত হইল না।

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! পরাক্রমশীল ভীয়, লৈন্যদিগকে পার্থগণ কর্তৃক পীড়ামান দেখিয়া রণে কুদ্ধ হইয়া যাহা করিয়াছিলেন, তাহা আমার নিকট কীর্ত্তন কর। হে বিশুদ্ধ-চরিত! শক্তভাপন বীর ভীয় কি প্রকারে পাগুরদিগের প্রতি অভি-মুখীন হইয়া সোমক দিগকে নিহত করিয়াছিলেন, ভাহা আমার নিকট অভিধান কর।

সঞ্জর কহিলেন, মহারাজ! আপনকার পুজের 'নৈনা পাণ্ডব ও হঞ্জর গণ কর্তৃক পীড়িত হইলে আপনকার পিতা যাহা করিয়াছিলেন, তাহা আপ-নার সকাশে কীর্ত্তন করিভেছি। শৌর্যা-সম্পন্ন পাণ্ড-বেরা হৃষ্টচিত্ত হইয়া আপনকার পুজের সৈন্য নি-হত করিতে করিতে অভিমুখীন হইলেন। হে নর-নাথ! ভীয় তথন নর বারণ বাজি সঙ্গুল সৈন্য-দিগের বিপক্ষ কর্তৃক সংহার আর সহু করিলেন না। মহাধমুর্দ্ধর ছুর্জেয় ভীন্ন, আপনার জীবন পরি-ত্যাগে উদ্যত হইয়া শাণিত নারাচ, বংসদস্ত ও অঞ্চলিক অন্ত্র সকল পাণ্ডব, পাঞ্চাল ও স্ঞ্রয়দিগের উপর বর্ষণ করিতে লাগিলেন ৷ তিনি সমরে কুন্ধ হইয়া পাণ্ডবদিগের পাঁচ জন গৃহীতাক্ত যত্ন-পরায়ণ প্রধান মহারথকে রণে নিবারিত করিয়া বীর্ঘ্য ও অমর্য দারা প্রেরিত নানাবিধ অক্ত শক্ত বর্ষণ দারা তাহাদিগকে ও অপরিমিত বছ হন্তী ও অশ্ব নিহত করিলেন। পর পক্ষীয় জয়াকাজ্কী রখিদিগকে রথ हरेटज, मानीमिशदक खन्न शृष्ठ हरेटज, शकारताही দিগকে গজ পৃষ্ঠ হইতে এবং সমাগত পদাতি-দিগকে ভূতলে নিপাতিত করিলেন। যে প্রকার অমুরগণ বক্তহন্ত ইন্দ্রের সম্মুখীন হইয়াছিল, সেই প্রকার পাণ্ডবেরা ত্বরমাণ মহারথ ভীম্বের সমরে সম্মুখীন হইলেন। তখন ভীমকে ঘোরমূর্তি ধারণ করিয়া ইচচের অশনি সম স্পর্শ শাণিত শ্র সকল সর্ব্ব দিকেই মোচন করিতে দেখা গেল। তাঁহার युक्त कारन हेन्स असूरकत्र जूना महर असूक मर्सनाहे মওলাকার দৃষ্ট হইতে লাগিল। হে নরাধিল।

আপনকার পুজেরা সমরে তাঁহার তাদৃশ কর্ম দেখিরা পরম বিশারাপন হইরা তাঁহার প্রশংসা করিলেন। বেমন অমরগণ বিপ্রচিত্তি অন্তরকে সমর স্থলে অবলোকন করিয়াছিলেন, সেই প্রকার পাশুবেরা উন্থনা হইরা সেই শৌর্যা-সম্পন্ন যুধ্যমান व्यापनकात्र पिछादक नित्रीक्कण कतिएछ नागिरनन, তাঁহাকে ব্যাদিত-মুখ অন্তকের ন্যায় দেখিয়া নিবারণ করিতে পারিলেন না। যে প্রকার অগ্নি কানন দগ্ধ করে, সেই প্রকার তিনি দশম দিবসের যুদ্ধে শাণিত বাণ সমূহ ছারা শিখণ্ডীর রথ সৈন্য দগ্ধ করিতে লাগিলেন। শিথগুী কুদ্ধ সর্প সদৃশ ও কাল বিহিত অন্তক তুলা ভীমের স্তন দরের অভ্যন্তরে তিন বাণ বিন্ধ করিলেন। ভীয় ভাহাতে গাঢ় বিন্ধ ও কুর্ন্ধ হইয়া হান্য পূর্ব্বক স্বাভিপ্রার প্রকাশ করত শিখণ্ডী-কে এই বাক্য বলিলেন, তুমি ইচ্ছা ক্রমে আমার প্রতি শর ক্ষেপ কর, কিয়া না কর, আমি কোন প্রকারে তোমার সহিত যুদ্ধ করিব না, বিধাতা ভোমাকে বে স্ত্রী ৰূপ স্থাটি করিয়াছিলেন, ভূমি मिथिखनी।

শিখণ্ডী তথন তাঁহার ঐ বাক্য ভাবণ করিয়া ক্রোধ-মৃত্তিত হইয়া হক লেহন পূর্বক তাঁহাকে কহিলেন, হে মহাবাহো! তুমি যে ক্ষপ্রিয়গণের ক্ষর কারী, ইহা আমি জ্ঞাত হইয়াছি, জমদয়ি-নন্দনের সহিত তোমার যে যুদ্ধ হইয়াছিল তাহাও ভাবণ করিয়াছি এবং তোমার মলোকিক প্রভাব ও বছশঃ গ্রুফ হইয়াছে গোলার এতাদৃশ প্রভাব জ্ঞাত হইয়াতে খাজি আমি তোমার সহিত যুদ্ধ করিব। হে সংপুরুষ-প্রবর! তোমার সাক্ষাতে সত্য দ্বারা শপথ করিতেছি যে আমি আপনার ও পাওব-দিগের প্রিয় কার্য্য নিমিত্তে আজি তোমার সহিত যুদ্ধ করিব। ক্রিয় কারিয়া নিশ্রমই তোমাকে নিহত ক্রিব, আমার এই কথা শুনিয়া ভূমি স্বকীয় ক্ষমতানুষায়ী কার্য্য কর। হে রণজয়ী ভীয়! ভূমি ইছায়ুসারে আমার নিকট শর ক্ষেপ কর বা না কর, আমার নিকট

হইতে জীবিত থাকিয়া মুক্ত হইতে পারিবে না, অতএব একণে তুমি এই লোক সমুদার দৃটি করিয়া লও, আর দেখিতে পাইবে না।

সঞ্জয় কহিলেন, হে রাজন্! শিখণ্ডী ভীন্নকে এই ৰূপ বাকা বাণে বিদ্ধ ক্ষিয়া নতপৰ্বৰ পঞ্চ বাণে বিন্ধ করিলেন। মহারথ সব্যসাচী শিখণ্ডীর ঐ কথা শুনিয়া ' এই ভীন্ন বধের সময় ' ভাবিয়া শিপঞ্জীকে কহিলেন, হে মহাবাহো! জামি শত্ৰু পক্ষ বিদ্ৰা-বিত করিয়া তোমার অমুগামী হইব, তুমি সংরক হইয়া ভীমপরাক্রম ভীন্নকে আক্রমণ কর। মহাবল ভীয় তোমাকে পীড়া প্রদান করিতে পারিবেন না, অতএব আজি তুমি বৃত্ন পূর্বক ডীয়ের প্রতি অভি-দ্রুত হও। যদি ভূমি ভীন্নকে বিনফ না করিয়া গমন কর, তাহা হইলে লোকে তোমাকে ও আ-মাকে উপহাস করিবে। হে বীর! বাহাতে আমরা উভরে এই মহারণে লোকের হাস্যাস্পদ না হই, এমত যত্ন কর,—পিতামহকে রণে নিপাতিত কর। হে মহাবল! আমি সংগ্রামে সমুদার রথীকে নিবারণ করিয়া তোমাকে রক্ষা করিব, ভূমি ভীয়ের বধ-সাধন কর। জোণ, তাঁহার পুত্র, রূপ, ছুর্য্যোধন, চিত্রসেন, বিকর্ণ, সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ, অবস্থিরাজ বিন্দ ও অমুবিন্দ, কাষোজরাজ স্থদক্ষিণ, শৌর্যা-সম্পন্ন ভগদত্ত, মহাবল পরাক্রান্ত •মগধরাজ, সোমদত্ত-পুত্র, রাক্ষদ খ্র ঋষাশৃঙ্গ-পুত্র, এবং ত্রিগর্জরাজ, **এই সকল বীর ও অন্যান্য সমুদায় মহারথদিগকে** আমি বেলা ভূমি কর্তৃক সাগর নিবারণের ন্যায় নিবারণ করিব, এবং মহাবলবান যুধ্যমান সমস্ত কৌরব দিগকেও এক কালে নিবারিড করিব, অত-এব তুমি পিতামহকে রণে নিপাতিত কর।

পঞ্চাধিক শত তম অধ্যার সমাপ্ত ॥ ১০৫ ॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চর! পাঞ্চালরাজ-নন্দন শি-থণ্ডী সমরে জুক্ষ হইয়া যতক্ত ধর্মাত্মা গল্পা-পুত্র পিডানহকে কি প্রকারে আক্রমণ ক্ররিয়াছিলেন? পাণ্ডৰ সৈন্য মধ্যে কোন্ কোন্ মহারথ স্বরমাণ ও জিগীবা পরবল হইরা উদ্যতায়ুধ শিখণ্ডীকে রক্ষা করিয়াছিলেন? শান্তমুপুত্র মহাবীর্য্য ভীয়ই বা সেই দশম দিবসে পাণ্ডৰ ও সঞ্জয় দিগের সহিত কি প্রকার যুদ্ধ করিয়াছিলেন? শিখণ্ডী যে অভিমুখীন হইরা ভীয়কে আক্রমণ করিয়াছিলেন, ইহা আমি সম্হ করিতে পারিতেছি না, শিখণ্ডী যখন ভীয়ের প্রতি শর নিক্ষেপ করিয়াছিলেন, তখন ভীয়ের রখ তো ভয় হয় নাই? কিয়া শরাসন তো বিশীর্ণ হইয়া যার নাই?

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভব্নতভ্রেষ্ঠ! যুধ্যমান ভীয়ের রথ ভগ্ন বা ধনুক বিশীর্ণ হয় নাই, তিনি সন্নতপর্কা শর নিকরে শত্রু পক্ষ বিনাশ করিতেছিলেন। আ-পনকার পক্ষীয় অনেক শত সহস্র মহারথ, গজ-यांधी ७ मानी समज्जि इहेम्रा भिजामहत्क पाय করিয়। যুদ্ধার্থ প্রবৃত্ত হইয়াছিল। হে কৌরবা! ममत्र-विषयी जीव, चकीव প্রতিজ্ঞানুসারে সমরে নিরস্তর সৈনা কর করিরাছিলেন। সেই মহাধমুর্জর मन्म मिवरमत यूष्क यथन नत्र निकरत পत्र পक নিহত করিতেছিলেন, তখন পাণ্ডব বা পাঞ্চাল গণ সকলে ভাঁহার বিক্রম বেগ ধারণ করিতে পারিলেন না, সেই সকল বিপক্ষ সেনার প্রতি শত শত সহস্র সহস্র স্থশাণিত শর বিকিরণ করিয়াও তাহা-দিগের বিক্রমও ধারণ করিতে অসমর্থ হইলেন, থেহেতু পাশহস্ত অন্তক সদৃশ সেই মহাধ্যুর্দ্ধর দেনাপতি ভীমকে রণে পরাজিত করিতে তাঁহা-**मिर्गित मामर्था रहेल ना ।**

হে মহারাজ! তদনন্তর অপরাজিত সব্যসাচী ধনপ্রায় সমুদার রখীকে ত্রাসিত করত তথার গমন করিলেন। তিনি উচ্চৈংস্বরে সিংহনাদ ও পুনংপুন ধমুবিজেপ করত শর নিকর নিজেপ করিয়া কালের
নারি বিচরণ করিতেছিলেন। হে তরতক্রেষ্ঠ! তাঁহার
সেই শব্দে আপনকার সৈন্য সকল ত্রাসাহিত হইয়া,
বেমন সিংহ শব্দে মৃগগণ ভয়াবিত হইয়া পলা-

রন করে, তাহার ন্যায় পলায়ন করিতে লাগিল। রাজা ছর্ব্যোধন অর্জুনকে জয় যুক্ত ও আপনার নৈনাদিগকে অতি পীড়িত দেখিয়া নিভান্ত পীড়িত हरेता जीचरक विनातन, शिलामर ! जे क्रक मात्रशि খেতবাহন অর্জুন, অগ্নি কর্তৃক কানন দহনের ন্যায়, আমার সমন্ত সৈন্য দগ্ধ করিতেছে। ঐ দেখুন, আ-মার সৈন্য সকল সমরে অর্জুন কর্ভৃক তাড়িত হইয়া পলায়ন করিতেছে। হে শক্তভাপন! যেমন পশু-পাল কাননে পশুগণকে তাড়িত করে, তাহার ন্যায় অর্জুন সামার ঐ সকল সৈনাকে তাড়িত করি-তেছে। আমার সৈন্যগণ স্থানে স্থানে অর্জুন কর্তৃক প্রভয় হইলে, আবার ছুর্কের ভীমও উহাদিগকে বিদ্রাবিত করিতেছে, এবং সাত্যকি, চেকিতান, নকুল, সহদেব ও বিক্রমশীল অভিময়াও, আমার সৈন্য সকল বিজাবিত করিতেছে। শৌর্যা-সম্পন্ন ধৃউছান্ন ও রাক্ষস ঘটোৎকচ, ইছারাও উভয়ে এই महात्रत् योगात रेमनामिशस्य महमा अख्य क्रि-তেছে। হে ভারত। আপনি দেবতুল্য-পরাক্রম, আপনা ব্যতিরেকে ঐ সকল মহারণ কর্ত্তৃক বধা-मान रेमनामिरगद यूरक व्यवसान कदिवात এवः के মহারথ দিগের সহিত যুদ্ধ করিবার উপায় আর দেখিতে পাই না, অতএব আপনি সত্ত্র হইয়া ঐ মহারথ দিগকে নিবারণ করুন, আমার সৈন্য দিগের গতি হউন।

মহারাজ! আপনার পিতা শাস্তমুপুত্র দেবব্রত এই ৰূপ অভিহিত হইরা মুহুর্ত কাল চিন্তা পূর্বাক আত্ম কর্ত্তর নিশ্চর করিয়া আপনকার পুত্র চুর্যোধনকোন করত কহিলেন, হে নরপাল মহাবল চুর্যোধন! তুমি হির হইয়া শুবণ কর। আমি পুর্বে তোমার সকাশে প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলাম যে, প্রতি দিন শশ সহত্র মহাত্মা ক্ষত্রিয় দিগকে বিনাশ করিয়া সংগ্রাম হইতে অবহৃত হইব। যাহা প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলাম, তাহা সম্পাদনও করিয়াছি, কিছ আজিও সংগ্রামে মহৎ কর্ম্ম করিব। আজি

আমি হয় পাওবদিগকে নিহত করিব, না হয়, আমিই রণে নিহত হইয়া শয়ন করিব। আজি আমি তোমার সাক্ষাতে সৈন্য প্রমুখে নিহত হইয়া ভর্ত্দত্ত অন্নের মহৎ ঋণ হইতে বিমুক্ত হইব।

ছুর্জের ভীম ইহা বলিয়া ক্ষক্রিরগণের প্রতি শায়ক সমূহ বপন পূৰ্বক পাণ্ডব সৈন্য আক্ৰমণ করিলেন। হে ভরতত্রেষ্ঠ! পাগুবেরা সৈন্য মধ্যে অবস্থিত কুদ্ধ সর্প সদৃশ গঙ্গা-পুত্রকে নিবারিত করিতে লা-গিলেন। হে কুরুনন্দন! ভীন্ন দশম দিবসে আপনার শক্তি অনুসারে শত সহস্র সৈন্য বিনাশ করিলেন। रयमन स्र्या, किंत्रण माला बाता जलाकर्षण करत्रन, তাহার ন্যায় ভীম পাঞ্চাল দেশীয় মহারধ রাজপুত্র দিগের তেজ আকর্ষণ করিয়া লইলেন। হে মহা-রাজ! তিনি আরোহীর সহিত অযুত অশ্ব ও অযুত বেগবান হক্তী এবং পূর্ণ ছুই লক্ষ পদাতি নিহত করিয়া সংশ্রামে ধুম রহিত অগ্নির ন্যায় খলিত হইতে লাগিলেন। পাগুর দিগের মধ্যে কাহারাও তাঁছাকে উত্তরামণন্থ তপন্ত ভাক্ষরের ন্যায়, নিরীক্ষণ করিতে সমর্থ হইল না। পাগুব ও স্ঞায় মহারথ গণ মহাধমুর্বার ভীম কর্তৃক পীড়িত হইয়া ভাঁহার বধের নিমিত্তে অভিক্রত হইলেন। যুধামান শাস্তমু-পুত্র, তথন কৃষ্ণবর্ণ মেঘে সমারত মহা শৈল স্থমেরুর नाात्र, वह याथभए। व्यवकीर्ग इहेटनन । व्यापनकात्र পুত্রেরাও মহতী সেনার সহিত একত্রিত হইয়া शकानमनदक तका कतिवात निमिट्ड ठ्लूर्किटक পরিবেউন করিলেন।

ষড়ধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত। ১০৬।

সঞ্জয় কহিলেন, হে নূপতে ! অর্জুন সংগ্রামে তীমের বিক্রম দেখিয়া শিখণ্ডীকে কহিলেন, তুমি পিতামহের সহিত যুক্তে সমবেত হও ি তুমি জন্ম কোন প্রকারে উহাঁকে ভয় করিও না, আমি তীক্ষ্ম শায়ক সমূহে উহাঁকে রবোভ্তম হইতে নিপাতিত করিব। হে ভয়ত-প্রধান ! পার্য শিখণ্ডীকে এই রপ

कहिला, निष्धी छैदित वहन खन्य कतिता भेजा-নন্দনের নিকট অভিক্রত হুইলেন। বৃদ্ধ রাজা বিরাট, ক্রপদ ও কুন্তিভোজ বর্মিত হইয়া আপনকার পুত্রের সাক্ষাতে ভীয়ের প্রতি অভিক্রত হইলেন। नकुल, महरात्व, वीर्यावान् धर्मन्नाक खेळानााना मञ्जूलात সৈন্য ভীন্নকে আক্রমণ করিলেন। আপনকার পক্ষীয় যে যে যোদ্ধা ঐ সকল সমাগত মহারখ-দিগের মধ্যে বাহার যাহার প্রতি যথা শক্তি ও যথা উৎসাহ ক্রমে প্রত্যুদ্গত হইলেন, তদ্বিবরণ বিস্তার ক্রমে বলিতেছি, ভাবণ করুন। মহারাজ! যে প্রকার ব্যাঘ্র-শিশু র্বকে আক্রমণ করে, সেই প্রকার চিত্রদেন ভীম্মের প্রতি সমুদ্যত চেকিতানকৈ আক্রমণ করিলেন। ক্নতবর্মা ভীম সমীপাগত ত্বর-মাণ ও যত্ন পরারণ ধৃষ্টছ্যান্নকে নিবারণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। সোমদত্ত-পুত্র স্বরুমাণ হইয়া ভীন্ন-বধৈবী অতি ক্রুদ্ধ ভীমসেনকে নিবারণ করিতে তং-পর হইলেন। বিকর্ণ ভীমের জীবন রক্ষা করিবার মানদে বছ শারক বিকিরণ-কারী শৌর্যা-সম্পন্ন নকুলকে নিবারণ করিবার নিমিত্ত স্বত্ন হইলেন। শার্ত্বত রূপ সংকুদ্ধ হইয়া ভীমের রথ সমীপগামী महरमवरक निवातन क्रिंति नागिरनन। वनवान् ष्ट्रभूथ जीव वशाजिलायी महावल क्वूतकचा जीमरमन-পুত্র রাক্ষস ঘটোৎকচের প্রতি অভিক্রত হইলেন। ঋষাশৃঙ্গ-পুত্র অলম্ব সাতাকিকে নিবারণ করিতে আরম্ভ করিল। কাষোজরাজ স্থদক্ষিণ ভীমের রথ-সমীপাগত, অভিমন্তাকে নিবারণ করিতে যত্ন-বান্ হইলেন। অশ্বত্থামা কুন্ধ হইরা একত্র সমাগত व्यतिमर्फन इक विद्वारे ७ क्रथम्टक निवात्र क्रिक्ट नाजित्न । ভর্ষাজ-নন্দন জোণ স্থত্ন হ্ইরা ভীয় বধাকাজ্ঞী জ্যেষ্ঠ পাশুব ধর্মপুত্রকে নিবারণ করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। অর্জুন শিখণ্ডীকে অগ্রবর্ত্তী করিয়া नंत्रानता पन पिक् पक्ष कत्रेष्ठ जीव नवीदेश दिस्त नविद्यापाठ एरेटन, यहायसूचन द्वानान काहादक निरात्रण क्रिंतिए क्षेत्र महात्रण एरेट्सन । कार्यकात

পক্ষীর অন্যান্য যোধগণ ভীন্নাভিমুখে প্রযাত পাগুব পক্ষ অন্যান্য মহারথ দিগকে নিবারণ করিতে লা-গিলেন।

ধৃষ্ঠপুর সংরক্ষ হইয়া সৈন্য সহ, একমাত্র মহারথ
ভীয়ের প্রতি: অভিক্রত হইলেন, এবং সৈন্যদিগকে
উচ্চৈংশ্বরে পুনংপুন কহিতে লাগিলেন, ঐ কুরুনন্দন
অর্জুন সমরে ভীয়ের অভিমুখে গমন করিতেছেন,
ভোমরা ভীত হইও না, ভীয় সমীপে অভিক্রত
হও, ভীয় ভোমাদিগকে আক্রমণ করিতে পারিবেন
না। হে বীরগণ! সমরে ইক্রও অর্জুনের সহিত যুদ্ধ
করিতে উৎসাহ করিতে পারেন না, ইহাতে ক্ষীণবল অল্প-প্রাণ ভীয় উহার কি করিবেন? পাণ্ডব
পক্ষীয় মহারথগণ সেনাপতি ধৃষ্টপ্রামের ঐ কথা
শুনিয়া সংক্রট হইয়া গঙ্গা-নন্দনের রথ সমীপে
অভিক্রত হইলেন। আপনকার পক্ষ পুরুষভোষ্ঠ
গণও প্রবল তেজোরাশির ন্যায় সেই সকল প্রবল
মহারথ দিগকে আপতিত হইতে দেখিয়া হর্ষিত
চিত্তে নিবারণ করিতে লাগিলেন।

মহারাজ! মহারথ ছুঃশাসন ভীলের জীবিতা-কা ক্ষমী হইয়া ভয় পরিত্যাগ পূর্বক ধনঞ্জয়ের প্রতি উপদ্রুত হইলেন। শৌর্যা-সমন্থিত পাগুবের। গঙ্গা-নন্দনের রথ সমীপে আপনকার মহারথ পুত্রদিগকে এक जाम्हर्या वर्गाशांत्र ज्यवत्नाकन कतिनाम, त्य, অর্কুন তুঃশাসনের রথ-সমীপত্ত ইয়া আর অগ্র-সর হইতে পারিলেন না। যে প্রকার বেলাভূমি কুল মহাসাগর নিবারণ করে, সেই ৰূপ আপন-কার পুত্র ছংশাসন কুদ্ধ অর্জুনকে নিবারণ করি-लान। উहाँ इ। উভয়েই রখি প্রধান, উভয়েই ছ-জেয় এবং উভয়েই কান্তি ও দীপ্তিতে চক্র স্থা সদৃশ। উভয়েই জাতকোধ ও পরস্পর বধাকার্ক্মী হইয়া, পূর্বে কালে ময়াস্থর ও ইন্দ্র যে প্রকার যুদ্ধে মিলিত হইয়াছিলেন, সেই প্রকার মহাযুদ্ধে সমবেত হইলেন। মহারাজ! ছংশাসন অর্জুনকে

তিন ও বাস্থদেবকে বিংশতি বাণে প্রহার করিলেন। তদনস্তর অর্জুন বাস্থদেবকে পীড়িত দেখিয়া সুংশা-সনকে শত শখ্য নারাচ দ্বারা বিদ্ধ করিলে, সেই সকল নারাচ ছুঃশাসনের কবচ ভেদ করিয়া শোণিত পান করিল। তৎ পরে ছুঃশাসন ক্রন্ধ হইয়া সম্নত-পর্ব পাঁচ শরে পার্থের ললাট বিদ্ধ করিলেন। মহারাজ! যে প্রকার মেরু গিরি অভ্যুচ্ছিত শৃঙ্গ দারা শোভিত হয়, সেই ৰূপ অর্জুন ললাটস্থ ঐ সকল বাণ দারা সমর মধ্যে শোভিত হইলেন। ঐ মহাধনুর্দ্ধর পার্থ আপনকার সেই ধনুর্দ্ধর পুজের निकिश्व वार्ष অভিবিদ্ধ इहेशा श्रृष्ट्यवान् किः खक রক্ষের ন্যায় রণ মধ্যে প্রকাশ পাইলেন। পরে যেমন পৌর্ণমার্সীতে রাছ অতি কুদ্ধ হইয়া পূর্ণ চক্রকে পাড়িত করে, তাহার ন্যায় অর্জুন্ ক্রোধা-বিষ্ট হইয়া ছুঃশাসনকে পীড়া প্রদান করিতে লাগি-লেন। ছে নরনাথ। আপনকার পুত্র, বলবান্ অর্জুন কর্তৃক পীডামান হইয়া শিলা শাণিত কম্পত্র শো-ভিত শর সমূহ দারা পার্থকে বিদ্ধ করিলেন। তদ-নন্তর পার্থ তিন শরে ছুঃশাসনের শরাসন ও রথ ছেদন করিয়া তৎ পরে নয় শরে আপনকার পুত্রকে সমাহত করিলেন। তথন ছুঃশাসন অন্য ধন্তুক গ্রহণ কুরিয়। ভীয়ের সম্মুখন্ত অর্জুনের বাহু দ্বয় ও ৰক্ষস্থলৈ পঞ্চ বিংশতি বাণ নিক্ষেপ করিলেন। হে মহারাজ! তৎ পরে শত্রুতাপন অর্জুন ক্রোধ-সমশ্বিত হইয়া যম দণ্ড তুল্য ভয়ানক বছল বাণ ছুংশাসনের উপর নিক্ষেপ করিলেন। আপনকার পুত্র ছুঃশাসন পার্থের যত্ন সহকারে নিক্ষিপ্ত সেই সকল বাণ সমাগত না হইতে হইতেই ছেদন করিয়া क्लिलन, পরে শাণিত বাণ সমূহ ছারা পার্থকে विक कतिरलन, जाहा खन जान्ध्यांकत रहेल। जन-নন্তর পার্থ-সংকুদ্ধ হইয়া কার্মুকে শিলা শাণিজ্ঞ স্বর্ণপুথ বহু শর সন্ধান করিয়া ছংশাসনের প্রতি নিকেপ করিলেন। হে মহারাজ। যেমন হংস্গণ তড়াগ প্রাপ্ত হইরা তাহাতে নিম্ম হয়, সেই রূপ আর্জুন নিক্ষিপ্ত দেই সকল বাণ মহাত্মা ছুঃশাসনের দেহে নিমগ্ন হইল। তথন আপনকার পুত্র, মহাত্মা পার্থ কর্ত্বক পীড়িত হইয়া রণে পার্থকে পরিত্যাগ করিয়া ত্বরা সহকারে ভীয়ের রথে গমন করিলেন, তথন বিপদ্ ৰূপ অগাধ জল-নিমগ্ন ছুঃশাসনের পক্ষে ভীয়ই দ্বীপ স্বৰূপ হইলেন। তদনস্তর পরাক্রমণীল খুর আপনকার পুত্র সংজ্ঞা লাভ করিয়া পুনর্কার পার্থকে নিবারণ করিতে লাগিলেন। যে প্রকার পুরন্দর র্তাম্বরকে নিবারিত করিয়াছিলেন, সেই ৰূপ মহাকায় আপনকার পুত্র স্থশাণিত শর নিকরে অর্জুনকে ভেদ করিতে লাগিলেন। পরস্ক তাহাতে অর্জুন ব্যথিত হইলেন না

সপ্তাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৭

সঞ্জয় কহিলেন, হে নৃপতে! মহাধমুর্দ্ধর ঋষ্যশৃঙ্গপুত্র অলম্ব ভীয় বধে সমুদ্যত বর্ণ্মিত সাত্যকিকে
রণে নিবারণ করিতে লাগিল। মধুকুল-নন্দন সাত্যকি
আতি কুন্ধ হইয়া বেন হাসিতে হাসিতে নয় শরে
রাক্ষসকে আহত করিলেন। সেই রূপ রাক্ষসও
আতি কুন্ধ হইয়া শিনি-প্রবর সাত্যকিকে নয় শরে
পীড়িত করিল। পরে বীর শত্রুহন্তা মধুকুল-নন্দন
শিনি-পৌত্র অতি ক্রোধাবিই হইয়া রাক্ষসের প্রতি
শর সমূহ নিক্ষেপ করিলেন। তদনস্তর অলম্ব
সত্যবিক্রম মহাবাহ্ সাত্যকিকে তীক্ষ্ণ বাণ সমূহ
ছারা বিদ্ধা করিয়া সিংহনাদ করিল। তেজস্বী
সাত্যকি তথন রাক্ষস কর্তৃক রণে অতি বিদ্ধ হইয়া
বিধ্যাবলয়ন করত হায়া পূর্বক নিনাদ করিলেন।

তদনন্তর, যেমন বৃহৎ কুঞ্জরকে তোত্র দ্বারা বিদ্ধা করে, সেই ৰূপ ভগদন্ত কুদ্ধ হইয়া শাণিত শর নিকরে সাত্যকিকে তাড়ন করিলেন। র্থিপ্রবর সাত্যকি রাক্ষনকে পরিত্যাগ করিয়া প্রাগ্জ্যোতিষ ভগদন্তের প্রতি সন্নত পর্বি শায়ক সমূহ নিক্ষেপ করিলেন। রাজা প্রাগ্জ্যোতিষ লম্ম্ হন্তে শাণিত-ধার ভল দ্বারা সাত্যকির মহৎ ধনুক ছেদন করিয়া

ফেলিলেন। বীর শত্রুহন্তা সাত্যকি অন্য এক বেগ বিশিষ্ট ধন্ত্বক গ্রহণ করিয়া শাণিত শর সমূহ ছারা कुक जगम्खरक विक कतिरामन । महाधमूर्कत्र जगम्ख তাহাতে অতি বিদ্ধ হইয়া স্থক্ন লেহন করত কনক-বৈদুর্যা-বিভূষিত লৌহময় যমদণ্ডোপম ভয়ানক দৃঢ় এক শক্তি সাতাকির প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। সাত্যকি ভগদত্তের বাছ বলে নিক্ষিপ্ত সেই শক্তিকে সহসা আপতিত হইতে দেখিয়া তাহা চুই খণ্ডে ছেদন করিয়া ফেলিলেন। তাহাতে সেই শক্তি মহোল্কার ন্যায় সহসা হতপ্রভা হইয়া পতিতা হইল। হে নরাধিপ! আপনকার পুত্র, ভগদত্তের শক্তি নিহত দেখিয়া মহৎ রথি সমূহ দারা সাত্যকিকে পরিবেইটন করিলেন। র্ফিবংশীয় দিগের মহারথ সাত্যকিকে রথিগণে পরির্ত দেখিয়া ছুর্যোধন माजिमा इंग्रें इरेग्रा ममस खाजाक विल्लान, ह কুরুনন্দনগণ! সাত্যকি যাহাতে তোমাদিগের নিকট এই মহৎ রথি সমূহ হইতে জীবিত থাকিয়া নির্গত হইতে না পারে, এমত যত্ন কর। আমার বিবে-চনায়, সাত্যকি নিহত হইলে পাণ্ডব দিগের মহৎ সৈন্য হত হইবে। আপনকার মহারথ পুজেরা যে আজ্ঞা বলিয়া ছুর্য্যোধনের আজ্ঞা গ্রহণ পূর্ব্বক তৎ-ক্ষণাৎ ভীমের সম্মুখস্থ সাত্যকির সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত **इ**ब्रेटनन ।

হে ভারত! বলবান্ কাষোজাধিপতি, অভিমন্তাকে ভীলের প্রতি সমুদ্যত হইয়া আসিতে দেখিয়া তাঁহাকে নিবারণ করিতে লাগিলেন। কাষোজরাজ স্থাকিশ ভীমের জীবনাকাক্ষী হইয়া অভিমন্তাকে কতক গুলি সমত পর্কা শরে বিদ্ধ করিয়া পুনর্বার চতুঃষটি শরে বিদ্ধ করিয়া নয় শরে বিদ্ধ করিয়া পুনর্বার চতুঃষটি শরে বিদ্ধ করিয়া নয় শরে তাঁহার সার্থিকে পঞ্চ শরে বিদ্ধ করিয়া নয় শরে তাঁহার সার্থিকে বিদ্ধ করিলেন। তাঁহাদিপের উভয়ের সমাগমে এই যুদ্ধ অভি তুমুল হইয়া উঠিল, যেহেতু শক্রকণ শিথতী ভামের প্রতি ধাবমান হইয়াছিলেন। বৃদ্ধ রাজা মহারণ বিরাট ও ক্রপদ যুদ্ধে সংরক্ষ

হইয়া মহতী সেনা নিবারণ করিতে করিতে ভীন্নকে আক্রমণ করিলেন। রথি সম্ভম অশ্বস্থামা ক্রুদ্ধ হইন। বিরাট ও দ্রুপদের প্রতি অভিদ্রুত হইলেন। তং পরে তাঁহাদিগের উভয়ের সহিত অশ্বথামার যুদ্ধ হইতে লাগিল। শত্রতাপন বিরাট মহাধনুর্দ্ধর यञ्जवान् यूक्त-त्नाजी त्त्रांग-श्रूल व्यथायादक मन ভল্লে আহত করিলেন। দ্রুপদও শাণিত তিন বাণে ठाँशांक विका कतिलान। तारे महावलवान छूरे জনই গুরু পুত্রকে প্রাপ্ত হইয়া প্রহার করিতে লাগিলেন। অশ্বপামাও ভীমের প্রতি সমুদ্যত বি-রাট ও দ্রুপদ উভয় বীরকে বহু শরে বিদ্ধ করি-লেন। সেই বৃদ্ধ দ্বয়ের এই অদ্তুত মহৎ কার্য্য দেখি-লাম, যে, তাঁহারা অশ্বর্ণামার নিক্ষিপ্ত ভয়ানক বাণ मक्ल निवात्र क्तिएं नाशिएन।

তৎ পরে, শারদ্বত রূপ সহদেবকে ভীন্মের প্রতি সমাগত দেখিয়া, যে প্রকার অরণ্যে মন্ত ছন্তী অন্য মত্ত হতীকে আক্রমণ করে, তদ্রপ তাঁহাকে আ-ক্রমণ করিলেন। শূর রূপ মহারথ মাদ্রী-পুত্র সহ-দেবকে স্থবর্ণ-ভূষণ সগুতি শরে ত্বরা সহকারে সমা-इंड क्रिंदलन। महाप्ति भेत मभूट क्रिशाहार्यात थ्यूक छूरे थए ७ एक्स क्रिलन। धनस्त ऋश ছিল্লখন্ব। इटेल সহদেব তাঁহাকে নয় শরে বিদ্ধ করি-লেন। পরে রূপ ভীমের জীবিতাকার্ক্সী হইয়া কুন্ধ ও হৃষ্ট চিত্তে অনা এক ভার-সাধন ধনুক লইয়া স্থশাণিত দশ বাণে মাদ্রী-পুত্রের বক্ষঃস্থলে আঘাত করিলেন। পাগুপুত্র সহদেবও ভীম্পের বধাভিলাবে কুন্ধ হইয়া কুন্ধ রূপের বক্ষংস্থল সমাহত করিলেন। তাঁহাদিগের ছুই জনের ঘোরতর ভয়ানক সংগ্রাম হইতে লাগিল। ভীন্নক্ষক মহাবল শত্রুতাপন বিকৰ্ণ রণে জুক্ষ হইয়৷ ষষ্টি বাণে নকুলকে বিক कतिरान। नक्नथ आपनकात भूख धीमान् विकर्ग কর্তৃক অতি বিদ্ধাহইয়া তাঁহাকে সপ্ততি সংখ্য শরে বিদ্ধা করিলেন। শত্রুতাপন নরশার্দ্দুল এই ছুই বীর

প্রহার করিতে লাগিলেন। পরাক্রমশীল ছুর্মুখ, ভীয় হেতু ঘটোৎকচকে সৈন্য বিনাশ করিতে সমাগত দেখিয়া তাহার প্রতি প্রযাত হইলেন। হিড়িয়া-পুত্ৰ ঘটোৎকচ কুদ্ধ হইয়া সম্নত পৰ্বে বাণে শত্ৰু-তাপন ছুর্দুথের বক্ষঃস্থল বিদ্ধ করিল। বীর ছুর্মুখ ষ্টি সংখ্য স্বয়ুখ শর দারা রণ মধ্যে হর্ষ সহকারে **শব্দ করি**রা ভীমসেন-পুত্রকে বিন্ধ করিলেন।

गहात्रथ क्रिकानन्त्रन क्रुज्वमा जीत्मत्र वधाकाङ्गी সমাগত হুউছাম্নকে নিবারণ করিতে লাগিলেন। ধৃষ্টপ্রায় তাঁহাকে লৌহময় পঞ্চ বাণে বিদ্ধ করিয়। थाक् थाक् विना श्रुनर्कात्र मञ्जत श्रक्षामध वार्ग विका করিলেন। মহাবাছ ক্লতবর্মাও মহারথ ধৃষ্টত্যুত্রকে আহত করিতে লাগিলেন। তৎপরে ধৃউদ্ধান্ন কঞ্চপত্র যুক্ত অঞ্চিন্ধান স্থানিত তীক্ষ্ণ নয় শরে কৃত্বর্গাকে বিদ্ধ করিলেন। যে প্রকার র্তাস্থরের সহিত মহে-জের যুজ হইয়াছিল, সেই ৰূপ ভীম নিমিত্ত তাঁহা-দিগের উভয়ের পরস্পর অতিশয় প্রবল যুদ্ধ হইতে লাগিল। সোমদত্ত-পুত্র ভূরিশ্রবা সত্তর হইয়া সমা-গত মহারথ ভীমদেনকে থাক্ থাক্ বলিয়া আক্রমণ করিলেন, অনন্তর রুক্মপুশ্ব স্থতীক্ষ্ণ নারাচ দারা ভীম-সেনের ত্তন ছয়ের অভ্যন্তরৈ আঘাত করিলেন। হে নৃপতিসন্তম! পূর্বে কালে ক্রৌঞ্চ অস্ত্রর কার্তি-কেরের শক্তি দ্বারা বিদ্ধ হইয়া যেমন শোভা পাইয়া-ছিল, প্রতাপবান্ ভামদেন বক্ষঃস্থ সেই নারাচ দ্বা সেই ৰূপ দীপ্তি পাইতে লাগিলেন। তাঁহারা উভয়ে কুজ হইয়া কর্মার পরিমাজ্জিত স্থ্যা সদৃশ দীপ্তি-মান্ বাণ সকল পরস্পারের প্রতি মুক্তমুক্ত নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন। ভীম ভীয়া বধাকার্ক্সী হইয়া মহারথ সোমদত্ত-পুত্রের প্রতি এবং সোমদত্ত-পুত্র ভীমের জয়াভিলাধী হইয়া ভীমসেনের প্রতি পর-স্পার ক্লত প্রতীকারে সযত্ন হইয়া সংগ্রামে বিক্রম প্রকাশ করিতে লাগিলেন। হে কৌরবা! যুধিষ্ঠির মহতী সেনায় পরিরত হইয়া ভীমের **অভিমুখে** ভীন্ন নিমিত্ত, গোঠস্থ গো-র্য ছরের ন্যায়, পরস্পার বিজ্ঞাসন করিতেছিলেন, ভরত্বাজ্ঞ-নন্দন ছোণ তাঁ-

হাকে নিবারণ করিতে লাগিলেন। প্রভক্তকেনা গণ জোণের মেঘ গর্জন সম রথ নির্ঘোষ অবণ করিয়া প্রকম্পিত হইতে লাগিল। পাণ্ডু-পুজের সেই মহতী সেনা জোণ কর্তৃক নিবারিত হইয়া যত্ন পরায়ণ হইয়াও এক পদ হইতে পদান্তর চলিতে পারিল না।

হে জনেশ্বর! আপনকার পুত্র চিত্রসেন কুঁজ ভীমের প্রতি কুদ্ধ ৰূপ চেকিতানকে নিবারণ করি-তে প্রবৃত্ত হইলেন। পরাক্রমশীল মহারথ চিত্রসেন ভীমের নিমিত্তে বিপক্ষ চেকিতানের সহিত যথা শক্তি যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। চেকিতানও চিত্র-সেনকে যথা শক্তি নিবারণ করিতে লাগিলেন, সেই সংগ্রামে তাঁহাদিগের উভয়ের অতি মহৎ যুদ্ধ হইতে লাগিল। হে ভারত! অর্জুন বহু প্রকারে নিবার্যা-মাণ হইলেও আপনকার পুত্র ছুংশাসনকে বিমুখ করিয়া আপনকার সেনা মর্দ্দন করিতে লাগিলেন। किंख प्रः मात्रन, ' পार्थ व्यामानिरंगत जीवारक कान প্রকারে নিহত করিতে না পারে ' এই ৰূপ নিশ্চয় করিয়া পরম শক্তি অনুসারে পার্থকে নিবারণ করি-তে नांशित्नन। (इ ভाরত। প্রধান প্রধান রথী সকল স্থানে স্থানে আপনকার পুত্রের সেনাদিগকে নিহত ও আলোড়িত করিতে লাগিল।

অফাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১০৮॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ! মহাবল মহাধমুর্দ্ধর
মন্ত বারণ বিক্রমশীল রথিভাঠ বীর্যাবান্ বীর দ্রোণ
মন্তবারণ নিবারণ মহৎ শরাসন কম্পিত করত
পাগুরী সেনায় গাহমান হইয়া মহারথ দিগকে বিদ্রাবিত করিতেছিলেন, এবং তাঁহার পুত্রও পাগুরী
সেনা দক্ষ করিতেছিলেন, নিমিত্ত লক্ষণ সকল দ্রোবাের অবিদিত ছিল না, তিনি তখন সর্ব্বেত তুর্লক্ষণ
নিমিত্ত সকল দর্শন করিয়া পুত্রকে বলিলেন, হে
বৎস! মহাবল পার্থ যে দিবসে সমরে ভীয়ের জিমাংস্থ হইয়া পরম যত্ন করিবেন, আজ দেই দিবস

সমুপন্থিত হইরাছে, যেহেতু আমার বাণ সকল আপনা হইতে উৎপতিত হইতেছে; ধমুক কুরিত हरेटाइ ; अञ्ज नकन क्षरहारा जिनकू हरेटाइ ; আমার মনেরও প্রাশস্ত্য হইতেছে না ; মৃগ পক্ষী সকল নানা দিকে ভয়ানক প্রতিকূল রব করিতেছে; গুধু পক্ষী ভারতী সেনার নীচ প্রদেশে বিলীন হই-তেছে; আদিত্য যেন নফপ্রভ হইয়াছেন; দিক্ সকল লোহিত বর্ণ হইয়াছে; পৃথিবী যেন সর্ব্ব প্রকারে শব্দায়মানা, বাধিতা ও কম্পিত হইতেছে; কন্ধ, গুধু ও বক পক্ষী সকল মুভ্মুন্থ রব করিতেছে; শিবা সকল ঘোর অশিব রব করিয়া মহাভয় প্রদর্শন করিতেছে; স্থামগুলের মধ্য হইতে মহোল্কা পতিতা হইতেছে ; কবন্ধের সহিত পরিঘ, সূর্যাকে পরিবেন্টন করিয়া রহিয়াছে; চক্র স্থর্য্যের পরিবেশ, ভীষণ ৰূপ হইয়া ক্ষত্ৰিয়গণের দেহাবকর্তন ৰূপ ঘোরতর ভয় প্রদর্শন করিতেছে; কৌরব প্রধান ধৃতরুট্রের দেবালয়স্থ দেবতা সকল কম্পন, হাস্য, নৃত্য ও রোদন করিতেছেন ; গ্রহণণ তুর্লক্ষণ দিবা-করকে দক্ষিণ দিক্স্থ করিয়া গমন করিতেছেন; ভগ-বান্ চন্দ্রমা কোটি দ্বয়কে অধোমুখ করিয়া উদিত हरेशाह्न, धार्डताड्डे टेमना मत्था नत्तरक मित्रत শরীরের আভা মলিন লক্ষিত হইতেছে; তাঁহারা বর্মিত হইয়া দীপ্তি-বিহীন ছইয়াছেন, এবং উভয় সেনারই মধো চতুর্দিকে পাঞ্জন্য শত্থের ধনি ও গাঙীবের মহান নির্ঘোষ শ্রুত হইতেছে, অতএব অর্জুন নিশ্চরই রণে উত্তমান্ত্র সকল আশ্রয় করিয়া অন্যান্য যোদ্ধা দিগকে পরিত্যাগ পূর্বক পিতা-মহের প্রতি অভ্যাদ্গত হইবেন। হে মহাবাহো! ভীয়ার্জুনের সমাগম চিন্তা করিয়া আমার মন অবসন্ন ও লোমাঞ্<u>ই</u>ইতেছে। অর্জুন অদা রণে ধূর্ত্তবুদ্দি পাপাত্মা শিখণ্ডীকে অত্যে করিয়া ভীন্মের সহিত যুদ্ধে গমন করিভেছেন। ভীন্ন পূর্বে বলি-য়াছেন 'আমি শিখণ্ডীকে হনন করিব না, কেন না विधाण छेरींदक जीवन छेरनामन कतिशाहितनन,

উনি দৈৰ প্ৰযুক্ত পুত্ৰৰ হইন্নাছেন।' এবং সহাৰল বাজ্ঞদেনি শিখ্তীর অসকলা ধল, এই নিমিছও গঙ্গা-পুত্র শিথগুঁকে প্রহার করিবেন না। আর্ক্রন যে, রণে অভ্যুদ্যত হইয়া কুরুর্জের প্রতি উপ-ক্রত হইতেছেন, ইহা ভাবিয়া আমার মজ্জানি-তাম্ভ অবসন্ন হইতেছে। যুধিন্ঠিরের কোধ, ভীন্মের সহিত অর্জুনের যুদ্ধ এবং আমার অন্ত্র প্রয়োগ, এ সকল নিশ্চয়ই প্রজাদিগের অমঙ্গল জনক। পাগুनम्मन व्यर्कुन मनश्री, रलवान्, भृत्र, व्यञ्जनिश्रुन, লঘুবিক্রম, দুরপাতী, দৃঢ়শর, নিমিন্তচ্চ, সমরে ইন্দ্র-প্রমুখ দেবগণেরও অজেয়, বুদ্ধিমান্, জিতক্লম, যোধ-প্রধান, রণে নিভাজয়ী এবং ভীষণান্ত্র, তুমি উহাঁর পথ পরিত্যাগ করিয়া ভীয়ের নিকট সত্তর গমন কর। বৎস! আজি ভূমি রণে মহা ভয়ানক হত্যা-কাণ্ড দেখিতে পাইবে, কিরীটা সংক্র্দ্ধ হইয়া সন্নতপর্বে শর নিকর ছারা শূরগণের স্বর্ণচিত্রিত উত্তম শোভন কবচ সকল বিদারণ করিব এবং ধজাপ্রভাগ, ভোমর, ধনুক, বিমল প্রাস, কনকো-ত্বল তীক্ষ্ণ শক্তি ও নাগ সকলের পতাকা নির্ভিন্ন করিবেন।

হে পুজ! উপজীবী ব্যক্তিদিগের প্রাণ রক্ষা করি বার এ সময় নয়, স্বর্গ উদ্দেশ করিয়া যশ ও জয়ের নিমিত্ত যুদ্ধে গমন করে। এ কপিয়ল অর্জুন নিহত নাগ ওরথের আবর্ত্তময়ী স্বত্বর্গমা মহা ঘোরা সংগ্রাম নদী হইতেরথ দ্বারা উত্তীর্ণ হইতেছেন ব্য যুধিন্তিরের ব্রহ্মণা, দম, দান, তপস্যা, ও মহৎচরিত বিদ্যমান রহিয়াছে, যাঁহার সখা ভ্রাতা ধনপ্রয়, বলরান ভীমসেন ও মাজীপুজ দ্বয়, যাঁহার সহায় র্ফিনন্দন বাস্থদের এবং যাঁহার শরীর তপস্যা দ্বারা তাপিত হইয়াছে, ছর্ছি ধৃতরাই-পুজের প্রতি তাঁহার মন্যুজন্য কোপই, ভারতী সেনা দক্ষ করিত্তছে। এ দেখিতেছ, অর্জুন বাস্থদেরকে আজয় করিয়া স্থান্থান্যর সমক্ষে সমুদায় সৈন্য বিদারণ করিতেছেন; ধেমন তিমি মহাসাগর ক্ষোভিত করে,

তাহার ন্যায় কিরীটা ঐ সকল সৈন্য ক্ষোভিত করি-তেছেন; ঐ শুন, সৈন্য মধ্যে হাহা ও কিল কিলা শব্দ হইতেছে। অতএব বংস! তুমি শিখণ্ডীর সমীপে গমন কর, আমি যুধিছির সমীপে গমন করি। অমিত তেজা রাজা যুধিন্ঠিরের সমুদ্র কুকি সদৃশ ব্যুহের মধ্যে গমন করাই ছুঃসাধ্য, কেন না উঁহা সর্ব্বত্র অবস্থিত অভিরথ গণে সংযুক্ত রহিয়াছে। সাত্যকি, অভিমন্থ্য, ধৃউছ্যান্ন, রুকোদর, নকুল ও সহ-দেব নরপতি যুধিষ্ঠিরকে রক্ষা করিতেছেন। উপেঞ্জ-ভুল্য শ্যামবর্ণ ও মহাশাল বৃক্ষের ন্যায় সমুদ্ধত ঐ অভিমন্থ্য দ্বিতীয় অর্জুনের ন্যায় সৈন্যাত্রে গমন করিতেছেন। অতএব তুমি অন্য মহৎধমুক ও উত্তম উত্তম অন্ত্র সকল লইয়া শিখণ্ডীর সমীপে গমন কর, রকোদরের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হও। কোন্ বাক্তি थिय शूखदर वह मयदमत कीविक धाकिरक हेका ना করে,—সকলেই করে, কিন্তু আমি ক্ষত্তিয় ধর্ম অব-লোকন করিয়া ভোমাকে এই যুদ্ধে নিযুক্ত করি-তেছি। হে বংস! ঐ ভীন্নও ষম ও বরুণের ভুল্য পরাক্রম প্রকাশ করত মহাদৈন্য দুগ্ধ করিতেছেন। নবাধিক শতভম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১০৯ ॥

সঞ্চয় বলিলেন, মহারাজ! ভগদন্ত, রূপ, শলা, রুতবর্মা, অবন্তিরাজ বিন্দ ও অমুবিন্দ, সিন্ধুরাজ জয়দ্রথ, চিত্রসেন, বিরুণ, ও চুর্মর্যা, আপনকার পর্কায় এই দশ জন যুবা যোজা মহুৎযশের অভিলাবে নানা দেশীয় মহুতী সেনায় সমবেত হইয়া ভীয়ের সমরে ভীমসেনের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। শল্য নয়, রুতবর্মা তিন, ও রূপ নয় বাণে ভীম সেনকে তাড়না করিলেন। চিত্রসেন, বিরুণ ও ভগদত্ত, ইয়ারা প্রভাবেক দশ দশ ভল্ল ভীমসেনর প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। সিন্ধুরাজ তিন বাণে ভীমসেনকে বিদ্ধা করিলেন। অবস্থিদেশীয় বিদ্ধা ও অমুবিন্দ প্রত্যেকে পাঁচ পাঁচ রাণে এবং চুর্ম্মর্যণ

বিংশতি সংখ্য স্থাণিত শরে ভীমদেনকে আছত क्तित्वन । মহারাজ ! মহাবল ভীমসেন সর্বলোক মধ্যে মহাবীর ধৃতরাষ্ট্র পক্ষীয় সেই সকল দেদীপামান মহারথ দিগের প্রভোককে পৃথক্ পৃথক্ শাণিত বাণ সমূহে বিদ্ধা করিলেন। তিনি শল্যকে পঞ্চাশৎ ও ক্লতবর্মাকে অফ বাণে বিদ্ধ করিয়া ক্লপের সশর শরাসনের মধ্যত্তল ছেদন করিলেন; তৎপরেই ছিন্ন-भन्ना क्रभटक भूनर्वात्र मश्च वाटन विक कतिरलन। পরে বিনদ ও অমুবিনদকে তিন তিন বাণে বিন্ধ क्रिया क्रुमर्यगटक विश्मिक, विज्ञानित्क शाव, विक-পুনর্কার তাঁহাকে তিন শরে সমাহত করত হর্ষ সহকারে নিনাদ কয়িয়া উঠিলেন। রথি প্রবর রূপ অন্য কাৰ্ন্মুক লইয়া সংব্ৰদ্ধ হইয়া শাণিত দশ বাণে ভীমকে বিদ্ধ করিলেন। প্রতাপবান্ মহা-বাছ ভীমদেন বহুতোত্ৰ-বিন্ধ মহাহন্তীর ন্যায় দশ বাণে বিদ্ধ হইয়া ক্রোধাবিফ চিত্তে বছ শরে রূপকে তাড়িত করিলেন। কালান্তক সদৃশ মূর্জিমান্ ভীমসেন তৎপরে সিন্ধুরাজের অশ্বচতুষ্টয় ও সার্রথিকে তিন শরে যমলোকে প্রেরণ করিলেন। মহারথ জযক্রথ হতাশ্বরথ হইতে শীঘ্রণ লক্ষ্ণ প্রদান করিয়া ভীম-সেনের প্রতিবন্ধ শাণিত শর নিক্ষেপ করিলেন, কিন্তু ভীমদেন ছুই ভল্ল দারা মহাত্মা জয়দ্রথের ধমুকের মধ্যভাগ ছেদন করিয়া কেলিলেন। সিকু-নাথ তথন ছিল্পন্থা, বির্থ, হতাশ্ব ও হত সার্থি হইয়া স্বরা পূর্বক চিত্রসেনের রখে আরোহণ করি-লেন। হে নরপাল! পাগুনন্দন ভীমসেন সেই সংগ্রামে সেই সকল মহারথ দিগকে শর বেধ পূর্বক নিবারণ করত অতি অদ্ভুত কার্য্য করিতে লাগিলেন।

রাজা শল্য ভীমদেনকে সর্বা লোকের সাক্ষাতে
সিকুপতিকে রথ বিহীন করিতে দেখিরা-ভীমদেনের
বিক্রম সহ করিলেন না। তিনি থাক্ থাক্ বলিয়া
কর্মার-পরিমার্কিত ভীক্ষ্ণ শর সমূহ সন্ধান পূর্বক
ভীমের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। রুপ, রুত্বর্মা,

ৰীৰ্যাবান্ ভগদন্ত, অবস্থিরাজ বিনদ ও অসুবিন্দ, চিত্ৰসেন, ছুৰ্ম্মৰ্যণ, বিৰুণ ও বীৰ্যাবান সিমুপতি, এই সকল অরিন্দম গণ সেই সংগ্রামে মদ্রবাজ শল্য নিমিত্ত সত্ত্বর হইয়া ভীমকে শর বিদ্ধ করিতে লাগি-লেন। ভীমদেনও উাহাদিগের প্রভ্যেককে পাঁচ পাঁচ শরে প্রতিবিদ্ধ করিলেন এবং শল্যকে সপ্ততি वाटन विक कतिशा श्रूनव्यात्र मण वाटन विक कति-লেন। শল্য তাঁহাকে নয় বাণে বিদ্ধ করিয়া পুন-র্বার পঞ্চবাণে বিদ্ধ করিলেন, এবং এক ভদ্প দারা তাঁহার সার্থির মর্মাহল গাঢ় বিদ্ধ করি লেন। প্রতাপবান্ ভীমসেন সার্থি বিশোককে শর-নির্জিন দেখিয়া ভিন বাণে মদ্ররাজের বাছ ঘর ও বক্ষঃস্থল সমাহত করিলেন, এবং অন্যান্য সেই সকল মহাধনুর্দ্ধর দিগকে তিন তিন বাণে বিদ্ধ করিয়া সিংহনদে করিয়া উঠিলেন। তৎপরে সেই মহাধমুর্দ্ধরেরা প্রত্যেকে যত্ন পরায়ণ হইয়া অকুণ্ঠিতাগ্রভাগ তিন তিন বাণে যুদ্ধ বিশারদ ভীম-সেনের মর্ম্ম স্থান সকল গাঢ় ৰূপে তাড়িত করিলেন। যেমন পর্বত বর্ষমাণ মেছের বারিধারা সমূহে ব্যথিত হয় না, সেইৰূপ মহাধন্ত্র্ধর ভীমদেন তাঁহাদিগের ৰাণ সমূহে অতি বিদ্ধ হইয়াও ব্যথিত হইলেন না। অপিচ, মহাযশা মহাবল ভীমসেন কোধ-সমাবিষ্ট হইয়৷ চতুর্দ্দিক্ হইত্তে তিন বাণে মজেশ্বর-কৈ ও নর বাণে রূপকে গাঢ় বিদ্ধ করিয়া প্রাগ্-জ্যোতিব-রাজকে শত শায়কে বিদ্ধ করিলেন। তৎ পরেই লঘুহত্তে স্থতীক্ষ্ণ ক্ষুরঞ ভারা মহাক্ষা কৃতবর্মার শরের সহিত শরাসন ছেদন করিয়া কেলিলেন। শত্ৰুতাপন ক্লতবৰ্মা অন্য ধনুক গ্ৰহণ করিয়া হকোদরের জ্র হয়ের অভ্যন্তরে এক নারাচ আঘাত করিলেন। রকোদর তথন শল্যকে নয়, ভগদন্তকে তিন, কৃতবর্মাকে অফ বাণে বিশ্ব করিয়া क्रुप अष्ट्रि महात्रधिनभटक छूटे छूटे वाटन विश्व क्रि. লেন। তাঁহারাও সকলে তাঁহাকে স্থানিত শর নিকরে বিদ্ধাকরিতে লাগিলেন। তিনি তথন বেই

সমস্ত মহারথ কর্তৃক পীডামান হইয়াও বাথারহিত হইয়া তাঁহাদিগকে ভূণ ভুল্যজ্ঞান করিয়া রণে বিচ-রণ করিতে লাগিলেন। পরে সেই সকল রখি প্রধান অব্যগ্র হইয়া তাঁহার প্রতি শত শত সহস্র সহস্র নিশিত শর সমূহ নিকেপ করিলেন। হে মহীপতে! ৰীরাঞ্গণ্য মহারথ ভগদন্ত স্বর্ণদণ্ডাম্বিত এক শক্তি মহাবেগে তাঁহার প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। মহাভুজ সিন্ধুরাজ তোমর ও পাউশ, রূপ শতন্মী, বীর্যাবান্ শল্য শর এবং অন্যান্য মহাধমুর্দ্ধরগণ প্রত্যেকে পাঁচ পাঁচ শিলীমুখ তাঁহার প্রতি বেগ পুর্বাক নিক্ষেপ ক্রিলেন। প্রন নন্দন, বিপক্ষগণ নিক্ষিপ্ত সেই সকল অস্ত্র বিফল করিয়া কেলিলেন—ক্ষুরপ্র দ্বারা তোমরাস্ত্র দ্বিধা করিয়া ছেদন করিলেন, তিন বাণে পট্টিশা-স্ত্রকে তিল কাণ্ডের ন্যায় ছেদন করিলেন এবং কঙ্কপত্র যুক্ত নয় বাণে শতদ্বী অস্ত্র ভেদ করিলেন। মহারথ বৃকোদর মদ্রাজ নিক্ষিপ্তশার ছেদন করিয়া ভগ-দত্ত প্রেরিত শক্তি সহসা ছেদন করিয়া ফেলিলেন, এবং অন্যান্য ভয়ানক বাণ সকল সন্নতপর্বে শরসমূহ দারা ছেদন করিলেন; রণশ্লাঘী ভীমসের এক এক বাণ তিন তিন খণ্ড করিয়া,ছিন্ন করিলেন, তৎপরেই সেই সমস্ত মহাধমুর্দ্ধরদিগকে তিন তিন বাণে তাড়িত করিলেন।

তদনন্তর ধনঞ্জয় সেই মহারণে মহারথ ভীমসেনকে শায়ক সমূহ দ্বারা শত্রুগণ সহ যুদ্ধ ও তার্কী দিগকে নিহত করিতে দেখিয়া রথারোহণে তথায় আগমন করিলেন। মহারাজ! জ্বাপনকার পক্ষ পুরুষ প্রবরেরা সেই ছুই মহাস্থাকে তথায় সমেত দেখিয়া জয়ের প্রতি হতাশ হইলেন। হে ভারত! আর্জুন শিথগুকৈ পুরোবর্তী করিয়া ভীয়ের নিধনাকার্জী হইয়া গমন করিতেছিলেন, তিনি গমনকালে ভীমসেনকে আপনকার পক্ষীয় দশ মহারথ বীরের সহিত যুদ্ধ করিতে দেখিয়া ভাঁহার সমীপে উপনীত হইয়াছিলেন, স্বতরাং ধাঁহারা ভীমের সহিত যুদ্ধ করিতে ছিলেন, বীতৎস্থ ভীমের প্রিয়কার্য্য করিন

বার অভিলাবে ভাঁছাদিগকে বাণ বি**দ্ধ** করিতে লাগিলেন।

তদনন্তর রাজা ছুর্য্যোধন অর্জুন ও ভীমসেনের বধ নিমিত্তে স্থার্থাকে আদেশ করিলেন, হে স্থার্থন! ভূমি শীঘ্র সৈন্য সমূহে পরিবারিত হইয়া ধনঞ্জয় ও রকোদর উভয় পাগুবকে বিনাশ কর। প্রস্থলাধি-পতি ত্রিগর্ভরাজ স্থার্থা তাঁহার বাক্য শুনিয়া সহস্র সহস্র রথীর সহিত ধাবমান হইয়া ধমুর্দ্ধর ভীমার্জ্জ্ন নকে চতুর্দ্ধিকে পরিবেইটন করিলেন। তদনন্তর সেই সকল বিপক্ষদিগের সহিত অর্জুনের যুদ্ধ হইতে লাগিল।

দশাধিক শতভম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১০॥

मक्षत्र कहिलान, रह त्रारकसः! व्यर्क्न मःशास्म যত্নপরায়ণ মহারথ শল্যকে সন্ধতপর্বে শর নিচয়ে সমা-চ্ছাদিত করিলেন, স্থশর্মা ও ক্লপকে তিন তিন বাণে বিদ্ধ করিলেন; এবং প্রাগ্জ্যোতিষ ভগদন্ত, সিদ্ধ-নাথ জয়দ্রথ, চিত্রসেন, বিকর্ণ, ক্লভবর্মা, ছুর্মর্যণ ও অবস্তিরাজ মহারথ বিন্দ ও অমুবিন্দ, ইহাঁদিগের এক এক জনকে কল্প ও ময়ুর পক্ষযুক্ত তিন তিন বাণে বিদ্ধ ও আপনার অন্যান্য সেনাদিগকে পীড়িত করিতে লাগিলেন। সিন্ধুরাজ জয়ত্রথ চিত্রসেনের রথস্থ হইয়া পার্থকে শায়ক নিকরে বিদ্ধ করিয়া বেগ-পুর্বক ভামসেনকে শর বিদ্ধ করিলেন। রথি প্রবর भना ७ क्रभ मर्याएकी नानाविश्व वार्ण व्यर्क्तनरक विका করিলেন। চিত্রসেন প্রভৃতি আপনার পুত্রগণ প্র-ত্যেকে সুশাণিত পাঁচ পাঁচ শরে অর্জ্জুন ও ভীম-সেনকে সত্তর সমাহত করিলেন। ভরত কুল প্রধান রথিত্রেষ্ঠ কুন্তীপুত্র বয় সমরে তিগর্জ দেশীয় মহৎ रेमनामिशस्य भौष्ठि क्रिंड नाशिस्मन। जिशर्ड-त्राक स्मार्ग्य अन्तर मारत पार्क्य निक कित्रता रामबर নিনাদ করত মহৎদৈন্য দিগের তাসোৎপাদন ক্রি-লেন। শৌর্যাসম্পন্ন অন্যান্য বহু যোদ্ধা সুবর্ণপুঞ্ স্থাণিত শর নিকরে ভীমসেন ও ধনঞ্মকে বিদ্ধ

করিতে লাগিল। রধি প্রবর্তদার স্বভাব ভীমার্জ্বন উভরে, পোযুথ মধ্যে আমিবেক্স মদোৎকট সিংহ ष्टतत्र नात्र, त्रहे नकन तथिनिरात्र मर्पा की एमान হইয়া বিচিত্তৰূপ দৃষ্ট হইতে লাগিলেন। সেই ছুই ৰীর রণমধ্যে শত শত শৌর্যাশালী যোজা দিগের ধমুক ও বাণ সকল বছধা ছেদন করিয়া মন্তক নিপা-তিত করিলেন। বছল রথ ভগ্ন হইয়া এবং শত শত অখ ও গৰু আরোহীর সহিত উব্বীতলে মহারণে পতিত रहेग। वहन तथी ও अधादतारी निगटक চভুর্দিপে স্থানে স্থানে নিহত হইয়া চেফমান হইতে দেখা গেল। নিহত গজ, বাজি ও পদাতি সমূহে এবং বছধা প্রভিন্ন বছলরথে মেদিনী বিস্তীর্ণা হইল। বহুধা ছিন্ন, মৰ্দ্দিত ও নিপাতিত ছত্ৰ, ধজ, অঙ্কুশ, পরিস্তোম, কেয়ুর, অঙ্গদ, হার, রাস্কব, উঞ্চীষ, ঋষ্টি, চামর, ব্যব্দন ও ইতন্তত পতিত নরেন্দ্রগণের চন্দন চর্চিত বাছ ও উরু দারা রণস্থল সমাকীর্ণ হইল। রণে অর্জুনের এই অদ্ভুত পরাক্রম দেখিলাম যে তিনি শর নিকরে সেই সকল বীরদিগকে নিবা-রণ করিয়া আপনকার সৈন্য বিনাশ করিতে লাগি-লেন। আপনার পুত্র মহাবল ছুর্যোধন ভীমার্জু-त्वत्र अत्राक्तम (पश्चित्रा अञ्चानम्हत्वत्र त्रथः मभीत्र গমন করিলেন। রুপ, রুতবর্মা, সিম্কুনাথ দ্রাদ্রথ ও অবস্তিরাজ বিন্দ ও অমুবিন্দ, তথ্য সমর পরি-ত্যাপ করেন নাই। মহাধনুর্দ্ধর ভীমসেন ও মহা-রথ কাল্কন ভীষণ কৌরব সৈন্য অত্যন্তবিদ্রাবিত করিতে লাগিলেন। ক্ষত্রিয়গণ অযুত অযুত অর্ব্যুদ অৰ্ব্যুদ ৰাণ শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ ধনঞ্চয়ের রথে নিক্ষেপ করি-তে থাকিলেন। পার্থ সেই সকল বাণ শর জালে নিবারণ করিয়া মহারথ ক্ষজিয়দিগকে মৃত্যু সমীপে প্রেরণ করিতে লাগিলেন। মহারথ শল্য ক্রোধসমা-विके श्रेष्ट्रा यन कीए। क्रिएंड क्रिएंड क्र्यून्त्र বক্ষংস্থল সম্নতপর্বা বহু ভল ছারা সমাহত করিলেন। অৰ্জুন পঞ্চ বাণে তাঁহার ধমুক ও হতাবাপ ছিল করিয়া তীব্দু শায়ক নিচরে তাঁহার মর্ম স্থান গাঢ়

বিদ্ধা করিলেন। মদ্ররাজ রোষ-পরবশ হইরা জন্য এক ভারসাধন ধলুক গ্রহণ করিয়া তিন শরে অর্জু-নকে তাড়িত করিলেন, এবং পঞ্চ শরে বাস্থদেবকে বিদ্ধা করিয়া নয় শরে ভীমসেনের বাহু দয় ও বক্ষঃ-ফুল বিদ্ধা করিলেন।

হে মহারাজ! তদনন্তর মহারথ মগধরাজ ও দ্রোণ ছুর্য্যোধনের আদিই হইয়া যে স্থানে অতি মহারথ পার্থ ও ভীমদেন মহতী কৌরবী সেনা নিহত করিতেছিলেন, সেই স্থলে আগমন করি-লেন। হে ভরত প্রবর! মগধরাজ জয়ৎদেন ভীমা-য়ুধধারী ভীমকে স্থশাণিত অফ সংখ্য শরে বিদ্ধ করিলেন। ভীম দশবাণে তাঁছাকে বিদ্ধ করিয়া পুনর্কারপঞ্চবাণে বিদ্ধ করিলেন, তৎপরেই এক ভল্ল দারা তাঁহার সার্থিকে র্থনীড় হইতে নিপাতিত করিলেন। 'তথন মগধরাজের রথ-ঘোটক উদ্ভান্ত হইয়া চতুৰ্দিগে ধাৰমান হইল, তাহাতে তিনি সমস্ত সৈনোর সাক্ষাতে রণ হইতে অপহত হইলেন। তথন দ্রোণ রক্ষু পাইয়া ভীমসেনকে স্থশাণিত लोरुमय शक्ष विधे वाटन विक क्तिरलन। ममत्रभाषी ভীম রণে পিতৃতুল্য গুরু দ্রোণকে নয় ভল্লে বিদ্ধ করিয়া পুনর্বার বৃষ্টি ভল্লে বিদ্ধ করিলেন। অর্জ্জুন স্থশর্মাকে বহু শায়কে বিদ্ধ করিয়া, যে প্রকার বায়ু মহা মেঘ রুন্দ অপসারিত কবে, সেই প্রকার তাঁহার লীন্য বিদ্রাবিত করিতে লাগিলেন। তদনস্তর ভীষ্ম, রাজা কৌশলাও র্হদ্বল, ইহাঁরো সংকুদ্ধ হইয়া ভীমার্জুনের অভিমুখীন হইলেন। শৌর্যাশালী পাও বেরা ও ধৃষ্টছাম, ব্যাদিতানন যম সদৃশ ভীমের প্রতি অভিদ্রুত হইলেন। শিখণ্ডী ভরত পিতামহ ভীন্নকে দেখিয়া মহারথ ভীম্ব হইতে ভয় পরিত্যাগ করিয়া সংজ্ফটিতে তাঁহার প্রতি অভিদ্রুত হই-লেন। যুধিন্তির প্রমুখ পাওবেরা শিখতীকে অগুবর্তী করিয়া সমন্ত সঞ্জয়গণের সহিত, ভীম্মের সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলেন। আপনকার পক্ষীর সক-লেই বতত্রভ ভীমকে পুরোবর্জী করিয়া শিখণ্ডী

প্রভৃতি পার্থ দিগের সহিত যুক্ক করিতে লাগিলেন। তৎপরে ভীয় নিমিত্তে পাগুর দিগের সহিত কৌরবদিগের ভয়াবহ যুদ্ধ হইতে লাগিল; হে নরপাল!
আপনকার পক্ষীয়দিগের সহিত পাগুর্বদিগের পরস্পর জয় বা পরাজয় নিমিত্ত সংগ্রামক্রপ দূতে ক্রীড়া
আরক্ক হইল, তাহাতে আপনকার দিগের জয় বিষয়ে
ভীয় পণ-স্বক্রপ হইলেন। হে রাজেক্র! ধৃষ্টয়়ায়
সমুদায় সৈনা দিগকে বলিলেন, হে রিথ সভমগণ!
তোমরা ভয় করিও না, ভীয়ের সমীপে অভিক্রত
হও। পাগুরী সেনা সেনাপতির বাক্য শুনিয়া ত্রয়াসহকারে প্রাণের আশা পরিত্যাগ করিয়া ভীয়ের
প্রতি অভুদ্যাত হইল। যে প্রকার মহোদধি বেলা
ভূমিকে গ্রহণ করে, সেই প্রকার রিথ প্রধান ভীয়ও
সেই সকল সমাগত সৈন্য প্রতিগ্রহ করিলেন।

একাদশাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত॥ >>>॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! শান্তমুনন্দন মহাবীর্যা ভীম দশম দিবসে পাগুব ও স্ঞয় গণের সহিত কি প্রকার যুদ্ধ করিয়াছিলেন, এবং কৌরবেরাই বা কি প্রকারে পাগুবদিগকে নিবারণ করিয়াছিলেন, এবং রণশোভী ভীম যে সেই দিবসে মহৎ যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তাহা আমার নিকট কীর্ত্তন কর।

সঞ্জয় বলিলেন, হে ভারত! কৌরবেরা পাণ্ডবদিগের সহিত যেৰপ যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তাহাঁ
অশেষ ৰূপে আপনকার নিকট সংপ্রতি বলিতেছি
অবণ করুন। প্রতি দিনই কিরীটা আপনকার পক্ষীয়
সংরক্ষ রথী সমূহকে পরমাস্ত্র দ্বারা পরলোকে প্রেরণ
করিয়াছিলেন। এবং কুরুপ্রবন্ধ রণজন্নী ভীয়ও
প্রতিজ্ঞানুসারে অনবরত পাণ্ডবদিগের সৈন্য ক্ষর
করিয়াছিলেন। হে শক্তভাপন! এ পক্ষের যুধ্যমান
কুরুপণের সহিত ভীয় এবং ও পক্ষের যুধ্যমান পাফালাগণের সহিত অর্জুনকে দেখিয়া জয় বিষয়ে
সংশর হইয়াছিল। পরস্ক দশম দিবনে ভীয়ের সহিত
অর্জুনের সমাগমে অনবরত মহাভয়ানক সৈন্য ক্ষর

হইল। পরমান্ত্রবিৎ পরস্তপ ভীন্ন সেই দিবলৈ অযুভ অযুভ যোদ্ধাদিগকে ভূয়োভূয় নিহত করিলেন। যাহাদিগের নাম গোত্র অজ্ঞাত প্রায় এবং যাহার। শৌর্যাশালী ও সমরে অনিবর্তী ছিল, তাহারা সক-লেই ভীন্ন কর্ভৃক পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইল।

শক্রতাপন ধর্মাত্মা মহাবাছ আপনার পিতৃবা ভীম দশ দিবসে পাণ্ডব সেনা সন্তাপিত করিয়া আপ-নার জীবনে নির্বিল্ল হইলেন, তিনি সংগ্রামে সত্ত্ব আক্ষমরণে অভিলাধী হইয়া 'আর বছত্র মানব শ্রেষ্ঠদিগকে বিনাশ করিব না' এইবাপ চিন্তা করিয়া সমীপস্থ যুধিন্তিরকে বলিলেন, হে বুৎস সর্ব্যান্ত্র-বিশারদ ধর্মজ্ঞ যুধিন্তির! আমি ভোমার নিকট স্বর্গজনক ধর্মযুক্ত বাক্য বলিতেছি শ্রবণ কর। আমি রণে বছল প্রাণীকে নিহত করিয়া বছ সমূয় অভি-বাহিত করিলাম; এক্ষণে আমার এই দেহ রক্ষণে নির্বেদ উপন্থিত হইয়াছে, অভএব ভূমি যদি আ-মার প্রিয় কার্য্য ইচ্ছা কর, তাহা হইলে, পাঞ্চাল ও স্প্রেয়গণের সহিত অর্জুনকে পুরোবর্ত্তী করিয়া আ-মাকে সংহার করিতে যত্ন কর

হে রাজন্! ধৃউত্যুন্ন ও যুধিন্তির ভীন্নের সেই
বাক্য অবণ করিয়া সৈন্যদিগকে বলিলেন, ভোমরা
ভীন্মের প্রতি অভিদ্রুত হও, তাঁহার সহিত যুদ্ধ
করিয়া তাঁহাকে পরাজিত কর। শক্রজারী অর্জুন
ভোমাদিগকে রক্ষা করিবেন, এবং এই সেনাপতি
মহাধর্ম্বর ধৃউত্যুন্ন ও ভীমসেনও ভোমাদিগকে
রক্ষা করিবেন। হে স্প্রেরগণ! ভোমরা ভীম হইতে কিছু মাত্র ভয় করিও না, আমরা শিখভীকে
অগ্রবর্তী করিয়া ভীমকে জয় করিব, ভাহাতে সংশয়
নাই। দশম দিবসে পাশুবেরা এইরপ প্রতিজ্ঞা
করিয়া ব্রহ্মলোক গমনে ক্ত-নিশ্চয় হইয়া ক্রোধাকুলিত চিত্রে শিখভী ও অর্জুনকে পুরোবন্তী করত
ভীম নিপাতনে পরম যত্ন সহকারে গমন করিলেন।
ভদনস্তর মহাবল পরাক্রান্ত নাক্ষা দেশীয় য়াজ্বগণ

ও मशुक्राप्तां य च रामा ममजिया हारत ध्वर वन-

শালী ছুম্পানন সমন্ত সহোদরের সহিত একত্রিত হুইয়া সমরমধ্যে অবস্থিত ভীন্নকে রক্ষা করিতে লাগিলেন। তৎপরে আপনার পক্ষ শ্রগণ মহাত্রত ভীন্নকে পুরোবর্ত্তী করিয়া শিষণ্ডী প্রভৃতিপাঞ্চাল ও পাগুবদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। বানর-धक बर्ज्न भिष्ठिति चार्य नहेशा किसी ७ शिक्षान গণ সমভিব্যাহারে ভীয়ের অভিমুখে গমন করিলেন। শিনিপৌক্র সাত্যকি অশ্বপামার সহিত, ধৃফকেতু পৌরবের সহিত এবং অভিমন্ত্য অমাত্য সমবেত ছুর্যোধনের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। রাজা বিরাট স্ব সৈনোর সহিত একত্রিত হইয়া সদৈন্য জয়-ক্রথের সহিত এবং বার্দ্ধক্ষেমির দায়াদ, বিচিত্র শর-কার্ম্মক ধারী আপনার পুত্র চিত্রসেনের সহিত যুদ্ধে সংগত হ্ইলেন। যুধিষ্ঠির সদৈন্য মহাধনুর্ধর মত্র-রাজের সহিত এবং ভীমসেন, অভিরক্ষিত গজসৈন্যের সহিত যুদ্ধাসক্ত হইলেন। ধৃষ্টতাম সোদরগণের সহিত স্বত্ন হইয়া অনিবার্যা ছুর্জ্জেয় সর্বশস্ত্র ধারী দোণের সহিত যুদ্ধে প্রয়ত্ত হইলেন। অরিন্দম निःश्व ताष्रभूत त्रवन कर्निकात्र-थक स्रक्तानन्-নের প্রতি অভ্যুদাত হইলেন। আপনকার পুত্রগণ রাজগণের সহিত সমর্বেত হইয়া শিখণ্ডী ও ধনঞ্জ-রের বধ কামনায় তাঁহাদিগের ছুই জনের প্রতি শাপতিত হইলেন।

হে ভারত! উভয় পক্ষীয় সেনা অতি ভয়ানক পরাক্রম প্রকাশ পূর্বক ধাবমান হইলে মেদিনী প্রকাশতা হইতে লাগিল। রগে ভীয়কে দেখিয়া উভয় পক্ষীয় সমন্ত সেনা পরস্পরের প্রতি সমাসক্ত হইলে, পরস্পর যত্ন পূর্বক ধাবমান সেই সমুদায় সৈনোর মহাশব্দ সর্বাদিগে প্রায়ভূতি হইল। শব্দ প্রকাশের বংহিতধনি ও সৈনালগের স্থাভূতি নির্বোধ, গজগণের বংহিতধনি ও সৈনালগের স্থাভূতি নির্বোধ, গজগণের বংহিতধনি ও সৈনালগের স্থাভূতি নির্বোধ, গজগণের বংহিতধনি ও সেনালগের স্থাভূতা প্রতাশ অক্তাভূতি নির্বোধ হইতে লাগিল। সমন্ত রাজাদিগের উত্তম অক্তাভ ক্রিটের চন্দ্র স্থাভূতা প্রভা দিগের উত্তম অক্তাভ ক্রিটিউর চন্দ্র স্থাভূতা প্রভা ক্রিটিবা হইল। সমুখিত ধূলি পটলীতে মেঘ স্বরণ উৎপন্ন হইয়া শত্র বিভাতে সমার্ভ হইতে

লাগিল; উত্তয় সেনার শরাসন, বাণ, শব্ধ, ভেরী ওরণ নিচয়ের স্থলারণ শব্দ তাহার গর্ক্ষন ধনি হইল। আকাশ মওল উত্তয় সেনার প্রাস, শক্তি, খাটি, ওবাণ সমূহে সমাকুল হইয়া যেন অপ্রকাশিত হইল। রথীগণ রথীদিগকে ও সাদীগণ সাদীদিগকে পরস্পার নিহত করিয়া পতিত হইতে লাগিল। কুঞ্জর সকল কুঞ্জরদিগকে ও পদাতি সকল পদাতিদিগকে নিহত করিতে লাগিল। হে নর প্রবর! যে প্রকার আমিষ নিমিন্ত ছুই শ্যোন পক্ষীর যুক্ষ হয়, সেইবপ্রপাতীয় নিমিন্ত পাওবদিগের সহিত কৌরবদিগের অতি তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল। তাহারা পরস্পারের বধার্থী ও জিগীয়ু হইয়া ঘোরকাপ্রে যুদ্ধে সম্বতে হইলেন।

দাদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১২॥

সঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ! পরাক্রমশালী অভিনন্ম ভীন্ম নিমিত্তে মহতী সেনায় সংযুক্ত আপন-কার পুত্র ছুর্যোধনের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। ছুর্যোধন নতপর্ব নয় শরে অর্জুনপুত্রকে রণে সমা-হত করিলেন, এবং পুনর্বার ক্রুদ্ধ হইয়া তিন শ্র অভিনন্নর বক্ষঃস্থলে আঘাত করিলেন। অর্জুন-নন্দন সংকুদ্ধ হইয়া যমের ভগ্নীতুল্য ভয়ানক এক শক্তি তুর্যোধনের রথোপরি নিক্ষেপ করিলেন। হৈ নরনাথ! আপনার পুত্র মহারথ ছুর্য্যোধন সেই ঘোরৰপ শক্তিকে সহসা আপতিত হইতে দেখিয়া ক্রপ্রারা তাহা ছুই খণ্ডে ছেদন করিয়া কেলি-লেন। অর্জুননন্দন সেই শক্তিকে পতিত দেখিয়া পরম কোপাবিষ্ট হইয়া তিন বাণ ছুর্য্যোধনের বাছ দ্বয় ও বক্ষঃস্থলে অর্পণ করিলেন। ভরত বংশের মহারধ অভিমন্ত্য পুনর্কার ঘোরতর দশ সংখ্য শর ছারা চুর্যোধনের তান ছয়ের মধাত্বল সমাহত করি-লেন। হে ভারত! স্ত্তানন্দ্ন অভিমন্ত্য ও কুরু-পুস্ব ছুর্য্যোধন এই উভয় বীরের, ভীয়ের নিধন ও অর্জুনের পরাজয় নিমিতে যে ভীষণ যুক্ক হইতে

লাগিল, তাহা বিচিত্র ও সকল লোকের ইন্দ্রির প্রীতিকর হইল, সমুদায় পার্থিবগণ তাহার প্রসংশা করিতে লাগিলেন।

শত্রুতাপন ব্রাহ্মণপুষ্কর দ্রোণনন্দন কুদ্ধ হইয়া সমরে বেগশীল সাত্যকির বক্ষঃস্থল এক নারাচ ৰারা সমাহত করিলেন। হে ভারত! অনেয়াত্মা শিনিপৌত্র গুরুপুত্র অশ্বথামার সমুদায় মর্মান্থলে কঙ্কপত্র-যুক্ত নয় বাণে তাড়না করিলেন। অখ-শামাও সাত্যকির প্রতি নয় শর নিক্ষেপ করিয়া পুনর্কার ঝটিতি সাত্যকির বাছ দ্বয় ও বক্ষঃস্থলে ত্রিংশৎ বাণ সমর্পণ করিলেন। সাত্রত বংশীয় মহা-যশ। মহধেরুর্দ্ধর সাত্যকি জেণেপুজ কর্তৃক অতি বিদ্ধ হইয়া তিন বাণে দ্রোণপুত্রকে সমাহত করি-লেন। মহারথ পৌরব, ধৃই্টকেতুর ধন্ত্ব ছিন্ন করিয়া वलवर निनाम क्रिलन अवर स्मानिङ मेत्र निक्रत তাঁহাকে বিদ্ধ করিলেন। মহারাজ। ধৃফকৈতু অন্য ধনুক লইয়া ত্রিসপ্ততি শাণিত শরে পৌরবকে সমা-হত করিলেন। সেই মহারথ মহাধনুর্ধার মহাকায় ছুই বীর পরস্পরকে মহাশর বর্ষণে বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। তাঁহার। ছুই জন পরস্পরের ধনুক ও রথঘোটক ছেদন করিয়া বির্থীও ক্রোধ পরবশ হইয়া অসি যুদ্ধে সমবেত হইলেন। উভয়ে বিচিত্র শত চক্র বিভূষিত শত তারকা শোভিত ঋষভ চর্মা ষয় ও অতি মহা প্রভাষিত বিমল খড্গ গ্রহণ করিয়া, মহাবনে ঋতুমতী সিংহী সঙ্গমে যত্ন পরায়ণ সিংহ ছথের ন্যায়, প্রস্পর অভিক্রত হ্টুলেন। তাঁহারা পরস্পরকে আক্রমণ করিবার মানসে বিচিত্র মণ্ড-লাকারে প্রত্যাগতি প্রদর্শন করত বিচরণ করিতে লাগিলেন এবং পৌরব সংকুদ্ধ হইয়া থাক্ থাক্ বলিয়া রুহৎ খড়্গ দারা পৃষ্টকেতুর ললাটে তাড়না ক্রিলেন। চেদিরাক্ষ ধৃউক্তেতুও পুরুষ প্রধান পৌর-বের জক্রদেশে শিতধার বৃহৎ ধড়্গের আঘাত করিলেন। হে মহারাজ! সেই ছুই আরিন্দম পর-স্পারের বেগে অভিহত হইয়া সেই মহারণক্ষেত্রে

নিপতিত হইলেন। তদনন্তর আপনকার পুত্র জয়ং-সেন পৌরবকে স্বকীয় রথে আরোপিত করিয়া সম-রাঙ্গন হইতে অপসারিত করিলেন। পরাক্রমশালী প্রতাপবান মাজীপুত্র সহদেবও ধৃইকৈতৃকে রণ-ক্ষেত্র হইতে অপনীত করিলেন

চিত্রসেন বছ শায়কে স্থার্নাকে বিদ্ধ করিয়া পুন-ব্রির ষ্টি শরে বিদ্ধ করিলেন, এবং তৎপরেই পুন-ব্রির নয় শরে বিদ্ধ করিলেন। স্থার্শ্মাও সংকুদ্ধ হইয়া আপনকার পুত্র চিত্রসেনকে দশ দশ শানিত শরে বিদ্ধ করিলেন। পরে চিত্রসেন ক্রোধারিইট হইয়া নতপর্ব ত্রিংশৎ শরে স্থার্শ্মাকে সমাহত করিলেন। ভীয় নিমিত্তক সেই সমরে যাশ ও মান বর্দ্ধন নিমিত্ত স্থার্শ্মাও তাঁহাকে প্রতিবিদ্ধ করিতে লাগিলেন।

হে রাজন্! পরাক্রমশালী স্বভ্রাপুত্র সেই ভীয় নিমিত্তক সমরে পার্থের সাহায্য জন্য রাজপুত্র রহদ্বলের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। কোশলরাজ রহদ্বল অর্জুনপুত্র অভিমন্তাকে পঞ্চ শরে বিদ্ধাকরিয়া পুনর্বার সন্নতপর্ব বিংশতি শরে বিদ্ধাকরিয়া পুনর্বার সন্নতপর্ব বিংশতি শরে বিদ্ধাকরি লেন। তংপরে অভিমন্তা কোশলেক্রকে অন্ত শরে বিদ্ধাকরিয়া প্রকলিপত করিতে না পারিয়া পুনর্বার শর নিকরে বিদ্ধাকরিলেন, এবং পুনর্বার কোশল নাথের ধন্তুক ছেদন করিয়া কন্ধপত্র সংযুক্ত ত্রিংশংশরে ভাঁহাকে সমাহত করিলেন। রাজপুত্র রহ্দ্বল অন্য ধন্তুক লইয়া কোধাবিষ্ট চিত্তে বছল বাণে ফাল্ডুনপুত্রকে বিদ্ধা করিলেন। হে পরস্তপ! যেমন দেবাস্থর যুদ্ধা বলি বাসবের যুদ্ধা হইয়াছিল, সেই প্রকার ভীয় নিমিত্ত বিচিত্রকোধী সংরক্ত সেই ছুই বীরের যুদ্ধা হইতে লাগিল।

যে প্রকার বক্সহন্ত ইন্দ্র রহৎ রহৎ পর্বত বিদারণ করত শেশভ্যান হইয়াছিলেন, সেইৰপ ভীমসেন গজ সৈনোর সহিত যুদ্ধ করত বছল বাপে শোভিত হইলেন। গিরি সনিভ মাতঙ্গ সকল ভীম কর্জ্ব বধ্যমান ইইয়া বস্কার। নিনাদিও করত ভূপতি হইতে লাগিল। অঞ্জন রাশি সদৃশ গিরি পরিমাণ সেই সকল নাগ ভূতলগত হইয়া বিকীর্ণ পর্বত সমূহের নায় প্রকাশ পাইতে লাগিল।

মহাধন্ত্র্পর যুখিন্তির মহতী সেনা কর্ত্ক অতিরক্ষিত যুদ্ধোদাত মদ্ররাজ শলাকে পীড়িত করিতে
লাগিলেন। পরাক্রমশালী শলাও ভীয় নিমিত্ত
সংরক্ষ হইয়া মহারথ ধর্মপুত্রকে প্রপীড়িত করিতে
থাকিলেন। রাজা সিম্বুপতি মৎসারাজ বিরাটকে
সম্পর্পর্ব তীক্ষ্ণ নয় শরে বিদ্ধ করিয়া পুনর্বার
ত্রিংশং শরে বিদ্ধ করিলেন। বিরাট, সেনাপতি
সিদ্ধুনাথের তান ঘরের মধ্যস্থলে স্থশাণিত ত্রিংশং
বাণ আঘাত করিলেন। মৎসারাজ ও সিদ্ধুরাজ
উভয়েরই বিচিত্র কার্ম্মক, বিচিত্র অসি, বিচিত্র বর্মা,
বিচিত্র আয়ুধ ও বিচিত্র ধল ছিল, স্থতরাং উভয়েই
বিচিত্রক্য হইয়া যুদ্ধে বিরাজমান হইলেন।

হে মহারাব ! জোণাচার্য্য পাঞ্চাল রাজপুত্র ধৃষ্ট-ড়ামের সহিত মহা সমরে সমবেত হইয়া সলতপর্ক শর নিকর ছারা মহা সংগ্রাম করিতে লাগিলেন। দোণ পঞ্চাশৎ বাণে ধৃষ্টছামের প্রকাণ্ড ধনুক ছেদন করিয়া পরে তাঁহাকে বিদ্ধ করিলেন। বীর শত্রুহস্তা ধৃউত্বান্ন অন্য ধনুক লইন্না যুধ্যমান দ্রোণের প্রতি শারক সমূহ নিকেপ করিলেন। মহারথ জোণ শরাঘাতে সেই সকল নিক্ষিপ্ত বাণ ছেদন করিয়া দ্রুপদের প্রতি পঞ্চ বাণ নিক্ষেপ করিলেন। হে महात्राजः! जल्पादत वीत्रमक्टरहा पार्वज यमम् छ जुना এक भना जाएनत छएकरन निरक्षि कतितन। দ্রোণ হেমপট্ট বিভূষিত সেই গদাকে সহসা আপ-তিত হইতে দেখিয়া পঞ্চাশৎ পরিমিত বাণে তাহা निवात्र कतित्वन। भरत महे भना जात्मत्र ध्यूर्युङ শর बाছলো বছধা ছিন্ন, বিশীর্ণ ও চূর্ণীকৃত হইয়া বসুধাতলে পতিত হইল। শত্ৰুতাপন ধৃষ্টভান গদা নিহত দেখিয়া সর্বা লৌহময় উত্তম শক্তি ক্রোণের প্রতি নিক্ষেপ করিলেন। হে ভারত! দ্রোণ নয় বাবে নেই শক্তি ছেদন করিয়া মহাধমুর্বর পার্বতকে পীড়িত করিতে লাগিলেন। হে মহারাজ! ভীয় নিমিত্ত দ্বোণ ও ধৃউচুনের এইকপ ঘোরতর ভরা-নক মহৎ যুদ্ধ হইতে লাগিল।

অর্জুন গঙ্গানন্দনকে দেখিয়া শানিত শর নিচরে পীড়িত করত, বন মধ্যে এক মন্তহন্তী যেমন অন্য মন্তহন্তীর প্রতি অভিদ্রুত হয়, সেইৰূপ অভিদ্রুত रहेटलन। প্রতাপবান্ মহাবল ভগদত্ত মদান্ধ এক হর্ত্তী আরোহণে অর্জুনের প্রতি অভ্যুদাত হইলেন। দেই হস্তীর শরীরের তিন স্থানে মদস্রাব হইতে-ছिল। वी ७९स्र मरिएस्त्र शक जूना मिरे शकरक আপতিত হইতে দেখিয়া পরম যত্ন সহকারে তাহার প্রতি অভিমুখীন হইলেন। তদনন্তর প্রতাপশালী গজারোহী রাজা ভগদন্ত শরবর্ষণে অর্চ্জুনকে নিবা-রিত করিতে লাগিলেন। সেই নাগ যখন অর্জুনের নিকট আসিতৈছিল, তথন অর্জুন নির্মাল তীক্ষ্ রুজত সন্নিভ উত্তম লৌহময় শর নিকরে তাহাকে বিদ্ধ করিলেন। মহারাজ! অর্জুন, শিখণ্ডীকে যাও याও, जीरम्बर निक्रे याও, উँहारक इनन क्र, এই क्या বলিলেন। রাজা প্রাগ্জোতিষ ভগদত অর্জুনকে পরিত্যাগ করিয়া ত্রিত হইয়া ক্রপদের রথ সমীপে প্রয়াণ করিলেন। তদনম্ভর অর্জ্জুন শিখণ্ডীকে সম্মু-খে করিয়া ক্রত বেগে ভীন্ন সমীপে অভিক্রত হই-লেন, ভাহার পর যুদ্ধ হইতে লাগিল। ভদন্তর আপনকার পক্ষ শূরগণ যুদ্ধে বেগশীল অর্জুনের সমীপে চীৎকার শব্দ হকারে ধাৰমান হইলেন, তাহা বেন অদ্ভুত্ব হইয়া উঠিল। হে জনাধিপ! বে প্রকার বায়ু আকাশে মেঘ হৃদ্দকে অপনীত করে, সেই প্রকার অর্জুন উপযুক্ত সময় পাইয়া আপন-কার পুত্র দিগের নানাবিধ সৈন্যদিগকে বিজাবিত করিলেন।

শিখণ্ডী ভরত পিতামহকে দেখিয়া অবাগ্রচিত্তে সত্তর হইয়া বছ বাণে তাঁহাকে সমাকীর্ণ করিলেন। ভীম তখন রথ স্বৰূপ অগ্নিগৃহে অবস্থিত, ধমুংস্বৰূপ শিখা সংযুক্ত, অসি, শক্তি ও গদা স্বৰ্ণ ইন্ধন সমন্বিত ও শর সমূহরূপ মহাত্মালা বিশিষ্ট অগ্নিরূপ | অন্য কোন মহারথ উহাঁর প্রতি অভিমুখীন হইতে হইয়া ক্ষজ্রিয়দিগকে দগ্ধ করিতেছিলেন। যেমন অগ্নি বায়ুর সহিত একত্রিত হইয়া তুঁণ রাশিতে বিচ-রণ করত অতিশয় অলিত হইয়া উঠে, সেইৰূপ ভীয় দিব্যাস্ত্র সকল উদীরণ করত প্রজ্বলিত হইলেন। মহারথ ভীম স্থবর্ণ পুঞ্জ সন্নতপর্ব্ব শাণিত শর নিচয়ে পাগুর পদামুগ সোমকদিগকে নিহত ও পাগুরদিগের খন্যান্য সৈন্যদিগকেও নিবারণ করিতেছিলেন। তিনি দিক্ বিদিক্ নিনাদিত করিয়া রখীগণকে রখ হইতে ও অশ্ব সকল আরোহীর সহিত নিপাতিত ক্রিতেছিলেন। তিনি রথ সকল মুগু তাল বনের ন্যায় করিতেছিলেন। সর্বে শস্ত্রধারি প্রবর ভীয় সেই রণে রথ, গজ ও অশ্ব সকল মনুষ্য হীন করি-তেছিলেন। সমুদায় সৈনাই তাঁহার অশনি স্বন সদৃশ জ্যাতল নিৰ্ষোষ প্ৰবণ করিয়া প্রকম্পিত হুইতেছিল। হে মন্ত্রজেশ্বর! আপনকার পিতার কার্শুক নির্মুক্ত ৰাণ সকল অমোঘ হইয়া পতিত হইতেছিল, তাহা याकामिर्गत क्वल भंतीत मार्क मश्मक रहेनाहिल না, ভেদ করিয়া প্রবিষ্ট হইতেছিল। হে নরনাথ! দেখিলাম, বেগবন্ত ঘোটক সংযুক্ত বছল রথ নির্মানুষা হইলে, তাহার অশ্ব সকল নিয়ন্তা বিরহে বায়ুবেগে ইতস্তত রথ সকল আকর্ষণ করিতে লাগিল। চোদ, কাশী ও কৰব দেশীয় চ্তুৰ্দশ সহস্ৰ সদংশব্ধ বিখ্যাত भूत महात्रथ, याशांपिरातत नकरनत्रे त्राथ स्वर्ग धक শোভিত ছিল, যাহারা সমরে অনিবর্ত্তী, তাহারা তমুত্যাগে ক্লভ-নিশ্চয় ও সংগ্রামে ব্যাদিতানন व्यक्षक जूना जीवारक श्रांश हरेवा तथ वाकि कुश्चरतत সহিত পরলোকে গমন করিল। সোমক দিগের মধ্যে এমত কেই মহারথ ছিল না, যে রণে ভীন্নকে পাইরা জীবিড থাকিতে প্রত্যাশা করে। জন সকল ভীছের পরাক্রম দেখিয়া তত্ত্ব সমস্ত ঘোধ গণ-কেই প্রেতরাক পুরে উপনীত মনে করিল। সেই नमद्र (४७-वार्न क्रक-नात्रधि बीत्र-भरवाह्य व्यक्तून ও অমিততেজা পাঞালরাজ-পুদ্র লিখণ্ডী ব্যতিরেকে

পারিলেন না।

অয়োদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত। ১১৩।

--

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! শিখণ্ডী রণে পুরুষ-প্রবর ভীয়কে প্রাপ্ত হইয়া শাণিত দশ ভল্লে তাঁহার ন্তন ধ্রের অভ্যন্তর সমাহত করিলেন। গঙ্গা-নন্দন ক্রোধ-প্রদীপ্ত চক্ষ্মারা কটাক্ষপাত করিয়া শিখণ্ডীকে যেন দগ্ধ করিয়াই নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। তিনি সর্ব্ব লোকের সাক্ষাতে যে শি-**খণ্ডীর স্ত্রীত্ব স্মরণ করিয়া তাঁহাকে সমাহত করি-**লেন না, তাহা শিথণ্ডী বুঝিতে পারিলেন না। হে মহারাজ! অর্জুন শিখণ্ডীকে বলিলেন, সত্ত্বর অভি-ক্রত হও, পিতামহকে বধ কর। হে বীর! তোমার আর কথা কি আছে, তুমি মহারণ ভীন্নকে সংহার কর। হে পুরুষব্যাঘ্র! আমি তোমার নিকট ইহা সত্য বলিতেছি যে, যুধিন্ঠির পক্ষ সৈন্য মধ্যে তোমা ব্যতিরেকে অন্য কাহাকেও এমত দেখিতে পাই না যে, এই সংগ্রামে ভীয়ের সহিত প্রতিযুদ্ধ করিতে সমর্থ হয়।

শিখণ্ডী অৰ্জুন কৰ্তৃক এই ৰূপ অভিহিত হইয়া ত্বরা সহকারে নানাবিধ শর নিচয়ে পিতামহকে পরিকীর্ণ করিলেন। আপনার পিতা মহারথ দেব-ত্ৰত শিখণ্ডি-নিক্ষিপ্ত সেই সকল বাণ গণ্য না করিয়া কুদ্ধ অর্জুনকেই সমরে সায়ক সমূহে নিবারিত করিতে লাগিলেন, এবং পাগুব পক্ষীয় সমস্ত সৈন্য-কে স্থতীক্ষ্ণ শর সমূহ দ্বারা পর লোকে প্রেরণ করিতে লাগিলেন। পাগুবেরাও মৃহৎ সৈন্যে সমার্ত হইয়া, যেমন মেঘ সমূহ দিবাকরকে আচ্ছাদিত করে, সেই ৰূপ, ভীন্নকে সমাচ্ছন্ন করিলেন। তিনি ভারতগণ কর্কুক.চতুর্দ্ধিকে পরির্ভ হইরা, অরণ্যে জলস্ত বহির ন্যায় খুরগণকে দক্ষ করিতে লাগিলেন। সেই ছিলে আপনকার পুত্র ছংশাসনের এই আশ্চর্য্য পৌরুষ অবলোকন করিলাম, যে তিনি অর্জুনের সহিত

যুদ্ধও করিলেন, এবং পিতামহকেও রক্ষা করিতে লাগিলেন। সমুদায় লোক আপনকার পুত্র মহাত্মা তুঃশাসনের সেই অদ্ভুত কর্মা দেখিয়া সম্ভুক্ত হইলেন। তিনি অতি তেজম্বী ৰূপে যে অৰ্জুন সহ পাণ্ডব দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন, তাঁহাকে পাগুবেরা নিবারণ করিতেও পারিলেন না। তিনি यहाथकूर्कत तथी फिशटक तथ हीन, महाथकूर्कत मानी मिश्रादक ज्या हीन ७ महाधमूर्कत महावन शकारताही দিগকে গজ বিহীন করিলেন। উহার। তীফ্র শর নিকরে নির্ভিন্ন হইয়া ধরাতলে নিপতিত হইতে লাগিল। অন্যান্য দন্তিগণ শর পীড়িত হইয়া নানা দিগে বিক্রত হইতে লাগিল। যেমন অগ্নি ইন্ধান প্রাপ্ত হইয়া প্রদীপ্ত শিখ ও উল্ব হইয়া প্রজ্বলিত হয়, সেই প্রকার আপনকার পুত্র ছংশাসন পাওব সেনা দধ্ম করত জ্বলিতে লাগিলেন। হে ভরত-नम्तः। (महे महा क्षमान कुः नामनदक शाखनितित মধ্যে ক্র-সারধি শ্বেতবাহন মহেক্র-তনয় ব্যতি-রেকে কোন মহারথ জয় করিতে কি তাঁহার প্রতি অভ্যুদ্গত হইতে কোন প্রকারে উৎসাহ করিতে नमर्थ रुहेरलन ना। रह ताबन्! रिष्ठे विजय नारम প্রসিদ্ধ অর্জুন সকল সৈন্যের সাক্ষাতে সমরে তাঁ-হাকে পরাজিত করিয়া ভীমের সম্মুখে অভিক্রত হইলেন। আপনকার পুত্র ছুঃশাসন পরাজিত হই-য়াও ভীয়ের বাছবল আশ্রয় করিয়া স্থপক্ষদিগকে পুনংপুন আশ্বাস প্রদান করিয়া মদোৎকট হইয়া অর্জুনের সহিত যুদ্ধ করত সমরে প্রদীপ্ত হইলেন। আর শিখণ্ডী দর্প বিষ তুলা ও অশনি সম স্পর্শ শর নিচরে পিতামহকেই বিদ্ধ করিতে থাকিলেন। কিন্তু শিখণ্ডি-নিক্ষিপ্ত সেই সকল বাব আপনকার পিতার পীড়াকর হইল না। জিনি হাসিতে হাসিতে শিখন্তীর বাণ গ্রহণ করিতে লাগিলেন। যে প্রকার উফার্ড মনুষ্য জলধারা গ্রহণ করিতে ইচ্ছা করে, তাহার ন্যায় গঙ্গানন্দন ভীম শিখণ্ডীর বাণ গ্রহণ করিতে থাকিলেন। হে মহারাজ। ক্ষত্রিয়

সকল সমরে ভীন্নকে ভীন্ন ৰূপ হইয়া মহান্থা পাণ্ডৰ দিগের সৈন্য দক্ষ করিতেই দেখিতে লাগিলেন।

जननत्रत वार्यनकात शूख ममूनाम रेमनानिभरक বলিলেন, তোমরা সংগ্রামে অর্জুনকে সর্বতোভাবে আক্রমণ কর। ধর্মজ্ঞ ভীন্ন সমরে ভোমাদিগের সকলকে রক্ষা করিবেন। অতএব তোমরা মৃত্যু ভর পরিত্যাগ করিয়া পাগুবদিগের সহিত প্রতিযুদ্ধ কর। পিতামহ ভীম সমরে সমুদায় ধার্তরাষ্ট্রদিগের শর্মা বর্মা করত মহাহেম তালধজে শোভমান হইরা অবস্থান করিতেছেন। অমরগণ মিলিত হইয়াও মহাত্মা ভীম্মকে রণে পরাস্ত করিতে সমর্থ হন না, ইহাতে মহাবল পাগুবেরা মনুষ্য হইয়া উহাঁর কি করিতে পারিবে ? হে যোধগণ! তোমরা সংযুগে অর্জুনকে দেখিয়া কি হেতু পলায়ন করি-তেছ? ত্যোমরা সকলেই ক্ষজির, অতএব সর্ব প্রকারে যত্নবান্ হও, আমি আরু রণে যত্নপর ও তো নাদিগের সহিত একত্রিত হইয়া অর্জুনের সহিত সংগ্রাম করিব।

হে ভূপতে! তোমার ধমুর্দ্ধর পুজের ঐ বাক্য व्यवं क्रिया विष्कृ, क्रिक्न, मारमञ्जक, नियाम, स्मी-বীর, বাহ্লিক, দরদ, প্রতীচ্য, উদীচ্য, মালব, অভী-্বাহ, শুরসেন, শিবি, বশাভি, শাল্ল, শক্, ত্রিগর্ভ. অম্বষ্ঠ ও কেকয় দেশীয় বীর্যাশালী মহাবলাক্রান্ত সমুদার যোধগণ, যেমন প্রজ্পণ আগ্নিতে প্রতিত হয়, তাহার ন্যায় অর্জুনের নিকটে আপতিত হইল। হে মহারাজ! মহাবল ধনঞ্জয় সেই সকল মহারথ দিগকে সমন্ত সৈনোর সহিত সমাগত দেখিয়া দি-ব্যান্ত সকল চিন্তা পূর্বকে সন্ধান করিয়া, সেই সকল মহাবেগশীল অন্ত সমূহ হইতে প্রান্তভূতি শর নিকর প্রতাপে, যেমন অগ্নি পতঙ্গ সমূহকে দগ্ধ করে, সেই প্রকার আশু তাহাদিগকে দগ্ধ করিয়া কেলিলেন। সেই দৃঢ়ধন্বা যথন সহস্ৰ সহস্ৰ বাণ দিব্যাক্ৰ দারু৷ ফ**জন করিতে লাগিলেন, তথন আকাশে** তাঁহার গাঙীব দীপ্যমান দৃষ্ট ছইতে লাগিল। হে মহারাজ!

সেই সকল ক্ষজ্রিরগণ শর পীড়িও হইলে তাঁহাদিগের মহাধক সকল ইতন্তত বিকীর্ণ হইয়া গেল,
তাঁহারা সকলে একজিত হইয়াও কপিধক অর্জুনের
অভিমুখীন হইতে পারিলেন না। রখী গণ রথ
ধকের সহিত, অশ্বারোহী অশ্বের সহিত এবং গজারোহী গজের সহিত, কিরীটির শরে তাড়িত হইয়া
পতিত হইতে লাগিল। অনন্তর অর্জুন-কর নির্মুক্ত
শরে চতুর্দিকে রাজগণের বছধা পলায়মান সৈন্য
দারা পৃথিবী সমার্তা হইল।

হে মহারাজ! অর্জুন সেই সকল সৈন্য বিভাবিত করিয়া ছুঃশাসনের প্রতি বছল শায়ক নিক্ষেপ করিলেন। সেই সকল বাণ আপনকার পুত্র ছুংশা-সনকে ভেদ করিয়া অধােমুখ হইয়া, যেমন পলগগণ বল্মীকে প্রবেশ করে, তাহার ন্যায় ধরণীতে প্রবেশ করিল। তৎপরে তিনি ছুঃশাসনের অংখ সকল নি-হত করিয়া সার্থিকে নিপাতিত করিলেন। তৎ পরে বিবিংশতিকে বিংশতি বাণে রথ হীন করিয়া নতপর্ব্ব পঞ্চ বাণে তাঁহাকে সমাহত করিলেন। তদনন্তর কুন্তীনন্দন শ্বেতবাহন ক্বপ, শল্য ও বিকর্ণ-क वह भाग्रत्क विक्ष कवित्रा जाहामिशत्क तथ विहीन क्रितलन। क्रभ, भला, छूःभामन, विकर्ग ও विविश-শতি, এই পাঁচ জন সব্যসাচী কর্তৃক সমরে পরা-জিত ও রথ বিহীন হ্ইয়া পলায়ন করিলেন। হে ভরতপ্রবর! পূর্বাক্ল সময়ে অর্জুন সেই মহারথ দিগকে পরাজিত করিয়া ধুম রহিত পাবকের নাায় প্রকাশ পাইতে লাগিলেন, এবং রশ্মিবান্ ভাক্ষর যেমন সর্বত্ত রশ্মি বিকিরণ করেন, তাহার ন্যায় ভিনি শর বর্ষণ করিয়া অন্যান্য ক্ষজ্রিয় দিগকেও নিপাতিত করিলেন। তিনি মহারথ দিগকে শর বর্ষণে পরাত্মধ করিয়া সংগ্রাম ক্ষেত্রে কুরু পাণ্ডব ইসন্য মধ্যে শোণিত ৰূপ জলের মদী প্রবর্ত্তিত করি-লেন। গজ, অশ্ব ও রথ সমূহ রথীগণ কর্ত্তক বছধা निरुष, इस मकल नाधभाग कर्ड्क खंदर जात्नक अध्रेष পদাতিগণ কর্তৃক নিহত হইল। অনেক গজ, অশ্ব ও

तथरगांधी मिरभत गतीत ७ मंडक मधा ऋरण रहिन হইয়া সমস্ত দিকেই পতিত হইল। হে নৃপতে! রুধিরপক্ষে পোথিত অনেক হন্তী এবং রথনেমিতে কর্তিত, পতিত ও পাত্যমান কুগুলাঙ্গদধারী মহারথ রাজপুত্রগণে রণ ক্ষেত্র সমাচ্ছন্ন হইল। পদাতি ও অশ্ব সহিত সাদী সকল চতুর্দ্দিকে ধাবমান হইল। च्यातक शक्र वाशी ७ तथर वाशी मकन क्वूर्किटक नि-পতিত হইল এবং রথ সকলের চক্র, যুগ ও ধজ ভগ্ন হইল; ঐ সকল রথ ভূমিতলে ইতন্তত বিকীর্ণ হইয়া পড়িল। যে প্রকার শরৎ কালে রক্তবর্ণ মেঘে আ-কাশ সমাচ্ছন্ন হয়, সেই প্রকার রণ স্থল গজ, অশ্ব ও রথি সমুহের রুধিরে সংসিক্ত ও সমাচ্ছল্ল হুইরা প্রকাশ পাইতে লাগিল। কুরুর, কাক, গৃধু, রুক. গোমায়ু ও অন্যান্য পশু পক্ষী গণ আপ্নাদিগের ভক্ষ্য প্রাপ্ত হইয়া বিক্নতভাবে শব্দ করিতে লাগিল। রাক্ষস গণ ও অন্যান্য প্রাণী সকলকে নিনাদ করিতে **(मथा शिवा) वाशू, मकन मिरकरे वह श्रकारत वहिर**ङ লাগিল। কাঞ্চনময় দাম ও মহামূল্য পতাকা সকল সহসা বায়ু প্রেরিত হইয়া উড্ডীয়মান দুফ হইতে লাগিল। শত শত সহস্ৰ সহস্ৰ শ্বেত ছত্ৰ ও ধ্জ বিশিউ মহৎ রথ ইতন্তত বিকীর্ণ দৃষ্ট হইল। পতা-কার সহিত অনেক মাতঞ্গর প্রীড়িত হইয়া দিগ্ দিগন্তর গমন করিতে লাগিল। হে মনুষ্টেন ! অনেক ক্ষজ্রিয়কে গদা, শক্তি ও ধনুক ধারণ করি-রাই ধরণীতলে পতিত থাকিতে দেখা গেল।

হে মহারাজ! তদনন্তর ভীয় দিবা অস্ত্র প্রাচ্নভূতি করিয়া সর্ব্ব ধন্বির সাক্ষাতে অর্জুনের নিকট ধাবমান হইলেন। বন্ধসন্নাহ শিখণ্ডী তাঁহাকে আগমন করিতে দেখিয়া তাঁহার প্রতি অভিক্রত হইলেন ।
ভীয় শিখণ্ডীর নিক্ষিপ্ত অগ্নি তুলা বাণ সকল প্রতিগ্রহ করিতে লাগিলেন। এই সময়ে কুন্তীপুত্র খেতবাহন পিতামহকে মোহিত করিয়া আপনকার সৈন্য
দিগকে নিহত ক্রিতে থাকিলেন।

চতুৰ্দশা**ধিক ^{শি}শত**তম অধ্যায় সমাপ্ত । ১১৪

সঞ্জয় কহিলেন, হে ভারত! ভূয়িষ্ঠ সৈন্য সমান
কপে বৃাহিত হইলেও সকলেই সমরে অনিবর্ত্তী
হইয়া ব্রজলোক গমনেই তৎপর হইল। সক্ল যুদ্ধ
সমুপন্থিত হইল, সৈন্যেরা সমযোগ্য সৈন্যের সহিত
যুদ্ধে সংসক্ত হইল না। রিধির সহিত রিধির, অখারোহীর সহিত অখারোহীর, গজারোহীর সহিত
গজারোহী এবং পদাতির সহিত পদাতির যুদ্ধ হইল
না। সকলেই উন্মন্তের ন্যায় হইয়া যুদ্ধ করিতে
লাগিল। উত্রয় পক্ষীয় সেনার অতি ভয়ানক বিপর্যায় সংগ্রাম হইতে লাগিল। সেই প্রাণিক্ষয়
জমক সংগ্রামে মমুষ্য ও হন্তী সকল বিকীর্ণ হইয়া
পিড়লে নর নাগে বিশেষ রহিল না, সকলেই সকলকে হতাহত করিতে লাগিল।

अप्तिक भवा, क्रभ, विज्ञासन, घुःभामन, ও विकर्ग, এই পাঁচ জন বোদ্ধা স্বস্থ ভাস্বর রথে আরোহণ করিয়া পাগুরী সেনা প্রকম্পিত করিতে লাগিলেন। তাহারা ঐ পাঁচ মহাত্মা কর্তৃক বধামান হইয়া, যেমন জলোপরি নৌকা বায়ু কর্তৃক ভাষ্যমাণা হয়, সেই প্রকার বহুধা উদ্ভামিত হইতে লাগিল। যে প্রকার শিশির কাল গো গণের মর্ম ছেদ করে, সেই প্রকার ভীন্নও পাণ্ডব পক্ষ সৈন্যদিগের মর্ম্ম ক্লন্তন করিতে লাগিলেন। ওদিগে মহাদ্বা অর্জুনও আপনকার সৈ-ন্যের নব মেঘ সদৃশ গব্দ সকল নিপাতিত এবং রথ যুখপতি সকলকে মর্দ্দন করিতে লাগিলেন। বছল মহাহতী স্থানে স্থানে সহস্র সহস্র নারাচ ও শর দারা তাড্যমান হইয়া আর্ডনাদ করত ধরাশায়ী रुरेत। অনেক মহাত্মা নিহত रुरेत्तन; छाराहित्यत জাভরণ ভূষিত দেহও কুওল শোভিত মন্তকে রণস্থল সমাজ্য হইল। সেই বীরক্ষ জনক মহা সংগ্রামে ভীম ও ধনঞ্জর উভরেই বিক্রম প্রকাশ করিতে थाकिल, जाभनकात मिरे नकेन भूटकता ममल मि-ন্যকে পুরোবর্ত্তী করিয়া ভীমের সমীপবর্ত্তী হইলেন, এবং স্বর্গকে পরমাশ্রের জ্ঞান করিছা, মরণে মনোনি-বেল করত পাওবদিগের প্রতি অর্জুন্দাত হইলেন।

হে নরাধিপ! শৌর্যাশালী পাগুবেরাও আপন-কার পুজের পূর্ব্বদন্ত বিবিধ বছ ক্লেশ স্মরণ করত ভয় পরিত্যাগ পূর্বক ব্রহ্মলোক গমনে ক্নত নিশ্চয় ও ক্রোধের বশতাপন্ন হইয়া হর্ষ সহকারে যুদ্ধ করি-তে লাগিলেন। সেনাপতি মহারথ ধৃউচ্চান্ন রণস্থলে সেনাগণকে কহিলেন, হে সোমক গণ! ভোমরা সঞ্জরগণের সহিত, গঞ্চীনন্দনকে আক্রমণ কর। সোমক ও স্ঞায় গণ সেনাপতির বাক্য অবণ করিয়া চতুর্দ্দিকে শস্ত্র বর্ষণ করিতে করিতে ভীগ্নের প্রতি অভিক্রত হইল। হেরাজন্! আপনার পিতা শাস্তমু-পুত্র তাহাদিগের কর্ভৃক বধ্যমান হইয়া ক্রোধাবিফ চিত্তে তাহাদিগের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। ় সেই কীর্ত্তিমান্ ভীন্মকে পূর্ব্বে ধীমান্ পরশুরাম যে পর সৈনাবিনাশিনী অন্ত্র-শিক্ষা করাইয়াছি-লেন, তিনি•সেই অস্ত্ৰ-শিক্ষা বলে প্ৰতিদিন পাণ্ডব দিগের দশ সহস্র করিয়া সৈন্য ক্ষয় করিয়াছি-লেন। কিন্তু দশম দিবসে সেই বীর শত্রুহন্তা ভীন্ন একাকী মৎস্য ও পাঞ্চাল দেশীয় অসংখ্য গজ ও অশ্ব নিহত করিরা সাত জন মহারথকে নিহত করিলেন। এবং পুনর্বার পঞ্চ সহস্র রধী, চতুর্দশ महञ्ज मसूरा, वऐ महञ्ज पखी ও অযুত অশ্ব নিহত क्तिरलन। उपनस्त्र ममस ताकामिरभन्न वाहिनी का-ভিতা করিয়া বিরাটের ঞ্রিয় ভাতা শতানীককে নিপাতিত করিলেন। প্রতাপবান্ ভীন্ন সমরে শতা-নীককে নিহত করিয়া ভল্ল সমূহ দারা সহস্র রাজাকে তাড়না করিলেন। পাগুর পক্ষ যে সকল ক্ষল্রিয়ের। ধনঞ্জের অমুগামী হইয়াছিলেন, তাঁহারা ভীয়কে সমরে প্রাপ্ত হইয়া ষমসাদনে গমন করিলেন। ভীয় এই ৰূপে দশ দিক্ হইতে শরকালে পাণ্ডৰ সৈন্য দিগকে সমাহত করিয়া সৈন্যের অগ্রভাগে অবস্থিত হইলেন। তিনি দশম বাসরে অতি মহৎ কর্ম করিয়া শরাসন হস্তে উভয় সেনার মধ্য ভাগে যখন অবস্থিত হইলেন, তখন, বেমন গ্রীয় কালে মধ্যাহু

কালীন অম্বর্থ তপত্ত ভাক্তরকে নিরীক্ষণ করিতে

পারা যার না, সেই ৰূপ কোন ক্ষক্রিয়েরাই তাঁহাকে ।
নিরীক্ষণ করিতে পারিলেন না। হে ভরত-নদ্দন!
যে প্রকার দেবরাজ ইন্দ্র সমরে দৈত্য সেনাদিগকে
তাপিত করিয়াছিলেন, সেই প্রকার তিনি পাওবীয়
সৈনা দিগকে তাপিত করিতে লাগিলেন।

দেবকী-পুত্র মধুস্থান তাঁহাকে পরাক্রান্ত দেখিয়া প্রীত চিত্তে ধনঞ্জয়কে কহিলৈন, হে ধনঞ্জয়! ঐ ভীয় উভয় সেনার অভান্তরে অবস্থিতি করিতেছেন, বল-পুর্বাক উহাঁকে নিহত করিয়া বিজয় লাভ কর। যে-খানে উনি ঐ সকল সৈনা দিগকে নির্ভিন্ন করিতে-ছেন, সেই স্থলে বল বিক্রম প্রকাশ করিয়া উহাঁকে সংস্তম্ভিত কর। হে বিভো! ভোমা বাতিরেকে অন্য কেহ ভীয়ের বাণ সকল সহু করিতে উৎসাহ করে না।

ट्ट नत्र शाल! कि शिक्षक धनक्षत्र वास्त्र कि क् সমাদিউ হইয়া তৎক্ষণাৎ শর সমূহ দ্বারা ভীন্নকে ধঙ্গ, রথ ও অশ্থের সহিত সমাত্ত করিলেন। কুরু-প্রবর দিগের প্রধান ভীয়া, অর্জুন-নিক্ষিপ্ত শর সমূহ শর সমূহ দ্বারাই বছধা বিদারণ করিতে লাগিলেন। তদনস্তর পাঞ্চালরাজ, বীর্যাবান ধৃষ্টকেতু, পাণ্ডু-পু্ত্র जीयरमन, পृषछ-नम्मन धृष्ठेष्ठाम्न, नकूल, महरम्ब, চেকিতান, কৈকেয়াধিপতি পঞ্জাতা, মহাবাছ সাত্যকি, অভিমন্ত্রা, ঘটোৎকচ, দ্রৌপদী-নন্দনেরা পঞ্চ ভ্রাতা, শিখণ্ডী, বীর্যাবান্ কুন্তিভোজ, স্থশর্মা, বিরাট এবং পাগুর পক্ষীয় মহাবলপরাক্রান্ত যোধ গণ ও অন্যান্য অনেকে ভীম্মের বাণে পীড়িত হইয়া শোক সাগরে নিময় হইয়াছিলেন, অর্জুন আসিয়া তাঁহাদিগকে উদ্ধৃত করিলেন। তদনন্তর শিখণ্ডী কিরীটা কর্ত্তক অভিরক্ষিত হইরা পরমায়ুধ গ্রহণ-পূর্বক ভীমের প্রতি বেগে অভিদ্রুত হইলেন। রণ বিভাগবেক্তা অপরাজিত অর্জুন ভীগ্নের অনুগামী দিগকে নিহত করিয়া ভীয়ের প্রতি অভিক্রত ছইলেন। সাভাকি, চেকিডান, ধৃউছান, বিরাট, क्रुशन, मकून ७ जरूराय, जर्जून कर्ड्क व्रक्षिछ

হইয়া ভীষের প্রতি অভিক্রত হইলেন। অভি-মন্ত্রা ও ক্রৌপদীর পঞ্চ পুত্র মহান্ত্র সকল সমুদ্যত করিয়া ভীয়ের প্রতি অভিক্রত হইলেন। অনিবর্ত্তী ও দৃঢ়ধন্বা এই সকল মহারথ, ভীমের প্রতি क्रजनक भन्न ममूह वस्र ध्वकारत निरक्ष्म कन्निरनन। অদীনাত্মা ভীম সেই সকল পার্থিব শ্রেষ্ঠ গণের নি-ক্ষিপ্ত বাণ নিবারিত করিয়া পাণ্ডব সৈন্য বিলোড়ন করিতে লাগিলেন, এবং যেন ক্রীড়া করিতে করিতে তাঁহাদিগের নিক্ষিপ্ত শর সকল নিহত করিতে লাগি-লেন। তিনি মুছ মুছ হাস্য-পূর্ব্বক শিখণ্ডীর স্ত্রীত্ব মনে করিয়া ভাঁহার প্রতি বাণ সন্ধান করিলেন না। সেই মহারথ দ্রুপদ সৈন্যের সপ্ত রখীকে নিহত করাতে, ক্ষণ কাল মধ্যে মৎস্যা, পাঞ্চাল ও চেদি দেশীয় যোদ্ধাগণ কিল কিলা শব্দে ভাঁহার প্রতি ধাবমান হইল। হে পরস্তপ! তাহারা নর, অখ, বারণ ও রথ সমূহ দারা, যে প্রকার মেদমগুলী দিবাকরকে সমাচ্চন্ন করে, তাহার ন্যায়, রিপুতাপ-প্রস্ক এক মাত্র ভীয়কে সমাচ্ছন্ন করিল। অনন্তর তাহাদিকৈর সহিত ভীগের দেবাস্থর সদৃশ সেই যুক্ক সময়ে কিরীটী শিখণ্ডীকে অত্যে রাখিয়া ভীমকে শর বিদ্ধ করিতে লাগিলেন।

পঞ্চ দশাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত 🖔 🗀

মঞ্জয় কহিলেন, হে মহারাজ! পাগুবেরা এই কাপে শিখণ্ডীকে অগ্রবন্তী করিয়া ভীয়কে পরি-বেইন পূর্বক চতুর্দিক্ হইতে বিন্ধ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা স্কঞ্জয়গণের সহিত একত্রিত হইয়া স্থারা শতস্মী, পাউশা, পরশ্বধ, মুদার, মুবল, প্রাস, কেপণীয়, কনকপুথা শর, শক্তি, ভোমর, কম্পন, নারাচ, বৎসদস্ত ও ভুরুণ্ডী, এই সকল অস্ত্র দ্বারা ভীয়ক্রে সর্ব্য প্রকারে তাড়িত করিতে লাগিলেন। এ সকল অস্ত্রাঘাতে তাঁহার তন্ত্রাণ বিশীণ্ ও মর্মা স্থান সকল নির্ভিন্ন হইতে লাগিলা। তিনি তাহাতে সমাহত হইয়াও ব্যথিত হইলেন নাশ

প্ৰত্যুত তখন প্ৰলয় কালীন অগ্নি স্বৰূপ হইয়া বিচরণ করিতে লাগিলেন। শর, কার্ম্মক ও অন্যান্য নহাস্ত্র সকলের দীপ্তি উহার প্রকাশ, অস্ত্র সকলের প্রসরণ উহার সধা বায়ু, রথের নেমি শব্দ উহার উত্তাপ, বিচিত্র ধন্তুক উহার মহাশিখা এবং বীর-দেহ উহার ইন্ধান হইল। বিপক্ষের প্রতি এতাদৃশ अधि श्वत्र श्रीष कथन वा त्मरे मकल नदत्र पिरांत র্থ সমূহের মধ্য হইতে নিঃসর্ণ, ক্থন বা মধ্য ভাগে বিচরণ করিতে লাগিলেন। অনম্বর তিনি পাঞ্চালরাজ ও চেদিরাজকে গণ্য না করিয়া পাণ্ডব দৈন্য মধ্যে প্রবেশ করিলেন। পরে তিনি সাত্যকি, তীমসেন, ধনঞ্জয়, ক্রপদ, বিরাট ও ধৃঊচ্চ্যুত্নকে ভীষণ শব্দ ও মহাবেগ-সম্পন্ন মর্মা ও আবরণ ভেদী শা-ণিত উত্তম শর নিচয়ে প্রবিদ্ধ করিতে লাগিলেন। সেই ছয় জন মহারথ তাঁহার শাণিত বাণ সকল निवांत्रिष्ठ कतिया वल-পূर्व्यक मन मन वार्रा छाहारक পীড়িত করিলেন। মহারথ শিখণ্ডী যে সকল শিলা শার্ণিত স্বর্ণ-পুষ্ম বাণ তাঁহার প্রতি মোচন করিলেন, তাহা তাঁহার শরীর মধ্যে আশু প্রবেশ করিল। শিখণ্ডি-পুরোবর্তী কিরীটা সংরক্ষ ও ভীমের প্রতি ধাক্ষান হইয়া তাঁহার ধনুক ছেদন করিয়া কেলি-লেন 🖟

দোণ, কৃতবর্মা, সিন্ধুপতি জয়দ্রথ, ভ্রিশ্রবা,
শল, শল্য ও ভগদত্ত, এই সাত জন মহারথ ভীমের
বন্ধশ্চেদ সহ্ না করিয়া পরম কুদ্ধ হইয়া উত্তম
দিব্যান্ত্র সকল প্রকাশিত করত কিরীটীর প্রতি দ্রুত
বেগে আপতিত হইলেন, এবং কিরীটীকে জ্ব্র
সমুহে সমাচ্ছাদিত করিলেন। যেমন প্রলয় কালে
উচ্ছলিত সমুদ্রের শব্দ শ্রুত হয়, তাঁহাদিগের অর্জুন
সমীপে আপতন কালে সেই বাপ শব্দ শ্রুত হইতে
লাগিল। অর্জুনের রথ সমীপে 'নিহুত কর, আনীত কর, বিদ্ধা কর, ছেদন কর' এই বাপ ভূমুল
শব্দ হইতে লাগিল। হে ভরত-প্রবর! সেই ভূমুল
শব্দ শ্রবণ করিয়া পাশ্তব পক্ষ মহারথ সাত্যকি,

ভীমদেন, ধৃষ্টপ্ৰায়, বিরাট, জপদ, রাক্ষস ঘটোৎকচ ও অভিমন্থা ক্রোধান্ধ ও ত্বরিত হইয়া বিচিত্র কার্ম্মুক ধারণ-পূর্বক অর্জুনকে রক্ষা করিবার মানসে ধাবমান হইলেন। যে ৰূপ দেবগণের সহিত দানব-গণের যুদ্ধ হইয়াছিল, সেই ৰূপ তাঁহাদিগের তুমুল লোমহর্ষণ সংগ্রাম হইতে লাগিল।

এ দিকে কিরীটা কর্তৃক রক্ষিত রথি-প্রবর শিখণ্ডী ছিন্নধন্ব। ভীন্ন ও তাঁহার সার্থিকে দশ দশ বাণে বিদ্ধা করিয়া এক বাণে তাঁহার রথ ধক ছেদন করিয়া ফেলিলেন। গঙ্গা-নন্দন অন্য এক বেগবন্তর ধমুক গ্রহণ করিলেন, অর্জুন তাহাও শাণিত তিন বাণে ছিন্ন করিয়া কেলিলেন। ভীন্ন যত বার ধমুক গ্রহণ করিলেন, তত বারই শত্রুতাপন সব্যসাচী কুন্ধ হইয়া ভাহা ছেদন করিয়া কেলিলেন। এই ৰূপে তিনি বারম্বার ছিন্নধয়া হইলে, আর ধনুক গ্রহণ না করিয়া স্বন্ধ লেহন করত গিরি বিদারণ ক্ষম এক শক্তি বল-পূর্বেক গ্রহণ করিয়া ক্রোধ সূহকারে অর্জু-নের রথোপরি নিক্ষেপ করিলেন। হে ভরতভাষ্ঠ! পাও-নন্দন স্থলন্ত বজ্ঞ তুলা সেই শক্তিকে আপ-তিত হইতে দেখিয়া পাঁচ টি শাণিত ভল্ল গ্ৰহণ করিলেন। অনন্তর সেই পাঁচ ভল্ল দারা তাঁহার বাহু নিক্ষিপ্ত সেই শক্তিকে পাঁচ খণ্ড করিয়া ছেদন করিলেন। যে প্রকার বিছাৎু মেঘর্নদ হইতে পরি-ভ্রম্ট হইয়া বিচ্ছিন্ন হয়, সেই প্রকার সেই শক্তি, मःकुक कितीणि कर्ज्**क ছিন্ন হ**ইয়া পতিত হইল।

পরপুরঞ্জয় ভীয় শক্তি অত্র ছিয় দেখিয়া ক্রোধ-সমন্বিত হইয়াঁ চিন্তা করিলেন, যদি মহাবল জনা-র্দান পাণ্ডব দিগের রক্ষাকর্তা না হইডেন, তাহা হইলে আমি এক ধনুক লইয়াই উহাদিপের সকলকে নিহত করিতে পারিতাম। অপিচ পাণ্ডবদিগের অব-ধাতা এবং শিখণ্ডীর জীভাব, এই ছুই কারণে আমি পাণ্ডব দিগের সহিত যুদ্ধ করিব না। পূর্ব্ধ কালে আমার পিতা কালীকে বিবাহ করিবার সময়ে আ-মার প্রতি সম্ভূক্ত হইয়া আমাকে ইচ্ছামরণ বর निशाहित्नन, जामि हेच्छा ना क्तित्न त्रत्य जामात মরণ স্ট্রাবনা নাই, অতএব এই সময়ে আমার মৃত্যু ইচ্ছা করাই কর্ডব্য এই আমার মৃত্যুর উপযুক্ত সময়। অমিত-তেজা ভীম্মের এই অভিপ্রায় আকা-শস্থ ঋষিগণ ও বস্থুগণ জ্ঞাত হইয়া তাঁহাকে কহি-লেন, বৎস! তুমি যাহা ছিব্ন করিলে, তাহা আমা-দিগেরও প্রিয়, হে মহাধনুর্দার! তুমি তাহাই কর,— যুদ্ধে নির্ভ হও। তাঁহাদিগের ঐ বাকোর সমাপ্তি হইলে জলকণা সমন্বিত শিব-জনক সুগন্ধি বায়ু অনু-লোম ক্রমে প্রাত্নভূত, দেবগণের মহা ছুন্ছুভি ধনি এবং ভীমের উপর পুষ্পর্ফি হইল। হে নৃপ! তাঁহা-দিগের সেই বাকা মহাবাছ ভীন্ন ব্যতিরেকে অন্য কেহ শুনিতে পাইল না; কিন্তু আমি মুনি-প্রদত্ত বর প্রভাব হেতু শুনিতে পাইলাম। হে নরনাথ! দর্ব লোক-প্রিয় ভীম্ম রথ হইতে পড়্বিত হইবেন বলিয়া দেবগণের অন্তঃকরণে মহা ছুংখ সঞ্চার रुरेन।

মহাযশা শান্তনু-নন্দন ভীম দেবগণের ঐ বাক্য অবণ করিয়া সর্বাবরণ ভেদী শাণিত শর সমূহে নির্ভিন্ন হইয়াও অর্জুনের প্রতি আক্রমণ করি-লেন না। শিখণ্ডী ক্রোধাবিফ চিত্ত হইয়া ভীমের বক্ষংস্থলে শাণিত নয় শর আহত করিলেন। যে প্রকার ভূকম্প হইলে অচল অচল-ভাবেই ধাকে, সেই ৰূপ ভীম শিখণ্ডী কৰ্তৃক অভিহত হইয়া অচল রহিলেন। অনন্তর অর্জুন হাস্য-পূর্ব্বক গাণ্ডীব বি-ক্ষেপ করত গঙ্গানন্দনের প্রতি পঞ্চ বিংশতি ক্ষুদ্রক বাণ অর্পণ করিলেন। পুনর্বার তিনি সংকুদ্ধ ও সত্ত্বর হইয়া ভীয়ের সর্ব্ব গাতে সর্ব্ব সর্প্র স্থানে বাণ বেধ করিলেন। সভাপরাক্রম মহারথ ভীয় এই ৰূপ অন্যান্য কর্ত্ব সহস্র সহস্র বার গঢ় বিদ্ধ হইয়া তाहां निगदक आरु विक क्रिट्ड नागितन। এवः তাহাদিগের বিমুক্ত শর সকল সমতপূর্ব শর সমূহ षात्रा समान करन निवातन कतिए नानिएनन। महा-त्रथ निश्वे य नकन निना नाविक वर्ग-शृच यूक

বাণ তাঁহার প্রতি নিক্ষেপ করিলেন, তাহা তাঁহার পাড়াকর হইল না। অনম্ভর কিরীটা সংকুদ্ধ হইয়া শিখণ্ডীকে অগ্রে করিয়া ভীয়ের অভিমুখীন হইলেন, এবং তাঁহার ধনুক ছেদন করিয়া কেলিলেন। তংপরে নয় শরে তাঁহাকে বিদ্ধা করিয়া এক শরে তাঁহার সারিকর রথ ধল ছেদন পূর্বক দশ শরে তাঁহার সারিধিকে প্রকল্পিত করিলেন। গঙ্গানন্দন বলবত্তর অন্য এক ধনুক গ্রহণ করিলে, তাহাও অর্জুন তিন খণ্ড করিয়া ছেদন করিয়া কেলিলেন। এই কপে নিমেষার্দ্ধ মধ্যে ভীয় যত ধনুক গ্রহণ করেন, অর্জুন তৎক্ষণাৎ ছেদন করেন, এই কপে তাঁহার বছ ধনুক ছেদন করিলেন। তদনন্তর শান্তন্ত্বপুত্র, অর্জুনের প্রতি যুদ্ধোদ্যত হইলেন না, পরস্ত অর্জুন পঞ্চ বিংশতি ক্ষুদ্রকান্ত্র তাঁহার প্রতি নিক্ষেপ করিলেন।

তথন সেই মহাধনুর্দ্ধর ভীন্ন শর নিকরৈ অতি विक रहेशा कुः भामनदक विलिद्यन, दह वीत ! পा खव দিগের মহারথ ঐ অর্জুন সমরে ক্রোধাবিষ্ট হুইয়া বহু সহস্র বাণে আমাকে সমাহত করিতেছেন। বক্স-ধারী ইন্দ্রও সমরে উহাঁকে পরাক্তর করিতে পারেন না, এবং দেব, দানব ও রাক্ষস সমস্ত একত্রিত হইয়া আমাকেও সমরে পরাজিক করিতে সমর্থ হন না, অতএব মনুষ্যেরা মহারথ হইলেও আমার**ঁকি** করিবে ? এই ৰূপে ভীয় ছুঃশাসনের সহিত কথেপে-কথন করিতেছেন, ঐ সময়ে অর্জ্জুন শিশ্বগ্রীকে অগ্রে রাথিয়া শাণিত শর সমূহে ভীন্নকে বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। অনন্তর ভীম গাণ্ডীবধয়া অর্জ্জুনের শা-ণিত শরে গাঢ় বিদ্ধ হইয়া পুনর্বার হাস্যমুখে कुः नामनदक विलितन, अहे मकल वान धातावाही ৰূপে সমাগত হইয়া বক্সাশনির ন্যায় আমার গাতে नग्न इटेरजर्ह, हेरा चर्ड्यूनरे निस्मिन क्रिरिजर्हन, শিখন্তীর নিক্তিপ্ত নহে। এই সকল বাণ আমার দুঢ়াবরণ ভেদ করিয়া মর্ম্ম ছেদ করিতেছে, এবং মুষলের ন্যায় আমাকে সমাহত করিতেছে, ইহা শিখণ্ডীর নিক্ষিপ্ত নহে। এই সরুল বাণ বক্ষান্ত

স্ম স্পর্শ ও বজ্ঞ বেগের ন্যায় ছুংস্ফ্ হইয়া আ্মার প্রা। অর্দিত করিতেছে, ইহা শিখণ্ডীর নিক্ষিপ্ত নহে। গদা ও পরিঘ সম সংস্পর্ম এই সকল বাণ ব্মস্তুতগণের ন্যায় আমার গাত্রে নিহিত হইয়া যেন আমার প্রাণ বিনাশ করিতেছে, ইহা শিখণ্ডীর বাণ नदर। এই সকল বাণ লেলিহান বিষোল্ণ ভুজগের ন্যায় আমার মর্ম স্থান সকলের মধ্যে প্রবেশ করি-ভেছে, ইহা শিখণ্ডীর বাণ নহে। যে প্রকার মাঘ মাসে গো সকলের মর্ম্ম ক্লন্তন হয়, সেই প্রকার এই সকল বাণ আমার শরীর কর্ত্তন করিতেছে, অতএব এই সকল বাণ অর্জুনই নিক্ষেপ করিতেছেন, শি-খণ্ডীর নিক্ষিপ্ত নহে। কপিধজ গাণ্ডীবধন্বা বীর কিষ্ণু ব্যতীত অন্যান্য সমুদায় ফাল্রিয়গণ একত্রিত হইয়াও যুদ্ধে আমার ছ্ঃখোৎপাদন করিতে পারে না। হে'ভারত! শান্তরূপুত্র এই ৰূপ কথা বলিতে ৰলিতে যেন অৰ্জুনকে দগ্ধ করিতে ইচ্ছু হইয়া তাঁছার প্রতি এক শক্তি নিক্ষেপ করিলেন। অনন্তর অর্জুন সমস্ত কুরুবীর দিগের সাক্ষাতে তাঁহার নি-ক্ষিপ্ত সেই শক্তি তিন বাণে তিন খণ্ড করিয়া ছেদন করত নিপাতিত করিলেন। তৎপরে গঙ্গা-পুত্র মৃত্যুমুখে গমন বা বিজয় লাভ, এই ছুইয়ের অন্য-ভর্নভিলাবে স্বর্ণ-বিভূষিত চর্মা ও খড্গ গ্রহণ করি-দেন। তিনি তাহা গ্রহণ করিয়া রথ হইতে অব-রোহণ না করিতে করিতেই অর্জুন শায়ক সমূহ দার। সেই থড়্গ চর্ম শতধা করিয়া ছিল্ল করিলেন, তাহা আক্ষর্যাকর হইল।

জননতর রাজা যুধিন্তির স্থীয় সৈন্য দিগকে আদেশ করিলেন, তোমরা গঙ্গা-পুজের সমীপে মুদ্ধে অভিক্রত হও, তোমার দিগের অনুমাত্রও ভয় সম্ভাবনা নাই। তাহারা রাজা যুধিন্তিরের আদেশানুসারে ভোমর, প্রান্ধ, পৃত্তিশা, উত্তম নিস্ত্রিংগ, শাণিত নারাচ, বংসদন্ত ও ভল সমূহ লইয়া ঘোর সিংহনাদ সহকারে এক ভীয়ের উপ্র অভিক্রত হইল। হেরাজন্। আপ্রকার পুজ্গণ্ও

ভীমের জয়াভিলাষী হইয়া ডাঁহাকে রক্ষা করিবার मानदम निश्हनाम महकारत छाँहात मधीरभ धावमान হইলেন। সেই দশম দিবদে ভীয়াৰ্জ্জুন সমাগম হইলে আপনকার পৃক্ষীয় যোধগণের বিপৃক্ষ গণ সহ তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল। উভয় পক্ষীয় সৈন্য পরস্পর হতাহত হইতে থাকিল। যে প্রকার সমুদ্রে গঙ্গা সঙ্গম হইলে মুহুর্ত কাল আবর্ত হয়, সেই প্রকার উভয় সৈন্য আন্দোলিত হইল। তখন রণভূমি শোণিতাক্ত হইয়া ভয়ানক ৰূপে প্রকাশ পাইল, সম বিষম স্থান বোধগম্য রহিল না। সেই नगम निवटमत यूटक जीटबत ममूनाय मर्या छान নির্ভিন্ন হইলেও, তিনি অযুত যোদ্ধা নিহত করিয়। যুদ্ধে অবস্থান করিলেন। অনন্তর সেনার অভিমুখে অবস্থিত হইয়া ধনুর্ধার অর্জুন কৌরব সেনার মধ্য ভাগ বিদ্রারণ করিতে লাগিলেন। আমরা তখন কুন্তীপুজ্ শ্বেতবাহন ধনঞ্জর হইতে শাণিত শর-নিকরে পীড়িত হইয়া পলায়ন করিতে লাগিলাম। मोवीत, क्वि, প्राच, श्रेडीच, डेनीच, मालन, অভীষাহ, শ্রসেন, শিবি, বশাতি, শালাখিত ত্রিগর্ভ, অম্বষ্ঠ ও কৈকেয়, এই সকল ভিন্ন ভিন্ন দেশীন মহাত্মা গণ শরাওঁও ক্ষত বিক্ষত হইয়া অর্জুন সহ যুধামান ভীমকে রণে পরিত্যাগ করিলেন। অনন্তর বছ যোদ্ধা, সমস্ত কৌরব দিগকে তাড়িত করিয়া চতুর্দিকে এক ভীর্মকে পরিবেইন-পূর্বক শর বর্ষণে সমাকীর্ণ করিতে লাগিলেন। শত শত সহস্র সহস্র শরে ভীয়কে হনন করিয়া যোদ্ধা-গণের 'নিপাতিত কর, গ্রহণ কর, বেধ কর, ছেদন কর, এই ৰূপ ভুমুল শব্দ ভাঁহার রথ সমীপে হইতে লাগিল। এই ৰূপে আপনকার পিতা অপরাহ সময়ে আপনকার পুত্র দিগের সাক্ষাতে অক্স্ কর্ত্ক শাণিতাগ্রভাগ শর সমূহে ক্ষত বিক্ষত দেহে পূর্ব শিরা হইয়া রথ হইতে পতিত হইলেন। রথ হইতে ভীয়ের প্তন কালে পার্থিবরণ ও আকাশস্থ দেৰগণের মন্থা হাছাকার শব্দ হইতে, লাগিল।

নহাত্মা পিতামহকে রথ হইতে পড়িতে দেখিয়া ঠা-হার দকে দকে আমাদিগের দকলের চিত্তও পতিত হইল। সৰ্ব ধমুগানের হল স্বৰূপ সেই মহাবাহ, পরিজ্ঞন্ট ইন্দ্র-খজের নাায় বস্থুধা অমুকন্সিত করত পভিত হইলেন। সেই মহাত্মাশর সভে সমার্ত হইয়াছিলেন, স্থভরাং পতিত হইয়া ধরণী স্পার্শ করিলেন না। মহাধমুর্জর পুরুষভ্রেষ্ঠ রথ হইতে নি-পতিত হইয়া শর শয্যায় শ্রান হইলে তাঁহাতে দিব্য ভাব সমাবিষ্ট হইল, তথন মেঘ বর্ষণ করিতে লাগিল এবং মেদিনী কম্পিতা হইল। তিনি পতন সময়ে দিবাকরকে দক্ষিণ দিগবলম্বী দেখিয়া তৎকালে দক্ষি-ণায়ন চিন্তা করত জ্ঞানাবলম্বন করিলেন, এবং অন্ত-त्रीटक ठ्विक्तिक् हरेटल धरे क्र टेम्बवानी ख्रावन করিলেন, " নরসিংহ মহাত্মা গঙ্গানন্দন দক্ষিণায়নে কি হেতু প্রাণ ত্যাগ করিবেন ?⁰ তাহা শ্রবণ করিয়া গঙ্গানন্দন কহিলেন, আমি জীবিত আছি। কুরু পিতামহ ভীয় মহীতলে পতিত হইরাও উত্তরায়ণ কাল প্রতীক্ষায় প্রাণ ধারণ করিয়া রহিলেন।

হিমালয়-স্থতা গঙ্গা ভীমের অভিপ্রায় জানিয়া মহর্ষিদিগকে হংস রূপে তাঁহার নিকট প্রেরণ করি-লেন। যে স্থানে নরসিংহ পিতামহ শরতক্ষে শয়ান ছিলেন, মানসনিবাসী হংস-ৰূপী ঋষিগণ ত্বব্লিড ও মিলিত হইয়া উৎপতন পূৰ্বক সেই স্থানে তাঁহাকে मिंदि जागमन क्रिका। इश्मक्षी अधिश्रेश कुक्-কুল-ভিলক ভীমের নিকট উপনীত হইয়া তাঁহাকে শন্নতত্পে শন্নান দেখিতে পাইলেন। সেই সকল मनीची महर्षिशन महे महाजादक आहकिन कराज তৎকালে ভাকরকে দকিণায়নগামী ভাবিয়া পরস্পর मजना-भूक्क बनाविन कतिए नागितन। जीव মহাত্মা হইরা দক্ষিণায়নে কেন প্রাণ পরিভাগ क्रिंदिन ? इर्टमन्ना अरे क्या बिन्ना क्रिक्त प्रिनिष्ठ-मूर्व अञ्चादनामाञ रहेरमम। ११ जातक ! महातृक्ति-মান্ত শাৰুরুনজন তাঁহালিগের কথোপকখন জ্ঞাত

দক্ষিণায়ন-সত্ত্বে কোন প্রকারে পর লোকে গমন করিব না, ইহা মানস করিরাছি। হে হংসগণ। স্বাদী ভোমাদিগের সমীপে সভ্য বলিভেছি, আদিভা উত্তর দিকে আবর্ত্তন করিলে, আমার পূর্বভেন স্বকীয় স্থানে গমন করিব, এক্ষণে উত্তরায়ণ প্রভী-ক্ষায় প্রাণ ধারণ করিয়া থাকিব। সমুচিত সময়ে প্রাণ ত্যাগ স্বৰূপ ঐশ্ব্য আমার আয়ন্ত আছে, এই হেতু আমি উত্তরারণে মরণাকাঞ্চী হইয়া থাকিব। আমার মহাত্মা পিতা যে আমাকে ইচ্ছা মরণ বর দিয়াছিলেন, তাহা সার্থক হউক। সেই বর প্রভাবে আমার মরণের প্রতি আমার কর্ভৃত্ব আছে, আমি তাহা ধারণ করিয়া থাকিতে পারিব। শরশ্যাপত ভীয় এই কথা কহিয়া শয়ন করিলেন।

কুৰুকুলের শৃঙ্গ স্বৰূপ মহাতেজস্বী ভীয় এই ৰূপে পতিত হইলে পাণ্ডব ও স্ঞায়গণ সিংহনাদ করিতে লাগিলেন। হে ভরত-কুল-প্রবর! ভরত পিতামহ সেই মহাসত্ত্ব হত হইলে আপনার পুলেরা ইতি-কর্ত্তা-বিমূঢ় হইলেন, সমস্ত**েকৌরব** দিগেরই তৎকালে মোহ উপস্থিত হইল। ক্লপাচার্য্য দুর্ব্যো-ধন প্রভৃতি দীর্ঘ নিশ্বাস পরিত্যাগ পূর্বেক রোদন করিতে লাগিলেন এবং বিষাদ প্রযুক্ত শিথিলেক্সির ও দীর্ঘকাল ভির হইয়া চিফাসক্ত হইকেন; যুভদ আর মনঃ সমাধান করিতে পারিলেন না । তাঁহা-দিগের উরু যেন গ্রাহ-কুম্ভীর-মকরাদি স্বরূপ হইরা তাঁহাদিগকে গ্রহণ করিয়া রাখিল, পাগুবদিগের প্রতি যুদ্ধে অভিমুখীন হইতেও সমর্থ হইলেন না। হে মহারাজ! শান্তমুপুত্র মহাতেকা ভীয় লোকের অৰ্ধ্য হইয়াও ব্ৰথন হত হইলেন, তখন আমা-দিগের এই বিতর্ক উপস্থিত হইল যে, কুরুরাজ আরু জীবিত থাকেন না। **আষরা অর্জুন কর্ডুক প**রা-* কিত, শাণিত শর সমূহে কত বিক্ষত ও হতবীর হইয়া ইতি কর্ত্তব্যতা বিষ্ণু হইলাম। হে জনেখন্ন। পরিষবাছ শৌর্যালালী পাণ্ডবেরা যুদ্ধে জর লাক हरेता विद्या पूर्वक छाहामिश्राक विवादनम, आमि क्रित्रा धवर नाम यूटक अत अयूक शतकारनथ

প्रक्रम गाँउ नाख इट्टब्स घटन कतिया नकरनाई इर्ब সহকারে মহাশব্দ ধনি করিতে লাগিলেন। সোমক ও পাঞ্চালগণও সাভিশর হ্যান্নিত হইলেন। সহস্র সহস্ৰ ভূৰ্ব্যের বাদা ধনি হইতে লাগিল, অভি মহা-वन जीगरनन नाजिना वास्वारकारेन ও निनाम क्रिंटिं नागितन। ए विर्ां! भक्रानमन नि-পত্তিত হইলে উভন্ন পক্ষীয় সৈন্যের বীরগণ ইতন্তত অব্র শব্র রাখিয়া চিন্তাবিউ হইলেন। অন্যান্য व्यत्मत्क छेटेकः चरत हिश्कात ७ व्यत्मत्क भनावन করিতে লাগিল। অনেকে মোহ-সমন্বিত হইল, 'এবং অনেকে ক্ষজ্রিয় ধর্মের নিন্দা করিয়া ভীন্মকে প্রশংসা করিল। ঋষি গণ, পিতৃ গণ এবং ভরত-কুলের পূর্বে পুরুষ গণও মহাত্রত ভীয়কে প্রশংসা করিলেন্। শান্তমুপুত্র ধীমান্ ভীয় উত্তরায়ণ কা-लिन्न जीकाक्की इरेग़ मरहाशनिष्य প্রতিপাদ্য যো-পাবলম্বন করিরা সময় যাপন ক্রিতে থাকিলেন। বোড়শাধিক শতভম অধ্যায় সমাপ্ত॥ ১১৬॥

ধৃতরাষ্ট্র কহিলেন, সঞ্চয়! যিনি পিতা নিমিত্ত ব্রন্মচারী হইরাছিলেন, যোধগণ সেই দেবভুল্য বল-শালী ভীন বিহীন হইয়া তথন কি ৰূপ হইয়াছি-লেন ? ব্যন ভীম ক্রপদ-পুক্ত শিখণ্ডীর প্রতি হৃণা করিয়া অতা প্রহার করেন নাই, তথনই আমি কৌরব ও তৎপক্ষীয় অন্যান্য যোজাদিগকে পাগুব পণ কর্তৃক নিহত মনে করিয়াছি। আমি অতি ছুর্কুন্দি প্রযুক্ত অদ্য পিতাকে নিহত ভাবণ করিয়া বে সুংৰ লাভ করিলাম, ইহা অপেকা অধিক ফুংখ भारत कि रहेर्ड शास्त्र ? मध्यत्र ! निक्तरहे जामात ছার পারাণে নির্মিত, নচেৎ ভীন্নকে নিহত ভাবণ कैंक्रिया ज्यामात इत्तर भाज्या इट्या विनीर्ग ना इट्डा रून ? रह **ऋतु गक्ष**त्र ! बहारू। क्रिक्री क्रूक्रनिश्ह जीव ৰুজে আহত হইয়া যাহা করিয়াছিলেন, তাহা তুমি षामात निक्र के किन करे। नमदत्र जीव स्व निरुष्ठ ুহুইলেন, ইহা আমার পুরুপুন অসহ হইভেছে।

পূৰ্বকালে আমদয়া রাম দিবাত্র সমূহ বারা বাঁহা-কে নিহত করিতে পারেন নাই, তিনি ক্রপদপুত শিবতী কর্তৃক নিহত হইলেন?

সঞ্জর কহিলেন, কুরুপিভামহ সায়ত্র কালে আহত হ্**ইয়া ধার্ত্তরাষ্ট্রদিগকে বিবাদিত ও পাঞ্চালগণকে** আহ্বাদিত করিয়া ভূমি স্পর্শনা করিয়াই শরতপে শরন করিলেন। তিনির্থ হইতে প্রচ্যুত হইয়া পতিত হইলে প্রাণি সকল তুমুল হাহাকার শব্দ করিতে লাগিল। কৌরবদিগের সীমার্ক স্বৰূপ সমর বিজয়ী ভীম নিপতিত হইলে উভয় সেনারই ক্ষজিরদিগের চিত্তে ভয় উপস্থিত হইল। ভীন্নকে বিশীর্ণ-কবচ ও বিশীর্ণ-ধজ দেখিয়া পাগুব কৌরব উভয় পক্ষই বিপরীত ভাবাপন্ন হইলেন। অম্বর মণ্ডল তমোর্ত, ভামু মণ্ডল প্রভা-বিহীন এবং পৃথিবী শকায়মানা হইল। সমস্ত প্রাণী শরতপে-শয়ান পুরুষ প্রধান ভীন্নকে দেখিয়া কহিতে লাগিল, ইনি ব্রহ্মজ্ঞদিগের শ্রেষ্ঠ ও ব্রহ্মজ্ঞদিগের গতি। ঋষি, সিদ্ধ ও চারণগণ ভরতকুল-মহত্তম ভীমের প্রতি এই ৰূপ কথা কহিতে লাগিলেন, "ইনি শিতা শান্তমুকে কামার্ভ জানিয়া আপনি উর্নরেভা হইয়া-ছিলেন।^৯ ভর**অ**ংগিতাম**হ ভীয় নিহত হইলে** আপনার পুজেরা কি করিবেন কিছুই নিশ্চয় করিতে পারিলেন না; জাঁহাদিগের মুখ বিবর্ণ হইল, ভাঁহারা হত-এ ও লক্ষিত হইরা অধোমুখে রহিলেন। পাওবেরা সকলে জয় লাভ করিয়া রণ মন্তকে পাকিয়া স্বৰ্ণুলাল বিভূবিত মহাশৰ্ধ ধনি করিতে লাগিলেন, জুর্যাবাদ্যের ধনি হইতে লাগিলা 🖰 হে ग्रहाताल ! . कृषी भूख महावन छी मरमनरक महावन সমস্বিত শত্রুপক্ষ বিপকে কলপূর্বক নিহত করত ক্রীড়া করিতে দেখিলাম। কৌরবেরা সংজ্ঞাহীন **इट्टान । कर्न ७ हर्स्यायन मूक्ष्म ह नीर्य निवा**न পরিতাগ করিতে লাগিলেন**া কৌরব**িপিতামহ নেইৰপে নিপজিত হইলে সমুদার সৈনা বিভূষ্ণ रहेसा हाहाकाङ्ग कतिरङ लाभिन

অপনার পুত্র ফুলোনন ভীয়কে পতিত দেখিরা | ষ্ঠিবেলে জোণ দৈনা স্থাৰ ধাৰ্মান স্ইলেন। क्र्र्याध्यात चारनरम क्षेत्र त्रकार्य महेनरमा नियुक्त वस्त्रज्ञार शूक्रवनिश्र तरे बीच चटेनमा पिनटक বিবাদিত না করিয়া প্রসাণ করিলেন। হে মহারাজ! কুরুপক্ষীয় সকলে ছুঃশাসনকে আসিতে দেখিয়া 'ইনি কি বলেন' শুনিবার নিমিত্তে তাঁহার চতুর্দিক্ পরিবেইটন করিয়া দাঁড়াইলেন। তদনন্তর তিনি দ্রোণের নিকট ভীম্মের পতন সংবাদ ব্যক্ত করিলে, জোণ অপ্রিয় সংবাদ অবণ করিয়া মোহাবিষ্ট হইলেন। প্রতাপবান্ ভরদ্বাজ-নন্দন কিয়ৎক্ষণ পরে नः छ। ला**छ क**रिया उष्क्रां च श्रकीय रेमना पिशस्क যুদ্ধ করিতে নিবারণ করিলেন। পরে পাওবগণ কৌরবদিগকে যুদ্ধে নির্ত্ত দেখিয়া ক্রভগতি অশ্বা-রোহী দূতগণ দ্বারা চতুর্দিকে স্বপক্ষীয় সৈন্যদিগকে নিবারিত করিলেন। সৈন্য সমুদায় পরম্পরাক্রমে ঞত হইয়া সংগ্রাম হইতে নির্ত্ত হইলে, রাজগণ কবচ পরিত্যাগ করিরা ভীম সমীপে গমন করি-লেন। তদনন্তর শত শত সহস্র সহস্র কাল্রিয় যোধগণ যুদ্ধ হইতে নির্ভ হইয়া, যে প্রকার অমর গণ মহাত্মা প্রজাপতির সমীপত্ত হয়েন, সেই ৰূপ ভীন্নের সমীপস্থ হইলেন।

পাশুব ও কৌরবের। সকলে ক্তশয়ন পুরুষপ্রবর ভীয়ের সকাশে উপনীত হইয়া তাঁহাকে অভিবাদন পুর্বাক সন্মুখে দগুরিমান হইলে, ধর্মান্মা শান্তমুপুত্র তাঁহাদিগকে এইৰপ সম্ভাবণ করিলেন, হে মহা-জাগ গণ! ভোমাদিগের স্বাগত! হে মহারথগণ! জোমারদিগের স্বাগত! হে দেবোপমগণ! ভোমা-দিগের দর্শনে আমি সম্ভক্ত হইলাম। তিনি লয়মান মন্তকে শরশ্যায় শরনে থাকিয়া তাঁহাদিগকে এই কপে আমন্ত্রণ পুর্বাক চতুঃপার্মে আপনকার পুত্র-দিগকে দগুরিমান দেবিয়া বলিলেন, আমার মন্তক জন্তান্ত লয়মান হইতৈছে; ভোমরা আমার মন্তক জন্তান্ত লয়মান হইতৈছে; ভোমরা আমার মন্তক উপধান প্রদান কর। তংপরে তাঁহারা স্থক্ষ ও কোনল অতি উত্তম উপধান দকল আহ্রণ করির।
দিলেন। কিন্তু নর আহিং পিতামহ সে সকল উপধান
গ্রহণ করিতে ইচ্ছা না করিরা হালা-পূর্বাক তাঁহাদিগকে কহিলেন, হে পার্থিব গণ। এই সকল উপধান এবিধি বীর শব্যার উপযুক্ত নহে। তদনত্তর
সর্বালোক মধ্যে মহারথ নরপ্রধান দীর্ঘবাহ পাণ্ডুপূক্র ধনপ্রবের প্রতি দৃতিপাত করিয়া বলিলেন, বংস
মহাবাহ ধনপ্রর। আমার মন্তক উপধান ব্যতিরেকে
লয়মান হইতেছে, অতএব তোমার বিবেচনায় বে
প্রকার উপধান উপযুক্ত বোধ হর, তাহা আমাকে
প্রদান কর।

मञ्ज्य कहित्तन, धनञ्जन शिजामहत्क अखिनामन করিরা মহৎ শরাসনে জ্যারোপণ পূর্বাক অক্রপূর্ণ লোচনে এই বাক্য বলিলেন, হে কুরুভোষ্ঠ পিতা-মহ! হে সর্ব্ব-শস্ত্রধারি-প্রবর রণ-ছর্ক্ব! আফিজ্যা-পনকার দাস এই বর্ডমান আছি, আজ্ঞা করুম, কি করিতে হইবে। এই কথা শুনিরা শান্তস্থপুত্র পুন-র্বার বলিলেন, হে বংস কুরুজেষ্ঠ ! উপধান ব্যক্তি-त्तरक जामात्र मछक वसमान हहेता পড়িতেছে, অতএব হে কান্তুন! তুমি আমার মন্তকে উপযুক্ত উপধান প্রদান কর। হে বীর পার্থ। ভূমি কর্ম 🕹 তুমিই সমস্ত ধনুয়ানের মধ্যে শ্রেষ্ঠ; অতএৰ স্কুমি আমার শরনের অমুৰূপ উপধান শীত্র প্রদান কর 🕩 ক্ষজ্ঞিরধর্মবেতা বৃদ্ধি ও সন্ত্রগুণান্বিত ফান্তুন বে-আজ্ঞা বলিরা ভীমের অভিপ্রারামুবারি কার্যা করি-তে সমুদ্যত হইলেন। তিনি মহাত্মা ভরত পিতা-মহের অনুমতি এইণ পূর্বক পাণ্ডীব ধনুক ও সমত পর্বা তীক্ষ্ণ তিক্টি শক্ষ গ্রহণ ও অভিসন্তিত করত বেগ সহকারে নিকেশঞ্চিরা তদারা তাঁহার মন্তক ধারণ করিলেন। সবাসাচী ধনঞ্জর অভি-আরামুবারি কার্যা করিলে ধর্মার্থতত্ত্বজ্ঞ কুরু-প্রবর जीय जानमिक रहेराना जिम बनअग कर्ज्य छेन-যুক্ত উপধান প্রাপ্ত হইরা ভাঁহাকে অভিনাল্ড করিলেন, এবং সমুদায় ভরত সন্তানদিগের প্রতি

নেত্র নিকেপ করিয়া তাঁহাকে বলিলেন, হে কুডীপুত্র যোজ্প্রর! হে সুহালাক্ত্রে প্রীতি বর্জন পাঞ্
নক্ষন! ভূমি আমার শ্রনের অমুক্প উপধান
প্রদান করিয়াহ, যদি ইহার অন্যথা করিতে, তাহা
হইলে আমি রুফী হইয়া তোমাকে অভিশাপ
দিভাম। হে মহাবাহ। ধর্মনিঠ ক্ষাত্রিয়দিগকে যুদ্ধে
এইকপ শর শ্যাগত হইয়াই শয়ন করিতে হয়।

পিতামহ, অৰ্জুনকে এইৰপ বলিয়া সমীপবৰ্তী সমস্ত রাজা ও রাজপুত্রদিগকে বলিলেন, তোমরা সকলে দেখ, অৰ্জুন আমাকে কেমন উপধান প্ৰদান 🤊 করিলেন, যে পর্য্যন্ত রবির উত্তরায়ণ গমন না হয়, তাৰৎকাল আমি এই শব্যায় শয়ন করিব। যথন ুদিবাকর প্রথর-তেজন্বী ও উত্তর-পথাবলয়ী হইয়া সপ্তাশ-বোজিত রুণারোহণে গমন করিবেন, তথন, বেমন স্কৃদ্ ব্যক্তি প্রিয় স্কৃদ্দিগকে পরিত্যাগ . **করে, ছজেপ আমি প্রির**তম প্রাণ পরিত্যাগ করিব। বে সকল ক্ষান্ত্রেরা তৎকালে আমার নিকট আসি-বেন, তাঁহারা আমাকে প্রাণ ত্যাগ করিতে দেখিতে পাইবেন। হে নৃপগণ! আমার এই স্থানে পরিখা খনন করিয়া দাও, আমি এইখানে এইরূপ বছ-শরে পরিবাপ্তি থাকিয়াই দিবাকরের উপাসনা করিব। হে পার্থিবগণ! এক্ষণে তোমরা পরস্পর শক্রতা পরিত্যাপ করিয়া সংগ্রাম হইতে ক্ষান্ত হও। **সঞ্জ কহিলেন, হে মহারাজ!** অনস্তর ক্ষত-রোগ-প্রতীকার কোবিদ উদ্ভয় শিক্ষিত চিকিৎসা-নিপুণ কভিপন্ন বৈদ্য সমস্ত উপকরণ সামগ্রী লইরা তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলেন। জারুবীপুত্র তাঁহা विभारक प्रिचित्रा ज्ञालमकात श्रुक्त कूट्यानधनरक विन-**रमन, कूर्रवाधिन। क्रिकि** क्रिकिश्मक प्रिशंदक मणानिक क्त्रित्रा धन ध्यमान शूर्वक विमातः कत्र। धक्राप चामात्र अरेक्श चनचात्र देवत्मात्र क्षरत्राज्यम् नारे, त्य হেডু আমি ক্ষত্রির ধর্ম-বিহিত পরম প্রশন্ত গতি লাভ করিরাহি। হে মহীপাল পণ! আমি শর শ্বাগত, আমার পক্ষে উহা বিহিত নর, হে নরা- रिश्नान ! अक्राप्त जानि अहे नक्न अविक भरत स्व एक रहेर, छाहारे जामात शरक शत्रम धर्म ।

আধনকার পুদ্র স্থুর্য্যোধন তাঁহার ঐবপ বাক্য শুনিয়া বৈদ্যদিগকে ধবাবোগ্য অর্থ প্রদান করিয়া সম্মান পূর্বক বিদায় করিলেন। অনন্তর নানাদেশীর পার্থিবগণ অমিত-তেজা ভীয়ের ধর্ম বিষয়ে পরম নিষ্ঠা দেখিয়া বিস্মরাপন্ন হইলেন। মানব প্রবর মহারথ পাশুব ও কৌরবেরা আপনার পিতাকে ঐবপ উপধান প্রদান করিয়া সকলে মিলিত হইয়া শুভ শরতশ্পে শরান সেই মহাম্মার সমীপে গমন পূর্বক তাঁহাকে অভিবাদন ও বারত্রয় প্রদক্ষিণ করিলেন। রুধিরাক্ত দেহ সেই সকল বীরগণ তাঁহার চতুর্দ্দিকে রক্ষার ব্যবস্থা করিয়া সাতিশয় কাতর চিন্ত ও চিন্তান্থিত হইয়া বিশ্রামার্থে সায়ং কালে স্ব স্থ শিবিরে গম্ম করিলেন।

মহাবলশালী মাধব ভীয়ের পতনে প্রীতিযুক্ত মহারথ পণ্ডেব সকলকে শিবির নিবিষ্ট ও উপযুক্ত সময় দেখিয়া তাঁহাদিগের সমীপে আগমন পূর্বক ধর্মপুত্র যুধিন্টিরকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন, ছে কুরুপ্রবর! আপনি সৌভাগ্য প্রযুক্তই জয়ী হইয়াছেন, সত্যসন্ধ মহারথ ভীন্ন মানবগণের অবধ্য ; আপনি সৌভাগ্যপ্রযুক্তই উহাঁকে নিপাতিত করিয়াছেন। অথবা আপনি কোপ দৃষ্টিতে যাহাকে অবলোকন করেন, সে কথনই জীবিত থাকে না, অতএব জীয় সর্বাশস্ত্র-পারদর্শী হইয়াও দৈব প্রযুক্ত আপনকাকে রণে প্রাপ্ত হইয়া আপনকার ভীষণ কোপ দৃষ্টি षातारे पक्ष रहेन्ना थाकिएक। जनार्फन धर्मत्राज्यक এইৰপ বলিলে, ভিনি জনাৰ্দ্দনকৈ কহিলেন, ছে কৃষণ! তুমি যাহাদিণের প্রতি প্রসন্ন থাক, ভাহা-मिर्गित्र कत नाज अवः जूमि याशमिरगत श्री ক্রোথ কর, তাহাদিপের পর্যক্র হইরা থাকে। হে কেশব। বাহারা ভোমার ভক্ত ও শরণাপন্ন, ভাহা-**দিসের কোন জন্ম থাকে না,। "আমরা ভোমারই** শরণাপন। ভূমি সমরে সর্বাদা বাহাদিগকে রক্ষা

করিয়া থাক এবং সর্বাদা বাহাদিণের হিতৈষী, তাহা- হইল। হে ভরত শ্রেষ্ঠ ! ভীয় শর সমূহে অভিসন্তথ দিগের বিজয় হওয়া আশ্চর্যাকর নহে। আমার হইয়া সর্পের ন্যায় নিশাস পরিত্যাগ করত থৈয়া মতে, আমরা যখন তোমাকে সর্বা প্রকারে সহায় পূর্বাক শর্যাতনা স্মূ করিভেছিলেন। তাঁহার শরীর পাইয়াছি, তথন বে আমরা যুদ্ধে বিজয় লাভ করিব, শরাঘাতে দগ্ধ হইডেছিল, তিনি শস্ত্র-সন্তাপে মুর্চ্ছিত তাহার আর আশ্চর্যা কি?

ধর্মরাজ জনার্দনকে এই প্রকার বলিলে, জনার্দন সহাস্য বদনে প্রত্যুত্তর করিলেন, হে পার্থিবোত্তম! আপনি যেরপ কথা বলিলেন, ইহা আপনার উপ-যুক্তই হইয়াছে।

সপ্তদশাধিক শততম অধ্যায় সমাপ্ত ॥ ১১৭ ॥

সঞ্জয় কহিলেন, মহারাজ! সর্বারী প্রভাতা হইলে সমুদায় রাজ গণ, পাগুব গণ ও ধৃতরাষ্ট্র-পুক্র গণ পিতামহের উপাসনার্থে গমন করিলেন। ক্ষজিয় গণ বীরশয্যায় ক্লড-শয়ন ক্ষক্রিয়-প্রবর বীর ভীমকে অভিবাদন করিয়া সমীপে দণ্ডায়মান হইলেন। সহস্র সহস্র কন্যা তথায় গিয়া শাস্তমু-পুক্তের প্রতি ठन्सन हुर्न, लाक ও মাল্য বিকিরণ করিল। জ্রী, র্দ্ধ, বালক, আপামর সাধারণ সকলেই দর্শক হইয়া, যে প্রকার প্রাণী গণ তমোহস্তা স্থর্যোর অমুগামী इश, त्मरु क्रि, जीरबात ममीलवर्जी रहेल। वह मश्या वाहाकत्र, नर्छ, नर्खक ও मिल्लि গণ শরতল্প-শারী ভীয়ের নিকট আগমন করিল। কুরু পাগুব পক্ষীয় যোধ গণ কবচাও আয়ুধ পরিত্যাগ পূর্বক যুদ্ধ হইতে নিহৃত্ত হইয়া ছুরাধর্ষ অরিন্দম দেবত্রতের সমীপস্ হইলেন। উহাঁরা সকলেই পূর্ব মত পর-স্পর যথা বয়ংক্রম প্রীতিমন্ত হইয়া একতে উপনীত হইলেন। যে প্রকার জাকাশে আদিতা মগুলের শোভা হয়, সেই প্রকার শত শত পার্থিবৈ সমা-কীৰ্ণা সেই সভা ভীম কৰ্তৃক শোভিতা এবং ভারত-বংশীয়গণে প্রদীপ্তা হইয়া শোভসানা হইল। যেমন দেহবশর-ব্রহ্মার উপাসনাকারী দেবগণের সভা গোড-মানা হয়, মেই প্রকার গঙ্গান্তত দেবত্রতের উপা-সনাকারী সেই সকল নৃপণণের সভা শোভমানা

হইল। হে ভরত শ্রেষ্ঠ ! ভীয় শর সমূহে অভিসম্ভপ্ত হইয়া সর্পের নাায় নিশাস পরিত্যাগ করত থৈয় পূর্বাক শর্মাতনা স্ফুকরিতেছিলেন। তাঁহার শরীর শরাঘাতে দক্ষ হইতেছিল, তিনি শত্র-সন্তাপে মূর্চ্জ্যত প্রায় হইয়া রাজগণকে সমীপে দেখিয়া পানীয় পানে ইচ্ছা বাক্ত করিলেন। অনন্তর তাঁহারা চতু-র্দিক্ হইতে উত্তম উত্তম ভক্তণীয় সামগ্রী ও স্থাতল কতিপয় বারি-কৃত্ত আহরণ করিলেন, তাহা দেখিয়া শান্তমূনন্দন ভীয় কহিলেন, হে বৎস গণ! এক্ষণে আমি কোন প্রকার মামুষ-যোগ্য ভোগা উপভোগ করিতে পারিব না। আমি এক্ষণে শর্মাগত হইয়া মনুষ্য ভোগ্য হইতে অপক্রান্ত হইয়াছি, কেবল চক্র স্থর্যের অয়ন পথ পরিবর্ত্তন প্রতীক্ষা করিয়া জীবিত আছি।

হে ভারত! শান্তমুপুত্র এই প্রকার বলিয়া ক্ষজ্রিয় গণকে নিন্দা করত কহিলেন, আমি অর্জুনকে দেখিতে ইচ্ছা করি। অনন্তর মহাবাছ অর্জুন সমীপে আসিয়া অভিবাদন পূৰ্ব্বক প্ৰণত ও প্ৰাঞ্জলি হইয়া দীড়াইলেন, এবং নিবেদন করিলেন, আজা করুন, কি করিতে হইবেক ? ধর্মাত্মা ভীন্ন পাণ্ডুপুক্ত ধন-ঞ্জয়কে ক্নতাভিবাদন ও সন্মুধে অবস্থিত দেখিয়া প্রীত হইয়া কহিলেন, অর্জুন! তোমার বাণে আমি প্রথিত হইয়াছি, আমার সর্ব্ব শরীর দক্ষ, মর্মস্থান সকল ব্যথিত এবং মুখ শুষ্ক হইতেছে; আমার শরীর বেদনায় অতি পীড়িত হইয়াছে। হে মহা-ধমুর্দ্ধর! তুমিই আমার এ অবস্থায় যথাবিধি পানীয় প্রদানে সমর্থ হইবে, অতএব তুমি আমাকে পানীয় জল প্রদান কর। বীর্য্যবান্ অর্জুন যে আজ্ঞা বলিয়া রধারোহণ করিয়া জ্ঞা-রোপণ পূর্বক বলবৎ গাণ্ডীব শরাসন বিক্ষারণ করিলেন। সমুদায় পার্থিব ও অন্যান্য প্রাণিগণ অশনি ধনির ন্যায় তাঁহার জ্যাতল নির্বোষ অবণ কৃরিয়া আসান্বিত হইলেন। পাওু-नक्त तथिथवत भार्थ मर्क लाएकत माकाएक मर्क শক্ত্রধারি প্রধান ভরত শ্রেষ্ঠ শরান পিতামহকে রুধা-



(क्राइटन अमकिन क्रिटनन। भारत अमीख अक बान অভিমন্ত্ৰিত ও সন্ধান পূৰ্বাক পাৰ্ক্ষন্য অত্ত্ৰে সংযো-জিত করিয়া ভীমের দকিণ পারে পৃথিবী বিদ্ধ করিলেন। তদনন্তর দিব্য গল্প ও রস-যুক্ত অমৃত ভুল্য শীতল বারি ধারা পৃথিবী হইতে উপিত হইল। পার্থ সেই শীতল বারি ধারা দারা দিব্যকর্মা দিব্য-পরাক্রম কুরুপ্রবর ভীয়কে পরিতৃপ্ত করিলেন। जम्मस्त्र कालाय भग व्यर्जूत्नत हेल जूना महे कार्या দেখিয়া পরম বিস্ময়াপন্ন হইলেন। কৌরব গণ অর্জুনের অলৌকিক কর্ম দেখিয়া শীতার্দিত গো গণের ন্যায় কল্পিত হইলেন। সমুদায় রাজা অর্জু-म्ब के कार्या प्रिथेश वित्यत्र श्रयुक्त च च छेखतीय প্রকম্পিত করিতে লাগিলেন, সর্বত্র তুমুল শব্ধ তুম্ভুভি নিৰ্ঘোষ হইতে লাগিল।

শান্তমুপুত্র পরিতৃপ্ত হইয়া সমুদায় ক্ষত্রিয় বীর দিগের সমীপে অর্জুনের প্রশংসা করত তাঁহাকে कहिएक नाशिएनन, एह कूज़र्यः मित्र व्यानमः वर्षन অমিত প্রভাব মহাবাছ অর্জুন! এই কর্ম তোমার পক্ষে বিচিত্র নয়, ভূমি যে পুরাতন ঋষি, তাহা स्विर्वि नातम विनिन्नोहित्नन। नमख स्विर्भागत महिष्ठ हेक्क ए यह ए कर्म केतिए छे थ्याह करतन ना, ভূমি কৃষ্ণকে সহায় করিয়া তাহা সম্পাদন করিবে। कानी मसूरवाता তোমাকে नर्स कल्टिएत निधन বলিরা জানেন। তুমি পৃথিবী মধ্যে ধমুর্দ্ধরগণের প্রধান এবং নরগণের শ্রেষ্ঠ। এই জগতে যেমন জীবগণের মধ্যে মহুষ্য ভোষ্ঠ, পক্ষি মধ্যে গরুড় ट्यार्क ଓ नित्र माथा नामत ट्यार्क, त्रारे क्रा धमू-र्काततत मार्याः जूमि व्यष्ठ । यमन व्यक्ति मार्या আদিতা শ্রেষ্ঠ, পিরি মধ্যে হিমালয় শ্রেষ্ঠ এবং कां कि मर्पा जाना लार्क, तारे संभ धमुर्केन मर्पा ভূমি শ্রেষ্ঠ। আমি, বিছুর, দ্রোণ, কংমদয়া রাম, जनार्कन वदः मक्कत्र, जामता मकुरम भृषक् बरभ ष्ट्रियावनदक वात्रवात्र यूटक निवात्रव कतिवाहिलाम, ৰুজবুজি প্ৰযোধন অজ্ঞান ভূলা কইয়া ভাষাতে আজা । সান হউক। তে বিশুজাস্বৰ আমি যাহা ভোমাকে

করিল না, মে চির কালই শাসনের বহির্ভ, স্বভরাং ভীম বলে অভিভূত হইয়া শরন করিবে। অনস্তর তাহা শুনিরা কৌরবরাজ ছুর্য্যোধন দীন-চিত্ত হই-লেন। তাঁহাকে ছুঃখিত দেখিয়া ভীন্ন বলিলেন, হে রাজন্! দীন-ভাব পরিজ্যাপ করিয়া আমার বাক্য অবণ কর। ধীমান পার্থ যে অমৃত গল্ধ জলধার। উৎপন্ন করিলেন, ইহা তুমি শ্বচক্ষে দেখিলে, এই ৰূপ কৰ্ম করিতে পারে, এমন আরু অন্য কেহ এ জগতে নাই। আগ্নেয়, বারুণ, সৌম্য, বায়ব্য, বৈক্ষৰ্যা, ঐন্দ্ৰ, পাশুপত, ব্ৰাহ্ম ও প্ৰাঞ্চাপত্যা, এই সকল অস্ত্র এবং ধাতা, ত্বফী ও সবিতার অস্ত্র সকল, সমস্ত মর্ত্তা লোক মধ্যে এক ধনঞ্জন্ন আর দেবকী-পুত্র রুঞ্চ অবগত আছেন, অন্য কেছ অবগত নহেন। ছুর্যোধন! যে মহাত্মার এতাদৃশ অলৌ-কিক কর্ম প্রথিলে, তাঁহাকে তুমি যুদ্ধে পরাজয় করিতে পারিবে না। অতএব যুদ্ধ-শোভী কার্য্য-সম্পন্ন কৃতী এই সম্ভ্বান্ অর্জুনের সহিত তোমার অচির কাল মধ্যে সন্ধি হউক। হে কুরুসত্তম!যে পর্যান্ত মহাবাছ ক্লফ ক্রোধাধীন না হন, ইহার মধ্যে তুমি শ্র পার্থের সহিত সন্ধি স্থাপন কর। যে পর্যান্ত অর্জুন সন্নত পর্ব শর নিকরে তোমার সমুদায় সৈন্য বিনাশ না করিতেছেন, ইহার মধ্যে ভুমি পাণ্ডব দিগের সহিত সন্ধি কর। যে পর্যান্ত ভোমার ष्यविष्ये मरहांतरव्रद्रा এवः ष्यनाना वह्न दाक श्रन সমর নিমিত্ত জীবিত বর্তমান আছেন, ইহার মধ্যে তুমি দক্ষি কর। যে পর্যান্ত যুধিন্তির ক্রোধ-প্রদীপ্ত নয়নে তোমার সৈন্য দক্ষনা করিতেছেন, ইহার মধ্যে তুমি সন্ধি কর। যে পর্যান্ত নকুল, সহদেব ও ভীমসেন ভোমার সমস্ত সৈন্য বিনাশ না করিভেছেন, ইহার মধোই বীর পাণ্ডব দিগের সহিত তোমার সৌহার্দ হয়, ইহাই আমার অভিক্লচি হইতেছে; হে বৎস! তুমি পাণ্ডৰ দিনের সহিত শান্তি ভাব অবলয়ন কর ; আমার বিনাশ পর্যান্তই যুদ্ধের অব-

বলিলাম, ভাহাতে ভূমি সন্মত হও, ভাহাই ভোমার এবং এই বংলের মঙ্গলকর বিবেচনা করিভেছি। বংস! ভুমি ক্রোধ পরিত্যাগ করিয়া পাণ্ডব দিগের সহিত শমভাবাপন্ন হও, অৰ্জুন এই পৰ্য্যন্ত বাহা করিয়াছেন, তাহাতেই যুদ্ধ সমাপন হউক; ভীয় নিপাতের পর তোমাদিগের সৌহার্দ স্থাপিত হউক, অবশিষ্ট ক্ষজিয় গণ নির্বিদ্যে জীবিত থাকুন, তুমি প্রসন্ন চিত্ত হও। পাণ্ডব দিগকে অর্জ রাজ্য প্রদান কর, ধর্মাক ইন্দ্রপ্রন্থে গমন করুন। হে কৌরব রাজ! তাহা হইলে তোমাকে ক্ষজ্রিয় দিগের মধ্যে জঘন্য ও মিত্রক্রোহী হইয়া পাপ কীর্ত্তি লাভ করিতে হইবেক না। আমার মরণ পর্যান্তই প্রজাদিগের শান্তি হউক, রাজগণ প্রীতি যুক্ত হইরা গমন করুন; পিতা পুদ্রকে, ভাগিনের মাতুলকে এবং ভাতা ভাতাকে লাভ করুক। আমার এই সময়োচিত বাকা যদি ভূমি ছুৰ্মতি প্ৰযুক্ত মোহাবিফ হইরা অবণ না কর, তাহা হইলে শেষে তোমাকে অমু-'তাপ করিতে হইবে, আমি ইহা সত্যই বলিলাম, অতএব তোমরা সকলে এই পর্যান্ত ক্ষান্ত হও।

সঞ্জয় কহিলেন, গঙ্গানন্দ্ন ক্ষজিয় গণ মধ্যে ছুর্যোধনকে ক্ষেহ্ প্রযুক্ত ঐ ৰূপ বাক্য শুবণ করাইয়া ভূফী অবলয়ন করিলেন, তাঁহার মর্মস্থান সকল শল্য ক্ষত হইয়া সম্ভপ্ত ,হইডেছিল, তাহার বেদনা সংঘমন করত আত্মাকে সমাহিত করিলেন। তাঁহার ক্ষিত হিতকর ধর্মার্থ যুক্ত অনাময় বাক্য শ্রুবণ করিয়া, যে প্রকার মুমুর্ব ব্যক্তির ঔষধ্বে ক্লচি হয় না, তর্জ্বপ ছুর্যোধনের তাহাতে অভিকৃতি হইল না। অক্টাদশাধিক শত তম অধ্যায় সমাপ্ত । ১১৮ ।

সঞ্জ বলিলেন, মহারাজ! তদনতর শান্তমুনন্দন তীম মৌনী হইলে সমুদার ক্ষজির গণ পুনর্কার স্ব স্ব শিবিরে গমন করিজেন। পুরুবভোঠ রাধা-নন্দন তীমকে নিহত ভাবণ করিয়া ক্ষমৎ জাসান্বিত হইরা তাঁহার সমীপে সত্ত্ব গমন করিলেন। মহাতেজ্পী কর্ণ উপনীত হইরা মহান্মা বীর প্রভু জীয়কে শর
শ্বাগত শরজনা কার্জিকেরের ন্যায় শর শ্বাশারী ও নিমীলিত-লোচন দেখিরা বাজ্যাকুল কঠে
সমীপে গমন পূর্বাক তাঁহার চরণ যুগলে নিপতিত
হইলেন, এবং বলিলেন, হে কুরুজেন্ড! আমি সেই
রাধানন্দন, আপনি সকল স্থলে সর্বাদা যাহাকে দ্বেয়া
ভাবে দৃষ্টি করিতেন

क्रूब्फ भन्ना-भूटला हक् क्राम्मध हटम मश्रूङ ছিল, তিনি কর্ণের ঐ বাক্য আবণ করিয়া ধীরে ধীরে ठक् **उंगी**निष क्रिलन, श्रात ख्वाइ त्रिक्शिंगरक তথা হইতে অপসারিত করাইয়া নির্জ্ঞান দেখিয়া, যেমন পিতা পুত্ৰকে আলিঙ্গন করে, দেই ৰূপ এক বাহুতে কর্ণকে আলিঙ্গন করিয়া ক্ষেহ সহকারে এই কথা বলিলেন, কর্ণ। আইস, আইস। ভূমি অমিত্র-ভাবাপন হইয়া আমার প্রতি স্পর্ধা করিয়া থাক, কিন্তু যদি এক্ষণে আমার নিকট না আসিতে, ভাহা হইলে তোমার কোন প্রকারে শ্রের হইত না। হে মহাবাছ! তুমি রাধার পুজ্র নও, তুমি কুন্তীর পুজ; हेश प्तर्वि नात्रम विनिन्नाष्ट्रन, जामि हेहा छ।हात নিকট এবং কৃষ্ণৱৈপায়নের নিকটেও শ্রুত হইয়াছি, তাহাতে সংশয় নাই। হে ৰংস! তোমাকে আমি সত্য বলিতেছি, তোমার প্রতি আমার দেব নাই, তোমার তেজোবিনাশের নিমিত্তই আমি তোমাকে পৰুষ বাক্য বলিয়াছি। ইেস্কব্ৰত! ভুমি বিনা কারণে পাওব দিগকে নিন্দা করিয়া থাক, এই নিমিতে কুরু সভায় আমি তোমাকে বহু ৰক্ষা কথা অবণ করাই-রাছি। আমি ভোমার ব্রহ্মণ্যতা, শৌর্য্য ও দানে পরম নিষ্ঠা এবং সমরে শক্ত ছুঃসহ বীর্যা অবগত আছি। হে অমরোপম ! পুরুষ মধ্যে তোমার সদৃশ क्ट नाहे, जामि क्वन क्नाएक जातहे नर्सना ভোমাকে পরুব বাকা বলিয়াছিলার। শরাস্ত্র, অস্ত্র সন্ধান, লাঘৰ ও অন্ত্ৰ বলে তুমি মহাত্মা কৃষ্ণ ও অর্জুনের নদৃশ। হে কর্ণ! একমতা ধমুর্জর তুমিই কুরুরাজের বিবাহ নিমিতে কাশিপুরে গমন করির।

সন্ধান রাজগাকে মর্দন করিরাছিলে। সমর-প্লাঘী চুরালদ বলবান রাজা জরাসন্ধা ভোমার সদৃশ হন নাই। তুমি ব্রহ্মণা ও সভাবাদী, সংগ্রাম কার্যো ভেজ ও বলে দেব-পুত্র তুলা, এবং যুদ্ধে অলৌকিক কার্যা করিরা থাক। ভোমার প্রতি আমার যে ক্রোধ ছিল, ভাহা অদ্য অপনীত হইল, যাহা হইবার ভাহা হইরাছে, পুরুষকার 'জা দৈবকে অভিক্রম করা যার না। হে অরিস্লদন মহাবাছ! বীর পাশুবেরা ভোমার সোদর জাতা, অভএব তুমি যদি আমার প্রিয় কার্যা করিতে ইচ্ছা কর, ভাহা হইলে ভাহা-দিন্ধের সহিত মিলিত হও। হে আদিত্য-নন্দন! আমারে দিয়াই পাশুব দিগের সহিত শক্রভা শেষ হউক; আল পৃথিবীতে সমুদার রাজ গণ নিরাময় হউন।

কৰ্ণ কহিলেন, হে ছুৰ্জৰ্ষ মহাবাছ! আপনি যাহা বলিতেছেন, তাহা আমি জানি; আমি স্তপুত্ৰ নহি, কুন্তীর পুত্রই বটি, তাহাতে সংশয় নাই। পরস্ক আমাকে কুন্তী পরিত্যাগ করাতে অধিরধ স্থত প্রতিপালন করিয়া বর্দ্ধিত করিয়াছেন, এবং আমি ছুর্য্যোধনের ঐশ্বর্যা উপভোগ করিতেছি, তাঁহার ঐশ্ব্য উপভোগ করঙ তাঁহার নিকট যাহা স্বীকার ক্রিয়াছি, ভাহা মিধ্যা করিতে উৎসাহ করিতে शांत्रि ना। ए ज्तिमकिन एम्वज् ! वस्ट्रप्त-नम्न ক্লুক বেমন পাওব দিগের নিমিত দৃঢ় নিশ্চর হইরা-ছেন, जामिও সেই ৰূপ ছুর্যোধন নিমিতে ধন, শরীর, পুজ, দারা, বশ, এ সমস্তই পরিত্যাগ করিতে चीत्रक स्रेजाहि। त्वरस्कू कळित्र मिरगत वाथि बाजा व मन्नम, जाहा देखें ও উপकातक नरह। বিশেষত জামি ছুর্য্যোধনকে আতার করিয়া পাণ্ডব िमिश्राक क्लोभिक क्रिज़ोष्टि। व्यवसाखावी व वर्थ, जाहा निवाद्रण कद्रियाद माधा नाहे, स्नान् वाक्रि পুরুষকার বারা দৈবকে নিবারণ করিতে উৎসাহ করিতে পারে? হে পিতামহ! আপনিও পৃথিবী क्रम-क्रनक निमिष्ठ मक्क शूटर्व छेशनकि क्रिया

বাস্তদেব যে কোন প্রকাহিলেন। পাওবেরা ও বাস্তদেব যে কোন প্রকারে অনা কাহারো পরা-জেয় নহেন, তাহা আমি জানিয়াও তাঁহাদিগের প্রতি উৎসাহ করিতেছি যে, তাঁহাদিগকে পরাজিত করিব, ইহা আমার নিশ্চিত মানস হইয়ছে। আমার এই স্থদারুণ বৈর ভাব পরিত্যাগ করিবার সাধা নাই। হে তার্ত! আমি প্রীতিযুক্ত চিত্তে অর্জুনের সহিত যুদ্ধ করিব, আমি যুদ্ধ নিমিত্ত ক্যুত-নিশ্চয় হইয়াছি, আপনি আমাকে অনুমতি করুন। আমি আপনকার অনুজ্ঞা লইয়া যুদ্ধ করি, এই আমার মানস। আমি কোধ বা চাপলা হেতু আপনার প্রতি যে প্রতিকূলাচরণ করিয়াছি, তাহা-তে আপনি ক্ষমা করুন।

ভীয় কহিলেন, কর্ণ! ভুমি যদি এই স্থদারুণ বৈর ভাব পরিত্যাগ করিতে অসমর্থ হও, তবে আমি তোমাকে অনুমতি করিতেছি, ভুমি স্থগ কামনা করিয়া যুদ্ধ কর। অক্রোধ, বীতসংরম্ভ এবং সাধুগণের ন্যায় সচ্চরিত্র হইয়া যথা শক্তিও উৎসাহ কমে নৃপ কার্য্য কর। আমি তোমাকে অনুজ্ঞা করিতেছি, ভূমি যাহা ইচ্ছা করিতেছ, তাহা লাভ করিবে, ভূমি ক্ষজ্রিয় ধর্ম দ্বারা পরাজিত লোক সকল অবশাই প্রাপ্ত হইবে। ক্ষজ্রিয় দিগের ধর্ম্য যুদ্ধ অপেক্ষা অন্য আর কিছুতেই শ্রেয় নাই, অতএব বল বীর্য্যের সমাজ্রিত ও নিরহ্ছার হইয়া যুদ্ধ কর। হে কর্ণ! আমি এই বৈর ভাব শমতা নিমিন্তে দীর্য কাল বিশেষ যত্ন ক্রিলাম, কিন্তু ক্তকার্য্য হইতে পারিলাম না।

সঞ্জয় কহিলেন, গঙ্গানন্দন এই ৰূপ বলিলে রাধা নন্দন গঙ্গানন্দনকৈ অভিবাদন করিয়া রোদন করি-তে করিতে রথারোহণ পূর্বক আপনার পুক্ত ছুর্বোা-ধনের সমীপে প্রস্থান করিলেন।

একোন বিংশতি তম অধ্যায় ও ভীয়পর্ব সমাপ্ত। ১১৯।